रजि. नं. N.W/J L 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

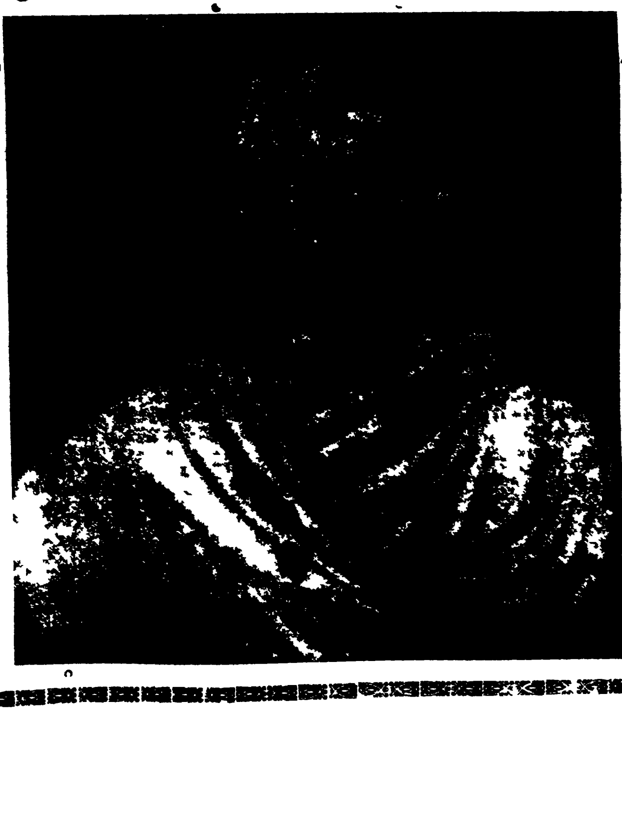
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 1 30 चैत्र सम्वत् 2044 तदनुसार 12 अप्रैल 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रु

गुरुकुल कांगड़ी अंक— N. 13

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज



जन्म-मरण की उलझन—१३

जीवन ज्योति

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

संगीत प्रिय जी के संगीत के पश्चात् सर्व प्रिय जी ने आज की चर्चा को चलाते हुए कहा—पिछली दो बैठकों की विचारधाराओं को सामने रख कर एक विचारशील इस मानव जीवन पर (स्वर्ण अवसर की भावना से गम्भीरता के साथ) जब विचार करता है, तो आध्यात्मिक दृष्टि से यह बात स्पष्ट होती है, कि—मानव की सार्थकता, पूर्णता का भाव है, अपनी आत्मा की लौ को उस परम-पिता परमेश्वर की लौ के साथ मिलाना, क्योंकि परम ज्योति से ही जीवन ज्योति जगमगाती है। तभी तो कहा है—'अग्नि ना अग्नि: समिध्यते ऋ ,12,6। आध्यात्मिक दृष्टि से इस मानव चोले को प्राप्त करने का एक मात्र उद्देश्य है—ईश्वर भक्ति, उपासना, अर्चना, पूजा द्वारा ईश्वर के दर्शन, जगदीश्वर की प्राप्ति, मोक्ष=परमधाम की प्राप्ति। भक्त शिरोमणि तुलसीदास ने राम चरित मानस में इस भाव को इस प्रकार से चित्रित किया है .—

बड़े भाग मानुष तन पावा,
सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन गावा।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा,
पाइ न जेहि परलोक सवारा॥
सो परत्र दुःख पावइ,
सिर धुनि-धुनि पछिताई।
काल कर्म हि ईश्वर हिं,
मिथ्या दोष लगाई॥

दुर्लभ देह पाए मानुष की (गुरुवाणी)
गुह्य ब्रह्म तदिद ब्रवीमि, न हि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किञ्चित्
(महाशान्ति: 292,20)
मानुष्य सर्वथा तात शोभनम्
(महाशान्ति: 297,31)
इय हि योनि: प्रथमा या प्राप्य आत्मा वै शक्यते तातु कर्मभि: शुभलक्षणै. 32
यो दुर्लभतर मनुष्य—34।
भूताना प्राणिन: श्रेष्ठा:, प्राणिना बुद्धिजीविन:।
बुद्धिमत्सु नरा: श्रेष्ठा.—मनु 1,26॥

मानव चोले में आकर आत्म दर्शन करना ही, इस की कृतकृत्यता है। इस भाव को केन उपनिषद् के ऋषि ने इस प्रकार से कहा है—

इह चेदवेदीथ सत्यमस्ति, नो चेदिहावेदीन्महती विनष्टि:।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीरा, प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥ 2,2,511

यदि इस मानव चोले को प्राप्त कर के मानव जीवन के परम उद्देश्य भूत परमेश्वर के दर्शन प्राप्त कर लिए तो सब कुछ प्राप्त कर लिया। यदि उसके दर्शन नहीं किए, तो इस मानव जीवन में आकर भी एक बहुत बड़ा घटिया सौदा ही किया है। अत: अपने चारों ओर फैले हुए इन नालियों और गन्दगियों में सड़ते-बिलखते प्राणियों पर एक नजर डालो, गहराई के साथ कुछ दिन उन के हाल पर विचार करो। इन प्राणियों की करुणाजनक स्थिति को विचारते हुए मानव जीवन के महान् लक्ष्य को साधने का जिसने भी प्रयास किया, वस्तुत. उसने ही अमर पद प्राप्त कर लिया और उसी का ही मानव जन्म प्राप्त करना सार्थक कहा जा सकता है। इसी भाव को पुष्ट करते हुए गुरु जी ने कहा है—

सभना जिआ का इक्को दाना,
सो मै विसर न जाइ।
इक्को सिमरिया नानका,
जग-बल रहा समाय।
दूजा क्यो सिमरिया,
जो जम्मे ते मर जाए॥
(गुरुवाणी)

इसी विषय पर जब कुछ और अधिक गम्भीरता के साथ हम विचार करते हैं, तो हमारे सामने स्पष्ट होता है, कि मानव की बात ही क्या प्रत्येक प्राणी मृत्यु की अपेक्षा जीवन (अमृत) की इच्छा करता है, तथा उस की प्राप्ति के लिए सर्वविध प्रयत्न करता है और उस की यह चाह स्वाभाविक है। इसी भावना को प्रकट करते हुए यजुर्वेद में कहा है—

त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय माऽमृतात् ॥3,60

कल्याणकारक, पुष्टिकर्ता, सर्वद्रष्टा की हम पूजा करते हैं, आराधना और अर्चना करते हैं। जैसे सुगन्धित, पुष्टिकारक खरबूजा स्वाभाविक रूप से अपने डण्ठल से अलग हो जाता है। ऐसे ही हम सरलता से मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो कर अमृत को प्राप्त हों। और यही प्रार्थना बृहदारण्यक उपनिषद के ऋषि ने इन शब्दों में की है—

मृत्योर्मा-अमृत गमय 1,3,28।

यह केवल इच्छा की ही बात नहीं, यदि हम संसार के व्यवहार पर गहराई से विचार करें, तो हमारे सामने यह बात स्पष्ट होती है, कि सब अपने-अपने ढंग से मृत्यु से बचने-बचाने या मौत को दूर करने में लगे हुए हैं। जैसे कि कृषक अपने खेतों में दिन-रात एक करके कृषि प्रक्रिया से अच्छी से अच्छी फसल प्राप्त करने में जुटे हुए हैं। इसका सबसे बड़ा परिणाम यही होता है, कि सब को अन्न आदि प्राप्त होते हैं, तब इससे वह स्वय और दूसरों को भूख के कारण होने वाली मौत से बचाते हैं। जीने के लिए जैसे भोजन की व्यवस्था बहुत जरूरी है, ऐसे ही वस्त्र, भवन, चिकित्सा आदि की व्यवस्था भी आवश्यक है। ये सारी व्यवस्थायें मानव समाज को मौत के मुंह से बचाकर अमृत की ओर ले जाती है। इन सारी व्यवस्थाओं के लिए सहयोग देने वाले कृषक, पाचक, जुलाहे, दर्जी, राज, दुकानदार, उद्योगपति, डाक्टर, शिक्षक, राजनीतिज्ञ एवं प्रशासक आदि सारे दुनिया को मौत के मुंह में बचाने के लिए अपने-अपने ढंग से प्रयत्न कर रहे हैं। क्योंकि यदि ये सब अपना-अपना कार्य न करें, तो दुनिया का सारा जीवन ठप्प हो जाए। अत' संसार में अधिकतर कारोबार मृत्यु को परे धकेलने के लिए ही हो रहा है। निःसन्देह मृत्यु अवश्यम्भावी है, अत: वह पूरी तरह से हटाई नहीं जा सकती। क्योंकि यह एक अटल नियम है कि 'जातस्य ध्रुवो मृत्यु:, गीता 2,27—हर बनने वाली वस्तु एक न एक दिन नष्ट अवश्य हो जाती है। हा मृत्यु को केवल परे ही धकेला जा सकता है, इसी के लिए ही संसार का सारा कारोबार होता है और चिकित्सा शास्त्र सिर तोड़ मेहनत करता है। जैसे कि कोई यदि भोजन न करे, तो वह जल्दी ही जान-बूझ कर अपनी मौत आप बुला लेता है और जब कोई चिकित्सा शास्त्र की प्रक्रिया के अनुसार सूझ-बूझ से पथ्या-पथ्य को अपनाता है, तो वह मौत को परे से परे धकेलता है।

दीर्घ आयु की इसी सार्वभौम-सार्वकालिक-सार्वजनिक चाह की ही चर्चा करते हुए यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय (ईशावास्योपनिषद्) में विद्या-अविद्या के प्रसंग में मृत्यु को परे धकेल कर अमृतत्व की प्राप्ति की प्रक्रिया और उसका क्रम बताया गया है। आजकल अविद्या शब्द उल्टी विद्या के अर्थ में प्रचलित हो गया है। परन्तु इस प्रकरण में अविद्या शब्द दुनियावी ज्ञान, कारोबार के अर्थ में है। तभी तो यहां कहा है—अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा—अविद्या से मृत्यु को पार करके अर्थात् अविद्या को यहा मृत्यु से तारने का साधन बताया गया है। उल्टी विद्या से तो उल्टा मौत और जल्दी आ घेरती है और यह जितना दुनियावी भौतिक विज्ञान का कारोबार है, इसके माध्यम से आज किस प्रकार दुनिया को अन्न, वस्त्र, भवन आदि के अभाव, दुःख रोग से होने वाली मृत्यु से बचाया जा रहा है, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। तभी तो आज कृषि विज्ञान अधिक अन्न आदि उत्पन्न करके भूख से मरतों को मौत के मुंह से बचाने के लिए यत्न कर रहा है। अत: यहा अविद्या शब्द का अर्थ है—भौतिक विज्ञान, दुनियावी कारोबार। जो कि आज के जीवन को बचाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस को वेद, उपनिषद् आदि अध्यात्म शास्त्र के शब्दों में अविद्या शब्द से पुकारा गया है। विद्या का अर्थ है—ज्ञान, विशेषत: अध्यात्मज्ञान, उस से भिन्न और विपरीत दोनों के लिए अविद्या शब्द का समान रूप से प्रयोग हो सकता है।

विद्या—अविद्या सम्बन्धी मन्त्र इस प्रकार से हैं—

अन्धन्तम: प्रविशन्ति ये अविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया रता: ॥12॥
अन्यदेवाहुर्विद्याया अन्यदाहुर विद्याया:।
इति शुश्रुम धीराणा ये नस्तद् विचचक्षिरे ॥13॥
विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद् वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥14॥

वे घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं, जो अविद्या की उपासना करते हैं, अविद्या का सेवन करते हैं और वे तो और भी अधिक अन्धकार को प्राप्त होते हैं, जो केवल विद्या की उपासना करते हैं।12। जिन्होंने इस का हमारे लिए विवेचन किया है, उन धीर जनों से हम इन दोनों का अन्य ही परिणाम सुनते हैं और वह है।13।—जो विद्या और अविद्या को एक साथ (सहयोगी रूप में) जानता है। वह अविद्या द्वारा मृत्यु को पार करके विद्या से अमृत को प्राप्त करता है।

ठीक ऐसा ही वर्णन सम्भूति-असम्भूति का भी वहां पर है। उस वर्णन से विद्या-अविद्या और सम्भूति-असम्भूति (विनाश) दोनों ओर परस्पर क्रमश: पर्यायवाची सिद्ध होते हैं। अर्थात् विद्या-सम्भूति, अविद्या-असम्भूति का वाचक है।

क्रमश:

सम्पादकीय—

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का भविष्य

इस बार 8 अप्रैल से 14 अप्रैल तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का उत्सव हो रहा है। कोई समय था जब गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिक उत्सव में आर्य नर-नारी हजारों की संख्या में पहुंचा करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जो कि इस संस्था की स्वामिनी सभा है इस के उत्सव को सफल बनाने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगा दिया करती थी वह इस लिए भी कि गुरुकुल पर पंजाब सभा का पूरा नियन्त्रण रहता था और उत्सव की सारी व्यवस्था सभा के सहयोग से बनाई जाती थी। अभी दो तीन वर्ष पहले तक यही स्थिति थी। तीन वर्ष हुए वहां के ऋषि लंगर का सारा व्यय पंजाब सभा ने ही दिया था। हमारी सभा के माननीय कोषाध्यक्ष श्री पं. हरबंसलाल जी शर्मा जब कभी भी गुरुकुल में जाते हैं तो कुछ न कुछ वहां जरूर देकर आते है। इस समय गुरुकुल में सैकड़ों वृक्ष उनके दान से ही लगे हुए हैं। 1980 से लेकर 1985 तक गुरुकुल का सारा प्रबन्ध पंजाब सभा के हाथ में था। इसलिए गुरुकुल के उत्सव सदा ही सफल रहते थे। इन पांच वर्षों में एक बार राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी वहां दीक्षान्त भाषण देने गए थे। एक बार लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड़ गए थे। एक बार उच्चतम न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री हंसराज जी खन्ना गए थे। एक बार श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज गए थे और एक बार गुरुकुल के विख्यात स्नातक श्री सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालंकार गए थे। कहने का भाव यह है कि जब तक पंजाब सभा का नियन्त्रण इस गुरुकुल पर रहा है। इसके उत्सव बहुत ही प्रभावशाली होते थे और बड़ी धूमधाम से मनाए जाते थे। जालन्धर, लुधियाना, नवांशहर और दूसरे स्थानों से कई बसें भर कर वहां जाया करती थी। इसमें देहली के आर्य बन्धुओं का भी हमें सहयोग मिला करता था। विशेष कर आर्य समाज हनुमान रोड दिल्ली का। उसके अधिकारी गुरुकुल के उत्सव को सफल बनाने में हमारा हाथ बंटाया करते थे।

उसके पश्चात् स्थिति बदलने लगी और पंजाब सभा के वहां से निकालने का एक षड्यन्त्र रचा गया उसका यह परिणाम हुआ कि पिछले वर्ष गुरुकुल का उत्सव इतना फीका रहा जितना इस से पहले कभी न हुआ था। स्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि दीक्षान्त भाषण देने वाला भी कोई न मिल रहा था। यदि गुरुकुल के स्वनाम धन्य श्री पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार इसके लिए तैयार न होते तो एक समस्या खड़ी हो जाती। पिछले पांच वर्षों में गुरुकुल के उत्सव का सारा कार्यक्रम संसद भवन में होता था। उस पर अधिक खर्च भी न होता था पिछले वर्ष यह निश्चय किया गया कि नया पण्डाल बनाया जाए, वह बनाया भी गया और उस पर लगभग पच्चास हजार रुपया व्यय किया गया परन्तु उस पण्डाल में उपस्थिति 50 से अधिक न होती थी। गुरुकुल के इतिहास में पहली बार ऐसा फीका जलसा हुआ जिसे देख कर गुरुकुल प्रेमियों का सिर लज्जा से झुक जाता था और वह यह कहते थे कि क्या यही वह गुरुकुल है जहां हजारों लोग बाहिर से आया करते थे। मेरे पास साप्ताहिक प्रकाश के वह अंक पड़े हैं जिन में गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिक उत्सव के बारे में विस्तार से लेख और सूचनाएं प्रकाशित होती थी। उन्हें देख कर आज यह पता चल जाता है कि गुरुकुल कहां से कहां तक पहुंच गया। इसके लिए कौन उत्तरदायी है। मैं उसमें जाना नहीं चाहता केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि पंजाब सभा को वहां से निकालने का जो षड्यन्त्र रचा गया है यह उसी का परिणाम है। पंजाब सभा को निकाल कर अगर गुरुकुल का रूप पहले से अधिक उज्ज्वल हो जाता तो हमें कोई शिकायत न होती लेकिन जो हालात आज हैं वह निन्दनीय भी हैं और सोचनीय भी। पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कुछ अधिकारी गुरुकुल गए थे। यह जानने के लिए कि आने वाले उत्सव में वह गुरुकुल की क्या सहायता कर सकते हैं। परन्तु जिस दिन वह वहां पहुंचे तो गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी तीन दिन के लिए बन्द कर दी गई ताकि सभा के अधिकारी वहां जाकर उसकी आर्थिक स्थिति का पता न लगा सकें और जो अनियमितताएं वहां हो रही हैं। उन्हें रोकने की कोई योजना न बन सके। हमने वहां जाकर जो जानकारी प्राप्त की उसके आधार पर कह सकते हैं कि वहां व्यवस्था इतनी बिगड़ चुकी है कि वहां गुरुकुल के विद्यार्थियों को न अच्छा भोजन मिलता है और न उनके रहन-सहन का कोई उचित प्रबन्ध है। सारी व्यवस्था को देखने के बाद सभा के अधिकारियों ने यह फैसला किया कि विद्यार्थियों के लिए फ्लस के 15 शौचालय बनवा दिए जाएं और उनका सारा व्यय पंजाब सभा देगी। परन्तु उसी के साथ यह प्रश्न भी उठा कि इस प्रकार के लिए रुपया किसके हाथ में दें। वहां खाने वाले ज्यादा है। बनाने वाले कम हैं। जो आर्थिक अव्यवस्था इस समय फार्मेसी की है उसी से पता चल जाता है कि स्थिति क्या है। औषध निर्माण का कार्य दिन प्रति दिन गिर रहा है। जो लाभ पहले इस फार्मेसी को हुआ करता था अब वह आधा भी नहीं रहा। कर्मचारी रोते हैं उन्हें समय पर वेतन नहीं मिलता। मार्कीट में दूसरी फार्मेसियां दिन प्रतिदिन आगे बढ़ रही हैं। परन्तु वहां कोई पूछने वाला नहीं कि वहां क्या हो रहा है। हम जालन्धर से चल कर केवल वहां इसीलिए गए थे कि स्थिति को देखें परन्तु तीन दिन के लिए फार्मेसी बन्द कर दी। कहते है चोर की दाढ़ी में तिनका। जिनके हाथ में आज फार्मेसी का प्रबन्ध है उनमें यह साहस नहीं है कि वह अपनी खुली किताब हमारे सामने रख सकें और कह सकें कि यह किताब आपके सामने पड़ी है जो कुछ देखना है देख लो। परन्तु कोई चोर अपने आपको स्वयं किसी न्यायालय के सामने अपने आपको पेश नहीं करता वह उसी समय पेश होता है जब पुलिस हथकड़ी लगाकर उसे पेश कर दे। यही स्थिति उन लोगों की है जो आजकल गुरुकुल कांगड़ी और उसकी फार्मेसी का प्रबन्ध कर रहे हैं। कई बार सोचता हूं कि यदि इन लोगों के काले कारनामे कल को जनता के सामने आएंगे फिर क्या होगा। मुझे इन लोगों की चिन्ता नहीं गुरुकुल की चिन्ता है। आर्य समाज की चिन्ता है।

यह है वह परिस्थितियां जिन में कि इस बार गुरुकुल का उत्सव हो रहा है। मै आर्य जनता के दरबार में यह दोहाई देना चाहता हूं कि इस संस्था को बचाया जाए। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने अपना खून पसीना एक कर दिया था। आज कुछ जोंकें उसका खून चूस रही है। अगर उन्हें न रोका गया तो जिन महानुभावों ने इन संस्थाओं को खड़ा किया था उनकी आत्माएं हमें धिक्कारेंगी। स्थिति बहुत गम्भीर है इस लिए आगे चल कर बताऊंगा कि इसका क्या उपाय है।

—वीरेन्द्र

गुरुकुल : प्रगति की एक झलक

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रतिष्ठापित गुरुकुल की पच्चीसवीं वर्षगांठ मार्च 1927 में मनाई गई। 4 मार्च 1902 को जिस पवित्र गुरुकुल-वृक्ष का बीज गंगा तट की पवित्र भूमि में बोया गया था, वह उस दिन 25 वर्ष की आयु पूरी करके अपने यौवन में आ गया था। इस पवित्र संस्था के विकसित होने में लगभग अभी तक 20 लाख 75 हजार रुपये व्यय हो चुके थे। गुरुकुल की 7 शाखाएं भी खुल चुकी थीं। इनमें से गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल मटिण्डा, गुरुकुल रायकोट, गुरुकुल झज्झर, कन्या गुरुकुल मुलतान मुख्य हैं। इस समय लगभग 1,000 बालक और बालिकाएं शिक्षा पा रही थीं। इन 25 वर्षों में कुल 162 स्नातक अपनी शिक्षा समाप्त करके जीवन के इस कार्यक्षेत्र में आ चुके थे।

स्नातक बनने से पूर्व कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी स्नातकों को विशेष उपदेश देते थे। उन उपदेशों में से दो उपदेश हम यहां उद्धृत कर रहे हैं। प्रथम वह है, जो उन्होंने दूसरे दीक्षान्त संस्कार में 28 मार्च, 1914 को दिया था। और दूसरा वह है जो उनके श्रीमुख से चतुर्थ जन्मोत्सव के समय 1916 में दिया गया था।

स्वामी जी के दीक्षान्त सन्देश

(1)

पुत्रो ! आज मैं तुम्हें उन बन्धनों से मुक्त करता हूं, जिनके अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बन्धन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बन्धन बांध रखे है, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूं। इन बन्धन के पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं, इसलिए ये बन्धनों और भी कड़े है। ये बन्धन उन उपनिषद् वाक्यों में वर्णित हैं, जिन्हें आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूं।

पुत्रो ! परमात्मा सत्यस्वरूप है। उसके प्यारे बनने के लिए अपने जीवन को सत्यस्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में, और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो।

धर्म-मर्यादा का उल्लंघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अंतःकरण ही है, बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है। वही तुम्हें धर्म की मर्यादा बतला देगा। अपनी आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो।

स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचाएगा। जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्तव्य है, उसे अपने हृदय से पूछो। यह कुल तुम्हारा आचार्य है। मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं केवल तुमसे एक ही दक्षिणा मांगता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा कोई ऐसा काम न हो, जिससे तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुम में से जब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे, उनसे मैं कहता हूं कि पांचों यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना। माता-पिता, आचार्य और अतिथि ये तुम्हारे देवता हैं। इनकी सदा सुश्रूषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निरभिमानी थे। वे कभी पूर्ण या दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें कहता हूं कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड़ दो। इस संसार की अंधियारी में किसी को अपना ज्योतिःस्तम्भ बनाओ। पढ़ा-पढ़ाया कुछ अंश तक पथ-प्रदर्शक होता है, पर सच्चे पथ-प्रदर्शक वे ही महापुरुष होते हैं, जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन समुद्र में ज्योतिःस्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी, सत्यवादी और पक्षपातरहित महापुरुषों के, चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक, पीछे चलो।

लेना तो सभी संसार जानता है, तुम इस योग्य हुए कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारा देह बना है, जिसकी गंगा का तुमने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भारत भूमि में रहते हुए तुम उसके यश को उज्ज्वल करोगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। इसके साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुमने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप में उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जो कि सहस्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूंजते रहे हैं। इन्हें गुरुमन्त्र समझो और अपना पथ-दर्शक बनाओ।

इसके अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का सम्बन्ध रहा है। मैं तुमसे गुरु दक्षिणा नहीं मांगता। गुरु दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मांगना मेरा धर्म नहीं। मैं तुमसे यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनैतिक, सामाजिक या मानसिक विचार क्या-क्या है। मैं केवल तुम से यही पूछता हूं कि क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित है या नहीं ? स्मरण रखो, यह संसार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना राजनीति धिक्कारने योग्य है। सत्य के बिना समाज के नियम पददलित करने योग्य हैं। यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलम्बन है, तो मुझे न कोई चिन्ता है और न कुछ मांगना है।

(2)

पुत्रो ! आज मुझे इतनी प्रसन्नता है कि तुम इसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात के देखने की आशा नहीं थी, उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों, तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा दे सकता हूं। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूं, तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम विभागों को परतन्त्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है जहां स्वतन्त्रता नहीं रुक सकती, तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है, मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य को दृढ़ता से पकड़ो। सारे संसार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है, तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। प्रसिद्धि के पीछे भाग कर कोई काम मत करो।

अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है। उपदेशक बनो, या मत बनो, पर एक बात याद रखो कि बनावटी मत बनो। सबको परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता। वाणी न हो न सही, किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्यशाला बनाओ। स्वच्छ जीवन रखो। यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा तो मुझे पूरा सन्तोष है।

गुरुकुल स्नातकों को उपदेश

कुल पिता श्रद्धानन्द का दीक्षान्त-संस्कार में स्नातकों को उपदेश

पुत्रो ! आज मैं तुम्हें उन बन्धनों से मुक्त करता हूं, जिनके अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बन्धन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बन्धन बांध रखे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूं। इन बन्धनों के पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं, इसीलिए ये बन्धन और भी कड़े हैं। ये बन्धन उन उपनिषद वाक्यों में वर्णित हैं, जिन्हें आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूं।

पुत्रो ! परमात्मा सत्यस्वरूप है। उसके प्यारे बनने के लिए अपने जीवन को सत्यस्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो। धर्म मर्यादा का उल्लंघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अन्तःकरण ही है। बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वह तुम्हें धर्म की मर्यादा बतलायगा। अपनी आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो। स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचाएगा।

जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्त्तव्य है, उसे अपने हृदय से पूछो। वह तुम्हारा आचार्य है। मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुम से केवल एक ही दक्षिणा मांगता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा ऐसा कोई काम न हो, जिसमें तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुममें से अब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे। उनसे मैं कहता हूं कि पांचों यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना। माता, पिता, आचार्य और अतिथि ये तुम्हारे देवता हैं, इनकी सदा सुश्रूषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निरभिमान थे। वे कभी पूर्णतया दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें कहता हूं कि, हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड़ दो। इस संसार की अंधियारी में किसी को अपना ज्योति स्तम्भ बनाओ। पढ़ा पढ़ाया कुछ अंश तक पथ दर्शक होता है, पर सच्चे पथ दर्शक वे ही महापुरुष होते हैं, जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन समुद्र में ज्योति-स्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी, सत्यवादी और पक्षपातरहित महापुरुषों के पथ पर चलो चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक।

लेना तो सभी संसार जानता है। तुम इस योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारा देह बना है, जिसकी गंगा का तुमने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भूमि भारत में रहते हुए तुम उसके यश को उज्ज्वल करोगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। इसके साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुमने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप से उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जो कि सहस्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूंजते रहे हैं। इन्हें गुरुमन्त्र समझो और अपना पथ-दर्शक बनाओ।

इसके अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का सम्बन्ध रहा है। मैं तुम से गुरु दक्षिणा नहीं मांगता। गुरु दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मांगना मेरा धर्म नहीं। मैं तुमसे यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनीतिक, सामाजिक या मानसिक विचार क्या-क्या हैं। मैं केवल तुमसे यही पूछता हूं कि क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं या नहीं। स्मरण रखो, यह संसार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना समाज के नियम पददलित करने योग्य हैं। यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलम्बन है, तो मुझे न कोई चिन्ता है और ना ही कुछ मांगना है।

(यह उपदेश कुलपति ने दूसरे दीक्षान्त संस्कार में 28 मार्च, 1914 ई० को दिया था।)

कुलपिता श्रद्धानन्द का कुलजन्मोत्सव के समय कुलपुत्रों को उपदेश

पुत्रो ! आज मुझे कितनी प्रसन्नता है, तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात के देखने की आशा नहीं थी उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों, तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा दे सकता हूं। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूं, तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतन्त्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है, जहां स्वतन्त्रता नहीं रुक सकती, तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है—मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य की दृढ़ता को पकड़ो। सारे संसार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। प्रसिद्धि के पीछे पीछे भाग कर कोई काम मत करो। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नहीं हुई। अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है। उपदेशक बनो या मत बनो पर एक बात याद रखो कि बनावटी मत बनो ! सबको परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता। वाणी न हो न सही, किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्यशाला बनाओ। स्वतन्त्र जीवन रखो। यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा, तो मुझे पूरा सन्तोष होगा।

(यह उपदेश कुलपिता ने चतुर्थ कुलजन्मोत्सव के समय फाल्गुन बदी 10, सम्वत 1970 को दिया था।)

जालन्धर में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया

आर्य समाज में अब एक अच्छा कार्यक्रम बनाया है। जब वह अपने वार्षिकोत्सव आदि करते हैं तो आर्य समाज के पुराने तथा नए जो विशेष कार्यकर्ता होते हैं उन्हें सम्मानित किया जाता है। गत दिनों आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के वार्षिकोत्सव पर वहां के दो प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री पं० मनोहर लाल जी आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज और दूसरे विशेष कार्यकर्ता श्री बंसीलाल जी को वस्त्रों आदि से आर्य समाज की ओर से सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सम्मानित किया। इसी प्रकार दयानन्द मठ चौहल्ला जालन्धर में प्रसिद्ध विद्वान श्री पं० सालिगराम जी पराशर तथा श्री पं० मनोहर लाल जी आर्य को सम्मानित किया गया दोनों को वस्त्र आदि श्री हरवंसलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष ने भेंट किए। श्री पं० मनोहर लाल जी को एक हजार रुपया श्री सेठ शिवचन्द जी ने, एक हजार श्री हरवंसलाल जी शर्मा और 500 रुपया श्री बैजनाथ जी गुप्ता ने ससम्मान प्रदान किया।

यह एक सराहनीय कार्य है प्रत्येक आर्य समाज को अपने विशेष कार्यकर्ताओं को सम्मानित करना चाहिए। इससे आर्य समाज को यह लाभ होगा आगे इसे अच्छे कार्यकर्ता मिल जाएंगे। जब कार्यकर्ताओं का मान होगा तो वह अवश्य आगे आएंगे।

व्याख्यान माला–११

नारी और उसका धर्म

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता ।1।

वही नारी अच्छी है जो घर के कार्यों मे चतुर है वही स्त्री पूजा योग्य है जो पतिव्रता है वही देवी स्तुति योग्य है जो पति को प्राण समझ व जिसे पति प्राण समान जाने, वही भार्या वन्दनीय है जो प्रजा—सुसन्तान वाली है ।

भर्ता हि परम नार्या भूषण भूषणैर्विना ।
एषा विरहिता तेन शोभमाना न शोभते ।2।

स्वर्णादि से निर्मित आभषणो से वियुक्त नारी के लिए उसका पति ही श्र ष्ठ आभषण है । परन्तु पति रहित नारी भले ही स्वय निर्मित आभषणो से सजी हुया हो फिर भी शोभा नही देती ।

श्वश्रुश्वशुरयो पादौ जोषन्ती सुगुणान्विता ।
माता पितृपरा नित्य या नारी सा तपोधना ।3।

जो गणवती स्त्री सास ससर के चरणो की सेवा करती है और माता पिता को भी आन्द देती है वह स्त्री तपस्विनी है ।

भर्ता देवो गरुभर्ता धर्म तीर्थं व्रतानि च ।
तस्मात्सर्व परित्यज्य पतिमेक भजत्सति ।4।

न ा के लिए पति ही देव ा पति ही गुरु और वही तीर्थ व्रत है । इस लिए,सब कछ छोड कर सती स्त्री पति की ही सेवा करे ।

ने क्षत्पनि क्रुरदृष्ट्या श्रावयेन्नैव दुवच ।
ना प्रिय मनसावाऽपि चरेत्पत्यु पतिव्रता ।5।

पति को क्र र दृष्टि मे नही देखना चाहिए दुर्वचन भी नही कहने चाहिए और मन से भी उसका अ प्रय न सोचे यही पतिव्रता स्त्री का धर्म है ।

सुस्वभावा सुवचना सुव्रता सुखदशना ।
अनन्यचित्ता सुमुखी भर्तु सा धर्मचारिणी ।6।

ो स्त्री सन्दर स्वभाव वाली मधुर वचन वाली शुभ व्रत वाली शुभ दर्शन वाली पति के सिवाय किसी म भी चित्त न रखने वाली और सन्दर मुख वाली है वही पति की सहधर्मिणी है ।

मित ददाति हि पिता मित भ्राता मित सुत ।
अमितस्य प्रदातार भर्तार का न पूजयेत ।7।

वन्ा क रूप मे पिता अपना पुत्रा को जो भी कछ देता है सीमित मात्रा म देता है । व न के रूप मे भ ई भी अपनी बहन को सीमित ही दे पाता है परन्त पत्नी क रूप म जो पति असीमित तथा निरन्त देन वा ा है । उसकी पूजा व क्या न कर अर्थात अवश्य कर ।

नास्ति भर्तृ समो नाथो नास्ति भर्तृ सम सुखम ।
विसृज्य धनसर्वस्व भर्ता वै शरण स्त्रिय ।8।

प न क ा म न व स्वामी नही पति क त य को सख भी नही त धन व सवस्व छोड कर स्त्री क लिए पति ही शरण है ।

छायेवानुगता स्वच्छा सखीव हितकर्मसु ।
दासीवादिष्टकार्येषु भार्या भर्तु सदा भवेत 9।

न पति के साथ सदा छाया की भांति रहे हितकारी कार्यों मे सखा तुल्य सहायक होव पति द्वारा आदिष्ट कार्यों मे सदा दासी की भांति आचरण करे ।

(क्रमश)

लुधियाना में राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर लिए गए चित्रों का विवरण

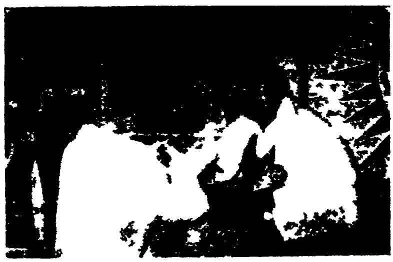


लधियाना के राष्ट्रीय सम्मेलन मे मच पर बठ हैं । सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा स्वामी आनन्द बोध जी प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली श्री छोटसिंह जी प्रधान राजस्थान प्रतिनिधि सभा श्री अमत लाल बजाज तथा श्री दीवान राजेन्द्र कमार जी ।



राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर आय महिला कालेज लधियाना की छात्राए राष्ट्रगान गा रही हुई । साथ मे श्री आनन्द जी दीवान राजेन्द्र कमार तथा श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा । दूसरी ओर सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी स्वामी समेधानन्द जी महामन्त्री श्री बहादत्त जी शर्मा दिखाई दे रहे हैं ।

श्री प. मनोहरलाल जी आर्य को जालन्धर मे सम्मानित किया गया



दयानन्द मठ जालन्धर मे श्री हरबसलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष श्री प मनोहर लाल को 2500 रुपये तथा वस्त्रो से सम्मानित करते हुए । श्री बैजनाथ जी गप्ता भी साथ खड दिखाई दे रहे हैं ।

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नए छात्रों का प्रवेश एक अप्रैल 1986 से आरम्भ हो गया है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की मात्र 30 रुपये मासिक पर समुचित व्यवस्था, शुद्ध घृत व दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करें।

—नरेश कुमार शास्त्री आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत
महाविद्यालय करतारपुर (जिला जालन्धर)

लुधियाना में वैदिक सत्संग सम्पन्न

29-3-87 को आर्य समाज दाल बाजार के उप प्रधान श्री हर भगवान जी पाहवा के घर वैदिक सत्संग का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम प सुरेन्द्र कुमार जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया, तत्पश्चात् श्री प्रदीप जी पाहवा को जो यज्ञ के मुख्य यजमान थे आशीर्वाद प्रदान किया गया। स्त्री आर्य समाज दाल बाजार की ओर से ईश्वर-भक्ति के गीत गाए। इस सत्संग के मुख्य वक्ता प सूर्यपाल शास्त्री, एम ए हिन्दी, संस्कृत) का संस्कारो के महत्व पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ, उन्होने परिवारो मे संस्कारा प्रचलन पर जोर दिया तथा यह भी बताया कि संस्कार के बिना मनुष्य का कोई मूल्य नही है। इस सत्संग मे स्त्री, पुरुषो की संख्या इतनी अधिक थी कि पाहवा जी का आगन छोटा प्रतीत हो रहा था। ऐसे सत्संगो को सफल बनाने का श्रेय युवक सभा लुधियाना के प्रधान श्री महेन्द्र प्रताप जी एव श्री रोशनलाल जी, आर्य युवक सभा पजाब के संयोजक को जाता है। स्मरण रहे कि आर्य युवक सभाए दिनो दिन ऋषि-कार्य में अग्रसर है।

—सुरेश चड्ढा
संयोजक

हरपाल नगर लुधियाना में नौवां वार्षिक वेद यज्ञ सम्पन्न

29-3 87रविवार को हरपाल नगर लुधियाना के खुले मैदान मे हर वर्ष की भान्ति बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प बालकृष्ण जी शास्त्री थे। उनकी सहायता प रामदेव जी प्रभाकर कर रहे थे। प्रात 8-30 यज्ञ की कार्यवाही आरम्भ हुई। सात यजमान सपरिवार यज्ञशाला के समीप बैठे थे। दो बजे बाद दोपहर यज्ञ की पूर्ण आहुति डाली गई। जिस मे हजारो बहन-भाईयो ने श्रद्धा पूर्वक भाग लिया, आदरणीय बहन कमला जी आर्य स्वामी वेद भारती जी महाराज सन्त प्रेम दर्शनानन्द जी ने अमृत वर्षा की लगर मे हजारो बहन भाईयो ने भोजन किया। शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

—आशानन्द आर्य
यज्ञ प्रबन्धक

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज के कार्यकर्ता प्रधान श्री मुलखराज जी आय के भतीजा श्री सत्य पाल की मृत्यु 15 3-87 की रात्रि को हो गई है। यह सुन कर हृदय को बहुत बड़ी ठेस पहुची।

आज 22-3-87 रविवार को प्रात: 9 बजे आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर के साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे श्री सत्यपाल जी की दिवगत आत्मा को सद्गति एव शान्ति के लिये तथा परिजनो को इस महान् दु ख के सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई। इन शब्दो के साथ हम आय समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर की आर से श्री सत्यपाल जी को अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हैं तथा उनके सारे परिवार के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते है।

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर
जालन्धर के सभी सदस्य

हे क्रान्ति पुत्र ! तेरा बन्दन

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ, प्र)

बन्धन मुक्त बनाने मा को—
बने तुम्ही प्रलयकर।
सूत्र पात कर महा क्रान्ति का—
भू पर एक भयकर।

भारत का कण कण मे तुमने—
भरा क्रान्ति का स्पन्दन।
हे क्रान्ति पुत्र ! तरा बन्दन ॥

आजीवन आजाद रहे तुम,
अरिदल को ललकारा।
भारत माता को तुमने ही—
अनुपम दिया सहारा।

बढा क्रान्ति पथ पर अविचल हो—
नव युवको का स्पन्दन।
हे क्रान्ति पुत्र ! तेरा बन्दन ॥

साडर्स से बदला ले करके,
दुश्मन का दिल दहलाया।
काकोरी की ट्रेन डकैती—

शोषित-उत्पीडित बान्धव हित—
बने सुशीतल चन्दन।
हे क्रान्ति पुत्र ! तेरा बन्दन ॥

सुनकर नाम तुम्हारा। कापता —
था लदन—सिंहासन।
'चन्द्रशेखर-आजाद' तुम्ही ने—
दिया जननि आश्वासन।

प्राण सुमन से किया सहज ही—
स्वतन्त्रता—अभिनन्दन।
हे क्रान्ति पुत्र ! तेरा बन्दन।

धूरी में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज धूरी का वार्षिकोत्सव बड़े हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया गया।

इस उत्सव पर यज्ञ मन्त्री श्री प्यारा लाल जी, प्रधान श्री प्रतिज्ञापाल जी, श्री जसवीर रत्न एडवोकेट जी, श्री मास्टर रघुनाथ जी शर्मा, श्री सोमप्रकाश जी, श्री राध श्याम जी मन्त्री जिला आय सभा, श्री रामदेव जी बैहल मैनेजर आर्य स्कूल, श्री चिरजीलाल जी प्रधान जिला न्याय सभा, समाज मन्त्री एव जिला आर्य सभा प्रधान श्री महाशय लक्ष्मण दास जी, पुरोहित सूय प्रकाश शास्त्री, और महात्मा प्रम प्रकाश जी वानप्रस्थी।

इन सभी वक्ताओ ने अपने-अपने ओजस्वी एव सारगर्भित वक्तव्यो के साथ क्रियात्मक जीवन बनाने के लिए सकल्प भी लिए।

—लक्षमण दास
मन्त्री

लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज हबीबगज अमरपुरा मे स्थापना दिवस मनाया गया30-3-87सोमवार को आर्य समाज हबीबगज अमरपुरा लुधियाना मे प्रात साढे 7 बजे तक बड़े उत्साह से मनाया गया। बृहद यज्ञ के पश्चात् आर डी स्कूल की छात्राओ ने अपने सुरीले गीत गाए। आर्य समाज के दस नियम सुनाए। आर्य समाज के प्रधान श्री आज्ञानन्द आर्य ने आर्य समाज के उपकारो का वर्णन करते हुए जनता से अपील की कि वह आर्य समाज को अपना अधिक सहयोग देवें ताकि आय समाज इलाका की जनता मे तेजी से वैदिक धर्म का प्रचार कर सके। डा चौहान जी ने भी अमृत उपदेश दिया। यज्ञ शेष के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई।

—रविन्द्र कुमार आर्य
उप मन्त्री

दसूहा में युवक सभा की स्थापना

दिनांक 22-3-87 को आर्य समाज दसूहा में श्री आदर्श दर्शी जी प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में युवको की समस्यो के ऊपर विचार किया गया और यह भी विचार किया गया कि किस तरह से हम आर्य समाज मे अधिक से अधिक युवको को ला सकें। इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए श्री मनोहर लाल जी उप सयोजक आर्य युवक सभा पजाब, श्री आदर्श दर्शी जी प्रधान आर्य समाज दसूहा, श्री मोहन जी मन्त्री, श्री निराला राम जी उप-प्रधान—श्री सुभाष कजूरिया कोषाध्यक्ष आर्य समाज दसूहा और श्री चन्द्रेश्वर शास्त्री आर्य समाज दसूहा सयोजक आर्य युवक सभा जिला होशियारपुर ने अपने विचार युवको को दिए और अन्त से आय युवक सभा का गठन किया गया। जिसमे निम्नलिखित अधिकारी चुने गए।

श्री मोहन जी सयोजक आर्य युवक सभा दसूहा। श्री रोहताश पुरी उप-सयोजक आर्य युवक सभा दसूहा, श्री यशपाल जी उप सयोजक, रमेश वर्मा जी कोषाध्यक्ष, श्री विशाल जी, यह कार्य श्री चन्द्रेश्वर शास्त्री जी की मेहनत और लग्न से हुआ जो बहुत परिश्रम से युवकों को इकट्ठे करने मे लगे हुये हैं। अन्त मे मैं दसूहा की समाज के अधिकारियो का बहुत-2 धन्यवाद करता हू जिन्होंने युवकों को हर प्रकार की सहायता करते रहने का वचन दिया है और मेरा सहयोग दिया है।

—मनोहर लाल आर्य

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर स मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J L 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 2, 6 बैसाख सम्वत् 2044 तदनुसार 19 अप्रैल 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

प्रभु स्तवन—

वह हमारा सच्चा पिता है

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ प्र)

आ हिष्मा सूनवे पितापियंजत्यापये ।
सखा सख्ये वरेण्य । ऋ 1।26।3॥

भगवान के तथा हमारे अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं। प्रस्तुत मन्त्र मे उनमे से केवल तीन सम्बन्धो का वर्णन किया गया है। वर्णन भी सीधे शब्दो मे नही अपितु प्रकारान्तर से, उदाहरण देकर उपमा-अलकार मे।

कई महानुभाव ऐसे प्रसङ्गो पर कहा करते हैं कि वेद की भाषा सीधी क्यो नही होती ? सीधे शब्दो मे वेदो मे किसी बात को क्यो कहा गया होता ? घुमा फिरा कर, प्रकारन्तर से, अलङ्कारो द्वारा क्यो कहा गया होता है ? समाधान इसका यह है कि एक तो वेद कवितामय है, चाहे वह पद्य काव्य (छन्द बद्ध) हो या गद्य काव्य। दूसरे थोड़े शब्दो मे बहुत प्रकार की बातें कहने के लिए यह आवश्यक है कि अलङ्कारो का प्रयोग किया जाए। सीधी भाषा मे यह अनिवार्य है कि अलङ्कारो का प्रयोग किया जाए। सीधी भाषा मे यह सम्भव नहीं कि थोड़े शब्दो मे बहुत रहस्य भर दिये जायें। मानव जीवन के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान विज्ञान यदि आलङ्कारिक रूप से न कह कर सीधे शब्दो मे कहा जाता तो जो चारो वेदो के बीस सहस्र मन्त्र हैं, वे सम्भवत सख्या की दृष्टि से इतने हो जाते कि उनके पुस्तक एक छकड़े का बोझ बन जाते। तीसरी बात यह है कि अलङ्कारा से भाषा सुरुचिपूर्ण आकर्षक बन जाती है। जिस बात को मस्तिष्क सीधे प्रकार से ग्रहण नही कर पाता, वह उदाहरण के द्वारा उपमा के द्वारा भली भाति समझी जा सकती है। सब लोग ऋषि तो नही होते तथा यह सम्भव भी नही। ऋषि हो जाए जो वेद को समाधिस्थ होकर समझ लें।

ससार मे अधिकता तो सवसाधारण की होती है और सब साधारण के लिए यह आवश्यक है कि उन्हे उपमाओ के द्वारा, उदाहरण तथा दृष्टान्त देकर बात को हृदयङ्गम कराया जाए। वेद केवल ऋषियो के लिए ही हो, सो बात भी नही। वेद का ज्ञान तो प्रभु ने मानवमात्र के लिए दिया है, जैसा कि स्वय वद के शब्दो मे ही वह कृपालु पिता कह रहे हैं, "यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय" अर्थात मेरी यह कल्याणकारणी वाणी जनमात्र, मनुष्य मात्र के लिए है—चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य स्त्री, शूद्र तथा अतिशूद्र कोई भी हो। उपर्युक्त विवेचन इस प्रकार का विचार रखने वाले महानुभावो की सन्तुष्टि के के लिए पर्याप्त है।

मन्त्र गत उदाहरण पिता पुत्र, बन्धु-बन्धु तथा मित्र मित्र के पारस्परिक सम्बन्धो के हैं अर्थात परमात्मा हमारा पिता है और हम उसके पुत्र, वह हमारा बन्धु है और हम उसके बन्धु तथा वह हमारा मित्र है और हम उसके मित्र। इस प्रकार के भाव पिता पुत्र, बन्धु बन्धु तथा मित्र-मित्र की उपमा देकर प्रदर्शित किया गया है। तीनो ही सम्बन्ध इस प्रकार के हैं, जिनमे अत्यन्त निकटता होती है और वह भी क्रमश प्रथम से दूसरे तथा दूसरे से तीसरे मे उत्तरोत्तर अधिक अर्थात् जितनी निकटता पिता-पुत्र मे होती है, उससे अधिक भाई भाई मे होती है तथा मित्र मित्र मे और भी अधिक।

पिता के समक्ष अपनी सब मागो को प्रस्तुत करने का अधिकार रखते हुए भी कुछ को रहस्य बनाकर रखना पसन्द किया जाता है और कई बाते पिता की अपेक्षा भाई से कहने मे कम सङ्कोच से काम लिया जाता है किन्तु मित्र से बिल्कुल सङ्कोच नही होता। यदि सङ्कोच होवे तो मित्र किस काम के अर्थात मित्रो के मध्य मे सङ्कोच और गोपनियता बरती जाती है तो समझ लीजिए मित्रता है ही नही केवल साधारण सा मेल जोल है।

तीनो सम्बन्धो मे इतना मौलिक भेद होते हुए भी तीनो ही अत्यन्त हित कारक सम्बन्ध हैं। जहा केवल एक ही सम्बन्ध हो, वही हित साधन मे कोई कमी नही रखी जानी चाहिए फिर जहा एक साथ तीन सम्बन्ध हो, वह भी उपर्युक्त तीनो सम्बन्ध वहा कमी उठा रखने का प्रश्न ही क्या है सभी जानते हैं कि पिता अपनी सन्तानो के लिए कोई कमी नही उठा रखता, उसकी सारी सम्पत्ति की स्वामिनी उसकी सन्तान होती है और वह प्रत्येक प्रकारेण स्वसन्तान का पालन करता है। करे नही तो फिर पिता नही रहता, घोषणा भले ही स्वपितृत्व की करता फिरे। 'पा' रक्षण धातु से पिता शब्द बनता है अर्थात पालन और रक्षण करने वाला। जो पालन व रक्षण न करे वह पिता किस प्रकार से हो सकता है ? पिता के रूप मे कुछ और भले ही हो।

परमात्मा हमारा सचमुच ही पिता है, वह हमारा प्रत्येक प्रकार से पालन और रक्षण कर रहा है। हमारे जीवन के पालन तथा रक्षण के लिए प्रत्येक प्रकार की उपयोगी सामग्री, समस्त आवश्यक वस्तुएं वह प्रदान कर रहा है। चाहे हम कितने ही कृतघ्न हो जाए, उसका ध्यान करना भूल जाए, चाहे उसे ही भूल जाए अथवा चाहे 'अहो रात्र' उसे अपशब्द निकालते रहे किन्तु वह कृपालु प्रभु वह पिता अपनी कृपा बराबर हम पर बनाये रखता है। उसकी कृपा का हस्त हमारे पालन तथा रक्षणार्थ प्रत्येक समय हमारे सिर पर रहता है। वह हमारा पिता है—सच्चे अर्थों मे 'पिता' अतः हम उसका चयन करते हैं, वह है ही चयनीय वरणीय।

'भाई सा जग मे मीत नहीं' अर्थात् बन्धु जैसा ससार मे कोई मित्र नही, यह प्रसिद्ध लोकोक्ति है किन्तु फिर भी ससार मे बन्धुओ को परस्पर शत्रु होते देखा जाता है। लोक मे बन्धु के बन्धु का शत्रु होने का कारण है। अज्ञानावस्था ज्ञान की कमी, अल्पज्ञता। परन्तु परमात्मा तो सवज्ञ है वहा अल्पज्ञता का क्या काम ? अत परमात्मा के शत्रु होने का प्रश्न तो उत्पन्न ही नही होता। वह तो सवदैव बन्धु है—क्योकि न वह अल्पज्ञ है और न उसका कोई स्वार्थ है।

मित्रता का सम्बन्ध भी वास्तव मे बड़ा विचित्र सम्बन्ध होता है। मित्र-मित्र के लिये सगे सम्बन्धियो से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं। परिवारस्थ जनो से तङ्ग आने पर लोग अपने दु खो को अपने मित्रो के सम्मुख प्रस्तुत करते है। कितना पवित्र होता है यह सम्बन्ध ? कल्पना तो कीजिए। यही सम्बन्ध है हमारा और परमात्मा का। यही तो कारण है कि प्रत्येक आपत्ति के समय चाहे ससार का कोई भी सम्बन्धी हमारा साथी न हो, परन्तु वह परम पावन प्रभु हमारा सहायक होता है। यदि हम थोड़ा भी धैर्य पूर्वक ध्यान दें—तो हमे ज्ञात हो जाए कि प्रत्येक आपत्ति के समय उस प्रभु की मित्रता का हाथ हमारी सहायता के लिए किस प्रकार समुद्यत रहता है, अत एव वेद कहता है —

(पिता) पिता (सूनवे) पुत्र को (जिस प्रकार अपना सब कुछ) (आ यजति) देता है। (आपि आपये) बन्धु, बन्धु को (तथा) (सखा सख्ये) मित्र, मित्र को (इसी प्रकार है।) (वरेण्य) वरण करने योग्य, वरणीय परमात्मन (हि) निश्चय पूर्वक (स्म) (हमे तू भी सब कुछ दे रहा) है।

जैसे पिता सहायक,
हर दम रहे हमारा।
त्यो नाथ तुम भी हमको,
देते सदा सहारा।
ज्यो बन्धु काम बन्धु के,
आता है वक्त मे।
त्यो जग के बन्धु तू भी,
हित कर रहा हमारा।
ज्यो मित्र, मित्र के दु ख—
क्लेशो मे ही सहायक।
त्यो मित्र मित्र विश्व भर के,
देना हमे सहारा॥

ना समझ हिन्दुओं के व्यवहार पर खून के आंसू बहा देने वाली इतिहासिक सत्य घटना

कालाचन्दराय भादुड़ी मुहम्मद फार्मूली कैसे बना

लेखक—श्री पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' विद्यावाचस्पति सिद्धांतालंकार महोपदेशक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा

हिन्दुओ की ना समझी के कारण ही हिन्दुओ को कितनी हानि उठानी पडी है, यह हिन्दुस्तान के इतिहास को पढने से मालूम पडता है . प कालाचन्द राय मूर्ति पूजक से मूर्ति भजक कैसे बना यह एक इतिहासिक तथ्य है । लीजिए ना समझ हिन्दुओ के दुर्व्यवहार पर खन आसू बहा देने वाली सत्य घटना—

इस पुरातन आर्य वर्त्त देश के पूर्वी आचल के इतिहास मे काला पहाड आतक उत्पन्न कर देने वाला एक भयकर नाम है। हिन्दुओ को आतकित व उत्पीडित कर देने वाला मुसलमान सेनापति काला पहाड एक नामधारी हिन्दू ब्राह्मण कुल का व्यक्ति था एक उच्च-वशीय, निष्ठावान, कर्मकाण्डी ब्राह्मण, हिन्दू विरोधी, मूर्ति भजक भारतीय परम्पराओ का विनाशक कैसे बन गया। इसके पीछे एक रोचक सत्य घटना है। इस काला पहाड की रोचक घटना से वर्तमान हिन्दू समाज के लिए बहुत बडा सबक निहित है।

काला पहाड का वास्तविक नाम कालाचन्द राय था । हिन्दुओ की धार्मिक रूढीवादिता, अन्ध विश्वास, कट्टरता, गुरुम्म पाखण्ड ने ही उसे साम्प्रदायिक इस्लाम की ओर धकेला। हिन्दुओ की असहिष्णुता एव घोर अपेक्षा से अपमानित यह हिन्दू ब्राह्मण आगे चल कर हिन्दुओ का विशेष कर ब्राह्मणो का सहारक बना। भारत के प्रसिद्ध सोमनाथ के मन्दिर को विध्वस्त करने वाले महमूद गजनवी के नाम से ससार भलीभाति परिचित है। परन्तु मूर्ति भजक और मन्दिर विध्वसक के रूप मे काला पहाड के कार्य महमूद गजनवी को भी पीछे छोड जाते हैं।

काला पहाड का जन्म बगाल के एक ऐसे नामधारी कर्मकाण्डी ब्राह्मण भादुडी परिवार मे हुआ था ! जिसका प्रभाव और ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। उनके पिता का नाम नयन चन्द राय और माता का नाम जयावती था। परिवार में वह प्यार राजू के नाम से पुकारा जाता था। पारिवारिक परम्परानुसार कालाचन्द राय का बडी धूमधाम के साथ उपनयन सस्कार कराया गया, सस्कृत व्याकरण एव बगला भाषा की शिक्षा दी गई। सस्कृत पढ कर कालाचन्द राय उच्चकोटि का विद्वान् बन गया। शास्त्रो मे पारगत होने के साथ-साथ उसने युद्ध विद्या म भी पूर्ण दक्षता प्राप्त कर ली। बडा होकर वह गौड देश के सुल्तान बारबक शाह की सेना मे भर्ती हो गया, और कुछ ही दिनो मे अपनी कर्मठता दक्षता के बल पर कालाचन्द राय सेना का एक उच्च पदाधिकारी सेनापति बन गया।

कालाचन्द एक निष्ठावान ब्राह्मण धर्म परायण भक्त की भाति नियमित रूप मे प्रतिदिन प्रात काल महानन्दा नदी पर स्नान करने आया करता था। लम्बा कद, गौरवर्ण, बलिष्ट शरीर वाला तेजस्वी युवक अत्यन्त सौम्य सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी था। स्नान करके जब वह घाट से धोती पहने लौटता था तो रास्ते मे वेद मन्त्रोचारण तथा सस्कृत के स्तोत्र सस्वर पाठ करता था। सुलतान बारबक शाह की एक 18 वर्षीय राजदुलारी नामक सुन्दर कन्या थी। वह राजमहल के दरवाजे मे बैठी-बैठी प्रतिदिन प्रात: कालाचन्द को इस वेश मे देखती थी। धीरे-धीरे वह उसके प्रति आकृष्ट हो कर उससे प्रेम करने लगी और कहने लगी कि "मैं तो बहुत दिनो म उसे देखती आ रही हू। मेरा प्रेम प्रथम दर्शन से नही हुआ। जैसे कवि साहित्यिक लोग कल्पना किया करते हैं मैंने उस अच्छी तरह देखा और परखा है। अत मेरा निर्णय अटल और अन्तिम है। ये शब्द हैं जो राज दुलारी ने अपनी सखियो से कह और उसकी सखिया ने इस निर्णय से सुलतान बारबक शाह को भी परिचित करा दिया। सुलतान अपनी इकलौती बेटी की प्रत्येक इच्छा को यथा सम्भव पूरा करने का प्रयास करता था। सुलतान ने पुत्री के इस विचार को सुनते ही युवक के वशादि का पता लगाया कि उसकी बेटी का प्रेमी उच्च कुलीय ब्राह्मण युवक है। दूसरे दिन कालाचन्द दरबार मे उपस्थित हुआ। वजीरे आजम ने उठ कर शाही खुशी का सन्देश कालाचन्द को भी सुनाया। उसने कहा जहापनाह की ख्वाहिश है कि "अपनी इकलौती और प्यारी शहजादी का हाथ आपको सौंपे, लेकिन शादी से पहले आप को इस्लाम कबूल करना होगा "वजीरे आजम की बातें सुन कर कालाचन्द पहले तो आश्चर्य चकित हुआ और कुछ क्षण के लिए दुविधा मे पड गया। लेकिन दूसरे ही क्षण वह उठ कर खडा हुआ और अत्यन्त विनम्रता किन्तु दृढता पूर्वक उसने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और ज्यो ही दरबार छोड कर जाने को आगे बढा, त्यो ही सिपाहियो ने उसे घेर लिया, दामाद बनने से अस्वीकार करने के अपराध मे वह अब बन्दी बना कर जेल मे डाल दिया गया। निर्धारित समय पर कालाचन्द पर मुकद्दमा चलाया गया। काजी ने राजा का तिरस्कार और इस्लाम कबूल न करने के अपराध मे उसे शूली पर चढाने का निर्णय दिया।

शूली पर चढने की समस्त तैयारिया करके जल्लाद उस्मान खा कालाचन्द की ओर बढ ही रहा था कि एकाएक दुलारी बिजली की तरह घटना स्थल पर आ धमकी। देखते-ही-देखते सारा दृश्य बदल गया ! दुलारी का चेहरा तमतमा रहा था, दृढ व स्थिर भाव से वह काला चन्द और जल्लाद के बीच खडी हो गई और कहने लगी कि—"इन्हे शूली पर चढाने से पहले मेरी हत्या करनी होगी। शाहजादी के स्वर मे दृढता थी ! काला चन्द वीर बहादुर, निर्भय होने साथ विद्वान, बुद्धिमान और कर्त्तव्य परायण भी था। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" के आधार पर स्त्री जाति के प्रति उसके मन मे विशेष आदर की भावना थी। परिस्थिति से उत्पन्न मानवीय दायित्व के अनुरूप वह भी कुछ आगे बढा जो व्यक्ति कुछ देर पहले राजाज्ञा की अवहेलना और तिरस्कार करके स्वधर्म और स्वाभिमान की रक्षा के लिए मृत्यु का आलिंगन करने को तैयार खडा था, वही अब एक प्रेम विह्वला युवती के त्याग और सम्मोहक सौंदर्य के सामने नत मस्तक हो गया। राज दुलारी के पवित्र प्रेम के सामने आत्म समर्पण कर बैठा। इधर पिता के मन मे वात्सल्य प्रबल हो उठा, पुत्री की ममता वश सुलतान भी कुछ नरम पड गये। विवाह की तैयारिया होने लगी, और बिना धर्म परिवर्तन किये कालाचन्द और दुलारी विवाह बन्धन मे बन्ध गए। इस विवाह मे कालाचन्द के सामने एक विकट समस्या आ खडी हुई एक यवन कन्या से विवाह करने के कारण काला चन्द को अपनी जाति, बिरादरी के लोगो ने उसे समाज से (बहिष्कृत) निष्कासित कर दिया और वे अब किसी भी मूल्य पर उसे समाज में सम्मिलित करने को तैयार नही थे। यह थी हिन्दुओ की धार्मिक कट्टरता, रूढिवादिता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, असहिष्णुता एव घोर उपेक्षा जिसने कालाचन्द को इस्लाम की ओर धकेला" सब प्रयत्न व्यर्थ गए और ब्राह्मण समाज उसे हिन्दू मानने के लिए तैयार नही हुआ। फिर भी वह निराश नही हुआ। उसे विश्वास था कि पुरी के मन्दिर के द्वार सबके लिए खुले हैं। वहा जात-पात नही पूछी जाती। किन्तु वहा भी उसे अपने लिए मन्दिर के द्वार बन्द मिले। पुरी मे वह जगन्नाथ जी के दर्शनार्थ मन्दिर के बाहर सात दिन तक निराहार जल परिवार सहित सात्त्वक पडा रहा। उसकी दशा बडी गम्भीर दयनीय हो गई, किन्तु जगन्नाथ जी के दर्शन नही हो सके। पण्डे पुजारियो ने उसे निर्दयता पूर्वक पैरो से मार-मार कर मन्दिर से बाहर निकाल दिया। और मन्दिर का द्वार बन्द कर दिया।

परिणामस्वरूप निरन्तर पदाघात से अपमानित होकर कालाचन्द का हिन्दुत्व धराशायी हो गया। उच्च वशीय ब्राह्मणो के निरन्तर अपमान ने कालाचन्द की निर्ममता को मानो ललकारा। हिन्दुओ की धार्मिक सकीर्णता ने भीतर सोए हुए स्वाभिमान को जगा दिया। कालाचन्द के दु:खी मन मे प्रतिशोध की भावना भयकर रूप से जाग उठी और सम्पूर्ण पूर्वी भारत थरथरा उठा। वह गौड राजधानी को लौट गया और बडी धूम-धाम के साथ इस्लाम मे दीक्षित हो गया। अब वह कालाचन्द राय से मुहम्मद फार्मूली बन गया। लेकिन इतिहास मे वह काला पहाड के नाम से प्रसिद्ध है। यही काला पहाड शब्द अपने आप से मूर्ति भजना और हिन्दू सहार का पर्यायवाची शब्द बन गया। प्रतिशोध की भयकर अग्नि को साक्षी करके ससार के दबी, ढोगी, पाखण्डी, हिन्दू और हिन्दुत्व के अस्तित्व के चिन्ह भी शेष न छोडने की उसने प्रतिज्ञा की। उसका नारा था—"जनेऊ चोटी घृणा की जड है, उसे तोड दो" पुरी के पण्डे व पुजारियो ने जिस प्रकार से उसका अपमान किया था, वह उसे कभी नही भुला सका था। मुसलमान बनने के बाद उसने सबसे पहला काम पुरी पर आक्रमण करने का किया। युद्ध मे उडीसा का राजा मारा गया और काला पहाड की विजय हुई। विजयी सेना पुरी के भीतर प्रविष्ट होई और नगर मे जितने भी पण्डे नजर आये, एक एक को पकड कर मौत के घाट उतारा गया।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का भविष्य--2

किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता का आधार इस बात पर होता है कि उसकी व्यवस्था किन लोगों के हाथ में है। हमारे देश में कई स्थानों पर गुरुकुल चल रहे हैं। हरियाणा में तो विशेष कर कई गुरुकुल सफलता पूर्वक चलाए जा रहे हैं। परन्तु देश में जितने भी गुरुकुल हैं उनका केन्द्र सदा ही गुरुकुल कांगड़ी को समझा गया है। इसे प्रारम्भ हुए अब लगभग 85 वर्ष होने लगे हैं। प्रारम्भ में इसे कितना महत्व दिया गया था? इसका कुछ अनुमान एक उस समाचार से लगा सकते हैं, जो पिछले दिनों चण्डीगढ़ से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक दि ट्रिब्यून में प्रकाशित हुआ है। यह समाचार सात अप्रैल 1912के दैनिक ट्रिब्यून में पहली बार प्रकाशित हुआ था। उस वर्ष गुरुकुल का पहला वार्षिक उत्सव किया गया था और उसमें लगभग दस हजार व्यक्ति देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों से वहां पहुंचे थे और उसी समय पहला दीक्षान्त संस्कार भी हुआ था। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जो उस समय महात्मा मुन्शी राम थे और गुरुकुल के आचार्य भी थे उन्होंने नए स्नातकों को आशीर्वाद देते हुए कहा था कि वे अपना सारा जीवन अपने देश और धर्म की सेवा में लगाएं। उस समय की आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान जालन्धर के श्री लाला रामकिशन जी गुरुकुल के कुलाधिपति थे। उन्होंने आर्य जनता को बधाई दी थी कि एक नया गुरुकुल बनाने का उन का स्वप्न पूरा हो गया है। उस दीक्षान्त संस्कार में केवल दो ही स्नातक निकले थे और दोनों ही महात्मा मुन्शीराम जी के सुपुत्र थे। एक श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार और दूसरे श्री इन्द्र विद्यालंकार और दोनों ने वहां यह शपथ ली थी कि वे अपने आपको वैदिक प्रचार के लिए अर्पण कर देंगे। ट्रिब्यून ने यह भी लिखा है कि उस अवसर पर लोगों में बहुत अधिक उत्साह था।

यह 1912 की स्थिति थी और आज 1987 में हम क्या देखते हैं कि गुरुकुल का वार्षिकोत्सव होने जा रहा है, लेकिन आर्य जनता को यह पता नहीं कि यह कब हो रहा है इस में क्या कार्यक्रम रखा गया? कौन-कौन से महानुभाव इसमें आएंगे? गुरुकुल के वर्तमान प्रबन्धकों ने छोटे-छोटे छपे हुए विज्ञापन कई समाजों को भेज दिये हैं, परन्तु एक सुनियोजित प्रचार नहीं किया गया है। इसका एक कारण यह भी है कि जिनके हाथों में इस समय गुरुकुल की बागडोर है उन्हें न गुरुकुल की चिन्ता है और न जिस उद्देश्य के लिए गुरुकुल को स्थापित किया गया था। उन में से कुछ वे भी हैं जिनका लक्ष्य है कि घर बैठे-बिठाये इस संस्था के द्वारा वे जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं, कर लें। जो लूट-खसूट इस समय गुरुकुल कांगड़ी और विशेषकर गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में मची हुई है, वह अब किसी से छुपी हुई नहीं है। कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति 4-5 वर्षों की आडिट रिपोर्ट को पढ़ कर देख लें तो उसे पता चल जाएगा कि वहां क्या हो रहा है? गुरुकुल में जा कर देख लें कि वहां की स्थिति क्या है और इसी से पता चल जाता है कि अब गुरुकुल में विद्यार्थियों की वह संख्या नहीं रही जो पहले हुआ करती थी।

प्रश्न पैदा होगा कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मैं भी चाहता हूं कि इसका पता होना चाहिए कि कौन जिम्मेदार है। इस समय तक इन सब बातों पर पर्दा डालने की कोशिश की गई है। परन्तु यदि हम इस विषय में मौन रहे और जो बुराईयां इस समय गुरुकुल के प्रबन्ध में पैदा हो गई हैं, उन्हें दूर करने का प्रयास न किया गया तो धीरे-2 यह संस्था बिल्कुल समाप्त हो जाएगी। मैंने पिछले लेख में गुरुकुल के किसी पुराने वार्षिकोत्सव का जिकर किया था। उस समय बड़े-2 सम्मेलन हुआ करते थे। हजारों लोग गुरुकुल के उत्सव पर जाया करते थे। देश के बड़े-2 विद्वान् वहां इकट्ठे होकर आवश्यक समस्याओं पर अपने विचार जनता के सामने रखा करते थे। केवल यही नहीं उत्सव से कई मास पहले उस की तैयारी हुआ करती थी। और यह केवल इसलिए कि उस समय इस संस्था के जो अधिकारी हुआ करते थे वे किसी अपने स्वार्थ के लिए इस में काम नहीं करते थे। परन्तु अपनी ओर से कुछ देने के लिए ही काम करते थे। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चरणों में बैठ कर उन्हें देखने उन्हें सुनने और उनकी कार्यशैली को देखने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्री आचार्य रामदेव जी के साथ हमारे परिवार के विशेष सम्बन्ध थे। इसलिए मै कई बार कई मास उनके पास जा कर रहा करता था और देखा करता था कि वे गुरुकुल को कैसे चलाते हैं? ऐसे महापुरुष को मैंने कई बार सारा दिन मूंगफली पर गुजारा करते देखा था। उनमें से एक भी ऐसा न होता था जिस पर किसी प्रकार के भ्रष्टाचार का आरोप हो। उन सब का अपना आचार व्यवहार दूध की तरह साफ होता था और कोई उनकी तरफ अंगुली न उठा सकता था। आज जो व्यक्ति अपने आपको गुरुकुल के अधिकारी कहते हैं, उन में वे भी हैं जिन पर स्पष्ट रूप से भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं। जिन्होंने लाखों का घपला किया है। कोई मुझे बताये कि जिस संस्था के अधिकारी इस प्रकार के हों, उस संस्था की प्रतिष्ठा क्या बन सकती है।

परन्तु पहले की और आज की स्थिति में एक और अन्तर भी है। पहले आर्य समाज के बड़े-2 नेता इस प्रकार के नैतिक पतन को सहन न करते थे। बड़े से बड़े व्यक्ति पर यदि कोई सन्देह होता था तो वह भी कह दिया जाता था और प्रत्येक व्यक्ति को अपने आचरण से यह सिद्ध करना पड़ता था कि उसका चरित्र सर्वथा शुद्ध और पवित्र है और उस पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। आर्य समाज के इतिहास में यह पहली बार है कि जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जाएं, उन्हें आर्य समाज के बड़े-2 नेताओं का समर्थन और संरक्षण मिलता रहे। कुछ समय हुआ जब मैंने इसी विषय पर आर्य मर्यादा में लिखा था तो मेरे विरुद्ध प्रस्ताव पास कर के मुझे आर्य समाज से निकालने का प्रयास किया गया था। मैं कुछ समय चुप रहा। इस आशा में कि जो कुछ इस समय तक हमारे सामने आ चुका है उसके आधार पर कोई कार्यवाही की जाएगी और गंगा के किनारे चल रही यह हमारी संस्था गंगा की तरह ही शुद्ध बनाई जाएगी लेकिन मैं देख रहा हूं कि वह नहीं हो रहा। केवल यही नहीं और भी कई स्थानों पर यह कुछ हो रहा है। आर्य समाज और भ्रष्टाचार यह दोनों आज तक कभी इकट्ठे नहीं चल सके। आर्य समाज एक ऐसी संस्था थी जो सदा ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध न केवल प्रचार करती रही है, जब कभी आवश्यकता हुई उसने उसके विरुद्ध एक अभियान चलाया। वह भी एक समय हुआ करता था जब यदि कोई व्यक्ति किसी न्यायालय में जाकर यह कह देता था कि वह आर्य समाजी है तो उसकी दी हुई गवाही को ठीक समझ लिया जाता था। आज स्थिति यह है कि जिन लोगों के विषय में सब जानते हैं कि वे घपला कर रहे हैं, गुरुकुल जैसी संस्था को लूट रहे है, उन्हें बड़े-2 नेताओं का संरक्षण प्राप्त होता है। जो कुछ मैं लिख रहा हूं वह आज भी एक जुर्म समझा जाएगा। परन्तु मैं अब यह भी समझता हूं कि सच्चाई की रक्षा और गुरुकुल जैसी संस्था को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि अब यह सब बातें साफ-2 जनता के सामने आनी चाहिए। मैंने प्रारम्भ में लिखा है कि किसी भी संस्था की सफलता का आधार उन लोगों का आचरण होता है जो संस्था को चलाते हैं और यदि मैं आज कहता हूं कि गुरुकुल जैसी संस्था का भविष्य अत्यन्त धूमिल है तो केवल इसलिए कि जिनके हाथ में इसका प्रबन्ध है, वह ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें देख कर किसी भी दूसरे व्यक्ति के मन में श्रद्धा पैदा नहीं हो सकती, अपितु घृणा पैदा होती है। क्या ये लोग ब्रह्मचारियों को किसी प्रकार की प्रेरणा दे सकते हैं? क्या ये कह सकते हैं कि उस गुरुकुल को चला रहे हैं जिसका पौधा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लगाया था और जिस पौधे को आचार्य रामदेव जी जैसे त्यागी तपस्वी महानुभावों ने अपने खून पसीने से सींचा था। मैं तो आज आर्य जनता के दरबार में दुहाई दे रहा हूं

(शेष पृष्ठ 5 पर)

एक समीक्षात्मक विवेचना

महर्षि के तीन संकल्प और उनकी पूर्ति

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्योपदेशक,
आर्य निवास चन्द्र नगर, मुरादाबाद,

संसार के महापुरुषों के जीवनों के सूक्ष्म अध्ययन से हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि महापुरुषों के जीवनों के प्राय: दो भाग हुआ करते हैं। एक भाग को हम संकल्प कह सकते हैं और दूसरे भाग को पुरुषार्थ। पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर के सहधर्मी लेखक पं. आत्माराम जी अमृतसरी महर्षि के जीवन चरित्र में इस तथ्य को स्वीकारते हुए लिखते हैं कि :— "महापुरुषों के जीवन दो भागों में विभक्त होते हैं। पहला भाग वह जिसमें वे शुभ संकल्प धारण करते हैं और दूसरा वह जिसमें पुरुषार्थ द्वारा धारण किये संकल्प इच्छा की पूर्ति करके दिखाते हैं या यों कहिए कि महान् पुरुषों का जीवन प्रश्नोत्तर के रूप मे होता है। साधारण पुरुषों के जीवन केवल इच्छाओं और प्रश्नों को ही समष्टि होते हैं, परन्तु महापुरुषों के जीवन प्रश्न और उनके उत्तर, साथ-साथ लिए होते हैं।

(1) महापुरुषों का महापुरुषत्व ही इसी मे है कि वे प्रश्नो को न टाल कर उसका समुचित समाधान प्रस्तुत कर दिखाते हैं। पण्डित आत्माराम जी के शब्दों मे—"यदि हम्बोलट ने नदियों, पर्वतों और प्राकृतिक दृश्यो की वास्तविकता जानने का प्रश्न उठाया तो उस का समाधान करने के लिए उसने दो बार संसार का चक्कर भी लगाया और इसी कारण उसकी महानता की प्रशंसा करने वाले उसको "न्यूटन" से बढ़कर सम्मान देते हुए "अरस्तु" से उसकी उपमा देते हैं।

(2) तात्पर्य यह कि महापुरुष यदि कोई प्रश्न उठाता है तो उसका हल भी प्रस्तुत करता है अथवा यूं कहिए कि यदि वह कोई संकल्प करता है तो पुरुषार्थ द्वारा अपने जीवन-काल में पूरा कर दिखाता है।

आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महापुरुष थे कि जिन्होंने अपने जीवन मे कुछ विशेष संकल्प लिये थे और फिर अपने पुरुषार्थ से अपने जीवन काल मे ही उन्होंने उन्हे पूरा भी कर दिखाया। प्रश्न की महत्ता से उसके उत्तर देने वाले की महत्ता का पता लगता है। साधारण प्रश्न का समाधान करने वाले को संसार कोई सम्मान नही दे सकता। कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर देने वाले को संसार ऊंचे से ऊंचा सम्मान देने को तैयार है।

(3) अब देखना यह है कि महर्षि दयानन्द के सम्मुख कौन से और कैसे प्रश्न थे। "जब हम प्रश्न की ओर ध्यान करते हैं जिसका समाधान करने के लिए स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन को लगाया तो नि:सन्देह हमे स्वीकार करना पड़ता है कि वह प्रश्न बहुत ही जटिल है। उस प्रश्न को सुनकर ही वीरों के हृदय दहल जाते हैं, फिर उस प्रश्न का उत्तर देने और समाधान करने की तो बात ही क्या है। नेपोलियन के लिए सुगम था कि अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के सहारे यूरोप के मुकुटधारियो को खिलौना बनाकर खेलता और एल्प्स की चोटियों पर डेरे लगा देता परन्तु वह अन्तिम समय में उस प्रश्न का समाधान करने के लिए स्वामी दयानन्द ने बीड़ा उठाया था सिकन्दर और महमूद सरीखे सम्राट संसार को तलवार के बल से जीत कर भी उन प्रश्न के आगे हाथ बांधे दास के रूप में खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं। जिस पशु को कोई वीर छेड़ना नही चाहता उस पशु पर दयानन्द जान डाल कर सवार होना चाहता है। जिस सिंह की गर्जना से ससार कांप उठता है उस विकराल सिंह को पालतू और आधीन बनाने के लिए वीर दयानन्द उद्यत होता है। उसकी बहन की मृत्यु ने उसके हृदय को ठोकर लगायी और मृत्यु से छुटकारा पाने का विचित्र कठिन प्रश्न समाधान करने के लिए उसको सौंप दिया। मृत्यु क्या है। उससे मनुष्य किस प्रकार बच सकता है—यह समस्या उसके मन में बस गयी। उसका सारा पुरुषार्थ इस समस्या का समाधान करने और अपने उदाहरण से ससार को इस बात की जीवित-साक्षी देने के लिए था कि मनुष्य मृत्यु पर इस प्रकार विजय पाते हैं। मृत्यु और उसका समाधान यह महर्षि के जीवन का सारांश है।

वस्तुत: जिस समय मूलशंकर की बहन की मृत्यु हुई थी तो बालक मूलशंकर भयातिरेक के कारण अवसन्न हो कर रह गया था। तब उसे रुलाई भी नही आ पाई थी। मूलशंकर की शुष्क आंखें देख कर घर के लोग उसे निष्ठुर और निर्मोही कहने लगे। यहां तक उन की माता जो उनसे सर्वाधिक प्यार करती थी वह भी दुत्कारने लगी। किन्तु मूलशंकर था कि इसी सोच में था कि क्या मुझे भी एक दिन इसी प्रकार मरना होगा। क्या संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां मृत्यु से बचा जा सके अथवा ऐसा कोई उपाय नही जिससे मृत्यु से बचा जा सके। इसी चिन्ता में डूबे रहने के कारण उन्हें रोना नहीं आया और निष्ठुर कहलाये गये। पर लोग क्या जाने कि केवल आंसू ही दु:ख को प्रकट करने की निशानी नहीं हैं। क्यों कि "शक न कर मेरी शुष्क आंखों पर, कभी ऐसे भी आंसू बहाए जाते हैं।"

फिर अपने चाचा की मृत्यु पर तो मूलशंकर फूट-फूट कर रोया और संकल्प लिया कि जैसे भी हो, मृत्यु पर विजय पाऊंगा। और अन्तत: उस महामानव ने मृत्यु पर विजय पा कर ही दिखाई। पाठक वृन्द महर्षि की मृत्यु पर विजय-यात्रा की एक अलग ही कहानी है, जिसे स्थानाभाव के कारण हम यहां प्रस्तुत नहीं कर पा रहे किन्तु यह वास्तविकता है कि उस वीर ने मृत्यु पर विजय कर दिखाई और मृत्युंजय कहलाया।

इस से पूर्व भी महर्षि ने एक संकल्प लिया था, तब जब कि वे केवल चौदह वर्ष के थे और शिवरात्रि का व्रत करने के लिए उन्हे कहा गया था। शिव के दर्शनो की लालसा में मूलशंकर रात भर जागता रहा और जब उसने चूहों को शिव की पिण्डी पर उछल कूद मचाते देखा तो संशय हुआ कि कैसा शिव है कि जो चूहो को भी अपने ऊपर से हटा नहीं सकता। पिता ने बताया कि यह तो शिव का प्रतीक मात्र है, असली शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं। तब मूलशंकर ने यह संकल्प लिया था कि जब तक सच्चे शिव के दर्शन नही कर लूंगा, मैं पूजा नही करूंगा। प्रश्न यह भी कोई साधारण नही, फिर इसका भी समाधान करने वाला कोई महापुरुष ही होना चाहिए। महर्षि ने अपने जीवन में इस प्रश्न का भी समाधान कर दिखाया। कितने कष्ट उठाये उसने सच्चे शिव की तलाश में। वर्षों वनों, पर्वतों की खाक छानता रहा वह महामानव। जहां जिसने जो योगी बताया, वह उसके पास गया और योग द्वारा सच्चे शिव के दर्शनों की प्रार्थना की। और अन्तत: स्वयं एक योगी बन कर ससार को सच्चे शिव के दर्शन कराने में सफल हुए। तात्पर्य यह कि दूसरे संकल्प की सिद्धि में भी महर्षि पूर्ण सफल हुए। उनकी दूसरी विजय थी।

महर्षि के जीवन का तीसरा संकल्प था। संसार में पाखण्ड का विनाश और वेद विद्या का प्रचार। और यह संकल्प महर्षि ने तब लिया था, जब वे गुरुवर विरजानन्द जी से विदा ले रहे थे। दीक्षा के समय गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु को प्रिय लौंग भेंट करने लगे। भला एक अकिंचन सन्यासी के पास धन दौलत हो भी कहां सकती थी कि जिसे वह दक्षिणा में देता। किन्तु गुरु ने वह भेंट स्वीकार नहीं की। इसलिए नहीं कि उसे कोई धन सम्पत्ति चाहिए थी अपितु इसलिए कि वे उसके भीतर छिपी ज्वाला को और भी उद्दीप्त करना चाहते थे। गुरु के इन्हीं भावों को कविवर सूर्यदेव शर्मा ने इस प्रकार कविताबद्ध किया है—

अहो प्रिय शिष्य मुदित मतिमान,
अखिल आशा पंजर के कीर।
अरुणवत् अतुलित आभावान,
अनुपम आज्ञाकारी वीर॥
दक्षिणा देते हो क्या तात,
थाल में रख कर आधा सेर॥
न लौंग लूंगा, सुन लो बात,
आ रही अन्तस्तल से टेर॥
अहो, ऋषि मुनियों का गुरु ज्ञान,
भुलाया भारत ने भरपूर॥
गपोड़े ग्रन्थ पढ़े, मद मान,
उन्हें तुम कर दो चकनाचूर॥
दिखा कर वैदिक "सूर्य" प्रकाश,
भगा दो निशिचर अबुध उलूक॥
अविद्या तम का कर के नाश,
सुपथ दिखला दो अटल अचूक।

जब गुरु ने इस प्रकार की गुरु दक्षिणा मांगी तो शिष्य भी यह प्रतिज्ञा करता है—

विश्व में करके वेद प्रचार,
करूं संस्थापित आर्य समाज।
मातृ भू-भारत का उद्धार,
आर्य जाति का गौरव राज॥
इसी में अर्पण कर दूं अपने प्राण,
अमर है दयानन्द मम नाम।
आपकी आशिष से कल्याण,
सफल होगा गुरुवर यह काम॥

आर्य समाज और हिन्दी, पृष्ठ 67

पाठक वृन्द! यह था तीसरा संकल्प जो महर्षि ने लिया था। मेरे मत में सब से कठिन व्रत यही था और ऋषि को इसका बहुत मूल्य भी चुकाना पड़ा। कहीं ईंट कहीं पत्थर, कहीं गाली कही गलौज, यहां तक कि 17 बार विषपान भी करना पड़ा। अनेकों बार अपमानित भी होना पड़ा। किन्तु उस दृढ़व्रती पर इन सबका कुछ भी प्रभाव न हुआ। उसकी तो मान्यता ही यह थी कि—

"निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ठम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्-
पथ: प्रविचलन्ति पद न धीरा:॥

अर्थात् नीति निपुण लोग निन्दा करे या प्रशंसा, लक्ष्मी आवे अथवा चली जाए, चाहे आज ही मरण हो या युगान्तर में धीर पुरुष न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होते। बेटे ने ठीक ही कहा था कि जिसका निश्चय दृढ़ और अटल है, वह दुनिया को अपने सांचे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सफल जीवन का रहस्य

ओ भग प्रणेतर्भग सत्य राधो भगेमा धियमुद् बवन्न ॥
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृ वन्तः स्याम ॥ ऋ. 07-41

पदार्थ—(भग्) ईश्वर वा ऐश्वर्य (प्रणेत:) सब के उत्पादक वा सब को सत्याचार के प्रेरक (भग) जीवनोपयोगी वस्तुए (सत्य राध:) सत्य अविनाशी धन (भग) धनैश्वर्य (इमाम्) इस (धियम) प्रज्ञा बुद्धि को (उत) और (धियत) दीजिए (न:) हम को (भग) ऐश्वर्य (प्रभ:) उत्पादक (जनय) सुवीरो को (गोभि:) गौओ को ज्ञानेन्द्रियो को (अश्वै:) घोडो को कर्मेन्द्रिय को (भग) दिव्य गुण वा दिव्य धन (प्र) अच्छे प्रकार (नृभि:) मनुष्यो को (नृवन्त) हम सुवीर मनुष्यो वाले (स्याम) होवे ॥3॥

भावार्थ—हे सबके उत्पादक वा रक्षक परमेश्वर ! आप हमे सत्य कर्मों के करने की ही प्रेरणा देते रहिये । और हमे जीवनोपयोगी वस्तुओ का कभी, अभाव न हो । हमारा धन पूर्ण शुद्ध और पवित्र तथा स्थिर रहने वाला ही हो । यह धन पवित्र होने के नाते हमारी बुद्धियो को भी पवित्र वा सज्ञान बनाने वाला ही हो । यह पवित्र धन वा पवित्र बुद्धि का दान हम आपसे मागते हैं । आप हमारी इस याचना को अपनी कृपा से स्वीकार कीजिए । हम आप से ऐसे धन की ही याचना करते हैं । जो उत्पादक और कल्याण प्रद भी हो । तथा हमारी धन शक्ति को दिव्य गुणो से सम्पन्न बनाने की आप सदैव कृपा करते रहिये । और हमारे गौ रूपी धन का भी परिवृद्ध सदा करते रहिये । अर्थात् हमारी वाणी, भूमि, प्रकाशक किरणे, हमारी समस्त ज्ञानेन्द्रिया और हमारा पशु रूपी गौ धन आदि-आदि कभी अभाव ग्रस्त न हो । और हमारे शक्ति के समस्त साधन भी सदा सुदृढ और सशक्त बने रहे । अर्थात् हमारी कर्मेन्द्रिया, शक्ति के समस्त प्राकृतिक साधन यथा अन्न, धन, जीवनोपयोगी सभी वस्तुए, अश्व आदि पशु धन वा आवागमन के समस्त साधन भी सदैव कल्याण प्रद बने रहे । हमारा भग अर्थात् हमारे समस्त आर्थिक साधन केवल हमारा भरण पोषण ही करने वाले न बने रहे । अपित वह हमारी जन शक्ति और कर्म करने के अन्य सभी साधनो को भी कल्याण प्रद वा स्थाई बनाने वाले ही बने रहे, और हमारे यह सभी कर्म करने के साधन कभी भी अभाव ग्रस्त और दूषित न होवे । यही हमारी मुख्य याचना है । वस्तुत: हमारे इस जीवन के दिव्य और भद्र निर्माण का यही आधार है । इसे स्वीकार कीजिए ।

इस वेद मन्त्र मे अपने जीवन के दिव्य निर्माण के समस्त साधनो की प्राप्ति के लिए विशेष रूप से याचना की गई है । क्योकि बिना आधार भूत साधनो के वा उनके समुचित सदोपयोग और जीवन निर्माण करने वाले साधको के सम्यक् वा सतत पुरुषार्थ के बिना कभी भी किसी कार्य की सिद्धि कभी भी नही हो सकती । यदि ईश्वर हम पर अपनी कृपा की भरपूर वर्षा भी कर दें और समस्त प्राकृतिक साधन भी हमे प्रदान कर दे, तो ऐसी स्थिति मे यदि हम उन सभी साधनो का समुचित प्रयोग यथा समय यथा विधि करना ना जानते हो, और उनके प्रयोग की कला को जानते भी हो, पर हम इन साधनो के समुचित उपयोग को ठीक विधि से नहीं करते हो,तो ऐसी स्थिति मे हम अपने अभीष्ट उद्दश्यो और लक्ष्यो की उपलब्धि वा पूर्ति मे कभी भी सफल नही हो सकते । यथा कोई भू का मनुष्य अपनी भूख की वेदना को मिटाने के लिए किसी दानी महानुभाव के पास आकर अन्न प्राप्ति की याचना करता है, और वह दान वीर सज्जन उसे आटा दाल आदि भोजन की पूर्ण सामग्री दे देता है । पर यदि याचक व्यक्ति रोटी बनाने की कला को न जानता हो । वा जानते हुए भी रोटी बनाने का पुरुषार्थ ही नही करता हो, तो उसे भोजन सामग्री मिल जाने का भी कोई लाभ नही मिल सकता । यही स्थिति उन लोगो की दृष्टिगोचर होती है जो ईश्वर की कृपा वा उसकी न्याय व्यवस्था के कारण ऐश्वर्य के साधनो अन्न, धन आदि पदार्थों को प्राप्त तो कर लेते हैं पर उनके समुचित और यथा समय प्रयोग की कला को न जानने के कारण अथवा अपनी पुरुषार्थ हीनता के कारण अपने ऐश्वर्य के साधनो का लाभ नही उठा रहे । अपितु उनका अन्न, धन आदि ऐश्वर्य के साधन उल्टे उनके रोगो, कष्टो और दुःखो का आधार बने हुए प्रतीत होते हैं ।

इसी सदर्भ में एक विचारणीय और अतीव हितकर यह तथ्य है कि नि:-सन्देह ईश्वर न्यायकारी है और वह सब मनुष्यो को जो भी देता है वह पात्र वा अपात्र का विचार करके उसी आधार पर ही देता है । अर्थात् वह सब मनुष्यो को उनके शुभ व अशुभ कृत कर्मों के फलस्वरूप ही देता है । जिस मनुष्य ने पदार्थ प्राप्ति के लिए कोई शुभ कर्म किया ही नहीं है और भी वह मौखिक रूप से अपने अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना वा याचना करता रहता है, उसको न्यायकारी परमेश्वर कैसे वह उसका वाछित पदार्थ दे देगा । इसलिए अपने मनोर्थो को प्राप्त करने के लिए सीधा वा सरल मार्ग यही है कि उन अपने वाछित पदार्थो की प्राप्ति के लिए ईश्वर की कर्म व्यवस्था और उसके सृष्टि नियमो के अनुसार पूर्ण पुरुषार्थ करके समुचित शुभ कर्म करें । उन हमारे कृत शुभ कर्मो का फल ईश्वर की व्यवस्था के अन्तर्गत हमे स्वयमेव अवश्य ही मिल जाएगा । परन्तु पुरुषार्थ हीन मनुष्य के लाख याचना करने पर भी कुछ नही मिलेगा ।

प्रार्थना करने का ठीक क्रम यही है कि हम प्रार्थना करने से पूर्व अपना पूर्ण पुरुषार्थ करके पश्चात् ईश्वर से उसम सहायता के लिए याचना किया करें । यही क्रम सत्य और सर्व मान्य है ।

—व्रतपाल साधक लुधियाना

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

दिनाक 29-3-87 को आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल का वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार सम्पन्न हुआ —

प्रधान—स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम प्रभाकर ग्राम कुणजोली गढवाल ।

उप प्रधान—श्री बख्शीराम जी आय ग्राम—अरकंडाई गढवाल ।

मन्त्री—श्री वासुदेव जी विमल—ग्राम सेरामल्ला गढवाल ।

उप मन्त्री—श्री चन्द्रमणि जी अध्यापक ग्राम मरामल्ला ।

कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तसिंह जी रावत ग्राम गुडि.ानखिन नल्ला,

पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी अध्यापक, ग्राम कफलसार ।

लेखा निरीक्षक—श्री यागश्वर प्रसाद जी अध्यापक ग्राम कफलसार ।

—वासुदेव विमल
मन्त्री

(3 पृष्ठ का शेष)

कि इस संस्था को बचाओ वरना कुछ लोग इसे खा जाएंगे । यह हमारा दुर्भाग्य है कि खाने वालो को आश्रय कहा से मिल रहा है कहा से उनके विरुद्ध कार्यवाही होनी चाहिए थी । अब भी यदि हम चुप रहे और अपनी आखो से श्रद्धानन्द की लगाई इस फुलवाडी को उजडते हुए देखते रहे तो हम से बडा पापी और कोई न होगा । मै जानता हू कि मै अब जो कुछ लिख रहा हू इसके पश्चात् शायद फिर यह आन्दोलन प्रारम्भ किया जाये कि वीरेन्द्र को आर्य समाज से निकाल दिया जाए । जो महानुभाव यह सोच रहे हैं, उन्हे कह देना चाहता हू कि अब वीरेन्द्र हर चीज के लिए तैयार है, लेकिन अब वह खुल कर बोलेगा । जो कुछ गुरुकुल मे हो रहा है उसे देखते हुए चुप रहना एक पाप समझता हू । प्रश्न यही है कि गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली कैसे सफल हो सकती है ? उसकी सफलता के लिए पहली शर्त यह है कि जिन के हाथ मे गुरुकुल की बागडोर है उन का अपना चरित्र निष्कलक हो । उसके पश्चात अगला प्रश्न यह उठेगा कि जो शिक्षा प्रणाली आज गुरुकुल मे चल रही है, वह वर्तमान परिस्थितियो मे सफल हो सकती है या नहीं ? मै चाहूगा कि आर्य समाज के शिक्षा विशेषज्ञ इस विषय पर अपने विचार हमे भेजें और हम उन्हें आर्य मर्यादा मे प्रकाशित करें । विचारो के आदान प्रदान से ही हम किसी परिणाम पर पहुंच सकते है । इसलिए मै उन सब महानुभावो से चाहूगा जिन्हे गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली मे कुछ सच्चाई नजर आ रही है, वे अपने विचार हमे दे । हम इस विषय मे क्या सोचते हैं ? यह आगामी अक मे पाठको के सामने रखूंगा । परन्तु फिर कहना चाहता हू कि जब तक गुरुकुल का वातावरण स्वच्छ और पवित्र न होगा गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली सफल नहीं हो सकती ।

—वीरेन्द्र

ऋषि दयानन्द के आज्ञाकारी भक्त

मुन्शी समर्थदान

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्ध-कर्ता मुन्शी समर्थदान राजस्थान के सीकर जिले के ग्राम नेठवा के निवासी चारण मगलदान के पुत्र थे। ये सिढा-यच गोत्र के चारण थे। इनका जन्म 1885 ई मे हुआ था। समर्थदान बहु-भाषा विविद् थे। उर्दू, फारसी, हिन्दी, सस्कृत तथा स्वल्प अग्रेजी भी जानते थे। स्वामी दयानन्द से इनका सम्पर्क 1935 विक्रमी म हुआ। जब स्वामी जी ने वेद भाष्य लेखन तथा प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया तो उन्हे समर्थदान की सेवाओ की आवश्यकता हुई। प्रारम्भ मे वेद भाष्य बम्बई के निर्णय सागर प्रेस मे छपता था, अत मुन्शी समर्थदान को इसकी व्यवस्था देखने बम्बई भेजा गया। 1870 ई म मुन्शी जी बम्बई पहुच गए और वहा वेद भाष्य के मुद्रण का कार्य देखने लगे। कुछ समय पश्चात् स्वामी जी न वैदिक यन्त्रालय के नाम से काशी मे निजी प्रेस की स्थापना की, तो मुन्शी जी वेद भाष्य मुद्रण की व्यवस्था म मुक्त हो गए। उन्होने बम्बई मे लगभग एक वर्ष तक रह कर वेद भाष्य का काम देखा था। उनके सरल और निष्कपट व्यवहार से स्वामी जी अत्यन्त प्रसन्न हुए थे और उन्होने 4 मई 1881 को एक प्रशस्ति-पत्र लिख कर मुन्शी जी को दिया जिसमे इन्हे धार्मिक निष्कपटी, सच्चा, उद्योगी, परिश्रमी, चतुर, सभ्य, सुशील, श्रेष्ठ और चाल चलन का बहुत अच्छा, जैसे विशेषणो से अलकृत किया है।

2 जुलाई 1882 को मुन्शी समर्थ दान को वैदिक यन्त्रालय का प्रबन्धक नियुक्त किया गया। इस समय यन्त्रालय प्रयाग मे था। मुन्शी जी की देख-रेख मे स्वामी के लगभग सभी ग्रन्थ छपे। स्वामी जी का मुन्शी जी से विस्तृत पत्र व्यवहार होता था। इसमे वे यन्त्रालय तथा स्वग्रन्थो के मुद्रण सम्बन्धी निर्देश तो मुन्शी जी को देते ही थे, स्वय के कार्यक्रमो तथा विभिन्न स्थानो पर अपने उपदेश कार्य की सफलता आदि का सकेत भी इन पत्रो मे मुन्शी जी को देते रहते थे। इसमे स्वामी जी का मुन्शी जी के प्रति विश्वास तथा प्रेम का भाव प्रकट होता है। स्वामी जी के परलोक गमन तक मुन्शी जी ही वैदिक, यन्त्रालय के प्रबन्धकर्ता के पद पर रहे। मार्च 1886 मे वे इस कार्य से मुक्त हो गए।

प्रारम्भ मे स्वामी दयानन्द को ग्रन्थो के प्रकाशनादि मे उपयुक्त सहायक व्यक्ति नही मिले थे। बम्बई मे सर्व प्रथम वेद भाष्य का मुद्रण कार्य उन्होने हरीशचन्द्र चिन्तामणि को सौंपा था और काशी मे यन्त्रालय स्थापित होने पर उस के प्रथम प्रबन्धकर्ता मुन्शी बख्तावरसिंह बनाए गए थे। आर्थिक मामलो मे गोल माल करने के कारण इन्हे स्वामी जी ने पृथक् कर दिया था। किन्तु मुन्शी जी समर्थदान के सम्बन्ध मे उनका अनुभव कभी निराशाजनक नही रहा। वे हिसाब के सच्चे तथा स्वामी जी के मिशन के प्रति निष्ठावान थे। 17 मार्च 1883 को मुन्शी जी के नाम लिखे पत्र मे स्वामी जी ने उन्हे 'उत्तम पुरुष' कहा है।

सत्यार्थ प्रकाश के मुद्रण के समय जब मुन्शी जी अनेक महत्वपूर्ण सशोधनीय बातो की ओर स्वामी जी का ध्यान आकृष्ट करते थे तो स्वामी जी उन्हे स्वय ही यथोचित सशोधन और परिवर्तन करने के लिए लिख देते थे। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सस्करण मे जो पाद टिप्पणिया दी गई हैं वे मुन्शी समर्थदान द्वारा ही लिखी गई है।

वैदिक यन्त्रालय की सेवा से मुक्त होकर मुन्शी जी अजमेर आ गए और 1945 विक्रमी मे उन्होने राजस्थान समाचार नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। राजस्थान के कई देशी राज्यो के नरेश मुन्शी जी का बडा आदर करते थे और अनेक मामलो मे इनसे परामर्श भी लेते थे। 1907 ई मे इन्हे अपने पत्र का प्रकाशन आर्थिक कठिनाईयो से बन्द करना पड़ा मुन्शी समर्थदान ने आर्य समाज परिचय तथा धर्म रक्षा नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं। जीवन के अन्तिम वर्षों मे ये वैद्यक से जीविका निर्वाह करने लगे थे। 17 जून 1914 को इनका अजमेर मे निधन हो गया।

नया सवेरा लाएं

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र.)

वेदो के इस दिव्य देश मे, फैला आज अन्धेरा,
रहा नही है मानवता का, सुन्दर सुखद बसेरा,
जाने पुनरपि कब आएगा, अब तो नया सवेरा,
दानवता के तिमिर जाल ने महि मण्डल को घेरा,
शत-शत दीपक जला ज्ञान के, नया सवेरा लाए ॥

भ्रातृ भाव-समता समृद्धि के, जागृत हो प्रतिमान,
फिर से गूजे इस धरती पर, वेद गुणो का गान,
लोभ मोह-मद-मत्सर छूटे, दूर हटे अभिमान,
जन-जन को फिर मिले यहा पर सच्चा न्याय महान,
त्याग तपो के दया प्रेम के, अमर तत्व अपनाए ॥

ज्ञान उषा की नवल रश्मियो से जग हो आह्लादित,
शीतलता शुचि मिले उन्हे, जो रहे अभी तक शापित,
नष्ट प्राय हो तत्व सभी वे, जिनसे नर अभिशापित,
प्रमुदित हो धरती का कण कण मानवता हो हर्षित,
भूमण्डल पर मनुज मात्र को बन्धन मुक्त कराए ॥

ज्ञान प्रभा के सम्मुख तम का, बचे नही अवशेष,
शांति सफलता के बन्धन मे, मानव बधे विशेष
शत शत दीपक मानवता के अविरल जले अशेष,
पुण्य प्रभा सा प्रभावान हो, अनुपम बने स्वदेश,
अन्धकार मे भटक रहे, मानव को मार्ग दिखाए।
शत शत दीपक जला ज्ञान के, नया सवेरा लाए ॥

तपोवन का वार्षिक यज्ञ २० अप्रैल से

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून का वार्षिक बृहद् यज्ञ तथा साधना-शिविर सोमवार 20 अप्रैल से आरम्भ होगा और पूर्णाहुति रविवार 26 अप्रैल को होगी। इस सामवेद-पारायण यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द वानप्रस्थ होगे।

सप्ताह भर के इस आयोजन मे वेद प्रवचन करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उपमन्त्री प पृथ्वीराज शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति प रामप्रसाद वेदालकार और ब्रह्मचारी आर्य नरेश को आमन्त्रित किया गया है।

ज्वालापुर वसे स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती योग-साधना-शिविर का निर्देशन करेगे।

उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष अप्रैल से होने वाले इस यज्ञ मे दूरस्थ स्थानो से श्रद्धालु जन भारी सख्या मे आते हैं और यह आयोजन एक बडे आध्यात्मिक मेले का रूप ले लेता है।

—देवदत्त बाली
मन्त्री

आर्य युवक सभा शक्ति नगर, अमृतसर का वार्षिक चुनाव

आर्य युवक सभा, शक्ति नगर अमृतसर का चुनाव 21-3 87 को सर्व-सम्मति से निम्न प्रकार से हुआ —

प्रधान—प्रो दिलजीत जिज्ञासु जी,
उप-प्रधान—श्री धर्मवीर जी तथा
प्रो राकेश प्रेम जी।
मन्त्री—श्री रवीन्द्र कुमार जी।
अन्तरग सदस्य —
श्री सत्य नारायण शुक्ल जी।
श्री विपन कुमार जी।
श्री सलिल कुमार जी आर्य
श्री अनिल कुमार जी।
श्री सजय कुमार जी।

—मन्त्री

हमारे धार्मिक ग्रन्थ

लेखक—श्री शास्त्री सूर्य प्रकाश सिद्धान्ती

बड दुख की बात है कि जो आय कहलाने वाले लोग हैं उहे भी अपने धार्मिक ग्रन्थो के बारे मे पता नही है। मैं अपने विचारो के अनुसार उसको आय मानता हू जो आय समाज के नियमो पर चलता हुआ निम्नलिखित बातो को अच्छी प्रकार से जानता है।

—वेद—

हमारा मूल धार्मिक ग्रन्थ वेद हैं। वेद का ज्ञान प्रभु ने सष्टि के आदि मे मनुष्यो के कल्याणाथ दिया है। यदि वेद का ज्ञान न होता तो मनुष्य अज्ञान अध कूप मे पडा रहता।

वेद चार है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और अथववेद। एक एक वेद का ज्ञान एक एक ऋषि के हृदय मे हुआ था। जैसे—

ऋग्वेद का ज्ञान—अग्नि ऋषि के हृदय मे हुआ।

यजुर्वेद का ज्ञान—वायु ऋषि के हृदय में हुआ।

सामवेद का ज्ञान—आदित्य ऋषि के हृदय मे हुआ।

अथववेद का ज्ञान—अङ्गिरा ऋषि के हृदय म हुआ।

पूव सष्टि के जिन के कम सब मे पवित्र होते है। उन्ही के हृदय मे वेद का प्रकाश होता है। ऋग्वेद सबसे बडा वेद है।

चारो वेदो के चार उपवेद है — जैसे—ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है। यह वैद्यक अर्थात चिकित्सा ग्रन्थ है। यजुर्वेद का उपवेद धनर्वेद है। सामवेद का उपवेद गान्धव वेद है। अथववेद का उपवेद अथवेद है। इस मे शिल्प, विद्या, कला कौशल का ज्ञान है।

—ब्राह्मण ग्रन्थ—

वेदो के अर्थो को स्पष्ट करने के लिए ब्रह्मा आदि ऋषियो ने ब्राह्मण ग्रन्थो की रचना की। इनके अध्ययन से वेद मन्त्रो के अथ पर बडा प्रकाश पडता है। चारो वेदो का एक एक ब्राह्मण ग्रन्थ है।

जैसे —ऋग्वेद का ऐतरेय
यजुर्वेद का शतपथ
सामवेद का साम
अथववेद का गोपथ

इस प्रकार से ये ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

उपनिषदो के बारे मे—

यह भी वेदो की सरल व्याख्या के ग्रन्थ है। इनमे विशेष रूप से ब्रह्म विद्या का वणन है। उपनिषदो की संख्या बहुत है परन्तु इनमे विशेष ग्यारह उपनिषद हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं। ईश केन कठ प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य ऐतरेय, तैतिरीय छान्दोग्य बृहदारण्यक श्वेताश्वर।

शास्त्र अथवा दशन

शास्त्रो को ही दशन और दशनो को ही शास्त्र कहते है। ये छ हैं। इन मे समस्त सष्टि विद्या का वणन है। प्रत्येक शास्त्र के रचयिता इस प्रकार है।

पूव मीमासा—जैमिनि मुनि द्वारा रचित है।

वैशेषिक दशन—कणाद
न्याय दशन—गोतम
योग दशन पतञ्जलि
साख्य द —कपिल
वेदान्त दशन—व्यास

— स्मृतियां—

यह ग्रन्थ ऋषियो ने मनुष्य के रहन सहन खान पान पारम्परिक आचार प्रथा और व्यवहार आदि कार्यो की व्यवस्था के लिए नियम बनाये। सब से प्रची स्मति मनु स्मति है

ऐतिहासिक ग्रन्थ

रामायण इसको बने लाखो वष बनाये जाते हैं।

महाभारत यह पाच हजार वष पूव का ग्रन्थ है। इस का मल भाग महर्षि व्यास ने रचा। पीछे इस का विस्तार होता रहा है। इस मे धम राजनीति न्याय आदि समस्त विषयो पर प्रकाश डाला हुआ है।

—पुराण

सख्या मे पचास से ऊपर हैं परन्तु मौलिक रूप मे 18 ही माने जाते है। इन मे देवी देवताओ का कथाए है और बहुत सी गप्प भी भरी हुई है और भिन्न भिन्न देवताओ के विरोध की चर्चा की गई है। जैसे—शिव पुराण विष्णु पुराण का विरोधी है।

धूरी मे राम नवमी का पर्व मनाया गया

दिनाक 5 4 87 को आय समाज धूरी मे राम नवमी का उत्सव मनाया गया। इस पव का आरम्भ श्री कोहन चन्द जी के ईश्वर भक्ति के भजन से हुआ।

इस पव पर श्री वीरेन्द्र कुमार जी श्री आर डी बहल मनेजर आय सीनियर सैकण्डरी स्कूल ... राम श्याम ... मोहिल मन्त्री जिला आय सभा श्री चिरजी लाल जी प्रधान जिला आय सभा, सूय प्रकाश शास्त्री पुरोहित आय समाज धूरी तथा महाशय श्री लक्ष्मण दास जी मन्त्री आय समाज एवं प्रधान जिला आय सभा।

इन सभी वक्ताओ ने श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला और हम भी अपने जीवन को बनाने के लिए प्रेरणा दी।

फिर ... (मन्त्री आय समाज) ने कहा कि हम सब आशा करते है कि ... पूजा की ... अपने महापुरुषो की जम तिथियो और स्मारको को और भिन्न भिन्न प्रकारो से मनाना चाहिए। जो सब साधारण के लिए पथ प्रदशक बन सके आज के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के चरित्र के अध्ययन ... के लिए रामायण ... को प्रचारित करना चाहिए। ... के पद ... विशेष ... बिताना ... उद्धार ... हुन बन सके

... का ... धन्यवाद किया ...

—मन्त्री लक्ष्मण दास
मन्त्री

महाशय कृष्ण ब्लाक का उदघाटन



गत दिनो आय हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर के भवन मे महाशय कृष्ण ब्लाक का निर्माण किया गया जिसका उद्घाटन आय प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपने कर कमलो से किया। चित्र मे बाए से दाए श्री मनोहर लाल जी सरकारी लाल आय ... मनेजर स्कूल ... हरबसलाल शर्मा प्रधान स्कूल ... बलदेवराज ... संस्कृत स्कूल ... प्रधान आय प्रतिनिधि सभा पजाब, श्रीराम ... मनेजर ... स्कूल तथा आय हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर के मुख्य पत्र ... कुमार जी शर्मा।

(4 पृष्ठ का शेष)

मे ढाल सकता है। और महर्षि ने यह कर दिखाया। ससार मे भूली बिसरी वद विद्या के प्रचार—प्रसार का सारा श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है महर्षि ने इस महान काय के सम्पादन मे कितनी यातनाए सही कितने कष्ट उठाये इसका वणन करना भी कठिन है। अत सिद्ध है कि महान प्रश्नो का समाधान करने वाला महर्षि भी महामानव था। उसने अपने जीवन मे जो सकल्प लिए उन्हे पूरा कर दिखाया यही उनकी विशेषता है। प्राय लोग अपने जीवन मे शुभ सकल्प लेते ही नही और यदि लेते भी है तो उनका पूरा नही कर पाते किन्तु महर्षि ने शुभ सकल्प भी लिए और उनकी पूर्ति भी की। उनका जीवन ... प्रश्नो का सामूह ही नही था अपितु साथ मे समुचित समाधान लिए हुए था तभी वह महामानव कहलाया कवि ने ठीक ही कहा था कि यदि ससार के महामानवो को पवत की चोटियां कहा जाये तो दयानन्द सबसे ऊंची चोटी है। वह अपने नाम मे भी निराला था और काम मे भी। ऐसे महामानव को शत शत नमन।

आवश्यकता है

आय समाज रायसिंहनगर जिला श्री गंगानगर राजस्थान के लिए एक योग्य अनुभवी पुरोहित की आवश्यकता है।

भजनोपदेशक को प्राथमिकता दी जावेगी। अपनी योग्यता एव वांछित वेतन के बारे मे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने का कष्ट करें।

—श्री चन्द्र अग्रवाल मन्त्री
आर्य समाज, रायसिंह नगर राजस्थान

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से विशाल शहीद सम्मेलन सम्पन्न

आय युवक सभा लुधियाना की ओर से 22 माच 1987 को शहीद भगतसिंह राजगुरु, सुखदेव का बलिदान दिवस मनाया गया। प्रात 8 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ, यज्ञ के ब्रह्मा प सूयपाल शास्त्री एम ए थे। यज्ञाग्नि श्री बलदेव राज सेठी मन्त्री आय समाज दाल बाजार ने प्रज्वलित की एव श्री महेन्द्रपाल दुग्गल ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात पूरे पजाब से आए हुए नवयुवको का युवक सभा लुधियाना की ओर से हार्दिक स्वागत किया गया। बरनाला, फिरोजपुर, मालेरकोटला, दीनानगर अहमदगढ गोबिन्दगढ, तपा, तलवाडा समाना, सगरूर इत्यादि नगरो से भारी सख्या मे युवको ने सम्मेलन मे भाग लिया। युवको के भारी सख्या मे आने से आय समाज दाल बाजार का विशाल हाल छोटा प्रतीत हो रहा था। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री पथ्वीराज जिज्ञासु जी (दीनानगर) ने की। स्वामी नियमानन्द जी श्री रामस्वरूप मित्र, श्री देवराज वत्ता, श्री सतीश सिन्धवानी, डा सत्य भूषण वाधिया वेद प्रचार भजन मण्डली, दयानन्द भजन मण्डली, इत्यादि ने शहीदो को श्रद्धाञ्जलि भेंट की। अध्यक्षीय भाषण रोम हषक था। इस सम्मेलन मे मच सचालन का काय श्री रोशनलाल शर्मा, सयोजक आय युवक सभा पजाब कर रहे थे। सम्मेलन को सफल बनाने का श्रेय श्री महिन्द्र प्रताप आय प्रधान युवक सभा लुधियाना एव कमठ युवक सदस्यो को जाता है। सम्मेलन के पश्चात आर्य युवक सभा पजाब की आगामी मीटिंग हुई जिसमे महत्वपूण निणय लिए गए। ऋषि लगर के पश्चात पजाब के कोने 2 से आए आय नवयुवको को भाव भीनी विदाई दी गई। इस सम्मेलन की सफलता के चर्चे लुधियाना महानगर के कोने कोने मे व्याप्त हैं। स्मरण रहे कि श्री रोशनलाल जी शर्मा सयोजक आय युवक सभा पजाब के तूफानी दौरो से पजाब मे आय नवयुवको का एक सशक्त सगठन तयार हो चुका है। आय समाज को आज ऐसे सगठन की आवश्यकता है जो प्रण पण से ऋषि वाटिका को सींचे।

—सुरेश चड्ढा
सयोजक

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया अलवर (राजस्थान) का रजत जयंती महोत्सव

अरावली पर्वत उपत्यकाओ की तलहटी में नदी के किनारे स्थित राजस्थान के एक मात्र आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का रजत जयन्ती महोत्सव 24 स 31 मई 1987 में सम्पन्न होने वाला है। इस सस्था मे इस समय आय महाविद्यालय, वेद प्रचार, गौ शाला, कृषि उद्योग, उद्यान तथा योग प्रशिक्षण आदि विभाग एव महिला वानप्रस्थ आश्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं। कन्या गुरुकुल मे नि शुल्क शिक्षा प्राप्त करने वाली 50 छात्राए हैं जिनमे से 20 छात्राओ का भोजन, वस्त्र, पाठय पुस्तकें आदि का सारा भार गुरुकुल ही वहन करता है। गुरुकुल का समस्त कार्य दानी महानुभावो की सहायता से ही चलता है।

इस समय गुरुकुल की नितान्त तात्कालिक आवश्यकताए निम्न हैं महोत्सव में बृहत यज्ञ के लिए घृत, निर्माणाधीन 5 यज्ञशालाओ की पूणता का व्यय, अपूर्ण स्नानागारो की पूर्ति, दो बडी-बडी जल टकिया, अपूण हाल की पूर्ति, अपूर्ण वानप्रस्थ आश्रम की पूर्ति, आयुर्वेद फार्मेसी की स्थापना, निर्धन छात्राओ के लिए वस्त्र एव पुस्तक आदि तथा महोत्सव के अवसर पर आयोजित ऋषिलगर का व्यय।

सभी दानी महानुभावो से हमारा विनम्र निवेदन है कि इस काय के लिए अधिकाधिक आर्थिक एव अन्यान्य सामग्री की सहायता प्रदान कर ऋषि के सपनो का भारत बनाने मे सहयोग के भागी बनें। सहायता राशि अथवा सामग्री, क्रास चैक, ड्राफ्ट मनीआडर से आचाय के नाम से शीघ्र भेज कर अनुग्रहीत करें।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रस जालन्धर स मुद्रित होकर आय मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न N.W/J.L 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 3. 13 वैसाख सम्वत् 2044 तदानुसार 26 अप्रैल 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

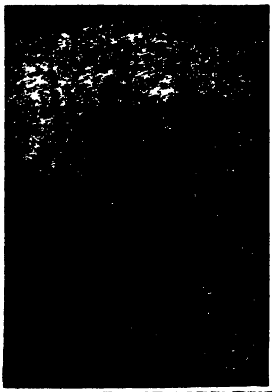
जिनका जन्मदिन २६ अप्रैल को है

ज्योति पुंज मुनिवर पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी

लेखक—स्व. श्री पण्डित देव प्रकाश जी भू पू. आचार्य अरबी संस्कृत विद्यालय गण्डासिंह वाला अमृतसर

ऋषि दयानन्द के अन्तिम समय के दृश्य से प्रभावित होकर अपने गुरुदेव की दिव्य ज्योति से प्रकाश प्राप्त कर, अपने जीवन को ऋषिवर का पथानुगामी बना कर जो आदर्श हमारे समक्ष गुरुदत्त जी ने उपस्थित किया है वह नि सन्देह हमारे पथ प्रदर्शन के लिए एक प्रकाश स्तम्भ है। यद्यपि यह ज्योतिपुंज अधिक समय तक हमारे बीच नही रह सका तो भी जितना समय वह हमारे मध्य रहा और जो आदर्श उन्होने हमारे लिए उपस्थित किए वह हमारे जीवन को उच्च बनाने के लिए पर्याप्त हैं। अत दयानन्द के इस अनन्य भक्त से भगवत् भक्ति का प्रसाद लेकर उस भक्त वत्सल भगवान का हमे सच्चा भक्त बनकर अपने मनुष्य जीवन के उद्देश्य को सफल करना चाहिए.

(देव प्रकाश)



जन्म स्थान

प गुरुदत्त जी का जन्म मुलतान नगर मे 26 अप्रैल सन् 1864 के दिन हुआ। आपके पिता का नाम रामकिशन सरदाना था। जन्म का नाम मूला था। छोटी आयु मे ही आपका विचार भक्ति भाव की ओर प्रवृत्त था। इसी कारण लोग उन्हें बैरागी कह कर पुकारते थे। 12 वर्ष की आयु मे गुरुदत्त अपने पिता के साथ हरिद्वार गये। वहा स्वामी राधेश्याम ने बैरागी का नाम गुरुदित्ता रख दिया, जब ज्ञान सम्पन्नता आई, तो गुरुदित्ता मे संशोधन करके अपना नाम गुरुदत्त रखा। फिर आपकी विद्या पाण्डित्य ईश्वर भक्ति और प्रतिभा को देख कर आपके नाम के साथ पण्डित का आदर सूचक शब्द लगाया जाने लगा। सन् 1881 में गुरुदत्त ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की, आपकी तीव्र स्मरण शक्ति उनके पूर्व जन्म के विद्या प्रिय होने का परिचय दे रही थी। जिस पाठ को एक बार सुन लेते, वह आपके मस्तिष्क में सदा के लिए अंकित हो जाता। इसके साथ ही आपकी शारीरिक शक्ति भी बहुत अच्छी थी। आप नित्य प्रति व्या-याम और प्राणायाम का भी अभ्यास करते थे।

कही से गुरुदत्त जी के हाथ ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पड गई। उसके पढने से ही आपके मन मे संस्कृत के अध्ययन करने का शौक पैदा हो गया। और उन्होंने संस्कृत पढना आरम्भ कर दिया। कहते हैं कि गुरुदत्त मन्त्री आर्य समाज मुलतान के पास गए और उसे कहा कि या तो आप मेरे लिए अष्टाध्यायी तथा वेदो के पढने का प्रबन्ध करें, अन्यथा इनके तिरस्कार होने की घोषणा करें, कहते हैं मुलतान आर्य समाज ने उनके पढने के लिए एक पण्डित जी को नियुक्त कर दिया। परन्तु उस पण्डित जी से उनकी सन्तुष्टि न हुई और उन्होंने अपने पढने का मार्ग अपने आप ही प्रशस्त कर लिया 20 जून 1880के दिन आप आर्य समाज के सदस्य भी बन गए।

सन् 1883 मे गुरुदत्त जी ने लाहौर से एस ए की परीक्षा पास की। आपको पश्चिमी विद्वानो के दर्शन पढने का बहुत शौक था। सन 1883 ई मे उन्होंने गम्भीर विषयो पर चर्चा करने के लिए एक वाद विवाद समिति बनाई। जिसके वह मन्त्री थे। पहले आप वाम पक्ष लेते थे, इससे विद्यार्थियो पर बुरा प्रभाव पडता था। परन्तु सन 1883 ई के अन्त में आपने आर्य सिद्धान्तो की पुष्टि करनी आरम्भ कर दी। जिससे नव-युवको पर अच्छा प्रभाव पडने लगा। गुरुदत्त जी ने विज्ञान के बल से ही ईश्वर की सत्ता को समझाना आरम्भ कर दिया था। जिससे युवको में आस्तिकता का संचार होता था। इसी वर्ष प गुरु-दत्त जी ने कुछ मित्रो को साथ लेकर 'दी रीजन रेटर आफ आर्यावर्त" नाम के समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया।

ऋषि दयानन्द के दर्शन

सन 1883 ई अक्टूबर मास मे ऋषि दयानन्द जी के भयानक रोगी होने का समाचार सुनकर लाहौर आर्य समाज ने ला जीवनदास जी और पण्डित गुरु-दत्त जी को स्वामी जी की सेवा करने के लिए अजमेर भेजा। उस समय गुरुदत्त जी की आयु 19 वर्ष की थी।

वहा पर ऋषि के अन्त समय के दृश्य को देख कर प गुरुदत्त जी चकित रह गए उन्होंने ऋषि के ब्रह्मचर्य के बल की योग की महिमा को और ईश्वर विश्वास के गौरव को देखा जिससे प गुरुदत्त जी ने नए जीवन को धारण कर लिया। और ऋषि का परम भक्त होकर लाहौर लौटे।

"डी. ए. वी कालेज"

ऋषि दयानन्द का निधन होते ही चारो ओर से यह आवाज आने लगी कि ऋषि की स्मृति मे कोई स्मारक बनाना चाहिए। इस पर सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि ऋषि दयानन्द के स्मा-रक रूप एक डी ए वी कालेज की स्थापना लाहौर मे की जाए।

पण्डित गुरुदत्त जी डी ए वी. कालेज के कर्णधारो मे से एक थे। डी. ए वी कालेज के लिए धन एकत्रित करने और वार्षिक उत्सवो पर अपील करने का कार्य भी प गुरुदत्त जी के सुपुर्द था।

सन् 1886 में आपने एम ए की परीक्षा दी। उसमे जितने अंक प गुरुदत्त जी ने प्राप्त किए। उतने अंक इससे पूर्व किसी विद्यार्थी ने प्राप्त नहीं किए थे। एम ए मे उत्तीर्ण होने के पश्चात् दो वर्ष पर्यन्त गवर्नमैंट कालेज मे आप प्रोफैसर भी रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों की कुछ समस्याएं और समाधान

लेखक—डा. श्री ओमप्रकाश भूषण श्री भारत भवन
828 [illegible] आर्य समाज मार्ग, शकूरबस्ती, दिल्ली-34

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सलाहकार समिति
के
केन्द्रीय सरकार को कुछ न्यायपूर्ण सुझाव
तथा
सलाहकार समिति की सेवा मे मेरा कुछ निवेदन
एवं
सत्याग्रहियो को शोलापुर सत्याग्रह समिति की
प्रकाशित विज्ञप्ति में कुछ नामों की सूचनाएं।

पाठक महानुभाव !

मैं भी हैदराबाद सत्याग्रह के तृतीय सर्वाधिकारी श्री खुशहाल चन्द जी (आनन्द स्वामी जी) के साथ दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर तथा दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौर के सोलह विद्यार्थियो सहित कुल एक सौ चौंसठ व्यक्तियो के जत्थे मे दिनाक 20 2-39 को आर्य समाज मन्दिर अनारकली लाहौर में आर्य सम्मेलन शोलापुर के प्रधान महाराष्ट्रिय नेता श्री अणे जी महोदय से आशीर्वाद लेकर रात्रि 8 बजे की बम्बई की डाक गाडी से शोलापुर के लिए प्रस्थान किया था। यह जत्था दिनाक 22 फरवरी 1939 को शहर के कपड़ों के सुप्रसिद्ध मिल मालिक सिख आर्य समाजी सरदार गुरमुख सिह (अमृतसर) की बम्बई मे समुद्र के किनारे पर बनी हुई भव्य कोठी मे 5-6 दिन ठहर कर बम्बई नगर मे प्रचार करता हुआ दिनाक 26 2-1939 को शोलापुर पहुच गया और शोलापुर में भव्य स्वागत हुआ।

मैंने जत्थे मे जाने से पूर्व अपनी एक मात्र बड़ी बहन से आशीर्वाद प्राप्त किया।

क्योकि मैं अपने माता-पिता की (एक पुत्र और एक पुत्री) दो ही सन्तान थे। माता का बचपन मे ही स्वर्गवास हो गया था और पिता जी सन्यासी हो कर आर्य समाज के ही प्रचार कार्य मे लगे हुए थे। अत मुझ अपनी बहन श्रीमती विद्यावती जी के बुलाने पर सत्याग्रह मे जाने से पूर्व उनका आशीर्वाद लेना भी आवश्यक था। बहन जी से मैं 17 फरवरी 1939 को आशीर्वाद लेने मण्डी मीदडवाहा (जिला फिरोजपुर) गया। बहन जी ने पहले तो आंसू भर कर मुझे यह कहा कि भाई तू मेरा एक ही तो भाई है। एक तो आजकल अंग्रेजो का राज्य है और दूसरे सुना है निजाम हैदराबाद औरंगजेब मुगल बादशाह की तरह हिन्दुओ के साथ बहुत बुरा व्यवहार कर रहा है। अंग्रेजी शासन का उसके सिर पर हाथ है। इसलिए भाई तुम ना जाओ तो अच्छा है और भाई यदि तुमने आर्य समाज के नेताओ को वचन दे दिया है तो मैं तुमको अपने वचन से भी मुकराना नही चाहती, परन्तु मुझे जेल से इधर-उधर काम करते हुए किसी तरह किसी ना किसी के हाथ अपनी कुशलता का पत्र अवश्य लिखते रहना और इस धर्म युद्ध मे विजय प्राप्त करके आना यह कह कर बहन जी ने आर्य समाज मीदडवाहा मे दिनाक 18 फरवरी 1939 मे विदाई देते समय मुझे तिलक लगाकर आशीर्वाद दिया और आर्य समाज ने मुझे रुपये एक सौ ग्यारह चार आने (111-25) केवल की थैली एकत्रित करके सत्याग्रह के लिए भेंट की इस प्रकार मैं अपनी एक मात्र बड़ी बहन जी से आशीर्वाद लेकर दिनाक 19 फरवरी 1939 को वापिस लाहौर पहुच कर दिनाक 20 फरवरी 1939 को चलने वाले जत्थे मे सम्मिलित हो गया था।

2—सत्याग्रह से पूर्व प्रचार कार्य तथा हैदराबाद के लिए सत्याग्रह।

लाहौर के विद्यार्थियो ने सत्याग्रह करने से पहले शोलापुर कार्यालय के आदेश पर हम ने शोलापुर के निकटवर्ती ग्रामो और नगरो आदि मे प्रचार कार्य किया और बाद मे तृतीय सर्वाधिकार के साथ सत्याग्रह के लिए प्रस्थान किया।

इस प्रकार हमारा जत्था 20-2-1939 को लाहौर से प्रस्थान करके बम्बई आदि मे प्रचार करता हुआ दिनाक 26-2 1939 को शोलापुर पहुच गया और शोलापुर कार्यालय ने दिनाक 27 फरवरी 1939 से 20 मार्च तक हमारे जत्थे के कुछ विद्यार्थियो को शोलापुर के निकटवर्ती ग्रामो शहर कस्बो मे प्रचार कार्य करने का निर्देश दिया। यह समाचार कार्यालय के द्वारा दिनाक 27-2-1939 की विज्ञप्ति न 15 मे भी प्रकाशित हुआ था। जिस का उल्लेख मैंने आगे पत्र कर दिया है।

इस प्रकार शोलापुर कार्यालय ने हम विद्यार्थियो को सत्याग्रह मे जाने से पूर्व तीन जत्थो मे शोलापुर के निकटवर्ती ग्रामो आदि मे भेज दिया। हम लोग प्रचार करके 20 मार्च 1939 को कार्यालय के आदेश के अनुसार वापिस शोलापुर आ गए और दिनाक 22 मार्च 1939 को तृतीय सेवा अधिकारी श्री खुशहाल चन्द जी (आनन्द स्वामी जी) 164 (एक सौ चौंसठ) सत्याग्रहियो के जत्थे के साथ हैदराबाद जाने के लिए विदा हो गए, परन्तु हम लोगो को हैदराबाद पहुचने से पूर्व गुलबर्गा स्टेशन पर ही निजाम पुलिस ने बन्दी बना कर जेल भेज दिया और गुलबर्गा न्यायालय से इस जत्थे के सत्याग्रहियो को डेढ वर्ष की कठोर सजा दी गई। इनमें से दस 2 विद्यार्थियो ने प्रचार करते हुए पहले ही सत्याग्रह कर दिया था।

इसके बाद जेल अधिकारियो ने धीरे-2 हम लोगो को हैदराबाद आदि विभिन्न स्थानो की जेलो मे बाटना शुरू कर दिया। मुझे गुलबर्गा सैन्ट्रल जेलो मे अनेक व्यक्तियो मे से पटटी के बयोवृद्ध श्री नन्दू शाह जी, श्री प बुद्धदेव जी मीरपुरी, द्विवेदी, श्री ज्ञानचन्द जी, श्री दिगम्बर राव वकील, श्री शेषराव वकील, लाला दीवान चन्द हनु, श्री निवरती रेड्डी वकील, श्री महता रामचन्द्र जी शास्त्री, श्री प भूदेव जी शास्त्री गुरुकुल ज्वालापुर, श्री प वाचस्पति जी गुरुकुल अयोध्या, श्री प नरदेव जी गुरुकुल वृन्दावन, श्री राजेन्द्र पाल जी (स्यालकोट) श्री देवदत्त जी (लुधियाना) आदि के साथ विशेष सम्पर्क होता रहा।

3—जेलों से प्रमाण-पत्र लेने मे कठिनाई।

1—मेरे अपने पास गुलबर्गा और हैदराबाद सैन्ट्रल जल के कैदी नम्बर, 2—हैदराबाद जेल से बाहर काम करते हुए की फोटो, 3—पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर का पूर्वनाम ब्रह्मदत्त से भारत भूषण नाम परिवर्तन करने का प्रमाण-पत्र और 4—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा 5—आर्य प्रादेशिक प्रादेशिक सभा का सत्याग्रही होने का प्रमाण-पत्र (प्रशस्ति-पत्र) के तथा 6—शोलापुर विज्ञप्ति मे प्रकाशित नाम आदि सभी प्रमाण होते हुए भी मुझे गुलबर्गा और हैदराबाद सैन्ट्रल जेलों से काफी दिनो में रजिस्टर्ड ए. डी. की डाक से प्रमाण-पत्र प्राप्त करने में कठिनाई मिली थी।

4—स्वतन्त्रता सम्मानित दिल्ली राज्य से प्रमाणिकता—

गृह—मन्त्रालय के केवल अंग्रेजी भाषा में प्राप्त प्रार्थना पत्र के अनुसार मैंने [illegible] के प्रश्नोत्तरों की खाना-पूर्ति आदि करके दिनाक 26 जून 1986 को दिल्ली प्रशासन तथा गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी विभाग को रजिस्टर्ड ए डी की डाक से अन्तिम घोषित तिथि से पूर्व ही प्रार्थना पत्र भेज दिए थे। दिल्ली प्रशासन से तो मुझे दूसरे ही दिन दिनाक 26 जून 1986 का अंकित पत्र द्वारा उत्तर मिल गया था, किन्तु गृहमन्त्रालय से मुझे दिनाक 17 नवम्बर 1986 के पत्र द्वारा दिल्ली प्रशासन से प्रमाणित करने का निर्देश प्राप्त हुआ। मेरे पूर्व पत्र व्यवहार के आधार पर दिल्ली प्रशासन ने दिनाक 17 दिसम्बर 1986 को मुझे स्वतन्त्रता सम्मान पेंशन का अधिकारी होने का गृहमन्त्रालय को पत्र भेज दिया और उस पत्र की एक प्रति मुझे भी दी और राजकीय समारोहो आदि के निमन्त्रण-पत्र भी दिल्ली प्रशासन ने भेजने आरम्भ कर दिए।

5—गृहमन्त्रालय से अन्तिम तौर पर प्रमाणित होने मे कठिनाई हो रही है सभा शीघ्र ध्यान देवे।

मैं समझता था कि गृहमन्त्रालय अपने दिनाक 17 नवम्बर 1986 के पत्र के आधार पर दिल्ली प्रशासन द्वारा प्रमाणित किए जाने के पश्चात् स्वत ही प्रमाणित कर देगा, परन्तु अब सुना है कि गृहमन्त्रालय सत्याग्रहियो से सम्बन्धित जेलो से आए हुए प्रमाण पत्रो को अपनी ओर से जेल अधिकारियो से प्रमाणित करने हेतु सीधा उत्तर मगवाता है और यह भी सुना है कि गृहमन्त्रालय ने हैदराबाद की जेलो के अधिकारियो को अपने द्वारा भेजे हुए प्रमाण-पत्रो को पुनः प्रमाणित करके गृहमन्त्रालय को सीधा उत्तर भेजने हेतु एक परिपत्र (सरक्यूलर) भेजा हुआ भी है। अतः अब वह उत्तर जेल अधिकारी न जाने गृहमन्त्रालय को कब तक भेजेंगे? इसी लिए जब तक गृहमन्त्रालय को जेल अधिकारियो द्वारा पुन प्रमाणित करने का सीधा उत्तर नही मिल जाता, तब तक गृहमन्त्रालय सम्बन्धित राज्यो से भी प्रमाणित आर्य सत्याग्रहियो को अन्तिम रूप से प्रमाणित करके पेंशन आदि देना स्वीकार नहीं करेगा। अतः सभा की सलाहकार समिति को इस समस्या की ओर भी शीघ्र ध्यान देने की कृपा करनी चाहिए ताकि अफसरशाही और दफ्तरशाही के द्वारा किए जा रहे पत्र-व्यवहार में देरी पर देरी न होती जाए।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

गुरुकुल काँगड़ी का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह इस बार 8 अप्रैल से 14 अप्रैल तक हुआ। गुरुकुल का वार्षिकोत्सव कोई वार्षिकोत्सव न था केवल यज्ञ किया गया जिसकी पूर्णाहुति 14 अप्रैल को डाली गई। श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक यज्ञ के ब्रह्मा थे। उन्होंने अपने समापन भाषण में गुरुकुल की स्थिति के विषय में जो कुछ कहा मैं उसे यहां लिखना नहीं चाहता इतना ही कह सकता हूं कि स्थिति अत्यन्त निराशाजनक थी। जिन व्यक्तियों के हाथ में इस समय गुरुकुल का प्रबन्ध है उन्होंने इस संस्था का सत्यानाश करके रख दिया है। गुरुकुल के इतिहास में यह पहली बार है कि वेदारम्भ संस्कार नहीं हुआ। जिन दिनों गुरुकुल का प्रबन्ध उन तपस्वी त्यागी महानुभावों के हाथ में हुआ करता था जो निःशुल्क सेवा करते थे उन दिनों गुरुकुल के उत्सव पर बड़ी रौनक भी हुआ करती थी और लोग वहां अपने बच्चों को प्रविष्ट कराने के लिए भारी संख्या में भेजा करते थे। अब जिनके हाथ में उसका प्रबन्ध है उन में से कई दो-दो और अढ़ाई-2 हजार रुपया मासिक वेतन लेते हैं, लेकिन गुरुकुल की ओर उनका कोई ध्यान नहीं है। यही कारण है कि इस बार वेदारम्भ संस्कार ही नहीं हुआ। इस सारी स्थिति को देखते हुए गुरुकुल की प्रबन्ध व्यवस्था में मूल-चूल परिवर्तन किया जा रहा है। आर्य विद्या सभा भी इस विषय पर शीघ्र विचार करेगी।

जहां तक गुरुकुल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह का सम्बन्ध है वह बहुत सफल रहा है। गुरुकुल के वर्तमान कुलपति अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध से उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह को दीक्षान्त भाषण देने के लिए वहां ले आये उन्होंने जहां गुरुकुल की हार्दिक प्रशंसा की वहां उसकी कई योजनाओं के लिए लगभग 70 लाख रुपए का अनुदान भी दिया। इसका श्रेय कुलपति महोदय को ही मिलता है।

आर्य जगत् और गुरुकुल के हितैषियों के लिए सबसे अधिक सुखद और सन्तोषजनक समाचार यह है कि श्री पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार जो इस समय तक बड़ी योग्यता से गुरुकुल विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा का कार्यभार सम्भालते रहे हैं वह अब इस पद से हट गए हैं उनका स्वास्थ्य अब ऐसा नहीं कि वह अब कोई और बोझ अपने ऊपर उठा सकें। उनके स्थान पर श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट गुरुकुल विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा निर्वाचित हुए हैं। इस पद पर उनसे अधिक उपयोगी और योग्य व्यक्ति और कोई न मिल सकता था। इस समय तक उन्होंने गुरुकुल की जो सेवा की है वह अत्यन्त सराहनीय है और गुरुकुल के इतिहास में स्वर्णमय अक्षरों में लिखी जाएगी। श्री मरवाह जी को इस पद पर आरूढ़ कराने का श्रेय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को है। उन्होंने न केवल मरवाह जी के नाम का प्रस्ताव किया अपितु यह भी देखा कि वह सर्व सम्मति से निर्वाचित हो जाएं। इन दोनों महानुभावों के सहयोग से गुरुकुल की स्थिति बदल सकती है। हमें आशा रखनी चाहिए कि इस विषय में इन दोनों का सहयोग हमें भी मिलता रहेगा।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि गुरुकुल की स्थिति इतनी सोचनीय है कि यदि इसे सम्भाला न गया तो इसे चलाना कठिन हो जाएगा। इस की प्रबन्धकर्तृ सभा आर्य विद्या सभा को बड़ी गम्भीरता से इस पर विचार करना चाहिए। गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाज की एक मात्र ऐसी संस्था है जो वैदिक विचारों के प्रचार व प्रसार की एक बहुत बड़ी केन्द्र बन सकती है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि इसके भविष्य की ओर ध्यान दिया जाए और ऐसी योजना बनाई जाए कि यह देश का एक प्रमुख विश्वविद्यालय बन सके। गुरुकुल की पुण्य भूमि जहां श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल को प्रारम्भ किया था। इस समय एक दयनीय स्थिति में है। गंगा धीरे-धीरे उसकी भूमि को खा रही है और डर है कि जो भवन वहां बाकी रह गए हैं किसी दिन वह भी बह जाएं। इस लिए अब वहां कोई नई संस्था प्रारम्भ करने पर विचार किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने वहां लगभग 30-40 हजार वृक्ष लगाने का निश्चय किया है और हमने उसकी अनुमति दे दी है। सरकार कहती है कि पांच वर्ष के पश्चात् इन वृक्षों के साथ यह भूमि हमें वापिस दे दी जाएगी। हम यह भी प्रयास कर रहे हैं कि वहां एक अन्तर्राष्ट्रीय योग संस्थान प्रारम्भ किया जा सके यदि इसमें कुछ सफलता मिली तो आर्य जनता को सूचित कर दिया जाएगा।

—वीरेन्द्र

भगवान राम से लेकर राजीव गांधी तक

भगवान राम और राजीव गांधी इन दोनों में लगभग दस हजार वर्ष की दूरी है। इसलिए इन दोनों में मुकाबला करना निरर्थक है। वैसे भी राम और राजीव गांधी में कोई मुकाबला नहीं हो सकता। कहां राजा भोज और कहां गंगवा तेली। फिर भी यदि मैं इन दोनों के बारे में कुछ लिखने लगा हूं तो केवल इसलिए कि इन दोनों के जीवन से हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे देश में जो हालात आज पैदा हो रहे हैं उसका कारण क्या है। महापुरुषों का जीवन उनके बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। उससे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। कहीं ऐसा न हो कि कोई गलतफहमी हो। महापुरुष से मेरा अभिप्राय केवल भगवान राम है। राजीव गांधी नहीं। राजीव गांधी भी इतिहास में अपने लिए कोई स्थान बना सकेंगे या नहीं इसका उत्तर तो समय ही देगा। जिस रूप में वह अब सामने आ रहे हैं, वह तो अत्यन्त निराशाजनक है।

आजकल दूरदर्शन पर रामायण दिखाई जा रही है। गत रविवार को जो कुछ दिखाया गया है उससे हम एक शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। मै चाहता हूं कि मेरे देशवासी जरा इस पर गम्भीरता से विचार करें। उन्हें पता चल जाएगा कि हम आज जिस दल-दल में फंस गए हैं उसका कारण क्या है? रामायण में दिखाया गया है कि एक दिन महाराज दशरथ ने दर्पण में अपना चेहरा देखा तो उन्हें अपने सिर में और दाढ़ी में कुछ सफेद बाल दिखाई दिए। उन्होंने समझा कि अब वह समय आ गया है अब उन्हें राजपाट छोड़ कर शेष जीवन प्रभु भक्ति में व्यतीत करना चाहिए और जो गलतियां इस समय तक उन्होंने अपने जीवन में की हैं उनका प्रायश्चित करना चाहिए। इसलिए उन्हें अपने राजकाज का बोझ अपने बड़े बेटे राम के कन्धों पर डाल कर वानप्रस्थ आश्रम और उसके पश्चात् संन्यास की ओर कदम उठाना चाहिए।

यह सोचकर वह अपने राजगुरु महर्षि वशिष्ठ की सेवा में उपस्थित हुए और अपने दिल की बात उनसे कह दी। मुनि वशिष्ठ ने उनसे सहमति व्यक्त करते हुए उन्हें परामर्श दिया कि वह पहले अपनी राज्यसभा बुलाएं जिसमें अपने मन्त्रियों के अतिरिक्त पण्डितों, विद्वानों और अपनी प्रजा के प्रमुख नागरिकों को भी बुलाएं। उनसे पूछें इस विषय में उन की क्या राय है। वे इसकी अनुमति दे दें तो राम का राज्याभिषेक कर दिया जाए।

महर्षि वशिष्ठ के अनुसार महाराज दशरथ ने अपनी राज्यसभा बुलाई और उनके सामने प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सबने एक ही स्वर से महाराज दशरथ के प्रस्ताव का समर्थन किया। और निर्णय किया गया कि राम को दरबार में बुलाया जाए और उन्हें इस निर्णय से अवगत किया जाए और पहले महर्षि वशिष्ठ ने राज्यसभा में बैठे मन्त्रियों और अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों से पूछा कि वह राम को यह काम क्यों सौंपना चाहते हैं। किसी ने कहा कि वह पूरी तरह इसके योग्य हैं किसी ने कहा कि वह शूरवीर और साहसी हैं। उनके हाथ में हम पूरी तरह सुरक्षित हैं। किसी ने कहा वह बहुत कृपालु हैं और अपनी प्रजा से प्यार करते हैं। सारांश यह कि जो भी उठा उसने राम के पक्ष में ही कुछ कहा और लगभग सभी इस बात से सहमत थे कि श्रीराम का राज्याभिषेक कर दिया जाए। (शेष आगामी अंक में पढ़ें)।

—वीरेन्द्र

जन्म-मरण की उलझन—१२

जीवन ज्योति

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

(12 अप्रैल से आगे)

मुण्डक उपनिषद् मे विद्या के दो भेदों को परा और अपरा के नाम से स्पष्ट किया गया है। जैसे कि—द्वे विद्ये वेदितव्ये। इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च। तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद.. । अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ॥1,1,4,5 यजुर्वेद मे इसी को विद्या-अविद्या के नाम से कहा गया है। मुण्डक मे अपरा विद्या सामान्य अक्षर ज्ञान के लिए आया है और परा विद्या अध्यात्म ज्ञान का वाचक है। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते 1,1,5 भारतीय दर्शन आदि शास्त्रो मे विद्या ज्ञान का जो महत्व तथा वहां जो उसके विशेषणवाचक शब्द आए हैं, उन से भी यही प्रमाणित होता है। तभी तो कहा है—तत्त्वज्ञानान्नि.श्रेयसम्—न्याय, वैशेषिक। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। ज्ञानान्मुक्तिः—सांख्य 3,23। विद्या हि का ब्रूहि गमप्रदा या—आचार्य शंकर। मनुस्मृति मे विद्या के महत्व को सामने रख कर ही धर्म के दस लक्षणो मे विद्या को एक प्रतिष्ठित स्थान दिया गया है। मनुस्मृति मे अनेकत्र विद्या शब्द प्राय अध्यात्म ज्ञान के अर्थ मे ही प्रयुक्त किया गया है। जैसे कि विद्यातपोभ्या भूतात्मा 5,109—सभी प्राणियो की आत्मा आत्मज्ञान और योगाभ्यास से संस्कृत होती है।

> सर्वेषामपि चैतेषामात्मज्ञान परं स्मृतम्।
> तद्ध्यग्र्य सर्व विद्याना प्राप्यते ह्यमृत तत 12,85॥

अन्य सब की अपेक्षा आत्म सम्बन्धी ज्ञान सर्वोत्कृष्ट है और वह ही सारी विद्याओ मे से प्रमुख है, क्योंकि उसी से ही अमृत की प्राप्ति होती है।

इसी लिए ही आत्म ज्ञान के महत्व को बताते हुए कहा गया है, कि 'अयन्तु परमो धर्मो यद् योगेनात्मदर्शनम्' याज्ञवल्क्य स्मृति 1,8—योग द्वारा आत्म-दर्शन करना परम धर्म (कर्त्तव्य) है। क्योंकि यजुर्वेद मे बताया गया है, कि ऐसा करके आत्मज्ञान द्वारा ही व्यक्ति मृत्यु को पार करके अमृतत्व को प्राप्त करता है। मृत्यु से बचने और अमरत्व प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग नही है।

> वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्।
> तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥31,18

आत्म दर्शन के लिए आत्मज्ञान ही प्रकृष्ट और प्रथम साधन है, जिस के लिए योग आदि अध्यात्म शास्त्र अत्यन्त सहायक हैं।

अत' 'बीति ताहि बिसार के आगे की सुध ले', के अनुसार अपने आपे के कल्याण के लिए अब तो अवश्य ही प्रयास आरम्भ कर देना चाहिए, फिर न जाने ऐसा अवसर कब मिले। क्योकि केवल विचारशील मानव ही नही, अपितु प्रत्येक प्राणी लम्बे से लम्बे जीवन की कामना ही नही करता, अपितु इसके साथ सदा जीने के लिए यथा सम्भव हर प्रयास करता है। इसी का दूसरा नाम अमरता है। जिस को प्राप्ति के लिए अनेको की अनेक कथायें प्रसिद्ध हैं। कई प्रकार के यज्ञो, मन्त्रो, जपो, सिद्धियो, तपो, योगो, औषधियो की यत्र-तत्र-सर्वत्र चर्चा प्राप्त होती है। पर अविनाशी आत्मा को अपने कर्मों के अनुसार जो शरीर मिलता है, वह जहा नाशवान है, वहा उस के कारण रूप कर्म भी सीमित हैं। फिर उन कर्मों का फल (आयु) असीमित कैसे हो सकता है।

जब प्रत्येक प्रयास करने पर भी जीने की इच्छा पूर्ण होती हुई दिखाई नही देती, तो व्यक्ति अपने आप को अमर बनाने के लिए अनेक प्रकार के क्रिया कलाप करता है। एतदर्थ विविध वस्तुओ का दान करता है, भवन बनवाता है, पुस्तको मे अपनी चर्चा लाने का प्रयास करता है, और कुछ नही तो पहाडो, पत्थरो, ऐतिहासिक शिलाओ, भवनो, वस्तुओ तथा स्मारको पर ही अपना नाम अंकित करने की धृष्टता करता है, क्योंकि वे अपने नाम को अपना आपा समझते है।

सदा न जी सकने की अपनी असमर्थता के कारण अपने प्रतिनिधि के रूप मे अपने पुत्र-पौत्रो को विराजमान अनुभव करके व्यक्ति अपने आप को ही उस रूप मे जीता हुआ समझता है। अपने आपे का ही दूसरा नाम पुत्र है, क्योंकि वहा वह अपने यश, धन, सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता है, वहां उसके शरीर और विचार आदि के रूप मे भी अपना अंश ही होता है। तभी तो कहा है—

> अंगादंगात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे।
> आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम् ॥
> शतपथ ब्राह्मण 14,9,4,26

तू मेरे अंग-अंग और हृदय से प्रकट हुआ है। इसी अपने पन एवं आत्मीयता के कारण पुत्र की कामना वैसी ही स्वाभाविक है, जैसी कि जीने की अभिलाषा क्योंकि पुत्र के रूप में अपना रूप और उसके द्वारा अपने विचारो की पूर्ति होती है। तभी तो शतपथकार ने कहा है—

> एषा वा आशीः, जीवेयम्, प्रजा मे स्यादिति श्रियं गच्छेयमिति, श्री हि पशवः।
> तदेताभ्यामेवैतदाशीर्भ्यो सर्वमाप्तम् शतपथ 1,8,1,36,
> जीवन् हि पूर्वमिष्ट्वाथापर यजते 1,8,1,30—जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति। यस्य हि प्रजा, भवत्ययम् लोकमात्मनैत्यथास्मिल्लोके प्रजा यजते 1,8,1,31, यस्य प्रजा भवत्येक आत्मना भवत्यथोत दशधा प्रजया ह्रियमाणाते 1,8.1,34

प्रत्येक स्वाभाविक रूप से यह चाहता है, कि मैं जीऊ, मेरी सन्तान हो, धन—सम्पत्ति वाला बनू, क्योकि इन इच्छाओ की पूर्ति से ही वह अपने जीवन को पूर्ण समझता है। सन्तान को माध्यम से आगे से आगे अधिक रूप मे वह धार्मिक कृत्यो को करने मे समर्थ होता है। उन के फलस्वरूप तथा पुत्रवान होने से स्वर्ग को प्राप्त करता है।

इस प्रकार जीवन एक इच्छाओं का समूह तथा उनका मूर्त रूप है। जब कभी कोई व्यक्ति इच्छा और प्रकट करता है तो वह कहता है—

> अग्ने व्रतानिपते व्रतपते, तत्पते—
> मवीवमिन्द्र इन्द्रिय बलमस्मान्
> राधो मघवान: सचन्ताम्।
> अस्माक सन्त्वाशिषः सत्या नः
> सन्त्वाशिष: इत्याशिषमाशास्ते ॥
> शतपथ 1,8,1,42

हे परम ऐश्वर्यवान परमात्मन ? मुझे इन्द्रियों की शक्ति से पूर्ण करो अर्थात् मेरा शरीर स्वस्थ हो। हमारे पास धन-ऐश्वर्य हो, हमारी इच्छाए सत्य हो, पूर्ण हो। व्यक्ति की सभी इच्छाओ मे से जीने की इच्छा सब से प्रबल है। उसी के कारण अन्य इच्छाए चरितार्थ होती हैं। जीने की चाहना का ही दूसरा नाम अमरता है। शरीर के मरण धर्मा होने से अपने आपे के न होने पर अपने नाम अथवा अपने प्रतिनिधि रूप पुत्र—पौत्र के द्वारा इस अमरता की पूर्ति होती है।

अत: योग्य सन्तान का निर्माण और सत्कर्मों से यश की प्राप्ति मे जहा किसी के जीवन की सार्थकता है, वहा यही उस की अमरता है और यही किसी का सच्चा स्मारक है। अत ऐसे अवसर पर जो व्यक्ति अपना या अपनो का कोई स्मारक बनाने का विचार रखते हैं। उनके लिए यह एक सन्तोष का आधार है और हर व्यक्ति की अमरता की चाह का एक सार्थक रूप है।

धर्म की परिभाषा

धर्म को एक वचन रहने दो-बहुवचन मत बनाओ—
वह धर्म ही क्या—जो दूसरे धर्म से नफरत करना सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो इन्सान को इन्सान से लड़ाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो मनुष्य जाति को कई सम्प्रदायो मे बांटता हो।
वह धर्म ही क्या—जो देश की एकता को हानि पहुचाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो प्रेम करना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो पति, पत्नी और बच्चो मे झगड़ा पैदा करता हो।
वह धर्म ही क्या—जो बजुर्गों का आदर करना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो प्रभु की बनाई हुई हर वस्तु से प्यार करना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो महापुरुषो मे श्रद्धा पैदा न करता हो।
वह धर्म ही क्या—जो एक ईश्वर को न मानता हो।
वह धर्म ही क्या—जो सेवा की भावना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो हिंसा सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो भूखे को रोटी खिलाना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो दूसरे के दु ख को अपना दुख समझना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो अपनी पुरातन संस्कृति का सन्मान करना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो मनुष्य को चरित्र वान न बनाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो सत्य को ग्रहण करना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो सुख एव दु:ख में भेद करना सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो न्याय करना न सिखाता हो।
वह धर्म ही क्या—जो कर्म करना न सिखाता हो।

—डा सत्यभूषण [illegible]
[illegible]-लुधियाना-3

पंजाब की समस्या फोड़े का रिसाव

लेखिका—डा पुष्पवती जी आचार्या, मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

समाचार पत्र हाथ मे लेते ही एक जलती हुई घटना पढने को मिलती है और हृदय में एक गहरी टीस के साथ समाचार पत्र हाथ से छूट जाता है। मस्तिष्क कुछ सोचने को विवश होता है, मन कुछ करने को तडप उठता है। ओह ! पचनन्द की गौरवमय भूमि, तक्षशिला का विकास स्थल, पाणिनी मुनि की ज्ञान ज्योति का प्रसार क्षेत्र, लाजपतराय, भगतसिंह, श्रद्धानन्द, हसराज जी कर्मयोगियो की तपोभूमि और आज राक्षसो की लीला भूमि बनी है, जहा क्रूरता का नग्न नाच हो रहा है, दानव आर्य ललनाओ की लाज लूट रहा है उनका करुण विलाप वहा की नदियो की लहरो मे विलीन हो रहा है जहा के निरीह निहत्थे नागरिक दस्यु की आसुरी रक्त पिपासा की भेंट हो रहे हैं।

इसके साथ ही लज्जा व क्षोभ के साथ सुनने को मिलता है कि सरकार कुछ नही कर रही, आततायियो पर वश पाने मे असफल हो रही है। हन्त ! सर्वोन्नत राष्ट्र के साथ यह कैसा खिलवाड। मानवता के भाग्य के साथ यह कैसा निर्मम उपहास। केवल बातो से यह समस्या नही सुलझने वाली। यह समस्या पाकिस्तान के जन्म के साथ जुडी है तथा अन्य समस्याओ की प्रसव स्थली है, जिसका स्पष्ट सकेत मिल रहा है। आसाम, मिजोरम, नागालैंड वासियो के अलगाव वाद के नारो मे।

वास्तव मे पाकिस्तान के रूप मे देश का विभाजन ही गलत था और अब उसको पृथक् बनाए रखना और भी गलत है। पाकिस्तान भयकर फोडा है जो बढ गया है जिसका अब रिसाव हो रहा है, आतकवाद व उग्र पन्थ रूप मे।

जब तक मूल समाप्त न होगा तब तक यह रिसाव दुर्भावना का प्रसार समाप्त नही होगा। अमेरिका, ब्रिटेन चीन इस फोडे मे प्रलोभन का विष भर कर इसको बढा ही रहे हैं। यह फोडा अपनी जडे गहरी किए जा रहा है जो कभी कैंसर की भान्ति सारे राष्ट्र के शरीर को गला देगा।

पाकिस्तान भारत का ही भू भाग है। इस पर हमारा स्वभाविक अधिकार है। हमे प्राचीन भारत का मानचित्र सामने रखना होगा और तदनुरूप भारत की सीमाए निर्धारित करनी होगी। ससार शक्तिशाली का वास्तविक रूप मे शक्तिशाली का है, बात बनाने वालो या कायरो का नहीं। वीर नागरिक दूसरे की सम्पत्ति का अपहरण नही करते पर अपनी सम्पत्ति को अपहृत भी नही होने देता। आज भारत की धरती पर दूसरो की गृध्र दृष्टि हो रही है और वे भारतवासियो के द्वारा ही भारतीयो का विनाश करा रहे हैं, इस आशा मे कि इनके दुर्बल होने पर वे भारत पर कब्जा कर सकें। उग्रवादी ऐसे ही गुमराह हुए लोग हैं। इनके मन इस सीमा तक बिगड चुके हैं कि अब समझाने से नही मानेंगे। इनको अब करारी चोट की आवश्यकता है। क्या भारत सरकार मे यह चोट करने की शक्ति नही है। यदि है तो वह मूक बनी तमाशा क्यो देख रही है ? निरपराध नागरिको के रक्तपात का उत्तरदायित्व किस पर है ?

भारतवासियो मे क्या अपने पूर्वजो का रक्त नि शेष हो गया है ? ईराक, ईरान, अमेरिका तक जिनका राज्य विस्तार था, क्या आज अपने ही घर मे सुरक्षित नही रहेंगे ? इस देश के वासियो मे सब गुण विद्यमान हैं, सभी कुछ उन के पास है, केवल उनकी सामाजिक, चेतना तथा सवेदन शक्ति खो गई है। इसके बिना ये प्राणवान होते हुए भी निर्जीव सदृश हो रहे हैं। अपना ही रक्त बहते हुए देख कर तडप रहित हैं। इन की कर्मठता को लकवा मार गया है। एक सीता का अपमान होने पर सारा राष्ट्र जाग्रत हो गया पर आज सैंकडो सीताओ की लाज लुटते हुए भारतवासी विवश दृष्टि से देख रहे हैं तथा शान्ति प्रियता के नाम पर यदि हम इसे सहन कर रहे हैं तो यह आत्म प्रवचना के अतिरिक्त और कुछ नही अपनी कायरता पर पर्दा डालने का बहाना मात्र यह है।

आज भारत की युवा शक्ति को यह उत्तर देना है कि उसके रहते हुए भारत पर दस्यु का यह उत्पात कैसा ? युवा हृदय भी भयभीत है क्या ? रामकृष्ण के वशजो ! या तो मैदान मे आओ या मृत्यु की चादर ओढ कर किसी अन्धेरे कोने में छिप रहो। पर पूर्वजो की शान को लाज मत लगाओ। कृष्ण के पुजारियों ! क्या याद नही रहा कि जरासन्ध व कस का नाश आपके कृष्ण ने बेदर्दी से किया था। राक्षस दमन में कोई लापरवाही कोई रियायत उन्होंने नहीं की थी। और आज तुम कृष्ण की माला जपते हुए आततायियो को लोम हर्षक अत्याचारो की खुली छूट दे रहे हो।

नही अब और सहन नहीं करना होगा। सिंह की तरह दहाड कर आओ पाकिस्तान सहित उग्रवाद का विनाश कर अखण्ड भारत का वरदान इस धरती को दो। तुम्हारी प्रतीक्षा मे मा के वेदना भरे क्षणभारी हो रहे हैं। मा का वरदान ही लो, उसका अभिशाप तुम्हे कही का न रहने देगा।

आर्य युवक सभा फील्ड गंज (लुधियाना) द्वारा रामनवमी पर्व सम्पन्न

आर्य युवक सभा फील्ड गज लुधियाना की ओर से 7-4-87 को श्रीराम नवमी का पर्व बड हर्षोल्लास से मनाया गया। सर्व प्रथम यज्ञ हुआ जिसकी अग्नि श्री महिन्द्र प्रताप आर्य प्रधान आर्य युवक सभा लुधियाना ने प्रज्वलित की। यज्ञ की शोभा एकादर्श थी जिस मे आठ दम्पतियो ने यजमान पदो को ग्रहण किया। यज्ञ के ब्रह्मा प सूर्यपाल शास्त्री एम ए (हि स) थे, जिनका लुधियाना ही नही, पजाब के आर्य क्षत्रो मे अपना विशिष्ट स्थान है। तत्पश्चात श्री के के शर्मा डिप्टी रिजनल मैनेजर न्यू बैंक आफ इण्डिया जालन्धर ने ध्वजारोहण किया।

पद पर आने वाले विद्वान् वक्ताओ मे श्री सत्यपाल शास्त्री, डा सत्यभूषण वाधिया, प सूर्यपाल शास्त्री, अशोक शर्मा रायकोट, श्रीमती बाला रानी, वेद प्रचार भजन मण्डली, दयानन्द भजन-मण्डली इत्यादि ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला। इस समारोह की अध्यक्षता युवाओ के हृदय सम्राट वाणी के धनी, श्री रोशनलाल जी शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने की। अध्यक्षीय भाषण मे शर्मा जी ने आर्य युवक सभा फील्ड गज के कार्यकर्ताओ को सफल आयोजन के लिए बधाई दी तथा कहा कि आज धनुधर राम जैसे युवको की देश को आवश्यकता है। मच सचालन का कार्य श्रीराम स्वरूप विज मन्त्री आर्य युवक सभा फील्ड गज ने किया, जिनसे प्रभावित होकर लोगो ने स्थानीय युवक सभा को दान दिया। इस समारोह मे रायकोट के नवयुवको ने भी भाग लिया। युवका के सफल प्रयास से राम नवमी मनाए जाने वाले हाल मे पैर रखने की भी जगह नही थी इतनी ज्यादा उपस्थिति थी। पजाब मे आर्य समाज के कार्य क्षत्र मे आर्य नवयुवको के पदार्पण से हलचल मची हुई है। ईश्वर युवकों का मार्ग कटक हीन बनाए।

—बाला-रानी
कार्यक्रम सयोजिका

महामनुज हे ! श्रद्धानन्द

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

श्रद्धा के अवतार तुम्ही थे,
महामनुज हे श्रद्धानन्द।
श्रद्धा के भण्डार तुम्ही थे,
श्रद्धा तुममे रहो न मन्द।

कर्मठ सेनानी बन तुमने,
सत्कर्मों का पथ अपनाया !
कर्म योग की शिक्षा तुमने,
गुरुकुल मे खूब सिखाया।

दयानन्द के सच्चे वारिस,
बन कर नूतन ज्योति जगाया।
भारत के गहनतिमिर को,
तुमने ही था दूर भगाया।

दयानन्द के मृदु स्वप्नो को,
निर्भय बन, साकार किया।
हरिद्वार के गहन विपिन मे,
गुरुकुल सा अभिसार किया।

गगा के पावन पुलिनो पर,
गूज उठी फिर वेद-ऋचाए।
सामगान की सुमधुरलय मे—
ध्वनित हुई गिरि मालाए।

शिक्षा के जग मे गुरुकुल ने,
मचा दी नूतनतम् क्रान्ति।
देव ! तुम्हारे शुचि कर्मों से—
हुई विनष्ट, रही जो भ्रान्ति।

शुद्धि यज्ञ का सूत्र पात कर,
किया महारथियो का कार्य !
प्रतिदिन वैदिक धर्म ग्रहण कर,
शुद्ध बने शत मनुज स्वकार्य।

हिन्दू मुस्लिम एक रहे, का,
दिया मधुरतम था नारा।
जामा मस्जिद के मिम्बर से,
मानवता को दिया सहारा।

पर, हत्यारे ने मानवता,
पर निर्मम सा लगा कलक।
भारत मा सी वीर-प्रसूता—
श्रद्धा रहित बनाया अक।

धीर-वीर-व्रतधारी तुम थे,
निर्भयता की थे प्रतिमूर्ति।
रक्षक थे तुम धर्म कर्म के,
मानवता की थे अभि पूर्ति।

हिन्दी हिन्दू हिन्द देश हित,
सहर्ष किया था जीवन दान।
नवयुवको के लिए बने तुम,
प्रबल प्रणेता-प्रति द्युतिमान।

पावन यश है, अमर तुम्हारा,
सदा रहेगा, बलिदानी।
महिमण्डल पर अमर रहेगी,
तेरी महिमामयी कहानी॥

ना समझ हिन्दुओं के व्यवहार पर खून के आंसू बहा देने वाली इतिहासिक सत्य घटना।

कालाचन्दराय भादुड़ी मुहम्मद फार्मूली कैसे बना

लेखक—श्री पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' विद्यावाचस्पति
सिद्धांतालंकार महोपदेशक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि
उपसभा हरियाणा

(गताक से आगे)

काला पहाड के सिपाही नगर के हिन्दू स्त्री, पुरुषो और बच्चो को जबर-दस्ती मुसलमान बनाते जा रहे थे। और न मानने वालो का सर धड से अलग करते जा रहे थे। उन्होने नगर को लूट कर तहस नहस कर दिया। मार्ग मे पडने वाले सैकडो मदिरो को और उनमे स्थापित मूर्तियो को जाते समय वे तोड-फोड जाये थे। जिस ओर से काला पहाड की सेना निकलती उसी ओर लूट-पाट और विध्वस का ताडव नृत्य करती निकल जाती। इस प्रकार उसने अनेक धार्मिक स्थानो को उजाडा और अन्त मे कामरूप, दिनाजपुर, भागपुर, तथा कूच बिहार की ओर रवाना हुआ। जो हिन्दू इस्लाम कबूल करने से इन्कार करता काला पहाड। उसी को मौत के घाट उतार देता। इतिहास को पढने से मालूम होता है कि काला पहाड के हाथो हिन्दुओ की इतनी हृदय विदारक दुर्गती हुई कि उस को देख कर स्वय मुसलमानो का हृदय भी करुणा से रो पडा था।

जौनपुर से काला पहाड काशी धाम पहुचा। वहा भी केवल केदारेश्वर मन्दिर के केदारेश्वर लिंग को छोड कर शेष सभी को उसने मिट्टी मे मिला दिया और मूर्तियो के टुकडे-टुकडे कर दिये। उसके सैनिको ने अनेक हिन्दुओ के प्राण लिए इतना ही नही अनेक टुकडे-टुकडे कर दिए। उसके सैनिको ने अनेक हिन्दुओ के प्राण ही नही लिये अनेक हिन्दू स्त्रियो का स्तित्व भग किया काशी की जो अभागिनी स्त्रीया काला पहाड के सैनिको द्वारा अपमानित हुई। उनमे काला पहाड की रूपवती विधवा मामी भी थी। अब भी काला पहाड भूल न सका था कि यह विधवा रमणी उसी व्यक्ति की पुत्र वधु है, जिसने पितृ हीन बालक कालाचन्द को पाल पोस कर बडा किया था। क्षत विक्षत अपमानित और शरीर मे अनेक घाव चिन्ह लेकर यह विधवा किसी प्रकार से काला पहाड के सामने उपस्थित होने मे समर्थ हो गई। काला पहाड के सामने फूट-फूट कर रोने लगी और अपने अपमान की दर्दनाक कथा सुनाई और अधिक देर तक जीवित रहना उसके लिए सम्भव न था। वही १२ बडे-बडे नगो के नीचे विष उतार कर वह काला पहाड के सामने भूमि पर ढेर हो गई।

इस मर्मान्तक दृश्य ने काला पहाड के हृदय के वज्र प्रतिशोध की कठोर चट्टान को खण्ड-खण्ड कर दिया। अपने वश के सम्मान मे कलक से उसे और भी अधिक आत्मग्लानि हुई। उसने तुरन्त विनाश के ताडव को समाप्त करने का आदेश दिया। विध्वस का ज्वर शान्त हो गया। मन मे तीव्र अनुताप को लेकर काला पहाड अपने कमरे मे पहुचा और भीतर से द्वार बन्द कर लिया काशी धाम मे तीन दिन की लूटमार के बाद वह इस ससार मे सदा के लिए अदृश्य हो गया। इसके बाद फिर कभी किसी ने काला पहाड को नही देखा।

इस प्रकार से काला पहाड 1562 से 1575 तक 13 वर्ष विध्वस का ताडव नृत्य कर केवल 34 वर्ष की आयु मे राज दुलारी की गोद मे फातिमा नाम की कन्या का उपहार छोडकर सदा के लिए ससार से विदा हो गया। यह ऐतिहासिक सत्य घटना है। आओ बन्धुओ इस महत्वपूर्ण घटना को पढ कर अपने बिछुडे भाई ईसाई व मुसलमानो को शुद्ध करके हम उनके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध स्थापित कर वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) के अस्तित्व को कायम रखने के लिए कुछ करने का सकल्प लें, इसी मे हमारा कल्याण है। अन्यथा हमारा अस्तित्व खतरे मे है। इस हिन्दू जाति को कोई बचा नही सकता।

लुधियाना में आर्य युवक सभा के बढ़ते कदमों में पारिवारिक सत्संग

दिनांक 12-4-87 रविवार को सायं 3 बजे से पांच बजे तक आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार के प्रधान श्री नवनीतलाल जी हींगरा के घर एक बड़े सत्संग का आयोजन हुआ। सर्व प्रथम यज्ञ हुआ जिसमें प्रधान जी के दो सुपुत्र एवं समाज ने परिवार सहित यजमान पदों को ग्रहण किया। यज्ञ के ब्रह्मा प. सूर्यपाल शास्त्री एम. ए. थे। वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना के तथा स्त्री आर्य समाज की बहनो के भजन हुए। सत्संग के मुख्य वक्ता प. सूर्यपाल शास्त्री जी का गृहस्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। उन्होंने नरक बने हुए घरो को स्वर्ग बनाने का वेदोक्त तरीका बताया। इस सारे कार्यक्रम का संचालन श्री रोशनलाल जी शर्मा, संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब कर रहे थे।

श्री नवनीत लाल जी ने इस अवसर पर आर्य समाज दयानन्द बाजार, आर्य समाज फील्ड गंज, आर्य युवक सभा लुधियाना को दान दिया। स्थानीय आर्य समाज दयानन्द बाजार का आशीर्वाद युवको को आगे बढने मे पूर्ण सहायक है। शान्ति पाठ के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

—सुरेश चड्ढा
संयोजक

डा. भारत भूषण जी द्वारा भिन्न-२ संस्थाओं को दान

डा. भारत भूषण-मन्त्री आर्य समाज दयानन्द मार्ग (रेलवे रोड) शकूर बस्ती, दिल्ली-34 निवासी 828 ऋषिनगर शकूरबस्ती, दिल्ली 34 के सुपुत्र श्री भारत रत्न गुप्त एम काम. का शुभ विवाह श्री डा. राजेन्द्र प्रताप गुप्त पी. एच. डी. (यू एस ए) कार्डिनेटर एग्रीकल्चर) पूसा नई दिल्ली निवासी ए 2/32 पश्चिमी विहार नई दिल्ली-65 की सुपुत्री सुश्री भारती (नौरीन) बी. एड. एम. एस सी. के साथ पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर वर-वधु दोनो पक्षो के द्वारा निम्न आर्य सस्थाओ को 505 रुपए केवल दान की घोषणा की। इस के लिए हम वर वधु को आर्य समाज की ओर से शुभ कामना दे रहे है।

आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूर-बस्ती को 200 रुपए दिए और शेष सभी को 25-25 रुपए दान दिए। आर्य मर्यादा साप्ताहिक जालन्धर, श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली, आर्य समाज पंजाबी बाग नई दिल्ली, पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता निधि सार्वदेशक सभा, अन्ध कन्या विद्यालय नई दिल्ली, कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, आर्य बाल गृह पटौदी हाउस दिल्ली, आर्य अनाथालय फिरोजपुर पंजाब, टकारा महर्षि दयानन्द ट्रस्ट।

—प्रिंसीपल वेद व्रत त्यागी
प्रधान

आतंक पीड़ित सहायता फण्ड में प्राप्त राशि

आर्य समाज डिफेंस कालोनी चण्डीगढ की ओर से आतक पीडित परिवार सहायता कोष मे गत दिनो निम्न राशि प्राप्त हुई।

श्री रमेश सूद 21 रु श्री अमित वासदेव 21 रु. श्री के. एल. वोहरा 50 रु चौधरी बेलीराम 5 रु. श्री रविमेनन 20 रु. श्री योगेश चन्द्र 10 रु. श्री अश्वि बेरी 10 रु श्री राजेश स्वीट रूम 21 रु. श्री कृष्ण गोपाल कालरा 10 रु श्री एस. आर. गोयल 10 रु. श्री बी. आर. चौधरी 21 रु. श्री रवि शर्मा 10 रु. श्री विवेक कुमार 10 रु. श्री राकेशगिरि 21 रु. मल्ला ट्रेवल्स 40 रु. चौधरी रामनारायण 10 रु. श्री रमेश नैय्यर 10 रुपये।

इन्दौर में प्रशिक्षण शिविर

इस वर्ष 15 मई से जून मास के अन्त तक पन्द्रह दिनो के शुद्ध एवं संस्कार प्रशिक्षण के तीन शिविर इन्दौर मे आयोजित किए जायेंगे। जो इस निमित्त प्रशिक्षणार्थ आना चाहे और यज्ञ चिकित्सा विज्ञान भी सीखना चाहे, वे शीघ्र ही वेद सदन महारानी रोड इन्दौर 452007 से सम्पर्क करे।

—वीरसेन वेदश्रमी-अध्यक्ष
वेद सदन, महारानी पथ इन्दौर

वैदिक विवाह सम्पन्न

आयुष्मान श्री प्रवीन कुमार गुप्ता सुपुत्र (श्री योगराज गुप्ता एव निर्मल गुप्ता) का शुभ विवाह कुमारी पूनम से 30 मार्च 87 को सम्पन्न हुआ। गुप्ता परिवार ने अपने निवास स्थान जी. 57, पी. एण्ड टी. कालोनी मे 24 मार्च से 30 मार्च तक शतक यज्ञ मा प सालिगराम जी द्वारा करवाया प्रतिदिन प्रातः भजन, यज्ञ एव प्रवचनो से जनता प्रभावित हुई, 30 मार्च प्रातः पूर्णाहुति के पश्चात् सब का स्वागत जल-पान से किया गया प धर्मदेवार्य जी ने इस शुभ विवाह को वैदिक रीति से बड़े अच्छे ढग से सम्पन्न करवाया और नए जोड़े को आशीर्वाद दिया।

—कृष्णा कोछड़

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज बजवाड़ा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर मे रविवार 5-4-87 को प्रात. 8 बजे से 11 बजे तक आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। 8 से 9 बजे तक सन्ध्या हवन, भजन इत्यादि हुए। 9 से 10-30 बजे तक भिन्न-2 विद्वानो ने उपदेश दिए, 10-30 बजे कन्या महाविद्यालय की प्रिंसीपल डा मन्जू महता, ने इस समाज द्वारा आरम्भ किए जा रहे साप्ताहिक पत्र "सत्यधर्म प्रचारक" का विमोचन किया।

—मन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वेद के शब्द कोष के नाम से प. गुरुदत्त जी ने एक पुस्तिका प्रकाशित की थी जो आक्सफोर्ड मे पाठ्य पुस्तक बन गई कुछ उपनिषदो का भी उन्होने अनुवाद किया था। इनके देहान्त के पश्चात् पार्ल्यामेंट आफ रेलिजन्स के अवसर पर वह अनुवाद अमेरिका भेजा गया। किसी अमेरिकन प्रकाशक ने अपने आप उसका अमेरिकन सस्करण प्रकाशित कर दिया। प. गुरुदत्त जी ने अष्टाध्यायी पढाने के लिए एक कक्षा भी खोली थी। जिसमे बड़ी-2 आयु वाले आर्य भी पढते थे।

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी आर्य बने

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी अद्वैतवादी सन्यासी थे। प. गुरुदत्त जी उनके पास उपनिषदें पढने आया करते थे। विद्यार्थी की प्रखर बुद्धि का स्वामी जी पर यह प्रभाव पड़ा कि शीघ्र ही शिष्य के अनुयायी हो गए। श्री स्वामी जी, प. गुरुदत्त जी को पढाते-पढाते स्वय द्वैतवादी बन गए और आर्य समाज के समर्थको मे शामिल हो गए।

इसी प्रकार स्वामी महाराज प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् थे। आपको भी प. गुरुदत्त जी के अध्यापक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने सयोग्य शिष्य के प्रभाव से आप भी आर्य समाजी बन गए।

वैदिक मैगजीन

1886 जुलाई में प. गुरुदत्त जी ने वैदिक मेगजीन नाम का मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। अंग्रेजी के विद्वानो मे आपके लेख बहुत पसन्द किए जाते। यूरोप के सस्कृतज्ञ वैदिक साहित्य के विषय में जो असम्बद्ध या प्रमाणरहित लेख लिखते थे पण्डित जी उनकी समालोचना इस मेगजीन मे करते थे।

मृत्यु का आक्रमण

प. गुरुदत्त जी जब से अजमेर से आये तब से ही लगातार दिन रात आर्य समाज के काम में संलग्न रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि आपको क्षय रोग ने आ दबाया। जहा तक सम्भव हो सका, डाक्टरी, यूनानी, आयुर्वेदिक सभी प्रकार के इलाज किए गए। परन्तु क्षय रोग बढता ही गया। यहा तक कि अन्त समय आ पहुचा। तब आपने अन्तिम हवन कराया और वेद मन्त्रो का स्वय उच्चारण भी किया।

अन्ततः 19 मार्च सन् 1889 को प्रातः 7 बजे ऋषि दयानन्द के सच्चे शिष्य ने भगवान का स्मरण करते हुए अपने प्राणो का परित्याग कर दिया। उस समय आपकी आयु केवल 26 वर्ष की थी।

फूल तो दो दिन ही खिल कर बहारे
जाफजा दिखला गए।
हसरत उन गु चो पे है जो बिन खिले
मुर्झा गए॥

जालन्धर में आर्य संगीत विद्यालय की स्थापना

दयानन्द मठ दन मोहल्ला जालन्धर के सभी सदस्य बड़े प्रतिष्ठित कार्यकर्ता हैं। उन्होने महसूस किया कि आर्य समाज की ओर से शास्त्रीय सगीत तथा सुगम सगीत आदि का कोई प्रबन्ध नही है। इसलिए उन्होने घोषणा कर दी है कि 4 मई 1987 से दयानन्द मठ दन मोहल्ला जालन्धर मे आर्य सगीत महाविद्यालय खोला जा रहा है। यह विद्यालय शास्त्रीय सगीत की अखिल भारतीय गन्धर्व महाविद्यालय पूने (बम्बई) की परीक्षाए भी दिलवाएगा।

आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह इस विद्यालय मे सगीत सीखने के लिए इच्छुक महानुभावो को प्रवेश करवाए। प्रवेश शुल्क 10 रुपये रखा गया है। मासिक फीस 15 रुपये होगी। शास्त्रीय सगीत तथा सुगम सगीत सीखने वाले सज्जन शीघ्र सम्पर्क करे।

—सालिगराम जी पराशर शास्त्री
प्रबन्धक दयानन्द मठ
दन मोहल्ला जालन्धर

नया नंगल में आर्य समाज स्थापना दिवस व राम नवमी पर्व मनाया गया

नया नंगल आर्य समाज ने आर्य समाज का 112 वा स्थापना दिवस 30 मार्च 87 को बड़ी श्रद्धा से मनाया।

7 अप्रैल को रामनवमी का पावन पर्व भी बड़ी धूम-धाम से मनाया गया जिसमे साधु आश्रम होशियारपुर से उच्चकोटि के विद्वान् डा वीरेन्द्र शर्मा व अन्य वक्ता जनो को आमन्त्रित किया गया। उनके ज्ञान वर्धक प्रवचनो से जनता बड़ी प्रभावित हुई। गत वर्षों की भान्ति नंगल आर्य समाज के सदस्य भी इस उत्सव मे सम्मलित हुए व सहयोग दिया। अन्त मे प्रीति भोजन का आयोजन था। जिसमे सभी ने परिवार सहित भाग लिया।

—सूरजप्रकाश सूद
मन्त्री

राम नवमी का पर्व आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना में मनाया गया

7-4 87 सोमवार प्रात: 7-30 से 10-30 तक बड़े समारोह से आर्य समाज हबीबगंज अमरपुरा लुधियाना में मनाया गया, बृहद् यज्ञ के पश्चात् आर डी स्कूल की छात्राओ ने राम के जीवन पर सुन्दर गीत गाए। श्री महमा सिंह जी के रसीले गीतो के पश्चात् प्रो.मित्तल जी ने राम के जीवन पर अति सुन्दर भाषण दिया, अन्त मे जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री आशानन्द आर्य ने जनता से अपील की कि यदि वह संसार मे सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो श्री राम के जीवन से प्रेरणा लेवें। यज्ञ शेष, शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

—उर्मिला-उपमन्त्री

आर्य समाज नांदेड का नव निर्वाचन

दिनाक 8-3-87 को आर्य समाज नांदेड का नव निर्वाचन हुआ। जिसमे निम्नाकित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्री पा क्ष बेरकर, उप-प्रधान—श्री बैजनाथराव भारपल्ले। उप-प्रधान—श्री सत्यपान राठौर। मन्त्री—श्री प्रा, सत्यकाम पाठक, उपमन्त्री—श्री बापूराव बाघमारे, उपमन्त्री-श्री प्रशान्त बपधिया, कोषाध्यक्ष—श्री प्रा कुशलदेव शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रमेश लाल।

—मन्त्री

आर्य समाज बठिण्डा में राम नवमी का पर्व

आर्य समाज बठिण्डा मे दिनाक 7 4 87 को राम नवमी का पर्व प्रधान श्री बधीरचन्द जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। जिस मे श्रीमती दर्शना देवी ने श्री राम के जीवन पर एक भजन गाया। इसके बाद पुरोहित अजीन कुमार जी ने श्री राम के सबन्ध मे अपने विचार रखे। उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया।

शोक प्रस्ताव

आज 29 3-87की यह शोक सभा आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट के प्रधान श्री लालचन्द जी महाजन की पोती पाली के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करती है। प्रभु से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करें तथा परिजनो को इस वियोग को सहने की क्षमता दें।

दुख मे सम्मलित
आर्य समाज के अधिकारी व सदस्य गण

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 4. 20 बैसाख सम्वत् 2044 तदानुसार 3 मई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

मा गृध कस्यस्विद्धनम्

लेखक—प्रिंसीपल रामदेव जी शास्त्री एम.ए बी टी. पठानकोट

दूसरे के धन पर नजर रखना उसे हथियाने का यत्न करना या अनधिकृत रूप से उस पर निजत्व का दावा जमाना चोरी या स्तेन कहलाती है। इसी का नाम गृध्रदृष्टि है अर्थात् लोभ जो सब पापो की जड है। आज चारो ओर इसका बोलबाला है। उपनिषद् काल मे परम धार्मिक राजा अश्वपति ने बडे गर्व से घोषणा की थी, "न स्तेनोमे जनपदे न कदर्यो न मद्यप:। न अनाहिताग्नि—कश्चित् न स्वैरी स्वैरिणीकुत:॥" अर्थात् मेरे राज्य मे न कही चोरी होती है। न कोई कृपण और न कोई मद्यपी तथा हर घर मे हवन यज्ञ होता है। कोई व्याभिचारी नही तो दुराचारिणी कहा से हो सकती है। कैसा था वह आदर्श राज्य ?

वेद की पुनीत शिक्षा है। ईश्वर ससार के कण-कण मे ओत-प्रोत है। जो कुछ भी जगत् मे है, जिसे आप अपना धन कहते हैं वह प्रभु का दिया है। "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा, उसके द्वारा दिए धन का सदुपयोग करो। "मा गृध: कस्यस्विद्धनम्" किसी और के धन पर कुदृष्टि न रखो। गजधन, बाजीधन, भूमिधन, स्वर्णधन आदि कई धन हैं परन्तु सन्त कबीर ने कहा है, "जब आए सन्तोष धन सब धन धूरी समान" इसी प्रकार भर्तृहरि जी का भी वचन है, "स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला" दरिद्र तो वह होता है, जिस की तृष्णाए—लालसाए विशाल हो। "मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र." मन के सन्तुष्ट हो जाने पर कौन गरीब और कौन अमीर ? फिर क्यो न हम वेद के सत्य मार्ग पर चलें। इस प्रकार राष्ट्र की ही नहीं ससार भर की समस्याए हल हो जाएगी।

अज्ञान वश मनुष्य लालच करता है और पाप का विस्तार करता है। स्तेन द्वारा पाप का भागी होता है। उसे उस का फल भी भोगना पडता है। जब कडवे बीज वाले वृक्ष के फल खाने पडते हैं तो भगवान को कोसता है। परन्तु ईश्वर तो द्रष्टा मात्र है, कर्मों के फल का दाता। वह "मा दत्ते कस्य चित् पाप न चैव। सुकृत विभु:। अज्ञानेनावृत ज्ञान तेन मुह्यन्ति मानवा:"

ईश्वर को किसी के पाप पुण्य से मतलब नही। अविद्या से ढके अज्ञान वश मनुष्य अपने ही जाल मे फस जाते हैं।

स्तेनभाव मानवाचरण की एक
विकृति है।

नैरुक्तो की विक्रिया के छ भाव
हैं —:

"जायते, अस्ति, वर्धते, विपरिणमते, अपक्षीयते एव विनश्यति" अकुरित होना, अस्तित्व मे आना, बढना, विपरिणमित होना या बदलना, घटना और अन्त मे महती विनष्टि। गृध्रदृष्टि वालो की पाप की छोटी सी चिन्गारी यह सब रूप धारण करती हुई जीवन को धूमाच्छादित ही नही नष्ट प्राय. कर देती है।

हिन्दू दर्शन या विश्वास के अनुसार मार्ग मे गिरा हुआ किसी का सोना या उस का आभूषण नही उठाना चाहिए। उसे उठाने वाला पाप का भागी होगा। जिसका फल उसे भोगना पडेगा। कितनी अच्छी आस्था है। सोने जैसी बहुमूल्य वस्तु उठाना पाप है और छोटी मोटी वस्तु भी नही उठानी चाहिए, उठाओ तो यत्न करके उसके असली मालिक को सौंप देनी चाहिए। सन् 1957 की बात है। जिला गुरदासपुर के हाई स्कूलो के होनहार बच्चो के स्काउट्स ग्रुप को मैं शिमला के एक कैम्प मे ले कर गया था। एक दिन बाहर पहाडो की सैर कराने का भी कार्यक्रम था। हम तारा देवी कैम्प से चले और यह जान कर आश्चर्य हुआ कि जितने भी ग्रामो के घर उस यात्रा मे आए किसी को ताला नहीं लगा था। मैंने एक वृद्धा से पूछा, माता जी, आप अपने घरो मे बाहर जाते समय ताला नही लगाते। उस देवी ने हस कर उत्तर दिया, यहा किसी घर को कोई ताला नही लगाता। यह पूछने पर कि चीजे चुरा नही ली जाती, वह फिर मुस्कराई और कहा ? यहा कोई किसी की चीज नही उठाता। कितना है यह आदर्श रहन सहन ? क्या कलियुग मे भी यह सत्य युग का दृश्य नही ? मुझे पता नही कि अब उधर क्या हाल है। इतना अवश्य है ज्यो-ज्यो हम ऊपर जाते हैं, त्यो-त्यो मन का मैल धुलता जाता है।

जब चीनी यात्री फाहियान भारत भ्रमण कर रहा था। उस यात्रा के दौरान वह एक दिन मथुरा नगरी के पास पानी पीने के लिए एक जलकूप पर बैठा। जल्दी मे वह अपनी स्वर्ण मुन्द्री वहा ही गिरा गया। उसने अपने यात्रा वृत्तान्त मे लिखा है कि कुछ दिनो बाद जब वह वापस उसी मार्ग से लौटता हुआ उसी कुए पर आया और अपनी अगूठी की खोज-खबर ली, तो वह उसी स्थान पर मिट्टी मे पडी हुई मिल गई। ऐसा था उस युग का भारत। क्या हम आज फिर उस भारत का स्वप्न नही ले सकते।

रामायण काल म कैकेयी की गृध्रदृष्टि ने महाभारत का दृश्य खडा कर दिया। राम को बनवास की आज्ञा हुई तो छोटा भाई शत्रुघ्न बिगड बैठा। सकेत मे महाकवि मैथिली शरणगुप्त ने शत्रुघ्न की सिहगर्जना को इस प्रकार आका है '—

"राज को यदि हम बना लें भोग,
तो बनेगा वह प्रजा का रोग।
दूर हो ममता विषमता मोह,
आज मेरा धर्मराज द्रोह।
राजपद ही क्यो न अब हट जाए,
लोभमद का मूल ही कट जाए।"
ऐसा था शत्रुघ्न का विद्रोह।
न रहे बास और न बजे बासुरी।

उधर राम की अनीहा या त्याग और भरत का नहले पर दहला। अयोध्या मे वापस आने पर कैकेयी ने अपने प्यारे पुत्र को कहा, बेटे, तेरे लिए अकटक राज्य सरक्षित कर दिया है। भरत ने आखें तरेरते हुए मानसिक पीडा को आसुओ मे बहा दिया और कहने लगा, "जननी नहीं हननी तू" और फिर बोले, "अहो तेरा क्षुधित पुत्र स्नेह खा गया जो भून कर पति देह" पुत्र स्नेह की क्षुधा पति देह को भी भून कर खा गई। इस गृध्र दृष्टि की इससे कडवी फटकार और क्या हो सकती है ?

पचवटी मे जब अपने दल बल के साथ राम को अनुनय विनय कर के वापस लाने के लिए भरत पहुचे, तो दूर से दल बल सहित देख लक्ष्मण की भुजाए फडक उठी, और राम से बोला। अब भरत हमे जगल से भी दूर भगाना चाहता है। इसे राजमद हो गया है। अब तो इसे मजा चखाना ही पडेगा। राम ने हसते हुए लक्ष्मण को शान्त किया और बोले :—

भरत हि होय न राजमद विधि
हरिहर पद पाई।
कबहु कि काजी सी करनी क्षीर-
सिन्धु बिनसाई।

अयोध्या के राज की तो बात ही क्या, ब्रह्मा, विष्णु महेश का पद पाकर भी भरत को राजमद नही हो सकता। क्या कभी काजी की बूदो से क्षीर सागर फट सकता है। ऐसी थी इक्ष्वाकु वशीयो की परम्परा। भरत राम के पाव पर गिर जाते हैं। राम ने पूछा—

"हे भद्र भरत अब कहो अभीप्सित
अपना।"

भरत बोले, "हे आर्य रहा क्या भरत
अभीप्सित अब भी ?
पाया तुमने तरुतले अरण्य बसेरा,
रह गया शेष तदपि अभीप्सित मेरा।
तन तडप-तडप कर तप्त तात ने त्यागा,
क्या रहा अभीप्सित और तथापि
अभागा !

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में मुख्यमन्त्री

श्री वीर बहादुर सिंह जी

का दीक्षान्त भाषण

हरिद्वार, 14 अप्रैल, 1987

महामहिम कुलाधिपति महोदय, कुलपति जी, सभासद् महानुभाव, अध्यापकगण, उपस्थित आर्यबन्धु, देवियो एवं नव-स्नातकगण !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मुझे भाग लेने का जो अवसर मिला है उसके लिए मैं विश्वविद्यालय के अधिकारियों का आभारी हूं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-नीति के आधार पर वर्ष 1901 में की थी। धर्म एवं देश की रक्षा तथा समाज सुधार के लिए स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को समर्पित कर दिया था। गुरुकुल खोलने में उनका उद्देश्य एक ऐसी संस्था की स्थापना करना था जहां विद्यार्थियों का चरित्र-निर्माण हो, शान्ति एवं पवित्र वातावरण में वे शिक्षा ग्रहण कर सकें, प्राच्य एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विषयों का अध्ययन करें तथा भारतीय संस्कृति के पोषक बन कर समाज कल्याण पर चिन्तन करें। गुरु शिष्य परम्परा में छात्रगण आश्रम में रहकर गुरु के गुणों को ग्रहण कर चरित्रवान् एवं उत्तम नागरिक बनें। ऐसे आध्यात्मिक मनीषी एवं स्वतन्त्रता-संग्राम के अमर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द महाराज की पावन स्थली में आकर मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता हूं। यह वही भूमि है जहां राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पण्डित जवाहर लाल नेहरू, पण्डित मदनमोहन मालवीय, श्रीमती इन्दिरा गांधी जैसे भारत रत्न पधार चुके हैं।

दीक्षान्त समारोह हमारी संस्कृति में एक महत्वपूर्ण एवं पवित्र संस्कार माना जाता था, जब शिष्य अपनी शिक्षा समाप्त करके अपने आचार्य से आशीर्वाद प्राप्त कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। गुरुकुल का ज्ञान और आचरण समाज को प्रेरणा देता था और समाज कृतज्ञतापूर्वक गुरुकुल को सम्मान और समर्थन देता था। तैत्तरीय उपनिषद् में इस संस्कार का सजीव एवं विस्तृत चित्रण किया गया है, जब आचार्य शिष्य को गुरुकुल से विदा देते समय व्यावहारिक उपदेश देता है —

सत्यं वद । धर्मम् चर ।
स्वाध्यायान् मा प्रमद् ।

वस्तुत: यही शिक्षा का सार है। आचार्य शिष्य से अपने उपदेशों का अन्धानुसरण करने के लिए नहीं कहता, अपितु यह कहता है कि जो हमारे सद् आचरण हों, उन्हीं का पालन करना, असद् का नहीं। इसके अतिरिक्त आचार्य यह भी कहता था कि आश्रम-शिक्षा तो समाप्त हो गई किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि ज्ञानार्जन की प्रक्रिया समाप्त हो गई। उसका विशेष उपदेश होता था कि 'स्वाध्याय से कभी भी विमुख न होना।' 'स्वाध्याय' का अर्थ केवल पढ़ना पढ़ाना नहीं बल्कि गहराई से ज्ञान प्राप्त करना है।

'सा विद्या या विमुक्तये।'

विद्या वही है जिससे भौतिक, दैहिक आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं से मुक्ति प्राप्त हो। जहां एक ओर व्यक्ति के लिए कुछ निर्धारित विषयों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है वहीं दूसरी ओर यह भी सही है कि किसी मनुष्य में इतनी मानसिक क्षमता नहीं है कि वह संसार की समस्त विद्याओं का अर्जन कर सके। इसी दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि एवं प्रकृति के अनुसार सीमित विद्याओं विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सन्तोष करना पड़ता है। प्रत्येक दशा में शिक्षा के उद्देश्य की पूर्णता तभी है जब व्यक्ति में ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ व्यक्तिगत गुणों में भी अभिवृद्धि हो और उसमें सामाजिक दायित्व के निर्वाह तथा अर्थोपार्जन की अपेक्षित क्षमता का विकास हो।

मनुष्य ने जब से संगठित समाज में रहना शुरू किया है तब से ही प्रत्येक समाज में नयी पीढ़ी को शिक्षित करने की कोई न कोई व्यवस्था अवश्य रही है। शिक्षा समाज को चलाने और उसके भविष्य की दिशा को पहचानने के लिए एक मूलभूत आवश्यकता होती है। पुरानी पीढ़ी अपने द्वारा अर्जित उस समय तक के कला-कौशल, सभ्यता, संस्कृति के साथ-साथ अपनी आस्थाएं, अपने विश्वास, विचार और भविष्य की कल्पना सभी कुछ अपने आगे आने वाली पीढ़ी को सौंपती है। इस कार्य के लिए प्रत्येक समाज में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था का निर्माण किया जाता है। इसी को हम उस समाज की शिक्षा व्यवस्था कहते हैं। प्रत्येक समाज की शिक्षा व्यवस्था उस समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही बनाई जाती है। इसी लिए शिक्षित व्यक्ति पर यह गुरुतर दायित्व होता है कि वह अपने समाज की मूलभूत आवश्यकताओं, आशाओं और भविष्य से भली-भान्ति परिचित हो और साथ ही साथ उन्हें पूरा करने में सक्षम हो। जो जो शिक्षा व्यवस्था ऐसे नवयुवकों का निर्माण कर सके वही वास्तव में उचित तथा उपयोगी शिक्षा प्रणाली होती है तथा जो व्यक्ति अपने को इस महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व के लिए तैयार कर चुका हो वही व्यक्ति सच्चे अर्थों में शिक्षित कहलाने का हकदार होता है।

किसी विशेष प्रकार के ज्ञान को अर्जित कर लेना और उसमें कुशलता प्राप्त करना शिक्षा का केवल एक छोटा-सा ही भाग है। विस्तृत सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उस ज्ञान की उपादेयता से परिचित होना और अपनी कुशलता का सामाजिक हित में उपयोग करने की प्रवृत्ति तथा क्षमता का होना वास्तव में शिक्षा का मुख्य और महत्वपूर्ण भाग होता है। भारतीय समाज में शिक्षा व्यवस्था की प्राचीन परम्पराएं अत्यन्त गौरवशाली रही हैं। सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम शिक्षा शिक्षा व्यवस्था द्वारा शिक्षित पीढ़ियों ने ही प्राचीन काल में हमारे समाज को विश्व में अग्रणी बनाया था।

प्राचीन काल की मान्यताओं के विपरीत आज शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य आर्थिक क्षमता का विकास एवं भौतिक प्रगति ही माना जा रहा है, परन्तु शिक्षा को मात्र आर्थिक प्रगति तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता। शिक्षा का उद्देश्य एवं क्षेत्र इससे कहीं अधिक व्यापक व श्रेष्ठ है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से भी अधिक आवश्यक है व्यक्ति का सुसंस्कृत होना। शिक्षा के विषय वस्तु को नैतिक-आध्यात्मिक मान्यताओं से समृद्ध करके ही शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य पूर्ण होता है। यहां पर उपाधि प्राप्त करने के लिए उपस्थित स्नातक छात्र यदि अपने प्रारम्भिक जीवन में ही शिष्टता, सत्यनिष्ठा, सदाचार आदि का मूल्य समझ लें तो वे भविष्य में बिना किसी संघर्ष के अपने भावी जीवन की दिशा निर्धारित करने में सफल होंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। अब समय आ गया है कि देश, काल एवं परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा पद्धति में बुनियादी परिवर्तन लाया जाए। मैकाले की शिक्षा पद्धति जिसका उद्देश्य अंग्रेजी सरकार के कामकाज के लिए 'बाबू' तैयार करना मात्र था, अब हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए अधिक उपयोगी नहीं रह गई है। अब यह देश अंग्रेजों का नहीं, हमारा है, आपका है, हम सबका है। अब शिक्षा के वर्तमान ढांचे में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है और इसे समाज एवं व्यक्ति के लिये उपयोगी बनाया जाना चाहिए। स्वतन्त्रता के पूर्व महात्मा गांधी ने हमें शिक्षा के सम्बन्ध में एक नई दिशा दी थी और बुनियादी शिक्षा के रूप में उन्होंने बुनियादी दस्तकारियों के माध्यम से शिक्षा देने के सिद्धान्त को प्रतिपादित कर भारतवासियों को स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् पं जवाहर लाल नेहरू ने शिक्षा को देश की बदलती हुई आवश्यकताओं से जोड़ा। पं नेहरू द्वारा डाली गयी बुनियाद पर इमारत बनाने का कार्य भार उनकी सुयोग्य पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर पड़ा और उन्होंने पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 की घोषणा कर राष्ट्र को एक नयी दिशा प्रदान की। उनके समय में देश ने शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत प्रगति की।

नयी शिक्षा नीति ने मूलत: यह माना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन करने की क्षमता उत्पन्न करना ही नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के आध्यात्मिक, सामाजिक व्यक्तित्व का विकास करना भी है। शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता, प्रजातन्त्र और समाजवाद को मजबूत बनाया जाना चाहिए। शिक्षा द्वारा समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानसिक स्वतन्त्रता भी लाना आवश्यक है। इन बातों के साथ-साथ शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के लिए आवश्यक मानव शक्ति का विकास और औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक तकनीकी प्रशिक्षण, शोध और नयी टेक्नालाजी का विकास करना भी है। शिक्षा द्वारा ही हम अन्तत: राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के लिए नई चुनौती

इस समय तक आर्य समाज के प्रचार के दो साधन रहे हैं। एक सभाएं और दूसरा साहित्य। एक समय ऐसा था जब आर्य समाज की सभाओं में हजारों व्यक्ति आया करते थे। उस समय हमारे पास वक्ता भी बहुत उच्चकोटि के हुआ करते थे। उन्हें सुनने के लिए भी लोग हजारों की संख्या में आया करते थे। दूसरा साधन हमारा साहित्य था। जैसा कि मैंने पहले भी लिखा था कि आर्य समाज का बहुत सा प्रचार छोटे-2 ट्रैक्टों के द्वारा होता रहा है। यह हम हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित किया करते थे और समाजें इन छोटे-2 ट्रैक्टों को निःशुल्क लोगों में बांटा दिया करती थी। सरल भाषा और थोड़ा मूल्य होने के कारण लोग उन्हें ले लिया करते थे और पढ़ भी लिया करते थे। इस प्रकार हमारा प्रचार बहुत हो जाता था। एक प्रचार का तीसरा साधन भी होता था वह था आर्य समाज के पत्र-पत्रिकाएं। पंजाब में साप्ताहिक प्रकाश और साप्ताहिक आर्य गजट ने आर्य समाज का जो प्रचार किया था उसका आर्य समाज के इतिहास में एक विशेष स्थान रहेगा। यह दोनों पत्र उर्दू में प्रकाशित हुआ करते थे। मेरे पास साप्ताहिक प्रकाश की कुछ फाईलें पड़ी हैं उन्हें देख कर पता चलता है कि आर्य समाज उन दिनों कहां से कहां पहुंच गया था। पिछले दिनों हम आर्य मर्यादा में "पच्चास वर्ष पहले का आर्य समाज" इस शीर्षक से जो लेख प्रकाशित करते रहे हैं उसका एक मात्र कारण केवल यह था कि आज के आर्य समाजियों को पता चले कि उनके पूर्वज आर्य समाज के प्रचार के लिए कितना प्रयास किया करते थे। मेरे पास लगभग एक सौ वर्ष पुरानी आर्य पत्रिका नाम की एक अंग्रेजी पत्रिका के कुछ अंक पड़े हुए हैं उन्हें पढ़ कर पता चलता है कि उस समय में आर्य समाज का प्रचार कैसे होता था। आज डी. ए. वी. स्कूल व कालेज प्रायः सभी प्रान्तों में खुले हुए हैं। आर्य पत्रिका के पढ़ने से पता चलता है कि डी. ए. वी. आन्दोलन कैसे प्रारम्भ हुआ और कैसे वह फैला। आज डी. ए. वी. कालेज की प्रबन्धकर्तृ सभा के पास करोड़ों रुपए हैं परन्तु यदि वह आर्य पत्रिका के उन पुराने अंकों को देखें तो उन्हें पता चलेगा कि प्रारम्भ में डी. ए. वी. स्कूल और कालेज के लिए लोगों ने चार-चार और आठ-2 आने दिए थे और यह चन्दा देने वालों में कई मुसलमान भी हुआ करते थे। इसी पत्रिका में उस घटना का वर्णन भी है, जब पहली बार लन्दन में उस समय की वहां की आर्य समाज के एक कर्मचारी का देहान्त हो गया और आर्य समाज वैदिक रीति के अनुसार उसका संस्कार करना चाहता था। उस समय की बर्तानिया सरकार इसको अनुमति देने को तैयार नहीं थी क्योंकि लन्दन में तो मृत्यु के बाद लोग दफनाए जाते थे जलाए नहीं जाते थे। परन्तु आर्य समाज के अधिकारियों ने कहा कि उनका धर्म यह अनुमति नहीं देता कि मृतक व्यक्ति का शरीर दफना दिया जाए वह तो उसका विधिवत संस्कार करेंगे। और बहुत जोर देने पर सरकार ने उन्हें लन्दन से दो मील बाहिर उसका संस्कार करने की अनुमति दे दी और उस समय लन्दन का जो सब से बड़ा अखबार टाईम्ज था उसने अपने पहले पृष्ठ पर यह समाचार प्रकाशित किया था कि लन्दन के इतिहास में पहली बार एक व्यक्ति का अन्तिम संस्कार किया गया है और वह भी आर्य समाज ने कराया है।

इससे अनुमान लगाया जा सकता कि आर्य समाज की पत्र और पत्रिकाओं ने इस आन्दोलन में अपना कितना बड़ा योगदान दिया था। पत्र और पत्रिकाएं आज भी प्रकाशित होती हैं। सार्वदेशिक सभा का साप्ताहिक पत्र सार्वदेशिक प्रकाशित होता है। इसके अतिरिक्त प्रायः सब प्रान्तीय सभाओं के साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं। क्या इन सब के द्वारा आर्य समाज का उतना ही प्रचार हो रहा है जितना कि पहले हुआ करता था। यह एक प्रश्न है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। परन्तु दूसरा प्रश्न जो इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है वह यह कि आर्य समाज की विरोधी संस्थाएं जो पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित कर रही हैं वह किस स्तर की हैं और क्या हम उनका मुकाबला कर सकते हैं। मैंने अपने इस लेख का शीर्षक इसीलिए यह रखा है कि "आर्य समाज के लिए एक नई चुनौती, मैंने दूसरी धर्मावलम्बी संस्थाओं की कुछ पत्रिकाएं देखी हैं और इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि हम बहुत पीछे रह गए हैं। इस लिए मैं आर्य जनता और विशेष कर प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों का ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूं कि दूसरा धार्मिक संस्थाओं की पत्र-पत्रिकाएं किस प्रकार की हैं और अब उनके द्वारा कितना प्रचार हो रहा है। इसके विषय में अपने विचय में मैं अपने विचार आर्य मर्यादा के आगामी अंक में प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी अपने प्रमुख पत्र आर्य मर्यादा को अधिक से अधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली बनाने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा यह प्रयास रहता है कि अच्छे-2 लेखकों के लेख इसमें प्रकाशित किए जाएं। इसमें भी सन्देह नहीं की कई बड़े विद्वान् इसके लिए अपने लेख भेजते रहते हैं। परन्तु उसका हमें उतना लाभ नहीं पहुंच रहा जितना कि पहुंचना चाहिए वह उसी स्थिति में हो सकता है यदि आर्य मर्यादा के ग्राहकों की संख्या बढ़ाई जाए और इसमें जो लेख प्रकाशित होते हैं उनके द्वारा आर्य समाज का दृष्टिकोण घर-घर पहुंचाया जाए। हम यह भी चाहते हैं कि आर्य समाजों की गतिविधियां भी अधिक से अधिक इस में प्रकाशित होनी रहें। इन सबका लाभ उसी स्थिति में हो सकता है यदि आर्य मर्यादा के ग्राहक बढ़ाए जाएं। मेरी पंजाब के आर्य समाजियों से यह प्रार्थना है कि प्रत्येक सदस्य को आर्य मर्यादा का ग्राहक बनना चाहिएं। प्रत्येक आर्य समाज को इसकी उतनी प्रतियां मंगवानी चाहिए जितने उसके सदस्य हैं और प्रत्येक रविवार को अपने प्रत्येक सदस्य को इसका प्रकाशित अंक दे देना चाहिए। आर्य समाज को अपने प्रचार के लिए अधिक से अधिक आर्य मर्यादा की प्रतियां लोगों में बांटनी चाहिएं। एक वर्ष में केवल इस पर 30 रुपये व्यय होते हैं। बड़ी-2 आर्य समाजों के लिए अधिक से अधिक प्रतियां मंगवाना कठिन न होना चाहिए। दूसरी संस्थाएं तो अपने प्रचार के लिए बहुत कुछ करती हैं। सिख भाईयों को ही देख लें वह अपने प्रचार के लिए क्या कुछ नहीं करते। क्या हम एक वर्ष में प्रचार के लिए तीस रुपये भी खर्च नहीं कर सकते। इसलिए सब आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि आर्य मर्यादा की प्रतियां अधिक से अधिक जितनी मंगवा सकते हैं मंगवाएं और प्रति रविवार को आर्य समाजों के सदस्यों में वितरित कर दें। ताकि इसके द्वारा आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार और प्रसार हो सके।

—वीरेन्द्र

भगवान राम से लेकर राजीव गांधी तक—2

इस पर श्रीराम को दरबार में बुलाया गया और महाराज दशरथ ने अपना और अपनी राज्यसभा का निर्णय उनके सामने रखा। भगवान राम ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और कहा कि पिता के होते वह उनका स्थान लेने को तैयार नहीं हैं? उनके आशीर्वाद से उनके अधीन काम करने को तैयार हूं लेकिन उनका स्थान लेने को तैयार नहीं हूं। लेकिन जब महाराज दशरथ ने उनसे कहा कि यह उन का आदेश भी है और उनका अनुरोध भी है तो राम इसके लिए तैयार हो गए उसके बाद क्या हुआ यह दूसरी कहानी है।

यह चित्र का एक पक्ष है। अब जरा दूसरा पक्ष भी देखिए। 31 अक्तूबर 1984को प्रातः 9बजे इन्दिरा गांधी को गोली लग गई। कुछ घण्टों के बाद उनका देहान्त हो गया। उसी दिन शाम के छः बजे राष्ट्रपति ने राजीव का राज्याभिषेक कर दिया और वह देश के प्रधानमन्त्री बन गए, किसी ने किसी राज्यसभा से नहीं पूछा किसी ने कांग्रेस की कार्यकारिणी से भी नहीं पूछा, किसी ने तत्कालीन मन्त्रि-मण्डल से भी नहीं पूछा। एक ऐसे व्यक्ति को देश का प्रधानमन्त्री बना दिया गया जो इस पद के योग्य नहीं था। उसको कोई अनुभव नहीं था। उसे अपने इतिहास तथा अपनी परम्पराओं का भी ज्ञान नहीं था, जिस कांग्रेस पार्टी का वह नेता बनाया गया था न तो उस पार्टी का उसे कुछ पता था न उस पार्टी को उसका कुछ पता था। उसके पक्ष में केवल एक ही बात थी कि वह इन्दिरा गांधी का बेटा था। इसलिए वह इतने बड़े देश का प्रधानमन्त्री बना दिया गया। श्री राम श्री दशरथ के बड़े बेटे थे उन्हें युवराज बनाने के लिए किसी से पूछने की जरूरत नहीं थी लेकिन दशरथ ने पहले अपने राजगुरु से पूछा फिर अपनी राज्यसभा से पूछा और फिर प्रतिष्ठित नागरिकों से पूछा। जब सब ने हां कर दी तो राम को युवराज बनाने का निर्णय किया गया और राम भी इसके लिए उस समय तैयार हो गए, जब उनके पिता ने कहा कि यह उनका आदेश भी है और उनका अनुरोध भी है।

हमारे राष्ट्रपति ने राजीव गांधी को केवल इस लिए प्रधानमन्त्री बना दिया कि वह इन्दिरा गांधी का बेटा है। किसी ने नहीं सोचा कि वह इस योग्य है भी या नहीं। आज राष्ट्रपति भी रो रहे हैं और कांग्रेस पार्टी भी रो रही है। वास्तविकता तो यह है कि सारा देश रो रहा है। जो संकट इस समय पैदा हो रहा है वह कभी न होता यदि इन्दिरा गांधी की मृत्यु के बाद उनका उत्तराधिकारी नियुक्त करते समय यह देख लिया जाता कि जिस व्यक्ति को उनकी जगह उनकी कुर्सी पर बैठाया जा रहा है वह इस योग्य भी है या नहीं।

चापलूसी और चाटुकारिता मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी होती है। जब एक सारी की सारी संस्था उनका शिकार हो जाए तो वह स्वयं भी डूबती है और दूसरों को भी ले डूबती है। कांग्रेस आज ऐसी बीमारी का शिकार हो रही है। इसीलिए तो अब कांग्रेस के बारे में कहा जाता है कि :—

गुल गए गुलशन गए बाकी धतूरे रह गए।

कांग्रेस धतूरों का यह संगठन अब स्वयं भी डूबेगा और देश को भी ले डूबेगा। एक समय था जब कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और मीनू मसानी जैसे लोग हुआ करते थे जो अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में खड़े होकर गांधी जी की भी आलोचना किया करते थे जो सरदार पटेल जैसे नेताओं को भी कभी क्षमा नहीं किया करते थे। और वे बुजुर्ग नेता उनकी आलोचना सहन किया करते थे। 1928 में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में पण्डित जवाहरलाल अपने पिता पण्डित मोतीलाल के विरुद्ध खड़े हो गए थे। उसी जवाहर लाल को 1929 में कांग्रेस का प्रधान बना दिया गया था।

कहां गए वे कांग्रेसी। अब केवल धतूरे बाकी रह गए हैं। और उन सब धतूरों ने मिलकर एक और धतूरे को प्रधानमन्त्री बना दिया है।

रामायण को पढ़ने से यह पता चलता है कि उस जमाने में भी इस तरह की खानदानी हकूमतें न हुआ करती जिस तरह की आजकल हैं। महाराज दशरथ ने अपने बड़े बेटे श्रीराम को पहले अपना युवराज और बाद में अपनी जगह अयोध्या का राजा बनाने का आखरी फैसला उस वक्त किया जब उनके राजगुरु महर्षि वशिष्ट ने इसकी अनुमति दे दी और वशिष्ट ने भी उनसे कहा कि पहले अपनी राजसभा से पूछो अपने उच्च व्यक्तियों से अनुमति लो, वह अपनी अनुमति दें तो उसके बाद भी राम की ताजपोशी होगी [illegible] ही हुआ। महाराज दशरथ चाहते तो किसी से पूछे बिना ही अपने बेटे की ताजपोशी कर देते जिस तरह हमारे राष्ट्रपति ने राजीव गांधी की कर दी थी। श्री रामजी [illegible] इसलिए हजारों वर्ष भी गुजर जाने पर हम आज भी उनके राम राज्य को याद करते हैं। लेकिन राजीव की ताजपोशी के समय क्योंकि किसी से न पूछा गया था। इसलिए तीन वर्ष के अन्दर ही ऐसे हालात पैदा हो गए हैं कि राजीव के देशवासी तौबा-तौबा कर रहे हैं। अब यह भी मालूम नहीं कि वह अपनी पांच वर्ष की अवधि भी पूरी करेंगे या नहीं।

आज हमारे देश में धर्म निरपेक्षता का जोर है। धर्म-कर्म से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। खास तौर पर हमारे राजनीतिज्ञ नेताओं का, इस लिए वह धर्म ग्रन्थ पढ़ने की कोशिश नहीं करते।

यह बीमारी आपको हिन्दुओं में ज्यादा मिलेगी। बहुत कम ऐसे मुसलमान मिलते होंगे जो कुरान शरीफ का सम्मान अवश्य करते हैं। इसी तरह ईसाई बाईबिल का और सिख ग्रन्थ साहिब का सम्मान करते हैं। हिन्दुओं में आपको ऐसे लोग मिल जाएंगे जिन्हें यह भी मालूम नहीं कि वेद क्या है? उपनिषद् क्या है? गीता क्या है? रामायण, महाभारत क्या है? इन लोगों को यह भी मालूम नहीं कि वेद रामायण से भी पुराने हैं। यूरोप के बड़े-बड़े विद्वान्, इतिहासकार और दार्शनिक सभी यह कहते हैं कि दुनिया की लायब्रेरी में वेद से पहले लिखी हुई कोई किताब नहीं मिलती। जिसके अर्थ हैं कि वेद दुनिया में सबसे पुराने धार्मिक ग्रन्थ हैं। महाराज दशरथ ने भी वेद पढ़े थे। भगवान राम ने भी पढ़े थे। वेदों में लिखा है कि राजा का सदा ही चुनाव होना चाहिए। शासन के अधिकार किसी को विरासत में नहीं मिलने चाहिए। न किसी एक व्यक्ति के हाथ में इतनी शक्ति देनी चाहिए, कि वह जो चाहे करता फिरे। राजा जो भी चुना जाए वह राज्यसभा के अधीन रहना चाहिए। राज्यसभा राजा के अधीन रहनी चाहिए और यह दोनों जनता के अधीन रहने चाहिए। वेदों में यह भी लिखा है कि राजा में क्या-क्या गुण होने चाहिए। जो व्यक्ति इन पर पूरा उतरे उसे ही राजा बनाना चाहिए।

31 अक्तूबर 1984 को राजीव को देश का प्रधानमन्त्री बना दिया गया और न हमारे राष्ट्रपति को मालूम था कि वेदों में क्या लिखा है, न राजीव को। महाराज दशरथ ने खूद वेद पढ़े थे और अपने बेटे को भी वेद पढ़ने के लिए महर्षि विश्वामित्र के पास भेजा था। यही वजह थी कि राम की ताजपोशी के पहले जनता से अनुमति ली गई थी।

आज जो कुछ देश में हो रहा है मैं उसके लिए राजीव को जिम्मेदार नहीं ठहराता। इस बिचारे को मालूम नहीं कि हमारा इतिहास क्या है? हमारी परम्पराएं क्या हैं? जिसके विवाह में चापलूसी है उसे क्या मालूम हमारे शास्त्रों में क्या लिखा है? इसकी मां जन्म से ब्राह्मणी थी। उसकी मां कमला नेहरू धर्म-कर्म में श्रद्धा थी। इसका असर उनकी बेटी इन्दिरा पर भी था। इसलिए वह मन्दिरों में जाया करती थी। उन्हें पहली बार प्रधानमन्त्री बनाया गया था तो उनकी पार्टी में विधिवत चुनाव किया गया था।

राजीव के साथ और इसके देश के साथ सबसे बड़ा जुल्म उस दिन किया गया था जिस दिन हमारे राष्ट्रपति ने बिना सोचे समझे उसे प्रधानमन्त्री बना दिया था। आज राष्ट्रपति रोते हैं कि राजीव क्या करते हैं? अब सारा देश रो रहा है। इसकी जिम्मेवारी या तो राष्ट्रपति पर है या उन कांग्रेसियों पर जो चमचागिरी के इस कदर इतने आदी हो गए हैं कि वह यह भी नहीं सोच सकते हैं कि देश के हक में क्या है और कांग्रेस के हित में क्या?—पण्डित जवाहर लाल की और उसके बाद श्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद श्री गुलजारी लाल नन्दा को अस्थाई प्रधानमन्त्री बनाया गया था। दोनों बार बाद में कांग्रेस पार्टी की बाकायदा बैठक हुई उसमें पहले श्री लाल बहादुर शास्त्री और बाद में श्रीमती इन्दिरा गांधी अपनी पार्टी की बाकायदा नेता चुनी गई। इसके बाद वह प्रधानमन्त्री बनाई गई।

राजीव की हालत में तमाम अधिनियम एक तरफ रख कर उसे प्रधानमन्त्री बना दिया गया। हर कोई जानता है कि वह उसके लिए तैयार न था। बहुत देर तक उसकी बीवी उसे रोकती रही। लेकिन आखिर में उसे इस तरह [illegible] कर [illegible] करने के लिए राष्ट्रपति भवन में जाना-आना [illegible] पकड़ कर एक [illegible] की जोंक से [illegible] और आज राजीव कह सकता है :—

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों की कुछ समस्याएं और समाधान

लेखक—डा. श्री भारत भूषण जी भारत भवन
828 [illegible],आर्य समाज मार्ग, शकूरबस्ती,दिल्ली-34

(गतांक से आगे)

6—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सलाहकार समिति की ओर से केन्द्रीय सरकार को कुछ न्यायपूर्ण सुझाव।

क—केन्द्रीय स्तर पर पेंशन प्राप्त करने हेतु सत्याग्रह के लिए प्रस्थान करने से लेकर सत्याग्रह का प्रचार करने के समय को भी जेल में सजा भुगतने की अवधि में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

ख—केन्द्रिय स्तर पर पेंशन प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न नियमो के अनुसार न्यायालय से प्राप्त दण्ड को भी सत्याग्रह में ही सम्मिलित किया जाए।

ग—श्री खुशहाल चन्द जी, आनन्द स्वामी जी सत्याग्रह के तृतीय सर्वाधिकारी लाहौर के जत्थे के लगभग हम 20 विद्यार्थियो ने शोलापुर कार्यालय के निर्देश पर सत्याग्रह करने से पूर्व दिनाक 27-2-1939 से दिनाक 20 मार्च, 1939 तक तो प्रचार कार्य ही किया था यह समाचार शोलापुर कार्यालय ने अपनी दिनाक 27 फरवरी 1939 की विज्ञप्ति स 15 मे भी प्रकाशित किया था। यह प्रमाण भी मेरे पास मौजूद है। इस के पश्चात् 21 मार्च 1939 को तैयारी कर के दिनाक 22 मार्च 1939 को सत्याग्रह कर दिया था। मैंने भी प्रचार करने के लिए एक जत्थे का नेतृत्व किया था।

अत: लाहौर के तृतीय सर्वाधिकारी के जत्थे के सभी सत्याग्रही लाहौर से दिनांक 20 फरवरी 1939 के प्रस्थान करके लेकर गुलबर्गा के न्यायालय से डेढ वर्ष की सजा मिलने से भी अधिक सजा हो जाने के कारण केन्द्रीय स्तर पर पेंशन प्राप्त करने के पूर्णतया हकदार हैं।

7—स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन प्राप्त करने हेतु (पाच) मास अथवा साढे चार मास अथवा चार मास अथवा न्यायालय से प्राप्त दण्ड आदि विवादस्पद प्रश्नो का समाधान शीघ्र होना चाहिए।

क—अब जैसा कि मैं दिल्ली प्रशासन के दिनांक 26-7-1986 के पत्र के आधार पर यह कह सकता हू कि अब केन्द्रीय सरकार के वर्तमान नये नियम के अनुसार पूर्व 6 (छ:) मास के नियम में एक मास की छूट करके केवल पाच मास की ही सजा भुगतने का नियम बना दिया गया है।

ख—श्री मनमोहन आर्य हैदराबाद आर्य सत्याग्रही, 223 विकास मार्केट रघुबीर नगर (राजौरी) वाले कहते हैं कि मेरे पास ऐसे भी प्रमाण हैं कि जिन से केन्द्रीय स्तर की पेंशन के लिए केवल चार मास और साढे चार मास के नियमो का भी प्रावधान है।

किन्तु .

क—सभा की सलाहकार समिति ने अपनी दिसम्बर 1986 की प्रथम बैठक मे गृहमन्त्रालय को अपना न्यायपूर्ण यह सुझाव दिया है कि सत्याग्रही को जितनी सजा न्यायालय से भुगतने का निर्देश हुआ हो उसी को सजा भुगताना माना जाना चाहिए।

—और—

ख—सत्याग्रही के लिए प्रस्थान करने की तिथि से ही सजा भुगतने की अवधि मे सम्मिलित किया जाए।

उपरोक्त इन दोनो मागो को मैंने तो दिल्ली प्रशासन के दिनाक 6-8-86 के पत्र के उत्तर मे अपने दिनाक 18-8-86 के लिए रजिस्टर्ड पत्र में भी माग की थी क्योंकि आर्य समाज का कोई प्रमाणित सत्याग्रही जेल से स्वय नहीं आया था परन्तु निजाम हैदराबाद ने तब आकर स्वय आर्य समाज की सभी मागो को स्वीकार करके आर्य समाज के नेताओ के साथ समझौता कर के अपने जन्म दिन से एक दिन पूर्व ही सत्याग्रह बन्द करवा लिया था और आर्य समाज के प्रत्येक सत्याग्रही को अपने घर तक पहुचने के लिए निजाम हैदराबाद ने अपना रेल टिकट तथा मार्ग भत्ता दिया था। अत: सत्याग्रही के जेल से घर तक पहुचने का समय भी सजा भुगतने की अवधि मे सम्मिलित किया जाए।

अत: आशा है सलाहकार समिति अपनी उपरोक्त 'ख' माग की नहीं तो 6—क—की प्रथम माग पर ही डटी रहेगी।

8—पेंशन प्राप्त होने के आरम्भ वर्ष का प्रश्न अर्थात् सन् 1972 हो अथवा सन् 1980 हो ?

जिस प्रकार सभा की सलाहकार समिति ने सजा भुगतने की अवधि के जटिल प्रश्न के समाधान के लिए न्यायालय के द्वारा प्रदत्त सजा को ही सत्याग्रही की सजा भुगतने की अवधि को मानने की माग की है।

—उसी प्रकार—

सभा को अपनी प्रथम बैठक मे सत्याग्रही को पेंशन प्राप्त करने का प्रारम्भिक वर्ष तथा सन् 1980 की अपेक्षा सन 1972 की योजना के अनुसार माग पर ही डटा रहना चाहिए। इसके लिए आशा है कि सभा के पास वैधानिक आधार पर कोई विशेष प्रमाण आदि होंगे ही।

9—सभा की सलाहकार समिति से सुझाव रूप मे मेरे कुछ आवश्यक निवेदन—

अप्रमाणित सत्याग्रहियो की समस्या

बहुत से अप्रमाणित सत्याग्रहियो के लिए इस समय कई प्रकार की कठिन समस्याए हैं .—

क—प्रथम तो जेल से प्रमाण पत्र मगवाने की सबसे कठिन समस्या है। इसके लिए तो सभा को ही श्री सहायदत्त जी जैसे सुयोग्य कर्मठ और अनुभवी व्यक्ति ही उपयुक्त हो सकते हैं। इस कार्य के लिए यदि सभा हैदराबाद सत्याग्रही निधि आदि स्थापित कर देवें तो इस कार्य के लिए मैं 250 रुपये (दो सौ पचास रुपये) की प्रथम राशि देता हू। क्यो कि क्षमा करना, अपने सत्याग्रही होने हेतु प्रमाणित करने के लिए प्रत्येक सत्याग्रही के बस की बात नही है। इसके लिए तो अप्रमाणित सत्याग्रहियो की सूचि और उनके बतलाने के अनुसार जत्थे से सम्बन्धित आर्य समाज 2 तिथि और 3 सत्याग्रही से सम्बन्धित जेल का नाम पूछ कर जेलो की सूचि बना कर उनसे सम्पर्क करके प्रमाणित करवाने की समस्या का समाधान सभा सम्बन्धित राज्य के मुख्यमन्त्री, गृह मत्रालय तथा अपने अनुभवी व्यक्ति तथा प्रभाव के द्वारा कर सकती है और—

ख—जिन जेलो मे कोई रिकार्ड ही उपलब्ध नहीं है, उनके सम्बन्ध मे उस सत्याग्रही से सम्बन्धित सभा, आर्य समाज अथवा व्यक्ति अथवा विज्ञप्तियो से ही प्रमाण उपलब्ध करके प्रान्तीय राज्य सरकार से इस प्रकार के अप्रमाणित सत्याग्रहियो का शीघ्र अन्तिम निर्णय करवाया जाना चाहिए। क्योकि जेलो से रिकार्ड के उपलब्ध न होने मे सत्याग्रहियो का क्या दोष है और—

जब आर्य समाज के सत्याग्रहियो ने अपनी युवावस्था मे आर्य नेताओ, सभाओ तथा आर्य समाजों के आह्वान पर सत्याग्रह के लिए अपने आप को निर्भय होकर कुर्बान किया, भेंट किया तो अब बिना किसी भेद भाव आदि के उनकी इस वृद्धावस्था मे हर प्रकार की अपेक्षित सहायता करना सभी सभाओ का तथा आर्य नेताओ का नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है। इस प्रकार की सहायता का प्रभाव भावी आर्य युवको पर भी पड़ेगा और युवक आर्य समाज की ओर आकर्षित भी होंगे।

10—शोलापुर के आर्य सत्याग्रह कार्यालय से प्रकाशित तीन विज्ञाप्तियो मे नामो की सूचि से लाभ उठावें।

मेरे पास शोलापुर कार्यालय से प्रकाशित 1 दिनाक 27 2 39 विज्ञप्ति स 15, 2 दिनाक 7-3-39 की विज्ञप्ति स 23 और 3-दिनाक 8 3-39 की विज्ञप्ति स 24 मे क्रमश निम्नलिखित नाम छपे हुए हैं। इनमे से जो आर्य सत्याग्रही प्रमाण के लिए इनसे लाभ उठाना चाहे, मुझ से विज्ञप्ति की फोटोस्टेट प्रति प्राप्त कर सकता है—

1—दिनाक 27-2-39 की विज्ञप्ति स 15 मे—इस मे तीन सिखो के भी नाम हैं।

क—गुरुकुल मठकल का जत्था दिनाक 21-2-39 को पकड़ा गया था इसमे नाम तथा सख्या अंकित नही हैं।

ख—रामामण्डी से भा रानेक राम जी तथा मानसा (पटियाला) से तीन सिखो के नाम 1—भाई अर्जुन सिंह, 2—भाई मेहरसिंह, 3—भाई जोगसिंह जिमीदार हैं।

ग—दिनाक 27-2-1939 सोमवार को शोलापुर से श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौर के तीन जत्थों मे सत्याग्रह से पूर्व प्रचार हेतु प्रस्थान करने वालो के नाम इस प्रकार हैं —

1 श्री इन्द्रजीत जी, 2 रामदास जी, 3 श्रीरामसिंह, 4 श्री मधुसूदन जी, 5 श्री पृथ्वीनाथ जी, 6 श्री ब्रह्म दत्त वर्तमान डा भारत भूषण, स्वय लेखक, 7 श्री दयानन्द जी, 8 श्री साहिब राम जी, 9 श्री सुमेरचन्द जी, 10 श्री रोशन लाल जी, 11 श्री राम नारायण जी, 12 श्री वरयाम सिंह जी, 13 श्री ओक जी और 14 श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री।

घ—आर्य सेवक दल के द्वारा भेजे हुए कराची के जत्था मे। 1 श्री चुनीलाल जी और 2-श्री किशनदास जी आदि कुल सात सत्याग्रही थे।

च—बम्बई से श्रीयुत रामचन्द्र जी विश्वनाथ आर्य हैं।

छ—बिहार के जत्थे मे 1 श्री रामेश्वर प्रसाद, 2 श्री बुद्धदेव जी, और 3 श्री भूषण प्रसाद जी।

(क्रमश)

पंजाब में आर्य समाज के प्रचार में कैसे गति लाई जाए

लेखक—श्री लोकनाथ जी तिवारी प्रधान
केन्द्रीय आर्य सभा, आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर

1 आर्य समाज के प्रचार में कैसे गति-तेजी लाई जावे ?

2 कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्-कैसे आर्य हिन्दू चेतना सा देश को फिर से आर्यावर्त बनाया जावे ?

3 20 वर्षीय योजना कैसे इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अगले20वर्ष मे एक करोड सच्चे आर्य (पक्के हिन्दू) बनाए जा सकते हैं और शताब्दी अन्त तक समूचे देश को आर्यावर्त सच्चे अर्थ मे हिन्दुस्तान बनाया जा सकता है ?

उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम एक मात्र इलाज जिसका कोई नही हो सकता वह है—ऐसी शिक्षा जो भावी पीढी मे आर्य चेतना को जागृत करे, उसमे अपने धर्म सस्कृति के प्रति उग्रतम श्रद्धा, प्यार उत्पन्न करे, जिससे उनमे धर्म पर मर मिटने की भावना का प्रादुर्भाव हो जावे।

ऐसी शिक्षा मे निम्न बातो का समावेश अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

1 अपने इतिहास का ज्ञान, अपने पूर्वजो की सच्ची गाथाए। (2) अपनी धर्म सस्कृति के सिद्धान्त।

आवश्यक—इनको निरन्तर नित्य के पाठ्यक्रम का अगभूत बनाने की ओर विशेष प्रयत्न होना चाहिए ताकि सस्कार खूब दृढ हो सके। बिना इसके सब कुछ निरर्थक हो जावेगा।

साधन—हम आर्य बडे सौभाग्यशाली हैं जिनके पास वर्तमान मे पर्याप्त सख्या मे शैक्षिक सस्थाए उपस्थित हैं।

1. डी ए वी सस्थाए जो बडी द्रुतगति से दिनोदिन देश भर मे तथा विदेशो मे भी फैल रही हैं। इनकी सख्या लगभग 400-500 होगी।

2 आर्य समाजो से सम्बन्धित सस्थाए। यह भी500 के करीब होगी।

3 आर्य गुरुकुल यह भी लगभग 60-70 होगे।

नोट—हमारी सस्थाओ से अतिरिक्त अन्य हिन्दु शैक्षिक सस्थाए बहुत हैं जिनसे कुछ समन्वय करके अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए, सहयोग लिया जा सकता है। परन्तु इन को इस धारा में बहुत सोच समझ कर लाया जाना होगा जब हम अपनी सस्थाओं को इस कार्य में भली प्रकार लगा लेंगे।

शिक्षा क्रम —लक्ष्य की पूर्ण सफलता समोचित शिक्षा पर निर्भर करती है। यह मानो लक्ष्य की जान प्राण है। पर्याप्त विचार विमर्श एव मनन के पश्चात् शिक्षा क्रम के सम्बन्ध मे निम्न निष्कर्ष पर पहुचा हू।

1 बच्चो मे कहानिया सुनने की स्वभावत. विशेष रुची होती है। जटिल बातें उन्हे आकर्षित नही कर सकती। रुची कर बातें उन पर विशेष गहरा प्रभाव कर सकती हैं। अत सर्व प्रथम उन्हे अपने ऐसे ऐतिहासिक महापुरुषो की सच्ची गाथाए पढानी होगी जिनसे उनके अन्दर वीरत्व, धर्म सस्कृति के प्रति अटूट श्रद्धा प्यार एव उस पर मर मिटने की भावना, दृढ भूमि हो सके।

धर्मवीर हकीकतराय शहीद, प लेखराम, शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, श्री कृष्ण जी, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय जी, अमर शहीद महाशय राजपाल जी, अमर शहीद भगतसिंह जी, राजगुरु एव शहीद सुखदेव जी पितृभक्त श्रवण कुमार आदि की गाथाए पढाए।

इसके पश्चात् जैसे-2 उनका ज्ञानवर्धन होता जावे, जटिल प्रकार की वैदिक धारा के विद्वानो, वैज्ञानिको, ऋषि मुनियो, तत्वज्ञानी, सन्त महात्माओ की गाथाए पढानी होगी। इस प्रकार उनमे आर्य सद् शास्त्रो, वेद, वेदांगो, उपनिषदो, षड् दर्शनो—महा भारत, गीता, रामायण आदि के गूढ जटिल तत्वो को ग्रहण करने की स्वयमेव रुची उत्पन्न हो जावेगी, और वह ऐसे साहित्य एव आर्य धार्मिक सास्कृतिक सत्सगो की ओर आकर्षित होंगे। यही कारण है कि ऐसी रुची के अभाव मे हमारे सत्सगो और सास्कृतिक कार्यक्रमो मे सम्मिलित नहीं हुआ करते।

2 ऐतिहासिक गाथाओ के साथ-2 बच्चो को क्रमानुसार छोटे-2 वेद मन्त्र आदि आर्य मन्तव्य एव महापुरुषो के वचन भी याद कराने होगे।

3 वर्ष मे 2-3 बार परीक्षाए लेनी होगी। उन्हे इनाम देने तथा पुरस्कृत करने की योजना बनानी होगी।

शिक्षा मे प्राप्त अंको का कुछ भाग दूसरी साधारण शिक्षा मे प्राप्त अकों के साथ जोडा जावे ताकि बच्चो की रुची धर्म शिक्षा मे बराबर अन्य विषयो की भान्ति बनी रहे।

4 प्रश्नोत्तरिया के आयोजन भी किये जावें।

5 वैदिक सेमिनार अथवा छोटे-2 नाटकों के जिरये बैकट बना इन्हें वर्ष मे 2-3 बार अवश्य दिखाया जावे।

6. आर्य ज्ञानवर्धक, वीर-रस, सास्कृतिक, भजनो का प्रचार कराना।

7 वर्ष मे अपने किसी आर्य इतिहासी वीर पुरुष का नाटक रचाना। यथा वीर हकीकत राय का।

आवश्यक—इन विशेष धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी कार्य क्रमो के लिए विद्वत सभा बनानी होगी। जिनका कार्य निरन्तर इस ओर ध्यान देना होगा और खोजपूर्ण नए-नए रुचिकर कार्यक्रम बनाते रहना होगा। तभी सफलता मिल सकेगी।

चेतावनी—उपरोक्त योजना सर्वथा निष्फल होकर रह जावेगी यदि—

(1) पूरी ईमानदारी से इसे पाठशालाओं में लागू किया जावेगा। यहा तक कि यह पूर्ण रूप से ध्यान मे रहे कि सारी पाठशाला में एक भी बच्चा ऐसा न रहे, जो इस पाठ्यक्रम से वचित रह सके।

(2) इन पाठ्य क्रमो को निरन्तर प्रतिदिन बच्चो मे सस्कार डालने के लिए पढाया न जावेगा।

बीस वर्षीय योजना—हमे अपने-2 अधिकार क्षेत्र मे योजना बद्ध रूप से कार्य करना होगा तभी आगामी बीस वर्षों के अल्पकाल में हम बीस लाख बच्चो मे आर्य धर्म के प्रति उत्कट प्रेम, अनुराग तथा त्याग उत्पन्न कर सकेंगे। हमारे ख्याल मे करीब 500 डी ए. वी स्कूल होंगे तथा इतने ही अन्य आर्य स्कूल भी होंगे। इस प्रकार एक हजार विद्यालयों में यदि एक-एक हजार बच्चे हों तो उनकी सख्या दस लाख हो जाती है। शिक्षा काल के दस वर्षों में यथा दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर पूरा सस्कारित आर्य हिन्दू चेतना वाला बन जाएगा। इसी प्रकार अगले दस वर्षों में और दस लाख बच्चे पक्के हिन्दू आर्य सस्कारो वाले बन जाएगे। और गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होकर यदि एक परिवार के पाच सदस्य हो जावें तो फिर एक करोड आर्य हिन्दू तैयार हो जावेंगे। इस प्रकार अगले 40-50 वर्षों मे ही 4-4 करोड इस देश में पक्के हिन्दू आर्यों की सख्या हो जाएगी तो फिर समूचे भारत को सच्चा आर्यावर्त, हिन्दुस्थान बनने में क्या देर रह जाएगी।

विशेष वक्तव्य—मेरी हार्दिक कामना है कि उपरोक्त शिक्षा क्रम भारत भर की आर्य पाठशालाओ मे शीघ्रातिशीघ्र, बिना विलम्ब प्रारम्भ किया जावे। यह तभी सम्भव हो सकेगा यदि हम सार्वदेशिक, प्रादेशिक, प्रतिनिधि सभाए, डी ए वी एवं अन्य शैक्षणिक सस्थाओ को प्रभावित कर, योजनाबद्ध रूप मे चलावें निश्चय ही कार्य महान् है परन्तु जब महर्षि के दृढ सकल्पी अनुयायी इधर ध्यान देंगे, अपने महान् सगठनों को प्रयोग मे लावेंगे तो कृण्वन्तो विश्वार्यम् यदि पूर्ण नहीं तो वर्तमान भारत को अवश्य आर्यावर्त सच्चे अर्थों मे हिन्दुस्तान, अगली शताब्दी अन्त तक बनाने में पूर्ण सफल होंगे।

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव

दिनाक 4-4-87 शनिवार सत्सगोपरान्त मा श्रीमती कमला जी आर्या (मुख्याना) की अध्यक्षता मे वार्षिक चुनाव हुआ। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

सरक्षिका—श्रीमती सत्यावती भारद्वाज, प्रधाना-श्रीमती परमेश्वरी देवी। मन्त्री—श्रीमती वेद सेठी, उप-मन्त्री—श्रीमती सन्तोष धवन एव श्रीमती आनन्द पुरी, उप प्रधान—श्रीमती आशा जी अग्रवाल एव कोषाध्यक्ष—श्रीमती राज अरोडा। सह-कोषाध्यक्ष—श्रीमती रक्षा बाली। वस्तु भण्डार—श्रीमती लाजवन्ती अग्रवाल एव श्रीमती प्रकाश वर्मा। पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती राज वर्मा, श्रीमती कमला अरोडा। लेखा निरीक्षिका—कृष्णा कोछड।

अन्तरग सदस्याए :—इन्द्र देवी, दया अग्रवाल, कृष्णा कोहली, रक्षा ..जन, ज्ञान देवी सूद, कान्ता बेरी, सन्तोष वर्मा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की तीन प्रतिनिधि 3 वर्ष के लिए चुनी गई हैं। कृष्णा कोछड,श्रीमती परमेश्वरी देवी वेद सेठी।

—वेद सेठी
मन्त्री स्त्री आर्य समाज

युवक सभा किदवई नगर लुधियाना में सम्मेलन

दिनांक 19-4-87 को प्रात 8 बजे से 11 बजे तक युवक सभा किदवई नगर द्वारा महात्मा हसराज जन्म दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्व प्रथम बृहद् यज्ञ हुआ जिसमें एक दर्जन यजमान दम्पत्तियों ने यजमान पद को ग्रहण किया। मुख्य यजमान आर्य समाज किदवई नगर के प्रधान श्री ज्ञानी जी थे। यज्ञ के ब्रह्मा पंजाब के ख्याति प्राप्त युवा विद्वान् प सूर्यपाल शास्त्री एम ए, थे। आशीर्वाद के पश्चात् सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष युवा नेता श्री महिन्द्र प्रताप जी आर्य थे। सम्मेलन की शोभा आर्य युवक सभा पंजाब के संयोजक श्री रोशन लाल जी शर्मा के पहुचने से और बढ़ गई।

वेद प्रचार भजन मण्डली एव दयानन्द भजन मण्डलियो के मधुर भजन हुए। डा एस, बी बाविया, प सूर्यपाल शास्त्री के महात्मा हसराज जी के व्यक्तित्व पर सारगर्भित प्रवचन हुए। मंच संचालन का कार्य श्री भरतसिंह जी ने किया। श्री गरीबदास जी प्रधान आर्य युवक सभा ने सबका धन्यवाद किया।

—उत्तम चन्द
मन्त्री

—०—

लुधियाना में संगीत सम्मेलन

आर्य युवक सभा, लुधियाना द्वारा 10 मई 1987 प्रात: 8 00 बजे से 11 बजे तक आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में संगीत सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा। इस सम्मेलन में भजन मण्डलीया एवम् गायक भाग लेंगे। वैदिक धर्म के अनुसार भजनो का कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले कलाकारो को महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का फ्रेम किया हुआ, सुन्दर चित्र भेंट करके सम्मानित किया जाएगा। इस समारोह मे वेद प्रचार भजन मण्डली, लुधियाना श्री गुरु विरजानन्द भजन मण्डली, किदवई नगर लुधियाना, स्वामी श्रद्धानन्द भजन मण्डली तलवाड़ा भाग लेंगी। इस के अतिरिक्त और भी अच्छे भजनोपदेशको के भाग लेने की सम्भावना है। कार्यक्रम गायत्री महा यज्ञ से आरम्भ होगा, जिसमें लगभग 20 युवा दम्पत्तियो को यजमान बनाया जाएगा। सभी आर्य जनो से प्रार्थना है कि अपना तन, मन, धन से सहयोग देकर इस आयोजन को सफल करें।

—महेन्द्र प्रताप आर्य

श्री डी. बावले को १९८७ का गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार

जयपुर, स्थानीय सघड विद्या सभा ट्रस्ट ने 1987 का गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार डी ए वी. कालेज अजमेर के भू पू प्रिंसीपल श्री डी बावले और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के भू पू विजिटर प्रोफैसर सत्यव्रत सिद्धान्तालकार तथा ट्रस्ट के स्थापनाकाल से जुड़े रहे स्वर्गीय लाला चतनदास को देने की घोषणा की है।

स्वतन्त्रता पूर्व डेरागाजी खान जिले की सघड तहसील मे स्थापित सघड ट्रस्ट 1981 से शिक्षा समाज सुधार एव वैदिक साहित्य के क्षेत्र मे गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से विद्वानो को सम्मानित करता है।

इस वर्ष के पुरस्कार विजेताओ को नई दिल्ली के तालकटोरा आडिटोरियम मे 19 अप्रैल को अंग वस्त्र तथा एक हजार रु नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

—सघड विद्या ट्रस्ट जयपुर

—०—

चिंतन आर्य जनों के लिए

हमारी शक्ति का प्रयोग भाषण मे हुआ, कर्म में नही, हमने आदर भी भाषण को दिया, कर्म को नहीं। महर्षि दयानन्द के जीवन मे कर्म प्रथम था, भाषण पश्चात् उन्होंने अपने जीवन को पहिले रख कर दूसरो के जीवन को रखने के लिए भाषण पीछे किए हैं। वेद मे वैदिक संस्कृति और सभ्यता की स्थापना करना ही ऋषि ऋण से उऋण होने का एक मात्र साधन है। यह कार्य हम सदाचार की आधारशिला की स्थापना से कर सकते हैं और उसके लिए हमे दिव्य-आत्म शक्ति को प्राप्त करना होगा। (आर्य ग्रन्थो के स्वाध्याय व ईश्वरोपासना द्वारा)

—स्व स्वामी वेदानन्द सरस्वती
संग्रहकर्ता—प्रा धर्मेन्द्र धीमा,

मनुष्य अपनी शक्ति को पहचान

कृत्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि।
आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम ॥1॥

मनुष्य को कभी अपने आपको तुच्छ और हीन नही समझना चाहिए। उसे सदा ही यह स्मरण रखना चाहिए कि उसमे सभी प्रकार की विघ्न-बाधाओ को हटा कर आगे बढने की असीम शक्ति है। इस प्रकार की भावना को लेकर उसे सदा ही पुरुषार्थ पूर्वक आगे बढने की चेष्टा करनी चाहिए। वह यदि अपने समान योग्यता वालो मे ही रहा तो उसने अपनी शक्ति का कौशल नही दिखाया। उसे योग्यता प्राप्त करके अपने से अधिक योग्य पुरुषो की श्रेणी मे आने की चेष्टा करनी चाहिए और इस प्रकार आगे आगे बढते जाने का प्रयत्न करना चाहिए।

स्रक्त्योऽसि प्रतिसरोऽसि, प्रत्यभिचरणोसि।
आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम ॥2॥

मनुष्य म नई-नई रचनाए करने की शक्ति है, आगे बढने का बल है, आक्रमणो को रोकने की शक्ति है। उसे अपने आपको किसी बात मे हीन नही समझना चाहिए। उसे आगे-आगे बढने की चेष्टा करनी चाहिए।

प्रति तमभि चर योऽस्मान द्वेष्टि य वय द्विष्म।
आप्नुहि श्रेया समति सम क्राम ॥3॥

जो हमारी उन्नति से ईर्ष्या करके हमारे साथ शत्रुता करने लगे, हमे उनसे डर नही जाना चाहिए प्रत्युत मुह तोड कर उत्तर देना चाहिए और इस प्रकार उन्नति के रास्ते पर आगे-आगे बढते जाना चाहिए।

सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपानोऽसि।
आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम ॥4॥

मनुष्य को ज्ञानवान और तेजस्वी बन कर अपनी और अपनो की रक्षा करने मे समर्थ बनना चाहिए और हरेक क्षेत्र मे आगे बढने की चेष्टा करनी चाहिए।

शुक्रोसि भ्राजोसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम ॥5॥

मनुष्य को अपने आपको शक्तिशाली और तेजस्वी बनाना चाहिए और समझना चाहिए। अपनी अवमानना कभी नही करनी चाहिए। सदा ही उन्नति के मार्ग मे आगे बढते जाना चाहिए।

नोट —यह पाच मन्त्र अथर्व 2।11 सूक्त के हैं।

—डी. एन, वासुदेव फगवाड़ा

(4 पृष्ठ का शेष)

"इश्क ने गालिब निकम्मा कर दिया,
वरना हम भी आदमी थे काम के।"

एक अच्छे भले नौजवान को मुसीबत मे डाल दिया गया है। इसके स्कूल के साथियो ने जो देहरादून मे उसके साथ पढा करते थे समझा कि अगर यह प्रधानमन्त्री बन जाएगा तो हमारे लिए भी कई दरवाजे खुल जाएगे इसलिए उन्होंने भी इसका स्वागत किया।

राजीव गांधी के सिर पर काटो का ताज रख दिया गया। आज वह काटे चारो तरफ बिखरने लगे है।

मैं अब भी समझता हू कि राजीव का दामन साफ है। उसने न रिश्वत ली है न दी है। जो कुछ हुआ है उसकी अनुभवहीनता, अयोग्यता की वजह से। उसके चारो तरफ ऐसे लोग बैठे हैं जो राजीव की शराफत व अनुभवहीनता, अदूरदर्शिता का फायदा उठा रहे है। काश! राजीव ने रामायण पढी होती तो उसे पता चल जाता है कि राजा कैसे बना जाता है और राज कैसे किया जाता है।

—वीरेन्द्र

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हा इसी अपयश के हेतु जनन था मेरा।
निज जननी ही के हाथ हनन था मेरा।
अब कौन अभीप्सित और आर्य वह
किस का,
ससार नष्ट और भ्रष्ट हुआ घर
जिस का।
मुझ से मैंने ही आज स्वय मुह फेरा,
हे आर्य बता दो तुम्ही अभीप्सित
मेरा?

इसे कहते हैं आत्म ग्लानि की पराकाष्ठा या नैतिक मृत्यु।

'उस के आशय की थाह मिलेगी
किस को,
जन कर जननी भी जान न पाई
जिस को।

यह सारा खेल एक नारी की गृध्र-दृष्टि का था। वेद ने इसी लिए बराबर चेतावनी दी, "गृध्रयातु जहि।" मनुष्य गीध की चाल को छोड दे। आज प्रतिदिन किसी न किसी निरीह बहु का स्टोव की अग्नि मे जल मरना हमारे समाज की गृध दृष्टि का ही तो परिणाम है। कहा वेद तथा राम भरत का वह आदर्श और कहा हमारे समाज के पतन की यह पराकाष्ठा? ईश्वर भारत के नागरिको विशेषतय हिन्दू सास-ससुरो को सदबुद्धि प्रदान करें।

आर्य समाज नाभा की क्षति

आर्य समाज नाभा के गत दिनों मे 8 सदस्य भिन्न-2 अवसरो पर दिवंगत हो गए। जिनके चले जाने से आर्य समाज की महान् क्षति हुई है।

1 श्री परमानन्द जी वानप्रस्थी जो आर्य समाज के एक अच्छे कार्यकर्ता थे का स्वर्गवास हो गया।

2 श्री चेतन दास प्रधान आर्य समाज पाण्डूसर नाभा।

3 सतीश कुमार शास्त्री सुपुत्र प. रामदेव जी आर्य नाभा जो आर्य हाई स्कूल दीनानगर मे संस्कृत के अध्यापक थे।

4 श्री प रामदेव जी की धर्मपत्नी जो स्त्री आर्य समाज की सदस्य थी।

5 श्री ओम प्रकाश जी सदस्य आर्य समाज।

6 श्री जगदीश चावला सुपुत्र स्व भगवद्दत्त।

7 युवा सदस्य श्री सुधीर आर्य सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द आर्य।

प्रो बी भी शर्मा एम ए संस्कृत अध्यापक।

इन आर्य समाज के सदस्यो व अधिकारियो से आर्य समाज को वंचित होना पड़ा। जिसकी क्षति पूर्ति सम्भव है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह सभी दिवंगतात्माओ को सद्गति प्रदान कर और उन सब के परिवारो को इस असहाय दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

—अशोक आर्य

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सै 22 का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ।

सरक्षक—चौ रूप चन्द एडवोकेट, प्रधान—डा इन्द्रराज शर्मा, उप प्रधान-सर्व श्री डी डी सेठी, नरेन्द्रनाथ, डी आर मित्तल, मन्त्री-श्री सन्तराम अग्रवाल, उप-मन्त्री—श्री धर्मपाल कपूर, बूधराम एव गुलशन कालडा, पुस्तकाध्यक्ष—राम कुमार गुप्ता देसराज एव देवीदयाल, आडिटर—श्री विश्वामित्र महाजन।

—मन्त्री

आर्य समाज दीनानगर का चुनाव

5-4-87 रविवार को प्रात आर्य समाज दीनानगर का वार्षिक चुनाव हुआ जिस में डाक्टर हरिदास जी को सर्व सम्मति से पुन प्रधान चुना गया। शेष अधिकारियो के चुनाव का अधिकार भी डाक्टर जी को दिया गया उन्होंने जिन अधिकारी वर्ग का चुनाव किया वह इस प्रकार से हैं।

सरक्षक—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज तथा कर्म चन्द जी जगाधरी, प्रधान—डाक्टर हरिदास जी, उप प्रधान श्री बलराज जी गुप्त, श्री किशन चन्द जी तथा श्री बलदेव राज जी, मन्त्री—श्री रघुनाथ सिंह, उप-मन्त्री—श्री सुधीर कुमार जी, प्रचार-मन्त्री—श्री पृथ्वी राज जी जिज्ञासु, कोषाध्यक्ष—प्रिंसीपल गन्धर्व राज जी, लेखा निरीक्षक श्री साली राम जी, पुस्तकाध्यक्ष-श्री गणेश चन्द जी शास्त्री।

अन्तरग सदस्य —

श्री धर्म दत्त जी ओहरी, श्री पृथ्वी चन्द जी ओहरी, श्री हसराज जी, श्री पण्डित हसराज जी, श्री जग्रसेन जी, श्री रामकिशन जी वानप्रस्थ, श्री सतीश चन्द्र जी, श्री राम लाल जी, श्री देवीदास जी, श्री ओमराज जी, श्री अलकराज जी, श्री मनोहर सैन जी।

—रघुनाथ सिंह

गुरुकुल वेद मन्दिर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बद्ध गुरुकुल वेद मन्दिर मताना जिल्ला फतेहाबाद में पांचवीं, छठी एवं सातवीं कक्षाओं के साथ ही विशारद व शास्त्री कक्षाओं में भी प्रवेश दिया जा रहा है। सभी कक्षाओं में मात्र 21 वर्ष तक ही प्रवेश पायेंगे।

100 रुपए भोजन शुल्क प्रतिमास, 100 रुपए प्रवेश शुल्क 100 रुपए सुरक्षा धन।

आचार्य

गुरुकुल वेद मन्दिर संस्कृत महाविद्यालय जी टी रोड,
फतेहाबाद हिसार



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 | रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 5, 27 बैसाख सम्वत् 2044 तदानुसार 10 मई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

देव और परमात्मा

लेखक—श्री भक्तिसिंह ठाकुर, एम ए बी ए एम एस
राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, बारंग (किन्नौर) 172,107

इन्द्रं मित्रं वरुणम् अग्निम् आहुर्, अथो दिव्य स सु-पर्णो गरुत् मान् ।
एकं सद् विप्रा बहु-धा वदन्त्य्, अग्निं यम मातरि-श्वानम् आहुः ।
दीर्घतमा । सूर्य । त्रि-ष्टुप् । ऋग्वेद 1,164,46

अन्वय अग्निम् इन्द्रम्, वरुणम् आहु. । अथ-उ, सः दिव्यः, गरुत्-मान् सु-पर्ण (अस्ति) । एकम् सत् विप्रा बहु-धा वदन्ति । अग्निम् यमम, मातरि-श्वानम् आहु. ।

अर्थ अग्नि को इन्द्र, मित्र, वरुण कहते हैं । और भी, वह (अग्नि), सु-स्व, गरुत्-मान्, 'सु' पर्णो वाला (है) । अखण्ड सत् को संवेदनशील बहु-प्रकार से बोलते हैं । अग्नि को यम, माता मे सास लेने वाला कहते हैं ।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 164वा सूक्त बड़ा महत्वपूर्ण है । आरम्भ मे उस मे ब्रह्म जिज्ञासा से सम्बद्ध कुछ प्रश्न और उनके उत्तर हैं । उनका चिन्तन-मनन किया जाना चाहिए । वे वेद विद्या के आधारभूत विचार हैं । उसी प्रसंग मे यह मन्त्र सृष्टि के विभिन्न तत्वो की एकता का प्रतिपादन कर रहा है ।

1 परमात्मा दिव्य सुपर्ण है, गरुत्मान् है और एक है ।

(इस मन्त्र की एक व्याख्या 'सविता' (वर्तमान नाम 'वेद-सविता') के सुपर्णांक में द्रष्टव्य (पृ 38-31)

परमात्मा का प्रथम गुण है 'दिव्यता' दिव्य, अर्थात् द्यु-लोक मे अवस्थित अथवा प्रकाशमान् । परमात्मा की दिव्यता का उल्लेख गायत्री मन्त्र मे मिलता है । सविता का वरण करने योग्य तेज (भर्ग) साधकों के लिए ध्यान और धारणा का केन्द्र बनता है । यह दिव्यता अग्नि, जल, लोको, वनस्पतियो, औषधियो, आदि मे समान रूप से व्याप्त है । श्री गुरुदत्त ने इस दिव्यता को नाना किरणो के रूप मे माना है । वर्षा और अन्न इसी के नाम प्रतीत होते हैं ।

परमात्मा की दूसरी विशेषता है 'सु-पर्णत्व' । जिसके पर्ण सु—शोभन हो वह सुपर्ण है । सु—सुन्दर, चमकीले । 'पर्ण' का अर्थ है, पंख या पत्ते । एक वृक्ष पर दो सु-पर्ण बैठे हुए हैं । उनमें से एक वृक्ष के फल को खाता है, दूसरा नही खाता । मधुर फल का आस्वादन परमात्मा के सहृदय भक्त ही करते हैं ।

स्वर्णिम पत्तो वाली सोमलता के रस को हविरूप मे आहुत किया जाता है तो वह सु-पर्ण के रूप मे द्यो मे जाता है तथा सविता के भर्ग के रूप मे वापस लौटकर समस्त जड-चेतन मे सोम की वृद्धि करता है । उसकी तीसरी विशेषता है 'गरुत्मान्' होना । 'गरुत्मान्' का अर्थ है खीचने वाला या प्रशस्तिपूर्ण । परमात्मा अपनी गरुत्मता से सृष्टि के कण-कण को खीचकर पाल रहा है । साधक उसके इस गुण का अनुभव करता है ।

वह 'एक' है—यह परमात्मा की चौथी विशेषता है । सृष्टि के आदि मे वह हिरण्यगर्भ के रूप मे एक ही है । उस समय आकाश पिता था, विस्तीर्ण पृथिवी माता थी । इनके बीच मे अन्तरिक्ष मे सोमरूप बीज द्वारा गर्भ स्थापित हुआ । पृथिवी में गायत्री छन्द, अन्तरिक्ष मे त्रिष्टुप् तथा आकाश में जगती छन्द बना । गायत्री से ऋचाए बनी । ऋचाओ से साम की रचना हुई । त्रिष्टुप् से यजुर्-वाक्य बने । वाक् से सात प्रकार के छन्द बने । जगती से आकाश मे जलो की स्थापना हुई । सूर्य रथन्तर साम मे स्थित हुआ । इस तरह एक परमात्मा अनेक रूप वाला हुआ ।

परमात्मा सृष्टि के आदि मे अकेला था, और कल्पान्त मे भूत-समुदाय को अपने मे समेट कर पुनः एक अव्यक्त रूप मे रह जाएगा । अग्नि, वायु आदि एक होने पर भी ब्रह्माण्ड मे अनेक रूप से व्याप्त हैं । अन्य दिव्य शक्तियो का भी यही हाल है ।

2. इन्द्र अखिल ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा है । इन्द्रियो का दमन करने से जीव भी इन्द्र होता है । जो-जो श्रेष्ठ गुण प्राणियो मे हैं वे ईश्वर के तेजोमय भाग ही हैं ।

आधुनिक विज्ञान की भाषा मे परम अणुओ की त्रिगुणात्मक रासायनिक शक्ति (कैमीकल एफिनिटी) इन्द्र है । साम्यावस्था मे यह शक्ति अन्तर-मुख होती है । जब साम्यावस्था भंग होती है तब इन्द्र बहिर्-मुख होकर अपना जाल विस्तृत करता है । सृष्टि इन्द्र का जाल है ।

पहले यह असत् (अव्यक्त) था । प्राण (ऋषि) । प्राणो ने तप किया । वह प्राण-समष्टि इन्द्र है । इन्द्र ने अपने पराक्रम से सब प्राणो को दीप्त किया । दीप्त करने वाला इन्द्र ही है ।

वैदिक परम्परा मे इन्द्र मध्य-स्थानी देवता है । इसका वास-स्थान जल और ज्योति का पुञ्ज—स्वर्ग है । यह द्वादश आदित्यो मे से एक है और प्रजापति का पुत्र है । त्वष्टा ने वज्र बनाकर उसके बल मे वृद्धि की है । उसने पृथिवी और आकाश की रचना की । इनके बीच मे जल की स्थापना की । वह मेघो का स्वामी है । सूर्य की सहायता से वह वृत्र (मेघो मे प्रथम मेघ) को मारता है । विद्युत रूप मे द्युतिमान् भी इन्द्र ही है । सूर्य इन्द्र का तेज है जिसे वह उषा द्वारा प्रकट करता है । अग्नि, विद्युत और सूर्य रूप मे वह तीनो लोको मे व्याप्त है ।

इन्द्र प्राण-रूप मे समस्त जीवो का स्वामी है । वह ऋतुओ का प्रेरक और विश्वनियन्ता है । बहुकर्मा होने से वह शतक्रतु है । उसके अश्व हरित वर्ण के हैं । इन्द्रिया इन्द्र द्वारा नियन्त्रित होती है । वाणी तो साक्षात् इन्द्र की जिह्वा है । उषा, सूर्य और रश्मियो की सहायता से इन्द्र अन्धकार का नाश करता है और भक्तो को आयु, कीर्ति, सुबुद्धि, ज्ञान, सम्पत्ति, सन्तति, आदि प्रदान करता है । मरुत उसके सखा हैं ।

मित्र द्वादश आदित्यो मे मित्र का नाम आता है । वह अदिति का पुत्र है । उसका नाम बहुधा वरुण के साथ आता है । मित्र, वरुण और अर्यमा वर्ष, मास, दिन, रात्रि, यज्ञ और मन्त्रो को बनाने वाले हैं । मित्र की उत्पत्ति आकाश और पृथिवी से हुई है । वह समस्त लोको का पालक तथा कर्मों का अधिपति है । वह धर्म मार्ग की उन्नति करता है और अन्नादि को उत्पन्न करता है । वह साधक को ऐश्वर्य प्रदान करता है । वह सत्य रूप यज्ञ को पुष्ट करता है ।

वरुण आदित्य वरुण उस शक्ति का नाम है जो अन्तरिक्ष मे वर्षा की बूंदो को बनाती है जिससे जल बरसाने के लिए वर्षा के बादलो के नीचे के द्वार खुल जाते हैं । वरुण सब कार्यों का वरण कर लेता है । जो सब शिष्ट मुमुक्षुओ को अपना लेता है या साधको द्वारा वरण किया जाता है वह वरुण है ।

'अमरकोश' मे वरुण के प्रचेता, पाशी, यादसा-पति और अप्-पति नाम आए हैं ।

वरुण द्यावा-पृथिवी की स्थापना करने वाला, पृथिवी को प्रशस्त करने वाला और अन्तरिक्ष को फैलाने वाला । वह मनुष्यो मे सद्भाव के प्रेरक विवेक के रूप मे सर्वत्र उपस्थित रह कर पापो से बचाता है, विघ्नो से रक्षा करता है । वह ऊपर नीचे और मध्य के बन्धनो से मुक्त करता है । वह भूत-भविष्यत् का द्रष्टा है । वह प्रजाओ मे जठराग्नि को स्थिर करता है । अश्वो मे बल, गायो मे दूध, जल मे अग्नि, अन्तरिक्ष मे आदित्य, पर्वतो पर सोमादि औषधियो की स्थापना वरुण करता है । वह सायकाल मे अग्नि और प्रात काल मित्र बन जाता है । वह नदियो को जल देता है, दिन को रात से पृथक् करता है । उसकी किरणें दिन में श्वेत, और रात्रि मे काली होती हैं । उसके शरीर मे तीन स्वर्ग, तीन भूमिया और छह दिशाए छिपी हुई हैं । वह जगत् को धारण करता है । वह सकल्पशील मन को विस्तृत करता है और द्वादशाक्षर मन्त्र से विराट् पर विजय पा लेता है ।

(क्रमश)

व्याख्यान माला–११

नारी और उसका धर्म

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(12 अप्रैल से आगे)

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ।।10।

गृह कार्यों मे दक्ष गृहिणी सदैव प्रसन्नचित्त रहे, घर के सामानादि की सजावट रखे तथा खर्च करने मे बहुत ज्यादा खुला खर्च करने वाली न होवे।

नातन्त्री विद्यते वीणा नाचक्रो विद्यते रथः।
नापतिः सुखमेधेत या स्यादपि शतात्मजा ।।11।

जैसे बिना तार के वीणा नही होती, बिना चक्र के रथ नही होता। उसी प्रकार नारी बिना पति के सौ पुत्रो से पुत्रवती होकर भी सुख पूर्वक वृद्धि को प्राप्त नही होती।

नास्ति यज्ञः स्त्रियः किञ्चिन्न व्रतं नोपवासकम्।
या हि भर्तु श्च शुश्रुषा तया स्वर्गं जयत्यसौ ।।12।

स्त्री के लिए न तो कोई यज्ञ होता है और न व्रत न उपवास वह तो स्वामी (पति) की सेवा से ही स्वर्ग को जीत लेती है। अर्थात् स्त्री के लिये पति सुश्रूषा ही यज्ञ यागादि से अधिक महत्वपूर्ण एव स्वर्ग प्रद होती है।

मण्डनं वर्जयेन्नित्यं तथा प्रोषितभर्तृका।
धारयेन्मङ्गलार्थानि किञ्चिद्वा भरणानि च।
देवताराधनपरा तिष्ठेद्भर्तृहिते रता ।13।

जिसका पति परदेस गया हुआ हो उसके लिए नित्य प्रति के शृंगार विशेष करना उचित नही (सामान्य शृगार तो करने ही चाहिए अत्यधिक नही) मङ्गल अर्थात् सौभाग्य के कुछ चिन्ह मङ्गल सूत्र, सिन्दूर भरना, चूड़िया पहनना, बिन्दी लगाना तथा कर्णभूषण आदि को अवश्य धारण करना चाहिए तथा पति के हित का चिन्तन करती हुई देवपूजा मे लीन रहे।

कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री षाड्गुण्यमेतद्धि पतिव्रतानाम्
।।14।।

कार्य मे मन्त्री के तुल्य, सेवा मे दासी के तुल्य, भोजन के समय माता के तुल्य, शयन के समय रम्भा नामक अपसरा साक्षात् कामपूर्ति के तुल्य, धार्मिक कृत्यो मे अनुकूल रहना, पृथ्वी के तुल्य सहन शक्ति रखना पतिव्रता स्त्रियो के ये छः गुण कहे गए हैं।

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम्।
स्वप्नमन्यगृहे वासो नारीणां दूषणानि षट् ।।15।।

सुरा पान, दुष्टो का सङ्ग, पति से वियोग, व्यर्थ घूमना, सोते रहना, दूसरो के घर मे अनावश्य रहना स्त्रियो के ये छः दोष हैं।

पत्यौ जीवति या योषिदुपवासव्रतं चरेत्।
आयुः सा हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति ।।16।।

जो स्त्री पति के जीते भी उससे अलग होकर उपवास और व्रत रखती है, वह पति की आयु को हरती है, और नरक गामिनी होती है।

नित्यं स्नाता सुगन्धा च नित्यं च प्रियवादिनी।
अल्पभुक् मितवक्त्री च देवता सा न मानुषी ।।17।।

नित्य स्नान शीला, सुन्दर गन्ध वाली, सदा मधुर भाषिणी, कम खाने वाली, कम बोलने वाली स्त्री मानुषी नही अपितु साक्षात् देवता स्वरूपिणी होती है।

यस्य भार्या शुचिर्दक्षा भर्तारमनुगामिनी।
नित्यं मधुरवक्त्री च सा रमा न रमा रमा ।।18।।

जिसकी भार्या पवित्र, चतुर, भर्ता की आज्ञाकारिणी और सदा मधुर भाषिणी हो, (फिर उसके लिये लक्ष्मी-लक्ष्मी नहीं है)। अपितु ऐसी पत्नी ही उसके लिए साक्षात् लक्ष्मी है।

उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्।
प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्रीनिबन्धनम् ।।19।।

सन्तानोत्पत्ति, उत्पन्न सन्तान की रक्षा, प्रतिदिन लोक यात्रा का ध्यान अर्थात् दैनिक भोजनादि के द्वारा जीवन निर्वाह करना स्त्री के ये नैसर्गिक बन्धन—धर्म है।

काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् ।।20।।

ऋतु मती कन्या भले ही मरण पर्यन्त कुमारी रहे, परन्तु इसे किसी गुण हीन के साथ कभी न विवाहे।

पतिशुश्रूषणान्नार्यास्तपो नान्यद्धि विद्यते।
सावित्री पतिशुश्रुषां कृत्वा स्वर्गे महीयते ।।21।।

पति की सेवा के अतिरिक्त स्त्री के लिए और कोई तपस्या नहीं कही गई, तभी तो सावित्री पति की सेवा रूप तप करके स्वर्गीय महत्व को प्राप्त हुई।

इमं धर्मपथं नारी पालयन्ती समाहिता।
अरुन्धतीव नारीणां स्वर्गे लोके महीयते ।।22।।

एक चित्त होकर इस धर्म के मार्ग की रक्षा करती हुई समस्त नारियो मे अरुन्धती के समान स्वर्ग लोक मे पूजित होती है।

वैषम्यमपि संप्राप्ता गोपायन्ति कुलस्त्रियः।
आत्मानमात्मना सत्यो जितः स्वर्गो न संशयः ।।23।।

विषम (ऊचे नीचे) भाव को प्राप्त होती हुई भी कुलीन नारिया आत्म ज्ञान से अपने आप को और घर को सुरक्षित रखती है, ऐसी स्त्रियो ने मानो स्वर्ग ही जीत लिया है इसमे सशय नही।

यदन्नं नाभिजानाति यद् भोज्यं नाभिनन्दति।
भक्ष्यं वा यदि वा लेह्यं तत्सर्वं वर्जयेत्सती ।।24।।

सती स्त्री जिस अन्न को नहीं जानती, जिस खाने योग्य पदार्थ को, जिस चाटने योग्य पदार्थ को, अथवा खिलाने योग्य पदार्थ को स्वय नही चाहती उन सब का परित्याग कर देवे। अर्थात् अपरिचित के हाथ का अन्न भक्षण न करे तथा रसोई मे भी ऐसे पुष्टि प्रद भोज्य पदार्थों को ही बनावे जिनमे अतिथि तथा परिवार के सदस्यो को रुचि होवे।

कार्यार्थे निर्गतञ्चापि भर्तारं गृहमागतम्।
आसनेनोपसंयोज्य पूजयेत्सुसमाहिता ।।25।।

कामकाज के लिए बाहर गये भर्ता को, लौट आने पर अतिथिवत् आसनादि द्वारा स्थिर भक्ति से सत्कार करना चाहिए।

नोत्थापयति भर्तारं सुखसुप्तमियं सदा।
अन्तरेष्वपि कार्येषु तेन तुष्यति तन्मनः ।।26।।

अत्यावश्यक कार्य पड़ने पर भी जो नारी अपने स्वामी की सुखद निद्रा में बाधा नही डालती इससे स्वामी सदैव सन्तुष्ट रहता है तथा जब पति सन्तुष्ट है तो उसकी पत्नी भी स्वतः सन्तुष्ट है क्योकि पति की सन्तुष्टि मे ही पत्नी की सन्तुष्टि होती है।

श्रुत्वा स्वरं द्वारगतस्य भर्तुः प्रत्युत्थितातिष्ठ गृहस्य मध्ये।
दृष्ट्वा प्रविष्टं त्वरिताऽऽसनेन पाद्येन चैनं प्रतिपूजयस्व ।27।

हे नारी? द्वार पर आए हुए पति की आवाज सुनकर उसके स्वागत के लिए उठ खड़ी हो घर मे आए हुए पति को देख कर शीघ्र ही आसन और चरण धोने के जल से इसकी पूजा कर।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के लिए एक नई चुनौती–2

इसी लेख माला के पिछले अंक में मैंने लिखा था कि हमारे विरोधियों की ओर से जो साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है वह अधिक प्रभावशाली होता है। मुझे पिछले दिनों ऐसी दो पत्रिकाएं देखने को मिलीं। एक है हिन्दी में "इस्लामी दुनिया" इसमें इस्लाम के मत और सिद्धान्तों के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। साथ ही इस्लामी इतिहास का भी इसमें वर्णन है। परन्तु जिस ओर मैं पाठकों का ध्यान दिलाना चाहता हूं वह यह है कि यह पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित की गई है ताकि हिन्दी भाषी लोगों में इसके द्वारा इस्लाम का प्रचार किया जा सके और यह प्रकाशित की गई है बहुत ही बढ़िया कागज पर और इसकी छपाई भी बहुत उच्चकोटि की है। इसे देख कर इसे पढ़ने को दिल चाहता है। विशेष कर यह जानने के लिए कि किस उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की गई है यह वास्तव है क्या? इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानों के पास बेअन्त रुपया है। इस्लामी देशों से भी आता है यहां से भी वह जमा करते हैं और उसे वह इस्लाम के प्रचार के लिए व्यय करते हैं। जिस पत्रिका का मैंने ऊपर जिकर किया है यह हिन्दी की पत्रिका यदि इतनी उच्चकोटि का साहित्य पाठकों को देती है तो यह समझते हुए कि आज की दुनिया में सब लोग वही साहित्य पढ़ते हैं जिसे देख कर उसे पढ़ने को भी दिल चाहे। अन्दर क्या है यह तो वह बाद में देखते हैं। पहले तो उसकी सजधज को देख कर ही आकर्षित हो जाते हैं और उसे पढ़ने के लिए उठा लेते हैं। जिन्हें उसमें जो कुछ लिखा है उसमें कोई रुचि न हो वह उसे छोड़ देते हैं। परन्तु कुछ व्यक्ति वह भी होते हैं जो उसकी छपाई और कागज से आकर्षित होकर ही उसे पढ़ने पर विवश हो जाते हैं। हो सकता है कोई उसकी विचारधारा से भी प्रभावित हो जाए।

इसी प्रकार की मुझे एक पत्रिका 'रजनीश टाईम्स' भी देखने को मिली है वह भी एक मासिक पत्रिका है परन्तु बहुत उच्चकोटि की पत्रिका है चालीस पृष्ठों की इस पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर रजनीश और उसकी जो भी विचारधारा है वह प्रस्तुत की गई है। यह एक ऐसी पत्रिका है जिसे एक बार हाथ में लेकर आसानी से कोई व्यक्ति छोड़ नहीं सकता। इसमें जो सामग्री दी गई है केवल उसे पढ़ कर नहीं परन्तु इसकी सज-धज में जो आकर्षण है उसी कारण एक प्रति का मूल्य पांच रुपये है और यह भी हिन्दी में ही है।

मैंने केवल दो पत्रिकाओं के विषय में लिखा है क्योंकि अभी मैंने यह ही देखी हैं कहते हैं कि ईसाईयों की पत्रिकाएं भी इसी प्रकार की आकर्षक और बहु-चर्चित होती हैं मुसलमानों की तरह ईसाईयों के पास भी बहुत रुपया है। वह लोग अपने रुपये का सही प्रयोग करते हैं। इसलिए उनका यह प्रयास होता है कि वह जो भी साहित्य प्रकाशित करें वह ऐसा हो जिसे देखते ही लोग उसे पढ़ने के लिए लालायित हो जाएं। ईसाईयों ने अपना बाईबल दुनिया की प्रायः सब भाषाओं में प्रकाशित किया है। मुसलमानों के द्वारा कुरान शरीफ भी दुनिया की कई भाषाओं में प्रकाशित कर दिया गया है। हमने अपने वेद हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी में ही प्रकाशित किए हैं परन्तु दूसरी भाषाओं में बहुत कम किए हैं। कई यूरोपीय विद्वानों ने वेद पढ़े हैं, उन्हें पढ़ने के लिए उन्हें संस्कृत पढ़नी पड़ती है। कई यूरोपीय विद्वानों ने वेदों का अपनी भाषाओं में भी अनुवाद किया है परन्तु उसमें कई स्थानों पर वेदों के अर्थों का अनर्थ कर दिया गया है। मैक्समूलर का नाम इस सम्बन्ध में बहुत लिया जाता है। हमारे ही कई देशवासी उसकी बहुत प्रशंसा करते हैं कि उसने वेदों की बड़ी सेवा की है। परन्तु हमारे कई वेदों के विद्वानों का यह मत है कि मैक्समूलर ने वेदों के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है।

यह स्थिति इसलिए पैदा हो रही है कि हम अपने वैदिक साहित्य का उस ढंग से और उतना प्रचार नहीं करते जितना कि हमारे विरोधी करते हैं। मैंने ऊपर केवल दो पत्रिकाओं का जिकर किया है लेकिन हो सकता है इनके अतिरिक्त और भी कई ऐसी पत्रिकाएं हों। हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि आर्य समाज के साधन बहुत सीमित हैं। इसलिए हम उस प्रकार का उच्चकोटि का साहित्य अभी तक प्रकाशित नहीं कर सके। अब कुछ स्तर ऊंचा होने लगा है। परन्तु भिन्न-2 आर्य प्रतिनिधि सभाओं के जो साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं उनमें से कईयों का स्तर तो बहुत घटिया होता है। आज के युग में साहित्य प्रचार का एक बहुत बड़ा साधन है। इसलिए उसकी ओर ध्यान देने की बहुत आवश्यकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आर्य समाज की कई ऐसी पत्रिकाएं भी हैं जो बहुत उच्चकोटि का साहित्य जनता को देती हैं। किसी भी संस्था का प्रचार ठीक ढंग से तभी हो सकता है जब उसके सिद्धान्तों और उसके इतिहास को सरल भाषा में जनता तक पहुंचाया जाए केवल भाषा ही सरल नहीं होनी चाहिए उस साहित्य का स्वरूप भी आकर्षक होना चाहिए। इस दिशा में हमारी दो तीन पत्रिकाओं ने बहुत प्रगति की है। परोपकारिणी सभा अजमेर की पत्रिका परोपकारिणी, रामलाल कपूर ट्रस्ट की पत्रिका वेदवाणी और विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर की पत्रिका, विश्व ज्योति। यह तीनों ऐसी पत्रिकाएं हैं जो वास्तव में आर्य समाज के दृष्टिकोण को जनता के सामने इस रूप में प्रस्तुत करती हैं कि जिसे पढ़ कर समझ में आ जाता है कि महर्षि दयानन्द क्या थे। उनके सिद्धान्त क्या थे। उनकी विचारधारा क्या थी। यह तीनों पत्रिकाएं वह हैं जो अनुसन्धान का कार्य भी करती हैं। केवल इधर-उधर के लेख इकट्ठे करके जनता को नहीं दे देतीं। परन्तु कुछ ठोस प्रमाणित साहित्य भी देती हैं। यह तीनों उस चुनौती को कुछ स्वीकार कर सकती हैं जिसका कि मैंने ऊपर जिकर किया है। परन्तु इसी के साथ यह प्रश्न भी उठता है कि आज के युग में करोड़ों के बिना किसी भी संस्था का प्रचार नहीं हो सकता। विशेष कर यदि उसने सारी दुनिया तक अपना दृष्टिकोण पहुंचाना हो। इसमें आर्य समाज बहुत पीछे है परन्तु कई संस्थाएं अपने सीमित साधनों के अनुसार कुछ न कुछ करती रहती हैं वह क्या कर रही हैं और वह कौन-कौन सी संस्थाएं हैं जो इस क्षेत्र में प्रचार कर रही हैं उनके विषय में आगामी अंक में कुछ जानकारी दूंगा।

—वीरेन्द्र

भारतीय दर्शन की समस्याएं

एक युग था जब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में बड़े-2 उच्चकोटि के विद्वान् हुआ करते थे जो ऐसा साहित्य प्रकाशित करते थे जिसकी बड़े-2 विश्वविद्यालयों में और दूसरे क्षेत्रों में चर्चा हुआ करती थी। धीरे-धीरे उनकी संख्या कम होती गई परन्तु आज भी हम गर्व से कह सकते हैं कि अभी भी वहां कई ऐसे विद्वान् हैं जो बड़ी-2 समस्याओं का बड़ी गहराई से अध्ययन करके वैदिक विचारधारा को जनता के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं।

उनमें एक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय दर्शन विभाग के अध्यक्ष डा. जयदेव वेदालंकार भी हैं। पुस्तकें तो उन्होंने और भी कई लिखी हैं परन्तु अभी-अभी पिछले दिनों उनकी नई पुस्तक "भारतीय दर्शन की समस्याएं" प्रकाशित हुई है। यह उन्हें क्यों प्रकाशित करनी पड़ी इसका एक कारण बताते हुए उन्होंने उसमें स्वयं लिखा है कि—

"गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में अध्यापन करते हुए मन में यह न्यूनता अनुभव हो रही थी कि भारतीय दर्शन की चिन्तन परम्परा को लेकर लिखा गया समस्या मूलक ग्रन्थ इस समय उपलब्ध नहीं है भारतीय दर्शन का विवेचन उसकी प्रमुख समस्याओं को लेकर निरूपित किया जाए। मध्य-काल के प्रमुख आचार्य शंकर और रामानुज की दार्शनिक व्याख्या और इस युग के महर्षि दयानन्द की विचारधारा और तीनों आचार्यों की दार्शनिक मान्यताओं से पाठकों को सुपरिचित कराया जाए। इसी के साथ त्रैतवाद तीन अनादि सत्ताओं की मान्यता त्रैतवाद, ईश्वर, जीव, प्रकृति (परमाणु) इन तीनों में से प्रत्येक सत्ता यथार्थ है अनादि और अविनाशी है" इस दर्शन को भी डा जयदेव ने अपनी इस पुस्तक में वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है।

श्री जय देव जी ने इस पुस्तक पर जो परिश्रम किया है उसका अनुमान इसे पढ़ने से लगाया जा सकता है और इसी के साथ उनकी विद्वता, दूर दर्शिता का भी अनुमान लग जाता है। हमारे लिए अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के एक स्नातक ने इतना उच्चकोटि का साहित्य प्रस्तुत किया है। ऐसी पुस्तक प्रत्येक महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में रहनी चाहिए क्योंकि इसे पढ़ने से हमें हमारे प्राचीन दर्शन और उसके विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार क्या हैं यह भी पता चल जाता है। यह पुस्तक या तो डा जयदेव वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से मिल सकती है या प्राच्य विद्या शोध प्रकाशन हरिद्वार से मिल सकती है, इस पुस्तक के लिए मैं डा जयदेव जी वेदालंकार को बधाई देता हूं। मेरी यह कामना है कि वह इसी प्रकार के ग्रन्थ और भी लिखते रहें ताकि वैदिक विचारधारा का शुद्ध स्वरूप जनता के सामने आता रहे।

—वीरेन्द्र

हम पंजाबी के विरोधी नहीं हैं
हिंदी के संरक्षक अवश्य हैं

—श्री वीरेन्द्र जी एम ए. सभा प्रधान

यह केवल पजाब का ही नहीं सारे देश का दुर्भाग्य है कि कई बार कुछ बड़े-बड़े लोग कुछ ऐसी बातें कह देते हैं जो तथ्यो के सर्वथा विपरीत होती हैं और जो हालात को और भी अधिक जटिल बना देती हैं।

गत दिनो प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता और लोकसभा के सदस्य श्री सुनीलदत्त सद्भावना यात्रा पर पजाब आए और अमृतसर मे श्री अकालतख्त के जत्थेदार प्रो. दर्शन सिंह रागी से भी मिलने गए। दोनो के बीच पजाब की वर्तमान स्थिति के बारे विचार विमर्श हुआ। इस दौरान जत्थेदार रागी ने कहा कि 'जिस दिन पजाबी हिन्दुओ ने पजाबी अपनाने से इन्कार कर दिया था उसी दिन सिख स्टेट कायम हो गई थी।" हिन्दुओ ने पजाबी को कभी भी अस्वीकार नहीं किया। केवल अपने धर्म और परम्पराओ को कायम रखने के लिए हिन्दी को सरक्षण अवश्य दिया है। गलत बातें कहने से हालात को और भी अधिक जटिल बनाने से कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि पजाबी हमेशा ही हिन्दुओं की बोली रही है, भाषा कभी भी नहीं बनी। यदि रागी साहेब भाषा और बोली मे अन्तर समझ लें तो उन्हे पता चल जाएगा कि हिन्दुओ ने जो कुछ किया वह ठीक था।

इससे पहले कि मैं इस समस्या पर आगे चर्चा चलाऊ मैं रागी साहेब से एक स्पष्ट और सीधा प्रश्न करना चाहता हू यदि उनमे साहस है तो उन्हे इसका उत्तर देना चाहिए। मेरा प्रश्न यह है कि स्वतन्त्रता से पहले भी पजाब के लोगो की बोली पजाबी थी। हिन्दू, मुसलमान, सिख सब पजाबी बोला करते थे। उस समय अकालियो ने यह माग क्यों नहीं की थी चू कि सब पजाबियों की बोली पजाबी है इसलिए पजाब की भाषा भी पजाबी होनी चाहिए। उस समय पजाब की राजभाषा या तो अग्रेजी थी या उर्दू। और सब सिखो ने उसे स्वीकार किया था। उस समय किसी भी सिख ने यह माग नहीं की थी कि पजाब की राजभाषा केवल पजाबी होनी चाहिए। वह अपना सारा काम अग्रेजी में करते थे या उर्दू मे।

स्वतन्त्रता के बाद पजाबी के पक्ष मे आवाज उठनी शुरू हुई और अचानक अकालियो के दिल मे पजाबी के लिए प्यार जाग उठा-क्यो? इसलिए नहीं कि उन्हे पजाबी से वास्तव मे ही प्यार था बल्कि इसलिए कि वह पजाबी की आड़ मे अपना एक राज्य स्थापित करना चाहते थे। पजाबी के आधार पर एक पजाबी सूबा बन गया और आज उस पजाबी सूबा में जो कुछ हो रहा है वह हम देख रहे हैं।

यदि अकालियो को पजाबी की चिन्ता होती, तो वह सच्चर फार्मूला खत्म न कराते उसके अन्तर्गत पजाबी सारे पजाब मे हरियाणा और हिमाचल मे पढाई जाती थी। हरियाणा की उसके विरुद्ध शिकायत समझ आ सकती थी। वे इससे मुक्ति पाना चाहते थे। सच्चर फार्मूला के अन्तर्गत उनके लिए पजाबी पढनी अनिवार्य थी लेकिन अकालियो ने अपनी मूर्खता से पजाबी को एक छोटी सी सूबी मे बन्द कर दिया। जो पजाबी पहले एक तरफ रोहतक और हिसार मे पढाई जाती थी और दूसरी ओर कुल्लू मनाली मे भी पढाई जाती थी, उसे अकालियो ने एक छोटी सी सूबी मे बन्द कर दिया। अब वह अमृतसर से शुरू होती है और राजपुरा मे जाकर खत्म हो जाती है और इसके लिए हिन्दुओ को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। हिन्दुओ ने कोई गलती नहीं की जो कुछ स्वतन्त्रता से पहले हमारे सिख भाई कर रहे थे वही स्वतन्त्रता के बाद हिन्दुओ ने भी किया है। स्वतन्त्रता से पहले सिख उर्दू और अग्रेजी को अपनी राजभाषा मानते थे स्वतन्त्रता के बाद हिन्दू हिन्दी और पजाबी को अपनी राजभाषा मानते हैं। पजाब के अकाली आज भी हिन्दी को अपनी राजभाषा नही मानते। वह हिन्दी पर अग्रेजी को अधिमान देते हैं और हिन्दुओ से यह अपेक्षा करते हैं कि वह हिन्दी का दामन छोड दें। मास्टर तारा सिंह ने एक बार कहा था कि हिन्दुओ के राजनीतिक महत्व को समाप्त करना है तो हिन्दी को समाप्त करो और हिन्दू कहते हैं कि अगर उन्होंने अपने राजनीतिक महत्व को समाप्त करना है तो हिन्दी को समाप्त करो और हिन्दू कहते हैं कि अगर उन्होंने अपने राजनीतिक महत्व को कायम रखना है तो पजाब में हिन्दी को जीवित रखना अनिवार्य है। अकालियो की दो भाषाए हैं। पजाबी और अग्रेजी हिन्दुओ की तीन भाषाए हैं। हिन्दी, पजाबी और अग्रेजी। भारत सरकार ने त्रिभाषी फार्मूला बना रखा है। पजाब के हिन्दू उसी के अनुरूप चल रहे हैं। वे पजाबी विरोधी कैसे हो सकते हैं।

रागी साहेब फरमाते हैं कि जिस दिन हिन्दुओं ने पजाबी को अस्वीकार किया था उसी दिन सिख स्टेट बन गई थी। प्रथम तो मैं यह स्वीकार करने को कदापि तैयार नहीं कि हमने पजाबी को अस्वीकार किया है। यह पहले भी हमारी बोली थी आज भी है और आगे भी रहेगी। इसलिए यह कहना सरासर अनुचित है कि हिन्दुओ ने पजाबी को छोड दिया है। हिन्दू अगर अग्रेजी पढ सकते हैं, उर्दू पढ सकते हैं। उनमे से कुछ फ्रैंच और जर्मन पढ सकते हैं तो उन्हे पजाबी पढने पर कोई आपत्ति कैसे हो सकती है। लेकिन रागी साहेब फरमाते हैं कि जब हिन्दुओ ने पजाबी से इन्कार किया था तो सिख स्टेट कायम हो गई थी। जत्थेदार जी जब इतिहास पढें तो उन्हे पता चल जाएगा कि सिख राज्य की नीव तो स्वतन्त्रता से पहले ही रखी गई थी। जिन दिनो सत्ता भारतीयो को सौंपने के प्रश्न पर ब्रिटिश सरकार बातचीत कर रही थी तो मास्टर तारासिंह और ज्ञानी करतार सिंह दोनो ने अकाली दल की ओर से यह माग की थी कि भारत और पाकिस्तान के बीच सिखो के लिए खालिस्तान बनाया जाए। नेहरू तथा जिन्नाह दोनो इसके लिए तैयार नहीं हुए। उसके बाद मास्टर तारा सिंह ने पाकिस्तान के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई।

हिन्दुओ को यह पता था कि पजाबी भाषा के आधार पर जो राज्य मांगा जा रहा है उसका क्या अभिप्राय है पण्डित जवाहर लाल ने इसी लिए कह दिया था कि पजाबी सूबा किसी भी तरह नही बन सकता। क्योंकि यह एक विशुद्ध साम्प्रदायिक माग है। आज जो कुछ पजाब मे हो रहा है वह यह सिद्ध कर रहा है कि पण्डित जी का अनुमान सही था। उन्होंने कहा था कि अगर सिर्फ पजाबी भाषा की प्रगति का प्रश्न हो तो इसके लिए वह सब कुछ करने को तैयार हैं, सच्चर फार्मूले के द्वारा पजाबी की पढाई सारे पजाब, हरियाणा और हिमाचल में अनिवार्य बना दी थी। पटियाला मे एक पजाबी विश्वविद्यालय स्थापित कर दिया गया यदि अकाली ईमानदारी से पजाबी भाषा के शुभचिन्तक होते तो वह पजाब का विभाजन नहीं कराते, लेकिन वह तो पजाबी के द्वारा राजनीतिक सत्ता चाहते थे। हिन्दू उनकी इस चाल को समझते थे। इसीलिए उन्होंने हिन्दी का दामन पकड लिया क्योंकि वह देश की राष्ट्र भाषा है इसके द्वारा हम अपने देश से जुड़े रहेंगे।

हिन्दी और पजाबी के बारे में जो विवाद पिछले 40 वर्षों से चल रहा है उसके सभी पहलुओं पर गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से कोई राजनीतिक पार्टी इस ओर ध्यान देने को तैयार नहीं है। इन पार्टियों और इनके नेताओ को वोट की अधिक चिन्ता रहती है। इसलिए वे हालात के अनुसार पैंतरे बदलते हैं। "प्रताप" और "वीर प्रताप" को इस बात का गर्व प्राप्त है कि भाषा के बारे में उनका जो स्टैंड आज से चालीस वर्ष पूर्व था आज भी वही है। और वह बड़े गर्व से कह सकते हैं कि :—

> जमाना बदलता रहा हम न बदले
> वही हैं दुआए वही इल्तजाए।

अब जबकि श्री दर्शन सिंह रागी ने यह प्रश्न पुन: उठाया है तो उसका उत्तर फिर "प्रताप" और 'वीर प्रताप" दे रहे हैं। कोई राजनीतिक नेता इसके बारे में नहीं बोलेगा। उन्हे डर रहता है कि वे कल को कुछ वोटो से हाथ न धो बैठें। इसलिए भाषा के बारे मे हमारा जो सही स्टैंड है उसे एक बार फिर स्पष्ट कर देना चाहता हू। मैं प्रोफैसर दर्शनसिंह रागी से निवेदन करूगा कि वह इस पर गम्भीरता से विचार करें और कोई ऐसा मार्ग निकालें जो इस समस्या को हमेशा के लिए हल कर सके।

पहली बात जो मैंने पिछले लेख में भी स्पष्ट की थी, और आज फिर दोहराना चाहता हू, वह यह कि हम पजाबी के विरुद्ध नहीं हैं। हिन्दी के पक्ष मे अवश्य हैं। हम यह भी समझते हैं कि जहा पजाब की राजभाषा पजाबी पढना आवश्यक है वहा देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी को पढना भी आवश्यक है। देश की एकता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हिन्दी का समर्थन करना आवश्यक है। पजाब तथा पजाबियो के लिए यह आवश्यक है कि हमारा यह राज्य हिन्दी भाषी राज्यो से घिरा हुआ है। यदि हम हिंदी को छोड देंगे तो शेष देश से कट जाएगे। इसलिए हिन्दी हमारे लिए आवश्यक है।

कहा जाएगा कि हिन्दी तो आज सब स्कूलों मे पढाई जाती है फिर आपत्ति किस बात पर है? स्कूलो मे तो हिन्दी पढाई जाती है लेकिन सरकारी कार्यालयो मे उसके प्रयोग पर प्रतिबन्ध है। वहां अग्रेजी तो चल सकती है हिन्दी नही चल सकती। यह ऐसी स्थिति जिसे हिन्दी प्रेमी सहन करने को तैयार नहीं है? देश की राष्ट्रभाषा का अपमान सम्पूर्ण राष्ट्र का अपमान है। जिस मे हिन्दी प्रेमी शामिल होने को तैयार नहीं है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में मुख्यमन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह जी का दीक्षान्त भाषण

(3 मई से आगे)

इस शिक्षा-नीति मे समाज के सभी वर्गों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने की दिशा मे ठोस और प्रभावकारी कदम उठाने का निर्देश भी है। किसी भी समाज मे स्त्रियो की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है और यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि आज तक हम स्त्रियो की दशा पर समुचित ध्यान नही दे पाये है। नई नीति मे प्रधानमन्त्री ने स्त्रियो की शिक्षा के विस्तार और उसे अधिक प्रभावकारी बनाने पर विशेष बल दिया है। स्त्रियो की शिक्षा के बारे मे सामाजिक पूर्वाग्रहो का यथा शक्ति मुकाबला करके इस ओर सामाजिक दृष्टिकोण बदलना अत्यन्त आवश्यक माना गया है। स्त्रियो के साथ भेदभाव को समाप्त करने तथा उन्हे सभी स्तरो की शिक्षा के और अधिक अवसर उपलब्ध कराने की ओर प्रदेश शासन का विशेष ध्यान है।

अनुसूचित जाति-जनजाति, दुर्बल वर्ग तथा पिछड़े वर्ग के लोगो की शिक्षा को देश और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक मानते हुए उनके लिए विभिन्न प्रकार की विशेष योजनाओ के माध्यम से विशेष सुविधाए उपलब्ध करायी जाएगी। इन लोगो को शिक्षा की मुख्य धारा मे लाने का प्रयास नयी शिक्षा नीति द्वारा किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सभी दिशाओ मे श्रेष्ठता पर बल दिया गया है। देश के विकास के लिए इस स्तर की शिक्षा को सुदृढ बनाना अत्यन्त आवश्यक है क्योकि पिछले चालीस सालो मे देश की बढ़ती आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए उच्च शिक्षा का तेजी से विस्तार तो हुआ परन्तु इसके फलस्वरूप उच्च-शिक्षा की गुणात्मकता मे गिरावट आई है तथा अनेक कारणो से शिक्षा सत्र अनियमित हो गए हैं। नयी नीति मे इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे गुणात्मक सुधार लाने के प्रयत्न किए जाए।

किसी भी राष्ट्र को प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए जिन तत्वो की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, वे है—अनुशासन, परिश्रम एव नैतिक मूल्य। इन तीनो के अभाव मे कोई भी राष्ट्र प्रगति नही कर सकता और न ही इनके बिना चरित्र का निर्माण हो सकता है। धर्म-धर्म. शिक्षा संस्थाओ से गुरु-शिष्य का प्राचीन स्वरूप समाप्त होता जा रहा है जिसके परिणाम-स्वरूप संस्थाओ मे अनुशासन की समस्यायें बढ़ती जा रही हैं। इस समस्या के निराकरण की ओर हमारे विद्यार्थियों को ध्यान देना चाहिए द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण नेस्तनाबूद जापान, जर्मनी जैसे राष्ट्र कठिन परिश्रम के बल पर ही आज आशातीत प्रगति कर विकास के उच्च शिखर पर आरूढ हो गए हैं। वे राष्ट्रीय भावना के साथ कार्य करने को ही स्वधर्म समझते हैं परन्तु हमारे देश मे प्राकृतिक सम्पदा के बाहुल्य के बावजूद भी हम अभी तक उसका यथेष्ठ उपयोग नही कर सके हैं। परिश्रम ही वह साधन है जिसके बल पर बेरोजगारी की समस्या का निदान हो सकेगा और राष्ट्र भी समृद्ध होगा। इसी तथ्य को दृष्टि मे रखते हुए श्रद्धेया श्रीमती इन्दिरा गाधी ने हमे एक नया नारा दिया था—'श्रमेव जयते।' हमे चाहिए कि एक जुट होकर सत्यनिष्ठा एव अटूट लगन से कठिन परिश्रम करके राष्ट्र के विकास मे सतत् योगदान देते रहें। आज समय की सबसे बड़ी माग है नैतिक मूल्यों की स्थापना। राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने मे नैतिक मूल्यो की स्थापना। राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने मे नैतिक मूल्यो की सर्वाधिक भूमिका होती है। ये नैतिक मूल्य एव सात्विक मर्यादाए ही थी जिन के बल पर चिरकाल से विदेशियो की दासता मे जकड़े भारत को अनवरत संघर्षों के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकी थी। यही कारण है कि महात्मा गाधी, पण्डित जवाहर लाल नेहरू, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय और सरदार पटेल आदि नेताओ के प्रति लोगो के मन मे अटूट श्रद्धा, विश्वास एव सम्मान की भावना व्याप्त थी और आज भी उन्हे वही सम्मान दिया जाता है। मैं अपेक्षा करूंगा कि हमारे नवयुवक इस मर्यादा का निर्वाह करते हुए नैतिक मूल्यो पर ध्यान देते रहेंगे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि इस विश्वविद्यालय मे पढाई के साथ सदाचार और चरित्र-निर्माण पर भी विशेष बल दिया जाता है। आज देश मे साम्प्रदायिक शक्तियां फिर से सिर उठा रही हैं, जिसका हमे डट कर मुकाबला करना है। हमारे पूर्वजों के बलिदान से राष्ट्र को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है और इसकी रक्षा करना हमारा पुनीत दायित्व है। शिक्षा संस्थाओ की ऐसे समय मे प्रमुख भूमिका रही है और मुझे विश्वास है कि आगे भी वे अपने कर्त्तव्यो व दायित्वो का सफल निर्वाह करती रहेंगी।

आज का युग विज्ञान का युग है। हम इस बात के लिए गौरवान्वित हैं कि हमारे वेद-मन्त्रो एव पुराणो मे ज्ञान-विज्ञान के मूल मन्त्र पाए जाते हैं। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमारा अतीत विज्ञान एव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे भी काफी समृद्ध था। यह विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है जहा विज्ञान के विषयो की शिक्षा भी भारतीय भाषा मे दी जाती है।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि इस विश्वविद्यालय मे जहा प्राच्य भाषा संकाय हैं, वही कला एव विज्ञान संकाय भी है। स्नातकोत्तर उपाधि स्तर पर माइक्रोबायोलोजी पाठ्यक्रम तथा स्नातकोत्तर डिप्लोमा के रूप मे बायो-कैमिस्ट्री तथा कम्प्यूटर पाठ्यक्रम संचालित हो जाने से यह विश्वविद्यालय विज्ञान के क्षेत्र मे भी सराहनीय योगदान दे रहा है।

आज जो नवयुवक दीक्षा समाप्त करके जीवन संग्राम मे प्रवेश कर रहे हैं, उनके ही यह निर्भर करता है कि वे समाज में अनावश्यक, हानिकारक तथा अनुपयोगी व्यवस्थाओ को पहचान कर उनके स्थान पर आवश्यक, लाभ कर तथा उपयोगी व्यवस्थाओ की स्थापना मे अपना महत्वपूर्ण योगदान करें। देश के निर्माण की जिम्मेदारी भले ही वर्तमान पीढी पर हो। उसको निरन्तर विकास की दिशा मे ले जाने की जिम्मेदारी सदैव ही नयी पीढी पर होती है। मैं यह आशा करता हू कि आज नवयुवक इस महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह करने मे पूरी तरह सक्षम हैं। आप सब से मेरी और समाज की अपेक्षा है कि आप लोग अपने जीवन मे अपने को योग्य सिद्ध करें तथा अपने व्यक्तिगत दायित्वो के साथ-साथ अपने सामाजिक कर्त्तव्यो को भी पूरा करें तभी आप लोग अपने को गुरुजनो द्वारा दी गई शिक्षा, स्नेह, प्रेम और विश्वास के योग्य पात्र सिद्ध करेंगे।

ऐसे सम्मानित विद्वत्समाज मे मेरे लिए उपदेशक का कार्य करना किसी प्रकार उचित नही है। अन्त मे मैं पुन कहना चाहूंगा कि विद्यार्थी दीक्षान्त समारोह को अपनी शिक्षा दीक्षा का अन्त न समझें और निरन्तर ज्ञानार्जन करते हुए समाज के हित मे उसका प्रयोग करें। शिक्षा जीवन की एक सतत प्रक्रिया है। जीवन के हर मोड पर उन्हे नित्य एक न एक परीक्षा से गुजरना पड़ेगा। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का मूल मन्त्र कभी भी विस्मृत न होने पाये। जिन छात्रो ने इस दीक्षान्त समारोह मे उपाधि प्राप्त की है मैं उनको बधाई देता हू और उनके उज्ज्वल भविष्य की हृदय से मगल कामना करता हू। आप सब राष्ट्र के सच्चे नागरिक बने और अपने जीवन मे सदैव सफलता प्राप्त करें। इन शब्दो के साथ मैं पुन एक बार उन सभी को धन्यवाद देता हू जिन्होने मुझ इस गौरव-पूर्ण समारोह मे सम्मिलित होने का सुअवसर प्रदान किया है।

—

श्री पं. तीर्थ राम जी शर्मा नहीं रहे

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त श्री वीरेन्द्र शर्मा सभा के मन्त्री के पूज्य पिता श्री प तीर्थ राम जी शर्मा का 1-5-87 शुक्रवार को अमृतसर मे देहावसान हो गया। श्री शर्मा जी अचानक बीमार हो गए और बीमारी इतना भयकर रूप धारण कर गई की वह शीघ्र ही हमारे बीच मे से चले गए। उनका अन्तिम संस्कार शनिवार 2-5 87 को प्रात: 11 बजे कर दिया गया। श्री शर्मा जी का आर्य समाज से बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध था उन्हें जहा भी पता चल जाए कि वहा आर्य समाज का उत्सव हो रहा है वह वहा अवश्य पहुच जाते थे। वैदिक साधनाश्रम यमुना नगर तथा दयानन्द मठ जालन्धर से उनका विशेष सम्बन्ध रहा है। जब भी इनके उत्सव होते थे वह सप्ताह भर निरन्तर सेवा करते रहते थे। रेलवे मे सर्विस करते हुए भी वह आर्य समाज के लिए अपना समय निकालते रहे।

आर्य समाज के प्रति उनकी सेवाए कभी भी भुलाई नही जा सकेंगी। उनका चला जाना आर्य समाज के लिए हानिकर है। धीरे-2 करके अच्छे-2 कार्यकर्ता जा रहे हैं परन्तु उनका स्थान लेने वाले आगे नहीं आ रहे।

श्री शर्मा जी का अन्तिम शोक दिवस 11 मई सोमवार को आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर मे दोपहरबाद 2से 3 बजे तक मनाया जाएगा।

हिन्दू मुस्लिम नेताओ की भेंट और रामजन्म भूमि का निर्णय

लेखक—डा. आनन्देश जी आर्य,
अफजल उल उलमा मद्रास यूनिवर्सिटी

दिनांक 10 मार्च 1987 ई को दिल्ली नगर के प्रसिद्ध पंचतारा अशोक होटल के कक्ष क्रम संख्या 406 मे विश्व हिन्दू परिषद, राम जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति, मजलिस से मुशावरत की भेंट हुई थी, वह वर्तमान परिस्थिति में प्रमुख चर्चा का विषय बना हुआ है। यद्यपि दो घन्टे की दीर्घावधि चर्चा में किसी प्रकार की निर्णयात्मक वार्ता न हो सकी।

इस मीटिंग में श्री सैय्यद शहाबुद्दीन एम पी ने अपनी धूर्तता का परिचय प्रदर्शित करते हुए प्रस्तुत कार्य के सम्पादन के लिए बडी दक्षता एवं चतुराई से सभा के आयोजन के पूर्व ही समाचार संवाददाताओ को बडी कुटिलता से उन्हे वहा से निष्कासित किया। यद्यपि हिन्दू प्रतिनिधियो की ओर से वार्तादारो की उपस्थिति से सम्बन्धित कोई आपत्ति नहीं उठाई गई थी तथापि श्री शाहबुद्दीन साहेब ये नहीं चाहते थे कि संवाददाताओं के माध्यम से उनकी कुटिलता का पर्दाफाश हो जाए। हिन्दुस्तान के कट्टर संकीर्ण साम्प्रादियकता के समर्थक व पोषक श्री गुलाम मुहम्मद बनातवाले एम पी प्रारम्भ से लेकर मीटिंग के अंतिम क्षण तक साम्प्रदायिकता का विष उगलते रहे। जितने वक्तव्य मुसलमानो की ओर से दिए गए हैं उन से यह स्पष्ट होता है कि वे इस ज्वलन्त समस्या को सुलझाने के पक्ष मे नही हैं, अपितु दीर्घकाल तक उलझाना ही चाहते हैं।

मुसलमानो की ओर से अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक नया षड्यन्त्र रचा जा रहा है। जिसके कारण हिन्दू प्रतिनिधियो के समक्ष एक प्रश्न उपस्थित किया गया है। क्या हिन्दू इस बात को सिद्ध कर सकते हैं कि इस संसार मे भगवान राम नाम की कोई महान् विभूति का जन्म हुआ था? गृहीत कर लिया जाए कि श्री भगवान रामचन्द्र जी का इस देश में जन्म हुआ था।

क्या यह प्रमाणित किया जा सकता है कि विवाद ग्रस्त क्षेत्र अयोध्या में ही उनका जन्म हुआ था। उपरोक्त प्रश्नो का उत्तर हिन्दू नेताओ द्वारा जिस ढंग से देना चाहिए था उस प्रकार से नही दिया गया। समाधान कारक उत्तर न देने के कारण मुसलमानों का दुस्साहस बढ़ने लगा और उल जलूल बातें करने लगे। अतः समय और विषय की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किए गए उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर सम्यक रूप से दिया जाना चाहिए।

यह सत्य है कि श्री भगवान राम नाम की महान् विभूति इस संसार में विद्यमान थी। इसके अनेक प्रमाण प्रस्तुत है। भारत की समस्त भाषाओं मे यहां बाबरी मस्जिद एक्शन कमिटी के बीच उनका उल्लेख है, यहीं अरबी तथा फारसी भाषा के ग्रन्थो मे उनके जीवन का सविस्तृत परिचय उपलब्ध होता है। स्वयं मुस्लिम उलमा इन ग्रन्थो के प्रणयिता हैं। और उन्होंने श्री रामजी के प्रति अनन्य श्रद्धा निष्ठा, एवं आस्था प्रगट की है। उनकी मान्यता यही रही है कि भगवान राम जी का अवतरण इसी पुनीत अयोध्या नगरी मे ही हुआ था। इसके अतिरिक्त जर्मन तथा योरोपीय भाषाओ मे ऐसे अकाट्य प्रमाण दिए गए हैं। जिन्हे कोई अस्वीकार नही कर सकता। हम मुस्लिम बन्धुओं को सच्चे हृदय तथा विनीत भाव से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर इन प्रमाणों को निर्भयतापूर्वक न्यायालय में प्रस्तुत करने के लिए तैयार हैं। इसमें हमें किसी प्रकार का संकोच व भय नहीं है। उनसे पुनश्च अनुरोध है कि वे इस विश्वास मे न रहें कि भोलेभाले कुछ हिन्दुओ की आंखों मे धूल डालकर अपने स्वार्थ की पूर्ति में अनायास सफल हो जायेंगे।

क्या मुसलमान अपना मुख इस दुनिया के समक्ष दिखा सकेंगे जब कि हम आपके धार्मिक तथ्यों के आधार पर आपके अनुचित कृत्यो को जनता के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। अतः इस सन्दर्भ में आपको सचेत करना चाहते हैं कि भविष्य में इस प्रकार साम्प्रदायिक उन्माद को भड़काने वाली निम्न स्तर के कार्य कलापों से सावधान रहें।

इस समय सब से महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे समक्ष यह उद्भव होता है कि क्या इस्लामी शरीयत के सिद्धान्तों के आधार पर अयोध्या के रामजन्म भूमि जैसे विवाद ग्रस्त क्षेत्र मे एक मस्जिद हो सकती है अथवा नही? जहां तक इस्लामी शरीयत का सम्बन्ध है उसके आधार पर किसी भी अवस्था मे उस स्थान पर एक मस्जिद हो ही नहीं सकती। इसलिए कि —

1. उस स्थान के आस पास कोई मुस्लिम आबादी नहीं है जिससे एक मस्जिद के लिए इस्लामी शरीयत के अनुसार होनी चाहिए।

2 यदि उस स्थान को मस्जिद मान ली जाए तो वह एक ऐसी मस्जिद होगी जो अनुचित प्रकार से कब्जा की हुई जगह पर निर्माण की गई है। अनुचित रूप से कब्जा की गई जगह पर खड़ी की गई मस्जिद अथवा अनुचित रूप से कब्जा की हुई इमारत को मस्जिद के रूप में रूपान्तरित कर उसमें नमाज पढ़ना, प्रवेश होना अथवा उसमें आने जाना शरीयत के आधार पर अनुचित एवं निषिद्ध है (मुखतरात)।

3 जिस स्थान पर मूर्ति पूजा की जाती हो वैसे स्थान को मस्जिद में रूपान्तर करना शरीयत के अनुसार दण्डनीय अपराध है। (अलमनार)

4 अन्य मतावलम्बियो के पूजागृहो को मस्जिद मे परिवर्तित करना शरीयत के आधार पर दण्डनीय अपराध है। (आलमगिरिया)

5 किसी स्थान या इमारत के विषय में जब इस बात का प्रामाणिक आधार (दस्तावेज) न हो कि यह स्थान समस्त मुस्लिम जाति के नाम प्रतिष्ठापित की गई है। ऐसे स्थानों के सम्बन्धों मे मुतालबा करने का अधिकार हर मुसलमान को शरीयत के अनुसार प्राप्त नहीं है।
(मुहल्ला)

6 किसी स्थान पर कोई मस्जिद हो अथवा किसी इमारत को मस्जिद का रूप दिया गया हो। जब उसके हैसियत में इस प्रकार की जानकारी मिल जाए कि यह अनुचित कब्जा करके बनाई गई है। केवल इस प्रकार की जानकारी प्राप्त होने पर ऐसे मस्जिदों की मस्जिदी हैसियत समाप्त हो जाती है। यद्यपि वहां पर नमाज भी क्यों न पढ़ी जाती हो।
(आलमगीरिया)

इस प्रकार के अनेक प्रमाण इस्लामी शरीयत के संकलित एवं प्रमाणिक ग्रंथों में विद्यमान हैं। इन सभी धार्मिक तथ्यों से आंख मोड़कर केवल राजनैतिक स्वार्थ साधने के लिए पवित्र रामजन्म भूमि को बाबरी मस्जिद में रूपान्तरित करने के लिए जो संघर्ष किया जा रहा है वह शरीयत के साथ कोई न्यायोचित कार्य नही है। यदि कोई इस भ्रम में पड़ा हो कि हम हिन्दुओ को बडी सुगमता से मूर्ख बना सकते हैं तो ऐसों से हमारा अनुरोध है कि वे तुरन्त ऐसे कार्यों का परित्याग कर दें। यदि भारतीय मुसलमानों को अपने इस्लामिक स्मारकों की रक्षा की इतनी बडी चिन्ता है तो आगे आए इस समस्या को अपने ही शरीयत के आधार पर समस्या सुलझाने के नियम को स्वीकार करें। यदि उन्हें अपने ही शरीयत की जानकारी नहीं है तो हम उन्हें उसकी जानकारी देने तैयार हैं।

श्री खुशवक्तराय जी सूद के पौत्र का चूड़ा कर्म

लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य नेता सिम्पलैक्स हौजरी के मालिक श्री खुशवक्तराय सूद के पौत्र चि. सौरभ सुपुत्र श्री अरुण जी का चूड़ा कर्म 19-4-87 को प्रातः 11 बजे आर्य महिला कालेज लुधियाना मे सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं सुरेन्द्र जी शास्त्री थे। बच्चे को आशीर्वाद देने के लिए लुधियाना के सभी प्रतिष्ठित आर्य बन्धु तथा विद्वान्, सभी आर्य समाजों के अधिकारी वहां उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, महामन्त्री श्री सत्यव्रत जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री हरवंशलाल जी शर्मा, मन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी एडवोकेट तथा श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री. महिपालसिंह जी एडवोकेट और श्री व शर्मा देव जी आर्य जालन्धर से श्री रामनाथ जी शर्मा अमृतसर पधारे हुए थे।

सारा कार्य क्रम बड़ा प्रभावशाली रहा। श्री सूद जी ने जलपान और भोजन से सबका स्वागत किया। बहुत बडी संख्या में आर्य बन्धुओं और बहनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। श्री सूद जी ने इस अवसर पर वेद प्रचारार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को 501 रुपया दान दिया।

---

10 मई 1987 को संस्कृत रक्षा दिवस मनाएं देश भर की धार्मिक संस्थाओं और संस्कृत विद्यालयों के संचालकों से अपील

संस्कृत के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान प्रारम्भ करें

श्रीमन्महोदय,

आपको विदित है कि भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की नितान्त उपेक्षा की गई है। इसका परिणाम स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का सर्वनाश होगा। इस वास्तविकता को ध्यान में रखकर 6 मार्च 1987 को दिल्ली में सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में त के चुने हुए विद्वानों की बैठक, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। इस अवसर पर प्रस्ताव के अतिरिक्त एक अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति का गठन श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया है।

समिति ने सर्व सम्मति से आगामी 10 मई 1987 को अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत रक्षा दिवस का आह्वान किया है। आपसे निवेदन है कि अपनी शिक्षा संस्थाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थान, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा आदि संस्थाओं में भारी संख्या में एकत्र होकर संस्कृत की रक्षा तथा इसके पठन-पाठन की व्यवस्था के लिए संकल्प करें। इस आशय का प्रस्ताव पारित कर प्रधानमन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्री, शिक्षा मन्त्री भारत सरकार, समाचार पत्रों व समाचार एजेंसियों को भेजें। एक प्रति अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली को भी भेजें। (प्रस्ताव का प्रारूप संलग्न है)।

समिति ने यह भी निर्णय लिया है कि शिक्षा पाठ्यक्रम में इसकी अनिवार्यता के लिए एक जोरदार हस्ताक्षर अभियान चलाया जावे। अतः आप अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर, पत्रों को यहां अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति के पास भिजवाने का कष्ट करें, ताकि यहां से बड़ी भारी संख्या में उसे सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके।

आपसे निवेदन है कि आप निम्नलिखित प्रस्ताव भी पारित करें :—

प्रस्ताव—नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम में किसी न किसी स्तर पर प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य रूप से संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था की जाए। एतदर्थ आवश्यक है कि त्रिभाषा सूत्र में मातृभाषा तथा राष्ट्र भाषा के साथ तीसरी भाषा में संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाए यह भी निश्चित है कि जब तक अंग्रेजी की अनिवार्यता रहेगी, तब तक संस्कृत को उसका समुचित स्थान दिया जाना सम्भव न होगा।

इसलिए हमारी मांग है कि पाठ्यक्रम में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत अंग्रेजी के अध्ययन की व्यवस्था विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप मे की जाए।

उपरोक्त प्रस्ताव पारित कर प्रकाशनार्थ सभी समाचार पत्रों तथा कार्यान्वित के लिए भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली एवं संयोजक संस्कृत रक्षा समिति के पास भेजें।

—ब्रह्ममित्र अवस्थी संयोजक
अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा
समिति सार्वदेशिक सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली

———

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली में शताब्दी समारोह

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली का शताब्दी समारोह स्मारिका (इतिहास) विमोचन का कार्य अप्रैल मास सन् 1987 में होना निश्चित हुआ था, किन्तु आदरणीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महाराज से विचार विमर्श होने के पश्चात् उपरोक्त कार्यक्रम आगामी अक्तूबर मास सन् 1987 में होना निश्चय हुआ है। कृपया कार्यक्रम के समय के बदल की सूचना नोट कर लेवें।

आपके सहयोग एवम् शुभकामनाओं के लिए आर्य समाज सदर बाजार आभारी है कृपा दृष्टि बनाए रखें।

—वैद्य इन्द्र देव
मन्त्री

(4 पृष्ठ का शेष)

पंजाब में हिन्दी पर अंग्रेजी को अधिमान दिया जाता है। वह हमारे दिल में एक और आशंका भी पैदा करती है। यह भी एक कारण है कि हिन्दू पंजाबी को वह संरक्षण नहीं देते जितनी उनसे प्रत्याशा की जाती है। लगभग सभी अकालियों का यह विश्वास है कि सिख एक अलग कौम है। यदि हम उसे स्वीकार करें तो पंजाब में दो कौमें हो जाती हैं हिन्दू और सिख। यदि अपने आपको एक अलग कौम समझते हैं और साथ ही यह कहते हैं कि उनकी भाषा पंजाबी है तो दूसरी कौम हिन्दुओं को अपनी भाषा हिन्दी समझनी पड़ेगी और वह उसे ही सरंक्षण दे सकते हैं। जब हमारे देश का संविधान बनाया गया था तो उसमें देश की 15 राष्ट्रभाषाएं रखी गई थी लेकिन देश की एकता के लिए राजभाषा एक ही रखी गई थी। अर्थात् हिन्दी। इन 15 भाषाओं में अंग्रेजी नही है। बाद में वह भी राजभाषा बना दी गई ताकि जो लोग हिन्दी लिख या पढ नहीं सकते वह सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी का प्रयोग कर सकें।

क्यों नही पंजाब में पंजाबी के साथ हिन्दी को चलाया जाता। हिन्दी पर अंग्रेजी को क्यो अधिमान दिया जाता है। जब तक पंजाब सरकार की यह नीति रहेगी पंजाब में भाषा के प्रश्न पर खींचतान चलती रहेगी। यदि हिन्दी के साथ अंग्रेजी चल सकती है तो पंजाबी के साथ हिन्दी क्यों नही चल सकती? एक ओर तो कहा जाए कि सिख एक अलग कौम है दूसरी ओर पंजाब मे हिंदी की जगह अंग्रेजी को दी जाए तो उसे पंजाब के हिन्दी प्रेमी कैसे सहन करेंगे।

मैं रागी साहेब का ध्यान एक और तरफ भी दिलाना चाहता हूं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का कहना है कि श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज की मातृभाषा हिन्दी थी। गुरु महाराज ने हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषाओं को अपनाया था उनके समय में इस देश में अंग्रेजी नहीं थी। फारसी चलती थी इसलिए उन्होने फारसी भी सीखी थी। उन्होंने अपना साहित्य हिन्दी, पंजाबी और फारसी तीनो भाषाओ में लिखा था। प्रश्न पैदा होता कि अगर हिन्दी गुरु महाराज की मातृभाषा थी और उन्होने अपना साहित्य हिन्दी में भी लिखा था तो अकालियों को हिन्दी से चिढ़ क्यों है? क्या इसके पीछे उनका यह राजनीतिक उद्देश्य तो नहीं कि वह एक भाषा के आधार पर एक अलग देश बनाना चाहते हैं। पहले पंजाबी सूबा बनाया गया। अब आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के आधार पर उससे भी आगे जाना चाहते हैं ऐसी स्थिति में हिन्दुओं के लिए इसके अतिरिक्त और कोई चारा बाकी नहीं रहता कि वह हिन्दी को संरक्षण दे।

रागी साहेब कहते हैं कि सिख स्टेट तो उसी दिन बन गई थी जब हिन्दुओं ने पजाबी से इन्कार किया था। हिन्दुओं ने पजाबी से इन्कार नही किया था। वे दूरदर्शी थे। वह समझते थे कि पंजाबी सूबा बनने के बाद हालात कैसा रूप धारण करेंगे। उनकी सभी आशंकाएं आज सही सिद्ध हो रही हैं।

मैं चाहता हू कि पंजाब की भाषाई समस्या हल हो जाए और उसके कारण समय-2 पर जो कटुता पैदा होती रहती है वह समाप्त हो जाए। इसलिए इस समस्या को हल करने के लिए अपने सुझाव पेश कर रहा हूं ताकि अकाल तख्त के जत्थेदार इस समस्या को हल करने के लिए कोई कदम उठाना चाहें तो उठाएं। मेरे सुझाव ये है :—

1. पजाबी पजाब की राजभाषा बनी रहे।

2. हिन्दी भी देश की राजभाषा है। इसका पढना भी अनिवार्य होना चाहिए और सरकारी कामकाज के लिए इसके स्वतन्त्र प्रयोग की अनुमति होनी चाहिए।

3. हिन्दी पढना इसलिए भी आवश्यक है कि वह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की मातृभाषा थी। गुरु गोबिन्द सिंह जी के दर्शन को समझने के लिए भी हिन्दी का पढना-पढ़ाना अनिवार्य घोषित किया जाना चाहिए।

गुरु महाराज की मातृभाषा पर एक विदेशी भाषा अंग्रेजी को अधिमान देना गुरु महाराज का अपमान है।

मैंने सही स्थिति स्पष्ट कर दी है। इसके बाद रागी साहेब यह नहीं कह सकते कि हिन्दू पंजाबी के विरुद्ध हैं।

श्री जगदीशराय बांसल को मातृ शोक

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता तथा मोगा के प्रसिद्ध व्यापारी श्री जगदीश राय जी बांसल की माता (स्वर्गीय लाला शिवलाल जी बांसल की धर्म पत्नी) श्रीमती विद्यावती जी का 14 अप्रैल 1987 को निधन हो गया। माता जी कुछ समय से रुग्ण चल रही थी। सभी बच्चो ने मिल कर बडी सेवा की परन्तु परमात्मा की व्यवस्था के आगे सब को नतमस्तक होना पड़ता है। उसकी व्यवस्था अटल है प्रभु से प्रार्थना है कि वह पूज्य माता जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें और सारे बांसल परिवार को इस असहाय दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

मातृ मन्दिर वाराणसी की निर्माण योजना

योजना पांच चरणों मे क्रियान्वित होगी

प्रथम चरण —

1 मन्दिर का नक्शा बनवाना, 2 वेद मन्दिर का शिलान्यास तथा नींव का निर्माण 3 वैदिक विज्ञानसम्मत यज्ञशाला का नक्शा बनवाना 4 यज्ञशाला का शिलान्यास 5 वेद प्रचार केन्द्र हेतु आवश्यक उपकरणो ध्वनिविस्तारक बीप यन्त्रो के टेपरिकार्डों आदि का क्रय 6 एक वेद प्रचारक की नियुक्ति 7 घर-घर हवन प्रचार योजना के लिए एक सीमित क्षेत्र को लक्ष्य बिन्दु चुनकर कार्यारम्भ 8 कार्यालय कार्यकर्ताओ अतिथियो तथा दो तीन विद्वानो के लिए आवश्यक कमरो का निर्माण 9 अन्य आवश्यक कार्य।

आनुमानिक व्यय 5 लाख रुपये।

द्वितीय चरण —

1 वेद मन्त्रो का शिला पटो पर आरेखन आरम्भ 2 यज्ञशाला का निर्माण आरम्भ 3 सूक्ष्म ध्वनि ग्राहक यन्त्रो सूर्य रश्मियो के सग्राहक तथा गैसो के सकलनकर्ता यन्त्रो का क्रय 4 वेद मन्त्रो की ध्वनियो के विभिन्न वेग पर उच्चारित ध्वनियो का प्राकृतिक जगत पर प्रयोग व उनके प्रभावो का चित्राकन। 5 हवन सामग्री का रोगानुसार निर्माण 6 जल प्रदूषण वायु प्रदूषण के निवारक सूर्य रश्मियो एव मन्त्र ध्वनियो के मिश्रित हवन धूप का उत्पादन एव वायु मण्डल मे उसका प्रसारण तथा जल मे उसका सम्मिश्रण 7 घर-घर हवन प्रचार योजना का विस्तार 8 वेद प्रचार क्षेत्र का विस्तार 9 अन्य आवश्यक कार्य।

आनुमानिक व्यय दस लाख

तृतीय चरण :—

1 वेद मन्त्रो का आलेखन विस्तार 2 चारो वेदो के पृथक् पृथक् कक्ष निर्माण 3 वेद की शाखाओ का सकलन 4 सस्वर वेदमन्त्रो के टेप रिकार्ड 5 सामगान का प्रसार 6 ब्राह्मण ग्रन्थो मे वर्णित यज्ञों की गवेषणा 7 वैदिक शोध केन्द्र की सस्थापना 8 वेद विद्वानो व वैज्ञानिको की सेवाओ का समायोजन 9 यज्ञशाला मे परीक्षण विस्तार 10 घरघर मे हवन प्रचार योजना विस्तार 11 वेद प्रचार का क्षेत्र विस्तार 12. अन्य आवश्यक कार्य।

आनुमानिक व्यय बारह लाख

चतुर्थ चरण —

1 चारो वेदो के आधे-आध मन्त्रा का आलेखन समाप्त।

2 यज्ञशाला के प्रयोगो द्वारा गगा जल एव अन्तरिक्ष की शुद्धि प्रदूषण निवारण।

3 यज्ञ प्रयोगो के द्वारा कृषि प्रवृद्धि गोदुग्ध प्रवृद्धि रोग कीटाणुओ का व्यापक विनाश।

4 वैदिक शोध केन्द्र मे सत्य विद्या के अनुसार शोधकार्य एव भाष्य का आरम्भ।

5 वैदिक शोध प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना।

6 वेदागो की शिक्षा आरम्भ।

7 प्रान्त भर मे वेद प्रचार केन्द्रो की स्थापना।

8 घर-घर हवन प्रचार योजना का जिला स्तर पर विस्तार।

9 अन्य आवश्यक कार्य

आनुमिमक व्यय बीस लाख

पचम चरण —

1 वेद मन्दिरो व यज्ञशालाओ की विश्व स्तर पर स्थापना।

2 वैदिक शोध केन्द्र की शोध प्राप्त विद्यार्थी के ज्ञान का प्रसार।

3 दर्शनो व उपनिषदों का वैज्ञानिक पृष्ठभूमि का पर अवनिरूपण।

4 वेद प्रचार केन्द्रो के माध्यमिक विश्व भ्रातृत्व भावयोग प्रशिक्षण का प्रसार वस्त्रीकरण की होड की समाप्ति।

5 यज्ञो द्वारा प्राप्त शक्तियो से विश्व समृद्धि एव आध्यात्मिक शक्ति प्रसार।

6 ˎशान्त स्वच्छ व्यक्तित्व निर्माण के लिए गुरुकुलो एव साधना आश्रमो की स्थापना।

7 वेद मन्त्रो का ध्यान द्वारा अर्थ प्रत्यक्षीकरण।

8 शब्द शक्ति के प्रभिलक्षण प्रयोग।

अर्थ व्यवस्था

सदस्य दो प्रकार के होंगे।

(1) सरक्षक (2) सक्रिय सदस्य

सरक्षक—दो कोटिया-सरक्षक

विशिष्ट सरक्षक

सरक्षक—10000-देने वाले अपने पास से या सग्रह करके एक बार

विशिष्ट सरक्षक—25000-देने वाले अपने पास से या सग्रह कर के एक बार मे।

सक्रिय सदस्य-दो कोटिया।

साधारण सक्रिय सदस्य—250 या अधिक

वार्षिक देने वाले—अपने पास से या सग्रह करके

(2) विशिष्ट सदस्य—500 या अधिक

वार्षिक देने वाले—अपने पास से या सग्रह करके देने वाले।

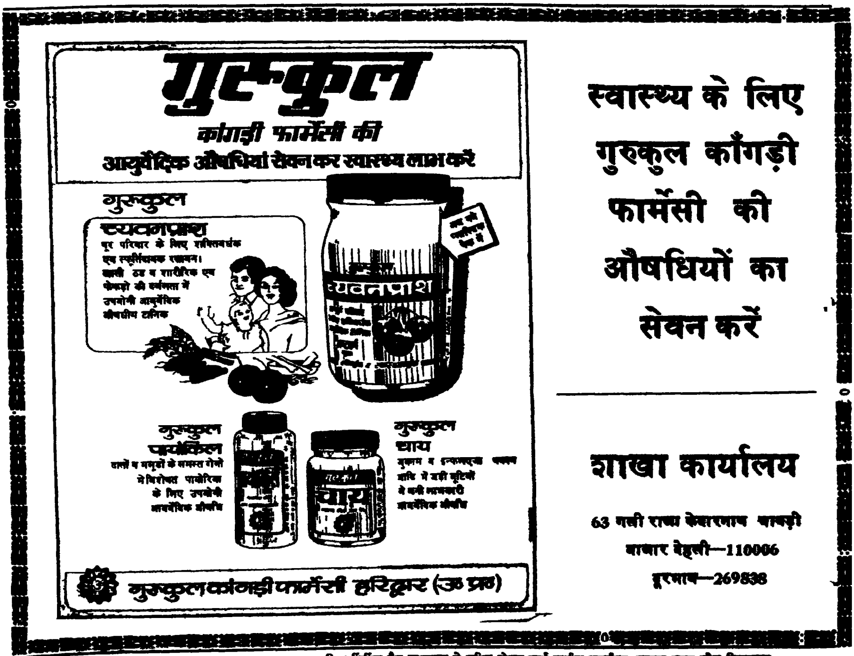
आर्य समाजें, स्त्री आर्य समाजें, गुरुकुल विद्यालय, महाविद्यालय । या अन्य सस्थान भी सदस्य बन सकते हैं उनके प्रतिनिधि गण सदस्यता का निर्वहन करेंगे।

कार्य सचालन।

(1) केन्द्रीय समिति—प्रबन्ध कारिणी

(2) प्रान्तीय, जिला एव मण्डल स्तर पर सहयोगी समितिया।

—पुष्पावती आचार्या



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 6, 3 ज्येष्ठ सम्वत् 2044 तदानुसार 17 मई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

सतर्कता हटी दुर्घटना घटी उठो ! जागो ! सावधान

लेखक—श्री अमित प्रताप नारायण सिंह, ग्रा हाटा पो नवौली देवरिया (उ प्र)

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

"मित्रो ! उठो, जागो, मनोबल से अनुप्राणित होओ।"

जीवन जीने को ही कहते हैं लेकिन ऐसा जीवन जिसमे सावधानी का नामोनिशान न हो, साहस भी न हो, जीवन नहीं है। वास्तव मे जीवन एक नाटक है। परन्तु यह साहस और सतर्कता भरे कार्यों की एक कड़ी भी है। जीवन वह है जिसमें सावधानी, सतर्कता हो, साहस भरा हुआ हो। जोखिम भरा हुआ हो, जीवटता भरी हुई हो।

हम वर्षों लगा देते हैं, अभिनय के सीखने उसे (सफल) अभ्यास करने मे। और हम में से कुछ ही लोग अभिनेता बन पाते हैं। कुछ लोग तो समझ ही नहीं पाते हैं कि उन्हें क्या करना है, क्या करना चाहिए, और वे क्या कर रहे हैं? वे किसी तरह अपनी जगह भी नहीं बना पाते।

सफल अभिनेता बनने का रहस्य यह है कि वे साफ तौर से जान लेते हैं कि उन्हें क्या करना है। जो कर्त्तव्य हैं उनके लिए योजनाएं बनाते हैं और तदनुसार दिन-प्रतिदिन कुछ न कुछ करते हुए बढ़ते जाते हैं। आगे बढ़ने में छोटी-छोटी बातो का ध्यान रखते हैं और उनमें जो भूलें दिखाई देती हैं, उन से बचने और उन्हें सुधारने के लिए कोशिश करते हैं। दुनियां उस मनुष्य के लिए खुद रास्ता साफ कर देती है जो कर्मठ, शक्तिशाली, आत्म विश्वासी, दूरदर्शी, सतर्कतापूर्ण और पुरुषार्थी है, जो इस बात को जानता है कि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं, ऐसी विपत्ति नहीं जो मेरी शक्ति का रास्ता रोक सकें। कायर मनुष्य सतर्कता विहीन असावधान मनुष्य ही इनसे डर सकता है, रास्ते मे इन्हे पाकर भ्रष्ट हो सकता है और रसातल में गिर सकता है।

जो अपने कार्यों मे सतर्क रहते हैं और धीरता, सतर्कता रखते हुए दुर्घटना से बचते हुए जीवन को अपने वश मे कर लेते हैं। वे खूब अच्छी तरह जानते हैं कि जिन्दगी फूलो की सेज नही है, आलस्य का सागर नहीं है, जीवन युद्ध है, एक बड़ा संघर्ष है। इसमे नित्य समस्याओं को हल करना होता है। निर्णय पर पहुंचना पड़ता है। बने हुए नक्शो में बहुत से फेर बदल भी करने होते हैं। इसमें सतर्क रहना पड़ता है। क्योंकि इन सबके बीच में वे यह हमेशा याद रखते हैं कि "सतर्कता घटी, दुर्घटना घटी और कभी हार से हार न मानी जाए।

जीवन युद्ध मे विजयी होने के लिए सफलता प्राप्त करने के लिए कर्त्तव्यनिष्ठता, स्वावलम्बप्रियता दूरदर्शिता धीरता, आत्म-संयम, परिश्रम शीलता, ईमानदारी, उत्साह, निश्चय, आत्मविश्वास, अनथक कर्म, सहानुभूति, बुद्धि, विवेक, सतर्क रहने की, सजग रहने की, कार्य क्षेत्र रूपी अखाड़े मे ही रह कर बचा जा सकता है। यहीं रह कर अत्यन्त धीरज से, बुद्धिमत्ता से लड़ कर असफलता राक्षसी को हरा सकते हैं। प्रकृति देवी की गोद में पला हुआ एक ग्रामीण युवक हो कर आधुनिक शहरों में आंखें चकाचौंध करने वाली दुनिया में फिर जाता है। स्थान-स्थान पर उसे अपटुडेट सभ्य मिलते हैं, आधुनिक रंग मे रंगे व्यक्ति मिलते हैं, और उसे एक होटल मे ले जाकर कहते हैं, अभी थोड़ा सा मांस और शराब खाने-पीने में क्या हर्ज है। तो उस समय क्या करना चाहिए। सावधानी बरतनी चाहिए और सभी को ठुकरा देना चाहिए, अन्यथा सावधानी न बरतने पर वे मिट्टी में मिला देगी। इसलिए जीवन के पग-पग पर सावधानियो और सतर्कताओ की आवश्यकता है।।

हमारे एक साथी अध्यापक ने स्वास्थ्य बनाने के लिए ताड़ी चखना प्रारम्भ किया। आज वे शराब की बोतलें पीकर नालियो के किचड़ चख रहे हैं, और उनके बच्चे भूखे मर रहे हैं। उनके स्वास्थ्य की क्या बात है। अब उनके शरीर की हड्डियां दिखाई दे रही हैं।

सतर्कता का तात्पर्य है, यह देखना है कि इस कार्य का परिणाम हानिकारक तो न होगा। जरा सी असावधानी बहुत हानि कर सकती है। सड़को में तख्तो पर लिखा है "सतर्कता हटी, दुर्घटना घटी। जीवन के विषय मे यह बात आवश्यक है कि छोटी-छोटी बुराईयो से भी बचते चलें।

देखिए हम आपको बताते हैं कि प्रत्येक बुराई मे हमे प्रारम्भ से ही सतर्क रहना है। हरेक काम आदि में थोड़ा सा होता है। और जिसके जीवन में 'थोड़ा सा' की अधिक-तम पहुंच जाता है। बिच्छू कहता है कि मुझे केवल 'थोड़ा सा' अपने पतले डंक भर करने को स्थान अपने शरीर में दे दो। बस शेष सारे शरीर को मैं कुछ नहीं करूंगा।

आग की छोटी सी चिनगारी छप्पर मे जरा सा 'थोड़ा सा' स्थान मांगती है और छप्पर और गांव तक को जला देती है।

पाप भाव कहता है कि मुझे अपने हृदय मे 'थोड़ा सा' में वहां कोने मे एक तरफ चुपचाप बैठा रहूंगा, कभी कुछ करूंगा नहीं। इस पाप भाव से बचने और उसे स्थान न देने के लिए सतर्कता की आवश्यकता है।

विद्यालय से साथियो की पैंसिल और कापियां चुरा कर लाने पर जिसको मां ने शाबाशी दी और सावधान नहीं किया और अन्त मे उसे भयंकर चोरियों और हत्याओ के लिए फांसी की सजा मिली। जरा सी असावधानी का फल था। यह पाप वृक्ष जो कि आज बड़े ऊंचे और दूर-दूर तक फैली हुई विशाल शाखाओ मे दृढ़ वृक्ष है, प्रारम्भ मे 'थोड़ा सा' केवल एक नन्हे बीज के रूप मे था।

इसलिए हमे जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सतर्क रहना होगा, सजग रहना होगा। हमे चलने मे सतर्क रहना होगा अन्यथा हम कहीं गिर जाएंगे, और अपना मुंह, हाथ, पैर तोड़ लेंगे। बात करने मे सतर्क रहना होगा। यदि हम सतर्क रहकर नही करेंगे किसी से भी तो अवश्य झगड़ा हो सकता है।

हमे बात करने मे सावधानी के अलावा भी, खेलने, पढ़ने, सीखने, किसी वाहन को चलाने, यहां तक कि पैदल चलने मे भी सावधानी सतर्कता की आवश्यकता है। यदि आप खेलते हैं तो सतर्क रहने की बहुत आवश्यकता है। मैं बताऊं एक लड़का क्रिकेट खेल रहा था। अचानक वह इधर-उधर देखने लगा, तब तक गेंद आयी और उसके मुंह पर लगी और वहीं वह बेहोश हो गया। इसलिए आप खेल खेलिए बड़ी ही सावधानी से सतर्कता से इधर-उधर देख कर नहीं। अन्यथा वही बुरा होगा जो उस लड़के का हुआ।

जो पैदल चलने में असावधानी करते हैं तो वे मोटर गाड़ियो के नीचे चले जाते हैं।

इसलिए हमे जीवन के प्रत्येक काम मे सतर्क रहना होगा, सजग रहना होगा, जागते हुए, आखें खोल कर चलना होगा। वेद कहता है—

यो जागार तमृचः कामयन्ते।

जो जागता है। सतर्क रहता है, सजग रहता है, वहीं धन और बल प्राप्त करता है। ज्योंहि हम सतर्कता से हटते हैं, त्यो ही जीवन दुर्घटना मय हो जाता है। सतर्कता हटी, दुर्घटना घटी।

व्याख्यान माला—११

नारी और उसका धर्म

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर (पंजाब)

(गतांक से आगे)

महाकुलीनाभिरपापिकाभिः स्त्रीभिः सतीभिस्तव
सख्यमस्तु ।
चण्डाश्च शौण्डाश्च महाशनाश्च चोराश्च दुष्टा-
श्चपलाश्च वर्ज्याः ॥28॥

हे देवि ! महाकुलीन तथा पाप रहित पतिव्रता स्त्रियो के साथ ही तुम्हारी मित्रता होनी चाहिये तथा तीव्र स्वभाव वाली, झगड़ालू, बहुत खाने वाली पेटू, चोर-प्रवृत्ति, चपल चित्त दुष्टाओ से तुम्हे दूर रहना चाहिए ।

दह्यमाना मनोदुःखैर्व्याधिभिश्चातुरा नराः ।
ह्लादन्ते स्वेषु दारेषु घर्मार्ताः सलिलेष्विव ॥29॥

मानसिक दुःखो से दग्ध किए जा रहे तथा रोगो से पीड़ित पुरुष अपनी स्त्रियो के पास आकर वैसे ही प्रसन्न हो जाते हैं जैसे घाम गर्मी से पीड़ित मनुष्य जलाशयो के समीप आकर प्रसन्न हो जाते हैं ।

आत्मनो जन्मनः क्षेत्रं पुण्यं रामाः सनातनम् ।
ऋषीणामपि का शक्तिः स्रष्टुं रामामृते प्रजाम् ॥30॥

आत्मा का पुण्य प्रद रमणीय और सनातन जन्म क्षेत्र स्त्रिया ही हैं स्त्रियो के बिना ऋषियो की भी प्रजा उत्पन्न करने की क्या शक्ति है ?

न च भार्यासमं किञ्चिद्विद्यते भिषजां मतम् ।
औषधं सर्वदुःखेषु सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥31॥

हे जिज्ञासु मैं तुम से यह सत्य कहता हू कि वैद्यो के मतानुसार सब कष्टो में औषध रूप पत्नी के सदृश अन्य कोई औषध नही है ।

नास्ति भार्यासमो बन्धुर्नास्ति भार्यासमा गतिः ।
नास्ति भार्यासमो लोके सहायो धर्मसंग्रहे ॥32॥

इस ससार मे भार्या के समान कोई बन्धु नहीं, न ही उसके समान कोई आश्रय और न ही धर्म रूप पुण्य को इकट्ठा करने मे इस पत्नी के समान कोई सहायक होता है ।

अर्द्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा ।
असहायस्य लोकेऽस्मिन् लोकयात्रासहायिनी ॥33॥

पत्नी मनुष्य की अर्धाङ्गिनी है, अत्युत्तम सखा है, इस सासारिक लोक यात्रा मे असहाय पति के लिए भार्या ही एक मात्र सहायता करने वाली होती है ।

कान्तारेष्वपि विश्रामो जनस्य गृहिणीमता ।
यः सदारः स विश्वास्यस्तस्माद्दाराः परा गतिः ॥34॥

मनुष्यो को जगलो में भी आराम देने वाली मनुष्य की गृहिणी—घरवाली ही होती है । जो मनुष्य सपत्नीक है, उसका सब विश्वास करते हैं । अतः स्त्रिया ही परमगति है ।

अनुकूलां विमलाङ्गीं कुलजां कुशलां सुशील संपन्नाम् ।
एतादृशीं सुभार्यां पुरुषः पुण्योदयाल्लभते ॥35॥

मनुष्य को अपने अनुकूल निर्मल अङ्गो वाली, कुलीन, चतुर, सुशील, सम्पन्न, श्रेष्ठ भार्या की प्राप्ति किन्हीं पूर्वजन्मो के पुण्योदय के फलस्वरूप ही होती है ।

अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत् ।
शौचे धर्मेऽन्नपक्त्यां च पारिणाह्यस्य वेक्षणे ॥36॥

मनुष्य इस नारी को धन संग्रह, धन व्यय करने में, धर्म के कार्य करने मे, घर की पवित्रता—सफाई आदि में धार्मिक कृत्यों में भोजन तैयार करने में देखभाल सेवा शुश्रूषा में नियुक्त करें ।

यादृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधम् ।
तस्मात्प्रजाविशुद्ध्यर्थं स्त्रियं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥37॥

स्त्री जैसे पति सेवन करती है उसी प्रकार का पुत्र उत्पन्न करती है इस लिए प्रजा की शुद्धि के लिए अर्थात् सन्तान की शुद्धि के लिए प्रयत्नता पूर्वक स्त्री की रक्षा करनी चाहिए । अर्थात् श्लोक का तात्पर्य है कि कन्या योग्य तथा श्रेष्ठ पति का ही वरण करे अयोग्य का नहीं ।

उत्सवे लोकयात्रायां तीर्थेष्वन्य निकेतने ।
न पत्नीं प्रेषयेत्प्राज्ञः पुत्रामात्यविवर्जिताम् ॥38॥

बुद्धिमान मनुष्य अपनी स्त्री को किसी उत्सव मे जन समूह द्वारा किये जा रहे विशेष अभियान मे तीर्थों पर, किसी पड़ोसी के घर सरक्षक के रूप मे अपने पुत्र या अपने अत्यन्त विश्वस्त सेवक के बिना कभी नही भेजे ।

पित्रा भर्त्रा सुतैर्वापि नेच्छेद्विरहमात्मनः ।
एषां हि विरहेण स्त्री गर्ह्ये कुर्यादुभे कुले ॥39॥

स्त्री अपने पिता, पति और पुत्रो से कभी भी अलग होना न चाहे क्योकि इन से अलग होने पर नारी दोनो कुलो को निन्दा का पात्र बना देती है ।

बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने ।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम् ॥40॥

नारी बचपन मे पिता की छत्र-छाया मे रहे, युवावस्था मे पति के आश्रय मे रहे, पति के मरणोपरान्त पुत्र की सुरक्षा में रहे इस प्रकार नारी को कभी भी स्वतन्त्र नहीं रहना चाहिए ।

पुरा कल्पे कुमारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते ।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वचनं तथा ॥41॥

पुराने समय मे कन्याओ के मौञ्जी बन्धन अर्थात् मेखला का बन्धन व यज्ञोपवीतादि होता था । वेदाध्ययन तथा गायत्री मन्त्र का उपदेश भी किया जाता था ।

साऽहं तस्मिन्कुले जाता भर्तर्यसति मद्विधे ।
विनीता मोक्षधर्मेषु चराम्येका मुनिव्रतम् ॥42॥

इस लिये मैं उस कुल मे उत्पन्न हुयी कि जिसमे अपने समान उपयुक्त वर न मिलने पर मोक्ष धर्म मे दीक्षित न होती हुई मुनियो जैसा व्रत धारण किये हुए हू । अर्थात् उपयुक्त वर के अभाव मे कुमारी रह कर ही जीवन यापन करना श्रेष्ठ है ।

शाश्वतोऽयं धर्मपथः सद्भिराचरितः सदा ।
यद्भार्यां परिरक्षन्ति भर्तारो निर्बला अपि ॥43॥

सत्पुरुषो के द्वारा आचरण किया जाता हुआ यह शाश्वत धर्म मार्ग है कि बलहीन स्वामी भी अपनी पत्नियों की रक्षा करते हैं ।

पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः ।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः ॥44॥

स्त्रियां घर की लक्ष्मी, महा भाग्यवती, पूज्या, पुण्यशीला तथा घर की ज्योतियां कही गई है इसलिए इनकी विशेष करके रक्षा करनी चाहिए ।

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥45॥

कल्याण चाहने वाले पिता, भाई, पति तथा देवर इन स्त्रियों को समुचित आदर देवें तथा योग्य आभूषणों से अलङ्कृत करें ।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के लिए एक नई चुनौती—3

आर्य समाज की पत्रिकाओं और विरोधियों की पत्रिकाओं के विषय में मैंने पिछले अंक मे वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला था। मैंने इसी सन्दर्भ मे आर्य समाज की दो अंग्रेजी की पत्रिकाओं का भी जिकर किया था। एक है डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी द्वारा प्रकाशित "आर्यन हैरिटेज" और दूसरी है गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित "वैदिक पथ" मैं पहले भी कई बार लिख चुका हु कि आर्य समाज को दूसरी भाषाओ मे विशेष कर अंग्रेजी भाषा मे अपना साहित्य अधिक से अधिक प्रकाशित करना चाहिए।

इसी सन्दर्भ मे मैं एक और पत्रिका की तरफ भी पाठको का ध्यान दिलाना चाहता हु। वह है विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर द्वारा प्रकाशित संस्कृत मे त्रैमासिक पत्रिका "विश्व संस्कृतम्"। कभी-कभी यह पत्रिका भिन्न-2 विषयो पर विशेषांक भी प्रकाशित करती है। इसका कागज बहुत बढ़िया होता है, छपाई भी सुन्दर और साफ होती है और पठनीय सामग्री भी उच्चकोटि की होती है।

आजकल जब कि हमारे देश मे संस्कृत के महत्व को कम करने का प्रयास हो रहा है। ऐसे समय मे यदि आर्य समाज की किसी संस्था द्वारा संस्कृत मे कोई पत्रिका प्रकाशित की जाए तो वह एक अत्यन्त सराहनीय प्रयत्न है। विश्वेश्वरानन्द संस्थान की ओर से प्रत्येक वर्ष दो-तीन विशेषांक अवश्य निकाले जाते हैं और वह प्रायः किसी विशेष विषय पर आधारित होते हैं। दो बार वेदांक निकाले गए। एक बार महाभारत अंक "रामायण अंक और कुछ दूसरे विशेष अंक भी निकाले गए हैं। मुझे यह कहने में कोई संकोच नही कि इस संस्थान की पत्रिकाओ के जो भी विशेषांक निकाले जाते हैं। वह बहुत अनुसन्धान के पश्चात् और बहुत उच्चकोटि के लेख उनमें होते हैं। यही कुछ हम, परोपकारिणी सभा अजमेर की पत्रिका परोपकारी के विषय मे भी कह सकते हैं। अभी थोड़ा समय हुआ जब इस पत्रिका ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र प्रकाशित किए हैं। इनमें पहली बार कुछ पत्र अंग्रेजी मे भी हैं। पत्र लिखे हैं तो अंग्रेजी में हैं परन्तु उन पर हस्ताक्षर महर्षि दयानन्द के हिन्दी मे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य समाज की कई ऐसी पत्रिकाएं हैं जिनमें सामग्री तो बहुत उच्चकोटि की होती है परन्तु उनकी साज-सज्जा वह नहीं होती जो कि आजकल की पत्रिकाओ की होती है। इसी सन्दर्भ मे मैं रामलाल कपूर ट्रस्ट की वेद वाणी का जिकर भी कर चुका हु। श्री प युधिष्ठिर जी मीमांसक वैदिक सिद्धान्तों पर जितना अनुसन्धान करते हैं शायद ही कोई और करता हो। परन्तु प्रान्तीय सभाओ के जो पत्र, साप्ताहिक पत्र निकलते हैं उन का स्तर कुछ ऊंचा करने की आवश्यकता है। सार्वदेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र "आर्य जगत्" मे कई बार कई विशेष लेख होते हैं। प क्षितीश वेदालंकार स्वयं एक पुराने और अनुभवी पत्रकार हैं इसलिए उन्होंने अपनी पत्रिका का स्तर कुछ ऊंचा करने का प्रयास किया है। परन्तु वह भी कुछ नहीं बना सके जैसा कि "रजनीश टाईम्स" और "इस्लामी दुनिया" का है। आर्य समाज के कोई ऐसी साप्ताहिक पत्र भी है, जिनके द्वारा कुछ व्यक्ति विशेष कर अपना ही प्रचार करते हैं। उनमें उनके चित्र होने अवश्य हैं और उनके व्यक्तिगत समाचार भी होने आवश्यक हैं। यदि लेख हो तो वह उन्हीं के सम्बन्ध मे होने चाहिए। ऐसे पत्र और पत्रिकाओ की गणना अच्छे समाचार पत्रों मे नही हो सकती। न ही उनके द्वारा आर्य समाज का वह प्रचार हो सकता है जिसकी आज आवश्यकता है। मैंने यह लेख-केवल आर्य जनता का ध्यान इस समस्या की ओर दिलाने के लिए इसलिए लिखा है क्योंकि मैं यह अनुभव करता हु कि इस क्षेत्र में हम कुछ पिछड़ रहे हैं। एक बात मैंने प्रारम्भ में स्वीकार कर ली कि आर्य समाज के साधन बड़े सीमित हैं इसलिए हम सम्भवतः उस स्तर के पत्र और पत्रिकाएं तो प्रकाशित न कर सकें जो दूसरे धर्मावलम्बी संस्थाएं करती हैं आर्य समाज को इस ओर ध्यान देना चाहिए और कोई ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि रजनीश टाईम्स और इस्लामी दुनिया के स्तर की हमारी पत्रिकाएं निकलें ताकि हम भी उनका मुकाबला कर सकें। आर्य समाज मे उच्चकोटि के लेखकों की कमी नहीं है केवल उन्हें कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता कि वह अपने लेखों द्वारा आर्य समाज के दृष्टिकोण को देश की जनता के सामने रख सके। आर्य समाज के नेताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए और इस कमी को पूरा करने की कोई व्यवस्था करनी चाहिए।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की शताब्दी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा अपनी शताब्दी 15, 16, 17 मई 1987 को रोहतक में मना रही है। यह वास्तव मे एक प्रकार से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी है। 1966 मे जब हरियाणा एक अलग प्रान्त बन गया तो 1975 मे उसकी एक अलग आर्य प्रतिनिधि सभा भी बन गई। परन्तु यह सभा पहली आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक नया रूप थी। वही महानुभाव जो पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को चलाते रहे हैं वही इस नई सभा को भी चला रहे हैं। परन्तु यह शताब्दी केवल प्रतिनिधि सभा की नही हरियाणा मे आर्य समाज के संगठन की शताब्दी है और इस संगठन का इतिहास अत्यन्त गौरवमय और प्रतिभाशाली है। यदि हम पिछले इतिहास पर दृष्टिपात करे तो हम देखेंगे कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, श्री महाशय कृष्ण जी और आर्य समाज के दूसरे कई नेताओ ने समय-2 पर हरियाणा मे आकर आर्य समाज का प्रचार किया था और उसके पश्चात् धीरे-धीरे उनका स्थान लेने वाले कुछ और महानुभाव सामने आ गए। हरियाणा मे आज भी गुरुकुलो का एक जाल बिछा हुआ है। यह सब आर्य समाज के प्रचार का ही परिणाम है। आज भी आर्य समाज हरियाणा मे बहुत सक्रिय है। श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, श्री प्रो शेरसिंह जी और दूसरे महानुभावो के नेतृत्व मे आजकल भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा शराब और दूसरी सामाजिक बुराईयो के विरुद्ध अभियान चला रही है। हैदराबाद के सत्याग्रह मे भी हरि-ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और उसके पश्चात् पंजाब मे जब हिन्दी सत्याग्रह शुरू किया गया था तो हरियाणा के आर्य समाजियो ने उसमे भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया था।

कुछ राजनैतिक आवश्यकताओ ने हरियाणा को पंजाब से अलग कर दिया परन्तु यह आज भी दोनो एक ही हैं। क्योंकि जो कुछ इन दोनो प्रान्तो मे होता है, उसका केवल उन पर ही नही दूसरे पड़ोसी प्रान्तो पर भी प्रभाव पड़ता है। हम पंजाब वाले तो हरियाणा को अपना एक बहुत बड़ा सहारा समझते हैं। हमारे लिए यह हर्ष का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा शताब्दी मना रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से हम अपनी शुभ कामनाएं हरियाणा के आर्य भाईयो और बहनों को भेजते हैं और यह आशा रखते हैं कि जिन परिस्थितियो मे पंजाब इस समय गुजर रहा है उनको सामने रखते हुए हरियाणा का सहयोग और समर्थन हमे अवश्य मिलता रहेगा। पंजाब और हरियाणा मिल कर उत्तर भारत मे एक नई क्रान्ति का संचार कर सकते हैं। इसमें हरियाणा उत्तर भारत के आर्य समाजियों का नेतृत्व कर सकता है। आशा है कि हरियाणा की आर्य प्रतिनिधि सभा देश के इतिहास मे एक नया अध्याय जोड़ने के लिए अपने पड़ोसी प्रान्तो की आर्य जनता को साथ लेकर देश मे एक नई क्रान्ति का शुभारम्भ करेगी। उसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उसे अपना पूरा सहयोग देगी। हरियाणा के अपने आर्य भाईयो को एक बार फिर मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से बधाई देता हु और उनके मंगलमय भविष्य के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हु।

—वीरेन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त-समारोह के अवसर

आर. सी. शर्मा कुलपति का स्वागत भाषण

आई. ए एस. (अवकाश प्राप्त)

हरिद्वार, 14 अप्रैल, 1987

अर्चनीय सन्यासीवृन्द, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, आदरणीय मुख्यमन्त्री जी, माताओ, सज्जनों तथा ब्रह्मचारियो।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस पुण्य भूमि मे आपका स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के साथ कधे से कधा मिला कर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन मे कूद पड़ने वाले स्वामी जी राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रणेता थे, भारतीय जीवन मूल्यो पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक थे, ह्रासोन्मुख हिन्दू-समाज के कायाकल्पक थे और राष्ट्र भक्त युवको तथा युवतियो के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन तथा नवीन ज्ञान विज्ञान के समन्वय के सूत्रधार थे। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल एक आन्दोलन था, ऐसा आन्दोलन जिस की प्रेरणा से महाकवि रवीन्द्रनाथ ने शान्तिनिकेतन तथा मालवीय जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। आज उसी विश्वविद्यालय के परिसर में नवदीक्षित स्नातको को आशीर्वाद देने के लिए आप महानुभाव एकत्र हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नवस्नातक इस पुण्यभूमि की परम्पराओं की सदैव रक्षा करेंगे तथा स्वामी जी के बताए सिद्धान्तों पर चलकर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण और सुख-शान्ति के सपनो को साकार करते रहेंगे।

प्रिय बन्धुओं,

इस वर्ष दीक्षान्त-भाषण के लिए हमारे मध्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री वीरबहादुर सिंह जी उपस्थित हैं। प्रदेश की नई शक्ति के रूप मे उन्होंने सरकार का दायित्व सम्भाला गोरखपुर के एक साधारण ग्राम में जन्म लेकर भी अपने व्यक्तित्व और क्रियाशीलता से वह राष्ट्रीय स्तर के नेता बने। सघर्ष, निष्ठा, दूर दृष्टि, प्रशासनिक-क्षमता और लोक हृदय से सम्पन्न होने के कारण नेतृत्व के सहज गुणो से मण्डित आपका व्यक्तित्व हमारे स्नातको को सार्वजनिक जीवन मे उतर कर सफलता प्राप्त करने मे प्रेरणा देगा। क्षेत्रीय स्तर पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक सरचना का सर्वेक्षण कर उसे वर्तमान सामाजिक-आर्थिक विकास के अनुरूप ढालने मे जो सूझबूझ आपने दिखाई तथा समाज के कमजोर और पिछड़े वर्ग के लोगो का जीवन स्तर सुधारने मे जिन योजनाओ को आपने तत्परता से क्रियान्वित कराया, उससे प्रदेश को नई शक्ति मिली है। 1970 ई से आज तक आप सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्व, सिंचाई, आबकारी, परिवहन तथा उद्योग जैसे महत्वपूर्ण मन्त्रालयो का सफलतापूर्वक सचालन करते रहे और सम्प्रति मुख्यमन्त्री के रूप मे अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं। यह हमारे अन्तेवासियो का सौभाग्य है कि देश-विदेश के अनुभवो से सम्पन्न, राजनीतिक और सास्कृतिक सूझबूझ से ओतप्रोत तथा विकास योजनाओ मे कार्यरत एक विचारशील मनीषी के द्वारा उन्हे सम्बोधन प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। मैं मुख्यमन्त्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हू कि वह अत्यन्त व्यस्तता के रहते हुए भी हमारे बीच आए। विश्वविद्यालय मे उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विशाल स्पोर्टस स्टेडियम बनवाने की घोषणा उन्होंने पिछले दिनों हमारे अनुरोध पर सार्वजनिक रूप से हरिद्वार की चुनाव सभा मे की थी। इस अवसर पर इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैं आप सबकी ओर से मुख्यमन्त्री जी को धन्यवाद देता हू, और आशा करता हू कि इस घोषणा की पूर्ति यथाशीघ्र होगी। मुझे विश्वास है कि इस राष्ट्रीय महत्व के विश्वविद्यालय को आपका स्नेह-सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। गत वर्षों में यहा विश्वविद्यालय को विभिन्न विषयों मे आचार्य पद प्राप्त हुए यहा समन्वित गगा योजना, हिमालय पर्यावरण योजना, प्रौढ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम तथा रोजगार ब्यूरो की स्थापना भी हुई। कांगड़ी ग्राम विकास योजना तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कारण यहां ग्राम विकास योजना तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कारण यहा ग्रामोत्थान के सकल्प को मूर्तरूप दिया गया यहा व्यवसायोन्मुख शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान भी स्नातकों को हुआ और इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीमित साधनो के होते हुए भी हमारे विद्यार्थी राष्ट्र की रचनात्मक धारा से बराबर जुड़े रहे और पोथी ज्ञान के अलावा उन्हे समाज और देश की बुनियादी जरूरतो का परिचय भी मिलता रहा।

योग-मनोविज्ञान द्वारा मानव व्यवहार को उन्नत कर उसमे देवोपम गुणो का विकास कराया जा सकता है। इस धारणा से प्रभावित होकर अनुदान आयोग की सहायता से भारतीय मनोविज्ञान पर ग्रीष्मकालीन सस्थान का आयोजन प्रोफेसर हरगोपाल सिंह के निदेशन में 25 जून से 9 जुलाई 86 तक किया गया। इसमे भारत के विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापको ने प्रशिक्षण लिया। इस सस्थान मे वैदिक मनोविज्ञान, मनोचिकित्सा, योगमनोविज्ञान, व्यक्तित्व के प्रकार एव सवर्द्धन, स्वरविज्ञान, मानव व्यवहार, आयुर्वेदीय मानसरोग एव भारतीय तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान की तुलना जैसे विषय पर अधिकारी विद्वानो ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

कांगड़ी ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत कांगड़ी एव निकटवर्ती ग्रामो को बाढ से बचाने के लिए जिला स्तर पर कार्यवाही की गई है। जिलाधिकारी बिजनौर का पूर्ण सहयोग इस कार्य के लिए मिल रहा है। हमारे विद्यार्थियों ने इस वर्ष गाव के 60 घरो के पीछे किचन सोकपिट बनाए। गाव को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली 200 मीटर लम्बी खड़न्जे की सड़क को मिट्टी से पाटकर मुरम्मत का कार्य किया। तीन पेयजल के कूओ की सफाई, निकास-नालियो का निर्माण, परिवार नियोजन की शिक्षा तथा ग्रामवासियो को स्वास्थ्य-शिक्षा की जानकारी दी गई। डा विजय शकर तथा सेवा योजना के समन्वयक श्री ओम् प्रकाश मिश्र के सचालन मे इस ग्राम का उत्थान हो रहा है।

रसायन विभाग में 1985-86 सत्र से एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा 'फार्मास्यूटिकल मेथड्स आव कैमिकल एनेलेसिस' में शुरू किया गया है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को जल, मिट्टी, तेल, मधु, साबुन, सीमेंट, खाद्य, लवण, अम्ल, दुग्ध तथा उर्वरक आदि के विश्लेषण का अभ्यास कराया जाता है तथा आधुनिक इलेक्ट्रोनिक उपकरणों पर कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है रोजगारोन्मुख शिक्षा के क्षेत्र में यह हमारा एक कदम है और हमें यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस डिप्लोमा मे अब तक उत्तीर्ण विद्यार्थी सरकारी तथा गैर सरकारी सस्थानो में नौकरी प्राप्त कर चुके हैं।

पिछले दिनो भारत सरकार ने हिमालय-आर्किड्स की पार्वतिक जीव विज्ञान पर तथा अनुदान आयोग ने पश्चिमी हिमालय के दाम-बीजो तथा सैक्सीफ्रेज पर बृहद् शोध-योजना भी विश्वविद्यालय के लिए स्वीकृत की है। यह कार्य डा पुरुषोत्तम कौशिक के निरीक्षण मे सम्पन्न होगा।

इस विश्वविद्यालय की बहुमुखी योजनाओ के विकास के लिए सप्तम पचवर्षीय योजना मे अनुदान आयोग ने पचास लाख रुपए की राशि स्वीकृत की है। कन्या गुरुकुल देहरादून जो इस विश्वविद्यालय का दूसरा कैम्पस है, के लिए पाच लाख रुपये अलग से दिए हैं। वेद-सग्रहालय जिसमे यज्ञ के प्रकार, यज्ञवेदिया, यज्ञपात्र तथा समिधा आदि के वैदिक रूपो का सकलन होगा, साइको आयुर्वेदिक चिकित्सा तथा हिन्दी-पत्रकारिता के डिप्लोमा के लिए विस्तृत योजनाए विचारार्थ भागी हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दी पत्रकारिता के डिप्लोमा के लिए विस्तृत योजनाए विचारार्थ मागी हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दी पत्रकारिता के पितामह थे। उनके सद्धर्म प्रचारक ने पराधीन भारत में जनजागरण का कार्य किया था। उनके शिष्यो ने, इस विश्वविद्यालय के स्नातको ने इस दिशा मे ऐतिहासिक महत्व का कार्य किया है। हमने उस सारी सामग्री के प्रकाशन-सम्पादन की योजना बनाई है ताकि हम सद्धर्मप्रचारक की शताब्दी मनाए और इस अवसर पर वह सामग्री प्रकाशित हो। आजादी की लड़ाई का इतिहास तब तक अधूरा है, जब तक इस सारी सामग्री का आकलन नहीं हो जाता। अनुदान आयोग के अधिकारियो, विशेष कर उसके विद्वान् अध्यक्ष प्रो. यशपाल तथा उपाध्यक्ष डा. सच्चिदानन्द मूर्ति का मैं विशेष रूप से आभारी हू जिन्होंने हमारी योजनाओं पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया।

(क्रमशः)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा स्थापना शताब्दी समारोह दयानन्द मठ रोहतक, दिनांक 15, 16, 17 मई, 1987 को मनाया जा रहा है। कार्यक्रम निम्न प्रकार से होगा।

यज्ञ—11 से 17 मई 1987 संयोजक—आचार्य सुदर्शनदेव जी

ब्रह्मा ब्रह्मा—स्वामी दीक्षानन्द जी।

15-5-87 प्रात 8 15 बजे ध्वजारोहण—स्वामी आनन्दबोध जी

9 00 बजे समारोह का उद्घाटन-स्वामी सर्वानन्द जी

10 30 से 12 30 तक वेद सम्मेलन—अध्यक्ष—स्वामी सत्यप्रकाश जी होंगे।

16 मई 87

प्रात. 9 30 से 12 30 बजे तक युवा एवं व्यसनमुक्ति सम्मेलन

अध्यक्ष—प्रो शेरसिंह जी, संयोजक—डा योगानन्द जी, मुख्य अतिथि-श्री स्वामी सुमेधानन्द जी दयानन्द मठ चम्बा।

मुख्य वक्ता—श्री धर्मपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री स्वामी रत्नदेव जी, श्री राम स्नेही जी पानीपत, श्री बालदिवाकर हंस, श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री, भजनोपदेशक—श्री म वेदचन्द जी, श्री सहदेव बेधड़क जी, श्री ईश्वर सिंह तूफान।

दोपहर बाद 3 30 से 5 30 तक मातृ शक्ति सम्मेलन—

अध्यक्ष—श्रीमती महादेवी वर्मा, संयोजक—कुमारी शकुन्तला प्रिंसीपल

आशीर्वाद उद्घाटन भाषण—श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित

पवन श्री सुभाषणी देवी जी मुख्य वक्ता—श्रीमती पदमा सचदेवा साहित्य

कन्या गुरुकुल खानपुर अकादमी श्रीमती कमला वर्मा, श्रीमती

विशेष आकर्षण शान्ति राठी, श्रीमती किरणमयी।

साय 6 से 7 तक व्यायाम प्रदर्शन भजनोपदेशिका—श्रीमती राजबाला, तथा कलावती जी

रात्रि 8 से 11 बजे तक—राष्ट्रीय एकता सम्मेलन

अध्यक्ष—श्री रामचन्द्र वन्देमातरम, संयोजक—श्री प्रिंसीपल लाभसिंह।

मुख्य अतिथि-श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह, पूर्व रक्षा मन्त्री भारत सरकार।

उदघाटन भाषण—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

भजनोपदेशक

श्री वीरेन्द्र जी "वीर" प्रमुख प्रवक्ता—श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य

श्री देव राज जी प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री सूर्यदेव

श्री बलराज जी जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।

श्री सुमेर सिंह जी श्री स्वामी सुरेशानन्द जी परमानु, श्री सुरेन्द्र सिंह सचदेव, श्री शान्ति प्रकाश जी श्री वीरेन्द्र रतनम मेरठ, श्री राममेहर एडवोकेट, श्री सुखदेव शास्त्री।

17 मई 87

यज्ञ पूर्णाहुति 9 से 10 00 बजे तक प्रात

एवं शुद्धि संस्कार (स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा)

10 बजे से 10 30 बजे तक सत्कार समारोह

10 30 से 1 30 बजे तक शिव सकल्प सम्मेलन संयोजक-डा रणजीतसिंह

अध्यक्ष—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती।

भजनोपदेशक मुख्य अतिथि—स्वामी आनन्दबोध जी

श्री मुरारीलाल बेचैन उद्घाटन—प्रो शेरसिंह जी

श्री जयपाल सिंह आर्य मुख्य वक्ता—श्री प्रो वेद व्यास जी

श्री रामगुरु जी शर्मा

श्री भवानी लाला जी भारतीय

श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री

—रघुबीर सिंह

संयोजक शताब्दी समारोह

आर्य समाज लन्दन की गतिविधियाँ

आर्य समाज लन्दन, ब्रिटिश राज्य मे एक प्रमुख संस्था है। इसकी गतिविधिया एक महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित करती हैं। श्री डा यज्ञमित्र की पुरोहित पद पर नियुक्ति उपरान्त इस आर्य समाज के तत्वावधान मे अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए।

श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज के मार्गदर्शन मे भी इस समाज ने अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्री रमेश अरोडा उप मुख्य आयुक्त भारत सरकार तथा अन्य विद्वानो के सारगर्भित भाषण हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा त्रिनिडाड के प्रधान श्री शिव प्रसाद ने यहा के कार्यक्रम की सराहना की।

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे इस आर्य समाज की ओर से गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। जिसमे लगभग 5000 गायत्री पाठ हुआ और उतनी ही आहुतिया प्रदान की गई। आर्य समाज के इस अनन्य प्रोग्राम मे श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज के सत्प्रयत्नो से 60 यजमानो ने अपनी अमूल्य सेवाए अर्पित की इन मे श्रीमती सावित्री छाबडा, श्रीमती कैलाश भसीन, श्रीमती उर्मिला चोपडा, श्रीमती ऊषा भसीन आदि महिलाओ एव श्री धर्मपाल भसीन, श्री प्रियव्रत चोपडा आदि पुरुषो ने अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। इस आयोजन का मुख्य भार श्री प्रो भारद्वाज ने अपने पुष्ट कन्धो पर लिया और बखूबी से निभाया। श्री विप्रबन्धु, श्री विनय कुमार, श्री गिरीश खोसला, श्री यज्ञमित्र, प्रो भारद्वाज ने ब्रह्मत्व का आसन ग्रहण किया। अन्त में श्री भारद्वाज ने गायत्री के स्पष्ट उच्चारण का बोध करते हुए, गायत्री के माहात्म्य का भी बोध कराया।

वेद सुधा—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत काफी सुचारु रूप से वेद मन्त्र की व्याख्या श्री भारद्वाज, श्री विनय कुमार, श्री विप्रबन्धु श्रीमती वेदवती, श्रीमती दयावती श्री यज्ञमित्र प्रस्तुत करते रहे हैं। जबकि मुख्य वक्ता के रूप मे श्री रमेश अरोडा उप मुख्य आयुक्त, श्री शिव प्रसाद, श्री डा मुनिशील शर्मा श्री वीरेन्द्र वर्मा, श्री गोवर्धन पटेल, श्री इन्द्रनाथ, अध्यक्ष पातञ्जलि योग केन्द्र, लन्दन श्री यज्ञमित्र आदि यशस्वी विद्वान् पधारते रहे हैं।

वेद पाठ मण्डल का कार्यक्रम श्रीमती सावित्री छाबडा जी के निर्देशन मे बहुत ही रोचक एव प्ररक होता है। श्रीमती स्वर्ण शर्मा, श्रीमती सत्या मदान, श्रीमती उर्मिला चोपडा, श्रीमती ऊषा भसीन, श्रीमती सन्तोष आशानन्द, श्रीमती सन्तोष वैद, श्रीमती यश वेदी, आदि वेद पाठ मण्डल की महिलाए सुमधुर गान प्रस्तुत करती रही हैं।

इस समाज की उन्नति दिन प्रतिदिन दानी महानुभावो की कृपा से होती रही है। समय समय पर कई दानी महानुभाव सरक्षक बन कर इस समाज की सेवा मे धन प्रदान करते रहे हैं।

यह समाज लन्दन के बच्चो के लिए हिन्दी पाठशाला, नृत्यकला शिक्षणालय का भी कार्य भार देख रहा है। श्रीमती शेक्सपियर भारतनाटयम की शिक्षा बच्चो को प्रदान करती हैं तथा 20 बच्चो की उपस्थिति निरन्तर होती रही है।

इन सभी कार्यक्रमो की पृष्ठ भूमि मे श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज का महत्वपूर्ण योगदान, एव श्री यज्ञमित्र का प्रेरक योगदान रहा है, जिसके लिए यह समाज इनका आभारी है।

निर्वाचन सम्पन्न—श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज इस बार पुन सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किए गए। इस बार की अन्तरग सभा मे श्रीमती प्रतिभा बहल, मन्त्री—श्री प्रियव्रत चोपडा—कोषाध्यक्ष, श्री धर्मपाल भसीन उप-कोषाध्यक्ष, श्रीमती ऊषा भसीन, पुस्तकाध्यक्ष, आदि प्रमुख हैं। श्रीमती लाज चावला एव श्री जगदीश शर्मा उप-प्रधान निर्वाचित हुए।

श्री भारद्वाज जी गत 13-14 वर्षों से निरन्तर एव सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित किए जाते रहे हैं।

———

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों की कुछ समस्याएं और समाधान

लेखक—डा. श्री भारत भूषण जी भारत भवन
828 दयानन्द आर्य समाज मार्ग, शकूरबस्ती, दिल्ली-34

(3 मई से आगे)

2—दिनांक 7-3-39 की विज्ञप्ति स 23 में प्रकाशित नाम—

क—मथुरा ग्राम में दिनांक 7 3 39 को 11 बजे दिन में हिन्दू महासभा की ओर से 5 (पांच) सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया। इनके सम्मुख भाषण कर्ता सिंघवी जी को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

ख—बीदर के 8 सत्याग्रही वीरों ने सुल्तान बाजार में हुरमतमजा हैदराबाद में सत्याग्रह किया।

ग—बीदर जिले के कासार सिरसी ग्राम में दस आर्यों को गिरफ्तार कर लिया।

घ—शोलापुर जिले में।

1 श्री ब्रह्मदत्त (मैं लेखक-वर्तमान डा भारत भूषण ने) 2 श्री पृथ्वीनाथ जी, 3 श्री सुमेरचन्द जी, 4 श्री दयानन्द जी और 5 श्री शाहबराय जी के जत्थो ने बहीटना, बैराग, तडवल, मावली, हरोला और बदाला ग्रामो का दौरा किया और वहां सभा करके प्रचार किया ग्रामीणो ने इन सभाओ में शासको द्वारा डर दिखलाने के बावजूद भी लोग काफी संख्या में भाग लेते रहे।

ङ—दिनांक 6 मार्च 1939 को बरेली के लिए सत्याग्रहियो का जत्था शोलापुर में उतरा। 1 श्री योगेन्द्र जी, 2 श्री विद्यानन्द जी, 3 श्री रामदेव जी, 4 श्री भूदेव जी, 5 श्री सत्यकेतु जी श्री कर्मसिंह जी प्रधान आर्य समाज मथुरा ने इन जत्थो द्वारा प्रचार किया।

3 दिनांक 8 मार्च 1939 की विज्ञप्ति संख्या 24 में प्रकाशित नाम—

क—दिनांक 7 मार्च 1939 को बरेली के निम्नलिखित 12 व्यक्तियो को गुलबर्गा के प्रथम श्रेणी के न्यायाधीश ने एक-एक वर्ष सख्त कैद और एक-एक मास की सादी कैद की सजा दी। सब प्रसन्नचित थे। 1 स्वामी विवेकानन्द जी, 2 स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, 3 स्वामी ज्ञानानन्द जी (तीनों बरेली निवासी) 4 श्री सत्यप्रकाश जी, 5 श्री गंगादीन, 6. श्री अकबर जी और 7. श्री सोवरन लाल जी (सीतापुर निवासी) 8 श्री नथाशरण जी, 9 श्री वासुदेव जी (लखीमपुर) 9 श्री छोटेलाल जी 10 श्री छोटेलाल जी देहाती अमोहरा, पीलीभीत, 11 श्री इन्द्र देव देवाश्रय, बरेली, 12 श्री राजदेव जी कुछडपीर बरेली, 13 श्री राजकरण सिंह जी असधावा बरेली, 14 श्री मनफूल और 15 श्री कुंज बिहारी बरेली, 16 श्री रोशनलाल, 17 श्री मक्खनलाल मोहम्मद गंज पीलीभीत से।

ख—श्री कुंवर चान्द करण शारदा (राजस्थान) सर्वाधिकारी के जत्थे के 63 सत्याग्रहियो का अभियोग 9 मार्च 1939 को गुलबर्गा जेल में हुआ।

ग—रायचूर ग्राम में 11 सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया।

मेरे पास वाली उपरोक्त इन तीन विज्ञप्तियो में जो नाम छपे हुए हैं वे मैंने ऊपर अंकित कर दिए हैं। जो आर्य सत्याग्रही महानुभाव उपरोक्त विज्ञप्तियो से लाभ उठाना चाहे वे मेरे पास से इन विज्ञप्तियो की फोटोस्टेट प्रतियां प्राप्त कर सकते हैं। अथवा मुझे लिखें तो अपेक्षित नाम वाली विज्ञप्ति की फोटोस्टेट की प्रति उनके इच्छित पते से भेजने की सेवा कर सकता हूं।

10 पूर्व प्रमाणित और अप्रमाणित सत्याग्रहियो का उनकी मृत्यु से पूर्व सभा की सलाहकार समिति से युद्ध स्तर पर भारत सरकार से शीघ्र निर्णय करवाने की प्रार्थना—

जैसा कि यह सर्वविदित है कि हैदराबाद के 28-30 हजार के लगभग कुल सत्याग्रहियो में से इस 49 वर्ष के के लम्बे समय में अब लगभग दस प्रतिशत ही सत्याग्रही बचे हुए होंगे और इन में से बहुत से तो अत्यन्त अशक्त अवस्था में होकर सम्भव है चार पाई पर ही दिन गिन रहे होंगे। मेरे सामने मर्यादपुर दिल्ली के श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य का नाम है। इनके पास तत्कालीन श्री ओम् प्रकाश जी त्यागी मन्त्री सभा द्वारा इनका सत्याग्रही होने का प्रमाण-पत्र भी है इनके पास जेल अधिकारियों का एक पत्र भारत के पुलिस एक्शन के समय में जेल के रिकार्ड आदि जल जाने का प्रमाण-पत्र भी है। सभा के पास भी इनके सम्बन्ध में किसी मुकदमे के उत्तर प्रत्युत्तर भी है। ये आजकल अपनी अत्यन्त वृद्धावस्था में चलने-फिरने में भी असमर्थ हैं। इस प्रकार के न जाने और कितने वृद्ध तथा सत्याग्रही होंगे।

जैसा कि मैंने पहले भी ऊपर निवेदन किया है कि अपनी भरी युवावस्था में आर्य समाज के पूर्व नेताओ आदि के आह्वान पर हजारो नवयुवको तथा वृद्धो ने अंग्रेज शासन से समर्पित निजाम की औरंगजेबी अत्याचार की भट्टी में निःस्वार्थ भाव से निर्भय होकर झोंक दिया था। सभा द्वारा आर्य युवकों की वृद्धावस्था में सभा के पूर्व आर्य नेताओं के आह्वान पर निःस्वार्थ भाव से की जाने वाली इस सेवा का आर्य समाज की वर्तमान युवा पीढ़ी पर प्रभाव पड सके और अधिक से अधिक में युवको पर आर्य समाज की ओर आकर्षित होने हेतु मार्ग साफ हो सके।

11 सत्याग्रह आरम्भ होने से पूर्व के झूठ प्रार्थी सत्याग्रहियो से सभा की सलाहकार समिति को विशेष सावधान रहने की आवश्यकता।

प्रमाणित सूचना के अनुसार सभा की सलाहकार समिति की दूसरी बैठक दिनांक 17 फरवरी 1987 को हैदराबाद में हुई थी और इस बैठक में पूर्व हैदराबाद राज्य से सम्बन्धित तीनों प्रांतों की जेलो के उच्च अधिकारी भी सम्मिलित हुए थे किन्तु न जाने सभा के अधिकारी उन जेल अधिकारियों से उन की जेलों के अधिकारियों के द्वारा दिये हुए प्रमाण-पत्रो को भी प्रमाणित करवाने में सफल हुए हैं या नहीं? क्योंकि हैदराबाद में सलाहकार समिति की बैठक करने का अभिप्राय ही जेलों के अधिकारियों के द्वारा दिये हुए प्रमाण-पत्रों को भी यहीं इन पर प्रमाणित करके गृह मंत्रालय को न भेजने की समस्या का समाधान करना मुख्य ही था। परन्तु न जाने इस विशेष समस्या का समाधान क्यो नहीं हो सका।

मालूम हुआ है कि सभा के कार्यालय में हैदराबाद राज्य के जेल-अधिकारियो की ओर से बहुत सी ऐसी सूचियां भी आई हैं जिन में बहुत से नाम इस प्रकार के भी अंकित हैं जो कि आर्य समाज के सत्याग्रह के आरम्भ होने से पूर्व के हैं।

इसलिए हैदराबाद राज्य के केवल उन सम्बन्धित आर्य समाजियों को छोड़ कर जिनको कि निजाम हैदराबाद की सरकार ने सत्याग्रह करने से पूर्व कुछ वर्षो में तंग करके जेलो में डाल दिया था किन्तु बाकी झूठे प्रार्थी सत्याग्रहियो के कारण वास्तविक सत्याग्रहियो का अधिकार न छीने जाने के सम्बन्ध में विशेषतः श्री ब्रह्मदत्त जी संयोजक तथा सभा की सलाहकार समिति के सदस्यो को विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है।

शीघ्र निर्णय करवाने हेतु पुनः प्रार्थना

अतः आशा है सभा की सलाहकार समिति के अध्यक्ष एवं श्री ब्रह्मदत्त जी संयोजक महोदय मेरी इस विनम्र प्रार्थना पर ध्यान देने की कृपा करके पूर्व प्रमाणित तथा अप्रमाणित सभी प्रकार के सत्याग्रहियों की पेंशन आदि के सम्बन्ध में भारत सरकार से शीघ्र निर्णय करवा कर सभा पुण्य के भागी बनेंगे।

—निवेदक—
हैदराबाद के तृतीय सर्वाधिकार के जत्थे का सत्याग्रही

शिक्षा-नीति में संस्कृत के प्रति घोर अन्याय देश-व्यापी आन्दोलन होगा

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में एक सप्ताह से चल रहे सामवेद पारायण यज्ञ तथा साधना-शिविर के समापन-समारोह में आज हजारों श्रोताओं की उपस्थिति में एक प्रस्ताव पारित कर नई शिक्षा-नीति में किए गए संस्कृत के पूर्ण बहिष्कार पर तीव्र क्षोभ व्यक्त किया गया और सरकार को चेतावनी दी गई कि यदि उसने नीति में अविलम्ब संशोधन न किया तो देश-व्यापी स्तर पर आन्दोलन का उसे सामना करना पड़ेगा।

प्रस्ताव में कहा है—संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की वाहिका ही नहीं [illegible] इतिहास एवं प्राचीनतम ज्ञान का भण्डार भी है। अनेक विदेशी विद्वानों ने भी इसे सब भाषाओं की जननी स्वीकार किया है। भारत राष्ट्र संसार में अपना मस्तक ऊंचा करने के लिए संस्कृत को समर्थ प्रस्तुत कर सकता था परन्तु यह तभी सम्भव था जब वह स्वयं इसे सद्भावना अपना ले।

प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि दुर्भाग्य का विषय है कि भारत सरकार की नई शिक्षा-नीति के कर्णधार स्वयं संस्कृत भाषा और उसकी महत्ता से अनभिज्ञ हैं और उन्होंने नई शिक्षा-नीति में तो संस्कृत का एक दम बहिष्कार कर दिया है। यह बात समझ में आने वाली नहीं है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में विद्यार्थी को संस्कृत से दूर रखा जाएगा तो संस्कृत में एम ए या डाक्टरेट की कल्पना कैसे की जा सकती है।

अन्त में भारत सरकार से जोरदार मांग की गई है कि नई शिक्षा नीति में अविलम्ब संशोधन करे और संस्कृत को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा प्रत्येक स्तर पर उपलब्ध करे अन्यथा उसे देश व्यापी स्तर पर आन्दोलन का सामना करना होगा।

प्रस्ताव पर वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के उप प्रधान एवं आर्य समाज देहरादून के प्रधान श्री यशपाल आर्य ने और आश्रम के मन्त्री श्री देवदत्त बाली ने जोरदार भाषण किए।

तपोवन के इस वार्षिक समारोह में इस बार अभूतपूर्व संख्या में जनता एकत्र हुई। मन्त्री श्री देवदत्त बाली ने आगामी कार्य की योजना तथा आश्रम की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला।

—देवदत्त बाली
मन्त्री

आर्य समाज के प्रचार कार्य को प्रगति देने के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

31 मई से 30 जून तक

वर्तमान समय में देश और संस्कृति के विनाश की कुचेष्टाएं बाहर और भीतर से मिल रही हैं। इससे देश में हिंसा और असुरक्षा का वातावरण बढ़ रहा है। इसका एक मात्र उपाय महर्षि दयानन्द की विचारधारा का अधिकाधिक प्रचार प्रसार करना है। देश में स्वस्थ वातावरण बनाने के लिए एक वृहद् योजना की रूपरेखा को क्रियात्मक रूप देने का निश्चय किया गया है। इसके लिए ऐसे त्यागी, तपस्वी कर्त्तव्यनिष्ठ नवयुवक प्रचारकों की आवश्यकता है जिनमें अपने देश संस्कृति व वैदिक धर्म के प्रति सच्ची आस्था व लग्न हो।

• प्रचार कार्य में रुचि रखने वाले योग्य स्नातक, आचार्य, [illegible] से 20 मई 87 तक मंत्री-धर्मांगद वैदिक संस्कृति रक्षा समिति आर्य समाज न्यू मोती नगर नई दिल्ली 110015 के पते पर आवेदन पत्र आमन्त्रित किए जाते हैं। एक मास का प्रशिक्षण देकर देश के किसी भी प्रदेश में प्रचार कार्य के लिए प्रेषित किया जा सकता है। एतदर्थ उचित दक्षिणा दी जाएगी और बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध समिति द्वारा किया जायेगा।

धर्मांगद वैदिक संस्कृति रक्षा
समिति अध्यक्ष
स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती।

—देवेन्द्र आर्य
मन्त्री

शोक समाचार

आपको यह जानकर दु ख होगा कि लुधियाना के श्री कैलाश कृष्ण जी रत्न का देहावसान 13-4-87 को अकस्मात् ही हो गया। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिजनों को इस दारुण दु ख को सहन करने की शक्ति दे। श्री रत्न जी के अन्तिम शोक दिवस पर उनकी धर्म पत्नी श्रीमती कान्ता रत्न 102 रोज पार्क लुधियाना ने 1001 रुपया आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए दान दिया।

—एस. एल शर्मा लुधियाना

ऋणी धरा है तथा गगन

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र)

वैदिक संस्कृति का जिसने फिर, वसुधा पर उद्धार किया,
कष्ट अनेकानेक सहे, पर जगती का उपकार किया,
भव्य चेतना, नव जागृति का, कण-कण में भर स्पन्दन—
मध्य चक्र में फसी तरणि मानवता की, फिर पार किया,
काल जयी। ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन।
यती तपस्वी के चरणों में अर्पित युग का कोटि नमन ॥

मानवता का मन्त्र दिया वेदों की अलख जगायी,
अमा निशा की गहन तमिस्रा, तुमने यती भगायी,
जीवन की ले शक्ति अपरिमित, जगे यहां पर जन जन—
जागो! जागो! आर्य जनो हे! रट है सतत लगायी,
ज्योतिर्मान हुआ जग सारा, जाग उठा भू कन कन।
काल जयी! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥

दिया तुम्हीं ने भारत को ऋषि स्वतन्त्रता संदेश,
सद्यत्नों से विश्व तुम्हारे गौरव अन्वित हुआ स्वदेश,
त्याग तथा बलिदानों का पथ तुमने सहज दिखाया—
हुआ अग्रसर, अन्धजाल को तोड़, मधुरमय देश,
दयाधर्म के, सत्य अहिंसा के खिल उठे सुमन।
काल जयी! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥

प्राची से फूटी जागृति की, नयी ऊषा अरुणायी,
तिमिर ज्योति की, सत्य असत्य की भीषण हुई लड़ाई,
हुआ जयी आलोक, सत्य, शुचि धर्म विश्व वेदों का—
इसने जगी अजस्र हो भारत पुत्रों की तरुणायी,
देती नव संदेश सत्य का, निकली स्वर्णिम सूर्य किरन।
काल जयी! ऋषि दयानन्द की ऋणी धरा है तथा गगन ॥

पावन पथ वेदों का भू पर, हुआ प्रकाम्य प्रशस्त,
तिमिराच्छादित परम्पराएं हुईं अनय की अस्त,
नव आशा अभिलाषाओं की, लहरी नई तरंगें—
सत्य शिवम सुन्दरता पूरित, बही वायु अलमस्त,
पर हित में अर्पित कर डाला, जिसने तन मन धन।
काल जयी! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥
यती-तपस्वी के चरणों में, अर्पित युग का कोटि कोटि नमन ॥

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव 27 अप्रैल से 3 मई तक बड़े उत्साह से मनाया गया। श्री प. बालकृष्ण जी शास्त्री पुरोहित यज्ञ के ब्रह्मा थे। कथा श्री प. निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी सभा महोपदेशक करते रहे और श्री रामनाथ जी शास्त्री संगीत रत्न तथा श्री राम जी के भजन होते रहे।

रविवार 3-5-87 को प्रात 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया गया। इसके पश्चात् श्री प. निरञ्जन देव जी और श्री प. धर्म देव जी सभा कार्यालयाध्यक्ष के प्रभावशाली प्रवचन हुए। एक बजे वृहद् ऋषिलंगर हुआ जिसमे सैकड़ो आर्य बहनो तथा भाईयो ने प्रीति भोज किया।

—विजय सरीन-मन्त्री

दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर

ईश्वर की दया तथा आप जैसे अनेक सज्जनो के सहयोग से हमे इस कार्य में अच्छी सफलता मिली है। आशा है आप इस कार्य मे सहयोग देते व दिलाते रहेंगे। अब तक चौथे न्यायदर्शन का अध्यापन हो गया है और पाचवा वेदान्त दर्शन चल रहा है। अनेक ब्रह्मचारियो ने इन चारो दर्शनो को पढ़ाने की योग्यता प्राप्त कर ली है तथा योग मे भी अच्छी प्रगति की है।

जिस प्रकार से यह 2 वर्ष का कार्यक्रम रखा गया था उसी प्रकार का आगे 3 वर्ष का नया कार्यक्रम रखने का विचार है। जो युवक आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले व संस्कृत माध्यम से 6 दर्शन पढ़ने तथा योग प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक हो वे पत्र व्यवहार करें। ब्रह्मचारियो को भोजन वस्त्र घी, दूध, फलादि समस्त आवश्यक साधन निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

—आर्यवन विकास फार्म रोजड
पो. सागपुर साबरकाठा गुजरात

दूरदर्शन का अदूरदर्शी कार्यक्रम

दूरदर्शन (टेलिवीजन) पर रात्रि के साढ़े ग्यारह बजे वयस्क फिल्मो के दिखाने का कार्यक्रम बनाया गया है। मेरे विचार से यह कार्यक्रम दूरदर्शन का अदूरदर्शी कार्यक्रम है। क्योंकि इस कार्यक्रम का दूरगामी कुप्रभाव समाज, परिवार व स्वास्थ्य पर निश्चित रूप से पड़ेगा अन्ततोगत्वा राष्ट्रीय स्वास्थ्य का प्रश्न सबसम्बन्धी है। रात मे आधी रात के बाद तक फिल्म देखने से दूसरे दिन दर्शको की कार्य क्षमता प्रभावित होगी। सारे दर्शक चाहे जहा मे कार्य करते हो—खेतो मे, कारखानो मे, कार्यालयो मे—काम नही कर सकेंगे। इन फिल्मों मे भी वही दृश्य दिखाए जाए गे, जिन्हे हमें नही देखना चाहिए। परिणामस्वरूप हमारा मानसिक प्रदूषण उग्र रूप धारण करता जाएगा। फिल्मो मे मारधाड़, अपहरण, बलात्कार, चुम्बन, छेड़खानी, अश्लीलता के अतिरिक्त वयस्कता के नाम पर और भी कुछ अधिक दर्शाया व सिखाया जाएगा जिससे हमारा चरित्र कहा जाएगा? ईश्वर ही जाने। भारतीय संस्कृति—भारतीय आर्य संस्कृति की दुर्दशा का ठेकेदार बनी भारत सरकार, हमारी संस्कृति की रक्षा के नाम पर उसकी अस्मिता के साथ खिलवाड़ ही कर रही है, जो खेदजनक है। क्या दो चो कुछ चोंक का संयोग, प्रति-सांस्कृतिक वातावरण में, नैतिकता के पतन पर अवरोध है, वयस्क फिल्मों के प्रदर्शन से वह भी समाप्त हो जाएगा। अच्छा होता यदि दूरदर्शन के समस्त कार्यक्रम प्रतिदिन ग्यारह बजे के पूर्व ही समाप्त कर दिए जाए और दूरदर्शन पर मात्र नैतिकता, मानवता, चरित्र, राष्ट्रीयता तथा साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ाने वाली फिल्में ही दिखाई जाए।

—राधेश्याम आर्य
मन्त्री

वार्षिक निर्वाचन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा सुलतानपुर का निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ :—

अध्यक्ष—श्री रामकृष्ण
मन्त्री—श्री राधेश्याम आर्य एडवोकेट।
कोषाध्यक्ष—श्री अमर बहादुर सिंह

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

पुस्तकालय [illegible] रजि० नं० [illegible] 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 7. 10 ज्येष्ठ सम्वत् 2044 तदानुसार 24 मई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

हे मानव ! तू सत्यदेव परमात्मा की पूजा कर

अभि प्र गोपतिं गिरा, इन्द्रमर्च यथाविदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥

ऋ. 8 61 4॥ साम पू. 2, 284 ॥ अ 2012,1 ॥

विनय

हे मनुष्य ! यदि तू यथार्थ सत्यज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो तू इन्द्र की शरण में जा। ये इन्द्रियां—प्रत्यक्ष ज्ञान का साधन समझी जाने वाली ये इन्द्रियां—तुझे परिमित ज्ञान ही देंगी तथा बहुत बार बड़ा भ्रामक ज्ञान उत्पन्न करेंगी, मन इन्द्रिय भी तुझे दूर तक नहीं पहुंचायेगी, और तेरे रागद्वेष पूर्ण मलिन मन की तर्कनाशक्ति केवल कुतर्क में लगेगी। बाहिर से मिलने वाला ज्ञान अर्थात् विद्वानों के उपदेश और तत्त्वज्ञानियों के ग्रन्थ अपनी बुद्धि से कहे व लिखे जाने के कारण तुझे अभी कुछ शान्ति न दे सकेंगे, बहुत सम्भव है कि ये तुझे और उलझन में डाल देंगे। अतः तुझे शान्ति दे सकने वाला सच्चा यथार्थ ज्ञान अपने अन्दर से, अपनी आत्मा से ही मिलेगा ! इसे तू अपनी आत्मा में खोज, उसे अपनी आत्मा में खोज जो कि इन सब इन्द्रियों का स्वामी है, जिस ने अपनी शक्ति प्रदान करके मन आदि इन्द्रियों को अपना साधन बना रखा है, जो कि सत्य ज्ञान-स्वरूप है, क्योंकि परम सत्य स्वरूप परमात्मा का पुत्र है, और जो कि सत्पतिम् स्वभावतः सदा सत्य का पालक है। हे मनुष्य ! तू इस सत्येन्द्र की पूजा करत् आराधना कर, पूरे यत्न से इसे प्रसन्न करे तो तुझे सत्य मिल जाएगा। वाणी शक्ति द्वारा तू इसकी अपरोक्ष पूजा कर इस सत्यमय देवी की आराधना करने के लिए तुझे सत्यमय वाणी की साधना करनी पड़ेगी। बोलने में, व्यवहार में, हर एक अभिव्यक्ति में पूरी तरह सत्य का पालन करना होगा, अन्दर की मनोमय वाणी में भी सर्वथा सत्य के ही चिन्तन, मनन की विकट तपस्या करनी होगी। अन्दर घुसने पर ही तुझे पता लगेगा कि परिपूर्ण वाणी द्वारा सत्य की आराधना करना कितना कठिन है। पर साथ ही यह भी सच है कि जब तू यह साधना पूरी कर लेगा तो तेरा 'सत्य मनु' 'सत्यपति' आत्मा प्रकट हो जाएगा और अपना अमूल्य भण्डार, सब सत्य ज्ञान के रत्नों का भण्डार तेरे लिए खोल देगा। तब तुझे कोई उलझन न रहेगी, तेरा निर्मल मन ठीक ही तर्क करेगा, तेरी इन्द्रियां भी अधिक स्पष्ट देखेंगी, पर सब से बड़ी बात तो यह है कि तब तुझे यह सत्यमयी, 'ऋतंभरा' बुद्धि मिल जाएगी जिस द्वारा कि तू जब जिस विषय का यथार्थ ज्ञान पाना चाहेगा वह सब तुझे प्रकाशित हो जाया करेगा। सत्य का पालन करने वाला सत्पति आत्मा स्वयंमेव तेरे लिए सदा सत्य की रक्षा करता रहेगा। वाणी द्वारा सत्य की साधना करने का यह स्वाभाविक फल है। हे मनुष्य ! तू इस सत्य इन्द्र की आराधना कर, अपरोक्ष रूप से पूरी तरह आराधना कर।

शब्दार्थ —हे मनुष्य ! (यथाविदे) यथार्थ ज्ञान पाने के लिए तू (गोपतिं) इन्द्रियों के स्वामी (इन्द्रं) आत्मा का (गिरा) वाणी द्वारा (अभि प्रअर्च) अपरोक्ष और पूरी तरह पूजन कर, जो कि आत्मा (सत्यस्य सूनुं) सत्य का पुत्र है और (सत्पतिं) सदा सत्य का पालक है।

वैदिक विनय से—

आर्य शिक्षा मण्डल जालन्धर

श्री वीरेन्द्र जी प्रधान चुने गए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी आर्य शिक्षा मण्डल जालन्धर के प्रधान चुने गए हैं। इस शिक्षा मण्डल के अधीन निम्नलिखित शिक्षा संस्थान कार्यरत हैं :—

(1) कन्या महाविद्यालय जालन्धर

(2) दोआबा कालेज जालन्धर

(3) देवराज गर्ल्स सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल,

(4) देवराज माडल स्कूल और

(5) जालन्धर माडल स्कूल शामिल हैं।

श्री वीरेन्द्र जी आर्य शिक्षा परिषद् के प्रधान भी हैं जो पंजाब के कई कालेजों और स्कूलों का संचालन करती है। श्री वीरेन्द्र जी डी. एम. कालेज मैनेजिंग कमेटी मोगा के भी प्रधान हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त-समारोह के अवसर

आर. सी. शर्मा कुलपति का स्वागत भाषण

आई. ए. एस. (अवकाश प्राप्त)

(गताक से आगे)

२२ अगस्त को संस्कृत विभाग ने संस्कृत दिवस का आयोजन किया। निर्धन निकेतन के अध्यक्ष श्री महर्षि केवलानन्द जी की अध्यक्षता मे नगर की संस्कृत पाठशालाओ के विद्वानो तथा गुरुकुल के आचार्यों और ब्रह्मचारियो ने संस्कृत भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डाला। डा निगम शर्मा तथा श्री वेद प्रकाश शास्त्री इसके संयोजक थे। वेद विभाग के विद्वानो ने वैदिक धर्म और साहित्य पर बाहर जाकर अनेक व्याख्यान दिए। प्रो राम प्रसाद वेदालकार की अनेक छोटी-बडी पुस्तकें प्रकाशित हुई। जन-सामान्य को वैदिक सिद्धान्तो से परिचित कराने मे इन पुस्तिकाओ की बडी उपयोगिता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान-दिवस पर अनेक प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। बैडमिन्टन टूर्नामेंट मे भी ब्रह्मचारियो ने सोत्साह भाग लिया। इस श्रृंखला मे नई पीढी के उद्बोधन और मार्ग दर्शन के लिए स्वामी जी की स्मृति में एक राष्ट्रीय स्तर की व्याख्यान माला का शुभारम्भ किया गया। इसमे भारतीय साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व, दर्शन, विज्ञान, समाज सेवा तथा स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास पर विश्रुत विद्वानो के व्याख्यान कराए जाए थे। 4 मार्च 1987 को इस 'प्रसार व्याख्यान माला का उद्घाटन भाषण हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार तथा गांधीवादी विचारक श्री विष्णु प्रभाकर ने दिया। 'भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानन्द शीर्षक पुस्तिपूर्ण रूप में छपा उनका व्याख्यान वितरित कराया गया। इस समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति डा सत्यकेतु विद्यालकार ने की। इस भव्य आयोजन की सफलता के लिए मैं हिन्दी विभागाध्यक्ष डा विष्णुदत्त राकेश को साधुवाद देता हू।

20 स 29 मार्च तक एन सी ई आर टी (राष्टीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद) दिल्ली की ओर से यहा समूहगान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। उत्तर प्रदेश के 43 प्रशिक्षार्थियो ने इसमे भाग लिया। इस शिविर का उदघाटन पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने किया। उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री बलदेव सिह जी आर्य मुख्य अतिथि के रूप मे सम्मिलित हुए। देश प्रसिद्ध सगीत शास्त्री श्री विनय मुदगल, श्री अनुघोष, डा देशपाण्डे तथा लक्ष्मी-केशव जैसे प्रशिक्षको से शिविर मे जान आ गई। डा जोशी तथा प्रो ओम-प्रकाश मिश्र ने इसे सफल बनाने मे पूर्ण सहयोग दिया।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय स्थल गुरुकुल का पुरातत्व सग्रहालय है। इसमें अभिलेख शास्त्र तथा मुद्रा शास्त्र की दुर्लभ किन्तु सामग्री प्रदर्शित है। सग्रहालय के साथ जुडे हुए श्रद्धानन्द कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमे पूज्य स्वामी जी की पादुकाए, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र पत्रादि सुरक्षित हैं। इस स्मृतिकक्ष मे भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास की अद्भुत झाकी मिलती है। 1919 के जलियावाला हत्याकाड के बाद अमृतसर कांग्रेस के अधिवेशन का वह चित्र उल्लेखनीय है जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वागताध्यक्ष के रूप मे विराजमान हैं तथा श्री मोतीलाल नेहरू, श्रीमती एनी बेसेन्ट एव महामना मदन मोहन मालवीय उनके साथ बैठे हैं। नवयुवक श्री जवाहरलाल नेहरू और लाला लाजपतराय भी विद्यमान हैं। अब यह अष्टधातु तथा चित्र कक्ष की स्थापना भी हो गई है। इस सग्रहालय का उद्घाटन माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता डा वासुदेवशरण अग्रवाल ने किया था।

गुरुकुल पुस्तकालय की गणना उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयो में की जाती है। यहा धर्म, दर्शन, इतिहास, मानविकी और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। विभिन्न विषयो पर एक लाख से अधिक पुस्तकें विद्यमान हैं जिनका उपयोग देश-विदेश के विद्वान करते हैं। संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा गुरुकुल पुस्तकालय को भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखे जाने के केन्द्र के रूप में मान्यता दी गई है। वर्ष 86-87 में दुर्लभ ग्रन्थो तथा पाण्डुलिपियो के सरक्षण हेतु 66,500 रुपए का अनुदान मिला। दो हजार नये ग्रन्थ खरीदे गए तथा ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक 400 पत्रिकाए नियमित रूप से मगाई गई। इनमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की 50 पत्रिकाए विदेशो से आ रही हैं। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग ने वर्तमान पुस्तकालय भवन के विस्तार हेतु 5 लाख रुपए की सहायता दी है तथा 4 लाख रुपये की अतिरिक्त धन राशि नवीन पुस्तको एव पत्र-पत्रिकाओ के क्रय के लिए दी है।

एन सी. सी का कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डा निगम शर्मा अपने सहयोगियो के साथ संस्कृत सर्टीफिकेट कोर्स तथा अग्रेजी विभागाध्यक्ष डा राजेलाल वार्ष्णेय अग्रेजी सर्टीफिकेट कोर्स सफलतापूर्वक चला रहे हैं। भाषा शिक्षण की आधुनिक तकनीक के आधार पर अग्रेजी में भाषा ज्ञान के लिए आवश्यक उपकरण मगाए गए हैं। संस्कृत, अग्रेजी न जानने वाले तो इस योजना से लाभान्वित होंगे ही अपितु भाषा के शुद्ध लेखन तथा उच्चारण के लिए यह योजना अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। नये सत्र से हम अन्य भारतीय भाषाओ के ज्ञान के लिए तो कुछ कार्यक्रम शुरू करने जा रहे हैं। तमिल कक्षाओ के लिए तो हमने बातचीत भी कर ली है।

योग प्रशिक्षण पाठयक्रम के लिए श्री ईश्वरदत्त भारद्वाज भी धन्यवाद के पात्र हैं।

गगा और गगा के मैदान के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ऋषिकेश से गढ मुक्तेश्वर तक के प्राय. 2500 ग्रामो का सामाजिक-आर्थिक एव पर्यावरण सम्बन्धी सर्वेक्षण एव अध्ययन किया गया। अभी तक के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अनेक ग्राम भूक्षरण, जलप्लावन, बाढ, सीमेज आदि से पीडित हैं। मजरोला क्षेत्र में प्रदूषण फैला हुआ है। गगा के जल का बैक्टीरिया तथा अनेक स्थानों पर काफी बढे हुए पाए गए जो प्रदूषण के सूचक हैं। योजना ने औषधीय एव अन्य पौधो की एक सूची तैयार की है जिन्हें गगा के मैदान, किनारे एव पहाडियो पर लगाया जाएगा जिससे भूमि कटाव भी रोका जा सकेगा एवं स्थानीय लोगों के लिए औषधि, ईंधन, डेटरजेंट्स एव कीटनाशी आदि उपलब्ध हो सकेंगे। ये कदम जहां राष्ट्रीय समृद्धि में सहायक होंगे वहां साथ ही पर्यावरण को अधिक स्वच्छ भी बनाएंगे।

ग्रामों में शिक्षा की सुविधा एव स्वास्थ्य सेवाएं सन्तोषजनक नहीं है। अधिकतर ग्रामीणों की आर्थिक अवस्था कमजोर है। अधिकतर लोग खेती या मजदूरी पर निर्भर करते हैं। उपरोक्त स्थिति में सुधार लाने के लिए नया योजना कार्यक्रम बना रही है। कांगडी ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत कांगडी ग्राम को बाढ़ से बचाने के लिए वि वि के प्रयास से चैक डैम बनाना प्रारम्भ हो गया है। ग्राम के पास से शराब का ठेका हटाने के लिए जिलाधीश जिलाधिकारी ने आश्वासन दिया है। इस सम्बन्ध मे उत्तर प्रदेश के राज्य आबकारी मन्त्री महोदय ने भी आदेश दिए हैं।

मुझे यह कहते हुए सन्तोष का अनुभव हो रहा है कि विश्वविद्यालय के 1986 तक के आय-व्यय निरीक्षण का कार्य भारत सरकार के आडिट विभाग द्वारा सम्पन्न हो गया है और प्रशासनिक दृष्टि से यह एक उपलब्धि कही जा सकती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज न केवल वेद वेदांग के पक्षपाती थे, अपितु वह आधुनिक विज्ञान और भारतीय चिकित्सा शास्त्र मे नवीन अनुसन्धानो की प्रेरणा दे रहे थे। कुछ कारणो से वह कालेज उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने अधीन कर लिया था। अब हम चाहते हैं कि इसका पूर्ण व्यय उत्तर प्रदेश सरकार वहन करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को इसे सौंप दें। यदि ऐसा हो जाए तो हम यहा आयुर्वेद की उच्चतम अध्ययनपीठ स्थापित कर, स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसन्धान का कार्य प्रारम्भ करेंगे। इससे गुरुकुल की पहचान बनेगी तथा आयुर्वेद की आधुनिक आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी। आशा है, आप हमारी यह प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

आर्य बन्धुओं !

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे राष्ट्रीय अखण्डता, समाज सेवा, मानव जाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतान्त्रिक न्याय, सामूहिक कार्यक्षमता, ज्ञान की खोज एव प्रसार जैसे उद्देश्यो की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनो के बावजूद हम आगे बढ रहे हैं। हमारे ब्रह्मचारी स्वाध्याय, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन से बल ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन में उतरें, मेरी यही शुभेच्छा है।

सम्पादकीय

रोहतक में सभा अधिकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा 15, 16, 17 मई को रोहतक में मनाई जाने वाली शताब्दी [illegible] के उपलक्ष्य में एक [illegible] तथा एक कार और [illegible] ने एक [illegible] 15-5-87 को पंजाब से चल कर आर्य [illegible] रोहतक पहुंचे। [illegible] रोहतक के बाजारों में निकाली गई [illegible] भी थी।

जालन्धर के सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, सभा महामन्त्री श्री पं. [illegible] जी शर्मा, उप कोषाध्यक्ष श्री [illegible] जी शर्मा तथा उनकी धर्मपत्नी, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री [illegible] सिंह जी एडवोकेट, श्री [illegible] जी [illegible] एडवोकेट तथा सभा कार्यालयाध्यक्ष [illegible] जी आर्य और लुधियाना से श्री [illegible] राजेन्द्र कुमार तथा उप-प्रधान, श्रीमती [illegible] आर्या तथा उप-प्रधान, श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री [illegible], श्री [illegible] जी आर्य अधिष्ठाता [illegible] और इनके अतिरिक्त श्री एम.पी. [illegible], श्री [illegible] जी गुप्त, श्री महेन्द्रपाल जी शर्मा, श्री [illegible] जी [illegible], श्री [illegible] जी सेठी तथा [illegible] धर्मपत्नी, श्री स्वामी [illegible] सिंह जी तथा उनकी धर्म पत्नी, श्री [illegible] कुमार जी तथा उनके पिता जी, स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की एक वीर [illegible] महिला। यह सभी महानुभाव विशेष रूप से इस शताब्दी में भाग लेने के लिए रोहतक गए थे। श्री ओम्प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी भटिण्डा से और श्री रामकृष्ण जी महाशय वानप्रस्थी दीनानगर से भी रोहतक पहुंचे हुए थे। पंजाब से पधारे हुए सभी महानुभावों के ठहरने तथा भोजन आदि का सारा प्रबन्ध हरियाणा सभा के अधिकारियों ने रोहतक के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री रामभेहर जी एडवोकेट की कोठी में किया हुआ था। हरियाणा सभा के अधिकारियों के अतिरिक्त श्री रामभेहर जी ने भी पंजाब से आये हुए सभी अधिकारियों का भव्य स्वागत किया। ठहरने तथा भोजन आदि की बड़ी उत्तम व्यवस्था की थी।

सभी आर्य बन्धु शनिवार 16-5-87 को रोहतक के प्रसिद्ध स्थानों को देखने के लिए गए। महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी रोहतक में बनी भव्य [illegible] और यूनिवर्सिटी के गेट के समीप बनी महर्षि दयानन्द की 9 फुट ऊंची भव्य मूर्ति को देख कर सभी सदस्य बड़े प्रभावित हुए। भारत में शायद यह पहली यूनिवर्सिटी होगी जिसमें इस प्रकार की भव्य [illegible] बनी हो। श्री राम भेहर जी एडवोकेट ने बताया कि इसने हरियाणा के सभी गुरुकुलों को भी इस महाविद्यालय के साथ जोड़ दिया है। हरियाणा में गुरुकुलों का जाल बिछा हुआ है। लगभग 16 गुरुकुल इस समय हरियाणा में कार्य कर रहे हैं, इसमें कन्या गुरुकुलों की संख्या अधिक होती जा रही है। वहां के लोग बड़े उत्साह से अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ने भेजते हैं। छोटी-2 कन्याएं और छोटे-2 बालक जब वेद मन्त्रों का पाठ करते हैं तो देखने योग्य होते हैं। अब इन सभी गुरुकुलों को यूनिवर्सिटी के साथ जोड़ दिया गया है। शास्त्री आदि की कक्षाओं में आर्य पाठ विधि को [illegible] यूनिवर्सिटी ने [illegible] की है। इसके अतिरिक्त कई और दर्शनीय स्थानों को भी अधिकारी महानुभाव देखने गए। हरियाणा सभा, पंजाब सभा के विभाजन के पश्चात् अस्तित्व में आई थी। 1975 से यह सभा कार्य कर रही है। उसके पश्चात् यह पहला अवसर है जब पंजाब सभा के अधिकारी इतनी संख्या में एक ऐसे समारोह में सम्मिलित हुए जो हरियाणा सभा के द्वारा किया जा रहा था। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने 16 हजार रुपये का ड्राफ्ट हरियाणा सभा को [illegible] के रूप में भेंट किया। पंजाब से गए हुए एक सभा अधिकारी ने अपने पास से ही [illegible] रूप से 11 हजार रुपया और देने की घोषणा की, [illegible]। इस घोषणा का करतल ध्वनि से हरियाणा के लोगों ने स्वागत किया। आशा की जाती है कि जो इस शताब्दी के अवसर पर दोनों सभाओं के अधिकारियों ने एक दूसरे के साथ स्नेह प्रकट किया है यह स्नेह [illegible] रहेगा। इस हरियाणा सभा के अधिकारियों और विशेष रूप से प्रो. शेर सिंह जी और श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज का [illegible] पंजाब से आए सभी अधिकारियों का [illegible] स्वागत किया। [illegible] समारोह में सम्मिलित होने वाले सभी अधिकारी व सदस्य हरियाणा में आर्य [illegible] के उत्साह को देख कर बड़े प्रभावित हुए। क्योंकि इस सम्मेलन में [illegible] लोग [illegible] से आए हुए थे। हरियाणा ही एक ऐसा प्रदेश है जहां आर्य समाज देहात में भी घर-2 पहुंचा हुआ है। आशा की जाती है कि यह और अधिक [illegible]।

—सह-सम्पादक

हरियाणा शताब्दी महा सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने 15, 16, 17 मई को दयानन्द मठ रोहतक में [illegible] शताब्दी समारोह मनाया। 11 मई से [illegible] यज्ञ के साथ यह समारोह आरम्भ हुआ यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज और उद्गाता का [illegible] के और वेद पाठी गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के विद्यार्थी थे। इस यज्ञ की पूर्णाहुति 17-5-87 रविवार को प्रातः 10 बजे हुई। इस यज्ञ में सैंकड़ो आर्य बन्धुओं तथा बहनों ने आहुतियां दी। श्री स्वामी दीक्षानन्द जी ने यजमानों को आशीर्वाद दिया।

मुख्य समारोह का 15-5-87 को प्रातः 9 बजे शुभारम्भ श्री स्वामी आनन्दबोध जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। ध्वज गीत के बाद स्वामी आनन्दबोध जी ने राष्ट्रीय एकता के लिए महान् सन्देश दिया। दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) के अध्यक्ष वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने इस शताब्दी समारोह का उद्घाटन करते प्रभावशाली प्रवचन दिया। इसके पश्चात वेद सम्मेलन हुआ जिस में अनेकों विद्वानों ने वेद के महत्व पर अपने विचार दिए।

सायंकाल 15-5-87 को ही रोहतक के बाजारो मे एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें हरियाणा के साथ-2 दिल्ली, राजस्थान, पंजाब और उत्तर प्रदेश से आए हुए हजारो स्त्री, पुरुषो ने भाग लिया। इसमें अधिक आर्य बन्धु हरियाणा से सम्मिलित हुए। हरियाणा मे चल रहे लगभग 16 (कन्याओ तथा बालको) गुरुकुलो के तथा कई आर्य स्कूलो के छात्र छात्राओ ने भी भाग लिया। सभी आर्य समाजो से आए हुए आर्य बन्धु तथा संस्थाओ के विद्यार्थी अपने-अपने मोटो तथा ओ३म के ध्वज हाथो में उठाए हुए चल रहे थे। कई ट्रैक्टर ट्रालियों पर सभा के भजनोपदेशक ढोलक बाजे के साथ स्थान पर रुक-रुक कर प्रभावशाली भजन गाते हुए चल रहे थे। आर्य वीर दल के विद्यार्थी लाठी तथा तलवारो के अपने प्रभावशाली प्रदर्शन कर रहे थे, लोगो में बड़ा उत्साह था, ऐसा लगता था कि सारा रोहतक नगर आर्य समाज के रंग में रंगा हुआ है। रोहतक नगर की जनता ने भी स्वागत गेट बना कर, स्थान 2 पर जल का प्रबन्ध करके तथा कुछ खाद्य पदार्थ बाट कर शोभा यात्रा में चल रहे स्त्री पुरुषो का स्वागत किया। रात्रि में एक बृहद स्वदेशी सम्मेलन हुआ। जिसमें स्वदेश प्रियता और स्वदेश में बनी वस्तुओ के प्रयोग पर बल देते हुए आजादी से पूर्व के इतिहास का वर्णन किया गया।

आर्य युवक सम्मेलन मे 16-5-87 को जिसका संचालन होनहार युवक डा. योगानन्द जी कर रहे थे। श्री प्रो. शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, ओजस्वी युवक श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, युवक नेता श्री धर्मपाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, युवक सन्यासी स्वामी कर्मपाल जी प्रधान सर्वखाप पंचायत (हरियाणा), तथा अन्य कई वक्ताओं ने युवकों में बढ़ रहे नशीले पदार्थों के प्रयोग पर चिन्ता प्रकट की। शराब तथा अन्य नशो से होने वाली हानियो का चित्र खींचते हुए समाज पर उसके पड़े हुए दुष्परिणाम का वर्णन किया। इसको रोकने के लिए प्रभावशाली पग उठाने पर बल दिया।

साथ मातृ शक्ति सम्मेलन हुआ जिसमें कई बहनो ने महिलाओं की ज्वलन्त समस्याओ पर विचार किया। रात्रि को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन श्री स्वामी आनन्दबोध जी प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे हुआ। जिसमें प्रो शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री छोटूसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री स. दरबारा सिंह जी, भू. पू. मुख्यमन्त्री पंजाब, श्री रामभेहर एडवोकेट रोहतक, श्री वीरेन्द्र पाल जी उत्तर प्रदेश, श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु (पंजाब) तथा अन्य कई वक्ताओ ने राष्ट्रीय एकता पर बल दिया।

श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान ने राष्ट्रीय एकता पर बोलते हुए जहां राष्ट्र रक्षा के उपायों पर प्रकाश डाला। वहां पंजाब की वर्तमान स्थिति का भी वर्णन किया। इसी अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी ने 16 हजार रुपये का ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से भेंट किया। पंजाब के एक प्रसिद्ध दानी ने 11 हजार रुपया और हरियाणा सभा को देने की घोषणा की।

इस प्रकार 17-5-87 को वहां चल रहे बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में प्रातः 10 बजे हुई वहां इसके बाद अभिनन्दन समारोह तथा शिक्षा सम्मेलन हुए। हरियाणा के लोगों ने इन सभी कार्यक्रमो मे बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस समारोह से हरियाणा के लोगो में नयी जागृति आई। हरियाणा सभा के सभी अधिकारी बधाई के पात्र हैं जिनके अथक परिश्रम से यह सम्मेलन हर दृष्टि से सफल रहा।

—सह-सम्पादक

स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन चरित्र तथा व्यक्तित्व का

मूल्यांकन परक साहित्य—

लेखक—डा. भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

उन्नीसवी शताब्दी के भारतीय धार्मिक तथा सांस्कृतिक नवजागरण के उन्नायक तथा पुरोधा दयानन्द सरस्वती के विचारो और कार्यों का प्रभाव स्वय उनके जीवन काल में ही लक्षित होने लगा था। यह प्रभाव केवल भारत तक ही सीमित रहा हो, ऐसी बात नही थी, पश्चिमी देशो मे भी उनके विचारो की चर्चा होने लगी थी, तथा उनका मूल्यांकन भी आरम्भ हो गया था। दयानन्द की कीर्ति कौमुदी विगत शताब्दी मे स्वदेश की सीमा को लांघ कर यूरोप तथा अमेरिका तक व्याप्त हो चुकी थी। फलत देश और विदेश के अनेक प्रबुद्ध व्यक्ति न केवल उनकी विचार सुरभि से ही अपने मन-मन्दिरो को सुवासित करना चाहते थे, अपितु उनकी यह भी इच्छा थी कि स्वामी दयानन्द की जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावो से भी परिचय प्राप्त करें।

दयानन्द सरस्वती वैदिक जीवन प्रणाली मे स्वीकृत वर्णाश्रम विधान को मान्यता देते थे। वे स्वय चतुर्थाश्रमी सन्यासी थे, अत उस आश्रम की स्वीकृत मर्यादाओ के अनुसार उन्होंने अपने जन्म स्थान, माता पिता तथा इसी प्रकार की अन्य बातो को बताने मे सदा ही सकोच किया। फिर भी उनके जीवन मे एकाधिक प्रसग ऐसे भी आए, जबकि उन्हे अपने विषय में कतिपय तथ्यों का उद्घाटन उस समय किया जब वे पूना (महाराष्ट्र) मे महादेव गोविन्द रानाडे के अनुरोध पर एक व्याख्यान माला प्रस्तुत कर रहे थे। इस माला के अंतिम भाषण मे उन्होने 4 अगस्त 1875 को अपने जीवन का वृतान्त श्रोताओ के समक्ष प्रस्तुत किया। इस आत्म-कथा मे दयानन्द ने जन्म से लेकर काशी की पण्डित मण्डली से हुए अपने शास्त्रार्थ (16 नवम्बर 1869 ई) तक की घटनाओ का किञ्चित विस्तारपूर्वक उल्लेख किया।

स्वदेश वासियो की ही भांति अन्य देशवासी भी दयानन्द के जीवन तथा विचारो से परिचित होने के लिए उत्सुक थे। उनके द्वारा सस्थापित आर्य समाज की कीर्तिपताका को अल्पकाल मे ही सबल फहराते देख कर अमेरिका में स्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी के सचालको का ध्यान भी इस महापुरुष की ओर आकृष्ट हुआ। कालान्तर में जब इस सस्था का मुख पत्र "थियोसोफिस्ट" बम्बई से प्रकाशित होने लगा, तो पत्र सम्पादक के आग्रह पर स्वामी जी अपने जीवन वृत्त को उसमे धारावाही रूप में प्रकाशित कराने के लिए राजी हो गए। यद्यपि इस पत्र में छपा यह जीवन वृतान्त तो पूना में दिए गए व्याख्यान में वर्णित घटनाओ से भी सक्षिप्त है, वह नर्मदा स्रोत गवेषण काल तक समाप्त होता है तथापि लिखित रूप में उपस्थित होने के कारण उनके जीवन-प्रभात को प्रामाणिक रूप मे चित्रित करने के कारण इस विवरण का महत्व निर्विवाद है।

स्वामी दयानन्द के जीवनकाल मे हो उनका इतिवृत्त लिखने का एक प्रयत्न तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की शिक्षा सेवा के अधिकारी प गोपाल राव हरि द्वारा किया गया। ये महानुभाव मूलत महाराष्ट्र वासी थे तथा फर्रुखाबाद मे स्कूलो के सब डिप्टी इन्सपैक्टर के पद पर नियुक्त होकर इस नगर मे आए थे, 1937 वि, में इन्होने 'दयानन्दविजयार्क' शीर्षक से स्वामी जी के जीवन वृतान्त का प्रणयन आरम्भ किया। ग्रन्थ का प्रथम खण्ड 1938 वि मे समाप्त हुआ। उसमें चरितनायक के सक्षिप्त जीवन वृत्त के पश्चात उनके कुछ शास्त्रार्थों का विवरण दिया गया है, जो पौराणिक, जैन, मुसलमान तथा ईसाई विद्वानो से हुए थे। द्वितीय खण्ड मे दयानन्द कृत वेद भाष्य विषयक चर्चाओ और आलोचनाओ की समीक्षा के पश्चात् उनके द्वारा किए गए धर्म प्रचार का विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह खण्ड भी 1938 वि मे प्रकाशित हो गया था। ग्रन्थ का तृतीय और अन्तिम खण्ड यद्यपि 1942 वि (स्वामी जी के निधन के दो वर्ष पश्चात्) में ही लिखा जा चुका था, किन्तु इसका प्रकाशन 1944 वि मे हुआ। यह खण्ड, प्रथम दो खण्डो से आकार में बड़ा है तथा इसमे स्वामी दयानन्द द्वारा किए गए गोरक्षा आन्दोलन, थियोसोफिस्टों से उनके मतभेद, मुन्शी इन्द्रमणि का मुकद्दमा तथा उससे उत्पन्न विवाद, जयपुर, शाहपुरा तथा जोधपुर की यात्रा, अजमेर में उनके देहावसान आदि घटनाओं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। स्वामी जी के देहावसान के पश्चात् तत्कालीन पत्रिकाओ मे जो शोकोद्गार तथा श्रद्धांजलियां प्रकाशित हुई थीं, उनका उल्लेख करते हुए ग्रन्थकार ने स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के प्रथम अधिवेशन की कार्यवाही को भी उद्धृत किया है। वस्तुत इस ग्रन्थ में स्वामी जी की जीवनी विषयक आधारभूत सामग्री को प्रथम बार प्रस्तुत किया गया था, जिसे उपादान रूप मे परवर्ती जीवनी लेखको ने प्रयुक्त किया है। इस मे तत्कालीन पत्रिकाओं के उद्धरणों, अनेक लघु पुस्तिकाओ, प्रत्यक्षदर्शियों के कथनो तथा स्वामी जी के पत्र व्यवहार को भी प्रचुर मात्रा मे उद्धृत किया गया है।

दिसम्बर 1885 मे परोपकारिणी सभा के द्वितीय अधिवेशन में एक प्रस्ताव स्वीकार कर यह निश्चय किया गया कि सभा के उपमन्त्री प मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या स्वामी जी का विशद, तथ्यपूर्ण जीवन चरित लिखें। देशवासियो से अपील की गई कि वे स्वामी जी के सम्बन्ध मे जो कुछ जानकारी रखते हैं, पण्ड्या जी को भेज दें। परन्तु जीवन चरित लेखन का यह प्रयास क्रियान्वित नही हो सका, शायद पण्ड्या जी का अनुत्साह ही उसमें कारण रहा हो। दयानन्द सरस्वती के परलोक गमन के पाच वर्ष पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपनी जुलाई 1888 को सम्पन्न हुई अन्तरग सभा की बैठक मे यह निश्चय किया कि प लेखराम आर्य पथिक को स्वामी जी की प्रामाणिक जीवनी लिखने के लिए नियुक्त किया जाए। नवम्बर 1888 से आर्य पथिक ने जीवनी की आधारभूत सामग्री का सग्रह प्रारम्भ किया। 1892 ई. तक देश के विभिन्न भागों में घूम कर उन्होंने उन सहस्रो व्यक्तियों से सम्पर्क किया, जिन्होंने स्वामी जी को प्रत्यक्ष देखा था तथा उनके उपदेश श्रवण का अवसर भी प्राप्त किया था। ऐसे व्यक्तियों के वक्तव्यों को उन्होंने सिलसिलेवार लिपिबद्ध किया। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में प्रकाशित विभिन्न समाचारों, सूचनाओं तथा विज्ञप्तियों का भी उन्होंने संग्रह किया। यह निश्चित है कि यदि प लेखराम असमय में ही काल कवलित नहीं हुए होते तो स्वामी जी का एक प्रामाणिक पूर्ण प्रामाणिक जीवन-चरित हमें उन्हीं की लेखनी से लिखा हुआ प्राप्त होता। किन्तु दुर्भाग्य से इस कार्य को समाप्त करने से पूर्व ही, 6 मार्च 1897 ई को एक धर्मान्ध के घातक प्रहार से आहत होकर वे परलोकगामी हुए। यह एक संयोग ही था, कि प लेखराम जिस समय स्वामी जी के जीवन चरित के लेखन का कार्य कर रहे थे, उसी समय उन पर छूरी का प्रहार हुआ। दयानन्द के विचारों और आदर्शों से अनुप्राणित आर्य पथिक के रक्त से वह पाण्डुलिपि सिञ्चित हो गई, जिसमें वे अपने गुरु और आचार्य के जीवन की कथा लिख रहे थे।

21 माघ 1987 को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने एक प्रस्ताव स्वीकार कर प लेखराम द्वारा अधूरे छोड़ गए काम को पूरा करने का दायित्व प आत्माराम अमृतसरी को सौंपा। प आत्माराम ने प लेखराम द्वारा लिखित अपूर्ण जीवनी तथा सकलित सामग्री को आद्योपान्त देखकर उसे एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया। अन्तत 2 अक्तूबर 1897 को मुन्शीराम जिज्ञासु (स्वामी श्रद्धानन्द) लिखित भूमिका के साथ यह ग्रन्थ उर्दू भाषा मे प्रकाशित हुआ।

प लेखराम द्वारा सग्रहीत जीवन चरित अनेक दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है। यह एक प्रकार से दयानन्द सरस्वती के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आने वाले तथा उनके जीवन की विभिन्न घटनाओ से सीधा परिचय रखने वाले लोगो के बयानों पर आधारित है। यदि एक ही घटना या स्थिति का वर्णन भिन्न भिन्न व्यक्तियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से किया तो भी प लेखराम ने उन सभी लोगों के वक्तव्यों को एक ही स्थान पर सग्रहीत कर लिया था। शायद वे स्वतन्त्र रूप से कोई निष्कर्ष भी निकालते अथवा उन लोगो द्वारा वर्णित घटनाओ का कोई समन्वित रूप भी प्रस्तुत करते, परन्तु यह कार्य पूरा होने के पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। अत पाठकों को दयानन्द का यह जीवन चरित प्रत्यक्षदर्शियो के द्वारा बताए गए विवरणो का एक सग्रह सा प्रतीत होता है। निश्चय ही यह सामग्री सग्रह का एक प्रयास मात्र था, साहित्यिक शैली में लिखी गई जीवनी के रूप की इसमें कल्पना भी नहीं की गई है।

(क्रमश)

वेद और परमात्मा

लेखक—श्री कर्मसिंह ठाकुर, एम. ए. बी. ए. एम. एस
राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, सारन (किन्नौर) 172,107

(10 मई से आगे)

अग्नि : 'निरुक्त' के अनुसार अग्नि अग्रणी है, यज्ञों में प्रथम प्रयुक्त होता है और वस्तुओं को आत्मसात् कर लेता है। अग्नि परमात्मा है। 'अमरकोष' में अग्नि के वैश्वानर, वह्नि, जातवेदा, पावक, अनल, हिरण्यरेता:, सप्तार्चि, आदि चौंतीस नाम हैं। यह बल का पुत्र है। जल के गर्भ में प्राणों को धारण करता है। सूर्य, जल, पत्थर, वनस्पति और वन अग्नि के स्रोत हैं।

वरुण अग्नि के भ्राता हैं। अग्नि सुवर्ण-रूप है। 'अग्नि पुराण' के अनुसार अग्नि का विवाह स्वाहा से हुआ जिससे तीन पुत्र पावक, पवमान और शुचि हैं। सप्त समिधा, सप्त जिह्वा, सप्त ऋषि, सप्त छन्द, सप्त होता, सप्त अग्निष्टोम आदि सप्त चिति, ये अग्नि के उत्पत्ति-स्थान हैं। घृत उसे उत्पन्न करता है।

अग्नि उषाकाल में मनुष्यों को जगाने वाला, औषधियों को बढ़ाने वाला, अन्तरिक्ष और आकाश को धारण करने वाला रोगनाशक, बुद्धिप्रेरक, उषा का प्रकाशक एवं सूर्य मण्डल का रक्षक है। यह पूर्व दिशा का नेता है और देवयान मार्ग की प्राप्ति कराता है। अग्नि सुषुम्ना और मूर्धा में व्याप्त है। वह संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, वत्सर आदि का जनक है।

अग्नि यज्ञ में समिधा से प्रदीप्त होता है। देवों को हवि द्वारा तृप्त करता है। वह यजमान को सब कुछ देता है। वह स्वयं प्रकाशित है। वह सहस्राक्ष है। वैश्वानर के मूर्ध-रूप हैं। अग्नि को मातरिश्वा सूर्यलोक से भूलोक तक लाता है।

शरीर रक्षक अग्नि शरीर में भूताग्नि, धात्वग्नि, और जठराग्नि के रूप में रहता है। अन्न में अग्नि, आज्य, औषधि और सोम के रूप में रहता है। इसका यजमान का हृदय है। स्वाहा अग्नि का आयुध है। गार्हपत्याग्नि कुत्सित जीवन से रक्षा करता है। दक्षिणाग्नि पशुओं का हित करने वाला और पुष्टिवर्धक है। यह जीवात्मा का दर्शन कराने वाला है। अग्नि तनूनपात है - कभी नष्ट न होने वाला। यह पाप-पुण्य को पृथक करने वाला है। तीन आहुतियां अग्नि ही हैं। वही सूत्र है, वही ब्रह्मपद। वह उत्कृष्ट प्राणों पर आधिपत्य करता है।

सूर्य : विराट् का चक्षु सूर्य सुजानी देवता है। यह प्रमुख आदित्य है। वह समस्त स्थावर-जंगमों में व्याप्त है और स्थावर तथा जंगम का आत्मा है। 'अमरकोष' में सूर्य के सत्ताईस नाम हैं। पुराणों में बारह आदित्यों के नाम मिलते हैं। वह सात रश्मियों से संसार का स्पर्श करता है और देवों का चक्षु रूप है। उसकी दीप्ति शरीर में प्राण रूप में स्थित है। सूर्य आकाश में दीप्तिमान् अग्नि का मुख है। सूर्य की असंख्य किरणों में से 400 जल बरसाती हैं, और 30 शीत उत्पन्न करती हैं। रश्मियां मूर्य को ब्रह्मसमुद्र से सुवर्लोक तक लाती हैं।

सूर्य प्राणियों को चेतना प्रदान करता है। वह अन्धकार का नाश करता है। वह तीन लोकों और सात समुद्रों का प्रकाशक है। वर्षोंस सूर्य अमरत्वप्रदाता सोम को प्रकट करता है। सूर्य वर्षा द्वारा प्राणियों का पोषण करता है। वह संवत्सर है और ऋतुओं द्वारा संसार की रक्षा करता है।

सूर्य का विक्रमण एक से दो, दो से तीन और तीन से छह पादों में होता है। वह सब देवों को अपने में समाहित कर लेता है। सूर्य गायत्री मन्त्र से प्रबुद्ध होता है। सवितृ रूप में वह वृष्टि का प्रेरक है। वह रोगों को दूर करता है। उदीयमान सूर्य एकदेशोदित होने पर विराट, अर्धोदित होने पर स्वराट्, और पूर्णोदित होने पर सम्राट कहलाता है। उसने षडर छन्द से ऋतुओं को जीत लिया है। उससे यज्ञ, मेघ, अन्न, आत्मा, देव, वेदों, आदि की उत्पत्ति हुई है। वह साधक को परम लोक में प्रतिष्ठित करता है।

यम : यम दक्षिण दिशा के देवों का नेता है। वह यम लोक में वरुण के संग रहता है। 'अमरकोष' में यम के चौदह नाम आते हैं। वह काल रूप का देवता है। उसकी माता सरण्यु एवं पिता सूर्य हैं। वह प्राणु प्रदाता है। वह विराट्, स्वराट्, आदि शरीरों द्वारा मृतक को पुण्य लोक की प्राप्ति कराता है। स्वाहा से पितृ प्रसन्न होते हैं, तो स्वधा से यम। यह अंगिरा-पिताओं की सहायता से वृद्धि को प्राप्त होता है।

मातरिश्वा मरुदि-रूप, अर्थात्, मरुद्गण मध्यस्थानी देवता है। मरुत इन्द्र के सखा हैं। परमाणुओं की चुम्बकीय शक्ति (मैग्नेटिक फोर्स) मरुत है। 'अमरकोष' में इन के बीस नाम दिए हैं। वे इन्द्र के तेज को बढ़ाते हैं। इन का पिता रुद्र, और माता पृथिवी है। वे बादलों को रचते हैं, उनका संचालन करते हैं। वे मेघों को छिन्न भिन्न कर देते हैं। वे लोकों को अपनी गर्जना से कम्पित करते हैं।

मरुतों की संख्या उनचास है। वे मन के समान गतिशील हैं। वे जलधारा द्वारा आकाश को आच्छादित करते हैं। वे ग्रह और तारों को धारण करते हैं। वे पृथिवी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। वे अन्तरिक्ष के उपद्रवों से रक्षा करने वाले हैं। वे मनुष्यों को नीरोग करते हैं।

निष्कर्ष परमात्मा एक है पर भिन्न भिन्न रूपों में अभिव्यक्त है। प्राणियों में स्थित होने पर वह भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। मानवता के विकास के लिए हमारा कर्तव्य है कि परमात्मा की सर्वव्यापकता को अन्त करण में अनुभव करें। सुरदुर्लभ मानवजीवन का यही परम लक्ष्य है।

हवन सम्बन्धी सामान लागत मात्र मूल्य पर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर से अब हवन सम्बन्धी सभी सामान लागत मात्र मूल्य पर हर समय उपलब्ध है जैसे—

महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार बना हवन कुण्ड, आठ इन्च साईज का मूल्य 35रु तथा बारह इन्च का मूल्य 50रु.हवन सामग्री बढ़िया 7 50 रु किलो। यज्ञ पात्र, धूप, अगरबत्ती, यज्ञोपवीत तथा ओ३म् के ध्वज।

—सभा महामन्त्री

डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति दिल्ली से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपलों से निवेदन

आशा है कि आपको मेरा 13 अप्रैल 1987 का परिपत्र स —7 | 87 प्रकाशन 23509 मिला होगा जिसमें मैंने आपसे प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करने का अनुरोध किया था।

उसी क्रम में मेरा आपसे यह भी अनुरोध है कि आप अपने छात्रों को किसी के अभिवादन के लिए "नमस्ते" शब्द का प्रयोग करने की प्रेरणा दें और जहां तक सम्भव हो वे नेकटाई का प्रयोग न करें। कारण यह है कि हमारी ओर से निरन्तर यही घोषणा होती है कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के वातावरण में हम अपने पब्लिक स्कूलों में भी शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं। अत यह आवश्यक है कि हमारी संस्थाओं का आचरण अपने उद्देश्य एवं घोषणा के अनुरूप हो और हमारे छात्रों की अभिवादन पद्धति भारतीय ही हो। वेद के आधार पर जिस "नमस्ते" का आर्य समाज ने प्रचार किया था अब विदेशों में भी उसका प्रचलन होने लगा है। अत उसके स्थान पर अपने स्कूलों में पाश्चात्य अभिवादन पद्धति को ग्रहण करना और नेकटाई का प्रयोग कराया जाना वाञ्छनीय नहीं है।

कृपया मेरे 13 अप्रैल 1987 के पूर्व परिपत्र को और इस परिपत्र को अपने अध्यापकों एवं अन्य स्टाफ तथा छात्रों की जानकारी में भी ला दें।

—दरबारी लाल
संगठन सचिव

सम्पादक के नाम पत्र

बहुसंख्यक हिन्दू समाज को समाप्त करने के लिए नयी शिक्षा नीति से संस्कृत को हटा कर उसके हितों पर कुठाराघात।

मान्यवर सादर नमस्ते !

मैं आपके लोकप्रिय पत्र द्वारा सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि नयी शिक्षा नीति के जो हमारी सरकार ने बनायी है उस में संस्कृत भाषा का अध्ययन शामिल नहीं किया गया है यह एक प्रकार से हिन्दू समाज के हितो पर कुठाराघात ही कहा जा सकता है वैसे तो हिन्दू हितो पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के इन 40 सालों में ऐसा कौन सा कुठाराघात नही जो न किया गया हो किन्तु यह कुठाराघात सबसे अधिक खतरनाक और भयंकर है। अतः इस पर सरकार पुनर्विचार कर संस्कृत को जो विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है और विश्व की भाषाओ की जननी है उसका अध्ययन नयी शिक्षा नीति मे अनिवार्य अंग बनाया जावे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के इन 30 सालो के बाद भी आज तक इस देश में अंग्रेजो के शासनकाल मे जो ईसाई भाष्य पादरी मैकाले ने यहा शिक्षा प्रणाली लागू कर पाठय क्रम दिया था आज तक वही सम-भव चला आ रहा है। यही कारण है कि हम अंग्रेजो की दासता से तो मुक्त हो गए किन्तु अंग्रेजियत की दासता मे दिन प्रतिदिन जकड़ते जा रहे हैं जितना प्रभाव अंग्रेजी का उनके शासनकाल मे था उससे अधिक अब हो रहा है।

हमारी सरकार ने जो अभी हाल ही मे नयी शिक्षा नीति की घोषणा की है यह तो और भी दूरदर्शितापूर्ण है और राष्ट्र के बहुसंख्यक हिन्दू समाज के हितो पर आज तक होने वाले सभी कुठाराघातो से अधिक भारी वज्रपात है। इस नीति के अनुसार अब संस्कृत की पढ़ाई जो थोड़ी बहुत हमारे स्कूलों मे होती थी उसकी अनिवार्यता समाप्त कर दी है और उसे कोई स्थान नहीं दिया गया है। यह हिन्दू समाज के साथ एक खिलवाड़ ही कही जा सकती है।

शायद जिन महानुभावो ने यह नीति बनायी है वे यह नहीं जानते कि संस्कृत यहा हमारे देश की ही नहीं अपितु संसार की प्राचीन भाषा है और क्योंकि हमारे वेद तथा अन्य अधिकांश ग्रन्थ भी जो हमारी संस्कृति, सभ्यता तथा अतीत के गौरव है और स्रोत हैं वे भी सब इसी भाषा मे हैं। वहीं यह संस्कृत भाषा विश्व की लगभग सभी भाषाओं की जननी भी है क्योंकि इन भाषाओं मे काफी शब्दों का निर्माण संस्कृत के आधार पर ही हुआ है। उदाहरणार्थ संस्कृत के शब्द "मातृ" से ही अंग्रेजी का शब्द "मदर" बनाया गया है, संस्कृत के ही शब्द "पितृ" से अंग्रेजी का "फादर" और फारसी का "पिदर" शब्द तथा संस्कृत के ही "भ्रातृ" शब्द से ही अंग्रेजी का "ब्रदर" तथा फारसी का "बिरादर" शब्द लिए गए हैं। इसी प्रकार अनेको शब्दों विश्व की भाषाओ में संस्कृत भाषा से ही लिए गए हैं।

हमारे देश की प्रादेशिक भाषाओं में तो लगभग सभी में इसके शब्दों का काफी मात्रा में समावेश पाया जाता है और खास-तौर पर दक्षिण में तमिल तेलगु तथा कन्नड़ भाषाओं में तो इसका बाहुल्य है। यही नहीं विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद तथा अन्य तीनों वेद तथा हमारे अन्य सभी धार्मिक प्रेरणा के स्रोत ग्रन्थ भी इसी भाषा मे हैं जिन से हम अपनी संस्कृति, सभ्यता, अतीत के गौरव की जानकारी प्राप्त करते हैं। हिन्दू समाज के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कार, कथा इत्यादि भी संस्कृत भाषा के मन्त्रो तथा श्लोको से ही होते हैं।

इसलिए यदि नयी शिक्षा नीति मे संस्कृत का अध्ययन शामिल नहीं किया गया तो आगे आने वाली पीढ़ी में कोई भी संस्कृत जानने वाला विद्वान नही मिलेगा और हम अपनी धार्मिक प्रेरणा के तथा संस्कृति, सभ्यता और अतीत के गौरव के प्रेरणा स्रोतो का भी अध्ययन नहीं कर सकेंगे और वर्तमान मे जो हमारे यहा पाश्चात्य सभ्यता पनप रही है हमारा हिन्दू समाज अपनी संस्कृति से कट कर इसमे ही समाविष्ट हो जावे और सदा के लिए अपना अस्तित्व समाप्त कर बैठे। यह एक ऐसा सिलसिला षड़यन्त्र है जिससे हिन्दू समाज के हितो पर यह एक ऐसी अन्तिम करारी चोट है जो इस समाज को अवश्य ही समाप्त करने मे सफल हो जाएगी।

अब समय है जबकि देश का बहुसंख्यक हिन्दू समाज यदि अपने अस्तित्व को बचाना चाहता है तो वह एक आवाज से संगठित हो कर इसके विरुद्ध आवाज उठावे और सरकार को बाध्य कर दे कि वह संस्कृत के अध्ययन को नयी शिक्षा नीति में अनिवार्य स्वरूप स्थान करने के लिए विवश हो जाए। अभी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी इस सम्बन्ध में एक संस्कृत समिति का गठन किया हम सभी को उसका तन, मन और धन से समर्थन करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो इस के लिए देश व्यापी आन्दोलन किया जाए और यदि बलिदान की आवश्यकता पड़े तो हम लोगों को बलिदान देने से भी पीछे नहीं रहना चाहिए और बलिदान देने की पद्धति भी हमें दक्षिण के लोगो की तरह ही अपनानी चाहिए जिस प्रकार से हिन्दी के विरोध में या अपनी भाषा के आधार पर प्रदेश के गठन के लिए सड़क के चौराहे पर खड़े हो कर तेल छिड़क कर आत्मदाह करते है यही नीति अपनानी होगी यह सरकार तभी झुकती है।

आशा है आप मेरे इस पत्र को अवश्य ही प्रकाशित करने की कृपा कर अनुगृहीत करेंगे।

भवदीय

—विशन स्वरूप गोयल

आर्य समाज दुगरी [illegible] लुधियाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 9,10 मई शनिवार, रविवार को बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ।

9-5-87 शनिवार प्रातः 7-30 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ, [illegible] श्री राजकुमार शास्त्री [illegible] श्री [illegible] सम्पन्न [illegible] के कुशल [illegible] श्री कृपाराम आर्य के सुरीले भजन हुए, और सभा के माननीय महोपदेशक श्री पं. [illegible] की कार्यान्वयता का अमृत उपदेश हुआ। जनता पर काफी प्रभाव पड़ा। सायं 4 बजे से 7 बजे तक यज्ञ, भजन तथा आर्य समाज के प्रचार को बढ़ाने के लिये विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। 10-5-87 रविवार प्रातः 7-30 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के यजमान श्री [illegible] सपरिवार तथा चार और यजमान थे। यज्ञ की पूर्ण आहुति, यजमानो को आशीर्वाद के पश्चात श्री रामनाथ शास्त्री, श्रीराम जी तथा सुश्री-[illegible] के भजनों के कुमार गीत हुए। इसके बाद लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री [illegible] जी मल्होत्रा रिटायर्ड प्रिंसिपल ने जयकारो के मध्य में ओ३म् का ध्वज लहराया। नगर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियो और जिला आर्य सभा के अधिकारियो और विभिन्न संस्थाओ के नेताओ ने उन्हे हारों से लाद दिया। सभी आर्य समाजो की ओर से आदरणीय माता श्री [illegible] वानप्रस्थ ने उन्हें आशीर्वाद दिया, तत्पश्चात् [illegible] शास्त्री का उपदेश हुआ। आदरणीय बहन सुनिता की [illegible] सरकारी स्कूल की [illegible] ने गरीब छात्रो को पुस्तकें वितरण की इसके बाद सम्मान समारोह की कार्यवाही आरम्भ हुई, [illegible] की अध्यक्षता में समारोह की अध्यक्षता के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री [illegible] कुमार एडवोकेट का नाम पेश किया जिला आर्य सभा के प्रधान श्री [illegible] जी वर्मा ने अनुमोदन किया प्रधान का आसन ग्रहण करने के पश्चात् लुधियाना की सब आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पुष्प [illegible] द्वारा [illegible] का स्वागत किया। [illegible] की उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व प्रसिद्ध आर्य नेता [illegible] श्री [illegible] लाल जी [illegible] प्रतिनिधि सभा पंजाब का स्वागत करते हुए उन्हें [illegible] किया [illegible] के बीच [illegible] किया, [illegible] सारा [illegible] भरे हुए थे और जनता बाहर सड़क पर खड़ी थी।

श्री कृष्ण लाल जी प्रधान देव [illegible], श्री [illegible] शर्मा, डा. [illegible], पं. [illegible] जी, [illegible] कुमार, पं. [illegible] लाल जी ने अपने भाषणों में श्री [illegible] जी की आर्य समाज की महान सेवा के बारे में तथा [illegible] कुमार के कार्यों में उनकी सेवाओं के लिए प्रशंसा की।

श्री [illegible] जी गुप्ता एम. एल. ए. ने अपने भाषण में आर्य समाज के इतिहास, शिक्षा प्रचार तथा दूसरे अच्छे कार्यों के लिए भरपूर प्रशंसा की तथा श्री [illegible] जी आर्य रत्न को उनकी आर्य समाज के प्रति सेवाओं के लिए बधाई दी। समारोह के प्रधान श्री [illegible] कुमार जी वर्मा एडवोकेट ने अपने भाषण में कहा कि श्री [illegible] जी के साथ मिलकर आर्य समाज का कार्य किया है, वस्तुतः वह आर्य समाज के दीवाने हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में लगा दिया है प्रभु उन्हें इससे भी अधिक सेवा करने की शक्ति प्रदान करें।

आर्य समाज के प्रधान श्री [illegible] आर्य ने आर्य समाज की रिपोर्ट सुनाते हुए जनता से इस आर्य समाज की आवश्यकताओं पर ध्यान देने की अपील की। इस अपील पर श्री देव भूषण जी प्रधान ने 1900 रुपए, श्री [illegible] चन्द [illegible] ने 1100 रुपए, श्री [illegible] कुमार जी ने 500 रुपए, श्रीमती [illegible] जी वर्मा 500 रुपए, श्री [illegible] कुमार [illegible] 500 रुपए तथा कई [illegible] ने सैकड़ों रु दान में दिए, श्री [illegible] राय जी [illegible] ने धन एकत्र कराने में पूरा सहयोग दिया। आर्य समाज [illegible] नगर, आर्य समाज किदवई नगर, आर्य समाज [illegible] बाजार, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] तथा [illegible] किदवई नगर तथा अन्य सभी आर्य समाजों ने पूरा सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त [illegible], श्री देव भूषण [illegible] श्री [illegible] कुमार, श्री [illegible] कुमार [illegible], [illegible] कुमार आर्य, श्री [illegible] जी आर्य, [illegible], [illegible], [illegible] सिंह [illegible] श्री [illegible] की [illegible] श्रीमती [illegible] देवी, [illegible], [illegible] कुमारी, [illegible], [illegible] ने प्रशंसनीय कार्य किया श्री [illegible], श्री [illegible], [illegible], [illegible], श्री [illegible], श्री [illegible] सिंह, [illegible] श्री [illegible], श्री [illegible], श्री [illegible], श्री [illegible] ने पूरा सहयोग दिया। [illegible]

—[illegible]

व्याख्यान माला—११

नारी और उसका धर्म

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर (पंजाब)

(गतांक से आगे)

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ॥46॥

जहा स्त्रिया कष्ट पाती हैं वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है, और जहा ये दुःखी नही होती वह सदा फूलता-फलता है ।

तस्मादेता. सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनै ।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च ॥47॥

इस कारण कल्याण चाहने वाले पुरुष इन नारियो का विशेष उत्सवो तथा पर्वों पर आभूषण वस्त्र तथा भोजनादि से सदा सत्कार करें ।

स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम् ।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥48॥

स्त्री यदि प्रसन्न हो तो समस्त कुल प्रसन्न रहता है । यदि वह अप्रसन्न हो तो सारा कुल अप्रसन्न रहता हैं अर्थात् गृहिणी की प्रसन्नता मे ही गृहस्थ की प्रसन्नता है ।

अन्योन्यस्याव्यभिचारो भवेदामरणान्तिक ।
एष धर्मः समासेनज्ञेय स्त्रीपुंसयो पर ॥49॥

पुरुष और स्त्री का यह साधारण धर्म है कि वे आमरण परस्पर अविरोधचित्त अर्थात् मिल-जुल कर रहे ।

तथा नित्यं यतेयातां स्त्रीपुंसौ तु कृतक्रियौ ।
यथा नाभिचरेतां तौ वियुक्तावितरेतरम् ॥50॥

स्त्री और पुरुष दोनो नित्य प्रति अपने दैनिक कार्य करते हुए ऐसा प्रयत्न करते रहे जिससे उनमें परस्पर विरक्तिभाव न होकर सदैव अनुराग बढ़ता रहे ।

प्रजनार्थं स्त्रिय सृष्टा· सन्तानार्थं च मानवा ।
तस्मात्साधारणो धर्म श्रुतौपत्न्या सहोदित ॥51॥

परमेश्वर ने स्त्री को गर्भ धारण करने के लिए और पुरुष को सन्तान प्राप्ति के लिए उत्पन्न किया है । वेदो मे पत्नी के साथ ही पुरुष का साधारण धर्म कहा गया है ।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥5_॥

जिस परिवार मे स्त्री से पति और पति से स्त्री सन्तुष्ट रहते हो वहा स्थिर रूप से कल्याण रहता है ।

साक्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रतपरायणा ।
अग्निं जुहोति स्म तदा मन्त्रवत्कृतमङ्गला ॥53॥

यह श्लोक ऐतिहासिक है—कि वह देवी रेशमी कपडे पहने हुए प्रसन्नता से मन्त्र पूर्वक मङ्गलाचरण करके अग्निहोत्र किया करती थी ।

संस्कृत रक्षा दिवस का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान मे आज संस्कृत रक्षा दिवस का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार मे दोपहरबाद 4-00 बजे आयोजित किया गया । जिसमे सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया —

1 भारत सरकार की नई शिक्षा नीति 1986 मे भारत की प्राचीनतम भाषा एव ज्ञान विज्ञान की निधि की भण्डार संस्कृत को केवल विश्वविद्यालय के पाठ्य में वैकल्पिक विषय के रूप मे स्वीकार करते हुए उससे नीचे की कक्षाओ (माध्यमिक कक्षाओ) के पाठ्यक्रम से उसे निकाल दिया गया है, जिसका परिणाम भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता एव भारतीय अस्मिता का विनाश होगा है । इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुए साथ ही भारतीय संविधान की धारा 343 जिस के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एव लिपि देवनागरी स्वीकार की गयी है एव धारा 351 जिसके अनुसार राजभाषा के शब्द भण्डार को समृद्ध बनाने के लिए संस्कृत को मुख्य स्रोत स्वीकार किया गया है, कि भाव । को ध्यान मे रखते हुए यह सभा सर्वसम्मति से भारत सरकार से सशक्त शब्दो म माग करती है कि सम्पूर्ण भारत मे माध्यमिक कक्षाओ के पाठ्यक्रम मे संस्कृत की अनिवार्य भाषा के रूप मे अध्यापन की व्यवस्था की जाए, जिससे भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा हो सके ।

2 यह सभा भारत सरकार म यह भी माग करती है कि विधि शास्त्र, चिकित्सा विज्ञान प्राविधि की आदि के पाठ्यक्रम मे संस्कृत भाषा म विद्यमान विधिशास्त्र प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान एव प्राचीन भारतीय प्राविधि आदि मे भी वैकल्पिक रूप मे स्थान दिया जाए एव इस विषय मे अनुसन्धान को प्रोत्साहित किया जाए ।

3 यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि वह इस दिशा मे अर्थात संस्कृत को अनिवार्य रूप से माध्यमिक एव उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम मे स्थान देने की घोषणा कर आगामी 30 जून 1987 तक करे । अन्यथा हमे इसके लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए आन्दोलन करने को विवश होना पड़ेगा ।

इस अवसर पर श्रीमती कमला रत्न, डा गोस्वामी गिरधारी लाल, डा विमलदेव भारद्वाज, डा ब्रह्ममित्र अवस्थी, डा धर्मपाल, श्री सूर्य देव, श्री सीता राम सहगल, प यशपाल सुधांशु, डा कृष्णलाल ने अपने विचार व्यक्त किए ।

—डा. धर्मपाल-महामन्त्री

दिव्य—मुस्कान

आज नगर मे चारो ओर चहल-पहल है । जन समूह उमड़ा आ रहा है। मन्दिर के विस्तृत प्रांगण मे लाखो व्यक्तियो का जमघट है। मार्ग के दोनो ओर भक्तजन खड़े रथ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। दूर तक सीधा बना हुआ राजपथ आज अपने भाग्य पर इठला रहा है। उसको आज अनुपम शोभा प्राप्त हुई है। उनको नाना प्रकार से सजाया गया है। उस पर छिड़काव हुआ है। मुरम्मत करके उसको सुन्दर बनाया गया है।

राजपथ के सिरे पर एक रथ खड़ा है। आज वह कितना सुन्दर, कितना भव्य और कितना महान् लग रहा है। सैकड़ो लोगो ने रात-दिन एक करके उसको सजाया है। सैकड़ो उसकी सेवा के लिए कमर कसके तत्पर हैं और लाखो उसके हिलने की प्रतीक्षा मे हैं।

रथ मे मूर्ति रखी हुई है— पुष्पो से लदी हुई। उसके चारो ओर सुगन्धित वातावरण बना हुआ है। दर्शक और भक्तजन उसके दर्शन और चरण-वन्दना के लिए लालायित हैं। आज उसी का महत्व है। लाखो का जमघट उसी की प्रतीक्षा मे है। उसके हिलने मात्र से शख-घड़ियालो के घोर-गम्भीर—नाद आकाश गूंजेगा। मन्त्रोच्चारण और जयनाद से वातावरण भर जाएगा। अपने इस महत्व पर मूर्ति फूली नही समा रही है।

रथ-यात्रा आरम्भ हुई। हजारो कण्ठ गुंजरित हो उठे, हजारो सिर डोल गए, हजारो मस्तिष्क झुक गए। सैकड़ो ने साष्टांग नमस्कार किया, हजारो ने घुटने टेक-टेक कर अभिवादन किया और लाखो हाथ ऊपर उठकर जुड़ गए।

मार्ग सगर्व बोल उठा, "देखो मेरी महानता को। कितने मस्तिष्क मेरी धूलि से अभिषिक्त हो रहे हैं? कितनो के सिर मेरे सामने झुक रहे हैं? मैं न होता तो क्या यह आयोजन सम्भव था? यह मेरी ही महिमा है।"

यह सुन रथ से रहा न गया। उसने मार्ग को ठोकर लगायी और तिरस्कार-पूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा, "रे नीच! यह तेरी नही, मेरी महिमा है। भक्तो के सिर तेरे लिए नही, मेरे लिए झुक रहे हैं। तू सदा से नीच ही है आज भी नीच ही बना हुआ है। रोज ठोकरें खाता है और आज भी पददलित है।"

मूर्ति ने दोनो का संवाद सुना, तो उसका स्वाभिमान जागा। उसने सोचा, "अरे! ये अभागे कहा से चले आए मेरे समभागी बन कर?" मूर्ति ने रथ और मार्ग दोनो को सम्बोधित करते हुए कहा, "तुम दोनो बड़े भोले हो। तुम किस पेड़ के पत्ते हो? तुम्हे कौन पूजता है? तुम्हारी भक्ति मे कौन सिर झुकाता है? यह सब मेरी महिमा है। मेरे चरणो मे इन सभी के सिर झुक रहे हैं। तुम तो साधन मात्र हो।"

तीनो के इस संवाद को उस सर्वव्यापी और सर्वान्तर्यामी भगवान ने सुना, तो केवल मुस्करा दिया।

—कृष्णदत्त
पद्मानगर हैदराबाद-44

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का उत्सव

12,13,14 जून को आर्य समाज दाल बाजार का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा।

8 जून से 14 जून तक चारो वेदको यज्ञ होगा। निम्न महानुभावो के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

इस उत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के पधारने की स्वीकृति आ गई है।

सर्व श्री स्वामी सर्वानन्द जी, श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री वीरेन्द्र रत्नम एम एस. सी. मेरठ, श्री प. निरञ्जन देव जी महोपदेशक इतिहास केसरी, सत्यपाल जी पथिक,

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगदीश प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 8, 17 ज्येष्ठ सम्वत् 2044 तदानुसार 31 मई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

देह में जीवात्मा कहाँ है ?

लेखक—आचार्य श्री उदयवीर शास्त्री

भारतीय दर्शन में जीवात्मा का परिमाण तीन रूप में वर्णन किया गया है (1) विभु परिमाण अथवा महा परिमाण (2) मध्यम परिमाण, अथवा देह परिमाण (3) परिच्छिन्न परिमाण अथवा अणु परिमाण ।

पहले वर्णन में यह प्रश्न नहीं उठता है, देह में जीवात्मा किस स्थान में रहता है। क्योंकि जब उसे विभु माना गया, तो यह स्वतः सिद्ध है कि वह देह के बाहर और भीतर सब जगह एक समान विद्यमान है। दूसरे वर्णन में भी यह प्रश्न नहीं उठता। क्योंकि मध्यम परिमाण का तात्पर्य है देह परिमाण: देह के बाहर तो वह कहीं नहीं रहता, पर देह में सर्वत्र व्याप्त रहता है। कीड़ी-कुञ्जर जैसा भी देह होगा, उसके अनुसार देह में सर्वत्र आत्मा व्याप्त रहेगा। जीवात्मा के मध्यम परिमाण का यही तात्पर्य है कि वह देह के अनुसार परिमाण वाला रहता है। स्पष्ट है कि वह देह के अनुसार समस्त देह में व्याप्त होगा। तीसरे वर्णन के अनुसार स्वभावतः यह प्रश्न उठता है, कि जीवात्मा का निवास कहां सम्भव होगा ? कारण यह है कि जीवात्मा अणु परिमाण है, और देह बहुत बड़ा है। जीवात्मा को मानने वाले उसे चेतन मानते हैं। पर बाह्य व स्पर्श आदि से चेतना का अनुभव समस्त देह में होता है। तब सन्देह का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है कि कि इतने बड़े देह में वह अणु जीवात्मा कहां बैठा है ? इसकी खोज आवश्यक है।

कई देह इतने सूक्ष्म भी होते हैं, जिनको इन चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता, शक्तिशाली सूक्ष्मवीक्षण यन्त्रों द्वारा ही अनेक भौतिक देहों का प्रत्यक्ष हो पाता है। सम्भव है, ऐसे भी सूक्ष्म देह हों, जो उन यन्त्रों की सहायता से भी न दीख सकते हों। पर यहां हम उन सब देहों में आत्मा के निवास के विषय में कोई विचार नहीं कर रहे। यहां केवल मानव देह में आत्मा के निवास स्थान का विवेचन करना अभीष्ट है, कि यह विवेचन अन्य देहों में आत्मा के निवास के विषय मे लागू होगा या नही इसके साथ कोई सम्बन्ध इस विवेचन का नहीं है। यद्यपि वे सूक्ष्म अदृश्य देह, स्थूल दृश्य देहों के समान ही भौतिक हैं, तथा इतना अधिक सूक्ष्म हैं, फिर भी दार्शनिक दृष्टि से उन देहों की गणना स्थूल देहों में ही होगी।

शास्त्रों में क्या लिखा है

अध्यात्म शास्त्रों में इस विषय का उल्लेख हुआ है कि मानव देह के किस विशेष प्रदेश में आत्मा की स्थिति है, वह प्रदेश 'हृदय' बताया गया है। 'स वा एष आत्मा हृदि' (छा. 8।3।3), 'कतम आत्मेति योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः' (बृ. 4-3।7); 'हृदिह्येष आत्मा' (प्रश्न 3।6) इत्यादि। अभिप्राय यह कि आत्मा देह के 'हृदय प्रदेश' में रहता है। देह में ऐसे दो स्थान हैं जहां के अंग को 'हृदय' पद से कहा जाता है। अति प्रसिद्ध रूप में यह पद देह के रक्त प्रक्षेपक अंग के लिए प्रयुक्त होता है। पर जहां तक शास्त्रीय संकेतों से अधिगत हुआ है, वह रक्त का प्रक्षेप करने वाला 'हृदय' आत्मा का निवास स्थान प्रतीत नही होता। रक्त-प्रक्षेप की क्रिया शरीर में आत्मा के अस्तित्व की निश्चायक अवश्य है। समस्त शरीर में जाल की तरह बिछे हुए ज्ञान तन्तुओं का केन्द्र मस्तिष्क में है, इसके अनुसार आत्मा का आवास वही माना जाना चाहिए। वहां से वह ज्ञान तन्तुओं के द्वारा सम्पूर्ण शरीर पर नियन्त्रण रखता है।

एक स्थान पर बैठ कर आत्मा समस्त शरीर पर किस प्रकार नियन्त्रण करता है, और किस प्रकार चैतन्य से उसे प्रकाशित रखता है, यह अर्थ गीता के एक श्लोक के द्वारा बहुत सुन्दर रीति से वर्णित है, श्लोक है—

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ।
13।33॥

जैसे एक सूर्य इस सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करता है, वैसे क्षेत्री आत्मा सम्पूर्ण देह को प्रकाशित करता है। इस श्लोक में उदाहरण की उपयुक्तता ध्यान देने योग्य है। सूर्य एक विशिष्ट स्थान पर केन्द्रित रहता है, और अपनी रश्मियों द्वारा सम्पूर्ण सौर-मण्डल को प्रकाशित करता है। सूर्य भौतिक पदार्थ है, उसकी रश्मियां उसका अपना रूप है। अभौतिक आत्मा में इस प्रकार की रश्मियों की कल्पना करना युक्त न होगा, पर भौतिक ज्ञान तन्तु केन्द्र आत्मा को वही कार्य देता है, जो सूर्य की रश्मिया।

अध्यात्मशास्त्रों के उल्लेखों के अनुसार आत्मा का निवास देह मे यदि कोई 'हृदय' नामक प्रदेश है, तो इस दृष्टि के अनुसार वह रक्त का आक्षेप करने वाला हृदय नहीं होना चाहिए, प्रत्युत वह कोई-कोई मस्तिष्क गत अंश हो सकता है। उसका वर्णन अथर्ववेद के कतिपय मन्त्रों द्वारा किया गया प्रतीत होता है। यह अधिक सम्भव है, प्राचीन साहित्य में मस्तिष्क गत उस अंश को 'हृदय' पद से व्याहृत किया गया हो, जहां आत्मा के निवास का उल्लेख उपलब्ध होता है। अथर्ववेद मन्त्र हैं—

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥
तस्मिन् हिरण्मये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते ।
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः ॥
प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम् ।
पुरं हिरण्मयीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम् ।
(10।2।31-33)

इन मन्त्रों में निम्नलिखित कतिपय पद विशेष ध्यान देने योग्य हैं—हिरण्मय कोश, हिरण्मयी पुरी, स्वर्ग ज्योतिषावृत, त्र्यर, त्रिप्रतिष्ठितः, यक्ष, आत्मन्वत् आदि। इनकी व्याख्या इस प्रकार समझनी चाहिए।

हिरण्मयकोश—इन मन्त्रों में यह एक मुख्य पद है। प्रथम मन्त्र के उत्तरार्द्ध मे इसका वर्णन है। इसको 'स्वर्ग' और ज्योतिषावृत' बताया गया है। अगले मन्त्र में कहा है, कि उस हिरण्मय कोश के मध्यवर्ती त्र्यर त्रिप्रतिष्ठित स्थान में आत्मा का निवास है। वेद के इन वर्णनों के आधार पर देह में हम उस स्थान को ढूंढ सकते हैं, जिसको 'हिरण्मयकोश' नाम दिया गया है, और जिसके मध्य अवकाश में आत्मा वास करता है।

पाणिनि ने 'हिरण्मय' पद मयट् प्रत्ययान्त निपातित किया है(6।4।175) मयट् प्रत्यय प्रकृत अर्थात् प्राचुर्य अर्थ के कथन करने मे होता है (5।4।21) इसके अनुसार 'हिरण्मय' पद का अर्थ होगा। हिरण्य अर्थात् सुवर्ण की प्रचुरता या अधिकता से बना पदार्थ। अब देखना चाहिये, कि दैवी ज्ञानेन्द्रियों की पुरी इस शरीर में ऐसा कौन सा अवयव है, जो सुवर्ण के प्राचुर्य से बना कहा जा सके। परीक्षा करने पर ज्ञात है, कि मस्तिष्क में एक ऐसा अवयव है, जो हलके पीले वर्ण वाले पदार्थ के आधिक्य से बना है। आधुनिक शारीरशास्त्र में इसका नाम 'आज्ञाकन्द' है, इसे 'आज्ञाचक्र' भी कहा जाता है। शरीर की समस्त क्रियाओं व चेष्टाओं का निर्देशक होने से यह नाम अन्वर्थ कहा जा सकता है। यह दक्षिण और वाम भेद से दो भागों में विभक्त होता है। कविराज गणनाथ सेन ने 'प्रत्यक्ष शरीर'(भाग 3,अ. 6, पृष्ठ78) नामक ग्रन्थ में लिखा है—

क्रमशः

आर्य विद्वानों तथा साहित्य प्रकाशकों से नम्र निवेदन

लेखक—डा श्रीराम पथिक एम. डी. मानव सेवा
आश्रम छुमटलपुर जिला सहारनपुर (उ.प्र.)

अमर शहीद पंडित लेखराम जी के अन्तिम शब्द "आर्य समाज से तहरीर का कार्य बन्द न होवे" आर्य सिद्धान्तों के रक्षार्थ यह उनकी वसीयत थी।

इन शब्दो में रहस्य था, देव दयानन्द की साधना, तप, त्याग, पुरुषार्थ तभी सार्थक होगा जब हमारा साहित्य 'गीता प्रेस गोरखपुर' की भांति सस्ता होने के साथ छपाई आदि की—दृष्टि से सात्विक विचार युक्त एवं प्रभावशाली आकर्षक हो उसे पाठकों के मन में बार-बार पढने की इच्छा हो तथा वह मस्तिष्क मे स्वत: स्थान बनायें ऐसा समन्वय हमारे साहित्य में होना आवश्यक है।

आज के बालक, बालिकाएं-ही कल के भाग्य निर्माता हैं। इन्हे जैसी—संगति व साहित्य मिलेगा वैसे ही बनेंगे। पूर्व के संस्कारों के साथ अब के संस्कार अपना प्रभाव रखते हैं। आजकल पढ़ने वाले बच्चों की स्वाभाविक रुचि है कि युवा पीढ़ी ऐसा साहित्य चाहती है जो ज्ञान वर्धन के साथ मनोरंजन करने वाला हो। आप सभी जानते हैं जहां गन्दे उपन्यासों की भरमार है वहां सरिता, चम्पा, मामा-भिवाना, हंसी के गोल गप्पे जैसे दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, अर्ध मासिक पत्र हैं, जिनमें प्राय: चमत्कार अवतार-आदि अनर्गल विषय होते हैं। या आर्य हिन्दू सिद्धान्तों की द्वेषपूर्ण तर्कहीन आलोचना होती है। यह प्राय: सभी जानते हैं। अन्य कारणों के साथ ऐसे साहित्य का पढ़ना भी युवा पीढ़ी के आर्य समाज मे न आने का मुख्य कारण है।

आप चाहते हैं कि सच्चे अर्थों में हम महर्षि के स्वप्न को साकार करके भारत मे राम राज्य लायें तो उपर्युक्त जैसे अन्य प्रकाशक सरल शिक्षा प्रद रसीली व सुन्दर कहानियां एवं कविता आदि देते हैं वैसी ही कहानियां वैदिक सिद्धान्तो पर आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं में छपें साथ ही इस ढंग के लेख भी प्रकाशित हों कि सुनने, पढ़ने वालों को इसमे तनिक भी खण्डन की गन्ध न आए तो उनका मस्तिष्क, हृदय स्वत: ही उन विचारो से विमुख होके—आपके विचारों को हृदयंगम करने को विवश हो जाएगा।

कहने को हमारा साहित्य बहुत छपता है, परन्तु महंगा होने के साथ वेदमन्त्रों एवम् शास्त्रो के श्लोकों की अधिकता होने से आम जनता की, विशेष कर युवा पीढ़ी की रुचि का विषय नही बन पाता। हमारे कई प्रकाशकों ने सस्ता साहित्य देना प्रारम्भ किया परन्तु दो वर्षों बाद वे साहित्य प्रचारक सच्चे प्रचारक न रह के धन कमाने के चक्कर में साहित्य को महंगा करते हैं अथवा दानियों से दान एकत्र कर पांच सात पृष्ठ उनकी स्मृति में दे देते हैं क्या गीता प्रेस के साहित्य में ऐसा किए जाते देखा है। हमारे साहित्यकारों व प्रचारको को युग की मांग तथा मिशनरी भावना रखनी होगी तभी हम नव पीढी को अपना सकेंगे।

युग बदला तुम भी बदलो,
पर बदलो ना अपने विचार॥

क्या कोई साहित्य प्रेमी इन पंक्तियों पर ध्यान देगा।

महर्षि काल से लगभग पच्चास वर्ष तक जनता में वेद शास्त्रों आदि उच्च साहित्य पढने की तथा दार्शनिक सिद्धांतो के सुनने की जिज्ञासा थी। अन्य मतों में क्या-क्या भरा है यह प्रभाव था महर्षि का तथा आर्य समाज के स्वर्ण युग के विद्वानो के गम्भीर अध्ययन एवम् त्यागमय मिशनरी भाव का जो आज तक भी दिखाई देता है।

शायद उपरोक्त कारणों से तथा समाजों व सभाओं के अधिकारियो का महर्षि के ग्रन्थों तक से अनभिज्ञता, जैसे एक आर्य समाज के मन्त्री का यह पूछना कि "संस्कार विधि" का कौन लेखक था?

भोगवादी कारणों से अब प्राय: छोटे बड़े सब सरस-रसीले, मनोरंजक साहित्य पढना, सुनना चाहते हैं पहले प्रात: सभी वर्ग वाले धर्म ग्रन्थो को पढना या बड़ों से सुनना और तब प्रातराश करना चाहते थे परन्तु अब दैनिक पत्र पढ़ते हैं।

यह ध्रुव परन्तु कटु सत्य है कि हमारे कई आर्य नेताओं के अपने पत्र पत्रिकाओं में राशिफल तथा मूर्ति पूजकों के सरल व आकर्षक लेख छपते हैं केवल एक मात्र धन की लालसाएं हैं। वाणी और लेखनी का प्रभाव तभी होगा जब हमारा अपना ही नही अपितु हमारे परिवार वालों का जीवन भी स्वामी श्रद्धानन्द जी व महात्मा हंसराज जी आदि की भांति होगा।

झण्डे दुनियां में उनके गड़े हैं।
शीश जिनके धर्म पर चढ़े हैं।

आर्य मर्यादा के विषय में हमारे सहयोगियों के विचार

आर्य मर्यादा के पिछले अंकों में माननीय श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य समाज के पत्र-पत्रिकाओं के विषय में जो कुछ लिखा था आर्य जगत् में उसकी जो प्रतिक्रिया हुई है वह नीचे के दोनों पत्रों से पता चल जाएगा हम चाहते हैं कि इस विषय में और महानुभाव भी कुछ लिखें ताकि आर्य समाज की पत्रिकाओं का स्तर कुछ ऊंचा किया जा सके।

—सह-सम्पादक

मान्यवर वीरेन्द्र जी!

आर्य मर्यादा में प्रकाशित होने वाले आपके सभी सम्पादकीय लेखों में विचार एवं चिन्तन के लिए पर्याप्त सामग्री रहती है। विगत दो अंकों में आपने आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं के सम्बन्ध में जो तथ्य पूर्ण टिप्पणियां दी हैं, वे सचमुच बेजोड़ हैं। आर्य समाज में न तो स्तरीय पत्र हैं और न उच्चकोटि के पत्रकार हैं। सभाओं के पत्रों का सम्पादन भार उनके दफ्तरों के क्लर्कों के जिम्मे रहता है। इनमें मन्त्री और प्रधान के स्तुतिगान के अतिरिक्त समाजों के चुनावों और उत्सवों की सूचनाएं ही रहती हैं।

पठनीय सामग्री तो ढूंढने पर भी नही मिलती। आपने स्पष्ट नाम न देकर जो संकेत किये हैं वे इस तथ्य को उजागर करते हैं कि कुछ पत्रों में तो नेता विशेष के भ्रमण, भाषण, वक्तव्य और यात्रा विवरणों का ही बाहुल्य रहता है। नतीजतन आर्य समाजों का दायरा अत्यन्त संकुचित हो गया है। आर्य समाज से बाहर तो उन्हें कोई पढ़ता ही नहीं, आर्य समाज में भी उन्हें कोई उठाता तक नहीं। मैंने अनेक आर्य समाजों में देखा है कि इन पत्रों के कवर उतारने तक की नौबत नही आती। काश हम महाकवि अकबर की इस उक्ति का महत्व समझ पाते।

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।

—डा. भवानीलाल जी भारतीय
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

दूसरा पत्र

आदरणीय बन्धुवर!

सादर नमस्ते! मैं किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूं। आपने अपने सम्मानित पत्र साप्ताहिक "आर्य मर्यादा" के 17 मई 1987 के अंक में भी अपने सम्पादकीय में इस संस्थान की दोनों पत्रिकाओं के बारे में, विशेषत: "विश्व-संस्कृत" के विषय में, और उनके विशेषांकों के विषय में प्रकाश डाल कर हमें अनुगृहीत किया है। हम सभी हृदय से आप के आभारी हैं।

आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम इन दोनों पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकाशनों की आन्तरिक गुणवत्ता को बनाये रखने के साथ-साथ बाहरी रूप-सज्जा को भी अधिकाधिक आकर्षक बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे।

आप मुझे अनुमति दें, मैं इस से सम्बन्धित एक अन्य विषय पर भी अपने विचार आपके साथ सांझे करना चाहता हूं। आर्य सिद्धान्तों एवं आध्यात्मिक, नैतिक आदि विषयों पर जानकारी से भरपूर लेख जो रोचक, सरस, साहित्यिक शैली में लिख सकने वाले हिन्दी के लेखक आर्य समाज के क्षेत्र में ढूंढने पड़ते हैं। मान्यवर महाशय कृष्ण जी इस प्रकार की लेखनी के धनी तथा पत्रकार-सम्राट थे। आप भी उनकी परम्परा को निभा रहे हैं। ऐसे सज्जन तो अपवाद-रूप हैं। सामान्य रूप से तो आज के आर्य सामाजिक क्षेत्र में अव्वल तो हिन्दी में लिखने वाले कम हैं, फिर उनमे से आर्य सिद्धान्तों से भली भांति परिचित तो और भी कम हैं और फिर साहित्यिक शैली में सरस एवं रोचक तथा जानकारी से भरपूर लेख लिख सकने वाले तो ढूंढने पड़ते हैं। क्या इस दिशा में आप हमारा परिचय अभीष्ट लेखकों से करा कर हमें अनुगृहीत करेंगे।

हमें आशा करनी चाहिए कि आपके सहयोग से हमारे पाठकों का क्षेत्र भी विस्तृत हो पावेगा।

भवदीय

सद्भाव सहित,

वेदप्रकाश
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर

सम्पादकीय—

क्या हम इस चुनौती को स्वीकार कर सकते हैं ?

आर्य समाज का इतिहास एक बहुत बड़े संघर्ष का इतिहास है। पिछले एक सौ वर्ष में कोई भी ऐसा समय नहीं आया जब आर्य समाज के सामने कोई चुनौती आई हो और उसने उसे स्वीकार न किया हो। संघर्ष का जीवन ही आर्य समाज की शक्ति का रहस्य रहा है। आर्य समाज जब भी आगे बढ़ा है किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर नहीं अपने सिद्धान्तों, आदर्शों और मान्यताओं के बल पर। हमारा विरोध होता रहा है फिर भी हम आगे बढ़ते रहे हैं और यह केवल इसलिए कि आर्य समाज सदा ही एक सिद्धान्तवादी संस्था रही है। प्रत्येक संस्था में व्यक्तियों का भी कुछ महत्व अवश्य होता है। परन्तु किसी व्यक्ति विशेष को महत्व देते हुए व्यक्तिवाद का एक नया ढोंग शुरू कर दिया जाए तो उसका परिणाम अन्त में अच्छा नहीं रहता व्यक्ति तो आते जाते रहते हैं। परन्तु सिद्धान्त सदा अटल और अविचल होते हैं इस लिए परिस्थितियां चाहे कुछ रूप धारण करती रहें, सिद्धान्त जीवित रहते हैं और उनके साथ उन सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने वाली संस्थाएं भी न केवल जीवित ही नहीं रहती अपितु वह अपनी कर्तव्य परायणता से दूसरों पर भी अपनी छाप बैठाती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज ने जो कुछ प्रगति की है और जो लोकप्रियता प्राप्त की है वह बहुत कुछ अपने विख्यात नेताओं के व्यक्तित्व के सहारे। मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती की बात नहीं करता उनका स्थान तो हमारे इतिहास में बहुत ऊंचा है परन्तु उनके बाद जो आए उन्होंने अपने तप और त्याग से आर्य समाज को जो चार चान्द लगाए और जो कुछ आर्य समाज को दान दिया वह ही आज भी उसकी सबसे बड़ी पूंजी है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महात्मा हंसराज जी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, आचार्य रामदेव जी, श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी, श्री महाशय कृष्ण जी, श्री प. चमूपति जी, श्री प. विश्वम्भर नाथ जी, श्री शिवदत्त दीवानचन्द जी और इस प्रकार के और भी कई नाम हैं जो गिनाए जा सकते हैं जिनके सहारे आर्य समाज वहां पहुंचा है जहां हम उसे आज देख रहे हैं। परन्तु वह जो पूंजी हमने जमा की थी अब वह धीरे धीरे कम हो रही है क्योंकि अब उस स्तर के नेता आर्य समाज में नहीं रहे। पहले व्यक्तिवाद के सहारे समष्टिवाद को प्रोत्साहन मिलता था और आज समष्टिवाद के सहारे व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन मिल रहा है। सिद्धान्तों और मान्यताओं को वह महत्व नहीं दिया जाता जो विशेष व्यक्तियों को दिया जाता है उसके कारण आर्य समाज में शिथिलता आ रही है और उसके सामने जो नई-नई चुनौतियां आ रही हैं उन्हें वह आज स्वीकार करने के योग्य नहीं रहा। हमारे नेताओं के पास यह सोचने के लिए भी समय नहीं है कि आर्य समाज के सामने नई नई चुनौतियां क्या हैं। पिछले कुछ समय से यह आवाज बार बार उठ रही है कि आर्य समाज के बुद्धिजीवियों को एक स्थान पर एकत्रित होकर आर्य समाज की समस्याओं पर विचार करना चाहिए। पिछले दिनों दिल्ली में इस प्रकार की एक गोष्ठी हुई थी भी परन्तु यह ऐसा काम नहीं जो एक ही बार बैठ कर बात करने से समाप्त हो जाए। इस पर गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है और सबसे बड़ी समस्या आज हमारे सामने यह है जिसका उत्तर ढूंढने की आवश्यकता है वह यह कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज का कर्तव्य क्या है? जब हम इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने लगते हैं तो फिर एक नहीं कई समस्याएं हमारे सामने आ जाती हैं इन पर यदि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करने लगें तो इन पर कई दिन सम्भवत कई सप्ताह लग जाएं परन्तु अभी तो किसी का उस तरफ ध्यान ही नहीं जा रहा, विचार करने का तो आज प्रश्न ही पैदा नहीं होता क्योंकि जिन्हें इन समस्याओं पर विचार करना चाहिए और आर्य समाज का नेतृत्व करना चाहिए। उनके पास इस के लिए समय नहीं है फिर भी कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिन्हें मैं आर्य समाज के लिए एक चुनौती समझता हूं। उनकी तरफ आर्य जनता का ध्यान दिलाना अपना कर्तव्य समझता हूं, वह चुनौतियां क्या हैं? इसके विषय में आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

अपने कार्य कर्ताओं का सम्मान करो

मैं लुधियाना के आर्य भाईयों और बहनों को बधाई देता हूं कि उन्होंने एक नई और अत्यन्त सराहनीय प्रथा प्रारम्भ की है। वह यह है कि आर्य समाज के जो पुराने और कर्मठ कार्यकर्ता हैं, उन्हें सम्मानित किया जाए। अभी दो सप्ताह हुए जब लुधियाना की आर्य समाज दयानन्द नगर ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न को सम्मानित किया था। श्री सरदारी लाल जी आर्य समाज के कर्मठ और निष्काम सेवक हैं। उनका बहुत सा समय आर्य समाज की सेवा में ही गुजरता है। ऐसे व्यक्तियों का सम्मान होना ही चाहिए। आर्य समाज दयानन्द नगर लुधियाना ने उनका सम्मान करके केवल उन्हें ही सम्मानित नहीं किया सारे आर्य जगत को किया है। इसी प्रकार संस्थाओं का संगठन शक्तिशाली बनता है।

अब आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना ने डाक्टर मूलचन्द भारद्वाज को सम्मानित किया है। इस समाज में श्रीमती कमला आर्या की हस्पताल के नाम से एक होम्योपैथी औषधालय चल रहा है कुछ देर से वह बन्द था। डा मूलचन्द जी जो स्वयं एक योग्य और अनुभवी होम्योपैथ हैं उन्होंने यह हस्पताल फिर शुरू कर दिया है जो लोग उनसे दवाई लेने आते हैं वह उनसे प्रभावित होकर आर्य समाज में रुचि लेने लगते हैं। इस प्रकार आर्य समाज के प्रचार का एक नया और रचनात्मक ढंग निकल आया है। डाक्टर मूलचन्द जी भारद्वाज जो जनता की निःशुल्क सेवा कर रहे हैं और उसके द्वारा आर्य समाज का जो प्रचार कर रहे हैं वह सराहनीय है और उनका जो सम्मान किया गया है उससे उन्हें और प्रोत्साहन मिलेगा और दूसरे कार्यकर्ताओं को भी।

यदि दूसरी आर्य समाजें भी इसी प्रकार अपने कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित करने का कार्यक्रम बनाएं तो इससे आर्य समाज का संगठन और भी शक्तिशाली बन जाएगा।

—वीरेन्द्र

स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन चरित्र तथा व्यक्तित्व का

मूल्यांकन परक साहित्य—

लेखक—डा० भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

यह कथन तो अत्युक्तिपूर्ण ही होगा कि पं० लेखराम द्वारा संग्रहीत जीवनी अपने आप में समग्र एवं परिपूर्ण थी और उसमें कथा नायक के जीवन की सारी घटनाओं व तथ्यों का सही ढंग से समावेश हो गया था। इसके विपरीत सत्य यह है कि कतिपय कारणों से पं० लेखराम स्वामी जी के जन्म-स्थान, वंश उनके पिता के नाम आदि की सही जानकारी प्राप्त नहीं कर सके थे। इसके कुछ वास्तविक कारण थे। इन सारी बातों का पता लगाने के लिए पं० लेखराम ने गुजरात की यात्रा भी की थी, किन्तु उनके समक्ष कुछ अपरिहार्य कठिनाईयां ऐसी आईं, जिनके कारण वे वास्तविक तथ्यों का पता नहीं लगा सके।

प्रथम बात तो यह थी कि सौराष्ट्र देशवासी उस समय तक न तो स्वामी दयानन्द की महत्ता को ठीक-ठीक अनुभव ही कर सके थे और न उन्हें यही पता था कि उन्हीं के प्रान्त में जन्म लेने वाला एक संन्यासी भारत की धार्मिक एवं सामाजिक क्रान्ति का जनक बन कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में उनकी धारणाएं, नाना कुत्साओं तथा मिथ्यारोपपूर्ण प्रचारों के प्रचलित हो जाने के कारण, कुछ अन्यथा ही थीं। उन्हें तो यही बताया गया था कि दयानन्द ने हिन्दू धर्म की सर्वमान्य मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, अवतारों के प्रति आस्था आदि धारणाओं का तीव्र खण्डन किया है, अतः वे प्रचलित धर्म के विरोधी के रूप में ही जाने जाते थे। फलतः उनके जन्म स्थान का कोई भी निवासी अथवा उन्हीं की जाति एवं वंश का व्यक्ति भी उनसे अपनी कुटुम्बगत निकटता तथा वंशगत सान्निध्य को स्वीकार करना तो दूर रहा उन्हें अपने प्रान्त का निवासी स्वीकार करने में भी संकोच करता था जैसा कि पं० कृपाराम केशवराम शर्मा ने आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के मन्त्री को 22 सितम्बर 1911 के अपने पत्र में लिखा था—"टंकारा के ब्राह्मण स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में तथ्य प्रकाशित करना नहीं चाहते, उसका एक मात्र कारण यह है कि अधिकांश लोग यजमान वृत्ति से निर्वाह करते हैं और उन्हें भय है कि यदि स्वामी जी के विषय में अधिक बातें बताई गई तो आर्य समाजी उपदेशक वहां (टंकारा) आएंगे और उनके यजमानों की परम्परागत आस्थाओं को खण्डित कर उनकी व्यावसायिक क्षति करेंगे।"

पं० लेखराम की एक अन्य कठिनाई यह भी थी कि फारसी बहुल उर्दू भाषा बोलने तथा वेषभूषा में पंजाबी मुसलमानी ढंग का कोट, पैजामा तथा पगड़ी पहनने के कारण सौराष्ट्र के पुराणपन्थी, धर्मभीरु लोगों ने सम्भवतः उन्हें मुसलमान ही समझा तथा एक सहज अविश्वास भाव के कारण उनके समक्ष स्वामी दयानन्द विषयक तथ्यों को प्रकट करने में संकोच करते रहे।

तथापि यह तो स्वीकार करना ही होगा कि कालान्तर में स्वामी जी की जीवनी लिखने के जो भी प्रयत्न हुए, उनका आधार पं० लेखराम द्वारा संकलित यह उर्दू जीवन चरित ही था। दयानन्द के उल्लेखनीय कार्यों तथा धर्म समाज एवं राष्ट्र के बहुविध क्षेत्रों से प्राप्त की गई उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसे तैयार करने में उन्हें घोर अध्यवसाय तथा परिश्रम करना पड़ा। सहस्रों व्यक्तियों की प्रत्यक्ष साक्षियों, नाना भाषाओं में प्रकाशित तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं तथा अन्य महत्त्वपूर्ण आलेखों के आधार पर तैयार किया गया यह ग्रन्थ लेखक की एतद् विषयक निष्ठा तथा साधना का परिचायक है।

हम यह देख चुके हैं कि देशवासियों की भांति ही विदेश के रहने वालों ने वैदिक विचारधारा के पुनरुद्धार तथा आर्यों के प्राचीन जीवन दर्शन के पुरस्कर्ता इस महापुरुष के जीवन विषयक तथ्यों से परिचित होने में अपनी रुचि प्रदर्शित की थी। यही कारण था कि यूरोपीय भाषाओं का एक शब्द भी न जानने वाले तथा पाश्चात्य चिन्तनधारा से सर्वथा अपरिचित उस व्यक्ति के अनन्य विचारों तथा व्यापक प्रभाव को परिलक्षित कर सुप्रसिद्ध प्राच्य विद्याविशारद श्री मैक्समूलर भी उनकी जीवनी लिखने के लिए लालायित हो उठा। स्वामी जी के निधन के कुछ वर्ष पश्चात् ही उसने आर्य समाज से सम्बन्धित होने वाले [illegible] में एक निबन्ध प्रकाशित कराया। यही निबन्ध उसकी "[illegible]" नामक पुस्तक में पृष्ठ 137 से 180 तक अनूदित किया गया। इसी प्रकार जब रामकृष्ण मिशन की प्रेरणा से प्रसिद्ध फ्रेंच साहित्यकार रोमां रोलां ने श्री रामकृष्ण परमहंस का जीवन चरित लिखा तो उन्होंने (एकता के निर्माता) शीर्षक एक अध्याय लिख कर स्वामी दयानन्द के जीवन एवं कृतित्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया।

इधर पं० लेखराम द्वारा लिखित जीवन चरित का ही आधार लेकर अब भी, उर्दू तथा हिन्दी में स्वामी दयानन्द के कुछ अन्य जीवन चरित लिखे गए। लाला लाजपतराय ने 1955 वि० में 'दुनिया के महापुरुषों के जीवन' शीर्षक ग्रन्थ माला के अन्तर्गत "महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम" नामक जीवन चरित लिखा। यह मूलतः उर्दू में लिखा गया था। हिन्दी में रामविलास शारदा ने 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन' लिखा, जिसका प्रकाशन 1961 वि० में हुआ। इससे पूर्व चिम्मन लाल वैश्य ने 'सरस्वतीन्द्र जीवन चरित' लिखा था, जिसका प्रकाशन 1902 ई० में हुआ। हिन्दी में लिखी गई ये दोनों जीवनियां सामग्री की दृष्टि से पं० लेखराम द्वारा संगृहीत जीवन चरित पर ही आधारित हैं। उर्दू में मेहता राधा कृष्ण लिखित जीवन चरित भी मौलिकता का दावा नहीं करता। अंग्रेजी में बावा अर्जुनसिंह तथा बावा छज्जूसिंह ने क्रमशः स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लिखे। बावा अर्जुनसिंह द्वारा लिखित अपेक्षाकृत लघु है, जबकि बावा छज्जूसिंह के द्वारा लिखित, शीर्षक जीवन चरित बृहदाकार कृति है। इन दोनों का प्रकाशन क्रमशः 1901 ई० तथा 1903 में हुआ। बावा छज्जूसिंह अपने ग्रन्थ की भूमिका में यह स्पष्ट कर देते हैं कि उनकी रचना मुख्यतः लाला लाजपतराय तथा मेहता राधाकृष्ण द्वारा लिखित विशद उर्दू जीवन चरितों पर आधारित है तथा यथावश्यक उन्होंने पं० लेखराम द्वारा संगृहीत जीवन चरित से भी सहायता ली है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि इस शताब्दी के आरम्भिक वर्षों तक हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी में स्वामी दयानन्द के जो छोटे बड़े जीवन चरित लिखे गये, वे सभी पं० लेखराम द्वारा संगृहीत सामग्री को ही उपादान के रूप में स्वीकार करते हैं।

दूर बंग प्रदेश में स्वामी जी के जीवन [illegible] प्रयत्न हुए। [illegible] के अनुसार 1886 ई० में [illegible] जीवनी लिखी। [illegible] [illegible] [illegible] है। इसी भी महत्त्वपूर्ण प्रयास देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय का था, जिन्होंने वर्षों तक अथक परिश्रम के साथ तथा देवेन्द्रनाथ प्रभृति प्रवर आर्थिक सहायता से स्वामी दयानन्द के जीवन चरित विषयक तथ्यों का संग्रह करने के लिए विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण किया तथा महत्त्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया। पं० [illegible] के अनुसार प्रसिद्ध इतिहासकार श्री रमेशचन्द्र दत्त ने मुखोपाध्याय जी को जीवनी लेखन के लिए प्रेरित किया था। इससे पूर्व वे बंगला भाषा में ईसाई सन्त पाल का जीवन चरित लिखकर साहित्य जगत् में पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुके थे। देवेन्द्रनाथ द्वारा लिखा गया दयानन्द चरित सर्व प्रथम 18°6 ई० (1302 बंगाब्द) में प्रकाशित हुआ। यद्यपि यह ग्रन्थ अनेक दृष्टियों से अपूर्ण ही था, अनेक घटनाओं के पौर्वापर्य को लेकर स्वयं लेखक को सन्देह था तथा लेखक स्वयं भी अपने इस कार्य से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं था, तथापि ग्रन्थकार ने दयानन्द चरित की जो विशद 'अवतरणिका' लिखी है, वह साहित्य की एक अमूल्य निधि समझी जाएगी। दयानन्द के आविर्भाव के पूर्व की एतद्देशीय परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन इस विशद भूमिका की अपूर्व विशेषता है। मुखोपाध्याय महाशय ने भारत वर्ष के पुनर्जागरण आन्दोलनों की सूक्ष्म मीमांसा करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द के पूर्ववर्ती राजा राममोहन राय तथा उनके द्वारा प्रवर्तित ब्रह्म समाज के धर्म विषयक दृष्टिकोण को भी विश्लेषित किया है तथा वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि वस्तुतः राममोहन राय ने जो कार्य नहीं किया था कर नहीं सके, उसी को करने के लिए दयानन्द का आविर्भाव हुआ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशित होने के पश्चात् देवेन्द्र बाबू ने पुनः फिर से स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी घटनाओं का संग्रह करने का प्रयत्न किया। वे उन सभी स्थानों पर गये, स्वामी दयानन्द के समकालीन तथा उनके सम्पर्क में आए पुरुषों से मिले। उसके अतिरिक्त उन्होंने स्वामी जी के सम्बन्ध में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री का अवलोकन किया। उसके अतिरिक्त उन्होंने उर्दू, हिन्दी, मराठी, गुजराती, [illegible] की [illegible]

(शेष पृष्ठ 7 पर)

[illegible] स्वास्थ्य कैसे रहें ?

[illegible] आयुर्वेदाचार्य

[illegible] यदि कोई उसके अनुकूल रखता है, तो वह है मानव शरीर। इसी शरीर के सहारे मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करता है। इसी शरीर के सहारे इस लोक में अभ्युदय और परलोक में निःश्रेयस प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए यह आश्चर्यों का आश्चर्य कहलाता है।

मानव शरीर की रचना ऐसी है कि यदि इसकी प्रकृति के अनुकूल काम लिया जाए, तो यह कम से कम 100 वर्ष तक तो अच्छी तरह चल ही सकता है। प्रकृति के प्रतिकूल काम लेने से शरीर शीघ्र जर्जर हो जाता है और मनुष्य दुख और [illegible] के हाथ का खिलौना है।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्—धार्मिक जीवन बिताने के लिए पहली आवश्यकता यह है कि शरीर स्वस्थ हो। उत्साह, हर्ष और उन्नति के भाव स्वस्थ मनुष्य के ही मन में उठते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए वैसे तो अनेक बातों की सावधानी रखनी पड़ती है और अनेक उपाय अपनाने पड़ते हैं, लेकिन घूम-फिर कर बात यहीं पर आ टिकती है कि अच्छे भोजन के बिना अच्छा स्वास्थ्य सम्भव नहीं। अच्छे भोजन का अर्थ गरिष्ठ (तकलीफ) भोजन नहीं—अच्छे भोजन का अर्थ है सात्विक, अनुकूल और पौष्टिक भोजन।

जब भोजन शरीर में पहुंचता है, तब शारीरिक अवयव उसे दो भागों में बांट देते हैं—1 पहला भाग शरीर को शक्ति देने वाला रस बन जाता है, जिससे रक्त, मांस, हड्डी, मज्जा और (रस अथवा वीर्य से भी आगे का तत्व) बनता है। यह भोग शरीर के अव-[illegible] भाग मल-मूत्र का रूप धारण करता है। इन्हें आप विजातीय द्रव्य कह सकते हैं और ये चार शारीरिक अवयवों के रास्ते से बाहर फेंके जाते हैं—[illegible] के रूप में, [illegible] के रूप में, [illegible] के रूप में और मूत्रेन्द्रिय से मूत्र के रूप में।

प्रकृति के नियम के अनुसार शरीर अपने आपको [illegible] साफ रखना चाहता है। [illegible] इन [illegible] बाहर न निकाल [illegible] के रूप में [illegible] विकारों को [illegible] शरीर स्वच्छ हो [illegible]

भोजन सम्बन्धी अज्ञान, रहन-सहन की गड़बड़ी, ब्रह्मचर्य के नियमों को तोड़ने और शारीरिक अंगों की दुर्बलता के कारण शरीर में मलों का जम जाना स्वाभाविक है। मनुष्य अस्थायी आराम और सुविधाओं की खातिर ऐलोपैथिक औषधियों का सेवन करके प्रकृति के मार्ग में रोड़े अटकाता है। इस कथन में सच्चाई का पर्याप्त अंश है कि जितने ऐलोपैथिक डाक्टर बढ़ते जाते हैं, उतनी ही बीमारियां बढ़ती जाती हैं। आयुर्वेदिक औषधियों में यह दोष नहीं। आयुर्वेदिक औषधियां तो एक प्रकार का भोजन हैं। रोग के उत्पन्न होने से पूर्व ग्रहण किए गए पदार्थ भोजन कहलाते हैं और रोग उत्पन्न होने पर जो पदार्थ लिए जाते हैं, वे औषधि नाम से पुकारे जाते हैं। यदि औषधि सही है, तो आप के शरीरस्थ वात, पित्त और कफ ठीक हो जाएंगे और आप पुनः स्वस्थ हो जाएंगे। आयुर्वेदिक चिकित्सा से भी अधिक श्रेयस्कर है प्राकृतिक चिकित्सा।

शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोगों के नष्ट होने से ही मनुष्य सही अर्थों में नीरोग हो सकता है। शारीरिक और मानसिक रोग एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं—कभी मानसिक रोग शारीरिक हो जाते हैं, तो कभी शारीरिक रोग मानसिक हो जाते हैं। मन को पवित्र रखने से मनुष्य शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोगों से छुटकारा पा सकता है। मन स्वस्थ न हो, तो शारीरिक रोग सरलता से हावी हो जाते हैं। जो मनुष्य दूसरों की बुराई सोचता रहता है, वह रक्त विकार से पीड़ित हो जाता है। जो अपने रहन-सहन पर बहुत अधिक व्यय करता है—दूसरे शब्दों में भोग विलास में फंसा रहता है, वह ब्रह्मचर्य का पालन क्या करेगा? आलसी व्यक्ति को रोग जल्दी घेर लेते हैं पुरुषार्थी के शरीर में रोगाणु प्रवेश नहीं हो पाते। मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि आप हीन भावना से ग्रस्त न हों, चिन्ता से दूर रहें और अपने जीवन के लिए कोई ऊंचा [illegible]।

रोग क्यों उत्पन्न होते हैं।

जब भोजन अन्न प्रणाली से आमाशय में पहुंचता है, तब वहां पित्त और श्लेष्म रस की सहायता से वह दो भागों में बंट जाता है। कुछ भाग तो अनेक रूपों में परिवर्तित होता हुआ क्रमशः वीर्य (और उसके बाद ओज) का रूप धारण करता है और कुछ भाग, पसीने मल और मूत्र के रूप में शरीर से बाहर निकल जाता है। यह क्रम तभी ठीक नहीं चल सकता है, जब शरीर में पहुंचे भोजन में ऐसी सामग्री सम्मिलित हो, जिससे रक्त में 80 प्रतिशत क्षारांश और 20 प्रतिशत खटाई रहे। इस क्षारीयत्व के बने रहने पर वात पित्त और कफ समान रहते हैं—शरीर में कोई रोग उत्पन्न नहीं होता। अन्यथा रक्त दूषित हो जाता है और मल भी अन्दर रुक कर सड़ता हुआ विष बन जाता है और अनेक रोगों का कारण बनता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध वायु का अत्यन्त आवश्यक है। इसी खातिर प्राणायाम किया जाता है। श्वास प्रश्वास से जो शुद्ध वायु अन्दर पहुंचाई जाती है, वह इतनी पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए कि खाद्य पदार्थों से उत्पन्न रक्त को साफ कर सके और उसे सारे शरीर में भ्रमण कराकर इस प्रकार इस प्रकार कार्य करने से उत्पन्न हुई गन्दी वायु को शरीर से बाहर फेंक सके। इस बात की सावधानी रखना भी आवश्यक है कि इस शुद्ध वायु के साथ मिलकर कोई कीड़ा, धूलि अथवा अन्य पदार्थ शरीर में प्रविष्ट न हो जाए अन्यथा यह शरीर में रोग को जन्म देगा। ऐसी ही सावधानी पानी पीते समय बरती जानी चाहिए। सारी सावधानियां बरतने के बाद भी यदि आप चिन्ता के बोझ से दबे हुए हैं, तो खाद्य पदार्थ आपके शरीर को पुष्ट नहीं बनाएंगे। आपने नोट किया होगा कि जब आप अत्यन्त चिन्तित शोकाकुल और पीड़ित होते हैं, तब आपको भूख नहीं लगती। कारण यह कि उस स्थिति में आपके गले की ग्रन्थियों से लार नहीं निकलती और इसके बिना आप न तो भोजन निगल सकते हैं और न पचा सकते हैं।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इसे किसी न किसी प्रकार हिलाना डुलाना और चलाना भी चाहिए। इस शारीरिक क्रिया का ही नाम व्यायाम है। व्यायाम करने से शरीर के अन्दर के बहुत से रेशे टूट जाते हैं। ये रेशे या तो पसीने के रास्ते शरीर से निकलते रहते हैं या खून के साथ मिलकर फेफड़ों में पहुंचने पर शुद्ध वायु द्वारा भस्म होकर श्वास के साथ बाहर निकल जाते हैं। इन टूटे हुए रेशों का शरीर से बाहर निकल जाना बहुत आवश्यक है, अन्यथा ये विकार बन कर रोगों की उत्पत्ति करते रहते हैं।

तीन प्रकार के रोग

शारीरिक रोग तीन प्रकार के होते हैं—वात सम्बन्धी, पित्त सम्बन्धी और कफ सम्बन्धी। इन तीन प्रकार के रोगों को भी तीन तीन भागों में बांटा जा सकता है—नये, पुराने और घातक। इस प्रकार कुल मिला कर इनकी संख्या नौ हो गई।

जो भोजन हम करते हैं, उसमें दो चीजें पैदा होती हैं—1 रक्त, जिससे मांस, अस्थि, मज्जा और वीर्य बनता है। 2 वात, पित्त और कफ (त्रिदोष), जिनके समान रहने से ही शरीर स्वस्थ रहता है।

ये त्रिदोष शरीर के तीन भागों में बंटे हुए होते हैं—1 कंठकूप तक सिर का भाग कफ का स्थान है। 2 कंठकूप से नाभि तक पित्त का स्थान है। 3 नाभि से नीचे का भाग वात का स्थान है। मनुष्य भी तीन प्रकृति वाले होते हैं—कफ प्रकृति, पित्त और वात प्रकृति।

स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—1 खाद्य पदार्थों में ऐसा मेल रखा जाए कि वात, पित्त और कफ समान रूप में पैदा हों। 2 पर्याप्त शुद्ध वायु फेफड़ों में पहुंचती रहे। 3 गड़बड़ी पैदा होने पर उपवास करके वायु, जल, धूप और मिट्टी द्वारा प्रकृति की सहायता करके गन्दगी को शीघ्रातिशीघ्र शरीर से बाहर निकाल देना चाहिए, जिससे शरीर पुनः स्वच्छ और नीरोग हो जाए। 4 मन में बुरे विचारों को न आने दें। पूर्ण स्वास्थ्य के लिए मन और शरीर दोनों का स्वस्थ होना आवश्यक है।

भोजन और उसकी आवश्यकता

दैनिक कार्यों में शरीर की जो शक्ति व्यय होती है, भोजन उसकी पूर्ति करता है, इसके अतिरिक्त रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा और रज वीर्य बनाने में जो शक्ति व्यय होती है, भोजन उसकी भी पूर्ति करके शरीर को पुष्ट बनाये रखता है। भोजन से तात्पर्य केवल अन्न ग्रहण से नहीं, उन सब पदार्थों से है, जो हम अपने शरीर को देते हैं। इस व्यापक अर्थ में हम इसे आहार कह सकते हैं। विशेषज्ञों ने हिसाब लगाया है कि चालीस सेर भोजन से एक सेर रक्त बनता है। शरीर में संचार कर रहे रक्त का अधिक भाग मार्ग में ही भस्म होकर पसीने और श्वास द्वारा शरीर से बाहर निकलता रहता है। शेष रक्त पांच-2 दिन के अन्दर से मांस, अस्थि, मज्जा और रज-वीर्य में परिवर्तित होता रहता है। तीस दिन में चालीस सेर भोजन से दो तोले वीर्य बनता है। जो लोग वीर्य की रक्षा नहीं करते, वे रोगी और दुर्बल रहते हैं। प्राणायाम, व्यायाम और वीर्य रक्षा के बल पर शरीर यात्रा सुचारु रूप से की जा सकती है।

(क्रमशः)

लुधियाना में श्री सरदारी लाल जी का सम्मान



आर्य समाज हबीबगंज अमरपुरा लुधियाना के वार्षिक उत्सव पर प्रमुख आर्य नेता श्री सरदारीलाल जी आर्य रत्न सभा मन्त्री को सम्मानित किया गया उनके साथ श्री आशानन्द आर्य श्री अश्विनी कुमार शर्मा डा मनचन्द भारद्वाज दीवान राजेन्द्र कुमार वेद प्रकाश महाजन खड़े हैं।



श्री सरदारी लाल आर्य रत्न सभा मन्त्री को दीवान राजेन्द्र कुमार अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए समाज के प्रधान आशानन्द आर्य तथा डा मनचन्द भारद्वाज खड़े हुए हैं।



समारोह के अध्यक्ष श्री [illegible] कुमार एडवोकेट का समाज के प्रधान आशानन्द आर्य स्वागत करते हुए दीवान राजेन्द्र कुमार व भूषण महाजन, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, सभा मन्त्री, श्री [illegible] साथ में दिखाई दे रहे हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के स्नातकों के लिए आवश्यक सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिक्षा परिषद् के लिए 2 स्नातकों तथा 1 स्नातिका का निर्वाचन तथा विद्या-सभा के लिए 3 स्नातक प्रतिनिधियों का निर्वाचन होना है। इसके लिए कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उन स्नातकों से पंजीकरण हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित करता है जिन्हें इस विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातकोत्तर, पी. एच डी उपाधि प्राप्त किए 5 वर्ष हो चुके हैं।

अतः वर्ष 1982 तक उपाधि प्राप्त महानुभाव निम्न प्रपत्र भरकर पंजीकरण हेतु शुल्क 5 रु सदस्यता शुल्क 2 रु वार्षिक अथवा आजीवन शुल्क 25 रु आवेदित मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर सहित दिनांक 30 जून 1987 तक अधोहस्ताक्षरी के नाम प्रेषित करें। उक्त शुल्क अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में नकद भी जमा कराया जा सकता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

दिनांक 15 5 1987

डा वीरेन्द्र अरोड़ा
कुल सचिव

नोट जिन स्नातकों ने वर्ष 1987 के विज्ञापन के आधार पर आजीवन शुल्क 25 रुपये जमा कराया है उनके अतिरिक्त प्रत्येक स्नातक को जो पंजीकरण कराना चाहते हैं सदस्यता शुल्क जमा कराना होगा।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पंजीकृत स्नातक स्नातिकों के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना-पत्र

1—नाम
2—पिता का नाम
3—विश्वविद्यालय पंजीकरण क्र
4—उच्चतम उपाधि जो गुरुकुल कांगड़ी वि वि से प्राप्त की हो
5—उक्त उपाधि प्राप्त करने का वर्ष
6—अनुक्रमांक जिससे उक्त उपाधि प्राप्त की
7—मनीआर्डर, पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद जमा किये गये धन का विवरण जिसके द्वारा वांछित शुल्क जमा किया गया
8—वर्तमान पता व्यावसायिक विवरण सहित

मैं यह प्रमाणित करता हूं कि उपर्युक्त तथ्य सत्य हैं। अतः मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पंजीकृत स्नातक के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना करता हूं।

स्थान — हस्ताक्षर
तिथि पता

आवश्यक सूचना

आपको यह सूचित किया जाता है कि आर्य युवक सभा की [illegible] करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब [illegible] समिति की मीटिंग जालन्धर में हुई थी जिसकी रिपोर्ट पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में विचार करनी होगी है। [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस विषय में ठोस निर्णय नहीं लेती तब तक प्रान्त स्तर पर कार्यकारिणी गठित करने का कार्यक्रम स्थगित किया जाता है।

इसलिए 13-6-1987 रविवार प्रातः [illegible] बजे [illegible] महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में जो युवक सम्मेलन [illegible] था, उसे स्थगित किया जाता है।

—[illegible]
[illegible]

धर्म शिक्षा परीक्षा परिणाम

आर्य विद्या परिषद् पंजाब के तत्वावधान में सम्वत् 2043 में सम्पन्न हुई धर्म शिक्षा परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों के रोल नम्बर नीचे दिये जा रहे हैं। इस बार धर्म प्रवेशिका परीक्षा का परिणाम 90.52 प्रतिशत, धर्माधिकारी परीक्षा का परिणाम 79.15 प्रतिशत और धर्म ज्ञानी परीक्षा का परिणाम 88.68 प्रतिशत रहा है। तीनों परीक्षाओं में सर्वप्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले मेधावी परीक्षार्थियों का विवरण निम्न प्रकार है :—

धर्म प्रवेशिका परीक्षा

स्थान	रोल न.	नाम परीक्षार्थी व विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	667	कु. पूजा सुपुत्री श्री रामगोपाल, श्री आत्मानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर, नवांशहर	76
द्वितीय	603	कु. कमलजीत सुपुत्री जसवन्तसिंह लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय संगरूर	75
तृतीय	574	कु. प्रिया सुपुत्री श्री अमन सेठ आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल करतारपुर	74

धर्माधिकारी परीक्षा

स्थान	रोल न.	नाम परीक्षार्थी व विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	2086	सोम कुमार सुपुत्र श्री निरञ्जनदास एस. एन. आर्य हाई स्कूल तपा	106
द्वितीय	2087	मनोज कुमार सुपुत्र श्री महावीर प्रसाद एस. एन. आर्य हाई स्कूल तपा	105
तृतीय	2613	कु. कमलेश सुपुत्री श्री धनप्रकाश शर्मा ज्वालापुर आर्य इण्टर कालेज ज्वालापुर	101

धर्म ज्ञानी परीक्षा

स्थान	रोल न.	नाम परीक्षार्थी व विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	3828	कु. अनीता शर्मा सुपुत्री श्री जगदीशराम डब्ल्यू. एस. आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल नवांशहर	105
द्वितीय	3822	हरप्रीत कौर सुपुत्री जगमोहन सिंह शिवदेवी गर्ल्ज हाई स्कूल, जालन्धर	104
तृतीय	3626	परमजीत सुपुत्री हरनामसिंह आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भठिण्डा	103

धर्म प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

501 से 607, 9 से 16, 18 से 33, 36 से 40, 42 से 51, 53, 55, 57 से 81, 83 से 86, 688 से 705, 7 से 44, 46, 47, 49 से 59, 93 से 99, 801 से 46, 48 से 70, 72 से 75, 877 से 912, 14 से 37, 39, 40, 43 से 58, 60, 62 से 75, 77 से 80, 983 से 1058, 60 से 67, 69 से 72, 75 से 8, 91, 92, 94 से 97, 99, 1104 से 26, 28 से 72, 74 से 76, 1178 से 1205, 8 से 15, 20, 21, 24, 1226 से 1346, 48 से 85, 1387 से 1413, 15 से 20, 22 से 28 तक।

धर्माधिकारी परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

2001 से 4, 6 से 15, 17 से 20, 22, 24 से 26, 28 से 45, 47, 49, 50, 52, 55 से 58, 60, 62 से 70, 72, 73, 75 से 95, 2097 से 2105, 7, 10, 13 से 21, 23 से 26, 29, 36 से 38, 40 से 54, 61 से 63, 66, 71, 72, 74 से 77, 80, 81, 83, 85 से 91, 93, 95 से 98, 2200, 3 से 11, 15 से 18, 20, 21, 23 से 27, 29 से 33, 39, 43, 45, 48, 49, 55, 58 से 60, 62 से 64, 66 से 69, 73, 74, 76 से 78, 81 से 83, 85, 90 से 92, 95 से 98, 2300, 2, 3, 5 से 14, 17, 19 से 21, 26 से 29, 31, 34, 37 से 44, 46 से 56, 59, 60, 63 से 66, 68, 71 से 75, 77, 78, 80 से 84, 86 से 95, 97, 2399 से 2406, 8 से 14, 16 से 23, 25 से 27, 30 से 32, 34, 35, 39 से 66, 68, 70 से 78, 80 से 85, 87, 89 से 94, 2496 से 2501, 3 से 73, 75 से 80, 2582 से 2601, 3, 4, 6 से 21, 24 से 36, 38 से 41, 43 से 46, 48, 50, 51, 53, 55, 56, 58 से 67, 2669 से 2708, 10 से 13, 15, 16, 19 से 22, 24 से 26, 28, 29, 31, 33 से 36, 38 से 42, 45, 48, 49, 52 से 57, 60, 61, 65 से 71, 73 से 84, 86, 87, 89, 92, 93, 2794 से 2803, 5 से 37 तक।

धर्म ज्ञानी परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

3501, 3 से 13, 15 से 27, 29 से 32, 34 से 66, 68 से 72, 74 से 78, 80 से 84, 86, 90, 3592 से 3601, 8, 9, 11 से 16, 18 से 20, 22 से 27, 29 से 39, 41, 44, 47 से 51, 53 से 66, 68 से 92, 3696 से 3709, 11 से 14, 16, 18, 19, 21, 23 से 26, 28 से 32, 3734 से 3807, 9 से 13, 15 से 62 तक।

समस्त परीक्षाओं में सर्वप्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आए परीक्षार्थियों को माता शामा देवी स्थिर पारितोषिक निधि से नकद पारितोषिक दिया जाएगा।

—धर्म प्रकाश दत्त रजिस्ट्रार
आर्य विद्या परिषद् पंजाब जालन्धर

(4 पृष्ठ का शेष)

अन्य प्रकार के विवरणों को देखना पड़ा, जिनमें प्रसंगोपात्त दयानन्द का उल्लेख या चर्चा हुई थी। मुखोपाध्याय जी के परिश्रम और अध्यवसाय का अनुमान तो इसी बात से लगाया जा सकता है— उन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य 15 वर्ष दयानन्द की जीवनी के उपादानों का संग्रह करने में लगाये। इस कार्य में जो धनराशि व्यय हुई, वह तो अलग बात है। उन्हें इसी बात का खेद रहा कि उनके एतद्विषयक प्रयत्नों में आर्य समाजों का कोई विशेष योगदान नहीं रहा। देवेन्द्र बाबू धनाढ्य व्यक्ति नहीं थे। स्वलिखित पुस्तकों की बिक्री से जो आय होती, वही उनकी जीविका का मुख्य स्रोत थी। तथापि दयानन्द चरित विषयक तथ्यों का संग्रह करने में उन्होंने जो लगन, पुरुषार्थ तथा परिश्रम किया वह सर्वथा स्तुत्य है। यही कारण है कि वे चरितनायक विषयक उस समय तक अज्ञात, अल्पज्ञात अथवा अन्यथा ज्ञात तथ्यों की सही जानकारी प्राप्त करने में सफल हुए।

देवेन्द्रनाथ ने स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में जिन विशिष्ट तथ्यों का उद्घाटन किया, उनमें पिता के नाम की सही जानकारी तथा जन्म स्थान का निर्णय महत्वपूर्ण है। प. लेखराम ने इस सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त करते हुए मोरवी नगर को उनका जन्म स्थान तथा उनके पिता का नाम 'अम्बाशंकर' ठहराया था। परन्तु एकाधिक बार काठियावाड़ का भ्रमण करने तथा सम्बन्धित अनेक व्यक्तियों से मिलने के पश्चात् देवेन्द्रनाथ को यह निश्चय हो गया कि मोरवी राज्य के अन्तर्गत "टंकारा" ग्राम ही दयानन्द की जन्म भूमि है तथा उनके पिता के करसन जी लाल जी तिवारी (त्रिवाड़ी) । इस प्रकार जीवन चरित लेखन के उपयोग में आने वाली सम्पूर्ण सामग्री को एकत्रित करके बनारस में लेखन कार्य आरम्भ करने लगे। वे अभी भूमिका तथा चार अध्याय ही लिख पाए थे कि 10 जनवरी 1917 को उन का बनारस में ही निधन हो गया।

यह एक दैव दुर्विपाक ही था कि दयानन्द के जीवन को समग्र रूप से लिखने में न तो प. लेखराम को ही सफलता मिली और न देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ही इसमें कृतकार्य हो सके। देवेन्द्र नाथ के दिवंगत हो जाने पर आर्य समाज के एक अन्य सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी ने जीवन लेखन का कार्य अपने हाथों में लिया। उन्होंने भी निरन्तर पांच वर्षों तक अनेक स्थानों पर भ्रमण कर स्वामी जी से सम्बन्धित अनेक बातों का पता लगाया। काशी में देवेन्द्रनाथ द्वारा संग्रह की गयी सामग्री को भी देखा, तत्पश्चात् वे जीवन चरित लेखन में प्रवृत्त हुए और उनके द्वारा लिखित स्वामी जी का यह जीवन वृत्तान्त 'श्री मद्दयानन्द प्रकाश' के नाम से 1975 वि में प्रकाशित हुआ। 'दयानन्द प्रकाश' को लिखने में लेखक का कुछ भिन्न ही अभिप्राय था। वे इसे ऐतिहासिक कृति बना कर चरितनायक के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति के भाव उत्पन्न करने वाली काव्यात्मक कृति का रूप देना चाहते थे। फलतः इस ग्रन्थ में जैसी भाषा और शैली प्रयुक्त हुई है, उसके कारण यह जीवन चरित भी एक उच्चकोटि का गद्य काव्य बन गया है। लेखक की अपने कथा नायक के प्रति जैसी अविचल श्रद्धा और भक्ति थी, उसके अनुसार यह स्वाभाविक ही था। भाषा सौन्दर्य शैली लालित्य तथा अभिव्यञ्जना कौशल की दृष्टि से श्रीमद्दयानन्द प्रकाश' दयानन्द के चरित वाङ्मय में ही नहीं, अपितु हिन्दी साहित्य में भी अपना वैशिष्ट्य रखता है।

गायत्री महायज्ञ एवं संगीत सम्मेलन

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से दिनांक 10 5 87 रविवार को चार कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। इस यज्ञ मे लगभग दो दर्जन यजमान दम्पतियो ने पवित्र आहुतियां दी। इस महायज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के प्रसिद्ध युवा विद्वान प सूर्यपाल शास्त्री एम ए थे। इनका साथ प सुरेन्द्र कुमार शास्त्री दे रहे थे।

इस महायज्ञ को सफल बनाने का श्रेय आर्य युवक सभा लुधियाना के कर्मठ कार्यकर्ताओ एव आर्य समाज दयानन्द बाजार के सभी अधिकारियो को जाता है। इसके पश्चात संगीत सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। वेद प्रचार भजन मण्डली, के साथ ही श्री रामरखा जी, श्री सुरेश पाण्डय जी, श्री महताराम जी, एव आयुष्मान विकास बत्रा के भजनो ने सब का मन मोह लिया। संगीत के मधुर वातावरण की शोभा श्री रोशनलाल जी शर्मा के शानदार मच सचालन से और बढ गई। —सुरेश चड्ढा

आर्य समाज की हिन्दी कविता को देन

दयानन्द शोध पीठ, पजाब विश्वविद्यालय से आर्य समाज की हिन्दी कविता को देन विषय पर शोध प्रबन्ध पी एच डी उपाधि हेतु स्वीकृत।

चण्डीगढ 5 मई आर्य जनता को यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज की हिन्दी कविता को देन तथा ऋषि दयानन्द की विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण विषय पर पजाब विश्वविद्यालय ने श्रीमती वीणा कला को पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया है। श्रीमती कला ने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक भारतेन्दु काल से लेकर अब तक के हिन्दी काव्य पर आर्य समाज की विचारधारा के प्रभाव का समीक्षात्मक मूल्यांकन किया है। इसी प्रसग मे उन्होने ऋषि दयानन्द के जीवन को लेकर लिखे गये अनेक काव्य ग्रन्थो तथा आर्य समाजी विचार धारा मे दीक्षित हिन्दी कवियो के काव्यो का भी सूक्ष्म परीक्षण किया है। श्रीमती वीणा कला के शोध कार्य का निर्देशन पीठ के अध्यक्ष प्रो भवानी लाल जी भारतीय ने किया था। यह उपाधि शोधकर्ती को विश्वविद्यालय के गत 7 मार्च को सम्पन्न हुए दीक्षान्त समारोह मे प्रदान की गई।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आपको सूचित करते हुए अतिहर्ष हो रहा है कि आपके प्रिय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर पो मझना (फर्रुखाबाद) के पावन प्राङ्गण मे 7 जून से 16 जून 87 तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का समायोजन किया जा रहा है। जिसमे प्रशिक्षण प्रदानार्थ योग्य शिक्षको को आमन्त्रित किया गया है। 15,16 जून को शिविर का दीक्षान्त समारोह होगा। प्रशिक्षणार्थियो को शारीरिकोन्नति हेतु योगासन, व्यायाम तथा समाज सेवा एव वैदिक कर्मकाण्ड की शिक्षा से समलङ्कृत किया जाएगा।

—आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री

प्रवेश सूचना

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) मे 1 जुलाई से 31 जुलाई तक नवीन छात्रों का प्रवेश होगा। प्रवेश की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण व उत्तम योग्यता होना आवश्यक है। यहां छात्रो को भोजन, निवास, पुस्तक, शिक्षा, तेल, साबुन आदि आवश्यक वस्तुए नि शुल्क देकर प्रशिक्षण दिया जाता है, अत वैदिक धर्म के प्रचारक बनने के अभिलाषी छात्र प्रवेश के लिये जल्दी से जल्दी आवेदन पत्र कार्यालय के पते पर भेज कर स्वीकृति प्राप्त करें, स्थान सीमित है, इसके बाद प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रो पर विचार नही किया जायेगा।

—सत्यप्रिय शास्त्री एम ए
विद्याभास्कर साहित्याचार्य

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं N.W/J.1

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 9. 24 ज्येष्ठ सम्वत् 2044 तदानुसार 7 जून 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

जब तक पंजाब में पूर्ण शान्ति स्थापित नहीं हो जाती तब तक राष्ट्रपति राज लागू रहना चाहिए

पंजाब के हिन्दुओं की अवहेलना करके यदि भारत सरकार ने अब फिर अकालियों के साथ कोई समझौता किया तो पंजाब की हिन्दू जनता को वह मान्य नहीं होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में दिनांक 31-5-87 को पटियाला में पारित प्रस्ताव

यह अत्यन्त सन्तोषजनक स्थिति है कि पजाब मे राष्ट्रपति राज लागू कर दिया गया है। इस सभा की यह निश्चित धारणा है कि यह प्रबन्ध लगभग डेढ वर्ष पहले कर देना चाहिए था, उस बीच जो सैकडो निर्दोष व्यक्ति मारे गए हैं, वे सम्भवतः बच जाते। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और दूसरी सस्थाओ की ओर से बार-बार माग करने पर भी सरकार राष्ट्रपति राज लागू करने को तैयार न हुई थी। इसलिए उन सब निर्दोष व्यक्तियो की हत्याओ की जिम्मेदारी से वह नहीं बच सकती। फिर भी हर्ष का विषय है कि अन्त मे सरकार को भी अपने कर्त्तव्य का अनुभव हुआ है और उसने बरनाला सरकार को समाप्त करके प्रदेश के शासन को अपने हाथ मे ले लिया है। परन्तु पिछले दिनो जब प्रधानमन्त्री ने यह कहा था कि यह प्रबन्ध थोडे समय के लिए ही है, उससे एक बार फिर पजाब मे निराशा व अनिश्चितता फैल गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्रीय सरकार अपने ऊपर कोई भी दायित्व लेने से घबराती है और जब जब कि उसने एक साहसी कदम उठा ही लिया है, उसमें से निकलने का प्रयास कर रही है।

इस सभा का यह निश्चित मत है कि जब तक पजाब मे स्थिति पूर्णतया सामान्य नहीं हो जाती और जब तक आतकवाद और उग्रवाद पूर्णतया समाप्त नहीं हो जाता, उससे पहले राष्ट्रपति राज को समाप्त करना केवल पजाब के साथ ही नहीं, देश के साथ भी द्रोह होगा और उसके परिणाम पहले से भी अधिक भयकर हो सकते हैं। आज पजाब मे जो भी व्यवस्था चल रही है, इसे हम पूर्णतया सन्तोषजनक तो नही कह सकते, फिर भी हम यह समझते हैं कि जिन महानुभावो के हाथ मे आज शासन की बागडोर है, वे पूरी निष्ठा, साहस और कर्त्तव्य परायणता के साथ अपने दायित्व को निभा रहे हैं। पजाब का वातावरण पहले से बहुत अच्छा हो गया है, इस लिए भी यह आवश्यक है कि राष्ट्रपति राज उस समय तक लागू रखा जाए, जब तक कि पजाब मे पूर्णतया शान्ति स्थापित नही हो जाती और साम्प्रदायिक वातावरण फिर उसी प्रकार पारस्परिक प्रेम और सदभावना से प्रेरित न हो जाए, जैसा कि आज से पाच वर्ष पहले था। जो कुछ पिछले पाच वर्षों मे हुआ है, उसके कारण पजाब को जो सामाजिक और आर्थिक हानि पहुची है, उसकी क्षति पूर्ति आसान होगी और उसमे भी अभी कुछ समय लगेगा, जब तक स्थिति पूर्णतया सामान्य न हो जाती और लोगों मे जो विश्वास की भावना पैदा हुई है, उसकी सम्पुष्टि नहीं हो जाती, उस समय तक राष्ट्रपति राज वापस नहीं होना चाहिए।

इसी के साथ यह सभा सरकार को चेतावनी भी देना चाहती है कि पजाब की समस्या का समाधान ढूढते समय यदि पहले की तरह पजाब के हिन्दुओं की अवहेलना की गई और उनसे बिना पूछे कोई समझौता अकालियो के साथ किया गया तो यह पजाब की हिन्दू जनता को मान्य न होगा और उसका जो भी परिणाम निकलेगा, उसकी सारी जिम्मेदारी सरकार पर होगी। भारत सरकार को पिछले पाच छह वर्षों के अनुभव के आधार पर ही कोई अगला पग उठाना चाहिए। उग्रवादियो ने पजाब मे पिछले 5-6 वर्षों मे जो ऊधम मचाया है, इससे सबसे अधिक हानि पजाब के हिन्दुओ को पहुची है। न केवल सैकडों मारे गए हैं, हजारो ही अपना घर बाहर छोडने पर विवश हो गए थे। साथ ही व्यापार और उद्योग को जो

(शेष पृष्ठ 6 पर)

राष्ट्रवादी निर्भीक नेता चौ. चरणसिंह जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की 31-5-87 की अन्तरंग सभा में पारित प्रस्ताव

विख्यात आर्य समाजी और भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री चौ चरणसिंह के देहावसान से भारत की राजनैतिक व्यवस्था मे एक ऐसा स्थान खाली हो गया है, जिसकी क्षति पूर्ति बहुत कठिन होगी। चौ. जी एक उच्चकोटि के राष्ट्रप्रेमी और गरीब जनता के समर्थक थे। उनकी सब से बडी विशेषता यह थी कि वे कभी भी अन्याय और अनैतिकता के आगे नही झुकते थे। वे स्पष्टवादी थे और जो कुछ उन्होंने कहना होता था, निर्भीकता से कह दिया करते थे। अपना सारा जीवन उन्होंने देश की सेवा मे विशेषकर समाज के निम्न वर्ग के उत्थान मे लगा दिया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त होने के कारण वे जाति बिरादरी मे विश्वास नही रखते थे। वे अपने आपको दयानन्दी कहने मे गर्व अनुभव किया करते थे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री, भारत के गृहमन्त्री, और फिर प्रधानमन्त्री के रूप मे उन्होने प्रशासन के नैतिक स्तर को ऊचा करने का पूरा प्रयास किया था। ऐसे महामानव आजकल हमारी राजनीति मे बहुत कम मिलते हैं। वे उन लोगो के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का काम करते थे, जो कई बार अपने ठीक रास्ता से भटक जाते थे।

श्री चौ चरणसिंह के देहान्त के साथ भारत का एक महान् नेता इस ससार से उठ गया है। भिन्न-2 सस्थाए उनके कई स्मारक बनाने का प्रयास करेंगी। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की यह निश्चित धारणा है कि उनका वास्तविक स्मारक एक ही हो सकता है और वह यह कि समाज के निम्न वर्ग को उठाने के लिए और आर्थिक रूप से विषमता को समाप्त करने के लिए एक ऐसा अभियान प्रारम्भ किया जाए, जो देश को उसी तरफ आगे ले जाये, जिधर चौ.चरणसिंह इसे ले जाना चाहते थे। यह सभा आदरणीया श्रीमती गायत्री देवी जी और उनके सारे परिवार को अपनी सम्वेदना प्रकट करती हुई परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करती है कि वे चौ. जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार को यह शक्ति दे कि वे इस वियोग को सहन कर सकें।

जन्म-मरण की उलझन—१४

भारतीय संस्कृति और पितृस्मरण

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

मच पर विराजते ही महात्मा जी ने कहा, श्रोताओ ! आज हम इस प्रसग की चर्चा अपनी सस्कृति और परम्परा के परिप्रेक्ष्य मे करेंगे।

यह एक सवमान्य बात है कि ससार मे भारतीय सस्कृति प्राचीन और उत्कृष्ट है। तभी तो कहा है सा प्रथमा सस्कृति विश्ववारा यजु 7 14, सस्कृत भाषा की 'दिव्य ज्योति' पत्रिका अक्तूबर 1982 मे एक लेख प्रकाशित हुआ, कि लन्दन के केन्सिग्टन मे तत्वज्ञान चर्चमण्डल पिछले बत्तीस वर्ष से चल रहा है। वहा के अग्रेज सदस्यो ने एक लम्बे विचार विनिमय से यह निश्चय किया, कि ससार की सभी सस्कृतियो मे से वैदिक सस्कृति सर्वश्रेष्ठ है। उस मण्डल के सभी सदस्य सस्कृत पढते हैं। उन की ओर से एक स्कूल चल रहा है, जिसकी कुछ श्रेणियो मे सस्कृत पढाई जाती है। वे सभी शाकाहारी हैं।

स्वीकृति स्वीकार, आकृति आकार की तरह सस्कृति और सस्कार दोनो शब्द एक ही अर्थ वाले हैं। ये दोनो शब्द एक ही अर्थ वाले हैं। ये दोनो शब्द सम पूर्वक कृ धातु से बनते हैं, जो कि पवित्रता, स्वच्छता, सफाई के अर्थ मे प्राय प्रयुक्त होते हैं। वस्त्रो का सस्कार कर दो, मकान का सस्कार करो आदि वाक्यो मे मुख्य रूप से स्वच्छता की प्रक्रिया के अर्थ मे सस्कार शब्द अधिक चलता है। अत किसी के दोष को हटा कर उसमे गुण भरने का नाम सस्कार है। इसीलिए आत्मा, मन, इन्द्रिय और शरीर के दोषो को हटाकर उन मे गुण, बल आदि भरने और प्रेरणा देने व से होने से ही गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के कर्मकाण्ड को सस्कार शब्द से स्मरण किया जाता है। मनु आदि स्मृति ग्रन्थो और गृह्य सूत्रो मे सस्कारो के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन मिलता है। सामान्य लाभ की दृष्टि से ये शब्द विशेष महत्वपूर्ण हैं। काय शरीर सस्कार पावन प्रेत्य चेह च (मनु 2,26) तथा ब्राह्मीय क्रियते तनु 2,28—कि इन सस्कारो, व्रतो, यज्ञो से यह शरीर अध्यात्मसिद्धि, ब्रह्मप्राप्ति के योग्य होता है। कुछ सस्कार शरीर से, तो कुछ मन, आत्मा की सशुद्धि से सम्बन्ध रखते हैं। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने सस्कार विधि के प्रारम्भ मे कहा है—

शरीरात्मविशुद्धये—॥3॥
सस्कारैस्सस्कृत यद्यन्मेध्यमत्र
तदुत्तमम ।4।

शरीर को जलाना अन्तिम सस्कार अन्त्येष्टि होने से सस्कार शब्द आज जलाने अर्थ मे भी चलता है।

सस्कार शब्द एक अन्य अर्थ मे भी अभिहित होता है। हमारे सामने जो बात या घटना घटित होती है, उसके पश्चात उसका मन पर जो प्रभाव होता है, उस को भी सस्कार कहते हैं। जैसे कि एक वस्त्र मे चमेली के फूल या फरनैल की गोलिया रखने के कुछ देर बाद वस्त्र पर जो एक विशेष छाप छा जाती है, जिसे वासना, भी कहते हैं। इसी अवश्य सूक्ष्म प्रभाव का नाम भी सस्कार है। जैसे छोक —सस्कार से दाल पर एक स्पष्ट प्रभाव होता है और उस से दाल के गुण और स्वाद मे भी अन्तर आ जाता है। ऐसे ही सत्सग, स्वाध्याय, धार्मिक माता-पिता के विचार एव जीवन का मन पर अनोखा प्रभाव होता है। ये सस्कार जीव के साथ जन्म जन्मान्तर तक भी जाते हैं। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति पर उस की अपनी सस्कृति धार्मिक विचारधारा का एक अदृश्य सूक्ष्म प्रभाव होता है। अत व्यक्ति के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन को अच्छा, सत्य, शिव, सुन्दर बनाने की योजना ही सस्कृति है।

भारतीय सस्कृति प्राचीन होने से जहा एक परखी हुई है, वहा इस मे जीवन का सर्वांगपूर्ण रूप भी दृष्टिगोचर होता है। इस मे जीवन के पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रो, विषयो को अलग-अलग रख कर जीवन को खण्ड खण्ड रूप में नही लिया जाता। अपितु यहा रथ या मकान की तरह जीवन की सारी जरूरतो को सामने रखा जाता है। जैसे मकान केवल फर्श, दिवार, छत का नाम नहीं, अपितु इन सब का साझा नाम है। ऐसे ही भारतीय सस्कृति मे जीवन के सभी पारिवारिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रभृति पहलुओ की प्रगति, समृद्धि, सरक्षण की पूरी प्रक्रिया है।

इसीलिए ये सस्कार जीवन से जुडी हुई जरूरतो के एक-एक अग का निर्देश करते हैं। गर्भाधान, पु सवन, सीमन्तोन्नयन और जातकर्म जन्म की प्रवर्तमान प्रक्रिया के बोधक हैं, तो नामकरण-व्यवहार मे आने वाली वस्तुओ के नाम रखने की उपयोगिता को दर्शाता है। अन्नप्राशन-खान-पान की सारी प्रक्रिया का प्रतिपादक है, तो मुण्डन-बालो तथा शरीर की सम्भाल का स्मरण कराता है। यज्ञोपवीत—जीवन मे शिक्षा के महत्व उपयोगिता का प्रवर्तक है। इस प्रारम्भिक परिचय से सिद्ध होता है कि जीवन मे जिस जरूरत की जब भी अपेक्षा होती है, तभी उस-उस जरूरत के हर पहलू को दर्शाने के लिए उस उस सस्कार का विधान है। जैसे अन्नप्राशन के माध्यम से भोजन कितना, कब, कैसा लेना चाहिए? यथा समय माता पिता द्वारा यह सारी प्रक्रिया को सिखाना ही सस्कार का मूल भाव है। जैसे कि एक रेलगाडी जब अपने निश्चित स्थल से चलती है, तो रास्ते मे जो भी जकशन आता है, तब वहा उस की हर प्रकार से देखभाल की जाती है। ऐसे ही ये सस्कार जीवनयान की सम्भाल के विशेष स्थल सिद्ध होते हैं। जीवन से जुडी हुई हर जरूरत की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। अत इन सस्कारो से भी जीवन का सर्वांग रूप सामने आता है।

भारतीय सस्कृति के इस सर्वांग पूर्ण रूप को सामने रख कर जब हम प्रस्तुत प्रकरण। पितृस्मरण की दृष्टि से विचार करते हैं तो स्पष्ट होता है कि भारतीय सस्कृति के परिचय का मूल स्रोत वैदिक साहित्य ही है। अर्थात् हमारी सस्कृति, धर्म के सम्बन्ध मे वेद और स्मृतियो मे विशेष विचार किया गया है। तभी तो कहा जाता है—

वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च
प्रियमात्मन'।
एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद धर्म-
लक्षणम् ॥मनु 2,12

ऐसा ही भाव 2,6 का भी है।

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाण परम
स्मृति । मनु 1,13
वेदोदित स्वक कर्म नित्य
कुर्यादतन्द्रित. । मनु 4,14
चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः मीमासा
दर्शन 1,1,2
श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्—
रघुवश 2,2
स्वत प्रमाण परतः प्रमाणम् इत्यादि।

इसीलिए ही स्मृतियो को धर्म शास्त्र के नाम से पुकारा जाता है। श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्म शास्त्र तु वै स्मृतिः मनु 2,10।

इन स्मृति ग्रन्थो में ससार, हमारे जन्म और पारस्परिक सम्बन्धो की स्पष्ट चर्चा मिलती है।

न जाने इस ससार का चक्र कब से चल रहा है। ससार बनने (सृष्टि) और मिटने (प्रलय) को ब्राह्म दिन तथा रात का नाम देकर इस की अवधि बताई गई है। (मनु 1,35,74)।

यहा हमे न जाने कितनी बार किन-किन रूपो मे आने का अवसर मिला है। तभी तो कहा है—

मृतश्चाह पुनर्जातो जातश्चाह
पुनर्मृत ।
नानायोनिसहस्राणि मयोषितानि
यानि वै (निरुक्त परिशिष्ट—2)
आहार विविधा भुक्ता ।
पीता नाना विधा स्तना ।
मातरो विविधा दृष्टा पितर —
पितर सुहृदस्त था ॥
निरुक्त परिशिष्ट—2

बहूनि मे व्यतितानि जन्मानि तव
चार्जुन ।
तान्यह वेद सर्वाणि न त्व वेत्थ
परतप ॥गीता 4,5॥

जन्म मरण के चलते हुए इस चक्र मे से एक अवसर यह भी है जिस मे हमें इस नर तन के साथ अन्न-मूल-फूल, फल वनस्पति-खनिज-धातुओ से भरी धरती, जल, वायु, सूर्य आदि सुविधाए प्राप्त हुई हैं। जो कितनी उपयोगी हैं, यह स्वत हमारा जीवन प्रतिदिन व्यक्त कर रहा है, क्योकि इन के बिना जीवन की गाडी नहीं चलती। अत इस जीवन मे प्राप्त सुविधाओ के लिए हम। कितनो के कृतज्ञ हैं, जिन की कृपा का ही यह सारा प्रसाद है। तभी तो एक भक्त कह उठता है—हे जीवनदाता प्रभो! आप की जीवन रूपी देन कितनी अनोखी है।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

क्या हम इस चुनौती को स्वीकार कर सकते हैं–2

इस क्रम के पिछले लेख मे मैंने आर्य समाज का ध्यान उन चुनौतियो की तरफ दिलाया था जो कि इस समय हमे चारो तरफ से घेर रही हैं। परन्तु कुछ की तरफ हमारा ध्यान ही नही जा रहा, इसलिए इस विषय को हम जनता के सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा की जो बैठक 31 मई को पटियाला मे हुई थी उसमे भी इस पर विचार किया गया था और एक प्रस्ताव के द्वारा सरकार का ध्यान इस ओर दिलाया गया था।

इस चुनौती का रूप यह है कि पजाब मे कई स्थानो पर नई कब्रें बनाई जा रही हैं। पहले एक कब्र बनाई जाती है, उस पर हरे रग का कपडा डाल दिया जाता है, फिर उस पर एक छत डाल दी जाती है फिर एक हरे रग का झण्डा वहा गाड दिया जाता है। कुछ समय के पश्चात् वहा चढावा शुरू हो जाता है और धीरे-धीरे वहा अन्ध विश्वास से प्रेरित कुछ लोग आने शुरू हो जाते हैं और इन मे वह लोग भी होते हैं जो प्रत्येक प्रकार से सम्पन्न होते हैं जिन्हे धन की आवश्यकता नही होती, वह अपनी मोटर गाडी में बैठ कर वहा आते हैं और इस प्रकार धीरे-धीरे वहा एक मेला लगने लगता है।

इस सारी योजना का जो अत्यन्त आपत्तिजनक स्वरूप है वह यह कि इस प्रकार की कब्रें या तो बडी-2 सडको के किनारे बनाई जाती हैं या नदियो पर किसी पुल के पास बनाई जाती हैं या किसी रेल के पुल के पास बनाई जाती हैं। कई मिल्ट्री छावनियो के पास भी ऐसी कब्रें और दरगाहे बना दी गई हैं। प्रश्न उठता है कि यह सब कुछ कौन करा रहा है और क्या कारण है कि इस प्रकार की दरगाहे अधिकतर वहा बनाई जाती हैं जो स्थान देश की सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। जब बडी-बडी सडको के किनारे या किसी मिल्ट्री छावनी के पास इस प्रकार की दरगाहे बनाई जाती हैं तो उसका एक ही उद्देश्य हो सकता है कि हमारी सेना की गतिविधियो पर नजर रखी जा सके। हरा रग मुसलमानो का है उनके झण्डे हरे रग के होते हैं। हो सकता है कि जो लोग यह सब कुछ कर रहे हैं वह पाकिस्तान के जासूस हो। जिन्हे अपने धर्म मे श्रद्धा होती है वह मन्दिर भी बनवाते हैं, गुरुद्वारे भी बनवाते हैं वह चाहे कही बनवा दिए जाए। किसी को उन पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं होता, न कोई आपत्ति होती है गुरुद्वारो मे तो हिन्दू भी जाते हैं और मन्दिरो मे सिख भी जाते हैं। यह जो दरगाहे बनाई जा रही हैं इन पर भी कई हिन्दू जाते हैं। अन्ध विश्वास से प्रेरित होकर एक व्यक्ति कई बार ऐसी बातें भी कर बैठता है जिसके विषय में उसे यह पता नहीं होता कि उसका परिणाम क्या निकलेगा यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जो दरगाहे बनाई जा रही हैं उनका किसी सार्वभौमिक धर्म से सम्बन्ध नहीं है और फिर यह जगह-जगह बनाई जा रही हैं और विशेषकर ऐसे स्थानो पर बनती जा रही हैं जो देश की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और जिनके विषय मे सरकार को बहुत अधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने अभी तक इस ओर ध्यान नही दिया। आर्य समाज वह पहली सस्था है जिसने इसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाई है। दूसरी धार्मिक सस्थाए कभी भी इधर ध्यान नही देती। राष्ट्र रक्षा, राष्ट्रोन्नति, राष्ट्र सुधार और राष्ट्र की प्रगति के विषय में केवल आर्य समाज ही सोचता है। वह राजनीति की दलदल मे फसना नही चाहता क्योंकि उनका कोई स्वार्थ नही, परन्तु जब वह देखता है कि देश के लिए एक नया सकट खड़ा हो रहा है तो वह चुप नही रह सकता। हमारी सभा ने इन कब्रो और दरगाहो के विषय मे एक प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजा है। इसके पश्चात् हम चाहेंगे कि सब आर्य समाजें इस प्रकार के प्रस्ताव पारित करके पजाब के राज्यपाल को भेजें ताकि उन्हे पता चले कि आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जो अपने कर्तव्य को समझती है और उसका पालन कर रही है।

मैंने उन चुनौतियो का जिकर किया है जो इस समय आर्य समाज के सामने हैं। मैं पजाब के आर्य समाजियो से निवेदन करूगा कि वह यह प्रचार आरम्भ कर दें कि इस प्रकार की दरगाहें जो बनाई जा रही हैं। सरकार उन्हें रोके और विशेष कर किसी भी ऐसे स्थान पर उन्हें बनाने की अनुमति न दी जाए। जहा से किसी भी समय हमारी सेना के आने जाने की व्यवस्था हो। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि धर्म या मजहब के नाम पर कई प्रकार की जासूसी होती है और आज भी हो रही है। हो सकता है कि यह सब कुछ पाकिस्तान के जासूस ही करा रहे हो। इसलिए एक जागरूक सस्था होते हुए आर्य समाज इस विषय मे आखें बन्द कर के नही बैठ सकता उसने देख लिया है कि क्या हो रहा है और अपनी सरकार का ध्यान उधर दिलाने की कोशिश कर रहा है यह उसका कर्तव्य है राष्ट्र की सेवा करना और राष्ट्र की रक्षा करने के लिए आर्य समाज से जो भी बड़े से बड़ा बलिदान मागा जाएगा वह हमेशा देता रहा है और आगे भी देता रहेगा। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए मैंने पजाब के आर्य समाजियो का ध्यान इस नई चुनौती की ओर दिलाया है।

—वीरेन्द्र

जालन्धर में आर्य वीर दल का शिविर

कोई समय था जब पजाब मे स्थान-2 पर आर्य वीर दल के शिविर लगा करते थे जिनमे सैकडो युवक भाग लेकर प्रशिक्षण लिया करते थे। पिछले दिनो से आर्य वीर दल का कार्य कुछ ढीला सा पड गया था इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इसे पुनः सक्रिय करने के लिए कार्य आरम्भ कर दिया है। आर्य वीर दल पजाब के अधिष्ठाता श्री आशानन्द जी आर्य ने इस कार्य के लिए पजाब से बाहिर के दो शिक्षको की सेवाए एक सप्ताह के लिए प्राप्त कर ली हैं। 16 जून से 21 जून तक आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर मे यह शिविर लगाया जा रहा है। गुरुकुल करतारपुर के स अधिष्ठाता श्री सुखदेव राज जी शास्त्री जो आर्य वीर दल के चिरकाल तक शिक्षक रहे हैं वह भी इस शिविर मे अपना पूरा-2 सहयोग दे रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान मे यह शिविर लगाया जा रहा है। पजाब की सभी आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावो से प्रार्थना है कि वह प्रत्येक आर्य समाज की ओर से कम से कम दो-दो युवक प्रशिक्षण के लिए इस शिविर मे अवश्य भेजें। उनके ठहरने तथा भोजन का समुचित प्रबन्ध किया जा रहा है। इसमे भाग लेने वाले आर्य वीर अपने साथ ऋतु अनुसार वस्त्र आदि के अतिरिक्त दो निक्कर, दो सैण्डो बुनियान, चलने फिरने मे आराम देय कपडे के बूट, भोजन के लिए थाली, कटोरी, चमच तथा लोटा साथ लेकर आवें।

हमे आशा है कि इस शिविर मे भारी सख्या मे आर्य युवक भाग लेंगे और अपने इस शिविर मे पहुचने की सूचना अधिष्ठाता आर्य वीर दल, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर को शीघ्र भेज देंगे। प्रशिक्षणार्थी 15 जून को सायकाल तक जालन्धर पहुच जावें ताकि 16-6-87 प्रातः से कार्य आरम्भ कर दिया जाए। अन्य आर्य बन्धु भी इस कार्य मे अपना भोजन आदि की व्यवस्था करने मे सभा को पूरा-2 सहयोग प्रदान करें।

—सह-सम्पादक

आर्य मर्यादा का शुल्क शीघ्र भेजें

आर्य मर्यादा के ग्राहको की सेवा म निवेदन है कि वह अपना शुल्क शीघ्र अतिशीघ्र सभा कार्यालय मे भेजें। यह सभी को पता होता है कि उनका शुल्क कब समाप्त हो गया है। परन्तु फिर भी ग्राहक अपना शुल्क समय पर नही भेजते कई तो पत्र लिखने पर भी नही भेजते। इस लिए हमारी उन सभी ग्राहको से प्रार्थना है जिन्होंने अपना शुल्क अभी तक नही भेजा वह शीघ्र भेजने की कृपा करें। प्रथम जनवरी से डाक दर बढ जाने से अब आर्य मर्यादा का शुल्क 30 रुपये वार्षिक हो गया है आशा है पाठक व ग्राहक इस ओर ध्यान देंगे।

—सह-सम्पादक

हम स्वस्थ कैसे रहें ?

लेखक—प्रो. श्री धर्मवीर जी आयुर्वेदाचार्य

(गतांक से आगे)

भोजन कैसा हो ।

जैसा हमने ऊपर लिखा, भोजन में 80 प्रतिशत खारापन और 20 प्रतिशत खटाई होनी चाहिए। ऐसे भोजन को आप सात्विक कह सकते हैं। ऐसे भोजन से वात, पित्त और कफ समान मात्रा में उत्पन्न होकर शरीर को नीरोग रखने मे सहायक होते हैं। इसके विपरीत अधिक खटाई वाला भोजन तामसिक कहलाता है। ऐसे भोजन से शारीरिक मल स्वाभाविक मार्गों से बाहर जाने की बजाए मल मार्ग मे ही रुक कर सड़ने लगता है। फलस्वरूप अपच और कब्ज होकर अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते हैं। शरीर समय से पूर्व ही क्षीण होने लगता है।

यह मत खाओ, वह मत खाओ, लिखकर हम अपने पाठकों को वहमी नहीं बनाना चाहते। इसके बावजूद हानिकर वस्तुओं में से कुछ का उल्लेख कर देना अनुपयुक्त न होगा। सिगरेट और शराब का सेवन न करें। मास धार्मिक दृष्टि से तो अभक्ष्य है ही, हजम भी देर से होता है। इसे पकाने में मसाले आदि का खर्चा भी बहुत अधिक होता है। मांस भक्षण के पक्ष मे चाहे कोई कितनी भी युक्तियां दें, वास्तविकता यह है कि मनुष्य जीभ के स्वाद के लिए इसका सेवन करता है। भगवान् ने अनेक अन्य स्वादु पदार्थ पैदा किए हैं—यथा फल और मेवे। इनका इस्तेमाल करें। मांस भक्षण से बचें। इसी प्रकार खटाई के साथ गोलगप्पे खाना भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। चटनी इस्तेमाल करना चाहें तो धनिया, पुदीना और अनारदाना काम में लाएं।

हमारे देश में कुछ लोगों के भोजन सम्बन्धी विधि-निषेध बहुत कड़े हैं। व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो बहुत अधिक पदार्थों का त्याग कष्ट कर है—अपने लिए और अपने परिवार के लिए भी। इसलिए इस मामले में सन्तुलित रुख अपनाना ही ठीक है। युवा गृहस्थियों और वयोवृद्ध सन्यासियो के भोजन में अन्तर रहेगा ही। हमारी पाचन शक्ति ऐसी होनी चाहिए कि हम गरिष्ठ पदार्थ भी हजम कर सकें। सप्ताह मे एक दिन आप गरिष्ठ स्वादु भोजन ले सकते हैं। चाहे तो उस दिन सायंकाल दूध अथवा खिचड़ी ही लें, ताकि पेट ठीक रहे। उपवास डाक्टर की सलाह पर ही करें। भूख होते हुए भी अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के दिन उपवास न रखें। मनुष्य प्राय: अतियों पर जीता है—कभी तो ठूंस-ठूंस कर खाता है और कभी लम्बे-लम्बे उपवास करता है। शास्त्र कहते हैं कि हम ऋतभुक् (नेक कमाई खाने वाले), हितभुक् (हितकर पदार्थ खाने वाले) और मितभुक् (परिमित मात्रा में खाने वाले) हो। हमें शरीर में गरमी पहुंचाने वाले पदार्थ खाने चाहिए। सबसे अधिक गरमी गेहूं में होती है। जहां तक दालों का सम्बन्ध है, सबसे अधिक शक्ति उड़द की दाल में होती है। उड़द की दाल में सोंठ, हींग और काली मिर्च डालने से वह शीघ्र पच जाती है।

दूध शरीर के लिए आवश्यक है। शरीर में पहुंचकर इसका बहुत कम भाग बेकार जाता है। दूध में चूना; लोहा, विटामिन, नमक आदि पदार्थ होते हैं, जो हड्डी, दांत, मस्तिष्क आदि बनाने में काम आते हैं। दूध स्वास्थ्य और शक्ति देता।

प्राकृतिक मीठे से रक्त की सफाई होती है। खजूर, अंजीर, किशमिश, केले और गन्ने में इस प्रकार की मिठास होती है। यदि ये पदार्थ सुलभ न हों, तो भोजन के बाद थोड़ा-सा गुड़ ले लें।

जल अर्थात् अमृत

पानी दो बड़े काम करता है—1. भोजन को पचाता है और 2. कब्ज दूर करता है। पसीना, थूक और मूत्र द्वारा विष को शरीर से बाहर निकालता है। प्रात:काल खाली पेट और भोजन के एक-दो घण्टे बाद एक गिलास पानी पीना बहुत लाभदायक है। खाली पेट पिया गया पानी आध घण्टे में शरीर से बाहर निकल जाता है। भोजन करते समय बीच में थोड़ी मात्रा में पानी पी सकते हैं।

विटामिनों के सम्बन्ध में जानकारी

विटामिन छह प्रकार के होते हैं—1. विटामिन ए—दूध, दही, छाछ, बन्दगोभी और टमाटर में पाया जाता है। 2. विटामिन बी—गेहूं, चना, जौ, चावल आदि और विशेषत: उनके छिल्कों में पाया जाता है। 3. विटामिन सी—ताजे शाक, सब्जी, विशेषत: खट्टे फलों मूली, गाजर और ताजा दूध में होता है। 4. विटामिन डी—दूध और पनीर में होता है। 5. विटामिन ई—दूध और गेहूं के छान में अधिक होता है। 6. विटामिन जी—दूध में अधिक होता है।

भोजन चबा-चबा कर करें

पाचन क्रिया सुचारू रूप से हो, इसके लिए आवश्यक है कि भोजन चबा-चबा कर किया जाए। अच्छी तरह चबाने से लाल रस (लार) अधिक मात्रा में मिल जाता है। इससे भोजन शीघ्र और अच्छी तरह हजम हो जाता है। चबाने का काम दांतों का है, यदि इसे आंतों पर छोड़ दिया जाए, तो भोजन तीन-चार घण्टे तो क्या, आठ घण्टे में भी नही पचेगा। पेट खराब होने पर भोजन बहुत कम और वह भी शुष्क होना चाहिए।

भोजन आधा पेट ही करें, चौथाई भाग पानी अथवा दूध के लिए और शेष चौथाई भाग हवा के लिए छोड़ दें। भोजन प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए। भोजन में ऋतु के अनुकूल परिवर्तन करते रहना चाहिए। यदि सर्दियों में घी और मक्खन हो, तो गर्मियों में इनकी मात्रा कम करके छाछ, चावल और खीर की मात्रा अधिक कर देनी चाहिए। वैसे भी भोजन में भिन्नता रहनी चाहिए। इससे भोजन शीघ्र हजम हो जाता है।

बासा भोजन न करें। अधिक ठण्डे भोजन में आरोग्य के तत्व नहीं रहते। दो-तीन घण्टे से अधिक का रखा हुआ भोजन न करें।

भोजन करते समय चिन्ता, क्रोध आदि पैदा करने वाले विचारो को पास न फटकने दें।

भोजन के बाद दांतों को अच्छी तरह साफ कर लें। यदि दांतों के छिद्रों में अन्न का कुछ अंश फंस गया हो, तो उसे निकाल दें। दोपहर के भोजन के बाद दस-पन्द्रह मिनट बाईं करवट लेट जाए। सायंकाल के भोजन के बाद थोड़ा टहल लें। फिर दो-तीन घण्टे अध्ययन मनोरंजन आदि करके ही सोयें। भोजन के तुरन्त बाद सो जाने से भोजन अच्छी तरह हजम नहीं होता।

कुछ लोग प्रोटीन (गरमी पैदा करने वाले तत्व) प्राप्त करने की खातिर मांसाहार करते हैं। इन लोगों का विचार है कि मांस (और अण्डा भी) वनस्पति की अपेक्षा अधिक पुष्टिकर है। परन्तु यह युक्ति संगत विचार नहीं, अपितु मांस खाने के लिए बहानामात्र है। डाक्टरों ने सिद्ध किया है कि मांस में पौष्टिक तत्व अन्न की अपेक्षा कम हैं। यह तत्व—यह अंश मांस के 36 प्रतिशत में ही रहता है, जिससे पुष्टि होती है। शेष 34 प्रतिशत भाग में केवल पानी रहता है। अनाज के 100 भागों में 20 से लेकर 90 तक भागों में पुष्टिकारक तत्व रहता है और केवल 10 से 20 तक भाग में पानी रहता है। सोयाबीन में मांस की अपेक्षा प्रोटीन, चर्बी बनाने वाला अंश और कैलोरीज की उत्पादक मात्रा अधिक होती है।

प्रकृति ने मनुष्य को शाकाहारी ही बनाया है। मांसाहार प्रकृति के विरुद्ध कार्य है। प्रकृति के विरुद्ध कार्य करने वालों को हानि और कष्ट उठाने पड़ते हैं।

मांस खाने से कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। डाक्टर मैक्नायर का कहना है कि विशेष प्रकार से पाली जाने वाली मुर्गियों में 'ल्यूकासिस' नामक रोग रहता है। मुर्गा-मुर्गियों का मांस खाने से यह रोग अब धीरे-धीरे मनुष्यों में भी फैलता आ रहा है। मांस खाने से कैंसर हो जाता है और स्नायु मण्डल में खराबी पैदा होती है।

डा. ओल्डफील्ड का कहना है कि (आज यह वैज्ञानिक तथ्य निर्णीत हो चुका है कि मनुष्य आमिषभोजी वर्ग का न होकर फलाहारी वर्ग का प्राणी है। आज यह रासायनिक तथ्य सर्वविदित है, जिसका कोई खण्डन नही कर सकता कि वनस्पति वर्ग के पदार्थों में मानव जीवन के पूर्ण निर्वाह के लिए आवश्यक सभी तत्व विद्यमान हैं। मांसाहार बुढ़ापे में बहुत दु:ख देता है। दिमागी काम करने वालों के लिए तो मांसाहार बहुत ही हानिकारक है। भोजन में काली मिर्चें, काला जीरा, बड़ी इलायची दालचीनी, लौंग, हींग आदि मसाले आवश्यकतानुसार लिए जा सकते हैं। (विशेषत: सर्दियों में), लेकिन जहां तक बन पड़े, लाल मिर्चों का इस्तेमाल कम से कम करें। विवशता हो, तो हरी मिर्चों से काम चलायें।

जल और उसके प्रयोग

जीवन का मुख्य आधार जल है। जल का महत्व भोजन से भी अधिक है। जल के सही इस्तेमाल से शरीर स्वस्थ और नीरोग रह सकता है। अशुद्ध जल रोग का कारण बन जाता है।

जल शरीर के अन्दर की गरमी को दूर करता है। इससे जलन, सूजन, दर्द आदि में आराम मिलता है। यह शरीर के आन्तरिक विकारो को पानी बना कर बाहर निकाल देता है। जल की सहायता से शरीर का नाड़ी जाल ठीक काम करता है। नाड़ी जाल को ठीक रखने के लिए पानी पीना और स्नान करना बहुत आवश्यक है। रुके हुए विकारों को निकालने के लिए जल चिकित्सा और यौगिक जल क्रियाओं (वस्तिक्रिया, जलनेती आदि) की भी सहायता ली जा सकती।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

ऋषि दयानन्द के मुसलमान भक्त

खान बहादुर डा. रहीम खां

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

१९ अप्रैल 1877 को स्वामी दयानन्द जब अविभाजित पंजाब की राजधानी लाहौर पहुंचे तो उन्हें रतनचन्द दाढ़ी वाले के बाग मे ठहराया गया और बावली साहब नामक स्थान मे उनके प्रवचनो की व्यवस्था की गई। जब पौराणिको ने यहा उनके व्याख्यानो मे विघ्न उत्पन्न किया तो ब्राह्म समाज के मन्दिर मे जो अनारकली बाजार मे था, उनके उपदेश होने लगे। विरोधियो को इससे भी सन्तोष नही हुआ और उन्होंने रतनचन्द दाढ़ी वाले को इस बात के लिए विवश किया कि वह स्वामी जी को अपने स्थान से हट जाने के लिए कहे। परिणामत. स्वामी जी को जिस व्यक्ति के यहा रहना पडा वह इस्लाम का अनुयायी होने पर भी वस्तुत: मानवता का विश्वासी था। इतिहास इसे डा रहीम खा के नाम से जानता है। इन्ही डा रहीम खा ने स्वामी जी को अपना अतिथि बनाया और उस अकिंचन सन्यासी के निवास की व्यवस्था कर इन्सानियत के ऊंचे आदर्श का नमूना पेश किया।

लाहौर से प्रकाशित होने वाले पत्र वि बून्द ने इस सम्बन्ध में लिखा था, "स्वामी जी के शुभ चिन्तकों ने निवास के लिए तत्काल एक दूसरी कोठी का प्रबन्ध कर दिया। यह नई कोठी इस नगर के प्रसिद्ध डा खान बहादुर रहीम खा साहब की है कि जिनके सौजन्य और उदारता का पाठक इस बात से भली प्रकार अनुमान कर सकते हैं कि मुसलमान होने पर भी जब लोगो ने उनसे कोठी के लिए प्रार्थना की तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कोठी स्वामी जी के लिये प्रदान की। वस्तुत: खान साहब की यह एक ऐसी कृपा थी, जिस के लिये स्वामी जी के शुभ चिन्तक सदा आभारी रहेंगे। यह कोठी स्वय इतनी बडी थी और उसके आगे का चौक इतना विस्तृत था कि स्वामी जी के निवास के अतिरिक्त उनके व्याख्यान के लिये भी अत्यन्त श्रेष्ठ और उपयुक्त समझी गई।"

डा रहीम खा का विस्तृत परिचय हमे उपलब्ध नही होता। किन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व के सर्वाधिक सक्रिय और सुविख्यात लाहौर मे आर्य समाज की स्थापना भी इन्ही डा रहीम खा की कोठी मे ही हुई थी। प लेखराम रचित श्री महाराज के जीवन चरित के अनुसार जब स्वामी जी डा रहीम खा साहब की कोठी मे जो नगर के बाहर छज्जू भगत के चौबारे से लगी हुई थी उतरे थे। उस समय उन्होंने लोगो को बताया कि आर्य धर्म की उन्नति तभी हो सकती है जब नगर-नगर और ग्राम-ग्राम मे आर्य समाज स्थापित हो जावें। अत: 24 जून 1877 रविवार तदनुसार ज्येष्ठ सुदी-13, स 1934 वि के दिन लाहौर नगर मे आर्य समाज स्थापित हुआ।" आर्य समाज लाहौर के वार्षिक विवरण मे स्पष्ट अंकित है कि प्रथम सप्ताह की उपासना डाक्टर रहीम खा साहब की कोठी मे हुई और हवन भी हुआ और यहा आर्य समाज की नींव रखी गई। यह भी उल्लेख मिलता है कि स्वय डा रहीम खा आर्य समाज लाहौर के सभासद् बने थे।

इन पंक्तियो के लेखक ने स्वामी दयानन्द के शोधपूर्ण जीवन चरित "नव-जागरण के पुरोधा दयानन्द" सरस्वती मे इस प्रसग मे लिखा है, "क्या यह सुखद आश्चर्य नही है कि इस बार जिस व्यक्ति ने स्वामी जी को अपनी कोठी पर रहने के लिए आमंत्रित किया, वह और कोई नही, धर्म विषयक मामलो मे अत्यन्त सहिष्णु तथा उदार भावापन्न पुरुष डा रहीम खा थे। आर्य समाज के प्रवर्तक के उदात्त एव मानवतावादी दृष्टिकोण को हृदयगम करने मे असमर्थ व्यक्ति इस बात का अनुमान भी नही कर सकते कि दयानन्द की प्रगाढ सत्य निष्ठा ने उन्हे आर्य धर्मेतर लोगो मे भी पर्याप्त लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद बना दिया था।

(4 पृष्ठ का शेष)

जल स्वच्छ और ताजा होना चाहिए। ऐसे जल मे प्राण शक्ति अधिक होती है। बीमारी के दिनो मे पानी छानकर अथवा उबालकर पीना चाहिए। प्यास कभी न रोकें। खडे-खडे या लेटे-लेटे पानी न पियें। रात को ताम्बे के बर्तन मे पानी भर लें। सुबह उठकर दातुन-कुल्ला करने के बाद उसे पिये। कभी-कभी स्नान से पूर्व सरसो के तेल से मालिश कर लें। अन्यथा वैसे ही अपनी हथेलियो से शरीर को सिर से पैर तक रगडे। आरोग्य के लिए शीतल जल से स्नान करना अच्छा है। प्रकृति के अनुकूल न होने पर गुनगुने पानी से भी नहा सकते है। लेकिन ध्यान रहे, पानी गुनगुना ही हो। गरम नही। स्नान से बाद खुरदरे तौलिये से शरीर को सुखाए। तब कपडे पहनकर स्नानागार से बाहर निकलें।

कटिस्नान और मूत्रेन्द्रियस्नान के रूप मे जल चिकित्सा शरीर के लिए लाभदायक है। ये स्नान नियमित समय पर ही करने चाहिए। सामान्य स्नान और इन स्नानो मे दो घण्टो का अन्तर रहना चाहिए। भोजन इन स्नानो के एक घण्टे बाद करना चाहिए। जब आप जल चिकित्सा कर रहे हो, तब आपका भोजन बहुत हल्का होना चाहिए। दोनो समय चोकरदार आटे की मोटी रोटी, चावलो का माडमार भात, उबली हुई सब्जिया आदि ही लें। बेहतर तो यह रहेगा कि सुबह रोटी और उबली हुई सब्जिया लें और शाम को फल या दूध के सिवा कुछ न लें।

यहा एक बात लिख देना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं। ये विधि-निषेध रोगियो और पचास वर्ष से अधिक उम्र वालो के लिए हैं। कम उम्र वालो के लिए इस तपस्या की नौबत नही आनी चाहिए। जवानी मे आप जितना आहार लेते हैं, बुढ़ापे मे उसका एक तिहाई लेना चाहिए।

कटिस्नान और मूत्रेन्द्रियस्नान मे से कोई सा सुविधानुसार प्रात काल और दूसरा सायकाल करना चाहिए। विशेष रोगो मे दोनो साथ-साथ भी किये जा सकते हैं। यदि दोनो करने हो, तो कटिस्नान पहले करें।

जल से आतो की भी सफाई की जाती है। शरीर मे मुह से लेकर गुदा तक एक नली है, जिसे अन्न प्रणाली कहते हैं। इसके रास्ते भोजन पहले मुह से पेट मे पहुचता है, जहा यकृत् और क्लोम की सहायता से पचता है। यदि इन दोनो मे गडबडी हो जाए, तो अपच रोग प्रारम्भ हो जाता है। पेट से भोजन छोटी आत मे आता है। वहा इसका पूर्ण पाचन होता है। रस तो रक्त के रूप में बदल कर हृदय मे पहुच जाता है। और मल, जो शरीर के लिए बेकार पदार्थ है, बडी आत मे चला जाता है। यदि कुछ रस शेष रह भी जाए, तो उसे यह बडी आत सोख लेती है। यही मल शौच के रूप मे गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है। यदि किसी कारण से यह शेष मल नियमित समय से अधिक देर तक बडी आत मे ही ठहरा रहे और वहा सडने लगे, तो इस रुकावट का ही नाम कब्ज है। यह नली शरीर की मुख्य नली है। इसके ठीक रहने पर ही शरीर स्वस्थ रह सकता है।

भोजन प्रणाली मे मल दो स्थानो पर रुक सकता है और सड सकता है—एक तो मुह से पेट तक। भोजन पेट तक पहुचते हुए मार्ग मे चिपक जाता है और कुछ समय बाद सडने लगता है। यही अनेक प्रकार के रोगो की उत्पत्ति का कारण बनता है। इस भाग की सफाई दो प्रकार से होती है—गजकरणी क्रिया द्वारा और औषधियो द्वारा मल रुकने का दूसरा स्थान है बडी आत से गुदा तक। बडी आत मे अनेक छोटी-छोटी थैलिया होती है। ये थैलिया आत मे सडते हुए मल से विषैले पदार्थ को सोखकर खून के दौर मे डाल देती हैं, जिससे खून जहरीला होकर अनेक प्रकार के रोगो की उत्पत्ति का कारण बनता है। इस भाग की सफाई भी दो प्रकार से होती है—एनीमा द्वारा और औषधियो द्वारा।

(क्रमश)

पारिवारिक सत्संग

स्थानीय आर्य समाज तपा की ओर से दिनाक 25-5 87 को आर्य स्कूल के अध्यापक व भूतपूर्व मन्त्री श्री सी. मारकण्डा जी के घर पारिवारिक सत्संग किया। जिसके अन्दर सभी सदस्यो व अधिकारियो ने भाग लिया और समाज को 64 रु 75 पैंसे की दान राशि प्राप्त हुई।

—चन्दराम आर्य
मन्त्री
आर्य समाज तपा

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव

वेदों के शतकों का महायज्ञ 8 जून सोमवार से 14 जून रविवार तक प्रातः 6.30 बजे से 900 बजे तक होगा।

ब्रह्मा—श्री स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज पम्बा, (हि. प्र.)

वेद पाठी—प. सुरेन्द्र कुमार शास्त्री तथा प. सूर्यपाल शास्त्री एम. ए.

समारोह—उपसमिति—सर्वश्री रणबीर भाटिया, ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, नरेन्द्र सिंह मल्ला, रोशनलाल आर्य, सतपाल चन्द आर्य, मदनमोहन चड्ढा पवेश प्रधान जी, मन्त्री जी एवं कोषाध्यक्ष।

कार्यक्रम विवरण

सोमवार 8-6-87 वेद शतको का महायज्ञ आरम्भ अग्नि प्रज्वलित प्रातः 7 बजे द्वारा ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी आर्य वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज दयानन्द बाजार। यज्ञ 7 से 8-30 बजे प्रातः।

भजन 8-30 से 8-45 श्री सत्यपाल पथिक।

उपदेश 8-45 से 9-15 स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज

9-6-87 दिन मंगलवार

यज्ञ 6-30 बजे से 8-00 बजे प्रातः

भजन 8-00 बजे से 8-15 बजे प्रातः श्री सत्यपाल जी पथिक।

प्रवचन 8-15 बजे से 8-45 बजे प्रातः श्री सत्यपाल पथिक जी।

10-6-87 दिन बुद्धवार

यज्ञ 6-30 बजे से 8-00 बजे प्रातः

भजन 8-00 बजे से 8-15 बजे प्रातः श्री सत्यपाल पथिक।

प्रवचन 8-15 से 8-45 डा. बालकृष्ण जी।

11-6-87 दिन वीरवार

यज्ञ 6-30 बजे से 8-00 बजे प्रातः

भजन 8-00 बजे से 8-15 बजे प्रातः श्री सत्यपाल पथिक।

उपदेश 8-15 से 8-45 बजे प्रातः स्वामी सुमेधानन्द।

12-6-87 दिन शुक्रवार

यज्ञ 6-30 बजे से 8-00 बजे तक प्रातः

भजन 8-00 बजे से 8-15 बजे तक प्रातः श्री सत्यपाल पथिक

उपदेश 8-15 बजे से 8-45 बजे तक प्रातः प. निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी

13-6-87 दिन शनिवार

यज्ञ 6-30 बजे से 8-00 बजे तक प्रातः

भजन 8-00 बजे से 8-30 बजे तक प्रातः श्री सत्यपाल जी पथिक।

प्रवचन 8-30 बजे से 9-00 बजे प्रातः प. निरञ्जनदेव जी।

भजन 9-00बजे से9-30बजे तक प्रातःसुमधुर गायक विजयानन्द जी फिरोजपुर

उपदेश 9-30 से 10-00 तक स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज।

मातृ शक्ति सम्मेलन

अध्यक्ष : श्रीमती इन्दु पुरी, एम. ए. पी. एच डी. मोगा

संयोजिका : बहन कमला जी आर्या

उद्घाटन समारोह : बहन शान्ता जी गौड़, प्रधान, स्त्री आर्य समाज लुधियाना

यज्ञ : 3-30 से 4-30 बजे तक साय

उद्घाटन : 4-30 से 4-45 तक साय।	बहन शान्ता जी गौड़
भजन : 4-45 से 5-00 बजे तक साय	श्री सत्यपाल जी पथिक
उपदेश : 5-00 से 5-25 बजे तक साय	स्वामी सुमेधानन्द जी।
भजन : 5-25 से 5-40 बजे तक साय	श्री विजयानन्द जी।
प्रवचन : 5-40 से 6 00 बजे तक साय	श्री वरिन्द्रा रत्नम् वेरठ

अध्यक्षीय भाषण :

शिव संकल्प सम्मेलन

अध्यक्ष : श्री योधराज भाटिया, भाटिया आटो ट्रेडर्स लुधियाना

भजन : 8-00 से 8-15 बजे तक रात्रि	वेद प्रचार भजन मण्डली
प्रवचन : 8-15 से 8-40 बजे तक रात्रि	प. निरञ्जनदेव जी
भजन 8-40 से 8-50 बजे तक रात्रि	श्री सत्यपाल जी पथिक
भजन : 8-50 से 9-00 बजे तक रात्रि	श्री विजयानन्द जी
प्रवचन : 9-00 से 9-30 बजे तक रात्रि	श्री वरिन्द्रा रत्नम् वेरठ

14-6-87 दिन रविवार

यज्ञ पूर्णाहुति : 7-00 से 8-45 बजे तक प्रातः

भजन : 8-45 से 9-00 बजे तक प्रातः	श्री सत्यपाल जी पथिक
यज्ञशेष वितरण : 9-00 से 9-15 बजे तक प्रातः	
ध्वजारोहण : 9-15 बजे प्रातः	प्रसिद्ध समाज सेवी श्री हंसराज जी द्वारा
ध्वजगीत : 9-15 से 9-30 बजे तक	पथिक जी एवं विजयानन्द जी
आशीर्वाद : 9-30 से 10-00 बजे तक प्रातः	स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा

आर्य समाज भावी कार्यक्रम सम्मेलन

अध्यक्ष : स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती

उद्घाटन : श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भजन : 10-00 से 10-15 बजे तक प्रातः	श्री सत्यपाल जी पथिक
प्रवचन : 10-15 से 10-30 बजे तक प्रातः	पं. निरञ्जनदेव जी
भजन : 10-30 से 10-45 बजे तक प्रातः	श्री विजयानन्द जी
प्रवचन : 10-45 से 11-15 बजे तक प्रातः	श्री वरिन्द्रा रत्नम् ए. एल.बी. उत्तरप्रदेश
भजन : 11-15 से 11-30 बजे तक प्रातः	श्री सत्यपाल जी पथिक
उपदेश : 11-30 से 12-00 बजे तक दोपहर	स्वा. सुमेधानन्द जी
भजन - 12-00 से 12-15 बजे तक दोपहर	श्री विजयानन्द जी
प्रवचन : 12-15 से 1-00 बजे तक दोपहर	श्री वीरेन्द्र जी, एम.ए.प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
अध्यक्षीय भाषण : 1-00 बजे दोपहर	स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती

धन्यवाद : श्री रणबीर भाटिया जी द्वारा

ऋषिलंगर : 1-30 बजे दोपहर अध्यक्ष विलायतीराम मेहता

नोट :—मन्त्री जी को कार्यक्रम में परिवर्तन का अधिकार होगा।

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर का वार्षिक चुनाव

दिनांक 17-5-87 रविवार को आर्य समाज वेद मन्दिर, भार्गव नगर का वार्षिक चुनाव श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री अमीचन्द, वरिष्ठ उप-प्रधान—श्री कर्मचन्द, उप-प्रधान—श्री चिमन लाल, श्रीमती वीरा देवी।

मन्त्री—श्री कमल किशोर, उप-मन्त्री-श्री विशम्भरलाल, श्री सुदेशकुमार श्रीमती अमरदेवी, कोषाध्यक्ष—प. श्री मनोहरलाल, सह-कोषाध्यक्ष-श्री हंसराज प्रचारमन्त्री—प. सन्तराम, श्री सुखदेव राज, पुस्तकाध्यक्ष-श्री अशोक कुमार, स्टोरकीपर—श्री बन्सीलाल, लेखानिरीक्षक—श्री काशीराम, श्री सतपाल।

अन्तरंग सदस्य :—

श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, प. हरवंसलाल जी शर्मा, प. किशनचन्द, मिस्त्री दीवानचन्द, श्रीमती सत्या देवी, श्रीमती प्रकाश देवी, श्री हंसराज, श्री ठाकरदास जी सूबेदार, महेन्द्र पूर्णचन्द, श्री चरणदास।

—कमल किशोर
मन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्षति पहुची है। उनका अनुमान लगाना भी कठिन है कई सिख परिवारों को भी उग्रवादियों की उग्रता का शिकार होना पड़ा है। उनके साथ हमें पूरी सहानुभूति है इसीलिए हम यह चाहते हैं कि सब पंजाबियों की रक्षा और उनके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए पंजाब मे राष्ट्रपति राज उस समय तक जारी रखा जाए, जब तक कि स्थिति पूर्णतया विश्वस्त नही हो जाती। इसी के साथ यह सभा भारत सरकार विशेष कर माननीय प्रधान मंत्री और पंजाब के राज्यपाल दोनो को पंजाब की स्थिति को ठीक करने साम्प्रदायिक सद्भावना पैदा करने और पंजाब को एक बार फिर शान्ति और प्रगति की तरफ ले जाने में अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देती है। इस सभा की यह निश्चित धारणा है कि जब तक पंजाब में पूर्णतया शान्ति स्थापित न होगी, यह प्रदेश उन्नति न कर सकेगा और यदि पंजाब मे अशान्ति रहती है तो सारे देश मे शान्ति नहीं हो सकती। इसलिए सारे देश के भविष्य को उज्ज्वल और मंगलमय बनाने के लिए हमारी सरकार जो भी पग उठाएगी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सहयोग उसे मिलता रहेगा।

आर्य युवक सभा पंजाब की गतिविधियाँ

सविनय निवेदन है कि गत वर्ष मई 1986 में आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में आर्य युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिस को माननीय श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सम्बोधित किया था। आदरणीय श्रीयुत वीरेन्द्र जी ने विस्तार से युवकों का मार्ग दर्शन किया था। इस अवसर पर पंजाब स्तर पर एक दस युवकों की समिति गठित की गई थी, जिसका 23-9-86 को बरनाला में की गई मीटिंग में विस्तार करके 15 सदस्यों की समिति बनाई गई थी। आर्य युवक सभा पंजाब की कार्यकारिणी द्वारा निश्चय किया गया था कि पंजाब के विभिन्न शहरों में जाकर के आर्य युवक सभा की शाखाएं स्थापित की जाएं। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमें इस उद्देश्य में बहुत अधिक सफलता मिली है तथा हम अब तक 20 से भी अधिक शाखाएं स्थापित कर चुके हैं। महर्षि दयानन्द बाजार, फील्ड गंज, किदवाई नगर, लुधियाना, रायकोट, नंगल टाऊनशिप, बरनाला, तपा, मलेरकोटला, बहमदगढ़, संगरूर, फिरोजपुर शहर, फिरोजपुर छावनी, फाजिल्का, तलवाड़ा, दसूहा, मुकेरियां, दीनानगर, बटाला, इत्यादि स्थानों पर शाखाएं स्थापित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त भरत, घरोटा, पठानकोट, सुजानपुर, होशियारपुर, कोटकपूरा, फरीदकोट, मोगा, अबोहर इत्यादि स्थानों पर शीघ्र ही शाखाएं स्थापित होने की आशा है।

इस कार्य को तीव्र गति से बढ़ाने के लिए जिन युवकों का विशेष योगदान है उनका उल्लेख करना अति आवश्यक है। लुधियाना से सर्व श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, सुरेश चड्ढा, गरीबदास, उत्तम चन्द, रामस्वरूप मित्र, गमकोट से अशोक शर्मा, अशोक कुमार कन्नौजिया, बरनाला से रामशरण दास गोयल, सतीश सिन्धवानी, संगरूर से राजेन्द्र आर्य नंगल टाऊनशिप से इन्द्र कुमार शर्मा, नरेन्द्र जी एम. ए. फिरोजपुर से ललित कुमार, देवराज दत्ता, तलवाड़ा से मनोहर लाल आर्य, दीनानगर से श्री पृथ्वी राज जिज्ञासु, दसूहा से चन्द्रशेखर जी शास्त्री, इन सभी महानुभावों का विशेष रूप से योगदान रहा है। इनके अतिरिक्त और भी युवा कार्यकर्त्ता अपने अपने स्थान पर संगठन को मजबूत करने के लिए कार्य कर रहे हैं।

सम्मेलन समारोह एवं उत्सवों का आयोजन

आर्य युवक सभा पंजाब की विभिन्न शाखाओं के द्वारा वेद प्रचार एवं युवकों को देश की एकता और अखण्डता के प्रति जागरूक करने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। जहां परिवारों में पारिवारिक सत्संगों का आयोजन किया जाता है, वहां उत्सवों पर विशेष आयोजन भी समय-समय पर किए गए हैं। विशेषतया बरनाला में आर्य युवक सम्मेलन, महर्षि दयानन्द अन्त: स्कूल प्रतियोगिता, आर्य युवक सभा महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, शहीद-ए-आजम भगत सिंह बलिदान दिवस, आर्य युवक सभा फील्ड गंज द्वारा स्थापना समारोह, रामनवमी, आर्य युवक सभा तलवाड़ा द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, रायकोट में ऋषि बोधोत्सव, फिरोजपुर में भगतसिंह बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाए गए।

सभी शाखाओं के अधिकारियों से अनुरोध किया जाता है कि समय-समय पर इस प्रकार के आयोजन किए जाने चाहिए। अधिक से अधिक युवकों को ऐसे अवसरों पर आमन्त्रित किया जाए। हमें पूर्ण विश्वास है कि जिन शाखाओं द्वारा अभी तक इस प्रकार के कार्यक्रम नहीं बनाए गए हैं, वे शीघ्र ही अपने-अपने शहर में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे।

वेद प्रचार कार्यक्रम :—

पंजाब की विषम परिस्थितियों में वेद प्रचार के कार्य में कई प्रकार की कठिनाइयां सामने आ रही हैं। भजनोपदेशक एवं उपदेशक नहीं मिल रहे हैं। अतः युवकों को वेद प्रचार के कार्य के लिए तैयार किया जा रहा है, वहां फिरोजपुर में श्री विजय आनन्द भजन मण्डली, लुधियाना में वेद प्रचार भजन मण्डली, श्री गुरु विरजानन्द भजन मण्डली, श्री जगत पटाखा भजन मण्डली तलवाड़ा बनाई गई है। इस प्रकार से वेद प्रचार के कार्य को तेज करने के लिए हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं।

—रोशनलाल शर्मा संयोजक
आर्य युवक सभा लुधियाना

वस्त्र भेज कर सहायता करें ?

हमारा समूचा शरीर एक राष्ट्र है। जैसे किसी भी अंग पर चोट आते ही सारा शरीर तड़प उठता है। वैसे ही गुजरात से आसाम, कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारा एक राष्ट्र है। इस में हमारे गरीब भाईयों को सेवा और लोभ की आड़ में हमारे से जो बिछुड़े, बिछड़े और पिछड़े हुए हैं उनके साथ मिलाने के लिए 1984 में 3400 से ऊपर कपड़ा एकत्रित करके, उड़ीसा भेजा गया था। 1985 में 9229 कपड़े जिसमें 780 गर्म कपड़े भी थे भेजे गये और 1986 में 3300 कपड़े कपूरथला, लुधियाना, धर्मपुर आर्य समाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर, संगरूर। जबलपुर, पटियाला, धूरी और विशेष कर मोगा से सहयोग मिला है। यह सभी कपड़े प्रचार एवं परिश्रम से एकत्रित करके उड़ीसा भेजे गये। जिससे 9-2-87 को गुरुकुल आमसेना, खरियार रोड (जिला काला हाण्डी उड़ीसा) में 15 व्यक्ति और 1० फरवरी को कऊटा पाली (जिला बलांगीर उड़ीसा) में 670 कुल 854 व्यक्ति पुन: अपने धर्म में प्रवेश कर गये। अब और व्यक्ति तैयार हैं। उन्हें पुन: हिन्दू धर्म में मिलाने के लिए नया या नये जैसा कपड़ा प्रैस करके प्लास्टिक के लिफाफे में प्रेम पूर्वक दान कर अपने भाई और बहिनों को भेंट करने के लिए दीजिएगा।

नोट :—जो सज्जन एक सूती साड़ी और एक धोती बिलकुल नई देंगे मानों वह एक परिवार को अपने धर्म में प्रवेश करवायेंगे। कृपया सम्पर्क करें, बहुत-बहुत धन्यवाद।

पत्र व्यवहार का पता :

—महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी
आर्य कुटिया, धूरी—148024 (पंजाब)

आर्य समाज धूरी का वार्षिक चुनाव

10-5-87 को आर्य समाज धूरी का वार्षिक चुनाव हुआ। जिस में सर्व सम्मति से प्रधान महाशय लछमन दास जी को चुना गया और शेष अधिकारी चुनने का अधिकार भी प्रधान जी को ही दिया गया। फिर 17-5-87 को साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त पूर्व सूचना के अनुसार इकट्ठे हुए सभी जनो मे से प्रधान जी ने श्री राधेश्याम जी मोहिल को मन्त्री चुना और श्री सतीश पाल जी आर्य को कोषाध्यक्ष चुना गया। फिर अन्तरंग सभा निम्नलिखित प्रकार से बनाई गई।

प्रधान—महाशय लछमन दास जी, उप-प्रधान—महाशय प्रतिज्ञा पाल जी, उप-प्रधान—श्री चिरञ्जी लाल जी, उप-प्रधान—डा. सन्तराम जी, मन्त्री—श्रीराधेश्याम जी मोहिल, उप-मन्त्री—श्री बचनलाल जी गोयल, उप-मन्त्री एवं यज्ञ मन्त्री—श्री प्यारे लाल जी गोयल, कोषाध्यक्ष—श्री सतीश पाल जी आर्य उप-कोषाध्यक्ष—श्री प्रह्लाद कुमार जी आर्य, सदस्य—श्री सोम प्रकाश जी आर्य सदस्य—श्री वीरेन्द्र कुमार जी, सदस्य-महाशय आनन्द जी, सदस्य—श्री विनोद कुमार जी, सदस्य—श्री श्याम आर्य जी, सदस्य—श्री मोहन लाल जी, सदस्य—श्री सुशील कुमार जी, सदस्य-श्री रघुनाथ शर्मा जी, सदस्य—डा. बलदेव कृष्ण जी, सदस्य—श्री रामदेव जी बहल, सदस्य—श्री जसबीर रत्न जी एडवोकेट।

प्रधान जी ने आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल की कमेटी आर्य कालेज की कमेटी, यश चौधरी माडल स्कूल की कमेटी, दयानन्द स्पोर्टस क्लब को कमेटी, दयानन्द बुक बैंक की कमेटी, प्रचार कमेटी आदि कमेटियो के सभी सदस्यो के नाम बनाए और सभी को अपने-अपने स्थान पर कार्यरत होने के लिए आदेश भी दिया। फिर सभी आए हुए आर्यों का प्रधान जी ने धन्यवाद किया और नये चुनाव के नये बने सभी सदस्यों को बधाई भी दी फिर शान्ति पाठ के बाद सभी का एक साथ जलपान हुआ। इस प्रकार कार्यवाही समाप्त हुई।

—महाशय लछमनदास

श्री रोशनलाल जी शर्मा सचिव चुने गए

श्री रोशन लाल शर्मा संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब, सर्व सम्मति से आल इण्डिया बैंक आफिसरज ऐशोसिएशन लुधियाना शाखा के सचिव चुने गए हैं।

आर्य समाज हनुमान रोड दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन

प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी साधारण अधिवेशन एव चुनाव 17 मई 1987 को हुआ। जिसमें समाज की गतिविधियो की वार्षिक रिपोर्ट और आय-व्यय का वर्णन पढकर सुनाया गया।

अन्त मे इस समाज की कई वर्षों से चलायी आ रही परम्परा के अनुसार अधिकारियो का चुनाव सर्व सम्मति से हुआ जिसका विवरण निम्नलिखित है।

प्रधान—श्री राममूर्ति कैला

उप प्रधान—सर्व श्री हसराज चोपडा, सरदारी लाल वर्मा, रतन लाल सहदेव।

मन्त्री—श्री बैरायती लाल भाटिया

उपमन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण, विरेश बुग्गा, जातिबन्धु भाटिया, अरुण वर्मा,

कोषाध्यक्ष—श्री रिपुदमन सरीन,

पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा।

अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री राजीव भाटिया।

—के एल भाटिया
मन्त्री

शुद्धि समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के शताब्दी समारोह के अवसर पर दिनाक 17 5-87 को प्रात श्रीमान् स्वामी सर्वानन्द की अध्यक्षता मे यज्ञ कार्य आरम्भ हुआ। इस अवसर पर स्वामी वेदानन्द जी महामन्त्री हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति (हरियाणा) समालखा के प्रयत्नो से दो यवन नटो के परिवारो के 13 सदस्यो की उनकी स्वइच्छा स शुद्धि की गई—प्रोफैसर शेरासिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, स्वामी ओमानन्द, पण्डित चन्द्र स्वरूप व मागेराम भजनोपदेशक ने भी शुद्धि कार्य मे भाग लिया और स्वामी सर्वानन्द जी ने शुद्ध हुए व्यक्तियो को आशीर्वाद दिया।

—ओमप्रकाश

ईसाई पादरियों का प्रलोभन विफल

मुण्डा जाति के 600 से अधिक ईसाई हिन्दू धर्म में प्रविष्ट

श्री स्वामी धर्मानन्द जी के प्रयत्न और प्रेरणा पर राऊर केला से 70 कि मी दूर "बनालता" ग्राम पचायत में के "महुपडा" ग्राम (जिला सुन्दरगढ) मे 10, 11 मई को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर 600 से अधिक मुण्डा जाति के लोगो ने ईसाई धर्म छोड कर अपने प्राचीन हिन्दू (आर्य) धर्म को ग्रहण किया।

बहुत सघर्ष के पीछे यह शुद्धि हो पाई, यहा आर्य समाज के कार्यकर्ता समझा बुझा कर उन्हे तैयार करते। पीछे 2 ईसाई प्रचारक उन्हे फिर बहका लेते, इस प्रकार महीनो यह खेल चलता रहा। पर अन्त मे आर्य समाज के कार्यकर्ता इस ईसाई प्रभाव को दूर करने मे सफल हुए।

11 मई को मुण्डा समाज के प्रमुख एव हजारो लोगो की उपस्थिति मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे श्री विश्वकेसन शास्त्री एव श्री योगेन्द्र शास्त्री ने शुद्धि सस्कार कराया। जब आशीर्वाद प्रदान करते हुए श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने मुण्डा जाति की वीरता एव स्वाधीनता सग्राम म अपूर्व योगदान का वर्णन किया। तब सभी के नेत्रों में हर्षाश्रु भर आये।

इन लोगो को तैयार करने में श्री प वेदपाल जी एव श्री सन्त कुमार शास्त्री का विशेष सहयोग रहा। आपि दोनो का ही इस क्षेत्र मे परिचय एव प्रभाव है।

इस शुद्धि कार्यक्रम से सभी लोग बहुत उत्साहित हुए। इनमें नई चेतना की लहर फैल गई है, आशा है आगे हजारो की सख्या में शुद्धिया होगी।

—विश्वकेसन शास्त्री (उत्कल)
मन्त्री

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 10 31 ज्येष्ठ सम्वत् 2044 तदानुसार 14 जून 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

देह में जीवात्मा कहाँ है—2

लेखक—आचार्य श्री उदयवीर शास्त्री

आज्ञाकन्दी नाम .. धूसरवस्तु भूयिष्ठी कन्दी ब्रह्म गुहामुभयतो वर्त्तेते ।

'आज्ञाकन्द' नामक दो ग्रन्थिया हैं, जिनमें धूसर अर्थात् हलके पीले रग की वस्तु का आधिक्य है। ये ग्रन्थिया 'ब्रह्मगुहा' के दोनो ओर विद्यमान रहती हैं। यह आज्ञाकन्द ही हिरण्मयकोश है । इनकी आकृति मनुष्य के अगूठे के अग्रपर्व के समान होती है, अगूठे के ऊमरले नाखून वाले भाग जैसी । जब इन दोनो को आमने-सामने मिलाकर बैठाया जाए, तो इनके मध्य मे थोडा अवकाश रहता है, इसका नाम 'ब्रह्मगुहा' है इसमे एक प्रकार का गाढा सा स्निग्ध तरल भरा रहता है, यही आत्मा का निवास है। दोनो आज्ञाकन्दो के मध्य का यह अवकाश त्रिकोण सा प्रतीत होता है, इसलिए इसका एक विशेषण 'त्र्यर' दिया गया है। निश्चयात्मक सशयात्मक एव विपर्ययात्मक तीनो प्रकार के ज्ञान तन्तुओ का सम्पर्क इसी के साथ रहता है। उस की आकृति ऐसी प्रतीत होती है, जैसे तिपाटी या तीन पायो पर कोई वस्तु रखी हो, इसीलिए इसे 'त्रिप्र प्रतिष्ठित' कहा गया है। समस्त शरीर मे और कोई ऐसा अवयव नही है, जिसके साथ इस वर्णन का सामञ्जस्य हो सके ।

वेद के इस वर्णन के पूर्ण अनुरूप वर्णन छान्दोग्य उपनिषद् (8।1।1) में हुआ है। वहा है 'अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहर पुण्डरीक वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाश: तस्मिन् यदन्त: तदन्वेष्टव्य तद्वाव विजिज्ञासितव्यम् ।' अब जो यह इस ब्रह्मपुर में छोटा सा (दहर) कमलाकृति घर है, उस में अल्प (दहर:) अवकाश है, उसमे अन्दर जो रहता है, उसको समझना व जानना चाहिए । 'ब्रह्मपुर' पद सन्दर्भ मे देह का वाचक है, अथवा देह के उस अग की इकाई का नाम है, जहा आत्मा का निवास है। इस ब्रह्मपुर मे 'छोटा सा घर' हिरण्मय कोश की ओर सकेत है। उसमे अल्प अवकाश है, ये पद आज्ञाचक्र नामक ग्रन्थियो के मध्यवर्ती रिक्त स्थान की ओर सकेत करते हैं, जिसमे गाढा स्निग्ध तरल भरा रहता है, उसके उसके उन्दर जो रहता है, उसे जानना चाहिए, यह आत्म ज्ञान के लिये उपदेश है। इससे स्पष्ट होता है, कि यह आत्मा का निवास है। वेद मे हिरण्मयकोश (दहर वेश्म, छा) के जो और विशेषण दिए गये हैं, उन पर दृष्टिपात करना भी अपेक्षित है।

स्वर्ग—हिरण्मय कोश शरीर के ऊर्ध्व भाग मे अवस्थित है,इस आधार पर यह स्वर्ग कहा गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण (3।2।1।15) मे लिखा है 'ऊर्ध्व उवै स्वर्गो लोक:, उपरीव स्वर्गो लोक: ।' स्वर्ग को ऊर्ध्व स्थानीय बताया गया है । ब्राह्मण्ड मे स्वर्ग 'आदित्य' है, पृथिवी पर त्रिविष्टप (तिब्बत-कैलाश मानसरोवर के आस-पास का विस्तृत भू-भाग) स्वर्ग माना गया है, इस शरीर मे स्वर्ग मस्तिष्क का अवयवभूत यही हिरण्मय है । आदित्य मे अजर अमर देवो-किरणो का निवास है, त्रिविष्टप् मे मानव देव जाति का निवास है, इस हिरण्मयकोश में देवो-इन्द्रियो की सूक्ष्म सवेदनात्मक शक्तियो का आवास है। इसी समानता के आधार पर वैदिक साहित्य मे हिरण्मयकोश को 'आदित्य' पद से व्यवहृत किया गया है 'योऽसावादित्ये पुरुष: सोऽसावहम्' (यजु. 40।27) इत्यादि स्थलो में आदित्य पद का अर्थ मस्तिष्कगत हिरण्मयकोश समझना चाहिए। इसके आधार पर आत्मा के निवास स्थान का स्पष्टीकरण होता है।

ज्योतिषावृत—हिरण्मयकोश को ज्योति से आवृत कहा है। इसकी रचना पीताभ वर्ण वाले पदार्थों से हुई है, अत' इसके लिए यह विशेषण सर्वथा उपयुक्त है। कठ उपनिषद् (4।13) मे अगुष्ठमात्र पुरुष को धूमरहित ज्योति के समान बताया है—'अगुष्ठमात्र. पुरुषो ज्योतिरिवाधूमक' । यह अगुष्ठमात्र पुरुष का कथन उपर्युक्त आज्ञाकन्दो की ओर सकेत करता है। उनकी रचना अगुष्ठ पर्व के समान होने से और उन के मध्य अवकाश मे पुरुष का निवास होने से पुरुष को अगुष्ठमात्र कह दिया गया है। धूमरहित ज्योति के समान उसका वर्णन, उसकी पीताभ-वर्ण की स्थिति को स्पष्ट करता है।

यक्ष-आत्मन्वत्—यक्ष पद इस प्रसग मे जीवात्मा के लिये प्रयुक्त हुआ है, इस पद का प्रयोग जहा परमात्मा के लिये है, वहा इसके 'महत्' आदि विशेषणो का निर्देश विस्मृत नही किया गया। 'आत्मन्वत्' मे 'आत्म' पद का प्रयोग देह के अर्थ मे है, जिसका अर्थ होता है—देह से युक्त अर्थात् देही अथवा शरीरी।

वेद के इस समस्त वर्णन के आधार पर कोई भी विवेचक इस परिणाम पर पहुचता है, कि मस्तिष्क के अन्तर्गत पीताभ वर्ण वाले दोनो आज्ञाकन्दो के मध्य मे जो स्निग्ध गाढ तरल से पूर्ण त्रिकोण परिखाकार स्थान है, उसमे जीवात्मा निवास करता है। योगीजन इसी को ब्रह्मगुहा या ब्रह्मयोनि कहते हैं। उपनिषद् तथा अन्य साहित्य मे इसी को 'ब्रह्मपुर' अ.र 'हृद.' अ.दि पदो द्वारा वर्णन किया गया है। कविराज गणनाथ सेन ने 'प्रत्यक्ष शरीर' (भाग 3, अ 6, पृष्ठ 82) नामक ग्रन्थ मे लिखा है—

'ब्रह्मगुहा ब्रह्मयोनिर्वानाम आज्ञानाकन्दयारन्तराले मध्यरेखाया दृश्य गुहा तनुत्रिकोणपरिखाकारा । तदेव क्वचिद् ब्रह्महृदयमिति हृदयमिति वा व्यवहरन्ति प्राञ्च' ।

दोनो आज्ञाकन्दा के बीच दीखने वाला ब्रह्मगुहा अथवा ब्रह्मयोनि नामक थोडा-सा त्रिकोण परिखा के आकार मे स्थान है, उसी को प्राचीन आचार्य कहीं ब्रह्महृदय अथवा हृदय नाम से व्यवहार करते हैं । वस्तु स्थिति यह है, कि मस्तिष्क क अन्तर्गत हिरण्मयकोश अथवा आज्ञाकन्दो के मध्य जो छोटा-सा त्रिकोण रूप परिखा के अवकाश है, उसका नाम हृदय है। इसलिए वेद के वर्णन के साथ सामञ्जस्य करने पर 'अगुष्ठिमात्र: पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनना हृदये सन्निविष्ट. (कठ 6।17) अथवा 'एषोऽन्तर्हृदय आकाश: तस्मिन्नय पुरुषो मनोमय: (तै उ 6) इत्यादि उपनिषद् वाक्यो मे तथा 'हृदय चेतनास्थानम्' (सुश्रुत, शरीर 4।34) इत्यादि आयुर्वेद वचनो मे जो हृदय' पद का प्रयोग हुआ है, मस्तिष्कगत हृदय के लिये हुआ है, ऐसा निश्चित समझना चाहिए। कारण यह है, कि रक्त का आक्षेप-प्रक्षेप करने वाले हृदय के साथ इन वर्णनो का सामञ्जस्य नही बैठता।

साधारण रूप से यही समझा जाता है, कि रक्त का आक्षेप-प्रक्षेप करने वाले देहावयव का ही नाम 'हृदय' है और उसी मे जीवात्मा का निवास है। आधुनिक कतिपय तथा कथित योगीजन भी ऐसा ही मानते हैं, और उनका यह भी कहना है, कि वे अपने अनुभव से ऐसा मानते व कहते हैं, पर प्रत्यक्ष शरीर के साथ उनके इस अनुभव व कथन का ताल-मेल बैठता प्रतीत नहीं होता।

●

हम स्वस्थ कैसे रहें ?

लेखक—प्रो श्री धर्मवीर जी आयुर्वेदाचार्य

(गतांक से आगे)

मिट्टी, धूप और उपवास

मिटटी साधारण पदार्थ है, किन्तु है अमूल्य । हमारा सारा जीवन इस पर निर्भर है । सब कुछ मिट्टी से पैदा होता है और एक दिन उसी मे विलीन हो जाता है । मिट्टी सरलतापूर्वक मिल जाती है, इसलिए हम उसके गुणो पर ध्यान नही देते । सच पूछिये, तो मिट्टी ही हमारे जीवन का सार है ।

मिट्टी दो प्रकार से शरीर के काम आती है—एक तो साधारण रीति से और दूसरे असाधारण रीति से चिकित्सा के रूप मे ।

लोग मिट्टी के लाभ को न समझ कर साबुनो का प्रयोग करते हैं, जो उपयोगिता मे कम और मूल्य मे मिटटी से कही अधिक होता है । जिस मिट्टी का आप इस्तेमाल करें, वह ऐसे स्थान की हो, जहा विषैले जीव-जन्तु न रहते हो, क्योकि उनके मूत्र मे सन जाने से मिट्टी कई प्रकार के रोगो का कारण बन जाती है । शरीर पर मलने अथवा हाथ धोने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मिट्टी को कूट पीसकर छान लिया जाए, तो और भी अच्छा है । पेडू पर मिट्टी की पट्टी बाधने से सूजन, खासी और पेट व कान के दर्द मे लाभ होता है । साधारण पतले कपडे पर मिट्टी रखकर ऊपर से गरम कपडा बाध देना चाहिए । भोजन के तुरन्त पश्चात् पट्टी नही बाधनी चाहिए । फोडो पर मिट्टी की पट्टी बाधने से भी लाभ होता है । कभी कभी समय अधिक लग जाता है, इसलिए धैर्य से काम लेना चाहिए ।

सूर्य चिकित्सा भारत की एक प्राचीन प्रणाली है । सूर्य स्नान से अनेक लाभ हैं । पेट और आतो के विकार जाते रहते हैं । अपच, कब्ज, बवासीर, बहुमूत्र आदि रोगों में सूर्य स्नान लाभकर है । लकवा, सूजन, चर्मरोग और गठिया के दर्द मे सूर्य स्नान रामबाण है ।

किसी एकान्त स्थान मे (जहा नग्न रहा जा सके और वायु तेज न हो) वस्त्र बिछाकर लेट जाइये । सिर को किसी कपडे या छाते से ढक लीजिये । तात्पर्य यह है कि आपका सिर छाया मे रहे और धूप मे आपकी आखो की ज्योति को हानि न पहुचे । शुरू-शुरू मे केवल 5–6 मिनट धूप स्नान कीजिये । इस समय को बीस मिनट तक बढ़ाइये, ताकि शरीर से पसीना निकलने लगे । इसी पसीने के रूप मे मल बाहर जाता है । धूप स्नान गर्मियों मे प्रात: और सायं करें और सर्दियो मे तीसरे पहर दो और चार बजे के बीच । यह लिखने की आवश्यकता ही नही कि धूप स्नान किसी भी हालत मे लू चलते समय नही करना चाहिए ।

धूप स्नान से शरीर के विकार उखडते हैं और शरीर मे गरमी पैदा होती है । गरमी को शात करने के लिए विकारो को पेट मे लाकर मल और मूत्र के रूप मे शरीर से बाहर कर देने के लिए बन्द कमरे मे ताजा जल से जल्दी स्नान कर शरीर को तुरन्त कपडे से साफ कर लेना चाहिए । इसके पश्चात शक्ति के अनुकूल पाच मिनट स पन्द्रह मिनट तक का कटि स्नान कर लेने से रोगो का नाश होता है ।

विकारो को दूर करने की सबसे बडी औषधि उपवास है । जब मनुष्य किसी निश्चित समय के लिए भोजन छोड देता है अर्थात् कुछ भी न खाकर शरीर के अवयवो को आराम करने देता है, तब आराम की इस दशा का नाम उपवास है । उपवास से अनेक लाभ होते हैं । क्योकि उपवास से पेट को विश्राम मिलता है, इसलिए इससे पेट की शक्ति फिर से ताजा हो जाती है । रक्त शुद्ध हो जाता है, जिससे रोग की सम्भावना कम हो जाती है । शरीर के विकार नष्ट हो जाते हैं, जिससे और शुद्ध ही नही, पुष्ट भी होता है ।

हमारे देश मे स्त्री पुरुष उपवास तो रखते हैं (व्रत के नाम से), लेकिन दिन भर भूखे रह कर सायकाल या रात्रि को पेट भर कर फल और दूध ही नही, मिठाई भी खाते हैं । यह तरीका किसी भी दृष्टि से उपयोगी और ग्राह्य नही । उपवास करने से पूर्व हमें इसकी विधि जान लेनी चाहिए । (आजकल मोटापा कम करने के लिए जब किसी को उपवास कराया जाता है, तो उसे अस्पताल मे भरती किया जाता है, ताकि सब कुछ विधि सम्मत ढग से हो) उपवास दो प्रकार के होते हैं—एक से तीन दिन तक के छोटे उपवास और कई सप्ताह तक के बडे उपवास । छोटे उपवास से पूर्व सन्ध्या को हल्का भोजन (खिचडी आदि) लें । उपवास वाले दिन यथा सम्भव अधिकाधिक बार स्नान करें और हर दो घण्टे बाद नल से ले-लेकर थोडा-थोडा पानी पियें । सायकाल उबली हुई सब्जी लें । अगले दिन एनीमा ले और खिचडी खाए ।

बडे उपवास मे शुरू के तीन दिन पूर्ण उपवास रखें । इन तीनों दिनो में प्रतिदिन एनीमा लें और दिन भर में तीन बार थोडा-थोडा पानी पिए । फिर चार दिन तक प्रतिदिन तीन-बार फलो का रस, मट्ठा अथवा उबली सब्जियो का रस थोडा मात्रा मे लें । दिन मे एक बार एनीमा लें । दूसरे सप्ताह प्रतिदिन एनीमा लें । आहार मे फल या हरी सब्जी और मट्ठा लें । तीसरे सप्ताह फलो के साथ कुछ दूध भी लें । चौथे सप्ताह दिन भर में एक समय चोकर सहित आटे की मोटी रोटी और पक्की सब्जिया एव दिन मे दो बार मौसमी फल लें । यह लगभग एक मास का उपवास हुआ । यदि उपवास की अवधि न्यूनाधिक हो, तो उसी अनुपात से चारो चरणो के दिनो मे कमी-बेशी कर लेनी चाहिए ।

लम्बे उपवास सामान्यत. चरबी कम करने के लिए होते हैं । फलस्वरूप शुरू मे तो कुछ दुर्बलता अनुभव होती है, लेकिन सप्ताह भर बाद विकार नष्ट हो जाने पर शक्ति आने लगती है ।

उपवास के सम्बन्ध मे वैद्य अथवा डाक्टर से सलाह लेते रहना चाहिए । स्वय ही अपना डाक्टर बन जाना ठीक नही ।

एक महीने का उपवास वर्ष भर मे एक बार से अधिक न कर । होली अथवा दशहरे के आसपास (अर्थात् ऋतु परिवर्तन के दिनो मे) करें, तो बेहतर है । इससे शरीर मे ताजगी आयेगी, रोग पास न फटकेंगे, बुढापा दूर भागेगा और शरीर सुन्दर और सुडौल होगा ।

अपच आदि रोगो से छुटकारा कैसे हासिल करे ।

अपच की बीमारी अनेक कारणो से होती है । सबसे बडा कारण यह है कि स्वादु भोजन के लालच मे आवश्यकता से अधिक खा लेना और अभी वह पचा भी न हो, तो ऊपर से और अधिक खाद्यान्न पेट मे डाल लेना । यह आवश्यक नहीं कि भोजन का समय होते ही आप भोजन करने बैठ जाए । भोजन तभी करें, जब करारी भूख लगी हो । बिना भूख के भोजन करने से पाचन अवयव दुर्बल हो कर अपना काम करना बन्द कर देते हैं । कब्ज भी इसी कारण होती है । भोजन न पचने पर दस्त लग सकते हैं । पेचिश भी हो सकती है । थोडा बहुत व्यायाम अवश्य कीजिए । और कुछ नहीं, तो सुबह-शाम घूमने ही निकल जाइये । एक बात ध्यान में रखिये, शाम की सैर सुबह की सैर का मुकाबला नहीं कर सकती । सुबह धूल-धक्कड नहीं होता, इसलिए आप शुद्ध वायु की खातिर किसी बाग, पार्क आदि मे चले जाइये । ये स्थान 'बडे शहरो के फेफडे' कहलाते हैं ।

अपना रहन-सहन ऐसा बनाइये कि भोजन के समय आपको तेज भूख लगी हो । यह तभी सम्भव है जब आपके भोजन का समय निश्चित हो और आप का भोजन हल्का हो । रोज-रोज मिठाइया और तले हुए पदार्थ न लें । प्रात: दूध के साथ आप रस्क ले सकते हैं । ये आप को डबल रोटी अथवा पराठे से अधिक अनुकूल पडेंगे । सप्ताह मे एक दिन विशेष भोजन ले सकते हैं, सामान्यत: दाल, रोटी, चावल, सब्जी आदि ही लें । कभी-कभी दलिया, खिचडी, साबूदाना आदि हलके पदार्थ लेने से पेट ठीक रहेगा चिन्ता न करें । प्रसन्न रहें । तीसरे पहर फल ले सकें, तो अच्छा है । साराश यह कि इतने गरिष्ठ पदार्थ न लें कि आपके शरीर की सारी शक्ति उन्हें पचाने मे ही लग जाए । याद रखे कि योग और भोग साथ-साथ नहीं चल सकते और भोगो का अवश्यम्भावी परिणाम है रोग । भोजन मे नुक्स न निकालें । शास्त्रो की शिक्षा है—अन्न न निन्द्यात्, तद् व्रतम् (यह व्रत ले लें कि अन्न की निन्दा नही करनी ।)

कब्ज का कारण यह है कि पित्त की कमी के कारण रसयुक्त मल शौच वाली आत मे ठीक तरह न जाकर पेट मे ही सडने लगता है और विष बनकर दु:ख देने लगता है । भोजन से आध घण्टा पूर्व पानी पी लेना लाभकारी है । मलमूत्र का वेग न रोकें । कमर झुका कर न चलें । बैठे ही न रहें, शरीर को हिलाते-डुलाते रहें । आपका जीवन सक्रिय हो । अपच न होने दें । अधिक दिन अपच रहे, तो दस्त लग सकते हैं । इसके अतिरिक्त खटाई और लाल मिर्चों के अधिक इस्तेमाल से भी दस्त लग सकते हैं । पाचन शक्ति बिगड ही जाए, तो ऐलोपैथिक दवाइया, फ्रूट साल्ट आदि न लें । आयुर्वेदिक औषधियो का सेवन करें ।

यदि आप दुबले-पतले हैं, तो अपनी पाचन शक्ति को ध्यान मे रख कर दूध, गाय का घी और मक्खन इस्तेमाल करें, बादाम की गिरी भी लाभकारी है सूखी घी मे भी भुनी हुई । गरमियो मे बादाम की गिरी रात को पानी मे भिगो लें । सुबह नाश्ते के समय छिलका उतार कर सेवन करें ।

जौ को पानी मे भिगो कर कूटकर उसका छिल्का उतार लीजिये । यह खीर पौष्टिक होगी और बहुत गरिष्ठ भी नही होगी ।

मुटापा दूर करने के लिए पश्चिमोत्तानासन और पादहस्तासन उपयोगी है ।

पुरुषो की तरह स्त्रिया भी आसन कर सकती हैं, लेकिन मासिक धर्म और गर्भावस्था के दिनो में नहीं । भोजन के बाद और सोने से पूर्व मूत्रत्याग की आदत डालें ।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आधुनिक भारत में वेदों का महत्व

मद्रास और देहली से एक अंग्रेजी का विख्यात दैनिक समाचार पत्र "हिन्दू" प्रकाशित होता है। यह लगभग एक सौ वर्ष पुराना पत्र है और इस देश का सबसे बड़ा समाचार पत्र समझा जाता है। इसमें प्रतिदिन किसी न किसी धार्मिक व्यवस्था के विषय में एक छोटा सा लेख अवश्य प्रकाशित होता है जिसमें आज की समस्याओं पर धार्मिक दृष्टिकोण से विचार प्रकट किए जाते हैं। दक्षिण भारत में वेदों के प्रति उत्तर भारत और बाकी के देश वासियों से अधिक श्रद्धा है। यह दूसरी बात है कि वेदों के जो अर्थ वह निकालते हैं उनसे हम सहमत न हों परन्तु वेदों में उनकी जो आस्था और श्रद्धा है उससे इन्कार नहीं किया जा सकता। सम्भवतः यही एक कारण है कि दैनिक हिन्दू जैसा एक समाचार पत्र वैदिक सिद्धान्तों के विषय में समय-2 पर कुछ न कुछ प्रकाशित करता रहता है। उसने प्रथम जून के संस्करण में आधुनिक भारत में वेदों के महत्व के विषय में जो कुछ लिखा है मैं उसे पहले पाठकों के सामने रखना चाहता हूं उसके विचार निम्न प्रकार हैं :—

"हमारे धार्मिक ग्रन्थों में जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है वह अनन्तकाल से हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा संसार के सामने प्रस्तुत करने से वैसे के वैसे चले आ रहे हैं। उनके सत्य और अनादि होने में किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है परन्तु उनमें कुछ ऐसे सिद्धान्त और आदेश भी हैं जो आज की परिस्थितियों में सम्भवतः ठीक न बैठते हों और आधुनिक समस्याओं का वह समाधान प्रस्तुत न करते हों जो कि कि कुछ लोग ठीक समझते हैं। उदाहरणार्थ वेदों के अनुसार जब कोई विवाह होता है तो उस समय नव दम्पति को यह आशीर्वाद दिया जाता है कि उनकी बहुत सी सन्तानें हों परमात्मा अपने आशीर्वाद से उन्हें कई पुत्र और पुत्रियां दे। इस आशीर्वाद पर यदि हम आज की परिस्थितियों को सामने रखते हुए विचार करें तो कुछ लोग कहेंगे कि वेद हमारी आधुनिक समस्याओं का समाधान नहीं करते क्योंकि आज हमें छोटे परिवार की आवश्यकता है बड़े परिवार की नहीं और वेद में विवाह के समय नव दम्पति को आशीर्वाद देते हैं कि उनकी बहुत सी सन्तानें हों।

जिन व्यक्तियों ने वैदिक सिद्धान्तों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया है उनका कहना है कि जो कुछ वेदों में लिखा है और जो कुछ आज कहा जा रहा है इसमें कोई अधिक मतभेद नहीं है। वेद आधुनिक ग्रन्थ नहीं हैं। अनन्तकाल से यह चले आ रहे हैं। जिस युग में इनका प्रकाश हुआ था उस युग में इस देश में किसी भी वस्तु की कमी न थी यह इतना सम्पन्न और प्रगतिशील देश था कि आज की तरह उस युग के लोग खाने के लिए नहीं तरसा करते थे। वह जो चाहते थे उन्हें मिल जाता था। किसी प्रकार की आर्थिक समस्या उनके सामने न होती थी। इसलिए जब किसी का विवाह होता था तो प्रत्येक दम्पति को यही आशीर्वाद दिया जाता था कि वह अधिक से अधिक सन्तान पैदा करें उस युग में लोगों का स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा होता था इसलिए भी सन्तानोत्पत्ति पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न होता था। आजकल न तो लोगों का वह स्वास्थ्य है जो पहले हुआ करता था न वह स्मृति है जो पहले हुआ करती थी। इसलिए यदि आज यह कहा जाए कि अपनी सन्तान को सीमित रखो तो इसका अर्थ यह नहीं है कि यह वेदों के विरुद्ध है। जब वेद सन्तानों उत्पत्ति का आदेश देते हैं तो उसी के साथ यह भी कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए और अपने परिश्रम से अधिक से अधिक धनोपार्जन करना चाहिए। जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा है और धनोपार्जन भी कर सकता हो और उसके सामने कोई आर्थिक समस्या न हो तो वह अपने परिवार को यदि बड़े से बड़ा बना सके तो उस पर किसी को आपत्ति क्यों होगी।"

इसी विषय पर आगे यही समाचार पत्र लिखता है—"इस सम्बन्ध में हमें उस संवाद की तरफ भी ध्यान देना चाहिए जो भगवान राम और उनके भाई भरत के बीच उस समय हुआ था जब भरत उन्हें आयोध्या में वापिस बुलाने के लिए उनके पास गया था। उस समय भगवान राम ने अपने भाई से कहा था कि वह वही कुछ करेंगे जो उनके धर्म का आदेश है और उनके धर्म का यह आदेश है कि जो कुछ उनके पिता जी ने कहा है वही करेंगे। पिता जी ने मुझे 14 वर्ष के बनवास के लिए कहा है इसलिए मैं वापिस नहीं आऊंगा और भरत से भी कहा कि वह भी वही करेंगे जो उसका धर्म है। आज के व्यक्ति शायद यही समझेंगे कि वहां राजा रामचन्द्र का यह निर्णय उस समय देश की परिस्थितियों के अनुसार ठीक न था परन्तु वह यह भूल जाते हैं कि हमारी संस्कृति में धर्म का स्थान सबसे ऊंचा है और हमारा धर्म वही है जो हमें वेद बताते हैं। इस सन्दर्भ में राम और भरत के सम्वाद का जिक्र करते हुए लिखा गया है कि भरत ने राम से कहा कि वह स्वयं अपनी इच्छा के अनुसार अपना सिंहासन उनके लिए छोड़ रहा है। इस पर उन्हें वापिस आने मे कोई आपत्ति न होनी चाहिए। इस पर भगवान राम ने उत्तर दिया कि यह कोई सौदेबाजी नहीं है न ही कोई व्यापार है। हमें प्रत्येक स्थिति में अपने धर्म के अनुसार ही काम करना चाहिए। हमारे रास्ते में कितनी भी कठिनाईयां क्यों न आ जाएं हमें धर्म के आचार व्यवहार को किसी भी स्थिति में नहीं छोड़ना चाहिए।"

जो कुछ वेदों के विषय में इस लेख में लिखा गया है आज की परिस्थितियों को हम इस कसौटी पर परखने का प्रयास करें तो इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि आधुनिक भारत में यदि दिन प्रतिदिन हमारी सामाजिक और राजनैतिक समस्याएं बढ़ रही हैं तो उनका एक कारण यह भी है कि जो वैदिक व्यवस्था वेदों ने हमारे सामने रखी है हम उस के अनुसार अपने जीवन को नहीं बनाते। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी समस्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इधर उधर भटकने की बजाए हम वेदों का ही सहारा लें और उसमें हमारी समस्याओं का जो समाधान हमें मिले उसके अनुसार ही चलें। इसी में हमारा कल्याण है।

—वीरेन्द्र

मास्टर पूर्णचन्द जी अस्वस्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्तारेआम और वयोवृद्ध आर्य समाजी मास्टर पूर्णचन्द जी वानप्रस्थी आजकल जालन्धर के पटेल हस्पताल में दाखिल हैं। बहुत देर से उनका स्वास्थ्य ठीक नही चल रहा था इसलिए उन्होने पिछले लगभग दो मास दीनानगर मे श्री स्वामी सर्वानन्द जी के पास गुजारे थे। स्वामी जी महाराज ने आयुर्वैदिक प्रणाली के अनुसार उनका इलाज किया। जिससे उनके स्वास्थ्य मे सुखद प्रगति हो गई। परन्तु फिर मधुमेह के कारण उनकी पीठ मे और सिर के पास बड़े-2 फोड़े निकल आए जिसके कारण उन्हे जालन्धर लाना पड़ा। और पटेल हस्पताल मे दाखिल कर दिया है। इस समय भी उनकी स्थिति सन्तोषजनक नही है। हस्पताल के डाक्टर पूरी निष्ठा से उनका इलाज कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी और कर्मचारी समय-समय पर उन्हे देखने के लिए वहा जाते रहते हैं। पूर्णतया स्वस्थ होने मे उन्हें अभी कुछ समय लगेगा। परन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उनके इलाज का पूरा प्रबन्ध किया जा रहा है आशा है शीघ्र ही वह फिर से उठने बैठने के योग्य हो जाएंगे।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

शान्ति मेरी, मुट्ठी में तेरी

लेखक—श्री कांशीराम जी बावला द्वारा श्री पथिक छुटमलपुर

एक नगर में एक महात्मा रहते थे। उनका नाम था शान्ता नन्द। वास्तव में उनका स्वभाव भी उनके नाम के समान शान्त तथा सौम्य था। प्रातःकाल उनके निवास स्थान पर नित्यप्रति सत्संग होता था। काफी लोग उस सत्संग में आकर महात्मा जी के शिक्षा-प्रद उपदेशों से लाभ उठाते थे। अधिकतर उनके उपदेश भी इसी विषय पर होते थे कि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य शान्ति की प्राप्ति है। इसलिए मनुष्य को सदैव शान्त-चित्त रहना चाहिए। शान्त-चित्त रहने के साधन भी वह बताते थे। जब श्रद्धालु लोग उनके पास जाने पर प्रणाम करते थे तो वह आशीर्वाद भी यह दिया करते थे। "भगवान् आपको शान्ति प्रदान करें।"

संसार में सब प्रकार के लोग हैं, भले भी, बुरे भी। वहां कुछ ऐसे मनुष्य भी थे जो महात्मा जी का आदर सत्कार होते देख कर कुढ़ते थे। उनमें से एक ने विचार बनाया कि वह स्वामी शान्ता नन्द को नीचा दिखायेगा। क्योंकि उन्होंने व्यर्थ अपना नाम शान्ता नन्द केवल अपनी ख्याति के लिए रखा हुआ है और मूर्ख लोग उसकी शान्ति का आशीर्वाद लेने आते हैं। उसकी शान्ति के ढोंग का पोल खोला जाएगा।

ऐसा सोच कर उस व्यक्ति ने एक योजना बनाई। उसने एक छोटे से चंचल स्वभाव के लड़के को कुछ मिठाई और पैसे देकर कहा कि वह वहां जावे जहां स्वामी जी उपदेश दे रहे थे और थोड़ी दूर खड़ा होकर अपने बाएं हाथ की हथेली पर अपने दाएं हाथ की अंगुली स्वामी जी को दिखाकर चिढ़ाये और फिर भाग आये। फिर कहा कि "थोड़ी देर पीछे फिर इसी प्रकार आकर दो-तीन बार करना। जब स्वामी या लोग तुम्हारी ओर आएं तो तुम अपने घर भाग जाना।"

उस लड़के को एक तो मिठाई इत्यादि मिले थे, दूसरे चंचल होने के कारण उसे स्वयं भी यह कौतुक करना बड़ा रुचिकर प्रतीत हुआ। बस वह गया और उसने स्वामी जी को दिखा कर अंगुली चिढ़ाई। श्रोताओं की तो बच्चे की ओर पीठ थी उन्होंने उसे नहीं देखा। स्वामी जी उसे देख कर मुस्कराये। लोगों के पूछने पर कहा कि लड़का क्रीड़ा कर रहा था। लोगों ने पीछे देखा तो वह भाग चुका था। दूसरी बार फिर आकर उसने वैसा ही किया और फिर भाग गया। स्वामी जी पुनः मुस्कराये और कहा कि बच्चा था। तीसरी बार जब वह गया तो लोग सावधान थे, जब उसने अंगुली चिढ़ाई तो एक दो आदमी उसे पकड़ने के लिए उठे, किन्तु स्वामी जी ने उनको रोक कर बिठा दिया। जब लड़का भाग कर अपने घर चला गया था। कुछ आदमियों ने कहा कि हम उसके घर उसके पिता के पास जाते हैं। इस पर स्वामी जी बोले कि कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। हम तो इस बालक को धन्यवाद देते हैं कि उसने आज एक विशेष विषय व्याख्यान के लिए दे दिया है। हमारे आज के भाषण का विषय होगा "शान्ति मेरी मुट्ठी में तेरी।"

यह कह कर उन्होंने अपना उपदेश आरम्भ किया—प्यारे श्रोताओ! आप जानते हैं कि मेरा नाम शान्ता नन्द है। मैं प्रायः भाषण भी शान्ति के महत्व पर देता हूं और आप सबको आशीर्वाद भी शान्ति का ही देता हूं। मैं मनुष्य के कल्याण के लिए शान्त-चित्त बनाना आवश्यक समझता हूं। आप समझ गये होंगे कि इस बच्चे ने या तो अपनी ही चंचलता से या किसी अन्य नासमझ व्यक्ति के उकसाने पर हमें दिखाकर जो कौतुक अंगुली चिढ़ाने का किया, उसका प्रयोजन हमारी शान्ति को भंग करना था। यदि हम आवेश में आ जाते या आपको उसके घर जाने देते तो इसका अर्थ यह था कि वह बच्चा हमारे से अधिक समर्थ है जो केवल एक अंगुली से हमारी शान्ति का खण्डन करके हमें पराजित कर सकता है। ऐसी अवस्था में हमारी शान्ति वह कितनी निराधार है कि जिसको एक छोटा सा बच्चा भी हम से छीन सकता है। मैं यह तथ्य आपके सम्मुख स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हमारी शान्ति न तो इतनी क्षीण है कि उसे एक बच्चा भी तोड़-मरोड़ कर रख दे और न ही हमने वह किसी और के हाथ में दी हुई है। हमने अपनी शान्ति अपने हाथ में बड़ी दृढ़ता से रखी हुई है। वह किसी अन्य प्राणी या पदार्थ पर निर्भर नहीं है। प्रभु की कृपा से हमारी शान्ति हमारे अपने पास ही सुरक्षित है। कोई और उसे छीन नहीं सकता।

इसलिए हम आप सबको यही कहना चाहते हैं कि आप भी अपनी खुशी और अपनी शान्ति अपने हाथ में रखो। यह न हो जाए कि "शान्ति मेरी मुट्ठी में तेरी"। हमने प्रायः देखा भी है और सुना भी है कि बहुधा लोग क्या घरों में और क्या बाहर अपनी खुशी और शान्ति दूसरों के हाथ में रखते हैं। जैसे पत्नी ने यदि दाल में नमक अधिक डाल दिया या इसी प्रकार की कोई और छोटी सी भूल कर दी तो पति भड़क उठता है। किसी बच्चे से कोई वस्तु टूट गई या कोई और क्षुद्र सा अपराध हो गया तो माता-पिता क्रोध में आकर बच्चे की पिटाई करते हैं और अपनी शान्ति का नाश करते हैं। यह तो बात हुई घर की। बाहर भी यदि किसी व्यक्ति ने कोई अपशब्द कह दिया या किसी और कारण से किसी के साथ कुछ विवाद हो गया तो मानव उद्वेग में आकर शान्ति खो बैठता है और व्यर्थ रूप से अपने आपको दुखी करता है। इसका अर्थ तो यही होता है कि उन्होंने अपनी खुशी.अपनी पत्नी अपने बच्चे या किसी बाहर के आदमी के हाथ में दी हुई है। वे जब चाहें उसको छीन सकते हैं।

इसलिए प्यारे भाई और बहनों! याद रखो मनुष्य के लिए शान्ति एक बहुमूल्य पदार्थ है। उसको बनाये रखना आपका अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। उसे किसी भी अवस्था में और किसी भी मूल्य पर भंग न होने दें। जब तक जीवन है बत्माई तो चलती ही रहेगी। घरों में भी छोटी मोटी अनुचित बातें होती रहेंगी और बाहर भी कोई न कोई अपवाद विवाद होते रहेंगे। यदि आप उनके कारण.अपने मन का संतुलन हर समय खो बैठेंगे तो स्वयं ही अपने जीवन को नरक-धाम बनाते रहोगे।

मुझे अपने एक सज्जन की बड़ी रहस्य-पूर्ण बात बहुत अच्छी लगी थी। कई वर्ष हुए हम कई मित्र इकट्ठे बैठे थे। किसी विषय पर निर्णय लेना था। उस समय एक भाई ने दूसरे को सम्बोधित करके कहा कि मैं एक बात कहने लगा हूं आप उसका बुरा न मानें। दूसरा सज्जन जो कि कुछ विनोदी भी था बोला कि देख प्यारे! मैं तीन व्यक्तियों की बात का बुरा नहीं मानता एक तो छोटे बच्चे की, दूसरे मूर्ख की और तीसरे पागल की। आप बच्चे तो हैं नहीं। किन्तु यदि आप की बात अनुचित हुई तो मैं आप को शेष दो में से एक समझ कर आपकी बात का बुरा नहीं मनाऊंगा। आप बड़ी प्रसन्नता पूर्वक निर्भयता से अपनी बात कहिए। यह सुनकर पहला भाई चुप हो गया। मुझे उस मित्र की कही हुई बात भूलती नहीं। वास्तव में किसी दूसरे की कही हुई अयोग्य बात को उस सज्जन के कथनानुसार एक मूर्ख या पागल की कही हुई बात समझ कर विवाद को बढ़ने नहीं देना चाहिए और अपनी शान्ति को सतत स्थिर रखना चाहिए। भगवान आपको अपनी शान्ति और खुशी को अपने ही हाथ में रखकर भंग न होने देने की शक्ति प्रदान करें।

स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का उत्सव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार का वार्षिकोत्सव 12,13,14 जून वृक, शनि, रविवार को हो रहा है। इस अवसर पर बहां उच्चकोटि के विद्वान् सन्यासी महात्मा पधार रहे हैं बहां रविवार 14-6-87 को बहन शान्ता गौड़ प्रधाना स्त्री समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना स्वामी सर्वानन्द जी से सन्यास ग्रहण करेंगी। इसके साथ महाशय खुशहाल चन्द जी जो 100 वर्ष के हो चुके हैं। आर्य समाज की ओर से उन्हें सम्मानित किया जाएगा।

सभी आर्य बन्धु इस उत्सव में अपना-अपना सहयोग प्रदान करें।

—रणवीर भाटिया

जिला आर्य सभा लुधियाना का वार्षिक चुनाव

जिला आर्य सभा लुधियाना का वार्षिक चुनाव 7-6-87 रविवार को आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्व सम्मति से श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा को प्रधान चुना गया। इसके साथ ही श्री आत्मानन्द जी आर्य महामन्त्री व श्री ओम् प्रकाश जी पासी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

सभा प्रधान श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा को सर्व सम्मति से अन्य अधिकारीगण व अन्तरंग सदस्य चुनने का अधिकार भी दिया गया।

—आत्मानन्द आर्य
महामन्त्री

जन्म-मरण की उलझन—१४

भारतीय संस्कृति और पितृस्मरण

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

हमारा जीवन अपनी-अपनी वंश परम्परा की एक कड़ी है। पिता-पुत्र-पौत्र रूप में यह परम्परा सदा प्रचलित रहती है। यही किसी की अमरता का एक रूप है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति में जीने की इच्छा की तरह पुत्र प्राप्ति की कामना भी स्वाभाविक है। तभी तो सन्तान के कारण माता-पिता की खुशियां साकार हो उठती हैं, तब उन की हर क्रिया में उत्साह, प्रसन्नता समा जाती है। कारोबार का सारा फैलाव, कमाई उसके लिए ही प्रत्येक द्विगुणित रूप में करता है, अन्यथा उदास, निराश होकर कारोबार से हाथ समेट लेता है। इसी का एक सुन्दर चित्रण राष्ट्रभाषा हिन्दी के महान् लेखक श्री प्रेमचन्द ने 'सेवासदन' उपन्यास में मदनसिंह के माध्यम से किया है। जब सदन अपनी इच्छा से शान्ता से विवाह, रचाकर अपना अलग झोंपड़ा गंगा के किनारे बसा लेता है।

पालन-पोषण के कारण किसी को पिता शब्द से पुकारा जाता है। पालन के अनेक रूप, ढंग और साधन हैं, जैसे अन्न, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा आदि। इनमें से जो भी व्यक्ति जिस किसी प्रकार से किसी के पालन में सहायक बनता है। वह उस अंश या भाव से पिता (पितृ) शब्द से पुकारा जाता है। इसीलिए ही मनुस्मृति और निरुक्त आदि में शिक्षा देने वालों को माता-पिता कहा गया है। जैसे कि—

य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावुभौ।
स माता स पिता ज्ञेयस्तं न द्रुह्येत् कदाचन॥

मनु. 2,144 ऐसा ही भाव 148, 150, 151, 153, 169, 171 श्लोकों में दर्शाया गया तथा निरुक्त 2,1 में कहा है—य आतृणत्यवितथेन कर्णावदुःखं कुर्वन्नमृतं संप्रयच्छन्। तं मन्येत पितरं मातरं च—॥

ऐसे ही राजा को भी अनेक शास्त्रों में पिता कहा है। तभी तो लिखा है—

स पिता पितरस्तासां...रघुवंश 1,24 प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देने और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राजपुरुषों को जाने।' सत्यार्थ प्र. पृ. 142

"राजा पुरुष प्रजा के लिए सुमाता और सुपिता के समान और प्रजा पुरुष राज सम्बन्ध में सुसन्तान के सदृश वर्तकर परस्पर आनन्द बढ़ावें।

व्यवहारभानु पृ. 17

अतः अपना पालन करने वालों के प्रति पुत्रों, शिष्यों, प्रजाओं के कर्तव्य को ही पितृ यज्ञ कहा गया है। जिसको नित्य प्रति करने का विधान है। पितृ शब्द से पुकारे जाने वाले की तृप्ति और प्रसन्नता की भावना जीवित स्थिति में ही सम्भव, सरल और स्पष्ट है। जो कि उनकी सेवा और आज्ञा पालन आदि से पूर्ण होती है। मीमांसा दर्शन की प्रक्रिया में अदृश्य फलादि की अपेक्षा दृश्य फलादि को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे भी जीवितों के सत्कार की भावना ही पुष्ट होती है, जो कि प्रत्यक्ष और व्यावहारिक है। अतः अपना-पोषण करने वालों को तृप्त और प्रसन्न करने के लिए नित्य प्रति जो कुछ भी किया जाता है, वही पितृयज्ञ है।

मनु स्मृति में एक संसारी व्यक्ति के जीवन को सर्वांग सुन्दर बनाने के लिए अनिवार्य रूपेण पांच महायज्ञ बताए गए गए हैं। प्रथम ब्रह्म यज्ञ-जिस में ईश्वर भक्ति, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन होता है। दूसरा देवयज्ञ—जिस का (मूल उद्देश्य व्यवहार्य वस्तुओं की शुद्धि के लिए) अग्निहोत्र से भाव है। तीसरा-पितृयज्ञ और चौथा-सामाजिक व्यवस्था के व्यवस्थापक, सहयोगी, धर्म प्रचारकों की अतिथि (यज्ञ) के रूप में सेवा का बोधक है। पांचवें—बलि-वैश्वदेवयज्ञ को सामयिक दृष्टि से पशुपालन के रूप में ले सकते हैं।

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलि र्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ।3,70॥
देवता तिथि भृत्यानां पितॄणामात्मनश्च यः।
न निर्वपति पञ्चानामुच्छ्वसन्न स जीवति ॥3,72॥
कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूल फलै र्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन् ॥मनु. 3,82॥

अर्थात् इन पांच महायज्ञों में से पितृयज्ञ का नियम यही है, कि माता-पिता आदि की प्रसन्नता के लिए प्रतिदिन उनको भोजन, जल, दूध, फल, मूल आदि पदार्थों से तृप्त करें।

इस सारे विवेचन का भाव यह है कि हम अपने जीवन में दूसरों से अनेक प्रकार से सहयोग प्राप्त करते हैं। अतः अपने पूर्वजों से प्राप्त सहयोग के कारण अपनी सन्तान के निर्माण में सहयोग देकर हम अपने पितृ ऋण से कुछ अनृण होने का अवसर जहां प्राप्त करते हैं, वहां वंश परम्परा के द्वारा अधूरे कार्य को पूर्ण करने में समर्थ होते हैं। अतः अपने पूर्वजों के प्रति अपनी कृतज्ञता को चरितार्थ करने के लिए सन्तान को योग्य बनाएं। उनको अपने ज्ञान, अनुभव के सार को ही दें, न कि व्यर्थ के पचड़ों में डालें, लकीर पीटने के लिए ही उनको प्रेरित न करें। अपितु विज्ञान जगत् की तरह यथार्थ द्वारा ही परम्परा को आगे बढ़ायें। यथार्थ को स्वयं सीखें और उन्हें भी सिखायें।

कृतज्ञता सामाजिक जीवन के विकास का एक मूलभूत आधार है। अतः अपना उपकार करने वालो के उपकार को स्वीकार कर के जो उनके प्रति अपने कर्तव्य का पालन करता है। वह विनीत उनसे गुण ग्रहण करके योग्य बनता है। तभी तो कहा है—

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥
मनु. 2,121॥

अन्यथा इसके विपरीत व्यक्ति अहंकार वश वहीं का वहीं रह जाता है और 'कृतघ्नस्य नास्ति निष्कृतिः" अर्थात् ढीठ को विकास पथ प्राप्त नहीं होता।

कृतज्ञता का एक सफल रूप यह भी है कि समझदार होने पर अपने सामाजिक सम्बन्धों को सद्भाव-सहानुभूति सहयोग के साथ निभाये। क्योंकि सामाजिक जीवन में पारस्परिक सद्भाव—सहयोग से ही जीवन सरल और सुखी होता है। इसीलिए ही कहा है—'परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ: गीता 3,11 अन्यथा घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध से जीवन नरक बन जाता है, अतः मतभेद की स्थिति में भी विरोध और शत्रुता को न पालें तथा जीवन की विषम परिस्थितियों में भी विवेक और धैर्य के साथ जीने की कला से हम अपने जीवन को निखारें।

आर्य समाजों तथा दानी महानुभावों से प्रार्थना

मान्यवर सादर नमस्ते!

निवेदन है कि आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर जो की एक नई कालोनी 1977 में बनी थी मई 1977 में हम जब यहा आये तो हमने अनुभव किया कि यहा पर समीप कोई भी आर्य समाज नही है। यहां पर आर्य समाज का प्रचार होना आवश्यक है, तो हमने दिसम्बर 1977 में आर्य समाज की स्थापना कर दी। वहां पर स्थान प्राप्त करके आर्य समाज का प्रचार करना आरम्भ कर दिया गया था। थोड़ा सा भवन निर्माण का काम जो हम कर चुके हैं उसकी रिपोर्ट हम भेज रहे हैं। अब जो शेष काम आवश्यक है वह इस प्रकार हैं।

1. चार दीवारी 2. एक कमरा तैयार है शेष है छत 3. यज्ञशाला पर गुम्बद 4. प्रचार के लिए लाऊड स्पीकर 5. दरियां।

उन के अभाव के कारण यह शेष काम अधूरा है और इसकी शीघ्र ही आवश्यकता है। इसलिए दानी महानुभावों से हमारी अपील है कि हमारी अधिक से अधिक सहायता करें ताकि यह काम पूरा हो सके। सहायता ड्राफ्ट या चैक आर्य समाज के नाम पर इस पते पर भेज सकते हैं:

—मुलखराज प्रधान
आर्य समाज-168 शहीद भगतसिंह
नगर जालन्धर शहर।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में रविवार 31-5-87 को स्व. श्री चरणसिंह जी की याद मे शोक सभा हुई। समाज के सभी सदस्य उन की इस आकस्मिक मृत्यु से दुःखी हैं। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले। तथा उनके परिवार जनों को यह सदमा सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

—बलदेवराज
मन्त्री

आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना का सम्मान समारोह चित्रों की जबानी



आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी डा मूलचन्द भारद्वाज के सम्मान समारोह के अवसर पर कमला आर्या धर्मार्थ होम्यो औषधालय मे, उनके साथ है श्री महेन्द्रपाल वर्मा उनकी पत्नी एव अन्य पदाधिकारी।



औषधालय मे श्री वीरेन्द्र जी, डा मूलचन्द भारद्वाज तथा श्री महेन्द्रपाल वर्मा।



श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा ध्वजारोहण करते हुए। साथ आर्य समाज फील्ड गंज के प्रधान श्री सत्यपाल सूद।



श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न श्री वीरेन्द्र जी का पुष्प माला द्वारा स्वागत करते हुए।



डा मूलचन्द भारद्वाज आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी का पुष्प माला द्वारा स्वागत करते हुए।



श्री राजेन्द्र कुमार जी दीवान, डा मूलचन्द भारद्वाज को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए।



प्रताप और वीर प्रताप के सम्पादक तथा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम ए, डा मूलचन्द भारद्वाज को शाल द्वारा सम्मानित करते हुए। पास खड़े हैं, श्री राजेन्द्र कुमार जी दीवान।



जिला आर्य सभा लुधियाना के महामन्त्री श्री आशानन्द आर्य डा मूलचन्द भारद्वाज को पुष्प माला पहनाते हुए। पास खड़े हैं भारतवर्ष के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द जी मुंजाल



भारतवर्ष के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द जी मुंजाल, उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली डा मूलचन्द जी भारद्वाज को, आशीर्वाद देते हुए।



डा मूलचन्द भारद्वाज सब का आभार प्रकट करते हुए।



डा मूलचन्द भारद्वाज सभा प्रधान तथा समारोह के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जी को ओ३म् का उपहार भेंट करते हुए।



श्रीमती वेदवती डा. भारद्वाज के प्रति शुभ कामनाएं अर्पित करती हुई।

महर्षि दयानन्द के भक्त

महात्मा कालूराम योगी

लेखक—डा. भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

स्वामी दयानन्द के राजस्थानी क्तों में महात्मा कालूराम योगी का ाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। इन ा जन्म सीकर जिले के रामगढ़ नामक ाम में एक गौड़ ब्राह्मण परिवार में ेष्ठ कृष्णा 6,1893 वि. (6 मई 836) को हुआ। इनके पिता का नाम . कृष्णदत्त त्रिपाठी तथा माता का नाम ्ली देवी था। यद्यपि इनका वास्तविक ाम धर्मचन्द था, किन्तु माता वात्सल्य ा इन्हें "कालूराम" कह कर पुका- ी थी। फलतः ये इसी नाम से विख- ात हुए। राजस्थान में उन दिनों शिक्षा ा अधिक प्रचार नहीं था, अतः इनकी ्षा भी साधारण स्तर की ही हुई। ्रारम्भ से ही ईश्वर भक्ति तथा धर्मा- ्राम जैसे गुण इनमें उदय हो गए। ्912 वि. के कुम्भ के मेले में ये अपने ाता-पिता के साथ गये। यद्यपि तत्का- ्ीन प्रथा के अनुसार इनका विवाह ाल्यकाल में ही हो गया था, किन्तु ाम रूप में ही निवृत्ति मार्ग के प्रति ्चि होने के कारण इन्होंने पत्नी सहित ्खण्ड ब्रह्मचर्य पालन किया।

कहते हैं कि पं. कालूराम को स्व- ्नावस्था में ही स्वामी दयानन्द का दर्शन ुआ था और इसी स्थिति में उन्हें ्वामी जी ने योगाभ्यास करने और ्ईश्वरोपासना में रत होने के लिए कहा ्। पश्चात् पं. कालूराम ने विभिन्न ्मतान्तरों का तर्कपूर्ण अनुशीलन ्किया जिससे उन्हें यह निश्चय हो ्गया कि वास्तविक धर्म के तत्व वेदों में ्निहित हैं। कालान्तर में पं. कालू- राम ने स्वामी दयानन्द से पत्र व्यवहार किया तथा शाहपुरा जाकर उनसे प्रत्यक्ष भेंट की। स्वामी जी से इनका जो पत्र व्यवहार हुआ वह ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन शीर्षक ग्रन्थ में संगृहीत हो चुका है। पं. कालूराम ने स्वामी दयानन्द रचित ग्रन्थों को मंगा कर उन का सम्यक् अध्ययन किया।

1937 वि. मे पं. कालूराम जयपुर आये और ठाकुर नन्द किशोर सिंह आदि आर्य पुरुषो के सहयोग से 31 मार्च 1881 को वहां वैदिक धर्म सभा की स्थापना की। कुछ वर्ष पश्चात् इसी सभा को आर्य समाज का नाम दे दिया गया। जब थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल आल्काट तथा मैडम ब्लैवेट्स्की जयपुर आये तो पं. कालूराम जी से उनका "चमत्कारों की वास्तविकता" पर शास्त्रार्थ हुआ। पं. कालूराम ने राजस्थान के चूरू, सीकर, झुंझनू नागौर आदि जिलो मे प्रचार यात्राएं की तथा अनेक स्थानों पर आर्य समाज स्थापित किए। उन्होंने सरल राजस्थानी भाषा में अनेक भजन लिखे हैं जो पश्चिमोत्तर राजस्थान के ग्रामीण और मध्यम वर्गीय समाज में प्रचलित हैं। ज्येष्ठ शुक्ला 10 स.1957 वि. (7 जून 1900) को महात्मा कालूराम का अपने ग्राम रामगढ़ में ही निधन हुआ। उनकी अन्त्येष्टि संस्कार विधि वर्णित पद्धति से की गई आज भी उनकी स्मृति में रामगढ़ मे एक बड़ा मेला लगता है।

———

आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना के वार्षिकोत्सव पर समाज सेवी डा. मूलचन्द भारद्वाज सम्मानित

23-5-87 को यज्ञ, भजन तथा महात्मा रामधन जी और कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्मदेव जी आर्य द्वारा अमृत वर्षा की गई।

24-5-87 को कमला धर्मार्थ होम्यो औषधालय फील्डगंज के प्रभारी डा. मूलचन्द भारद्वाज, एम. ए. पी.एच. डी. एफ. सी. आर. एच. (म. प्र) को उनकी निःस्वार्थ, निःशुल्क, त्यागमय सेवाओं के लिए परमादरणीय श्री वीरेन्द्र जी एम.ए. प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता मे विशिष्ट नागरिको शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों एवम् विद्वानों द्वारा एक विशाल प्रांगण मे आयोजित विराट समारोह में अभिनन्दन पत्र एवम् शाल द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री सतपाल पराशर एम.एल.ए. श्री राकेश सूद प्रधान मुहल्ला तथा महामन्त्री यूथ विंग, श्री परमानन्द चोपड़ा, डा. बालकृष्ण शास्त्री एम. ए. पी.एच.डी. श्री सरदारीलाल आर्य रत्न श्री हरबंसलाल जी शर्मा, कोषाध्यक्ष तथा अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों ने डा. भारद्वाज के लिए शुभ कामनाएं व्यक्त की। तदुपरान्त भारत वर्ष के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उप-प्रधान आदरणीय श्री सत्यानन्द जी मुंजाल और श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता एम.एल.ए. ने डा. भारद्वाज को आशीर्वाद दिया, श्री राजेन्द्र कुमार जी दीवान उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने डा. भारद्वाज को पठनोपरान्त अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

समारोह के अध्यक्ष परमादरणीय श्री वीरेन्द्र जी एम. ए. ने डा. मूलचन्द को शाल द्वारा सम्मानित किया। डा. भारद्वाज जी ने आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी को ओ३म् उपहार रूप में भेंट किया।

श्रीमती सावित्री सूद उप-प्रधाना आर्य समाज फील्डगंज ने आदरणीय सभा प्रधान जी को थैली भेंट की, श्रीमती कौशल्या देवी जी मन्त्री ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई और श्रीमती शान्ती देवी ने श्री जगन्नाथ जी पुरी भूतपूर्व प्रधान को उपहार भेट किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री वीरेन्द्र जी ने सत्यवादी महाराज युधिष्ठर द्वारा कहे गये शब्दों को दोहराया और कहा :—

न अहम् कामये राज्यं,न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्ताना, प्राणिनामार्ति-
नाशनम्॥

डा. भारद्वाज जी भी इसी ध्येय और लक्ष्य को लेकर समाज सेवा कर रहे हैं, मैं उनकी लक्ष्यपूर्ति के लिए कामना करता हूं। ऐसी कामना से महाराज युधिष्ठिर के समान अध्यक्ष महोदय आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी की सत्यवादिता, स्पष्टवादिता तथा निर्भीकता का परिचय मिलता है। अध्यक्ष महोदय ने यह भी कहा कि किसी भी संस्था का आधार उसके कार्यकर्त्ता ही होते है। यदि उन कार्यकर्त्ताओं का संस्था के अधिकारियो द्वारा प्रोत्साहन न किया जाए तो उनका दिल टूट जाता है। इस प्रकार के समारोह हमारे संगठन को दृढ बनाते हैं। हमें जालन्धर, पटियाला, अमृतसर आदि नगरों में इस प्रकार के समारोहों का आयोजन करना चाहिए। लुधियाना में पहले आदरणीय श्री सरदारीलाल जी आर्य रत्न जो कि आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं उनको सम्मानित किया और प्रिय भाई डा. मूलचन्द भारद्वाज को सम्मानित किया है। इस के लिए लुधियाना निवासी बधाई के पात्र हैं। इसके पश्चात् श्री सतपाल सूद प्रधान आर्य समाज फील्डगज ने सब आगन्तुकों का धन्यवाद किया और शान्ति पाठोपरान्त ऋषिलंगर का कार्य प्रारम्भ हुआ।

अमर स्वामी जी अस्वस्थ।

मेरा चण्डीगढ़ से कारणवश गाजियाबाद जाना हुआ। सैर करते समय अमर स्वामी जी के भी दर्शन वेद मन्दिर (कविनगर) उनकी कुटिया मे अमर् स्वामी जी गले के कष्ट से पीड़ित हैं और उस दिन उनका ऐक्सरा ा। शरीर में काफी दुर्बलता थी। मैं आर्य जगत् और विशेषतया आर्य ों से अपील करता हूं कि इस रुग्णावस्था में स्वामी जी की तन,मन और विशेष सेवा होनी चाहिए और उनको किसी प्रकार की कमी प्रतीत

—इन्द्रराज शर्मा-प्रधान
आर्य समाज से—22 चण्डीगढ़

आर्य समाज मेन बाजार, पठानकोट का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट का वार्षिक निर्वाचन 17-5-87 रविवार को हुआ। जिसमें सर्व सम्मति से श्री लालचन्द जी महाजन पुनः प्रधान चुने गये तथा अन्य अधिकारी गण मनोनीत करने के लिए उन्हें अधिकार दिये गए। अतः निम्नलिखित अधिकारी मनोनीत किये गये—

संरक्षक—सर्वश्री प्यारेलाल जी
श्री गिरधारी लाल जी गुप्ता।
प्रधान—श्री लालचन्द जी महाजन
उप-प्रधान—श्री यशपाल जी गांधी
,, श्री बलदेव राज कालड़ा
,, श्री पृथ्वीराज महाजन
महामन्त्री—प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी
उप-मन्त्री—सर्व श्री विनोद मल्होत्रा एडवोकेट
प्रचार-मन्त्री—श्री सुरेन्द्र मोहन जी
कोषाध्यक्ष—श्री सुदेश चन्द जी।

—लालचन्द-प्रधान

———

आर्य समाज तिलक नगर (पंजीकृत) नई दिल्ली-१८ का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज तिलक नगर, नई दिल्ली—18 का वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह एवं उल्लास के वातावरण मे 18 5 87 से 24-5-87 तक मनाया गया। प्रातः कालीन यज्ञ आचार्य विश्व बन्धु जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में चारो वेदो के पाठको द्वारा सुचारु रूप से चला, जिसमे सैकडो यजमानो ने अत्यन्त श्रद्धा से भाग लिया। रात्रि को प चुन्नीलाल जी के मधुर भजन तथा डा महेशवेदा लकार के वेदोपदेशो से श्रोता गण मन्त्र मुग्ध हुए बिना नही रहे। दिन प्रतिदिन उपस्थिति बढती ही गई।

पूर्णाहुति रविवार के दिन ऋषि-लंगर मे लगभग दो हजार जनता ने भोजन किया। इस अवसर पर आर्य समाज के सचालन मे चल रहे दयानन्द आदर्श विद्यालय के वार्षिक अधिवेशन एव सास्कृतिक कायक्रम का भी आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता पश्चिमी जिला के उप शिक्षा निदेशक श्री आर एस सिसोदिया ने की। यह आयोजन श्री आई पी अग्रवाल क्षेत्र 24 के शिक्षाधिकारी के सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ। सभी ने विद्यालय की उन्नति को देखकर भूरि-भूरि प्रशसा की एव भविष्य मे उन्नत करने हेतु अपने सहयोग का आश्वासन दिया।

विशेष आमत्रित अतिथि स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज की गतिविधियो पर अपना सुझाव दिया कि धर्म के प्रति बालको मे रुचि उत्पन्न करते हुए अध्यापिकाए भी सत्सगो मे भाग लिया करें। उन्होंने परामर्श देते हुए कहा कि सरकार से मान्यता अवश्य लें किन्तु सहायता न लें।

श्री जनकराज गुप्ता सासद डा धर्मपाल महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री राजेन्द्र दुर्गा महामन्त्री ने भी सम्बोधित किया।

अन्तिम दिवस के कार्य को देख कर कुछ व्यक्ति यह कहने लग पडे कि पश्चिम क्षेत्र मे आर्य समाज, तिलकनगर एक नया प्रकाश उभर कर सामने आ रहा है।

—मन्त्री

आर्य युवक सभा बरनाला का चुनाव

आर्य युवक सभा बरनाला के विगत दिवस सम्पन्न हुए चुनाव में श्री राम सरनदास गोयल को पुन प्रधान सर्व सम्मति से चुन लिया गया। श्री सतीश गुप्ता मन्त्री एव श्री राम कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये और पुनः पिछली कार्यकारिणी को ही आगामी वर्ष 1987-88 के लिए मान्यता दे दी गई। बैठक मे पिछले वर्ष का आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया जिसे पारित किया गया। भविष्य मे फिर उसी उत्साह से कार्य करने का सकल्प लिया गया।

—सतीश गुप्ता
मन्त्री

शोक समाचार

आर्य समाज बलाचलपुर के कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र दत्त शर्मा का हृदयगति रुक जाने से 28-5-87 को स्वर्गवास हो गया। वह 39 वर्ष के थे। अपने पीछे तीन वर्ष और साढे चार वर्ष के दो पुत्र छोड गये हैं। देवेन्द्र दत्त जी एक कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनका जीवन सादगी सच्चाई और सेवा का एक उदाहरण था। उन्होंने आर्य समाज बलाचलपुर और महर्षि दयानन्द माडल स्कूल बलाचलपुर की सेवा में अपने स्वास्थ्य की कभी चिन्ता नहीं की।

आर्य समाज बलाचलपुर इस दुःख की घडी में उनके परिवार के साथ पूर्ण सहानुभूति रखते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति दें उनके बच्चों को यह दु ख सहने की शक्ति दें।

आर्य समाज बलाचलपुर को उनकी कमी सदा अखरती रहेगी।

(कार्यालय मन्त्री)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 11. 7 आषाढ सम्वत् 2044 तदानुसार 21 जून 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

ऐ मानव ! मधु की ओर चल

व्याख्यान—श्री भक्त क्षेमचन्द जी विद्यार्थी भू.पू. अधिष्ठाता-वेद मन्दिर ज्वालापुर(उ.प्र.) के सगृहीत उपदेशो मे से यह उपदेश लिया गया है

उपस्थित महानुभावो तथा माताओं ! प्रत्येक मानव चाहता है कि मैं सुखी रहू। मच्छर से लेकर मानव पर्यन्त कोई नहीं चाहता कि मैं दुखी रहू। और इस के साथ प्राणी मात्र चाहता है कि मैं शान्त रहू। किसी भी समय मेरी माताओ ! मैं अशान्त न रह जाऊ। वेद कहता है, मानव ! यदि तू सच्चे सुख और सच्ची शान्ति का इच्छुक है तो मधु की ओर चल।

ओम् प्रसोम देव वीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोश मधुश्चुतम् ॥ सामवेद

भक्त कहता है कि ओ सोम ! सब कुछ देख करके और सब कुछ चख करके तेरे से पुकार है। क्यो रे मानव, किस लिये पुकार है ? मेरे परमेश्वर ! भक्त कहता है—सोम तू आनन्द स्वरूप है। जिस प्रकार समुद्र, मेरी माताओ ! जल से परिपूर्ण है, भक्त कहता है-ओ ! सोम आनन्द के केन्द्र, तू अमृत के जल से परिपूर्ण है, इसलिये मेरे भगवन् ! संसार देखा, परिवार देखा, धन दौलत देखे, सब कुछ देखा मेरे भगवन् ! परन्तु सुख शान्ति न देखी। इसलिए जिस प्रकार समुद्र जल से परिपूर्ण है। मेरे भगवन ! अमृत के जल से परिपूर्ण है हे प्रभु देव ! जहा तू हर्ष से युक्त है वहा प्रभु देव, जिन भक्तो ने तेरी शरण ली, उनके अन्दर भी तू हर्ष पैदा कर देता है। 'जागृवि' मेरी माताओ ! भक्त ने भगवान को चेतन स्वरूप कहा कि तू चेतन है, मुझे भी चेतन स्वरूप कर। हू तो मैं भी मेरी माताओ ! चेतन स्वरूप पर सो गया। सोया वह नही मेरी माताओ, जो रात को निद्रा मे सोया इस निद्रा को तो पशु भी प्राप्त करते हैं। मेरी माताओ ! सोया वह भाग्य से हीन जीव, एक मानव देह और फिर सुख शान्ति की तलाश नहीं करता—सो गया और फिर खो गया।

सर्वंद् पुनः पुनः न शरीरम्
पुनः पुनः।

कि हे मानव ! न तो गया वक्त फिर हाथ आता है और न इस प्रकार की सुन्दर देह बार बार मिलती है। इसलिये भक्त कहता है कि ओ चेतन स्वरूप, मैं चेतन हू फिर भी जगा मेरे प्रभु देव। उसके बाद भक्त कहता है भगवन मैं सुनता हू—

'देव वीतये'

जिन भक्तो ने अपनी हर क्रिया मे तुझ को इष्ट बनाया उनको तू तृप्त कर देता है। इस वास्ते ओ ! सोम आनन्द स्वरूप भक्तो को तृप्त करने के लिए, आत्मा के लिए मधु को बहाने वाले इस ध्यान स्थान के हृदय प्रदेश मे तू मुझको प्राप्त हो, एक बार मिल। यह भक्त की भावना है। ओ मानव ! मधु को समझ, मधु बाहर भी है, मधु अन्दर भी है पर बाहर के मधु मे रस है जिसको शहद कहते हैं मानता हू मेरे मित्र कि बाहर का मधु सब औषधियो मे सुन्दर औषधि है—रूप में सुन्दर, गुण मे मधुरता और निर्दोष तत्व है। पर मेरे मित्र बाहर के मधु मे शक्ति नही कि शरीर को छोड कर मीठा होते हुए भी तुझ को सुख शान्ति दे दे यह जरूरी नही। तो वेद ने मधु का दृष्टान्त देते हुए मानव देह का लक्ष्य बताया कि ओ ! भाग्य से हीन जीवात्मन् ! एक बार देह मिली है, कुछ कर ले, कुछ धर ले, कुछ भर ले। तो बाहर के मधु में मधुरता है मेरी माताओ ! मैंने कितनी बार मधु खाया और कितनी बार मैं शहद का प्रयोग करता पर मधु रसना से छूता हुआ खाने चला पर रसना मेरी फीकी रह गई और शब्द उच्चारण करने वाली वाणी से गुजरा शब्द मेरा कटु रह गया। आखो से उसके सुन्दर रूप को देख कर मैंने उसको अन्दर फैंका, पर मैं कुरूप रह गया। मैं गोरा हू——

गुणा गुणिनी पूजा स्थानम न चलि-
ङ्गम् न च वय।

ओ मानव ! तू वेष धारण कर, एक बार धोखा दे सकता है दाढी रख ले या कटवा दे जैसा चाहे रूप रंग बना ल पर यदि तू गुण से हीन है तो गोरा होते हुए भी—

मूर्खं शोभते तावत् न भाषते।

वेषधारी की दाढी रखने वाले व्यक्ति की अथवा किसी भी तन को शोभायमान करने वाले व्यक्ति की शान और मान तब तक है मेरी माताओ ! जब तक बोलता नही। तो मधु चखू और मैं मधु को देखू। जरूरी नही मेरी माताओ कि मधु के समान मेरा रूप बन जाए। मधुरता से युक्त रचना वाला मेरा शब्द बन जाए। वेद कहता है कि सुख शान्ति के इच्छुक मानव ! अन्दर के मधु की ओर चल। अब समझो, मधु के दृष्टान्त को खोलता हू।

इस ससार को 'अश्वत्थ" कहा गया है और वृक्ष का दृष्टान्त दिया गया है। इस शरीर को शरीर कहा गया है। यह तीनो अश्वत्थ, वृक्ष और शरीर अर्थ मे एक दूसरे की समीपता करते है।

वेद कहता है कि मानव !

"श्व स्थास्यति न वा"

यह जगत अश्वत्थ है ! जिस पदार्थ को आज देख रहा है और जिस परिवार मे तू मस्त है हो सकता है कि यह कल तक रह जाए, ओ मानव यह भी हो सकता है कि कल तक न रह, दोनो बात हैं। वृक्ष को वृक्ष कहा अन्त मे जिसका छेदन हो जाता है। शरीर को शरीर कहा, वाह रे प्रभु तेरी वाणी कि इसका भी अन्त में नाश है, कारण शरीर मे अर्थात् परमाणुओ मे इसकी लीनता है, तो वेद कहता है—मानव ! जिस प्रकार शहद का छत्ता, मधुमक्खिया किसी आधार के बिना नही बना सकती, लकडियो पर बनाए वृक्ष पर बनाए मधुमक्खिया किसी आधार पर बनाएगी। ओ मानव ! एक आधार चाहिए फिर छत्ता चाहिए, छत्ते के अन्दर स्थान जिसके अन्दर मधुमक्खिया फूलो के रस को लाकर अन्दर मधु का निर्माण कर सके और बनाने के लिए मधुमक्खिया चाहिए, मध मक्खिया अर्थात शहद की मक्खिया मेरी माताओ और फूलो का रस चाहिए। तो मेरे मित्र बाहर के मधु को चखता रहे, चखने-चखते स्वाद लेते जीवन निकल जाएगा। सुख शान्ति का केन्द्र इसमे नही, रोग की निवृत्ति हो सकती है। वेद कहता है, ऐ मानव ! "अगर तू विषयो का सुख लेना चाहता है तो बाहर के मधु मे लगा रहे।

दुनिया के यह मजे हैं, हरगिज ही
कम न होंगे।
चर्चा यही रहेगा, अफसोस हम न
होंगे ॥

मानव यह मधु सदा रहेगा। तो भक्त ने कहा—भगवन् तेरी रचना अद्भुत है। जीवात्मा शहद की मक्खियो की भान्ति मधु का निर्माण करने वाला है। छत्ता हृदय आकाश है, जिसको भक्त ने कहा मेरे भगवन् आत्मा के लिए—

'मधुश्चुतम् कोशम्'

अद्भुत भडार हृदय आकाश, जो आत्मा का स्थान है जो आत्मा के लाए हुए फूलो के रस को लेकर आत्मा के मधु को पैदा करता है, उस हृदय के अन्दर तू बैठ।

'पुनरेहि वाचस्पति" (अथर्व)"

भक्त कहता है कि भगवन एक बार नही तू बारम्बार आ और बैठ मुझे रमण करा दे। तो समझो मेरी माताओ, वृक्ष की भान्ति छत्ते का आधार हमारा शरीर है। जिस प्रकार शहद की मक्खिया किसी आधार को लिए हुए ही छत्ते पर रख कर मधु बनाती हैं, इसी प्रकार जीव आत्माओ के लिए उस मधु को बनाने के लिए हृदय रूपी छत्ते का आधार यह शरीर है। पर कितने शरीर है मेरी माताओ—मच्छर से लेकर मानव पर्यन्त मे वही, मेरी माताओ, मच्छर मे भी मेरी आत्मा के समान हे आत्मा है।

(क्रमश)

हम स्वस्थ कैसे रहें ?

लेखक—प्रो. श्री धर्मवीर जी आयुर्वेदाचार्य

(गतांक से आगे)

आसनों के लाभ

वैज्ञानिक दृष्टि से आसनों को तीन प्रकार के व्यायामों में विभाजित कर सकते हैं— ध्यानात्मक, व्यायामात्मक और मिश्रित। ध्यानात्मक मानसिक उत्कर्ष-प्रधान होते है, जैसे पद्मासन, सिद्धासन इत्यादि। ध्यानात्मक शारीरिक उत्कर्ष प्रधान होते हैं, जैसे मयूरासन, पादहस्तासन इत्यादि। मिश्रित वे होते हैं, जो शारीरिक और मानसिक दोनो प्रकार की उन्नति के साधक एक साथ होते हों, जैसे पश्चिमोत्तान आसन, हल सन इत्यादि।

पूर्ण नीरोग होने के लिए मन को निर्दोष और शक्तिशाली बनाना आवश्यक है। मानसिक आरोग्य के लिए कुण्डलिनी शक्ति (आन्तरिक शक्ति) जाग्रत करने का प्रयत्न करना चाहिए।

कुण्डलिनी 16 अंगुल की एक सांपिन (नागिन) कही गई है, जो महा-प्राचीरा (मूत्रेन्द्रिय) के पास फन लपेटे सोई रहती है। यह योगबल से जागती है और फन सीधा कर ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। साधना करके मनुष्य ऊर्ध्वरेता बन सकता है। ऊर्ध्वरेता शब्द का आशय यह है कि मनुष्य की वृत्तिया ऊंची उठने लगती है। वस्तुत: वहा कोई सांपिन या नागिन नही है। इस सारी प्रक्रिया का अभिप्राय यह है कि चित्त वश मे हो जाने और शरीर नीरोग निर्दोष हो जाने पर मनुष्य की गुप्त शक्ति प्रकट होकर अपना जौहर दिखाने लगती है। जब मन-मस्तिष्क की इतनी उन्नति हो जाती है, तब फिर शरीर को ठीक करते देर नहीं लगती। तब तक या तो शरीर स्वयं ही ठीक हो चुका होता है या शक्ति सम्पन्न मन उसे ठीक कर देता है।

शरीर मे काम करने वाले मुख्य अंग निम्नलिखित हैं—1. मस्तिष्क और स्नायु संस्थान (स्नायुजाल)। इन दोनों की कुंजी मेरुदण्ड को शक्ति मिलने से ये दोनों निर्दोष हो जाते हैं। जिसकी रीढ़ में कोई दोष नहीं, वह सदैव नीरोग और युवक रहेगा। आध घण्टे तक पश्चिमोत्तान आसन का अभ्यास इसके लिए पर्याप्त भोजन है। 2. कण्ठमणि और अन्त:स्रावी ग्रन्थियां (रक्तवाहक अंग समूह)। ये ग्रन्थियां गले और महा-प्राचीरा (मूत्रेन्द्रिय) के बीच में हैं। इनके स्वस्थ रहने से सारा शरीर स्वस्थ रहता है। इसके लिए शीर्षासन और सर्वांगासन उपयुक्त व्यायाम है। इन आसनों से रक्त संचार पूरी मात्रा में होने लगता है। 3. हृदय और फेफड़े (श्वासोपयोगी अंग समूह)—इनके लिए शवासन और भुजंगासन उपयुक्त हैं। इन से हृदय और फेफड़ों की पर्याप्त वायु के साथ विश्राम भी मिलता है। 4.पाचन संस्थान (ग्रन्थि समूह)—शरीर का सबसे आवश्यक अंग यही है। इसके ठीक रहने पर सारा शरीर ठीक काम करता रहता है।

शरीर में दो प्रकार की प्रक्रियाएं होती हैं—पाचन की और समीकरण की। पाचन क्रिया के समय मांसपेशियो का कार्य ऐच्छिक होता है। उस समय रक्त का बहाव पेट की ओर होता है। इसलिए पाचन क्रिया चलते किसी प्रकार का व्यायाम नही करना चाहिए। उस समय शरीर को आराम मिलना चाहिए, ताकि भोजन मे से पर्याप्त मात्रा मे रस निकल सके। पाचन क्रिया के समाप्त होते ही समीकरण क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, उस समय रक्त हृदय में पहुंच कर और फेफड़ो द्वारा साफ होकर धम-नियों की सहायता से सारे शरीर मे भ्रमण करता हुआ सब शारीरिक अंगों को शक्ति प्रदान करता है। ये दोनो क्रियायें ठीक काम करती रहें, इसके लिए मयूरासन, पश्चिमोत्तनासन, धनु-रासन और योगमुद्रा अचूक साधन हैं। प्रतिदिन आध घण्टा महामुद्रा (प्राणयाम के साथ जानुशिरासन) करने से अपच की बीमारी जड से जाती रहती है।

स्नान करने से शरीर में खून तेजी से बहने लगता है। स्नान करके आसन करना अधिक लाभदायक है।

एक कहावत है कि 'पेट नहीं भारी, तो अभ्यास सुखकारी।' इस शिक्षा को ध्यान में रखते हुए भोजन के साढ़े तीन घण्टे बाद तक, अल्पाहार के डेढ़ घण्टे बाद तक और पानी पीने के आध घण्टे बाद तक आसन नहीं करने चाहिए। शरीर के स्नायु प्रात:काल की अपेक्षा सायंकाल अधिक नरम होते हैं। इसलिए आसन सायंकाल करना ही अधिक लाभ-दायक है। शीर्षासन तो प्रात:काल करना ही नही चाहिए। आसनों के तुरन्त बाद व्यायाम और व्यायाम के तुरन्त बाद आसन नही करने चाहिए। बीच में बीस मिनट का अन्तर रखना चाहिए। हां, वायु सेवन आसन व्यायाम के पहले-पीछे कभी भी किया जा सकता है।

आसनों का स्थान एकान्त, स्वच्छ, मच्छर आदि से मुक्त और कोलाहल से दूर होना चाहिए। आसन करते समय वायु के झोंके आपके शरीर को न लगें। मन शान्त रहे।

हवा और उसकी उपयोगिता

हमारे भोजन में से जो अंश रक्त बनता है, वह हृदय में जाकर एकत्रित होता जाता है और फिर वहां से (साफ होने के लिए) फेफड़ों में पहुंचता है। हवा भी सांस द्वारा फेफड़ों में पहुंचती है। यह हवा हृदय से फेफड़ो में आये हुए रक्त को साफ कर उसे फिर हृदय में ही धकेल देती है। स्वयं भी उस रक्त के साथ मिल कर सारे शरीर में दौरा करती है। इस प्रकार शरीर के यन्त्र हवा की सहायता से अपनी (खर्च हुई) शक्ति पुन: प्राप्त कर ठीक-ठीक कार्य करते रहते है। इस प्रकार हम देखेंगे कि शरीर की नीरोगता के लिए पर्याप्त हवा का फेफड़ों में पहुंचना अत्यावश्यक है।

हवा नौ रास्तों से शरीर के अन्दर आती जाती है—नाक के दो नथुने, दो आंखे, दो कान, मुंह, शरीर की त्वचा और मलद्वार।

भगवान् ने श्वास लेने के लिए नाक बनाया है, न कि मुंह जो मुंह से सांस लेते हैं, उनके शरीर में अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाते हैं। टांसिल (गले की कौड़ियां) बढ़ जाते हैं। फलस्वरूप खाने-पीने और लार को निगलने में दर्द होता है। सांस नाक से ही लें। यदि अभ्यास डालने के लिए आवश्यक हो तो मुंह पर पट्टी भी बांध सकते हैं।

जो हवा नाक के दायें नथुने से अन्दर जाती है, वह अन्दर जाकर गरम हो जाती है और जो हवा बायें नथुने से अन्दर जाती है, वह अन्दर जाकर ठण्डी हो जाती है। इसलिए दाएं नथुने को सूर्य नाड़ी और बाएं नथुने को चन्द्रनाड़ी कहते हैं।

हृदय एक विशाल कमरा है। उसके दो भाग हैं—आधा दाईं ओर का और आधा बाईं ओर का। दोनों भागों में दो-दो कोठरियां हैं। भोजन के रूप में जो कुछ हमारे पेट में जाता है, उसका रक्त बन कर हृदय में दाईं ओर की कोठरी में जमा होता रहता है। फिर धीरे-धीरे वहां से अन्दर की कोठरियों में पहुंच कर फेफड़ों में जाता है। वहां पहुंच कर रक्त साफ होता है। मल तो स्वाभाविक मार्गों से बाहर निकल जाता है। फिर यह रक्त हवा के साथ (रक्त-वाहिनी नाड़ियों द्वारा) हृदय की बाईं ओर की कोठरी में जमा होने लगता है। यहां पहुंचने पर वायु का नाम बदल कर प्राण वायु हो जाता है। यहां से वायु रक्त सहित धीरे-धीरे उसी ओर की बाहर की कोठरी में पहुंचता है। फिर शेष तीन केन्द्रों में जाता है, वहां इस व्यान वायु का नाम क्रमश: समानवायु, अपानवायु और उदानवायु पड़ जाता है। लिए गए श्वास की वायु निम्नलिखित पांच केन्द्रों को अपना स्थान बनाती है—व्यानवायु फेफड़ों में, प्राणवायु हृदय में, समानवायु पेट में, अपानवायु गुदा में और उदानवायु कण्ठ मे।

धमनियों (लाल-लाल नसों) द्वारा यह रक्त शरीर के अग प्रत्यङ्ग तक जाता है। इसी के आधार पर मानव शरीर में कार्य करने की शक्ति उत्पन्न होती है। कार्य करते समय वायु की शक्ति का ह्रास होती है। फलस्वरूप वायु का रग भी नीला पड़ जाता है। जिन नसों द्वारा यह नीला रक्त भ्रमण करता है, उन्हें शिराएं कहते हैं।

यह वायु रक्त को लेकर इन नसों द्वारा भ्रमण करती हुई फेफड़ों तक पहुंचते-पहुंचते इतनी दुर्बल हो जाती है कि उसमें कार्य करने की शक्ति नहीं रहती। फेफड़ों में स्थित व्यानवायु रक्त और वायु के इस मिश्रित रूप में से दोनों को अलग-अलग कर डालती है। इस प्रक्रिया में रक्त का तो केवल उतना भाग कम पड़ता है। जितना मार्ग में भ्रमण करते समय जहां-तहां जोड़ो में रुक जाता है और फिर वही भस्म होकर स्वाभाविक मार्गों से बाहर हो जाता है। शेष रक्त फेफड़ों में लौट आता है। जो वायु रक्त को भ्रमण कराने ले गई थी, अब उसकी शक्ति पहले जैसी नहीं रहती इसे विषैली वायु (कार्बोनिक एसिड गैस) कहते हैं। यह श्वास के साथ बाहर निक-लती रहती है। लेकिन यह सारी की सारी नही निकलती। इसका कुछ भाग शेष रह जाता है, जो फेफड़ों में ही जमा होता रहता है।

फेफड़ों में सात करोड़ सैल्य (कोष्ठ) हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति की साधारण श्वास क्रिया से दो करोड़ सैल्य भी वायु से नहीं भरते। पांच करोड़ सैल्स बन्द पड़े रहते हैं, जिनमें धीरे-धीरे यह विषैली वायु भरती रहती है। ज्यों ज्यों मनुष्य की उम्र बढ़ती जाती है, त्यों-त्यो ये सैल्स भी अधिकाधिक रुकते जाते है। तीस-चालीस वर्ष की उम्र तक ये पांच करोड़ सैल्स इस विषैली वायु से भर जाते हैं। दस-बीस वर्ष और बीतने पर सात करोड़ के सात करोड़ सैल्स पर विषैली वायु का प्रभाव पड़ता है, जिस का परिणाम यह होता है कि साठ-सत्तर

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

जीवेम शरदः शतम्

हम प्रतिदिन अपनी सन्ध्या में प्रार्थना करते हैं कि हम कम से कम 100 वर्ष अवश्य जीवें। परन्तु बहुत कम सौभाग्यशाली ऐसे होते हैं जो अपनी शताब्दी देख सकें। उन्हीं में से एक लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी वयोवृद्ध महाशय खुशहाल चन्द जी आर्य हैं वह लुधियाना के कर्मठ आर्य समाजी श्री रणबीर भाटिया के पिता जी हैं। अब उनकी आयु 102 वर्ष की हो गई है। 14 जून को आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के वार्षिकोत्सव पर श्री महाशय खुशहाल चन्द जी का सम्मान किया गया। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उन्हें वह सम्मान पत्र भेंट किया जो आर्य समाज की ओर से श्री खुशहाल चन्द जी को दिया गया था। बहुत अधिक आयु हो जाने से वह बहुत वृद्ध हो गए हैं और उनकी आंखों की ज्योति भी जाती रही है। परन्तु आर्य समाज के लिए उनकी आज भी वही श्रद्धा है जो 60-70 वर्ष पहले थी जब वह आर्य समाज के एक स्वयंसेवक के रूप में काम किया करते थे। वह पाकिस्तान के एक चकझुमरा शहर से आए थे और वहां वह एक चलती फिरती आर्य समाज समझे जाते थे। बहुत कम व्यक्तियों को आर्य समाज में इतनी लग्न होगी जितनी कि उन्हें थी। अभी तक वह प्रतिदिन हवन सन्ध्या करते हैं।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने ऐसे महा मानव को सम्मानित करके दूसरी और समाजों के लिए एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसका हम सब को अनुसरण करना चाहिए। कई स्थानों पर ऐसे आर्य समाजी आज भी बैठे हैं जिनकी आयु अब 80 वर्ष से ऊपर होगी और कई ऐसे भी हैं जो अपने जीवन की एक शताब्दी पूरी करने लगे हैं। ऐसे महानुभावों का सार्वजनिक रूप से सम्मान होना चाहिए। जो व्यक्ति "जीवेम शरदः शतम्" की अपनी प्रार्थना को सार्थक रूप में देख सकता है उससे अधिक सौभाग्यशाली और कौन हो सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मैं आदरणीय श्री महाशय खुशहाल-चन्द जी को बधाई देता हूं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उन्हें ऐसा स्वास्थ्य दे कि वह अपने जीवन की दूसरी शताब्दी भी देख सकें। इसी के साथ पंजाब की सब आर्य समाजों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि जहां-2 ऐसे महानुभाव बैठे हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में व्यतीत किया हो उन्हें समय-समय पर अवश्य सम्मानित करना चाहिए।

आदरणीय बहन सुमनायति जी

आर्य समाज ने कई प्रकार की प्रथाएं डाली हैं और उसकी कई परम्पराएं उसके जन्मदिन से ही चल रही हैं उनमें एक यह भी है कि कुछ समय के पश्चात् एक व्यक्ति घर-बार छोड़ कर सन्यास आश्रम में प्रवेश कर जाता है। समय-2 पर आर्य समाज ने कई ऐसे सन्यासी अपने देशवासियों को दिए हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन धर्म प्रचार और जनता जनार्दन की सेवा में लगा दिया। मैं सदा ही कहा करता हूं कि हमारे सन्यासी आर्य समाज की एक ऐसी विभूति हैं जिन पर हम जितना भी गर्व करें थोड़ा है। इनमें विशेष कर हम उन पर गर्व कर सकते हैं जो हमारी बहनें और माताएं सन्यास आश्रम में प्रवेश करती हैं और अपना जीवन धर्म प्रचार के लिए समर्पित कर देती हैं। स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की प्रधाना बहन शान्ता जी गौड़ ने अपना जीवन पहले ही आर्य समाज के लिए समर्पित कर रखा था। 14 जून को श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से उन्होंने सन्यास आश्रम की दीक्षा ली और शान्ता गौड़ से सुमनायति बन गई। हम सब के लिए यह हर्ष और गर्व का विषय है कि हमारी कई बहनें अपने आपको इस प्रकार धर्म प्रचार के लिए समर्पित कर रही हैं। बहन शान्ता गौड़ का जीवन तो पहले ही यज्ञमय था वह अपना सारा समय आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत करती थी अब वह एक पग और आगे चली गई हैं। सन्यास आश्रम में प्रवेश करने पर मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से उनका अभिनन्दन करता हूं और यह आशा करता हूं कि उन से प्रेरणा लेकर हम सब अपने जीवन को धर्म प्रचार और समाज सेवा के लिए समर्पित करने का प्रयास करेंगे।

आर्य वीर दल का शिविर

आर्य मर्यादा के 7 जून के अंक में पाठक गण यह पढ़ चुके हैं कि जालन्धर में आर्य वीर दल का शिविर लगाने की तैयारियां हो रही हैं आज उन्हें यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि उस शिविर का आरम्भ हो गया है और उसका विधिवत् उद्घाटन 16 जून को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री हरबंसलाल जी शर्मा ने किया। इस अवसर पर सभा के महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, मन्त्री श्री सरदारीलाल जी आर्यरत्न, कानून मन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री आशानन्द जी आर्य श्री रामलुभाया नन्दा और दूसरे कई महानुभाव वहां उपस्थित थे। इस शिविर में 50 नवयुवक सम्मिलित हुए हैं। कुछ और भी हो सकते थे परन्तु यही उचित समझा गया कि अभी केवल 50 युवकों को ही प्रशिक्षण दिया जाए और फिर कुछ समय के पश्चात् इससे बड़े शिविर का आयोजन किया जाए। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि हम अपने युवकों को प्रत्येक स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार करें। हमने यह शिविर इस उद्देश्य को सामने रख कर प्रारम्भ किया है कि धीरे-धीरे अपने युवकों को जहां तक सम्भव हो सके सैनिक शिक्षा भी दे सकें। जो कुछ पंजाब में हो रहा है सरकार भी अपने ढंग से उसका मुकाबला कर रही है। परन्तु जब तक प्रत्येक नागरिक स्वयं अपनी रक्षा न कर सकेगा उस समय तक हम इन परिस्थितियों का मुकाबला न कर सकेंगे। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए आर्य वीर दल को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जा रहा है यदि इसमें पंजाब की सब आर्य समाजों का सहयोग हमें मिलता रहा तो हम हजारों ऐसे नवयुवकों को तैयार कर सकेंगे जो देश और धर्म की रक्षा के लिए प्रत्येक स्थिति में आगे आकर हालात का मुकाबला करेंगे।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में कई आर्य समाजों ने अपने उत्सव बन्द कर दिए हैं। परन्तु कई आर्य समाजें वह भी हैं जो इन परिस्थितियों को एक चुनौती समझ कर पहले से भी अधिक उत्साह के साथ अपना उत्सव करती हैं। आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना उनमें से एक है। पिछले दिनों उसने अपना वार्षिकोत्सव किया। उससे पहले एक सप्ताह यज्ञ किया गया और फिर 13 और 14 जून को वार्षिकोत्सव किया जो बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जो लोग समझते हैं कि डर के मारे अब लोग आर्य समाजों के उत्सवों में नहीं आते उन्हें इस आर्य समाज के उत्सव को देखना चाहिए था। इसमें एक दिन महिला सम्मेलन किया गया। एक सप्ताह का यज्ञ भी किया गया। इस अवसर पर एक बहन ने सन्यास भी लिया। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज श्री स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज और श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचनों से जनता को लाभान्वित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं. निरञ्जनदेव जी ने भी योग्यता पूर्ण व्याख्यान दिए और प्रसिद्ध गायक सत्यपाल जी पथिक ने और नवयुवक प्रसिद्ध गायक विजयानन्द ने अपने भजनों से लोगों का मन मोह लिया। इस अवसर पर इस आर्य समाज की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को 5100 रुपया और स्त्री आर्य समाज की ओर से 1100 रुपये वेद प्रचार के लिए दिए गए।

मैं आर्य समाज और स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के अधिकारियों का अपनी सभा की ओर से धन्यवाद करता हूं। और आशा करता हूं कि इन के पदचिन्हों पर चलती हुई दूसरी आर्य समाजें भी इसी प्रकार अपने उत्सव करती रहेंगी।

—वीरेन्द्र

विधिपूर्वक नाम जप महर्षि सम्मत सिद्धान्त है

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्योपदेशक,
आर्य निवास चन्द्र नगर, मुरादाबाद,

आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की लेखनी की यह विशेषता रही है कि उससे केवल निषेधात्मक शब्द समूह ही नहीं निकले, विधेयात्मक शब्द समूह भी निकले हैं। अपितु यूं कहना चाहिए कि निषेधात्मक कम और विधेयात्मक अधिक प्रसूत हुए हैं। महर्षि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश इसमें प्रमाण है, उसमें दस समुल्लास विधेयात्मक हैं और केवल अन्तिम चार निषेधात्मक अथवा खण्डनात्मक हैं। इस पर भी महर्षि की लेखनी की एक और विशेषता है कि उसने जहां कहीं भी खण्डन अथवा निषेधात्मक पक्ष प्रस्तुत किया है तो जड़ से ही हिला कर रख दिया है। इतना तीव्र और युक्ति-युक्त खण्डन किया है। पर जहां भक्तिरस में सन कर वह निकली है तो फिर उसमे भी कमाल ही कर दिया है। जहां तक आर्य समाज का प्रश्न है आर्य समाजियों ने खण्डनात्म पक्ष को अधिक अपनाया है, विधेयात्मक पक्ष को कम। और जहां कहीं उसे अपनाया भी है, तो नितान्त बेमन से। यही कारण है कि आर्य समाज में शुष्कता की प्राय: शिकायत की जाती है और भक्तिभाव का अभाव सा इसमें लगने लगा है।

ईश्वर के नाम स्मरण को ही ले लीजिए। महर्षि दयानन्द ने नाम स्मरण के नाम पर जो पाखण्ड व्याप्त था, उस का तीव्र खण्डन किया। यह किया भी जाना चाहिए था। इन्हीं खण्डनात्मक प्रसगों का वर्णन आचार्य वेद भूषण जी, ने आर्य सन्देश, दिनांक 3 मई 87 के अंक में किया है। इसी के आधार पर श्रद्धेय आचार्य जी ने कुछ ऐसी बात भी लिखी है, जिन्हे महर्षि सम्मत नही कहा जा सकता। अपने इस लेख में तो आचार्य जी ने जप के विधेयात्मक पक्ष का भी बुरी तरह खण्डन कर डाला है, और वह भी महर्षि के नाम से। पंर महर्षि ने जप के विधेयात्मक पक्ष का कहीं भी खण्डन नहीं किया। उन्होने तो केवल जप के नाम पर पाखण्ड का खण्डन किया है।

सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास का एक प्रसंग प्रश्नोत्तर रूप में आचार्य जी ने उद्धृत किया है। उसे हम पुन: लिख रहे हैं—

प्रश्न-क्या नाम लेना सर्वथा मिथ्या है? जो सर्वत्र पुराणो में नाम स्मरण का बड़ा माहात्म्य लिखा है?

इसके उत्तर में महर्षि ने जो लिखा है, उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उत्तर इस प्रकार है—

उत्तर—नाम लेने की तुम्हारी रीति उत्तम नहीं। जिस प्रकार तुम नाम स्मरण करते हो, वह रीति झूठी है।"

उपरोक्त उत्तर में महर्षि ने नाम-स्मरण को झूठा न कह कर उनकी नाम स्मरण की रीति को झूठा कहा है। किन्तु आचार्य जी तो नाम स्मरण मात्र को चाहे वह उचित रीति से ही क्यों न किया गया हो, उसका यथार्थ मूल्यांकन नहीं किया। आचार्य जी लिखते हैं कि जब छोटी श्रेणियों में गणित का अध्ययन आरम्भ किया जाता है, तो प्राय: गिनती और पहाड़े बार-बार दोहराए जाते है। यह भी एक प्रकार का अंको का जाप ही कहलाएगा। इस जाप का एक फल हम प्रत्यक्ष देखते हैं—वह उसका स्मरण हो जाना। जिस शब्द को या अंको को हम बार-बार दोहराते है, वे शब्द या अक या पहाड़े बार-बार दोहराने से जप करने से हमे स्मरण हो जाते हैं।" आचार्य जी यहां भूल जाते हैं कि पहाड़े तो वह बालक दोहराता है, जिसे वह याद न हों, जब याद हो जाते हैं, तो उनका दोहराना भी वह बन्द कर देता है। पर क्या जो व्यक्ति "ओ३म्" अथवा गायत्री मन्त्र का जप करता है, उसे क्या वह पहले से याद नहीं होते? फिर याद किये हुए शब्दो को दोहराने का अर्थ वह नही हो सकता जो आचार्य जी समझ रहे हैं। फिर पहाड़ों को दोह-राने को कोई भी व्यक्ति "पहाड़ों का जप" कभी नहीं कहता, पहाड़ों का रटना तो उसे कह सकते हैं, किन्तु जप नही। रटने और जप करने में बहुत अन्तर है। रटने की रीति का ही महर्षि ने खण्डन किया है, जप का नहीं। जप सदैव अर्थ पूर्वक होता है, जबकि रटने में अर्थ का कोई ध्यान नहीं रहता। एक तोता भी ओम् अथवा राम का नाम रटता है और एक मनुष्य भी किन्तु दोनों में बहुत अन्तर है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है।

एक मुनि ने अपने आश्रम में एक एक तोता पाल रखा था। मुनि प्रात: उठते ही ओम् नाम की धुन लगाया करते थे। तोता भी उनके साथ ओम् नाम रटता था। एक दिन उनके आश्रम में एक अन्य महात्मा पधारे। महात्मा का उपदेश चल रहा, प्रभु के निज नाम "ओम्" की महिमा पर। अपने उपदेश में ऋषि ने कहा कि ओम् नाम भव बन्धन काटने का दिव्य अस्त्र है। श्रोताओं में एक ने शंका की कि "महाराज! यह तोता भी तो ओम् नाम रटता है, आप भव बन्धन की बात कहते है, इसके लोहे के यह बन्धन नहीं टूटे।" सन्यासी बोले कि—"तोता मन्त्र को रटता अवश्य है, पर जपता नही। इसके शब्द इसकी वाणी की शोभा हैं, हृदय को वे छू नही पाते। इसके अर्थों को वह जानता और समझता ही नही, इसलिए इसके बन्धन नही टूटे।" इसी लिए योग दर्शन में 'तज्जपस्तदर्थभावनम्' की बात कही गई है। यहा यह भी स्मरण रहे कि नाम का अर्थ वह नही जो हमें शब्द कोष या निघन्टू आदि में बताया जाता है, वे तो उसके पर्याय हैं। उसका वास्तविक अर्थ है, उसकी भावना जप में करनी होती है, न कि शब्दार्थ की। और ऐसा जप निरर्थक नही। न ही महर्षि ने इसका विरोध किया है अपितु इसका विधान भी किया है। और नित्य संन्ध्या में प्रात: सायं आर्यों से "जपोपासनादि कर्मणा" बुलवाते है कि "हे परमेश्वर दयानिधे। आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।" (संस्कार विधि गृहस्थाश्रम प्रकरण)।

सस्कार विधि के सन्यास प्रकरण में महर्षि लिखते हैं कि—जो पुरुष सन्यास लेना चाहे वह जिस दिन सर्वथा प्रसन्नता हो उसी दिन नियम और व्रत अर्थात् तीन दिन तक दुग्धपान करके उपवास और भूमि में शयन और प्राणायाम, ध्यान तथा एकान्त देश में ओंकार का जप किया करें।" यदि जप से कोई लाभ न होता, तो महर्षि यहां इसका विधान क्यों करते? ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना प्रकरण में महर्षि लिखते हैं कि—"अब उसकी भक्ति किस प्रकार से करनी चाहिए, सो आगे लिखते हैं—(तस्य वा.) जो ईश्वर का ओंकार नाम है, सो पिता पुत्र के सम्बन्ध के समान है। और यह नाम ईश्वर को छोड़ के दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है। इसलिए (तज्जप) इसी नाम का जप अर्थात् स्मरण, और उसी का अर्थ विचार सदा करना चाहिये, कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो। जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम भक्ति सदा बढ़ती जाए।" इस आधार पर हम तो यही कहेंगे कि वस्तुत: जिसके हृदय में पर-मात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम भक्ति नहीं उमड़ती, उसने ओम् नाम का अर्थ समझा ही नहीं।

महर्षि इतने पर ही बस नहीं करते। जिस जप का फल आचार्य जी केवल याद हो जाना बताते हैं, उसके लिए महर्षि क्या कहते हैं? देखिये। "फिर उससे उपासकों को यह भी फल होता है कि—(ततः प्र.) अर्थात् उस अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति और (अन्तराय) उसके अविद्यादि क्लेशों तथा रोगरूप विघ्नों का नाश हो जाता है। (वही) यह फल तभी होता है कि जब हम मन, वचन और कर्म से एक हो कर करेंगे। आचार्य जी की इस बात से हम सहमत हैं और यह ऋषि सम्मत भी है कि हमारे कर्म भी वैसे ही होने चाहिएं। पर कर्म तो हमारे शुद्ध हों किन्तु मन में ईश्वर का नाम न हो, तो भी बात नही बनती। अत: जप भी हो, मन भी उसमें सहयोग भी, अर्थ की भावना भी हो, और जीवन भी उसके अनुरूप हो तभी जप का लाभ है।

पूना प्रवचन के पांचवें प्रवचन का जो उद्धरण आचार्य जी ने दिया है, उसमें एक शब्द या तो छूट गया है या छोड़ दिया गया है। वह शब्द है "तद्वत्"। एक शब्द के छूट जाने से अर्थ का कैसे अनर्थ हो जाता है, यह स्वयं सिद्ध है। आचार्य जी ने लिखा है कि—"मन्त्र जप करने में कोरा समय खोना है।" किन्तु महर्षि ने लिखा है—"तद्वत् मन्त्र जपने से कोरा समय खोना है।" स्मरण रहे कि यहां प्रसग यह चल रहा है कि मन्त्र के जप से अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है। इस बात का खण्डन करते हुए महर्षि उपरोक्त बात लिखते हैं। अर्थात् यदि इस भावना से जप किया जाए तो कोरा समय खोना है, न कि जप मात्र से समय खोना।

आचार्य जी एक अन्य बात महर्षि के सिद्धान्त के विपरीत लिखते हैं। वह कि—"जो लोग गायत्री मन्त्र के जाप करने से बुद्धि आदि का तीव्र होना मानते हैं, वे भ्रम में स्वयं तो पड़े ही हुए हैं और औरों को भी इस अन्ध-विश्वास में धकेल कर उनके समय नष्ट करवाते फिरते हैं।" किन्तु महर्षि पूना के चौदहवें प्रवचन में कह रहे हैं कि—"सन्ध्योपासना में गायत्री महा-मन्त्र के अर्थ पर विचार करना चाहिए, इस मन्त्र में सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है, उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलि-नता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। दूसरे किसी मत में प्रार्थना के मन्त्रों की ऐसी गहराई और सचाई नही।" जब बुद्धि की मलिनता दूर होगी तो उसमें तीव्रता तो आयेगी ही। अत: इसे भ्रम कहना यथार्थ न होगा। अत: उनका कहना कि-"ओम् शब्द का या गायत्री मन्त्र का या अन्य किसी प्रकार के शब्द समूह के या शब्द के जाप का स्मरण के सिवाय अन्य कोई भी लाभ नहीं महर्षि सम्मत नहीं हो सकता।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जन्म-मरण की उलझन—१५

अपनों की याद

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

अनेक महिलाए आश्रम की ओर जा रही हैं, जाते-जाते आपस मे बातचीत शुरू हो जाती है। आभा साथ चलने वालियो से कहती है, कि इस कथा मे बहुत ही आनन्द आता है, क्योकि हर बात को बडी सरलता से समझाया जाता है। तभी प्रभा ने कहा, इस से भी अच्छी बात यह है, कि महात्मा जी नारी को भी पुरुषो जैसा ही सम्मान देते है। कभी भी उन के प्रति कोई हलकी बात नही कहते। इतने मे प्रतिभा बोली, इन की दृष्टि मे महिलाओ के मान का इतना ध्यान रहता है, कि वैराग्य और अध्यात्म की चर्चा मे भी दोनो को समान स्थान देते हैं, और स्पष्ट शब्दो मे कहते हैं। जहा तक आकर्षण एव राग की बात है, वहा एक दूसरे के लिए समान रूप से लगाव के आधार हैं। सुषमा ने बात को आगे बढाते हुए कहा—इस कथा से पहले एक सत्सग मे प्रसगवश महात्मा जी ने कहा था—मानव समाज के स्त्री और पुरुष दोनो ही समान अग है। दोनो के पारस्परिक सद्भाव, सहानुभूति और सहयोग मे जहा दोनो का कल्याण निहित है, वहा परिवार तथा समाज का विकास भी इसी पर निर्भर है। तभी शिक्षाप्रिया ने कहा—इसी लिए ही सर्व प्रिय जी का विचार है, कि बालको की तरह ही बालिकाओ को भी जीवन के विकास के लिए शिक्षा, धर्म आदि का समान अवसर देना चाहिये। मौका मिलते ही प्रियवदा ने कहा—महात्मा जी दूसरो की तरह नारियो से न तो मत्था टिकवाते हैं और न ही पैरो को छुआते हैं, क्योकि कही इस से नारियो का हल्कापन व्यक्त न हो। इतने मे सम्मानप्रिया ने कहा—इसीलिए मैं तो हर कार्य को छोड कर केवल ऐसे सत्सगो मे ही आती हू। इस प्रकार चर्चा करती-करती सारी महिलाए सेवा आश्रम मे पहुच कर सत्सग भवन के लिए बैठ गई।

सगीत प्रिय जी की गीतिका के बाद महात्मा जी ने मच पर विराजते हुए कहा इस 'जन्म-मरण की उलझन' की विचार-चर्चा के अन्तिम दिन हमने पजाब के विविध स्थानो से अनेक महिलाओं को आमन्त्रित किया है। आज मेरे सामने वे सारी बैठी हैं, जिन के पतियो, भाईयो, पुत्रो या पिताओ को ढिलवा (कपूरथला) नौशहरा पुन्नुआ (फरीदकोट) बलबेडा (पटियाला), छीना (गुरदासपुर), कृष्ण नगर (अमृतसर,) लुधियाना, मुक्तसर, नकोदर, बूडडा (टाण्डा) आदि स्थानो पर हुए सामूहिक हत्याकाण्डो मे आतकवादियो ने बसो म उतार कर या दुकानो पर कार्य करते समय अन्धाधुन्ध गोलिया चला कर शहीद बना दिया था। सत्सग से पूर्व इन्होंने उस दिन की करुण कहानी सुनाई और कुछ से दिल्ली, कानपुर आदि की दर्दनाक दास्तान का पता चला। जिसस पता चलता है कि ईर्ष्या, घृणा एव बदले की भावना से भर कर कोई कितना अविवेकी बन जाता है। तभी तो कहत है कि 'ईर्ष्या हि विवेक परिपन्थिनी—दूसरे स जलने की भावना सही सोच को छीन लेती है।' ये सारी अपनो को याद मे आसू बहाते नही थकती तथा इन म से कुछ करुण-क्रन्दन करती हुई कह रही थी, कि असल मे हमारे दुर्भाग्य क कारण ही हमारे हम से छिन गए हैं। न जान हमार किन पूर्व ले दुष्कर्मों का फल अब हमे भोगना पड रहा है, तभी तो रो-रो कर सब के सामने हमे अपनी अनाथता जतानी पडती है। अब तो दिल मे एक ही रास्ता सूझता है, पर इन दुधमुहे बच्चो के जीवन को देखते हुए न चाहने पर भी खून के घू ट पीने पड रहे हैं।

नि सन्देह पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धो के कारण कई बार व्यक्ति जहा दूसरो से सुखो को प्राप्त करता है, वहा अनेक बार अपनो के बिछुड जाने पर अनेक तरह के दुखो का भी भागी होता है। इसीलिए दो की जिम्मेवारी या अनेको का उत्तरदायित्व किसी एक पर ही आ जाता है। ऐसी स्थिति मे जो अपने कर्त्तव्य को जितनी निष्ठा, तत्परता, तपस्या, त्यागपूर्वक निभाते हैं, वे उतने ही मान के योग्य हैं, क्योकि किसी के तप, त्याग रूपी साधुता से ही परिवार और समाज फूलता फलता है। ऐसी स्थिति मे बिना बार-बार अपने आपको कोसे सामयिक कर्त्तव्य के गौरव को सम्मुख रखते हुए आत्म सम्मान तथा विश्वास के साथ अपने इस उत्तरदायित्व को निभाना चाहिए।

हिंसा-प्रतिहिंसा की ये घटनायें तो बिल्कुल स्पष्ट हैं कि किस ने क्या अपराध किया है? और यह केवल अपराध ही नही अपितु सकीर्णतावशात इस को षड्यन्त्र का भी रूप दिया गया है। ऐसी स्थिति मे अपने की मृत्यु पर विशेषत: महिलाओ को अपने आपको कोसना नही चाहिए और न ही दुर्भाग्यशाली मानना चाहिए। ऐसी मौते किसी के पूर्व कर्मो का परिणाम नही कही जा सकती। जब अपना इस मे कोई अपराध नही है, तो फिर कोसना और पछतावा क्यो? और इन हत्याओ का तो कारण स्पष्ट है। जहा सोचने पर भी किसी काय का कारण स्पष्ट न हो, उसी बात को ही पूर्व कर्मो के आधार पर मानना चाहिए।

इस प्रसग मे जहा केवल नारीपन के कारण अपने आपको कोसने या हल्का समझने की बात है, वहा सारे सामाजिक जीवन के सभी पक्षो की दृष्टि से यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है, कि नारी वग भी मानव समाज का एक महत्वपूर्ण अग है। ये दोनो एक दूसरे के पूरक, सहयोगी हैं, प्रतिस्पर्धी नही। इन दोनो के पारस्परिक सद्भाव, विश्वास, सहयोग से ही परिवार, समाज पल्लवित, पुष्पित एव फलित होता है। यह सदभाव, सहयोग कही भाई बहन के रूप मे होता है, तो कही पति पत्नी क रूप मे, कही पिता पुत्री के रूप म तो कही माता पुत्र के रूप म। नारी होने मात्र से कोई हल्का नीचा या अपूज्य और अपराधी नही। वैसे तो किसी की योग्यता, कर्मण्यता से ही उस के मान एव स्थान का अकलन करना चाहिए। नि सन्देह नारी शरीर मे कुछ स्वाभाविक भिन्नता है, पर शिक्षा और विज्ञान के विकास के इतिहास ने यह स्पष्ट कर दिया है, कि नारी भी विविध क्षत्रो मे सिरमौर हो सकती है।

भारत मे ही नही सारे ससार मे जिस किसी रूप म जहा कही नारी के प्रति अनादर की भावना है, वहाँ उसके कारण अनेक प्रकार की अन्याय और शोषण की समस्यायें है। जैसे भारत मे दहेज प्रथा, अपहरण, बलात्कार आदि की घृणित घटनाय सामने आती रहती हैं। इनके निवारण के लिए सब प्रथम नारी के मन म आत्म सम्मान और विश्वास का भाव उभरना चाहिए। तभी समस्या का समाधान सरल हो सकता है। यदि नारी नारी क प्रति सम्मानयुक्त व्यवहार कर तो आधी समस्या स्वत हल हो जाती है।

सभी श्रोताओ पर दृष्टि डालते हुए सर्व प्रिय जी ने बडी गम्भीरता मे कहा—यह सब कुछ तो आमन्त्रित महिलाओ की दृष्टि स कहा है। अब उन से निवेदन है कि वे ऊपर कही गई भावनाओ का ध्यान म रखते हुए परिवार के इस नए उत्तरदायित्व को आत्म-सम्मान के साथ निभाव। जिसम अपनो की याद सही अर्थो म स्थायी बन सके और इसके लिए कम से कम एक मास म एक बार चौथी बैठक मे बताई गई उस कर्मठ महिला की कथा का अवश्य पढे। अपनो की याद को स्थायी बनाने का ही दूसरा नाम 'मान्यो का मान' या पूर्वजो क स्मारक' है।

(क्रमश)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन दि 31 5 1987 को श्रीयुत दिनकर राव बाबाराव देशपाडे जी की अध्यक्षता म वैदिक सेवा आश्रम वाजेगाव नादेड मे सर्व सम्मति स सम्पन्न हुआ। जिसमे सब सम्मति स निम्नाकित पदाधिकारी और कार्यकारिणी सभासद निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्री दौलतराम चड्ढा, उपप्रधान—सर्व श्री आर्य मुनि वानप्रस्थी, भगवतसिंह कपूर, केशवराव होलीकर,

मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र गुरु जी, उपमन्त्री—सर्व श्री प्रा सत्यकाम पाठक, सोमरत्न आर्य, दिगम्बरराव जी वानप्रस्थी, कोषाध्यक्ष-श्री दौलतराव गिरवलकर, पुस्तकाध्यक्ष प्रा विजय कुमार शिंदे, वेद प्रचार अधिष्ठाता प गणपतदेव जी आर्य, आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री रामचन्द्र मरड, सरक्षक-प उत्तममुनि वानप्रस्थी,

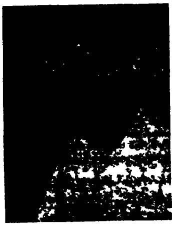
अन्तरग सदस्य सर्व श्री प्रा वेद कुमार वेदालकार, डा सुग्रीव काले, बलीराम पाटील, शकरराव मथ्याचारी, दयालदास, सत्यपाल राठौर, प प्रह्लाद, राजाराम अकम, गुलाबचन्द सवनिया, दामोदरराव राखर, प्रा कुशलदेव शास्त्री, देवमुनि वानप्रस्थी, श्रीमती सरलादेवी वानप्रस्थी, नन्दलाल शर्मा, निवृत्तिराव होलीकर,

प्रतिष्ठित सदस्य आचार्य तानाजीराव, प्रा देवदत्त तुगार, दिनकरराव देशपाडे, डा हरिश्चन्द्र बर्वे, श्रीमती सुमित्रा वाघमारे।

सार्वदेशिक प्रतिनिधि सर्व श्री दौलतराम चड्ढा, हरिश्चन्द्र गुरु जी, प्रा विजय कुमार शिंदे, प आर्यमुनि वानप्रस्थी, भगवतसिंह कपूर, और निवृत्तिराव होलीकर।

—हरिश्चन्द्र गुरु जी-मन्त्री

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में श्री म. खुशहालचन्द जी का अभिनन्दन



आर्य समाज स्वामीदयानन्द बाजार लुधियाना के वार्षिकोत्सव पर 14 6 87 को श्री महाशय खुशहाल-चन्द जी आर्य को निम्न अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया :—

हे महामना ! आपके उज्ज्वल चरित्र, उदार विचार, देदीप्यमान व प्ररणादायी जीवन-प्रसग हमारे जीवन के लिये न केवल प्रकाश-स्तम्भ है अपितु मानव जाति की अमूल्य निधि है। आपके सम्पर्क मात्र से न जाने कितने लोगो की काया पलट हो गई है। आप जैसे महान् जीवन-पुज का आज अभिनन्दन करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

हे आर्य धर्म के सजग प्रहरी ! सासारिक कठिनाईयो और प्रलोभनो के कारण बडे-बडे धर्मवीर अपने कुल और धर्म को तिलाजलि देते हुए देखे गये हैं। परन्तु हमारे लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि भारत विभाजन की काली घडी मे मौत की सगीन-छाया मे चकझुमरा जिला लायलपुर से आकर जिस धीरज, दृढता व कर्मठता से आपने आर्य धर्म की पवित्र पताका का सफलतापूर्वक फहराये रखा, वह हमारे इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। आप प्रथम व शायद अन्तिम आर्य समाजी अधिकारी हैं जिन्होंने पाकिस्तान से आकर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, जालन्धर के कार्यालय मे जाकर अपनी आर्य समाज चकझुमरा जिस के आप प्रधान थे, की लेखा सम्बन्धी पुस्तके वहा जमा करवाई। वैदिक-सस्कारो तथा यज्ञ की परिपाटी अपने घर ही मे नही बल्कि अपने सम्बन्धी परिवारो मे भी चलाई। आपकी इस धर्म निष्ठा एव यज्ञ भक्ति के लिए हे धर्मवीर हम आपका अभिनन्दन करते हैं।

हे श्रद्धानन्द के लाडले ! गोरी-सगीनो के आगे अपनी छाती तान कर ललकारने वाले स्वतन्त्रता सग्राम के अडिग सेनापति स्वामी श्रद्धानन्द की भान्ति अग्रेजी सरकार का भय न खाते हुए प मदनमोहन मालवीय जी जो लाहौर से लायलपुर जा रहे थे, को ट्रेन के आगे लेटकर, अपने प्राणो की परवाह न करके ट्रेन को रुकवाया तथा उनका भाषण चकझुमरा मे करवाया। गोरी सरकार ने इस जुर्म मे गिरफ्तार करके केस चलाया। धारा 128 के आधीन आपको चार मास का कारावास का दण्ड देकर अटक जेल मे भेज दिया गया। सन् 1930 मे जब आप जेल से रिहा होकर आये तो आपका शानदार स्वागत किया गया। आपके साथ आपके प्रिय मित्र प नन्दलाल जी वानप्रस्थी थे जो आज इस ससार मे नही हैं। स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दुओ के सरक्षण एव सवर्धन के लिये जिस शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया था, उसके महत्त्व को आपने हृदय से समझा तथा उसके सम्पादन के लिए तन-मन-धन से आपने चकझुमरा मे जो जागरूक होकर कार्य किया वह भुलाया नही जा सकता। शुद्ध किये व्यक्तियो के साथ सम्बन्ध रखने पर बिरादरी ने आपका बहिष्कार किया। मुसलमान के घर से एक हिन्दू अबला को निकाल कर पहले अपने घर मे रखा फिर उसे उसके परिवार मे पहुचाया। इस कारण मुसलमान सम्प्रदाय ने आपके विरुद्ध भयकर तनाव का जाल बिछा दिया, जिसमे आपकी जान का भी खतरा था। परन्तु आपने इन खतरो की परवाह न की। परिणामस्वरूप अनेको भूले-भटके लोग विधर्मियो के अपवित्र चगुल से निकल कर वैदिक धर्म की सुखद छाया मे आ सके। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कागडी की स्थापना हेतु नगर-नगर घूम कर धन एकत्र किया था। आपने हैदराबाद सत्याग्रह के सर्वधर्मय आन्दोलन के लिए अपने तन पर लम्बा चोगा जिसके आगे पीछे यह लिखा था कि "हैदराबाद आन्दोलन के लिए एक पैसा दो", पहन कर गाव-गाव मे घूम कर इस महान् कार्य के लिए धन इकट्ठा किया। आपकी इन राष्ट्र-सजीवनी सेवाओ के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के लाडले रणवीर हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

हे दानवीर कर्ण के अनुकरणी ! आप दान देने मे भी किसी स पीछे नही— माना कि आप बहुत बडे धनपति नही परन्तु आपका हृदय इतना विशाल है कि कोई भी खाली नहीं लौटता। असहाय परिवारो की सहायता-बच्चो के वजीफे आप देते रहे। आर्य समाज के क्षेत्र मे दान देने की रुचि विशेष रूप से आप मे विद्यमान है। हमारी समाज के दानदाताओ की सूची मे आपका नाम आज भी उल्लेखनीय है। हे आधुनिक युग के कुबेर, हम आज आपका अभिनन्दन करते हैं।

हे दयानन्द के दीवाने ! महर्षि दयानन्द ने जिस आर्य धर्म का हमे दर्शन कराया, उसके प्रसार के लिए आप सम्पूर्ण सामर्थ्य से सघर्षशील रहे। चकझुमरा आर्य समाज से लेकर लुधियाना मे आकर आज एक सौ दो वर्ष की आयु मे भी आर्य समाज की निरन्तर सेवा एव कार्य करते हुए हम आपको देख रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, लाहौर की सभा मे आप अन्तरग सदस्य थे। आपने यहा आकर 'हिन्दी सत्याग्रह' मे जेल यात्रा की। आपकी महर्षि भक्ति, समाज-सेवा एव आर्य धर्म निष्ठा का स्मरण हमे सदैव प्रेरणा देता रहेगा। दयानन्द के कार्य के प्रति आपके समर्पित जीवन के लिए, हे लोकवीर, हम आपका अभिनन्दन करते हैं।

सदस्य एव अधिकारीगण
आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना

आर्य शिष्ट मण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

नई दिल्ली 25 मई प्रात 9-30 बजे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे एक शिष्ट मण्डल मेरठ और दिल्ली के दगो की जानकारी देने के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला। शिष्ट मण्डल में बाबू सोमनाथ एडवोकेट, श्रीमती कमला रत्नम, प सच्चिदानन्द शास्त्री, प रामरत्नम शास्त्री, श्री विमलदेव भारद्वाज, श्री सूर्य देव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री मनोहरलाल कुमार, श्री प्रेमचन्द गुप्त, प क्षितीश वेदालकार, प्रकाश चन्द्र शास्त्री, डा रामप्रकाश तथा चौधरी लक्ष्मी चन्द आदि विद्वान् एव नेता सम्मिलित थे।

श्री स्वामी जी ने नई शिक्षा नीति मे सस्कृत की उपेक्षा पर प्रधानमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए अनुरोध किया कि विश्व की सबसे प्राचीन तथा विपुल शब्द भण्डार की जननी सस्कृत भाषा को भारतीय शिक्षा विधान मे उचित स्थान दिया जाए। उन्होंने कहा कि सस्कृत ससार के सभी प्रमुख विश्व-विद्यालयो मे पढाई जाती है। प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान सस्कृत के माध्यम से ही सुरक्षित रह सकते हैं।

इस अवसर पर स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को महर्षि भारद्वाज कृत बृहद् विमान शास्त्र की एक प्रति भेंट करते हुए बताया कि आज से 110 वर्ष पूर्व जब आधुनिक विमान का आविष्कार भी नहीं हुआ था महर्षि दयानन्द ने वैदिक काल मे मनुष्य का वायुयान द्वारा आकाश मे उडने की परिकल्पना को सत्य कहा था। तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री रेमजे मैकडानैल्ड ने महर्षि दयानन्द के इस कथन का मजाक उडाते हुए कहा था कि—"महर्षि दयानन्द ने अन्य जो कार्य किए वे सभी प्रशसनीय हैं किन्तु मनुष्य के आकाश मे पक्षी की भाति उडने वाली बात कोरी गप्प है। लेकिन महर्षि की उस समय गप्प कही जाने वाली बात आज सत्य सिद्ध हो रही है।

बृहद् विमान शास्त्र प्राचीन वैज्ञानिको द्वारा आकाश मे वायुयान उडाने का हजारो वर्ष पुराना फार्मूला है। स्वामी आनन्दबोध जी ने प्रधानमन्त्री को बताया कि भोज पत्रो पर लिखे हुए तीन हजार श्लोको के इस शास्त्र का स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने हिन्दी मे अनुवाद करके सार्वदेशिक सभा को सौंपा था। प्रधानमन्त्री ने जो स्वय एक कुशल विमान चालक रह चुके हैं, इस ग्रन्थ रत्न में रुचि दिखाते हुए पढने का आश्वासन दिया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

अजीर्ण (बदहजमी)

लेखक—कविराज कृष्णगोपाल, एम. ए. वैद्याचार्य 2318,
आर्य समाज रोड, करोलबाग, नई दिल्ली

अजीर्ण का रोग आजकल बहुत है। लोगों की पचाने की शक्ति दुर्बल हो जाने से यह रोग वृद्धि पकड़ रहा है। जो कुछ हम खाते हैं उसी भोजन के जीर्ण होने से अन्दर पहले कच्चा रस बनता है। फिर इसी के पक जाने से रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा और वीर्य बनते हैं! सारे शरीर की शक्ति और स्वास्थ्य इन्हीं से ठीक रहता है। यदि खाया हुआ भोजन ही हजम न हो तो चाहे हम बढ़िया से बढ़िया भोजन क्यों न खावें उससे शरीर में कोई पुष्टि नहीं आती। इसलिए अजीर्ण रोग की ओर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

कारण—अधिक शराब, सिग्रेट, चाय, काफी तेज मिर्च-मसाले, बेमेल भोजन के खाने, अत्यधिक जल पीने, टट्टी, पेशाब अपानवायु के वेगों को रोकने, बहुत जागने, ईर्ष्या, भय, क्रोध, शोक, चिन्ता और मानसिक तनाव से हमारी पाचन शक्ति दुर्बल हो जाती है। वह दुर्बल होकर भोजन को नहीं पचा पाती यही अजीर्ण या बदहजमी है।

लक्षण—इससे शरीर और हृदय में भारीपन, जी मिचलाना, गालों और आंखों के नीचे सूजन, भोजन के पीछे बहुत डकारो का आना, सिर में चक्कर, प्यास का अधिक लगना, बेहोशी, छाती और पीठ मे कभी-कभी पीड़ा का होना, पसीना अधिक आना, छाती मे जलन, खट्टे डकार, कब्ज, पेट में अफारा, वमन, थूकों का अधिक आना, अपानवायु का रुकना, सिरदर्द, अंगों में पीड़ा, दिल की धड़कन का बढना आदि लक्षण हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त जब अजीर्ण बहुत बढ़ जावे तो मृत्यु तक हो जाती है। जरूरी नहीं कि ऊपर लिखे सभी लक्षण अजीर्ण की बीमारी में इकट्ठे ही हों। किसी समय थोड़े, कभी बहुत लक्षण इकट्ठे हो जाते हैं। इनसे हमें समझ लेना चाहिए कि अब हमारी पाचनशक्ति दुर्बल हो गई है। मेहदे या कौड़ी-प्रदेश पर दबाने से पीड़ा होती है, यदि यह कष्ट अधिक हो जावे तो बिना दबाये भी शूल अनुभव होने लगता है।

चिकित्सा—जितना यह रोग भयंकर है उतनी ही चिकित्सा सरल है। सबसे पहली चिकित्सा इसकी उपवास है। जब तक पूरी तरह से भूख न लगे तब तक कुछ नहीं खाना चाहिए। पानी में थोड़ा नींबू डाल कर पोते जाना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में थोड़ी बर्फ, नींबू का रस और चीनी एक प्लेट में डाल कर इसी को एक-एक चम्मच पीना चाहिए। यदि शीत ऋतु हो तो गर्म पानी पीना अच्छा है। लवण सेंधा या काला-नींबू को लगाकर वैसे ही चूसना चाहिए। इस तरह कुछ दिन उपवास रखने से मेहदे (आमाशय) की पाचन शक्ति बढती है और भूख लग कर भोजन हजम हो जाता है।

यदि विबंध (कब्ज) के कारण अजीर्ण हो तो बड़ी हरड़ बढ़िया लेकर उसके बीज निकाल कर छिलका बारीक पीसकर 2,3 ग्राम गर्म पानी से ले ले या दूध से ले लें। अथवा निशोथ(त्रिवि) कूट कर दो या तीन ग्राम गर्म पानी मे लेवें। इससे शौच खुल कर आ जाता है और अजीर्णता शान्त हो जाती है।

यदि खट्टी डकारे साथ आती हो तो गर्म पानी मे नीबू अथवा गर्म पानी मे लवण का चम्मच डालकर पीना भी लाभकारी है। सोडा वाटर (खारी बोतल) पीने से भी ठीक होता है।

इस रोग को रोकने की मूल चिकित्सा तो सैर करना, खेलना, कूदना, व्यायाम या योगासन करना है। ऐसे लोगो से यह रोग कोसो दूर भागता है। अतः जो इस दुष्ट रोग से बचना चाहते हैं उन्हें शरीर को किसी खेल या काम मे अवश्य लगाना चाहिए।

पथ्यापथ्य—अजीर्ण में निम्नलिखित वस्तुओं को छोड़ देना चाहिए—सब प्रकार की दालें उड़द, चना, मूंग, अरहर, लोबिया मलका मसर आदि, हर प्रकार का मांस, सरसों का साक, मटर, आलू, कचालू, अरबी, भिण्डी तोरी, शकरकन्दी, सेम की फली, कचनार, तले हुए पदार्थ जैसे परौंठा, पूरी, कचौरी, समोसा, पकौड़ा, मठी, खोवा (मावा) मैदा, बेसन की बनी हुई नमकीन या मिठाई अधिक घी, मक्खन या तेल, दही, केला, अमरूद, सिंघाड़े देर से हजम होने वाले फल आदि-आदि।

नीचे लिखी वस्तुएं अच्छी हैं :—

मूंग की दाल का पानी, बथुआ, पालक, सुहांजना, गाजर, करेला, टिंडा, घिया, परवल, घिया तोरी, काली तोरी, आंवला, नींबू, अदरक, छोटी मूली, एक-दो उबाल का गाय का दूध, गर्म करके ठंडा किया हुआ बकरी का दूध या सप्रेटा दूध, मक्खन निकाली हुई छाछ में नमक मिला कर पीवें। मालटा, सन्तरा, नारंगी, मौसमी, मिट्ठा, नीबू, नासपाती आदि फल।

मोटे आटे या अनछने आटे की रोटी, दलिया, सूजी का खुश्क फुलका, उबले हुए चावल ये भी ज्यों-ज्यों आराम आवे त्यों-त्यों लेते जाना चाहिए। भुनी हुई हींग, खुश्क धनिया, सफेद जीरा, हल्दी, काली मिर्च आदि मसालो का भी प्रयोग कर सकते हैं। यदि विबंध(कब्ज) साथ रहती हो तो बढ़िया पीली हरड, बहेड़ा और आंवला सूखा ले कर उनके बीज निकाल कर फैंक दें और छिल्कों समान मात्रा मे लेकर कूट कर बारीक छान कर एक या दो छोटे चम्मच (लगभग 2,3 ग्राम) दूध से ले सकते हैं। यदि ये सब प्रकार के उपाय करने पर भी लाभ न हो तो फिर इसकी लगकर चिकित्सा करवानी चाहिए असावधानी नही करनी चाहिए।

—

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय राजपुरा रोड, देहरादून में प्रवेश आरम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय संस्था है। 1म. कक्षा से लेकर विद्यालंकार(बी.ए.) तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है।

उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, साईंस, संगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधार भूत विशेषताएं हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास, तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इन्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिल हो सकती है।

शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। 8 जुलाई से नवीन कक्षाओं का दाखिला, प्रवेश के इच्छुक महानुभाव 10 रु. भेज कर नियमावली मंगा सकते हैं।

भवदीय

—दमयन्ती कपूर आचार्या

(4 पृष्ठ का शेष)

आचार्य जी जप की खिल्ली उड़ाते हुए लिखते हैं कि—"यदि शब्दो को दोहराना मात्र ही फलदायक होगा तो मनुष्य से भी शीघ्र टेप रिकार्डर और रेडियों सैट मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि उन पर दिन भर यह जाप घुमाया जा सकता है।" पता नही आचार्य जी मोक्ष किस वस्तु को समझे बैठे हैं जो टेप और रेडियों को प्राप्त कराना चाहते हैं? यदि मोक्ष का नाम जन्म और मरण के बन्धन से छूटना है तो फिर विनमृतापूर्वक पूछना होगा कि उक्त टेप या रेडियो कौन से जन्म और मरण के बन्धन में हैं, या वे जीव हैं जो उन्हें मोक्ष की अभिलाषा है? अतः हमारी विनम्र प्रार्थना है कि इस प्रकार जप की खिल्ली न उड़ाई जाये। जप विधिपूर्वक किया जाना चाहिए, उसके अर्थों की भावना हृदय में होनी चाहिए और उसके अनुकूल अपना आचरण होना चाहिए। फिर यह जाप वाणी की शोभा न हो, मन की उत्कण्ठा हो, व्याकुलता हो, व्यग्रता हो, तोता रटन्त नही। कोई इसे पहले करके तो देखे, फिर इसमें दोष निकाले। आर्य जगत् के स्वनामधन्य सन्यासी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भू.पू. सम्मानित प्रधान महात्मा नारायण स्वामी आदि ने जप के मनोविज्ञानिक पक्ष पर बहुत कुछ लिखा है, उसे समझने की आवश्यकता है। इसे कोरा समय खोना तथा भ्रम का शिकार नही कहा जा सकता।

——

आर्य समाज भठिण्डा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज भठिण्डा का वार्षिक चुनाव 31 मई 1987 दिन रविवार को साप्ताहिक सत्संग के बाद प्रात 10 बजे हुआ। चुनाव की अध्यक्षता प्रधान श्री वजीरचन्द जी ने की तथा गत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट मन्त्री श्री जितेन्द्र कुमार जी ने पढ कर सुनाई। सर्व सम्मति से श्री ओम प्रकाश जी ममला को साल 1987 88 के लिए आर्य समाज भठिण्डा के प्रधान पद के लिए चुना गया तथा सब सम्मति से ही उन्हे बाकी अधिकारियो तथा अन्तरग सभा के सदस्यो को मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। नव निर्वाचित प्रधान ओम् प्रकाश जी ममला ने निम्न अधिकारियो तथा तथा अन्तरग सदस्यो को मनोनीत किया।

मन्त्री—श्री राजेन्द्र कुमार मित्तल उप-मन्त्री—श्रीमती कमला भाटिया। (क) उप-मन्त्री—श्री रोशनलाल जी। (ख) उप-प्रधान—श्री अशोक कुमार जी अग्रवाल। कोषाध्यक्ष—श्री विनोद कुमार जी।

अन्तरग सदस्य—श्री कृष्ण कुमार जी, श्री वजीर चन्द जी, श्री बाबूराम जी, श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी, श्री अमरनाथ जी, श्री चमनलाल जी महता, श्री प्रेमलाल जी भाटिया, श्री जितेन्द्र कुमार जी एडवोकेट, श्री निहाल चन्द जी एडवोकेट।

—राजेन्द्र कुमार
मन्त्री

वार्षिक चुनाव

स्थानीय आर्य समाज तपा का वार्षिक चुनाव दिनाक 7-6-87 को सर्व-सम्मति से सम्पन्न हुआ। निम्न-लिखित पदाधिकारी मनोनीत किये गये।

सरक्षक—श्री हरबसलाल जी गोयल (भू पू मुख्याध्यापक) प्रधान—डा राजकुमार जी शर्मा, उप-प्रधान—डा मदनलाल जी शर्मा, श्री हरभगवान दास जी मित्तल, मन्त्री—श्री चान्दराम जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री कृष्णलाल जी सिंगला।

—चान्दराम आर्य
मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

वर्ष की उम्र मे ही व्यक्ति अशक्त दिखाई देने लगता है। यदि मनुष्य अपने सात करोड सैल्ज को भरने के लिए पर्याप्त वायु फेफडो मे पहुचा दिया करे, तो वह सौ वर्ष का हो जाने पर भी वृद्ध दिखाई न देगा। इसी से प्राणायाम का महत्व समझा जा सकता है।

मनुष्य सामान्यत: जो सास लेता और छोडता है, वह इतना गहरा नहीं होता कि फेफडों के कोष्ठो तक भली प्रकार पहुच जावे। प्राणायाम करने से शरीर के रक्त और वायु सम्बन्धी प्राय सभी विकार नष्ट हो जाते हैं।

धूम्रपान निश्चित रूप से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। ब्रिटेन के दो रिसर्च स्कालरो ने 55 हजार अग्रेज मजदूरो का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि फफडो के कैसर से मरने वालो मे सर्वाधिक सख्या उन सिगरेट पीने वालो की थी, जिन्हें अपने मुह से लगातार सिगरेट लटकाये रहने की लत पड गई थी और जो मुह से धुआ बाहर फैंकते थे। (इसका मतलब यह हुआ कि न केवल धूम्रपान अपितु धूम्रपान की शैली भी उम्र पर प्रभाव डालती है।) धूम्रपान को छोड चुके अथवा सर्वथा धूम्रपान न करने वालो की अपेक्षा इस प्रकार धूम्रपान करने से मरने वालो की सख्या 14 गुना अधिक थी।

'लाईस' नामक पत्रिका में अपने शोध के तथ्यो का विवरण देते हुए इग्लैंड के प्रसिद्ध डाक्टर पी, डैड, ग्रॅट ने लिखा है कि 'एक हजार सिगरेट पीने वालों मे एक दशमलव दो और न पीने वालो मे प्रति सहस्र शून्य दशमलव तीन व्यक्ति प्रतिवर्ष फेफडो के कैंसर से मरते हैं। लगातार धूम्रपान करने वालो की मृत्यु सख्या धूम्रपान न करने वालो से आठ गुना और कम धूम्रपान करने वालो से तीन गुना होती हैं।

पारिवारिक सत्संग

स्थानीय एस एन आर्य हाई स्कूल तपा के मुख्याध्यापक श्री निरञ्जन दास जी गुप्ता के परिवार मे स्थानीय आर्य समाज तपा की ओर से साप्ताहिक सत्संग किया गया जिसके अन्दर आर्य समाज के सभी सदस्यो एव अधिकारियो ने भाग लिया तथा आर्य समाज को 64 रुपये का दान मिला।

—चान्दराम आर्य-मन्त्री
आर्य समाज तपा



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

रजि. न. N/W/11-85

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 12, 14 आषाढ़ सम्वत् 2044 तदनुसार 28 जून 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

प्रभु हम तेरी शरण में आ रहे हैं

लेखक—श्री प्रा. रामप्रसाद जी वेदालंकार
अध्यक्ष वेद विभाग गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

ओ३म् उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥ ऋ 917 ॥

अन्वय:—अग्ने ! वय दिवे दिवे दोषावस्त. धिया नम भरन्त त्वा उप एमसि ॥

अन्वयार्थ :—(अग्ने !) हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् ! (वय दिवे दिवे दोषावस्त) हम प्रतिदिन रात प्रभात-शाम सवेरे (धिया नम भरन्त) ज्ञान एव कर्म पूर्वक अपने मे नमन को धारण करते हुए (त्वा उप-एमसि) तेरे निकट आ रहे हैं, तेरी शरण में आ रहे हैं ।

(अग्ने !) हे ज्ञान प्रकाश के अनुपम स्रोत ! हे ज्ञानियो के भी ज्ञानी ! हे प्रकाशको के भी प्रकाशक ! हे अग्रणियो के भी अग्रणी प्रभुदेव ! (वय दिवे दिवे दोषावस्त धिया नम भरन्त त्वा उप एमसि) हम दिनोदिन-दिन प्रतिदिन-जीवन के प्रत्येक दिन वह भी प्रति साय तथा प्रति प्रभात बुद्धि एव आचरण पूर्वक अपने मे तेरे प्रति नमन अर्थात् तेरे प्रति कृतज्ञता के भावो को भर-भर कर तेरी ओर दौड़े चले आयें ।

हे प्रकाश स्वरूप पावन प्रभुवर ! तेरी शरण मे मैं अकेला आऊ यह मुझ भाता नही । केवल मैं अकेला ही तेरे समीप पहुच कर अपने आपको धो-धो कर शुद्ध-पवित्र, साफ-सुथरा बनाऊ, अकेला ही अपने मल विक्षेप एव आवरणो को समाप्त करू, अकेला ही अपनी शारीरिक, मानसिक एव आत्मिक चिकित्सा कराऊ और अपने आप को सब प्रकार से नीरोग बनाऊ, अकेला ही अपने पाप-तापो को समाप्त कर सर्वथा निष्पाप एव निष्कलङ्क बनू, अकेला ही तुझ से उपलब्ध स्वादुतम भोजन पा कर सेवन करू । अकेला ही तुझ से सुख शान्ति एव आनन्द का अद्वितीय प्रसाद पाऊ यह मुझे प्रिय नही, यह मुझे स्वीकार नही । इसलिए हे ज्ञानस्वरूप जगदीश्वर ! मैंने प्रार्थना की कि हम सब तेरी शरण मे आयें, वह भी श्रद्धा से आयें, आशा एव विश्वास से भर-भर कर आयें ।

हे प्यारे एव सब जग से न्यारे प्रभुवर ! मुझे यह भी अभीष्ट नही कि हम दो, हम दोनो अर्थात गुरु शिष्य वा पति-पत्नी वा भाई-भाई वा बहिन बहिन वा मित्र-मित्र वा प्रतिवेशी-प्रतिवेशी (अड़ोसी पड़ोसी) परस्पर मिल कर प्रति दिन साझ सवेरे ज्ञान एव कर्म पूर्वक अपने मे तेरे प्रति श्रद्धा एव सम्मान के भाव भर भर कर तेरे समीप चले आवे, इस उद्देश्य से कि तेरे दर से हम दोनो को ही प्रकाश मिले, तेज मिले, स्नेह मिले, आशीर्वाद मिले, सुख मिले, शान्ति मिले, और आनन्द मिले । यह भी मुझे स्वीकार नही, क्योंकि ऐसा चाहने और करने से भी तो मैं स्वार्थी वा रागी मोही लोभी आदि बन जाऊगा, ठीक उसी प्रकार से, जैसे कि बस वा रेल आदि यानो में प्राय मुझे इतना ही मात्र सूझता है मुझे और मेरे मित्र को, मुझे और मेरी पत्नी को, मुझे और मेरे गुरु को, वा मुझे और मेरे शिष्य को मुझे और मेरे पुत्र वा पुत्री को बैठने, उठने और सोने आदि की सुविधाजनक जगह मिल जाए, इस से अधिक मैं सोच ही नही पाता । हे नाथ ! यह अपने वा अपने एकाध प्रिय प्राणी के प्रति किया हुआ यह राग वा मोह आदि भला कैसे मुझ तेरे स्नेह एव आशीर्वाद का पात्र बना सकेगा । अत हम दोनो तेरे समीप तेरी शरण मे आयें, इतना मात्र भी मुझे अभीष्ट नही है, तभी तो हम ने प्रार्थना की है कि हम सब तेरी शरण मे आ रहे हैं या आवें । तात्पर्य यह है कि मैं जब प्रार्थना करू वा तेरे समीप आऊ तो मैं अकेला न होऊ या हम दो पति पत्नी वा गुरु शिष्य मात्र ही न होवे, प्रत्युत हम परिवार के सभी सदस्य तेरी प्रार्थना कर रहे हो, हम सभी तेरी ओर चले आ रहे हो, हम सभी तेरा प्यार और आशीर्वाद को पा रहे हो ।

हे सब को गति-प्रगति देने वाले परमेश्वर ! हम एक ही घर के सभी सदस्य हम एक ही कक्षा के सभी छात्र वा हम एक ही पाठशाला के सभी छात्र या हम एक ही विद्यालय के सभी विद्यार्थी वा हम एक ही गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारी वा हम एक ही महाविद्यालय-विश्वविद्यालय के सभी प्रबुद्ध छात्र वा हम एक ही गली के सभी निवासी वा हम एक ही ग्राम, नगर, जनपद, प्रान्त वा देश के वासी वा हम एक ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र वर्ण वाले वा हम एक ही ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ वा सन्यास आश्रम वाले वा हम एक ही वर्ग वा पक्ष के सभी व्यक्ति ही केवल प्रतिदिन प्रात साय बुद्धि एव आचरण पूर्वक तेरी शरण मे आकर तेरे ज्ञान-विज्ञान एव अनुपम आनन्द को प्राप्त करते रहे, यह भी मुझे भाता नही । हे जगन्नाथ ! हमारी हार्दिक कामना तो यह है, हमारी हार्दिक इच्छा तो यह है कि हम सब वर्ण-आश्रम के ऊच-नीच के, छोटे-बड़े के, मोटे पतले के, गोरे काले के, लम्बे नाटे के, स्त्री पुरुष के ज्ञानी-अज्ञानो के, देश-परदेश के भेद-भाव को भुला कर निरन्तर कृतज्ञता पूर्वक तेरे समीप आते रहे तेरी शरण मे आते रहें, तेरी आराधना करते रहे, तेरा गुणगान करते रहे और तुझ से ज्ञान प्रकाश पाते रहे एव अपने पाप-ताप को मिटाते रहे, अपने दु ख दौर्भाग्य को समाप्त करते रहे, तथा सुख-सौभाग्य को बढाते रह । इस प्रकार निरन्तर तेरी शरण मे आ-आ कर, निरन्तर तेरे समीप बैठ 2 कर हम सब अपने ज्ञान ध्यान मे परिवर्धन एव सवर्धन करते हुए अन्त मे वह कुछ पा जाए जिस के पाने के उपरान्त कुछ पाने को शेष न रह जाए । सचमुच प्रभु तुझे पाकर कुछ और पाने की इच्छा शेष नही रह जाती । जिन्होंने राजपाट, धन, दौलत, महल अटारी, हीरे जवाहरातो से भरे खजानो को लात मार दी, उन्हे उनमे कही सुख न मिला सभी प्रकार की दौलत पाकर भी वह दु खी थ परन्तु तुझे पा लिया फिर कुछ और पीन की इच्छा ही नही रही ।

हे सुखो के भण्डार प्रभु हम सुख पाना चाहते है और वह सुख केवल तेरे पास है । वह ससार मे और कही स नही मिल सकता । ससार मे बहुत सी चीजें मोल मिल जाती हैं परन्तु यह सुख व शान्ति किसी दुकान पर और किसी मूल्य पर भी नही मिलती । इस लिए हमारी प्राथना है कि प्रभु हमे अपनी शरण मे ले ले हमे सब प्रकार के दु खो से छुड़ा कर सब प्रकार के सुख प्रदान कर दे । यही है प्रार्थना हमारी, यही है पुकार हमारी, स्वीकार कर पूर्ण करो साध हमारी ।

———

व्याख्यान माला—११

किसी जीव की हिंसा करना महापाप है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयञ्च ये क्रविः ।
गर्भान् खादन्ति केशवस्तानितो नाशयामसि ॥1॥

जो लोग कच्चा मास खाते हैं, मनुष्य का मास खाते हैं अथवा जो लम्बे केश रखे हुए छली छद्मी लोग गर्भ अर्थात् अण्डे आदि को भी खा जाते हैं। हे सर्व रक्षक प्रभो ! आप ऐसे हिंसको को शीघ्र नष्ट कीजिये।

सुरा मत्स्याः पशोर्मांसं द्विजादीनां बलिस्तथा ।
धूर्तैः प्रावर्तितं यज्ञे नैतद्वेदेषु कथ्यते ॥2॥

मदिरा, मच्छली, पशु, मास तथा पक्षी आदि की यज्ञ मे बलि देना, यह धूर्तों द्वारा चलाई गयी विधि है। वेदो मे इसका कही व्याख्यान नही।

मांसभक्षैः सुरापानैर्मूर्खैश्चाक्षरवर्जितैः ।
पशुभिः पुरुषाकारैर्भाराक्रान्ताऽस्ति मेदिनी ॥3॥

यह पृथ्वी पुरुष की शक्ल वाले मास भक्षी, शराबी, और निरक्षर मूर्ख रूपी पशुओ के भार से दबी हुई हैं।

यक्षरक्षः पिशाचान्नं मद्यं मांसं सुराऽसवम् ।
तद्ब्राह्मणेन नात्तव्यं देवानामश्नता हविः ॥4॥

देव यज्ञ करने वाले ब्राह्मण को यक्ष, राक्षस तथा पिशाच का अन्न, मद्य, मास और आसव (शराब) का कभी भी सेवन या ग्रहण नही करना चाहिये।

स्वमांसं परमांसेन यो वर्धयितुमिच्छति ।
नास्तिक्षुद्रतरस्तस्मात्स नृशंसतरो नरः ॥5॥

जो दूसरे के मास से अपने मास को बढाना चाहता है, उससे बढकर कोई नीच नही होता। ऐसा मनुष्य निश्चय ही अत्यन्त निर्दयी होता है।

न भक्षयति यो मांसं न च हन्यान्न घातयेत् ।
तन्मित्रं सर्वभूतानां मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ।6।

स्मृतिकार भगवान् मनु कहते हैं—जो मनुष्य न तो मास खाता है और न किसी का हनन करता है और न ही किसी को मारने के लिये प्रेरित करता है वह सब प्राणियो का मित्र है।

नहि मांसं तृणात्काष्ठादुपलाद्वाऽपि जायते ।
हत्वा जन्तुं ततो मांसं तस्माद्दोषस्तु भक्षणे ।7।

मांस की प्राप्ति न तो घास से, न लकडी से और न ही पत्थर से होती है। यह जीव की हत्या करके ही प्राप्त होता है। अत. मास भक्षण सर्वथा दोष युक्त है।

यो हि खादति मांसानि प्राणिनां जीवितैषिणाम् ।
हतानां वा मृतानां वा यथा हन्ता तथैव सः ।8।

यदि चेत्खादको न स्यान्न तदा घातको भवेत् ।
घातकः खादकार्थाय तद्घातयति वै नरः ।9।

जो पुरुष जीवन चाहने वाले, मारे गये या स्वय मरे प्राणियो का मास खाता है, वह वैसा ही दोषी है जैसे मारने वाला। क्योंकि यदि खाने वाला न हो तो मारने वाला न होगा, मारने वाला तो खाने वाले के लिये ही मारता है। अत: जीव हत्या मे जितना दोषी घातक होता है उतना ही दोषी मास भक्षी भी होता है।

धनेन क्रयिको हन्ति खादकश्चोपभोगतः ।
घातको वधबन्धाभ्यामित्येषस्त्रिविधो वधः ।10।

पैसो के लिए बेचने वाला मारता है, खाने के लिए खाने वाला मारता है, मारने वाला वध और बन्धन से मारता है, इस प्रकार से तीन प्रकार का वध होता है।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ।11।

घातक आठ प्रकार के होते हैं :—1. अनुमति देने वाला, 2. काटने वाला, 3. मारने वाला, 4 खरीदने वाला, 5. बेचने वाला, 6. पकाने वाला, 7. परोसने वाला, और 8. खाने वाला।

मांस भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम् ।
एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ।12।

मास को बुद्धिमान मास इसलिये कहते हैं कि जिसके मास को मैं खाता हूं। परलोक मे वह मुझ को (मा सः) खायेगा।

लोभाद्वा बुद्धिमोहाद्वा बलवीर्यार्थमेव वा ।
संसर्गाद्वाऽथ पापानामधर्मरुचिता नृणाम् ।13।

मनुष्यो को अधर्म मे रुचि निम्नलिखित कारणो से होती है :—1. लोभ से, 2. बुद्धि मोह से, 3 बल पराक्रम के लिये, 4. अथवा पापी पुरुषो के सग से।

भक्षयित्वाऽपि यो मांसं पश्चादपि निवर्तते ।
तस्यापि सुमहान्धर्मो य. पापाद्विनिवर्तते ।14।

जो पुरुष मास खा कर भी पीछे हट जाता है, उस को भी बडा धर्म फल होता है क्योकि वह (बोध पाकर) उस पाप से निवृत्त हो रहा है।

न तत्परस्य संदध्यात् प्रतिकूलं यदात्मनः ।
एष संक्षेपतो धर्मः कामादन्यत्प्रवर्तते ।15।

जो अपने लिये बुरा है वह दूसरे के लिये नही करना चाहिए। यह सक्षेप से धर्म समझना चाहिए। परन्तु मनुष्य कामनाओ के वशीभूत होकर अन्य कर्मों की ओर लग जाता है।

अहिंसकानि भूतानि दण्डेन विनिहन्ति यः ।
आत्मनः सुखमन्विच्छन्स प्रेत्य न सुखी भवेत् ।16।

जो मनुष्य अपने मनो विनोद अथवा आत्म सुख के लिये न हिंसा करने वाले जीवो को डण्डे से मारता है, वह पुरुष परलोक मे सुखी नही रह सकता।

शुक्राच्च तात संभूतिर्मांसस्येह न संशयः ।
भक्षणे तु महान्दोषो निवृत्त्या पुण्यमुच्यते ।17।

हे तात ! मास की उत्पत्ति शुक्र (वीर्य) से है इसमे कोई सशय नही। इसके खाने मे महादोष है और न खाने से पुण्य होता है।

कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा ।
अक्लेशजननं प्रोक्तमहिंसात्वेन योगिभिः ।13।

मन, वचन और कर्म से सदा सब प्राणियों पर दया करने को योगियो ने अहिंसा कहा है।

अहिंसा सत्यवचनमानृशंस्यं दमो घृणा ।
एतत्तपो विदुर्धीरा न शरीरस्य शोषणम् ।19।

किसी को न मारना, सत्य बोलना, दया करना, इन्द्रिय दमन, ससार से घृणा करना, इन्हें विद्वानो ने तप कहा है, शरीर के सुखाने को तप नहीं कहते।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

साम्प्रदायिकता कैसे समाप्त हो सकती है

साम्प्रदायिकता की समस्या हमारे देशवासियों और देश के नेताओं के लिए कोई नई नहीं। इसने अंग्रेज के समय में भी कई बार उग्र रूप धारण किया था। उसका एक कारण यह भी था कि अंग्रेज भी इसे प्रोत्साहन देता रहता था। 'फूट डालो और राज करो' के सिद्धान्त पर चलते हुए अंग्रेज जब चाहता था इसे प्रोत्साहन देता था जब चाहता था इसे दबा देता था। 1920 में जब गान्धी जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन की बागडोर स्वयं सम्भाली तो वह भी इस परिणाम पर पहुंचे कि जब तक साम्प्रदायिकता को समाप्त नहीं किया जाता उस समय तक अंग्रेज को यहां से निकालना कठिन हो जाएगा। इसलिए उन्होंने पहली बार हिन्दू, मुस्लिम भाई-2 का नारा लगाया था। इसी लिए उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम एकता का प्रचार भी करना शुरू किया था। इसके लिए उन्होंने कई ऐसे पग भी उठाए जो आगे चल कर देश के लिए अत्यन्त हानिकारक भी सिद्ध हुए और फिर उन्हें स्वयं भी वह पग वापिस लेने पड़े। जब 1920 में उन्होंने पहली बार सत्याग्रह शुरू किया तो उन्होंने यह अनुभव किया कि अपनी सफलता के लिए मुसलमानों को साथ लेना आवश्यक है। इसलिए उन्होंने उस समय दो ऐसे निर्णय भी लिए जो आगे चल कर देश के लिए अत्यन्त हानिकारक साबित हुए और गान्धी जी ने स्वयं अपना फैसला वापिस लिया।

जब गान्धी जी ने अंग्रेज के विरुद्ध अपना आन्दोलन प्रारम्भ किया और अपनी जो मांगें अंग्रेज के सामने रखी उन में एक यह भी थी कि खिलाफत के विरुद्ध बर्तानिया की सरकार ने जो कार्यवाही की है उसे वापिस लिया जाए। पाठकों की जानकारी के लिए यह भी बता देना चाहता हूं कि खिलाफत की समस्या क्या थी? उन दिनों मुसलमानों का एक खलीफा हुआ करता था जो एक प्रकार से मुस्लिम जगत् का मुखिया था। खलिफा जो फतवा दे देता था सब मुसलमानों को उसके आगे झुकना पड़ता था। यह खलिफा टर्की में रहता था। एक बार बर्तानिया और टर्की के बीच युद्ध हुआ तो उन्होंने खलिफा या खिलाफत को समाप्त कर दिया। मुसलमानों ने इसे अपनी धार्मिक व्यवस्था पर एक प्रहार समझा इसलिए बर्तानिया के विरुद्ध सारे मुस्लिम जगत् में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और कई मुस्लिम देशों में यह मांग की जाने लगी कि खिलाफत को पुनः जीवित किया जाए। अंग्रेज इसके लिए तैयार न था इसलिए इस आन्दोलन ने कई स्थानों पर उग्ररूप धारण कर लिया। भारत के मुसलमान भी इस आन्दोलन में सम्मलित हो गए और उन्होंने गान्धी जी से कहा कि जो आन्दोलन वह अंग्रेज के विरुद्ध अपने देश में चलाना चाहते हैं उसमें यदि मुसलमानों का सहयोग चाहते हैं तो उन्हें खिलाफत के विषय में मुसलमानों की जो मांग है उसका समर्थन करना चाहिए। गान्धी जी मान गए और उन्होंने अंग्रेज के सामने अपनी जो मांगें रखी उनमें एक खिलाफत को पुनः जीवित करने की मांग भी थी।

यह स्पष्ट है कि उस मांग से इस देश के हिन्दुओं का कोई सम्बन्ध न था केवल मुसलमानों को खुश करने के लिए गान्धी जी ने खिलाफत के प्रश्न को अपने आन्दोलन का एक अंग बना लिया। इतिहास आज कह सकता है कि गान्धी जी ने यह बहुत बड़ी गलती की थी और इस प्रकार उन्होंने मुस्लिम साम्प्रदायिकता का तुष्टीकरण किया।

दूसरी गलती उन्होंने यह की थी कि उन्होंने मोहम्मद अली और शौकत-अली इन दो मुस्लिम नेताओं को अपने सर पर चढ़ा लिया और कहने लगे कि मैं तो इनकी जेब में हूं यह मुझ से जो करवाना चाहें करवा सकते हैं। पहले तो मोहम्मद अली और शौकत अली भी गान्धी जी की चापलूसी करते रहे उस वक्त खिलाफत आन्दोलन भी जोरों पर था मोहम्मद अली और शौकत अली ने समझा कि इसके लिए गान्धी जी को आगे करके देश के मुसलमानों को संगठित किया जा सकता है। इस लिए वह गान्धी जी की जगह-जगह प्रशंसा करते रहते। परन्तु जब खिलाफत आन्दोलन समाप्त हो गया मोहम्मद अली और शौकत अली ने देखा कि अब उन्हें गान्धी जी की कोई जरूरत नहीं तो इन दोनो ने गान्धी जी का साथ छोड़ दिया और एक दिन यह भी कह दिया कि हर मुसलमान हर हिन्दू से अधिक श्रेष्ठ है और क्योंकि गान्धी जी भी एक हिन्दू हैं। इसलिए वह हर मुसलमान के मुकाबला में हीन हैं और इसके पश्चात् यह दोनों भाई अपने वास्तविक साम्प्रदायिक रूप में हमारे सामने आ गए।

खिलाफत आन्दोलन और इन दोनों अली भाईयों को गान्धी जी ने जो महत्व दिया वह मेरी सम्मति में हमारे इतिहास का एक अत्यन्त धूमिल अध्याय बना रहेगा। क्यों इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे नेताओं ने अपने कार्यकाल से साम्प्रदायिकता को कितना प्रोत्साहन दिया था उसके पश्चात् भी गान्धी जी हिन्दू, मुस्लिम भाई-भाई का राग अलापते रहे और वह सदा ही मुसलमानों को सन्तुष्ट रखने के लिए कुछ न कुछ करते रहते थे। कभी व्रत रख लेते थे कभी कोई और कार्यवाही करने को तैयार हो जाते थे परन्तु वह अन्त में इस देश में साम्प्रदायिकता को समाप्त करने में किस प्रकार पूर्णतया विफल रहे इसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम भाई-भाई कहते-2 अपने देश का बंटवारा करवा लिया। गान्धी जी ने मुसलमानों का दिल जीतने के लिए कई बार अपनी जान की बाजी भी लगा दी लेकिन मुसलमानों पर इसका कोई प्रभाव न हुआ और अन्त में उन्होंने पाकिस्तान बनवा लिया। यह है हमारे नेताओं की साम्प्रदायिक नीति का एक परिणाम और जो कुछ हुआ वह आगामी अंक में पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन 26 जुलाई को जालन्धर में होना निश्चित हुआ है इसके लिए यह आवश्यक है कि सब आर्य समाजें अपने-2 निर्वाचित प्रतिनिधियों की सूचि, सभा कार्यालय मे भेज दें। अभी तक कई आर्य समाजों का इस तरफ ध्यान नहीं गया। यह भी देखा गया है कि आर्य समाजें अपने प्रतिनिधि फार्म भरते समय यह नहीं देखतीं कि वह नियमानुसार भरे गए हैं या नहीं। सभा का कार्यालय एक-एक फार्म को देखता है और जहां वह समझता है कि नियमों का उलंघन किया गया है तो वह सम्बन्धित आर्य समाज का ध्यान उस तरफ दिला देता है। इस प्रकार हम यह प्रयास करते हैं जो नए प्रतिनिधि आएं उनका चुनाव नियमानुसार हो ताकि जब सभा का वार्षिक अधिवेशन हो तो उसमें वही महानुभाव भाग लें जो नियमानुसार निर्वाचित हुए हों। केवल अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करना पर्याप्त नहीं है कुछ और शर्तें भी पूरी करना आवश्यक हैं जिनमे एक यह है कि आर्य समाज अपनी आय का दशांश अवश्य सभा को दे साथ ही वेद प्रचार और आर्य मर्यादा के लिए प्रत्येक आर्य समाज के जिम्मे जो राशि लगाई गई है वह सभा कार्यालय में पहुंचनी चाहिए। इस सम्बन्ध में मैं आर्य समाजों के अधिकारियों का ध्यान भी सभा के इस निर्णय की ओर दिलाना चाहता हूं कि आर्य समाज की आय में केवल सदस्यों का शुल्क ही सम्मलित नहीं बल्कि उस समाज की सम्पत्ति से जो भी आय हो उसे भी सारी आय में सम्मलित करके उसका दशांश भी सभा को मिलना चाहिए। मेरा सभी आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से नम्र निवेदन है कि वह इन सब बातों की ओर ध्यान देते हुए अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करके शीघ्र अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सभी आर्य समाजें इस ओर तुरन्त ध्यान देंगी।

—वीरेन्द्र

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

जालन्धर में 16 से 21 जून तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर में लगाया गया था। जिसका उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री हरबंसलाल जी शर्मा ने किया। इसका समापन समारोह 21-6-87 रविवार को सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें जालन्धर के अतिरिक्त जिला गुरदासपुर गुरुकुल करतारपुर, अमृतसर, लुधियाना, फगवाड़ा के 50 बच्चों ने भाग लिया। प्रधान शिक्षक श्री सत्यपाल जी आर्य पलवल और श्री सुखदेव राज जी शास्त्री, शिविराध्यक्ष ने कार्य बड़ा सुचारू रूप से चलाया। आर्य वीरों को आशीर्वाद देने के लिए और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए जालन्धर की आर्य समाजों के अतिरिक्त लुधियाना, फगवाड़ा, कपूरथला, करतारपुर से सैकड़ों आर्य बहनें और भाई वहां पधारे हुए थे।

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री आशानन्द जी आर्य, श्री हरबंसलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष, श्री ब्रह्मदत्त शर्मा सभा महामन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्रीमती कमला आर्या सभा उप-प्रधान, श्री रामसुभाया जी नन्दा, श्री पं. निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी, श्री शेरसिंह जी भजनोपदेशक, श्री प्रो. राम अवतार जी शर्मा, कु. भारती अरोड़ा तथा कु. रजनी कतियाल ने अपने विचार रखते हुए आर्य बन्धुओं तथा आर्य वीरों को और अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर आर्य वीरों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। विशेष जानकारी के लिए आगामी अंक पढ़ें।

—सह-सम्पादक

जन्म-मरण की उलझन—१५

अपनों की याद

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

मान्यों का मान

मनुष्य एक परस्परापेक्षी सामाजिक प्राणी है। वह समाज से ही जीवन तथा विकास के साधन प्राप्त करता है। यदि समाज की प्रथम ईकाई परिवार का किसी को सहयोग प्राप्त न हो, तो व्यक्ति का जीवन सर्वथा ही दूभर हो जाए। उसके पल्लवित, पुष्पित तथा फलित होने की तो बात ही दूर रही। समाज में सब से अधिक सहयोग व्यक्ति को माता-पिता आदि सम्बन्धियों तथा शिक्षक वर्ग एवं मित्रों से प्राप्त होता है। तभी तो शतपथकार की भावना को दर्शाते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है—'मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद' अर्थात् जिसको उत्तम माता-पिता और अध्यापक प्राप्त होते हैं, वही पूर्ण पुरुष बनने में समर्थ होता है। अत एव प्रत्येक सर्वदा यही चाहता है, कि इन की छाया (कृपा दृष्टि) तथा इसी प्रकार बनी रहे, जिससे वह अपना विकास करने के लिए उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त कर सके। परन्तु प्रकृति के नियमानुसार ईश्वरीय व्यवस्था से अथवा अपनी या दूसरों की गलतियों, ना समझियो, अत्याचारों और अन्यायों से न चाहते हुए भी व्यक्ति को काल का ग्रास बनना पड़ता है। जिसके कारण किसी को पारस्परिक सम्बन्ध, प्रेम और सहयोग से वंचित होना पड़ता है तथा वियोग का असह्य दारुण दुःख सहना पड़ता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के विकास को देख कर अपना सिर अनेकबार उन पूर्वजों के चरणों में झुकाता है। जिन की कृपा से हर प्रकार की सुविधा तथा उन्नति का अमरदीप (ज्ञान) प्राप्त होता है। वह बार-बार अनुभव करता है, कि यदि उन को पूर्वजों का वरदान प्राप्त न होता, तो सम्भव उसका संसार में अस्तित्व ही न होता। दूसरों के जीवनों को देख कर या अतीत को स्मरण कर उन्हें रह-रह कर यह बात ख्याल आती है। जब हमारा जीवन भी अज्ञानता के गहरे अन्धेरे में कहा जा रहा था, तब किसी पूज्य ने प्रकाश देकर या जीवन नौका की पतवार बन कर जीवन को सत्पथ दर्शाया था। ऐसे पूज्यों की स्मरणीय भावना को उपयोगी रूप में प्रतिष्ठित करना ही मान्यों का मान या अपनो की याद को स्थायी बनाना है।

किसी के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मान्य जन अनेक प्रकार के होते हैं। किसी से किसी प्रकार का सहयोग प्राप्त होता है, तो किसी प्रकार का मान्यों की महिमा के कारण को ध्यान में रख कर मनुस्मृतिकार ने मुख्य रूप से पांच भेद गिनाये हैं।

> वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पंचमी।
> एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम् ॥2,136॥
> सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते (नीतिशतक) 41
> किं किन्न साधयति कल्पलतेव विद्या।

अर्थात् जिन से किसी को धन का सहयोग, किसी से रिश्ते का सम्बन्ध, जो दूसरों की अपेक्षा अधिक आयु वाले होते हैं, जो भलाई के शुभ कर्म करते हैं तथा विद्या जैसे वरदान को देते हैं, वे अन्यों के लिए क्रमशः उत्तरोत्तर मान के पात्र होते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रति किए गए उपकारो को स्मरण करके अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए किसी न किसी रूप में अपने पूर्वजों के स्मारक को मूर्त रूप देने का यथाशक्ति पूर्ण प्रयास करता है। जिससे अपनों की याद स्थायी बनी रहे और वह अन्यो के लिए प्रेरणा तथा पथप्रदर्शन का कारण बन सके। प्रायः संसार में सभी प्रकार के विचार वालों में अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए स्मारकों के कई रूप प्रचलित हैं। कुछ अपनों की स्मृति में विभिन्न स्थानों पर मन्दिर, धर्मशाला, स्कूल आदि के भवनों और कूओं का निर्माण करवाते हैं, तो कुछ स्मारक ग्रन्थमाला के रूप में पुस्तकों का प्रकाशन करते हैं। कई ब्राह्मणों, दीनों, धर्म संस्थाओं को अन्न, धन, वस्त्र आदि का दान देते हैं, तो कई निर्धन या योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति देते हैं। मृतक, श्राद्ध के प्रचलन में एक कारण यह भी है। इसी भावना के परिणाम स्वरूप आज अनेक परोपकार के कार्य दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

सामाजिक उपयोग या लाभ की दृष्टि से सबका अपना-अपना महत्व है। यदि तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाए तो स्मारकों के रूप में ज्ञान प्रसारक कार्यों की योजना अधिक उपयुक्त है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है

> सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते 4,233

संसार में सब प्रकार के दानों में से विद्या या विद्या सम्बन्धी वस्तुओं के दान का विशेष महत्व है, क्योंकि विद्या द्वारा ही अन्य दान देने योग्य अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होती है। विद्या ही इन के उत्पादन, वितरण और प्रयोग का मूल है। विद्या का दान ऐसा है, जैसे किसी को नेत्र का दान देना, जो कि शरीर के अन्य अंगों से मूल्यवान और उपयोगी है। इसीलिए ही कहा जाता है-'आंखे बड़ी नियामत हैं, 'आंख है तो जहान है, तथा शास्त्रकार आंख से विद्या की उपमा देते हैं।

> सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्, यस्य नास्त्यन्ध एव सः।

अर्थात् ज्ञान को आंख माना गया है और वह जिसके पास नहीं होती, वह अन्धे की तरह भयभीत, असमर्थ होकर ठोकरें खाता है और वह अपनी पूर्ण प्रगति में समर्थ नहीं होता है। वस्तुतः विद्या वही है, जिस से मुक्ति प्राप्त है अर्थात् दुखों, क्लेशों, कष्टों बन्धनों से छुटकारा विद्या द्वारा ही मिलता है।

> विद्या हि का ? या मुक्तिप्रदात्री।

क्योंकि दुःख आदि के अनभीष्ट होने के कारण व्यक्ति इन से बचना चाहता है। इस परिभाषा के अनुसार विद्या का भाव यहां विशेष रूप से अध्यात्मज्ञान है, जैसाकि जीवन ज्योति प्रकरण में दर्शाया गया है।

संसार के विविध क्षेत्रों में जितनी भी आज प्रगति हुई है, उस प्रगति का सब से अधिक श्रेय ज्ञान, विद्या, शास्त्र, साहित्य को ही दिया जा सकता है। विद्या ही सभी विकासों की जड़ है। अन्य पदार्थों की अपेक्षा विद्या सबसे अधिक चिरस्थायी, महत्वपूर्ण और उपयोगी है। इसीलिए भारतीय साहित्य और समाज में विद्यादान के कारण ही गुरु तथा ब्राह्मण को प्रतिष्ठित स्थान दिया गया है। जिन व्यक्तियों, वर्गों, राष्ट्रों के पास विद्या जैसी अनमोल निधि है, वे ही सब से अधिक विकसित, समृद्ध, सुखी, सभ्य और अमर बने हैं। किसी की अमरता का रहस्य उस के साहित्य में ही छिपा हुआ है। इसीलिए बड़े सम्मान के साथ यह गाया जाता है।

> 'सारे जहां से अच्छा,
> हिन्दोस्तां हमारा,
> यूनान मिश्र रोमां,
> सब मिट गए जहां से,
> अब तक मगर है बाकी,
> नामो निशां हमारा।
> कुछ बात है कि हस्ती,
> मिटती नहीं हमारी,
> सदियों रहा है दुश्मन,
> दौरे जमां हमारा।

जब कि मिश्र आदि सब देशों में उन-उन के वंशज विद्यमान हैं। तब इन शब्दों का क्या भाव ? ऐसी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती, कि उन देशों के वासियों का किसी कारण से एक साथ नाश हो गया तथा यह इतिहास और वास्तविकता से भी विपरीत है। विचार करने पर इस का यही रहस्य अवगत होता है, कि यह तो ठीक है, कि भारतीयों की तरह उन की नसों में भी अपने पूर्वजों की भावनायें, विचार और साहित्य उनके पास स्थिर न होने से वे अपने पूर्वजों से दूर हो गए हैं। हां, भारतीयों के पास आज भी अपने पूर्वजों की पवित्र धरोहर, विचारधारा भारतीय साहित्य के रूप में सुरक्षित और विकसित है।

किसी व्यक्ति या वर्ग को अमर बनाने वाला अपने पूर्वजों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने का साधन केवल साहित्य ही है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है—

> 'स्वाध्यायेन—अर्चयेत्—ऋषीन् 3,81

यहां पूर्वजों के ग्रन्थों का अध्ययन करके हम आज भी उनके विचारों के सम्पर्क में आते हैं, वहां अध्ययन तथा उनकी शिक्षाओं के पालन से हम उनको भी अमर बनाते हैं। अतः अपने पूर्वजों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्मारक साहित्य का प्रकाशन ही है। पूर्वजों से सम्बन्धित और उनका प्रियतम साहित्य संस्कृत भाषा का ही है। अतः ऐसे साहित्य को तथा अमर भावना भरे ग्रन्थों के प्रकाशन में सहयोग देना अपनों की याद को स्थायी बनाने का एक अच्छा स्मारक कहा जा सकता है।

विद्यादान के विविध प्रकारों में से साहित्य का प्रकाशन जहां पूर्वजों से जुड़ा हुआ, वहां उनका प्रियतम साहित्य होने से विशेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि छात्रवृत्ति ग्रहण करने वाला छात्र भावी जीवन में स्मरणीय की भावना के अनुकूल रहता है या नहीं और विद्यालय का उद्देश्य पूर्वजों की भावना के प्रतिकूल भी हो सकता है। हां, पढ़ने की प्रवृत्ति, भावना और शिक्षा का मूल स्रोत होने से विद्यालय तथा छात्रों को किसी रूप में सहयोग देने वाले हर तरह से प्रशंसनीय हैं। पुनरपि स्मरणीय की भावना के अनुसार प्रकाशित साहित्य विशेष सन्तोष

(शेष पृष्ठ 8 पर)

ऋषि दयानन्द के क्षत्रिय भक्त

राजाधिराज सर नाहरसिंह शाहपुराधीश

लेखक—डा. भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

राजन्य वर्ग में स्वामी दयानन्द के जो शिष्य एवं अनुयायी थे उनमें राजस्थान की एक छोटी रियासत शाहपुरा के नरेश सर नाहरसिंह का नाम सर्वोपरि उल्लेखनीय है। इनका जन्म कार्तिक कृष्ण 13 सं. 1912 वि. को धनोप ठिकाने के ठाकुर धीरतसिंह के यहां हुआ। ये शाहपुरा की गद्दी पर ज्येष्ठ शुक्ला 13 सं. 1926 वि. को आसीन हुए। स्वामी दयानन्द से इनकी प्रथम भेंट चित्तौड में हुई और ये प्रथम दर्शन में ही महाराज के तेजस्वी व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। नाहरसिंह जी ने ही चित्तौड़ में स्वामी से उदयपुर महाराणा सज्जनसिंह जी का परिचय कराया था।

श्री नाहरसिंह ने स्वामी जी को अपने राज्य की राजधानी शाहपुरा में आमंत्रित किया। तदनुसार स्वामी दयानन्द 8 मार्च 1883 को शाहपुरा पहुंचे। वहां उनका निवास 26 मई 1883 तक रहा। इस अवधि श्री नाहरसिंह ने स्वामी जी सान्निध्य में मनुस्मृति, योगदर्शन तथा वैशेषिक दर्शन का कुछ अंश पढ़ा। उनसे प्राणायाम की क्रिया भी सीखी। शाहपुराधीश के प्रति स्वामी जी का अगाध विश्वासभाव था। स्वामी जी ने उन्हें परोपकारिणी सभा का सभासद् भी नियत किया था। स्वामी जी प्रेरणा से ही शाहपुरा राज्य में शाहपुराधीश नाहरसिंह ने अनेक महत्वपूर्ण सुधार किये। स्वामी दयानन्द तथा नाहरसिंह की प्रगाढ़ आत्मीयता के अनेक प्रमाण उपलब्ध होते हैं। ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार में नाहरसिंह के नाम लिखे गये स्वामी जी के 12 पत्र संगृहीत हैं। 21 मार्च 1882 को लिखे अपने पत्र में स्वामी जी ने शाहपुराधीश को गोरक्षा विषयक महारानी विक्टोरिया के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले आवेदन पत्र पर लोगों के हस्ताक्षर कराने के सम्बन्ध में लिखा है। कुछ अन्य पत्र भी गोरक्षा विषयक ही हैं। स्वामी जी ने शाहपुरा से जोधपुर के लिए प्रस्थान करने के अनन्तर शाहपुराधीश को समय समय पर पत्र लिख कर अपनी यात्रा के कार्यक्रमों तथा जोधपुर के वृत्तान्त से भी अवगत कराया था। स्वामी जी की प्रेरणा से ही शाहपुराधीश के राजमहल में अग्निहोत्र के लिए विधिवत् यज्ञशाला की स्थापना हुई थी और नियमित रूप से पुरोहित यज्ञ किया करते थे। मसूदा के सरदार बहादुरसिंह को स्वामी जी की संस्तुति पर ही शाहपुराधीश ने अपने निजी सचिव के रूप में नियुक्त किया था। शाहपुरा से विदा होते समय श्री नाहरसिंह ने स्वामी जी को वेदभाष्य के लिये 250 रुपये प्रदान किये तथा धर्म प्रचारार्थ एक उपदेशक की नियुक्ति हेतु 30 रुपये मासिक वेतन देने का वचन भी दिया। इसी अवसर पर उन्होंने श्री महाराज की सेवा में एक अभिनन्दन पत्र भी भेंट किया।

स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् श्री सर नाहरसिंह का आर्य समाज के प्रति प्रेम यथावत् बना रहा। 1893 ई. में वे परोपकारिणी सभा के सभापति चुने गये। 1906 ई. में वे इस सभा के मन्त्री निर्वाचित हुए तथा 1932 तक इस पद पर रहे। श्री नाहरसिंह ने शुद्धि आन्दोलन में भी रुचि प्रदर्शित की तथा मलकाने राजपूतों के शुद्ध होने पर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की ओर से उनको हिन्दू समाज में सम्मान पूर्वक सम्मिलित करने का आश्वासन दिया। वे शुद्ध हुए मलकानों के साथ सहभोज में भी सम्मिलित हुए। राजाधिराज नाहरसिंह ने स्वामी दयानन्द की स्मृति में दयानन्द आश्रम की स्थापना हेतु अजमेर में आनासागर के किनारे पर स्थित अपना विशाल बाग परोपकारिणी सभा को प्रदान किया जहां कालान्तर में दयानन्द सरस्वती भवन तथा साधु आश्रम का निर्माण हुआ तथा यज्ञशाला स्थापित की गई।

1925 ई. में जब मथुरा में स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी का समारोह आयोजित किया गया तो राजाधिराज नाहरसिंह ने उसमें भी भाग लिया। वे समारोह की व्यवस्था समिति के प्रमुख सदस्य भी थे। इस अवसर पर 28 फरवरी 1925 को स्वामी के उन समकालीन पुरुषों की एक गोष्ठी आयोजित की गई जिन्हें अपने जीवन में श्री महाराज के दर्शनों का सौभाग्य मिला था। इस गोष्ठी में प्रथम भाषण राजाधिराज नाहरसिंह का ही हुआ। स्वामी दयानन्द विषयक अपने संस्मरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि अपने ईसाई अध्यापक के सम्पर्क में आकर वे हिन्दू धर्म के प्रति अपनी आस्था खो बैठे थे, किन्तु चित्तौड़ में स्वामी जी का सत्संग प्राप्त कर उनकी समस्त शंकाओ का निवारण हो गया और वे वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धावान् बने। राजाधिराज नाहरसिंह की यह इच्छा थी कि जिस प्रकार वे स्वय स्वामी दयानन्द की शिक्षाओ के प्रति आस्थावान् हैं, उस प्रकार उनके पुत्रो मे भी वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा का भाव बराबर बना रहे। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए उन्होने 1947 वि. में अपने पुत्रद्वय-युवराज उम्मेदसिंह व राजकुमार सरदार सिंह का यज्ञोपवीत सस्कार सम्पन्न कराया। इस अवसर पर उन्होने आर्य समाज के प्रख्यात सन्यासी युगल स्वामी नित्यानन्द एवं स्वामी विश्वेश्वरानन्द को उपदेशार्थ आमंत्रित किया। सस्कार सम्पन्न हो जाने के पश्चात् शाहपुराधीश ने उक्त संन्यासियों से निवेदन किया कि वे दोनों राजकुमारों की शिक्षा के लिए एक ऐसे ग्रन्थ का प्रणयन करें जिसमें उनके लिए ब्रह्मचर्य गृहस्थ तथा राजधर्म का समुचित अनुशासन हो। राजाधिराज के इसी आग्रह को स्वीकार कर स्वामी नित्यानन्द एवं स्वामी विश्वेश्वरानन्द ने पुरुषार्थ प्रकाश का प्रणयन किया जिसे शाहपुरा राज्य के व्यय से 1950 वि. मे प्रकाशित किया गया। यह ग्रन्थ आर्य साहित्य मे अनुपम स्थान रखता है।

सर नाहरसिंह द्वारा आर्य विचारधारा ग्रहण करने का ही यह परिणाम था कि उनके पुत्र राजाधिराज उम्मेदसिंह तथा पौत्र राजाधिराज सुदर्शन देव ने भी आर्य समाज से अपना चिरस्थायी सम्बन्ध बनाए रखा। राजाधिराज नाहर सिंह का निधन आषाढ कृष्ण ०, 1989 वि. को 78 वर्ष की आयु मे हुआ।

आर्यों से......?

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज को स्थापित वेदों के प्रचार व प्रसार तथा वैदिक मान्यताओ की स्थापनार्थ किया था। स्वामी जी जब अपने गुरु का आशीर्वाद लेकर कर्म क्षेत्र में उतरे तो उस समय सारी परिस्थितियां स्वामी जी के प्रतिकूल थी। स्वामी जी अकेले झंझावातों से संघर्ष करते हुए टक्कर लेते हुए युग की प्रबल धारा को मोड़ते रहे और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी जी ने अपने अपराजय व्यक्तित्व तथा अजेय साहस के बल पर अपना उद्देश्य प्राप्त किया और समय व इतिहास के पृष्ठों पर एक अमिट रेखा अंकित कर दी। स्वामी जी के आर्य समाज के अन्यान्य क्षेत्रों में अभूतपूर्व सफलताएं प्राप्त कीं, और धार्मिक व राष्ट्रीय पुनर्जागरण का बिगुल बजाकर स्वाधीनता का पथ प्रशस्त किया।

आज हमारे समाज, राष्ट्र तथा मानवता के समक्ष एक अभूतपूर्व संकट उपस्थित हो गया है। मानवता पतन व पराजय के पुलिनों पर खड़ी है। ऐसी विषम परिस्थिति में आर्य समाज व आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। लेकिन दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज हम निश्चित रूप से कर्त्तव्यच्युत हो गए हैं। आज हम केवल कहने के लिए आर्य हैं, करने के लिए नहीं। आज दयानन्द के वैदिक भी समय की धारा के साथ बह रहे है, जबकि उन्हे समय की धारा को मोडने का दायित्व सौंपा गया था। आज हम देख रहे हैं कि महर्षि के सारे स्वप्न धू-धू कर जल रहे है और हम महर्षि के अनुयायी उसे और अधिक हवा दे रहे हैं। आज हमें यह सोचना होगा कि कौन सी ऐसी बात थी, जिससे कि अकेले महर्षि दयानन्द के उपदेशो ने सारे महिमण्डल पर क्रान्ति की ज्योति जला दी और आज आर्य समाज के हजारों सन्यासी, उपदेशको, भजनोपदेशकों का सारा उपदेश व्यर्थ जा रहा है? आज हमें अपना अन्तर टटोलना होगा। यदि महर्षि दयानन्द के प्रति हमारे हृदय में तनिक भी श्रद्धा व कृतज्ञता के भाव हैं, तो हमें अपनी कथनी व करनी का अन्तर मिटाना ही होगा। आज हमारे समक्ष भयंकर चुनौतियां मुंह, बाएं खड़ी हैं और हम गहरी निद्रा मे सो रहे हैं। आज हम मन्दिरो व विद्यालयों को अपने स्वार्थों से जोडकर लड़ रहे हैं। और हम यह भूल ही गए हैं कि हमें क्या करना था?

आईये! महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के कार्यों को पूरा करने के लिए हम अपना सर्वस्व बलिदान करने का संकल्प लें।

—राधेश्याम आर्य-मन्त्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा
सुलतानपुर (उ.प्र.)

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का ६२ वां भव्य वार्षिकोत्सव सम्पन्न



महाशय खुशहाल चन्द जी आर्य का अभिनन्दन किया गया। चित्र मे सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, सर्व श्री सतपाल, ला रामजी दास ज्ञानचन्द आर्य, स्वामी सुमनायती नवनीत लाल आर्य, तथा वरुण गान्धी दिखाई दे रहे है।



बहन शान्ता गौड ने सन्यास आश्रम की दीक्षा ली साथ बैठी हैं बहन ब्रह्म देवी जी जिन्होंने वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण किया। श्रीमती वेदवती, जनकरानी, श्रीमती भण्डारी व अन्य पीछे दिखाई दे रहे हैं शिव सेना के अध्यक्ष श्री जगदीश नागडी, सर्व श्री राजेन्द्र बतरा, ज्ञानी जी, कुलदीप जी।



श्री हंसराज पुस्तक विक्रेता ने ओ३म का झण्डा लहराया। साथ खडे हैं सर्व श्री बलदेव राज सेठी, गुरदियाल सिंह आर्य, यशपाल आर्य।

8 जून 1987 से चारों वेदो के शतको के यज्ञ के साथ वार्षिक सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। यज्ञ प्रात 7 बजे प्रारम्भ हुआ, यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (दयानन्द मठ चम्बा) थे। वेद पाठी प सुरेन्द्र शास्त्री एव प सूर्यपाल शास्त्री थे। यज्ञाग्नि श्रीमती एव श्री गुरविलास सिंह जी आर्य वरिष्ठ उप-प्रधान आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ने अपने कर-कमलो से प्रज्ज्वलित की। यज्ञ के पश्चात् प्रसिद्ध भजनोपदेशक प सत्यपाल पथिक के मनोहर भजन हुए। आशीर्वाद के पश्चात् स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती का यज्ञ की महत्ता पर सार गर्भित प्रवचन हुआ। श्री भरतसिंह जी किदवई नगर, श्री महेन्द्र प्रताप जी एव प्रदीप कुमार जी, प बारीराम शर्मा, श्रीमती सत्य भामा सोनी-यज्ञ के गणमान्य यजमान थे। इसी प्रकार 14 जून तक प्रतिदिन निम्न यजमान बने,—श्री महेन्द्र प्रताप जी एव प्रदीप कुमार जी, श्रीमती सीता देवी मदान, कुलदीप राय जी, सुरेन्द्र कुमार आर्य। श्रीमती ब्रह्मी देवी जी, श्री अजय कुमार बत्ता, श्री कन्हैया लाल जी, श्री नवनीत लाल जी, श्री विनोद ढींगरा, श्री रणधीर ढींगरा, बहन राजरानी जी, श्री रमन कुमार, श्री केवल कृष्ण जी, श्री अरुण कुमार जी, माता कमदेवी जी, माता कौशल्या जी, माता विद्यावती जी, राजरानी मल्होत्रा, श्री चरणसिंह जी, यशपाल जी आर्य, ससार चन्द जी, स्वदेश मल्होत्रा, श्रीमती शान्ता जी अग्रवाल, विद्यावती जी गौड, श्रीमती सन्तोष रानी गुप्ता, श्री जगजीवन पाल सूद, गुरदेव खोसला, सुरेन्द्र बधवा, वीरेन्द्र बधवा, निहाल चन्द नन्दा, मा लछमनदास जी, जनकरानी जी, श्री भवन कुमार जी, वेद भूषण मदान, वेदपाल भण्डारी, सत्य प्रकाश जी देहली, श्री जगदीश नागडी, कन्हैया लाल, श्री छज्जूराम थे। यज्ञ के पश्चात पूरे सप्ताह बनने वाले यजमानो को आर्ष साहित्य भेंट किया गया। श्री हंसराज जी जो लुधियाना के प्रसिद्ध समाज सेवी हैं ने ध्वजारोहण किया। स्मरण रहे कि श्री महेन्द्र प्रताप, श्री प्रदीप कुमार, श्रीमती सत्य भामा सोनी पूरे सप्ताह यजमान बनते रहे। कमला जी वैद्य, जनक रानी जी, मथुरा देवी, सुशीला जी यजमान बनी।

मातृ शक्ति सम्मेलन

13 जून को दोपहर बाद मातृ शक्ति सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती इन्दु पुरी एम ए पी एच डी थी जो कि मोगा से आयी था। सयोजिका बहन कमला जी आर्या उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब। इस सम्मेलन का उदघाटन बहन शान्ता जी गौड प्रधाना स्त्री आर्य समाज दाल बाजार ने किया। प सत्यपाल विजयानन्द जी के मनोहर भजन हुए। स्वामी सुमेधानन्द जी का मातृ शक्ति पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। उन्होंने बताया कि मा यदि चाहे तो देश को अच्छे नवयुवक देकर एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर दें। श्रीमती इन्दुपुरी ने अध्यक्षीय भाषण मे मातृ शक्ति की खोई हुई मर्यादाओं को फिर से प्राप्ति का उपाय सुझाया।

रात्रि 8 बजे से 9-30 बजे तक श्री योधराज जी भाटिया की अध्यक्षता मे शिव सकल्प सम्मेलन हुआ वेद प्रचार भजन मण्डली, पथिक जी, विजयानन्द जी के मनोहर भजन हुए। इस शिव सकल्प सम्मेलन के मुख्य वक्ता प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी ने सबको बताया कि 'शिव सकल्प' अर्थात् हम सबका कल्याण वेदो की मर्यादाओ पर चलते हुए ही हो सकता है।

14 जून को स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने श्रीमती शान्ता गौड को सन्यास की दीक्षा दी। तथा बहन ब्रह्म देवी ने "वानप्रस्थ" ग्रहण किया। तत्पश्चात् आर्य समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता म खुशहाल चन्द जी को स्थानीय समाज की ओर से स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। अभिनन्दन करने वालो मे स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी, श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल, ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी आर्य, श्री नवनीत लाल, भवन कुमार जी, ला रामजी दास, म ज्ञानचन्द जी आदि-2 ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। तत्पश्चात भावी कार्यक्रम सम्मेलन मे स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी श्री वीरेन्द्र जी एम ए श्री विजयानन्द जी पथिक जी ने अपने प्रवचनो एव भजनो से सबको गद-गद किया। श्री वीरेन्द्र जी एम ए ने भावी कार्यक्रम पर कहा कि आर्य समाज गन्दी राजनीति नही अपनाना चाहता है परन्तु इसका मतलब यह नही कि वह राजनीति मे दखल नहीं दे सकता। समय आने पर मुंहतोड जवाब देगा। स्वामी सर्वानन्द जी के अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् श्री रणवीर जी भाटिया ने आए हुए विद्वानो, सन्यासियो व सभा प्रधान का धन्यवाद किया साथ ही उत्सव मे आए हुए स्थानीय एव दिल्ली अहमदगढ, फिरोजपुर, मोगा, जलन्धर आदि 2 जगहो के लोगो का धन्यवाद किया। ऋषिलगर के पश्चात् वार्षिक उत्सव बडी सफलता से सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

बलदेवराज आर्य

राष्ट्र व धर्म रक्षा अभियान दल की उत्तराखण्ड—यात्रा

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ प्र)

4 मई 1987 को पन्नीसी—हरिद्वार सवारी गाडी से नजीबाबाद से प्रस्थान कर हमारा दल हरिद्वार पहुचा। हरिद्वार आर्य समाज मन्दिर के प्रबन्धक श्री देवेन्द्र शास्त्री हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। शास्त्री जी ने हमारे दल का समुचित आतिथ्य किया। सायकाल आर्य समाज की प्रधाना माता सन्तोष रमन भी आकर हमे मिली।

5 मई को प्रातः 8 बजे हम लोग हरिद्वार बस अड्डे पर पहुचे तो "गढवाल मोटर आनर्स यूनियन की बस संख्या 1089 देव प्रयाग जाने को तैयार खडी थी। बस मे सवार हुए तो देखा कि ड्राइवर की सीट के पीछे और समस्त यात्रियो की दृष्टि के समक्ष महर्षि दयानन्द का चित्र लगा है और उसके बराबर मे गायत्री मन्त्र लिखा है। हमारे दल के सदस्य रामचन्द्र शर्मा भजनोपदेशक ने बताया कि ड्राइवर के चढने की खिडकी पर लिखा है, "पहले दयानन्द की जय बोलो, पीछे खिडकी खोलो।" हमने देखा कि ड्राइवर पार्वत्य व्यक्ति है तथा बस भी उसी क्षेत्र के निवासी की है। इससे हमे प्रसन्नता तो हुयी ही साथ ही हमारा मनोबल भी बढा क्योकि अभी तक हमने यही सुन रखा था कि उधर आर्य समाजी कोई नही है।

मध्यान्ह 1 बज कर तीस मिनट पर हमारी बस देव प्रयाग पहुची। हम लोगो ने बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला मे बसेरा किया। सभा के लिए पचास रुपये मे ध्वनि विस्तारक निश्चित किया। 9 से 11 बजे तक रात्रि को कालीकमली वाले की धर्मशाला मे ही सभा हुई।

सभा भी हो रही थी और वर्षा भी किन्तु लोग भी अत्यन्त तन्मयता के साथ सुन रहे थे। अगली प्रात. श्री भगवत दास जी कोठीवाल मिलने आए। आप देव प्रयाग मे कालिज प्रवक्ता हैं।

देव प्रयाग से सवा 9 बजे हमारी बस जामणीखाल के लिए चल दी और लगभग 11 बजे जामणीखाल पहुची। उच्चतर जामणीखाल के बेसिक विद्यालय के सामने वाले मैदान मे सभा हुई। यद्यपि ग्राम की आबादी स्वल्प ही है किन्तु उस छोटी सी आबादी में उपस्थिति आशा से अधिक थी। लगभग दो घण्टे कार्यक्रम चला, श्रोताओ ने शान्ति से ध्यानपूर्वक सुना—रात्रि को बरोला ग्राम में सभा हुआ रात्रि को लगभग 100 मिनट सभा चली, लोगों ने ध्यानपूर्वक सुना।

देव प्रयाग से हम लोग वर्षा मे चले थे, जामणीखाल भी वर्षा मे पहुचे। दिन मे जामणीखाल और रात्रि को बरोला की सभा ठीक-ठीक हो गई।

9 और 10 मई को प्रातः हिण्डोलाखाल और रोडधार के इन्टर कालिजो मे मेरे भाषणो की व्यवस्था थी किन्तु दोनो ही दिन मध्यान्ह 2-3 बजे तक वर्षा होते रहने के कारण कालिजो मे भाषण नही हो सके। हा, अपरान्ह 9 मई को हिण्डोलाखाल, जामणीखाल से 8 किलोमीटर दूर सार्वजनिक सभा मे प्रचार तथा साहित्य वितरण हुआ और इसी प्रकार जामीणीखाल से तीन किलोमीटर दूर रोडधार में 10 मई को सार्वजनिक सभा मे प्रचार तथा साहित्य वितरण हुआ। कालिजो के प्रधानाचार्यों को अन्य साहित्य के साथ-साथ दो-दो प्रतिया सत्यार्थ प्रकाश की कालिजो के के पुस्तकालयो के लिए भेंट की गयी। 6 मई से 10 मई तक मास्टर श्री सुरेश आर्य ने न केवल पूरी प्रचार व्यवस्था ही की अपितु भोजन आदि से पूर्ण आतिथ्य हम लोगो का किया।

मास्टर सुरेश के प्रति मन से शुभ कामनाए निकलती हैं। वह सचमुच स्तुत्य, अभिनन्दनीय और आशीर्वादाई है। उसने बरोला का बिना किराये का आवास छोडकर नित्य ही प्रातः साय 6 किलोमीटर की उतरायी चढायी की पैदल यात्रा स्वीकार की किन्तु अपनी सुधारवादी प्रचार भावना को मूर्तरूप देने के लिए जामणीखाल मे किराये का कमरा लेकर रहना स्वीकार किया।

11 मई को प्रातः 8 बजे हमारा दल टिहरी के लिए चल दिया। 10 बजे हम लोग टिहरी पहुचे। केवल 20 किलोमीटर की यात्रा बस ने दो घण्टे मे पूरी की।

मध्यान्तर वर्षा बन्द हुई। ठीक पाच बजे आर्य समाज मन्दिर मे सभा प्रारम्भ हुई। उपस्थिति यद्यपि थोडी ही थी किन्तु नगर के प्रतिष्ठित, शिक्षित राजकीय अधिकारी आदि उपस्थित थे। दो घण्टे कार्यक्रम चला। उस सभा के श्रोता जो प्रभाव लेकर गये, वह हमारे लिए न केवल सन्तोष अपितु अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है।

उस दिन सभा चलते भी वर्षा होती रही और अगले दिन 12 मई को भी पूरे दिन वर्षा होती रही। वर्षा होते रहने तथा सायकाल वर्षा प्रबल होने के कारण उस दिन सभा नही हो सकी। अगली रात्रि पूरी रात वर्षा रही तथा पहले की अपेक्षा और भी वेग से होती रही। 13 मई को भी प्रात. से ही वर्षा हो रही थी और मानसून से सम्पूर्ण आकाश मण्डल तो आच्छादित था ही, नीचे से मानसून बने धुए की भाति उठ-उठ कर आकाश मे और घना होता जा रहा था। हमे उस दिन उत्तरकाशी जाना था। विचार आया कि यदि वहा भी इसी प्रकार वर्षा हो रही है तो उत्तरकाशी की ओर जाना निरर्थक ही रहेगा।

उत्तरकाशी की ओर जाने वाली बसो के ड्राइवरो-कण्डक्टरो से पूछने पर पता लगा कि वर्षा की यही दशा वहा भी है। सोचा कि उत्तरकाशी और भटवारी का कार्यक्रम स्थगित कर श्रीनगर और पौडी चला जाये। उधर की जानकारी करने पर पता चला कि वर्षा की यही दशा उधर भी है। हमारे सामने वापस लौटने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नही था। आगे जाए और वर्षा की अधिकता के कारण न तो सभा हो सके और न साहित्य वितरण तथा जन सम्पर्क भी न हो तो वहा पडे रहने का कोई लाभ नही था।

श्री महावीर प्रसाद जी गैरोला एडवोकेट जब आये तब तक हम लोग प्रातराश से निवृत्त होकर वापसी के लिए तैयार हो चुके थे। उनसे वार्तालाप हुआ और आगे के समाचार सुनकर उन्होंने भी हमारा समर्थन किया। हम तुरन्त ही बस अड्डे पर पहुचे और 9 बजे बस द्वारा यात्रा प्रारम्भ कर दी। लगभग 1 बजे हम हरिद्वार बस अड्डे पर पहुच गए तथा हरिद्वार मे ट्रेन द्वारा सायकाल 6 बजे नजीबाबाद आ गये।

हमारी इस यात्रा से उस क्षेत्र के लोगो मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रति रुचि उत्पन्न हुई है। अभी 21मई को जामणीखाल से—जो हम वितरित करके आये हैं, उन सभी पुस्तको की पाच पाच प्रतियो की माग के साथ ही सत्यार्थ प्रकाश की भी पाच प्रतियो के लिए श्री मास्टर सुरेश आर्य को हमे लिखना पडा और हमने उसी डाक-पारसल द्वारा पुस्तकें भेज दी।

—

आर्य समाज नवांशहर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज नवांशहर का वार्षिक निर्वाचन 7-6 87 रविवार को हुआ जिसमे सर्व सम्मति से श्री देवेन्द्र कुमार जी प्रधान चुने गये तथा अन्य अधिकारी गण मनोनीत करने के लिए उन्हे अधिकार दिये गए और निम्नलिखित अधिकारी मनोनीत किए गए।

प्रधान—श्री देवेन्द्र कुमार जी, उपप्रधान—श्री जितेन्द्र नाथ भल्ला जी, डा. पुरुषोत्तम देव जी, श्रीमती कौशल्या जी भूच्चर, श्री वेद प्रकाश जी लखोईया,

मन्त्री—श्री वेद प्रकाश जी शर्मा, उप-मन्त्री—श्री प्रेम नाथ जी चोपडा, प्रचारमन्त्री—श्रीमती पुष्पा जी छिब्बा, कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्री चरण जी, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती इन्दुमती जी गौतम।

अन्तरग सदस्य.—श्री सूरज प्रकाश ओहरी जी, श्री प्रेम सागर जी सरीन, श्रीमती प्रेमलता जी भूच्चर, श्रीमती आदर्श जी भल्ला, श्रीमती आशावती जी लखोईया, श्री अनिल कुमार जी शर्मा, श्री अविनाश चन्द्र जी।

प्रतिष्ठित सदस्य —श्री केवलकृष्ण जी सैगर, श्री प्रेम कुमार जी भारद्वाज, श्री इन्द्र देव जी गौतम।

विशेष आमन्त्रित—श्री कुलवन्तराय जी। श्री मदन लाल जी।

—वेद प्रकाश शर्मा
मन्त्री

आर्य समाज रोपड़ का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज रोपड का निर्वाचन 14-6 87 को 10 00बजे प्रात निम्नलिखित हुआ :—प्रधान-श्रीमान सत्यव्रत, उप-प्रधान-श्रीमान चौधरी अजीत राय, उप-प्रधान-श्रीमान प्रेम कुमार गुप्ता, मन्त्री-श्रीमान मास्टर गौरी शकर शर्मा, उप-मन्त्री-श्री सवम आर्य, प्रचार मन्त्री-श्री प्रवीन जी, कोषाध्यक्ष-श्री सत्यभूषण जी, पुस्तकाध्यक्ष-श्री रामरक्खा एम ए बी एड, आडीटर-श्री पुरुषोत्तम दास, भवन इन्चार्ज-श्री अमृतलाल गुप्ता, प्रतिष्ठित सदस्य-श्री बाबूराम जी,

अन्तरग सदस्य-श्री मास्टर विशाराम जी, श्री चौधरी सुभाष, श्रीमती कृष्णा जी, श्रीमती सुशीला देवी, श्री धर्मपाल जी,

—गौरी शकर शर्मा
मन्त्री-आर्य समाज रोपड

राष्ट्रीय एकता पर साप्ताहिक साधना शिविर सम्पन्न

वेद सस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक सप्ताह का साधना शिविर 17 मई 1987 को डा. कर्ण सिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। अपने भाषण मे, उन्होने भक्तियो। ज्ञान-योग और कर्मयोग की शिक्षा के साथ-साथ सस्कृत शिक्षा को राष्ट्रीय एकता के लिए अनिवार्य बनाया। सस्थान मे हो रहे, वैदिक परिभाषा कोश के निर्माण कार्य की उन्होने भूरि भूरि प्रशसा की।

शिविर का प्रमुख स्वर यह था कि राष्ट्रीय एकता के लिए आध्यात्मिक साधना एक अनिवार्य आवश्यकता है। इसके तत्वज्ञान को डा. अभय देव ने उपस्थित किया। डा बद्री प्रसाद पचोली ने राष्ट्रीय एकता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को उपस्थित किया और स्वामी दयानन्द विदेह ने साधना के क्रियायोग पक्ष का सचालन किया। सस्थान से सम्बद्ध सदस्यो ने नेत्रदान के कार्य को प्रचारित करने व इसे सस्थान के स्थायी कार्य के रूप मे रखने की योजना को स्वीकार किया।

शिविर मे स्वामी जगदीश्वरानन्द, श्रीमती वेदवती, डा. रामाश्रय शर्मा, डा. फतेह सिंह, श्री चैतन्यमुनि वानप्रस्थ आदि ने भी व्याख्यान दिये। श्रीमती चन्द्रप्रभा का सगीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यज्ञ की पूर्णाहुति और कामधुक् प्रार्थना के साथ शिविर की समाप्ति हुई।

—योगेन्द्र बवधा
जन प्रचार मन्त्री (आदरी)

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती गुजा जालन्धर का वार्षिक चुनाव 14 जून रविवार को सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ :—

प्रधान—श्री रामलुभाया नन्दा, उपप्रधान—श्री नौतनदास भाटिया, उपप्रधान-श्री त्रिलोक चन्द,श्रीमती कौशल्या देवी, महामन्त्री—श्री किशोरी लाल भोला, मन्त्री—श्री लाल चन्द नन्दा, श्री भारत भूषण बी ए कोषाध्यक्ष—श्री प्रेम भाटिया, पुस्तकाध्यक्ष—श्री एम. एल सेठी।

अन्तरग सदस्य—श्री महेन्द्रपाल खन्ना, मा मोहनलाल, श्री महेन्द्र पाल जय गोपाल, श्री बूटी राम, कृष्णा देवी व शामलाल को सदस्य मनोनीत किया गया। —किशोरी लाल भोला
महामन्त्री

(4 पृष्ठ का शेष)

प्रद तथा अन्य दोनो से विशेष महत्व वाली होने से किसी का उपयुक्त स्मारक हो सकता है। आज सब का जीवन इतना अधिक व्यस्त है, कि पत्र-पत्रिकाओ को छोड कर या छोटी-छोटी विशेष पुस्तको को छोड कर बहुत कम ही विशेष पुस्तकें पढ़ते हैं। पत्रिकायें सामयिक होने से प्राय: पढने में आती रहती हैं। अत: कीर्ति के फैलाव और अधिक पढे जाने की दृष्टि से सामयिक पत्रिकाओ के विशेष अको को अपनो की याद मे प्रकाशित करना दुहरा लाभप्रद हो सकता है।

पूर्वजो के स्मारक को विद्या-प्रसार का रूप देना एक अन्य दृष्टिकोण से भी विशेष महत्वपूर्ण है। प्राय: ऐसी मान्यता है, कि इस जीवन मे जिस पदार्थ का दान करोगे, अग्रिम जन्म मे उसी पदार्थ की प्राप्ति होगी। दान में दिए गए अन्य सब पदार्थों की प्राप्ति अन्य योनियो में भी जन्म लेकर की जा सकती है। परन्तु विद्या या विद्या सम्बन्धी दान एक ऐसा दान है, जिस को केवल मनुष्य योनी मे ही प्राप्त किया जा सकता है। कर्म सिद्धान्त की विशेष मीमासा मे न जाकर यदि हम इस पर सामान्य मान्यता (जो बोओगे, सो काटोगे, क्योकि 'पचतार पचम: पुनराविशाति अथर्व 13,3,38 जो अपने कर्म के खाते मे जैसे कर्म जमा करता है, वह वैसा ही प्राप्त करता है) के अनुसार विचार करें, तो अग्रिम जन्म मे मानव चोला प्राप्त करने के लिए विद्यावान सर्वोत्तम है। अत: जो अपनो की याद को स्थायी बनाना चाहते हैं, उनके लिए पारस्परिक सम्बन्धो को सुन्दर बनाने वाले साहित्य का प्रकाशन या इस ज्ञान का प्रसार सब से उत्तम, सरल तथा लाभप्रद कार्य है।

अन्त मे महात्मा सर्व प्रिय जी ने कहा, कि आमन्त्रित महिलायें अपने इस नए उत्तरदायित्व को सरलता से निभा सकें। आश्रम ने इसके लिए विशेष योजना बनाई है। अब यह 'जन्म-मरण की उलझन' की चर्चा इसी वक्तव्य साथ आज समाप्त की जाती है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 13. 21 आषाढ सम्वत् 2044 तदानुसार 5 जुलाई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

हम सत्य पथ से न भटकें

लेखक—श्री प्रा. रामप्रसाद जी वेदालंकार
अध्यक्ष वेद विभाग गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

ओ३म् मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः ॥
मान्तः स्थुर्नो अरातयः ॥ अथर्व 13 1 59 ॥
ऋ 10 57 1 ॥

अन्वयः इन्द्र ! वयं पथः मा प्रगाम सोमिनः (वयं) यज्ञात् मा (प्रगाम)। अरातयः नः अन्तः मा स्थु ।

अन्वयार्थः—(इन्द्र !) हे जगत् सम्राट ! हे परमेश्वर ! हे जगदीश्वर ! (वयं पथः मा प्रगाम) हम सत्पथ से सन्मार्ग से न भटकें। (सोमिन यज्ञात् मा प्रगाम) ऐश्वर्ययुक्त होते हुए भी, शक्तिमान् होते हुए भी हम यज्ञ आदि शुद्ध कर्मों से न भटकें-परोपकार आदि शुभ कार्यों को न छोड़ें। (अरातयः नः अन्तः मा स्थुः) यज्ञ आदि शुभ कर्मों में बाधा डालने वाले अराति भाव-अदान भाव-स्वार्थ भाव वा काम क्रोध लोभ मोह आदि शत्रु हमारे भीतर न रहें।

हे इन्द्र ! हे जगदीश ! हे परमेश्वर ! हम पथ से कभी विचलित न हों, हम सन्मार्ग से कभी भटकें नहीं। क्योंकि जहां हम एक बार पथ से भटक गये, राह से पृथक् हो गए, पटरी से हट गये तो बस फिर क्या कुछ होगा यह नहीं कहा जा सकता। जैसे एक बार मनुष्य धर्म-भूमि से जरा भटका नहीं कि फिर वह शनैः शनैः कहां तक नीचे जा सकता है, यह कुछ नहीं कहा जा सकता। एक व्यक्ति पहले रेलवे में एक सीट के आरक्षण के लिए एक रुपया प्रति सीट विशेष लेता है, परन्तु बहुत जल्दी उसे एक सीट के रिजर्वेशन के लिए यह थोड़ा प्रतीत होता है। फिर वह दो रुपये लेता है, फिर दो के चार लेता है। फिर चार क्या पूरे पांच रुपये प्रति सीट के लिये मुख से स्पष्ट मांगता है। जबकि उसे कहता है कि भाई साहब ! ऐसा आपको करना चाहिए।" इस पर वह कहता है "अच्छा तो अगले स्टेशन पर आप उतर जाए।" "बाबू जी ! बड़ी कठिनाई है" तो फिर बताओ मैं क्या करूं ? मैंने तो आपसे बहुत कम कहे हैं, दो सीटों के लिए केवल दस रुपये ..।' कभी समय था कि एक रुपया प्रति सीट विशेष लेकर भी इस को ऐसा प्रतीत होता था कि वह कोई बड़ा भारी अनुचित कार्य कर रहा है, परन्तु अब पांच रुपये प्रति सीट भी इसको बहुत कम प्रतीत होता है। दिल्ली से बम्बई 30-35 रुपये प्रति सीट का तो पर्याप्त सुन लिया था, पर उस दिन मुझे बहुत ही दुःख एवं आश्चर्य हुआ जबकि एक माता को अति भीड़ के कारण तीन सीटों के लिए बम्बई से दिल्ली तक सौ-सौ के तीन नोट विशेष देने पड़े। इससे ज्ञात हुआ कि जब मनुष्य, वास्तविक पथ से भ्रष्ट हो जाता है—सत्पथ से विचलित हो जाता है तो फिर वह कहां तक नीचे गिर सकता है यह कहा नहीं जा सकता।

एक व्यक्ति जब सत्यभाषण रूप पथ से भटक कर मिथ्या भाषण करना प्रारम्भ कर देता है तो फिर वह कहां-कहां कितना-कितना किस-किस से झूठ बोल सकता है, यह कहना कठिन है। सत्यभाषण से बस जहां एक बार फिसले तो फिर पुनः पटरी पर आना बहुत कठिन हो जाता है। अनेकों महानुभावों का कहना है कि व्यापार बिना झूठ के चलता नहीं इसलिए वे व्यापार में झूठ बोलते हैं, पर जब पटरी से एक बार गाड़ी उतर गई तो फिर घर में होते हुए भी फोन पर 'घर में नहीं बाहर गये हैं, कहा एवं कहलवाया जा रहा है। पति-पत्नी से इसलिए झूठ बोल रहा है कि यदि वह पूरा वेतन या नई वृद्धि बता दे तो फिर उसका जेब खर्च कैसे निकलेगा। पत्नी भी होगी घर में कुछ, कहेगी कुछ, क्योंकि यदि वह सत्य कहे तो फिर मातृ भक्त सुपुत्र मां से विमुख होकर उसका कैसे बन सकता है ? एक सर्विस करती हुई देवी को जब पिछला अवशिष्ट धन मिला तो उससे अपने कई ऋण चुकाये और पति को नहीं बताया। इसलिये एक बार जब मनुष्य पटरी से उतर जाता है, मार्ग से विचलित हो जाता है तो फिर यह नहीं देखा जाता कि वह पति है, पत्नी है, भाई है, बहिन है, बच्चा है, मित्र है वा माता है या पिता है इत्यादि सब से स्वभावतः झूठ बोलना आरम्भ हो जाता है। जहां एक बार जरा सन्देह हुआ तो फिर पग पग पर सन्देह होने लगता है। एक संस्था का संरक्षक एक सन्यासी था जो अपने शिष्यों को जब परस्पर बात करते हुए देखता तो झट खिड़की की ओट में खड़ा हो जाता, यह सोचकर कि "ये मेरे बारे में तो कुछ नहीं कहते इत्यादि।' पति यदि अपनी माता वा बहिन से कुछ बातें करें तो पत्नी को सन्देह होता है कि 'सम्भवतः' वह मेरी निन्दा कर रहे होंगे। जहां कहीं जरा सन्देह हुआ तो पता नहीं भोजन में वा पेय पदार्थ में कुछ न मिला दिया हो इत्यादि। कई तो इतना आगे तक सन्देह करने लग पड़ते हैं कि कहना भी कठिन है। अतः इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि प्रभो ! हम अपने पथ से सत्पथ से प्रकाश के पथ से-ज्ञान के पथ से-संयम के पथ से-स्वाध्याय सत्संग आदि के पथ से प्रभु भजन अर्थात साधना के पथ से कभी विचलित न होवें !

यद्यपि कुपथ से, अनृत पथ से कभी हमें सम्भवतः धन मिल जाए, अन्न मिल जाए, स्वास्थ्य मिल जाए, सन्तति मिल जाए, पत्नी उपलब्ध हो जाए, घर प्राप्त हो जाए, सहस्रों वा लाखों का वैभव हाथ लग जाए, बहुविध आभूषण छीना झपटी आदि से हस्तगत हो जाए, परन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि असत पथ, अनृत मार्ग मार्ग उल्टे अर्थात् कुटिल मार्ग से जो उपलब्ध हुआ ऐश्वर्य होगा-धन वैभव होगा, वह वास्तविक ऐश्वर्य नहीं होगा, वह वास्तविक धन-वैभव नहीं होगा, उस से उपलब्ध होने वाला यश-कीर्ति स्नेह, मान सम्मान आदि भी जो होगा वह भी वास्तविक, स्थिर, टिकाऊ नहीं होगा। क्योंकि अशुभ कर्मों से, उल्टे मार्गों से अर्जित किया हुआ जो धन वैभव है वह अत्यन्त सावधान रहने पर भी अशुभ कर्मों में ही व्यय होगा। अर्थात् वह धन जैसे आया है वैसे ही चला जाएगा। अतः हे प्रभुवर ! हम धन सम्पत्ति, यश कीर्ति, मान-सम्मान, स्नेह, आशीर्वाद, सुख-सौभाग्य आदि जो भी पायें वह पथ से ही पायें, सुपथ से ही पायें, सन्मार्ग से ही प्राप्त करें, जैसे कि यजुर्वेद में भी बड़े सुन्दर शब्दों में प्रार्थना की गई है 'अग्ने नय सुपथा राये' हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! हमें ऐश्वर्य की धन की उपलब्धि के लिए सुपथ से ले चल' तात्पर्य यह है कि इनके आकर्षण में फसकर-रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द आदि में फसकर हम कभी सुपथ से विचलित न हो जायें।

हे परमेश्वर ! जब हम किसी रूप से अत्याधिक प्रभावित हो जाते हैं तब हम उसकी प्राप्ति येन केन प्रकारेण करना चाहते हैं। जब हम किसी स्वाद के प्रति आकर्षित हो जाते हैं तब हम चोरी से वा सीना जोरी से वा मारपीट आदि करके भी उसे पा लेना चाहते हैं। जब जब हम किसी स्पर्श से प्रभावित हो जाते हैं तो फिर मान-सम्मान और मर्यादाओं को लांघ कर भी हम उसको पा लेने के लिए उद्यत हो जाते हैं, इसी प्रकार जब हम किसी गन्ध वा शब्द आदि से प्रभावित हो जाते हैं तो फिर हम विवेक खो बैठते हैं और वही सब कुछ कर बैठते हैं जो कि हमें नहीं करना चाहिए। इसीलिये तो हे इन्द्र ! हे जगदीश ! अपने को असमर्थ मानकर हम आप से प्रार्थना कर रहे हैं कि हम अपने वास्तविक पथ से समुचित मार्ग से विचलित न हो जाए। प्रभुवर ! अपना वरद हस्त सदा सर्वत्र हम पर बनाए रखना ताकि हम अपने भीतरी-बाहरी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हुए सदा सत्पथ पर चलने वाले बने रहें।

—●—

वेद में गुरु मन्त्र

लेखक—श्री पं. धर्मदेव जी "मनीषी"
वेद मार्तण्ड गुरुकुल कालवा

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्-दयो३म्॥ (यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3)

महर्षि दयानन्द जी गायत्री मन्त्र का अर्थ इस प्रकार करते हैं—

अर्थ—(ओ३म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है; क्योंकि इसमें जो अ उ और म् तीन अक्षर मिल कर एक ओ३म् समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे—अकार से विराट् अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक तथा ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं। अब तीन महाव्याहृतियों के अर्थ संक्षेप से लिखते हैं—'भूरिति वै प्राणः, यः प्राणयति चराऽचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः, जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है, उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है। 'भुवरित्यपानः' यः सर्वं दुःखमपानयति सोऽपानः, जो सब दुःखों से रहित, जिसके संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं, इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। 'स्वरिति व्यानः' यो विविधं जगत् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सबका धारण करता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है। ये तीनों वचन तैत्तिरीय आरण्यक (प्रपा.7, अनु. 5) के हैं। (सवितुः) यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य, जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है, देवस्य) यो दीव्यते दीव्यते वा स देवः, जो सर्व सुखों का देने हारा और जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं, उस परमात्मा का जो(वरेण्यम्) 'वर्त्तुमर्हम्' स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (भर्गः) 'शुद्ध स्वरूपम्' शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्म स्वरूप है। (तत्) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (धीमहि) 'धरेमहि' धारण करें। किस प्रयोजन के लिये ? कि (यः) 'जगदीश्वर' जो सविता देव परमात्मा (नः) 'अस्माकम्' हमारी(धियः)'बुद्धीः' बुद्धियों को (प्रचोदयात् 'प्रेरयेत्' प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

हे परमेश्वर! हे सच्चिदानन्दस्वरूप हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव! हे अज निरञ्जन निर्विकार! हे सर्वान्तर्यामिन्! हे सर्वाधार जगत्पते सकल जगदुत्पादक! हे अनादे! विश्वम्भर सर्वव्यापिन्! हे करूणामृतवारिधे! सवितुर्देवस्य तव यदोम्भूर्भुवः स्वर्वरेण्यं भर्गोस्ति, तद्वय धीमहि दधीमहि धरेमहि ध्यायेम वा। कस्मै प्रयोजनायेत्यत्राह—हे भगवन्! यः सविता देवः परमेश्वरो भवन्नस्माकं धियः प्रचोदयात् स एवास्माकं पूज्य उपासनीय इष्टदेवो भवतु नातोऽन्यं भवत्तुल्यं भवतोऽधिकं च कंचित् कदाचिन्मन्यामहे।

हे मनुष्यो! जो सब समर्थों में समर्थ सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्य मुक्त स्वभाव वाला, कृपासागर, ठीक-ठीक न्याय करने हारा जन्म-मरणादि क्लेश रहित, आकार रहित, सबके घट-घट का जानने वाला, सबका धर्त्ता पिता उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करने हारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त, जगत् का निर्माता, शुद्ध स्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है, उस परमात्मा का जो शुद्ध चेतनस्वरूप है, उसी को हम धारण करे, इस प्रयोजन के लिए कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियो का अन्तर्यामिस्वरूप हमको दुष्टाचार, अधर्म युक्त मार्ग से हटा के श्रेष्ठाचार सत्यमार्ग में चलावे। उसको छोड़कर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें। क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। वहीं हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखो का देने हारा है।" (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)।

इस मन्त्र को सम्पूर्ण वेद में शिरोमणि मन्त्र माना गया है। महर्षियों का आदेश है कि मन्त्रों के आदि तथा अन्त में यज्ञ के समय 'ओ३म्' का प्रयोग करना चाहिए। अर्थात् मन्त्र के आरम्भ में प्लुत (त्रिमात्रिक) ओ३म् का उच्चारण करना चाहिये। इसी प्रकार मन्त्र के टि भाग के (यदि अन्त में स्वर हो तो वह 'टि' कहलाता है। यदि अन्त में व्यंजन हो तो व्यंजन से पूर्ववर्ती स्वर समेत वह व्यंजन 'टि' होता है। जैसे मन्त्र का अन्तिम 'यात्' टि है) स्थान में ओ३म् पढ़ना चाहिए। इस व्यवस्था के अनुसार 'प्रचोदयात्' के स्थान में प्रचोदओ३म्' पढ़ना चाहिए।

इस विषय मे महर्षि मनु का आदेश है—

> ब्रह्मणः प्रणवं कुर्यादादावन्ते च सर्वदा।
> स्रवत्यनोङ्कृतं पूर्वं पुरस्ताच्च विशीर्यति॥
> (मनुस्मृति 2।75)

वेद मन्त्र के आदि तथा अन्त में सदा प्रणव—ओ३म् का प्रयोग करें। आरम्भ में ओ३म् न करने से वह धीरे-2 नष्ट होता है और अन्त में ओ३म् न करने से भी वह नष्ट हो जाता है।

महर्षि पाणिनी जी ने इस बात को किस प्रकार प्रतिपादन किया है—

"ओमभ्यादाने" (अष्टाध्यायी अध्याय 8, पाद, 2, सूत्र—87) अभ्यादान—मन्त्र के आरम्भ में उदात्त ओ३म् पढ़ना चाहिये।

"प्रणवष्टे" (अष्टाध्यायी अध्याय 8, पाद 2, सूत्र 89) यज्ञ कर्म में टि भाग को उदात्त प्रणव—आदेश होता है।

दोनों महर्षियो के आदेश में थोड़ा-सा भेद प्रतीत होता है। मनु महाराज मन्त्र के अन्त में ओ३म् का विधान करते हैं। आचार्य पाणिनि 'टि' भाग के स्थान मे ओ३म् का आदेश करते हैं। तनिक-विचार किया जाए तो यह भेद नहीं है। 'टि' भी मन्त्र का अन्त ही है। तात्पर्य यह है कि मन्त्र के अन्त में 'ओ३म्' अवश्य पढ़ना चाहिए। जो व्याकरणानभिज्ञ 'टि' का विवेक न रखता हो, वह मन्त्र के अन्तिम अक्षर के पश्चात् पढ़े। पढ़े अवश्य. न पढने से उसका वेद पाठ मनु के मतानुसार व्यर्थ—अर्थहीन हो जाता है। क्योंकि वेदों का मुख्य अर्थ ओ३म्—ईश्वर है। जैसा कि कठोपनिषद् में कहा गया है—

> सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
> यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ओ३म् इत्येतत्।

जिस पद का सम्पूर्ण वेद पुनः पुनः अभ्यास करते हैं, सारे तप जिसके उद्देश्य से किये जाते हैं, जिसकी इच्छा करते हुए लोग ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं। हे नचिकेतः! संक्षेप से तुझे बताता हूं वह पद ओ३म् है।

वेद के सम्पूर्ण मन्त्र या तो स्तुतिपरक हैं, या प्रार्थनापरक हैं अथवा उपासना विधायक हैं। अनेक मन्त्र ऐसे भी हैं जिनमें स्तुति तथा प्रार्थना दोनों हैं। अनेकों में स्तुति के साथ उपासना का मिश्रण है। कहीं प्रार्थना और उपासना दोनों हैं। यह सावित्री, गायत्री मन्त्र ऐसा है जिसमें स्तुति प्रार्थना तथा उपासना तीनों हैं। इस हेतु यह सब मन्त्रों में श्रेष्ठ कहलाता है। इस मन्त्र में स्तुति प्रार्थना, उपासना इन तीनों का दिग्दर्शन कराने से पूर्व स्तुति आदि का संक्षिप्त लक्षण देना आवश्यक है।

स्तुति—जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा कहना स्तुति है। किसी पदार्थ के गुण, दोषों का विवेचन करके गुण को गुण और दोष को दोष कहना स्तुति है।

प्रार्थना—स्तुति के द्वारा मनुष्य को अपनी न्यूनता का भान होता है। उस न्यूनता को पूरा करने के लिये व्यग्र हो कर पुरुषार्थमयी कामना का नाम प्रार्थना है।

उपासना—प्रार्थना के द्वारा प्राप्तव्य वस्तु के प्राप्त करने का नाम उपासना है।

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में स्तुति आदि का फल यह लिखा है—

"स्तुति से ईश्वर मे प्रीति, उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।"

आगे चलकर फिर लिखा है—

"इस स्तुति का फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे गुण कर्म स्वभाव अपने भी करना! जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के कीर्तन करता जाता है और अपना चरित्र नहीं सुधारता है उसकी स्तुति करना व्यर्थ है।"

"परमेश्वर भी सबके उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है, हानिकारक कर्म मे नही। जो कोई 'गुड़ मीठा है' ऐसा कहता है, उसको गुड़ या उसका स्वाद कभी प्राप्त नहीं होता और जो यत्न करता है उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड़ मिल ही जाता है।

"इस उपासना का फल—जैसे शीत से आतुर मनुष्य का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुणकर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुणकर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इसका फल पृथक् होगा। परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता है वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों के सुख के लिए दे रखे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर को ही न मानना कृतघ्नता और महामूर्खता है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

साम्प्रदायिकता कैसे समाप्त हो सकती है–2

इस क्रम के पिछले लेख में मैंने लिखा था कि गान्धी जी की तुष्टि-करण की नीति ने साम्प्रदायिकता को कितना प्रोत्साहन दिया था। कांग्रेस का उन्होंने जो आधार बनाया था वही उनके पश्चात् दूसरे नेताओं ने अपनाया, पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने धर्म निर्पेक्षता का एक नया मन्त्र अपने देशवासियों को दिया और उस समय से आज तक कांग्रेस कम्युनिस्ट, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, लोक दल और दूसरी राजनैतिक पार्टियां धर्म निर्पेक्षता का जाप जपती रही हैं। परन्तु आज तक किसी ने स्पष्ट रूप से नहीं बताया कि धर्म निर्पेक्षता से उनका अभिप्राय: क्या है। प्राय: यही कह दिया जाता है कि धर्म और राजनीति को एक दूसरे से अलग रखना चाहिए और कई बार यह भी कह दिया जाता है कि धर्म के नाम पर राजनीति और राजनीति के नाम पर धर्म का प्रयोग नहीं होना चाहिए। इसके अर्थ का अनर्थ उस समय होता है जब कोई हिन्दू अपने आपको हिन्दू कहता है तो उसे साम्प्रदायिक कहा जाता है परन्तु जब भी कोई मुसलमान अपने आपको मुसलमान, इसाई अपने आपको इसाई, सिख अपने आपको सिख कहता है तो उस पर किसी को आपत्ति नहीं होती। हिन्दू इस देश में बहुत बड़ी संख्या में हैं परन्तु हमारी राजनीति पर दबाव अधिकतर मुसलमानों और अल्पसंख्यक वर्गों का रहता है। मैंने अपने पिछले लेख में लिखा था कि हिन्दू,मुस्लिम भाई-भाई कहते हुए हमने पाकिस्तान बनवा दिया और अब हिन्दू, सिख भाई-भाई कहते खालिस्तान की तलवार हमारे सिर पर लटकने लगी है। इस का एक और बहुत बड़ा कारण यह है कि आजादी के चालीस वर्ष समाप्त हो जाने पर भी हमारे देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना पैदा नहीं हुई। हम आज भी अपने आपको भारतीय नहीं समझते। पहले हिन्दू, मुसलमान या सिख समझते हैं उसके पश्चात् भारतीय समझते हैं और यह सब कुछ इसलिए हुआ है क्योंकि सरकार ने अल्पसंख्यकों को प्रोत्साहन दिया। पिछली बातों को छोड़ भी दिया जाए तो जो कुछ आज हमारे देश में हो रहा है उसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि सरकार साम्प्रदायिकता को कितना प्रोत्साहन दे रही है। उच्चतम न्यायालय ने तलाक हुई मुसलमान महिलाओं को आर्थिक सहायता देने के विषय में अपना एक निर्णय दिया। इसका कट्टरपन्थी मुसलमानों ने विरोध किया। बजाए इसके लिए सरकार यह कहती कि यह न्यायालय का निर्णय है। इसमें कोई फेरबदल नहीं हो सकता परन्तु जब कट्टरपन्थी मौलवियों ने उसके विरुद्ध शोर मचाया तो हमारे प्रधानमन्त्री उस फैसले के विरुद्ध एक कानून बनाने को तैयार हो गए। उनके अपने एक सहयोगी मन्त्री आर. एफ. मोहम्मद खान ने भी प्रधानमन्त्री जी से कहा कि यह मत कीजिए। वह न माने क्योंकि उन्होंने मुसलमानों के वोट की आवश्यकता थी इस लिए उन्होंने एक नया कानून बना दिया। प्रधानमन्त्री यह तो कहते रहते हैं कि साम्प्रदायिकता के साथ कोई समझौता नहीं हो सकता। लेकिन उन्होंने केरल में मुसलमलीग के साथ समझौता किया और पंजाब में अकालियों के साथ। ऐसी स्थिति में जब वह यह कहते हैं कि साम्प्रदायिकता के साथ समझौता नहीं होना चाहिए तो उनकी कौन मानेगा और अब जो चुनाव हुए हैं चाहे केरल में हुए हों, बंगाल में हुए हों या हरियाणा में, कहीं भी मुसलमानों ने कांग्रेस को वोट नहीं दिया। अयोध्या में राम जन्म भूमि मन्दिर और बाबरी मस्जिद में जो टकराव हो रहा है उसके कारण भी साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिल रहा है। पिछले दिनों जो कुछ मेरठ में हुआ है उससे भी हम अनुमान लगा सकते हैं कि स्थिति क्या रूप धारण कर रही है।

इस लिए देश में साम्प्रदायिकता का जो जहर फैल रहा है, उसके लिए वास्तव में कांग्रेस ही जिम्मेदार है बहुत देर तक मुसलमानों के वोट की खातिर कांग्रेस के नेता उनकी साम्प्रदायिकता को सहन करते रहे हैं। हम समझ रहे थे कि देश के बंटवारा के बाद यह स्थिति बदल जाएगी परन्तु नहीं बदली। आज भी कट्टरपन्थी मौलवी जनता में साम्प्रदायिकता का विष फैलाने के लिए क्या कुछ कर रहे हैं इसका पता उस समय लगा जब दिल्ली में पिछले दिनों बाबरी मस्जिद के झगड़े को लेकर मुसलमानों ने एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया था। कहते हैं उसमें लगभग दो लाख मुसलमान सम्मिलित हुए थे। वहां भाषण देते हुए दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम ने मुसलमानों को भड़काते हुए कहा कि जाओ इन कांग्रेसियों के घरों को आग लगा दो इनकी टांगें तोड़ दो कोई जीवित बच कर जाने न पाए। सरकार से आशा की जाती थी कि वह ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध तुरन्त कार्यवाही करेगी। परन्तु उसने कुछ न किया केवल इसलिए कि मुसलमान नराज न हो जाएं। यह आज के स्वतन्त्र भारत में ही हो सकता है कि कोई व्यक्ति इस प्रकार के भाषण दे और उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जाए। यह सरकार की धर्म निर्पेक्षता का दूसरा रूप है।

इस स्थिति को सामने रखते हुए हमारे लिए यह प्रश्न पैदा होता है कि जब देश में साम्प्रदायिकता और आतंकवाद का जहर फैलाया जा रहा है तो आर्य समाज क्यों चुप बैठा है वह इसे रोकने के लिए अपना कोई आन्दोलन प्रारम्भ क्यों नहीं करता। यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर सारे आर्य जगत् को विचार करना चाहिए। देश में आग लग रही हो और आर्य समाज का नेतृत्व हाथ पर हाथ रखे बैठा रहे यह एक ऐसी सोचनीय स्थिति है जिस पर हम सबको विचार करना चाहिए। इस समस्या का क्या समाधान है इस विषय में आगामी अंक में अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर का प्रशंसनीय परिणाम

पंजाब के आर्य बहनों और भाईयों को यह सुन कर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि इस बार मैट्रिक की परीक्षा में सारे पंजाब के छात्रों में नवांशहर के दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल का छात्र आनन्द कुमार प्रथम रहा है इसने 800 में से 724 अंक प्राप्त किए हैं। यह सारे आर्य जगत् के लिए गर्व का विषय है। नवांशहर के हमारे एक स्कूल की लड़की पंजाब में चौथे नम्बर पर आई। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि नवांशहर में हमारे जिन भाईयों के हाथ में इन शिक्षा संस्थाओं का प्रबन्ध है वह कितने लग्न और परिश्रम से इन शिक्षा संस्थाओं को चला रहे हैं, हमारी कई शिक्षा संस्थाएं पंजाब में हैं, इससे पहले मोगा के आर्य गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल के परिणाम भी बहुत अच्छे निकलते रहे हैं और उसकी मुख्याध्यापिका को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया था इसीलिए आर्य विद्या परिषद् पंजाब ने भी उन्हें सम्मानित किया था। अब नवांशहर के हमारे यह स्कूल उससे भी आगे निकल गए हैं। सारे पंजाब में इस स्कूल के छात्र का प्रथम रहना एक ऐसा परिणाम है जिस पर हम सब गर्व कर सकते हैं। इसलिए मैं इस स्कूल की प्रबन्धकर्तृ सभा के प्रधान श्री पं. देवेन्द्र कुमार जी, मैनेजर श्री वेद प्रकाश जी सरीन और प्रिंसीपल श्री हरबंसलाल जी तनेजा को बधाई देता हूं। जो परिणाम निकला इसका बहुत कुछ श्रेय श्री तनेजा जी को दिया जाना चाहिए। क्योंकि वह ही इस संस्था को बड़ी लग्न और परिश्रम से चला रहे हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी दूसरी संस्थाएं भी नवांशहर के इस स्कूल के शानदार परीक्षा परिणाम से कुछ प्रोत्साहन प्राप्त करते हुए अपने स्कूलों के परीक्षा परिणाम भी इसी प्रकार प्रशंसनीय बनाने का प्रयास करेंगे। मैं चाहता हूं कि हमारी सब संस्थाएं दिन प्रतिदिन प्रगति करती जाएं और जिस संस्था में कुछ शिथिलता रही है वह भी उसे दूर करके कुछ सक्रीय हो जाएं।

—वीरेन्द्र

स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन चरित्र तथा व्यक्तित्व का

मूल्यांकन परक साहित्य–

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

(24 मई से आगे)

यह कथन तो अत्युक्ति पूर्ण ही होगा कि प लेखराम द्वारा संग्रहीत जीवनी अपने आप मे समग्र एव परिपूर्ण थी और उसमे कथानायक के जीवन की सारी घटनाओ व तथ्यो का सही ढग से समावेश हो गया था। इसके विपरीत, सत्य यह है कि कतिपय कारणो से प लेखराम स्वामी जी के जन्म-स्थान, वश उनके पिता के नाम आदि की सही जानकारी प्राप्त नही कर सके थे। इसके कुछ वास्तविक कारण थे। इन सारी बातो का पता लगाने के लिए प लेखराम ने गुजरात की यात्रा भी की थी, किन्तु उनके समक्ष कुछ अपहाय कठिनाईया ऐसी आयी, जिनके कारण वे वास्तविक तथ्यो का पता नही लगा सकें।

प्रथम बात तो यह थी कि सौराष्ट्र देशवासी उस समय तक न तो स्वामी दयानन्द की महत्ता को ठीक ठीक अनुभव ही कर रहे थे और न उन्हे यही पता था कि उन्ही के प्रान्त मे जन्म लेने वाला एक सन्यासी भारत की धार्मिक एव सामाजिक क्रान्ति का जनक बन कर अन्तर्राष्टीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे उनकी धारणाए, नाना कुत्साओ तथा निन्दास्पद प्रवादो के प्रचलित हो जाने के कारण, कुछ अन्यथा ही थी। उन्हे तो यही बताया गया था कि दयानन्द ने हिन्दू धर्म की सर्वमान्य मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, अवतारो के प्रति आस्था आदि धारणाओ का तीव्र खण्डन किया है, अत वे प्रचलित धर्म के विरोधी के रूप मे ही जाने जाते थे। फलत उनके जन्म स्थान का कोई भी निवासी अथवा उन्ही की जाति एव वश का व्यक्ति भी उनसे अपनी कुलागत निकटता तथा वशगत सामीप्य को स्वीकार करना तो दूर रहा, उन्हे अपने प्रान्त का निवासी स्वीकार करने मे भी सकोच करता था। जैसा कि प भगपति केशवराम शर्मा ने आर्य प्रतिनिधि सभा मुबई के मन्त्री को 22 सितम्बर,1911 के अपने पत्र मे लिखा था—"टकारा के ब्राह्मण स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध मे तथ्य प्रकाशित करना नही चाहते, उसका एक मुख्य कारण यह है कि अधिकाश लोग यजमान वृत्ति से निर्वाह करते है और उन्हे भय है कि यदि स्वामी जी के विषय मे अधिक बातें बताई गयी तो आर्य समाजी उपदेशक यहा (टकारा) आवेंगे और उनके यजमानो की परम्परागत आस्थाओ को खण्डित कर उनकी व्यावसायिक क्षति करगे।"

प लेखराम की एक अन्य कठिनाई यह भी थी कि फारसी शब्द बहुला उर्दू भाषा बोलने तथा वेषभूषा मे पजाबी मुसलमानी ढग का कोट, पैजामा तथा पगडी पहनने के कारण सौराष्ट्र के पुराण पन्थी, धर्मभीरु लोगो ने सम्भवत उन्हे मुसलमान ही समझा तथा एक सहज अविश्वास भाव के कारण उनके समक्ष स्वामी दयानन्द विषयक तथ्यो को प्रकट करने मे सकोच करते रहे।

तथापि यह तो स्वीकार करना ही होगा कि कालान्तर मे स्वामी जी की जीवनी लिखने के जो भी प्रयत्न हुए, उनका आधार प लेखराम द्वारा सकलित यह उर्दू जीवन चरित ही था। दयानन्द के उल्लेखनीय कार्यों तथा धर्म, समाज एव राष्ट्र के बहु विध क्षत्रो से प्राप्त की गयी उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियो का यह ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसे तैयार करने म उन्हे घोर अध्यवसाय तथा परिश्रम करना पडा था। सहस्रो व्यक्तियो की प्रत्यक्ष साक्षियो, नाना भाषाओ मे प्रकाशित तत्कालीन पत्र पत्रिकाओ तथा अन्य महत्वपूर्ण आलेखों के आधार पर तैयार किया गया यह ग्रन्थ लेखक की एतद विषयक निष्ठा तथा साधना का परिचायक है।

हम यह देख चुके हैं कि देशवासियो की भाति ही विदेश के रहने वालो ने वैदिक विचारधारा के पुनरुद्धारक तथा आर्यों के प्राचीन जीवन दर्शन के पुरस्कर्ता इस महापुरुष के जीवन विषयक तथ्यो से परिचित होने मे अपनी रुचि प्रदर्शित की थी। यही कारण था कि यूरोपीय भाषाओ का एक शब्द भी न जानने वाले तथा पाश्चात्य चिन्तनधारा से सर्वथा अपरिचित उस व्यक्ति के अदम्य विचारो तथा व्यापक प्रभाव को परिलक्षित कर सुप्रसिद्ध प्राच्य विद्याविशारद प्रो मैक्समूलर भी उनकी जीवनी लिखने के लिये लालायित हो उठा। स्वामी जी के निधन के एक वर्ष पश्चात ही उसने लन्दन से प्रकाशित होने वाले पालमाल गजट मे उनके विषय मे एक निबन्ध प्रकाशित कराया। यही निबन्ध उनकी "बायोग्राफिकल एसेज" नामक पुस्तक मे पृष्ठ 137 से 180 तक उद्धृत किया गया। इसी प्रकार जब रामकृष्ण मिशन की प्रेरणा से प्रसिद्ध फ्रैंच साहित्यकार रोमा रोला ने भी रामकृष्ण परमहस का जीवन चरित लिखा तो उन्होने (एकता के निर्माता) शीर्षक एक अध्याय लिखकर स्वामी दयानन्द के जीवन एव कृतित्व का आलोचनात्मक मूल्याकन किया।

इधर प लेखराम द्वारा लिखित जीवन चरित का ही आधार लेकर अग्रेजी, उर्दू तथा हिन्दी मे स्वामी दयानन्द के कुछ अन्य जीवन चरित लिखे गये। लाला लाजपतराय ने 1955 वि मे 'दुनिया के महापुरुषो के जीवन शीर्षक ग्रन्थमाला के अन्तगत ' महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम" नामक जीवन चरित लिखा। यह मूलत उर्दू मे लिखा गया था। हिन्दी मे राम विलास शारदा ने 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन' लिखा, जिसका प्रकाशन 1961 वि मे हुआ। इससे पूर्व चिम्मनलाल वैश्य ने 'सरस्वतीन्द्र जीवन चरित' लिखा था, जिसका प्रकाशन 1902 ई में हुआ। हिन्दी मे लिखी गई ये दोनो जीवनिया सामग्री की दृष्टि से प लेखराम द्वारा सग्रहीत जीवन चरित पर ही आधृत है। उर्दू मे मेहता राधाकृष्ण लिखित जीवन चरित भी मौलिकता का दावा नही करता। अग्रेजी मे बाबा अर्जुनसिंह तथा बाबा छज्जूसिंह ने सर्व प्रथम स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लिखें। बाबा अर्जुनसिंह द्वारा लिखित—अपेक्षाकृत लघु है, जबकि बाबा छज्जूसिंह के द्वारा लिखित—शीर्षक जीवन चरित बृहदाकार कृति है। इन दोनो का प्रकाशन क्रमश 1901 ई तथा 1903 मे हुआ। बाबा छज्जूसिंह अपने ग्रन्थ की भूमिका मे यह स्पष्ट कर देते हैं कि उन की रचना मुख्यत: लाला लाजपतराय तथा मेहता राधाकृष्ण द्वारा निबद्ध उर्दू जीवन चरितों पर आधारित है तथा यदाकदा उन्होने प लेखराम द्वारा सग्रहीत जीवन चरित से भी सहायता ली है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक हिन्दी, उर्दू तथा अग्रेजी मे स्वामी दयानन्द के जो छोटे बड़े जीवन चरित लिखे गये, वे सभी प लेखराम द्वारा सग्रहीत सामग्री को ही उपादान के रूप मे स्वीकार करते हैं।

सुदूर बग प्रदेश मे स्वामी जी के जीवन लेखन के कुछ अभूतपूर्व प्रयास हुए। प दीनबन्धु वेद शास्त्री के अनुसार 1886 ई मे नगेन्द्रनाथ चटटोपाध्याय ने बगला भाषा मे स्वामी जी की एक लघु जीवनी लिखी। कहते हैं कि चटटोपाध्याय महाशय ब्रह्म समाज के आचार्य तथा स्वामी दयानन्द के भक्त थे। इससे भी महत्वपूर्ण प्रयास देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय का था, जिन्होने आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान राजा तेज नारायणसिंह प्रदत्त आर्थिक सहायता से स्वामी दयानन्द के जीवन चरित विषयक तथ्यो का सग्रह करने के लिए विभिन्न प्रान्तो मे भ्रमण किया तथा महत्वपूर्ण सामग्री का सकलन किया। प दीनबन्धु के अनुसार प्रसिद्ध इतिहासकार श्री रमेशचन्द्र दत्त ने मुखोपाध्याय जी को जीवनी लेखन के लिए प्रेरित किया था।

(क्रमश)



नवाशहर के दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल का छात्र आनन्द कुन्द्रा इस वर्ष की दसवी कक्षा मे पजाब भर मे प्रथम स्थान पर रहा। उसने कुल 800 अको मे से 724 अक प्राप्त कर यह स्थान प्राप्त किया। इससे पूर्व भी 1980 मे इसी विद्यालय का छात्र नवनीत कुमार आठवी कक्षा मे पजाब भर मे प्रथम रहा था। इसका श्रेय इस विद्यालय के प्रिंसीपल श्री हरबसलाल तनेजा, स्टाफ एव प्रबन्ध समिति को है।

उल्लेखनीय है कि शिक्षा के साथ-साथ खेलो मे भी समय-2 पर इस विद्यालय के छात्र प्रथम आते रहते हैं। आर्य शिक्षा परिषद् पजाब का यह विद्यालय इस प्रकार प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

उलझन की पूर्वपीठिका

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

यह एक पजाब का प्रसिद्ध नगर है, जिस के नाम से सभी परिचित हैं, जो कि एक औद्योगिक और व्यापारिक केन्द्र है। आज यह नगर पजाब का हृदय बनकर इस प्रान्त के साथ सारे देश के जीवन का आकर्षण सिद्ध हो रहा है। इससे कुछ दूरी पर पजाब की प्रसिद्ध और प्राचीन नदी बहती है। इस नदी और नगर के मध्य मे मुख्य राजमार्ग से कुछ हट कर एक मनोरम आश्रम है। इस आश्रम के चारो ओर गुलाब के पौधो की बाड है। उसके आस पास प्रदेश मे उग सकने योग्य एक सौ लगभग फल वाले वृक्ष हैं। वृक्षो के आगे छोटी-छोटी क्यारिया हैं, जिन मे मौसम के अनुसार सब्जिया उगाई जाती हैं। इन क्यारियो के मध्य मे एक खुला प्रागण है। इस प्रागण से चारो ओर कच्चे रास्ते निकलते हैं, जो कि मुख्य द्वारो से जुडे हुए हैं। इन मार्गों के दोनो ओर एक-एक फुट भर की फूलो की क्यारिया हैं। इन मे से एक मार्ग के एक ओर चमेली के पौधे हैं, तो एक मार्ग के एक ओर चम्पा, तो तीसरे मे रजनी गन्धा तथा चौथे के साथ गुलाब के पौधे हैं। इन मार्गों के दूसरी ओर ऋतु-ऋतु के अनुरूप फूलो के पौधे हैं। जो कि अपने सुमनो से सदा सभी को सुवासित करते रहते हैं।

मध्यवर्ती मैदान के एक ओर चार कमरे हैं, जिनके आगे बरामदे बने हुए हैं। एक कमरे मे इस आश्रम के सचालक रहते हैं, तो दूसरे मे प्रबन्ध सहायक ज्ञान प्रिय जी का आवास है, तो तीसरे में चिकित्सक श्री धन्वन्तरि जी रहते हैं और चौथा कमरा दूसरे कमरो से पर्याप्त बडा है, जिसमे एक सुन्दर पुस्तकालय एव वाचनालय है। इन कमरो से कुछ दूर मुख्य द्वार के साथ एक धर्मार्थ औषधालय बना हुआ है, जहा समीपवर्ती क्षेत्र के रोगी धन्वन्तरि जी की सेवाओ का लाभ उठाते हैं। इसी औषधालय के साथ ही एक बडा बरामदा है, जिस के ऊपर रोगी एव उनके साथी अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं। इसी मुख्य-द्वार के सामने एक सम्पर्क सडक है। जो कि अनेक ग्रामो को मुख्य राजमार्ग से जोडती है। इस मुख्य द्वार के दूसरी ओर यदा कदा रात काटने के लिए आने वालो का विश्राम स्थल है तथा इसके साथ ही विद्युत्कूप है। जिस से यहा के जल की जरूरत पूरी होती है। इसके साथ ही दो फ्लश के शौचालय और स्नानागार हैं। यह सेवाश्रम अधिकतर स्वावलम्बी है।

इस आश्रम के सचालक का नाम सर्वप्रिय है, ये एक भूतपूर्व इजीनियर तथा बडे औद्योगिक केन्द्र के भागीदार थे। इजीनियरिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करके जब ये स्नातक बने, तो तब देश देश को स्वतन्त्र हुए अभी एक वर्ष ही हुआ था। सर्वप्रिय जी जहा अपनी पढाई में पटु, तकनीकि मे विशेष रुचि रखते थे, वहा खेलो के अच्छे खिलाडी और अपने नाम के अनुरूप बहुत ही मिलनसार थे। स्नातक होने के पश्चात् आपने अपने कुछ साथियो के साथ मिल कर एक उद्योग लगाया। यह उद्योग इन साथियो के सद्भाव और सहयोग के कारण इतना अधिक सफल हुआ, कि आज केवल भारत मे ही नही विदेशो मे भी इस का उत्पादन सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यह उद्योग आज अनेक उपकेन्द्रो मे बटा हुआ है और यहा कम से कम बीस वस्तुओ का उत्पादन होता है।

सर्वप्रिय जी अपनी लग्न, कार्य-कुशलता, प्रबन्ध की प्रवीणता के कारण जहा अपने भागीदारो मे सदा प्रियबन्धु सिद्ध हुए, वहा उद्योग के कर्मचारियो के भी सफल हितैषी बने। जैसे-जैसे उद्योग के पैर जमने लगे, तो सर्वप्रिय जी ने अपने भागीदारो और कर्मचारियो के साथ मिल कर एक सर्वसम्मत निर्णय लिया, कि जो भी लाभाश (बोनस) होगा, उस को व्यक्तिगत रूप मे न बाट कर सभी के लाभ के लिए सामूहिक रूप मे व्यय किया जाएगा। इसी लाभाश से क्रमश आवास कालोनी, शिक्षा केन्द्र, आधुनिक चिकित्सा की सुविधाओ से सम्पन्न चिकित्सालय तथा जल घर आदि बनाए गए। जैसे जैसे औद्योगिक केन्द्र का प्रसार होता गया और भागीदारो के पुत्र कार्य को सम्भालने लगे। वैसे वैसे सर्वप्रिय जी कर्मचारियो के कल्याण और सुख दुख मे अधिक रुचि लेने लगे। यहा तक कि यदि किसी कर्मिष्ठ के परिवार का कोई सदस्य रुग्ण होता, तो स्वय हाल-चाल पूछने के लिए जाते और उन की हर खुशी-गमी मे सम्मिलित होते। इस के परिणामस्वरूप कर्मचारी भी इन्हे अपना हितैषी मानते तथा औद्योगिक केन्द्र को अपना समझ कर यथा शक्ति कार्य करते।

अपने भागीदारो और कर्मचारियो के किसी भी बन्धु की मृत्यु पर सर्वप्रिय जी उसमे अवश्य ही सम्मिलित होते। इस परिवार के पर्याप्त विशाल होने के कारण अकस्मात मौत की कुछ ऐसी घटनाए हुई, कि इन के मन मे अनेक प्रकार की जिज्ञासायें उभरी। इन की शान्ति के लिए सर्व प्रिय जी ने इस विषय पर कुछ विशेष अध्ययन किया। स्वाध्याय करते हुए सर्व प्रिय जी ने अनुभव किया, कि हमारे जीवन मे अनेक बार ऐसी घटनायें होती हैं। कुछ बातो का तो हमे पता चल जाता है, कि यह घटती हैं, जिन के सम्बन्ध मे बार बार सोचने पर भी हमे कुछ समझ नही आता कि यह कैसे हो गया? इन बातो पर हम जितना भी सोचते है, उतना ही अधिक ऐसा लगता है, कि हम और भी अधिक उलझन मे उलझ गए हैं। एक के बाद एक प्रश्न उभरता है, जिसका हल हमारे दिमाग मे सूझता नही? इसीलिए सर्वप्रिय जी ने ऐसे कुछ विशेष अवसरो पर साधु, महात्माओ को बुला कर सत्सग कराए। अपने परिवार के साथ जहा स्वय इनका लाभ उठाया, वहा अपने भागीदारो और कर्मचारियो को भी लाभान्वित होने का अवसर दिलवाया। इन सत्सगो के सहयोग से इन्होने अपने स्वाध्याय और विचारो को विशेष दिशा दी।

सर्वप्रिय जी का प्रथम पौत्र जब अपने विषय का विशेषज्ञ बन कर आया, तो इन्होने अपने पुत्र को लोक सम्पर्क और कर्मचारियो के कल्याण का कार्य सौप दिया और स्वय इससे मुक्ति ले ली। इस औद्योगिक केन्द्र और कर्मचारियो के कल्याण के कार्यों के कारण नगर तथा आस-पास के क्षेत्र के लोग इन से परिचित थे ही। इन्होने अपने परिचितो मे से कुछ सेवाभावियो के साथ मिलकर आश्रम की योजना बनाई और पारस्परिक सहयोग से यह सारा कार्य प्रारम्भ कर दिया। जैसे-जैसे आश्रम की योजना आगे बढी और चर्चा चली, वैसे-वैसे अनेक सेवाभावी सामने आए। एक कार्यमुक्त चिकित्सक ने सर्वप्रथम अपनी सेवा दी और प्रतिदिन 10 से 1 तक सेवाश्रम के धर्मार्थ औषधालय मे कार्य करते और शेष समय आश्रम मे ही रह कर साधना, स्वास्थ्य और सत्सग का लाभ उठाते। सर्व प्रिय और चिकित्सक सेवा प्रिय 'धन्वन्तरि' की लग्न को देख कर समीप के एक कृषक कर्म प्रिय ने यहा की वाटिका एव खेती का कार्य सम्भाला। इन सब की परोपकार की प्रवृत्ति से प्रभावित होकर ज्ञानप्रिय ने यहा के पुस्तकालय और वाचनालय का कार्य सम्भाला। सर्वप्रिय जी प्रतिदिन अपने ध्यान और स्वाध्याय के पश्चात नियमित रूप से आश्रम के सभी कार्यों मे सहयोग देते। सबके साथ मिलकर आश्रम की सफाई, खेती, औषधालय और अन्य अपेक्षित कार्यों को करते।

सेवाश्रम की स्थापना का प्रथम वर्ष पूर्ण होने पर यहा रविवार को सायकाल के सत्सग का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। यदा कदा अनेक विद्वान्, साधु, महात्मा भी इस आश्रम मे पधारते रहते एक वर्ष तक प्राय: वे ही कथा का कार्यक्रम चलाते रहे, हा, कभी कभार सर्व प्रिय जी इस कार्य को सम्पन्न करते। सत्सग मे पूर्व सदा सगीत प्रिय जी दो मधुर गीत रखते, जिन्होने अपने कार्य से मुक्त होने के बाद यही नगर मे अपना सगीत विद्यालय प्रारम्भ कर रखा था। सर्वप्रिय जी की परोपकारिता से प्रभावित होकर उन्होने इस सेवा का स्वय उत्तरदायित्व स्वीकार किया। सर्वप्रिय जी का अधिकतर जीवन काफी समय से 'सादा जीवन—उच्च विचार' का जहा मूर्तरूप था, वहा जन सेवा मे अर्पित था यहा सेवाश्रम मे आ जाने पर तो सभी उन को महात्मा जी के नाम से ही पुकारने थे। साधना, स्वाध्याय और सेवा के द्वारा वे वस्तुत महात्मपन के रूप को चरितार्थ करते थे। सर्वप्रिय जी अपने वैयक्तिक जीवन के उत्थान के लिए जहा साधना, स्वाध्याय मे निरत रहते, वहा शुभ कर्मो के सचय के लिए आश्रम के कार्यों मे भी भरपूर सहयोग देते।

आर्य मर्यादा का पाठको को स्मरण है, कि गत वर्ष आर्य मर्यादा मे तीस बार 'जन्म-मरण की उलझन' क्रमश. छपी है। जिस मे आधुनिकता की दृष्टि से मृत्यु सम्बन्धी प्रश्नो पर विचार किया गया है। हा, कौन-कौन सी आर्य समाजे मिल कर इस पुस्तक को प्रकाशित कराने के लिए तैयार होती हैं तभी यह पुस्तक पाठको के हाथ मे आ सकती है।

शोक प्रस्ताव

श्री सुशील कुमार जी के लडके का अचानक स्वर्गवास हो जाने की खबर सुन कर आर्य स्त्री समाज और पुरुष समाज को बहुत दुख हुआ। ईश्वर के इस नियम के आगे सिर झुकाते हैं। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आभास कुमार की आत्मा को सद्गति प्राप्त हो और उनके माता पिता और सम्बन्धियो को सहन शक्ति और धैर्य शक्ति प्रदान करे ताकि वह अपने भविष्य जीवन को सफल कर सकें। हम स्त्री समाज और पुरुष समाज की ईश्वर से यही प्रार्थना है।

—प मनीषी देव
पुरोहित आर्य समाज सुजानपुर,
जिला गुरदासपुर।

व्याख्यान माला—११

किसी जीव की हिंसा करना महापाप है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गताक से आगे)

आत्मन. प्रतिकूलानि परेभ्यो यदि नेच्छसि ।
परेषां प्रतिकूलेभ्यो निवर्त्तय ततो मन: ।20।

यदि तुम अपने विपरीत व्यवहार दूसरो की ओर से नही चाहते तो दूसरो के प्रतिकूल अपने मानसिक विचारो को भी अपने मन से दूर कर दो ।

जीवितं य. स्वयं चेच्छेत्कथं सोऽन्यं प्रघातयेत् ।
यद्यदात्मनि चेच्छेतत्परस्यापि चिन्तयेत् ।21।

यदि मनुष्य वास्तव मे स्वय के लिये दूसरो से जैसे व्यवहार की अपेक्षा रखता है वैसा ही व्यवहार दूसरो से भी करें तो भला जो अपने जीवन को चाहता है वह दूसरो को किस प्रकार मरवा सकता है ? अर्थात् कदापि नही ।

सुखं वा यदि वा दु:खं यत्किञ्चित्क्रियते परे ।
ततस्तत् पुन: पश्चात्सर्वमात्मनि जायते ।22।

सुख अथवा दु:ख जो कुछ दूसरे को दिया जाता है तब बाद मे वही सुख अथवा दुख अपने लिये भी पैदा हो जाता है ।

यथैवात्मा परस्तद्वद्द्रष्टव्य: सुखमिच्छता ।
सुखदु.खानि तुल्यानि यथात्मनि तथा परे ।23।

सुख चाहने वाले व्यक्ति को अपनी आत्मा के समान दूसरे की आत्मा को देखना चाहिये क्योकि सुख-दुख जैसे अपने लिये होते हैं वैसे ही दूसरे के लिए भी होते हैं ।

अपहृत्यार्त्तिमार्त्तानां सुखं यदुपजायते ।
तस्य स्वर्गोऽपवर्गो वा कलां नार्हतिषोडशीम् ।24।

दु खियो का दुख दूर करके जो सुख वा आनन्द अपनी आत्मा को होता है, स्वर्ग सुख अथवा मोक्ष सुख तो उस सुख के सोलहवे भाग के बराबर भी नही होता ।

वेदाभ्यासेन सततं शौचेन तपसैव च ।
अद्रोहेण च भूतानां जातिं स्मरति पौर्विकीम् ।25।

निरन्तर वेदाभ्यास से, पवित्रता से, तप से, और जीवो के साथ द्रोह न करके मनुष्य पूर्व जन्म की बातो को जान लेता है ।

मधु मांसं च ये नित्यं वर्जयन्तीह धार्मिका ।
जन्मप्रभृति मद्यं च सर्वे ते मुनय; स्मृता 26।

जो धार्मिक जन इस लोक मे आजीवन मास, शराब, का सेवन नही करते, तथा जन्म भर इससे दूर रहते हैं, वे सब मुनि कहे गए हैं ।

न मांसं राघवो भुङ्क्ते न चैव मधु सेवते ।
वन्यं सुविहितं नित्यं भक्तमश्नाति पञ्चमम् ।27।

राम मास नही खाता, न ही शराब का सेवन करता है, नित्य जगली कन्द मूल फल खाता है या भात खाता है ।

कृमयो भस्म विष्ठा वा निष्ठा यस्येयमीदृशी ।
स काय परतापाय पूज्यतामिति को नय ।28।

मल से युक्त रहना, कृमि ग्रस्त होना तथा अन्त मे भस्म हो जाना ही जिस शरीर का धर्म है । भला ऐसे शरीर को भी दूसरो को पीडित करने मे लगाया जाए यह कहा का न्याय है ?

सर्वाणि भूतानि सुखे रमन्ते सर्वाणि दु:खस्य भृशं त्रसन्ते ।
तेषां भयोत्पादनजातखेद: कुर्यान्न कर्माणि हि श्रद्दधान: ।।29।।

सब जीव सुख मे आनन्दित रहते हैं, और दु:ख से बहुत डरते हैं । उनके भय से जिसे ग्लानि हुई है वह श्रद्धा वाला ऐसे कर्म न करें जिनसे उन्हें कष्ट हो ।

न गोप्रदानं न महीप्रदानं न चान्नदानं हि तथा प्रधानम् ।
यथा वदन्तीह बुधा: प्रधानं सर्वप्रदानेष्वभयप्रदानम् ।30।

गऊ का दान, पृथ्वी का दान, एव अन्न का दान कुछ विद्वान् लोग प्रधान नही मानते बल्कि वे तो सब दानो मे अभय दान को प्रधान मानते हैं ।

यथा हि ते जीवितमात्मन: प्रियं तथा परेषामपि जीवितं प्रियम् ।
संरक्षसे जीवितमात्मनो यथा तथा परेषामपि रक्ष जीवितम् ।।31।।

जैसे मुझे अपना जीवन प्रिय लगता है, उसी प्रकार दूसरो को भी जीवन प्रिय लगता है, जिस प्रकार तू अपने जीवन की रक्षा करता है उसी प्रकार तू दूसरे के जीवन की भी रक्षा कर ।

मन्त्रोच्चारण क्यों करें ?

अक्सर लोगो के मुखो से बुद्धि को विराम देकर यह कहते हुए सुना जाता है कि हम अग्निहोत्र मे मन्त्रोच्चारण क्यो करें ? अग्नि जलाकर उसमे घी, सामग्री इत्यादि डाल दिया करेंगे । लोगो का आधारहीन तर्क यह होता है कि अग्निहोत्र का रोगनाशक प्रभाव होता है, लेकिन मन्त्रो का रोग के नाश से क्या सम्बन्ध है ?

इस बात को समझने के लिए वर्तमान चिकित्सा के उस पहलु को समझना होगा जिसे चिकित्सा (औरथोपैडिक ट्रीटमैंट) कहा जाता है । इस चिकित्सा मे शरीर के विकारो को व्यायाम द्वारा ठीक किया जाता है । इसका एक अग है, उसे अग्रेजी मे (उलटरा सोनिक या सुपर सोनिक वेव ट्रीटमैंट) कहते हैं । आपको शरीर के किसी अग मे दर्द है । एक यन्त्र है जिसमे साऊड वेवस को केन्द्रित किया जाता है । इन शब्द लहरियो मे इतना बल होता है कि—शब्द लह-रियो को केन्द्रित करने वाले इन यन्त्रो को जब पीडा वाले स्थान पर कई दिनो तक 5-7 मिनट के लिए छुआ जाता है तब ये दर्द चले जाते हैं । किसी भी अच्छे चिकित्सालय मे जाकर इस बात का पता तथा अनुभव किया जा सकता है । वेद मन्त्रो का उच्चारण क्या है ? यह भी तो स्वर लहरियो का ही तो वायु मण्डल मे मे प्रसारण होता है । अगर उलटरा सोनिक वेवज द्वारा रोग दूर तथा नाश होता है, तो मन्त्रोच्चारण द्वारा रोग नाश होता है इसमे आश्चर्य क्या ? यह तो सदैव सनातन से चला आ रहा है । ये मन्त्र तो ऋषि मुनियो द्वारा— सुसस्कृत तथा सु-सगठित है । फिर मन्त्रोच्चारण से रोगो का नाश नही होता है यह सोचना भी नही चाहिए । जब द्रोपदी अपने पति अर्जुन से युद्ध-कथा के लिए अनुग्रह करती है तो अर्जुन युद्ध-कथा उसे सुनाता है । उस समय द्रोपदी के गर्भाशय मे पूर्ण रूप से पल रहे अभिमन्यु पर भी जिसका प्रभाव पडता है जिससे वह आगे चल कर 6 चक्रव्यूह तोडने मे सफल होता है । जब अर्जुन 7वा चक्रव्यूह तोडने की कथा आरम्भ करता है उस समय द्रोपदी सो गई जिससे बालक अभिमन्यु 7वें चक्रव्यूह पर आकर दु शासन के हाथो मारा जाता है । पाठक यहा ध्यान दें कि यहा क्या है, स्वर लहरियो का ही तो सस्कार है ।

वेद पाठ (मन्त्रोच्चारण) के साथ अग्निहोत्र करने से तो हमे और भी लाभ है कि इस से हमारी प्राचीन सस्कृति जीवित रहती है । अगर हम वेद पाठ करना छोड दें तो एक दिन ऐसा आएगा कि हम वेदो का महत्व भूल जाएगे और धीरे-धीरे हमारी सस्कृति लुप्त हो जाएगी । मन्त्रोच्चारण जरूरी नही है तो युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने क्यो मन्त्रार्थ ही मे अपनी जान की आहुति दे डाली ।

मन्त्रोच्चारण से मानव, जीव-जन्तु तथा वनस्पतियो के रोगो का नाश होता है: हमारी प्राचीन सस्कृति जीवित रहती है, लोगो मे अपने अत्यन्त प्राचीन धर्म ग्रन्थो के प्रति आस्था तथा श्रद्धा बढती है, जिससे उन पर सुसस्कार पडता है । इसलिए मन्त्रोच्चारण के साथ अग्निहोत्र करना अनिवार्य रूप से आवश्यक है । इस विषय मे उलटरा सोनिक वेवज इसका प्रमाण तथा सिद्ध करता है ।

—अनिल कुमार गुप्ता
दयानन्द मठ दीनानगर गुरदासपुर (पंजाब)

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

अपनी ज्योति आप बनो

लेखक—श्री कांशीराम जी बावला द्वारा श्री पथिक छुटमलपुर

जीव को मानव जीवन अनेक योग योनियो के पश्चात् अपने शुभ कर्मों के फलस्वरूप मिलता है ताकि वह अपना कल्याण करके जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पाकर मोक्ष प्राप्त कर सके। किन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन तथा कड़ा पुरुषार्थ करना पड़ता है। प्राय. जीव को इन सब बातो का ज्ञान है। वह अपना कल्याण भी करना चाहता है, परन्तु बिना पुरुषार्थ के उसकी अभिलाषा होती है कि कोई छूमन्तर मिल जाए। कोई महात्मा उसके सीने, सिर या आंखो पर हाथ रख कर उसके अन्दर प्रकाश उत्पन्न कर दे। यही मनुष्य की महान् भूल है। इसीलिए भगवान बुद्ध ने कहा था कि अपने जीवन पथ का प्रकाश स्वय बनो। अपने मार्ग की ज्योति तुम आप ही बन सकते हो दूसरो की ज्योति पर भरोसा न करो।

एक पतगे ने एक जुगनू को कटाक्ष किया कि तू जो जरा सी चमक अपनी पूछ से निकालता है वह तो कुछ अर्थ ही नही रखती। वह तो किसी गिनती मे ही नही है और फिर भी तू इस पर अकड़ता है। तू मेरी बराबरी कैसे कर सकता है क्योकि मैं तो जलती हुई ज्योति पर अपने प्राण न्योछावर कर देता हू। इसके उत्तर मे जुगनू ने कहा कि भगवान का धन्यवाद है कि मैं पतगा नही हू क्योकि मैं पराई ज्योति की आशा नही करता। मेरी पूछ की ज्योति जरा सी सही, परन्तु है तो अपनी। किसी दूसरे की तो नही। अरे पतगे! तू तो भिखारी है कि पराई रोशनी पर चमक करता है।

धर्म शास्त्रो ने स्थान-2 पर सचेत किया है कि अपनी उन्नति और आत्मिक कल्याण के लिए या तो परमेश्वर पर भरोसा रखो या अपने आप पर। फारसी भाषा के कवि शैख सादी ने लिखा है कि किसी अन्य की सहायता और सहारे से तो स्वर्ग मे जाना भी नरक के समान है।

अपनी जीवन यात्रा के लिए अपनी आन्तरिक ज्योति को जगाकर उसके भरोसे पर जीवन सफल बनाने का एक दृष्टान्त सुनिये :—

एक पुरुष अधेरी रात के समय किसी कार्य के लिए जा रहा था। उसने अपने ठीक मार्ग पर चलने के लिए एक लालटेन अपने हाथ मे ले रखी थी। एक और पुरुष ने भी अपने कार्यवश उसी ओर जाना था। पहले आदमी के पास लालटेन देख कर वह भी उसी लालटेन के सहारे उसके साथ चल पड़ा। कुछ दूर जाकर एक दोराहा आ गया। तब लालटेन वाला आदमी अपना मार्ग बदल कर दूसरे मार्ग पर जाने लगा। किन्तु दूसरे आदमी ने पहले ही मार्ग पर जाना था। अब वह घबरा गया क्योकि अंधेरा घोर था। इसलिए मार्ग से भटक जाने या किसी हिंसक जीव सर्प या भेड़िये इत्यादि के आक्रमण करने का भी भय था। वह अपने साथी से बोला कि अब मैं क्या करू? तो उसने कहा कि आप को अपनी लालटेन लानी चाहिए थी। मेरी लालटेन तो मुझे ही मार्ग दिखा सकती है। आप को नही। आप को मेरी लालटेन पर भरोसा नही करना चाहिए था।

इस दृष्टान्त से भी हमको यही शिक्षा मिलती है कि अपने जीवन को अपनी ज्योति से चमकाना चाहिए। यह तथ्य ध्यान मे रखना चाहिए कि भगवान ने मनुष्य को त्रिज्योति बनाया है। उसकी तीनो ज्योतियो मे उजाले की आवश्यकता है। पहली ज्योति तन की है। मनुष्य का शरीर स्वस्थ, दृढ़ तथा बलवान होकर तेजोमय होना चाहिए। दूसरी ज्योति मन की है। मन शुद्ध, सत्य प्रिय और प्रेममय होकर चमकना चाहिए। तीसरी ज्योति आत्मा की है आत्मा निर्मल हो, दूसरो की भलाई और सेवा करने की प्रेरणा देने वाला हो। आत्मा की शुद्धता मन को बलवान बनाती है। मन की स्वच्छता शरीर को शक्तिशाली बनाती है और शक्तिपूर्ण शरीर लोक परलोक दोनों के सुधार मे सहायी होता है।

हमने राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की नैतिक व सामाजिक बाकी है

अंग्रेज के 190 साल विदेशी राज्य से हमने बड़े सघर्ष व बलिदानो से 1947 मे स्वतन्त्रता प्राप्त की परन्तु देश की 82 करोड आबादी से अभी आधी जनता का जीवन उपयोगी आवश्यकताओ से वंचित है मकान, वस्त्र, रोटी, शिक्षा व चिकित्सा सबको प्राप्त नही है लाखो बेकार फिरते हैं दक्षणी प्रान्तो का बुरा हाल है आदिवासियो का प्रलोभन से धर्म परिवर्तन होता है। अमीर-2 होते जा रहे है। निर्धन-2 बनते जा रहे है। देश, ग्रामो मे बसता है ग्रामो मे अन्ध विश्वास फैला है। प्रारब्ध के शिकार हैं जाति पाति का भूत सवार है। भाषावाद, जातिवाद, प्रान्तवाद के झगड़े हैं। देश की अखडता को खतरा है चीन, पाकिस्तान, अमरीका, इगलैंड हमारी उन्नति नही चाहते। 1947 के बाद हमारा नैतिक पतन होता जा रहा है। घूस खोरी बढ़ रही है। सम्प्रदायिकता सिर उठा रही है। कुर्सी की दौड़ है चरित्र हीनता बढ़ रही है हम सबने मिल कर अंग्रेज को एक जुट होकर निकाला परन्तु अब इसाईस्तान, पाकिस्तान, खालिस्तान, गोरखस्तान तामिलनाडू पृथकतावादी नारे लग रहे हैं, हमारा आन्तरिक सगठन कमजोर पड गया है जातीवाद ने पजाब का जीवन दूभर कर दिया है। हमारे कर्णधारो को देश का फिकर कम है अपनी स्वार्थता व कुर्सी का ज्यादा लोकतन्त्र सफल नही हुआ शिक्षा की कमी है ग्राम उजड रहे। बाहर जा कर बस रहे हैं ग्रामो मे जीवन साधन नही घरेल उद्योग नही खेती के लिए सब जगह पानी, बिजली के साधन नही। प्रान्तो म झगडे हैं प्रान्तीय सरकारें केन्द्र से मिलकर नही चलती भाषा के झगड़े है 15 करोड हरिजनो की समस्या है वह पददलित हे उनसे घृणा की जाती है वह वृथा अग समझे जाते हैं।

—

"आर्य समाज अगुआई करे"

1975 से 1950 तक आर्य समाज का स्वर्ण युग रहा इस समय मे बड़ा काम किया, उच्चकोटि के विद्वान्, प्रचारक, नेता, सन्यासी, त्यागी, वकील प्रोफैसर कार्य क्षेत्र मे कूदे 1947 मे देश स्वतन्त्र हुआ सब राजनीति मे चले गए सरकार ने आर्य समाज का बहुत सा प्रोग्राम अपना लिया परन्तु उन पर सख्ती से अमल नही हो रहा है अंग्रेज चला गया परन्तु अंग्रेजी न गई। हिन्दी, सस्कृत पीछे धकेल दी आर्य समाज व वेद प्रचार गौण हो गया। अंग्रेजी स्कूलो की होड लग गई है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की कदर नही सब नौकरी चाहते हैं। महर्षि मिशन का ख्याल नही जाति-पाति का भूत चिमटा है। आश्रम मर्यादा लोप होती जा रही है। अवैतनिक प्रचारक नही मिलते। 1400 साल पहले कोई मुसलमान न था। 2000 साल पहले कोई ईसाई न था न इतने मत मतान्तर थे आज दो पाकिस्तान बनने पर भी 12 30 करोड मुसलमान देश मे रह कर देश का खा-पी कर अरब के गुण गाते हैं। 2000 साल पहले कोई ईसाई न था अब दो करोड हैं और 500 धार्मिक गुरु हैं। कई मत मतान्तर फैले हैं 15 करोड अछूत हैं जिन को मुसलम, ईसाई लोभ, लालच देकर बनाया जा रहा है देश को स्वतन्त्र कराने म 80 प्रतिशत आर्य समाज का योगदान रहा अब आर्य समाज राजनीति से दूर है और देश टुकड़े-2 हो रहा है देश मे मद्य-मास का प्रचार बढ रहा है। हमारी शिक्षा पद्धति लार्ड मैकाले वाली 1835 की है निर्धनता बढ रही है। चरित्र हीनता आ रही है राष्ट्रीयता मिट रही है। हम अपनी रक्षा करने के योग्य नही रहे। सबको मार्शल ट्रेनिंग होनी चाहिए। घरेलू उद्योग हो ग्राम ग्राम मे आर्य समाज पहुचे। ग्राम उजड रहे है। शहर बन रहे है, जनता आर्य समाज की ओर देख रही है। कि आर्य समाज अगुआई करे।

—सुबोधानन्द

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिक निर्वाचन 14-5 87 को बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण मे श्री रामचन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वर्ष 1987 88 के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किये गये।

प्रधान—श्री ओंकारनाथ जी आर्य
उप-प्रधान—कैप्टिन देवरत्न आर्य
उप प्रधान—श्री चन्द्रभान मल्होत्रा
महामन्त्री—श्री विमल स्वरूप सूद
मन्त्री श्री विश्वभूषण आर्य
मन्त्री—श्री लालचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष श्री कस्तूरी लाल मदान,

इसके अतिरिक्त 8 निम्न अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए — सर्व प्रथम श्री श्यामलाल तलवार, श्री चमनलाल महाशय, श्री सोहन लाल दुग्गल, श्री यशपाल अग्रवाल, श्री कान्ति भाई जमबारी, श्री रणवीर भण्डारी, श्री सुभाष पाल, श्री नरेन्द्र कुमार पटेल।

—विमल स्वरूप सूद
महामन्त्री

जिला आर्य सभा लुधियाना का वार्षिक चुनाव

जिला आर्य सभा लुधियाना का वार्षिक निर्वाचन 7-6-87 रविवार को आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल मे हुआ। सर्व सम्मति स श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान चुने गए उन्हे बाकी अधिकारी तथा अन्तरग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया उन्होंने निम्न अधिकारी तथा अन्तरग सदस्य मनोनीत किये गये।

सरक्षक—श्री सत्यानन्द जी मुजाल वरिष्ठ उप प्रधान—श्री बृजबक्त राय सूद, उप प्रधान—श्रीमती कमला जी आर्या, श्री नरेन्द्रसिंह भल्ला, श्री वरुण थापर दोराहा।

महामन्त्री—आशानन्द आर्य

मन्त्री—डा मूलचन्द भारद्वाज, श्री विजय कुमार सरीन, श्री श्रवण कुमार आर्य, डा सत्य भूषण बाथिया।

कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश पासी

सहायक कोषाध्यक्ष-श्रीमती साविती गुप्ता, लेखा निरीक्षक-दी.राजेन्द्र कुमार, स्कूल इन्चार्ज—श्री आत्म प्रकाश अरोडा।

अन्तरग सदस्य—स्वा सुमनावति जी, श्री भीमसेन जी रायकोट, श्रीमती विद्यावति आर्य, श्रीमती निर्मला बेरी, सत्यपाल सूद, डा राजेश भारद्वाज, श्री वेद प्रकाश महाजन, श्री बलदेव राज फोकस पुबन्ट, वैद्य बैनी प्रसाद, श्री धर्मपाल जसीन, श्री जय प्रकाश रायकोट मा राम प्रसाद सभड, साधु राम कैला साहने वाल, रणबीर चन्द साहनेवाल, डा भारत भूषण जमराओ, श्री बैजनाथ जमराओ, ओ पी टण्डन, आर एल आनन्द, कान्ता सूरी मगल सैन बधवा, जसवन्त राय साहनी, श्री रणबीर जी सूद दोराहा—ओम् प्रकाश महाजन, श्रीमती स्वदेश गुप्ता—इसके अतिरिक्त निम्न विशेष आमत्रण होंगे।

रविन्द्र आर्य—रमाकान्त महाजन, अनिल आर्य, बलायती राय महता, चानन राम, रामती दास, सरीन महेन्द्रा ज्ञान चन्द भगत।

अमर स्वामी जी महाराज अस्वस्थ

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् शास्त्रार्थ केसरी श्री अमर स्वामी जी महाराज अस्वस्थ चल रहे हैं। डाक्टरो ने उनको गले का कैंसर घोषित किया है। उनका चलना फिरना बिल्कुल बन्द है। केवल पदार्थों पर ही जीवन आश्रित रह गया है। कोई भी चीज खा नहीं सकते।

सभी आर्य सज्जनो को इस स्थिति में उनको आर्थिक सहायता करनी चाहिए उनका चारपाई से उठना बैठना भी बन्द है। इसके बावजूद भी स्वामी जी में अपार साहस देखने को मिल रहा है। सभी आर्य सज्जन उनके स्वस्थ होने की कामना करें। —लाजपतराय अग्रवाल
1058 विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद

सभा के लिए आर्य जिला की ओर से प्रतिनिधि बाद मे मनोनीत किया जाएगा।

—आशानन्द आर्य
महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 14 28 आषाढ सम्वत् 2044 तदनुसार 12 जुलाई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

पंजाब में यह नरसंहार कब तक चलेगा
40 लालड़ू में, 37 फतेहाबाद में और मारे गए

9 सितम्बर 1981 को जब लाला जगत नारायण की हत्या की गई थी तो पंजाब मे पहली गोली चली थी। उसके पश्चात् आज तक क्रम चला आ रहा है। और दिन प्रतिदिन बढता चला जा रहा है। मुक्तसर मे बस से उतार कर 15 व्यक्तियो की हत्या कर दी गई थी। कुछ समय के पश्चात होशियारपुर के समीप खुड्डा गांव मे इसी प्रकार बस से उतार कर 25 व्यक्तियो को मौत के घाट उतार दिया था और अब लालड़ू मे 40 व्यक्तियो को मार दिया गया। 7 7 87 को इसके साथ ही फतेहाबाद के निकट हरियाणा रोडवेज की दो और बसो से उतार कर 37 यात्रियो को मार दिया गया। जो जख्मी हुए है अभी मालूम नहीं की उनमें से कितने बचेंगे। 6 और 7 जुलाई को तीन बसो से उतार कर अन्धाधुन्ध फायरिंग करके उग्रवादियो ने 77 बस यात्रियो को बेरहमी से मार डाला।

जो मारने के लिए आते हैं वह देखते हैं कि इस में कितने हिन्दू बैठे हैं। प्राय उन पर ही गोलियां चलाई जाती हैं। पिछले साढ़े पांच वर्षों में इस प्रकार गोली का निशाना बनने वाले हिन्दुओ की सख्या अब डेढ़ दो हजार से ऊपर जा चुकी है। अब तो कई स्थानों पर सिखों को भी गोली से उड़ाया जा रहा है परन्तु ज्यादातर अत्याचार हिन्दुओ पर ढाया जा रहा है। हम आज यह तो नहीं कह सकते कि सरकार उग्रवाद और आतंकवाद को समाप्त करने के लिए कुछ नहीं करती। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अब सरकार के बस की बात नहीं। पहले पंजाब मे अकाली मन्त्रिमण्डल था और अब राष्ट्रपतिराज है। न अकाली मन्त्रिमण्डल इसे रोक सका और न राष्ट्रपति राज इसे रोक सका। इसके पश्चात एक ही विकल्प बाकी रह जाता है कि पंजाब को सेना के हवाले कर दिया जाए। कोई भी सरकार इसे अब दबा नहीं सकती जो लोग यह कह रहे हैं कि वह अकेले नहीं हैं। उनके पीछे और भी बड़ी-2 शक्तियां हैं जो उन्हे रुपया भी देती हैं, हथियार भी देती हैं। इस लिए यह केवल आतंकवाद या उग्रवाद नहीं भारत के कुछ नए टुकड़े कराने का षड्यन्त्र है। इसका मुकाबला सरकार केवल पंजाब मे फौजी राज के द्वारा ही कर सकती है।

आज सारा पंजाब दु:खी है। सारा देश दु:खी है। परन्तु केवल दु:खी होने से कुछ नहीं बनेगा हमे परिस्थितियो का मुकाबला करने के लिए अपने आपको पूरी तरह तैयार करना पड़ेगा इसलिए जो कुछ पंजाब मे हो रहा है उसकी गम्भीरता को समझते हुए हम सब को यह संकल्प करना चाहिए कि देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और एकता की प्रत्येक स्थिति मे सुरक्षा करेंगे।

जो भाई बहनें और बच्चे लालड़ू में मारे गए हैं तथा 7-7 87 को रात्रि 9 बजे फतेहाबाद से 10 किलोमीटर दूर हरियाणा रोडवेज की ही दो बसों से उतार कर 37 व्यक्ति मारे गए हैं। उन सबकी सद्गति के लिए हम प्रार्थना करते हैं। पंजाब की सब आर्य समाजों से निवेदन है कि वह रविवार 12 जुलाई को अपनी-2 आर्य समाज मन्दिरो मे शोक दिवस मनाए और दिवंगतआत्माओं की सद्गति के लिए प्रार्थना करें उनके परिवारो के लिए अपनी सहानुभूति और प्रत्येक प्रकार की सहायता का संकल्प करें और सरकार से यह मांग करें कि वह पंजाब को सेना के हवाले कर दें। इसके बिना पंजाब का बचाव नहीं है। पंजाब न बचा तो देश भी नहीं बचेगा। जो कुछ पंजाब में हो रहा है सारे देश को उसे एक चुनौती समझते हुए उसका मुकाबला करना चाहिए।

—वीरेन्द्र

वेद में गुरु मन्त्र

लेखक—श्री प० [illegible] जी [illegible]
वेद [illegible] गुरुकुल [illegible]

(गतांक से आगे)

अब गुरु मन्त्र में इन तीनो को देखिये—

सबस पहले जिज्ञासा होती है कि वह ओम वाच्य परमेश्वर कैसा है अर्थात उसका स्वरूप क्या है ? तो उत्तर मिलता है—वह भू भुव —स्व —सत चित आनन्द—सच्चिदान द है। इस स्तुति से ज्ञात होता है कि हममे आन द नही है। आन द की खोज मे लग रहे हैं। इस स्तुति से भान हुआ कि हमे यह आन द उस ओम वाच्य ब्रह्म से मिलेगा। अत उसकी प्राप्ति के लिए तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि। सविता देव के उस (स्तुति से ज्ञात) सवश्र ष्ठ दु खमल पापो के नाशक भग—आन द स्वरूप को धारण करें तथा ध्यायें। धीमहि प्राथना मे आया है। तेज धारण ध्यान से सम्भव है ध्यान उपासना का साधन है। अत मन्त्राश मे प्रार्थना तथा उपासना का समावेश है।

साधको का अनभव है कि ब्रह्म ज्योति उसके सामने विद्युत के समान आकर छिप जाती है। साधारणजनो का अनुभव है कि कई बार सद्गुण का उदय होकर उसका फिर लोप हो जाता है। कहीं प्राप्त भग हममे कही लुप्त न हो जाये इसलिये पुन प्राथना है— धियो यो न प्रचोदयात। वह सविता देव हमारी बुद्धियो को उत्तम प्ररणा दे। अर्थात धन प्राप्ति समय की बुद्धि सदा स्थिर बनी रहे। इसके लिए यजुर्वेद 22।14 में प्राथना है—धिया भग मनामहे—बुद्धि द्वारा हम भगवान तथा उसके ऐश्वय का मनन करते रहे।

इस मन्त्र को गुरु मन्त्र कहा जाता है वैदिको के यहा जब बालक विद्या ग्रहण के योग्य समझा जाता है तब उस के दो सस्कार कराये जाते हैं, एक यज्ञोपवीत और दूसरा वेदारम्भ। वैदिक धर्मियो के जिन कुलों को पोपों ने वेदाध्ययन से वंचित कर दिया उन कुलो से इन दोनो सस्कारो का लोप हो गया। उनके यहा वेदारम्भ के स्थान पर विद्यारम्भ सस्कार का प्रचलन होने लगा वास्तव मे विद्यारम्भ (सस्कार विशेष के बिना) माता की गोद मे ही हो जाता था। उस वेदारम्भ सस्कार का प्रयोजन बालक को वेदाध्ययन का अधिकार देना होता था। वेदाधिकार देने के लिए आचाय सव प्रथम इस मन्त्र का उपदेश बालक को देता था। इस कारण इस मन्त्र का नाम गुरुमन्त्र पड गया है। इस मन्त्र का देवता प्रतिपाद्य विषय 'सविता' है, अत यह मन्त्र सविता का होने से सावित्री ऋचा भी कहलाता है। 'तत्स-वितुर्वरेण्य' से आरम्भ करके 'प्रचोदयात' तक के मन्त्र का छन्द गायत्री है। अत इसे सर्वसाधारण की परिभाषा में गायत्री मन्त्र भी कहते हैं।

महर्षि दयान द जी महाराज ने सस्कार विधि वेदारम्भ सस्कार मे गुरु मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ इस प्रकार किया है—

(ओ३म) यह मुख्य परमेश्वर का नाम है जिस नाम के साथ अन्य सब नाम लग जाते है (भू) जो प्राण का भी प्राण (भुव) सब दु खो से छुडाने हारा (स्वः सुखस्वरूप और अपने उपासको को सब सुख की प्राप्ति कराने हारा है उस (सवितु) सब जगत की उत्पत्ति करने वाले सूर्यादि प्रकाशको के भी प्रकाशक समग्र ऐश्वय के दाता (देवस्य) कामना करने योग्य सर्वत्र विजय कराने हारे परमात्मा का जो (वरेण्यम) अतिश्र ष्ठ ग्रहण और ध्यान करने योग्य (भग) सब क्लेशो को भस्म करने हारा पवित्र शुद्धस्वरूप है। (तत) उसको हम लोग (धीमहि) धारण करें (य) यह जो परमात्मा (न) हमारी (धिय) बुद्धियों को उत्तम गुण, कम स्वभावो मे (प्रचोदयात) प्ररणा करे।

इसी प्रयोजन के लिए इस जगदीश्वर की स्तुति प्राथनोपासना करना और इस स भिन्न किसी को उपास्य इष्टदेव उस के तुल्य वा उससे अधिक नही मानना चाहिए।

महर्षि दयान द जी ने पच महायज्ञ विधि मे गुरु मन्त्र का अर्थ सस्कृत भाषा में विस्तार स किया है, उसको आय भाषा (हिन्दी) में प्रस्तुत करते हैं—

"इस सर्वोत्कृष्ट गायत्री मन्त्र का सक्षेप से अथ कहा जाता है (ओं भूभु व स्व) अकार, उकार, और मकार के के योग से 'ओम' यह अक्षर सिद्ध है। सो यह परमेश्वर के सब नामों मे उत्तम नाम है। जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं। जैसे पिता पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है वैसे ही ओकार के साथ ईश्वर का सम्बन्ध है। इस एक नाम से ईश्वर के सब नामो का बोध होता है। जैसे—अकार से (विराट, अग्नि, विश्वादि)। (विराट) जो [illegible] का प्रकाश करने वाला है [illegible] स्वरूप और [illegible] (विश्व) जिसमें [illegible] रहा है और जो सर्वत्र प्रविष्ट है। इत्यादि अकारार्थ ईश्वर के जानना चाहिए। उकार से (हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि)। (हिरण्यगर्भ) जिसके गर्भ मे प्रकाश करने वाले सूर्यादि लोक हैं और जो प्रकाश करने हारे सूर्यादि लोको का उत्पन्न करने वाला इसस ईश्वर को हिरण्यगर्भ कहते हैं। ज्योति के नाम हिरण्य, अमृत और कीर्ति है। (वायु) जो अनन्त बल वाला और जो सब जगत् का धारण करने हारा है। (तैजस) जो प्रकाशस्वरूप और सब जगत का प्रकाशक है। इत्यादि अथ उकार मात्र से जानने चाहिए। मकार स (ईश्वर आदित्य प्राज्ञ आदि समझें। (ईश्वर) जो सब जगत उत्पादक, सर्व शक्तिमान स्वामी और न्यायकारी है (आदित्य) जो नाशरहित है, (प्राज्ञ) जो ज्ञानस्वरूप और सवज्ञ है। इत्यादि अथ मकार स समझ लेना। यह संक्षेप से ओंकार का अथ किया गया।

अब सक्षप से महाव्याहृतियो का अथ लिखते हैं—

(भूरिति वै प्राण) जो सब जगत के जीने का हेतु और प्राण से भी प्रिय है, इसस परमेश्वर का नाम 'भू है। (भुवरित्यपान) जो मुक्ति की इच्छा करने वालो, मुक्तों और अपने सेवक धर्मात्माओं को सब दु खो स अलग करके सबदा सुख में रखता है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'भुव है। (स्वरिति व्यान) जो सब जगत मे व्यापक होके सबको नियम मे रखता और सबका ठह रने का स्थान तथा सुखस्वरूप है इसस परमेश्वर का नाम 'स्व है। यह महा-व्याहृतियो का अथ सक्षप स लिख दिया।

गायत्री मन्त्र का अथ—(सवितु) जो सकल जगत को उत्पन्न करता है वह सबका पिता, सबका स्वामी सविता' परमात्मा है। (वरेण्यम) जो अतिश्र ष्ठ होने स वरण करने योग्य है। (भग) जो उपद्रव रहित, निष्पाप, शुद्ध, सब दोषो से रहित, परम परमाद विज्ञानस्वरूप है, (देवस्य) जो सारे जगत को प्रकाशित तथा आनन्दित करता है, उस देव की हम (धीमहि) नित्य उपासना करें। किस प्रयोजन के लिये ? उसके धारण करने से ही हम विज्ञान आदि बल के द्वारा पुष्ट, दृढ और सुखी हो सकते हैं—इस प्रयोजन के लिए तथा (य) जो परमेश्वर (न) हमारी (धिय,) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) शुभ कर्मों में प्रेरित करें। [illegible] ! हे [illegible] ! हे सर्वे ! हे निराकार [illegible] ! व्याप-[illegible] ! हे [illegible] ! [illegible] ! [illegible] देव पर-मेश्वर वह हमारी बुद्धियों को शुभ कर्मों [illegible] जो [illegible] करते हैं [illegible] परमेश्वर अपनी कृपा दृष्टि स और अपनी शक्ति से [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], जितेन्द्रियत्व परमानन्द को प्राप्त होने वाली बुद्धि हमें प्रदान करता है। उस परमात्मा का हम ध्यान करें यह गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अथ है।

इस प्रकार प्रात साय दोनों सन्धि वेलाओं मे एकान्त देश में जा शांत हो, आत्मा को वश मे कर प्रतिदिन परमेश्वर का ध्यान करे।

गायत्री मन्त्र मे परमात्मा से प्राथना की गई है कि हे सकल जगत के उत्पादक ईश्वर ! आप मेरी बुद्धि को शुभ कर्मों मे प्रेरित कीजिए। बुद्धि का शुभ कर्मों मे प्रेरित होना मुक्ति की ओर प्रथम चरण है।

महर्षि दयान द सत्याथ प्रकाश नवम समुल्लास में लिखते हैं—

जब इन्द्रिया अर्थों मे मन इन्द्रियो और आत्मा मनके साथ सयुक्त होकर प्राणो को प्रेरणा करके अच्छे या बुरे कर्मों में लगता है, तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर से आनन्द उत्साह निर्भयता और बुरे कर्मों मे भय, शका, लज्जा उत्पन्न होती है वह अन्त-र्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्तता है, वही मुक्तिजन्य सुखो को प्राप्त होता है और जो विपरीत वर्तता है, वह बन्धजन्य दुख भोगता है।"

महर्षि दयानन्द जी ने यजुर्वेद अध्याय 36, मन्त्र 3 मे गुरु मन्त्र का इस प्रकार अथ किया है—

"हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग (भू) कर्म विद्या, (भुव) उपासना विद्या, (स्व) ज्ञान विद्या को पढकर (य) जो (न) हमारी (धिय) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरित करता है, उस (देवस्य) कामना करने योग्य (सवितु,) समस्त ऐश्वय के दाता ईश्वर के (वरेण्यम्) ग्रहण करने योग्य (भर्ग) सब दु खों के नाशक तेज 'स्वरूप' का (धीमहि) ध्यान करते हैं, वैसे तुम भी इसका ध्यान करो।

सम्पादकीय

वह जो लौट के घर न आए !

हिसावो	5
गोलवड़ा-मुन्नुआं	6
फरीदकोट	5
झीना-बटाला-गुरदासपुर	10
नकोदर	7
लुधियाना	13
खन्ना	6
मुक्तसर	15
बुढ़ला	25
लालड़	40
फतेहाबाद	37

इनके अतिरिक्त बीसियों और हैं जो मारे गए हैं।

एक ओर एक अयोग्य, अनुभवहीन और असफल सरकार, दूसरी ओर कुछ खूंखार उग्रवादी जिनकी नजर में मानवीय जीवन का कोई मूल्य नहीं है न नैतिक सिद्धांतों का कोई मूल्य है। वह अपने आपको किसी कानून के पाबन्द नहीं समझते। नैतिकता के पाबन्द नहीं समझते। गुरु साहिबान के अनुयायी होने का दावा करते हुए भी वह उनकी शिक्षाओं की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इस देश मे गुरु साहिबान के अनुयायी होने का दावा करने वाले करोड़ों और भी हैं परन्तु इनकी संगठित आवाज पाशविक मूढ़ता के आगे नहीं उठ रही। इनका स्वाभिमान, इनकी नैतिकता, इनकी धर्म प्रियता, इनकी आत्मा इनको नहीं झिंझोड़ती और इनसे नहीं कहती कि अपने गुरुद्वारों को आतंकवाद के अड्डे न बनाने दो। यह लोग प्रतिदिन गुरु गोबिन्द सिंह की स्मृति मे अपना सिर झुकाते हैं परन्तु गुरु महाराज ने तो कहा था—

हम एह काज जगत मो आए
धर्म हेतु गुरदेव पठाए
जहां तहां तुम धर्म विथारो
दुष्ट दोखियन पकड़ पछाड़ो
या ही काज धरा हम जनमम
समझ लेहु साधू सब मनमन
धर्म चलावन, संत उबारन
दुष्ट सभन को मूल उपारन

कहां हैं वह जो प्रतिदिन ग्रन्थ साहब का पाठ करते हैं?
कहां हैं वह जो अपने आपको गुरु नानक देव के अनुयायी कहते हैं?
कहां है वह जो गुरु गोबिन्दसिंह के नाम पर धार्मिक व्यापार चलाते हैं?

कहां गुरुवाणी मे कहा लिखा है कि निर्दोष लोगों को गोली मार दो? केवल इसलिए कि वह हिन्दू हैं?

जब कोई ऐसा नरसंहार होता है तो दो चार हमकी निन्दा कर देते हैं उसके बाद वह अपना काम-काज शुरू कर देते हैं। मरने वाले मर जाते हैं, रोने वाले रोते रहते हैं और संसार फिर वैसे ही चलता रहता है।

सोचता हूं आज क्या लिखूं? कुछ भी लिखने को शेष नहीं रहा। लिख-लिख कर हम थक गए, कह-कह कर खामोश हो गए, अब न कुछ लिखने को शेष है, न कुछ कहने को। वास्तविकता तो यह है कि अब आंखों में आंसू भी सूख गए हैं ऐसे प्रतीत होता है।

9 सितम्बर 1981 को पंजाब मे पहली बार गोली चली थी उस दिन लाला जगत नारायण की हत्या की गई थी और अब हम एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए हैं जब 24 घन्टों में 77 व्यक्तियों को मृत्यु की गोद में सुला दिया है।

कहां है सरकार?
कहां है उसकी पुलिस?
कहां है उसकी सेना?

क्या बना इनकी इस घोषणा का कि आतंकवाद किसी भी स्थिति में सहन नहीं किया जाएगा?

परिस्थितियां उत्तरोत्तर गम्भीर होती जा रही हैं जब कभी कोई ऐसी हृदय विदारक घटना होती है तो हम गृहमन्त्री का चेहरा टी. वी. पर अवश्य देख लेते हैं। और वह कह जाते हैं कि सरकार पूरी शक्ति से इसका मुकाबला करेगी। दो चार दिन के पश्चात् कोई और घटना हो जाती है। अभी पिछले दिनों मे एक ही रात मे एक ही घर मे 14 व्यक्तियों की हत्या कर दी और यह सब कुछ उस दिल्ली मे हुआ जो भारत सरकार का मुख्य स्थान है। जहां प्रधानमन्त्री भी रहते हैं और गृहमन्त्री भी रहते हैं। जो अपने ही घर को नहीं बचा सके वह देश को कैसे बचाएंगे? इसलिए जब प्रधानमन्त्री या गृहमन्त्री कहते हैं कि आतंकवाद को सहन नहीं किया जाएगा और पूरी शक्ति से इसका मुकाबला किया जाएगा तो स्वतः मुख से निकलता है —

तेरे वायदा पे जिए हम तो यह जान झूठ जाना
कि खुशी से मर न जाते अगर इतबार होता।

जो कुछ हो रहा है उसके बाद हमे किसी भ्रान्ति मे न रहना चाहिए। जो लोग जीवित रहना चाहते है उन्हे मरने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। यह सरकार तो हमे नहीं बचा सकती। लालड़ के हत्याकांड से 24—घन्टे पूर्व तक सरकार को मालूम था कि कुछ होने वाला है फिर भी वह इसे रोक न सकी और जैसाकि मैंने प्रारम्भ मे लिखा है कि 9 सितम्बर 1981 से लेकर आज तक परिस्थितियां गम्भीर से गम्भीर होती गई हैं। यह ठीक है कि सरकारें बदलती रही हैं और हर सरकार यह कहती थी कि आतंकवाद सहन नहीं किया जाएगा परन्तु मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की के अनुसार स्थिति यह हो गई है कि 24 घन्टे मे दो विभिन्न स्थानों पर 77 निर्दोष लोगों की हत्या कर दी गई है। इनमे महिलाएं भी हैं और बच्चे भी और हमारी सरकार अभी यह सोच रही है कि यह राजनीतिक समस्या है या शान्ति एवं कानून की समस्या है। कोई और देश होता तो इस समय तक उसकी सरकार त्यागपत्र दे चुकी होती। यदि वह स्वयं त्यागपत्र न देती तो देश की जनता उसे इसके लिए विवश कर देती।

आज हमारे देश मे स्थिति यह है कि कोई व्यक्ति घर से निकलता है तो उसे यह मालूम नहीं होता कि वह वापस आएगा या नहीं।

जो लोग चण्डीगढ़ से ऋषिकेश के लिए रवाना हुए थे और जो हिसार से फतेहाबाद जाने वाली बस मे सवार थे वह सब इस उद्देश्य से जा रहे थे कि वह अपने गन्तव्य पर पहुंच जाएंगे। इनमे कुछ उस दिन की सोच रहे होंगे जब वह ऋषिकेश और हरिद्वार की यात्रा करके अपने घर वापस आएंगे।

परन्तु वह नहीं आए।
क्यों नहीं आए?
क्योंकि वह हिन्दू थे।

हिन्दुओं ने क्या अपराध किया है कि उनके साथ यह व्यवहार किया जा रहा है?

केवल यह कि वह हिन्दू हैं।
इसीलिए तो कहा है —

दुनियां मन्ने जोरां नू लख लाहनत है कमजोरां नू।

—वीरेन्द्र

जालन्धर में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर समारोह सम्पन्न

पंजाब के कई नगरों के आर्य वीरों ने भाग लिया

पाठकों ने गत अंको में पढ़ा होगा कि जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर 16 जून से 21 जून तक पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। चिरकाल से पंजाब में आर्य वीर दल का शिविर नहीं लग सका था। पंजाब की वर्तमान परिस्थिति में ऐसे शिविरो का लगाना कठिन हो रहा था फिर भी सभा के अधिकारियो ने यह निश्चय कर लिया कि शिविर अवश्य लगाना है। इसमे कुछ कठिनाईयां जरूर आई परन्तु फिर भी शिविर हर दृष्टि से सफल रहा। इसमे जालन्धर, फगवाड़ा, लुधियाना, करतार पुर तथा गुरदासपुर से आये 50 आर्य वीरो ने भाग लिया। इस शिविर को सफल बनाने मे हमें श्रीमती हर्ष अरोड़ा प्रिंसीपल आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ (जहां यह शिविर लगाया था) स्कूल मैनेजर श्री रामसुभाया जी नन्दा तथा प्रधान श्री कर्म चन्द जी माली, स्कूल के सेवक श्री सुरेश जी तथा अन्य सेवको आदि का पूरा-2 सहयोग मिला।

श्री आचार्य नरेश कुमार जी शास्त्री गुरुकुल करतारपुर, श्री सत्यपाल जी पथिक, श्री प्रो भद्रसन जी दर्शनाचार्य होशियारपुर, श्री प सत्यदेव जी विद्यालंकार, श्री प्रो राम अवतार जी, श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी तथा महोपदेशक, श्री शेरसिंह जी सभा भजनोपदेशक, श्री बूटाराम जी समय-2 पर शिविर मे बच्चो को शिक्षा देते रहे।

श्री सत्यपाल जी आर्य (वीर शिक्षाई मशीन) फगवाड़ा वाले प्रधान शिक्षक और श्री सुखदेव राज जी शास्त्री स अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर ने सप्ताह भर बच्चो को शारीरिक, बौद्धिक, सन्ध्या, अग्नि होत्र, योगासन, लाठी, सैनिक तथा अनुशासन की विधिवत शिक्षा प्रदान की तथा पूर्ण प्रशिक्षण दिया।

श्री प मनोहर लाल जी ने शिविर के लिए खाद्य सामग्री तथा अन्य सामान जुटाने के लिए सप्ताह भर अपना सहयोग दिया, इसके साथ ही श्री प धर्म देव जी सभा कार्यालयाध्यक्ष, श्री बूटाराम जी, अमीचन्द और दूसरे कई और सहयोगियो का सहयोग भी प्रतिदिन मिलता रहा।

सभा के अधिकारी सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, सभा महामन्त्री श्री सत्य-दत्त जी शर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री हरबंसलाल जी शर्मा, श्री सरदारी लाल जी सभा मन्त्री, श्री अश्विनी कुमार जी एडवोकेट सभा मन्त्री, बहन कमला आर्या सभा उप-प्रधान, श्री कैप्टन राजेन्द्र कुमार उप प्रधान जी ने शिविर मे पधार कर अपना योगदान दिया।

जालन्धर की कई आर्य समाजो के सदस्य, आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा के मुख्याध्यापक श्री प राम कुमार जी शर्मा, कपूरथला से श्री दरबारी लाल तथा श्री हरिश्चन्द्र जी, फगवाड़ा से श्री देश बन्धु जी मन्त्री तथा श्री देसराज जी, लुधियाना से श्री श एम सी भारद्वाज श्री खुशवक्त राय सूद, महेन्द्र पाल जी शर्मा, श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा ओम प्रकाश जी पासी तथा और कई सदस्य सम्मलित हुए। इसी प्रकार अन्य कई नगरो से आये आर्य बन्धुओ ने इस शिविर के समापन समारोह मे भाग लिया। जिन बच्चो ने इस शिविर मे भाग लिया उनके नाम निम्न प्रकार हैं।

गान्धी नगर पनियाड़ जिला गुरदास पुर से रोशन लाल सुपुत्र श्री चुनीलाल, पवन कुमार सुपुत्र श्री धर्म चन्द। बटाली जिला गुरदासपुर से प्रेमचन्द सुपुत्र श्री शालोराम, राकेश कुमार सुपुत्र श्री नन्दलाल, बरनाला जिला गुरदास से राकेश शर्मा सुपुत्र श्री तरसेमलाल, गुरदीपसिंह जग्गी, सुपुत्र श्री गुरदित्ता सिंह।

गुरुकुल करतारपुर से श्री अजय शर्मा, रत्न कुमार, अशोक कुमार, रामेश्वर,नरेन्द्र,योगेन्द्र, तथा हर्ष वर्धन सुपुत्र श्री सुखदेव राज शास्त्री।

लुधियाना से प्रवीण कुमार सुपुत्र श्री हीरालाल, योगेश चन्द्र आर्य, सुपुत्र श्री वेद प्रकाश, राजीव कुमार सुपुत्र श्री विद्या भूषण, दिनेश कुमार सुपुत्र श्री वेद प्रकाश,सत्यवीर कुमार सुपुत्र श्री किसना राम जी।

फगवाड़ा से श्यामसुन्दर सुपुत्र श्री वैद्य ओम प्रकाश जी इन्दु, नीरज छाबड़ा सुपुत्र श्री सुरेन्द्र छाबड़ा, सुनील कुमार सुपुत्र श्री सुदर्शन कुमार जी।

शास्त्री नगर जालन्धर से सुरज कुमार सुपुत्र श्री जगदीश चन्द्र, दीपक कुमार सुपुत्र श्री जय प्रकाश, योगेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री गिरधारी लाल, प्रवेश कुमार सुपुत्र श्री रमेश कुमार, विकास कुमार सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार, श्री वीरेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री जितेन्द्र कुमार बस्ती गुजां से श्री राजेश कुमार सुपुत्र श्री नरेश दास, बस्ती नौ से विश्वामित्र सुपुत्र श्री नरेश दास बस्ती नौ, श्री हरीश कुमार सुपुत्र श्री दाताराम गुरदेव नगर जालन्धर।

भार्गव नगर जालन्धर से, शशी-कान्त सुपुत्र श्री मनोहर लाल, राजीव कुमार सुपुत्र श्री रामचन्द, तरसेम लाल सुपुत्र श्री सन्तराम, विजय कुमार सुपुत्र श्री कस्तुरी लाल, शशी कुमार सुपुत्र श्री अजीत कुमार, विजय कुमार सुपुत्र श्री ज्ञान चन्द, श्री सुरेन्द्र सुपुत्र श्री सरदारी लाल जी सभा मन्त्री।

गान्धी नगर जालन्धर से देवदत्त सुपुत्र श्री बूटाराम, प्रवीण कुमार सुपुत्र श्री मेहरचन्द, नरेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री कृष्ण लाल, नरेन्द्र कुमार सुपुत्र रघुराम राकेश कुमार सुपुत्र श्री नानक चन्द।

माडल हाऊस जालन्धर से चन्द्रपाल सुपुत्र श्री रतनचन्द, दिनेश कुमार सुपुत्र श्री मुलखराज, रमेश कुमार सुपुत्र श्री मुलखराज, ढन मोहल्ला जालन्धर से रजनीश शर्मा सुपुत्र देसराज।

अमृतसर से सन्दीप कुमार सुपुत्र श्री सत्यपाल जी पथिक प्रसिद्ध गायक, विजय मोहन सुपुत्र श्री कृष्णलाल।

समापन समारोह की कार्यवाही21-6-87 को प्रात.8-30बजे यज्ञ से आरम्भ हुई 10-30 बजे सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी इस समारोह मे पधारें उनके पधारने पर जालन्धर की आर्य समाजो के सदस्यो तथा अन्य गण मान्य लोगों ने माल्यार्पण करके उनका स्वागत किया। अन्य सारी कार्यवाही उनकी अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर भिन्न-2 विद्वानो ने वहां बच्चों को तथा आर्य जनता को सम्बो-धित किया। वहां 12 30 बजे शिविर में प्रशिक्षण पा रहे बच्चों ने योगासनों तथा लाठी आदि चलाने का प्रदर्शन किया। आये हुए सभी आर्य बन्धुओं तथा बहनो ने बच्चो के इस प्रदर्शन की बड़ी सराहना की। अन्त में सभा प्रधान जी का अध्यक्षीय भाषण हुआ। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओ का धन्यवाद करते हुए कहा कि आगे भी इसी प्रकार के आर्य वीर दल के शिविर लगते रहेंगे और हमें आशा है कि आर्य जनता का हमें इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा।

इन बच्चो मे प्रथम पुरस्कार श्री विनेश कुमार सुपुत्र श्री वेद प्रकाश जी हबीब गंज लुधियाना को, द्वितीय पुरस्कार देवदत्त सुपुत्र श्री बूटाराम जी गान्धी नगर जालन्धर और तृतीय पुर-स्कार सन्दीप कुमार सुपुत्र श्री सत्यपाल जी पथिक अमृतसर ने प्राप्त किया। सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने इन तीनों बच्चों को विशेष उपहार भेंट किए, शेष सभी बच्चो को भी प्रमाण पत्र, पुस्तकें तथा अन्य उपहार दिए।

दोनो शिक्षक श्री सत्यपाल जी आर्य वीर श्री सुखदेव राज जी शास्त्री को मैटल का बना ओ३म् तथा एक-एक बैग देकर सम्मानित किया गया।

इन विशेष उपहारो का प्रबन्ध श्री हरबंसलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष जी द्वारा किया गया था। मैंने भी जो मुझ से हो सकता था इस शिविर को सफल करने के लिए अपना सहयोग दिया। मैं लुधियाना से जालन्धर आकर इस शिविर का निरीक्षण करता रहा।

अन्त मे वृहद् ऋषिलंगर हुआ जिस में सैंकड़ो आर्य बन्धुओ ने सहयोग किया इस प्रकार यह शिविर हर प्रकार से सफल रहा।

—ज्ञानानन्द आर्य

अधिष्ठाता आर्य वीर दल पंजाब

निर्णय के तट् पर (शास्त्रार्थ संग्रह) के १ व ३ भाग का प्रकाशन

सर्व सज्जनो को विदित हो कि निर्णय के तट पर (शास्त्रार्थ संग्रह) नामक ग्रन्थ के प्रथम व तृतीय भाग का प्रकाशन आधे से अधिक छप चुका है। कार्य प्रगति पर है। इसके प्रकाशन हेतु आधे मूल्य में अग्रिम बुकिंग की योजना निकाली गयी थी। जिसमें पर्याप्त ग्राहक न बनने के कारण प्रकाशन में आर्थिक संकट सामने आ रहा है।

अत सभी आर्य भाईयो से निवेदन है कि 60 रुपए प्रति भाग से बुक करायें। बाद में 25 रुपये मूल्य होगा। मैं कैंसर से पीड़ित हूं मैं चाहता हूं कि यह ग्रन्थ मेरे जीवन काल में ही प्रकाश मे आ जावे। यह तभी हो सकता है जब आप अधिक से अधिक बुकिंग करायें तथा इस ज्ञान यज्ञ में आर्थिक सहयोग दें। मेरा दावा है कि ऐसी शास्त्रार्थ सामग्री शायद ही भविष्य में छप पावे।

बुकिंग कराने का पता :—

—अमर स्वामी

1058 विवेकानन्द नगर

गाजियाबाद (उ. प्र.) 201001

जालन्धर में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर चित्रों की जबानी

जालन्धर में 16 से 21 जून तक आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसका उद्घाटन सभा के कोषाध्यक्ष श्री हरबंसलाल जी शर्मा ने ध्वजारोहण के द्वारा किया और समापन समारोह के अवसर पर प्रधान शिक्षक श्री सत्यपाल जी ने वही ध्वज सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को अर्पण किया ।



शिविर के प्रारम्भ में 16 6-87 को प्रातः 8-30 बजे ओ३म् का ध्वज लहराने के लिए खड़े सभा कोषाध्यक्ष श्री हरबंसलाल जी शर्मा को श्री सुखदेवराज जी शास्त्री ध्वज की डोरी उन्हें पकड़ाते हुए, साथ में खड़े हैं, श्री सरदारी लाल आर्य रत्न सभा मन्त्री, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा महामन्त्री श्री धर्मदेव जी सभा कार्यालयाध्यक्ष, श्री आशानन्द जी आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल ।



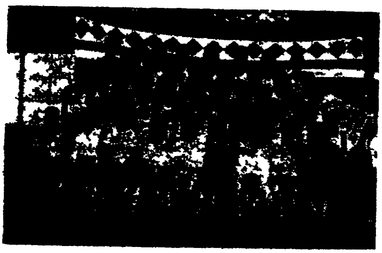
शिविर में प्रशिक्षण ले रहे आर्य वीर लाठी सचालन का प्रदर्शन करते हुए । एक आर्य वीर सब की लाठियो से बच कर निकलता हुआ दिखाई दे रहा है ।



21 6-87 को शिविर के समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, मंच पर बैठे हैं, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री आशानन्द जी आर्य, श्री धर्म देव जी, श्री ब्रह्मदत्त जी, श्री हरबंसलाल जी शर्मा ।



शिविर के समापन समारोह पर श्री सत्यपाल जी प्रधान शिक्षक विधिवत् ओ३म का ध्वज उतार कर समारोह के अध्यक्ष सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को भेंट करते हुए और श्री वीरेन्द्र जी सादर ध्वज हाथ में लेते हुए, सभा महामन्त्री जी भी साथ में खड़े दिखाई दे रहे हैं ।



शिविर में भाग लेने वाले सभी आर्य वीरों का सामूहिक चित्र, नीचे ऊपर की दूसरी पंक्ति में बैठे हैं श्री [illegible] जी, श्री सुखदेवराज जी, श्री सत्यपाल जी, श्री सरदारी लाल जी, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, श्री आशानन्द जी, श्री धर्मदेव जी, श्री रामकुमार जी [illegible], श्री पं. मनोहर लाल जी ।



सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी और श्री हरबंसलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष, श्री सत्यपाल जी आर्य ([illegible]) को उपहार के रूप में पीतल का बना ओ३म् तथा एक बैग आदि भेंट करते हुए । श्री राम कुमार जी [illegible] और महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा भी साथ खड़े हैं ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन चरित्र तथा व्यक्तित्व का मूल्यांकन परक साहित्य–

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

(गताक से आगे)

इससे पूर्व वे बगला भाषा में ईसाई सन्त पाल का जीवन चरित लिखकर साहित्य जगत मे पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुके थे। देवेन्द्रनाथ द्वारा लिखा गया दयानन्द चरित सर्व प्रथम 1896 ई (1302 बगाब्द) मे प्रकाशित हुआ। यद्यपि यह ग्रन्थ अनेक दृष्टियो से अपूर्ण ही था, अनेक घटनाओ के पौर्वापर्य को लेकर स्वय लेखक को सन्देह था तथा लेखक स्वय भी अपने इस कार्य से पूर्णतया सन्तुष्ट नही था, तथापि ग्रन्थकार ने दयानन्द चरित की जो विस्तृत अवतरणिका' लिखी है, वह साहित्य की एक अमूल्य निधि समझी जाएगी। दयानन्द के आवि[illegible] पूर्व की [illegible] परिस्थिति [illegible] विश्लेषणात्मक मूल्याकन इस विशद भूमिका की प्रमुख [illegible] है। मुखोपाध्याय महाशय ने भारतवर्ष के पुराकालीन धर्मान्दोलनो की सूक्ष्म मीमासा करने के पश्चात स्वामी दयानन्द के पूर्ववर्ती राजा राममोहन राय तथा उनके द्वारा प्रवर्तित ब्रह्म समाज के धर्म विषयक दृष्टिकोण का भी विश्लेषण किया है तथा वे इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि वस्तुत राममोहन राय ने जो नही किया या नही कर सके, उसी को करने के लिए दयानन्द का आविर्भाव हुआ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशित होने के पश्चात देवेन्द्र बाबू ने नये सिरे से स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी उपादानो का सग्रह करने का प्रयत्न किया। वे उन सभी स्थानो पर गए, स्वामी दयानन्द के समकालीन तथा उनके सम्पर्क मे आये पुरुषो से मिले। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वामी जी के सम्बन्ध में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री का भी अवलोकन किया। इसके अन्तर्गत उन्हे उर्दू, हिन्दी, मराठी, गुजराती, बगला तथा अग्रेजी की विभिन्न पत्र पत्रिकाओ, पुस्तकों तथा अन्य प्रकार के विवरणो को देखना पड़ा, जिनमे प्रसगोपात्त दयानन्द का उल्लेख या चर्चा हुई थी। मुखोपाध्याय जी के परिश्रम और अध्यवसाय का अनुमान तो इसी बात से लगाया जा सकता है—उन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य 15 वर्ष दयानन्द की जीवनी के उपादानो का सग्रह करने मे लगाये। इस कार्य मे जो धन राशि व्यय हुई, वह तो अलग बात है। उन्हें इसी बात का खेद रहा कि उनके एतद् विषयक प्रयत्नो मे आर्य समाजो का कोई विशेष योगदान नही रहा। देवेन्द्र बाबू धनाढ्य व्यक्ति नही थे। स्वलिखित पुस्तको की बिक्री से जो आय होती, वही उनकी जीविका का मुख्य स्रोत थी। तथापि दयानन्द चरित विषयक तथ्यो का सग्रह करने मे उन्होने जो लग्न, पुरुषार्थ तथा परिश्रम किया, वह सर्वथा स्तुत्य है। यही कारण है कि वे चरितनायक विषयक उस समय तक अज्ञात, अल्पज्ञात अथवा अन्यथा ज्ञात तथ्यो की सही जानकारी प्राप्त करने मे सफल हुए।

देवेन्द्रनाथ ने स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे जिन विशिष्ट तथ्यो का उद्घाटन किया, उनमे पिता के नाम की सही जानकारी तथा जन्म स्थान का निर्णय महत्वपूर्ण है। प लेखराम ने इस सम्बन्ध मे अपना मत व्यक्त करते हुए मोरवी नगर को उनका जन्म स्थान तथा उनके पिता का नाम 'अम्बाशकर' ठहराया था। परन्तु एकाधिक बार काठियावाड़ का भ्रमण करने तथा सम्बन्धित अनेक व्यक्तियो से मिलने के पश्चात् देवेन्द्रनाथ को यह निश्चय हो गया कि मोरवी राज्य के अन्तर्गत 'टकारा" ग्राम ही दयानन्द की जन्मभूमि है तथा उनके पिता थे करसनजी लाल जी तिवारी (तिवाड़ी)। इस प्रकार जीवन चरित लेखन के उपयोग मे आने वाली सम्पूर्ण सामग्री को एकत्रित कर वे बनारस मे लेखन कार्य आरम्भ करने लगे। वे अभी भूमिका तथा चार अध्याय ही लिख पाए थे कि 10 जनवरी 1917 को उनका बनारस मे ही निधन हो गया।

यह एक दैव दुर्विपाक ही था कि दयानन्द के जीवन को समग्र रूप मे लिखने मे न तो प लेखराम को ही सफलता मिली और न देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ही इसमे कृतकार्य हो सके। देवेन्द्रनाथ के दिवगत हो जाने पर आर्य समाज के एक अन्य सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी ने जीवन लेखन का कार्य अपने हाथों मे लिया। उन्होंने भी निरन्तर पाच वर्षों तक अनेक स्थानो पर भ्रमण कर स्वामी जी से सम्बन्धित अनेक बातो का पता लगाया। काशी मे देवेन्द्रनाथ द्वारा सग्रह की गयी सामग्री को भी देखा, तत्पश्चात् वे जीवन चरित लेखन मे प्रवृत्त हुए और उनके द्वारा लिखित स्वामी जी का यह जीवन वृत्तान्त 'श्री मद्दयानन्द प्रकाश' के नाम से 1975 वि मे प्रकाशित हुआ। 'दयानन्द प्रकाश' को लिखने में लेखक का मुख्य [illegible] अभिप्राय था। वे इस ऐतिहासिक कृति बना कर चरितनायक के प्रति श्रद्धा एव भक्ति के भाव [illegible] करने वाली काव्यात्मक कृति का रूप देना चाहते थे। [illegible] और [illegible] यह जीवन चरित [illegible] उच्चकोटि का गद्य काव्य बन गया है। लेखक की [illegible] चरितनायक के प्रति जैसी [illegible] और भक्ति थी, उसके अनुसार यह स्वाभाविक ही था। [illegible] शैली [illegible] तथा [illegible] की [illegible] के [illegible] हिन्दी साहित्य में भी अनुपम [illegible] रखती है।

ऐसे इंसान बनें

लेखक—श्री प्रा रमाकान्त जी दीक्षित
कनोडियो की गली, डा मुरारी लाल मार्ग,
भिवानी, (हरियाणा)

देख चकित हो जिन्हें देखकर, ऐसे इसान बनें।

भूतल में हो सबसे आगे, पावनता हो मन मे,
बुद्धिमान हो, विवेकशील हों, दर्प न हो जीवन में ॥
सभी जहा पर मननशील हों, तप से चिन्मात्र बनें।
देव चकित हो जिन्हें देख कर, ऐसे इसान बनें ॥

बनें संस्कृति के उन्नायक सब पावनतम हो आचरण सदा
सदा चलें कर्त्तव्य डगर पर, हो व्यवहार विचक्षण ॥
वसुधा को परिवार बनायें, सच्चे अभिमान बनें।
देव चकित हों जिन्हें देखकर, ऐसे इसान बनें ॥

हो त्याग मे निष्ठा सभी की, दुर्ग तोड़ें भोग के।
सब ज्ञान, भक्ति प्रेम के सग, साथ साधें योग के ॥
भव ताप से झुलसे न कोई, सुखद शांति धाम बनें।
देख चकित हो जिन्हे देखकर, ऐसे इसान बनें ॥

हम राम, कृष्ण, दयानन्द बन, पूजें सदा गुणो को।
भटकें नही कभी भी पथ पर, सुनकर नवी धुनों को।
दुखदायी विष का घट फोड़ें, सुखकर मधु पान बनें ॥
देव चकित हो जिन्हे देखकर, ऐसे इसान बनें।

गुरुकुल आम सेना को वस्त्र भेजें

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट की ओर से महात्मा प्रेम प्रकाश जी द्वारा आर्य मर्यादा मे छपी अपील के अनुसार लगभग 700 कपड़े चार बण्डल बनाकर सवारी गाड़ी से स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आम सेना (उड़ीसा) को भेजे गए तथा इसके साथ ही 2100 रुपये का बैंक ड्राफ्ट भी सहायतार्थ भेजा गया। भविष्य में और भी वस्त्र व धन भेजने का विचार है।

मंत्री प्रधान
आर्य समाज पठानकोट

[illegible] संस्कृत के विरुद्ध नीति का विरोध

[illegible] विश्व वेद परिषद् के वार्षिक साधारण अधिवेशन मे निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ —

1 [illegible] शिक्षा नीति 1986 में भारत की प्राचीनतम भाषा एवं ज्ञान विज्ञान की भण्डार संस्कृत को केवल विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में ही वैकल्पिक विषय के रूप में स्वीकार करके उसे नीचे की कक्षाओं के पाठ्यक्रम से निकाल दिया गया है, जिस का परिणाम भारतीय संस्कृति राष्ट्रीय एकता एवं भारतीय सभ्यता का विनाश होना है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान की धारा 343 जिसके अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी स्वीकार की गई है और धारा 351 के अनुसार [illegible] को समृद्ध बनाने के लिये संस्कृत को मुख्य स्रोत स्वीकार किया गया है। [illegible] को ध्यान में रखते हुए ये सभा भारत सरकार से जोरदार मांग करती है कि सम्पूर्ण भारत में माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम मे संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप मे अध्यापन की व्यवस्था की जाये, जिस से भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय सभ्यता की रक्षा हो सके।

2 संस्कृत विश्व की प्राचीन तम भाषा है और क्लासीकल भाषाओं मे सर्वाधिक विकसित है। यह लैटिन ग्रीक आदि भाषाओं के समान केवल [illegible] की भाषा न होकर आज के युग में भी जन साधारण के व्यवहार मे आ रही है जिस का प्रयोग सम्पूर्ण भारत मे दो 2' प्रतिशत से भी अधिक है।

3 आज भी भारत वर्ष में 70 80 संस्कृत पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं, इनमे से 35 प्रतिशत पत्रिकाओं को तो भारत सरकार अनुदान भी दे रही है।

4 आज भी हमारे अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जा रही है सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, कामेश्वर सिंह वि वि. दरभंगा, पुरी, संस्कृत वि वि राज्य संस्था नई दिल्ली, लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ दिल्ली, इन विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध कालेजों मे संस्कृत भाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है, जिन की संख्या हजारों है और पढने वाले छात्रों की लाखों।

5 विदेश भर के विद्वानों और वैज्ञानिको ने स्वीकार किया है कि कम्प्यूटर विज्ञान के लिए संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है।

6 कुछ उच्च न्यायालयों (हाईकोर्ट) मे आज भी न्यायाधीश संस्कृत मे ही अपना निर्णय देते हैं।

7 पूरे भारत वर्ष और यूरोप अमेरिका आदि मे हिन्दुओं के सभी संस्कार संस्कृत भाषा मे ही होते हैं।

अतः यह सभा भारत सरकार से मांग करती कि वह संस्कृत को अनिवार्य रूप से माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम मे स्थान देने की घोषणा करने की कृपा अनुग्रह आगामी 30 जुलाई 1987 तक कर दें, अन्यथा हमें इसके लिये [illegible] करते हुए आन्दोलन करने पर विवश होना पड़ेगा।

—[illegible] आर्य
महामन्त्री विश्व वेद परिषद [illegible]

श्री विष्णु देव पोद्दार का निधन

आगरा निवासी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति [illegible] श्री विष्णु देव जी पोद्दार ने आर्य साहित्य के प्रकाशन के लिये नब्बे हजार रुपये आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455 खारी-बावली दिल्ली 6 को मई 87 के अन्तिम सप्ताह दान मे दिये थे। [illegible] ट्रस्ट की ओर से श्री [illegible] जी को 29 मई को [illegible] के द्वारा धन्यवाद दिया गया था। यद्यपि वे अस्वस्थ चल रहे थे। किन्तु ऐसी आशा नहीं थी कि वे इतनी जल्दी ही हमारे से विदा हो जाएंगे। अब वे इस संसार में नहीं रहे हैं पुनरपि उन का दिया गया धार्मिक दान सदा ही उनके दिवंगत आत्मा की गाथा गाकर दूसरों को भी प्रेरणा देता रहेगा। परमपिता परमात्मा से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें। और [illegible] [illegible] रिक जनों को [illegible]

[illegible]

[illegible] की आशीर्वाद [illegible] हीं करें।

रेल व बस यात्रा में धूम्रपान बंद हो

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए बड़ा हानिकारक है पैकट पर इतना लिख देना "सिग्रेट स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है" काफी नहीं पीने वाले अपने दूसरे न पीने वालो भाईयो के कष्ट की चिन्ता नही करते कई जगह रोकने पर झगडे खड़े हो जाते हैं जो वस्तु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं उसे रोकना सरकार का दायित्व होता है। इस समय न पीने वालो की संख्या ज्यादा है। अतः रेल व बस यात्रा मे धूम्रपान बन्द होना चाहिए।

वर्ण व्यवस्था के गलत स्वरूप ने देश का नाश किया

मनु महाराज ने काम की तकसीम की थी एक घर मे बड़ा लड़का वेद पाठी ब्राह्मण है दूसरा फौज मे कर्नल है वह क्षत्री है तीसरा दुकानदार है या खेती करता है वह वैश्य है चौथा [illegible] सेवा मे लगा हुआ है वह शूद्र है [illegible] यह चारो वर्ण एक घर मे इकट्ठे रह सकते हैं एक परिवार मे एक जज न्यायधीश कोई कर्नल कोई व्यापारी और कोई समाज सेवक होता है इस प्रकार की वर्ण व्यवस्था हो जाय तो कोई हर्ज नहीं है। जन्म जात से वर्ण व्यवस्था ने देश का नाश कर दिया है। (जन्मना जायते शूद्र संस्कार द्विज मन) हम जन्म से सब [illegible] हैं संस्कारों से कर्मों से वर्ण बनता है।

स्वर्ग कहां है ?

स्वर्ग आकाश पर नहीं है जहां पति पत्नी [illegible] का मान करते हो। [illegible] सन्तान आज्ञाकारी हो जहां प्रतिदिन हवन सन्ध्या होती हो ईश्वर का गुणगान होता हो जहां [illegible] व चिन्ता का नाम मात्र न हो जहां हर समय खुशी व आनन्द की लहरें चलती हों जहां रोग और शोक [illegible] न हो जहां किसी [illegible] विरोध न हो, [illegible] रोज अतिथि सत्कार होता हो जहां पर बच्चे किलकारियां मारते हो—जहां प्रातः काल मे मथानी चलती हो—चरखा चक्की चलती हो चूल्हा जलता हो वहां ही स्वर्ग है।

"सच्चा तीर्थ"

हितकर बोलना माता पिता गुरु का सेवा यज्ञ हवन करना, वेदादि सत्य शास्त्रो का स्वाध्याय और उन पर अमल करना, उससे आत्मा भव सागर से पार हो जाता है तथा मनुष्य मोक्ष को प्राप्त हो जाता है तीर्थ तारने वाले को कहते हैं। हरिद्वार स्नान तीर्थ नहीं है यह बाहरी मूढ़ता है।

"सुख की तलाश"

हमारा जन्म अपने सुधार के लिए हुआ है हम खुद मानव बनें हमारे श्रम मय जीवन को देख कर ही पड़ोसी सुधर सकते हैं। अपने अन्दर झांको अपनी बुराईयों को देखो उनको दूर करो दूसरे के अवगुण मत ढूंढो अपने अन्दर झांको तो सीख हम और को देते हैं। पहिले खुद उस पर चलो शिक्षा देने वाला पहले खुद उस पर आचरण करे, किसी को धोखा मत दो, आप तो खुद परिस्थान है यह मुबारक है [illegible] मत है—खुद आचरण नहीं करते उनके कहने पर कोई नहीं चलता। अपने अव गुणों को आप ही जानो और खुद ठीक करो। "दूसरे [illegible]" इसकी [illegible] फैलती है, सुखी रहना चाहते हो तो पहले दूसरों को सुख दो, अपना [illegible] मेरा कोई दुश्मन नहीं होता हमारा अपना व्यवहार ही हमारा शत्रु है। अच्छा बोलना सब का अपना बना लेता है।

मेरा चरित्र व कार्य ही किसी को अपनी ओर खींचता है। अच्छे शुभ कर्मों से यह जन्म मिला है। अब जो दोगे आगे मिलेगा। सबको सुख दो, सब का हित सोचो मान करो, जैसी करनी वैसी भरनी।

—सुबोधानन्द
दयानन्द मठ दीनानगर

आर्य समाज संगरूर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज संगरूर का वार्षिक चुनाव 10-5-87 को हुआ जिसमे श्री सुरेन्द्रपाल जी गुप्ता को वोट द्वारा प्रधान पद के लिए निर्वाचित घोषित किया गया व अन्य सभासद् उन्हें स्वयं चुनने का अधिकार दिया गया। उन्होंने जो अधिकारी चुने वह निम्न हैं।

संरक्षक—श्री निरञ्जन दास जी गुप्ता
प्रधान—श्री सुरेन्द्रपाल जी गुप्ता,
उप-प्रधान—श्री गोबीराम जी।
मन्त्री—अशोक आर्य।
उप-मन्त्री—श्री मेहरचन्द जी।
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र जी आर्य
भण्डार निरीक्षक—श्री निरञ्जन देव जी आर्य, श्री राम शरण जी।
कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव राज जी,
लेखा निरीक्षक—श्री आर आर बत्ता
अन्तरंग सभा सदस्य :—

श्री धर्मवीर जी, श्री मोती राम जी, श्री शिवराम जी महाजन; श्री सुरेश कुमार जी, श्री सुरेन्द्र पाल जी आर्य, श्री भीम सेन जी, श्री श्याम सुन्दर जी, श्री मदन लाल जी, चौधरी कर्ण प्रकाश जी, श्रीमती शकुन्तला जी, श्री विजय जी पराशर।

अधिकारियो ने 7-6-87 को निम्न शपथ ग्रहण की।

"मैं आर्य समाज का अधिकारी चुने जाने पर उस परम पिता परमात्मा को जो सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान् तथा न्यायकारी है, यज्ञ की इस पवित्र अग्नि के सम्मुख साक्षी बना कर शपथ लेता हू कि—

1 मैं इस पद की उच्च गरिमा को बनाए रखू गा न ऐसा कोई कार्य करू गा जिसके कारण मुझ अथवा किसी अन्य सदस्य को आर्य समाज से सम्बन्ध विच्छेद करना पड़े।

2 मैं उसकी सभी जिम्मेदारियो को सच्चे दिल स यथा शक्ति पूर्ण करने का प्रयत्न करू गा व सभी सभासदो का सहयोग लेने का प्रयत्न करू गा, हे परमात्मा मुझे आशीर्वाद दो।

मन्त्री

आर्य समाज मन्दिर सैक्टर १९-सी, चण्डीगढ़ का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मन्दिर सैक्टर—19, चण्डीगढ़ का वार्षिक चुनाव दिनांक 14-6-87 दिन रविवार को साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् प्रातः 10-30 बजे हुआ। चुनाव की अध्यक्षता वरिष्ठ सभासद् श्री महेश राज मैंद ने की तथा गत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट श्री कृष्ण चन्द आर्य ने पढ कर सुनाई। श्री बलदेव राज आर्य प्रधान चुने गये तथा उन्हें यह अधिकार दिया गया कि वह बाकी पदाधिकारियों तथा अन्तरंग सभा के सदस्यो को मनोनीत करें।

नव निर्वाचित प्रधान श्री बलदेवराज आर्य ने निम्न अधिकारियो एवम् अन्तरंग सदस्यो को मनोनीत किया।

संरक्षक—श्री महेशराज मैंद।
श्री श्याम दास मेहता।
वरिष्ठ उप-प्रधान—डा॰ डी. एल. गुलाटी।
उप-प्रधान—श्री फूल चन्द।
श्री शान्ति स्वरूप वर्मा।
श्री हजारी लाल।
महामन्त्री—श्री कृष्णचन्द आर्य।
मन्त्री—श्री विजय कुमार गुप्ता।
उप-मन्त्री—श्री ज्ञानचन्द गोयल
श्री छत्र सिंह चौधरी
लेखाकार एवं कोषाध्यक्ष-श्री आर एल. वर्मा।
प्रचार मन्त्री—श्री अनिल शर्मा।
पुस्तकालय अध्यक्ष-श्री ह स मेहता
अन्तरंग सदस्य—श्री आर.पी.नय्यर
श्री के श्री पाठनी,
श्री नाथूराम सोनी।

—विजय कुमार गुप्ता-मन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सोहन गज दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनांक 14-6-87 को सन् 87-88 के लिये सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री शिव प्रसाद गुप्त।
उप-प्रधान-श्री सुशील कुमार भाटिया
मन्त्री—श्री प्रेम सागर गुप्त।
कोषाध्यक्ष—श्री हेमसिंह।

—मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. N.W/J.L 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 15 5 श्रावण सम्वत् 2044 तदानुसार 19 जुलाई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

हम यज्ञ से न भटकें

लेखक—श्री प्रा रामप्रसाद जी वेदालंकार
अध्यक्ष वेद विभाग गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

ओ३म् मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिन ।
मान्त स्थुर्नो अरातय ॥ ऋ 10 57 1 ॥
अ 13 1 59 ॥

अन्वय —इन्द्र ! वय पथः मा प्रगाम। सोमिनः (वय) यज्ञात् मा (प्रगाम)। अरातयः न अन्तः मा स्थु ।

अन्वयार्थ —(इन्द्र !) हे जगत् सम्राट् ! हे परमेश्वर्यंयुक्त प्रभो ! (वय पथ मा प्रगाम) हम सन्मार्ग मे न भटकें । (सोमिन यज्ञात् मा प्रगाम) सन्मार्ग पर चलते हुये सोमी अर्थात् ऐश्वर्यंयुक्त हो कर हम यज्ञ से न भटकें । (अरातय न अन्तः मा स्थुः) अराति-भाव-अदान-भाव या शत्रु हमारे अन्दर न रहे ।

हे इन्द्र ! हे सम्राटो के सम्राट ! हे राजाओं के राजा । हे महाराजाओ के महाराजा ! अपने पुरुषार्थ और तेरी कृपा से हम पथ से कभी विचलित न हो, हम सन्मार्ग से कभी भटकें नही ! प्रभुवर ! तेरे नेतृत्व मे पथ पर सुपथ पर आरूढ होकर सोम (रेतो वै सोम ॥ ब्राह्मण ॥ वीर्य, बल, स्वास्थ्य, सुख,सौभाग्य, धन-वैभव आदि से हम (सोमिन.) वीर्यवान्, बलवान् स्वस्थ, सुखी, सौभाग्यशाली, धनी मानी आदि बन कर (यज्ञात् मा प्रगाम) यज्ञ से विचलित न हो । अर्थात् हम सर्वविध ऐश्वर्यों के स्वामी बन कर यज्ञ से—देवपूजा सगतिकरण और दान आदि शुभ कर्मों से कभी हटें नही, कभी भटकें नही ।

हे इन्द्र ! अपने पुरुषार्थ से और तेरी अपार अनुकम्पा से सुपथ पर चलते हुए हम जो बल, स्वास्थ्य, अन्न आदि खाद्य पदार्थ और दुग्धादि पेय पदार्थ तथा नाना प्रकार का धन-वैभव प्राप्त करें उसे सब का हम यज्ञादि शुभ कर्मों में ही व्यय करें और फिर जो यज्ञ शेष बच जाए उसको ही हम स्वयं सेवन करें ।

हम इस सर्वविध ऐश्वर्य से देवपूजा करे, देवो का सम्मान करे, देवो की सेवा-शुश्रूषा करे, देवो की आवभगत करें । ये (मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । अतिथिदेवो भव ।)
तैत्तिरीय आरण्यक ॥7 9 11॥

देव कौन हैं ? जीवित माता, पिता, आचार्य और अतिथि आदि। हम अपने सर्वेश्वर्य से, सब सुख सौभाग्य के साधनो से इन माता-पिता आचार्य एव अतिथि आदि की सेवा शुश्रूषा करें, मान-सम्मान करें, आवभगत करें । फिर इन सत्पुरुषो से सत्सग करें और अपनी श्रद्धा नम्रता और सरलता के व्यवहार से इन से अनुभव, शिक्षा, उपदेश, स्नेह तथा आशीर्वाद पाकर और भी अपना सुख-सौभाग्य तथा महा-सौभाग्य बढाय ।

आयु, ज्ञान और अनुभव से महान् इन देवो की पूजा और सत्सग करने के उपरान्त फिर जो अपने से ज्ञान, बल, स्वास्थ्य, धन, अन्न, वस्त्र आदि साधनो से हीन हों, उन पर दया कर के उनकी तन, मन, धन से सहायता करें। जिन्हें ज्ञान की भूख हो उन्हें ज्ञान दें, जिन्हें अन्न की भूख हो उन्हें अन्न दें, जिन्हें पानी की प्यास हो उन्हे पानी दे, जिन्हे वस्त्रो की आवश्यकता हो उन्हे वस्त्र दें, जिन्हे औषधि की अपेक्षा हो उन्हे औषधि दें, जिन्हे धैर्य की सान्त्वना की आवश्यकता हो उन्ह धीर बन्धायें—उन्ह सान्त्वना दें, जिन्हे सेवा, सहानुभूति की चाह हो उनकी सेवा करें और उन्हे सहानुभूति दें, जिन्हे स्नेह की अभिलाषा हो उन्हें स्नेह दें, जिन्हें प्यार और आशीर्वाद की चाह हो उन्हे स्नेह और आशीर्वाद दें । इस प्रकार हमारा धन बल आदि सब यज्ञमय शुभ कर्मो मे लगे ।

हे प्रभुवर ! हम तेरी कृपा से सत्पथ पर चलते हुए जो भी ऐश्वर्य पाये उससे हम सदा (पञ्चैतान् महायज्ञान् यथाशक्तिर्न हापयेत । मनु ।) पञ्चमहायज्ञो को करते रहे और उन यज्ञो के करने के उपरान्त जो यज्ञ शेष रहे उसी का ही हम सेवन करें । क्योकि—(यज्ञशिष्टाशन ह्येतत्सतामन्न विधीयते ।)
मनु 3, 118 ॥
श्रेष्ठजनो का यज्ञ शेष खाना ही धर्म है ।

हमने जो भी धन, बल आदि ऐश्वर्य पाया उसे हम ब्रह्मयज्ञ मे लगाए अर्थात् वेदाध्ययन या ब्रह्मचिन्तन मे व्यय करें, उसे देव यज्ञ अग्निहोत्र मे लगाये, बलिवैश्वदेवयज्ञ मे लगायें, गो, कुक्कुर आदि को भी उसमे कुछ खाद्य पदार्थ दे । इस के अतिरिक्त भी दीन दु खियो की सेवा मे लगाए, पितृयज्ञ अर्थात् माता-पिता, दादा-दादी की सेवा शुश्रूषा मे भी उसका व्यय कर । अतिथि यज्ञ अर्थात सन्यासी, योगी, त्यागी, तपस्वी जन, जो प्रभु चिन्तन मे मग्न रहते हैं या ससार के कल्याण के लिए स्थान-स्थान पर भ्रमण करते और प्रचार करते रहते हैं, उनके भोजन आच्छादन सुख सुविधा आदि की सब व्यवस्था आदि करने मे भी हम अपने धन वैभव का सदुपयोग करें । इस प्रकार हम पञ्चमहायज्ञो को नित्य करते रहें और स्वय इसके उपरान्त यज्ञ शेष ही खाते रहे ।

प्रभु वर ! धन, बल, बुद्धि आदि तो हम भी पाते हैं परन्तु हम उसे यज्ञ आदि शुभ कर्मों मे नही लगा पाते जैसे एक व्यक्ति स्वामी दयानन्द के स्वस्थ सबल शरीर से प्रेरणा ले-ले कर अपना शरीर तो खूब सबल बनाता है परन्तु उस को वह दूसरो को सताने मे लगाता है तभी तो वह एक साधारण गरीब व्यक्ति की कलाई पकड कर कहता है कि— मुझे जानता है कि नही, इसी डाम्बर की सडक मे गाड के रख दूगा इत्यादि ।" परन्तु महर्षि दयानन्द ने जहा बल पाया वहा उस को यज्ञमय कार्यों मे लगाया जैसे कि वह एक कृषक की अन्न से भरी हुई गाडी को कीचड मे धसी हुई देखता है और कृषक को अनवरत बैलो को चाबुक से मारते हुए देखता है तो उन बैलो पर दया आ जाती है और तब सहसा वह कह उठता है कि—'इन बेचारे बैलो को मत मारो इन्हे खोल दो मै तेरी गाडी को निकालने का उद्यम करता हू ।" बैलो को उधर ज्यो ही कृषक खोल कर एक ओर खडा कर देता है उधर ऋषिवर झट गाडी के जुए को पकड कर एक ही प्राणायाम के साथ गाडी को कीचड से बाहर निकाल कर खडा कर देते है ।' कृषक कृतज्ञता से चरणो मे आ गिरता है और बैल अपनी मूक वाणी से उस यज्ञमय पुरुष का कृतज्ञता से धन्यवाद करते हैं इत्यादि प्रभुवर ! हमे भी ऐसी सद्बुद्धि दो कि हम भी इस जन्म मे आकर जो धन,बल, सुख सौभाग्य आदि प्राप्त करें, उसे ऐसे महापुरुषो के उपदेशो एव यज्ञमय कर्मो से प्रेरणा ले लेकर शुभ कर्मों मे ही व्यय करें, जिससे कि यहा लोक मे हम सब के स्नेह सम्मान के पात्र बनें वहा आप के भी प्यार और आशीर्वाद के भाजन बनें ।

हे इन्द्र ! हमारी यही प्रार्थना है, यही अभ्यर्चना है कि हमारा बल, हमारी बुद्धि, हमारा मन, हमारा तन, और हमारा धन वैभव सुख सौभाग्य आदि सब पहले इन सब यज्ञ आदि शुभ कर्मों मे लगे, पश्चात् हमारे उपयोग मे आए । प्रभुदेव ! हमारी यह प्रार्थना सुन कर, हमारी यह पुकार सुन कर हमें ऐसा ही करने का सौभाग्य प्रदान करें ।

●

शिव दृष्टि

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन 145।4 सेंट्रल टाऊन जालन्धर

1898 विक्रमी की माघ चतुर्दशी की रात को, आज से 145 वर्ष पूर्व, सौराष्ट्र राजकोट के टंकारा ग्राम मे एक विलक्षण बालक को ज्ञान हुआ। ग्राम के पास बहने वाली डेमी नदी के किनारे बने एक शिवालय मे 14 वर्ष की आयु का वह बालक बैठा था। महाशिव रात्रि की पूजा चल रही थी। जैसे-जैसे रात गहरी होती जाती भक्त जन ऊघने लगते हैं। बालक श्रद्धा और उत्सुकता से जाग रहा था, दिन भर व्रत रखा था। शिव दर्शन की इच्छा प्रबल थी। बिलो से निकल कर चूहो ने अवसर मिलते ही चढ़ावे का खाद्य कुतरना शुरू किया। बालक चौंक पड़ा। जन्म जन्मान्तर की सुसंस्कृत बुद्धि से चमत्कार उत्पन्न हुआ। यह सच्चा शिव नही यह शिव दृष्टि प्राप्त हुई। हजारो वर्षों की परम्पराओ के संस्कारो से दबे एक ब्राह्मण बालक के मन मे विरोध की जागृति यह एक चमत्कार था।

मानव जाति के इतिहास मे इस प्रकार के ज्ञान चमत्कारो के अनेक उदाहरण है। हजरत मुहम्मद साहब को ऐसी अनुभूति 40 वर्ष की आयु मे मक्का के पास की एक पहाडी गुफा मे कई दिन के चिन्तन के बाद हुई। गुरु नानक देव के मन मे ऐसी ही ज्ञान ज्योति 30 वर्ष की आयु मे, एक नदी के किनारे तीन दिन के चिन्तन के समय हुई। महात्मा बुद्ध ने 28 वर्ष की आयु मे गृह त्याग किया तथा हजरत ईसा के मन मे 12 वर्ष की आयु मे ही प्राचीन के प्रति विद्रोह की भावना जाग आई।

बालक मूलशंकर के मन मे 14 वर्ष की आयु मे, शिव दृष्टि—सत्य के प्रति आग्रह का यह प्रारम्भ था। इस दृष्टि के विकास मे अनेक वर्ष लगे। अनेक कष्ट उठाने पडे। अनेक साधु-सन्तो विद्वानो के साथ सत्सग करना पडा। इसका एक परिपक्व रूप तब प्राप्त हुआ, जब 1917 विक्रमी मे यही बालक, दयानन्द सरस्वती के रूप मे, मथुरा, गुरु विरजानन्द के डेरे पर पहुचा। पर इस ऊहापोह का अन्त नही हुआ। यह तो न जाने कितने ग्रन्थो के अध्ययन तक चलती रही। गुरु विरजानन्द के द्वारा उन्हें एक मूल-मन्त्र प्राप्त हुआ कि सत्य की प्राप्ति ऋषि ग्रन्थो से होगी, अनार्ष ग्रन्थो से नही।

ऋषि दयानन्द के तत्वबोध तथा अन्य अनेक महात्माओ के तत्वबोध मे बहुत अन्तर है। बहुत बडा मौलिक दृष्टिकोण का भेद है। इसको समझे बिना ऋषि दयानन्द के, आर्य समाज के, ज्ञान, कर्म तथा ऐतिहासिक महत्व को समझा ही नहीं जा सकता। प्राय. अनेक सन्तो और धर्म गुरुओ को जो ज्ञान हुआ बोध हुआ, वह एक स्वतन्त्र, निरपेक्ष ज्ञान का रूप था। उन्होंने यही कहा कि उनका ज्ञान, बोध, अनुभूति ही सत्य है। पिछले विचार और विचार परम्पराए ठीक नही। इसलिए इन सब सन्तो और महात्माओ के नए मत और मार्ग से वे स्वय मार्ग दर्शक बने। ऋषि दयानन्द ने अनुभव किया कि जो सत्य ज्ञान या सत्यमार्ग उन्हे प्राप्त हुआ है वह अनोखा नही, सृष्टि के प्रारम्भ से यह ईश्वरीय बोध चला आया है। न जाने कितने ऋषियो, मुनियो ने इस तत्व ज्ञान का साक्षात्कार किया। इस प्राचीन सत्य प्रवाह को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। सत्य प्रवाह अनादि है, अनन्त है। जब मिथ्या भ्रान्तियो का इस पर आरोप हो जाता है, उसका परिष्कार करना आवश्यक हो जाता है।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के पिछले चार समुल्लासो मे चार प्रकार की मत धाराओ का दिग्दर्शन—मथन किया है। भारतीय आस्तिक मत, भारतीय नास्तिक मत, इस्लाम तथा ईसाई-मत। ईसाईयत तथा इस्लाम का प्राचीन भारतीय परम्पराओ से कोई सम्बन्ध नही। चार्वाक, जैन तथा बौद्ध मत भारतीय परम्परा मे ही हैं पर वेद और ईश्वर को न मानने से नास्तिक कहे गए। शेष सब आस्तिक मत हैं। उनमे भी दो भेद हैं। सन्त कबीर, गुरु नानक देव, सन्त रविदास, श्री दादू दयाल आदि भक्तो ने अपने चिन्तन से अपने अन्दर सत्य का बोध किया, वेदादि शास्त्रो का मन्थन नही किया। इन के मार्ग स्वतन्त्र हैं। पर शंकराचार्य, से रामानन्द तक की आचार्य परम्परा, तुलसीदास, सूरदास आदि भक्त प्राचीन निगमागम्य की परम्पराओ के अनुयायी हैं। परस्पर विचार भेद अवश्य है पर मूलभेद नहीं।

ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज भी इस ही परम्परा मे आते हैं। ऋषिवर ने कोई नया मत या परम्परा नहीं चलाई, मूल भारतीय परम्पराओं और विचारो का परिष्कृत रूप ही पुन. स्थापित किया। ऋषिवर ने वेद, वेदाग, उपाग, उपवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, सूत्र-ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ किसी को नकारा नही। इन सबके परिष्कृत रूप को स्थापित करने का प्रयत्न किया। यह परिष्कार का भागीरथ प्रयत्न, भागीरथ प्रवाह अब भी चल रहा है। प्राचीन तम हिन्दू धर्म, आर्य धर्म का रूप लगातार निखारा जा रहा है। विज्ञान द्वारा तर्क द्वारा, धार्मिक अनुभूतियो द्वारा इस परिष्कार को आगे बढाना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसा न होने पर यह प्रचीन, परम्परा, वैदिक ज्ञान, भारतीय संस्कृति, आर्य हिन्दू जाति अवश्य जीर्ण ही जाएगी नष्ट हो जाएगी।

ऋषि दयानन्द की शिव दृष्टि, सत्य दृष्टि के भेद को स्पष्ट करने के लिए ऐक छोटा सा उदाहरण देता हू। आजकल (टी वी) पर रामायण कथा चल रही है। उसका लक्ष्य है, हिन्दू उदात्त भावनाओ को, आदर्शों को उजागर करना। भक्त जन खूब मुग्ध होते हैं, रामकथा भक्तो के लिए आनन्द स्रोत है। एक प्रसग आया। ऋषि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण जनकपुरी की ओर जा रहे हैं। ताडका वध आदि पुण्य कार्य समाप्त हो चुके। मार्ग मे गौतम ऋषि का प्राचीन, उजडा हुआ आश्रम है। उसमें एक शिला बडा पत्थर पडा हुआ है। उत्सुकता से राम ने पूछा यह क्या है? ऋषि विश्वामित्र ने सन्त तुलसीदास के शब्दो मे उत्तर दिया —

गौतम नारी श्राप बश उपल देह धरि धीर-चरण कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर। अर्थात् यह गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या है। आप के चरण कमल की धूल से इसका उद्धार होगा। सो भगवान् कृपा कीजिए।

भगवान् ने कृपा की, चरण स्पर्श किया। अहिल्या का उद्धार हुआ। नारी रूप मे प्रकट भगवान् राम की स्तुति की। राम कृपा से सन्त लोक को चली गई। सन्त तुलसीदास ने गाया .—

अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित कृपाल तुलसीदास सठ ताहि भजु, छाडि कपट जजाल अर्थात् भगवान् बिना कारण सब पर कृपा करते हैं। सब कपट छोड कर उनका भजन करो।

और भक्तों ने जय जय कार किया-सियावर रामचन्द्र की जय।"

यदि जरा सा सोचें कि इस एक लघु कथा से, जिस जैसी अनन्त कथाएं पौराणिक साहित्य मे भरी पडी है, न जाने कितने ऋषियों मुनियों की नाक कटती है। इसी प्रसग में इतने देवो और ऋषियों की नाक कटी।

1—इन्द्र प्रसिद्ध वैदिक देवता है। पौराणिक परम्परा के अनुसार जो एक सौ अश्वमेध यज्ञ करले पर एक मन्वन्तर के लिए स्वर्ग के अधिपति इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है। वह देवों का राजा है, उसकी सुन्दरी शची पत्नी है, सैकडो परम सुन्दरी अप्सराए उसके दरबार की शोभा हैं। फिर भी एक तपस्वी मुनि की सुन्दर पत्नी को भ्रष्ट करने का महाभ्रष्ट कार्य उससे करवाया गया।

2—चन्द्र भी एक वैदिक देवता है। सनातनी विचार से भी चन्द्र लोक का अधिष्ठातृ देवता है। सोम औषधीनां पतिः, "उडीचीदिक सोमोधिपतिः" ऐसा अनेक स्थलो पर उसका वेदो में महत्व दिखाया गया। ऋषि गौतम को धोखा देने के लिए उसे मुर्गा बनाया गया। उसने बहुत सवेरे बाग दी। ऋषि को मूर्ख बनाया। ऋषि रात में ही स्नान के लिए चले गए।

3—गौतम ऋषि सनातन परम्परा मे प्राचीनतम ऋषि है। न्याय शास्त्र के रचयिता भी कहे जाते हैं। ऋषि जी तो दिव्य दृष्टि वाला कहा जाता है। इन्द्र के धोखे का उन को पता ही न चला। ठगे जाने पर इन्द्र को महाभ्रष्ट श्राप दिया और अपनी पत्नी को महा मूर्खता का श्राप दिया।

4—अहिल्या भोली और मूर्ख सिद्ध हुई। कोई भी पतिव्रता तो क्या सामान्य स्त्री भी ऐसे बहुरुपिया से ठगी नहीं जा सकती, सामान्य स्त्री को भी अपने पति की प्रत्येक चेष्टा का ज्ञान होता है।

पर तुलसीदास बाबा को और उन जैसे राम भक्तो को तो रामावतार का माहात्म्य दिखाना है चाहे इसके लिए अन्य देवी, देवताओ तथा ऋषि मुनियों के चरित्र कितने ही क्यो न बिगाडने पडें। इस घटना से कुछ पहले, रामायण पृ 164 पर नारद-मोह का वर्णन है। नारद जी प्राचीनतम देव ऋषि हैं, वे ब्रह्मचारी हैं, परम भक्त है। पर उनके चरित्र की भी छीछालेदर की गई। उन्हें सर्वत्र जगडूल करने मे कुशल तथा बुद्धि भ्रम उत्पन्न करने मे चतुर दिखाया जाता है। यह कोई एक दो उदाहरण नही। सारा प्राचीन पौराणिक साहित्य ऐसी अनगिनत घटनाओ से भरा हुआ है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव इन नए उभरते देवो के तथा इनके विशेष कर विष्णु के अवतारो के महत्व को बढाने के लिए प्राचीन वैदिक देव, इन्द्र, अग्नि, वरुण, यम आदि के रूप को खूब बिगाडा गया है। वायु, सूर्य, चन्द्र तो रावण की चारपाई के पायों से बांध दिए गए। महाभारत की कथा चलाने के लिए कुन्ती, माद्री के कर्ण समेत छः पुत्रों के लिए सूर्य धर्म, इन्द्र, वायु तथा अश्विनी कुमार को पकडा गया। यह सारा

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज और राजनीति

जनसत्ता के नाम से देहली से एक दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होता है पिछले दिनों जब हरियाणा मे एक बस मे कुछ यात्रियो की हत्या की गई तो जनसत्ता ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि ऐसा प्रतीत होता है यह जो कुछ हुआ है वह किसी षड्यन्त्र का परिणाम है। षडयन्त्र उसने यह बताया कि हरियाणा मे श्री देवीलाल की सरकार को विफल बनाने के लिए कई प्रकार के षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं और फिर उसी पत्रकार ने लिखा कि हरियाणा मे चुनाव से पहले ही एक ऐसा प्रयास किया जा रहा था जिससे यह धारणा पैदा करने का प्रयास हो रहा था कि हरियाणा मे कांग्रेस ही सफल होगी और वही मन्त्रिमण्डल बनाएगी इस सारी स्थिति का विश्लेषण करते हुए जनसत्ता के सम्वाददाता ने लिखा है :—

"कहा जा रहा है कि हरियाणा मे गडबडी करा कर इका यह साबित करना चाहती है कि यह विपक्षी दल खासतौर से देवीलाल की वजह से ऐसा हो रहा है। इसके पीछे चुनाव के दौरान इका द्वारा किए गए इस दुष्प्रचार को याद किया जा रहा है कि देवीलाल के आने पर हरियाणा मे उग्रवाद पनपेगा ऐसी बातें इका नेताओ ने अपने भाषणो मे भी कही थी और 15 जून को दिल्ली मे एक पूर्व सासद और इका समर्थक आर्य समाजी नेता से प्रैस कान्फ्रैंस करवा कर भी यही कहलवाया गया था लेकिन इस आर्य नेता की उटपटाग बातो को अखबारो ने छापा नही था।"

यह आर्य नेता कौन था जिसकी उटपटाग बाते अखबारो ने नही छापी। मैं नही जानता। मेरे लिए जो बात अत्यन्त दुःखद और सोचनीय है वह यह कि किसी आर्य नेता के विषय मे यह कहा जाए कि उसकी उटपटाग बाते समाचार पत्रो ने नहीं छापी। जब आर्य समाज के किसी नेता के विषय मे यह प्रकाशित होता है तो मेरे विचार में यह आर्य समाज का भी अपमान है। परन्तु इसके लिए आर्य समाज के नेता ही जिम्मेवार हैं। उनकी कठिनाई यह है कि एक तरफ तो वह यह कहते हैं कि आर्य समाज का राजनीति से कोई सम्बन्ध नही और दूसरी तरफ समय 2 पर वह राजनैतिक समस्याओ के विषय मे वक्तव्य भी देते रहते हैं जिसे समाचार पत्र उटपटाग कह कर प्रकाशित नही करते। केवल यही नही कुछ नेता इस प्रतीक्षा मे रहते हैं कि कब उन्हे यह सौभाग्य प्राप्त हो कि वह प्रधानमन्त्री से मिल सकें और मिलने के बाद अपना चित्र समाचार पत्रो मे प्रकाशित कराए। यह भी देखा गया है कि आर्य समाज के जो सम्मेलन होते हैं उनमे अब आर्य समाज के सन्यासियो को वह महत्व नही दिया जाता जो राजनैतिक नेताओ को कई बार दिया जाता है, राजनैतिक नेता भी वह होते है जिन्हे कोई नही पूछता। कोई व्यक्ति किसी राजनैतिक सस्था से सम्बद्ध होने के कारण राजनीति मे हस्तक्षेप करता है तो यह दूसरी बात है परन्तु आर्य समाज का कोई नेता अपना कोई वक्तव्य दे और समाचार पत्र उसे उटपटाग कह कर रद्दी की टोकरी मे फेंक दे तो आर्य समाज का इससे बडा अपमान और क्या होगा।

यह सब क्यो हो रहा है? क्या कारण है कि दिन प्रतिदिन आर्य समाज का महत्व कम हो रहा है? बडे-2 आर्य समाजियो ने राजनीति मे अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है स्वर्गीय चौ चरणसिंह जी को भी ले लो उनसे बडा आर्य समाजी और कौन मिलेगा और बडा राजनैतिक नेता भी कौन होगा। वह अपने घर मे बैठ कर कहते थे कि मैं दयानन्दी हू। उनके घर मे हवन यज्ञ भी होता था लेकिन घर से बाहिर वह अपनी राजनीति मे आर्य समाज को घसीटने का प्रयास नही करते थे, आज हमारा यह दुर्भाग्य है कि हमारे नेता राजनीति मे न रहते हुए भी राजनीति मे टाग अडाते हैं और सब कुछ आर्य समाज के नाम पर कहते हैं इसी का यह परिणाम है कि देश की राजनीति पर आर्य समाज का कोई प्रभाव नही है यह इसलिए भी कि हमारे नेता यह फैसला नही कर सकते कि उन्होने राजनीति मे किस सीमा तक हस्तक्षेप करना है वह राजनीति से लाभ उठाना तो चाहते हैं परन्तु उसका कोई दायित्व अपने ऊपर लेने को तैयार नही। हम आर्य समाजी एक ही समय मे दो किश्तियो मे सवार होने का प्रयास करते हैं और जो व्यक्ति दो किश्तियो मे सवार होता है वह डूबता है। इस समस्या के कुछ और पक्ष भी हैं जिन पर अगले अक मे अपने विचार पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

बहन कमला आर्या के भतीजे की हत्या

बडे दुःख के साथ मैं यह समाचार आर्य जनता को दे रहा हू कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की उप प्रधान और विख्यात आर्य नेता श्रीमती कमला आर्या के भतीजे श्री जोगिन्द्र घटारा की पिछले दिनो उग्रवादियो ने हत्या कर दी। वह अपने गाव से आ रहे थे कि रास्ते मे उन्हे गोली मार दी। वह बहुत ही मिलनसार और मधुर स्वभाव के थे और अपने इलाके मे सर्व प्रिय थे। लोग उनका आदर और सम्मान करते थे परन्तु जैसा कि आजकल पजाब मे हो रहा है कोई भी सुरक्षित नही। वह एक दिन अपने स्कूटर पर जा रहे थे कि उन्हे गोली मार दी गई। उनके परिवार को इससे जो आघात पहुचा है उसे समझना कठिन नहीं, परन्तु आज की परिस्थितियो मे हम सब अपने आपको विवश पाते हैं। बहन कमला जी को अपने इस युवक भतीजे की हत्या पर जो दुःख हुआ है सारे पजाब के आर्य बन्धु उनके इस दुःख म अपनी सहानुभूति पेश करते हुए परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगतात्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को यह शक्ति दे कि वह इस वियोग को सहन कर सकें।

—वीरेन्द्र

सभा के अधिकारियों की भठिण्डा यात्रा

4, 5, जुलाई को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न और आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री आशानन्द जी दो दिन के लिए भठिण्डा गए। भिन्न भिन्न शहरो मे आर्य जनता से सम्पर्क करने का जो अभियान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने प्रारम्भ कर रखा है यह उसकी दूसरी कडी थी इससे पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा पटियाला म रखी गई थी और पटियाला सगरूर और लुधियाना आदि जिलो के प्रतिनिधि वहा आये हुए थे। इस बार सभा के अधिकारी भठिण्डा गए वहा भी जिला भठिण्डा की भिन्न-2 आर्य समाजो के अधिकारी आए हुए थे। भठिण्डा के अतिरिक्त रामामण्डी भी गए वहा बहुत देर से आर्य भाईयो का आपस मे विवाद चल रहा था। उसे समाप्त करने का भी प्रयास किया गया और उसमे सभा के अधिकारियो को सफलता मिली है। भठिण्डा मे जो आर्य समाजो के प्रतिनिधि आए हुए थे उन्होने अपनी,2 समस्याए सभा के अधिकारियो के सामने रखी। इस पर आपस मे विचार विमर्श के पश्चात् आर्य समाज के प्रचार के लिए कुछ नई योजनाए बनाने का निर्णय भी लिया गया।

भठिण्डा की आर्य समाज मे एक नया वातावरण देखने को मिला और आर्य समाज भठिण्डा के जो नए अधिकारी निर्वाचित हुए है वह सब नवयुवक हैं और उनमे आर्य समाज की सेवा की बडी प्रबल भावना है। पुराने महारथियो ने इन युवको को अपने आशीर्वाद से आगे किया है आशा ही नही विश्वास भी है कि इन नवयुवको के नेतृत्व मे आर्य समाज भठिण्डा बहुत अधिक प्रगति करेगा इस अवसर पर सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को 11 हजार रुपये की थैली भी भेंट की गई। भठिण्डा की महिलाओ मे भी आर्य समाज के लिए बहुत उत्साह है और उन्होने भी [illegible] प्रधान जी को विश्वास दिलाया है कि वह भी अपने भाईयो के साथ मिलकर सारे भठिण्डा जिला मे आर्य समाज के प्रचार को भी अधिक फैलाने का प्रयास करेंगी।

—सह-सम्पादक

आर्य समाज की भावी रूपरेखा—२

बुद्धिजीवी सम्मेलन की आवश्यकता

लेखक—डा. प्रशान्त जी वेदालंकार 7/2 रूपनगर दिल्ली

पहले मेरा एक लेख आर्य समाज को नई गति देने की आवश्यकता शीर्षक से 7 फरवरी 1987 को नव भारत टाइम्स में प्रकाशित हुआ। बाद मे इसी लेख का विस्तृत रूप आर्य समाज की भावी रूप रेखा। बुद्धिजीवी सम्मेलन की आवश्यकता शीर्षक से 1 और 8 मार्च को सार्वदेशिक के अंकों मे पाठको के सम्मुख प्रस्तुत हुआ। आर्य जगत्, आर्य मर्यादा, आर्य मित्र आदि अनेक पत्रो ने भी उस लेख को प्रकाशित किया। इन लेखो मे एक बड़े स्तर पर बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन करके आर्य समाज की भावी रूपरेखा पर विचार करने का प्रस्ताव है। साथ ही पाठकों से यह पूछा गया था कि वे अपने क्षेत्र के उन विद्वानो के नाम लिखें जिनको इस सम्मेलन मे भाग लेना चाहिए।

हमारे पास उक्त लेख की प्रतिक्रिया में अनेक पत्र आए हैं। इनमे से श्री सच्चिदानन्द व श्रीमती देवी (दोनों चक्रधरपुर, गोड्डा) बिहार, श्री के श्री लाल (देहरादून), श्री बाबू लाल गुप्त (ग्वालियर), श्री सच्चिदानन्द शास्त्री (दिल्ली), श्री सत्यकाम सुधि (दिल्ली), श्री गया प्रसाद विद्यार्थी (जबलपुर) ने प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन को अनावश्यक ठहराया है। इसके मोटे रूप से दो कारण प्रस्तुत किये गये हैं—(क) वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज का और अधिक सुधार सम्भव नही है। (ख) सम्मेलनो के सुझाव बहुत आ जाते हैं, पर उनका क्रियान्वयन नही हो पाता।

पर निम्नलिखित महानुभावो ने मुझे पत्र लिखकर बुद्धिजीवी सम्मेलन आयोजित करने पर बल दिया है—श्री ओम् प्रकाश आर्य वानप्रस्थी (भटिण्डा), श्री प्रदीप कुमार आर्य (जालौर), डा राजेन्द्र प्रसाद गुप्त (पटना), श्री महावीर शर्मा (पंचकूला), श्री रामचन्द्र गुप्त (जम्मू), श्री दीनानाथ शर्मा (ऊना) श्री जगदीश आर्य (आसीन्द), डा एस बी. काले (बीड), श्री भगवान् देव चैतन्य (हिमाचल प्रदेश) श्री अश्विनी कुमार पाठक (दिल्ली), श्री भोलानाथ दिलावरी (अमृतसर), श्री श्याम मोहन आर्य (भरथना), श्री गया प्रसाद विद्यार्थी (जबलपुर), श्री सुरेश लक्ष्मीकान्त आर्य (नवसारी), डा. डी. एन प्रशान्त (आसाम), श्री इन्द्रजीत देव (यमुनानगर) श्री प्रेम महात्मा जी (धूरी), श्री सारस्वत मोहन 'मनीषी' (अबोहर), डा. नारायण दास (गोहाटी), श्री लाजपत गुप्त (मिरजापुर) श्री अशोक आर्य (अम्बाला), श्री इन्द्र मोहन मेहता (जालन्धर), श्री नन्दलाल आर्य (हरियाणा), श्रीराम पथिक (छुटमलपुर सहारनपुर), श्री ओम्प्रकाश भाटिया (जयपुर), श्री दत्तात्रेय आर्य (अजमेर), श्री अनिल कुमार आर्य (मुजफ्फरपुर), श्री प रविदत्त जी शास्त्री (हिसार), श्री पूर्णचन्द आर्य (आगरा), श्री भद्रसेन (होशियारपुर), श्री मोहनलाल शारदा (शाहपुर भीलवाडा), डा हरिश्चन्द्र (पुणे) श्री जयन्ती भाई राजदेव (अहमदाबाद), डा आर. एस लाल (मऊरानीपुर छतरपुर) डा राजेन्द्र पाल (दिल्ली), आचार्य रामनारायण शास्त्री (जयपुर), राममोहन आर्य (इटावा), आचार्य राजेश्वर शास्त्री (जालन्धर), श्री सतीश चन्द्र शुक्ल (अजमेर), आदि।

श्री वीरेन्द्र जी ने मेरे उक्त लेख को आर्य मर्यादा मे प्रकाशित करने के साथ अपनी एक सम्पादकीय टिप्पणी में बुद्धिजीवी सम्मेलन' को आवश्यक ठहराया है तथा साथ ही उसको सफल बनाने के लिए सहायता देने के लिए प्रेरित भी किया है।

दत्तात्रेय (बावले) आर्य (अजमेर) लिखते हैं—आर्य समाज के सम्बन्ध मे बुद्धिजीवियो की संगोष्ठी पर आपका लेख पढा। इस लेख को आर्य पुनर्गठन के अगले अंक मे प्रकाशित किया जाएगा। आपने अपने लेख मे जिस ओर आर्य जगत् का ध्यान आकर्षित किया है उसी दिशा मे इस पत्र द्वारा मैं प्रयत्न कर रहा हू।

यहा यह उल्लेखनीय है कि श्री उत्तमचन्द शरर्, श्री क्षितीश वेदालंकार तथा श्री सत्यदेव शास्त्री ने क्रमशः आर्य जगत् के 22 फरवरी 5 अप्रैल तथा 3 मई 1987 के अंकों में आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की है तथा उसकी भावी रूप रेखा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं और भी अनेक विद्वान् समय-समय पर इस विषय में अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं।

श्री प्रदीप कुमार आर्य लिखते हैं—डा. प्रशान्त जी का यह प्रयास स्तुत्य है मैं इसी प्रकार से ही समस्त आर्य पुरुषों को यह अपील कर रहा हू। आशा है कि हमारी शीर्ष सभाएं उसे क्रियान्वित करने का प्रयास आरम्भ करेंगी।

जब श्री मदनमोहन विद्यासागर (हैदराबाद) व श्री वसन्त कुमार (अमेठी) से इस बुद्धिजीवी सम्मेलन की बात की तो उन्होंने अत्यन्त उत्साह प्रदर्शित किया और उसे सम्पन्न करने के लिए मुझे सहयोग देने का आश्वासन दिया। पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने कहा कि यह सम्मेलन अवश्य करना चाहिए। मुझे गाजियाबाद की आर्य केन्द्रीय सभा ने निमंत्रित किया और प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन को अपना समर्थन दिया।

मैं नही समझता कि प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन से सार्वदेशिक या आर्य प्रतिनिधि सभा या आर्य प्रादेशिक सभा को किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना है। इसके विपरीत उन संगठनो को बल प्रदान के लिए इसका आयोजन किया जा रहा है।

हमने अपने पहले लेख मे 'बुद्धिजीवी सम्मेलन मे विचारणीय विषय की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की थी और पाठको से निवेदन किया था कि वे कुछ अन्य विषयों के सुझाव भी दे सकते हैं। मेरे पास जो पत्र आये हैं उनमे सबसे अधिक बल शिक्षा सम्बन्धी सुधारों पर है। श्री भोलानाथ दिलावरी (केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, रणजीतनगर, अमृतसर) लिखते हैं—आर्य समाज की लहर का जब समय पतन शुरू हुआ, जब सरकारी अनुदान के लिए से हमारी संस्थाओं ने हमारी शिक्षा नीति में बदलाव लाया और हम भटक गए। हमारी सन्तानें आर्य संस्कारो से वंचित होने लगी, और बड़ो मे प्रमाद व उदासीनता आ गई।

श्री एस. बी. काले, श्री प्रदीप कुमार आर्य, डा. हरिश्चन्द्र ने भी सरकारी अनुदान के कारण आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओ मे आई गिरावट की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

इस प्रसंग मे आचार्य श्री दत्तात्रेय जी बावले के संयोजकत्व मे सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य समाज के भावी कार्यक्रमों तथा पुनर्गठन के सम्बन्ध में नियुक्त समिति में विद्वानों ने विचार विमर्श के बाद शिक्षा व्यवस्था के सुधार के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये हैं—

1. आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं की [illegible] का [illegible] अध्यापकों और आचार्यों की आर्य समाजी होने की व्यवस्था।

2. शिक्षा संस्थाओं का केन्द्रीय संगठन तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों मे सुधार।

3. गुरुकुलों का केन्द्रीय संगठन।

4. शिक्षण संस्थाओ की वर्तमान स्थिति पर विचार तथा इनमें धर्म शिक्षा की व्यवस्था आवश्यक है। पर समिति ने यह नहीं बताया कि इन सुझावो को क्रियान्वित किस प्रकार किया जाएगा।

हम अपने पिछले लेख मे बता चुके हैं कि आर्य समाज की शिक्षण संस्थाएं 3 प्रकार की हैं—(1) गुरुकुल, (2) डी ए. वी. संस्थाए (3) विभिन्न आर्य समाजी एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा संचालित आर्य विद्यालय एवं महाविद्यालय। इनमे पढने वाले छात्र और छात्राए आर्य समाजेतर शिक्षा संस्थाओ के छात्रो से नौकरी आदि में पिछड न जाए इस कारण इन सभी ने सरकारी शिक्षा व्यवस्था को स्वीकार कर लिया है। सरकारी शिक्षा व्यवस्था रखने का एक अन्य कारण यह भी है कि वे सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त कर सकें। जब कर्मचारियों, शिक्षकों एव मुख्याध्यापकों, प्राचार्यों आदि का वेतन सरकार ही देगी तब आर्य समाजी व्यक्ति की ही नियुक्ति नहीं हो पाती। इस स्थिति में निम्नलिखित बातें सम्भव हैं—(क) हम अपनी शिक्षण संस्थाओं का सम्बन्ध सरकार से न रखें जिस प्रकार स्वाधीनता से पूर्व हमारी शिक्षण संस्थाए विशेष रूप से गुरुकुल सरकारी सहायता के बिना चलते थे, उसी प्रकार का प्रयत्न आज भी किया जाये। यह सत्य है कि इस सुझाव को मानने के लिए आर्य शिक्षण संस्थाओं की प्रबन्ध समितियां तैयार नहीं होंगी। वे चन्दा एकत्र कर और प्रचार के माध्यमो से छात्रो को आकृष्ट करने का कठिन दायित्व अपने कन्धो पर लेने से झिझकेंगी। इस के लिए जिस कठोर आत्मानुशासन तथा श्रम की अपेक्षा है, वह वर्तमान आर्य शिक्षण संस्थाओ के संचालको मे नहीं है। (ख) हमारे संगठन मे इतनी शक्ति होनी चाहिए कि हम सरकार को यह बात समझा सकें कि राष्ट्र के लिए आर्य शिक्षण संस्थाओ में दी जाने वाली शिक्षा राष्ट्र के लिए उपयोगी है। उसे किसी सरकारी नियमो के पालन करने की आवश्यकता नहीं है। उनके पाठ्यक्रम, उनकी नियुक्ति आदि के नियम सब स्वतन्त्र रहेंगे। इसके बाद भी सरकार को उन्हें आर्थिक सहायता करनी चाहिए। किन्तु यह सुझाव एक बहुत पेचीदा सुझाव है। हमारी सरकार इस बात को मानने वाली नहीं है, और इसे मनवाने के लिए हमारे पास [illegible] है।

([illegible])

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के शिष्टमण्डल की भठिण्डा यात्रा

—सुखदेव शर्मा-सभा महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक शिष्टमण्डल जिसमे सर्व श्री वीरेन्द्र जी प्रधान, सुखदेव शर्मा महामन्त्री, सरदारी लाल मंत्री एव शीलानन्द आर्य, अधिष्ठाता, आर्य वीर दल सम्मिलित थे, 4 जुलाई 86 को प्रात 7 बजे भठिण्डा के दो दिन के दौरे पर रवाना हुआ। साढे दस बजे आर्य समाज चौक मे पहुचे जहां आर्य समाज के अधिकारी पहले से ही स्वागत के लिए उपस्थित थे। उन्होंने पुरजोर स्वागत किया और विचार विमर्श प्रारम्भ हुआ। सभी लोगो ने आर्य समाज की गतिविधि का एव हाल ही में आर्य समाज के चुनाव के सम्बन्ध मे हुआ वर्ग को समाप्त, मन्त्री आदि के पदो पर आसीन देख कर हुए आर्यजनो को बधाई देते हुए नये चुने अधिकारियो को आर्य समाज का कार्य मिलकर करने का प्रेरणात्मक आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे आर्य कन्या हाई स्कूल की प्रगति के सम्बन्ध में हैडमिस्ट्रैस एव प्रबन्धक के वहा न होने के कारण पूरी सूचना प्राप्त नहीं हो सकी। सभा प्रधान जी ने कहा कि स्कूल या किसी सस्था को चलाने के लिए एक शक्तिशाली प्रबन्ध समिति की आवश्यकता होती है अत आर्य कन्या हाई स्कूल की प्रबन्ध समिति का पुर्नगठन करना चाहिए। और स्कूल और आर्य समाज के खातो की भी जाच करवा कर वास्तविक आर्थिक स्थिति का जायजा लेना चाहिए।

भठिण्डा की आर्य महिला सभा की ओर से श्रीमती स्वच्छ सत्यदेवा जी ने बताया कि आर्य समाज मे उनको उचित प्रतिनिधित्व नही दिया गया जबकि वह एक ही आर्य समाज की सदस्य रहना चाहती हैं। महिला सभा ने अपना साप्ताहिक एव पारिवारिक सत्सगो के नियमित रूप से होते रहने का वर्णन किया और काफी प्रभावशाली ढग से महिलाओं की वेद प्रचार कार्य में रुचि का सतोषजनक विवरण दिया। सभा प्रधान जी ने आर्य समाज के वर्तमान प्रधान श्री मनसा जी एव अन्यो को आर्य महिलाओ को साथ लेकर चलने एव अपनी अन्तरग सभा आदि मे उचित प्रतिनिधित्व देने को कहा जिस के विषय में उन्होंने आश्वासन दिलाया।

भठिण्डा जिला मे भठिण्डा से लगभग 45 किलोमीटर दूर एक मण्डी है जिसका नाम रामा है। वहा पर भी आर्य प्रतिनिधि सभा की सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति का अवलोकन करने के लिए शिष्टमण्डल 3 बजे बाद दोपहर भठिण्डा आर्य समाज के कुछ अधिकारियों को साथ लेकर रामा के लिए चल पड़ा। सीधे स्वामी स्वतन्त्रानन्द आर्य हाई स्कूल में पहुँचे। छोटी रेलवे लाईन के साथ यह स्कूल काफी बड़े रकबे मे बना हुआ। खेलकूद आदि के लिए भी 3,4 कीला जगह साफ मैदान के रूप मे है। स्कूल की प्रगति एव अन्य सम्पत्ति के सम्बन्ध मे लोगो से अलग-2 बात करने से कुछ वास्तविक स्थिति सामने आई शिष्टमण्डल इस परिणाम पर पहुचा कि वहा के आर्य समाज के अधिकारियो एव प्रबन्ध समिति मे आपसी तालमेल के अभाव मे ही प्राय सारी सम्पत्ति पर या तो राज्य शासन का अधिकार है या एक 13 किले जमीन के टुकड़े पर अन्य किसी का कब्जा है जो कोई हिस्सा आदि उस भूमि का नही देता। सभा प्रधान जी ने आर्य समाज की अन्तरग एव स्कूल आदि का प्रबन्ध समिति का पुर्नगठन करने का आदेश दिया। वहां दो तीन पक्ष अपने-अपने तौर पर सक्रीय प्रतीत हुए। वहा ऐसे लोगो को प्रबन्ध समिति मे रखने का सुझाव सामने आया जो सरकारी प्रभाव डाल कर 13 किले भूमि और जो भूमि राज्याधिकारियो के कब्जा मे है उसे मुक्त करवा कर सुचारू प्रबन्ध करके सम्पत्ति की देखभाल कर सकें और रामा मे चलने वाली सस्थाओ का सुप्रबन्ध करके उन्हे प्रगति की ओर ले चलें। वहा के लोगो ने शीघ्र ही इस दिशा मे निर्णय लेकर सभा प्रधान जी को अवगत कराने का आश्वासन दिया वहा से शिष्टमण्डल रात्रि आठ बजे वापस सरकट हाउस भठिण्डा पहुचा जहा आर्य समाज भठिण्डा की ओर से आवास का प्रबन्ध किया गया था।

5 जुलाई को शिष्टमण्डल ने गुरुकुल भठिण्डा जिसकी कि बडी भारी सम्पत्ति है, को देखा। वहा का प्रबन्ध सतोषजनक न होने के कारण प्रगति रुकी हुई प्रतीत हुई। उसकी इतनी बड़ी सम्पत्ति का सदुपयोग कैसे किया जाता। वहा के अधिकारियो ने सभा प्रधान जी से बात करके वहा कोई प्रोजैक्ट खोलने का सुझाव दिया तो उन लोगो ने शहर से बच्चो के पहुचने का सुचारू प्रबन्ध हो जाने पर भी शीघ्र कर दिया जाएगा एक माडल स्कूल खोलने की घोषणा कराई। श्री प्रधान जी को उन्होंने 1000 रुपया मासिक आश्रम की देख-रेख के लिए दिए जाने का प्रस्ताव किया। गुरुकुल की कुछ राशि सभा के पास पड़ी है। उसमे से श्री सभा प्रधान जी ने उक्त राशि देना स्वीकार किया और यह भी कहा कि इस का पिछला हिसाब भेजें और आगे भी हिसाब रखें और सभा को हिसाब भेजते रहे।

आर्य समाज भवन भठिण्डा मे वापस आकर 11 बजे जिला भठिण्डा और आसपास की अन्य समाजो की एक गोष्ठी की गई। कुल 50 व्यक्ति पुरुष एव महिलाए उपस्थित हुए। प्रधान जी ने पजाब की वर्तमान स्थिति के विषय मे बता कर आर्य समाज का कार्य इन हालात मे करने के लिए सुझाव दिए कि बृहद यज्ञ का आयोजन आर्य समाजो मे किया जाए जिसे मे दूसरे सम्प्रदायो के लोग भी आमन्त्रित किए जाए। पारिवारिक सत्सग किए जाए। छोटे-2 ट्रैक्ट लोगो मे बाटे जाए। इस गोष्ठी मे आर्य समाज मानसा सिरकीबाजार भठिण्डा, फरीदकोट, जैतो, बरेटा, गोनियाना, बरनाला, भठिण्डा चौक, रामा के अधिकारियों (महिलाओ और पुरुषो) ने भाग लिया। आर्य समाज बरेटा के श्री बनारसी दास जी ने वहा महाशय हसराज ट्रस्ट के द्वारा किए जाने वाले कार्यों (कन्या स्कूल के सचालन भाषण प्रतियोगिता आदि और आर्य समाज के द्वारा प्रचार एव पारिवारिक सत्सग किए जाने का सतोषजनक विवरण दिया। ट्रस्ट के विचार के अनुसार अन्ततोगत्वा यह सम्पत्ति आ प्र सभा की है वहा सम्पत्ति का कोई विवाद किसी के साथ चल रहा है जिसके लिए सभा से सहायता की प्रार्थना श्री बनारसी दास जी ने की जिस को देने का आश्वासन सभा प्रधान जी ने उनको दिया।

गोनियाना के मास्टर श्री तरसेम कुमार जो और जगदीश राज जी ने बताया कि उनके वहा आर्य समाज का भवन नही है पर आर्य समाज का सत्सग निरन्तर किसी न किसी गृह मे कराया जाता है। बड़ उत्साह से पुरुष और स्त्रिया इस मे सम्मिलित होते हैं। ठीक समय पर आर्य का कार्यक्रम आरम्भ होता है। पारिवारिक सत्सग भी होते हैं। इस उत्साह से प्रभावित होकर श्री सभा प्रधान जी ने उनको आर्य समाज का भवन बनाने के लिए उनकी सहायता सभा की अन्तरग की अनुमति स इस शर्त पर देने की पेशकश की जितनी राशि सभा दे इतनी ही राशि स्वय एकत्रित करके काम शुरू करें उन की तीन व्यक्तियो ने उसी समय 6 हजार रुपए की घोषणा करके आर्य समाज भवन की नीव रखने का कार्यक्रम बनाया।

आर्य समाज मानसा के सम्बन्ध में भी एक सज्जन ने अधिकारियों मे आपसी तालमेल के अभाव की ओर सकेत किया। श्री प्रधान जी ने आर्यत्व की भावना प्रत्येक व्यक्ति को अपने अन्दर धारण करके छोटी छोटी बातो से ऊपर उठ कर आर्य समाज के सगठन को शक्तिशाली बनाने की प्रेरणा दी।

जैतो मण्डी के एक सज्जन ने आर्य समाज के भवन के विवाद का निर्णय आर्य समाज के हक मे होने का समाचार सुनाया। श्री प्रधान जी ने सभी को आर्य समाज की सम्पत्ति की रक्षा करने का आह्वान किया।

भठिण्डा और रामा की स्थिति का अवलोकन शिष्टमण्डल के सदस्यो ने दो दिन तक करके और कतिपय विवादास्पद विषयो का समाधान करके जालन्धर की ओर दोपहर दो बजे प्रस्थान किया। रास्ते मे मोगा मे एक आर्य परिवार (श्री क के पुरी) एव इन्द्रपुरी) से सम्पर्क करते हुए मोगा की स्थिति की भी जानकारी प्राप्त की। यह यात्रा हर प्रकार से सफल रही।

———

गुरुकुल करतारपुर में दाखला

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री श्रेणियो के लिए 31 जुलाई 87 तक प्रवेश खुला है। तीस रुपये मासिक पर भोजन, दूध, छात्रावास की सुविधा के साथ हिन्दी टाईपिंग व सगीत सिखाने का प्रबन्ध प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की विद्याधिकारी मैट्रिक (अग्रेजी सहित सभी विषय) मे क्रमश प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता कक्षा पाच पास, सम्पर्क करें।

—नरेश कुमार शास्त्री
[illegible] आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक
सस्कृत महा विद्यालय,
करतारपुर 144801
(जिला जालन्धर) पजाब

हमारी राष्ट्रीय एकता के अवरोधक तत्व

ले—डा श्री कमल पुंजाणी जामनगर (गुजरात)

भद्रमिच्छन्तः ऋषयः स्वर्विदः
तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं
तदस्मै देवाः उपसंनमन्तु ॥

(अथर्ववेद 19-41-1)

"राज्"—दीप्तौ धातु से 'राष्ट्र' शब्द की सिद्धि होती है । राष्ट्र की भावना भारतीय जनमानस मे बहुत प्राचीनकाल से व्याप्त रही है। राष्ट्र को हम एक भौगोलिक ईकाई नही मानते थे। उसमे चैतन्य की प्रतिष्ठा भी की गई थी । भारतवर्ष को हम उसके भौगोलिक विस्तार के साथ साथ एक प्राणवान् राष्ट्र के रूप मे मानते थे। जिसके साथ सामाजिक एव धार्मिक आदर्श भी जुडे हुए थे। हमारी राष्ट्रीयता मे न केवल देश का भौतिक स्वरूप सन्निहित था, अपितु उसका आध्यात्मिक चेतन रूप थी। आज स्थिति बदल गई है। इसलिए हमारी राष्ट्रीयता के लिये अनेक चुनौतिया खडी हो गई हैं।

हम आज जब देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करते है तो ऐसा लगता है कि हमारी राजनीतिक, सामाजिक एव आर्थिक व्यवस्थाए असाधारण अराजकता को प्राप्त हो चुकी हैं। आज स्थिति इतनी गम्भीर हो गई है कि उस पर गहराई से विचार करने का समय आ गया है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दो मे—

"हम कौन थे, क्या हो गए, क्या होगे अभी।
आओ विचारे आज मिलकर, ये समस्याए सभी।

हमारे देश मे आज सर्वत्र अशान्ति एव अविश्वास का वातावरण छाया हुआ है। कही विध्वसकारी तत्व सिर उठा रहे है तो कही विघटनकारी तत्व आगे दिखा रहे हैं। शासन इतना ढीला, लचीला और [illegible] हो गया है कि राष्ट्र की [illegible] विकृतियो को सुधारना उसके बलबूते से बाहर दिखाई दे रहा है। अलगाववादी ताकते राष्ट्र मे ताण्डव की भीषणता खडी कर रही हैं।

सुयोग्य राष्ट्र पुरुष का अभाव

आज हमारे पास चरित्र बल की कमी है, चाणक्य जैसी विभूतिया जिस प्रकार राष्ट्र की बागडोर अपने हाथ सम्भाल कर चन्द्र गुप्त जैसे शासको को सत्यपरामर्श देती थी, ऐसी परामर्शशक्ति आज हमारे पास नही है। पजाब के अव्यावहारिक विभाजन का असर गोरखालैंड, कश्मीर आदि अनेक आन्दोलनो पर पड रहा है। आज हमारे सामने ऐसा कोई राष्ट्र-पुरुष नही है जो अपनी प्रतिभा, अपने चरित्र से राष्ट्र के चित्त मे उज्ज्वल रग भरदे, उसके भाग्य को चमका दे। एक उर्दू शायर ने कहा है —

कुछ अक्ल न हो जब तक, तदबीर नही बनती।
अनजान मसव्वर से, तसबीर नही बनती॥

भाषावाद

हमारी राष्ट्रीय एकता को तोडने एव विश्रृंखलित करने मे भाषावाद भी रग कर बैठ रहा है। भाषा के बहाने अनेक प्रदेशो मे अलग खिचडी पक रही है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की अनेक प्रदेशो मे अवहेलना हो रही है। भाषावाद के नाम पर सविधान के अनुच्छेदो की होली जलाई जा रही है। प्रान्तीय भाषाओ को राष्ट्रभाषा की सहकारिणी के रूप मे कार्य करना चाहिए, पर ऐसा नही होता। निजी स्वार्थो के लिए भाषा के मामले को लेकर जनसाधारण को उकसाया जा रहा है। जान-बूझ कर भाषायी समस्याए पैदा की जा रही है।

राष्ट्रीय सस्कृति के अनुकूल राष्ट्रीय शिक्षा का अभाव

हमारी राष्ट्रीय एकता की परिवर्धन के लिए समस्त राष्ट्र मे एक जैसी नागरिक एव राष्ट्रीय सस्कृति व अनुरूप शिक्षा की भी आवश्यकता है। सस्कृति [illegible] प्राण है, सस्कृति के अनुसार ही शिक्षा पद्धति का निर्माण होना चाहिए। आजकल हमारे देश मे नई शिक्षा नीति का जोर-शोर से प्रचार हो रहा है, पर क्या वह हमारी सास्कृतिक विरासत के अनुकूल है? जिस शिक्षा-पद्धति को अग्रेजो ने ब्रिटिश शासन को सुदृढ बनाने एव क्लर्क पैदा करने के लिए लागू किया था, उसमे हमने आज पैंतीस वर्ष के बाद भी परिवर्तन नही किये, वे भी हमारी सास्कृतिक धारा के अनुकूल नही है।

आर्थिक असंतुलन

हमारे देश मे जिस दर से वस्तुओ के मूल्यो मे वृद्धि हो रही है, वह जन-साधारण मे असतोष, अशान्ति एव आक्रोश की भावना पैदा कर रही है। इस से हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है। देश के अधिकतर राज्य अकाल के प्रकोप से पीडित हैं। गुजरात, राजस्थान आदि राज्यो के कई गांवो तथा नगरो मे पीने का पानी भी नही मिलता। सरकार एक ओर बडे-बडे उद्योग, कारखानो, वैज्ञानिक उपकरणो आदि के पीछे पानी की तरह पैसे बहा रही है दूसरी ओर देश मे भ्रष्टाचार, अनाचार तथा अत्याचार फैल रहा कालाधन बढ रहा है, छोटे उद्योगो की उपेक्षा की जा रही है और दिन प्रतिदिन गरीबी तथा बेरोजगारी का प्रमाण बढता रहा है।

उपसंहार

राष्ट्रीय एकता के लिए उपर्युक्त चुनौतियो को देखते हुए हम कह सकते हैं कि आज हमारे राष्ट्र की नस-नस मे विष व्याप्त हो गया है 'राष्ट्र पुरुष' शरीर रुग्ण हो गया है। इस रुग्ण-स्थिति के बचने का एक ही उपाय है-स्वार्थ एव सकीर्णता की वृत्ति का परित्याग। जिस प्रकार परिवार की एकता बनाये रखने के लिये परिवार के सदस्यो को एक दूसरो के हित की बात सोचनी अनिवार्य है, उसी प्रकार राष्ट्र की एकता एव अखण्डता के लिए सब को धार्मिक सकीर्णता, जातिवाद, भाषावाद आदि की क्षुद्र वृत्तियो से ऊपर उठना अनिवार्य है। तभी हमारे देश मे शान्ति, समृद्धि तथा सुव्यवस्थितता स्थापित हो सकेगी। हमे भगवान् श्रीकृष्ण के इस सन्देश को सर्वत्र सामने रख कर आगे बढना है।

'क्षुद्र हृदय दौर्बल्य त्यक्त्वोत्तिष्ठ परतप,

आर्य समाज गोबिन्दगढ़, जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर की 7 6-87 की बैठक मे आर्य समाज के अधिकारियो का चुनाव वर्ष 1987-88 के लिए निम्न प्रकार से हुआ।

प्रधान—श्री रामप्रताप जी, उप-प्रधान—डा ब्रह्मनाथ जी, उप-प्रधान—माता गार्गी देवी, मन्त्री—नरेश कुमार, उपमन्त्री—श्री प्रेम मित्र वसिष्ठ जी, कोषाध्यक्ष—ओम् प्रकाशपुरी जी, पुस्तकालयाध्यक्ष—सोहनलाल जी, लेखा निरीक्षक--श्री ब्रह्मदत्त शर्मा।

अन्तरंग सदस्य—श्री अमृतलाल जी बजाज, श्री बलदेव राज जी, श्री चतुर्भुज जी मित्तल, श्री मुनिलाल जी, श्री ओम्प्रकाश जौहर, श्री जवाहरलाल सूद।

—नरेश कुमार मन्त्री

(4 पृष्ठ का शेष)

यदि आर्य समाज अपने आदर्शों के अनुरूप हिन्दी माध्यम के किसी विश्वविद्यालय का प्रस्ताव भारत सरकार को दे सके, जिसमे प्राचीन व अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान के सभी विषयो के शिक्षण की व्यवस्था हो तो भारत सरकार को यह प्रस्ताव मान लेना चाहिए। वह राष्ट्रोन्नति के कार्य के साथ शिक्षा जगत् मे एक क्रान्तिकारी कदम होगा। इस सम्बन्ध मे श्री अशोक (टकारा) आर्य का मत है कि महर्षि के आदर्शों के अनुरूप हम तुरन्त एक अन्तः राष्ट्रीय गुरुकुल स्थापित करना चाहिए। ताकि आर्य समाज फिर से एक तक्षशिला एव नालन्दा जैसी विद्यापीठ खोलने का यश भागी हो सके।

(ग) अनेक बुद्धिजीवियो ने हमे लिखा है कि ब्रिटिश शासन पद्धति अथवा ईसाई मिशनरियो द्वारा स्थापित शिक्षण सस्थाओ की नकल करके आर्य समाजियो ने जो पब्लिक स्कूल खोले हैं वे आर्य समाज के उद्देश्यो को पूर्ण नही कर सकते। उनके लिए हमे कान्वेन्ट एजुकेटड अध्यापक, अध्यापिकाओ की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। इनमे हमे अग्रेजी माध्यम रखने के लिये बाध्य होना पड रहा है। इन शिक्षा सस्थाओ मे हिन्दी और सस्कृत लेने वाले छात्रो की सख्या नगण्य है। धर्म शिक्षा और अन्य वैदिक अथवा आर्य सिद्धान्तो को पढाने का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। क्या आर्य शिक्षण सस्थाओ के सचालको मे यह साहस व धन व्यय करने की शक्ति है कि वे अपनी शिक्षा सस्थाओ मे नियुक्त अध्यापको को दो वर्षों तक आर्य शिक्षा सिद्धान्तो के मूलभूत तत्व को समझाने के लिए प्रशिक्षित करे, अथवा सरकारी पाठ्यक्रमो के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सस्कृत, हिन्दी एव धर्म शिक्षा को अनिवार्य विषय घोषित करें?

(क्रमशः)

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

एक सुशील बच्चा

लेखक—श्री काशीराम जी चावला द्वारा श्री पथिक छुटमलपुर

जिन बच्चों को बाल्यकाल मे ही माता-पिता द्वारा शुभ शिक्षा प्राप्त हो जावे, तो वे जहा स्वयं सुखी जीवन व्यतीत करते हैं, वहा समाज के लिये भी बहुमूल्य सम्पत्ति होते हैं। छोटे बच्चो को विशेष रूप से बडो का आदर करना सिखाना चाहिए। एक ऐसे ही बच्च की कथा सुनिये जो मार्ग मे मिलने वाले बडी आयु वाले पुरुषों को बिना परिचित होने के भी प्रणाम करता था।

एक बच्चे का स्वभाव था कि स्कूल जाते हुए वह वयोवृद्ध आदमियो को प्रणाम करता था। वे भी बडे प्रसन्न होते और उसे प्यार करते और आशीर्वाद देते। एक सज्जन पुरुष उसी मार्ग से प्रतिदिन सैर को जाता था। इसलिए उसका मेल भी उस बच्चे से नित्य हो जाता था। वह बच्चा उसे सदैव नम्र भाव से प्रणाम करता और उस आदमी को बडी प्रसन्नता होती। वे एक दूसरे से परिचित नही थे।

एक समय ऐसा आया कि लगातार तीन दिन वह बच्चा उस मार्ग मे उस आदमी से न मिला। क्योकि उस मनुष्य को उस बच्चे से मिलने की बडी प्रसन्नता होती थी इसलिए उसे उस बच्चे का पता करने की उत्सुकता हुई। उसका न वह नाम जानता था न घर। स्कूल मे जाकर पूछने से पता लगा कि वह बच्चा बीमार है। यह सुन कर उस आदमी को उस बच्चे से मिलने की और अधिक उत्सुकता हुई। दूसरे बच्चो से उसके घर का ठिकाना पूछ कर वह उधर गया जिधर उसका वह नन्हा मित्र रहता था। उस गली में जाकर एक स्त्री से पूछा कि इस आयु का स्कूल मे जाने वाला एक बच्चा बीमार है। उसका घर किधर है? वह नित्य मुझे सैर जाते मिलता था। मैंने उसको देखना है। वह स्त्री बोली कि वह मेरा ही बच्चा है और यह सामने हमारे हमारा घर है। तब वे दोनो उस घर में चले गए। उस आदमी ने देखा कि रोग के कारण वह बच्चा बहुत दुर्बल हो गया है। बच्चे ने फिर भी पूर्ववत हाथ जोड कर उस आदमी को प्रणाम किया तो उस आदमी ने उसे बहुत प्यार किया और आशीर्वाद दिया। फिर उसने घर के सामान इत्यादि पर दृष्टि डाली तो प्रतीत हुआ कि वे गरीब लोग हैं। पुन यह भी पता लगा कि उस बच्चे के पिता का देहान्त हो चुका है।

दैव योग से वह आदमी वहा का एक प्रसिद्ध तथा योग्य डाक्टर था। बच्चे का भली भान्ति निरीक्षण करके उसने उस स्त्री से कहा कि मैं एक डाक्टर हू। मेरा कम्पाऊडर नित्य आ कर औषधि दे जाया करेगा। इसको खाने के लिए दूध तथा अमुक पदार्थ के अतिरिक्त और कुछ न दिया जाए। दूध का नाम सुन कर वह स्त्री चुप सी हो गयी। डाक्टर समझ गया। उसने जेब से दस रुपये का नोट निकाल कर और कहा कि इससे दूध इत्यादि का प्रबन्ध कर लो। मैं भी समय पर आकर इसे देख जाऊगा। भगवान की दया से यह शीघ्र ही नीरोग हो जाएगा और पुन स्कूल जाते हुए मुझे मिला करेगा।

यह एक सच्ची घटना है। तत्पश्चात कम्पाऊडर आकर नित्य दवाई दे जाता और दूसरे तीसरे दिन डाक्टर स्वय भी उसे देख जाता और कुछ पैसे भी दे जाता। धीरे धीरे वह बच्चा स्वस्थ हो गया और स्कूल जाने लगा। उसके पश्चात् भी वह डाक्टर उस बच्चे की सहायता शिक्षा प्राप्ति के लिए करता रहा। अन्तत: बच्चा उच्च शिक्षा प्राप्त करके एक अच्छे स्थान पर नियुक्त हो कर अपनी आजीविका कमाने लगा। लडके की मा जीवन पर्यन्त डाक्टर के लिये शुभ कामनाए प्रकट करती रही और वह युवक सदा अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता रहा।

नि सन्देह वह डाक्टर एक अत्यन्त सज्जन और उदारचादी पुरुष था किन्तु मौलिक बात बच्चे की नम्रता तथा सुशीलता थी।

—●—

ऋषि दयानन्द के महाराष्ट्री भक्त

महात्मा ज्योति बा (जोतीराव) फुले

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ

महाराष्ट्र मे सामाजिक जागृति के के सूत्रधार ज्योति बा फुले का जन्म 1887 ई मे हुआ था। कृष्ण व बडवलकर के अनुसार यद्यपि ये स्वामी दयानन्द से आयु मे तीन वर्ष छोटे थे किन्तु सामाजिक क्षेत्र मे उन्होने पहले ही प्रवेश कर लिया था। जिस वर्ष मे स्वामी दयानन्द ने सन्यास की दीक्षा ली, उसी वर्ष मे महात्मा फुले पूना मे कन्याओ के शिक्षण के लिए पाठशाला की स्थापना की थी। वे आधुनिक भारत मे स्त्री शिक्षा के जनक के रूप मे सम्मानित किये जाएगे क्योकि उन्होने ही कन्याओ के शिक्षण के लिए सब प्रथम पाठशाला की स्थापना की थी। महात्मा फुले जातिगत सकीर्णता तथा पाखण्डो के कट्टर विरोधी थे। उन्होने श्रमिक एव कृषक वर्ग के उत्थान के लिए उस युग मे अनेक आन्दोलन चलाये जब कि श्रम सगठन तथा मजदूर आन्दोलन के बारे मे कोई जानता तक नही था। फुले एकेश्वरवाद मे विश्वास रखते थे किन्तु स्वामी दयानन्द की भाति वे वेद प्रामाण्य के सिद्धान्त से सहमत नही थे। उनका शास्त्रीय ज्ञान भी सीमित ही था।

जिस समय महादेव गोविन्द रानाडे के आमन्त्रण पर स्वामी जी पूना आये उस समय महात्मा फुले भी उसी नगर में विद्यमान थे। महात्मा फुले के मराठी जीवनी लेखक धनजय कीर के अनुसार स्वामी दयानन्द के सम्मान मे जब पूने मे रानाडे तथा उन के साथियो ने एक शोभा यात्रा का आयोजन किया तो उसमे फुले भी उपस्थित थे। शोभा यात्रा के आयोजको को यह आभास हो गया था कि पौराणिक समुदाय इस कार्य क्रम में येन केन प्रकारेण उपद्रव करेगा। सम्भवत ज्योति बा फुले तथा उनके अनुयायियों के साहस और शक्ति का अनुमान कर महादेव रानाडे ने यह ठीक समझा होगा कि यदि ज्योति बा तथा उनके साथी शोभा यात्रा मे सम्मिलित होगे तो वे समारोह की सुरक्षा की दृष्टि से सहायक होगे। फुले भी स्वामी दयानन्द के समाज एव धर्म सशोधन विषयक अनेक मुद्दो से पूर्ण सहमति रखते थे अत वे 5 सितम्बर 1875 को निकाली गई इस शोभा यात्रा मे उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। प्रा हरिदत्त वेदालकार के अनुसार स्वामी दयानन्द के एक ओर न्यायमूर्ति रानाडे और दूसरी ओर महात्मा फुले चल रहे थे।

महात्मा ज्योति बा फुले के जीवन पर आधारित एक मराठी फिल्म के निर्माता आचार्य प्रह्लाद केशव अत्रे ने स्वामी दयानन्द की शोभा यात्रा मे महात्मा फुले की उपस्थिति को प्रमुखता देकर प्रदर्शित किया है। प्राध्यापक कुशलदेव के अनुसार पूना को पेरे जूनागज नामक बस्ती मे स्थित त्यजय वर्ग की एक पाठशाला मे स्वामी दयानन्द को व्याख्यान हेतु आमन्त्रित किया गया था। सम्भव है कि दलित जातियो के बालको की इस पाठशाला मे स्वामी जी को महात्मा फुले की प्रेरणा से ही आमन्त्रित किया गया होगा। तथापि न तो स्वामी दयानन्द के जीवन चरितो मे कही फुले का उल्लेख मिलता है और न फुले ने अपने साहित्य मे ही स्वामी जी की चर्चा की है। मराठी लेखक तथा स्वामी दयानन्द के प्रबल आलोचक विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने फुले द्वारा स्थापित सत्य शोधक समाज की चर्चा स्वामी दयानन्द की सहयोगी सस्था के रूप मे की है। फुले का निधन 1890 ई मे हुआ।

शिव—दृष्टि

(2 पृष्ठ का शेष)

प्रसग बहुत लम्बा है—भारतीय चिन्तन पर एक कलङ्क है। गुरु विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर आगरा आने से अजमेर मे अपने देह निर्वाण तक ऋषि दयानन्द इस प्राचीन हिन्दू साहित्य के सशोधन मे लगे रहे और उनके बाद एक सौ वर्षों से भी अधिक समय बीतने पर भी आर्य समाज से यह सशोधन कार्य समाप्त नही हो पाया।

ससार मे जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके जीवन मे आत्मिक जागरण का समय आता है। ऋषि दयानन्द के जीवन मे शिव सकल्प, सत्य सकल्प का अवसर 14 वर्ष की आयु मे प्रारम्भ हुआ। उस के बाद, साधना-पर साधना, और सतत अध्ययन द्वारा यह शिव दृष्टि अथवा सत्य-दृष्टि प्राप्त करने का प्रयत्न चला। परिणाम रूप म उन्हे योग साधना और शास्त्राध्ययन द्वारा सत्य की उपलब्धि हुई। जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है अन्य अनेक सन्तो और महात्माओ द्वारा प्राप्त सत्य ज्ञान के रूप में एक मौलिक अन्तर है। प्राय: इन सन्तो ने अपने सत्य ज्ञान को मौलिक और नया समझ अपनी अपनी वाणी द्वारा नए मत चलाए, जो उनके नाम से प्रसिद्ध हैं। पर ऋषि दयानन्द की सत्यानुभूति वही थी जो प्राचीनतम भारतीय परम्परा मे निहित थी। सहस्रो ऋषि-मुनियो और योग साधको ने उसका साक्षात् कार किया था। इसीलिए ऋषि दयानन्द तथा उनके अनुयायियो ने किसी नए मत या धर्म की नीव नही रखी। उन्होने सत्य सनातन-धर्म के ऐसे उज्ज्वल रूप को प्रस्तुत किया जिसके आधार पर आर्य हिन्दू विचारधारा एक प्रबल विश्वव्यापी रूप धारण कर सकती है।

इतना ही नही, इस विचारधारा का भारत और भारतीयता के साथ प्रगाढ स्नेह सम्बन्ध है। भारत इसका सदा-सदा से अपना देश है। भारतीय रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, आदर्श-लक्ष्य तथा जीवन का प्रत्येक रूप इसके लिए प्रिय है। भारतीय महापुरुष इसके लिए श्रद्धा के स्थल हैं। एक तरह से इस विचारधारा का एक मात्र लक्ष्य भारतीय जीवन, अखण्ड भारतीय परम्पराओ और आदर्शों के महत्व को ससार मे प्रकाशित करना है। शिक्षा, व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था, इन सब मे भारतीयता का विकास ही ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज का मुख्य कार्य है। इसलिए इन सब को इनके मूल, शुद्ध रूप मे देखना परम आवश्यक है। इसके लिये ऋषि दयानन्द की शिव दृष्टि, सत्य दृष्टि अनिवार्य रूप से ही होनी चाहिए। अन्यथा राष्ट्र जाति और धर्म का कल्याण न होगा।

———

आर्य समाज फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर का वार्षिक चुनाव श्री किशन चन्द गुप्ता की अध्यक्षता मे हुआ। श्री मोहन लाल मन्त्री ने वार्षिक रिपोर्ट पढी तत्पश्चात् सर्व सम्मति से श्री हुकम लाल महता को प्रधान चुन लिया गया। उन्होंने बाकी अधिकारी और अन्तरग सदस्य इस प्रकार मनोनीत किये।

प्रधान—हुकम लाल महता

उप-प्रधान—श्री शिव सुखराज गोयल, श्री किशन चन्द गुप्ता, मन्त्री—महात्मा मोहन लाल जी, उपमन्त्री—श्री वेद प्रकाश जी, श्री ललित बजाज, कोषाध्यक्ष—श्री सत्यपाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओ३म प्रकाश भाटिया। लेखानिरीक्षक—श्री विजय कुमार धवन, वस्तु भण्डारी—श्री सुरेन्द्र कुमार धवन, अन्तरग सदस्य—सर्व श्री जसवन्त राय, बिहारी लाल, बलदेव राज, दर्शनलाल, ओ३म् प्रकाश धवन, विजय कुमार, श्रीमती कान्ता बजाज।

मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
रजि. हरिद्वार W/J.L. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 16 12 श्रावण सम्वत् 2044 तदानुसार 26 जुलाई 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

वेद में ईश्वर का स्वरूप

लेखक—स्वर्गीय श्री पं गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम ए

(1) ईश्वर सृष्टि का कर्ता अर्थात् रचने वाला है। देखो —

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवींचान्तरिक्षमथो स्वः ॥

(ऋ मडल 10, सू 190, म 3)

विधाता अर्थात ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र पृथिवी, अन्तरिक्ष द्यौ लोक और अन्य सब लोकों को पूर्व के समान बनाया। अर्थात् ईश्वर कल्प कल्पान्तरो मे ऐसी ही सृष्टि रचा करता है। ईश्वर अनादि और अनन्त है। उसका स्वभाव भी अनादि और अनन्त है। ईश्वर का स्वभाव ही सृष्टि रचना है। अत ईश्वर हर कल्प में एक सी सृष्टि बनाता है।

यः पृथिवी व्यथमानामदृन्हद् य पर्वतान् प्रकुपिता अरम्णात। यो अन्तरिक्ष विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्र ।

(ऋ. मडल 2, सू 12, मत्र 2)

हे ससार के लोगो! ईश्वर वही है जिसने हिलती हुई (फिसलती हुई) पृथिवी को ठोस किया, जिसने हिलते हुए पहाडो को थामा। जिसने इतने बडे अन्तरिक्ष को बनाया और जिसने द्यौलोक को सुस्थित किया।

प्रश्न—कुछ लोग ईश्वर को सृष्टि का कर्ता नही मानते।

उत्तर—भूल है। वेद मे ईश्वर को 'कर्ता' कहा गया है।

देखो ऋ मडल 4 सू 17 मन्त्र 17

सखा पितृतम पितृणा कर्तेमु लोकमुशते वयोधी ।

(ईश्वर सखा) हितैषी, (पिता) पालक, (पितृ तम पितृतम) ससार मे जो रक्षक हैं उन सब मे श्रेष्ठ रक्षक है, (कर्ता) वह कर्ता है, (ईम् उ) निश्चय रूप से, (उशते) भक्त के लिए, (वयोधा) दीर्घजीवन या सम्पत्ति का दाता है। यहा 'कर्ता' शब्द स्पष्ट दिया है।

(2) ईश्वर सर्वव्यापक और निराकार है।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथा तथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य ॥

(यजुर्वेद अ 40, मन्त्र 9)

(स परि अगात्) ईश्वर सर्वत्र है, (शुक्रम) स्वच्छ और निमल है, (अकायम्) निराकार है, (अव्रणम्) त्रुटि रहित है, (अस्नाविरम्) वह नाडी, नस के बन्धन मे नही आता। अर्थात् जैसे जीव शरीर धारण करके नाडी नस के बन्धन मे आते हैं वैसे ईश्वर कभी शरीर धारण नही करता, (शुद्धम) ईश्वर शुद्ध है, (अपापविद्धम) कभी पाप उसको बीन्ध नही सकता, (कवि) ज्ञानवान है, (मनीषी) सोचने वाला है, (परिभू) सारे ससार को घेरे हुये है, कुछ भी उस के बाहर नही, (स्वयभू) उसकी स्थिति किसी दूसरी चीज पर आधारित नही है, (शाश्वतीभ्य समाभ्य) उसने अपनी सदा रहने वाली नित्य, अज, अमर प्रजा के लिये, (व्यदधात्) विधान बनाया (याथातथ्यत) जैसा चाहिये वैसा।

इन मन्त्रो मे इतनी बात दी हुई है—

(1) ईश्वर एक है। (2) वह निराकार है। (3) वह शरीर कभी धारण नही करता। राम कृष्ण आदि श्रेष्ठ पुरुष थे। वे ईश्वर के अवतार नहीं थे। क्योकि वे नस नाडी के बन्धन मे थे, जो गर्भ मे आता है वह नस-नाडी के बन्धन मे आ जाता है। ईश्वर ऐसा नहीं है। (4) ईश्वर शुद्ध, निर्मल और ज्ञानी है। (5) वह ईश्वर अमर परन्तु अल्प जीवों के लिये ठीक-ठीक विधान बनाता है, जीव कभी उत्पन्न नही होते। अजर और अमर तथा नित्य हैं। इसलिये उनको 'शाश्वती' समा:' (नित्य रहने वाली प्रजा) बताया। जीव नित्य भी है और निराकार भी परन्तु 'अस्नाविरम्' 'अव्रणम्' अपापविद्धम' अर्थात् नस नाडी के बन्धन मे न आने वाले नही। वह पाप मे भी बिध सकते हैं। सब प्राणि अज्ञानवश करते हैं। अत. पाप से बचने के लिए विधान, अर्थात् ज्ञान की आवश्यकता है। परमात्मा इसी विधान को बनाता है। (देखो "व्यदधात्")। वह विधाता (धाता) है। विधान दो प्रकार का है। वेद रूप ज्ञान जो ईश्वर ऋषियो के हृदयो मे देता है। और सृष्टि क्रम जिसको भली-भान्ति देखकर मनुष्य सृष्टि के नियमो की खोज करता है। विद्वान वेदज्ञ वेदो को पढ कर सृष्टि के नियमो को जानते हैं। इसी का नाम शास्त्र है जो सृष्टि का निरीक्षण करके इन नियमो को जानते हैं वह वैज्ञानिक या सायस जानने वाले कहलाते हैं। इस प्रकार वेद की शिक्षा और सायस एक दूसरे के विरुद्ध नही अपितु पूरक है। सायस बताती है कि सृष्टि के अटल नियम हैं जिनका कोई उलघन नही कर सकता। इन्ही नियमो के जानने का नाम सायस (विज्ञान) है। इस ज्ञान के कई वर्गीकरण हुए हैं—जैसे भौतिकी (फिजिक्स, रसायन (कैमिस्ट्री), शरीर शास्त्र (फिजियालोजी) मनो विज्ञान (साइकालोजी) आदि। यह [illegible] बला नहीं है। इनके सो नके नियम एक हैं। सृष्टि मे कोई ऐसी सत्ता है जो इन सब नियमो को समन्वित करती रहती है। तृण से लेकर सौर मण्डल तक और क्षुद्र कीट पतग से लेकर हाथी आदि बडे प्राणियो तक सब मे यह नियम एक से हैं। जब एक से नियम हैं तो कोई इनका एक नियन्ता होगा जो इन नियमो को एक सूत्र मे बान्धे रखे और अलग न होने दे। वेदो मे इसी नियन्ता को ब्रह्म कहा है। देखो—

यो विद्यात् सूत्र विततम्,
यस्मिन्नोता: प्रजा इमा.।
सूत्र सूत्रस्य यो विद्यात,
स विद्याद् ब्राह्मण महत् ॥

अथर्ववेद का 10, सूक्त9, मन्त्र 37)

यहा प्रश्न यह था कि ब्रह्म का सच्चा ज्ञान किसको है। इसका उत्तर वद के इस मन्त्र मे दिया है कि केवल वही मनुष्य 'ब्रह्म' को जानता है जो उस नियम को जानता है जो सारी सृष्टि मे ओत-प्रोत है। 'यस्मिन ओता प्रजा: इमा)। और जो इस नियम के भी मूल नियम को जानता है। अर्थात् जो सृष्टि के नियमो का निरीक्षण नही करते और सायस या विज्ञान की अवहेलना करते हैं वह ब्रह्म को नही जान सकते क्योकि वह ब्रह्म के नियमो को नही जानते। वह मनमानी या सुनी सुनाई कल्पना करके ईश्वर के [illegible] स्वरूप को मान बैठते हैं। कोई पीपल के वृक्ष को ईश्वर समझ कर उसकी पूजा करते हैं कोई गया ही को ईश्वर समझता है। कोई हिमालय पर्वत को, कोई बैल या सर्प को। कोई मनुष्य को। कोई ककड पत्थर को। वह [illegible] नियमो का निरीक्षण नहीं करते वेद मन्त्र मे बताया गया है कि सच्चा सायसज्ञ वही है जो ब्रह्मवित है और सच्चा ब्रह्मवित वही है जो विज्ञानवित है

[illegible] के एक मन्त्र मे कहा है—

[illegible] कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।

(ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 22, मत्र 19)

सृष्टि मे फैले हुए ईश्वर के कर्मों अर्थात् महिमा को देखो। उन्ही को देख कर तुम अपने कर्त्तव्य को ठीक-ठीक समझ सकते हो। जो केवल तोते की भान्ति वेद मन्त्र पढता है और ईश्वर के नियमो की ओर नही देखता वह ईश्वर को नहीं समझ सकता। ईश्वर के पूजने वाले ससार मे बहुत कम हैं। ईश्वर के स्थान मे मनुष्य, ईट, पत्थर, नदी, पहाड आदि का पूजन वाले बहुत हैं। इसी भ्रान्ति के कारण मनुष्य दुःख भोगता है। वेद मे तो साफ लिखा है कि ईश्वर को छोडकर किसी दूसरे की पूजा मत करो। देखो —

(शेष पृष्ठ 7 पर)

परिद्रष्टा सोमनाथ जी मरवाह

एक कर्मठ आर्य समाजी का व्यक्तित्व

लेखक—श्री सूर्यकान्त श्री वास्तव, संग्रहालयाध्यक्ष,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

१५ अप्रैल 1987 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की सीनेट की बैठक विश्वविद्यालय परिसर में पुस्तकालय भवन में सम्पन्न हुई। सीनेट ने पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, जिनका कार्यकाल समाप्त हो गया था, के स्थान पर आर्य समाज के कर्मठ सजग प्रहरी श्री सोमनाथ मरवाह को विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा पद पर सर्व सम्मति से चयन किया। श्री मरवाह जी आर्य समाज के एक अनुकरणीय कर्मठ व्यक्तित्व हैं। लगभग गत 35 वर्षों से आप देहली में निवास कर रहे हैं तथा उच्चतम न्यायालय के गणमान्य उच्च अधिवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

16 मई 1987 को अपराह्न विश्वविद्यालय भवन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों को परिद्रष्टा के रूप में सम्बोधित किया। अपने सम्बोधन से पूर्व आपने विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को बड़े ही धैर्य एवं ध्यान के साथ सुना। अपने सम्बोधन में न्याय पूर्ण स्वच्छ प्रशासन उपलब्ध कराने के के यत्न का आश्वासन दिया साथ ही आपने समस्त कुल कर्मचारियों से आश्वासन मांगा कि वे सभी अपने दायित्वों को निष्ठापूर्वक करेंगे एवं कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेंगे जो आर्य समाज के नियमणा एवं वैदिक धर्म की छवि को धूमिल करें।

16 मई के व्यस्त दिवसीय कार्यक्रम में थोड़ा सा समय लेखक को साक्षात्कार के लिए मिला। सौम्य, गम्भीर कठोर एवं समर्पित भावनाओं का मिला-जुला व्यक्तित्व निःसन्देह नमनीय है। जीवन के 76 वर्षों का विगत इतिहास आपकी कर्मठता, समाज के प्रति समर्पण एवं उपलब्धियों के अनुकरणीय प्रसंगों से परिपूर्ण है।

15 दिसम्बर 1910 को जेहलम नगर के आर्य समाजी समर्पित साधारण परिवार के लाला राम निवास मरवाह के घर आपकी पहली किलकारी सुनने को मिली मां सौभाग्यवती जसवती को। धर्म निष्ठ कर्तव्य परायण माता पिता ने बालक का नामकरण किया 'सोमनाथ' लाला रामनिवास जी मरवाह आर्य समाज के एक प्रतिष्ठित कर्मठ कार्यकर्ता थे। प्रातः सायं घर का आंगन हवन मन्त्र एवं समिधा की महक से भरा होता था। ऐसे वातावरण में आपका लालन-पालन आरम्भ हुआ। अतः सन्ध्या, हवन एवं



परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह

मन्त्रोच्चारण का कण्ठस्थ होना स्वाभाविक था। पाठशाला जाने से पूर्व की यह शिक्षा जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में अनवरत आज तक चल रही है।

प्रारम्भिक शिक्षा शासकीय हाई स्कूल में हुयी लेकिन कुछ वर्षों के पश्चात् शासकीय स्कूल छोड़कर "दयानन्द आर्य विद्यालय लाहौर में प्रवेश लिया। पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर की मैट्रीक्यूलेशन परीक्षा सन् 1927 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तदुपरान्त सन् 1933 में दयानन्द आर्य कालेज के छात्र के रूप में बचलर आफ आर्टस की उपाधि प्राप्त की। पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से सन 1933 में एल एल बी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर सम्पूर्ण पंजाब में वरीयता क्रम में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

अधिवक्ता के रूप में वर्ष 1933 से ही कार्य आरम्भ कर दिया था। अधिवक्ता के छः वर्षीय अल्प आयु कैरियर में ही आपने ख्याति प्राप्त कर ली थी फलतः आपको जिला परिषद् का कानूनी सलाहकार नियुक्त किया गया। इस पद पर राष्ट्र विभाजन तक कार्य करते रहे। विभाजन के कारण जन्मभूमि को त्याग अपने ही वतन में अजनबी की तरह अमृतसर पहुंचे। कितना मानसिक तनाव रहा होगा यह अकल्पनीय है। लेकिन आपने संयम नहीं छोड़ा अपनी कर्मठता से अपने आपको एक सफल अधिवक्ता ही नहीं बल्कि आर्य समाज के सजग प्रहरी के रूप में प्रतिष्ठापित किया। विभाजन के पश्चात् कुछ वर्षों तक भारत सरकार के सहायक निदेशक विधि विभाग के पद पर भी कार्यरत रहे।

आर्य समाज एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा आपको बचपन से दी गई थी। उस शिक्षा का प्रभाव आपके ऊपर इतना अधिक पड़ा कि आप 10 वर्ष की किशोर आयु में ही आर्य समाज की कुमार सभा के विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे। किशोर अवस्था के इस मंच से आपने समाज एवं मानवीय समस्याओं पर बोलना आरम्भ कर दिया था। सभा द्वारा आयोजित वार्षिक एवं अन्य आयोजन पर आपके विचारों को सराहना मिली। किशोर अवस्था के अभ्यास ने आपको सफल वक्ता बनने में पूर्णतया योगदान दिया।

लाहौर में शिक्षा डी ए, वी स्कूल व कालेज में सम्पन्न हुई। इस अवधि में रहने की व्यवस्था स्कूल एवं कालेज के छात्रावास में की गयी। समाज की दैनिक दिनचर्या का अभ्यास मनोयोग से चलता रहा। छात्रावास के प्रत्येक विद्यार्थी को लाहौर में अनारकली आर्य समाज में हर रविवार को आवश्यक रूप से जाना होता था। रविवार की साप्ताहिक बैठक में आर्य समाज के विभिन्न मनीषी सन्त एवं कार्यकर्ताओं को प्रवचन के आमन्त्रित किया जाता था। मनीषियों एवं सन्तों के प्रवचनों ने आपकी विचारधारा को विशेष रूप से प्रभावित किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद आपको महात्मा हंसराज जी के उपदेशों ने अत्यधिक प्रभावित किया। आप अपने आपको धन्य मानते हैं कि उन्हें महात्मा हंसराज जी की सेवा का अवसर मिला। पढ़ाई, सेवा के साथ आपने महात्मा हंसराज एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन-चरित्र लिखा। यह अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया गया था।

आर्य समाज की सेवा में सदैव ही तत्पर रहे सन् 1933 में ही समाज की युवा शाखा "आर्य वीर दल" जेहलम के सदस्य बन गए। आपके सक्रिय योगदान के कारण इसी वर्ष आपको दल का पदाधिकारी चुन लिया गया। सन् 1934-35 में आर्य समाज कुचबीबाद के महामन्त्री बनाये गए। आपके इस कार्यकाल में समाज के लिए एकत्रित किया गया चन्दा एक रिकार्ड है, क्योंकि इतनी बड़ी राशि संचय इससे पहले कभी नहीं हुआ था और न ही उसके बाद कोई एकत्रित कर सका।

1938 में आपकी शादी दीनानगर जिला गुरदासपुर के पुरी घराने में सम्पन्न हुयी। पत्नी श्रीमती कान्तारानी धर्मनिष्ठ कर्तव्यपरायण समाज के प्रति पूर्ण आस्था रखने वाली संगीनी बनी। आपका सहयोग सदैव ही मरवाह जी को प्रोत्साहित करता रहा

सफलता सदैव छाये की तरह आपके साथ रही। आपकी योग्यता के अनुरूप सन् 1939 में आपको जिला परिषद् के विधि सलाहकार के पद पर नियुक्त किया गया। जिला परिषद् का अध्यक्ष डिप्टी कमिश्नर (उप-आयुक्त) हुआ करता था। जिला परिषद् के सभी प्रकरण आपके द्वारा ही न्यायलय में प्रस्तुत किये जाते थे। आपकी सूझ-बूझ एवं प्रतिभा के कारण न्यायपालिका क्षेत्र में आपको गौरवमय सम्मान प्राप्त था। इस पद पर विभाजन के समय तक कार्य करते रहे।

आप समाज हित में अपने प्रभाव का उपयोग करने में हिचकिचाये नहीं। प्रसंगवश मास्टर मेला राम वर्क, जो आजकल करनाल में है, से सम्बन्धित घटना का उल्लेख करना उपर्युक्त होगा। मास्टर मेलाराम वर्क ने जेहलम आर्य कन्या पाठशाला प्रारम्भ की। पाठशाला आने-जाने वाली लड़कियों के साथ मुसलमान युवकों ने छेड़खानी कर परेशान किया। मास्टर मेलाराम जो पाठशाला के प्रधान भी थे, के मना करने पर वह उन्हें मारने के लिये आमादा हो गये। आपको जब घटना की जानकारी हुयी तो अपने प्रभाव को उपयोग में लाकर उन मुसलमान युवकों को गिरफ्तार करवा कर एक मुसलमान न्यायाधीश के न्यायालय में पेश कर तीन तीन माह की सजा करवा दी।

मार्च 1947 में तहसील चकवाल, जिला जेहलम में सिखों एवं हिन्दुओं के बहुत से परिवारों को लूट लिया, कुछ कत्ल भी हुए। प्रभावित परिवारों को सेना के संरक्षण में कासा गांव शिविर में रखा, गया व पने सभी परेशान प्रभावित परिवारों की ओर से शिकायत मुकद्दमे शुरू किये। परिणामतः लगभग 2000 मुसलमानों को गिरफ्तार किया गया। लेकिन विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया।

विभाजन के समय भारत आने वाले सिख एवं हिन्दू परिवारों की सहायता के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। यहां तक कि आपने परिवार को भी अकेला भेज दिया। मार-काट एवं लूटपाट की विपरीत परिस्थितियों में धर्म पत्नी श्रीमती कान्ता रानी तीन वर्षीय पुत्री सविता एवं पुत्र अशोक के साथ भारत पहुंची। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज और राजनीति—2

आर्य समाज राजनीति मे है भी और नही भी है। हमारे नेता कहते हैं कि आर्य समाज का राजनीति से कोई सम्बन्ध नही। परन्तु समय-समय पर वह राजनैतिक समस्याओ के विषय मे अपने वक्तव्य देते रहते हैं जब चुनाव होते हैं तो कभी किसी राजनैतिक दल के पक्ष मे तो कभी किसी राजनैतिक दल के पक्ष मे वक्तव्य दे देते हैं। इसका एक परिणाम यह हो रहा है कि अब आर्य समाज का कोई महत्व नही रहा हमारे नेता अपनी महत्वाकाक्षा की पूर्ति के लिए कई प्रकार के पैतरे बदलते रहते हैं जिसका यह परिणाम है कि आर्य समाज पर अब कोई विश्वास नहीं करता और तो और आर्य समाजी भी अब अपने नेताओ पर विश्वास नही करते।

13, 14 जुलाई 1986 को दिल्ली मे पजाब की समस्या पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने एक सम्मेलन का आयोजन किया। सारे देश के आर्य समाजी उसमे निमन्त्रित किए गए। पहले दिन वह सम्मेलन दीवान हाल मे हुआ दूसरे दिन सप्रु हाउस मे हुआ। सैकडो की सख्या मे आर्य समाजी वहा इकट्ठे हुए। बडे धुआधार भाषण दिए गए और यह कहा गया कि जब आर्य समाज एक बार किसी क्षेत्र मे उतर पडता है तो वह अपना पग उस समय तक वापिस नही लेता जब तक कि वह सफल नही हो जाता। उस सम्मेलन मे भारत सरकार को यह चेतावनी दी गई थी कि यदि उसने 15 अगस्त 1986 तक पजाब मे राष्ट्रपति राज लागू न किया और पाकिस्तान से लगती सीमा पर सुरक्षा पट्टी न बनाई गई तो आर्य समाज सत्याग्रह करेगा जो भाषण दिए गए उनमे कहा गया कि लाखो आर्य समाजी जेलें भर देंगे। हम भी इस आशा के साथ वहा से वापिस आए कि अब कुछ न कुछ अवश्य होगा। लेकिन किसी ने कुछ नही किया। पजाब मे राष्ट्रपति राज लागू किया गया तो आर्य समाज की चुनौती के कारण नही, परन्तु हरियाणा मे होने वाले चुनाव के कारण। आर्य समाज ने सरकार को चुनौती 13, 14 जुलाई 1986 को दी थी। पजाब मे राष्ट्रपति राज जून 1987 मे लागू किया और इसलिए लागू किया गया कि हरियाणा मे रहने वाले पजाबी पूछ रहे थे कि सरकार क्या कर रही है। काग्रेस को उनकी वोटो की आवश्यकता थी इसलिए राष्ट्रपति राज लागू कर दिया परन्तु जो चेतावनी आर्य समाज ने 13,14जुलाई1986को भारत सरकार को दी थी उस पर मिट्टी डाल दी गई।

यह क्यो हुआ केवल इसलिए कि आर्य समाज का नेतृत्व जिनके हाथो मे है वह यह फैसला नही कर सकते कि आर्य समाज ने राजनीति मे कहा तक पदार्पण करना है। हमारे नेता जब किसी समस्या पर विचार करते हैं तो उसके विषय मे निर्णय लेने लगते हैं तो उनकी एक आख जनता की तरफ रहती है दूसरी प्रधानमन्त्री की तरफ। जब जनता कहती है कुछ करो तो वह एक सम्मेलन करके सरकार को एक चेतावनी दे देते हैं लेकिन जब दूसरी आख प्रधानमन्त्री की तरफ देखती है तो वह कह देते हैं कि ऐसी गलती न करना, तो फिर आर्य सम्मेलन के सब निर्णय धरे के धरे रह जाते हैं। हम आज किस निम्न स्तर पर आ गए हैं इसका एक और उदाहरण कुछ वर्ष पहले हमे मिला था। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने देश मे गऊ हत्या को बन्द कराने के लिए आमरण अनशन करने की घोषणा की ऐसा करते समय उन्होने सार्वदेशिक सभा से नही पूछा था। श्रीमती इन्दिरा गान्धी उन दिनो देश की प्रधानमन्त्री थी जब उनकी तरफ देखा गया तो उन्होने कहा कि इस विषय मे सरकार कुछ भी नही करेगी। इसलिए अनशन रखने की कोई आवश्यकता नही। इस पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने श्री विनोबा जी से पूछा कि वह क्या करें, वह भी सरकार के विरुद्ध कुछ करना नही चाहते थे। उन्होने सार्वदेशिक सभा के प्रधान से कह दिया कि अनशन मत करो उन्होंने घोषणा कर दी कि श्री विनोबा जी के कहने पर अनशन का विचार छोड दिया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने ना तो घोषणा करने से पहले सार्वदेशिक सभा से पूछा और न अपने विचार को स्थगित करते समय पूछा। हमारे देशवासियो के सामने यह बात आई कि आर्य समाज का सबसे बडा नेता गौ हत्या को बन्द करने के लिए अनशन करने जा रहा है और फिर कुछ समय के पश्चात् यह प्रकाशित हो गया कि विचार स्थगित कर दिया गया। कोई बताए कि इसमे आर्य समाज का क्या रह गया ?

यह सब केवल इस लिए हो रहा है कि हमारे नेता न तो स्वय किसी निर्णय पर पहुच सकते हैं न आर्य जनता को विश्वास में लेकर कोई फैसला करते हैं कि राजनीति मे सक्रिय भाग लेना है या नही। यदि नही लेना तो बडे-2 नेताओ को ब्यानबाजी बन्द कर देनी चाहिए,यदि लेना है तो खुल कर भाग लेना चाहिए और आर्य समाज को अपनी एक राजनैतिक पार्टी बनानी चाहिए। इस समय हम न इधर के हैं न उधर के। दिल्ली मे जो पिछला चुनाव हुआ था उसमें भारतीय जनता पार्टी का समर्थन भी कर दिया गया, और काग्रेस का समर्थन भी कर दिया गया और काग्रेस के उस प्रत्याशी का समर्थन किया जिसने पजाब मे अकालियो का सबसे अधिक समर्थन किया था। समय-समय पर इस विषय मे जो कुछ किया जाता है वह यदि मैं सब लिखने लगू तो पता चलेगा कि स्थिति कितनी बिगड गई है। मैं इस समय यह नही कह रहा कि आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए या नही, मैं केवल यह कह रहा हू कि हमारे नेता एक ही समय मे दो किस्तियो मे सवार होना छोड दे या तो वह स्पष्ट रूप से राजनीति मे आ जाए या उसे पूर्णतया छोड दें। उनकी इस दोगली नीति का एक परिणाम यह भी हो रहा है कि आर्य समाजी आपस मे बट रहे है, कई और भी धार्मिक सस्थाए है उनके अनुयायियो की सख्या लाखो मे है उनके नेता तटस्थ होकर रहते है। यदि उन्होने अपने अनुयायियो को कोई आदेश देना भी होता है तो वह चुपचाप देते है। ढढोरा नही पीटते। इसलिए आर्य समाज को इस विषय मे कोई न कोई अन्तिम निर्णय अवश्य ले लेना चाहिए नही तो आर्य समाज अपना अस्तित्व खो बैठेगा और उसे कोई भी नही पूछेगा। हम यह न भूलना चाहिए कि देश की राजनीति मे एक परिवर्तन आ रहा है। आधे स अधिक देश काग्रेस के हाथ से निकल चुका है। अभी यह मालूम नही आगे क्या होने वाला है। ऐसी स्थिति म आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी सस्था अपने विषय मे कोई अन्तिम निर्णय न ले सके और उसके नेता कभी एक पार्टी की तरफ झुक जाए और कभी दूसरी पार्टी की तरफ यह स्थिति आर्य समाज जैसी शक्तिशाली और क्रान्तिकारी सस्था के लिए किसी भी तरह ठीक नही। इस लिए इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

मैंने केवल अपने विचार लिखे है यदि आर्य मर्यादा के पाठको मे से कोई इस विषय म अपने विचार हमे भेजेगा तो हम उन्हे भी प्रकाशित करेंगे, क्योकि हम चाहते है कि आर्य जनता इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार दे ताकि उसके आधार पर कोई निर्णय लिया जा सके।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज मोगा का प्रशंसनीय कार्यक्रम

आर्य समाज मोगा ने अपना एक जन कल्याण कार्यक्रम आरम्भ किया है। इसका वास्तविक उद्देश्य यह है कि जो हमारे समाज का पिछडा वर्ग है उनके साथ सम्पर्क करके उनकी समस्याओ का कोई समाधान ढूढा जाए। इससे पहले लुधियाना के आर्य भाईयो ने झोपडी झुग्गियो मे रहने वाले भाईओ के उत्थान के लिए अपना कार्यक्रम प्रारम्भ किया था उनके बच्चो को कपडे दिए गए, उन्हे पढाने का प्रबन्ध किया गया, जिस बस्ती मे वह रहते है वहा एक यज्ञशाला बनाई गई उसका एक परिणाम यह भी हुआ कि वहा रहने वाले बच्चे अब वेद मन्त्र भी बोलते हैं आप उनसे मिले तो वह नमस्ते भी करते है। इस प्रकार उनमे एक नई जागृति आ गई है। यही कुछ अब मोगा मे भी शुरू हो गया है। मोगा के आर्य भाईयो और बहनो मे भी कर्त्तव्य परायणता की भावना किसी से कम नहीं है उन्होने जो जन कल्याण का कार्यक्रम प्रारम्भ किया है वह अत्यन्त सराहनीय है वहा के आर्य जनो मे इस कार्य को करने की क्षमता भी है, साहस भी है और निष्ठा भी। आशा रखनी चाहिए कि वह भी उसी प्रकार से इस कार्य को आगे बढाएगे जिस प्रकार लुधियाना वालो ने आगे बढाया है। लुधियाना और मोगा दोनो ही पजाब की आर्य समाजो का नेतृत्व कर रहे है। यदि दूसरे नगरो मे भी जन-कल्याण का इसी प्रकार का कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाए तो उससे न केवल जनता को ही लाभ पहुच सकता है आर्य समाज का प्रचार भी बहुत हो सकता है मैं इस कार्यक्रम के लिए मोगा के आर्य भाईयो और बहनो को बधाई देता हू।

—वीरेन्द्र

आवश्यक सूचना

सभा का वार्षिक अधिवेशन 26 जुलाई के स्थान पर अब 4 अक्तूबर 1987 को होगा।

—सभा महामन्त्री

आर्य समाज और राष्ट्रभाषा समस्या

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
एफ-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

स्वामी दयानन्द ने अपनी दूरदर्शिता तथा भविष्य वेधिनी दृष्टि से विगत शताब्दी में ही यह अनुभव कर लिया था कि सम्पूर्ण भारत में सामान्य लोक व्यवहार तथा जन साधारण के वैचारिक आदान प्रदान का यदि कोई एक माध्यम हो सकता है तो वह हिन्दी भाषा ही है। उन्होंने स्वयं इसी भाषा को अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया तथा अपने अधिकांश ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे। कलकत्ता में उन्होंने ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द्र सेन ने हिन्दी भाषा में वक्तव्य एवं उपदेश देने की प्रेरणा दी और सेन महाशय के इस सत्परामर्श को स्वीकार कर स्वामी जी ने अवशिष्ट जीवन में वाचिक व्यवहार में भी हिन्दी का ही प्रयोग किया। राष्ट्रभाषा आन्दोलन के इतिहासकार और जानकार आज इस तथ्य को स्वीकार कर चुके हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित देखने के इच्छुक महापुरुषों में दयानन्द सरस्वती अन्यतम थे।

स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही अंग्रेजी शासन ने मिस्टर हण्टर की अध्यक्षता में एक शिक्षा आयोग की स्थापना की। इस आयोग के समक्ष विचारणीय विषयों में शिक्षा के माध्यम पर का प्रश्न भी था। उस समय स्वामी दयानन्द ने भारत की विभिन्न आर्य समाजों को निर्देश दिया कि वे हण्टर आयोग के समक्ष अपने मांग पत्र प्रस्तुत कर सरकार को बतायें कि भारत में शिक्षा के माध्यम तथा सरकारी कचहरियों में काम काज के रूप में हिन्दी को प्रयोग में लाने की कितनी आवश्यकता है। स्वामी जी के आदेशों के अनुसार विभिन्न आर्य समाजों ने हण्टर कमीशन को अपने मांग पत्र प्रस्तुत करते हुए शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया। पंजाब के आर्य समाजियों का एक शिष्टमण्डल हण्टर साहब से मिला और उनसे हिन्दी को उसका समुचित स्थान दिए जाने के लिए आग्रह किया। परोपकारिणी सभा के प्रथम उप-प्रधान रायबहादुर मनराज ने अपनी आत्म कथा में स्वीकार किया है कि उन्होंने स्वयं हण्टर कमीशन के समक्ष गवाही दी थी तथा पंजाब में उर्दू के स्थान पर हिन्दी का प्रचलन करने का समर्थन किया था। स्वयं राय बहादुर की शिक्षा उर्दू और अंग्रेजी की ही हुई थी। किन्तु आर्य समाज के कारण हो वे हिन्दी के भक्त बने।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को समुचित प्रतिष्ठा दिलाने में आर्य समाज का संस्थागत और उसके सदस्यों का जो वैयक्तिक योगदान रहा है, उसका समग्र विवेचन तो एक पृथक् ग्रन्थ का ही विषय है, किन्तु यहां यही बताना अभीष्ट है कि आर्य समाज के लेखकों ने भी समय-समय पर लेखनी चलाई है तथा हिन्दी के समर्थन में उचित वातावरण बनाने का प्रयास किया है। आर्य समाजी लेखकों द्वारा राष्ट्रभाषा समस्या पर लिखे गये साहित्य की चर्चा करना आवश्यक है। 1882 ई लाहौर के लाला जीवनदास ने उर्दू में एक पुस्तक लिखी जिस का शीर्षक था "हमारी देसी जुबान" लेखक ने इसमें हिन्दी को कौमी जबान के रूप में स्वीकार करने की पुरजोर हिमायत की है। उसी युग के लाला द्वारकादास आर्य समाज के धुरीण नेता तथा गम्भीर विचारक थे। उन्होंने हिन्दी वर्सस उर्दू लिख कर इन दोनों भाषाओं के प्रयोग एवं प्रचार के औचित्यानौचित्य की तर्कपूर्ण समीक्षा की। उस समय पंजाब में सर्वत्र उर्दू का ही प्रचलन था, किन्तु आर्य समाज के द्वारा हिन्दी के पक्ष में प्रबल जनमत तैयार किया जा रहा था। उर्दू के अच्छे-अच्छे जानकार भी हिन्दी को अपने धर्म और संस्कृति की भाषा मानकर उसका समर्थन एवं प्रचार करते थे।

इसी युग में काशीनाथ वर्मा लिखित एक पम्फ्लेट मातृभाषा की उन्नति किस विधि करना योग्य है? का भी पता चलता है। यह बनारस से छपी थी। आर्य समाज की हिन्दी सेवाओं का सम्मान करने की दृष्टि से ही गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य महात्मा मुन्शीराम को हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया। 1970 वि में सम्पन्न हुए इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए महात्मा जी ने भाषण दिया था वह मुद्रित रूप में उपलब्ध है। इसमें अधिवेशन के अध्यक्ष ने राष्ट्रभाषा की समस्या पर व्यापक सन्दर्भों में विचार किया है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दी को अपनाने पर बल दिया है। यह व्याख्यान मातृभाषा का उद्धार शीर्ष से 1916 ई. में छपा था। हिन्दी तथा उर्दू के प्रश्न पर आर्य समाज लखनऊ के सभासद प. बलभद्र मिश्र ने भाषा दीपिका पुस्तक लिखी जो 1883 ई. में प्रकाशित हुई थी।

गुरुकुल कांगड़ी के तेजस्वी स्नातक तथा अपने युग के अप्रतिम वक्ता प. चन्द्र गुप्त वेदालंकार ने राष्ट्रभाषा क्या हो? शीर्षक पुस्तक में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान दिए जाने का प्रबल समर्थन किया था। इसी गुरुकुल के एक अन्य विद्वान् स्नातक प. धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि" शीर्षक एक पुस्तक लिखकर राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी तथा राष्ट्रलिपि के रूप में नागरी को अपनाये जाने पर बल दिया। 1948 ई में प्रकाशित इस पुस्तक में विभिन्न भारतीय भाषाओं से हिन्दी की तुलना कर लेखक ने यह सिद्ध किया था कि अधिकांश भारतीय भाषायें भी हिन्दी की ही भांति संस्कृत निष्ठ हैं और नवीन शब्द निर्माण के लिए भी वे संस्कृत से ही सहायता लेती हैं। अत: राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करना औचित्य पूर्ण ही है। सार्वदेशिक सभा ने इस पुस्तक के दो संस्करण (1948 तथा 1965) प्रकाशित किये। वैदिक संस्थान बालावाली (जिला बिजनौर) से "हमारी राष्ट्रभाषा और उसके कुछ महत्वपूर्ण पहलू" शीर्षक एक निबन्ध संग्रह 1968 ई. में प्रकाशित हुआ। जैसा कि नाम से ही विदित होता है, इन निबन्ध लेखकों ने हिन्दी भाषा तथा उसकी समस्याओं पर अनेक पहलुओं से विचार किया है। पिण्डीदास ज्ञानी लिखित "हमारा मातृभाषा हिन्दी और आगामी जनगणना, शीर्षक पुस्तक 1971 में सम्पन्न हुई जनगणना को समक्ष रखकर लिखी गई थी। ज्ञानी जी के विचारानुसार पंजाब के हिन्दुओं को जनगणना में अपनी मातृभाषा हिन्दी ही लिखानी चाहिए।

पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन

देश विभाजन के पश्चात् आर्य समाज को विभाजित पंजाब में हिन्दी की रक्षा के लिए 1956-57 में एक विराट् आन्दोलन का संचालन करना पड़ा। उस समय तक पंजाब का एक और विभाजन (हरियाणा का निर्माण) नहीं हुआ था। यहां के राजनैतिक नेताओं ने परस्पर की सहमति से भाषा के विषय में एक क्षेत्रीय फार्मूले को स्वीकार किया। किन्तु इस योजना के अधीन जहां पंजाबी क्षेत्रों में रहने वाले हिन्दुओं को अपने बच्चों की शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को अपनाने की छूट नहीं थी, वहां हिन्दी भाषी क्षेत्रों में एक स्तर तक पंजाबी पढ़ाना अनिवार्य कर दिया था। आर्य समाज के बहुत प्रयत्न करने पर भी जब पंजाब राज्य में राष्ट्रभाषा को उसका समुचित स्थान मिलना कठिन हो गया तो आर्य समाज ने भाषा स्वातन्त्र्य समिति का गठन किया तथा भाषा के प्रश्न पर जोर जबरदस्ती किये जाने का विरोध किया। उस समय पंजाब में स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जैसे निर्विवाद आर्य नेता विद्यमान थे। हिन्दी रक्षा सत्याग्रह कई महीनों तक चला और हजारों आर्य सत्याग्रही मां. भाषा और राष्ट्र की वाणी के गौरव की रक्षा के लिए कारागार गए। पंजाब की इसी उलझी हुई भाषा समस्या को लेकर भी उस समय अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गई।

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ने 'पंजाब की भाषा' शीर्षक लिखी। ओमप्रकाश त्यागी तथा घनश्याम सिंह गुप्त ने पंजाब का हिन्दी आन्दोलन लिखकर आर्य समाज की भाषा विषयक स्थिति को स्पष्ट किया। गुप्त जी ने इसी समस्या पर अपनी एक—अंग्रेजी पुस्तक में भी प्रकाश डाला। श्री भगवत शरण लिखित पंजाब का हिन्दी सत्याग्रह तथा गुजराती लेखक श्रीकान्त भगत की कृत पंजाब हिन्दी सत्याग्रह (गुजराती पुस्तक) इस सत्याग्रह के इतिहास को प्रस्तुत करती है। परन्तु इस सत्याग्रह से बहुत समय पूर्व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने पंजाब की भाषा लिपि शीर्षक पुस्तक लिख कर यह स्पष्ट कर दिया था कि देश के इस सीमान्त प्रान्त में हिन्दी और नागरी को सदा से ही समुचित स्थान मिलता रहा है।

—●—

आर्य समाज चौक पटियाला का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज चौक पटियाला की साधारण सभा की एक बैठक गत दिनों आर्य समाज मन्दिर पटियाला में हुई। इसमें निम्नलिखित महानुभावों को पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया।

प्रधान—श्री वेद प्रकाश महता, उप-प्रधान—श्री बलभद्र मल्होत्रा, श्री आर. के. दीवान, महामन्त्री—श्री ईश्वर दास, उप-मन्त्री—श्री कस्तूरी लाल आनन्द, श्रीमती फूल शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र खन्ना।

— वेद प्रकाश महता
प्रधान

आर्य समाज की भावी रूपरेखा—२

बुद्धिजीवी सम्मेलन की आवश्यकता

लेखक—डा. प्रशान्त जी वेदालंकार 7/2 रूपनगर दिल्ली

(गतांक से आगे)

यद्यपि केवल संस्कृत, हिन्दी अथवा धर्म शिक्षा के अध्ययन-अध्यापन से लोग नैतिक अथवा धार्मिक नहीं हो जाएंगे तो भी इनकी शिक्षा उन्हें भारतीय आदर्शों की ओर उन्मुख अवश्य करेगी। यह सच है कि आज वैदिक विचारधारा से युक्त अध्यापक व अन्य कर्मचारियों का मिलना कठिन है, पर नियुक्त अध्यापकों व कर्मचारियों को अपने किसी प्रशिक्षण विद्यालय में अपने आदर्शों की जानकारी क्यों नहीं दी जा सकती? प्रत्येक वर्ष अवकाश के दिनों में उनके लिए अभ्यास वर्ग भी अनिवार्य किये जा सकते हैं।

(घ) वैदिक शिक्षा-पद्धति के अनुसार गुरुकुलों एवं केन्द्रों के संचालक, प्राचार्य, आचार्य, अध्यापक एवं सभी कर्मचारी वानप्रस्थी होने चाहिए। क्या हमारे पास इतने वानप्रस्थी हैं कि हम उनके द्वारा शिक्षा व्यवस्था को नियंत्रित कर लें या हमारे पास कोई ऐसी योजना है कि जितने भी वानप्रस्थी उपलब्ध हो उनके माध्यम से वनवासियों, गिरिजन एवं उपेक्षित अथवा सर्वथा अशिक्षित वर्ग में हम शिक्षा का आन्दोलन चला सकें? सरकार की सहायता की बिना परवाह किये हुए इन शिक्षा संस्थाओं में हम अपने सिद्धान्तों के अनुसार ही शिक्षा दें। वस्तुत: आज प्रश्न नये गुरुकुलों को स्थापित करने का भी है और पुराने गुरुकुलों में छात्रों की समस्या का समाधान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का भी है।

मैं शिक्षा के प्रश्न को यहां समाप्त करता हूं। बुद्धिजीवी सम्मेलन पर इस पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। हमें यह स्मरण रखना होगा कि आर्य समाज की जीवनी शक्ति अपनी शिक्षा संस्थानों में निकले स्नातकों से ही प्राप्त होती रही है। यदि आज भी आर्य समाज में नये प्राण फूकने हैं तो हमें सर्वप्रथम अपनी शिक्षा संस्थाओं पर ही ध्यान देना होगा।

दूसरा विचारणीय विषय आर्य समाज और राष्ट्रीय समस्याएं हैं। इस विषय पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

(1) डा एस वी काले (वैजनाथ) ने आर्य समाज को अनेक राष्ट्रीय आन्दोलन छेड़ने पर बल दिया है। वे लिखते हैं—(क) दहेज, जातीयता, अज्ञानवाद, शोषवाद, शिक्षा प्रणाली आदि के बारे में भी आन्दोलन होना चाहिए।

(2) श्री प्रदीप आर्य (जालौर) के मत में आज की सामाजिक बुराईयों व विकृतियों की ओर आर्य समाज का ध्यान व्यावहारिकता में नही है। अस्पृश्यता, गोसंवर्धन, स्वदेशी आन्दोलन, मद्यनिषेध या नशा निषेध जैसे किसी भी विषय को ले लें कहीं भी आर्य समाज कोई उल्लेखनीय सक्रियता लिए हुए नहीं है।

(3) श्री मनोहर लाल (दिल्ली) का मत है यदि निम्नलिखित प्रश्न उठाकर आर्य समाज व्यापक आन्दोलन चलाये तो उससे राष्ट्र का बहुत बडा हित हो सकता है—(क) प्रत्येक मानव चाहे वह किसी भी जाति अथवा सम्प्रदाय का हो एक पत्नी व्रत रखे। (ख) मनुष्य मृतक का दाह संस्कार करे तथा पार्थिव शरीर को न पृथिवी के अन्दर दबाए और न नदियों में प्रवाहित करें। (ग) आर्य भाषा एवं देवनागरी लिपि के माध्यम से हम प्रत्येक कार्य का क्रियान्वयन करें तथा उसके प्रचार एवं प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील रहें। (घ) दूध देने वाले पशुओं की न तो हिंसा करें और न हिंसा करने दें।

(४) श्री ब्रजेश (नखत्राणा-कच्छ) एक उत्साही युवक है। उन्होंने अपने मन्तव्य को अत्यन्त सुदृढता से व्यक्त किया है। मुझे धर्म और भगवान में पूर्ण विश्वास है, मगर मेरे लिए धर्म और भगवान राष्ट्र (भारत) के बाद आता है। अगर भारत बचेगा तो यह धर्म और संस्कृति बचेगी।

आज भारत में कई आर्य पितृजन हैं मगर सब अपने ही घोंसले में खेल रहे हैं। किसी में भी दयानन्द की तरह कार्य करने की हिम्मत कहां है? हम मरे चाहे जिए, मगर गौ-हत्या नहीं होने देंगे। राष्ट्र को सम्पूर्ण हिन्दू-राज्य बनाएंगे आदि।

(5) श्री डी एन. प्रशान्त, चर्नलिस्ट (आसाम) ने जनहित कार्य के साथ आर्य समाज को सक्रिय करने का सुझाव दिया है।

(6) डा. हरिश्चन्द्र ने हिन्दू धर्म को अनेक बुराइयों से ग्रसित बताया है और उसे वैदिक धर्म के मूल तत्वों से अनुप्राणित करने के लिए कहा है। सचमुच यह चिन्ता का विषय है कि हम न हिन्दू धर्म के दोषों को दूर करने के लिए कोई क्रान्ति कर सके हैं और न हमारा कार्य ही हिन्दू धर्म के प्रत्येक वर्ग अथवा सम्प्रदाय में है।

(7) श्री के बी लाल (देहरादून) का कहना है कि राष्ट्र में सब नागरिकों के लिए एक कानून होना चाहिए। इस समय सबसे बडा खतरा क्षेत्रवाद से है आगे चलकर यही विभाजन की पृष्ठभूमि बनेगी। कतिपय नेता कुर्सी के लोभ में समझ नहीं रहे, इन तत्वों को सख्ती से दबाओ।

(8) सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित समिति ने संविधान के संशोधन में नये उपनियम के बाद निम्नलिखित जोड़ने का सुझाव दिया है—आर्य समाज का कोई सदस्य या अधिकारी अपने नाम के आगे कोई जाति सूचक उपनाम नहीं लिखेगा और साधारणत 'आर्य उपनाम' का ही प्रयोग करेगा। पर जब तक आर्य समाज के नेताओं में बावले, मरवाह, शर्मा, वर्मन, कपूर, सहगल, गुप्ता और अग्रवाल दिखलायी देते रहेंगे तब तक हम जातीयता विरोधी अभियान नहीं चला पाएंगे। क्या सार्वदेशिक सभा इन सबको यह निर्देश दे सकती है कि ये अपने जातिवाचक उपनाम छोडकर आर्य शब्द का प्रयोग करें?

इस समिति ने पदाधिकारियों के लिये अन्तर्जातीय विवाह का भी सुझाव दिया है। यदि यह सुझाव अनिवार्य मान लिया जाए तो वर्तमान अधिकांश पदाधिकारियों को तत्काल त्यागपत्र देना होगा। अत केवल यही कहना चाहिए कि आर्य समाज अन्तर्जातीय विवाह को प्रश्रय देगा।

(9) 1 और 8 मार्च को सार्वदेशिक साप्ताहिक ने मेरा लेख 'आर्य समाज की भावी रूपरेखा' प्रकाशित किया और उसके बाद उसने अपने अनेक सम्पादकीयों में इसी विषय पर गम्भीरता से विचार किया। इस दृष्टि से हम उनके आभारी हैं। आर्य समाज स्थापना दिवस (5 अप्रैल) अंक में आर्य समाज का भविष्य शीर्षक से लिखे सम्पादकीय में लिखा है—"आज भी हमारे मार्ग में विदेशीय भावनाएं खडी हैं। उसकी शक्ति अन्दर-अन्दर हमें बिगाड़ने में जो काम कर रही है उस शक्ति का सीधा संघर्ष बाहर व भीतरी शक्तियों से करना ही पड़ेगा। साथ ही राजनीतिक रूप से भटकने से पूर्व हमें सांस्कृतिक दृष्टि से उलझना पड़ेगा। आज अधिकांश शिक्षित जन मानस पश्चिमी आदर्शवाद पर विश्वास करके चल रहे हैं केवल नारा ही हमारा लग रहा है। उसी परिभाषा व सूत्रों में देश की उन्नति करना चाहते है। इस प्रकार साप्ताहिक सार्वदेशिक पत्र के सम्पादक महोदय के अनुसार पश्चिमी प्रभाव ही राष्ट्रीय समस्याओं का मूल है। हमें उससे बचना है।

आर्य समाज का राष्ट्रीय दृष्टिकोण काफी साफ है। आवश्यकता केवल इस दृष्टिकोण के अनुसार कार्य करने की है। हमने देख लिया है कि केवल प्रस्तावों से कोई हमारी बात मानता नहीं है।

सरकार से अपनी बात मनवाने के दो उपाय हैं—(1) आन्दोलनात्मक (2) रचनात्मक। सम्भव ये दोनों ही शक्तियां हमारी शिथिल हो गयी हैं। इस शिथिलता के त्याग के लिए हमें अपना मनोबल ऊंचा करना होगा। यदि हमारी आत्मिक शक्ति प्रबल हो जाती तो राष्ट्र के तथा कथित कर्णधारों को हमारे आगे झुकना पड़ेगा। तब हमें अपनी बात के लिए सरकार के आगे गिडगिडाने की आवश्यकता नहीं होगी।

(क्रमश)

प्रथम समुल्लास प्रारम्भ में क्यों

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

सुधीर—गुरु जी ! क्या हम कमरे में आ सकते हैं ?

गुरुदेव—हां अवश्य आइये ! अभिवादन के पश्चात् चारों यथा स्थान बैठ जाते है।

सुधीर—गुरु जी ! अजय, विजय और अभय मेरे पुराने सहपाठी हैं और बी. ए. के अन्तिम वर्ष की इन्होंने परीक्षा दी हुई है। इस बार जब मैं अवकाश में घर गया था, तो इन साथियों से जहां और बहुत सारी बातें हुई थी, वहा इन्होने बताया कि अपने एक प्राध्यापक की प्रेरणा पर हमने सत्यार्थ प्रकाश पढना शुरु किया हुआ है। एक दिन बातचीत मे इन्होने कहा—देखो ! सुधीर तुम संस्कृत पढते हो। अत: सत्यार्थ प्रकाश का यह प्रथम समुल्लास हमे समझा दो, क्योकि और समुल्लास तो कुछ-2 हमें समझ आ गए हैं और बहुत सारी उपयोगी बातें हमें पता चली हैं। पर दो बार पढने पर भी प्रथम समुल्लास समझ नही आया। पता नही ऋषि दयानन्द जी ने इस को शुरु में क्यों रख दिया है ?

सुधीर—गुरु जी उस दिन मैंने अपनी जान बचाने के लिए इनसे यही कहा. आज सत्यार्थ प्रकाश मुझे दे दो, मैं सारा प्रकरण सोच-विचार कर कल तुम्हें बता दूंगा। मैंने अपने सस्कृत पढ़ेपन की लाज को बचाने के लिए बड़े ध्यान से इस को दो बार पढ़ा। जो लिखा था, वह निरुक्त, व्याकरण शास्त्र पढा होने के कारण समझ में तो आ गया, पर यह पता नही चला, कि इसको शुरु में क्यों रखा है ? तथा इस सारे समुल्लास का क्या अभिप्राय है ?

अगले दिन अपनी जान छुडाने के लिए यही कहा, कि हर पुस्तक के आरम्भ मे मंगलाचरण होता है। इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश मे भी यहां ईश्वर के एक सौ आठ नाम दिए हैं और उनके निरुक्त व्याकरण शास्त्र के आधार पर अर्थ बताए गए हैं। अत: इस को पढ़ने की जरूरत नहीं है, पुस्तक तो दूसरे समुल्लास मे शुरू होती है।

मेरे इतना कहने पर इन साथियो ने इस पर कई प्रश्न कर दिये। अन्त मे मैंने यही कह कर जान छुड़ाई, कि मैं तो इस सम्बन्ध मे कुछ नही जानता, हां अपने पढ़ाई का महत्व दिखाने के लिए हां मैंने पूर्व उत्तर दिया था। इनके प्रश्नों से बचने के लिए मैंने इनको आप का परिचय दिया। इसलिए ये आज मेरे साथ यहां आए हैं। अत: आप इनके प्रश्नों का उत्तर देने की कृपा करें। गुरुदेव ठीक है ! आप पूछिये, जो आप इस विषय मे पूछना चाहते हैं।

अजय—हमने सत्यार्थ प्रकाश को सामान्य रूप से अपनी योग्यता के अनुसार पढ़ा है। अत: पहले सुधीर ने हमारी जो जिज्ञासा बताई है। उसी पर प्रकाश डालने की कृपा करें।

गुरुदेव—तुमने सत्यार्थ प्रकाश को पढते हुए अनुभव किया होगा, कि इसमें स्थान-स्थान पर वेदों का वर्णन है और उनका बहुत अधिक महत्व बताया गया है। अत: यह प्रथम समुल्लास 'वेद की कुञ्जी' है। इसीलिए इसको सबसे पहले रखा है।

विजय—हमें तो अभी कुछ समझ नही आया।

गुरुदेव—किसी बात को गहराई से समझने के लिए विशेष ध्यान देने जरूरत होती है। अत: देखो ! यह तो सब मानते है, कि ससार के पुस्तकालय की वेद ही सब से पुरानी पुस्तक है और वेद ही भारतीयों के साहित्य, धर्म आदि के मूल-भूत आधार हैं, क्योकि सारा संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओ का साहित्य वेदो का बडी श्रद्धा से स्मरण करता है। धर्म के कार्य यज्ञ,व्रत,पूजा आदि में वेद के मन्त्र बर्ते जाते है।

अभय—यह तो स्पष्ट है कि वेद भारतीयता के मूल आधार हैं, और सत्यार्थ प्रकाश मे वेदो की बहुत प्रशंसा आई है। पर प्रथम समुल्लास वेद की कुञ्जी कैसे है ?

गुरुदेव—वेदो मे अग्नि, इन्द्र, सूर्य, विष्णु आदि शब्दो को आधार बनाकर वर्णन किया गया है। अत एव इनको देवता भी कहते है।

अजय—हां, हमने इतिहास में भी पढ़ा है, कि वेद आर्यों के धर्म ग्रन्थ हैं, और इनमें अग्नि आदि देवों की स्तुति, प्रार्थना है।।

गुरुदेव-अब यही सोचने वाली बात है, कि अग्नि आदि शब्दों में किसका वर्णन है ? क्या ये अग्नि आदि शब्द सभी मन्त्रों मे परमात्मा के लिए आए हैं ? या ये सारे अलग-अलग देवता हैं या अग्नि, सूर्य, वायु आदि प्राकृतिक पदार्थों के लिये आए हैं ?

अजय—हां, प्रथम समुल्लास में ये सारे परमेश्वर के नामों में आए हैं। अत: ये क्या केवल परमात्मा के लिए ही वेदों में आए हैं ?

गुरुदेव—प्रथम समुल्लास में बड़े सरल शब्दों में बताया गया है, कि वेद मन्त्रों में जहां-जहां संसार के बनाने, चलाने वाले के रूप में अग्नि, इन्द्र आदि शब्द आए हैं और सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वरक्षक आदि गुणों की बात है तथा भक्ति, उपासना का प्रकरण है, वहां-वहां अग्नि आदि शब्द परमात्मा के लिए आये हैं।

पर जहां मन्त्रों में किसी के पैदा होने आदि की बात है। वहां अग्नि, विराट् आदि प्राकृतिक तत्वों के वाचक हैं।

जिन मन्त्रों में सुख, दुख, इच्छा,द्वेष और प्राप्त करने और कुछ मेहनत करने की बात है, वहां-वहां जीव के लिए ही इन्द्र आदि शब्द आए हैं ,

विजय—यह बात तो बहुत कुछ समझ में आ रही है, पर प्रथम समुल्लास में ईश्वर के एक सौ आठ नामों का विवेचन क्यों किया है ?

गुरुदेव—जब यह मूल सिद्धान्त बता दिया, कि अग्नि आदि प्रकरण, गुण, क्रिया के आधार पर ईश्वर या प्रकृति या जीव के लिए आते हैं, तब वहां उदाहरण के रूप में यहां यह भी समझाया है, कि विष्णु, वरुण, आदि जहां-जहां ईश्वर के वाचक हैं, वहां-वहां इन का ईश्वर के किस गुण या कर्म को बताने वाला अर्थ इस प्रकार से होगा।

अभय—क्या इन्द्र आदि परमेश्वर या देवता को छोड़ कर किसी और अर्थ में भी आते हैं ?

गुरुदेव—हां, आते हैं। तुमने षष्ठ समुल्लास में देखा होगा, कि वहां मनुस्मृति का एक श्लोक दिया है। जिस में इन्द्र आदि अनेक शब्द हैं। महर्षि ने प्रकरण के अनुसार इन सब का अर्थ राजा—प्रशासक के रूप में दर्शाया है।

इस सारे का सारांश यह है कि वेदों में अग्नि आदि को आधार बना कर वर्णन किया गया है। वहां अग्नि प्रकरण, विशेषण और क्रिया के अनुसार कभी ईश्वर की ओर संकेत करते हैं और कहीं प्रकृति या जीव की ओर। हां यह बताने के साथ ही प्रथम समुल्लास मे यह भी बताया गया है, कि जहां ये ईश्वर के वाचक हैं, वहा उन का अर्थ इस प्रकार से होगा।

अजय—गुरु जी ! बात स्पष्ट होती हुई प्रतीत होती है, पर यह सब कुछ संक्षिप्त सा ही लगता है। अच्छा हो कुछ विस्तार से बताया जाए।

गुरुदेव—कार्यक्रम के अनुसार आज तो इतना ही समय है। हां, तुम यहीं बैठ कर 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास' की हस्तलिखित प्रति पढ़ लीजिए फिर भी कुछ और पूछना हो, तो कभी फिर आइए।

विजय—गुरु जी ! उस दिन आपके कार्यक्रम की व्यस्तता के कारण आप हमें अधिक समय नहीं दे सके थे। पर संक्षेप से समझाने के साथ आपने हमें जो 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास की हस्तलिखित प्रति पढ़ने के लिए दी। उस को पढ़ कर हमें बहुत ही सन्तोष हुआ। पहले तो हम यही सोचते थे, कि अग्नि, इन्द्र आदि अलग-अलग देवों के नाम ही क्यों न माने जाएं ? ये एक परमेश्वर के स्थान पर अलग-अलग कैसे हो गए ?

अजय—जब आपकी अप्रकाशित पुस्तक में सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास का दो शिष्य और गुरु की पग सेवा वाला दृष्टान्त पढ़ा, तो सारी स्थिति स्पष्ट हो गई। इस हस्तलिखित प्रति के पढ़ने से हमारे मन की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान स्वत: ही हो गया।

अभय—गुरु जी ! इस कृपा के लिए सुधीर के साथ हम आपके बहुत ही धन्यवादी हैं। हां, यह पुस्तक कब प्रकाशित हो रही है।

गुरुदेव—आज से दो वर्ष पूर्व मैं स्वयं भी प्रथम समुल्लास के सम्बन्ध में इतना स्पष्ट नहीं था। हां, विचार जारी था, इसी के परिणामस्वरूप यह पुस्तक चार मास पूर्व लिखी जा सकी है। हां, कब प्रकाशित होगी ? इसका उत्तर तो कोई प्रकाशक या कोई आर्य समाज ही दे सकता है, कि कब कौन आगे आता है।

वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली के वार्षिक चुनाव में श्री भीमसिंह, प्रधान—श्री जगदीश लाल दुग्गल उप-प्रधान, श्री चन्दनसिंह उप-प्रधान, श्री रामेश्वरदास मन्त्री, श्री विमल कान्त शर्मा-उप-मन्त्री श्री महावीर सिंह-उपमन्त्री, श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता कोषाध्यक्ष, तथा श्री वेद प्रकाश पुस्तकालय अध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

—विमलकान्त शर्मा
उपमन्त्री

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

पतिव्रता कमला

लेखक—श्री काशीराम जी चावला द्वारा श्री पथिक छुटमलपुर

अंग्रेजी राज्य की स्थापना पहले पहल बंगाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने की। अपना काम चलाने के लिए उनको कुछ भारतीय पढ़े-लिखे लोगो की आवश्यकता होती थी। उस समय पढ़े-लिखे आदमी बंगाल मे ही अधिक मिलते थे। उनमें एक व्यक्ति ठाकुर देवीसिंह भी था जो मुर्शदाबाद मे माल अफसर लगा हुआ था। वह बड़ा विलासी था। उसने जगन्नाथ नामी एक साधारण जमींदार की पत्नी कमला के सौन्दर्य की कीर्ति सुनी। तब उसने उसे दबोचने का निश्चय किया। जगन्नाथ की ओर कुछ सरकारी लगान बाकी था। देवीसिंह ने उसे बुलवाकर लगान मांगा। उसने कहाकि कुछ समय दिया जाए, किन्तु उसे जेल मे डाल दिया और फिर कमला को बुलवा भेजा और उससे लगान मांगा। वह बोली कि मेरे पास तो कोई आभूषण भी नही है कि जिसे बेचकर मैं अपने पति को छुड़ा लू। आप समय दीजिए और मेरे पति को छोड़ दीजिए, वह कोई काम काज करके पैसे कमा कर लगान दे देगा। मेरे दो छोटे बच्चे भी हैं। हम को रोटी खिलाने वाला मेरा पति ही है। आप हम पर दया कीजिए और मेरे पति को छोड़कर उसे कुछ परिश्रम करने का समय प्रदान कीजिए।

यह सुन कर देवीसिंह बोला कि तुम अपने पति को किसी और ढग से भी छुड़ा सकती हो। वह बोली कि और कोई ढग नही है। हमे कोई महाजन ऋण भी नही देता। फिर देवीसिंह ने कहा कि ढग तो हम बता सकते हैं। इस पर वह बोली कि यदि वह ढग मेरे करने योग्य हुआ तो मैं अवश्य अपने पति देव को छुड़ाऊगी। तब देवी सिंह ने अपनी दुर्भावना प्रकट की। यह सुनते ही कमला की आंखो मे लहू उतर आया और वह बोली अरे पिशाच! तूने तो प्रजा की रक्षा करनी है। तेरी ऐसी नीच प्रवृत्ति है? क्या तुझे मुझ से ऐसी बात कहते लज्जा भी नहीं आयी? तेरे घर भी बेटी होगी। यह सुनकर देवीसिंह की भी आग लग उठी और वह बोला कि तू जानती नहीं कि मैं क्या कर सकता हू? तुम अब जाओ नहीं तो तुम्हारा आदमी यमलोक भेज दिया जायेगा। उन दिनों कम्पनी वाले देशी कर्मचारियों को मनमानी करने देते थे ताकि उनके अपने शासन का दबदबा बैठ जाए, कमला तब उसको फिर दुष्ट और पामर कहती हुई बाहर निकल गयी। देवीसिंह पर एक तो काम देव का भूत सवार था, दूसरे उसका एक कगाल स्त्री ने इतना अपमान उसके दफ्तर वालो के सामने किया। इसलिए उसने कमला के साथ कठोरता पूर्वक अत्याचार करने का विचार बना लिया।

सहले उसने सिपाही भेज कर उस का एक बच्चा मगवाते हुए कहा कि तुम मान जाओ नही तो इस बच्चे का वध किया जाएगा। कमला ने कहला भेजा मैं तुम पर थूकती हू। तब देवीसिंह ने बच्चे का सिर काट कर भेजा और दूसरे बच्चे को मगवाते हुए कहा कि अब भी मान जाओ। तब कमला ने जिस थाली मे सिर लाया गया था एक जूता रख भेजा। इस पर देवी सिंह ने दूसरे बच्चे का भी सिर काट कर भेज दिया और कहा अब भी मान जाओ। इस पर कमला ने अपना थूक भेज दिया। तब देवीसिंह ने उसके पति का भी सिर काट कर भेज दिया। सिर पति का आने पर कमला के लिए उसका ससार ही समाप्त हो गया। तब उसने कहला भेजा कि पति के होते मैं किसी पर-पुरुष के पास नहीं आ सकती थी। अब मैं विधवा हू। अब आ सकती हू। रात को मेरे लिए सुन्दर वस्त्र तैयार रखना और मुझे बुलवा लेना। देवीसिंह की बाछे खिल गयी। उसने वैसा ही किया। कमला वहा पहुच कर स्नान घर मे गई। स्नान करके सुन्दर वस्त्र और भूषण पहनकर जब बाहर निकली तो वह देवलोक की परी दिखती थी। देवीसिंह ने हाथ फैला कर आलिगन करना चाहा। तब कमला ने कटार उस के सीने मे घोप दी। वह धड़ाम से गिर पड़ा। कमला ने फिर कटार इसके सीने से खीच कर उसे चूमा और अपने सीने मे घोप कर गिर पड़ी। दोनो ही प्राणहीन हो गए। वहा पर कमला की समाधी बनी हुई है जिस पर मेला लगता है और पूजा होती है। देवीसिंह की भी एक कब्र बनी हुई है। उस पर हर, कोई थूकता है।

डा. भवानीलाल भारतीय का षष्ठी पूर्ति समारोह

भारतीय नवजागरण मे आर्य समाज तथा उसके सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की भूमिका के अधिकृत व्याख्याकार डा भवानीलाल जी भारतीय का जन्म राजस्थान प्रान्त के अन्तर्गत नागौर जिले के ग्राम परबतसर मे आषाढ कृष्णा 3 स 1985 वि. को हुआ। उनकी उच्चस्तरीय शिक्षा जोधपुर मे हुई। उन्होंने सस्कृत तथा हिन्दी मे एम. ए तथा सस्कृत भाषा और साहित्य को आर्य समाज का योगदान शीर्षक विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय से ही पी एच डी की उपाधि ग्रहण की है।

डा भारतीय को आर्य सामाजिक लेखन क्षेत्र मे अवतीर्ण हुए 36 वर्ष हो चुके हैं। इस बीच उन्होने लगभग 50 छोटे बड़े ग्रन्थो का प्रणयन, सम्पादन, अनुवाद आदि किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उन्होंने नवजागरण के पुरोधा शीर्षक दयानन्द सरस्वती का शोधपूर्ण, बृहद जीवन चरित लिखा जिसे परोपकारिणी सभा अजमेर ने प्रकाशित किया। आर्य समाज के वेदविद विद्वानो, शास्त्रार्थ महारथियो, पत्रकारो तथा लेखका पर उनके अनुसधानपूर्ण ग्रन्थ छप चुके हैं। ... मेघराज पुरस्कार, प गगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार तथा प ... शास्त्री स्मारक पुरस्कार आदि से सम्मानित डा भारतीय आर्य समाज की साहित्यिक तथा अनुसधानात्मक गतिविधियो में विगत तीन दशको मे निरन्तर सम्बद्ध रहे हैं।

वे आर्य समाज की सगठनात्मक गतिविधियो मे भी निरन्तर भाग लेते रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों तक वे अन्तरग सदस्य तथा उपमन्त्री रहे। सम्प्रति आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित सदस्य है। दो दशाब्द से भी अधिक समय तक राजस्थान की कालेज शिक्षा सेवा मे रहने के पश्चात वे विगत छ वर्षों से पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द अनुसन्धान पीठ के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं। अगले वर्ष 1988 के जून मास मे डा भारतीय अपनी आयु के 60 वर्ष पूरे कर रहे हैं इस अवसर पर उनके साहित्यिक क्रियाकलापो तथा उनके आर्य सामाजिक जीवन के अनुभवो को एक स्मारिक के रूप मे प्रकाशित किया जाएगा।

—प्रो धर्मवीर दयानन्द आश्रम अजमेर

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मा चिदन्यद् विशसत। सखायो मा रिषण्यत।

(ऋग्वेद मडल 9, सूक्त 1, मन्त्र 1)

किसी अन्य की पूजा मत करो। हे मित्रो ऐसा पाप मत करो। अर्थात् ईश्वर के स्थान मे दूसरे किसी की पूजा करना महा पाप है इससे बचना चाहिए।

प्रश्न—ईश्वर की पूजा को ठीक विधि क्या है?

उत्तर—ईश्वर के नियमो का चिन्तन करना ही ईश्वर पूजा है। मन मे ईश्वर को ध्यान करना चाहिए। और ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म और स्वभाव बनाने चाहिए। देखो—

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चित.। वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितु परिष्टुति.।

(यजुर्वेद अध्याय 37 2,11 4,5 14)

(विपश्चित विप्रा) मेधावी विद्वान लोग, (बृहत: विप्रस्य) सर्वज्ञ ईश्वर मे, (मन युञ्जते) ध्यान लगाते हैं और, (धियो युञ्जते) अपनी बुद्धियो को तदनुकूल बनाते हैं, (एक. वयुनाविद्) एक सृष्टि के नियमो को जानने वाला विद्वान् (होत्रा विदधे) यज्ञो का विधान सम्पादित करता है, (देवस्य सवितु:) जगत् के प्रेरक ईश्वर की, (परिष्टुति) स्तुति, (इन् मही) निस्सन्देह बहुत बडी है।

अर्थात ईश्वर मे इतने गुण हैं कि विद्वान् मनुष्य सदा उन गुणो का चिन्तन करता रहता है और उन्ही गुणा के अनुकूल आचरण करके अपना और ससार का भला करता है।

गायत्री मन्त्र मे भी यही सदुपदेश है। अर्थात।

तत सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्।

(यजुर्वेद अध्याय 3, मन्त्र 35)

(सवितु:) जगत नियन्ता, (देवस्य) देव के, (वरेण्य) प्राप्त करने योग्य (भर्ग) पाप को नष्ट करने वाले गुण को, (धीमहि) हम धारण करें। (यो) जो, (न:) हमारी, (धिय) बुद्धियो को (प्रचोदयात) प्रेरित करे।

इन मन्त्रो का तात्पर्य यह है कि केवल हाथ जोडने या मन्त्र पढने से ईश्वर की पूजा नही होती। ईश्वर के गुणा का चिन्तन करने, उसकी सृष्टि का गम्भीरता से अवलोकन करन और अपने गुण कर्म और स्वभावा के अनकूल बनाने से ही मनुष्य का कल्याण होता है। गुड गुड कहने से मुह मीठा नही होता, गुड खाने से मीठा होता है। केवल ईश्वर-ईश्वर कहने से ईश्वर-पूजा नही होती, ईश्वर के उपदेशो पर कार्य करने से ईश्वर पूजा होती है।

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार), लुधियाना का वार्षिक चुनाव

16 7-87 वीरवार प्रात 11 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा व अश्विनी कुमार जी, श्री सरदारी लाल जी, श्री ओमप्रकाश पासी जी की देख रेख में आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना का वार्षिक चुनाव 1987 88 के लिए सम्पन्न हुआ। जिसमे सब सम्मति से डा एस बी बागिया को प्रधान चुना गया एवं अधिकारी एवं अन्तरग सदस्य एव प्रतिनिधि चुनने का अधिकार भी सब सम्मति से दिया गया। डा बागिया ने निम्नलिखित अधिकारी एव अन्तरग सभा की घोषणा की।

सरक्षक—श्री राजा राम जी श्री सत्यपाल आनन्द, श्री रामधन आर्य।

उप प्रधान—श्री एच एल सेठी श्री अमरनाथ छिब्बा, श्री यशपाल बागिया श्री ओमप्रकाश शर्मा।

मन्त्री श्री प्रेमपाल मसीन।

उपमन्त्री—श्री अमरनाथ शर्मा, श्री अर्जुन दास जी।

कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश आर्य

उप ,, —श्री भजन लाल सेठी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामनाथ प्रभाकर

उप , —श्री सरदारी लाल सहगल।

स्टोर कीपर श्री विजय कुमार जी

अन्तरग सदस्य—श्री ओमप्रकाश पासी डा रामस्वरूप जी, डा एन डी भाटिया, प्रिंसीपल आर पी टण्डन श्री अमरनाथ शर्मा।

निमन्त्रित सदस्य—श्री वीरेन्द्र जी सैनि, श्री बनारसी दास जी, श्री हाकिम सिंह महेश श्री रामस्वरूप सचदेव, श्री हंसराज आर्य, श्री प्रेम प्रकाश टण्डन।

मन्त्री

आर्य समाज मन्दिर लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी का वार्षिक चुनाव दिनांक 28 6-87 दिन रविवार को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात प्रात साढे 9 बजे हुआ। चुनाव की अध्यक्षता समाज के पूर्व प्रधान श्री रामचन्द्र जी आर्य ने की। श्री द्वारकानाथ वर्मा प्रधान चुने गये तथा उन्हे यह अधिकार दिया गया कि बाकी पदाधिकारियों तथा अन्तरग सभा के सदस्यो को मनोनीत करें।

नवनिर्वाचित प्रधान श्री द्वारकानाथ वर्मा जी ने निम्न अधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो को मनोनीत किया।

सरक्षक —श्री मधु नसिंह चावला एडवोकेट, श्री सोहन लाल सैनी।

प्रधान—श्री द्वारकानाथ वर्मा

उप प्रधान श्री किशोर चन्द छाबड़ा श्री रविन्द्र गुप्ता। श्री लालचन्द गुप्ता।

मन्त्री—श्री देवराज दत्ता।

वरिष्ठ उप-मन्त्री—श्री [illegible] आर्य

उप-मन्त्री-श्री विजय कुमार आनन्द

कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र छाबड़ा

पुस्तकाध्यक्ष—श्री [illegible]

निरीक्षक—श्री के. आर. [illegible]

अन्तरग सदस्य :—

[illegible]

नोट—वस्तु भण्डारी का कार्य भी श्री किशोर चन्द छाबड़ा जी को सौंपा गया है।

—देवराज दत्ता
मन्त्री



श्री वीरेन्द्र जी एम० ए० मुद्रक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 | रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 17, 19 श्रावण सम्वत् 2044 तदानुसार 2 अगस्त 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

९ अगस्त को रक्षा बन्धन का पर्व और १६ अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व पंजाब की सभी आर्य समाजों में उत्साह से मनाएं ।

मान्य महोदय, सादर नमस्ते !

पंजाब की परिस्थितियां अत्यन्त विकट स्थिति का रूप धारण कर रही हैं। आर्य समाज न तो उग्रवाद में विश्वास रखता है, न साम्प्रदायिकता में और न किसी और प्रकार के ऐसे वाद में जिससे देश की अखण्डता, एकता और स्वाधीनता के लिए कोई संकट पैदा हो। आर्य समाज ने अपने जन्म दिन से ही देश की सेवा के लिए अपना योगदान दिया है और हम समझते हैं कि आज भी इस स्थिति को सुधारने के लिए अपना जो भी योगदान दे सकते हैं, देने का हमें प्रयास करना चाहिए। जैसा कि आपको मालूम है कि 9 अगस्त को रक्षा बन्धन है और 16 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी है। यह दोनो ही हमारे अत्यन्त पवित्र पर्व हैं। और हमें इन्हें पूरी निष्ठा, धर्म, प्रेम और सद्भावना से मनाना चाहिए। आज का वातावरण इतना बिगड़ गया है कि हम सब शान्ति के लिए प्रार्थना करें, हो सकता है कि जहां हमारी सरकार विफल रही है, जनता की भावनाएं और शान्ति के लिए प्रार्थना सम्भवत- सफल हो जायें। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि रविवार 9 अगस्त को अपने आर्य समाज मन्दिर में यज्ञ कर के रक्षा बन्धन का त्योहार मनाया जाये। यह हमारा बहुत पुराना त्योहार है और हमारे इतिहास में इसका विशेष स्थान है। उस दिन बहनें यहां अपने भाईयो को राखी बांधती हैं, वहीं भाई भी अपनी बहनों की रक्षा और प्रत्येक प्रकार की सहायता का प्रण लेते हैं। यदि आर्य समाज मन्दिर में आई बहनें अपने भाईयो को राखी बान्धें तो उसका प्रभाव सब पर बहुत अच्छा रहेगा। आर्य समाज से बाहर भी भातृभाव, सद्भाव और पारस्परिक प्रेम को बढ़ाने के लिए जहां-जहां रक्षा बन्धन का त्योहार मनाया जा सके, मनाना चाहिए।

रविवार 16 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी है। भगवान कृष्ण का हमारे इतिहास में एक विशेष स्थान है। वे हमारे उन महापुरुषों में से हैं, जिन पर हम गर्व कर सकते हैं और जिन्होने केवल हमारा ही नहीं सारे संसार का मार्ग प्रदर्शन किया था। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उस दिन पंजाब के सब आर्य समाज मन्दिरों में भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाये और उनके चरित्र और उनके जीवन की उन विशेष घटनाओं की ओर जनता का ध्यान दिलाया जाए जिनके द्वारा हमारे देशवासियों में एक नई प्रेम की ज्योति प्रज्वलित हो सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में भगवान श्री कृष्ण के विषय में जो लिखा है उसे भी विशेष रूप से जनता के सामने लाने की आवश्यकता है। आर्य समाज मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखता। परन्तु अपने महापुरुषों की पूजा करना और उनके गुणों को समझने में अवश्य विश्वास रखता है। इसलिए यह भी आवश्यक है कि श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर भगवान् कृष्ण ने जो उपदेश दिये थे, उन्हे विस्तार से जनता के सामने रखा जाए। आज की परिस्थितियो में यह इसलिए भी आवश्यक है कि हम कई बार निरुत्साहित हो जाते हैं। भगवान् कृष्ण के उपदेश से अपने धर्म की रक्षा के लिए हमें एक नई प्रेरणा मिलती है। इसलिए उसे अधिक से अधिक जनता के सामने लाने की आवश्यकता है।

इसी के साथ मेरा आपसे यह भी अनुरोध है कि 9 अगस्त श्रावणी के दिन से लेकर 16 अगस्त श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक सब आर्य समाज मन्दिरों में यज्ञ किया जाये। यह आवश्यक नहीं कि यज्ञ करवाने के लिए हम किसी बहुत बड़े पण्डित को बुलवाएं। प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारियों को स्वयं यज्ञ करना चाहिए। जो महानुभाव हवन करते हैं, उन के लिए यज्ञ करना कठिन नहीं होना चाहिए। मै यही चाहता हूं कि यह 8 दिन प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर मे शान्ति महायज्ञ किया जाए और जहां भगवान् कृष्ण के विषय में जनता के सामने उनके जीवन की मुख्य घटनाएं रखी जाएं, उसी के साथ यज्ञ के द्वारा हम परमात्मा से यह भी प्रार्थना करे कि हमारे पंजाब में उग्रवाद की जो आंधी चल रही है, वह शीघ्र समाप्त हो जाए और हम सब देशवासी मिल कर भाई-भाई की तरह यहां रहें और अपने पंजाब की समृद्धि और प्रगति के लिए प्रयास करें। यह हम यज्ञ के द्वारा ही कर सकते है। इसलिए 9से16अगस्त1987 तक प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर मे दैनिक यज्ञ होने चाहिएं। प्रत्येक आर्य समाज अपनी स्थिति के अनुसार जैसा यज्ञ कर सकें, उसे अवश्य करना चाहिए। कोई भी आर्य समाज ऐसी नहीं रहनी चाहिए जो यज्ञ न करे।

आशा है आप मेरी इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जो कार्यक्रम आपके सामने रखा गया है, उसे पूरा करेंगे। 9 अगस्त को रक्षा बन्धन, 16 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी और 9 अगस्त से 16 अगस्त तक शान्ति महायज्ञ"

यदि किसी आर्य समाज को यज्ञ के लिए सामग्री, यज्ञ, पात्र, हवन कुण्ड और दूसरी किसी वस्तु की आवश्यकता हो, वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से ले सकते हैं, जहां इनका प्रबन्ध कर दिया गया है।

—वीरेन्द्र

सभा प्रधान

परिद्रष्टा सोमनाथ जी मरवाह

एक कर्मठ आर्य समाजी का व्यक्तित्व

लेखक—श्री सूर्यकान्त जी बास्तव संग्रहालयाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

(गतांक से आगे)

लगभग डेढ माह तक अभावो के साथे मे छोटे बच्चों के साथ बड़े ही धैर्य से दिन गुजारे। एक ओर साधनहीन अभाव ग्रस्त जीवन बच्चो के साथ दूसरी ओर पाकिस्तान मे मरवाह जी का होना कितनी मानसिक यन्त्रणा रही होगी। अवर्णनीय ही है।

पाकिस्तान की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। गैर मुस्लिम विशेषत. हिन्दू एव सिखो को घर से निकलना मुश्किल था। 23 सितम्बर 1947 को रात को लगभग 2500 हिन्दुओ एव सिखो का कत्ल कर दिया गया। रेल, बस, कार कोई भी वाहन सुरक्षित नही था। ऐसी विकट विपरीत परिस्थित मे भी आप सक्रिय रहे। अन्तत एक दिन ट्रक द्वारा आपको भी जन्म-भूमि छोडने के लिए बाध्य होना पड़ा। भगवान् के सहारे ही लूटमार कत्लेआम से बचते हुए अक्तूबर मे अमृतसर पहुचने में सफल हुए। यात्रा के दौरान गुजरावाला मे लगभग दस दिन गुजारने पड़े। बाढ के कारण नदी का मिट्टी मिला जल और मुसलमानो द्वारा खाने-पीने की वस्तुओ मे मिलावा विष के कारण उपवास ही करना पड़ा। कुछ दिन पश्चात भारत सरकार द्वारा वायुयानो से गिरायी गयी रसद से ही प्राणरक्षा सम्भव हो सकी।

अमृतसर पहुच कर जब भारत की स्वतन्त्र भूमि पर कदम रखा तो शरीर पर पहने हुए कपड़े ही एकमात्र सम्पत्ति थे जिन्हे लेकर आये शेष सब कुछ जेहलम में ही छूट गया था। लेकिन आपने स्वय सूझ बूझ, मेहनत के साथ नए सिरे से जीवन आरम्भ किया। देश के विभाजन, जीवन यापन की अव्यवस्था ने इतना अधिक झकझोर दिया था कि कुछ वर्षों तक समाज को सक्रिय योगदान देने में असमर्थ रहे। लेकिन हिन्दु धर्म की दुर्गति, मानवीय सहार ने समाज के प्रति आस्था को और अधिक जोड दिया।

भारतीय पुनर्वास विभाग द्वारा रहने के लिए मकान दिया मलकागज मे। पूर्णतया व्यवस्थित होने पर मलकागज में स्थित सोहनगज आर्य समाज के सदस्य बन गए। सोहनगज आर्य समाज का कार्यालय अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे था। आपने अपने मित्र, सहयोगियो एव यथास्तः मुश्किलो से चन्दा लेकर भवन का जीर्णोद्धार कराया। जब तक सोहनगज आर्य समाज से सम्बन्धित रहे वहा से एकत्रित होने वाला चन्दा बड़े-बड़े समाजो के समकक्ष होता था क्योकि आप स्वय मुक्तहस्त उदारता से अपना भाग देते थे। कई बार ऐसा हुआ जब दान की पूर्ण राशि आपने स्वय अपनी आय से जमा की।

सन 1959 मे आप आर्य समाज दीवान हाल, चादनी चौक के सदस्य बन गये। वर्तमान मे आर्य समाज दीवानहाल के सम्मानित सदस्य हैं।

शिक्षा का माध्यम अग्रजी भाषा था लेकिन आपने हिन्दी का पठन प्राईमरी कक्षा से ही पढना आरम्भ कर दिया था। मातृभाषा से लगाव ने सदैव हो हिन्दी आन्दोलन से सम्बद्ध रखा। हिन्दी आन्दोलन के लिये आप सदैव उदारतापूर्वक दान देते रहे हैं। आप स्वय हिन्दी मे कार्य करना पसन्द करते हैं तथा अन्य लोगो को भी प्रोत्साहित करत हैं। किसी भी ऐसी सस्था जो मानवीय एव देश उत्थान के प्रयोजन से कार्यरत है को उदारता से दान देते रहते हैं।

तन-मन धन से आर्य समाज को समर्पित मरवाह जी समाज से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के प्रकरण में सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। न्यायिक प्रकरण मे आप किसी भी प्रकार की फीस नही लेते बल्कि न्यायालय के अन्य व्यय भी आप स्वय अदा करते हैं। आर्य समाज से सम्बन्धित 72 प्रकरणो मे देश के विभिन्न स्थानो पर स्थित न्यायालयो मे बिना फीस लिये खुद के व्यय पर उपस्थित हुये हैं। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुकुल कागडी एव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ओर से अम्बाला, जालन्धर, चण्डीगढ,अमृतसर, लुधियाना, सहारनपुर, रुड़की, हरिद्वार एव देहली के न्यायालयों मे स्वय के व्यय पर उपस्थित होते रहे हैं।

केवल आर्य समाजी सस्था ही नही बल्कि आर्य समाज का कोई भी सन्यासी मनीषी या कार्यकर्ता कोई भी हो आप सदैव ही न्यायिक एव आर्थिक सहयोग के लिये तत्पर रहते हैं। लाला रामगोपाल शालवाले सन्यास के पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने चादनी चौक से ससद का चुनाव जीता था। लाला जी के विरुद्ध दाखिल चुनाव याचिका के निराकरण के लिए आपने 6 माह तक अन्य कोई प्रकरण हाथ मे नहीं लिया। अन्तत सफलता आपके हिस्से मे ही रही। श्री शिवकुमार शास्त्री की चुनाव याचिका मे भी स्वय के खर्च पर अलीगढ के न्यायालय मे प्रस्तुत होते रहे। श्री जगदेव सिद्धान्ती जी की चुनाव याचिका के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए अग्रणी रहे। श्री पृथ्वीसिंह आजाद के विरुद्ध दाखिल चुनाव याचिका मे भी न्यायालय मे स्वय के खर्च पर उपस्थित होते रहे थे।

असत्य भाषण को कभी भी सहन नही करते। अगर आपको यह यकीन हो जाये कि व्यक्ति विशेष असत्य बोल कर अपने स्वार्थ साधन मे लगा हुआ है या आपके प्रभाव का गलत उपयोग कर रहा है तो उस व्यक्ति को भी क्षमा नही करते। आप कोई भी ऐसा कार्य करना पसन्द नही करते जिससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा को ठेस पहुचे। न ही अन्य किसी आर्य समाजी स अपेक्षा करते हैं। आर्य समाज को अहित पहुचाने वाले कार्य करने वाले को क्षमा नही करते चाहे वह आपका अभिन्न मित्र या श्रद्धेय पात्र या परिवार जन ही क्यो न हो। प्रसग वश स्वामी रामेश्वरानन्द का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

पजाबी सूबा बनाये जाने की माग के विरुद्ध स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने दीवान हाल चादनी चौक म अनशन आरम्भ किया था। स्वामी जी के प्रयोजन को पूर्ण समर्थन देते हुए लगभग एक माह तक स्वामी जी की सेवा करते रहे स्वामी जी की सेवा मे दिन रात बिताया इस अवधि मे एक दिन के लिए भी न्यायालय नही गये। इस माह आपकी आय शून्य थी। आपके जीवन का यह उल्लेखनीय माह है। लेकिन स्वामी रामेश्वरानन्द द्वारा श्री वीरेन्द्र जी,प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, जो काग्रेस के टिकट पर ससद के उम्मीदवार थे, के विरुद्ध जनसघ का उम्मीदवार बनना मतभेद का कारण बन गया। क्योकि इस प्रकार के कार्य से आर्य समाज की गरिमा को ठेस पहुची।

एक सच्चे आर्य समाजी के रूप में आपके जीवन का एक और अनुकरणीय प्रसग का उल्लेख करना उपयुक्त होगा। सन् 1920 के दशक में आर्य समाजी किसी भी बात की प्रतिज्ञा करता था उसे जीवन पर्यन्त निभाता था। ऐसी ही प्रतिज्ञा आपने 10-11 वर्ष की किशोर अवस्था मे ली जिसका निर्वाह अभी तक कर रहे हैं। जेहलम में आपके घर के पड़ोस में एक अभिभावक लाला रामेश्वर मल का अठेडावस्था का पुत्र सूरज-प्रकाश आपकी हम उम्र था। पड़ोस के नाते मित्र भी था लेकिन अधकचरा हम उम्र झगड़े मे वह मार खा जाता था। क्योकि वह कमजोर स्वास्थ्य का था। एक दिन लाला राम बसरमल ने आपको बुला कर कहा कि—"तुम एक सच्चे आर्य होने के नाते प्रतिज्ञा करो कि सूरज प्रकाश को कभी भी मारोगे नही।" आपने प्रतिज्ञा की कि सूरज को भविष्य मे जीवन पर्यन्त मारेंगे ही नही वरन बात भी नही करेंगे। विभाजन के पश्चात् सूरज प्रकाश भी दिल्ली आ गए और कस्टोडियन विभाग मे उच्च पद पर कार्यरत थे। कितने ही मौके ऐसे आये कि आप दोनो एक दूसरे के समक्ष थे लेकिन एक सच्चे आर्य समाजी होने के नाते बचपन मे ली शपथ के कारण दोनों ने एक दूसरे से बात नही की।

आर्य समाजी सस्थाओ से आपका सम्बन्ध केवल एक कानूनी सलाहकार ही नही बल्कि विभिन्न सस्थाओ मे विभिन्न पदो पर चुने गए है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को वर्तमान रूप प्रदान करने मे आपका उल्लेखनीय योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप मे कई वर्षों तक कार्य करते रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से आप गत 27 वर्षों स सम्बन्धित हैं। सभा के कोषाध्यक्ष भी रहे है। आर्य समाज दीवानहाल के प्रधान पद को भी सुशोभित किया है। गुरुकुल कागडी की विद्या-सभा एव कार्य सभा के सदस्य रहे हैं। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से आप गत 22 वर्षो से सम्बन्धित हैं। कानूनी सलाहकार सीनेट, कार्य सभा एव वित्त सभा आदि के सदस्य के रूप मे विश्वविद्यालय के विकास के लिये सदैव तत्पर रहे हैं।

सात्विक जीवन एव वैदिक धर्म की रक्षा ही जीवन का प्रथम लक्ष्य होना चाहिए कुलवासियो के लिये सन्देश में आपने कहा कि आर्य समाज के नियमो मे पूर्ण आस्था रखते हुए ऐसा कोई कार्य नही करे। जिससे समाज की गरिमा प्रतिष्ठा को क्षति पहुचे तथा

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

क्या आर्य समाज पिछड़ जाएगा ?

आजकल हमारे देश मे एक नई हवा चल रही है वह यह कि भ्रष्टाचार समाप्त होना चाहिए , भारत सरकार के भू पू वित्त और रक्षामन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह और उनके साथी इस दिशा मे बहुत सक्रिय हैं। दूसरी ओर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी भी कह रहे हैं कि भ्रष्टाचार किसी भी स्थिति मे सहन नही किया जाएगा।

इन दोनो में जो विवाद चल रहा है हमे उसमे पड़ने की आवश्यकता नही कई बार देखा गया है कि राजनैतिक नेता बड़ी-2 घोषणाए तो करते हैं परन्तु अन्त मे उसका कोई परिणाम नहीं निकलता भ्रष्टाचार हमारी समाज मे इतना अधिक फैल गया है कि उसे समाप्त करना आसान न होगा। राजनैतिक नेता तो उसे समाप्त नही कर सकते क्योंकि यह बहुत कुछ उनकी नीति और कार्य प्रणाली की ही उपज है। आज देश मे कोई भी ऐसी राजनैतिक पार्टी नही जिसने किसी न किसी रूप मे भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन न दिया हो। इस लिए जब राजनैतिक नेता यह कहते हैं कि वह भ्रष्टाचार को समाप्त करके ही दम लेंगे तो उनके इस सकल्प पर विश्वास करना कठिन होता है। ऐसी घोषणाए और ऐसे सकल्प पहले भी होते रहे हैं आगे भी होते रहेंगे। कौन सा ऐसा राजनैतिक दल है जो यह दावा कर सकता है कि उसमे कोई भ्रष्टाचारी नही है। इसलिए राजनैतिक नेताओ की घोषणाओ पर अधिक विश्वास करने की आवश्यकता नही यदि वह कुछ कर सकें तो सारे देश को प्रसन्नता होगी परन्तु उनसे अधिक आशा नही रखनी चाहिए। क्योंकि उसके बाद जो निराशा होती है वह कई बार एक ऐसी प्रवृत्ति पैदा करती है जो समाज के लिए अत्यन्त घातक होती है। इसलिए "तेल देखो और तेल की धार देखो" जो कुछ हमारे राजनैतिक नेता कह रहे हैं देखो कि वह उसे क्रियात्मिक रूप कैसे देते हैं।

परन्तु मेरे सामने तो यह प्रश्न है कि आज जब कि सारे देश मे भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान चल रहा है तो आर्य समाज इसमे पिछड जाएगा। मैं यह नही कहता कि आर्य समाज किसी राजनैतिक नेता या पार्टी का दुम छल्ला बन कर भ्रष्टाचार के विरुद्ध कोई अभियान प्रारम्भ करें। आर्य समाज का अपना एक गौरवमय इतिहास है उसके आधार पर उसे अपने अन्दर झाक कर देखना चाहिए कि कही भ्रष्टाचार उस तो घुन की तरह अन्दर ही अन्दर नही खा रहा। जब मैं यह कहता हू कि कही आर्य समाज पिछड न जाए तो इस लिए कि जब सारे देश मे इस दिशा में एक नया आन्दोलन शुरू हो गया तो आर्य समाज हाथ पर हाथ रखे क्यो बैठा रहे। कोई समय था जब आर्य समाज एक स्वच्छ और पवित्र सस्था समझी जाती थी। लोगो को उस पर विश्वास था इसलिए वह उसे जो भी दान देते थे यह समझ कर देते थे कि आर्य समाज मे एक-2 पैसा सुरक्षित रहता है और यहा किसी प्रकार का कोई भ्रष्टाचार नही है। कई बार हम सोचते हैं कि हमारे पूर्वज आर्य समाज की इतनी सम्पत्ति कैसे बना गए। आज वह क्यो नही बन रही ? क्या कारण है आर्य समाज को अब वह दान नही मिलता जो पहले मिलता था ? क्या कारण है कि आर्य समाज की वह प्रतिष्ठा नही रही जो पहले हुआ करती थी ? हमारे पूर्वजो ने जो कुछ बनाया था हम आज उनकी कमाई खा रहे हैं स्वय कुछ नही कर रहे।

यह क्यों ? केवल इसलिए कि आर्य समाज मे अब भ्रष्टाचार के लिए वह घृणा नही रही जो पहले थी। बल्कि अब तो उसका समर्थन भी होता है उसे प्रोत्साहन भी दिया जाता है और यह प्रोत्साहन देने वाले छोटे स्तर के व्यक्ति नहीं बड़े स्तर के नेता हैं। मैं पिछले पाच छ वर्षों स आय जनता का ध्यान इस भ्रष्टाचार की ओर दिला रहा हू उसका एक परिणाम यह भी हुआ कि मुझ आर्य समाज से निष्कासित करने का प्रस्ताव पारित किया गया। मेरे लिए कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैं आर्य समाज मे रहू या न रहू। आर्य समाज की सेवा करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता। मेरा यह अटूट विश्वास है कि यदि आर्य समाज को बचाना है तो इस बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को आर्य समाज मे से रोकना पड़ेगा। क्या हमारे लिए यह डूब मरने की बात नही कि हमारी सस्थाओ पर पुलिस के छापे पड रहे हैं और जाच हो रही है कि वहा कितना भ्रष्टाचार हुआ है और उसके लिए कौन-2 उत्तरदायी हैं। मैं यह नहीं कह सकता कि इसका परिणाम क्या निकलेगा परन्तु यदि उस जाच का परिणाम यही निकला कि बहुत बड़े स्तर पर भ्रष्टाचार चल रहा है तो फिर कोई आर्य समाजी कहीं मु ह दिखाने के योग्य नहीं रहेगा। इससे पहले भारत सरकार के महालेखा परीक्षक ने गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी की जाच कराई थी। उसमें जो कुछ कहा गया था उसके आधार पर आगे कार्यवाही न की गई। क्योंकि जो अपराधी हैं उनके सरक्षक बड़े-2 नेता हैं। अब जो नई जाच हो रही है उसका परिणाम क्या निकलता है यह देखने वाली बात है।

भ्रष्टाचार केवल गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी या कुछ दूसरी सस्थाओ मे ही नहीं आर्य समाज की और भी कई सस्थाओ मे है। जहा भी कोई ऐसी बात सामने आती है उस पर पर्दा डालने का प्रयास किया जाता है। इसका यह परिणाम है कि आर्य समाज का नैतिक स्तर दिन प्रतिदिन गिर रहा है। यही कारण है कि अब हमे उतना दान नही मिलता जितना पहले मिलता था और न जनसाधारण मे आर्य समाज के लिए वह श्रद्धा है जो पहले हुआ करती थी। आर्य समाज यदि अपने देश मे और देश से बाहिर इतनी प्रगति कर सका था तो केवल अपने महान् नेताओ स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज और दूसरे महानुभावो के कारण हमारे सन्यासियो का धार्मिक और नैतिक स्तर सबसे ऊचा हुआ करता था। आज भी आर्य समाज मे ऐसे सन्यासी हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं वह हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बने हुए है परन्तु वह भी हैं जो सन्यास आश्रम की गरिमा को बट्टा लगा रहे हैं।

इन परिस्थितियो मे जब मैं यह कहता हू कि कही आर्य समाज पिछड न जाए तो केवल इसीलिए कि यदि सारे देश मे भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ हो रहा है तो कोई कारण नही कि आर्य समाज मे भी इसी प्रकार का एक अभियान प्रारम्भ न किया जाए और सबसे पहले यह माग की जाए कि हमारे नेता दलबन्दी और अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठ कर आय समाज का मार्ग दर्शन करें,कोई व्यक्ति जिस के विरुद्ध भ्रष्टाचार का किसी प्रकार का कोई आरोप हो उसे आर्य समाज मे नही रहना चाहिए। यदि वह रहना है तो उसे कोई प्रतिष्ठित पद नही मिलना चाहिए। यदि कल को राजनैतिक नेता भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपने अभियान मे किसी भी प्रकार सफल हो गए और हम बैठे तमाशा देखते रहे तो आर्य समाज की रही सही प्रतिष्ठा भी समाप्त हो जाएगी। इसलिए इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

—वीरेन्द्र

रक्षा बन्धन और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्य मर्यादा के इसी अक मे पाठक गण उस परिपत्र को देखेंगे जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से पजाब की सब आर्य समाजो को भेजा गया है। मैं आर्य समाजो के अधिकारियो का ध्यान इन दोनो पर्वों के महत्व की ओर दिलाना चाहता हू। रक्षा बन्धन बहन-भाई के प्रेम का पर्व है परन्तु इसी के साथ भाईयो पर एक दायित्व भी आता है कि केवल बहनो से राखी बन्धवा कर ही उन का कर्तव्य समाप्त नही हो जाता उन्हे यह भी देखना है कि उनकी जो बहनें उन्हे राखी बान्धती हैं उनके मान और प्रतिष्ठा की पूरी तरह रक्षा होनी चाहिए और उसके लिए भाईयो को यदि कोई त्याग भी करना पड़े तो उसके लिए भी उन्हे तैयार रहना चाहिए। इसलिए हम सबको बड़े उत्साह के साथ रक्षा बन्धन का पर्व मनाना चाहिए।

16 अगस्त को भगवान श्री कृष्ण का जन्मदिन है। रामनवमी की तरह कृष्ण जन्माष्टमी भी हमारा बहुत महत्वपूर्ण पर्व है। 16 अगस्त को रविवार है। इसलिए उस दिन भी आर्य समाज मन्दिरो मे कृष्ण जन्माष्टमी मनाई जानी चाहिए। हम केवल पत्थर की मूर्ति बना कर उसकी पूजा नही करते। हमे तो यह देखना है कि भगवान कृष्ण क्या थे ? उनका व्यक्तित्व क्या था ? उनमे गुण क्या-2 थे और वह मानव समाज को क्या उपदेश दे गए ? महापुरुषो की पत्थर की मूर्तिया बनाने की बजाए उनके चरित्र को समझने और उसकी पूजा करने की आवश्यकता है।

इसी के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा ने सब आर्य समाजो को आदेश दिया है कि 9 अगस्त से 16 अगस्त तक 7 दिन सब आर्य समाज मन्दिरो मे यज्ञ किए जाए। यज्ञ कराने के लिए यह आवश्यक नही कि किसी प्रसिद्ध सन्यासी या विद्वान् पण्डित कोई बुलाया जाए, प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारियो को स्वय यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ तो हम करते ही हैं उसे कुछ बड़ा रूप देकर बृहद् यज्ञ किया जाए और साथ ही अपने नगर के दूसरे व्यक्तियो को भी उसमे निमन्त्रित किया जाए ताकि वह भी उस यज्ञ मे आहुति डाल सकें आशा है आर्य समाजो के अधिकारी अपनी सभा के इस आदेश को क्रियान्वित करने के लिए पूरा-2 प्रयत्न करेंगे।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज और राजनीति

लेखक—श्री मांगे राम जी आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

आर्य समाज की स्थापना हमारे आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने केवल वेद प्रचार या कुरीति निवारणार्थ ही नहीं की थी बल्कि उनका उद्देश्य इन दोनो के साथ-साथ राजनैतिक भी था जिसका प्रतिपादन देव दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास मे विस्तारपूर्वक किया है। प्यारे ऋषि ने इस समुल्लास में विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा और राजार्य सभा की स्थापना ऋग्वेद के मन्त्र द्वारा स्थापित करने का विधान किया है जिस से विद्या, धर्म और राज व्यवस्था सुचारु रूप से सारे देश मे लागू हो सके। सब के लिए एक जैसे नियम बना कर देश को एक सूत्र मे पिरोया जा सके। योगेश्वर दयानन्द का लक्ष्य उनके बनाए हुए आर्य समाज के नियमो, उद्देश्यो और उनके रचे हुए ग्रन्थो से भली-भान्ति विदित होता है। उनका आर्य समाज के तीसरे नियम का लक्ष्य अर्थात वेद का पढना पढाना, सुनना-सुनाना जो परम धर्म है तब पूरा हो सकता है जबकि अपने भारत देश मे वेद के अनुसार राजा और राज सभा स्थापित की जाए। एक भाषा, एक नियम और एक वेशभूषा तभी देश मे आ सकती है जब प्रथम आर्य राज्य बन जाए और वेदानुकूल सार्वभौम नियम सारे भारत मे प्रचलित किए जाए। पूज्य ऋषि ने यह कहीं भी घोषित नही किया कि ये पौदा (आर्य समाज) जो मैं लगा रहा हू यह केवल वैदिक धर्म प्रचार और पाखण्ड निवारणार्थ ही है और इस का राजनीति से कोई सम्बन्ध नही है। यदि हमारे गुरु दयानन्द का केवल धर्म प्रचार ही लक्ष्य होता तो उन्हे सत्यार्थ प्रकाश मे छटा समुल्लास राज प्रजा धर्म लिखने की आवश्यकता नही होती और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे भी राज-प्रजा धर्म विषय मे न लिखते। हमारे आचार्य महर्षि दयानन्द वेदो के प्रकाण्ड पण्डित थे इसलिए उन्होने वेद के रहस्य को खोल कर सारे ससार के सामने रख दिया और यह भी बतला दिया कि सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य स्थापित किये बिना किसी देश मे भी शान्ति नही हो सकती। वैदिक राज्य व्यवस्था ही सर्वोत्तम है, इसके अपनाए बिना सुख, शान्ति और समृद्धि व आपस का मेल जोल नही हो सकता। यह पूर्णतया सत्य है।

आपको ज्ञात होगा कि आरम्भिक-काल मे आर्य समाज ही सबसे पहले भारत वर्ष की राजनैतिक सस्था (पोलिटीकल पार्टी) थी जिसके प्रथम नेता थे हमारे स्व वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज। प्रथम होने का श्रेय आर्य समाज को ही है। ऐसा श्री जवाहरलाल जी नेहरू ने अपनी बनाई पुस्तक भारत की कहानी मे लिखा है। तत्पश्चात् कांग्रेस पार्टी वजूद मे आई और इस मे भी कई मजहबो के व्यक्तियो का समावेश हुआ (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी और आर्य समाजी आदि) इस प्रकार सब नेताओ ने मिलकर एक कांग्रेस नाम की जमात बना कर भारत की स्वतन्त्रता की लडाई अंग्रेजो से लडनी आरम्भ की। इस मिली-जुली राजकीय पार्टी के साथ स्वामी श्रद्धानन्द की विचारधारा का मेल नही हुआ क्योकि वह मुसलमानो की शुद्धि कार्य का बीडा उठाए हुए थे जिसे श्री नेहरू व महात्मा गांधी जी पसन्द नही करते थे। इन दोनो ने श्रद्धानन्द जी को पत्र लिखे और कहा कि यदि आप कांग्रेस के साथ रहना चाहते हैं तो आपको शुद्धि कार्य बन्द करना होगा क्योकि इससे मुसलमान नेता नाराज हैं। यदि शुद्धि कार्य बन्द नही करना चाहते तो कांग्रेस पार्टी से त्याग पत्र दे देवे। स्वामी श्रद्धानन्द तो वैदिक धर्म का दीवाना और शुद्धि का परवाना था इसलिए उस धर्म के दीवाने ने कांग्रेस पार्टी से त्याग पत्र दे दिया। वीर सन्यासी केवल एक मात्र आर्य सस्कृति का प्रचारक और प्रसारक था, वह महर्षि का सर्वश्रेष्ठ अनुयायी था इसलिए उन्होने गुरुकुल कांगडी की स्थापना की और भारतीय सस्कृति के उद्धार मे तल्लीन हो गए। उस समय अंग्रेजो की नजर आर्य समाज पर बहुत कडी बनी रहती थी क्योकि स्वतन्त्रता का बिगुल बजाने वाली प्रथम सस्था आर्य समाज ही थी। सभी स्कूलो, कालिजो, गुरुकुलो और भारत की सभी दूसरी सस्थाओ व सभी प्रान्तो मे स्वतन्त्रता सेनानी पैदा करने का श्रेय आर्य समाज को ही है। स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है यह स्वामी दयानन्द ने अपने सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है जिसे बाद में श्री लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने नारे के रूप मे बुलन्द (बुलन्द किया) यह अक्षरशः सत्य ही है।

जब अंग्रेज लोग अर्थात् वायसराय और गवर्नर गुरुकुल कांगडी को देखने के लिए जाते थे। तो वह अपने शक को दूर करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से पूछताछ करते थे क्योंकि उन्हें आर्य समाज राजकीय सस्था लगती थी। सो स्वामी जी उनके सवालो का जवाब यही देते थे कि यह गुरुकुल हमारी वैदिक सस्कृति का प्रचारक है इसका किसी राजकीय सस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार उत्तर देकर उनकी तसल्ली करके वापस कर देते थे। यह उत्तर उनका अंग्रेजो के अत्याचारो से बचने के लिए था और इस प्रकार वह आर्य समाज को धार्मिक सस्था कह कर उनसे पीछा छुडाते थे। यह सब अंग्रेजो की कडी नजर और सख्ती से बचने के लिये था, वास्तव मे नही। परन्तु आर्य समाज ने अपने आपको उस समय से धार्मिक सस्था ही बना छोडा और राजनीति से सन्यास ले लिया, जो एक भयकर भूल है (थी)। इसके पश्चात् तो यहा तक नियम बना दिया गया कि हर एक आर्य समाजी नेता व्यक्तिगत रूप से किसी राजकीय सस्था के साथ राजनीति मे भाग ले सकता है परन्तु सामूहिक रूप से आर्य समाज राजनीति मे भाग नही ले सकता। इस बेहूदा, भयकर भूल का नतीजा यह हुआ कि आर्य समाज के नेता नाना प्रकार की राजकीय पार्टियो मे शामिल हो गए और आर्य समाज खोखला बन गया। आर्य समाजी स्वार्थी नेताओ ने इस बेढगी दुरगी नीति से आर्य समाज को रसातल मे पहुचा दिया। यह उनका निर्णय ठीक नही था। क्योकि राजनीति और धर्म का बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। राजनीति के बिना धर्म सुरक्षित नही रह सकता क्योकि यथा राजा तथा प्रजा।" धार्मिक राजा (वेदज्ञ) होगा तो प्रजा धार्मिक होगी और अधर्मी राजा होगा तो प्रजा भी अधर्मी होगी। यह मनु महाराज ने ठीक ही कहा है जो निर्भ्रान्त है।

आर्य समाजी नेता साहस खो चुके हैं, उनमे स्वार्थ और पक्षपात घर कर चुका है, इन मे आपसी प्रेम नही, अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ। एक प्रकार अब इसे निकालने का किसी को साहस नही हो रहा। यह कैसी विडम्बना है। इस समय आर्य समाज के कर्णधार बहुत डरते हैं कि यदि हम राजनीति मे भाग लेंगे तो हमारी सस्था समाप्त हो जाएगी इसकी सत्ता कुछ न रह पायेगी। परन्तु यह हमारे उन नेताओ की बात है जो हाथ पैर नहीं हिलाना चाहते। वह ही बना रहना चाहते हैं। परन्तु यह हमारे नेताओ का विचार सही नहीं कि हम राजनीति में भाग लेंगे तो हमारी आर्य समाज सस्था समाप्त हो जाएगी। सुनो मेरे आर्य समाजी विद्वानों और नेताओ वा वैदिक धर्म प्रेमियो "धर्म राजनीति के बिना अधूरा है और राजनीति धर्म के बिना लगडी है। इन दोनों का घनिष्ट सम्बन्ध है। राजसत्ता के बिना धर्म नहीं फैल सकता क्योकि उसे पुष्कल धन की आवश्यकता है जो राजा के पास ही होता है इसे सभी जानते हैं। फिर अवहेलना कैसी। चालीस वर्ष देश विभाजन (स्वतन्त्रता) के व्यतीत हो गये परन्तु जो कुछ हमे वैदिक धर्म प्रचार मे करना चाहिए था वह कुछ भी नही कर पाये हैं, इस पर आप खूब ही विचार करें। इसलिए मैं डंके की चोट से आर्य समाज के करणधारो को चेतावनी देना चाहता हू कि यदि आर्य समाजियो ने भारत मे आर्य राज्य की स्थापना की कुछ थोडी भी आगे के लिये अवहेलना की तो जो कुछ अतीत मे हम कर चुके हैं वह सभी समाप्त हो जाएगा। आपका कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा अधूरा पडा रह जाएगा और वैदिक धर्म का प्रचार करने वाला भी कोई नजर न आएगा क्योकि राजसत्ता धर्म की जड है, इसमे कोई शक नही।

(क्रमशः)

होनहार विद्यार्थी

योग रत्न



नवाशहर के प्रसिद्ध आर्य समाजी कार्यकर्ता श्री वेद प्रकाश जी सरीन के पौत्र श्री योग रत्न सुपुत्र श्री प्रो सुदर्शन कुमार सरीन, जो गवर्नमेंट कालेज होशियारपुर मे पढते हैं। वह इस वर्ष पंजाब यूनिवर्सिटी मे प्री मैडिकल की परीक्षा में पंजाब भर मे द्वितीय रहे।

आर्य समाज की भावी रूपरेखा—२

बुद्धिजीवी सम्मेलन की आवश्यकता

लेखक—डा. प्रशान्त जी वेदालंकार 712 रूपनगर दिल्ली

(गतांक से आगे)

रचनात्मक आन्दोलन चलाने के लिए तो हमें सरकार से संघर्ष करने की भी आवश्यकता नहीं है। बुद्धिजीवी सम्मेलन में हम राष्ट्रीय स्तर के रचनात्मक आंदोलन की रूपरेखा तैयार कर सकते हैं। स्वतन्त्रता सेनानियों व उनके परिवार वालों की सेवा तथा पंजाब से विस्थापित हिन्दुओं को बसाने से हमें कौन मना कर सकता है ?

हमें यह स्मरण रखना होगा कि राष्ट्रीय कार्यक्रमों से ही आर्य समाज देश में प्रतिष्ठा प्राप्त करता रहा है। आज भी हमें राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान को प्रमुखता देनी होगी।

अन्य विचारणीय विषय हैं—आर्य समाज का पारस्परिक संघर्ष, आर्य समाज के संविधान व कार्यक्रमों में युगानुरूप परिवर्तन की आवश्यकता। इस विषय पर भी अनेक विद्वानों ने अपनी प्रतिक्रियाएं और सुझाव हमारे पास भेजे हैं। कुछ विद्वानों ने इन सब का कारण संगठन की कमजोरी बताया है। पर केवल संगठन को कमजोर कह कर वास्तविक समस्या से हम दूर नहीं हो सकते।

डा. एस. बी. काले (बीड) व डा. हरिश्चन्द्र (पूने) ह ईमानदारी व चरित्र की कमी को, श्री प्रेमनारायण वैद्य (हाथरस) व श्री उत्थानमुनि ने केन्द्रीय नेताओं के जुझारू और निस्वार्थ कार्यकर्ताओं के अभाव को आर्य समाज की शिथिलता का कारण कहा है। श्री प्रदीप आर्य, श्री अशोक आर्य (टकारा) एवं श्री ब्रजेश ने युवकों को योग्य, सुशिक्षित पुरुषों के न मिलने के कारण आर्य समाज को शक्तिहीन माना है। श्री गंगाप्रसाद विद्यार्थी व श्री अशोक आर्य ने आर्य समाज की एक सशक्त साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन पर बल दिया है। श्री प्रदीप आर्य व श्री राज कुमार का कहना है कि आर्य समाज में शास्त्रार्थ की शक्ति नष्ट हो गयी है। उन्होंने आर्य समाज की गीता प्रैस के अनुकरण पर सस्ती व अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराने पर बल दिया है। श्री प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी आर्य समाज में सेवा का मार्ग अधिक प्रशस्त करना चाहते हैं। उन्होंने देश की निर्धन जनता के मध्य जाकर उनके सुख दुःख में भागी होने पर बल दिया है।

श्री ओ. पी. भाटिया (जयपुर) आर्य समाज की अवनति का कारण अपना (1) विधान (2) सभी को सभी राजनीतिक दलों में काम करने की छूट को मानते हैं। श्री प्रदीप आर्य व श्री प्रेमनारायण वैद्य भी राजनीतिक नेताओं के आगे अपने को बौना समझने के कारण आर्य समाज की क्षति का कारण समझते हैं। श्री दत्तात्रेय आर्य के संयोजकत्व में गठित समिति यह तो कह सकी कि आर्य समाजों मे राजनीतिक दलो की बैठकें न हों। पर वे यह कहने का साहस न कर सके कि राजनीतिक नेता आर्य समाजों के मचो पर न आएं, आए तो एक साधारण सदस्य की तरह आएं। श्री क्षितीश वेदालंकार ने 5 अप्रैल 1987 के आर्य जगत् मे अपने सम्पादकीय मे राजनीतिक दल बनाने का विरोध किया है पर साथ ही कहा है आर्य समाज जैसी जीवित जागृत संस्था को विभिन्न राजनैतिक मुद्दों पर तटस्थ दर्शक की तरह मौन रहना शोभा नहीं देता। इसलिये हम यह समझते है कि एक राजनीतिक पार्टी बनाने की बजाय हम जन-जागरण का ऐसा सब बनाएं कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक तक नगर-नगर और गांव-गाव मे विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर हमारी आवाज पहुंचे।

आर्य समाज संगठन को सशक्त करने के लिए श्री दत्तात्रेय बावले के संयोजकत्व में गठित समिति के निम्नलिखित सुझाव है। (1) आर्य समाज के आन्तरिक विवादो को सन्यासियो अथवा न्यायाधीशो व वकीलो की एक वरिष्ठ समिति द्वारा निपटाने की व्यवस्था और उसका निर्णय न मानने पर अनुशासन की कार्यवाही का प्रावधान। (2) आर्य समाज मन्दिरों मे अन्य धार्मिक स्थानों के समान दैनिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाए जिनमें सन्ध्या, हवन, कथा एवं गायन आदि का नियमित प्रबन्ध इसी प्रकार आर्यों के यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार समाज मन्दिर में ही किए जाए।

(3) पुरोहित प्रणाली उनके प्रशिक्षण, वेतन तथा नियन्त्रण की व्यवस्था प्रशिक्षण केन्द्र जिनमे उपदेशक तथा पूरे समय के कार्यकर्ता तैयार किए जाएं।

(1) केन्द्रीय पुस्तकालय, शोध-केन्द्र की स्थापना, विद्वानों की गोष्ठियां

(1) वेद के आधार पर सत्य विद्याओं का अधिकृत विश्लेषण और विवेचन।

(2) ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित पुरोहित, गांवों में सघन प्रचार की व्यवस्था, गांवों और तहसीलों में भजन और संगीत द्वारा प्रचार करें।

(3) युवक-युवतियों का संगठन, (आर्य वीर दल आदि)।

आर्य समाजों में दलबन्दी पर रोक तथा आर्य समाज की आन्तरिक कमजोरियों का विश्लेषण व उपाय।

(1) शतकुण्डी यज्ञों आदि अवैदिक कार्यों पर प्रतिबन्ध।

समाजों व उसकी संस्थाओं की सम्पत्ति के अधिकार तथा प्रबन्ध के लिये अखिल भारतीय कानून या एक्ट।

ये सभी सुझाव उत्तम हैं, पर प्रश्न है कि क्या ये नये हैं ? प्रश्न इनके क्रियान्वयन का है। समिति ने सार्वदेशिक को कहा है कि वह एक या अधिक उपसमितियां बना कर उनकी सिफारिशों को ध्यान में रखकर यथाशीघ्र निर्णय अथवा व्यवस्था करे। आर्य समाज की स्थापना इन्हीं सब कार्यक्रमो को क्रियान्वित करके विश्व को आर्य बनाने के लिए की गई थी, पर आज स्थिति यह आ गयी है कि सार्वदेशिक सभा को एक समिति द्वारा इन्हीं सब कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए कहना पड़ रहा है।

हमारे पास जो पत्र आए हैं उनमें आर्य समाज में उत्पन्न शैथिल्य का मूल कारण आर्य समाजो में पारस्परिक संघर्ष एवं पदलोलुपता को बताया गया है। पर उन पत्रों में इन संघर्षों को दूर करने व पदलोलुपता से बचने के किन्हीं संवैधानिक उपायों की चर्चा न करके आर्य समाजी पदाधिकारियों को निष्ठा, चरित्र, त्याग तथा संयम का उपदेश दिया है। जो स्वयं उपदेशक हैं, अथवा उपदेशकों के अधिकारी हैं, वे इस प्रकार की शिक्षाओ को क्यो मानेंगे ? वस्तुत: आर्य समाज का संगठन महर्षि दयानन्द की भावनाओं के अनुकूल संविधान में अपेक्षित परिवर्तन करके बनाना चाहिए।

यहां यह उल्लेखनीय है कि आश्रम व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति को गृहस्थ से हटकर वानप्रस्थी हो जाना चाहिए, और वानप्रस्थी को शिक्षा एवं समाज कल्याण के विविध कार्य करने चाहिए। आज व्यक्ति वानप्रस्थी होने से कतरा रहा है। हमें सर्व प्रथम व्यक्ति को वानप्रस्थी बनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। जो वानप्रस्थी नही बनना चाहते किन्तु सेवा निवृत्त हैं अथवा सेवा निवृत्ति की आयु (60 से 65 वर्ष) पर पहुंच गए हैं, गृहस्थ में रहकर भी वानप्रस्थी के कर्त्तव्यो का पालन करें, ऐसी किसी व्यवस्था पर हमें विचार करना होगा जिससे उनका जीवन शिक्षा व समाज के लिए ही समर्पित हो।

इस प्रसग मे यह भी उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाजों की स्थापना गृहस्थियों के लिए की थी। अत: हम सामान्य नियम यह बना सकते हैं कि आर्य समाजो के पदाधिकारी गृहस्थी होने अर्थात् उनकी आयु 60 या 65 वर्षों से अधिक नहीं होनी चाहिए। पदलोलुपता पर अंकुश लगाने के लिए भी यह नियम बनाना होगा कि कोई भी पदाधिकारी दो या तीन बार से अधिक उस पद पर न रहे। वस्तुत: ये सभी प्रश्न गम्भीरता से विचार करने योग्य हैं।

वानप्रस्थ आयु के ऊपर के व्यक्ति शिक्षा संस्थाओ से जुड़े होने चाहिये अभी भी हमारे देश में 65 प्रतिशत लोग अशिक्षित है। देश के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करने का बीड़ा आर्य समाजी वानप्रस्थियो को उठाना होगा। वानप्रस्थी शिक्षा संस्थाओ से जुड़कर अपनी लोकेषणा की पूर्ति कर सकते है। अर्थात् वे शिक्षा संस्थाओ के ही अधिकारी बने, प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन मे इसकी विस्तृत योजना बनाई जा सकती है।

प्रत्येक आर्य समाज एक बाल को गोद मे ले ले और उन्हे शिक्षित, स्वच्छ व स्वस्थ रहने का निश्चित नियम बनाए तभी हम अपने उद्देश्य की दिशा में आगे बढ पाएगे। मैंने अनेक बार यह योजना भी प्रस्तुत की है कि यदि प्रत्येक आर्य समाज 10 बालको को गोद ले ले और उनकी शिक्षा दीक्षा का वह व्यय वहन करे तो अनेक गुरुकुलो की स्थापना की जा सकती है। पर गुरुकुलो का संचालन वानप्रस्थी आचार्य ही करेंगे। आर्य समाज का दायित्व केवल उनका व्यय वहन करना रहे। यहा यह बात स्पष्ट करनी अनिवार्य है, कि शिक्षा संस्थाओं पर आर्य समाजो या प्रतिनिधि सभाओ का अधिकार रखने के कारण उनके झगडो का दुष्प्रभाव भी उन पर पड़ता है। अत: प्रतिनिधि सभाओ या आर्य समाजों का सीधा हस्तक्षेप उन पर उचित नहीं।

बुद्धिजीवी सम्मेलन मे एक अन्य महत्वपूर्ण विषय पर विचार करना भी अपेक्षित है। अनेक आर्य समाजी व आर्य संस्थाओ ने आर्य समाज के संगठन

(शेष पृष्ठ 8 पर)

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

अब्राहाम लिंकन

लेखक—श्री कांशीराम जी चावला द्वारा श्री पथिक झूटमलपुर

महापुरुषो के जीवन स बडी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। नि सन्देह भारतवर्ष के महापुरुषो की जीवनिया हमारे लिए बडी मार्ग दर्शक हैं, किन्तु कई विदेशी महापुरुषो के जीवन से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। इस लेख मे अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के जीवन की कुछ शिक्षा-प्रद घटनाओ का वर्णन किया जाता है। वह अन्तत अमरीका का राष्ट्रपति बना।

लिंकन एक बहुत गरीब घराने मे पैदा हुआ था। उसका पिता खेतो मे मजदूरी करता था। वह अपन बेटे को पढा भी नही सकता था। किन्तु लिंकन को पढने की बडी आकाक्षा थी। वह अपने पिता से साथ भी काम करता था किन्तु साथ ही जैसे-तैस पुस्तकें माग कर अपनी पढाई भी करता रहता था। अपनी लगन और पुरुषार्थ से वह वकील बन गया। कोई झूठा मुकद्दमा नही लेता था।

एक दिन उसने एक गली मे जाते हुए एक लडकी को रोते देखा। पूछने पर लडकी ने कहा कि उसने गाडी पकडनी है। समय थोडा रह गया है। किन्तु उसका भार उठाने वाला आदमी नही आया। लिंकन ने उसका भार कन्धे पर उठा लिया और उसको समय पर स्टेशन पर पहुचा दिया। यह वकीली के दिनो की बात है।

वकीली के दिनो मे ही एक दिन वह अन्य वकीलो के साथ कचहरी जा रहा था कि एक सूअर को पानी के कीचड मे फसा हुआ देखा। शेष वकील तो चले गए। किन्तु लिंकन उस जन्तु का कष्ट सहन न कर सका। अपने कपडो समेत कीचड मे घुस कर सूअर को निकाल दिया और फिर घर आकर कपडे बदल कर कचहरी मे गया।

वकील बनने से पूर्व वह एक स्टोर में काम करता था। एक दिन एक स्त्री उस स्टोर स चाय लेने गई। एक पौंड चाय मागी। लिंकन ने पैसे ले लिए और चाय का पैकट दे दिया। किन्तु रात को उस विचार आया कि चाय का पैकेट पूरे पौड के भार का भार नही दिया है। दूसरे दिन वह और चाय लेकर उस स्त्री के घर दे आया।

उन्ही दिनो जब वह स्टोर मे काम कर रहा था तो उसने देखा कि स्टोर के सामने दूसरी ओर उस समय की अत्यन्त कठोर सर्दी मे एक आदमी लकडिया फाड रहा है। लिंकन ने आकर पूछा कि तुम इतनी कठोर ठण्ड मे क्यो काम कर रहे हो? तो उसने कहा कि मेरे पास जूता नही है। यह लकडिया बेच कर जूता लूगा। तब लिंकन ने कहा कि आओ थोडे काम के लिए हमारे स्टोर मे आग ताप लो। यह कह कर उसे अन्दर छोड आया और स्वय बाहर आकर उसने उसकी लकडिया फाड दी और फिर उसे जाकर कहा कि लकडिया तैयार हैं। जाओ बेचकर जूता खरीद लो।

एक अमीर ने एक गरीब को अढाई डालर ऋण दिया था। गरीब दे न सकता था, किन्तु फिर भी अकड कर बोलता था। इसलिए अमीर उसको दण्डित करवाना चाहता था। अमीर ने गरीब पर दावा कर दिया और लिंकन को वकील करने गया। ऋण तो अढाई डालर था किन्तु लिंकन ने फीस 10 डालर मागी। अमीर क्योंकि अपनी हठ पूरी करना चाहता था। इसलिए 10 डालर दे दिए। तब लिंकन उस गरीब के पास गया और उसे पाच डालर देकर कहा कि अढाई डालर तो ऋण के दे आओ और अढाई अपने पास रख लो। शेष 5 डालर लिंकन ने स्वय रख लिए। क्योकि ऋण अब दिया जा चुका था। इसलिए मुकद्दमा चला ही नहीं। ऐसा था दया भरा दिल लिंकन का।

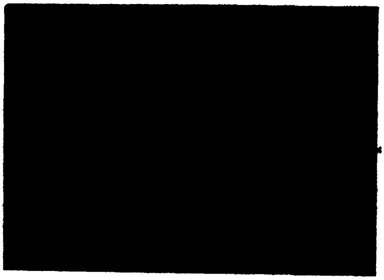
लिंकन जब राष्ट्रपति बन गया तो अमरीका के कुछ प्रान्तो मे दासता की प्रथा चल रही थी। लिंकन ने उस समाप्त कराया।

ऐसे पुरुषार्थी, उदार और विशाल हृदय वाले दयापूर्ण लिंकन के जीवन से हम कई बातो की शिक्षा ले सकते हैं।

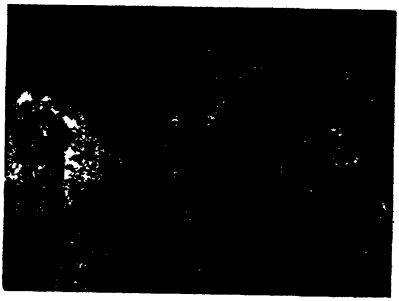
एक गरीब लडका जिसका पिता उसको पढाने की भी सामर्थ्य नही रखता था अपने पुरुषार्थ, आत्म-विश्वास और परोपकार की भावना के कारण अमरीका का राष्ट्रपति बना

—●—

सभा प्रधान जी को थैली भेंट



गत दिनो श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को आर्य समाज भठिण्डा मे पधारने पर श्री अमरनाथ जी प्रधान आर्य गर्ल्ज स्कूल तथा श्री ओ पी मगला प्रधान आर्य समाज भठिण्डा 11000 रुपये की थैली भेंट करते हुए।



आर्य समाज मोगा ने जन-कल्याण कार्यक्रम का आयोजन किया। आर्य बस्ती मोगा मे प्रधान श्री जगदीश राय बासल जी की अध्यक्षता में हवन यज्ञ का कार्यक्रम हुआ। इसके उपरान्त प्रसिद्ध विद्वान श्री सच्चिदानन्द, श्री बी डी सहगल, श्री हरबसलाल, श्रीमती इन्दुपुरी, श्री केवल कृष्ण पुरी तथा श्री जोहरी लाल ने आशीर्वाद दिया। दिनाक 19-7 87 को।

आर्य मर्यादा का कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा साप्ताहिक का कृष्ण जन्माष्टमी विशेषाक 16 अगस्त को प्रकाशित हो रहा है। नैयनाभिराम आकर्षक टाईटल पर, बढिया कागज पर प्रकाशित यह विशेषांक बहुत ही उपयोगी होगा। श्रावणी उपाकर्म तथा 15 अगस्त से सम्बन्धित लेख भी इस अक मे पढ़ने को पाठकों को मिलेंगे। हमारी सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह इसकी अधिक से अधिक प्रतियो के आर्डर शीघ्र अतिशीघ्र भेजें। अक सीमित छपेगा। देरी से आर्डर आने पर भेजना कठिन हो जाएगा। इसलिए आर्डर शीघ्र भेजें।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

हवन में मंत्रोच्चारण क्यों ?

लेखक—श्री [illegible] आर्य बन्धु, [illegible],
आर्य [illegible] मुरादाबाद,

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के 5-जुलाई 1987 के अंक में श्रीयुत अनिल कुमार गुप्ता का एक लेख "मन्त्रोच्चारण क्यों करें। शीर्षक से छपा है। अपने इस लेख में लेखक महोदय ने आधुनिक दृष्टिकोण के रूप में मन्त्रोच्चारण की उपयोगिता दर्शाई है। मन्त्रोच्चार से स्वास्थ्य पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। किन्तु मन्त्रोच्चारण के केवल भौतिक लाभ ही नहीं है, आध्यात्मिक लाभ भी है। प्रस्तुत लेख में हम एतद् विषयक महर्षि दयानन्द के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि इसके आध्यात्मिक लाभों को भी पाठक अच्छी तरह जान सकें।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेद विषय में प्रश्नोत्तर रूप में महर्षि लिखते हैं कि—

प्रश्न—होम करने का जो प्रयोजन है सो तो केवल होम से ही सिद्ध होता है, फिर वहां वेद मन्त्रों के पढ़ने का क्या काम है ?

उत्तर—उनके पढ़ने का प्रयोजन कुछ और ही है।

प्रश्न—वह क्या है ?

उत्तर—जैसे हाथ से होम करते, आंख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेद मन्त्रों को भी पढ़ते हैं। क्योंकि उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है। तथा होम से जो-जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है। वेद मन्त्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं, और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाए, क्योंकि ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। सो वेद मन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इसलिये सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से ही करना उचित है।

इसी प्रकार महर्षि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में भी इस विषय में लिखा है कि—

प्रश्न—मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर—मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जाए और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेद पुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।

पूना के सुविख्यात प्रवचनों में भी यज्ञ और संस्कार सातवें प्रवचन में महर्षि ने यह चर्चा उठाई है। वहां एतद् विषयक शंका निम्न शब्दों में की गई है। 'कोई-कोई ऐसी शंका करे कि वायु शुद्ध्यर्थ यदि हवन है तो उसमें वेद मन्त्रों के पठन की क्या आवश्यकता है ? इसका समाधान महर्षि ने इस प्रकार किया है, इसका उत्तर यह है कि दो काम यदि एक ही समय में हो सकते हो तो उन्हे करना चाहिए, ऐसा उद्देश्य कर प्राचीन आर्य लोगो ने जब हाथो को होमादिक द्रव्यों की व्यवस्था करने में लगाया तब मुंह खाली न रहे, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना मुंह से होती रहे, इसलिए पहले के ऋषि लोग वेद-मन्त्र कहते थे और ब्राह्मण लोगो ने कण्ठस्थ वेद आज तक किया, इसी लिए वेद विद्या भी अब तो बची रही है। फिर यह भी था कि वेद पाठ करने से परमेश्वर की भक्ति होती थी जिससे विचार शक्ति भी उत्पन्न होती थी। दूसरा ऐसा भी विचार है कि जो हाथो से प्रयोग होता है, उसके जो मन्त्र उस समय कहे जाते हैं, उनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता, इससे मन्त्रोच्चार कर्म के उद्देश्य से नहीं होता, किन्तु परमेश्वर की स्तुति मुंह से होती रहे, यही प्रधान उद्देश्य है और कोई कोई मन्त्र ऐसे भी हैं जिनमे होम के लाभ कहे गए हैं। साराश यह कि वेद मन्त्रो को कहने से वेद की रक्षा ही मुख्य प्रयोजन है। इतना ही नहीं महर्षि का तो यहा तक कथन है कि—"मुख्य तत्त्व से वेद मन्त्र के पठन से ईश्वर का सत्कार होता है, इसलिए प्राचीन आर्य लोगो ने होम के स्थल मे मन्त्रो की योजना की है, इसी तरह यज्ञशाला को देवायतन अथवा देवालय कहा है।"

यज्ञ में वेद मन्त्रों का ही पाठ क्यों हो ?

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे महर्षि ने एक प्रश्न उठाया है कि—"यज्ञ मे वेद मन्त्रो को छोड़ के दूसरे पाठ करें तो क्या दोष है ?" और फिर उसका समाधान इन शब्दो मे किया है—'अन्य के वचन से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रान्तिरहित सत्य होता है, वैसा अन्य का नहीं। और जो कोई वेदो के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि आप्त पुरुषो के ग्रन्थो का बोध और उनकी शिक्षा से वेदो को यथावत् जान के कहता है, उस का भी वचन सत्य ही होता है। और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है, वह ठीक-ठीक नहीं हो सकता। इससे यह निश्चय है कि जहां-जहां सत्य दीखता और सुनने मे आता है, वहां-वहां वेदो मे से ही फैला है, और जो-जो मिथ्या है, सो सो वेद से नहीं, किन्तु जीवो ही की कल्पना से प्रसिद्ध हुआ है। क्योंकि ईश्वरोक्त ग्रन्थ से सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो दूसरे से कभी नहीं हो सकता।"

इस प्रकार यज्ञ मे वेद मन्त्रो के उच्चारण से अनेकानेक लाभ हैं। अतः श्रद्धापूर्वक यज्ञ मे वेद मन्त्रो का उच्चारण करना ही चाहिये।

———

स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए

बीस-सूत्री नियम

1. परमात्मा पर विश्वास रखें।
2. शरीर की सफाई और सेहत का ध्यान रखें।
3. दूषित वातावरण, भीड़ तथा दूषित वायु से दूर रहें। उन व्यक्तियों से दूर रहें जिनमें रोग और छूत के कीटाणु हों। रासायनिक तथा रेडियम का प्रभाव डालने वाले तत्वों से बचें।
4. दुर्घटनाओं से बचें।
5. छूत की बीमारियों के रोकथाम के नियमों का पालन करें। अच्छी तरह से पकाया हुआ और शुद्ध भोजन करें। साफ पानी पियें। मक्खियों, मच्छरों तथा दूसरे कीटों से बचें।
6. संतुलित भोजन करें। मसालेदार तथा तली हुई वस्तुओं से दूर रहें। ताजे फल, सब्जियां तथा दूध आदि का प्रयोग करें।
7. नित्य-प्रति व्यायाम करें और आलस्य को त्यागें।
8. शक्ति से अधिक भार न उठायें।
9. धूम्रपान से बचें और नशीली वस्तुओ का सेवन न करें।
10. आराम और नींद की ओर समुचित ध्यान दें। पर यह भी याद रखें कि कठिन परिश्रम शरीर और मन को शक्तिशाली बनाता है।
11. शौच-स्नान इत्यादि दैनिक कार्यक्रम बनाएं।
12. बार-बार गर्भाधान से बचें और शारीरिक परीक्षण किसी अच्छे डाक्टर से करवाएं।
13. यदि आपके माता-पिता या अपने घर मे किसी [illegible] या दिल की बीमारी हो तो बीस वर्ष की आयु या [illegible] पहले किसी अच्छे डाक्टर से निरीक्षण करवाते रहें।
14. सामान्य स्वास्थ्य में जब भी अतिक्रमण आए [illegible] डाक्टर का द्वार अवश्य खटखटायें।
15. डाक्टर की सलाह को पूरी तरह अपनायें।
16. पूरी जानकारी बिना स्वयं ही कोई दवाई न लें।
17. शान्त और स्वस्थ स्वभाव को अपनाए। [illegible] में शुद्धता को अपनायें। अपने स्वजनो एवं परि[illegible] से [illegible] करें।
18. अपना कर्तव्य ठीक ढंग से निभाए और अपने कार्य से सन्तुष्ट रहें।
19. अच्छी आदतें दैनिक कार्यक्रम बनाए। इसमें किसी प्रकार के बाधक या पिसोन्मादी न बनें।
20. अपने घर, समाज और देश की सेवा अन्तिम श्वास तक करते रहें।

"परमात्मा पर विश्वास रखें और उचित काम करें।"

श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय

अलावलपुर (जिला जालन्धर)—144301

आर्य समाज रामपुरा कोटा के चुनाव सम्पन्न

गत दिनो आर्य समाज कोटा नगर का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न प्रकार से कार्यकारिणी निर्वाचित की गई :—

प्रधान—सोमेश्वर जी मुखिजा
उप प्रधान—श्री कृष्ण सावर्ण,
—[illegible] देवी,
—चिरंजीलाल जी,
—गोपीचन्द जी,
मन्त्री—भगवती प्रसाद ब्यास
उप-मन्त्री—राम दयाल आर्य वीर,
चावकरण जी बाहेती।
कोषाध्यक्ष—कल्याणमल मित्तल,
पुस्तकालयाध्यक्ष—वृजनन्दन मठ-सिहला
आर्य वीर दल अधिष्ठाता—रामदयाल आर्य वीर
आडीटर—प्रह्लाद कृष्ण भार्गव।
अन्तरंग सदस्य—पुष्पा मुखिजा, श्रीमती रामप्यारी देवी, भगवती देवी, प्रभुदयाल शर्मा।

—रामदयाल आर्य वीर
उपमन्त्री

आर्य समाज रामा-मण्डी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज रामामण्डी (भटिण्डा) का वार्षिक चुनाव सर्व-सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री [illegible] जी।
उप-प्रधान—श्री [illegible] जी।
मन्त्री—श्री बलदेव कृष्ण जी।
उप-मन्त्री—श्री देसराज जी।
कोषाध्यक्ष—श्री बसन्त लाल जी।
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार जी,
अन्तरंग सदस्य—सर्व श्री भगवान दास जी, बनारसी दास जी, मनसाराम जी, धमपाल जी, हंसराज जी, विजय कुमार जी, विद्याधर जी, वेद प्रकाश जी, सत्यपाल जी, सोमनाथ जी।

—बलदेव कृष्ण
मन्त्री

आर्य समाज भटिण्डा में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज भटिण्डा में वेद प्रचार सप्ताह 9 अगस्त से लेकर 16 अगस्त तक बड़ी धूम-धाम के [illegible] [illegible]

(2 पृष्ठ का शेष)

वैदिक धर्म समाज की व्यवस्था एव प्रचार के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

आपसे आशा है कि आप स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा सिद्धान्तो एव वर्तमान विकसित तक-निकी ज्ञान के मध्य समन्वय करके एक ऐसे सेतु का निर्माण करेंगे जिससे विश्व-विद्यालय अपनी पुरानी प्रतिष्ठा ही नहीं वरन् नये आयामो को भी प्रतिष्ठापित करेगा।

(5 पृष्ठ का शेष)

[illegible] है। [illegible] आर्य समाज [illegible] के सिद्धान्तों [illegible] है। [illegible] चाहिए।

इसी प्रकार अनेक आर्य समाजिक हिन्दु राष्ट्रीय संस्थाए ऐसी है जो राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में आर्य समाज को अग्रिम प्रधान कर सकती है। आर्य समाज उनका उचित सहयोग किस प्रकार प्राप्त करें ? यह भी एक विचार-णीय विषय है।

वस्तुत आर्य समाज के संगठन को सुदृढ करने के अनेक विषय विचारणीय है, जिन पर विद्वान् वक्ता अपने विचार व्यक्त कर सकते है।

(क्रमश)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 18, 26 श्रावण सम्वत् 2044 तदानुसार 9 अगस्त 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

परमात्मा विचित्र है ?

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ.प्र.)

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षु मित्रस्य वरुणस्याग्ने: ।
आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगत-
स्तस्थुषश्च स्वाहा । यजु. 7।42।

(चित्रं) विचित्रं, विचित्र, अद्भुत (देवानां-अनीकं) देवानां मुखम्, देवों का मुख, देवों में प्रधान, देवों में मुख्य (उत्-अगात्) उत्कृष्टतया, भली-भान्ति प्राप्त है। (चक्षु:) चक्षु,नेत्र है, (मित्रस्य) मित्र का, सूर्य का, (वरुणस्य) वरण करने के योग्य का, चन्द्रमा का, (अग्ने:) अग्नि का, ज्ञानी का, विद्वान् का। (द्यावा) द्यौ लोक (पृथिवी) पृथिवी लोक (तथा) (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्ष लोक को (आ-अप्रा) भली-भान्ति आप्लावित कर रहा है। (सूर्य) (वह) प्रकाश स्वरूप, प्रकाशक (आत्मा) आत्मा है, जीवन का कारण है (जगत:) जगत् का गतिशील का, प्राणियों का (तस्थुष: च) और अप्राणी अर्थात् जड़ का। (स्वाहा) सु+आहा) सुन्दर उच्चारण है, ठीक ही कहा गया है, ठीक कहा है।

प्रस्तुत मन्त्र का प्रथम शब्द 'चित्र' भगवान् की अद्वितीय शक्ति का वर्णन करता है। चित्रं, विचित्रं अर्थात् वह प्रभु विचित्र है। क्या सच-मुच प्रभु विचित्र है? संसार की प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि डालिए, प्रभु इन सभी से विचित्र है। यदि किसी वस्तु में प्रभु का गुण मिलेगा भी तो स्वल्प मात्रा में। पूर्णतया तो संसार के किसी भी पदार्थ में चाहे वह जड़ हो या चेतन प्रभु का कोई भी गुण नहीं मिलेगा। उदाहरण के लिये आकाश व्यापक है किन्तु वह व्यापक मात्र ही है, सर्व व्यापक नहीं। सर्व-व्यापक तो केवल प्रभु ही है, यहां तक कि व्यापक आकाश में भी व्यापक है, यह प्रभु की विचित्रता ही तो है। किसी भी प्रकार संसार का कोई भी पदार्थ उस जैसा नही। इसीलिए वेद 'चित्र' विशेषण द्वारा उसकी गुणावली का गान कर रहा है। प्रभु विचित्र तो है ही परन्तु उसकी विचित्रताएं किस प्रकार की हैं, उनका भी दिग्दर्शन मन्त्र में आगे कराया गया है।

देवानां-अनीकं देवों का मुख, समस्त देवों में मुख्य प्रधान है। है ही प्रधान, सन्देह को स्थान ही कहां है? संसार के जितने भी दिव्य पदार्थ हैं, उन सबसे बढ़कर दिव्यतायें हैं। सारे दिव्य पदार्थ उसी दिव्य देव की दिव्यता से देदीप्यमान हो रहे हैं। वही देव अपनी दिव्यताओं को संसार के विभिन्न पदार्थों में से विभिन्न रूपों में प्रस्फुटित कर रहा है। अग्नि में उसी का तेज है, वायु में उसी की गति, चन्द्रमा मे उसी की शीतलता है, सूर्य में उसी का प्रकाश, स्वर्ण में उसी की दमक है और हीरे मे उसी की चमक, हो भी क्यों नही—हिरण्यगर्भ जो ठहरा वह।

देव का एक अर्थ है विद्वान्। संसार के समस्त विद्वानों की विद्वता उस प्रभु की विद्वता के सामने राई के दाने के समान भी नही। विद्वानों के पास जो भी विद्वता है, वह आयी कहां से? आदि सृष्टि में कौन था, किसने मानव को ज्ञान दिया, विद्वता प्रदान की,विद्वान् कहलाने का अधिकारी बनाया !? वही था न—वही प्रभु जिसे वेद ने कहा है, "आनीदवातं स्वधया तदेकम्" वह अकेला बिना वायु के ही श्वास ले रहा था तथा "हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्" वह हिरण्यगर्भ: जो उत्पन्न हुए प्राणी मात्र का एक मात्र स्वामी है, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी सम्यक् प्रकारेण था। जो पुकार-पुकार कर कह रहा है कि "स्तुता मया वरदा वेद माता" वरदाना वेद माता मेरे द्वारा प्रस्तुत की गयी है। उस दयालु ने दया कर सृष्टि के प्रारम्भ मे ही मानव के कल्याण के लिए वेद ज्ञान प्रदान किया जिससे सृष्टि के प्रारम्भ में मानव विद्वान् बना और अब भी परम्परा से बनता चला आ रहा है। क्योंकि उस देव की कृपा से ही समस्त विद्वानों (देवो) को ज्ञान प्राप्त हुआ है अत: समस्त विद्वानों (देवों) में वही मुख्य है।

उत्-अगात् उत्कृष्टतया, भली-भांति प्राप्त है। अपनी व्याप्ती की शक्ति मात्र से, व्यापक होने के कारण से वह किसी से भी दूर नहीं। उसके लिये, उसकी खोज में नगर-2, जङ्गल-2 तथा पर्वत-2 भटकने की आवश्यकता नहीं है। वह प्रभु सर्व व्यापक होने के कारण प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक को प्राप्त होता है। उसकी प्राप्ति की इच्छा से किसी स्थान विशेष पर जाना या जाने के लिये प्रयत्न करना सर्वथा भूल है।

वह मित्र, वरुण और अग्नि का चक्षु है। मित्र अर्थात् सूर्य, वरुण अर्थात् चन्द्रमा तथा अग्नि जिस चक्षु से देख रहे है, वह प्रभु ही है। इन तीनों में जो प्रकाश है, जिस प्रकाश से ये तीनों प्रकाशित हैं, वह उस प्रभु ही का है। यह तीनों तो प्रकृति के परमाणुओं का संघात मात्र है और परमाणु अपने आप में प्रकाश रहित हैं। यदि परमाणुओं में प्रकाश होता तो वे प्रलयकाल में भी प्रकाश देते किन्तु उस समय तो 'तम आसीत्तमसा गूढम्' महान् अन्धकार से ढका हुआ अन्धकार था। इस समय जो परमाणु संघात अर्थात् प्रकृति जन्य सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि में प्रकाश प्रस्फुटित होता रहता है, वह उसी प्रभु का है अत: प्रभु इन सब का चक्षु है।

जो लोग संसार में राग-द्वेष रहित होकर अर्थात् संसार के मित्र बन कर रहते है, वही प्रभु के मित्र होते हैं और प्रभु इन मित्रों का मार्ग-दर्शक होता है अर्थात् राग-द्वेष रहित निर्मल चित्त होने से ऐसे लोग ही प्रभु के ज्ञान से वास्तविक लाभ उठाते हैं। जो वरुण अर्थात् वरण करने के योग्य, उत्तम, गुण, कर्म, स्वभाव वाले लोग हैं, वह प्रभु उनका भी (चक्षु:) प्रकाश प्रदान करने वाला है। अग्नि अर्थात् जो विद्वज्जन हैं, प्रभु उनका भी (चक्षु:) मार्ग दर्शक है अर्थात् विद्वान् (विद्+वान्) जानने वाले उस प्रभु के ज्ञान से लाभ उठाते हैं।

पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ लोक में वह (आ-अप्रा) आप्लावित हो रहा है, भर रहा है,सर्वत्र व्याप रहा है। पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ लोक में कोई भी स्थान ऐसा नही, जहा प्रभु न हो, जहां उसकी गति न हो, जहां उसका वास न हो। वह न केवल (आ-प्रा) आप्लावित हो रहा है अपितु (आ)" आसमन्तात्" सब ओर से सर्व प्रकारेण, भली-भान्ति हो रहा है। उसकी व्याप्ती सीमित नही है, ऐसा नही कि वह पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ के किसी क्षेत्र में, स्थान विशेष में, कुछ दूरी तक व्याप कर रह गया हो। समस्त भूमण्डल, समस्त द्यौ लोक तथा सम्पूर्ण अन्तरिक्ष लोक उससे ओत-प्रोत है।

वह सूर्य अर्थात् प्रकाश स्वरूप तथा समस्त संसार का प्रकाशक समस्त चेतन और जड़ का, संसार के समस्त जड़ और चेतन पदार्थों का निरन्तर सर्वत्र व्यापक होने से "अतति सर्वत्र व्याप्नोतित्यात्मा" जीवन का कारण, अस्तित्व को बनाये रखने वाला अर्थात् आत्मा है। संसार में जो कुछ भी दृष्टिगोचर हो रहा है, चाहे वह जड हो या चेतन (जगत: तस्थुषश्च) सबका अस्तित्व केवल उस प्रभु के कारण से है। उसी की शक्ति है जो यह सब पसारा अस्तित्व में है। उस सर्वोत्पादक और सर्वनियन्ता की शक्ति के बिना वह संसार कुछ भी नहीं अत: वेद ने उसे

(शेष पृष्ठ 8 पर)

दान पर ही सारा विश्व आधारित है ?

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

ओ३म् यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि ।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिर: ॥1॥ (ऋग्वेद 1-1-6)

हे (अङ्गिर) प्राणो के प्राण ? (अङ्ग) अङ्गवत् प्रिय (अग्ने) अग्रनायक प्रभो ? (यत्) जो (त्वम्) आप (दाशुषे) दानशील की दान शीलता के प्रतिफल स्वरूप उसका (भद्रम्) कल्याण (करिष्यसि) करते हो । (तत्) वह (तव) आपका (सत्यमित्) सत्य एव अटल सिद्धान्त है ।

दानतो वैरिणोऽपि स्युर्मित्राण्येव न संशय· ।
दाने सर्वमिदं विश्वं प्रतिष्ठति सर्वदा ॥2॥

दान करने से वैरी भी मित्र हो जाते हैं इसमे कोई सशय नही । क्योकि यह समस्त विश्व सदा दान मे ही प्रतिष्ठित रहता है ।

प्रशंसन्ति प्रजा नित्यं कर्णबल्यादिकानिह ।
वदान्या दानत: स्वर्गं व्रजन्ति सतत नरा ॥3॥

लोग कर्ण और बली आदि दानियो की यहा सदैव प्रशसा करते रहते हैं । क्योकि दानी लोग सतत दान के प्रभाव से ही स्वर्ग को जाते हैं ।

यज्ञा· सम्पूर्णतां यान्ति दानतो दक्षिणात्मन ।
दातारं सर्वभूतानि श्रयन्ति पितरं यथा ॥4॥

दक्षिणा देने वाले, यजमान के यज्ञ दान से सफल हो जाते हैं । दान देने वाले को सब प्राणी इस प्रकार अपना आश्रय बना लेते हैं जैसे पुत्र पिता को ।

दानेन प्राप्यते स्वर्गो दानेन सुखमश्नुते ।
इहामुत्र च दानेन पूज्यो भवति मानव, ॥5॥

दान से स्वर्ग मिलता है, दान से सुख प्राप्त होता है, तथा दान से ही मनुष्य इस लोक और परलोक मे पूजनीय हो जाता है ।

दानेन भूतानि वशीभवन्ति दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् ।
परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानैर्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति ।6।

दान करने से सब प्राणी वश मे हो जाते हैं और दान से वैरी भी नष्ट हो जाते हैं । दूसरा पुरुष भी दान से बन्धु बन जाता है । दान ही सब सकटो को हरता है ।

न दानत· किञ्चिदिहान्यदस्ति जनस्य दु खक्षतये निमित्तम् ।
संवर्धनीयं तदत प्रयत्नान्निरन्तरं मित्रमिवोपकारि ।7।

मनुष्य के दु:ख दूर करने के लिए दान के अतिरिक्त इस ससार मे कोई अन्य वस्तु नही है । इस कारण इस दान को प्रयत्न से बढाते रहना चाहिये । क्योकि यह दान निरन्तर मित्र की भान्ति उपकार करने वाला है ।

गौरवं प्राप्यते दानान्न तु वित्तस्य संचयात् ।
स्थितिरुच्चै. पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः ।8।

मनुष्य धन के दान से ही गौरव पाता है, न कि धन के सचय से । जैसे मेघो की स्थिति दान से ऊची है और समुद्रो की इकट्ठा करने से नीची अवस्था होती है ।

यद्ददाति यदश्नाति तदेव धनिनो धनम् ।
अन्ये मृतस्य क्रीडन्ति दारैरपि धनैरपि ।9।

मनुष्य जो देता है और जो खा लेता है धनी का धन वही है । अन्यथा जब मनुष्य मर जाता है तो उसकी नारी तथा धन से दूसरे लोग ही क्रीडा किया करते हैं ।

यद्ददासि विशिष्टेभ्यो यच्चाश्नासि दिने दिने ।
तत्ते वित्तमहं मन्ये शेषमन्यस्य रक्षसि ॥10॥

तू जो धन विद्वानो को देता है, अथवा जो दिन प्रतिदिन खा पी लेता है, मैं तो उसी धन को तेरा धन मानता हू । शेष तो किसी अन्य का धन है जिसकी तू रक्षा कर रहा है ।

भवन्ति नरका: पापात्पापं दारिद्र्यसंभवम् ।
दारिद्र्यमप्रदानेन तस्माद्दानपरो भवेत् ॥11॥

नरक पाप से होते हैं, और पाप दरिद्रता से उत्पन्न होता है । दरिद्रता कन्जूसी से होती है । अत: मनुष्य को दानशील होना चाहिये ।

ग्रासादपि तदर्धञ्च कस्मान्नो दीयतेऽर्थिषु ।
इच्छानुरूपो विभव: कदा कस्य भविष्यति ॥12॥

एक ग्रास अथवा उसका भी आधा भाग याचको को क्यो नही दे देते ? इच्छा के अनुसार धन कब और किसको मिलेगा । अर्थात् जितना है उसी मे से दान करने की प्रवृत्ति बनानी चाहिए ।

अनुकूले विधौ देयं यत: पूरयिता हरि. ।
प्रतिकूले विधौ देयं यत: सर्वं हरिष्यति ॥13॥

भाग्य अनुकूल होने पर यथा शक्ति दान करना चाहिए । क्योकि भगवान् सब न्यूनता को पूर्ण कर देंगे । यदि देव प्रतिकूल भी हो तो भी देना चाहिये, क्योकि देव सब कुछ हर लेगा । अत: हर लेने से प्रथम-प्रथम ही दान के द्वारा चला जाए तो अच्छा होगा । सम्भव है उसी दान के पुण्य से पुन: मिल जाये, परन्तु देव ने यदि हर लिया तो फिर नही मिलेगा ।

उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम् ।
तडागोदर संस्थानां परीवाह इवाम्भसाम् ॥14॥

कमाये हुए धनो का त्याग करना ही उनकी सच्ची रक्षा है । जैसे तालाब मे इकट्ठा हुआ जल निकल जाने से नया जल आ जाता है, और निर्मल तथा पवित्र रहता है ।

आयासशतलब्धस्य प्राणेभ्योऽपि गरीयस. ।
गतिरेकैव वित्तस्य दानमन्या: विपत्तय: ॥15॥

सैकडो प्रयत्नो से प्राप्त हुआ और प्राणो से भी प्रियतर जो धन है, उसकी गति का एक ही उपाय है कि दान किया जाए । अन्य सब उपाय तो विपत्ति स्वरूप हैं ।

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ।16।

धन की तीन ही गतिया होती हैं । (1) दान, (2) भोग, (3) नाश । जो व्यक्ति न दान करता है और न ही भोग करता है उसके धन की तीसरी गति अर्थात नाश ही होता है ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते सति विभवे नैव तस्य तद्द्रव्यम् ।
तृणमय कृत्रिम पुरुषो रक्षति सस्यं परस्यार्थे ॥17॥

धन होते हुए भी जो न तो धन देता है और न भोग ही करता है वह उसका धन नही है । ऐसे धन का स्वामी तो घास के बने हुए उस बनावटी पुरुष के तुल्य ही होता है जो कि खेती की रक्षा तो स्वय करता है परन्तु वह दूसरो के लिए ही करता है । न तो वह स्वय उसका दान हो करने मे समर्थ है और न भोग करने मे ही समर्थ है ।

दातव्यं भोक्तव्यं सति विभवे संग्रहो न कर्त्तव्यः ।
पश्यामि मधुकरीणां संचितमर्थं हरन्त्यन्ये ॥18॥

धन हो तो देना और भोगना चाहिए सग्रह नही करना चाहिए । मैं देखता हू कि शहद की मक्खियो के द्वारा इकट्ठा किए हुये अर्थ रूप मधु—शहद को दूसरे ही ले जाते हैं ।

सम्पादकीय—

क्या आर्य समाज पिछड़ जाएगा–2

आर्य समाज में भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए इस लिए एक अभियान की आवश्यकता है कि सारे देश में यह प्रश्न गम्भीर रूप से सामने आ रहा है कि देश में भ्रष्टाचार को कैसे समाप्त किया जाए। भू. पू. वित्तमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो अभियान प्रारम्भ किया है अब उसमें दूसरे राजनैतिक नेता भी सम्मिलित हो रहे है। यह कहना कठिन है कि उन्हे इसमें कितनी सफलता मिलेगी परन्तु देश में एक नया वातावरण बन रहा है कि भ्रष्टाचार समाप्त होना चाहिए। सरकार के सामने भी कई प्रकार की समस्याएं हैं। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि प्रधानमन्त्री के विरुद्ध भी कई प्रकार के आरोप लगाए जा रहे हैं। मै समझता हूं कि यह एक ऐसा विषय था जिस में आर्य समाज को अपने देश वासियो का नेतृत्व करना चाहिए था। आर्य समाज का इतिहास इस विषय मे ऐसा गौरवमय है कि जिस पर आर्य समाज जितना भी गर्व करे कम है। एक समय वह था जब कोई आर्य समाजी किसी न्यायालय में खड़ा हो जाता था और यदि वह कहता था कि वह आर्य समाजी है तो न्यायाधीश उसके ब्यान को मान लेता था। वैसे भी लोग दान देते समय आर्य समाज को प्राथमिकता दिया करते थे क्योकि वह समझते थे कि यह ही एक संस्था है जहां पाई पाई का हिसाब रखा जाता है और कोई भी व्यक्ति जनता के गाढ़े पसीने की कमाई का दुरुपयोग नहीं कर सकता था कई बार मै सोचता हूं कि हमारे पूर्वज करोड़ों की नहीं अरबों की आर्य समाज की सम्पत्ति बना गए हैं। बड़े-2 गुरुकुल बड़े-2 स्कूल और कालेज अनाथालाय और कई बड़े-2 आर्य समाज मन्दिर बना दिए गए। आज हम कोई नया भवन बनाना चाहें तो उसके लिए दान नहीं मिलता। यदि हम देखें कि पिछले बीस-पच्चीस वर्षों मे आर्य समाज ने कितनी नई सम्पत्ति बनाई है और उससे पहले कितनी बनी थी तो पता चल जाएगा कि स्थिति मे कितना अन्तर आ गया है। मैने ऊपर उस युग का वर्णन किया है जब लोग समझते थे कि आर्य समाज को दिया हुआ एक-एक पैसा सुरक्षित रहता है और इस का दुरुपयोग नहीं होता। आज यह स्थिति है कि आर्य समाज की कई संस्थाओं मे लाखो का घपला होता है। जो करते हैं उनकी पदोन्नति होती है और जो घपला होता है उस पर पर्दा डालने की कोशिश होती है और यदि कोई जांच कराई जाए तो उसे रुकवाने की कोशिश की जाती है। मैने ऊपर लिखा है कि आज तो प्रधानमन्त्री पर भी कई प्रकार के आरोप लग रहे है वह कहा तक ठीक है। इसका पता तो किसी जांच के बाद ही लगेगा परन्तु जब आर्य समाज की संस्थाओं में घपला होता है और जब बड़े-2 नेता उस पर पर्दा डालने की कोशिश करते हैं तो फिर यह सन्देह अवश्य पैदा होता है कि यह क्यो किया जा रहा है और उसी के साथ आर्य समाज की जो प्रतिष्ठा जनता में बनी हुई थी उस पर एक चिन्ह (निशान) लग जाता है और लोग पूछने लगते हैं कि क्या यह सब कुछ आर्य समाज की संस्थाओं में हो रहा है? श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जब गंगा के किनारे अपनी संस्थाएं बनाई थी तो वह चाहते थे कि इनका वातावरण भी गंगा की तरह शुद्ध और पवित्र हो और इसमें से जो विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके बाहर निकले उनका आचरण भी शुद्ध और पवित्र हो। लेकिन इन संस्थाओं की स्थिति आज वही बनी हुई है जो वर्षा के बाद गंगा की होती है।

मैं पिछले पांच छः वर्ष से लगातार कहता चला आ रहा हूं कि आर्य समाज में जो भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है उसे रोकना चाहिए परन्तु उर्दू की एक कहावत के अनुसार "नक्कार खाने में तूती की आवाज कौन सुनता है" इस लिए मैं निराश हो गया था अब जबकि सारे देश मे भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ हो गया है मैं समझता हूं कि आर्य समाज में भी जो भ्रष्टाचार शुरू हुआ है उसके विरुद्ध भी अभियान आरम्भ होना चाहिए। आर्य समाज इस धर्म युद्ध में पिछड़ नहीं सकता। मैं यह भी जानता हूं कि भारत सरकार के बोफोर्स काण्ड के अनुसार आर्य समाज में कई बोफोर्स हैं। विश्वनाथ प्रतापसिंह जी ने सरकार के बोफोर्स काण्ड के विरुद्ध आवाज उठाई तो उसे केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल से निकलना पड़ गया। मैं भी जानता हूं कि यदि मैंने भी यह आवाज उठाई तो सम्भवतः मुझे भी आर्य समाज से निकाल दिया जाए परन्तु मैं अब इसके लिए तैयार हूं। उस स्थिति मे अनुशासन का जो प्रतिबन्ध मुझ पर लगा हुआ है वह समाप्त हो जाएगा मैं सब कुछ आर्य जनता के सामने रख सकूंगा कि आर्य समाज में क्या-2 हो रहा है। मै यही चाहता हूं कि यह सब कुछ आर्य जनता के सामने आये। इसलिए कहना हू कि देश मे भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो अभियान प्रारम्भ हुआ है उसमे आर्य समाज को अपने देशवासियों का नेतृत्व करना चाहिए परन्तु नेतृत्व करने का अधिकार उसी स्थिति में मिलेगा यदि वह पहले अपना घर साफ करे। उसका गौरवमय इतिहास, उसकी प्रशसनीय परम्पराएं, उसके उन्नत सिद्धान्त और उसके महान् नेताओ ने समय-2 पर अपने आचार-विचार से जो लोगो को प्रभावित किया उन सबको सुरक्षित रखने के लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाज उसी प्रकार एक शुद्ध और पवित्र सस्था के रूप मे जनता के सामने आए जैसा कि वह पहले था।

—वीरेन्द्र

अपनी शक्ति को पहचानो

कमजोर का दुनिया म कोई साथ नहीं देता। सदा स कमजोर पीटते आए है। एक दिन देश मे आर्य सब से बलवान थे। विदेशी भी उन का लोहा मानते थे। एक समय वह था जब आर्यो का सारे ससार पर सार्वभौम राज्य था। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ मे आर्यो के अतीत का वर्णन करते हुए लिखा है-

"यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिस के सदृश भूगोल मे दूसरा कोई देश नही है। इसलिए इस का नाम "सुवर्ण भूमि" है। क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नो को उत्पन्न करती है। इसलिए सृष्टि के आदि मे आर्य लोग इसी देश मे आकर बसे। जितने भूगोल मे देश है सब इस की प्रशंसा करते हैं और आशा करते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात झूठी है। परन्तु आर्यावर्त देश ही पारसमणि है। जिस को लोहेरूपी दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते है।"

महर्षि के इन शब्दो मे कितनी मार्मिकता है। जिस देश को भारत के लोग हीन समझते थे और उन्हे स्वदेशी कोई भी चीज अच्छी नही लगती थी परन्तु महर्षि ने जब झकझोरा और भारत देश की महत्ता को बताया तो गाधी जी जैसे नेताओ से स्वदेशी का आन्दोलन चला दिया। महर्षि ने आगे लिखा—

"सृष्टि से लेके पांच सहस्र वर्षो से पूर्व समय पर्यन्त आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल मे सर्वोपरि एक मात्र राज्य था।"

महर्षि के यह शब्द सुन कर अनेको नौजवान पराधीनता की बेडियो को काटने के लिए मैदान मे कूद पडे। भारत के नौजवानो ने अगडाई ली और अंग्रेज का बिस्तरा गोल करके उसे समुद्र पार पहुचा दिया।

हमने आजादी प्राप्त की, 15 अगस्त सन् 1947 को भारत आजाद हो गया क्योकि भारत के लोगो ने अपनी शक्ति को पहचान लिया था और शक्तिशाली सिंह की तरह से अंग्रेजो पर टूट पडे थे। परन्तु आज फिर (हिन्दू) आर्य स्वार्थ मे पड कर अपना सब कुछ भूलता जा रहा है, न उसे अपने देश की याद रही है न धर्म की है न सस्कृति, जाति की है और न अपने आपकी। मुट्ठी भर मुसलमान और मुट्ठी भर इसाई तथा अन्य देशद्रोही देश को बर्बाद करने मे लगे हुए है। परन्तु आर्य (हिन्दू) एक टक उधर देख तो रहा है लेकिन अपनी शक्ति को भूल जाने के कारण कर कुछ नही रहा। पजाब मे इसे मौत के घाट उतारा जा रहा है। उत्तर प्रदेश मे इस पर बिजलिया टूट रही हैं। देश द्रोही दनदना रहे हैं वह देश को खण्ड 2 करना चाहते हैं। भारत को फिर से गुलाम बनाने के लिये विदेशी फिर मनसूबे बना रहे हैं। विघटनकारी विदेशिया के षड्यन्त्र चारो ओर रचे जा रहे हैं। कही किसी जाति को भडकाया जा रहा है कही किसी जाति को हथियार सप्लाई किए जा रहे हैं। कही विदेशियो की ओर स उन्हे धन दिया जा रहा है। कही जाति के नाम पर धर्म के नाम पर लोगो को गुमराह किया जा रहा है।

हम अपने ऋषियो, मुनियो योगी और महात्माओ को भी भूलते जा रहे हैं हमने अपने पूर्वजो के इतिहास को भी भुला दिया। वेद, उपनिषद् दर्शन शास्त्र और रामायण, महाभारत, मनुस्मृति को सिवाए भी हम भूल गए हैं। स्वार्थपरता ने हमे अन्धा कर दिया है। भारत के आर्यो (हिन्दुओ) उठो "उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्यवरान् निबोधत" जागो और अपनी शक्ति को पहचानो तुम्हारे बराबर ससार मे और कोई शक्तिशाली नही है। भारत तुम्हारा अपना देश है। इस देश के वासी तुम्हारे अपने भाई है चाहे वह देश के किसी भी कोने मे क्यो न रहते हो। अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार और अराजकता को जड से मिटा दो। अपने अतीत को पहचानो अपनी शक्ति को पहचानो। यदि नही पहचानोगे तो आततायी लोग ससार से तुम्हारा नामो निशान मिटा देंगे और तुम्हे नष्ट भ्रष्ट कर देंगे।

—सह-सम्पादक

आर्य समाज और राजनीति

लेखक—श्री मांगे राम जी आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

(गताक से आगे)

जिसके हाथ मे राज की डोर होगी और यदि वह वैदिक धर्म को पसन्द नही करेगा तो एक मिनट में हुक्म देकर उसका गला घोट देगा जैसे पूर्व का इतिहास साक्षी है और अभी कुछ वर्ष पहले युगान्डा के राष्ट्रपति अमीन ने अपने देश से सबका बिस्तरा बोरिया गोल करवा दिया था। सो सत्ताधारी क्या नहीं कर सकता। जिसकी लाठी उसकी भैंस, "जिसका घोरा उस का गोरा" अर्थात् जिसके हाथ मे सत्ता की डोर है जिसके पास पुलिस और फौज है, जिसके हाथ मे कानून है और हुक्म है वह सब कुछ कर सकता है। परन्तु आर्य समाज के हाथ मे अब तक कुछ भी नही है, वह एक वेद के मानने वाली जमात है जो परतन्त्र है क्योंकि उसके पास कोई फौज नही, कोई पुलिस नही, कोई कानून नही फिर वह भारत का क्या उद्धार कर सकती है? इसके हुए बिना वह सर्वदा पराधीन ही रहेगी, उसे कोई उभरने नही देगा। क्या यह सत्य नही है, इस पर आप थोडा विचार करे और भविष्य के लिये सोचें कि हमे कौन सा पग उठाना चाहिए।

अभी तक तो हम कुरीतियो और आडम्बरो को नही हटा सके। मृतक श्राद्ध और मूर्ति पूजा को नही मिटा सके। गो वध बन्द नही करा सके। शराब और मास जैसे पेय और भक्षण को दूर नही कर सके। सिनेमा की भ्रष्टता और अश्लीलता को दूर नही करवा सके। राष्ट्रभाषा और देव वाणी भारत मे, भारत की संस्कृति की भाषा, स्कूल और पाठशालाओं मे लागू नही करवा सके। आर्य परिवार संघ बना कर जाति-पाति के भूत को नही भगा सके। "हिन्दू" शब्द की जगह फिर से 'आर्य' शब्द नही ला सके। अल्पसंख्यक आयोग और आरक्षण नीति नही उठा सके। हरिजन शब्द को उठा कर भारतीय शब्द का प्रयोग नही करा सके। यह सब अराजकता का मूल है जिन्हे आर्य समाज को दूर करना और करवाना होगा और यह तब तक पूरा नही होगा जब तक आर्य समाज राजनीति में सामूहिक रूप से भाग नही लेगा। आर्य समाज के बिना अच्छी राजनीति नही बन सकती। अच्छे नियम आर्य समाज के बिना कोई नही बना पाएगा। हमने भारत उद्धार के लिए अभी तक आटे मे नमक के बराबर भी कार्य नही किया है, हम कर भी नहीं सकते क्योंकि हमारे हाथ मे राजसत्ता की डोर नही है सो असमर्थ हैं। राजसत्ता प्राप्त करने के लिए हम आर्यों को हैदराबाद सत्याग्रह की तरह एक होकर बहुत बलिदान देने होगे। आर्य समाज खत्म नही होगा बल्कि वैसे ही चमकेगा जैसे हैदराबाद सत्याग्रह के पश्चात चमका था। इस लिए मेरा सभी आर्य भाईयो से (ब्रह्मचारी से सन्यासी पर्यन्त) आग्रह है कि आप एक अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन कर देश की बिगड़ती हुई स्थिति (दशा) की ओर ध्यान देवें और उपाय सोचें .—

कि जब तक आर्य समाज राजसत्ता मे सामूहिक रूप से भाग नही लेगा और सत्ता को नही अपनाया तब तक वह कुछ नही कर पायेगा। और जो कुछ अब तक किया है, वह भी समाप्त हो जाएगा। इस मे शका की आवश्यकता नही।

अब समय आ गया है जबकि आर्य समाज को सामूहिक रूप से भारत की राजनीति मे भाग लेना चाहिए नही तो भविष्य मे आर्य समाज की बडी क्षति होगी और पश्चाताप के सिवा इसके हाथ कुछ नही लगेगा। आर्य समाज बुद्धिजीवी आर्य विद्वानो की संस्था है जो वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति की पोषक और रक्षक है। यह संस्था भारत के विभाजन के समय से अब तक प्राधीन ही चली आ रही है जब कि इस आर्य संगठन ने भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के लिये सबसे अधिक बलिदान दिये। आर्य समाज को अपने धर्म प्रचार करने, सम्मेलनादि मनाने की इस समय भी पूर्ण स्वतन्त्रता नही है। इसलिए परतन्त्रता की बेड़ियो को काटने और भारत मे सुराज्य स्थापित करने के लिये आर्य समाज को भारत की राजनीति में पदार्पण करके वर्तमान समय की राजनीति मे मोड लाना पडेगा। इस समय भारतीय राज (संविधान) में, आर्य समाज की कोई कीमत नही आकी जाती है और न इसकी किसी बात की सुनवाई है। भारत सरकार आर्य समाज को एक साम्प्रदायिक संस्था समझती है। इन हालात को देखते हुए भविष्य मे भी कुछ परिवर्तन की आशा नजर नहीं आती। इस समय आर्य समाज देश की बिगडी दशा को सुधारने के लिए अपनी दुहाई अपने मासिक और साप्ताहिक पत्रो द्वारा अलापता है जो कि आर्य समाज के मन्दिरो की चार दीवारी तक ही सीमित है, देश व्यापी नही। दूसरी कार्यवाही यह है कि 5, 7 आर्य नेताओ का प्रतिनिधिमण्डल बनाकर अपनी मागें सत्ताधारी सरकार को लिखित रूप मे सौंप देते हैं, जिसका औचित्य नाममात्र है। यह कोई स्थाई समाधान नही है क्योंकि इन्हे सरकार माने या न माने, यह उसकी मर्जी की बात है। अभी तक तो पजाब और कश्मीर के बारे मे सरकार ने आर्य समाज की कोई भी माग पूरी नही की है। आर्य समाज पराधीन है वह अपनी कोई भी माग सरकार से बलपूर्वक नही मनवा सकता। इससे साफ जाहिर है कि आर्य कर्णधारो की कितनी कद्र है सरकार की नजरो मे फिर भी आर्य समाजी नेता इस विधर्मी सरकार के पिच्छलग्गू बन कर इसकी चाटूकारिता और चापलूसी मे लगे हैं, जो हितकर नही है। विधर्मी को साथ देना पाप है, सो अपना कोई स्वतन्त्र संगठन स्थापित करें। आर्य समाज के हाथ मे देश की बागडोर नही है फिर भी वह राजनीति मे हस्तक्षेप करता है, यह एक विडम्बना नही तो क्या है। आर्य समाज राजनीति से दूर है जिसके कारण यह मार खा रहा है। स्वतन्त्रता के 40 वर्ष बीतने पर भी आर्य समाज देश की एक भी समस्या का हल नही कर सका, करेगा भी कैसे। इसके हाथ मे कोई कानून नही और न राजसत्ता, यह दीन है, अदीन नहीं। केवल राजसत्ता ही देश की सब प्रकार की समस्याओ को सुधार सकती है, दूसरा कोई नही, क्योंकि वह पराधीन है। आर्य नेताओ को इस पर विचार करना चाहिए यदि दुर्भाग्य से इस भारत की राजनीति की बागडोर कही मुस्लिम राजनेताओ के हाथ लग गई. तो मेरी भी चुप और तेरी भी चुप वाली लोकोक्ति चरितार्थ हो जाएगी। जैसा कि पाकिस्तान और बगला देश मे हो गया, वैसा यहा होते भी देर न लगेगी। फिर तो आर्य समाज के धार्मिक पत्र और नेताओ के शिष्टमण्डल आग की अगन मे भस्म हो जाएगे, इसमें सन्देह नही यदि आर्य समाज भारत और उसकी संस्कृति, भविष्य में आने वाली सन्तान की रक्षा करना अपना परम कर्त्तव्य समझता है तो उसे भारत की राजनीति मे कूदना पडेगा, इसी मे देश, धर्म और जाति की भलाई निहित है। इसके बिना दूसरा कोई विकल्प शेष नहीं है। राजनीति धर्म का मूल है, इससे दूर रहना आर्य समाज की भूल है और महर्षि के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। इसलिए "आर्य राजसभा" स्थापना कर अपनी स्वाधीन पार्टी बना कर चुनाव लडें। आर्य समाजी नेता जो इस समय दूसरी राजकीय पार्टियों में स्वतन्त्र रूप से कार्यरत हैं, वह उन से त्याग पत्र देवें और आर्य समाज के मंच पर आए। क्या आर्य समाज के नेता भारत का प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति बनना पसन्द नहीं करते? यदि नहीं, तो क्यों? क्या राजनीति मे भाग लेना वेद विरुद्ध है? यदि नही, तो क्यो आर्य समाज इससे विमुख है? यह भूल नहीं तो और क्या है? इस पर विचार करें। राजसत्ता अपनाये बिना, महर्षि का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य का स्वप्न, कृण्वन्तो विश्वमार्यम का नारा, गुरुकुलीय शिक्षा, भारतीय संस्कृति और सभ्यता, संस्कृत और राष्ट्रभाषा की रक्षा होना असम्भव है। आर्य नेता गोष्ठी द्वारा इस पर विचार करें और उचित पग उठावें। यही मेरी उन से नम्र विनती है।

गुरु विरजानन्द ट्रस्ट की सहायता करें

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर (पंजाब) की स्थापना वेद तथा संस्कृत के प्रचार प्रसार हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु पूज्यपाद ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी की जन्म स्थली करतारपुर म उन्ही की स्मृति मे महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की सत्प्रेरणा तथा स्वामी विज्ञानानन्द जी के सचालन मे ई. सन् 1970 मे चार ब्रह्मचारियो के प्रवेश के साथ हुई।

ब्रह्मचारियो के दृष्टिगत विद्याधिकारी (मैट्रिक) तक के लिए हमने विद्यालय का परीक्षा सम्बन्ध गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के साथ कई वर्ष पूर्व ही कर लिया था। अब प्राज्ञ, विशारद तथा शास्त्री श्रेणियो के लिये गुरु नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर के साथ सम्बद्धता का प्रयास चल रहा है। टाईपिंग तो बडी कक्षाओ के छात्र पहले से ही सीखते हैं अब इसी के साथ 'शास्त्री' कक्षा के छात्रो के लिए 'मशीन शिक्षा' को भी अनिवार्य कर दिया है। इस वर्ष आदिवासी क्षेत्र के 20 छात्रो को आर्य समाज के सैद्धान्तिक प्रचारक बनाने के लिए शिक्षित करने के उद्देश्य से प्रविष्ट किया है। विद्यालय का इन छात्रो के आने से पूर्व ही यज्ञशाला-ब्रह्मचारियो के भोजन-अध्यापको के वेतन एव अन्य व्यवस्थाओ पर लगभग 10।11 हजार रु. प्रतिमाह व्यय आता है। अब चू कि उडीसा से आए उक्त छात्रो का समस्त व्यय (वस्त्र, भोजन, आवास, शिक्षा, पुस्तक, औषधादि) विद्यालय ही वहन करेगा। अत: 4-5 हजार रुपये मासिक का अतिरिक्त भार पडेगा।

अत: सहृदय दानी महानुभावो से निवेदन है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस पवित्र कार्य के लिए अधिक से अधिक दान भेजें और मासिक व वार्षिक सहायता तथा अन्य अवसरों पर इस संस्था के लिए दान निकालें-चातुर्मास व मितस-अमी

चिकित्सा विज्ञान कुछ विचारणीय तथ्य

लेखक—श्री आचार्य वेदभूषण जी अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद—27

ज्ञान अनन्त है। सब कुछ जान लेने पर अनजाना बहुत कुछ रह जाता है। चिन्तन से ज्ञान विज्ञान की परतें खुलती ही चली जाती है। चिन्तन मे ज्ञान खुलता चला जाता है। इसीलिए वेदरूपी ज्ञान को मन्त्रो मे बांधा गया है। मन्त्र कस्मात्—मननात्। मनन और चिन्तन से ज्ञान प्रगट होता है चिन्तन का ही दूसरा नाम मन्त्र है।

इस सृष्टि मे सबसे अधिक आश्चर्य की बात है—जड और चेतन का अद्भुत संयोजन। शास्त्रो मे चली आ रही एक उक्ति ज्ञान-विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ मूलसूत्र है। वह उक्ति है—"यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" हम इसे उल्टा कहेंगे कि—यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे। क्योकि ब्रह्माण्ड पहले बनता है फिर पिण्ड का निर्माण होता है।

क्या जैसा पिण्ड है वैसा ही ब्रह्माण्ड है? यह बात सत्य है। वास्तव मे जिसने इस सत्य को जान लिया वह बहुत कुछ जान जाता है।

जितना हम गहराई मे उतरते चले जाए गे उतना यह उक्ति साकार होती नजर आती है। तथा ज्ञान विज्ञान के अनेक रहस्य खुलते चले जाते हैं। वेदो मे एक शब्द अनेक स्थलो पर आता है। वह शब्द है "अश्विनी" जैसे रथ मे दो घोडे जोडे जाते हैं युग्म अथवा युगल। वैसे ही इस सृष्टि मे युग्म रूप से सारा चक्र ही युग्म रूप से संयुक्त दृष्टिगोचर होता है। इसे ही अश्वि या द्विवचन मे अश्विनौ कहा जाता है।

जैसे आंख और प्रकाश की जोडी है। कान और शब्द की जोडी है। नाक और गन्ध की जोडी है। मस्तिष्क या बुद्धि की जोडी ज्ञान है वेद है।

ये युग्म तोड दिए जाए तो संसार निरर्थक हो जाएगा। आंखें तो ठीक हो पर प्रकाश न हो। या प्रकाश हो और आंख न हो तो दोनो ही स्थितियां निरर्थक ही कही जाएगी। सार्थकता तो तब है जब आंख भी होगी और प्रकाश भी होगा। ऐसे युग्म ही "अश्विनी" कहाते हैं। इनका परस्पर गहरा और सूक्ष्म सम्बन्ध है।

आंख और प्रकाश ये अग्नि तत्व के दो तट हैं। आंख स्थूल रूप है प्रकाश सूक्ष्म रूप है। प्रकाश और आंख के मध्य मे एक सूक्ष्म महत्व है। अणुसे महान्। सूक्ष्म परमाणु से महान् उत्पन्न होता है। उत्पन्न होना या उत्पत्ति केवल एक प्रयोग है। क्योकि संसार मे कुछ भी उत्पन्न नही होता है। उत्पन्न करने की क्षमता न आत्मा मे है न परमात्मा मे। वहां जिसे हम उत्पत्ति या नाश कहते हैं वह सब रूपान्तरण मात्र है।

यह सृष्टि केवल सर्वथा केवल परमाणु का रूपान्तरण मात्र है। मूल प्रकृति अक्षर है। क्षर रहित अविनाशी है। जो कुछ भी बनता बिगडता प्रतीत होता है यह दोनो भी रूपान्तरण मात्र हैं। बिना युग्म के जोडे के सृष्टि प्रलय रूप मे बदल जाती है। जैसे युग्म बनता है सृष्टि का आरम्भ हो जाता है। इन युग्मो के भी दो रूप हैं। एक सूक्ष्म दूसरा स्थूल।

स्थूल सूक्ष्म का रूपान्तरण मात्र है। सूक्ष्म से स्थूल बनता है और स्थूल से ही सूक्ष्म हो जाता है। आत्मा और प्रकृति का संयोग स्थूल है और आत्मा और परमात्मा का संयोग सूक्ष्मतम है। इस प्रकार जीवन स्थूल है और मोक्ष सूक्ष्म है।

स्थूल और सूक्ष्म के भी तीन तीन रूप हैं। उत्तम मध्यम और अधम। इस प्रकार यह सब जो कुछ दीख रहा है वह नौ नौ विभागो मे विभक्त है। एक दो और तीन इनका मेल ही नौ है। नौ ही रूप हैं इस स्थूल के और नौ ही रूप हैं सूक्ष्म के। इस प्रकार 18 उपभेद हैं। "यत्किंच जगत्यां जगत" जो कुछ भी हमे दीखता है या जाना जाता है।

यह सारा विश्लेषण हमे सूक्ष्म की ओर ले जाता है। हम इस सूक्ष्मता मे न जाकर कुछ स्थूल की ओर आते हैं।

मानवीय संसार मे भी युग्म ही कार्य करता है। जैसे रेडियो है या टेलीविजन। एक ओर से प्रसारण और दूसरी ओर ग्रहण। ग्रहण और प्रसारण की प्रक्रिया भी एक ही मूल के दो रूप हैं। इन दोनो रूपो के पीछे एक दृश्य या अदृश्य चेतना सत्ता कार्य करती है। रेडियो स्टेशन से वार्ता ब्राडकास्ट की जाती है प्रसारित की जाती है। उसके छोटे रूप रेडियो सैट प्रसारण को ग्रहण करते हैं। प्रसारण और ग्रहण प्रधान दो मन्त्र हैं। कहने को दो हैं युग्म है किन्तु सूक्ष्मता से देखें तो ये भी एक मे ही युग्मत्व लिए हुए हैं। जो रेडियो स्टेशन प्रसारण करता है वह भी चेतन सत्ता से ग्रहण कर फिर उसे प्रसारित करता है। अर्थात् ग्रहण और प्रसारण दोनो प्रक्रियाए रेडियो स्टेशन मे भी और वही ग्रहण और प्रसारण रेडियो सैट मे भी। किन्तु रेडियो स्टेशन की प्रसारण क्षमता प्रबल है और ग्रहण क्षमता न्यून। रेडियो मे ग्रहण शक्ति प्रधान है और प्रसारण भी गौण। इसी क्षमता को वैदिक भाषा मे 'होता' कहते हैं। होतृत्व शक्ति हु-दानादनयो अर्थात आदान और प्रदान इसी आदान प्रदान को यज्ञ भी कहा जाता है।

इस सृष्टि मे ठीक ऐसे ही युग्म हैं। ब्रह्माण्ड और पिण्ड। ब्रह्माण्ड परमात्मा से ग्रहण कर पिण्ड के लिए शक्ति प्रसारित करता है। पिण्ड उसे ग्रहण करता है। ब्रह्माण्ड पिण्ड का यह व्यापार ही सृष्टि है।

ज्ञान विज्ञान ने अब इस सूक्ष्म तकनीक का स्पर्श किया है। धरती पर बैठे-बैठे जैसे वह आकाशीय उपग्रहो का संचालन, निर्देशन, संशोधन करने मे समर्थ है ठीक ऐसा ही सम्बन्ध ब्रह्माण्ड और पिण्ड मे भी है।

विचार करते करते हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि—ब्रह्माण्डीय शक्तियां ही हमारे पिण्ड का संचालन करती है। ब्रह्माण्ड को विकृति से पिण्ड मे विकृतियां उपजती है। आजकल का चिकित्सा विज्ञानी केवल पिण्ड तक ही दृष्टि दौडाता है। उसे अब पिण्ड से अधिक से अधिक ब्रह्माण्ड के शरीर की ओर ध्यान देना होगा।

ब्रह्माण्डीय विकिरण शक्ति किस प्रकार पिण्ड को नियन्त्रित करती है इस रहस्य को खोजने की आवश्यकता है।

स्थूल रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि इस ब्रह्माण्ड मे चार घोडे जुते हैं। अश्व शब्द का अर्थ है एंजिन। फिर चाहे घोडा हो या धातु से निर्मित घोडा या एंजिन।

यह ब्रह्माण्ड चार इंजनो से युक्त यान है। एक एंजिन है सूर्य जो इसमे सबसे मुख्य है। अपने सौर मण्डल मे। दूसरा एंजिन है वायु। तीसरा एंजिन है पृथ्वी चौथा एंजिन है समुद्र या पानी। इन चारो इंजिनो के सहारे हमारा सौर मण्डल आकाश मे गतिशील है।

इसी प्रकार हमारे पिण्ड मे या देह मे भी चार एंजिन है। जिसमे सबसे मुख्य यन्त्र है मस्तिष्क। बुद्धियन्त्र। हमारे पिण्ड मे यह सबसे ऊपर है ठीक सूर्य के ही समान।

दूसरा पिण्ड का एंजिन है हृदय यन्त्र। इसका संचालन वायु से होता है। तीसरा यन्त्र है यकृत या लिव्हर। जिसका संचालन मिटटी से अर्थात अन्न से होता है। चौथा एंजिन है गुर्दा वृक्क या किडनी। इसका संचालन जल से होता है?

विचार करने से स्पष्ट होता है कि मस्तिष्क का संचालन और शक्ति से सूर्य मे होता है। दोनो मे सूक्ष्म तरंगो का सम्बन्ध है। इनका उचित समन्वय ही स्वास्थ्य का मूल आधार है।

जब इनका संतुलन बिगडता है तब हम अस्वस्थ होते है। इन चारो पिण्ड के एंजिनो का सीधा गहरा सम्बन्ध ब्रह्माण्ड के चारो एंजिनो से है। जब तक हमारे चिकित्सक दोनो केन्द्रो के रहस्य को नहीं जान लेंगे तब तक वे हमारी आयु की रक्षा नही कर पाएंगे।

हमारी प्राचीन यज्ञ चिकित्सा पद्धति इन दोनो केन्द्रो को एक ही क्रिया से सबल बनाने मे समर्थ थी। आजकल का चिकित्सा विज्ञान अभी पंगु व एकांगी है। क्या चिकित्सा विज्ञानिक इस दिशा मे गहराई से सोचेंगे?

इस रहस्य को जान लेने व इसमे दक्षता प्राप्त कर लेने से वे दूर बैठे 2 भी रोगी के शरीर को वैसे ही स्वस्थ व अनुशासित कर सकेंगे जैसे कि जमीन पर बैठ कर भू वैज्ञानिक उपग्रहो को नियन्त्रित कर रहे है। आशा है चिकित्सा विज्ञानी इस दिशा मे गम्भीरता से सोचेंगे।

स्त्री आर्य समाज मोगा का वार्षिक चुनाव

स्त्री आर्य समाज मोगा का वार्षिक चुनाव 4 जुलाई 1987 को सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्रीमती विद्यावती जी मूद,

उप-प्रधाना-श्रीमती किरण मल्होत्रा जी, श्रीमती स्वर्णलता जी।

मन्त्री—श्रीमती विमला अरोडा।

उप मन्त्री—श्रीमती मुकेश सिंगला,

कोषाध्यक्ष—श्रीमती शशी अग्रवाल,

मन्त्री

आर्य समाज की भावी रूपरेखा–२

बुद्धिजीवी सम्मेलन की आवश्यकता

लेखक—डा प्रशान्त जी वेदालंकार 7/2 रूपनगर दिल्ली

(गतांक से आगे)

स्मरण रखिए बिना संगठन को सुदृढ बनाए हम अपने उद्देश्यो को प्राप्त करने म सफल नही हो सकते । 'संघ ये शक्ति कलीयुगे' इस उक्त के अनुसार हमे अपना संगठन बहुत सुदृढ बनाना है।

मेरे पास आए पत्रो मे एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया है वह है बुद्धिजीवी सम्मेलन क बाद आर्य समाज की भावी रूपरेखा को क्रियान्वित किस प्रकार किया जाएगा ? क्योकि यदि प्रस्तावित गोष्ठी के निर्णयो को क्रियान्वित न किया गया तो यह केवल निरर्थक बुद्धि व्यायाम ही कहलाएगा। इसी कारण इस बुद्धिजीवी सम्मेलन मे एक गोष्ठी क्रियान्वय पर भी रहेगी। हम सभी प्रतिनिधियो से यह आशा रखगे कि वे आर्य समाज [illegible] के प्रति [illegible] सभाओ से [illegible] निर्णयो को अपने प्रभाव से क्रियान्वित कराए। हम पत्र पत्रिकाओ व वक्ताओ के माध्यम से भी [illegible] वातावरण बनाएंगे कि एक भी आर्य समाज अथवा प्रतिनिधि सभा उनकी अवहेलना न कर सके। हम यह भी प्रयत्न करग कि क्रियान्वयन गोष्ठी मे प्रतिनिधि सभाओ व सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारी भी भाग ल और उन महत्वपूर्ण निर्णयो मे वे भी भागीदार हो प्रस्तावित गोष्ठी के एक वर्ष के बाद समीक्षा करने के लिए एक अन्य गोष्ठी का आयोजन करगे और जिस ज्योति को हम प्रस्तावित विचार गोष्ठी मे प्रज्वलित करेंगे उसे प्रकाशित रखने का हमारा निरंतर प्रयत्न रहगा।

मैंने अपने पिछले लेख म बुद्धिजीवी सम्मेलन का स्वरूप पाठको के सम्मुख प्रस्तुत किया था। इसम मैंने लिखा था कि उक्त तीनो विचारणीय विषयो पर कुछ अधिकृत विद्वान अपना वक्तव्य लिखित रूप मे प्रस्तुत करेंगे और प्रतिनिधि उन पर विचार विमर्श द्वारा आर्य समाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करग। म चाहता था कि पाठक उन विद्वानो क नाम सुझाए जिनका प्रस्तावित विचार गोष्ठी मे लिखित वक्तव्य पढने के लिए कहा जाए। मुझे यह लिखते हुए दुख हो रहा है कि मेरे पास मेरे लेख का प्रतिक्रिया म जो पत्र आए हैं, उनम उन्होने उन विद्वानो के नाम नही लिखे जिनको इस बुद्धिजीवी सम्मेलन मे भाग लेना चाहिए। मुझे विश्वास है कि अब पाठक मेरी इस विषय म भी सहायता अवश्य करेंगे।

एक प्रश्न यह है कि बुद्धिजीवी शब्द का अर्थ क्या है ? तथा प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन मे भाग लेने का अधिकार किस व्यक्ति को है ?

सामान्यत जो बुद्धि के द्वारा अपनी आजीविका चलाते हैं उनको बुद्धिजीवी कहा जाता है जिनमे अध्यापक प्राध्यापक वकील चिकित्सक अभियंता, लेखक पत्रकार आदि आते है। पर प्रस्तुत प्रसंग म हम उन सबको बुद्धिजीवी मानते है जो आर्य समाज की उन्नति के लिए अपनी बुद्धि द्वारा कुछ सोचते रहते हैं। जो दिन रात आर्य समाज की उन्नति के लिए निरंतर चिन्तनशील रहते है। अत प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन का कोई भी ऐसा व्यक्ति प्रतिनिधि बन सकता है जो आर्य समाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने का इच्छुक है।

बुद्धिजीवी पर यह भी आरोप है कि यह केवल बातूनी होता है, करता धरता कुछ नही। पर हम विष्णु गुप्त की "उक्ति क्रियावान स एव विद्वान (पंचतन्त्र) अर्थात जो क्रियाशील है वही विद्वान है—उक्ति के अनुसार बुद्धिजीवी की परिभाषा करते है। इस सम्मेलन मे हमे बातूनी लोगो की आवश्यकता नही है।

हमने प्रतिनिधियो से 51 रुपये प्रतिनिधि शुल्क मांगा है जिसका उपयोग उन प्रतिनिधियो के लिए ही होगा।

इस सम्मेलन को सफल बनाने मे 51 हजार रुपयो को एक छोटी राशि के व्यय होने का अनुमान है। वक्ताओ के यातायात तथा विशिष्ट गोष्ठियो के आयोजन आदि मे इतना व्यय होना सामान्य बात है। गोष्ठी मे पढ़ जाने वाले पत्रो को साइक्लोस्टाइलिंग तथा बाद मे पुस्तक रूप देने मे भी उस पर व्यय होता है। मुझे विश्वास है कि आर्य समाज के भावी कार्यक्रमो के निर्धारण के लिए होने वाले इस विचार यज्ञ मे आप अपनी आहुति अवश्य डालेंगे।

हमने हसराज कालिज दिल्ली की केनारा बैंक की शाखा मे आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के नाम से एक खाता खोल दिया है, कृपया 'प्रतिनिधि शुल्क' तथा सम्मेलन सहायता राशि उक्त नाम से ही भेजें।

प्रस्तावित विचार गोष्ठी के आयोजन मे सामान्यत 6 माह का समय और लगेगा। हम उन महानुभावो की सहायता भी करनी चाहिए जो इस विचारगोष्ठी के आयोजन मे हमारे सहायक हो सक।

अन्त मे हम सार्वदेशिक साप्ताहिक (5 अप्रैल) मे आर्य समाज का भविष्य शीर्षक से जो सम्पादकीय लिखा है उसे उद्धृत करना चाहते हैं। उसमे लिखा है —

आर्य समाज की स्थापना शताब्दी हम मना चुके हैं और हमने अपना सारा लेखा-जोखा देखा उसमे क्या उपलब्धिया रही उन पर विचार भी किया। किन्तु आर्य समाज के कार्य एवं भविष्य के विषय मे हम उतने चिन्तित न थे जितने होने चाहिए ? आज देश के विभाजन के पश्चात् असाम्प्रदायिक राष्ट्र की घोषणा ने आर्य समाज की स्थिति को कुछ विचारणीय प्रश्नो के घेरे मे लाकर खड़ा कर दिया है।

—"स्वराज्य प्राप्ति के बाद आज आर्य समाज तीसरे युग मे चला है आज की नई परिस्थितियो मे उसे फिर से अपना मार्ग निर्धारित करना होगा। केवल पूर्व पुरुषो के नाम पर ढिंढोरा पीटने से काम नही चलेगा। यदि हमने अपनी गति का उचित मार्ग नही खोजा तो हम पिछली ख्याति को भी खो बैठेंगे और आर्य समाज का भविष्य भी खतरे मे पड़ जाएगा।

वस्तुत यह समय आर्य समाज की कठोर तपस्या कार्यशीलता की परीक्षा है। यदि उसने हमारे हृदय की तन्त्री को झकृत कर दिया तो बीहड़ विपत्तियो व बाधाओ के बीच मे से भी आर्य समाज अपना मार्ग निकाल लेगा ?।

बुद्धिजीवी सम्मेलन को आयोजित करके हम आर्य समाजियो के हृदय मे उसी तन्त्री को झकृत करना चाहते हैं ताकि बीहड़ विपत्तियो व बाधाओ के बीच मे से भी आर्य समाज अपना मार्ग निकाल लें। मुझे पूरा विश्वास है कि आर्य जगत इस महान यज्ञ को सफल बनाने के लिए मुझे तन मन धन से अपना सहयोग देगा।

आर्य समाज सुजानपुर में वेद कथा

आर्य समाज सुजानपुर (गुरदासपुर) मे 1? जुलाई से 26 जुलाई तक ज्ञान की गंगा बहती रही। प्रतिदिन प्रातः साय सामवेद परायण यज्ञ चलता रहा। श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब यज्ञ के ब्रह्मा थे और उन्ही के प्रवचन लगातार होते रहे। पूर्णाहुति के अवसर पर सैकड़ो स्त्री पुरुषो ने यज्ञ मे भाग लिया तथा अन्त मे यज्ञ शेष बांटा गया।

यह सारा कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर सभा के लिए स्त्री, पुरुषो की ओर से 500 रुपये वेद प्रचार राशि भेंट की गई।

—[illegible] प्रधाना

आर्य मर्यादा का कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा साप्ताहिक का कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक 16 अगस्त को प्रकाशित हो रहा है। मैगजीन साईज आकर्षक टाईटल पर, बढ़िया कागज पर प्रकाशित यह विशेषांक बहुत ही उपयोगी होगा। श्रावणी उपाकर्म तथा 15 अगस्त से सम्बन्धित लेख भी इस अक मे पढने को पाठको को मिलेंगे। हमारी सभी आर्य समाजो तथा शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह इसकी अधिक से अधिक प्रतियो के आर्डर शीघ्र अतिशीघ्र भेजें। अक सीमित छपेगा। देरी से आर्डर आने पर भेजना कठिन हो जाएगा। इसलिए आर्डर शीघ्र भेजें।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

आर्य समाज भठिण्डा की ओर से सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को ११ हजार रुपए की थैली भेंट

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी 4 जुलाई 1987 को अपने अधिकारियों श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा महामन्त्री, श्री सरदारी लाल जी मन्त्री एवं श्री आशानन्द जी आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल के साथ आर्य समाज भठिण्डा में आए। प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपने आने का प्रोग्राम हमें कुछ दिन पहले से ही दे दिया था तथा जिला भठिण्डा को आर्य समाजों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित करने तथा उनके भोजन आदि की व्यवस्था करने के लिए भी हमें सूचित कर दिया गया था ताकि जिला भठिण्डा को आर्य समाजों का एक सम्मेलन भी हो जाए।

1 मानसा मण्डी से श्री गिरधारी लाल जी, श्री रोशन लाल जी एवं श्री हंसराज जी।

2. बरेटा मण्डी से श्री बनारसी दास जी गुप्ता बी ए.

3. बोनियाना मण्डी से श्री भरपूरी लाल जी, मास्टर तरसेम लाल जी तथा श्री जगदीश राय जी।

4. रामामण्डी से श्री सत्यदेव जी,

5. भठिण्डा आर्य समाज के अधिकारी एवं सदस्यों के साथ भठिण्डा गुरुकुल से श्री बलवंत राय जी तथा ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी, भठिण्डा स्त्री सत्संग की कुछ सदस्याए एवं भठिण्डा सिरकी बाजार की आर्य समाज से भी कुछ सदस्य उपस्थित हुए।

5 जुलाई को आर्य समाज भठिण्डा के सत्संग भवन में जिला भठिण्डा की आर्य समाजों से आए प्रतिनिधियों का सम्मेलन प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता में हुआ। सभी समाजों ने एक-एक कर के अपनी स्थानीय समाज की प्रगति तथा अपनी समस्याओं को कहा। सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने उन समाजों की समस्याओं को सुलझाने तथा अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। तथा नवयुवकों को आर्य समाज में लाने पर बल दिया। महामन्त्री जी ने भी अपने भाषण में नवयुवकों को आगे लाने पर बल दिया तथा सभा की ओर से वेद प्रचार का कार्यक्रम दिया।

अन्त में भठिण्डा आर्य समाज की ओर से प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को उनके भठिण्डा आने के हार्दिक स्वागत पर 11 हजार रुपए की थैली भेंट की तथा धन्यवाद किया। यह सम्मेलन हर दृष्टि से आर्य समाज के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा।

—राजेन्द्र कुमार
मन्त्री

हैदराबाद में वृष्टि महायज्ञ की पूर्ण सफलता

ओ३म् यज्ञाद् भवति पर्जन्यः—गीता

सम: कनिक्रदेव: पर्जन्यो अभिवर्षतु—यजुर्वेद

गरजते हुए बादल चारों ओर से वर्षा कर हमें शान्ति प्रदान करें।

विगत चार वर्षों से हैदराबाद नगर में वर्षा का अभाव चल रहा था। पीने के लिए पानी के संकट ने भयंकर रूप ले लिया था।

रेलवे के टैंकरों द्वारा प्रतिदिन तीन लाख बीस हजार रुपए व्यय करके दो वेप पानी की सप्लाई आ रही थी।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अधिष्ठाता आचार्य वेदभूषण को अन्त: प्रेरणा हुई कि-वैदिक वृष्टि महायज्ञ का आयोजन करो। इस प्रेरणा से आपने अपना दो मास के लिए मसूरी जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया और रेलवे टिकट भी लौटा दिया और वैज्ञानिक आधार पर वृष्टि महायज्ञ के आयोजन में जुट गए।

11 जून 1987 से 14 जून तक हैदराबाद के प्रदर्शनी प्रांगण में एक सौ कुण्डों में गोघृत तथा विशेष प्रकार की शुद्ध हवन सामग्री से भरपूर स्वाहाकार किया गया। यज्ञ के प्रथम दिन ही आधे घण्टे तक जोरदार वर्षा हुई। दूसरे दिन भी तेज वर्षा हुई तथा 14 जून 87 के दिन-रात में। प्रात: नौ बजे पूर्णाहुति का कार्यक्रम समाप्त हुआ और साढे नौ बजे मूसलाधार वर्षा हुई।

तब से अब तक हैदराबाद नगर में भरपूर वर्षा हो रही आचार्य वेदभूषण का मत है कि—प्रदूषण की मात्रा के पर्यावरण में बढ जाने से प्रकृति अस्वस्थ हो जाती है। यज्ञ पर्यावरण के प्रदूषण को नष्ट करने का श्रेष्ठतम वैज्ञानिक उपाय है।

हैदराबाद के वैदिक वृष्टि महायज्ञ में छ: सौ किलो घृत का स्वाहाकार किया गया। आन्ध्र प्रदेश डेरी डेवलपमेंट कारपोरेशन की चित्तर शाखा से गाय का घी प्राप्त किया गया था। शुद्ध सामग्री जिसमें वर्षा कराने वाली औषधियों का मिश्रण किया गया था। एक एक हजार किलो हवन सामग्री तथा डेढ सौ क्विंटल आम व पीपल की लकडी जलाई गई।

खैर की लकडी व बिल्व फल भी जलाने में वर्षा की सम्प्राप्ति होनी है। बिल्व फल के कोई 25 बोरे जलाए गए।

इस महायज्ञ में हमारी आस्था यज्ञ के प्रति और बढ गई है। जहां कहीं वर्षा का अभाव हो वहां पर विराट् महायज्ञों का आयोजन किया जाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-27 ऐसे आयोजन में सहयोग देने के लिए समुद्यत है।

—

आर्य स्पैशल ट्रेन विवरण

यह स्पैशल ट्रेन दिनांक 25-10-87 को चल कर गुडगाव, रिवाडी, अलवर, जयपुर, अजमेर, (पुष्कर) चित्तौड गढ (चित्तौड किला), नीमच, मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन, इन्दौर मऊ कैन्ट, खण्डवा, अकोला, पूर्णिया, औरंगाबाद, (अजन्ता एलोरा केव) जालना नान्देड, निजामाबाद, सिकन्दराबाद, महबूब नगर, गन्तोकल, बालकोडीयामा, मडगाम, पजम (गोवा) हुबली, मैसूर (बृन्दावन, गार्डन) बैंगलौर, तिरुचनापल्ली, मदुरई, त्रिवेन्द्रम, (कन्याकुमारी) रामेश्वरम, पांडीचेरी, मद्रास, तिरुपति, विजयवाडा, राजमुन्द्री, वाल्टेर, जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर, हावडा, (कलकत्ता) धनबाद गया, पटना, मुगलसराय, वाराणसी, इलाहाबाद (प्रयाग) कानपुर, शिकोहाबाद, आगरा, मथुरा से होती हुई। 17 नवम्बर 1987 को प्रात: नई दिल्ली वापस लौट आयेगी।

नोट :—जिस-जिस स्थान पर स्पैशल ट्रेन ठहरेगी, उस-उस स्थान की आर्य समाजें एवं संस्थायें आपका स्वागत करेंगी। विद्वान् एवं भजनोपदेशक इस गाडी के साथ होंगे।

विभिन्न श्रेणियों के नीचे दिये गये किराये में रेलो, बसों और खाने एवं प्रात: की चाय, आवास आदि का व्यय शामिल है।

फर्स्ट क्लास 5500 रु. पूरी बर्थ 2 क्लास 2500 रु. सोने की सीट।

1. मार्ग व्यय में ऐतिहासिक स्थान जो देखने योग्य होंगे, बसों का व्यय सभा की ओर से होगा। इसमें भोजन व बसों का व्यय शामिल है।

इसके अतिरिक्त कोई भी यात्रा सम्बन्धी उचित जानकारी सम्बन्धी प्राप्त करना चाहे तो श्री रामलाल मलिक 52-78 रामजस रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-5 फोन 5722510 में प्राप्त करें।

नोट—इस स्पैशल ट्रेन में रेलवे पास होल्डर व एल टी सी जा सकेंगे यदि वह अपना पास बडौदा हाऊस, उत्तर रेलवे दफ्तर, दिल्ली-1 से आज्ञा ले आए। फर्स्ट क्लास के पास होल्डर को केवल 1000 रु. सैकेंड क्लास को 8-0 रु खाने चाय बस आदि का देना होगा।

नोट—सीट बुक कराने की अन्तिम तिथि 3-10-87 है यदि इससे पहले सीटे बुक हो जाएगी तो उनका बाद में आने वाला रु वापस कर दिया जाएगा।

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा (रजिस्टर्ड)
आर्य समाज मन्दिर, आर्य नगर, पहाड गंज, दिल्ली

भारत सरकार यज्ञ पर अनुसन्धान कराएगी

हैदराबाद में सफल वृष्टि महायज्ञ का आयोजन कर आचार्य वेदभूषण ने नई दिल्ली की यात्रा की तथा 23 जून 87 को आपने भारत सरकार के पर्यावरण एवं वनमन्त्री श्री भजनलाल जी से उनके निवास स्थान पर विशेष भेंट की।

आचार्य वेदभूषण ने विश्व में निरन्तर बढते हुए प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए माननीय मन्त्री महोदय से आग्रह किया कि वे अपने वैज्ञानिकों द्वारा यज्ञ पर विशेष अनुसन्धान कराए।

क्योंकि-वैदिक साहित्य में यज्ञ से प्रदूषण दूर करने की बात सर्वत्र कही गई है।

माननीय पर्यावरण मन्त्री ने आचार्य वेदभूषण के विचारों को बडे ध्यान से सुना और कहा कि—आपकी बातचीत में वजन है। हम यज्ञ पर अनुसन्धान कराने का कार्य अवश्य करेंगे।

अपने आचार्य वेदभूषण को यह भी आश्वासन दिया कि—यदि हैदराबाद में पुन: यज्ञ का आयोजन होगा तो हम वैज्ञानिकों का विशेष दल भी भेजेंगे जो यज्ञ द्वारा पर्यावरण पर डाले जाने प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

सम्भावना है कि अगस्त मास में पुन एक बार हैदराबाद में वृष्टि महायज्ञ का आयोजन भी किया जा रहा है।

—शशिकान्त आर्य

बुढलाडा मण्डी में वैदिक नामकरण संस्कार

26-7-87 दिन रविवार को प्रात: साढे 8 बजे श्री सुरेश कुमार जी सुपुत्र श्री देसराज जी ने अपनी पुत्री का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से श्री ओमप्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता, आर्य वानप्रस्थ आश्रम (गुरुकुल) भठिण्डा द्वारा कराया। कन्या का नाम ग्रीष्मा कुमारी रखा गया। इस शुभ अवसर पर श्री सुरेश कुमार जी ने 101 रुपया आर्य वानप्रस्थ आश्रम भठिण्डा को दान दिया।

—ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी

कालां वाली मण्डी (हरियाणा) में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज कालावाली मण्डी की ओर से 16 से 20 जुलाई तक वेद प्रचार सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे श्री जयदेव जी जनोई वाले, श्री मास्टर प्रेम प्रकाश जी भजनोपदेशक, श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी, अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम (गुरुकुल) भठिण्डा ने अपने मनोहर भजनो कविताओ एव उपदेशो द्वारा जनता को अमृतपान कराया, यह प्रोग्राम नई मण्डी के मध्य मे प्रतिदिन हवन, यज्ञ से शुरू किया जाता था। उपस्थिति बहुत होती थी। इस प्रकार बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

आर्य हैपी माडल स्कूल भठिण्डा का चुनाव

आर्य हैपी माडल स्कूल भठिण्डा की कमेटी का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—प्रो ओ पी मगला।
मन्त्री—सर्वश्री राजेन्द्र कुमार।
कोषाध्यक्ष—श्री विनोद गर्ग।
मुख्य उप-प्रधान—श्री अशोक अग्रवाल।
उप-प्रधान—श्री रोशनलाल जी।
उप-मन्त्री—श्रीमती कमला जी भाटिया।

अन्तरग सदस्य :—

सदस्य—सर्वश्री वजीर चन्द श्री कृष्ण कुमार, श्री बाबूराम, श्री अमरनाथ, श्री जीतेन्द्र कुमार एडवोकेट, श्री निहाल चन्द एडवोकेट, श्री प्रेम भाटिया जी, श्री ओ३म प्रकाश वानप्रस्थी, श्री चमनलाल मेहत्ता जी।

—प्रधान
आर्य समाज भठिण्डा

पीली भीत में वृष्टि यज्ञ

वर्षा न होने के कारण श्री धर्मवीर जी विद्यालकार ने अपने फार्म पर विधिवत, समिधा गोघृत तथा अनेक प्रकार की औषधियो से सामग्री तैयार करके अपनी पौत्री श्रीमती पुष्पा विद्यालकृता के साथ वेद मन्त्रो द्वारा 1 7-87 से यज्ञ आरम्भ किया। यज्ञ की पूर्णाहुति पर 5 और 6 जुलाई को फार्म से 35-40 किलोमीटर दूर-2 तक चारो तरफ खूब वर्षा हुई लोगो ने राहत की सास ली।

—विजय कुमार उपमन्त्री

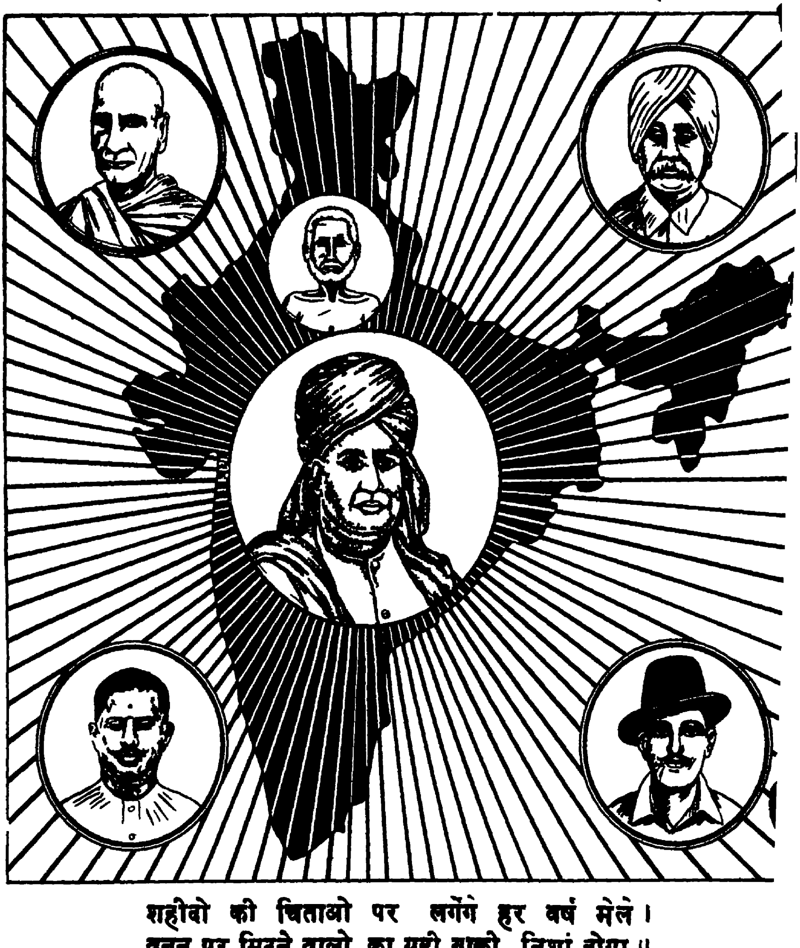
(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जड और चेतन दोनो प्रकार के ससार का आत्मा कहा है।

मन्त्र का अन्तिम शब्द है स्वाहा ' (सु+आहा) सु आहेति, स्वा वागाहेति अर्थात् सुन्दर उच्चारण है, ठीक कहा है। लोक भाषा मे स्वाहा का अनुवाद होता है वाह-वाह, बहुत अच्छे अर्थात् मन्त्र मे जो यह विचार प्रकट किए गये है कि वह विचित्र प्रभु जो देवो मे मुख्य है, जो मित्र, वरुण और अग्नि का चक्षु है, पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ लोक मे सर्वत्र व्यापक है। समस्त जड और चेतन ससार का अस्तित्व जिसके आधार पर है, वह प्रकाश स्वरूप और ससार का प्रकाशक प्रत्येक स्थान पर भली-भाति प्राप्त है वाह-वा, खूब अर्थात् वह भी खूब रही कि हमे आज तक ज्ञान न हो सका, हम निरर्थक ही भटकते रहे और वह अद्भुत देव सर्वत्र उपस्थित है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

15 अगस्त उनकी याद को ताजा कर जाता है।



शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा॥

यह अंक संख्या 19 तथा 20, दिनांक 16 अगस्त तथा 23 अगस्त 1987 तदानुसार 32 श्रावण तथा 7 भाद्रपद सम्वत् 2044 का सम्मलित अंक है।

इस अंक का मूल्य—3 रुपये

सम्पादकीय—

भगवान कृष्ण को याद करें या महात्मा गान्धी को ?

15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस है और इस बार यह हमारी स्वतन्त्रता की चालीसवीं वर्ष गांठ भी है । इस लिए पहला ध्यान तो उस ओर जाता है और उसके साथ उन सब महानुभावों, शहीदों स्वतन्त्रता सेनानियों की तरफ जाता है जिन्होंने देश को आजादी के लिए तन-मन-धन से अपना योगदान दिया है। स्वतन्त्रता संग्राम के अन्तिम सेनापति महात्मा गान्धी थे। इस लिए जब हम स्वतन्त्रता संग्राम को याद करते हैं तो गान्धी जी को कैसे भूल सकते हैं। उनके बिना तो हमारा इतिहास अधूरा रहता है। इसीलिए मैंने लिखा है कि क्या हम उन्हें याद करें।

परन्तु 16 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी है यह भी हमारा एक राष्ट्रीय पर्व है भगवान कृष्ण का स्थान हमारे इतिहास में महात्मा गान्धी जी से भी बहुत ऊंचा है। गांधी जी भी अपने आपको कृष्ण भगवान का अनुयायी कहा करते थे। यद्यपि उन्होंने भगवान कृष्ण की गीता को एक ऐसा रूप देने का प्रयास किया था जो मेरे विचार में ठीक न था। गान्धी जी क्योंकि स्वयं अहिंसा वादी थे इसलिए प्रत्येक प्रश्न और समस्या को उसी दृष्टि से देखा करते थे और उस की अहिंसात्मक समस्या को ढूंढने का प्रयास करते थे।

परन्तु भगवान कृष्ण तो अहिंसा में विश्वास नहीं रखते थे उनकी सारी गीता एक लक्ष्य की ओर जाती है और वह यह कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए और यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका फल क्या होगा। अर्जुन अपने भाईयों और दूसरे सम्बन्धियों के साथ लड़ना नहीं चाहता था। भगवान कृष्ण उसे लड़ाना चाहते थे। इसी लिए उन्होंने अर्जुन से कहा था कि तू लड़ने से क्यों घबराता है। यदि मारा गया तो स्वर्ग में जाएगा। जीत गया तो इस धरती पर राज करेगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि भगवान कृष्ण अहिंसा में विश्वास नहीं रखते थे। लड़ना गान्धी जी भी चाहते थे अंग्रेज के विरुद्ध उन्होंने एक लड़ाई लड़ी परन्तु अहिंसात्मक ढंग से। ऐसी स्थिति में हमारे लिए कई बार यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि हम भगवान कृष्ण की बात मानें या महात्मा गान्धी की। दूसरों के विषय में मैं नहीं कह सकता परन्तु जहां तक आर्य समाजियों का सम्बन्ध है उनके लिए महर्षि दयानन्द मार्ग प्रशस्त कर गए, वह एक तरफ उस धर्म की व्याख्या करते थे जिसे वह वास्तविक धर्म कहते हैं और जिसे वह वैदिक धर्म का नाम देते थे। वैदिक धर्म में दोनों प्रकार

के विचार मिलते हैं। किसी निस्सहाय निहत्थे व्यक्ति पर और किसी कारण के बिना आक्रमण करना एक पाप है। दूसरी तरफ कुछ विलों की तरह किसी दूसरे के आक्रमण को सहन करना भी पाप है। महर्षि दयानन्द जब एक तरफ वैदिक धर्म का प्रचार किया करते थे वह दूसरी तरफ राजस्थान के महाराजाओं को उनका कर्त्तव्य भी बताया करते थे और उन्हें कहा करते थे कि राज करना चाहते हो तो अपनी पूरी शक्ति से करो। उन्होंने एक बार महाराजा जोधपुर को एक पत्र लिखा था जिसमें राजा के कर्त्तव्य क्या हैं इस का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है :—

"सदा बलवान और राजपुरुषों से सताये हुओं की पुकार यदि भोजन पर भी बैठे हों तो भोजन को भी छोड़कर उनकी बात सुनना और यथोचित उनका न्याय करना। ऐसा न होवे की निर्बल अनाथ लोग बलवान और राजपुरुषों से पीड़ित हो कर रुदन करें और अश्रु पात भूमि पर गिरे कि जिससे सर्वनाश हो जाए और उनकी रक्षा से सब प्रकार की उन्नति अर्थात् शरीर आरोग्य, आयु वृद्धि, धन वृद्धि, राज वृद्धि, धर्म वृद्धि और प्रताप वृद्धि को सदा करते रहिए।"

इससे स्पष्ट है कि महर्षि जहां एक तरफ एक राजा को उसके कर्त्तव्य से अवगत कराते थे वहां बार-2 उसे यह भी कहते थे कि जो बलवान लोगों तथा राजपुरुषों (पुलिस वालों से) पीड़ित हों उनकी प्रत्येक प्रकार से रक्षा करना, तुम्हारा कर्त्तव्य है। क्योंकि कई बार निर्बल को बलवान और राजपुरुष अकारण ही अपने स्वार्थ के लिए निर्दोष होते हुए भी सताते रहते हैं। निर्बल अनाथों की पुकार राजा को सब काम छोड़ कर सुननी चाहिए।

मैंने प्रारम्भ में ही यह प्रश्न किया था कि हम भगवान कृष्ण को याद करें या महात्मा गान्धी को। भगवान कृष्ण की जन्माष्टमी है और गांधी जी के स्वतन्त्र भारत की चालीसवीं वर्ष गांठ है। इसलिए दोनों को याद करना हमारे लिए आवश्यक है परन्तु इन दोनों का समन्वय हमें महर्षि दयानन्द में मिल जाता है यही कारण था कि वह जब कभी राज पुताना के किसी राजे महाराजे से मिला करते थे तो उसे उसके कर्त्तव्य की याद दिलाया करते थे और साथ ही यह भी कहा करते थे कि राज करना है तो पूरी शक्ति से करो। जिन परिस्थितियों में से हम आज गुजर रहे हैं। उनमें यह भी आवश्यक है कि हमारे शासक महर्षि दयानन्द की विचारधारा को समझने का प्रयास करें। वह न तो पूरी तरह भगवान कृष्ण का अनुसरण करते थे और न ही पूरी तरह महात्मा गान्धी का, यदि इन दोनों के बीच का कोई रास्ता दिखाते हैं तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं। इसलिए आज आवश्यकता भी यही है कि हम अपने महापुरुषों की ओर ध्यान दें समय-समय पर वह जो उपदेश हमें दे गए उसे समझने का प्रयास करें और जहां तक सम्भव हो सके उसके अनुसार अपने जीवन को ढालने का भी प्रयत्न करें।

—वीरेन्द्र

कर्म करो तभी बन्धनों से छुटकारा मिलेगा

लेखक—स्वर्गीय श्री गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम. ए.

कर्म का जीवन में बहुत महत्व है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता में यही उपदेश दिया कि तू कर्म कर फल की इच्छा मत कर। ईश उपनिषद् और यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के इस मन्त्र में भी कर्म करने का उपदेश है। स्वर्गीय श्री गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. ने इस मन्त्र की जो व्याख्या की है वह बहुत सराहनीय और ग्रहण करने योग्य है। जो यहां पाठकों के लाभार्थ दी जा रही है।

—सम्पादक

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥
यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 2

अन्वय—इह कर्माणि कुर्वन् एव शतं समा: जिजीविषेत्। एवं त्वयि नरे न कर्मलिप्यते। इत: अन्यथा न अस्ति।

अर्थ—(इह) इस संसार में (कर्माणि) कर्मों को (कुर्वन्) करते हुए ही मनुष्य (शतम् समा) सौ वर्ष तक (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा करे। (एवम्) यही एक साधन है जिसके द्वारा (लिप्यते नरे) तुझ मनुष्य में कर्म लिप्त न होवें। (इत अन्यथा) इससे भिन्न दूसरा कोई मार्ग (न अस्ति) नहीं है।

व्याख्या—इस मन्त्र में 'कर्म' का गौरव और महात्म्य दिखाया गया है। विस्तृत व्याख्या करने से पहले मुख्य भावना को समझने का यत्न करना चाहिए। जब एक बार भावना हृदयंगम हो जाती है तो अन्य तत्सम्बन्धी बारीक बातें समझने में सुगमता होती है। मुख्य भावना यह है—"कर्म करो तभी कर्म के बन्धनों से छुटकारा मिलेगा।" कर्म क्या है और कर्म का बन्धन क्या है? इसके लिए एक दृष्टान्त पर विचार कीजिए। एक चोर ने चोरी की। चोरी एक कर्म था। शासन की ओर से उसे कारागार मिला। यह कारागार ही कर्म का बन्धन है।

"बाधनालक्षणं दु:खम्" (न्यायदर्शन 1।1।21)।

बन्धन ही दु:ख का लक्षण है। कैदी जेल में बन्द है। यह बन्धन है वह नहीं चाहता फिर भी चक्की पीसनी पड़ती है। यह बन्धन है। कहीं आ जा नहीं सकता, यह कर्म का बन्धन है। किसी अपने प्यारे से मिल नहीं सकता, यही बन्धन है। ये सब कर्म के बन्धन हुए। कर्म था चोरी। कर्म के बन्धन हुए ये कर्म जो बिना इच्छा के जबरदस्ती करने पड़ते हैं। वेद मन्त्र कहता है कि इन कर्म के बन्धनों से छुटकारा पाने के लिए भी निरन्तर कर्म करने चाहिए। उन कर्मों का प्रकार भिन्न होगा। उनकी प्रकृति भी भिन्न होगी। उनके लक्षण भी भिन्न होंगे, परन्तु होंगे वे "कर्म" ही कर्म के बन्धन बिना कर्म किए नहीं छूट सकते। अनाचार दोष से रोग उत्पन्न होता है। उपचार से रोग दूर होता है। अनाचार भी कर्म था जिसका बन्धन हुआ रोग। उपचार भी कर्म है। परन्तु भिन्न प्रकार का, इसलिए वह 'बन्धन' को छुड़ाने वाला है, बन्धन को कड़ा करने वाला नहीं।

यह प्रश्न केवल दार्शनिक नहीं, लोक व्यवहार की नित्य की चीज है। हम रोज तकदीर और तदबीर का बहस सुनते। तकदीर बन्धन है और तदबीर कर्म जीवन में हम सैकड़ों बन्धन देखते हैं जिनको हमने नहीं बनाया। ये बन्धन कहीं से बने बनाये आ गए। जेल के विशाल भवन को चोर ने नहीं बनाया किसी और व्यक्ति ने जबरदस्त उस पर यह बन्धन थोप दिया। वह जकड़ा

है। जैसा तकदीर मे लिखा है, होगा इससे छुटकारा नही। कुछ लोग कहते हैं कि खुदा (ईश्वर) जो चाहता है करता है, जिसको चाहता है सन्मार्ग दिखाता है, जिस को चाहता है 'गुमराह' करता है। अल्लाह की मर्जी के विरुद्ध हो भी क्या सकता है? सरकार जबरदस्त है, उसने मजबूत जेल खाना बनाकर उसमे चोर को ठूस दिया। कितनी ही भागने की तदबीर करो, भाग नही सकते। इसलिए उस घडी की प्रतिक्षा करे। जब ईश्वर की ही मर्जी और वह बन्धन से मुक्त कर दे। ऐसे तक-दीर के गुलामो की संख्या ईश्वर भक्तो मे सबसे अधिक है। इसका परिणाम "आलस्य" क्रिया हीनता। आलस्य के साथ इसी के बहुत से बाल बच्चे हैं। जो अन्य रूपो मे प्रकट होते हैं और बन्धनो को जकडते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो बन्धन से छुटने के लिए हाथ पैर मारते हैं। कोई जेल की दीवार फान्द कर भागता है कोई खिड-कियो की छडो को तोड कर भागता है। कोई चौकीदार की आख मे धूल डालता है। इसको आप तदबीर कह सकते हैं। तदबीर के नाम पर सहस्रो पाप किये जाते हैं। यह तदबीर थे तो कर्म परन्तु सोचकर नही किये गए थे, अत ऐसे कर्म छुटकारे के हेतु सिद्ध नही होते। कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है कर्म करना जो ससार की हर वस्तु का स्वभाव है। मनुष्य भी इसी ससार का एक भाग है। सारी मशीन चलती है तो ऐसा कौन सा पूर्ज है जो बिना चले रह सके। लेकिन एक काम इच्छा से किया जाता है और एक बिना इच्छा के। जीते तो सभी है परन्तु जीकर क्या करमे ऐसा तो बहुत कम लोग सोचते है। इसीलिए वेदमन्त्र म एक शब्द आया है। 'जिजी-विषत्'। इस रहस्य का सौन्दर्य समझने के लिए कुछ सस्कृत व्याकरण का पारिभाषिक ज्ञान होना आवश्यक है। यह क्रिया है। 'विधिलिङ्' और साथ ही सन्नन्त' भी है जिनको 'विधिलिङ्' सनन्त के स्वरूप का ज्ञान नहीं उनके लिए मन्त्र का महत्व समझने मे कठिनाई होगी। "विधि निमन्त्रण आमन्त्रण-अधीष्ट-सप्रश्न-प्रार्थनेषु लिङ्।" (अष्टाध्यायी 3-3-16)।

यहा 'लिङ्' लकार विधि के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है अर्थात् जब किसी को आदेश देते हैं कि उसको अमुक काम करना ही चाहिए तो 'लिङ्' लकार का प्रयोग किया जाता है। अब 'सन्-अन्त' (सन्-अन्त) पर विचार कीजिए "धातो: कर्मण: समान-कर्तृकाद् इच्छायां वा (अष्टाध्यायी 3-1-7)।

यहा इतना जानना पर्याप्त होगा कि जहा 'इच्छा' प्रकट करना हो वहा क्रिया कि धातु मे 'सन्' जोड देते हैं। इस प्रकार जिजीविषत् विधिलिङ् भी है और 'सन्नन्त' भी, अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि जीने की इच्छा करे, किस प्रकार? "कर्माणि कुर्वन् एव" (कर्म करते हुए ही), बिना कर्मों को करने की इच्छा के जीने की इच्छा से कोई लाभ नही। यदि कुदरत को यह मन्जूर न होता कि हम चले तो हमको चलने के लिए पैर न मिलने चाहिए थे, यदि मजूर न होता कि हम देखें तो आख देना निरर्थक था। इसलिए कुदरत ने हमारे शरीर के प्रत्येक अवयव मे कुछ ऐसी प्ररणा दी हुई है कि निर-न्तर काम करना ही है। भेद केवल इतना ही है कि जो काम हम अपनी इच्छा से करते हैं उसके करने मे मजा आता है। लोग नित्य सैर को जाते हैं, यदि सरकार आदेश दे दे कि तुमको अवश्य सैर को जाना होगा तो सैर भी जान का बबाल हो जाती है। इसलिए वेद मन्त्र मे उपदेश है कि पहले से ही ऐसी इच्छा करो कि सौ वर्ष जीना है तो निष्क्रिय न होकर अपितु कार्यक्रम बना कर निरन्तर कर्म करने की योजना भी हो और इच्छा भी। सभी जीते रहना चाहते हैं। उनसे पूछो "क्यो? किस काम के लिए?" तो इसका उनके पास कोई उत्तर नही है। यदि दो वर्ष और जीते रहो तो क्या करोगे? विचारा नही। "बस खाएगे, पियेगे, मौज करेंगे।" खाना-पीना और मौज करना तो कर्म नही। ये तो जीवन के साधन मात्र हैं। खाना आसान, पीना आसान है, परन्तु मौज करना तो आसान नही है। इसलिए कर्म करने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए। जो बुद्धिमत्ता से कर्मो की योजना बनाता है और उस पर चलने का यत्न करता है उसका बन्धन छूट जाता है। जेल का जो कैदी जेल मे रह कर नियुक्त कर्म करता रहता है। वह जेल के बन्धन से अवश्य छूट जाता है। कर्मों के करने मे तीन

प्रकार के दोष आ सकते हैं :—कर्त्तव्य को न करना, अकर्त्तव्य करना, कर्त्तव्य का उल्टा करना। ये तीनों प्रकार के दोष कर्म बन्धन के कारण होते है। यदि गेहूं न बोये जाएं तो गेहूं पैदा न होगा, उगे हुए गेहूं में अधिक पानी देना, इससे गेहूं उत्पन्न होकर नष्ट हो जाएंगे और गेहूं के स्थान पर जौं बो देना तब भी गेहूं पैदा न होगा, अत: कर्त्तव्यकर्म के करने पर ही बन्धन छूटेगा। गीता मे इसी वेद मन्त्र पर आधारित एक श्लोक है—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

यहां अधिकार का अर्थ है कर्त्तव्य। अधिकार, अधिकरण ये दोनों समानार्थक हैं। सूत्र ग्रन्थों मे अधिकार-सूत्र वे होते हैं जिनमें अन्य सूत्रों का समावेश होता है। गीता के श्लोक का तात्पर्य यह है कि कर्म मनुष्य के चिंतन-क्षेत्र का विषय या अधिकरण है, फल नही। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि बिना सोचे-समझे अर्थात् किस कर्म से क्या फल होगा, किसी काम को कर दिया जाए। कर्म की प्रेरणा ही उसके फल की दृष्टि से होती है। गेहूं बोने वाला पहले देख लेता है कि गेहूं उगाने रूपी फल की प्राप्ति तभी होगी जब गेहूं बोया जाएगा। "स्वर्ग कामोयजेत" अर्थात् स्वर्ग की कामना वाले को यज्ञ करना चाहिए। यहां फल की न उपेक्षा है न अवहेलना। प्रश्न यहां चिन्तन का है। जब यह निश्चित हो गया कि अमुक कर्म हमारा कर्त्तव्य है तो फल का चिन्तन छोड़ देना चाहिए फल की प्रेरणा आरम्भ में होती है परन्तु यदि कर्त्तव्य-पालन के समय मन में फल की उत्कण्ठा बनी रहेगी तो मन में दुविधा उत्पन्न हो जाएगी और कर्त्तव्य के यथेच्छ पालन में बाधा होगी। कर्म का फल तुम्हारे हाथ में नहीं, अत: फल का अपने को हेतु समझना मूर्खता होगी। इसके लिये एक दृष्टान्त लीजिए—

आप सरकारी दफ्तर में क्लर्क हैं। आपने पद को स्वीकार ही तब किया जब आपको निश्चित हो गया कि अमुक वेतन मिलेगा, परन्तु जब आप अपने काम मे लगे तो केवल वेतन आपके चिन्तन क्षेत्र का विषय नहीं रहा। कार्यालय का कार्य ही एक मात्र चिन्तन का विषय है, वेतन आपके शासक के चिन्तन का विषय है, अत: जो सेवक सेवा ध्यान छोड़कर हर घड़ी वेतन पर दृष्टि रखता है वह अपने पद का काम न करके अनेक भूलें करता है, क्योंकि वह कर्म का हेतु न होकर कर्मफल का हेतु बन जाता है। गीता में कहा है कि तेरा अकर्म से सम्पर्क न होना चाहिए। कर्म हीनता का नाम भी अकर्म है और उल्टे काम का नाम भी अकर्म है। (अकर्म =अ+कर्म—जो कर्म नही उसका करना यह जो कर्म हैं। उसको न करना)।

कुछ लोगों ने इस मन्त्र के उल्टे ही अर्थ लगाए हैं। उनका कहना है कि इस मन्त्र में जिन कर्मों पर बल दिया गया है वे केवल मूर्खों के लिए हैं। जो ज्ञानी हैं उनके लिये तो कर्म की आवश्यकता ही नही रहती। शंकराचार्य जी ईशोपनिषद के भाष्य में लिखते हैं :—

"अथ इतरस्यानात्मज्ञतया आत्मग्रहणाय अशक्तस्येदमुपदिशति मन्त्र:—कुर्वन्नेवेहेति"।

अर्थात् इस मन्त्र में केवल उन लोगों के लिए उपदेश है जो अनात्मज्ञ हैं अर्थात् जिनको आत्म ज्ञान नहीं हुआ और यह अशक्तों के लिये हैं। जो विज्ञ हैं वे कर्मों की कर्त्तव्यता से ऊपर हैं। इस पर शंकर मत में ज्ञान काण्ड से पृथक् कर दिया गया और ब्राह्मणों के मन में कर्म की अवहेलना बैठ गई। इसी मन्त्र की व्याख्या के अन्त में शंकर भाष्य में एक प्रश्न उठाया है :—

कथं पुनरिदमवगम्यते पूर्वेण संन्यासिनो ज्ञाननिष्ठोक्ता द्वितीयेन तदशक्तस्य कर्मनिष्ठेति।

अर्थात् यह कैसे ज्ञात हुआ कि पहले मन्त्र "ईशावास्या" से सन्यासी की ज्ञाननिष्ठा और दूसरे मन्त्र "कुर्वन्नें" से ज्ञान की सामर्थ्य से अशक्त की कर्मनिष्ठा अभिप्रेत है? वस्तुत: यह प्रश्न तो समीचीन ही था कि वेद के इन दोनों मन्त्रो में से किसी शब्द से यह

विदित नही होता कि पहला ज्ञानियो के लिये है और दूसरा अनात्मज्ञ के लिए परन्तु भाष्यकार ने इसका यह उत्तर दिया :—

"उच्यते, ज्ञान कर्मणोर्विरोधम् पर्वतवकम्प्य यथोक्त न स्मरसि किम् ।"

क्या तुमको हमारी यह बात याद नही रही कि ज्ञान और कर्म का परस्पर विरोध तो पहाड के समान अकम्प्य या अटल है ?

वस्तुत: यह वाक्य समाधान नही, समाधानाभास-मात्र है। ज्ञान और कर्म परस्पर विरोधी नही अपितु एक दूसरे के पूरक है। ज्ञाननिष्ट ही कर्मनिष्ठ हो सकता है और ज्ञाननिष्ठ ही "मा ते सगोऽस्त्व" का पालन कर सकता है। जो ज्ञानी नही वह कर्मनिष्ठ कैसे होगा ? गीता के भक्त भी तो यही कहते हैं कि भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अकर्म की भावना से मुक्त करने और कर्म-निष्ठ बनाने के लिये गीता का उपदेश किया था। जिनमे कर्म की निष्ठा है वे अज्ञानी नही हैं। जो ज्ञान से शून्य होंगे वे कर्मनिष्ठ कैसे होंगे ? भगवान ने हमारे शरीर मे ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्द्रिया दोनो ही दी हैं। यह एक दूसरे के पूरक हैं विरोधी नही, और न उनका विरोध पर्वत के समान अटल है। जब ज्ञान और कर्म मे पर्वत के अकम्प्य विरोध हो उठता है और मस्तिष्क तथा हाथ पैर एक दूसरे के विरोधी हो जाते हैं। तो इस पागलपन की दशा ही कहते हैं। ज्ञान और कर्मेन्द्रियो मे विरोध केवल पागलो मे ही मिलता है, ज्ञानियो मे नही। इस प्रकार के निराधार और काल्पनिक भाष्य वैदिक सस्कृति के ह्रास के कारण ही सिद्ध हुए हैं। यह वेदमन्त्रो के आशय को न समझने अथवा कल्पित भावनाओ के अध्यारोप के कारण हुआ है। वस्तुत: यह वेदमन्त्र कर्म के गौरव को बताता है और स्पष्ट शब्दो मे कहता है कि यथेष्ठ कर्मों की इच्छा करके जीना और उन कर्मों का यथाविधि पालन करना सब कर्म के बन्धनो के छुट-कार का साधन होगा।

यहा एक बात स्पष्ट कर देनी चाहिए। 'कर्मकाण्ड' के अर्थों मे भी बहुत कुछ विकार हुआ है। श्री शकर स्वामी के समय मे कर्मकाण्ड का केवल यही अर्थ लिया जाता था कि यज्ञो के विषय मे प्रचलित कुछ क्रियाए करना, जैसे पात्र साफ करना, वेदी बनाना, अमुक मन्त्र पढ कर चावल निकालना या पकाना या अमुक मन्त्र पढ कर अमुक आहुति देना। सम्भव है कि किसी अश तक यह कर्मकाण्ड का बाह्य रूप रहा हो परन्तु यह वास्त-विक कर्मकाण्ड नही है। केवल हल को एक मन्त्र पढकर उठा लेने का नाम कृषि नही और न व्यापार सम्बन्धी किसी मन्त्र के पढ देने का नाम व्यापार है।

समिधा कितनी बडी हो यह कर्म काण्ड नही। सम्भव है कि वेदानुयायी को ऐसे निरर्थक कृत्यो से बचाने के लिए ही शकर स्वामी ने इस प्रकार के तर्कों का प्रयोग किया हो, क्योकि उस युग के कुमारिल भट्ट या मडन मिश्र आदि ऐसे ही कर्म काण्ड के प्रचारक थे और महात्मा बुद्ध आदि ने इसी जाल से मनुष्य को सुरक्षित रखने के लिए वेदो का विरोध किया था, परन्तु यह तो कल्पित उपचार था जिसने एक रोग दूर करने के लिए दूसरा रोग उत्पन्न कर दिया। कर्म काण्ड के जाल से छूटे तो माया जाल के शिकार हो गये। इससे कर्म का बन्धन तो नही छूटा। (वैदिक कर्म) अवश्य ही छूट गए। देश का निकम्मा हो गया। कर्म और ज्ञान के बीच अकम्प्य पर्वत खडा हो गया। परन्तु यह पर्वत भाष्यकारो की कल्पना का फल है। कर्म काण्ड और ज्ञान काण्ड के बीच से इस व्यवधान को हटाने की आवश्यकता है और यह बात केवल यथेष्ट स्वाध्याय से ही पूरी हो सकती है।

एक कुशल सारथी श्रीकृष्ण

लेखक—श्री ब्र. नरेन्द्र आर्य विद्याधिकारी गुरुकुल करतारपुर

जब हम महाभारत को पढ़ते हैं तो हमारे सामने श्री कृष्ण जी के कई रूप आते हैं। कहीं महशान्ति के दूत के रूप में हमारे सामने आते हैं, कहीं द्रोपदी की लाज के रक्षक बन कर सामने आते हैं। कहीं पाण्डवों के परम हितैषी के रूप में हमारे सामने आते हैं। कही महान् राजनैतिक रूप में वह हमारे सामने आते है, परन्तु एक रूप उनका जो सब से अधिक प्रभावित करने वाला है एक कुशल सारथी का रूप भी है। एक महान योद्धा यह प्रतिज्ञा कर लेता है कि मैं युद्ध में हथियार नहीं उठाऊंगा, परन्तु वह अर्जुन का सारथी बनना स्वीकार कर लेता है। एक दम युद्ध का शंखनाद बज उठता है। श्री कृष्ण, अर्जुन के रथ को ले कर दोनों सेनाओं के बीच में लाकर खड़ा कर देता है। अर्जुन अपनी दृष्टि चारों ओर फैलाता है, और चारों तरफ अपने ही बन्धु-बान्धवों को लड़ने के लिए तैयार देख कर लड़ने से इन्कार कर देता है। यदि उस समय उस का सारथी श्री कृष्ण नही होते तो अर्जुन की पहले ही दिन हार हो गई होती और अर्जुन युद्ध से दौड़ जाता। परन्तु कुशल सारथी ने अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरणा दी और अर्जुन खम्भ ठोक कर खड़ा हो गया। महाभारत का युद्ध हुआ, श्री कृष्ण ने अर्जुन के रथ का संचालन किया। एक दिन भीष्मपितामह को दुर्योधन ने उत्तेजित किया कि पितामह पाण्डवों का लिहाज कर रहे हैं। सात दिन के युद्ध मे आज तक आप एक भी पाण्डव को नहीं मार सके। उन का कोई बाल बांका न हुआ। आप के सेनापति बनने का क्या लाभ? उत्तेजित होकर उस दिन जब पितामह बाणों की वर्षा करने लगे तो भगवान् श्री कृष्ण उन की भावना को ताड़ गए। भीष्म पितामह के तीक्ष्ण तीर जब अर्जुन की तरफ प्रलयंकर रूप धारण कर के बढ़ रहे थे तो श्री कृष्ण जी ने पितामह के सामने से अर्जुन का रथ हटा लिया और दूसरी ओर घोड़ों को मोड़ कर चल पड़े। अर्जुन ने कहा रथ को रोको, यह कायरता है। एक योद्धा दूसरे योद्धा को युद्ध भूमि मे पीठ नहीं दिखा सकता। मेरे रथ को पितामह के सामने रहने दो। उस समय नीतिवान् कृष्ण ने कहा, वह पितामह हैं, उन के सामने से आप का हट जाना कोई कायरता नहीं। बड़ी कुशलता से अर्जुन को बचा कर श्री कृष्ण जी महाराज ले गए। नहीं तो उस दिन अर्जुन का बचना कठिन था। पितामह बहुत क्रोधित हो कर बाण चला रहे थे। तभी तो श्री कृष्ण जी सायंकाल युद्ध विराम के बाद पाण्डवों को लेकर पितामह के पास गए थे कि उन की मृत्यु का रहस्य पूछ आएं नहीं तो कोई पाण्डव न बच पाएगा और वही रहस्य जो पितामह ने स्वयं बताया था, प्रातः काल उन की मृत्यु का कारण बना।

पितामह के बाद कौरवो के एक महाबली सेनापति कर्ण का मुकाबला अर्जुन से हुआ। दोनों चोटी के योद्धा थे। कर्ण, अर्जुन से कम बलवान् नहीं बल्कि अधिक बलवान था परन्तु कर्ण के पास अर्जुन जैसा कुशल सारथी नहीं था। युद्ध के मैदान में घमासान युद्ध हो रहा था। चारों तरफ मृत्यु का दृश्य दृष्टिगोचर होने लगा। कुशल

सारथी श्री कृष्ण ने देखा, कर्ण का पलड़ा भारी है। यदि कुछ देर और युद्ध इसी प्रकार चलता रहा तो कर्ण, अर्जुन पर हावी हो जाएगा कुशल सारथी ने फिर वही कार्य किया। कर्ण के सामने से अर्जुन का रथ हटा कर एक ऐसे रास्ते पर डाल दिया, जो उबड़-खाबड़ तो था ही साथ ही कीचड़ से भरा हुआ भी था। कर्ण ने ललकारा कि अर्जुन मैदान छोड़ कर कहां जा रहे हो। मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा। कर्ण ने अपने सारथी को कहा कि रथ अर्जुन के रथ के पीछे लगा दो। आगे-2 अर्जुन का रथ दौड़ रहा था, पीछे कर्ण का रथ परन्तु दोनों के सारथियों में बड़ा अन्तर था। श्रीकृष्ण तो रथ को कुशलता से चला रहे थे। सावधानी से कीचड़ के रास्ते से आगे बढ़ते रहे। पीछे कर्ण का रथ कीचड़ में फंस गया। श्री कृष्ण ने उसी समय अर्जुन के रथ का मुंह पीछे की ओर मोड़ दिया, कर्ण रथ से नीचे उतर कर अपना रथ निकालने लगा तो श्रीकृष्ण ने कहा, अर्जुन बाण चलाओ और कर्ण का काम तमाम कर दो। कर्ण ने धर्म की दुहाई दी। श्री कृष्ण ने कहा, जब पाण्डवों को लाक्ष गृह में जला कर मारा जा रहा था तब तुम्हारा धर्म कहां गया था, जब द्रोपदी को भरे दरबार नंगा किया जा रहा था, जब पाण्डवों को धोखे से जुए में हराया गया था तब तुम्हारा धर्म कहां गया था। अर्जुन देखते क्या हो, इस दुष्ट का काम तमाम कर दो, यह क्षमा करने के योग्य नहीं है।

इस प्रकार यदि श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी न होते तो न तो भीष्म पितामह पर विजय पाई जा सकती थी और न ही कर्ण पर। यह रथ संचालन की कितनी कुशलता है कि जानबूझ कर कीचड़ भरे रास्ते से रथ को ले जाना और साफ-2 आप तो निकल जाना परन्तु शत्रु के रथ को कीचड़ में फंसा देना।

महाभारत का युद्ध अर्जुन ने जीता पाण्डवों के सिर पर विजय का सेहरा बन्धा परन्तु उनके बलबूते पर नहीं, यह सब एक कुशल सारथी को श्रेय जाता है। जिस का रथ चलाने का अजीब ही अन्दाज था।

इसलिए जहां श्री कृष्ण के और कई रूप हमें प्रभावित करते हैं, वहां वह कुशल रथ संचालक व युद्ध संचालक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं। महाभारत का सारा युद्ध श्री कृष्ण रूपी धुरी के चारों ओर घूमता हुआ दृष्टि गोचर होता है।

सान्त्वना के लिए आभार

जिन संस्थाओं, आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, व्यक्तिगत बहिनों तथा भाईयों ने दूर तथा समीप से पधार कर और पत्रों व प्रस्तावों द्वारा मेरे तथा मेरे परिवार के दुःख में सहानुभूति प्रकट करके हमारे इस दारुण दुःख को कम करने का प्रयत्न किया है। मैं और मेरा परिवार उनकी इस कृपा के हार्दिक आभारी हैं। सभी को व्यक्ति गत पत्र लिखे जाने कठिन हैं इसलिए व्यक्तिगत पत्र ना लिख कर "आर्य मर्यादा" के माध्यम से मैं उनकी इस सहानुभूति के लिए हृदय से आभार प्रकट करती हूं।

—कमला आर्या
(सभा उप-प्रधान)

श्रीकृष्ण का चरित्र बड़ा शुद्ध और पवित्र था

लेखक:—श्री अमर शहीद पण्डित लेखराम जी आर्य मुसाफिर

योगीराज श्री कृष्ण जीवन पर कई व्यक्ति बड़े लांछन लगाते हैं, गोपियों के साथ व्यभिचार रास-विलास तथा माखन चोर तक उन्हें कह दिया जाता है। अमर शहीद पण्डित लेखराम जी की लेखनी से लिखा खोजपूर्ण लेख नीचे दिया जा रहा है, जिससे पाठकों को बहुत लाभ प्राप्त होगा। —सम्पादक

महाभारत (जो आर्यावर्त वासियों का प्रामाणिक ग्रन्थ है) के अठारह पर्वों मे जहा तक हम ने देखा और योग्य कथावाचक विद्वान् पण्डितो से पूछा, कहीं भी इन बातो का चिन्ह तक नही है। इस के विरुद्ध जितनी चाहे गवाहियां मिल सकती हैं। यह बात किसी से छिपी हुई नही है, कि अल्पायु मे व्यभिचार करने वाले लोग बहुत शीघ्र निर्बल हो जाते हैं तथा शक्तिशाली शक्तिहीन हो जाते हैं। वह युद्ध के योग्य कदापि नही रहते, न वीर कहला सकते हैं। तथा अल्पायु मे व्यभिचार मे फंस जाने वाले मनुष्य न योग जानते और न कर सकते हैं। परन्तु कृष्ण जी की प्रसिद्ध गीता मे बीसियो स्थानो पर गवाही मिलती है। स्वयं व्यास जी लिखते हैं कि—

यत्र योगेश्वर: कृष्ण: यत्र पार्थो धनुर्धर:।

और सब से बढ़कर एक और प्रमाण है अर्थात उपनिषदो की प्रामाणिकता का अनुमान करने के लिए बड़े विद्वान् की आवश्यकता है।

प्रतीत होता है कि यह उपनिषद् कृष्ण जी के समय मे पूर्णता को पहुंचे। जिन में बहुत अच्छी प्रकार से उन के ब्रह्मचर्य का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उपनिषद के मूल शब्द इस प्रकार हैं —

स घोराङ्गिरस: कृष्णाय देवकी पुत्राय।
प्राह स आपिपास अभवत्। (छान्दोग्य)

अर्थ—घोराङ्गिरस कुल के ऋषि ने देवकी के पुत्र कृष्ण को यह विद्या पढ़ाई जिसमें उन्होंने (ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण कर के) पूर्ण विद्वान् हो कर शक्ति प्राप्त की और समावृत हुए।

इस से स्पष्ट प्रकट है कि उन्होंने ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या प्राप्त की थी तथा योगाभ्यास किया था। तो हम केवल ब्रज विलास के कहने पर किस प्रकार विश्वास करें कि वह अवश्य इन (अश्लील) बातों को करते थे। ब्रज विलास पृष्ठ 503 से आगे रासलीला का आरम्भ है। जिस मे आचार, सभ्यता और वेद-मर्यादा के विरुद्ध बहुत सी बातें लिखी हैं। परन्तु यह केवल महात्मा लोगों को कलंक लगाने की इच्छा से ही लिखी गई हैं। जब लोगों का मन व्यभिचार को चाहता है तो महापुरुषो पर कलंक लगाते हैं। ब्रजविलास सम्वत 1827 माघ शुक्ल पंचमी सोमवार को बननी शुरु हुई जैसा कि उस ने स्वयं लिखा है कि—

सम्वत शुद्ध पुराण सत जानों।
ता पर और नक्षत्र न आनो॥

अर्थात 1827 मे यह पुस्तक लिखनी प्रारम्भ हुई। इसका कुछ वर्णन भक्तमाल अध्याय 81 मे भी लिखा है। वास्तविक नाम त्रिपुरदास था। ऐसे ही विष्णु प्रेम सागर मे हैं। परन्तु वह भी अप्रमाणिक है। क्योंकि पुष्टि मार्ग के चलने के पश्चात् बहुत से ऐसे कलंक महाराज जी के जीवन पर लगा दिये गए हैं।

डाक्टर डब्ल्यू-डब्ल्यू हन्टर लिखते हैं कि—

"चैतन्य के मरणोपरान्त विष्णु की धार्मिक पूजा मे कमी आई। लगभग 1520 ईस्वी मे वल्लभ स्वामी ने

उत्तर भारत में उपदेश दिया कि जीवात्मा की स्वतन्त्रता शरीर के कष्टों पर आधारित नहीं और ईश्वर की खोज तपस्या, उपवास तथा एकान्त वास में नहीं। प्रत्युत इस जीवन के भोग विलास में करनी चाहिये। यह धनी सम्प्रदाय बहुत काल से कृष्ण और राधा की पूजा पर विश्वास रखता था, हिन्दू कृष्ण और राधा के कृत्रिम प्रेम को आध्यात्मिक रहस्यमय समझते हैं।" (संक्षिप्त भारतीय इतिहास उर्दू पृष्ठ 165) पुनः लिखते हैं कि, "वल्लभ स्वामी को विष्णु के भोग विलास वाले सम्प्रदाय का संस्थापक कहना चाहिए। वह विष्णु की पूजा विशेषतः कृष्ण के अवतार में करता था। जबकि उन के शिष्यों ने सुन्दर युवकों का रूप लिया। वन और ग्रामों में भोग विलास का जीवन व्यतीत किया। उसकी पूजा के साथ छाया युक्त कुंज, सुन्दर स्त्रियां, बढ़िया भोजन आदि पदार्थ, जो गर्म देशवासियों की मनचाही वस्तु है, सब शामिल थी। (पृष्ठ 166)

भक्तमाल में भी ऐसी बहुत सी कथाएं भरी पड़ी हैं। तीन सौ वर्ष हुए कि इसको नाभा जी ने लिखा था।

(मुख्तसर तारीखे हिन्द पृ 152)

यह भी एक स्मरण रखने की बात है कि कृष्ण जी का कन्हैया नाम भागवत में नहीं, और न राधा का उसमें वर्णन है। परन्तु इस में कोई सन्देह नहीं कि भागवत में उन सब कथाओं का वर्णन है जो इन पुस्तकों में विस्तार से लिखी गई हैं। भागवत न तो व्यास जी की बनाई पुस्तक है और न इतनी पुरानी है, जितनी कि लोग समझते हैं। हम ने यहां तक खोज की है। 1100 ईस्वी पूर्व की पुस्तकों में उस का कोई वचन नहीं मिलता है और 1400 वर्ष से अर्थात् राजा भोज के समय से पूर्व किसी भी पुराण का नाम और चिन्ह तक नहीं मिलता। स्वयं देवी भागवत संस्कृत भूमिका में योग्य टीकाकार ने अकाट्य युक्तियों से सिद्ध किया है कि भागवत बोपदेव का बनाया हुआ है। जिस के भाई जयदेव ने गीत गोविन्द बनाया। अतः इस में कोई सन्देह नहीं कि भागवत के पश्चात् एक हजार वर्ष से इधर यह सब कथाएं कृष्ण जी के सम्बन्ध में घड़ी गई। और रासलीला खेलने वाले लोगों अर्थात् कत्थक लोगों के द्वारा इन आचार बिगाड़ने वाले कथानकों का उपक्रम हुआ, जो अब सम्प्रदाय का रूप धारण कर गया है। हमें महाभारत, गीता और उपनिषदों से कृष्ण जी का जीवन एक योगेश्वर, महात्मा और उच्च विचारों वाले राजकुमार का जीवन प्रतीत होता है। परन्तु प्रेम सागर, भागवत, ब्रज विलास और सूर सागर सर्वथा इन आर्ष ग्रन्थों के विपरीत हैं।

हमें सदाचार और अध्यात्मवाद सिखाता है कि हम महाभारत, गीता और उपनिषदों का समादर करें जैसा कि स्वयं एक विद्वान् ने लिखा है कि—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

अर्थात् सब उपनिषदों को विचार कर के और उनका गहरा अध्ययन करके कृष्ण जी ने गीता को निकाला है। उपनिषद् गौ हैं। कृष्ण जी ग्वाल हैं। अर्जुन बछड़ा है और गीता दूध है।

पुनः हम गीता के अच्छे वचन को छोड़ कर किस प्रकार सत्यान्वेषण न करने वाले रंगीन स्वभाव कवियों के वचन पर विश्वास कर के एक महापुरुष के जीवन पर कलंक लगावें। सत्य तो यह है कि कृष्ण जी के जीवन के, ज्यों 2 समय बीतता गया, लोगों ने बहुत ही गन्दे कथानक बनाने आरम्भ कर दिए। अतः प्रत्येक देशहितैषी तथा जाति के शुभ चिन्तक का कर्त्तव्य है कि इनके पवित्र जीवन पर जो गन्दी और व्यर्थ कथाओं के द्वारा अथवा व्यर्थ और गन्दे नाटकों के प्रभावों से कलंक लगाए गए हैं उन को दूर करके उनकी वास्तविक जीवनी जैसी कि उन के वचनों और उनके समकालीन महापुरुषों के वचनों से सिद्ध होती है, जनता के सम्मुख समुपस्थित करें। हमारी वर्तमान खोज से, जो हमें वर्षों कृष्ण मत में रह कर और दीर्घकाल तक नवीन वेदान्त के महावाक्य पढ़कर तथा गीता के पाठ करने से प्रकट हुआ, यह यही है कि महात्मा कृष्ण चन्द्र से उस चाल चलन का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है जो भागवतादि में लिखा है और न प्रेम सागर से इन का कुछ सम्बन्ध है। इतिहासज्ञ आनरेबल मौंट स्टुअर्ट अलफिन्स्टन भूतपूर्व गवर्नर बम्बई अपने

भारतवर्ष के इतिहास में लिखते हैं कि—

"मथुरा के यदुवंश में उत्पन्न हुए। किन्तु एक ग्वाले ने जो उसी के पास रहता था। एक अत्याचारी राजा कंस के चंगुल से बचा कर उन का पालन-पोषण किया।"

(तारीखे हिन्दुस्तान भ. 4 पृ. 173)

इसी प्रकार का वर्णन करनल टाड ने अपनी पुस्तक राजस्थान प्रथम भाग के पृ. 523 पर किया है।

सर जोन्स अपनी "एशिया के हालात" की पुस्तक प्रथम भाग में लिखते हैं कि—

"कृष्ण के इस काल अर्थात् बालपन के समय का हिन्दुओं के मन पर बहुत ही प्रभाव पड़ा है। कृष्ण के बालपन की गतिविधि जैसे दूध चुराने और साँपों को मारने के पर्व मनाने में कभी भी उन का मन नहीं भरता, और हिन्दुओं में एक बहुत बड़ा सम्प्रदाय कृष्ण को सृष्टि रचयिता समझ कर बालपन के रूप में उन की पूजा करता है। इसी प्रकार कृष्ण की यौवनावस्था, जो उन्होंने गोपियो के साथ नाच रंग, खेल कूद, बांसुरी बजाने में व्यतीत की, उन की पूजा करने वाली स्त्रियों में एक जोश उत्पन्न करती है। कृष्ण पर कुछ गोपिया ही आसक्त न थी प्रत्युत समस्त भारत की धनिकों की स्त्रियां और रानियां जो उन का सौन्दर्य और चमक देखती थी उन पर बलि-2 जाती थी।"

(पृष्ठ 259)

इसी प्रकार भाग 3 पृष्ठ 185 में भी जो जयदेव के गीत के अनुवाद के सम्बन्ध में है। इसी प्रकार का वर्णन है, और तारीखे हिन्दुस्तान के पृष्ठ 173 पर इसी का वर्णन है।

जयदेव कृत गीत गोविन्द तथा और इसी प्रकार की कविताओं को योरुपीयन इतिहासकार तथा संस्कृत के विद्वान् केवल "ग्रामीण काव्य" का नाम देते हैं। जैसा कि उस के सम्बन्ध मे एशिया वृत्तान्तान्वेषण में लिखा है कि—

जयदेव के ग्रामीण काव्य "गीत गोविन्द" के प्राय: गीत ग्रामीण गीतों का ही रूप उपस्थित करते हैं। जिन से मैं परिचित हूं। इन गीतों में उत्तम प्रकार का विवरण तथा भावुकता है। परन्तु स्वाभाविकता और उत्साह का अभाव है, जो हिन्दू कवियों के विशेष गुण समझे जाते हैं। इन गीतों मे चुटकले और उपहास भी है। उन का लेखक चौदहवी शती ईस्वी में हुआ है। अतः प्रतीत होता है कि व्यंगात्मक गीतों का ढंग उस ने मुसलमानों से लिया होगा।

(भाग 3 पृष्ट 185 तारीखे हिन्दुस्तान भाग 1 पृष्ठ 295)

लिथबर्ज, प्रसिद्ध इतिहासकार, लिखते हैं कि "गीत गोविन्द एक ऐसी कविता है जो कुछ-कुछ नानक जी की पद्धति पर है। इस मे कृष्ण चन्द्र ग्वाले और राधिका उस की ग्वालिन के प्रेम की कथा है। जो जयदेव ने बारहवी शती ईस्वी मे लिखी थी। इस कवि की कविता रसीली है।"

(तारीखे हिन्द पृष्ठ 242)

देवी भागवत के टीकाकार के कथनानुसार तथा उस की कविता की पद्धति के अनुमान से भागवत पुराण का कर्ता बोपदेव सिद्ध हो चुका है। और जयदेव तथा बोपदेव दोनों सगे भाई थे। परन्तु गीत गोविन्द कुछ वर्ष पश्चात् लिखा गया प्रतीत होता है। कुछ भी हो ऐसे दोष लगाना किसी भी अवस्था मे उपयुक्त नहीं। भागवत के कथनानुसार उन की आयु जब तक वह गोकुल और वृन्दावन में रहे केवल आठ अथवा दस वर्ष की थी और किसी प्रकार इस अनुमान से अधिक नही पाई जाती। अत: ऐसी अवस्था मे लड़कियो के साथ खेलना, फिरना, हंसना तो सम्भव है। परन्तु ऐसी अन्धेर की बातें करना सर्वथा असम्भव है। इस के अतिरिक्त इस आयु में व्यभिचार का विचार तक भी नही किया जा सकता। पुनः अनुमान से दूर ऐसे कथानक कभी स्वीकार करने के योग्य नही हैं। इस आधार पर हमें इन के मानने में हिचकचाहट ही नही प्रत्युत सर्वथा इन्कार है। प्रोफेसर विल्सन का लेख भी हमारी धारणा का समर्थक है। जिन्होने अच्छी प्रकार विचार और अनुभव कर के लिखा है कि ऐसे विचार और कामवर्द्धक कथानक कामी लोगों ..

को प्रसन्न करने के लिए लिखे गए हैं। (कृष्ण की पूजा करने वालों के सम्बन्ध में) इस सम्प्रदाय में समस्त धनी वर्ग और कामी स्त्री पुरुषों के प्रत्येक श्रेणी के वर्ग अभिमत हैं।

(इनसाइक्लोपीडिया एथिक्स भाग 6 पृष्ठ 65, 66 तारीखे हिन्दुस्तान पृष्ठ 175)

श्रीकृष्ण के जीवन पर एक दृष्टि

श्री कृष्ण जी महाराज के चरित्र का वृत्तान्त संक्षेप से हम पहले कर चुके हैं। इस के अतिरिक्त इन की अपूर्व शूरवीरता का वर्णन करना भी यहां अभीष्ट है। उस समय के लोग प्रायः वृष्टि का देवता राजा इन्द्र को समझते थे और विचार करते थे कि उस की कृपा के बिना वर्षा नहीं होती। इसी विचार के अनुसार ग्वालों में (जिन्हें सदा घास चारे की चिन्ता अधिक रहती थी) कार्तिक मास में राजा इन्द्र के नाम पर कई प्रकार की पूजा होती थी। चाहे उस के नाम पर ब्राह्मणों को खिलाते थे। चाहे गौओं को खिलाते थे। यद्यपि यह प्रतीत न होता कि किस प्रकार पूजा करते थे। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि किसी प्रकार अवश्य किया करते थे। जिन का अभिप्राय इस से केवल यह था कि वर्षा समय पर बरसे और अन्न की बहुतात हो। गौवें, भैंसे बहुत दूध देवें। तथा खेती बाड़ी भी अच्छी प्रकार हो। यद्यपि यह स्वाभाविक है और प्रत्येक सभ्य, असभ्य का हार्दिक उत्साह है कि ऐसा हो क्योंकि हमें 'तोरेत' से भी ऐसा ही ज्ञात होता है कि 'तुम खुदावन्द अपने खुदा की पूजा करो, वह तुम्हारी रोटी और पानी में बरकत देगा।' खरूज 43-35 में अच्छी भूमि का केवल यही परिचय दिया कि उस में दूध और शहद बहता है अर्थात् बहुत है, अतः दूध की अधिकता वास्तव में ईश्वरीय दया का चिह्न है और यही गोकुल और वृन्दावन के ग्वाले लोग भी ईश्वर से मांगते थे। भूल केवल यह थी कि वह राजा इन्द्र को इस का दाता समझते थे। अन्त तो गत्वा जब श्री कृष्ण जी ने होश सम्भाला तथा युवावस्था को पहुंचे तो एक बार उन की उपस्थिति में कार्तिक मास का वह दिन आया जब कि सब गोकुल वासियों ने इन्द्र की पूजा का विचार किया।

अन्न के खाने से लिंग भौतिक शरीर उत्पन्न होता है। अन्न मेघ बरसने से होता है। मेघ यज्ञों से होते हैं। यज्ञ आहुतियों से परन्तु आहुति कर्म से और कर्म वेद से उत्पन्न होते हैं। वेद अविनाशी परमात्मा से प्रकट होते हैं। अतः सर्व व्यापक ब्रह्म के निमित्त प्रति दिन यज्ञ करना चाहिए।

गोवर्धन पर आ कर श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज ने बलराम जी सहित हवन कुण्ड बनवाया। और एक बहुत बड़ा यज्ञ रचा। समस्त गोकुल और वृन्दावन के लोग जो यज्ञ की सामग्री लाए थे, उस से हवन किया। सब लोगों ने बारी-2 से आहुतियां डालीं। सब देश उस हवन की सुगन्धि से सुगन्धित हुए। ब्राह्मणों, साधुओं और अभ्यागतों के लिए भोजन यज्ञ भी किया गया। उन का प्रत्येक प्रकार से आतिथ्य सत्कार किया गया। आकाश में बादल एकत्र हुई तथा बड़ी मूसलाधार वृष्टि हुई। कृष्ण जी की इस पवित्र शुभ प्रस्तावना से इन्द्र की पूजा गोकुल से बन्द हो कर वेदोक्त पूजा प्रचलित हुई।

इसी प्रकार अच्छे अच्छे उपदेश गोकुल व वृन्दावन वालों को श्री कृष्ण जी देते रहे। उन के उपदेशों से बड़ा लाभ पहुंचा। और लोगों को उन से बहुत प्रेम हो गया। जब वह युवावस्था को पहुंचे तो माता पिता के दुःख का बदला लेने पर कटिबद्ध हुए। इतने में कंस ने यह मन्त्रणा की कि किसी बहाने कृष्ण को मथुरा में बुलवाकर वध करा दूं। इस के लिए एक बुद्धिमान पुरुष को जिस को नन्द जी से भी कुछ पहुंच थी, चार घोड़ों का रथ दे कर गोकुल भेजा कि मथुरा में यज्ञ है। नन्दराजा जी को कृष्ण, बलराम सहित इस बहाने मथुरा ले आओ। अक्रूर इस रहस्य को जानता था कि इन का वध करा दिया जाएगा। इसलिए वह शोकातुर हो कर गोकुल गया। एक दो दिन गोकुल ठहर कर सब को मथुरा जाने के लिए तैयार किया।

मथुरा उस समय बहुत महत्ता प्राप्त कर चुकी थी। उस की जनसंख्या, उस का धनवैभव और उस के भवन मनुष्यों को आश्चर्यचकित करते थे। गैज़ेटियर इम्पीरियल

अर्थात् स्वर्णमय भारत के लूटने के लोभ पर शिकार आया। दारा को इसी स्वर्णमय भारत के एक प्रान्त पंजाब के कुछ भागों ने शाहन्शाह दारा बना दिया। महमूद के समय जो मथुरा की अवस्था थी, उस का अनुमान इस इस्लामी इतिहास के अतिरिक्त और किसी प्रकार यथार्थ नहीं लगा सकते। महमूद ने मथुरा से गज़नी के हाकिम को एक पत्र लिखा था कि "यहां अगणित मन्दिरों के अतिरिक्त और भी सहस्रों भवन है। जो कि इस्लाम के अनुसार सुदृढ़ हैं और जिन में प्राय: संगमरमर के हैं। यह नगर सहस्रों दीनार खर्च करके निर्मित हुआ होगा। ऐसा नगर दो सौ वर्षों से कम में नहीं बन सकता है।"

(तारीखे हिन्द 1852 ईस्वी पृष्ठ 111)

लूट में पांच सोने की मूर्तियां आई जिनकी आंखें मणि जटित थी। एक अन्य मूर्ति में अमूल्य रत्न थे। इस के अतिरिक्त चांदी की एक सौ मूर्तियां लूट में आई जो कि एक सौ ऊंटों पर लादी गई।

(तारीखे हिन्द पृष्ठ 112 कलकत्ता)

20-26 दिन महमूद मथुरा में रह कर इस को बरबाद करता रहा और मूर्तियों को तुड़वा कर मन्दिरों में बुरे-2 कार्य किए। तोड़ी हुई चांदी की मूर्तियों से एक सौ ऊंट भर कर ले गया। पांच मूर्तियां सोने की थी। उन में से एक का वज़न हमारे अब के 4 मन से ऊपर था।

इतिहास तिमिरनाशक भाग 1 पृष्ठ 14, 1883 ई.

पाठक वृन्द! हम आप को कहां तक बताएं। सोमनाथ आदि की लूट का वृतान्त, देहली की लूट, कांगड़ा और कन्नौज की तबाही व बरबादी का वृतान्त पढ़ कर आप समझ सकते हैं कि आर्यावर्त साधारणत: और मथुरा विशेषत: उस समय किस उच्च पद में अवस्थित होगा।

श्री कृष्ण जी ने बड़े उत्साह से मथुरा को देखा और सारे बाजार में सैर करते हुए स्वर्णिम गढ़ (किला राजा कंस) के द्वार पर पहुंचे। उस गढ़ के चारों ओर एक गहरी खाई थी। जब उस से पार हुए। प्रथम एक सुदृढ़ धनुष-कमान मार्ग में उन को दी गई। जिस पर बहुत लोग ज़ोर करते थे परन्तु तोड़ नहीं सकते थे। श्री कृष्ण जी (जो बल और शक्ति के पुंज थे) ने उस कमान को तोड़ डाला और सब पहलवानों को लज्जित किया। राजा कंस ने जब कमान की बात सुनी तो दु:खी हुए। पुन: कंस ने शलु, तत्सल, चांणूर, मुष्टक चार प्रसिद्ध पहलवानों को कुश्ती के लिए भेजा। जिस मैदान में यह पहलवान कुश्ती के लिए समुद्यत थे, उस के द्वार पर एक मस्त हाथी भी कृष्ण जी और बलराम जी के वधार्थ छोड़ रखा था। इन दोनों शूरवीरों ने हाथी को मार गिराया। जब पहलवानों के अखाड़े में पहुंचे तो उन में से दो नामी योद्धा मुष्टक और चांणूर इन दोनों के सम्मुख हुए। श्री कृष्ण जी से चांणूर की कुश्ती हुई और बलराम जी से मुष्टक का सामना हुआ। अन्तत: दोनों वीरों ने कंस के दोनों पहलवानों को मारा और अखाड़े में पछाड़ दिया। शल और तत्सल ने जब यह अवस्था अपनी आंखों से देखी तो मृत्यु को सम्मुख देख कर भागे। कवि के वचनानुसार:—

अखाड़ा छोड़ के बेदीन भागे, दलेरोमर्द कुश्तीगीर भागे।

रहे उस जा फ़क्त दोनों बिरादर, न आया सामने कोई दिलावर॥

इस के पश्चात राजा कंस ने देखा कि अब इन का सम्मुख कोई नहीं कर सकता। स्वयं तलवार लेकर उठा परन्तु कुछ न कर सका। उस का प्रभाव उस पर छा गया। वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा। श्री कृष्ण जी ने उस की तलवार छीन ली और उस की छाती पर चढ़ कर उसे मार डाला। नगर में ऊधम मच गया। कंस के भवनों में चीत्कारपूर्ण रुदन हुआ। राजा कंस का शरीर यमुना के तट पर जलाया गया। और श्री कृष्ण जी ने उस के सब सम्बन्धियों को आश्वासन दिया। इस के पश्चात् वह कारागार में माता पिता के दर्शनों को गए।

नए सिरे से खुशी के तराने और प्रसन्नता के वादित्र मथुरा में बज उठे। घर-घर आनन्द विभोर हुआ। अत्याचारी का अत्याचार समाप्त और न्याय युग का आरम्भ हुआ। मथुरा के उद्यान ने 'अपना पुराना वाता-

मान पाया अर्थात् कृष्ण जी और बलराम जी ने दूसरे दिन राजा उग्रसेन को ढूंढा। ज्ञात हुआ कि वह एक अन्धेरी काल-कोठरी में कैद हैं और अपने जीवन से निराश हैं। दोनो भाई वहां पधारे और अपने हाथ से उन के बन्धन खोल का राजगद्दी पर ला बिठाया। ताज उन के सिर पर रखा। उन के नाम की मनादी (घोषणा) हुई। घर-घर मे आनन्द की वर्षा हुई। राजनैतिक बन्दी स्वतन्त्र कर दिए गए। दुष्ट जनो को दण्ड मिला। सज्जनो का साहस बढा। देश में शान्ति स्थापित हुई। नन्द जी गोकुल लौट आए। यहां एक और विभ्य विद्वान् सांदीपनि जी से दोनो भाई भिन्न-2 विद्याओ को पढते रहे और वर्षों तक शिक्षा प्राप्त कर के अति प्रसिद्ध हुए।

जो सफलता श्री कृष्ण जी और बलदेव जी को कंस के मुकाबला और प्रसिद्ध पहलवानो से युद्ध करने मे हुई, उस से कुछ लोगों का यह विचार है कि यह बात चमत्कार के बिना कैसे सम्भव हो सकती है। इसलिए हम उन की सेवा मे निवेदन करते हैं कि वह कृपापूर्वक रुस्तुम, बर्जी, सोहराब, भीमसेन, अलफंदयार, साम व नरीमान की घटनाओ को पढें। तब कदापि ऐसा झूठा विचार उन के मन मे न आऐगा। इस मे कोई सन्देह नहीं कि वह बड़े प्रसिद्ध निरामिषभोजी योद्धा थे। दूध मक्खन, जो सब से श्रेष्ठ और शक्तिवर्द्धक भोजन है, वह उन्होंने बहुतात से खाया था और बहुत व्यायाम किया था। रात दिन खेल कूद के अतिरिक्त जो ब्रह्मचर्य के लिए आवश्यक है उनका कोई कार्य न था। 48 वर्ष तक उन्होंने पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया। धर्म शिक्षा, विद्या प्राप्ति, सैर, स्वतन्त्रता के अतिरिक्त दुष्ट कर्मों से सदा पृथक रहे। यही सब से उत्तम साधन उन की वीरता के हैं। 25 वर्ष की अवस्था मे वह मथुरा पहुचे। उस के पश्चात् मगध के राजा जरासंध से 18 बार युद्ध हुआ जिस में किसी अवस्था मे भी 23 वर्ष से न्यून व्यतीत नहीं हुए होंगे। उपनिषद् से ज्ञात होता है जैसा कि हम पूर्व सिद्ध कर चुके हैं कि वह पूर्ण ब्रह्मचारी रहे। अतः अवश्य 45 वर्ष तक उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया होगा।

वह गीता का ज्ञान सुनाने वाला कोई कृष्ण और था।

वह गीता का ज्ञान सुनाने वाला कोई कृष्ण और था।
पुराण के पोथो मे आने वाला कोई कृष्ण और था॥
वे थे और पढे सन्दीपन ऋषि गुरुकुल मे सब विद्यायें।
चोर जार सिरमौर कहाने वाला कोई कृष्ण और था॥
वे थे और दूध दही मक्खन जिनके घर मे लाख गऊ थी।
घर--घर मे चुरा माखन खाने वाला कोई कृष्ण और था॥
वे थे और कि जिन्हे विवाही गई रुकमणी वीर प्रसूता।
राधा को सब भांति रिझाने वाला कोई कृष्ण और था॥
वे थे और गये मथुरा कंसपुर का अन्याय मिटाने।
पर नारी कुब्जा घर जाने वाला कोई कृष्ण और था॥
वे थे और जन्मदिन जिनका सभी मनाते आर्य "सालमन"।
सब गोपिन के रास रचाने वाला कोई कृष्ण और था॥

स्वतन्त्रता दिवस

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

यह शास्त्री प्रथम वर्ष की कक्षा है। इस समय चतुर्थ पत्र का क्रम है। इस कक्षा के चतुर्थ पत्र में हिन्दी, पंजाबी या अंग्रेजी भाषा का पाठ्यक्रम निर्धारित है। यहां इस समय सभी विद्यार्थी हिन्दी भाषा वाले हैं। जब प्राध्यापक महोदय ने कक्षा में प्रवेश किया, तो सभी विद्यार्थियों ने उठ कर प्राध्यापक महोदय का अभिवादन किया। उपस्थिति लेने के बाद गुरु जी ने कहा—इस पत्र में कविता, उपन्यास नाटक, हिन्दी भाषा के इतिहास के साथ निबन्ध भी निर्धारित है। आज (14 अगस्त को) निबन्ध का क्रम है। अतः आज हम कल के स्वतन्त्रता दिवस पर ही विचार करें।

सौरभ—गुरु जी! पहले इसी शब्द पर ही प्रकाश डालने की कृपा करेंगे।

प्राध्यापक—ठीक है। स्व और तन्त्र इन दो के मेल से स्वतन्त्र शब्द बनता है। इसके साथ ता प्रत्यय लग कर स्वतन्त्रता शब्द पूर्ण होता है। अतः इस में स्व—तन्त्र—ता इन तीन अंशों का मेल है। स्व का अर्थ है—अपना, तन्त्र का अर्थ—है इच्छा, शास्त्र और ता=भाव, पन अर्थ में आता है। अर्थात् अपनी इच्छा, अपने शास्त्र=संविधान का भाव, पना। यही भाव स्वाधीनता का भी है और इसमें स्व—अधि—इन(स्वामी)—ता का मेल है अर्थात् अपना स्वामीपन, अपना मालिक आप होने का भाव। इसी अर्थ में स्वराज्य शब्द भी लिया जा सकता है। इसी को उर्दू में आजादी शब्द से पुकारा जाता है। पर स्व—तन्त्र का अपना भाव यही है, कि अपनी व्यवस्था को स्वयं स्वीकार करना। दूसरे के द्वारा या दण्ड के भय से नहीं। स्वाधीन का भाव है—अपने आपको मालिक मान कर अपने उत्तरदायित्व को स्वयं स्वीकार करना। नौकर की तरह दूसरे द्वारा हांका न जाना। इन के विपरीत शब्द है—परतन्त्र, पराधीन इन से भी ऊपर वाला अर्थ, भाव स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

सोमेश—गुरु जी! तन्त्र का अर्थ इच्छा के साथ। शास्त्र—संविधान, व्यवस्था किया है। कृपया इस को उदाहरण से समझाएं।

प्राध्यापक—तन्त्र—शास्त्र—संविधान—व्यवस्था के लिए ही होते हैं। जैसे कि एक स्कूल को चलाने के लिए एक व्यवस्था होती है और व्यवस्था के अनुरूप ही स्कूल की प्रगति या स्कूल चलता है। स्कूल में अध्यापक, छात्र, पुस्तक आदि आते हैं। जिन नियमों से स्कूल चलता है, उस को ही व्यवस्था कहा जाता है। यह व्यवस्था, नियम ही स्कूल का संविधान होता है। यही भाव हर संगठन और देश पर लागू होता है।

गौरव—गुरु जी! हमारे देश के इतिहास, साहित्य में इस दिन का जो विशेष गौरव है। उस पर भी कुछ प्रकाश डालें, तो 'सोने में सुहागे' वाली बात होगी।

प्राध्यापक—हां, जैसा कि आप सब जानते हैं, कि अपना देश सैकड़ों वर्ष पराधीन रहा है। पराधीनता के पहले दिन से ही अपनी गुलामी की जंजीरों को काटने के लिए भारतीय किसी न किसी रूप में जूझते रहे हैं। लाखों के अनेक तरह के बलिदानों, करोड़ों के बहुत तरह के कष्ट सहने के बाद 15 अगस्त 1947 को जैसे-कैसे रूप में भारत स्वतन्त्र हुआ। जिसने भी जितनी ईमानदारी के साथ जितना इसके लिए संघर्ष किया, वह तदनुरूप हमारे सम्मान और गौरव का पात्र है।

सौरभ—स्वाधीनता और सघर्ष का आपस मे क्या सम्बन्ध है ? तथा इस की सक्षिप्त कहानी क्या है ?

प्राध्यापक—जब जीने की इच्छा जहा करते है, वहा अपनी इच्छा के अनुसार ही जीना चाहते है और उसी मे अपना सम्मान मानते है, अन्यथा पिन्जरे वाले पक्षी की तरह छट-पटाते है। अपनी इच्छा का नाम ही स्वाधीन, स्वतन्त्र, स्वराज्य है। इसी लिए ही सभी भाषाओ के साहित्य मे स्वतन्त्र आदि भावो की गरिमा जहा मिलती है, वहा एतदर्थ सदा सजग रहने का सन्देश भी मिलता है। अत स्वाधीनता की भावना स्वाभाविक है और इसीलिए ही कहा जाता है, कि 'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। जब कभी जहा कही जिस किसी रूप मे पराधीनता की बात होती है, तभी स्वाधीनता प्रेमी अन्तिम सास तक उस पराधीनता से टक्कर लेने के लिए हर कोशिश करते है। स्वाधीनता प्रेमियो ने हर बलिदान देकर भी इस स्वाधीनता की ज्योति को बुझने नही दिया।

मध्य युग मे भारत जब मुस्लिम पराधीनता की बेडियो मे जकडा, तब राणा आया। राणा प्रताप, शिवा जी आदि के रूप मे यह स्वाधीनता सग्राम सदा चलता रहा। ऐसे ही अग्रेजो की गुलामी मे जकडे जाने पर कभी मगल पाण्डे के रूप मे, तो कभी रानी झासी, तात्या टोपे, कुवर सिह आदि नेताओ के नेतृत्व मे 1857 का प्रथम स्वाधीनता सग्राम छिडा और यह सग्राम भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव- चन्द्रशेखर आदि क्रान्तिकारियो की सशस्त्र क्रान्ति के रूप मे 1946 तक और जल सेना के विद्रोह तक चलता रहा।

सशस्त्र क्रान्ति के साथ 1917 से महात्मा गान्धी के नेतृत्व मे अहिंसात्मक सत्याग्रह आदि के रूप मे एक धारा और आकर जुड गई। उस समय तक स्वाधीनता सग्राम कुछ युवको या नेताओ तक ही सीमित था, पर महात्मा गान्धी के साथ यह जनता का आन्दोलन बना।

सोमेश—गुरु जी! इस का यह भाव हुआ, कि स्वाधीनता के महत्व की दृष्टि से यह सब स्वाभाविक है।

प्राध्यापक— यह तो बिलकुल स्पष्ट बात है, कि स्वतन्त्र, स्वाधीन व्यक्ति एव देश का ही सर्वत्र सम्मान होता है। सभी उसका आदर करते है। इतिहास इसका साक्षी है, कि पराधीन का सदा हर प्रकार से अपमान होता है और तो क्या पराधीन की मिट्टी के खिलौने से भी कम कीमत होती है। वह सब स्थानो पर सदा ही दुत्कारा जाता है। अपने देश और सभी गुलाम देशो के इतिहासो के पन्नो पर पन्ने भरे पडे है, कि कौन सा ऐसा कष्ट और अपमान नही था, जो उन्होने न सहा हो।

वैसे गुलामी का एक सुन्दर-सरल सा उदाहरण है—कैदी का जीवन। जेल मे जीने की सारी जरूरतें मिलती हैं, और उसके ऊपर इनकी अपनी कोई जिम्मेदारी नही होती। केवल सम्मान और अपनी इच्छा की बात नहीं होती। इसीलिए कोई भी स्वाभिमानी जेल जीवन को पसन्द नहीं करता।

सर्वेश—साहित्य की दृष्टि से भी इस पर कुछ चर्चा हो तो और अच्छा है।

प्राध्यापक—हा, हमे अपने पाठ्यक्रम के इस पहलू से भी इस पर विचार करना चाहिए। साहित्य आख की तरह हर क्षेत्र मे राह दिखाता है। वैसे शब्द—अर्थ के सुन्दर साथपने के कारण ही उस को साहित्य कहा जाता है। ससार के पुस्तकालय की सब से प्राचीन पुस्तक वेद ही है। वेदो मे जब-तब स्वराज्य की चर्चा मिलती है। अत. एक एक स्थान पर कहा गया है .—

तत्स्वराज्यमियाय, यस्मा परमस्ति नान्यत् किञ्चित्

अथर्व 10, 7, 31 अर्थात् स्वराज्य सब से बडी नि आमत है और तभी तो ऋग्वेद के 1, 80 सूक्त में 16 बार एक टेक आई है। जिस में कहा गया है—

अर्थात् मनु स्वराज्यम्—और ऐसे ही एक मन्त्र मे आया है 'यतेमहि स्वराज्ये' 5,66,6 हम स्वराज्य के लिए सदा यत्नशील रहें। हां, इस सूक्त मन्त्र और पूर्व निर्दिष्ट सूक्त के हर शब्द को समन्वित कर समझना चाहे कठिन हो, पर वहां के व्यचिष्ठे, बहुपाय्ये, विशेषण बहुत ही विचारणीय हैं। सुरक्षा और आर्थिक विकास, स्वावलम्बीपन ही स्वराज्य को स्थायी बना सकते हैं। इन दोनो के बिना स्वराज्य खतरे में समझा जाता है।

वेद के भावो को लेकर मनुस्मृतिकार ने बहुत ही स्पष्ट कहा है—(क्योंकि वेद को समझने का मनु एक सुन्दर प्रयास है।)

सर्वं परवशं दुःखम्, सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुख दुःखयोः॥

अर्थात् जो कुछ परवश है, वह दुःख रूप है और जो अपने वश में है, वही सुख रूप है और यही सुख-दुःख की सीधी सी पहचान है। तभी तो कहते हैं—'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं,

—तुलसी के ऐसी ही चर्चा अन्य साहित्य मे भी आती है। मेरे विचार से हृदयंगम करने की दृष्टि से आज इतना ही पर्याप्त होगा।

श्रीकृष्ण महान् थे।

हमने कृष्ण महान् पुरुष बतलाया बस इतना अन्तर है।
तुम कहते अवतार लिये प्रभु आया बस इतना अन्तर है॥
कृष्ण गऊ सेवा करते थे, गोवर्धन को यह पूजा थी।
तुम कहते गोवर्धन शैल उठाया बस इतना अन्तर है॥
हम कहते श्री कृष्ण सदन मे दधि मक्खन की कमी नहीं थी।
तुम कहते घर-घर दधि-मक्खन खाया बस इतना अन्तर है॥
हम कहते श्री कृष्ण गृहाश्रम में भी सच्चे योगीराज थे।
तुम कहते गोपिन संग रास रचाया, बस इतना अन्तर है।
हुआ विवाह रुक्मणी से था पत्नीव्रत श्री कृष्णचन्द्र थे।
तुम कहते राधा को भी ले आया, बस इतना अन्तर है॥
अर्जुन को दे ज्ञान हृदय मे उसको रूप विराट् दिखाया,
तुम कहते अपने मुख में दिखलाया, बस इतना अन्तर है।
कहे "ज्ञानमन" हम करते हैं उज्ज्वल यश गुणगान कृष्ण के,
पर तुमने हर वर्ष उन्हें जन्माया, बस इतना अन्तर है।

योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर एक दृष्टि

ले —श्री जगदीशचन्द्र विद्यार्थी (श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती)

द्वापर युग के अन्त में भारत के भाग्याकाश पर अविद्या अन्धकार की घनघोर घटनाएं छाई हुई थी। सामाजिक संगठन शिथिल हो चुका था। भारत अनेक छोटे छोटे राज्यों में विभक्त था। देश में सर्वत्र असन्तोष फैला हुआ था। अत्याचारी राजा साम्राज्यवादी और प्रजा शोषक थे। कंस ने अपने पिता उग्रसेन को कारागार में डाल रखा था। जरासंध और शिशुपाल जैसे अन्यायी राजाओं ने प्रजा को संत्रस्त किया हुआ था। विश्व अशान्त था। ऐसे भीषण समय में एक ऐसे शक्ति सम्पन्न और नीतिज्ञ महापुरुष की आवश्यकता थी जो इस दुरवस्था में सब का सहायक होकर विश्व को व्यवस्थित कर सके। ऐसे समय में असुरों के उत्पीडन से भयभीत प्रजा की रक्षा के लिए, दानवता के पञ्जे में फंस कर कराहती हुई मानवता के उद्धार के लिए भाद्र-कृष्णाष्टमी बुधवार की घोर निशा में रात्रि के अन्धकार को चीरते हुए, अपने आलोक से दिशाओं को आलोकित करते हुए आनन्दकन्द भगवान् कृष्णचन्द्र भारतीय रंगमंच पर अवतरित हुए।

वंश एवं जन्म

श्री कृष्ण यदुवंशी थे। श्री कृष्ण के पिता का नाम वसुदेव और माता का नाम देवकी था। यादवों की राजधानी मथुरा थी। आज से लगभग 5267 वर्ष पूर्व हमारे चरित्र नायक ने इस देवोपम परिवार को अपने जन्म से सुशोभित किया। पुराणों में इनके जन्म सम्बन्ध में जो असम्भव घटनाएं लिखी हुई हैं, महाभारत में उन का उल्लेख भी नहीं है।

बाल्यकाल

श्री कृष्ण जी का जन्म मथुरा में हुआ। यादव कंस के अत्याचारों से दुखी थे। उन्हें अपने धन-जन के अपहरण का सदा ही भय लगा रहता था अतः बड़े भाई बलराम की भांति इन्हें भी नन्द गोप के यहां भेज दिया गया। श्री कृष्ण गोकुल के ग्राम्य वातावरण में पलने लगे और शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ने लगे।

यज्ञोपवीत संस्कार

वैदिक धर्म में संस्कारों का बड़ा महत्व है। वस्तुतः संस्कारों से ही मानव सच्चा मानव बनता है। वसुदेव जी बड़े विद्वान् थे और वैदिक संस्कारों की महत्ता से पूर्ण परिचित थे। जब श्री कृष्ण बड़े हुए तो उन्होंने बड़ी धूम-धाम से श्री कृष्ण के यज्ञोपवीत की तैयारी की। महामति वसुदेव ने अपने पुरोहित गर्गाचार्य द्वारा वेदोक्त विधि से बलराम और श्री कृष्ण दोनों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। श्री कृष्ण और बलराम द्विजत्व को प्राप्त हुए।

गुरुकुल में

जब श्री कृष्ण और बलराम को विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल में भेजा गया और वह भी गोकुल ही के पास। यहां उन्होंने विधिपूर्वक शास्त्रों का अध्ययन और मनन किया। उनकी पाठ विधि में अङ्गों सहित चारों वेद, धनुर्वेद, स्मृति, मीमांसा और न्याय शास्त्र आदि का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय इन छः भेदों से युक्त राजनीति का भी अध्ययन किया। इनके गुरु कौन थे इस विषय में मतभेद है। महाभारत इस विषय में मौन है। पुराणों में आचार्य सान्दीपनि को इनका गुरु बताया गया है परन्तु उनके पास वे केवल 34 दिन ही रहे और अनु-

वेद ही सीखा। छान्दोग्योपनिषद् मे एक कृष्ण देवकी-पुत्र का वर्णन है। उन्होंने घोर आङ्गिरस से शिक्षा प्राप्त की थी। अस्तु।

श्री कृष्ण जी गुरुकुल मे पढते थे परन्तु समीप स्थित ग्राम्य जीवन मे भी भाग लेते रहते थे। उन्होने अनेक बार गोकुल वासियो को भीषण आपत्तियों से बचाया।

एक बार एक साड पागल हो गया। वह गाव वालो के लिए मूर्त्त यमराज बन गया। उसके सीग अत्यन्त तीक्ष्ण थे, आंखें लाल-लाल और अपने खुरो से पृथिवी को विदीर्ण किए डालता था। उस अति भयानक वृषभ को देख कर ग्वाले 'कृष्ण-कृष्ण' पुकारने लगे। जब श्रीकृष्ण को पता लगा तो वे वहा पहुचे और उसकी ग्रीवा को अपनी बलशाली भुजाओं मे पकड कर गीले वस्त्र की भान्ति मरोड दिया, फिर उसका एक सीग उखाड कर उस पर आघात किया जिस से वह रक्त वमन करता हुआ मर गया। इस बैल का नाम अरिष्ट था।

इस प्रकार केशी नामक एक लम्बे-लम्बे बालो वाला घोडा यमुना के जगल मे फिरा करता था। वह था तो अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट परन्तु नितान्त वन्य। किसी को अपने निकट नही आने देता था। आते-जाते व्यक्तियो पर आक्रमण करता था। खुरो से पृथिवी को फाड डालता था। गोपो की प्रार्थना पर श्रीकृष्ण उसे मारने गये तो वह उन पर झपटा। उन्होने भी उसे निहत्थे ही मार डाला। इसी से उनका नाम केशिसूदन हुआ।

इसी प्रकार अनेक बार गोपी और गोपियो को हिंस्र जन्तुओ से बचा कर श्री कृष्ण सारे ग्राम के प्यारे दुलारे हो गये।

गोवर्धन लीला

व्रज मे प्रतिवर्ष इन्द्र का पूजन होता था। इन्द्र प्रसन्न होकर वर्षा किया करते थे। व्रजवासियो ने धूम-धाम से इन्द्र पूजा की तैयारी की। श्रीकृष्ण ने लोगो को समझाया कि गोप जीवन का आधार गोवंश और गो-वर्धन पर्वत है। अतः इन्द्र की पूजा बन्द होकर उसके स्थान पर गोसंवर्धन यज्ञ होना चाहिये जिससे गौओ की समृद्धि हो। ऐसा ही हुआ। इन्द्र अपना यह अपमान देख अति कुपित हुए और उसने मेघो को व्रज पर मूसलाधार वर्षा करने की आज्ञा दी। अति वृष्टि से दुःखी होकर गोप और गोपिया अपने पशुओ को लेकर श्री कृष्ण की शरण में आए। कृष्ण जी ने गोवर्धन पर्वत पर सब को शरण दी और व्रज की रक्षा की।

यदि श्री कृष्ण ईश्वर या ईश्वर के अवतार थे और उन्होने गोवर्धन पर्वत को अपनी अगुली पर उठा लिया तो इसमे उनका कोई महत्व नही क्योकि ईश्वर ने तो अनन्त ब्रह्माण्डो को उठाया हुआ है। अतः लोग उनके इस काम से कोई प्रेरणा और शिक्षा नही ले सकते। हां कृष्ण को एक महामानव, एक योगेश्वर मान कर और इस घटना के वास्तविक रहस्य को जान कर उनका यह कार्य मानव मात्र के लिए अनुकरणीय हो सकता है।

योगीराज कृष्ण ने इस घटना से राष्ट्रीयता का सन्देश दिया है। उस समय भारत वर्ष मे कस के अत्याचार चरम सीमा पर थे। सभी ब्रजवासी कस से डरते थे और वे कस की पूजा कर उसे प्रसन्न किया करते थे। इन्द्र शब्द के अनेक अर्थ हैं। ऐश्वर्यवान होने से राजा को भी इन्द्र कहते हैं। श्री कृष्ण ने ऐसे अन्यायी और दुराचारी राजा की पूजा से लोगो को रोका और भेंट रूप मे कर देने से मना किया। उन्होने परामर्श दिया कि जिस यज्ञ द्वारा देश के धन-धान्य और गोधन की समृद्धि तथा रक्षा होती है उस यज्ञ का अनुष्ठान कर देश को उन्नत करना चाहिये।

भगवान् कृष्ण चन्द्र स्वयं अपने देश के नेता बने। ब्रजवासियो पर कस का कोप स्वाभाविक था। कोई भी राजा विद्रोही प्रजा और उसके नेता को नही देख सकता प्रत्येक राजा अपनी साम्राज्यवादी कामना से प्रजा का हर प्रकार दमन करता है। कस ने भी प्रजा द्वारा पूजन न होते देख अपने सैनिको को ब्रज पर अत्याचार और

घन की मूसलाधार वर्षा करने का आदेश दिया। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच गई। भयभीत आबाल वृद्ध, नर-नारी, युवक और युवतियां गोप और गोपिकाएं इधर-उधर भागने लगे। कृष्ण जी ने सब को धैर्य और आश्वासन दिया। वे तुरन्त रक्षा कार्य में कूद पड़े। उन्होंने अपनी नीतिमत्ता, कार्य-कुशलता, धैर्य और सेवा भावना से इस घोर विपत्ति काल में लोगों की रक्षा की। उन्होंने गोवर्धन पर्वत की गुफाओं और कन्दराओं में लोगो के रहने की व्यवस्था कर कंस के सैनिको से लोहा लिया। बस यही था उनका गोवर्धन धारण। इसी को लक्ष्य कर कविवर अयोध्यासिंह जी ने कितना सुन्दर कहा—

लख अपार प्रसार गिरीन्द्र में,
व्रजधराधिप के प्रिय पुत्र का।
सकल लोग लगे कहने उसे,
रख लिया अंगुली पर श्याम ने ॥

(प्रिय प्रवास)

इस रूप में यह कथा एक सुन्दर सन्देश देती है कि कोई भी देश अपने एक नेता की आज्ञा में चल कर इसी प्रकार निर्भय हो सकता है।

कंस वध

श्री कृष्ण स्नातक हो गए। कृष्ण जी के पराक्रम और कीर्ति के समाचार जब मथुरा में कंस को मिले तो वह व्याकुल हो गया। पापी का हृदय कांप उठा। खुल्लम-खुल्ला भगवान् कृष्ण पर हाथ डालना बड़ा दुष्कर कार्य था। प्रजा के विरुद्ध खड़े होने का भय था। निदान हो छलपूर्वक मरवा डालने का संकल्प किया। कंस ने एक धनुष यज्ञ का आयोजन किया और अक्रूर जी को कृष्ण तथा बलराम को बुलाने के लिये भेजा। श्रीकृष्ण बलराम और बहुत से गोपो के साथ मथुरा पहुंचे। कंस ने दिखाने के लिये कृष्ण के मथुरा आगमन के अवसर पर आनन्दोत्सव मनाया।

श्री कृष्ण धनुष यज्ञशाला में पहुंचे। उन्होंने धनुष को तोड़ दिया। इस के पश्चात् जब आप रंगमंच में प्रविष्ट हुए तो आप के ऊपर एक मदमस्त हाथी छोड़ा गया। श्री कृष्ण उसे मार कर आगे बढ़े। जरासन्ध की भान्ति कंस ने भी अपनी रक्षा के लिए कुछ पहलवान पाल रखे थे। चाणूर और मुष्टिक इन दो सुप्रसिद्ध भीमकाय और मल्लविद्या-विशारद पहलवानों को कंस ने पहले ही सिखा रखा था कि कृष्ण और बलराम का काम तमाम कर दें। कृष्ण और बलराम अखाड़े में उतरे। कृष्ण ने चाणूर को और बलराम ने मुष्टिक को एक दो दावों में ही पछाड़ कर उनकी मिट्टी ठिकाने लगा दी। परिणाम कंस की आशा के ठीक विपरीत था। अब क्या था? कंस का पारा पूरा 104 डिग्री हो गया। कड़क कर आज्ञा दी—"कृष्ण को तुरन्त देश निर्वासित कर दो। वसुदेव को कुत्ते की मौत मार डालो और नन्द को पकड़ कर कारागार में डाल दो।" कंस के मुख से इन शब्दो के निकलते ही कृष्ण कूद कर कंस के सिंहासन तक जा पहुंचे और उसके केश पकड़ कर उसे भूमि पर दे पटका। कंस के प्राण पखेरु उड़ गये। विजयमाला श्री कृष्ण के गले में पड़ी। कंस की मृत्यु का बदला लेने के लिये कंस का भाई सुनामा कृष्ण पर झपटा परन्तु बलराम ने उसे भी यमलोक पठा दिया।

मथुरावासियो ने एकमत हो राज्यसिंहासन और मुकुट सम्भालने के लिए कृष्ण से कहा परन्तु उन्होंने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपने बूढ़े और अत्याचार-पीड़ित नाना उग्रसेन को कारागार से छुड़ा कर राज्य सिंहासन पर बैठाया।

भगवान् कृष्ण की, स्नातक होने के पश्चात्, यह प्रथम विजय थी जिसमे उन्हें पूर्ण सफलता मिली। उन्होंने नष्ट हुए संघ की पुनः स्थापना की और यादवों की खोई हुई स्वतन्त्रता पुनः प्राप्त करा दी।

काकोरी के अमर शहीद, क्रान्तिकारी नेता—

पं. रामप्रसाद विस्मिल

लेखक—श्री राजपाल सिंह जी शास्त्री दिल्ली



ग्वालियर राज्य मे तोमर घाट मे चम्बल नदी के किनारे शाहजहापुर ग्राम विद्यमान है। उस ग्राम मे मुरलीधर नाम का एक व्यक्ति रहता था, मुरलीधर के घर मे ज्येष्ठ शुक्ल 11 सम्वत् 1954 मे एक बालक ने जन्म लिया, उस बालक का नाम "रामप्रसाद" रखा गया। आपके घर की अवस्था अच्छी नहीं थी। पिता जी बड़े शौक शौक के थे, जब आठ वर्ष के हुए तब आपको पिता जी ने हिन्दी के सामान्य अक्षरो का ज्ञान कराया, उर्दू पढाने के लिए एक मौलवी साहब के पास भेजते थे। बालकपन से गाय पालने का बहुत शौक था। बाल्यकाल मे बहुत उद्दण्ड थे, पिता जी दण्ड दिया करते थे, परन्तु उद्दण्डता नही छोडते थे, थोडे दिन के बाद पैसो की चोरी भी करने लग गए, तथा उपन्यास ग्रन्थ उन पैसो से खरीद खरीद कर पढा करते थे, शराब भी पीने लग गए। एक दिन की बात है कि शराब पीकर सन्दूक से पैसे निकाल रहे थे, बेहोशी के कारण ट्रंक की आवाज हो गई। आपकी माता जी ने उस आवाज को सुन लिया, उस दिन आप चोरी करते हुए पकड़े गये, और बहुत से रुपये प्राप्त हुए तथा उपन्यासो की पुस्तके। उस दिन आपको बहुत दण्ड दिया गया।

एक दिन आपके गाव मे आर्य समाज के प्रसिद्ध स्वामी सोमदेव जी आये। उनके पास आपका आना जाना होने लगा। आपके जीवन ने पलटा खाया, आप आर्य समाजी बन गए और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। कुछ दिनो मे आपने सब दुर्व्यसनो को छोड दिया। महात्मा, सन्यासियो के उपदेश रुचि से सुनने लग गये। इससे देश सेवा का भाव मन मे उत्पन्न हो गया, और देश सेवा का व्रत ले लिया, तब से शरीर को सुदृढ बनाने का प्रयत्न करने लग गए। प्रतिदिन नियम पूर्वक व्यायाम, यज्ञ करते थे, इसके

फलस्वरूप आप थोड़े ही दिनों में असाधारण शक्तिशाली हो गए। घोड़ा, साइकिल, तैरना आदि में बड़े निपुण थे। और साठ-साठ मील पैदल चले जाते थे, तब भी हिम्मत न हारते थे, व्यायाम और प्राणायाम इतना करते थे कि देखने वाले दंग रह जाते थे। और व्यायाम बहुत शौकीला किया करते थे। जब आप अंग्रेजी की नवीं कक्षा में पढ़ते थे तब कुछ स्वदेशी पुस्तकों का अवलोकन किया, उससे स्वदेश प्रेम उत्पन्न हुआ। शाहजहां में सेवा समिति की नींव पं. श्रीराम बाजपेयी जी ने डाली। उसमें ये बड़े उत्साह से काम करते थे, आपके हृदय में दूसरों के प्रति सेवा का भाव उत्पन्न हुआ, समझने लग गए, कि वास्तव मे देशवासी बड़े दुखी हैं, उसी वर्ष अ. भा. कांग्रेस का उत्सव था, ये भी उसमें सम्मिलित हुए। उसमें निश्चय हुआ कि देश के लिए विशेष कार्य होना चाहिए। भारतवासियों के दुःख तथा दुर्दशा की जिम्मेवारी गवर्नमेंट पर है। अत एव सरकार को पलटना चाहिए, आपने भी इन विचारों का अनुमोदन किया। कांग्रेस के उत्सव में महात्मा तिलक के पधारने की खबर थी, इस कारण गर्म दल के व्यक्ति भी आए हुए थे। कांग्रेस के सभापति का स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ। दूसरे दिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की स्पेशल गाड़ी आने का समाचार मिला, बहुत जनता वहां पर विद्यमान थी। स्वागत कारिणी समिति के सदस्यों ने निश्चय किया कि शहर में उनकी सवारी न निकाली जाए, जिसका कारण यह था कि वे जानते थे कि उनका स्वागत कांग्रेस के प्रधान से भी अधिक होगा, तब रामप्रसाद जी से तथा उनके साथियों से यह सहन न हो सका, सब ने मिलकर निश्चय किया कि उनकी सवारी शहर में से निकाली जाएगी। जब वे स्टेशन पर आए तब उन्हें मोटर में बैठाकर शहर से बाहर ही ले जाना चाहते थे तो रामप्रसाद जी तथा उनके साथी गाड़ी के आगे लेट गए। एक युवक ने मोटर का टायर काट दिया और लोकमान्य तिलक को घोड़े की गाड़ी मे बैठा कर हाथो से गाड़ी का खींचना शुरू किया। इस प्रकार लोकमान्य का स्वागत बड़ी धूम-धाम से हुआ।

कांग्रेस के उत्सव के अवसर पर ज्ञात हुआ कि एक गुप्त समिति है जिसका मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेना है। इस बात को सुनकर आप उस समिति के सदस्य बन गए। रुपयो की समिति मे आवश्यकता थी तो आपने एक पुस्तक प्रकाशित की, उससे धन प्राप्त किया। पुस्तकें सब बिकने भी न पाई थीं कि देशवासियों के लिए एक सन्देश प्रकाशित किया और सर्वत्र पर्चे बांट दिए गए, क्योंकि पं. गेंदालाल जी अपने दल सहित ग्वालियर में गिरफ्तार हो गये थे। उनको छुड़ाना था। इसको देखकर सरकार ने पुस्तक जब्त कर ली।

आन्दोलन के लिए हथियार चाहिएं, हथियारों के लिये रुपये, अब चिन्ता हुई कि पैसे हथियारों के लिए कहां से लाए जाएं? इधर-उधर से पैसे बहुत कठिनता से प्राप्त किए तथा उनसे हथियार खरीदे। हथियार भी अच्छे नहीं मिले और पैसे भी अधिक आपसे ले लिए, क्योंकि हथियारो की आपको जानकारी नही थी।

एक दिन की बात है कि आपको एक खुफिया पुलिस ने आकर कहा कि आओ आपको मैं बहुत अच्छे हथियार दिखाऊं। उसके साथ चल पड़े, खुफिया पुलिस इंस्पेक्टर के घर पकड़वाने के लिए ले गया, आपको शंका हुई कि यह कहां ले जाता है? जब इंस्पेक्टर के घर के सामने पहुंचे उस समय इंस्पेक्टर घर पर न थे, तब आपको किसी से पूछने पर पता चला कि यह घर तो इंस्पेक्टर का है तब उससे आंख बचाकर चलते बने। फिर अपना रहने का स्थान बदला, तथा जिससे आप हथियार खरीदते थे उसका भी खुफिया पुलिस ने पता चला लिया। उस समय आप लोगों के पास दो राइफलें, चार रिवाल्वर तथा दो पिस्तौल खरीदे हुए मौजूद थे। उस दिन एक मनुष्य हथियार लेकर आने वाला था। इस बात का

खुफिया पुलिस को पता चल गया, उन्होंने सर्वत्र तार कर दिये तथा सारी रेलगाड़ी की तलाशी ली गई, उस दिन आप गिरफ्तार हो जाते परन्तु पुलिसियों की असावधानी के कारण बच गये।

इधर आप अपने काम में व्यस्त थे। मैनपुरी के सदस्य ने एक आदमी से रुपयों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए कहा कि आप किसी के यहाँ डाका डलवाओ, उसके मना करने पर, उसने मारने की धमकी दी। उसने पुलिस को सूचना दे दी, मामला खुल गया, मैनपुरी में गिरफ्तारियाँ आरम्भ हो गई। उसमें आपके वारन्ट जारी हो गए। उन्हीं दिनों दिल्ली में कांग्रेस की बैठक होने वाली थी। आपने एक पुस्तक लिखी थी वह यू पी सरकार ने जब्त कर ली थी, वहाँ गये तथा पुस्तकें बेची, पुलिस को पता चलने पर पुस्तकें लेकर शाहजहाँपुरा में आ गए, वहाँ पर भी पुलिस ने पकड़ना शुरू कर रखा था। शाहजहाँपुरा से चल कर दूसरे शहर में ठहरे। रात्रि के समय में मालिक ने बाहर से ताला डाल दिया। ग्यारह बजे आपका एक साथी आया। साथी को ताला देकर सन्देह हो गया। वहाँ सबके सब दीवार के ऊपर से कूद कर चल दिये। अन्धेरी रात थी, आप सब थोड़ी दूर गए थे कि अकस्मात् एक आवाज आयी कि ठहरो, नहीं तो गोली मारते हैं। सबके सब खड़े हो गए, दरोगा तथा सिपाही बन्दूक हाथ में लिये आपके पास आ गये। आपसे पूछा—कौन हो, आपने उत्तर दिया विद्यार्थी हैं, स्टेशन पर जा रहे हैं। दरोगा को शक हुआ क्योंकि गाड़ी पाँच बजे आती थी, तब दो बजे थे। आप सब लोगों के चेहरे पर रौनक देख कर शक जाता रहा, अन्यथा सब उस दिन गिरफ्तार हो जाते।

आप प्रयाग में धर्मशाला में निवास करते थे। वहाँ पर एक दिन सन्ध्या कर रहे थे तो एक व्यक्ति ने आ कर ऊपर तीन वार किये, परन्तु आपको वार न लगे, वार करने वाला, पहले आपका दुश्मन था, परन्तु बीच में मित्रता हो गई थी आपको इस बात को देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि दो गज के फासले से वार किया, परन्तु आपको न लगा। इसका विचार करके गद्गद् होकर परमात्मा का स्मरण करने लग गये। प्रसन्नता में आपको मूर्छा आ गई, यदि उस समय कोई पास होता तो मृत्युलोक को पहुँचा सकता था।

आपको पता चला कि मैनपुरी में होने वाले षड्यन्त्र के सभी गिरफ्तार छोड़ दिये गये हैं और आपके भी वारन्ट वापिस ले लिये गये। तब आप शाहजहाँपुर में आ गए। घोषणा के पश्चात् पुलिस का बड़ा प्रकोप था, कोई मनुष्य आपस में नमस्ते तक न कर सकता था, बात की तो बात ही क्या।

इसके पश्चात् आप खेती का काम करने लग गये। खेती आप बहुत अच्छी प्रकार से किया करते थे। काम को देख कर कोई कह नहीं सकता था कि यह शहर का रहने वाला है।

जिनको आप आदर की दृष्टि से देखते थे, उन्होंने आपको आकर कहा कि फिर क्रान्तिकारियों का संगठन करें परन्तु आपने मना कर दिया। साथियों के अधिक कहने पर स्वीकार कर लिया। आपको काम यह सौंपा कि दल की देखभाल करें। कुछ मनुष्य दल में खराब भी आ गए। एक ने अपने पास वेश्या सा रखी थी, उसकी ताड़ना की जिससे कि वह रुष्ट हो गया। तभी एक आदमी पकड़ा गया, उसने कईयों के नाम बता दिये, जिससे तीस चालीस दल के मनुष्य पकड़े गये। इसी बीच में कुछ महानुभावों ने कुछ नियमादि बनाकर दिखाये, उसमें एक यह भी नियम था कि जो व्यक्ति समिति का काम करे उसे मासिक व्यय समिति की ओर से दिया जाए। आपने इस नियम को अनिवार्य रूप से मानना अस्वीकार कर दिया। आप यहाँ तक सहमत थे कि जो व्यक्ति सर्वप्रकारेण समिति का काम करे उसको गुजारा मात्र समिति की ओर से दिया जा सकता है। जो व्यक्ति कोई व्यवसाय करते हैं उनको कुछ भी समिति की ओर से न दिया जाए। जब आपने उनके विपरीत

नियम न माने तब आपको मारने का षड्यन्त्र रचा गया। आपको वे मार देते परन्तु एक के हृदय मे दया आ गई तथा आपके पास आकर मारने के षड्यन्त्र का ज्ञान कराया। उससे आप सतर्क हो गए। आपको इस बात को सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि जिनको मैं पिता के समान मानता हू वे मेरे साथ कैसा षड्यन्त्र कर रहे है। आपको मारने मे मुख्य तीन आदमी थे।

फिर आप आकर नौकरी करने लग गये, क्योकि माता-पिता को धन की बड़ी आवश्यकता थी। थोड़े ही दिन मे आपने पिता जी का धन की कमी न रहने दी। फिर आपको पता चला कि सयुक्त प्रान्त मे क्रान्ति आरम्भ हो गई है, आप पहले निश्चय कर चुके थे कि मैं क्रान्ति मे भाग न लू गा, परन्तु दिल की आग ने आपको निश्चिन्त न बैठने दिया। आपने फिर एक क्रान्तिकारियो का सगठन बनाया, बहुत आपत्तिया आई, कभी-कभी तो यहा तक कि रोटी भी न प्राप्त हुई। रुपयो की बहुत आवश्यकता थी, रुपया कही से मिलता न था तो फिर विचार आया कि डकैती की जाए, किसी एक व्यक्ति को दु ख न दिया जाए, अत सरकारी खजाने पर डकैती की जावे।

उसी समय से आपके अन्दर यह धुन सवार हो गई। डकैती का समय तथा स्थान निश्चित किया, 9 अगस्त 1925 ई, को सन्ध्या के आठ बजे की गाड़ी में दस नवयुवक बैठ गए। गाड़ी हरदोई से लखनऊ जा रही थी। एकाएक काकोरी तथा आलमनगर के बीच मे 52 नम्बर खम्बे के पास दूसरे दर्जे से जजीर खींची गई, गाड़ी खड़ी हो गई। एक दम दस नवयुवक उतरे और सबको कह दिया कि कोई मुसाफिर गाड़ी से न उतरे, हम सरकारी खजाना लूटेंगे, किसी यात्री को कोई कुछ न कहेगा। दो मनुष्य गाड़ी के दोनो तरफ पहरा देने लग गये, जिससे कोई गाड़ी से न उतरे। साथ-साथ थोड़ी थोड़ी देर मे गोली चलती थी, इधर गार्ड को पिस्तोल दिखाकर कह दिया कि जमीन पर सीधा लेट जावे। तिजोरी बाहर निकाली गई, तिजोरी पर घन मारा परन्तु टूटी नही। अन्त मे अश फाक ने बहुत परिश्रम से उस तिजोरी को तोड़ा, इसी बीच मे एक मनुष्य गाड़ी से उतर कर दूसरे डिब्बे में जा रहा था, तो वह गोली का शिकार हो गया। लगभग आध घण्टे के बाद मे वे दस मनुष्य धन लेकर चले गए। उस डकैती में बहुत धन प्राप्त हुआ, सारा कर्जा चुका दिया तथा हथियार भी मोल ले लिये, काम अब अति तीव्र वेग से चलने लगा। 25 सितम्बर को गिरफ्तारिया प्रारम्भ हो गई, 25 सितम्बर की रात्रि को आप एक मित्र के यहा जा रहे थे, रास्ते मे खुफिया पुलिस का सिपाही मिला। आपने उसकी कोई चिन्ता न की, रात्रि को निश्चिन्त होकर सो गए। प्रात.काल चार बजे शौचादि क्रिया के लिए जा रहे थे, दरवाजे पर बन्दूक के शब्द सुनाई दिए। तभी आप समझ गए कि पुलिस आ गई, दरवाजा खोल दिया पुलिस अफसर ने आकर आपको गिरफ्तार कर लिया। तलाशी ली गई, दुर्भाग्यवश एक पत्र भी प्राप्त हो गया, जेल मे भेज दिये गए, वहा पर ही खुफिया पुलिस का प्रबन्ध कर दिया गया, आपको चिन्ता इस बात की थी कि कभी क्रान्ति कम न हो जाए, जब कोई मिलने आता था तब आप पूछते थे कि काम ठीक चल रहा है या नही ? जेल के अन्दर आपके पास खुफिया पुलिस आती थी, और आपसे इधर-उधर की बातें पूछती थी परन्तु आपने किसी का कोई परिचय नही दिया, एक दिन आपसे जिला कलेक्टर मिले, कहने लगे फासी होगी, बचना है तो बयान दे दो। आप उस समय चुप रहे। तत्पश्चात् बात करते-करते कहा 'यदि बगाल का कुछ परिचय देकर बयान दे दो तो आपको थोड़ी सी सजा कर देंगे, तथा 15000 रुपये पारितोषिक दिया जायेगा। परन्तु कुछ न बताया। इसी प्रकार बहुत बार आए परन्तु परेशान होकर चले जाते थे। मुकद्दमा चला, मुकद्दमे मे पैसो की आवश्यकता थी, पैसो की बहुत कमी थी, और न ही कोई गवाह था उधर पुलिस की अफसर अत्यधिक सहायता करते थे। अन्त में 19 दिसम्बर 1927 को फासी की आज्ञा सुना दी गई। बहुत प्रयत्न किए गए परन्तु फांसी न हटी।

फासी से पहले माता-पिता तथा उनका छोटा भाई मिलने के लिए गए, माता जी को देख कर विस्मित

की आखो मे आसू आ गए। उस समय माता के कहे ये शब्द ध्यान रखने योग्य हैं, ऐसी ही माता इस ससार मे हीरा उत्पन्न करके ससार को स्वतन्त्र बनाती है। "मैं तो समझती थी तुमने अपने ऊपर विजय पाई है किन्तु यहा तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवन पर्यन्त देश के लिए आसू बहाकर अब अन्तिम समय मे तुम मेरे लिए रोने बैठे हो, इस कायरता से क्या होगा, तुम्हे वीर की भान्ति हसते हुए प्राण देते देख कर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने मे मेरा पुत्र देश की वेदी पर प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हे पाल कर बड़ा करना था इसके बाद तुम देश की चीज थे और उसी के काम आ गए। मुझे इसमे तनिक भी दु:ख नही है।" उत्तर मे कहा 'माता जी तुम तो मेरे हृदय को भली भान्ति जानती हो! क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे लिए रो रहा हू। अथवा इस लिए रो रहा हू कि मुझे कल फासी हो जाएगी। यदि ऐसा है तो मैं कहूंगा कि तुमने जननी होकर भी मुझे समझ न पाया, मुझे अपनी मृत्यु का तनिक भी दु:ख नही है। हा, यदि घी को आग के पास लाया जाएगा तो उसका पिघलना स्वाभाविक है। बस, उसी प्राकृतिक सम्बन्ध से दो-चार आसू आ गए। आपको मैं विश्वास दिलाता हू कि अपनी मृत्यु से बहुत सन्तुष्ट हू। इन बातो को सुन कर जेल के सब मनुष्य दग हो गए।

19 दिसम्बर को प्रात:काल 6 बजे फांसी है, उसी दिन प्रात.काल तीन बजे उठते हैं। शौच स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ करते हैं, फिर ईश्वर स्तुति कर के फासी के तख्ते पर यह कहते हुए लटक जाते हैं कि मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हू।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

कृष्ण निर्दोष को तुम दोष नाहक हो लगाते क्यो,
शिरोमणि चोरी जारी का उन्हे हो तुम बताते क्यो ॥
हुए थे सर्वगुण सम्पन्न पढ़कर एक गुरुकुल मे,
उन्हे सब गोपियो के स्वाम घर-घर हो नचाते क्यो ॥
सुपत्नी रुकमणी जिनकी, थे सुत प्रद्युम्न अति उत्तम,
बुरा सम्बन्ध राधा से तुम उनका हो बताते क्यो ॥
पली थी प्यार से घर नन्द के गायें भी अनगिनती,
भला घर-2 मे घुस, खाने को वे माखन चुराते क्यो।
जितेन्द्रिय जो सदाचारी रहे थी कृष्ण आजीवन,
बता रानी सहस्रो थी, उनकी हासी हो उड़ाते क्यो।
नहाती गोपियो के कृष्ण यदि कपड़े उठाते तो,
उतरते द्रोपदी के चीर को जाकर बचाते क्यो ॥
दयानिधि धर्म रक्षक कृष्ण योगेश्वर न होते तो,
सभी हम 'सालमन' जन्माष्टमी उनकी मनाते क्यो ॥

गायत्री महिमा

ऋषि मुनि और तपस्वियों की आज्ञा है

(संकलनकर्ता—श्री ललिताप्रसाद, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र)

1. आयुर्वेद के महर्षि चरक का आदेश है कि ब्रह्मचर्य पूर्वक जो व्यक्ति गायत्री की उपासना करता है और ताजे आवलो का रस सेवन करता है, वह निरोग और दीर्घजीवी होता है।
2. गायत्री आत्मोन्नति मे उपयोगी है। (महात्मा गांधी)
3. गायत्री से ब्रह्म की प्राप्ति होती है। (स्वामी विवेकानन्द)
4. गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है। (शकराचार्य)
5. गायत्री आत्मा को प्रकाश देती है। (तिलक)
6. गायत्री भौतिक भय दूर करती है। (मालवीय जी)
7. गायत्री मोक्ष का मूल कारण है। (शृ गी ऋषि)
8. गायत्री से त्रिलोक की विजय होती है। (उपनिषद्)
9. गायत्री वर देने वाली और पवित्र करने वाली है। (अथर्व वेद)
10. गायत्री और ब्रह्म मे भिन्नता नही। (व्यासमुनि)
11. गायत्री आवागमन मे छुडाने वाली है। (विश्वामित्र)
12. गायत्री पाप वृत्ति का नाश करने वाली है। (याज्ञवल्क्य ऋषि)
13. गायत्री ब्रह्म का साक्षात् कराती है। (भारद्वाज ऋषि)
14. गायत्री उपासना से दीर्घजीवी होते हैं। (महर्षि चरक)
15. गायत्री से कुमार्गी भी पवित्र हो जाता है। (वशिष्ठ ऋषि)
16. गायत्री सर्वश्रेष्ट महामन्त्र तथा गुरु मन्त्र है। इस का जप सब करते आए हैं। (महर्षि दयानन्द)
17. गायत्री से बडी शक्ति मिलती है। (रामकृष्ण परमह स)

18 गायत्री वेदो का प्राण है। (यजु. 13-54)

19 गायत्री जपने वाला सब दु:खो से छूट जाता है। (अत्रि ऋषि)

20 गायत्री वेदो की माता है और विश्व का कल्याण करने वाली है। (पद्म पुराण)

21. गायत्री सार्वभौम प्रार्थना है। (राष्ट्रपति राधाकृष्णन)

22. गायत्री जपने से पाप वृत्ति नष्ट हो जाती है। (मनु 2-70)

23. गायत्री शक्ति का स्रोत है। (नारद जी)

24 गायत्री कामधेनु है। इससे सब कुछ प्राप्त हो सकता है। (महादेव जी)

25 प्रतिदिन सन्ध्या-उपासना करते समय गायत्री जाप अवश्य करें। (मनु 2-10)

26 दोनो समय जो सन्ध्या करता है, उसे अवश्यमेव वेद के स्वाध्याय का फल मिलता है। (मनु 2-78)

27. अमरीका मे सर्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर गायत्री को सर्व उत्तम प्रार्थना माना गया। (प. अयोध्या प्रसाद जी कलकत्ता)

28. एकाक्षर ओ३म् परब्रह्म है, प्राणायाम ही परमतप है, गायत्री से बढकर और कुछ नही, मौन से सत्य बढ कर है। (मनु 26-3-11)

29 "स्तुति करते समय हम वेद ज्ञान को,
प्रेरक पालक पावन करती मनुज मात्र को,
आयु, बल,सन्तति,पशु,गौरव धन देवे विद्यावान को,
मोक्ष पद पावन ज्ञान प्रदाता मिलाये प्रिय भगवान् को।
(अथर्व वेद काण्ड 19 सूक्त 71 मन्त्र 1)

30 गायत्री वेदो का सार है। तीन मात्रा वाले ओंकार पूर्वक तीन महाव्याहृति और तीन पाद वाली सावित्री गायत्री को ब्रह्म का मुख द्वार समझना चाहिए। (मनु 2-81 4-6)

गीता और ऋषि दयानन्द

लेखक—श्री अमर स्वामी जी सरस्वती कवि नगर गाजियाबाद

आर्य समाज के प्राय: सभी विद्वान गीता का सम्मान करते और गीता को मानते रहे हैं और मानते हैं। अब आर्य समाज के दो तीन सज्जन गीता के घोर विरोधी हैं। उन की दृष्टि में गीता से अधिक हानिकारक और बुरा ग्रन्थ दूसरा कोई भी नहीं है। वह दो तीन सज्जन गीता को न मानें, सब से बुरा ग्रन्थ कहें उस को मीठा विष बताएं, ऐसा मानने और कहने में वह स्वतन्त्र हैं, पर महर्षि दयानन्द जी गीता को त्रिदोष का सन्निपात या कल को राण्ड कहते हैं, ऐसा लिखना और कहना उचित नहीं है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ में गीता के प्रमाण लिए हैं। वह अपने व्याख्यानों में गीता के श्लोकों का प्रयोग करते रहे। उन के जीवन चरित्रों के पढ़ने से पता लगता है कि—वह गीता की कथा भी करते थे और सारी आयु भर गीता के श्लोकों पर उठने वाली शंकाओं का समाधान भी करते रहे। ऋषि के पत्र-व्यवहार के पढ़ने से भी पता लगता है कि—ऋषि ने अपनी मृत्यु के कुछ मास पूर्व तक अपने पत्रों में गीता के श्लोकों का प्रयोग किया है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने गीता के श्लोकों का प्रयोग कहां कहां किस प्रकार किया गया है यह बताने के लिए ही यह निबन्ध लिखा गया है। इस में दिए गए प्रमाणों को पढ़ें और विचार करें।

1—श्री देवेन्द्र जी मुखोपाध्याय के बनाये और सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रचारित—ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र "प्रथम भाग पृष्ठ 69 पर लिखा है कि – (आगरा) में सुन्दरलाल जी ने दयानन्द से अष्टाध्यायी और गीता पढ़नी आरम्भ की।

2—इसी ग्रन्थ के पृष्ठ 70 पर लिखा है कि "कभी कभी स्वामी जी भगवद् गीता की व्याख्या करने लगते। उन की व्याख्या ऐसी अपूर्व और सरल होती थी कि उसे पण्डित से ले कर साधारण मजदूर तक सभी समझ जाते थे।

इसी ग्रन्थ में पृष्ठ 70 के नीचे टिप्पणी में लिखा है कि दयानन्द ने भगवद् गीता की कथा भी की थी। जिस में एक मास से अधिक लगा था।

4—स्वामी सत्यानन्द जी कृत "दयानन्द प्रकाश' के पृष्ठ 71 पर भी वृत्त लिखा हुआ है।

5—"ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र" पृष्ठ 71 की टिप्पणी में लिखा कि—

एक दिन स्वामी कैलाश पर्वत ने गीता के श्लोक—

"सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरण व्रज:" की व्याख्या की परन्तु उ। के अर्थों से श्रोताओं की तृप्ति नहीं हुई तो लोगों ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि आप भी इस श्लोक का अर्थ समझाने की कृपा करें। इस पर उन्होने उस के ऐसे सुन्दर अर्थ किए कि सब लोग चकित हो गए और कैलाश पर्वत जी ने कहा कि इन (दयानन्द जी) की विद्या बहुत है। उस समय स्वामी जी भागवत् का खण्डन करते थे और महाभारत विचारा करते थे।

6—इसी जीवन चरित्र के पृष्ठ ·72 की टिप्पणी में लिखा है कि—

"एक दिन कुछ लोगों ने स्वामी से प्रार्थना की कि आप कोई ग्रन्थ बांचे जो काल व्यतीत हो और हम लोगों का भी लाभ हो। उन्होंने विद्यारण्य स्वामी कृत पंचदशा

बाचने को कहा महाराज ने इसे स्वीकार कर लिया। बाचते-बाचते उस मे ऐसा आया कि कभी-कभी ईश्वर को भी भ्रम हो जाया करता है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि—यह मनुष्य कृत ग्रन्थ है,फिर उसे नही बाचा। हा गीता की कथा करते रहे, यह कथा आश्विन मास से दिवाली के एक मास पश्चात् तक हुई, लगभग दो मास तक। यह वृत्त श्री महाराज जी के आगरा निवास का है। जो वैशाख सम्वत् 1920 विक्रमी से आश्विन सम्वत् 1921 वि सन् तक लगभग 19 मास का हुआ।

7—महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग 1 पृष्ठ 79 मे जयपुर वास स 1923 विक्रमी क वृत्त मे बताया है कि—

"अचरोल के ठाकुर रणजीत सिंह जी क बड़े पुत्र लक्ष्मण सिंह जी को स्वामी जी ने भगवद् गीता पढ़ाई थी।"

इस जीवन चरित्र के भाग 1 पृष्ठ 83 पर लिखा है कि स्वामी जी न अचरोल क ठाकुर को गायत्री का उपदेश दिया, उन के लिए दशोपनिषद बम्बई से मगवाये गए थ। ठाकुर साहब ने, उन के उपदेश स मूर्ति पूजा छोड़ दी थी।

जयपुर के ही प्रसग मे ही पृष्ट 84 पर लिखा है कि इस समय भी निभर उन का केवल वेद पर था और लोगो को सन्ध्या गायत्री ही का उपदेश देते थ।

यह सब यहा इस लए बताया है कि एक गीता विरोधी सज्जन ने यहा तक के गीता सम्बन्धी प्रसगा पर यह कह दिया था कि—स्वामी जी उस समय पौराणिक ही थे। मूर्ति पूजा आदि मानते और विष्णु सहस्र नाम आदि को भी पढते थे। आप ने देखा कि ऊपर के उदाहरणो से उन के पौराणिक होने और मूर्ति पूजा आदि मानने का खण्डन हो गया है।

8—चासी जिला बुलन्द शहर (उत्तरप्रदेश)मे ऋषि दयानन्द ने स 1924 विक्रमी मे निवास किया। इस प्रसग में इसी जीवन चरित्र के भाग 1 पृष्ठ 168 पर लिखा है कि—

"चांदोख जिला बुलन्द शहर निवासी ठाकुर महावीर सिंह जी भी दर्शनो को आया करते थे। और महाराज से धर्म विषय पर बातचीत किया करते थे।

यही लिखा है कि स्वामी जी ने ठाकुर महावीर सिंह जी को "भगवद् गीता का पाठ करने को कहा था।" इस समय स्वामी जी जीव और ब्रह्म का पृथकत्व मानते थे। पुराणो की जगह ब्राह्मण ग्रन्थ पढने की कहते थे।

"मेरे ऊपर छल प्रयोग का आरोप"—एक सज्जन ने मेरे विषय मे यह लिखा है कि गीता के पक्ष पोषण मे अचरोल के ठाकुर रणजीत सिंह और चांदोख के ठाकुर महावीर सिंह के उद्धरणो के कुछ भाग छपवा कर छल प्रयोग कर बैठे हैं।

इस विषय मे वास्तविकता यह है कि—मेरे उद्धरण देने के ढग मे छल का नामोनिशान भी नही है। प्रमाण देने का ढग ठीक यही है कि—प्रमाण का जितना भाग प्रस्तुत विषय से सम्बन्ध रखता है उतना ही उद्धृत किया जाए। अनावश्यक को भी लिख कर लेख का कलेवर व्यर्थ न बढाया जाए। ऐसा जो भी करते हैं वह ठीक ही करते हैं, ऐसा ही मैंने भी किया है। जिस सज्जन ने मुझ पर छल प्रयोग का मिथ्या दोषारोपण किया था, उन्होंने ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग 1 के पृष्ठ 204 से यह उद्धरण अपने लेखो मे बार-बार दिया वह इस प्रकार है।

"स्वामी जी भगवद् गीता को त्रिदोष का सन्निपात बतलाते थे और कहते थे कि—उस मे कही तो जीव ब्रह्म का एकत्व प्रतिपादित किया गया है और कही उन का पृथकत्व देखने मे आता है और कही प्रकृति और पुरुष का पृथकत्व माना गया है। (यह भाषा भी) अद्भुत ही है :—

इस के नीचे ही एक पक्ति मनु स्मृति के विषय मे भी है। उस को श्रीमान् जी ने नही लिखा। वह इस प्रकार है।

"प्रचलित मनु स्मृति को वह (स्वामी जी) मनु सहिता नही मानते थे और उसे भृगु सहिता कहते थे।"

इस को उन्होने छोड दिया, तो मैं उन पर छल प्रयोग का दोष नही लगाता हू।

उन श्रीमान् जी का कहना यह है कि यहा तक जो विरुद्ध के गीता सम्बन्धी प्रमाण दिए है। उन के साथ यह भी तो लिखा है कि—पचदशी आदि भी उस समय पढ़ते थे। ठीक है पढ़ते थे पर पचदशी उसी समय छोड़ दी। और गीता अन्त तक नही छोड़ी, इस के प्रमाण आगे-आगे आते जायेंगे।

9—महर्षि दयानन्द का जीवन चरित भाग 1 पृष्ठ 109 मे लिखा है कि—

"रामघाट मे स्वामी कृष्णानन्द के साथ महाराज का शास्त्रार्थ हुआ स्वामी कृष्णानन्द ने ईश्वरावतार सिद्ध करने के लिए—

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ॥

गीता 4-8 ॥

यह गीता का श्लोक बोला। श्री महाराज ने उत्तर मे कहा—

ईश्वर निराकार है वह देह धारण नही करता है यह (देह धारण करना) तो जीव का धर्म है।

10—इसी ग्रन्थ के पृष्ठ 125 पर लिखा है कि—

कर्णवास म शरत् पूर्णिमा के अवसर पर राव कर्ण सिंह के भेजे हुए तीन गुण्डो ने, स्वामी जी पर रात्रि के दो बजे घातक आक्रमण करना चाहा, स्वामी जी जाग पड़े और (स्वामी जी ने) हुकार मारी, गुण्डे भाग गए। ऋषि के पास सोने वाले अगरक्षक ने कहा कि—आप कही दूसरी जगह चले जाइये। ऋषि ने उत्तर मे गीता का श्लोक पढ़ा—

नैन छिन्दन्ति शस्त्रा, नैन दहति पावक.।
न चैन क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुत: ॥ गीता

और कहा कि, मुझ को कोई नही मार सकता है।

11—इसी ग्रन्थ के पृष्ठ 133 पर लिखा है कि—

गगा राम शास्त्री बरतिया वाले बड़ी डीगे हाका करते थे कि हम स्वामी जी से शास्त्रार्थ करेंगे। स्वामी जी ने उन्हे कहला भेजा कि वह गीता के इस श्लोक का अर्थ हमारे सम्मुख कर दें तो हम परास्त हो जायेंगे।

क्षेत्रज्ञ चापि मा विद्धि सर्व क्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञयोर्ज्ञान यत्तज्ज्ञान मतिर्मम ॥

गीता 13-28

शास्त्री जी ने इस का कुछ अर्थ किया, परन्तु स्वामी जी ने उस अर्थ पर कटाक्ष किए कि उन्हे उत्तर न आया,

गीता के अर्थों को समझने वाले समझ सकते हैं कि—ऋषि दयानन्द जी ने यहा उभयपाशारज्जु का प्रयोग किया था। उन का अभिप्राय यह था कि यदि गगाराम शास्त्री इस श्लोक का सत्य अर्थ करेंगे तो श्री कृष्ण जी जीव सिद्ध हो जायेंगे क्योकि क्षेत्रज्ञ का अर्थ जीवात्मा है और श्री कृष्ण जी ने अपने आप को जीव मान कर ही स्वय को क्षेत्रज्ञ कहा है।

यदि वह क्षेत्रज्ञ का अर्थ ईश्वर करेंगे (जैसा कि श्री कृष्ण को मानने वाले कहते हैं) तो गीता से ही उस का खण्डन कर दिया जाएगा, क्योकि इस से पहले ही श्लोक मे कहा जा चुका है कि—

इद शरीर कौन्तेय, क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद् यो वेत्ति त प्राहु क्षेत्रज्ञ इति तद्विद ॥

गीता 13-1

हे अर्जुन इस शरीर को क्षेत्र कहा गया है, इस को जो जानता है उस को उस के जानने वाले लोग क्षेत्रज्ञ कहते है। यहा ब्रह्माण्डो या ब्रह्माण्ड को क्षेत्र नहीं कहा गया है। शरीर के जानने वाले को क्षेत्रज्ञ कहा गया है, ब्रह्माण्डो या ब्रह्माण्ड के जानने वाले को क्षेत्रज्ञ नही कहा है। गगा राम शास्त्री ने अवतार मानने वालो का श्रीकृष्ण जी को ईश्वर बताने वाला अर्थ किया होगा और ऋषि ने इसी श्लोक से उस अर्थ की धज्जिया उडा दी।

12—इसी ग्रन्थ के इसी भाग मे पृष्ठ 191 पर स 1 से 27 पर मिर्जापुर की एक घटना लिखी है कि—

एक दिन एक सज्जन जो गीता का बड़ा प्रेमी था स्वामी जी के पास आकर बोला कि—महाराज मैंने गीता की अनेक टीकाए देखी हैं परन्तु इस श्लोक का अर्थ समझ मे नहीं आया आप अनुग्रह कर के समझा दें।

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेक शरण व्रज।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

वेद निरूपित राजनीति विद्या

लेखक —डाक्टर भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़

मनुष्य मूलत: एक सामाजिक प्राणी है। सृष्टि के आदि काल से वह समूह बन कर रहता आया है। मनु स्मृति मे राजा की उत्पत्ति के प्रसग को निरूपित करते हुए कहा गया है।

अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुत भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभु ॥

मनु—7-6

राजा की अविद्यमानता मे यह आशका होती है कि कही मत्स्य न्याय प्रवर्तित न हो जाए और अत्याचारियो के भय के कारण सर्वत्र अराजकता का ताण्डव नृत्य न होने लगे, इसलिए प्रजा के सर्व प्रकार से रक्षण के लिए परमात्मा ने "राजा" के पद को बनाया अर्थात् मनुष्यो को अपने शासक राजा को चुनने की प्रेरणा दी। वेदो मे राजनीति, शासन व्यवस्था तथा कूटनीति विषयक सदर्भ प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध होते हैं। वैदिक राजनीति के आधार पर ही मनु, याज्ञवल्क्य आदि स्मृतिकारो ने राजधर्मों की व्याख्या की तथा शुक्र कामन्दक, चाणक्य आदि राजनीति तत्त्वज्ञो ने अपने नीति ग्रन्थो का प्रणयन किया।

वस्तुत: ऋषि दयानन्द के वैदिक चिन्तन का यह एक चमत्कार ही मानना चाहिए कि जिन मध्यकालीन वेद भाष्यकारो की दृष्टि मन्त्रार्थ करते समय याज्ञिक कर्मकाण्ड की लक्ष्मण रेखा को नही भेद सकी और जिन्होने वेदो के उदात्त, महनीय तथा लोक मगल विधायक अर्थों को मात्र कर्म काण्ड के कुहुक जाल से ही लपेटे रखा। उन्हे अपने प्रकृत स्वरूप मे ला कर वेदाधारित समाज रचना, राजनीति विधान, नैतिक एव आचारगत, शिक्षा का प्रारूप उपस्थित करना कितना महत्वपूर्ण कार्य था। शताब्दियो के पश्चात् दयानन्द ने वैदिक राजनीति का निरूपण किया और 'त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि" आदि वैदिक मन्त्रो के आधार पर राष्ट्र के सुचारु सचालन मे राजार्य सभा तथा विद्यार्य सभा की भूमिकाए स्थिर की। स्वामी दयानन्द ने उन वैदिक सूक्तो को ढूढ निकाला। जो राजनीति के सम्यक सचालन के लिए सभा और समितियो का विधान करते हैं तथा इन सभाओ मे बैठने वाले सभासदो तथा सभापति रूपी राजा के कर्तव्यो का निर्धारण करते हैं। वस्तुत वेदो मे अग्नि, इन्द्र, वरुण, सविता अश्विन, प्रजापति आदि देवताओ से सम्बन्धित जितना मन्त्र समुदाय है उस का यदि हम व्यावहारिक रीति से अर्थ करें तो वे सभी राजा, शासक, सेनापति, विधायिका, सभाओ के सभापति ससद के अध्यक्ष जैसे राजनैतिक व्यक्तियो के कर्तव्य एव आचरण की व्याख्या करते हैं। स्वामी दयानन्द ने वैदिक राजनीति विद्या का सकेत मात्र ही सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के राजप्रजा धर्म विषय के अन्तर्गत किया है। किन्तु कालान्तर मे स्वामी जी की ही विचारधारा का अनुसरण करने वाले अनेक विद्वानो ने वेद प्रतिपादित राजनीति विद्या एव शासन विधान का अपने ग्रन्थो मे विस्तारपूर्वक निरूपण किया है।

इस सदर्भ मे पण्डित प्रियव्रत वेदवाचस्पति लिखित तीन खण्डो मे समाप्त "वेदो के राजनीतिक सिद्धान्त" शीर्षक महाग्रन्थ का उल्लेख करना आवश्यक है। अनेकानेक वैदिक सूक्तो की राजनीति परक व्याख्या करने वाले इस ग्रन्थ में सविधान, अभ्युदय और प्रतिरक्षा शीर्षको के अन्तर्गत वैदिक राजनीति का नवनीत प्रस्तुत किया गया है। राज्य शासक का प्रवर्तन ही इसलिए होता है कि उस के माध्यम से सम्पूर्ण प्रजा को सुरक्षा, स्वतन्त्रता, विकास तथा प्रगति का अवसर मिलता रहे। किन्तु यह

शासन व्यवस्था अपने आप में अपूर्ण ही मानी जायेगी जो प्रजा के अभ्युदय और सार्वत्रिक विकास की योजनाओं को क्रियान्वित न कर सके। किसी राष्ट्र के उन्नति के पथ पर चलने की सब से बड़ी शर्त उस की सुदृढ़ प्रतिरक्षा व्यवस्था होती है। वेदों में सैन्य संचालन तथा शत्रुओं को निगृहीत करने के उपाय अनेक सूक्तों में वर्णित है। यह प्रतिरक्षा कार्य भी राजनीति का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस प्रकार वैदिक राजनीति का यह त्रिविध विवेचन इस सत्य को पूर्णतया उद्घाटित करता है कि वेदों में राज्य व्यवस्था के सम्यक संचालन की एक समग्र विधि वर्णित है।

वैदिक युद्ध शिक्षा

वेदों में अनार्यों के दमन और अत्याचारियों का ध्वंस करने हेतु युद्ध करने की प्रेरणा दी गई है। वैदिक युद्ध शिक्षा आदर्शों की विजय के लिए ही प्रकल्पित की गई है। "वयं जयेम त्वयायुजा" जैसे मन्त्र में वैदिक वीर यह आस्था प्रकट करता है कि संसार के सर्वोपरि शासक इन्द्र परमात्मा का सख्य और निकटता प्राप्त कर हम युद्ध में विजय प्राप्त करेंगे, क्योंकि वेद में ही यह घोषणा की गई है कि "येषां इन्द्रस्ते जयन्ति" इन्द्र जिन के पक्ष में है, अर्थात् जो सत्य, न्याय और धर्म की रक्षा के लिए लड़ते हैं, उन की निश्चित रूप से विजय होती है। वैदिक युद्ध शिक्षा विषयक शतशः मन्त्र वेदों में उपलब्ध होते हैं। वीरों को युद्ध में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए मन्त्र में कहा गया है —

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्मयच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवो नाधृष्या यथासथ॥ यजुर्वेद 7-46

वीर सैनिकों, तुम बढ़े चलो। विजय प्राप्त करो। तुम्हारी भुजाओं में उग्र बल रहे, जिस से कि तुम सर्वथा अपराजेय रहो। वेद अपनी राष्ट्रीय ध्वजा को हाथ में ले कर वीर सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार होने के लिए कहता है। यह युद्ध उन शत्रुओं को पराजित करने के लिए लड़ा जाता है जो सांप की भान्ति कुटिल है, जो डाकू लुटेरे, हत्यारे तथा आर्य संस्कृति के विनाशक हैं। उपर्युक्त भाव अथर्ववेद के निम्न मन्त्र में व्यक्त किया गया है —

उत्तिष्ठत संन्नह्यध्वमुदारा केतुभिः सह।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत॥ 11-10-1

वैदिक राष्ट्र शिक्षा

उपर्युक्त पंक्तियों में हम ने राजनीति संचालन प्रजा के अभ्युदय तथा प्रतिरक्षा के लिए युद्ध विषयक वैदिक विचारों का परिचय प्राप्त किया है। किन्तु वेदों में राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ करने वाले विचार भी बहुतायत से प्राप्त होते हैं। वैदिक राष्ट्रवाद आज के प्रचलित राष्ट्रवाद के तुल्य संकीर्ण नहीं है। यहां तो समस्त पृथ्वी को एक राष्ट्र के रूप में कल्पित किया गया है। नाना प्रकार के संकुल, विभिन्न प्राकृतियों परिवेशों को धारण करने वाली यह धरती ही हमारी माता है और उस के निवासी हम लोग इस धरती माता के पुत्र हैं। यह विचार अथर्ववेद के प्रसिद्ध पृथ्वी सूक्त के प्रत्येक मन्त्र में व्यक्त किया गया है। "माता भूमिः पुत्रो हं पृथिव्याः" के उदात्त भाव को लेकर चलने वाला यह वेद का राष्ट्रीय सूक्त राष्ट्र को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए सत्य, ऋतु, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म (ज्ञान) और यज्ञ इन 7 तत्वों का धारण आवश्यक मानता है। मातृ भूमि की वन्दना और स्वराज्य की अर्चना वाले वैदिक सूक्त वेदों में विद्यमान राष्ट्रवाद तथा राष्ट्र शिक्षा के परिचायक हैं।

(31 पृष्ठ का शेष)

स्वामी जी ने इस का अर्थ किया कि, 'उर्मान्' शब्द को यहां 'अघर्मा' समझना चाहिए। शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्। इस व्याकरण नियम के अनुसार 'सर्व' के वकार में जो आकार है वह सर्व अघर्मान था सो 'सर्वघर्मान्' हो गया। इस प्रकार यद्यपि अघर्मान शब्द ने घर्मान का रूप धारण कर लिया परन्तु वास्तव में वह अघर्मान ही रहा, यह अर्थ सुन कर मनुष्य बहुत खुश हुआ और स्वामी जी ने उस में इस अर्थ की पुष्टि में जब प्रमाण मांगे तो उन्होंने वेद के दो तीन मन्त्रों का प्रमाण दे कर उस का सन्तोष कर दिया।

यहां स्वामी जी गीता को त्रिदोष का सन्निपात बता देते या यह कह देते कि गीता कल की 'राण्ड' है, इस के विषय में हम से कुछ न पूछो। यदि गीता को नहीं मानते थे तो वे इतने समाधानों के झगड़े में क्यों पड़ते और क्यों उस के अर्थ समझाने में इतना परिश्रम करते रहे? यह बात गीता विरोधियों की समझ में नहीं आ सकती।

13—इसी ग्रन्थ के भाग 2 पृष्ठ 231 पर है। सम्वत् 1937 विक्रमी में महाराज कांशी में विराजमान थे। उस प्रसंग में लिखा है कि—एक दिन एक नवीन वेदान्ती पण्डित का महाराज से वार्तालाप हो रहा था। उस में गीता का श्लोक—

ईश्वरः सर्व भूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्व भूताना यन्त्रा रूढानि मायया। गीता 18-61

यज्ञोपवीत

लेखक—श्री पं सत्यपाल 'पथिक' आर्य भजनोपदेशक अमृतसर

तर्ज—ऐ दिल ज़रा सम्भल जा

यज्ञोपवीत ले कर खुद को निहारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प धारना है।

हर झूठ की तरफ से मुंह अपना फेरना है।
सच्चे व्रतो का पालन करने की प्रेरणा है॥

तप त्याग साधना को हर दम उभारना है।
जीवन सुधारने का————

गायत्री जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना।
दुष्टो की सगति मे हरगिज़ न पाव धरना॥

भगवान को कभी न दिल से बिसारना है।
जीवन सुधारने का————

समझो यह तीन ऋण है कन्धे पे तीन धागे।
जब तक है प्राण इस से व्यक्ति कभी न भागे॥

निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन गुजारना है।
जीवन सुधारने का————

पित्तरो की टहल सेवा देवो की उचित पूजा।
ऋषियो के सम वैसा कर्तव्य है न दूजा॥

माता पिता गुरु के ऋण को उतारना है।
जीवन सुधारने का————

नेकी के काम कर के तत्काल भूल जाना।
निष्काम भाव हो कर औरो के काम आना॥

शिक्षा का मूल है यह मन मे विचारना है।
जीवन सुधारने का————

शुभ चिन्ह आर्यों का यज्ञोपवीत है यह।
सब श्रेष्ठ लोग पहने ऋषियो की रीत है यह॥

दुनिया मे "पथिक" इस के यश को निखारना है।
जीवन सुधारने का————

श्रीकृष्ण : जिसे हमने समझा ही नहीं

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्योपदेशक,
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

मानवमात्र का यह स्वभाव है कि वह अपने महापुरुषों को प्रायः समझ नहीं पाता। और यदि समझने का प्रयत्न भी करता है तो उस में भी प्रायः वह भूल ही करता है। संसार भर के महापुरुषों के भाग्य में कुछ ऐसी गड़बड़ हुई है, कि लोग उन्हें समझने में भूल ही करते रहे हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण इसका अपवाद नहीं हैं। उन्हें भी संसार ने समझने में बड़ी भूल की है। इसी के परिणाम स्वरूप उस महामानव के अति पावन, अति उज्ज्वल स्वरूप को विकृत कर प्रस्तुत किया है। जिस महामानव का चरित्र महाभारत में अति उज्ज्वल, अति पावन एवं सर्वगुण-सम्पन्न महापुरुष के रूप मे चित्रित किया गया है। उसी को अभागी हिन्दू जाति के कर्णधारो ने पुराणो में तथा अन्य अनेकों ग्रन्थो एव काव्यों मे अति विकृत, अति घिनौने रूप में प्रस्तुत किया है। और विडम्बना यह है कि यह विकृत चरित्र इतना प्रचारित हो चुका है कि यदि कोई उस का वास्तविक सही स्वरूप प्रस्तुत करे भी तो लोग सहसा उसे मानने के लिए तैयार नही।

अब लोग योगेश्वर श्री कृष्ण को क्या समझने लगे है ? बाबू बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय के शब्दों में—"यही कि वे चोर थे। दूध, दही, मक्खन चुरा कर खाया करते थे, युवावस्था मे व्यभिचारी थे, और उन्होने बहुतेरी गोपियों के पतिव्रत्य धर्म को नष्ट किया, प्रौढ़ावस्था मे वंचक और शठ थे। उन्होंने धोखा दे कर द्रोणादि के प्राण लिए।………क्या इसी का नाम भगवच्चरित्र है ?" (कृष्ण चरित्र, पृष्ठ 2)

श्री कृष्ण को लौकिक धरातल से हटा कर अलौकिक पृष्ठभूमि पर खड़ा किया जाना और उस के सहज मानसिक स्वरूप को विस्मृत कर उसे अप्राकृतिक रूप मे प्रस्तुत करना ही श्री कृष्ण चरित्र की प्रथम विकृति है। डाक्टर भवानी लाल भारतीय का यथार्थ कथन है कि—"जब कृष्ण को ईश्वर मान कर उस के अवतार के रूप में उपासना देश मे प्रचलित हुई तो कृष्णोपासना के आधार पर अनेक सम्प्रदाय स्थापित हो गए।" (श्रीकृष्ण चरित, पृष्ठ 10) डा. भारतीय आगे लिखते हैं कि—"इन सम्प्रदायो के जन्म से पूर्व तक कृष्ण आदर्श चरित्र-वान, परम सात्विक आचार-सम्पन्न और प्रतिभाशाली महापुरुष समझे जाते थे। परन्तु तांत्रिक साधनो के प्रचार के कारण वैष्णव सम्प्रदायों में भी वासनामूलक श्रृंगार का मिश्रण होने लगा। महाभारत के कृष्ण जहां मर्यादा-पोषक, संयमी और सत्वगुण-सम्पन्न है, वहां पुराणों, काव्य ग्रन्थों एवं अन्य साम्प्रदायिक ग्रन्थो में उन के जीवन को अत्यन्त विलासपूर्ण, स्थूल वासनायुक्त और रोमान्टिक बनाने का प्रयत्न किया है। भागवत और ब्रह्मवैवर्त जैसे पुराणों, जयदेव के गीत-गोविन्द जैसे काव्यों और गोपाल सहस्रनाम जैसे स्तोत्रो में सर्वत्र कृष्ण के परदारागामी स्वरूप का चित्रण किया गया है। गोपाल; कामिनीजार; चौरजार शिखामणि जैसी उक्तियां इन्हीं ग्रन्थो की है। भागवत मे परदारागमन के संकेत स्पष्ट हैं जिन के कारण राजा परीक्षित को कृष्ण के चरित्र के विषय मे शंका होती है, परन्तु शुकदेव जी, समर्थ व्यक्ति की समर्थता की दुहाई दे कर ही अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ बैठते है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा का समावेश करा कर विकृति के इस पहलू को और भी उभार दिया गया है। यहां राधा कृष्ण के सम्भोग का जो कुत्सित वर्णन मिलता है। उसे देख कर लज्जा भी लज्जित होती है।" (द्रष्टव्य श्री कृष्ण चरित, पृष्ठ 10-11)

आश्चर्य और दुःख का विषय तो यह है कि धर्म ग्रन्थ माने जाने वाली पुस्तकों का जब यह हाल है, तो अन्य पुस्तको का क्या हाल होगा ? फिर विद्यापति और चण्डी दास सरीखे व्यक्तियो को खुल कर खेलने से कौन रोक सकता है ? वस्तुत: भागवत आदि पुराणो ने श्री कृष्ण सरीखे निर्दोष व्यक्तित्व पर जो मिथ्या लांछन लगाए गए हैं। वह उन-उन ग्रन्थो के लेखको की अपनी ही कुत्सित भावनाओ के ही द्योतक कहे जा सकते हैं। यह इसलिए कि योगेश्वर श्री कृष्ण का चरित्र इतना उज्ज्वल, इतना पावन है, कि उस पर कोई लाञ्छन लगाया ही नही जा सकता। आधुनिक युग मे महर्षि प्रथम महामानव थे कि जिन्होने उच्च स्वर मे यह उद्घोष किया कि—"देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उन का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नही लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये है। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियो से रास-मण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी पर लगाये हैं। इस को पढ पढा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओ की झूठी निन्दा क्यो कर होती।" (एकादश समुल्लास)

जहां तक महाभारत का प्रश्न है। उस मे गोपी प्रसंग की कही कोई चर्चा दिखाई नही देती। इस सम्बन्ध मे स्वनामधन्य पण्डित चमूपति जी लिखते हैं कि—"महाभारत मे गोपी-प्रेम की गन्ध भी नही। और तो और किसी प्रसंग मे कृष्ण की रासलीला या गान का वर्णन नही। यहा तक की महाभारतकार ने कृष्ण के होठो से वंशी तक न छुआने की कसम खा ली है। महाभारत का कृष्ण चक्रधर है, गदाधर है, मुरलीधर नही।" (द्रष्टव्य योगेश्वर कृष्ण, पृष्ठ 26-27) अत: यही कहा जा सकता है कि श्री कृष्ण जी का वास्तविक चरित्र वही है, जो महाभारत मे वर्णन किया गया है। हमे उसी चरित्र का ही पाठ करना एव अनुकरण करना चाहिए। यदि तात्त्विक दृष्टि से देखा जाए तो सम्पूर्ण महाभारत ही श्री कृष्ण जी की गौरव गाथा गा रहा है। यदि उस मे से श्री कृष्ण जी को हटा दें, तो फिर महाभारत मे शेष रह ही क्या जाता है ? महाभारत मे उन्हें सर्वपूज्य, श्रेष्ठतम महामानव के रूप मे चित्रित किया गया है। ऐसा उत्तम चित्र के लिए बंकिम बाबू को कहना पड़ा था कि, "ऐसा सर्वगुणान्वित और सर्व पाप रहित आदर्श चरित्र और कही नही है, न किसी देश के इतिहास मे और न किसी काव्य मे।"

महाभारत के अध्ययन से हमे श्री कृष्ण जी के चरित्र मे आर्य जीवन का सर्वांगीण विकास दिखाई देता है। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नही, जिस मे उन्हे सफलता न मिली हो। वे एक आदर्श विद्यार्थी हैं, एक आदर्श गृहस्थी हैं, एक आदर्श राजनीतिज्ञ हैं, एक आदर्श राजा हैं, एक आदर्श योद्धा हैं, एक आदर्श मित्र हैं, एक आदर्श योगी हैं। वह कौन सा सद्गुण है जो महाभारत के कृष्ण मे दृष्टिगोचर नही होता। आज भारत को महाभारत के कृष्ण की आवश्यकता है, पुराणो के कृष्ण की नही। ऐसे कृष्ण की जो चक्रधर हो, गदाधर हो, असिधर हो, मुरलीधर नही। उस कृष्ण की जो व्यामोह मे पड़े अर्जुन को उस के कर्त्तव्य की याद दिला सके। वह कृष्ण जो जागृति का शंख फूंक सके और दे सके एक नया उद्बोधन इस सोये हुए राष्ट्र को। आज ऐसे ही कृष्ण की आवश्यकता है भारत वर्ष को।

निरभिमानी भगवान श्री कृष्ण

लेखक—पण्डित श्री धर्मदेव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

जब हम भगवान श्री कृष्ण जी के जीवन को देखते हैं तो हमें उन के जीवन में अनेको गुण और विशेषताएं दिखाई पड़ती हैं। उन का जीवन एक प्रकाश स्तम्भ की तरह से अपना प्रकाश दूर दूर तक फैला रहा है। जिससे हम लगभग साढ़े पांच हजार वर्ष पूर्व से ले कर आज तक महान् प्रेरणाएं लेते चले आ रहे हैं। परन्तु दु:ख की बात तो यह है कि कुछ लोग उन के उज्जवल जीवन को कलंकित करने का प्रयास भी करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। यह भारत का दुर्भाग्य है कि यहां कुछ न कुछ स्वार्थी लोग सदा से पैदा होते रहे हैं और वह अपने महापुरुषों को कलंकित व प्रभावहीन करने का प्रयास करते रहे हैं। परन्तु भारत के महापुरुषों का जीवन इस प्रकार का है जैसे सूर्य और चन्द्रमा को बादल थोड़ी देर के के लिए ढक लेते हैं परन्तु शीघ्र ही उन की किरणें बादलों को छिन्न भिन्न कर देती हैं। ऐसे ही महापुरुषों को कलंकित करने वाले स्वयं नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं।

भगवान कृष्ण के जीवन को जब हम देखते हैं तो लगता है कि अभिमान कभी उन्हें छू भी न पाया था। गोकुल में रहते हुए उन्होंने अपनी शक्ति के बल पर परोपकार के अनेको कार्य किए गोपों की हर प्रकार से रक्षा की। उन पर आने वाली प्रत्येक मुसीबत को दूर करने के लिए वह हर समय तैयार रहते परन्तु यह सब कुछ करते हुए भी उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि यह मैंने कर दिया, वह मैंने कर दिया। जैसा कि आज हम लोग जरा सा कार्य कर के कह देते हैं कि यह सब मैंने किया है। आततायी कंस का वध करना कोई मामूली बात नहीं थी परन्तु बुद्धिमता से उसे समाप्त कर के उस के अत्याचार से पीड़ित जनता का उद्धार किया। परन्तु एक बार भी यह नहीं कहा कि मैंने कंस को अपनी शक्ति से मारा है।

जरासंध ने कंस की मृत्यु का बदला लेने के लिए मथुरा पर चढ़ाई कर दी, खून खराबा हुआ। परन्तु बुद्धिमान श्री कृष्ण ने मथुरा ही छोड़ दी और द्वारिका में जा कर अपना डेरा लगा लिया। यह उन्होंने सब कुछ लोगों की भलाई के लिए किया क्योंकि उन्हें पता था कि जरासंध बार-बार मथुरा पर तब तक चढ़ाई करता रहेगा जब तक मैं यहां रहूंगा। वह बड़े शक्तिशाली थे और जरासंध को कई बार पछाड़ते रहते। उन्हें वहां से भागने की आवश्यकता नहीं थी। कोई अभिमानी व्यक्ति होता तो ऐसा न करता कि लोग क्या कहेंगे। वह डर के मारे भाग गया परन्तु श्री कृष्ण जी तो निरभिमानी व्यक्ति थे। उन्हें इस की कोई चिन्ता नहीं थी। इसलिए चुपचाप मथुरा छोड़ के द्वारिका चले गए।

उन्हें पता चला कि दुर्योधन अपनी हठ धर्मी पर अड़ा हुआ है। कौरवों और पाण्डवों के भावी युद्ध को जैसे भी हो रोका जाए। वह सन्धि व शान्ति का सन्देश ले कर पाण्डवों की ओर से दुर्योधन के पास गए। परन्तु उस ने उनकी एक न सुनी और उल्टा उन्हें बन्दी बनाने का प्रयास किया। श्री कृष्ण जी पहले से ही पूरी तैयारी के साथ गए थे। जिसे देख कर दुर्योधन हैरान रह गया, वह शान्ति से वहां से वापिस आ गए। उन्होंने लेश मात्र अभिमान प्रकट नहीं किया। यदि वह चाहते तो उल्टा दुर्योधन को ही बन्दी बनाया जा सकता था।

महाभारत का युद्ध आरम्भ हुआ। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सारे युद्ध में हथियार नहीं उठाया। परन्तु भीष्म पितामह से ले कर द्रोण, कर्ण जयद्रथ, शल्य और दुर्योधन आदि सभी का संहार अपनी बुद्धिमत्ता से कराया परन्तु सारे महाभारत को पढ़ जाईये श्री कृष्ण जी ने कहीं भी अपनी बुद्धिमत्ता और बल का अभिमान नहीं किया। यह स्पष्ट है कि पाण्डव हार जाते यदि श्री कृष्ण उन के साथ न होते।

उन के जीवन की यह एक निरभिमानता का घटना उस समय हमारे सामने आती है। जब वह द्वारिका में अपना राज्य स्थापित कर लेते हैं। उन का गुरुकुल का एक मित्र सुदामा जिस के साथ वह गुरुकुल में पढ़ते हुए जंगल मे यज्ञ के लिए समिधा लेने जाया करते थे। मित्र के साथ उन का विद्यार्थी काल मे बड़ा स्नेह और प्यार था। वह दीन-हीन दशा मे एक दिन द्वारिका पहुंचा। सुदामा को चिन्ता थी मैं श्री कृष्ण के पास आ तो गया हू परन्तु अब वह गुरुकुल का विद्यार्थी नहीं। द्वारिका का राजा है और मैं एक निर्धन ब्राह्मण हू। मेरे शरीर पर फटे से वस्त्र हैं। मैली कुचैली चादर, पांव में पहनने के लिए जूता भी नही, मुझे कृष्ण पहचानने से ही इन्कार कर दे तो फिर क्या होगा। अक्सर ऐसा होना भी है, जब किसी के धन व ऊंचा पद मिल जाता है। फिर वह किसी निर्धन मित्र, साथी व रिश्तेदार तक की तरफ भी नहीं देखता और उसे पहचानने से भी इन्कार कर देता है। यही विचार सुदामा के मन में भी उठ रहे थे। वह दरबार मे झिझकता हुआ द्वारपाल से बोला मैंने श्रीकृष्ण से मिलना है। मैं उन का मित्र सुदामा हू। द्वारपाल एक बार सुदामा को देखता था और दूसरी श्री कृष्ण महाराज को। क्या यह दीन ब्राह्मण श्री कृष्ण जी का मित्र हो सकता है। परन्तु सुदामा के मिलने के आग्रह को देख कर द्वारपाल श्री कृष्ण जी के पास गया और उन्हे सुदामा का हुलिया बताते हुए बोला, महाराज द्वार पर एक दीन-हीन ब्राह्मण खड़ा है, जिस के कपड़े फटे हैं, पाव मे बवाईयां फटी हुई हैं। शरीर पर झुरियां पड़ी हैं, वह आप से मिलना चाहता है और अपना नाम सुदामा बताता है। यदि कोई साधारण राजा होता तो पहले अभिमान में आकर अकड़ कर अपने सिंहासन पर बैठ जाता फिर नौकरों को कहता, बुला लाओ। ताकि उसे वह देख ले, मैं कितना बड़ा व्यक्ति बन गया हू, परन्तु श्री कृष्ण, सुदामा का नाम सुनते ही नंगे पाव दौड़ पड़े। उन्हें सादर अन्दर ले आए और अपने सिंहासन पर बैठा दिया। सुदामा बैठना नही चाहता था। जबरदस्ती उन्हे श्री कृष्ण ने उच्च आसन पर बैठाया और रुक्मणी से पाव धोने के लिए पानी मंगा कर नीचे बैठ कर अपने हाथ से उन के पाव धोने लगे। श्री कृष्ण, सुदामा के पाव धोते जाते थे और उन के पाव की दशा देख कर आखों से आसू बहाते जाते थे।

सुदामा की द्वारिका मे सेवा होने लगी। कई दिन बीत गए। सुदामा कुछ मांगने के लिए आया परन्तु श्री कृष्ण के सामने वह ऐसा निस्तेज सा हो गया कि कुछ मांग ही न सका। एक दिन सुदामा को पत्नी की याद आई कि घर में खाने के लिए अन्न भी नहीं था। मैं तो यहां पेट भर कर खा रहा हू और मौज उड़ा रहा हूं पत्नी व बच्चों का क्या हाल होगा। उस ने श्री कृष्ण से घर जाने की आज्ञा मांगी। श्री कृष्ण भी चाहते नहीं थे कि उन का मित्र उन के पास से इतना जल्दी चला जाए। परन्तु वह यह भी नही चाहते थे कि सुदामा अपने बच्चो से न मिले। सुदामा जी ने श्री कृष्ण से विदाई ली परन्तु ज्यों-2 सुदामा घर की ओर जा रहा था त्यों-2 उसे घबराहट हो रही थी कि बच्चो का क्या हाल होगा फिर भी कृष्ण से न मैंने कुछ मांगा और न उन्होंने कुछ स्वयं दिया। इसी चिन्ता मे जब सुदामा अपने घर के पास पहुंचा तो यह देख कर हैरान रह गया कि जहां उस का झोपड़ा था, वहां अब आलीशान भवन खड़ा है। यह विचार ही कर रहा था कि किसी धनी ने उन के मकान पर कब्जा कर लिया है और वहां पर अपना भवन बना लिया है। परन्तु मेरे बाल बच्चो को उस ने कहां निकाल दिया। इतने मे अन्दर से उनकी धर्मपत्नी बाहिर आई, जो फटे पुराने वस्त्रों में नहीं, नए वस्त्रों को पहने थी। उस ने सुदामा के पाव छुए और कहा स्वामी तुम आ गए। मैं तुम्हारा इन्तजार कर रही थी। कुछ देर तो सुदामा की कुछ समझ मे न आया परन्तु जब पत्नी ने बताया कि यह सब उन के मित्र कृष्ण ने बनवाया है। घर में अन्न के भण्डार भरे हैं। सभी तरह के जीवन-यापन सामग्री वस्त्र आदि विद्यमान है। यह सब जानकर सुदामा हैरान रह गया कि श्री कृष्ण कितना महान् है। मेरा घर बनवाता रहा। मुझे द्वारिका मे रख कर यहां सब कुछ पहुंचाता रहा और मुख से एक बार भी नही कहा कि मैं तुम्हारा घर बनवा रहा हू या मैंने बनवा दिया है। इतना सामान घर भेज कर भी नही जतलाया कि मैंने तुम्हारे घर यह सामान भेज दिया, वह भेज दिया।

आज का कोई व्यक्ति होता धोखा दे कर अभिमान में आ जाता और कहता सुदामा मैंने तुम्हारा मकान बना दिया। अन्न वस्त्र सब कुछ तुम्हारे घर भेज दिया परन्तु निरभिमानी श्री कृष्ण ने कुछ भी तो अपने मुख से कुछ नही कहा। मित्र की आवश्यकता समझ कर उस के घर का पता लगा कर झोपड़ी से उस का भवन बनवा दिया और आवश्यक सामान पहुंचा दिया, तभी तो सुदामा ने कहा था कि श्री कृष्ण महान हैं।

सिद्धि, वृद्धि एवं समृद्धि के अक्षय कोष

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखकः—श्री डाक्टर कमल पुंजाणी 32 श्रीनाथ जी प्लॉट्स जामनगर (गुजरात)

भगवान् श्री कृष्ण शौर्य, धैर्य एव ऐश्वर्य के सार-सर्वस्व तथा सिद्धि, वृद्धि एव श्री वृद्धि की अक्षय निधि थे। गीता मे अर्जुन को मानव तथा श्री कृष्ण को परममानव का प्रतीक मानकर कहा गया है कि मनुष्य चाहे कितना ही पराक्रमी और पुरुषार्थी हो, परन्तु वह परम तत्व अर्थात् सत्यशीलता के सान्निध्य और सहयोग के बिना जीवन सग्राम मे सफल नही हो सकता।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीविजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
(गीता, 18-78)

यहा ध्यातव्य है कि योगेश्वर कृष्ण को धनुर्धर पार्थ से प्रथम स्थान और सम्मान दिया गया है। दूसरे शब्दो मे, पार्थ का धनुष कृष्ण की योग-सिद्धि के अभाव मे अपूर्ण एव अपर्याप्त है। महाभारत युद्ध के उपरान्त अर्जुन का द्वारिका गमन और यादव कुलागनाओ सहित हस्तिनापुर लौटते समय मार्ग मे काबा डाकुओ से पराजित होने का प्रसग इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण है।

श्री कृष्ण बुद्धिमान और दीर्घद्रष्टा थे। इसी कारण धन-धान्य तथा समग्र सम्पत्ति से सम्पन्न सौराष्ट्र की धरती को, मोक्षदायिका द्वारिका को उन्होने अपनी कर्म भूमि बनाया था। उन के चरित्र की सब से बडी विशेषता यह है कि वे महान शक्तिशाली होते हुए भी निरहकारी और निराभिमानी थे। पाण्डवो के राजसूय यज्ञ मे उन्होने जूठी पत्तलें उठाई थी। स्वर्णमयी द्वारिका मे रहते हुए भी निर्धन मित्र सुदामा का स्नेहपूर्ण स्वागत किया था और उस के तन्दुल का रसास्वाद लिया था।

सौराष्ट्र की धरती अनेक सन्तो, सिद्धो, शूरवीरो, सतियो तथा तपस्वियों की जन्म भूमि रही है। प्रणामी धर्म के प्रणेता महामति प्राणनाथ, आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द, सत्य और अहिंसा के अनन्य आराधक महात्मा गाधी इत्यादि विभूतियो का जन्म सौराष्ट्र मे ही हुआ था। किन्तु इन विभूतियो की कर्म भूमि सौराष्ट्र ही नही रही, जबकि श्री कृष्ण जी की कर्म भूमि बनने का सौभाग्य सौराष्ट्र को ही प्राप्त हुआ। इसी पुण्य भूमि पर उन का देह विलय भी हुआ और इसी गौरवमयी धरती पर गाडीवधारी अर्जुन का गर्व खण्डन भी हुआ।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रभास तीर्थ मे श्रीकृष्ण के देहोत्सर्ग तथा यादवो के पारस्परिक विग्रह के पश्चात् जब गाडीवधारी अर्जुन यादव-कुलागनाओ को ले कर हस्तिनापुर की ओर लौट रहा था, तब मार्ग मे काबा डाकुओ से वह पराजित हो गया। जिस वीर अर्जुन ने महाभारत के युद्ध मे भीष्म, द्रोण और कर्ण जैसे महारथियो को मौत के घाट उतार दिया था, वही अर्जुन मामूली काबाओ का मुकाबला करने मे निष्फल हुआ। इस का मुख्य कारण यही था कि अब योगेश्वर श्रीकृष्ण उस के साथ नही थे, अब स्थिति बदल गई थी, समय बदल चुका था। इसीलिए कहा गया है —

'काबे अर्जुन लूटियो, वही तीर और बाण।'

इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण सिद्धि, वृद्धि तथा समृद्धि के अक्षय कोष थे। समस्त भोग-विलास से विभूषित होते हुए भी सच्चे कर्मयोगी थे। इसीलिए उन्होंने गीता में अर्जुन को बार बार 'तस्माद् योगी भवार्जुन' का सन्देश दे कर कर्मयोग का महत्व प्रकट किया है।

कृष्ण जन्माष्टी पर संकल्प लेकर खड़े हो जाओ

लेखक—श्री बाबूराम जी आर्य महामन्त्री जि. वेद परिषद् चण्डीगढ़

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि स्वाहा, ओ३म् वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि स्वाहा, ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि स्वाहा, ओ३म् ओजोऽस्योजो मयि धेहि स्वाहा, ओ३म् मन्युरसि मन्युं मयि धेहि स्वाहा, ओ३म् सहोऽसि सहो मयि धेहि स्वाहा।

(यजुर्वेद 19।12)

इन आहुतियों को देते हुए प्रार्थना करें कि अनन्त तेज परमेश्वर। आप तेज स्वरूप हो अपनी कृपा से मुझे भी वही तेज धारण करो। हे अनन्त वीर्य। परमात्मा आप वीर्य स्वरूप हो। मुझ में भी सबलतम बल स्थिरता रखो। हे अनन्त पराक्रम। आप ओज हो सो मुझ में भी ओज पराक्रम को सदैव भरो। हे दुष्टो पर क्रोध बरसाने वाले मुझ में भी दुष्टो पर क्रोध धारण कराओ। हे अनन्त सहनशील। मुझ में भी आप सहन सामर्थ्य धारण करो।

सार्वभौम आर्य समाजों को इस पद्धति द्वारा योगी-राज महाराज कृष्ण की जन्माष्टमी मनाने का विधान आरम्भ से दिया हुआ है। अतः वीरता के इन महान् गुणों को धारण करने के लिए आज और अभी संकल्प लेना है। कि महाराज कृष्ण के इस भारत में या अपने ही इस देश या घर में जीना है या बलीलों ख्वार हो कर इस तरह प्रतिदिन कुत्तों की मौत मरते जाना है। जिसमें न घर के अन्दर और न बाहर सुरक्षा का सांस लिया जा सकता है। क्या इसलिए आजादी ली थी कि ऐसा राज्य होगा जो चारों ओर आततायियों और पापियों से भरा हुआ होगा जिसमें शान्ति और निर्भयता नाम की कोई चीज नजर नहीं आएगी। अपने ही देश में क्या हमें शरणार्थी बन कर लाखो, करोड़ों की सम्पदा दुष्टों से छिनवा कर, प्यारे प्राणों की रक्षा के लिए रोटी के दो टुकड़ों के लिए भी मोहताज हो कर दिल्ली की सड़कों पर, नितान्त अयोग्य और निर्बल सरकार के आगे सत्याग्रह करना पड़ेगा, और क्या हम गली-बाजारों और सड़कों पर, घरों में बैठे हुए भी निर्दोष मारे जाते रहेंगे और कुछ हो नहीं पायेगा? नहीं हम कुछ करेंगे जिससे स्वयं भी प्रतिष्ठा से जिएं और दूसरो को भी जीने दें। जैसे अपनी रक्षा वैसे दूसरों की। 'अपने समान दूसरों के दुःख,सुख हानि लाभ को जानना' इस महर्षि वाक्य को कभी नहीं भूलना जो अत्यन्त प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता संस्कृति का आदर्श वाक्य वेद आदि सत् शास्त्रो मे रहा है।

किन्तु घर व बैंक लूटने वाले, आग लगाने वाले और प्रतिदिन हत्याए करने वाले बच्चो और महिलाओं को जो कहते हैं कि हम ने खालिस्तान बनाना है और होमलैंड आदि। लेकिन इसकी मांग तो सरकार से होनी चाहिए जो राजनैतिक सिद्धान्त है। अपने भाईयों को बस तक गोलियो से भूनते जाना यह कहां की मान-वता है? अगर इस तरह हिन्दू भी हथियार उठाने पर विवश हो जावें तो फिर क्या होगा ? लेकिन नहीं हिन्दू यह समझता है कि हमने अन्याय और अत्याचार की फरियाद सरकार से करनी है। जिसका धर्म है आततायियों से प्रजा की रक्षा करना। हां जब वह "टक-टक-दीदम, दम-न-कशी-दम" की तरह तमाशाई की तरह देखती रहती है अपने निकृष्ट स्वार्थ या गद्दी व वोटों के बचाव के लिए तो हम को

सोचना होगा कि क्या हम इस तरह लुटते पिटते और मौत के घाट कब तक उतरते रहेंगे। पर हम समझते है कि हम अपने पूर्वजो की तरह अखंड चक्रवर्ती राज्य का आदर्श बना कर सब को अपने समान जीने जिलाने का अधिकार दे कर चलेंगे। जो दुनिया में मानवता का धर्म है। जिस के आधार पर आर्य संस्कृति के मानने वालो ने करोड़ों वर्ष इस संसार पर शान्ति पूर्ण राज्य चलाया।

देश के महान नेता लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द जी, देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी, प. मदन मोहन मालवीय जी और यद्यपि लोक मान्य तिलक जी कांग्रेस से जुड़े रहे परन्तु उनकी कट्टर नीति हिन्दुत्व पर अन्तिम स्वास तक केन्द्रित रही। और बंटे हुए भारत में महान् पत्रकार बलिदानी वीर वर लाला जगत नारायण जी, अमर शहीद प्यारे रमेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी आदि कितने ही महानुभावो ने इस कांग्रेस पार्टी को सदा के लिए परित्याग कर दिया और प्रातः स्मरणीय श्याम प्रसाद मुखर्जी ने तो कांग्रेस को छोड़ कर भारतीय जनसंघ की नींव रख इस पार्टी के हाथो ही शहीद हो गये और इन उपरोक्त देश भक्तों ने अपना ध्यान हिन्दुत्व की ओर ही लगा दिया था और लगा रहे हैं। प्रताप के श्री वीरेन्द्र जी और हिन्द समाचार समूह के प्यारे विजय और अश्विनी जी पंजाब के अन्दर हिन्दुओं के एक संगठित मंच को तैयार करने के लिए रात दिन लटकती हुई तलवारो की छाया में संघर्ष रत है और अब तो जनसंघ के पुराने नेता श्री बलराज मधोक जी ने कह दिया है कि हिन्दू वादी पार्टियों का समूह ही कांग्रेस का स्थानापन हो कर देश को बचा सकता है। भारत देश के प्यारे सबसे महान न्यायाधीश श्री मेहरचन्द महाजन जी ने तो पहले दिन ही कह दिया था कि कोटे-परमिट-लाईसैंस वाली घूंसखोर सरकार कब तक चलेगी और सारे भारत को पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर चारो भागों में जोन बना कर सब प्रान्त और सब भाषायें तोड़ दी जाएंगी तो यह देश सदा के लिए अखण्ड बना रहेगा और परमेश्वर की कृपा और प्रजा के सौभाग्य से महान् वीर श्री लाल बहादुर शास्त्री जी आये जिससे भारतीय संस्कृति की टूटी हुई कमर फिर जुड़ने लगी परन्तु वे तुरन्त छीन लिये गये।

"किस्मत की बदनसीबी टूटी कहां कमंद
दो-चार हाथ जब कि लबे बाम रह गया।"

कृत में दक्षिणे हस्ते जयं मे सव्य आहिता (वेद) और महाराज कृष्ण का वाक्य "युद्धाय कृत निश्चयः" आदि वाक्यो को सम्मुख रखते हुए आज ही इस संकल्प को दृढ़ता से कर लें और लाखों लोग गली मुहल्ला बाजारों में निकल पड़ें। हिन्दू राज अमर रहे के नारो (घोषों) से भारत की धरती गूंज उठे यही एक समाधान है भारत में सब लोगों का और प्यारे देश की सुरक्षा और अखण्डता का।

(1) सबको समान अधिकार हो (2) अहिंसा का व्यवहार हो। (3) चोरी, लूटमार और बलात्कार पर कड़ा दण्ड हो। (4) कोटा परमिट और लाईसैंस को देश निकाला हो। (5) जिस तरह दूसरे देशो से श्री राजीव जी प्रधानमन्त्री के कत्ल के षड्यन्त्र आदि भारत के विरोधी अभियोगों पर वहां की अदालतो ने तुरन्त ही दण्ड दे दिया था। ऐसे यहां पर भी प्रत्येक अपराध का दण्ड दस दिन के अन्दर हो जाए। (6) सब के लिये एक ही कानून हो । (7) रिश्वत ब्लैक और पक्षपात भूमि में गाड़ दिया जाए। प्यारे आर्य समाजियो हिन्दू आर्य की बात विवेक से हम याद में कर लेंगे यह मेरा विनम्र निवेदन है।

योगीराज श्रीकृष्ण

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार दिल्ली

योगीराज श्रीकृष्ण का, जीवन चरित्र पवित्र।
बारम्बार निहारिये, यह मन भावन चित्र॥
यह मन भावन चित्र, मित्र जब मिले सुदामा।
छाती लिये लगाए, करी स्वागत की सामा॥
सब विधि से सत्कार प्यार करके बैठावें।
देख दीन की दशा अश्रु नयनन भर लावे।
ऐसे उपकारी महा मानव के गुण गाए।
उनके जन्मोत्सव को मिलकर सभी मनावें॥
कौन कहे श्रीकृष्ण जी, पक्के माखन चोर।
समझ न पाए भक्त जन, बुद्धि के कमजोर।
बुद्धि के कमजोर शोर यह वृथा मचाया।
वीतराग योगी को चोर जार बतलाया॥
दूध घृत मथुरा में बिकना बन्द कराया।
गोपीन संग नहीं कृष्ण ने रास रचाया॥
किया कंस का नाश वंश का नाम मिटाया॥
राधा के संग नहीं कृष्ण ने विवाह रचाया॥


अपने प्यारे बच्चों
के स्वास्थ्य के लिये
मोगा शहर का मशहूर
पीमार्का
शुद्ध सरसों का
तेल
प्रयोग करें।
तार "TRUTH"
फोन 2239
2303
देवी दास गोपाल कृष्ण प्रा. लि. आयल मिल्ज़, मोगा.

रजिस्ट्रेशन 74250 रजि. नं. [illegible]

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 21, 14 भाद्रपद सम्वत् 2044 तदानुसार 30 अगस्त 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की जांच का नाटकीय ढंग से पटाक्षेप

फार्मेसी के भू. पू. व्यवसायाध्यक्ष डा. हरिप्रकाश गिरफ्तार

पुलिस ने पिछले १० वर्षों का रिकार्ड अपने कब्जा में ले लिया।

कुछ और गिरफ्तारियां होने की सम्भावना

जालन्धर 25 अगस्त—(विशेष सम्वाददाता द्वारा) गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार में पिछले कई वर्षों से आर्थिक अव्यवस्था के कारण जो भ्रष्टाचार चल रहा था उसका नाटकीय ढंग से पटाक्षेप 17 अगस्त को उस समय हुआ जब उत्तर प्रदेश सरकार के आर्थिक अपराध संगठन के पुलिस अधीक्षक श्री रामेश्वर दयाल आई. पी. एस. के नेतृत्व में एक पुलिस पार्टी ने फार्मेसी पर छापा मारा और उसके पश्चात् फार्मेसी के भूतपूर्व व्यवसायाध्यक्ष डा. हरिप्रकाश को गिरफ्तार कर लिया। इस संदर्भ में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस फार्मेसी में पिछले कई वर्षों से जो घपला हो रहा था उसके विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने समय समय पर उसे रोकने के लिए कई प्रकार की कार्यवाही करने का प्रयास किया था परन्तु किसी न किसी कारण से कुछ दूसरे महानुभावों ने उसे चलने न दिया। अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा की विद्या सभा ने श्री बलदेव आयुर्वेदालंकार को फार्मेसी का व्यवसायाध्यक्ष बना दिया और डा. हरिप्रकाश को गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता नियुक्त कर दिया। वहां भी डा. हरिप्रकाश का कार्य सन्तोषजनक न था। इस पर उन्हें वहां से हटाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान जी ने एक आदेश दिया परन्तु उसे भी न चलने दिया गया। इसी बीच श्री बलदेव आयुर्वेदालंकार को फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष के पद से हटा कर सार्वदेशिक सभा के प्रधान के आदेशानुसार श्री सत्यदेव कोहली को गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का व्यवसायाध्यक्ष बना दिया गया। श्री बलदेव आयुर्वेदालंकार ने पंजाब सभा को एक नोटिस दिया कि उन्हें किस कारण से और क्यों हटाया गया? क्योंकि उन्हें पंजाब सभा ने नहीं हटाया था और फार्मेसी का पूरा नियन्त्रण सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने अपने हाथ में ले लिया था इसलिए श्री बलदेव ने कानपुर में पुलिस को रिपोर्ट की कि इस फार्मेसी में बहुत बड़ा घपला है और इसकी जांच की जाए उसके आधार पर आर्थिक अपराध संगठन के अधिकारियों ने इस फार्मेसी पर कई बार छापा मारा और इसके सारे पुराने रिकार्ड को अपने कब्जा में कर लिया और उसके आधार पर एक अभियोग बना कर डा. हरिप्रकाश को गिरफ्तार कर लिया। वह फार्मेसी के पांच और कर्मचारियों को भी गिरफ्तार करना चाहते थे परन्तु वह भागे हुए हैं। गिरफ्तारी के पश्चात् डा. हरिप्रकाश को हरिद्वार मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया और जमानत के लिए प्रार्थना की गई जो कि अस्वीकार कर दी गई। उसके पश्चात् सहारनपुर के सैशन जज ने पच्चीस-पच्चीस हजार की दो जमानतों पर डा. हरिप्रकाश को रिहा कर दिया। डा. हरिप्रकाश की गिरफ्तारी के पश्चात् पुलिस के अधिकारी देहली गए जहां उन्होंने पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी से बातचीत की और सारी स्थिति को समझने का प्रयास किया। वह बार-बार एक ही प्रश्न करते थे कि इस फार्मेसी में इतनी गड़बड़ होती रही है तो आपकी सभा ने कोई कार्यवाही क्यों नहीं की। श्री वीरेन्द्र जी ने उन्हें सारी स्थिति बताई कि किस प्रकार पंजाब सभा ने इस भ्रष्टाचार को रोकने का प्रयास किया परन्तु कुछ महानुभावों ने उनकी एक न चलने दी।

श्री वीरेन्द्र जी से बात करने के पश्चात् पुलिस अधिकारी सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से मिलने गए और उनसे भी यही प्रश्न करते रहे। अभी जांच हो रही है और हो सकता है कुछ और गिरफ्तारियां भी हों क्योंकि पुलिस का अनुमान है कि यहां लाखों का घपला है और पुलिस ने जो कागजात अपने कब्जा में लिए हैं उनसे उसके इस आरोप की पुष्टि हो जाती है। आगे क्या कार्यवाही होती है इसका अगले कुछ दिनों में पता चल जाएगा।

—

अमृतो भवति

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

अमृत नगर से एक मील की दूरी पर बाईपास के समीप एक छोटा सा आश्रम है, जिसके मध्य मे एक आंगन और कुछ कमरे हैं। यह स्थान विवेक वाटिका के नाम से प्रसिद्ध है। इसके प्रबन्धक विवेकशील जी हैं, जिन्होंने चार वर्ष पूर्व स्थानीय कालज से अवकाश प्राप्त किया था। वे इतिहास, समाज शास्त्र और संस्कृत साहित्य मे निष्णात हैं। कार्यमुक्त होने से पूर्व ही उन्होंने कुछ सहयोगियो के साथ मिल कर इस योजना को प्रारम्भ किया था। आश्रम का औषधालय, वाचनालय एवं पुस्तकालय यहा जनता की सेवा मे तत्पर हैं, वहा यहा के तीनो निवासी अपने ध्यान, स्वाध्याय और आश्रम के कार्य करते हुए जनता को हर प्रकार का सहयोग देने के लिए तत्पर रहते हैं। कुछ सत्सगी बन्धुओं के अनुरोध पर स्वाध्याय के साथ सत्सग की भी नियमित योजना आरम्भ की। एक दिन सत्सग से पूर्व श्रुतिशील ने महात्मा जी से पूछा, कुछ दिनो से मैं कठ उपनिषद् का स्वाध्याय कर रहा हू, उस मे नचिकेता और यमाचार्य की चर्चा के तीसरे वर मे अनेकबार आता है, कि 'अथ मर्त्यो अमृतो भवति' ऐसी स्थिति मे व्यक्ति अमर हो जाता है। अच्छा हो इस पर ही सत्सग मे प्रकाश डाला जाए तब इसी प्रसग को लेकर महात्मा जी ने सत्सग शुरू किया।

महात्मा जी ने जब नचिकेता की कथा का कुछ प्रसग सुनाकर भूमिका स्पष्ट की तो कुछ कहने की आज्ञा ले कर श्रीमती सुधा ने कहा—हमारे पड़ोस मे एक नामकरण सस्कार था, उसमे शिशु की नासिका से निकलते हुए वायु का स्पर्श करते हुए पिता दो मन्त्र बोलता है, दूसरे मन्त्र मे 'अमृतोऽसि' शब्द आता है, अत प्रसग सहित इस पर भी पूर्ण चर्चा के साथ प्रकाश डाला जाए तो 'सोने मे सुहागे' वाली बात हो। तभी स्वाध्याय प्रिय ने कहा—मैं आज एक पत्रिका पढ रहा था, उस मे अमृत पर एक लेख था, जिस मे अमृत-पान से देवो के अमर होने की चर्चा थी। तब श्रवण प्रिय ने कहा—हा, मन्दिर में एक दिन पण्डित जी ने पुराणो की समुद्र-मन्थन वाली कथा सुनाई थी, जिसमें इसी का विस्तृत वर्णन था। इसके बाद सत्सग प्रिय ने प्रार्थना की, कि ये सारी चर्चायें अमृत से जुडी हुई हैं, अत: इन सत्सगो मे यही चर्चा चलाई जाए।

इन जिज्ञासाओ को ध्यान में रख कर विवेक जी ने प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा—हमारे साहित्य मे स्थान-स्थान पर अमृत की चर्चा आती। इस इस को बार-बार पढने पर भी अनेक जिज्ञासायें बनी रहती हैं और नाना तरह के प्रश्न मन मे उभरते हैं। इनका समाधान खोजने के लिये हमे सर्वप्रथम अमृत शब्द को समझना चाहिए। न+मृत को अमृत कहते हैं और मृत का अर्थ है—मरा हुआ या जो मर जाए, नष्ट हो जाए और जो टिका न रहे। अत. अमृत का सीधा सा अर्थ हुआ—जो न मरे, न नष्ट हो, टिका रहे और यही अर्थ अमर का भी है। इस का एक अभिप्राय यह भी निकलता है, कि जिस के बिना कोई मर जाए, टिका न रहे, उसको भी अमृत कहते हैं, क्योंकि विष और अमृत परस्पर विरोधी शब्द हैं। मौत के साधन या किसी की मौत का कारण बनने वाली वस्तु को विष कहते हैं। अत. जीवनदायक वस्तु का नाम भी अमृत है। हर भाषा मे किसी के साधन को भी मूल वस्तु, साध्य के नाम से पुकारा जाता है। इस सारी भावना को सामने रखकर आप मे से कुछ सज्जन पहले अपने विचार रखें। अन्त में उन सब विचारो की अगले सत्सग मे समीक्षा करेंगे।

महात्मा जी के निर्देश पर सर्वप्रथम रसप्रिय ने कहा—अमृत शब्द का सरल सा अर्थ यह हुआ, कि जिस के बिना कोई मर जाए। हम प्राय पढते और सुनते हैं, कि गर्मी मे सैंकडो लोग जल के बिना मर जाते हैं। अत एव जल को जीवन और अमृत के नाम से याद किया जाता है। तभी तो यज्ञ आरम्भ करते हुए जल हथेली पर लेकर कहते हैं—

'अमृतोपस्तरणमसि' इसके पश्चात् कुछ और सज्जनो ने क्रमश: कहा—जल की तरह ही भोजन, वस्त्र, भवन आदि भौतिक सुविधाओ के बिना भी प्रतिवर्ष अनेकों मर जाते हैं। साहित्य मे अन्न आदि के लिए अमृत शब्द का प्रयोग होता है। ये मृत स्थिति से दूर रखने के कारण ही अमृत कहे जाते हैं।

दूसरे सत्सग को प्रारम्भ करते हुए विवेकशील जी ने कहा कि हम प्राय. देखते हैं, कि अन्न से बने खाद्य पदार्थों की अपेक्षा दूध से बने हुए और उसकी अपेक्षा घी से बने हुए खाद्य पदार्थ तथा स्वय भी अधिक दिन टिकता है। इनके खाने पर यही बात तज्जन्य रस, रक्त आदि पर भी लागू होती है। अत: साहित्य मे दूध, घी को भी अमृत कहा है और स्वाद, रूप तथा लाभ की दृष्टि से 'क्षीरममृतभोजनम्' की उक्ति किसने नही सुनी। इसी दृष्टि से गीता की उपमा 'दुग्ध गीतामृतम् महत्' से दी गई है। दूध आदि से कायाकल्प की चर्चा आयुर्वेद मे सर्व प्रसिद्ध है। गोघृत एक उत्तम औषधि के रूप मे वर्णित है तथा इसको दीर्घ आयु का प्रमुख साधन माना गया है। आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति मे सोने से बल, पुष्टि और दीर्घ आयुदायक जहा अनेक प्रकार की औषधिया तैयार की जाती हैं, वहा भौतिक दृष्टि से भी सोना एक टिकाऊ धातु के रूप मे सर्वमान्य है और इसीलिए सारे देशो की मुद्राओ के मानदण्ड का आधार भी सोना ही है। तभी तो साहित्यकार सुवर्ण को अमृत के रूप मे चित्रित करते हैं।

भारतीय दर्शनो में 'रसेश्वर' के नाम से एक दर्शन है, जिसमे पारे के विशेष विधिपूर्वक सेवन से दीर्घ जीवन मिलने की विस्तृत चर्चा मिलती है। वेद एव वैदिक वाङ्मय मे सोम को अनेक स्थानो पर अमृत कहा है तथा इस के पान से अमर होने की चर्चा है। ऐसे ही जो व्यवहार, बातें, तत्व वैयक्तिक और सामाजिक जीवन तथा व्यवस्था को बनाए रखते हैं, उन को भी 'सत्ये हि—अमृतमाश्रितम्' 'वेदा अमृत गवा—' आदि साहित्यिक वचनो मे अमृत की ओर सकेत किया गया है।

एक दिन तीसरे सत्सग का उपसहार करते हुए विवेक जी ने कहा—अब तक के विवेचन से यह सिद्ध होता है कि अमृत की परिभाषा के अनुसार जो भी किसी के टिकाव का कारण होता है, उस को अमृत कहा जाता है। इस सब की जब हम मीमांसा करते है, तो पहली बात यह सामने आती है, कि जहा इनके न होने पर अनेको मर जाते हैं, वहा जल आदि को बरतते हुए अनेको मर जाते हैं। अत ये सब भौतिक पदार्थ आशिक रूप से ही अमृत हैं।

महात्मा जी ने चौथे सत्सग का श्रीगणेश करते हुए कहा—पूरी तरह से अमृत तो आत्मा ही है, क्योंकि अमृत की परिभाषा आत्मा पर ही पूरी तरह से लागू होती है। इसीलिए सभी शास्त्रकार स्थान-स्थान पर इंगित करते हुए कहते हैं, कि इस अजर-अमर आत्मा को न तो कोई शस्त्र काट सकता है, न ही जल में गल सकता है और न ही किसी प्रकार की आग इस को जला सकती है अर्थात् यह किसी भी ढग से नष्ट नहीं होती।

महात्मा जी ने आगे समझाया, कि आत्मा की सत्ता केवल काल्पनिक नहीं है। प्रत्येक शरीर का व्यवहार और अनुभव जहा इस की सत्ता को सिद्ध करता है, वहा अनेक दर्शनो में बड़ी सुन्दर युक्तियों से आत्मा का अस्तित्व समझाया गया है। दर्शनों और उपनिषदो मे आत्मा के स्वरूप को भी सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

अमृत की चर्चा का उपसहार करते हुए विवेकशील जी ने कहा, कि पूर्ण परिभाषा परमात्मा पर ही पूर्णत चरितार्थ होती है। पर हमने इस चर्चा को जिस रूप मे आरम्भ किया है, उस प्रसग के अनुसार यहा जीवात्मा की ही चर्चा है। यह ठीक है, कि अपने स्वभाव से जीव भी अजर-अमर है, पर उसका शरीर से सम्बन्ध अजर-अमर नहीं है। अत प्रस्तुत प्रसग में शरीरी आत्मा को अपनी अनुभूति एव आत्म ज्ञान कराना ही अमृत चर्चा का मूल अभिप्राय है। जिस की ओर सकेत करते हुए ही महर्षि याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी से कहा था—'आत्मा वारे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यश्च' और इसकी सिद्धि की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए ही महर्षि मनु ने 'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा' का मार्मिक मर्म बताया है। विद्या और तप जिस रहस्य का यहा सकेत करते है, वह ही योग भाष्य एव सत्यार्थ प्रकाश में उद्धृत 'स्वाध्यायाद् योगमासीत्' पद्य मे प्रतिपादित है। योग आदि अध्यात्म ग्रन्थो की सूक्तियो की ओर सकेत करते हुए महात्मा जी ने कहा—वस्तुत. मानव जीवन की कृतार्थता इसी में है, कि अपने आप को अनुभव किया किया जाए। यह केवल चर्चा का विषय नहीं, अपितु अनुभव किया जाए। यह केवल चर्चा का विषय नहीं, अपितु अनुभव करने की बात है, तभी तो उपनिषद् के ऋषि ने कहा था—'नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हितत्'। संक्षेप रूप में सकेतित इस 'अथ मर्त्यो अमृतो भवति' की प्रतीक्षा कीजिए, कि किस प्रकाशक के सहयोग से यह पुस्तक पाठको के हाथों में आती है और यह लेख शुरू रूप में ही न रह कर नव विकास रूप धारण करके अमृत के प्रत्येक पहलू को स्पष्ट करता है। देखें। कौन आर्य समाज इस कार्य को पूर्ण करता है।

सम्पादकीय—

सत्यमेव जयते

आर्य मर्यादा के पाठकों ने इसी अंक में उस सारी स्थिति के विषय में पढ़ लिया होगा जो गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में अब पैदा हुई है। जो कुछ हुआ है वह निश्चय ही अत्यन्त शोचनीय है। आर्य समाज के इतिहास में यह सम्भवतः पहला अवसर है जबकि सरकार को आर्य समाज की किसी बड़ी संस्था पर छापा मार कर जांच करनी पड़ी और उसके पश्चात् उसके किसी अधिकारी को गिरफ्तार करना पड़ा। परन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए यह अत्यन्त सन्तोषजनक स्थिति है कि पिछले छः वर्षों से उसके अधिकारी जो कुछ कह रहे थे उसकी सम्पुष्टी अब उत्तर प्रदेश की सरकार की पुलिस ने कर दी है। पिछले तीन-चार माह से यह जांच हो रही थी कि पुलिस ने कई पुराने रिकार्ड और रजिस्टर अपने कब्जे में कर लिए थे और उनकी जांच के पश्चात् अब वह इस परिणाम पर पहुंची की फार्मेसी में लाखों का गपला है तो उन्होंने उसी व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया जिसको वह इसके लिए उत्तरदायी समझती थी। इससे पहले भी कई ऐसी घटनाएं हो चुकी थी जिनके आधार पर कुछ न कुछ कार्यवाही की जा सकती थी यदि वह समय पर हो जाती तो जो कुछ अब हुआ है वह न होता। लगभग छः वर्ष से हम यह चीखते व चिल्लाते चले आ रहे थे कि फार्मेसी में बहुत कुछ वह सब हो रहा है जो नहीं होना चाहिए। उसकी जांच होनी चाहिए और जो भी उसके लिए जिम्मेदार हो उसके विरुद्ध कार्यवाही करनी चाहिए लेकिन हमारी एक न सुनी गई, बल्कि वह समय भी आया जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान को आर्य समाज से निष्कासित करने और पंजाब सभा की अन्तरंग सभा को भंग करने का प्रस्ताव पास किया गया। कहते हैं कि परमात्मा के दरबार में देर तो हो सकती है अन्धेर नहीं हो सकता। अब भी देर तो हुई है लेकिन अन्धेर नहीं हुआ, जो कुछ भी हुआ है उसने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दृष्टिकोण की सम्पुष्टी कर दी है।

आर्य मर्यादा के पाठक साक्षी हैं कि मैंने आर्य मर्यादा में कई बार यह लेख लिखे हैं कि आर्य समाज में भ्रष्टाचार की जो नई प्रवृति पैदा हो रही है उसे रोकना चाहिए। मैंने एक बार सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में भी कहा था कि आर्य समाज को दूसरी कांग्रेस न बनाओ। परन्तु मेरे विरुद्ध कई प्रकार का प्रचार किया गया और मेरी जबान तथा कलम को बन्द करने की कोशिश की गई। लेकिन मेरा यह निश्चित मत था और आज भी है कि आर्य समाज का निष्कलंक स्वरूप कायम रहना चाहिए। मैंने अपने बचपन में आर्य समाज का जो रूप देखा था वह आज के आर्य समाज से बिल्कुल भिन्न था। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महात्मा हंसराज जी, श्री आचार्य रामदेव जी, श्री पं. विश्वम्भर-दत्त जी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री महाशय कृष्ण जी, श्री महाशय खुश-हाल चन्द जी, जो बाद में आनन्द स्वामी बने और आर्य समाज के दूसरे नेता अपने पास से आर्य समाज को कुछ न कुछ दिया ही करते थे। उससे कुछ लिया नहीं करते थे। वह उसकी कौड़ी 2 की रक्षा करते थे। यही कारण था कि जनता खुले दिल से आर्य समाज को दान दिया करती थी। वह यह समझती थी कि यह वह संस्था है जहां पैसे-2 का हिसाब रखा जाता है लेकिन आज क्या स्थिति है? हमारे सामने केवल गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के घपले की कहानी आई है। देहली में आर्य समाज की सम्पत्ति पर किस प्रकार पकड़िया की जाती हैं, और की जाती हैं इसकी चर्चा दिल्ली में ही सुनने को मिलती है। हैदराबाद और दूसरे कुछ स्थानों में आर्य समाज की सम्पत्ति से जो खिलवाड़ की जा रही है उसके विषय में भी कई प्रकार के चर्चे हो रहे हैं। कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है कि आज आर्य समाज का कोई रक्षक ही नहीं है यदि होता तो जो कुछ आज हो रहा है वह कभी न होता। सबसे शोचनीय और दुःखदायी स्थिति यह है कि जो महानुभाव इस प्रकार के भ्रष्टाचार को रोक सकते हैं वह कुछ करने को तैयार नहीं हैं अपितु वह इसका समर्थन करते हैं और इसे संरक्षण देते हैं। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में जो कुछ हुआ। वह जब अदालत के सामने आएगा उस समय पता चलेगा कि यहां अन्धेर नगरी चौपट राजा वाली बात चल रही थी, पुलिस के अधिकारी जब मुझ से इस विषय में मिले तो उन्होंने सीधा सवाल किया कि आर्य समाज की संस्था में यह सब कुछ क्यों होता रहा? मेरे पास इसका कोई जवाब न था। कल को अदालत क्या फैसला करती है यह तो बाद में पता चलेगा। आज तो हम केवल यही कह सकते हैं कि कुछ हमारे ही नेताओं के कारण अत्यन्त दुःखदायी और लज्जाजनक स्थिति पैदा हो गई है। जब मुकद्दमा शुरू होगा और सब कागजात अदालत के सामने रखे जाएंगे तो उस समय पता चलेगा कि फार्मेसी में क्या कुछ होता रहा है। मैं बड़े गर्व से कह सकता हूं कि इस सारी स्थिति में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है उसने अपने कर्तव्य को पूरा किया है। जो कुछ हुआ है इससे भी हम यदि कोई शिक्षा प्राप्त करके आगे के लिए कोई ऐसा नियम बनाएं कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो आर्य समाज और उसकी संस्थाओं के हितों से खिलवाड़ न कर सके तो फिर भी आर्य समाज बच सकता है। नहीं तो अन्त में उसका भी वही हाल होगा जो आज कांग्रेस का हो रहा है।

—वीरेन्द्र

श्री स्वामी वेदानन्द जी भी चले गए

आर्य समाज का एक और महारथी इस संसार से विदा हो गया है। श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने अपना जीवन आर्य समाज के लिए अर्पित कर रखा था। रोपड़ में उन्होंने वैदिक साधु आश्रम के नाम से एक आश्रम बना रखा था। वहीं पर वह रहा करते थे और समय-2 पर आर्य समाजों के उत्सवों में जाकर प्रवचन दिया करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर उनकी विशेष अनुकम्पा थी। अभी थोड़ा ही समय हुआ जब मैंने उनसे कहा था कि स्वामी जी महाराज अब पंजाब से बाहिर के उपदेशक यहां नहीं आते इसलिए आप सभा को कुछ अधिक समय दिया करें। उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली थी और हमने यह फैसला किया था कि बैठ कर एक ऐसा कार्यक्रम बनाएंगे कि पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में वह हमारा मार्ग दर्शन कर सकें। परन्तु परमेश्वर को कुछ और ही स्वीकार था और हमें उनके आदेश के आगे सिर झुकाना पड़ता है। वह श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज को ले गए और हम एक ऐसी महान् आत्मा की सेवाओं से वंचित हो गए जो आज की विकट परिस्थितियों में हमारा मार्ग प्रदर्शन कर सकते थे। उनके निधन से पंजाब में आर्य समाज की जो क्षति हुई है उसे पूरा करना हमारे लिए सम्भव न होगा। हमें अपने सन्यासियों पर सदा ही गर्व रहा है वह हमारे लिए एक ज्योति स्तम्भ का काम करते हैं। श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज की आयु अभी अधिक न थी और अभी उनके जाने का समय भी न था फिर भी यह हमारा दुर्भाग्य है कि वह हमें छोड़ कर चले गए। पंजाब का सारा आर्य जगत उन्हें अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करेगा। परन्तु सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि जिस काम को वह अधूरा छोड़ गए हैं उसे हम पूरा करें। वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त थे और आर्य समाज के एक महान नेता थे। ऐसे महा मानव की स्मृति को स्थाई रूप देने का एक ही ढंग है कि जिस आर्य समाज की सेवा में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया था उसकी प्रगति के लिए हम से जो कुछ भी भी हो सकता है हम करें। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से श्री स्वामी जी महाराज को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करें और हमें यह शक्ति दे कि हम उनके अधूरे कार्य को आगे चलाने के लिए तन-मन-धन से प्रयत्न करें यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज और राजनीति

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

उपर्युक्त शीर्षक से श्री वीरेन्द्र जी के दो धारावाही सम्पादकीय लेख आर्य मर्यादा में प्रकाशित हुए हैं। मैं श्री वीरेन्द्र जी के इस कथन से शत प्रतिशत सहमत हू कि हमारे ही कई शिरोमणी नेता राजनीति के प्रश्न पर एक साथ दो नावो की सवारी करने का दुस्साहस करते हैं। एक ओर वे हिन्दू हितो की बातें करते हैं, हिन्दू धर्म, समाज और उसकी सस्कृति को हानि पहुचाने वाली सरकारी नीतियो की यदा कदा खुल कर आलोचना आर्य समाज और अन्य सार्वजनिक मचो से करते हैं जब कि दूसरी ओर कांग्रेस के शासक नेताओ से दूध और मिश्री की तरह घुल-मिल कर रहने की भी चेष्टा करते हैं।

इसी तथ्य को ध्यान मे रख कर 19 जुलाई की आर्य मर्यादा मे जनसत्ता का एक उदाहरण दिया गया, जिसमे कहा गया था कि एक पूर्व सांसद और इका समर्थक आर्य समाजी नेता से प्रैस कान्फ्रेंस करवा कर हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल की आलोचना करवाई गई और कहा गया कि उनके सत्ता मे आने से हरियाणा मे उग्रवाद पनपेगा, मेरे विचार से दलगत राजनीति से पृथक् रहने वाले आर्य समाज को देवीलाल, भजनलाल, बसीलाल के पारस्परिक झगडो से कोई मतलब ही नही होना चाहिए। हमे तो यह देखना है कि किस राज्य मे आर्य समाज के हित सुरक्षित रहे, वही हमारी प्रशसा का पात्र होगा। विगत मे भी हमारे नेताओ ने ऐसी ही गलतिया की हैं। काश्मीर में मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्ला के प्रथम कार्यकाल में हुए दगो मे हिन्दुओ के जन धन की पर्याप्त क्षति हुई। किन्तु उस समय राज्यपाल की सस्तुति पर डा फारूक की सरकार को बर्खास्त करने या न करने से आर्य समाज का क्या लेना देना था? फिर भी ऐसे बयान दिये गये और समाचार छपाये गये मानो हमारे नेताओ के परामर्श को मान कर ही उस समय फारूक को काश्मीर की गद्दी से हटाया गया। हमारे लिये यदि फारूक गलत हैं तो उनका स्थान लेने वाले गुलशाह कैसे अच्छे हो गए। अब तो गुलशाह ने सयुक्त मुस्लिम मोर्चे में शरीक होकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता को जैसा स्पष्ट समर्थन दिया है उसने क्या फारूक के उदार रवैये की प्रशसा नहीं करनी होगी? वस्तुत आर्य समाज के नेताओ को ऐसे मामलो में पर्याप्त सावधानी बरतनी होगी।

जो बात श्री देवी लाल और डा. फारूक के बारे में कही गई है, वही आन्ध्र के मुख्यमन्त्री श्री एन टी रामाराव के विषय में भी कही जा सकती है। हमारे पास इस बात के प्रमाण हैं कि हमारे कतिपय शिरोमणि नेताओ ने आन्ध्र की तेलगू देशम सरकार की आलोचना की थी। जहा तक हमे ज्ञात है कि रामाराव ने जाने अनजाने भी आर्य समाज या हिन्दू जाति का कोई अनिष्ट नही किया, फिर हम आर्य समाज के मच से उसकी आलोचना कर कर क्या केवल केन्द्रीय शासको के प्रति ही अपनी आसक्ति को सिद्ध नही कर रहे हैं।

यहा एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए। केवल भारत के प्रधानमन्त्री से भेंट करने, उन्हें पत्र लिखने अथवा उनसे आश्वासन प्राप्त कर लेने मात्र से ही आर्य समाज या बृहत्तर हिन्दू समाज की समस्याओ का समाधान नहीं हो जाता। राजनीतिज्ञ और शासक सीमातीत रूप से चतुर, व्यवहार कुशल और लोक सग्रही होते हैं। वे सुनते सब की हैं किन्तु करते अपने मन की हैं। अत कोई इस खुश फहमी मे क्यो रहे कि उसके सुझाव को मान कर ही प्रधानमन्त्री ने पहले डा फारूक को डिसमिस कर दिया था। ऐसा सोचने वाले क्या यह भी मानते हैं कि अब जो काश्मीर मे नेशनल कान्फ्रेंस और कांग्रेस का गठजोड बना है और दोनो मिल कर वहा शासन कर रही हैं, यह भी उनकी राय से ही हुआ है। इधर हमारे नेताओं का प्रतिनिधि मण्डल नवीन शिक्षा नीति में सस्कृत की स्थिति को लेकर मानव ससाधन मन्त्री श्री नरसिंहराव से मिला और उनकी चिकनी चुपडी बातों में आ कर यह मान बैठा कि नवोदय शिक्षा प्रणाली और दस जोड दो की शिक्षा पद्धति मे सस्कृत को उसका प्राप्य मिलेगा और उसके विकास को हानि नहीं होगी। मन्त्री जी के आश्वासन को मान कर सन्तुष्ट हो जाना दिवा स्वप्न देखना ही है। इसके सम्बन्ध में शिक्षा शास्त्रियों का ही मत प्रामाण्य है। वे ही हमें बतायेंगे कि नवीन शिक्षा प्रणाली मे सस्कृत को कोई महत्व नहीं दिया गया है। मन्त्री का तो काम ही आश्वासन देना होता है।

श्री वीरेन्द्र जी ने जुलाई 1986 में आर्य समाज द्वारा पजाब की समस्या पर दिल्ली में बुलाई गई दो दिवसीय बैठक का भी उल्लेख किया है जिसमें बड़े जोश खरोश के साथ यह कहा गया था कि यदि 15 अगस्त 1986 तक पजाब मे उग्रवाद के दमन के लिए सरकार ने कोई कारगर कदम नही उठाया तो आर्य समाजी 1939 के हैदराबाद और 1946 के सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन जैसी स्थिति की पुनरावृत्ति करेंगे। ऐसा कहने वाले और ऐसे प्रस्ताव पास करने वाले वस्तु स्थिति से सर्वथा अपरिचित तथा स्वप्नलोक के वासी ही हैं। 1939 और 1946 का जमाना लद गया। उस समय आर्य समाज को महात्मा नारायण स्वामी, स्वतन्त्रतानन्द जी, महाशय कृष्ण जी तथा राजगुरु शास्त्री जैसे निष्ठावान आर्य नेताओ का नेतृत्व प्राप्त था जो सर्वात्मना आर्य समाज के लिये ही समर्पित थे। उनकी निष्ठायें द्विधा विभक्त नहीं थी और न वे शासक या सत्ता के चापलूस ही थे। उन्होंने यदि हैदराबाद के निजाम या सिन्ध के मुस्लिम लीगी मुख्यमन्त्री सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला की सरकार को चुनौती दी तो आर्य समाज के अपने दमखम पर ही दी थी। वे आज के उन नेताओं से कतई भिन्न कोटि के थे जो आर्य समाज के मच पर श्री अर्जुनसिंह जैसे सामान्य व्यक्ति के आने पर अपनी चतुर्वेदाम्नी मर्यादा को भी भूल कर उनका स्वागत करने के लिए पलक पांवड़े बिछा देते हैं।

आर्य नेताओं को जान लेना चाहिए कि अब 1939 और 1946 का जमाना लौटने वाला नहीं है। उसके बाद तो आजाद भारत में न तो आपका गोरक्षा आन्दोलन ही सफल हुआ और न पजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन। पजाब समस्या तथा उग्रवाद का समाधान खोजने मे जब आज सर्व समर्थ सरकार और पुलिस तथा सुरक्षा सेना भी असफल हो रही है और अपने आपको असहाय और निरुपाय महसूस कर रही है तो भला आर्य समाज इसमें क्या कुछ कर लेगा? उसकी बिसात ही क्या है। उग्रवाद के भय से आज पंजाब में तो आर्य समाज की सारी गतिविधि ही ठप्प हो गई है।

अपने कथन को समाप्त करने से पूर्व मध्य प्रदेश हिन्दू सम्मेलन के ग्वालियर अधिवेशन में दिनांक 12 जुलाई को दिये गये एक आर्य नेता के अध्यक्षीय भाषण की ओर सकेत करना चाहता हू। इस भाषण के दौरान यह कहा गया है कि विरोधी दल साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रहे हैं। बात बहुत कुछ सत्य है। चन्द्रशेखर और बहुगुणा जैसे व्यक्तियो ने मुस्लिम साम्प्रदायिकता की ओर से सदा आखें मूद रखी तथा साम्प्रदायिक वैमनस्य के लिये सदा बहुमत को कोसा है। परन्तु मैं पूछना चाहता हू कि अल्पमतीय साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने मे शासक दल ने ही कौन सी कसर रखी है। फिर केवल विरोधी नेताओ को दोष देना बेकार है। 30 मार्च के बोट क्लब पर आयोजित रैली मे अब्दुला बुखारी और सैयद शहाबुद्दीन ने जिस प्रकार विषवमन किया उस पर क्या सरकार ने कार्यवाही की? जब शाही इमाम ने जामा मस्जिद के दरवाजे बन्द कर दिये और अपने अनुयायियो मे उत्तेजना फैलाने का प्रयास किया तो क्या दिल्ली प्रशासन ने बुखारी की मांगो के आगे झुक कर निरपराध पुलिस अधिकारियों के स्थानातरण करने का आश्वासन उसे नही दिया? तो केवल विरोधी दलो को ही साम्प्रदायिक तुष्टिकरण के लिए दोष देना एकागी दृष्टिकोण है। कांग्रेस तो 1916 की लखनऊ कांग्रेस मे ही प्रथम बार जो मुस्लिम साम्प्रदायिकता के आगे झुकी तो वह आज तक झुकती ही जा रही है। भविष्य मे कहा तक झुकेगी उसे भगवान ही जाने।

इसी व्याख्यान मे श्री देवीलाल को दलगत राजनीति से ऊपर उठने का उपदेश दिया गया है। सच तो यह है कि हरियाणा का यह चुनाव श्री देवीलाल ने दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर ही लड़ा था अन्यथा उन्हें वैसी अभूतपूर्व विजय मिलती ही नहीं जैसी कि इस बार उन्हें मिली। आर्य समाज के लिए सभी "लाल" एक से ही हैं जब तक कि हमारे प्रति उनके व्यवहार में कोई भिन्नता न दिखाई पड़े। इसलिये एक को दूसरे पर वरीयता देने का कोई प्रश्न ही नहीं है। सच तो यह है कि आर्य समाज का भला न तो शासक दल ही करेगा और न विरोधी दल। उसे तो खुद के बलबूते पर ही अपनी प्रतिष्ठा को बरकरार रखना है।

स्वामी वेदानन्द जी महाराज के आर्य समाज तलवाड़ा में अन्तिम कुछ पल

येत पुरुषेण हविषा यज्ञ देवा अतन्वत ।
अस्ति नु तस्मादोजीयो यद विहव्येनेजिरे ॥ अथर्ववेद

त्यागी, तपस्वी, विद्वान् जैसा लोग पुरुषरूप प्राणों की हवि डाल कर जो जीवन यज्ञ करते हैं क्या इससे बड़ा "ओजीये" कोई यज्ञ हो सकता है ?

ठीक इसी प्रकार स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने वैदिक धर्म रूपी यज्ञ मे अपने प्राणो की हवि डाल कर 18अगस्त 1987 को अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दी।

आर्य जगत् और हमारे पंजाब ने एक महान् सन्यासी, योद्धा और महान् त्यागी को सदा के लिए खो दिया। आर्य समाज के लिए इस कमी को पूरा करना मुश्किल है। स्वामी वेदानन्द जी ने महर्षि दयानन्द जी के उपदेश को घर-घर तक पहुंचाने के लिये अपने जीवन को न्योछावर कर दिया। 17 तारीख तक को कोई नहीं जानता था कि सुबह दयानन्द का दिवाना हमारे मध्य नहीं रहेगा। स्वामी जी दिल्ली वेद प्रचार करके आये और रोपड कुछ समय के लिये रुके। 17 अगस्त को तलवाड़ा के लिये चल पड़े।

यह किसे मालूम था कि अन्तिम श्वास उन्हें खींच कर तलवाड़ा ला रहे हैं। आश्रम वालो ने रोका और कहा आप आज न जावें। उन्होंने कहा कि मैंने पहले उनका 12 से 16 तक का प्रचार कार्य स्थगित किया है और अगर मैं अब न गया तो वह कहेंगे कि स्वामी वचन का पक्का नहीं है। तलवाड़ा में मेरी सबसे लाडली (प्यारी) समाज है मैं जरूर जाऊंगा। यह महान् सन्यासी के अन्तिम शब्द थे। यह वचन निभाने के लिये 17 शाम को अपने अन्तिम कुछ श्वास ले आर्य समाज तलवाड़ा 5-30 बजे पहुंचे। रात्रि 9-15 से 10-30 तक वेद प्रचार किया। उस समय वेद प्रचार, आर्य समाज के कार्य, देश, धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिये उनके दिल में एक अद्भुत बड़ी तड़प दिखाई दे रही थी।

स्वामी जी सुबह 3 बजे उठे शौच गये और बिस्तर पर लेट गये ।.परमानन्द जी से जो अन्दिर में रहते हैं 3-45 पर स्वामी जी ने उठे देखा तो कि महामृत्यु में उठने वाले स्वामी जी अब तक तो नहीं उठते ।

आवाज लगाई, स्वामी जी बोले नहीं। चारपाई के पास गये हाथ लगाया देखा तो महान् त्यागी स्वामी जी तो ब्रह्ममुहूर्त मे ही ईश्वर को प्यारे हो चुके थे। महान् आत्मा हमारे मध्य नहीं रही थी।

स्वामी जी वेद प्रचार का कार्य करते हुए हमेशा के लिए अमर हो गए और आर्य समाज तलवाड़ा का नाम भी हमेशा के लिए अमर कर गये। आर्य समाज तलवाड़ा हमेशा के लिये स्वामी जी के वचनो का ऋणी हो गया क्योंकि स्वामी जी ने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए अपने यहा पर प्राण त्याग दिये।

कबीर ने कहा—

जब तू आया जग में,
तू रोये जग हसे।
ऐसी करनी कर चले,
तू हसे जग रोये ॥

ठीक इसी प्रकार जिन लोगो ने उनके अन्तिम दर्शन किए हैं। उन्होंने अनुभव किया होगा कि उनके चेहरे का तेज और आकृति ऐसे मालूम हो रही थी जैसे हस रहे हो और खुश हो और खुशी से ईश्वर से कह रहे हो कि मैंने अपना कार्य जिस लिये आपने मुझे संसार मे भेजा था पूर्ण कर दिया खुशी से हे ईश्वर प्राण तुम्हे सौंप रहा हू।

स्वामी जी का नश्वर शरीर रोपड ले जाया गया सभी समाजें स्वामी जी के अन्तिम दर्शनो को वहा पहुची।

वैदिक साधु आश्रम रोपड मे 19 अगस्त 1987 को दोपहर बाद पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया।

स्वामी जी महाराज यहा प्राण दे कर आर्य समाज तलवाड़ा को इतिहासिक तीर्थ स्थल बना गए हैं आज वह महान् आत्मा हमारे मध्य नही रही। लेकिन आर्य समाज तलवाड़ा हमेशा वैदिक पथ पर चलता हुआ हमेशा स्वामी वेदानन्द जी का नाम अमर रखेगा। आर्य समाज तलवाड़ा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जहा भी वह हो उस महान् आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—मनोहर लाल आर्य
(मन्त्री आर्य समाज तलवाड़ा)
उप संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब

स्वामी वेदानन्द जी का देहावसान

आर्य समाज की महान् विभूति वेदो के प्रकाण्ड पण्डित वैदिक साधु आश्रम रोपड के संस्थापक प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती का 18-8-87 का प्रातः चार बजे आर्य समाज तलवाड़ा मे देहावसान हो गया। स्वामी जी वहा वेद कथा के लिए पधारे हुए थे। अचानक ही 17-8-87 को साय उनकी छाती में दर्द हुआ। दवाई आदि ली गई। परन्तु वह दर्द हृदय रोग का रूप धारण कर गया। वह 18-8 87 को प्रातः लगभग चार बजे अपने नश्वर शरीर को छोड कर हमारे बीच से सदा के लिए चले गए।

श्री स्वामी जी बी एस सी करके आर्य समाज के कार्य से प्रभावित होकर युवा अवस्था मे सन्यासी बन गए। उन्होने अपना सारा जीवन, देश, जाति और समाज के अर्पण कर दिया था। वह कुछ समय वैदिक साधनाश्रम यमुना नगर में अध्यापन का कार्य करते रहे उसके पश्चात् उन्होने स्वतन्त्र रूप से प्रचार करना आरम्भ कर दिया। वह पंजाब, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, देहली और राजस्थान तक की आर्य समाजो मे प्रचारार्थ जाते रहे। सभी स्थानो पर उनका पूरा-2 सम्मान किया जाता रहा। वेद के प्रचार करने का उनका अपना ही ढंग था वह वेद कथा बड़ी रोचक और प्रभावशाली करते थे।

पंजाब मे आप एक मात्र युवा सन्यासी थे तथा पंजाब की आर्य समाजो मे कई वर्षो से निरन्तर प्रचार करते रहे। आपके उपदेशों का युवको पर बहुत प्रभाव पड़ता था। आप सरल हृदय और मिलनसार थे।

आर्य समाज से सुयोग्य विद्वान् और सन्यासी धीरे-2 करके चले जा रहे हैं। परन्तु उनका स्थान लेने वाले आगे नही आ रहे। श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती के देहावसान से जो स्थान विशेषकर पंजाब मे रिक्त हुआ है वह भरा नहीं जा सकता, उनका अभाव सदा अखरता रहेगा। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से जहा उन्हे श्रद्धाजलि भेंट करते हैं वहा परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करें और सभी आर्य बन्धुओ को उनके पदचिन्हो पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

—धर्म देवार्य

स्वामी वेदानन्द जी का अंतिम शोक दिवस

सभी को जानकर यह दुःख होगा कि आर्य जगत् की महान् विभूति स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती का 18 अगस्त 1987 को हृदय गति रुक जाने से अकस्मात् निधन हो गया है आप 21 वर्ष से वैदिक साधु आश्रम रोपड का संचालन कर रहे थे आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानो और प्रचार उपदेशको मे आपका महत्वपूर्ण स्थान था। उनके स्वर्ग सिधार जाने से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हो गई है। दिनांक 30-8-87 दिन रविवार को प्रात, 10 बजे वैदिक साधु आश्रम रोपड मे उनकी श्रद्धाञ्जलि सभा होगी।

—ओम्प्रकाश वर्मा आश्रम प्रबन्धक

प्रवेश आरम्भ है।

मान्यता प्राप्त मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी मे आर्ष पाठ विधि, वेद, संस्कृत, हिन्दी, गणित, विज्ञान आदि। उच्च वेदाध्ययन एव वैदिक शोध की विशेष सुविधाए। निर्धन छात्र वृत्तिया। वरीयता-उपदेशको, समाज सेवियो तथा पंजाब के पीड़ित परिवारो की पुत्रियो को। प्रवेश चयन से।

योग्य वानप्रस्थियो को कमरा बनाने हेतु गंगा के पार्श्व में निःशुल्क भूमि उपलब्ध है।

—आचार्या डा पुष्पावती पी एच. डी.
दर्शनाचार्य, विद्यावारिधि डी 45।127,
नई बस्ती, रामापुरा वाराणसी।

आर्य समाज बरनाला में दैनिक यज्ञ व साप्ताहिक पारिवारिक यज्ञ निरंतर जारी

आर्य समाज मन्दिर मे प्रात: 5-45 से 6-15 बजे तक दैनिक यज्ञ क्रम शुरू किया गया है। इसके साथ ही साप्ताहिक रविवारीय परिवारीय यज्ञ भी निरन्तर चल रहे हैं। उस क्रम में अब तक श्री यश भाटिया जी गुप्ता, श्री दर्शन कुमार जी, डा बी, के. सोबत व डा विजय कुमार जी एम डी. के गृह पर यज्ञ किया जा चुका है। लोगो मे यज्ञ करवाने के लिए एक होड सी लगी है। इसी मास की 10 से 16 अगस्त तक वेद सप्ताह भी मनाया गया। सदस्यो मे काफी उत्साह पाया जा रहा है।

—सतीश सिंगवानी
मन्त्री

आर्य समाज लुधियाना रोड़ फिरोजपुर छावनी में वेद सप्ताह

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी में 9-8-87 तक रक्षा बन्धन व श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में प्रात: यज्ञ का आयोजन किया गया जो 9-8-87 को शुरू हो कर 16-8-87 जन्माष्टमी की रात को पूर्ण हुआ। इसके साथ चारो वेदो के शतको का पाठ भी किया गया। 16-8-87 को स्कूल के बच्चो की भाषण गायन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

भाषण प्रतियोगिता :—प्रथम—सुमन आनन्द—डी.सी माडल स्कूल।
द्वितीय—रजनी, डी. ए. वी गर्ल्ज हा. सै. स्कूल।

समूहगान प्रतियोगिता :—प्रथम—डी.ए वी गर्ल्ज हा सै स्कूल फिरोजपुर।
द्वितीय—हंसराज विद्या मन्दिर।
तृतीय—खालसा गर्ल्ज हाई स्कूल।

सांत्वना पुरस्कार—डी. ए. वी. माडल स्कूल।

गीत-भजन प्रतियोगिता :—पूजा शर्मा—हंसराज विद्या मन्दिर फिरोजपुर शहर।

कविता:—डी. ए. वी. गर्ल्ज हाई स्कूल फिरोजपुर छावनी।

इन स्कूल के बच्चों ने अपने भाषणों व गीतों द्वारा भगवान श्री कृष्ण, रक्षा बन्धन एव देश प्रेम की भावना का परिचय देते हुए बहुत ही सुन्दर कार्यक्रम हुआ। आदरणीय पुरोहित श्री सुबोध जी ने जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में भगवान कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रधान श्री द्वारिकानाथ शर्मा जी ने सब का धन्यवाद किया।

—देवराज दत्ता
मन्त्री

लुधियाना में शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के परिपत्र स 19 दिनांक 30-7-87 के अनुसार 9 अगस्त 1987 को रक्षा बन्धन के पावन पर्व से आर्य समाज मण्डी बाग बजाजिया मे प्रात: 8 बजे से 9 बजे तक प्रतिदिन शान्ति यज्ञ का कार्यक्रम चलता रहा जिसका निर्विघ्न समापन आज 16-8-87 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के महान् पर्व पर हुआ। अन्य वक्ताओ के अतिरिक्त श्रीमती शान्ता जी पुरी ने श्री कृष्ण जी के आदर्श चरित्र एव उनके जीवन की महान् घटनाओ का उल्लेख किया। शान्ति पाठोपरान्त यज्ञ शेष वितरित किया गया।

—रमा शर्मा
मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर के साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् यह शोक प्रस्ताव रखा गया कि श्री ओम्प्रकाश जी शर्मा की अचानक मृत्यु 27-7-87 सोमवार साय को हो गई है श्री ओम् प्रकाश जी मिलनसार आर्य व्यक्ति थे। आर्य समाज का प्रचार कही भी हो वह वहा जाया करते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान करें और उन के सारे परिवार को शान्ति प्रदान करें।

2—जालन्धर के महान् दानी आर्य नेता श्री वैजनाथ जी गुप्ता की 19 7-87 रविवार की रात्रि को मृत्यु हो जाने पर यह सभा शोक प्रगट करती है मुलखराज आर्य कार्यकर्ता प्रधान ने यह प्रस्ताव पेश करते हुए बताया कि हमारी आर्य समाज की स्थापना 18 दिसम्बर 1977 रविवार को गुप्ता जी की अध्यक्षता मे हुई थी। गुप्ता जी दयानन्द मठ वेद मन्दिर मुहल्ला हन के कई वर्षों से प्रधान चले आ रहे थे गुप्ता जी की मृत्यु पर यह आर्य समाज शोक प्रगट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे और उनके सारे परिवार को जो दु.ख हुआ, उस दु.ख को सहन करने की शक्ति दे।

—रणजीत आर्य
मन्त्री

आर्या वीराङ्गना दल की स्थापना

दिनांक 28-7-87 को पूरी मे आर्य समाज के आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल की छात्राओ मे आर्य वीराङ्गना दल की स्थापना सर्वाङ्ग विकास के लिए महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी जी की देख-रेख मे स्कूल की क्लास इन्चार्ज अध्यापिकाओ ने की।

इस दल में भाग लेने वाली सभी लडकियो ने स्वइच्छानुसार नाम दिये। फिर दल की एक सभा बनाई गई। इस सभा को सुचारू रूप से चलाने के लिए उन मे से प्रधाना, मन्त्राणी, कोषाध्यक्ष आदि भी चुनी गई। जिन के नाम इस प्रकार हैं।

प्रधाना—अनीता
उप-प्रधाना—सीमा
मन्त्राणी—नन्दनी मेहता
उप-मन्त्राणी—वार्षा अरोडा
कोषाध्यक्षा—समीता जीन्दल
प्रचार मन्त्राणी—शोवल आर्या

आशा करते हैं कि इस सभा को उत्साह पूर्वक चलाने के लिए ईश्वर सदा इन पर कृपा दृष्टि बनाये रखेंगे।

सूर्य प्रकाश शास्त्री
मन्त्री

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस

15 अगस्त अजमेर म आय जगत् क सुप्रतिष्ठित महात्मा श्री दयानन्द जी ने अपील की है कि आर्यत्व के वर्तमान मे प्रतिपादक, वेदोद्धारक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का 164 वा जन्म दिन बुधवार 2 सितम्बर को आत्म निरीक्षक और व्रत ग्रहण दिवस के रूप मे मनाया जाए। आधुनिक शोध स दयानन्द जन्म भाद्रपद शुक्ला 9 को हुआ सिद्ध हो चुका है। इस दिन सामवेद का पारायण यज्ञ किया जाए। इसी वेद क अन्तिम अध्याय (27 मन्त्र) से सायम् अग्निहोत्र के साथ आहुतिया दी जाए। सन्ध्या, यज्ञ, स्वाध्याय, कोई सेवा, सस्कृत और वेद का अध्ययन, जैसा कोई व्रत ग्रहण किया जाए। श्रद्धाञ्जलि सभाए की जाए।

मुख्य समारोह दिल्ली के वेद-सस्थान मे 2 सितम्बर को साय 6-30 से 9-00 बजे तक होगा जिसमे 'दयानन्द जैसा मैंने समझा' विषय पर भोपाल के प्रसिद्ध विद्वान् श्री आदित्यपाल सिंह आर्य का भाषण होगा।

—अभय देव शर्मा

त्रिकुण्ड विश्व शान्ति महायज्ञ

आर्य समाज रायकोट की ओर से आर्य समाज मन्दिर के तत्वावधान मे विश्व शान्ति हेतु त्रिकुण्डी महायज्ञ का आयोजन किया गया। यह समारोह रक्षा बन्धन से शुरू हुआ। रक्षा बन्धन के दिन रक्षा बन्धन का त्योहार बहुत धूम धाम से आय समाज मन्दिर मे मनाया गया। यज्ञ का आयोजन लगातार प्रात.साय चलता रहा है। नगर की धर्म प्रेमी जनता ने बहुत प्रेम तथा उत्साह दिखाया है। आज कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर त्रिकुण्डी विश्व शान्ति महायज्ञ की पूर्ण आहुति का आयोजन हुआ जिसमे अशोक कुमार कन्नौजिया, डा राजिन्द्र जी, रमेश कुमार शारदा जी ने भगवान कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रधान श्री भीमसेन जी ने सभी आने वाले धर्म-प्रेमियो को आशीर्वाद दिया। मास्टर सतीश जी ने पुरोहित की भूमिका निभाई। उपस्थित आर्य बहनो भाइयो क आग्रह पर हवन का प्रोग्राम एक सप्ताह और लगातार चलते रखने का निश्चय किया गया।

—अशोक कुमार कन्नौजिया
[illegible]

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक एवं गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय (गुरुकुल) करतारपुर जालन्धर का वार्षिकोत्सव 20 से 27 सितम्बर तक बड़े उत्साह से हो रहा है।

सामवेद पारायण यज्ञ-पूज्य महात्मा दयानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में 20 सितम्बर रविवार सायं 4 बजे से आरम्भ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वागीश जी, गुरुकुल एटा होंगे। यज्ञ के पश्चात् महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी के आध्यात्मिक प्रवचन तथा पं. सत्यपाल जी पथिक अमृतसर के भजन होंगे। वेद पाठ गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी करेंगे।

21 सितम्बर रविवार, 1987 ातः से 25 सितम्बर शुक्रवार 1987 ायं तक सामवेद पारायण यज्ञ—प्रातः 6 बजे से 7-30 बजे तक होगा जिसके अध्यक्ष—महात्मा दयानन्द जी, तपोवन, देहरादून होंगे। यज्ञब्रह्मा—आचार्य श्री ागीश जी आर्य गुरुकुल, एटा होंगे, ेदपाठी—गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्म- ारी होंगे, 7-30 बजे से 7-50 बजे ाक भजन—श्री पं. सत्यपाल जी पथिक

7-50 से 8-20 बजे तक प्रवचन ाहात्मा दयानन्द जी तपोवन अथवा ाहात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी का होगा,

सायंकाल—3-30 से 4-30 बजे ाक—सामवेद पारायण यज्ञ 4-30 से 1-50 तक, भजन—श्री पं. सत्यपाल ी पथिक। 4-50 से 5-20 तक प्रवचन ाहात्मा दयानन्द जी तपोवन देहरादून ाथवा महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी का ोगा।

विशेष—दैनिक कार्यक्रम में इसके ातिरिक्त प्रतिदिन प्रातराश के पश्चात् 0 बजे से 11-30 बजे तक विविध ोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा '। जिसमें प्रतिदिन 20 मिनट का ीत तथा किसी एक या दो विशिष्ट ेद्वानों के गोष्ठी के विषयानुसार सार- ाभित प्रवचन होंगे।

प्रतिदिन रात्री को भी 8 बजे से)-30 बजे तक इसी प्रकार श्री पं. त्यपाल जी पथिक अमृतसर के 20 ानट के लिए भजन, गुरुकुल करतार- र के ब्रह्मचारियों द्वारा अथवा आर्य ाडल हाई स्कूल करतारपुर के छात्रों ारा किसी बौद्धिक कार्यक्रम की संक्षिप्त स्तुति तथा किसी एक आर्य विद्वान् ा प्रवचन होगा।

26 सितम्बर शनिवार 1987

प्रातः—6 बजे से 8-30 बजे तक ्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार साम- ेद पारायण यज्ञ, भजन संगीत, वेद ावचन तथा यजमानों को आशीर्वाद। -30 से 9-00 बजे तक डी. ए. वी. ाई स्कूल करतारपुर में प्रातराश।

ध्वजारोहण :—9 बजे प्रातः

महिला सम्मेलन—9-30 से 2-30 बजे तक श्रीमती कमला जी ार्या लुधियाना के संयोजकत्व में होगा। जिस वक्ती श्रीमती उषा जी शास्त्री गुरुभाषा होंगी। आर्य कन्या पाठशाला करतारपुर की छात्राओं का कार्यक्रम भी इसी मध्य प्रस्तुत किया जाएगा।

मध्यान्तर—12-30 से 1-30 बजे तक डी. ए. वी. हाई स्कूल करतारपुर में होगा।

आर्य सम्मेलन—1-30 बजे से 6 बजे तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आयोजित होगा। जिसमें भजन संगीत के अतिरिक्त स्वामी सर्वानन्द जी दीनानगर, स्वामी सुबोधानन्द जी दयानन्द मठ चम्बा आदि अनेक आर्य वक्ताओं के ओजस्वी एवं मार्ग दर्शक भाषण होंगे।

रात्री—8 बजे से 9-30 बजे तक भजन—श्री पं. सत्यपाल जी पथिक

8-20 से 9 बजे तक प्रवचन

9 से 9-30 बजे तक गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा संस्कृत श्लोक अन्ताक्षरी।

27 सितम्बर, रविवार 1987

प्रात :—6 से 8-30 बजे तक—यज्ञ एवं नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार।

सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति-9 बजे प्रातः प्रातराश-9 से 10 बजे तक डी.ए.वी. हाई स्कूल, करतारपुर में 10 से 1-30 बजे मध्याह्न तक :—

महात्मा प्रभु आश्रित श्रद्धाञ्जली सम्मेलन

तथा गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम इस अवसर पर महात्मा दयानन्द जी तपोवन, महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी, आचार्य वागीश जी आर्य गुरुकुल एटा, स्वामी सत्यानन्द जी वेदवागीश, अलवर, महात्मा श्याम जी पाराशर, श्री आचार्य रामप्रसाद जी उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, श्री वीरेन्द्र जी एम. ए. प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर, श्रीमती कमला जी आर्या लुधियाना, श्री सत्यानन्द जी मुंजाल हीरो साईकल, लुधियाना तथा अनेक विशिष्ट विद्वान् अपनी श्रद्धाञ्जलियां प्रस्तुत करेंगे।

सब सज्जनों से निवेदन है कि वे परिवार व मित्रों सहित इस पावन उत्सव में भाग लेकर अपने जीवन को कृतार्थ करें।

विरजानन्द अग्रवाल — प्रधान
मधुसूदन विरमानी — मन्त्री

अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ—

डी. ए. वी. एलूमनी डायरेक्ट्री

दो वर्षों से जिसकी प्रतीक्षा थी वह अमूल्य संदर्भ ग्रन्थ छप गया है। इसमें डी. ए. वी. संस्थाओं के संस्थापकों, संचालकों और उसके लिए त्याग और दान करने वाली विभूतियों तथा डी. ए. वी. संस्थाओं के उन प्रतिभावान विद्यार्थियों के जो अब विभिन्न उच्च पदों पर और उद्योगों आदि में कार्यरत हैं जीवन परिचय छपे हैं।

एक हजार पृष्ठों के दो भागों में सचित्र, सुन्दर, बढ़िया कागज पर अंग्रेजी में छपे उत्तम, सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य केवल 150 रुपये मात्र है। यह ऐसा ग्रन्थ है जिसकी प्रतियां प्रत्येक आर्य समाज में, शिक्षण संस्था में और निजी एवं सार्वजनिक पुस्तकालय में रखी जानी आवश्यक हैं।

इसे डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के कार्यालय, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है।

डाक से मंगाने वालों को डाक व्यय तथा पैकिंग पार्सल सहित 200 रुपये मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली के नाम से भेजना चाहिए।

—दरबारी लाल-संगठन सचिव

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना में वेद सप्ताह

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में 9 अगस्त रविवार को रक्षा बन्धन का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। श्री ओम् प्रकाश पासी, श्री धर्मपाल भसीन मन्त्री ने शान्ति महायज्ञ से आरम्भ किया। जिसमें निम्नलिखित महानुभावों ने रक्षा बन्धन के बारे में अपने-2 विचार प्रस्तुत किए। श्री सत्य भूषण बांगिया प्रधान आर्य समाज, उप-प्रधान श्री हंसराज जी सेठी तथा डा. रामस्वरूप जी ने कहा कि रक्षा बन्धन भाई बहन का एक अटूट रिश्ता है जो प्राचीनकाल से चला आ रहा है। यह धागों का कच्चा रिश्ता नहीं बल्कि भाई बहन के सच्चे प्यार का अटूट रिश्ता है। भाईयों ने सदा ही अपनी बहनों की रक्षा के लिए अपने बलिदान देने में संकोच नहीं किया है। श्री भरत जी ने भजनों द्वारा इस उत्सव को और उत्साहपूर्ण बना दिया 10 अगस्त से 15 अगस्त तक शान्ति यज्ञ प्रातः 7-00 बजे से 8-00 बजे तक होता रहा और 16 अगस्त रविवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिस में उच्चकोटि के विद्वान् और भजनीक सम्मिलित हुए।

—धर्मपाल भसीन
मन्त्री

श्री शिव कुमार शास्त्री को मातृ शोक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के मन्त्री श्री शिव कुमार शास्त्री की 100 वर्षीय माता जी श्रीमती निहाली बाई का निधन पांच अगस्त 1987 को हो गया है। ग्राम अकबरपुर बरोटा, जिला सोनीपत, हरियाणा में उनके पैतृक निवास पर शान्ति यज्ञ श्री रामलाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में दिनांक 8 अगस्त 1987 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिवार की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य सन्देश, अनाथालय, दिल्ली और आर्य गुरुकुल बरोण्डा तथा अन्य संस्थाओं को 2500 रुपये का दान भी दिया गया।

—राजेन्द्र दुर्गा
महामन्त्री

आर्य समाज पीपाड़ नगर में भव्य वेद सप्ताह का आयोजन

वि स 2044 का मिति श्रावण शुक्ला 2 से श्रावण शुक्ला 7 तदानुसार दिनांक 27 7-87 से 2 8 87 तक आर्य समाज पीपाड़ नगर (राजस्थान) मे वेद सप्ताह का आयोजन किया गया। वेद सप्ताह पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया। साथ मे भजनोपदेशक कु. जोरावरसिंह जी का भजनोपदेश हुआ 12 8 87 को प्रात 7बजे आर्य वीर दल के 14आर्य वीरो का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती ने करवाया सायं 4 बजे आर्य वीर दल का सामूहिक व्यायाम प्रदर्शन हुआ। सायं 6 बजे कवि कस्तुर चन्द जी घनसार का सम्मान किया गया। कवि कस्तुर चन्द जी घनसार को पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती द्वारा अभिनन्दन पत्र (भेंट) किया गया। यह सात दिन का वेद सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आर्य वीरो को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती द्वारा पारितोषिक दिया गया।

—आर्य शंकर परिहार
मन्त्री

आर्य समाज हबीबगंज में वेद सप्ताह

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना मे 9 से 16 अगस्त तक वेद सप्ताह बड़ समारोह से मनाया गया। प्रात 7 से साढ़े आठ बजे तक यज्ञ भजन तथा उपदेशो का कार्यक्रम चलता रहा। 9 8 87 को रक्षा बन्धन का पर्व तथा 16 8 87 को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति 16-8 87 रविवार को प्रात 10 बजे हुई।

—आशानन्द आर्य-मन्त्री

आर्य समाज विनयनगर (सरोजिनी नगर) दिल्ली का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज विनय नगर का वार्षिकोत्सव सोमवार 14 सितम्बर से रविवार 20 सितम्बर 1987 तक सरोजिनी नगर मार्कीट पार्क मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। प्रात 7 से 8-30 बजे वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसके ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होंगे। रात्रि 8-30 से 9-30 बजे स्वामी जी महाराज जी वेद कथा करेंगे। कथा से पूर्व मनोहर भजन होंगे।

शनिवार 19 सितम्बर को दोपहर 2 30 बजे आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव से प्रारम्भ होगी।

रविवार 20 सितम्बर को प्रात 8 से 11 बजे वृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति और 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें अनेक आर्य विद्वान आर्य नेता महात्मा सन्यासी पधार कर अपने विचार रखेंगे। दोपहर 1 बजे ऋषिलंगर होगा।

—रोशनलाल गुप्ता
(संयोजक)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज दसूहा जिला होशियारपुर के लिए पुरोहित की आवश्यकता है। गृहस्थी अथवा वानप्रस्थी व्यक्ति को प्रधिमान दिया जावेगा। प्रार्थी अपनी योग्यताएं एवं उन्हें कम से कम स्वीकार्य वेतन भी लिखें।

—मदनमोहन
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगहित्य प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 72250

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 22. 21 भाद्रपद सम्वत् 2044 तदनुसार 6 सितम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

श्री शंकराचार्य के सिद्धान्त और उनकी परम्पराएं

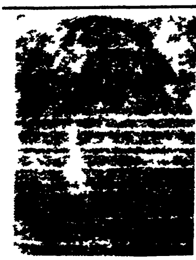
कांची पीठम् के एक शंकराचार्य के जाने और दूसरे के आने की कहानी

लेखक—श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक प्रताप, वीर प्रताप, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

आदि शंकराचार्य और उनके जो उत्तराधिकारी इस समय तक बनते रहे हैं उनके विषय मे हम इतिहास मे तो बहुत कुछ पढ़ते हैं परन्तु वास्तव मे वह क्या है और क्या करते हैं इसके विषय मे आर्य जनता को बहुत कम मालूम है इस विचार से कि शंकराचार्य जो आज भी हैं उनसे कुछ मतभेद रखते हुए भी पाठकों को यह पता चलना चाहिए कि यह लोग क्या हैं? इनके विचार क्या हैं? और वह किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते हैं? इसी उद्देश्य से पाठकों की जानकारी के लिए यह लेख लिखा जा रहा है।

दक्षिण भारत के केरल प्रदेश में कालडी नाम का एक गाव है। 8 वी शताब्दी में शिवगुरु नामक एक ब्राह्मण के घर एक बच्चे ने जन्म लिया। शिव गुरु भगवान शंकर के अनन्य भक्त थे। जब उनके घर एक बालक ने जन्म लिया तो उसका नाम भी शंकर रखा गया। यही बालक बड़ा होकर शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। छोटी अवस्था मे शंकराचार्य अनाथ हो गए। परन्तु वह विलक्षण बुद्धि रखते थे इसलिए उनका ध्यान शास्त्रो की पढाई मे लग गया। वह एक गुरुकुल मे चले गए वहीं उन्होने वेदादि आर्ष ग्रन्थ पढ़ और धीरे-धीरे वेदो मे उनकी इतनी श्रद्धा हो गई कि वह स्थान-2 पर जाकर उनका प्रचार करने लगे। उन दिनो भारत मे बौद्ध और जैन इन दो धर्मों का बहुत जोर था और यह दोनो भारत के प्राचीन वैदिक धर्म के विरोधी थे। इसलिए शंकराचार्य ने उनकी ओर विशेष ध्यान दिया और सारे देश मे भ्रमण करते हुए उन्होंने जहा और बौद्ध और जैन धर्म का विरोध किया वहा दूसरी ओर जन मानस मे वेदो के लिए श्रद्धा उत्पन्न करने के उद्देश्य से उन्होंने सारे देश का भ्रमण शुरू किया और इस प्रकार उन्होंने देश के चारो कोनो मे चार बड़े-2 मठ स्थापित कर दिए। यह हैं बद्रीनाथ, द्वारिकापुरी, रामेश्वरम् और ज्योतिर-मठ। भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक एकता कोने-2 मे स्थापित करने का इन चारो मठो का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

आदि शंकराचार्य के देहान्त के पश्चात कई और मठ भी बना दिए गए उनमें एक कांचीपुरम मे शंकर मठ भी है। उस आश्रम के जो आचार्य हैं, जिन्हें परमाचार्य कहते हैं। उनका नाम श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती है।



कांची मठ के परमाचार्य
श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती

पिछले कुछ समय से श्री जयेन्द्र सरस्वती इस कांची पीठ के पीठाधिपति थे और वह भी शंकराचार्य कहे जाते थे। बहुत बड़ी संख्या मे उनके भक्त उनके दर्शनो के लिए और उनके प्रवचन सुनने के लिए उस मठ मे जाया करते थे और एक दिन उनके भक्तो ने यह सुन लिया कि श्री जयेन्द्र सरस्वती बिना किसी को बताए कहा से चले गए। किसी को यह



शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती

पता न चला कि वह क्यो गए हैं और कहा गए हैं परन्तु जाने स पहले वह लिखकर छोड़ गए थे कि वह अब अपने देश के उत्थान के लिए काम करेंगे। क्योकि वह समझते हैं हमारे देश का अधोपतन हो रहा है। इसे बचाने की आवश्यकता है जिस प्रकार श्री आदि शंकराचार्य ने सारे देश का भ्रमण करके अपने देशवासियो मे एक नई जागृति पैदा करने का प्रयास किया था। और लोगो का ध्यान फिर वेदो की तरफ दिलाया था इसी तरह उन्होंने कहा कि वह सारे देश का भ्रमण करके जो अन्ध-कार सारे देश मे फैल रहा है। उसे दूर करने का प्रयास करेंगे। और साथ ही वह यह भी लिख गए कि श्री विजयेन्द्र सरस्वती उनके उत्तराधिकारी होंगे और वही कांची कामकोटी पीठम् के शंकरा चार्य होंगे।

श्री जयेन्द्र सरस्वती के चले जाने के बाद और उनके आदेश के अनुसार नए शंकराचार्य शंकर विजयेन्द्र सरस्वती को नया शंकराचार्य घोषित कर दिया गया। यह इस मठ के सतरहवें शंकराचार्य होंगे और इनकी आयु अब केवल 18 वर्ष की है।

इनके विषय मे कहा जाता है कि इन्होने इस समय तक वेदादि आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन किया है और वह वैदिक धर्म के विषय मे बहुत कुछ जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इसलिए अब उन्हें नए शंकराचार्य घोषित किया गया। जब यह घोषणा हुई तो जो व्यक्ति उनका अभिनन्दन करने के लिए कांची मठ मे पहुचे थे उनमे भारत के राष्ट्रपति श्री वैंकटरमन जी की धर्म पत्नी श्रीमती जानकी वैंकटरमन भी थी।



श्री शंकराचार्य विजयेन्द्र सरस्वती

पहले शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सर-स्वती के चले जाने के बाद सारे कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश मे उनकी तलाश शुरू हो गई और सब पुलिस के थानो से कहा गया कि वह पता करें कि श्री शंकराचार्य जयेन्द्र कहा गए हैं। पहले तो किसी को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पापों से छुटकारा कैसे मिले

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु; आर्योपदेशक
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

जब हम कोई कुकर्म अथवा पाप करने लगते हैं तो हमारे मन में भय, शंका और लज्जा उत्पन्न हो जाती है, जो यह संकेत है कि परम पिता परमात्मा की ओर से कि जो कर्म तुम करने जा रहे हो, वह तुम्हें नहीं करना चाहिए और जब हम कभी कोई सत्कर्म करने लगते हैं तो हमारे मन में आनन्द और उत्साह की की अनुभूति होती है, जो इस बात का संकेत है कि यह कार्य अवश्य करना चाहिये। किन्तु हम जन्म-जन्मान्तर के अपने कुसंस्कारों के कारण और अपने कर्म-स्वतन्त्र्य के कारण इन संकेतों की अवहेलना कर जाते हैं और कभी तो पापो में लिप्त हो जाते हैं और कभी पुण्यो की उपेक्षा कर देते हैं। और यदि कभी प्रभु की कृपा से हमारे मन मे पापो से उबरने का विचार आ भी जाये तो यह नितान्त क्षणिक होता है और हम फिर पाप-पंक में फंस जाते हैं। फिर पापो से छुटकारा कैसे हो—यह प्रश्न है।

पूर्व इसके कि हम उन उपायो अथवा साधनो की चर्चा करें कि जिनसे पापो से बचा जा सकता है, यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि छूटना किस से है। पाप कर्म से या पाप के फल से? होना तो यह चाहिए कि हम पाप कर्म से या उसकी वासना से छूटें पर होता इसके विपरीत ही है। हम पाप वासना से नही, पाप के फल से छूटना चाहते हैं। जैसा कि संस्कृत के किसी कवि का कथन है कि—"पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यंनेच्छन्ति मानवा:। न पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नत:।"

अर्थात् मनुष्य पुण्य के फल की तो इच्छा करते हैं, किन्तु पुण्य कर्म की नहीं अर्थात् पुण्य नहीं करते फिर भी पुण्य के फल की इच्छा करते हैं, विपरीत इसके लोग पाप के फल की तो इच्छा नहीं करते पर उद्योग पूर्वक पाप कर्म करते फिरते हैं। अर्थात् जो नहीं करते उसका तो फल चाहते हैं और जो करते हैं, उसके फल से बचना चाहते हैं। ऐसे कैसे हो सकता है?

बोकर के बीज दु:ख के सुख कैसे
पा सकोगे।
पहले बबूल बो कर क्या आम खा
सकोगे।
ईश्वर है न्यायकारी, कर्मों के फल
का दाता।
उस से किसी कर्म को कैसे छुपा
सकोगे॥

वैदिक सिद्धान्त यह है कि किये हुए कर्म का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। अत: पाप के फल से छुटकारे की हमारी चाहना व्यर्थ है। उसके लिए प्रयत्न करना भी बेकार है। उसे तो भोगना ही पड़ेगा। इसलिए पापों से छूटने का अर्थ पाप-कर्म से या उसकी वासना से छूटना है। हम जो भी कर्म करते हैं, वह अपना एक संस्कार छोड़ जाता है। यह संस्कार ही वह वासना अथवा अभ्यासाश है, जो पुन: वैसा कर्म करने की प्रेरणा देता रहता है। यदि हम इस प्रेरक—तत्व को समाप्त कर दें तो पापो से बच सकते हैं। अर्थात यदि हम पाप की वासना को काट दें, तो हम आगे को वैसे पाप कर्म करने से बच सकते हैं और हम पापों से छुटकारा पा सकते हैं।

अब यह पाप-वासना कैसे कटे—इसकी चर्चा करते हैं। शास्त्रों में इसके लिए प्रायश्चित का उपयोग परम हितकारी बताया गया है। पाप-वासना के उन्मूलन में प्रायश्चित की बहुत बड़ी उपयोगिता है। प्रायश्चित से कृत कर्म पर पश्चाताप होता है। यह पश्चाताप ही वह कैंची है जो पाप के उस प्रेरक अंश अथवा वासना को काट देती है। प्रायश्चित से जहां हम अपने पूर्व कृत कर्मों पर पश्चाताप करते हैं, वहां भविष्य मे वैसे कर्म न हों, इसके लिए भी सचेत एवं सचेष्ट रहते हैं। इसीलिए प्रायश्चित के सम्बन्ध मे अंग्रेजी के किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि—जिसका हिन्दी अनुवाद निम्न प्रकार है:—

"सच्चा प्रायश्चित दोहरा कार्य करता है। भूतकाल पर पछतावा और भविष्य पर निगरानी। जब निगरानी रहेगी तो पापो से बचना स्वाभाविक है।"

पर इससे कोई यह न समझे कि प्रायश्चित से कृत कर्मों के फल का भी छुटकारा हो जाता है इस सम्बन्ध में महर्षि का कथन है कि—"जब कोई शंका निकाले कि पूर्व कृत पापों का दण्ड जीव को बिना भोगे छुटकारा नहीं मिल सकता यह हमारा मत है, तो फिर पश्चाताप का कुछ भी उपयोग नहीं है क्या उसका उत्तर यह है कि पश्चाताप से पाप-क्षय नहीं होता, परन्तु आगे पाप करना बन्द हो जाता है।

कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्
पापात् प्रमुच्यते।
नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्या पूयते
तु सः।

चाहे कितना भी पश्चाताप किया जावे तो भी कृत पापों को तो भोगना ही होगा। इसका दृष्टान्त—जैसे कोई कूएं में गिरा और उसके हाथ-पांव टूट गए। तो अब चाहे कितना पश्चाताप करे, तो भी उसके हाथ-पांव जो टूट तो टूट ही चुके यह तो कुछ भी किए नहीं छूट सकता। हां आगे के लिए कूएं में न गिरेगा, इतना ही केवल होगा। (देखें पूना प्रवचन, छटा प्रवचन)।

स्पष्ट है कि पश्चाताप से पाप क्षय न होते हुए भी पाप वासना क्षय हो जाती है। और मनुष्य आगे को पापों से बच जाता है। यह कोई छोटी बात नही। हमारा भावी जीवन निष्पाप हो जाए, इससे बढ़कर और प्रायश्चित का फल हम क्या चाहते हैं। जब यह सिद्धान्त है कि प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है, तो प्रायश्चित भी तो अन्तत: एक कर्म ही है, फिर उसका फल क्यों नही मिलेगा। वह फल हमें पाप वासना के क्षय के रूप में मिला करता है। अत: पाप-वासना के क्षय में प्रायश्चित की उपयोगिता असंदिग्ध है।

कभी-कभी ऐसा भी देखने में आता है कि अपने पिछले कर्मों पर पछतावा करते हुए एव भविष्य मे वैसा कर्म न करने का सत्संकल्प लेने पर भी मनुष्य पाप कर बैठता है। यह तब होता है कि जब पाप के संस्कार प्रबल हों और मन का उनके साथ पूर्ण सहयोग हो अथवा यूं कहिये कि मिली-भगत हो। शास्त्रों मे देवासुर संग्राम का वर्णन आता है। उसके अनुसार देवता लोग दिन भर युद्ध करके राक्षसों को मार डालते थे और तब रात्रि को विश्राम किया करते थे। पर होता यह था कि अगले दिन वही राक्षस जिन्हें रात्रि से पूर्व मार डाला गया था, पुन: जीवित होकर युद्ध के लिए आन उपस्थित होते थे। विपरीत इसके देवताओं में जो मर जाते थे, वे पुन: जीवित नहीं हो पाते थे। इस प्रकार देवताओं की संख्या तो निरन्तर घटती जाती थी पर राक्षसों की संख्या पर युद्ध का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। देवतागण इससे बहुत चिन्तित और व्याकुल हो उठे। अत: चिन्तित देवगण अपने गुरु बृहस्पति के पास गये और जाकर सब वृतान्त कह सुनाया। गुरु ने अपने पुत्र "कच" को इस कार्य के लिए नियुक्त किया कि जाकर पता लगावे कि ऐसी कौन सी अमर जड़ी राक्षसों के पास है कि जिससे वे मर-मर कर भी जी उठते हैं। जब राक्षसों के क्षेत्र में कच पहुंचा तो वहां जासूस को आया देख कर एक खलबली सी मच गई। राक्षस लोग अपने गुरु शुक्राचार्य के पास पहुंचे और जासूस के आने की सूचना दी। शुक्राचार्य ने कहा कि मुझे पहले ही इस बात का पता है और मैंने अपनी पुत्री देवयानी को कच पर निगरानी रखने और उसे वश में करने को नियुक्त कर दिया है। कच देवयानी पर मोहित हो गया और अपने आने के उद्देश्य को ही भूल गया। देवयानी उसे शुक्राचार्य के पास ले गई और शुक्राचार्य ने उसे संजीवनी विद्या सिखा दी। अब कच वहीं पर रह कर मरे हुए राक्षसों को पुन: जीवित करने लगा। इस प्रकार राक्षस मर-मर कर भी जी उठने लगे और देवताओं को परेशान करने लगे।

हमारे शरीर में भी प्राय: प्रतिक्षण देवासुर संग्राम होता रहता है। हम नित्य रात्रि को बुरे विचार रूपी राक्षस को मार कर सोते हैं किन्तु प्रात: जब अपने काम-काज में लगते हैं तो देखते हैं कि जिन बुरे विचारों को रात्रि में मार कर सोये थे वे पुन: जी उठे हैं और अच्छे विचार रूपी देवताओं को परास्त करने में लगे हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि हमारा अपना मन कच बन कर लुभावनी माया-रूपी देवयानी पर मोहित हो जाता है और बुरे विचाररूपी राक्षसों को जीवित कर देता है। हमारे मन में संकल्पों—विकल्पों का निरन्तर युद्ध चलता रहता है। किन्तु पिछले कुसंस्कारों के कारण सत्संकल्पों की पराजय हो जाती है और हम पाप कर्म में प्रवृत्त हो जाते हैं।

क्या इन कुसंस्कारो का परिशोधन नही हो सकता? क्या पाप-वासना का दमन नही हो सकता? हमारा कथन ही नहीं विश्वास भी है कि अवश्य हो सकता है। इसके लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। साथ में सतत अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता है। अभ्यास और वैराग्य से क्या नही हो सकता? विषयों की असारता हमारे मस्तिष्क में हो और आत्म-विश्वास और उत्साह हृदय में हो तो हम पापों पर विजय पा सकते हैं। इधर हम पुरुषार्थ करें और उधर प्रभु से प्रार्थना द्वारा पापों से उबरने की प्रार्थना करें। पुरुषार्थ और प्रार्थना के संयोग से निश्चय ही हम पापों से छुटकारा पा सकते हैं। ध्यान रहे कि जो वस्तु स्वयं पवित्र है, उसका ध्यान अथवा चिन्तन भी मन को पवित्रता प्रदान करता है। परमात्मा परम पवित्र और सर्वथा पापरहित एवं पापनाशक है। उसकी शरण जाने से मन पवित्र होकर पापों से सर्वथा दूर होकर निष्पाप हो जाता है।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

डा. हरिराम आर्य इन्टर कालेज मायापुर हरिद्वार को भूमि क्यों बेची गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का वक्तव्य

मायापुर हरिद्वार मे डा. हरिराम आर्य इन्टर कालेज के नाम से सभा की एक सस्था 1948 से चल रही है और यह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधीन है। बीच में समय-2 पर इसकी प्रबन्ध समितियो मे परिवर्तन होता रहा, परन्तु 1973 के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इस कालेज का सचालन अपने हाथ मे ले लिया। जिस भवन मे यह कालेज चल रहा है वह बहुत पुराना भवन है और उसके साथ भूमि भी बहुत अधिक है। पिछले दिनो उसकी कुछ फालतू भूमि बेकार पड़ी को बेच दिया गया ताकि कालेज की आवश्यकताओ को पूरा किया जा सके इस पर वहा कुछ व्यक्तियो ने एक भूमि बचाओ आन्दोलन शुरू करा दिया है, जिसमे इस कालेज के विद्यार्थी कुछ अध्यापक और कुछ दूसरे व्यक्ति सारे हरिद्वार मे यह प्रचार करते रहे हैं कि इस भूमि को पजाब सभा के अधिकारियो ने बेच दिया है और जो रुपया उन्हे मिला है,उसमे से वह बहुत सा रुपया खा गए हैं। इस सारे आन्दोलन के पीछे वह व्यक्ति हैं जिन्होने गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी मे लाखो का गबन करके अपना मु ह काला किया है उसका बदला लेने के लिए वह पजाब सभा के अधिकारियो पर भी कई प्रकार के आरोप लगा रहे हैं। मैं चाहता हू कि सारी स्थिति आर्य जनता के सामने रख दी जाए ताकि लोगो को पता चल सके कि भूमि बचाओ आन्दोलन क्यो कराया जा रहा है और उसके पीछे कौन है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो ने जो कुछ किया है सोच समझ कर किया है और अपने दायित्व को समझते हुए किया है। इस भूमि को बेचने से जो भी राशि प्राप्त हुई है वह सारी की सारी सभा के हिसाब मे जमा है हमने झूठे बिल बना कर और झूठी बिल्टिया देकर किसी से रुपया वसूल नही किया जैसा कि कुछ लोगो ने फार्मेसी मे किया है। फार्मेसी मे जो गबन किया गया है वह सारा विषय अब अदालत मे जा चुका है। मैं उसके विषय मे कुछ नही कहना चाहता, लेकिन जो भूमि हमने मायापुर कालेज की बेची है उसके विषय मे सारी स्थिति स्पष्ट कर देना चाहता हू।

जैसा कि मैं पहले लिख चुका हू कि हरिराम आर्य इन्टर कालेज आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन है जिस भवन में यह कालेज चल रहा है वह बहुत पुराना होने के कारण उसकी मुरम्मत की भी आवश्यकता रहती है। इसी के साथ प्रबन्ध समिति हमे यह भी कहती रही कि विद्यार्थियो की सख्या बढती जा रही है। इस लिए नए कमरे बनवाने की आवश्यकता है। समिति ने हमसे कहा कि इसके लिए धन का प्रबन्ध किया जाए ताकि भवन की मुरम्मत हो सके। नए कमरे बनवाए जा सकें और इस कालेज का नया गेट बनवाया जा सके। हमने उनसे कहाकि सभा के पास ऐसी कोई निधि नही है जहा से इस कालेज के लिए राशि दी जा सके। हमने उनसे यह भी कहा कि कनखल रोड पर जो भूमि है कालेज की वहा नई दुकानें बना दी जाए। हो सके तो दो नये मकान बना दिए जाए ताकि उनसे जो कुछ आय हो और वह कालेज के अन्य कार्यों तथा भवन निर्माण के लिए व्यय की जा सके। परन्तु प्रबन्धकर्तृ सभा हमे यही कहती थी कि इसके लिए भी उनके पास कोई राशि नहीं है। कुछ देर के पश्चात् प्रबन्धकर्तृ सभा ने हमे यह प्रस्ताव भेजा कि इस कालेज के साथ जो भूमि बेकार पड़ी है उसमे कुछ ऐसे खण्ड भी हैं जो किसी काम नही आ रहे उन्हे बेच दिया जाये-और उससे जो धन प्राप्त हो वह कालेज भवन की मुरम्मत और नए कमरे बनवाने के लिए व्यय किया जाए। हमें प्रबन्धकर्तृ सभा की ओर से इस भूमि का एक मानचित्र बना कर भी भेजा गया जिसमे कुछ वह प्लाट भी दिखाए गए हैं जो उस समिति के विचार मे बेचे जा सकते हैं। हमने फिर भी यह भूमि बेचने का विचार न किया और यह लिखा कि हमारी सभा के अधिकारी वहा जाकर देखेंगे कि स्थिति क्या है। इस पर हमने वहा जाकर देखा कि सिवाए उस भूमि के जो बच्चो के खेल-कूद के लिए प्रयोग में लाई जाती थी। शेष सभी भूमि किसी काम मे नही आ रही थी। यह कालेज 1948 मे प्रारम्भ हुआ था पिछले चालीस वर्षों में किसी प्रबन्धकर्तृ सभा ने वहा एक नया पौधा भी नही लगवाया था धीरे-2 यह धारणा बनती जा रही थी कि यह भूमि ऐसी है कि किसी भी काम की नही है। जब कभी-कभार वहा कुम्भ का मेला होता था या कोई और बड़ा मेला लगता था तो सरकार अपनी कारें और ट्रक वहा खड़े कर दिया करती थी। कुछ समय के पश्चात् वहा की म्यूनिसिपल कमेटी ने हमें लिखा कि जो बेकार भूमि पड़ी है। उसमे एक पानी की टैंकी लगाने के लिए उन्हें एक प्लाट की आवश्यकता है। हम प्रबन्धकर्तृ सभा से परामर्श करके इस प्लाट को बेचने के लिए तैयार हो गए। हमें शुरू मे सात रुपये फुट के हिसाब से इसकी कीमत मिलती थी जिसे अन्त मे वह हमे 20 रुपए फुट के हिसाब से देने के लिए तैयार हो गए। जब वह भूमि बेच दी गई तो उस मे से एक लाख रुपया हमने कालेज की मुरम्मत और नए कमरे बनवाने के लिए कालेज कमेटी को दे दिया। इस के पश्चात कमेटी की तरफ से हमे बार-बार यह लिखा आता रहा कि जो बाकि के प्लाट हैं, वह भी बेच दिये जाए। हम अभी उस पर विचार कर ही रहे थे कि बेचें या न, तो हमें यह पता चला कि हरिद्वार एक जिला बनाया जा रहा है। वहा सरकार कई नए कार्यालय खोलने के लिए भवन बनाना चाहती है। उस के लिए उसे भूमि की जरूरत होगी। जो फालतू भूमि जगह-जगह पड़ी है। जिसमे हरिद्वार इन्टर कालेज की वह भूमि भी है, जिस पर हम विचार कर रहे हैं। वह सरकार या तो खरीद लेगी या उसका अधिग्रहण कर लेगी। इस पर हमने भी यह सोचा कि जो फालतू भूमि है और आज तक किसी काम मे नही आई है,वह क्यो न बेच दी जाए। हमने कुछ लोगो से इस विषय मे बातचीत शुरु की, अभी यह चल ही रही थी कि मुझे 6-7-87 को सहारनपुर के जिला न्यायाधीश महोदय का पत्र प्राप्त हुआ, जिस मे उन्होंने लिखा था, "खसरा न 689, 694, 695 अहमदगढ करच परगना ज्वालापुर।" "उपरोक्त विषय मे सूचित करना चाहूगा कि माननीय प्रशासनीक न्यायाधीश इलाहाबाद ने उपरोक्त समस्त भूमि को न्यायपालिका के लिए अधिग्रहण करने हेतु स्वीकृति दे दी है। उन्होने यह जानने की इच्छा व्यक्त की है कि अगर इस भूमि को सीधा सभा से खरीद लिया जाए तो सभा किस धनराशि मे यह भूमि न्यायपालिका को देने को तैयार होगी। अत. आप से अनुरोध है कि कृपया अविलम्ब सूचित करें कि सभा उपरोक्त भूमि को किस रेट पर देने को तैयार है।" एक दूसरा पत्र मुझे जिला न्यायाधीश सहारनपुर की तरफ से फिर प्राप्त हुआ जिस मे लिखा है कि—

"उपरोक्त विषय पर आपको अवगत कराना चाहूगा कि माननीय प्रशासनीक न्यायाधीश उच्च न्यायालय इलाहाबाद ने उपरोक्त भूमि का निरीक्षण कर लिया है और माननीय प्रशासनिक महोदय ने उपरोक्त भूमि को न्यायपालिका के लिए एक्वायर करने एवं खरीदने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। शीघ्र ही उपरोक्त भूमि को खरीदने हेतु धन उपलब्ध कराया जाने पर यह भूमि न्यायपालिका के लिए खरीद ली जाएगी, हरिद्वार को जिला स्तर देने के साथ न्यायपालिका के लिए भूमि की आवश्यकता मे बढोत्तरी होना स्वाभाविक है, अतः इस विषय मे अवगत करना चाहूगा कि भूमि का एक टुकड़ा जो सन्यास आश्रम के सामने उपलब्ध है, को भी तीस हजार फुट भूमि के साथ साथ अधिग्रहण करने का प्रस्ताव है। इस बारे मे भी आप को अतिशीघ्र सूचित कर दिया जाएगा। जिस भूमि का अधिग्रहण करने का प्रस्ताव है, उसे सलग्न मानचित्र मे लाल स्याही से दर्शाया गया है।"

जो भूमि न्यायपालिका के लिए हम से मागी जा रही थी, उस मे बच्चो के खेलने वाली भूमि भी आती थी, इसलिए मैने जिला न्यायाधीश को अपने पत्र मे दिनाक 16 जुलाई को लिखा कि—

"जिस भूमि के विषय मे आपने लिखा है वह मायापुर हरिद्वार मे हमारे कालेज के लड़को के खेलने के लिए सुरक्षित है, यदि वह भूमि ले ली जाए तो लड़को के खेलने के लिए कठिनाई पैदा होगी। इसलिए मुझे खेद है कि वह भूमि हम बेचने को तैयार नही। मुझे यह भी आशा है कि सरकार की शिक्षा नीति को सामने रखते हुए कोई ऐसी कार्यवाही आप की ओर से नही की जाएगी, जिस से हमारे कालेज के छात्रो के लिए कोई कठिनाई पैदा हो। जहा तक सन्यास आश्रम के सामने की भूमि का प्रश्न है, वह भी हम बेचने का निर्णय ले चुके हैं। उसका ब्याना पहले ही ले चुके हैं। इसलिए उसे बेचना भी हमारे लिए कठिन होगा।

आशा है हमारी इस विवशता को देखते हुए न तो हमारे इन्टर कालेज मायापुर की भूमि का अधिग्रहण करने का प्रयास किया जाएगा और न इसे लेने के लिए कोई और कार्यवाही की जाएगी।"

(शेष पृष्ठ 4 पर)

ऋषि दयानन्द के भक्त—

महाराजा जसवन्तसिंह (जोधपुर नरेश)

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय,
डी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ

स्वामी दयानन्द अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे मारवाड राज्य की राजधानी जोधपुर मे उपदेशार्थ गये थे। उन दिनों वहा के शासन का सूत्र महाराजा जसवन्तसिंह के हाथ मे था। महाराजा जसवन्तसिंह जोधपुर नरेश महाराजा तख्तसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनका जन्म आश्विन शुक्ला 8 स 1894 वि तदनुसार 7 अक्तूबर 1837 ई को गुजरात के अहमदनगर (परिवर्तित नाम हिम्मतनगर) मे हुआ था। कालान्तर मे महाराजा तख्तसिंह की मृत्यु होने पर वे फाल्गुन शुक्ला 3 स 1929 वि को मारवाड की गद्दी पर बैठे। उनका निधन कार्तिक कृष्ण 8 स 1952 (11 अक्तूबर 1895 ई) को जोधपुर में हो हुआ।

महाराजा जसवन्तसिंह की ओर से स्वामी दयानन्द को जोधपुर आने के लिये रावराजा तेजसिंह जी ने पत्र लिखा था। तदनुसार स्वामी जी ज्येष्ठ कृष्णा 10 स 1940 (?1 मई 1883 को जोधपुर पहुचे। 26 जून 1883 को महाराजा स्वामी जी से भेंट करने हेतु मिया फैजुल्ला खा की कोठी पर आये जहा स्वामी जी का निवास था। उन्होने भेंट रूप मे पाच स्वर्ण मुद्राए तथा 25 रु. स्वामी जी की सेवा मे अर्पित किए और लगभग तीन घण्टे तक उनका उपदेश श्रवण किया। उस समय महाराजा प्रतापसिंह तथा राव राजा तेजसिंह भी उपस्थित थे। स्वामी दयानन्द से महाराजा की इस प्रथम भेंट का विवरण मारवाड राज्य की हकीकत बही मे मारवाडी भाषा मे निबद्ध है। प लेखराम के अनुसार महाराजा ने स्वामी जी के डेरे पर जाकर तीन बार उनसे वार्तालाप किया था तथा तीन ही बार स्वामी जी भी महाराजा के महलो में उपदेश प्रदानार्थ पधार थे।

तत्कालीन अन्य राजपूत राजाओ की ही भाति महाराजा जसवन्तसिंह भी मदिरापान, वश्या, सहवास, बहु-विवाह चापलूस दरबारियो का ससर्ग जैसी बुराइयो से ग्रस्त थे। सर प्रताप द्वारा स्वामी दयानन्द को जोधपर आमंत्रित करने का एक प्रधान कारण निम्न था। उनके भाई महाराजा जसवन्तसिंह का झुकाव मुसलमानो की ओर अधिक था। मिया फैजुल्ला खा, जो हद दर्जे का खुशामदी तथा धूर्त व्यक्ति था, राज्य मे दीवान के उच्च पद पर बैठा हुआ था। अन्य उच्च पद भी मुसलमानो ने ही हथिया रखे थे, यहा तक कि जनानी ड्योढ़ी (अन्त:पुर) के दारोगा भी मुसलमान थे। महाराजा के विश्वासपात्र दरबारियो मे भी इनका बाहुल्य था। सर प्रताप चाहते थे कि स्वामी जी के प्रभाव से महाराजा इन चापलूस दरबारियो से मुक्त हो। जब महाराणा उदयपुर ने स्वामी जी को अपने राज्य मे आमन्त्रित किया तो महाराजा जोधपुर को भी उनकी बराबरी करते हुए यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि वे भी स्वामी दयानन्द को अपने यहा बुलाए। यह दूसरी बात है कि स्वामी जी को अपने यहा सादर आमंत्रित कर तथा पर्याप्त समय तक उन्हे जोधपुर में रोके रख कर भी महाराजा ने उनके उपदेशो से कोई अधिक लाभ नही उठाया।

महाराजा जसवन्तसिंह ने नन्ही वेश्या को पासवान (उप पत्नी) के रूप मे अपने महलो मे रख छोडा था और वे उसके वशवर्ती होकर राज कार्य मे पर्याप्त रुचि नही लेते थे। नन्ही ने भी अपनी कूटनीति से जोधपुर राज्य मे अपना एक प्रभाव क्षेत्र बना लिया था तथा वह शासन के कार्यों मे मनमाने हस्तक्षेप भी किया करती थी। स्वामी जी के पास जब ये समाचार पहुचे तो उन्होने महाराजा को वेश्या के चगुल से मुक्त होने की प्रत्यक्ष तथा परोक्ष प्रेरणा दी। तथापि ऐसा प्रतीत नही होता कि महाराजा पर स्वामी जी के एतद विषयक उपदेशो अथवा परामर्श का कोई प्रभाव पडा था। क्योकि हम देखते हैं कि महाराजा ने जीवन पर्यन्त नन्ही को उसी प्रकार आदर एव सम्मान दिया तथा उसकी आज्ञाए मारवाड मे नूरजहा के फरमानो की भान्ति मानी जाती रही। महाराजा जसवन्तसिंह की मृत्यु के पश्चात नन्ही का प्रभामण्डल ध्वस्त हो गया और महाराजा प्रतापसिंह ने तो नन्हीं की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पूर्ण चल अचल सम्पत्ति को राज्याधिकार में ले लेने तथा उसके वस्त्राभूषणो तक को नीलाम कराने के आदेश दे दिए थे।

स्वामी दयानन्द ने जोधपुर महाराजा को दो विस्तृत पत्र लिखे जिनमे उन्हें नाना प्रकार के सदुपदेश दिये थे। ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार मे पत्र सख्या 558 पर अकित पत्र में स्वामी जी ने महाराजा को मद्यपान, वेश्या सग पतग बाजी तथा घुड दौड जैसे व्यसनो से दूर रहने तथा राजकार्य मे न्यूनातिन्यून 6 घण्टे लगाने और स्वपत्नियो स प्रेम करने का उपदेश दिया है। सख्या 579 पर अकित पत्र मे स्वामी जी ने महाराजा को आठ गोपनीय बातें उपदेश रूप मे लिखी जो इस प्रकार हैं —

1 नन्ही वश्या से प्रेम को उन्होने अनुचित कहा।

2 खुशामदी लोगो से दूर रहने का परामर्श दिया।

3 नन्हीं तथा खुशामन्दी मुसलमान दरबारियो तथा उनके परिवार के लोगो से निकटता रखने को बुरा कहा।

4 स्वामी जी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि महाराजा मे जो बहु-विवाह तथा वेश्यागमन आदि के दोष आये हैं, वे उनके पिता महाराजा तख्तसिंह में भी विद्यमान थे। यदि उनके पिता में वे दोष नहीं होते तो सम्भवत. महाराजा जसवन्तसिंह भी उनसे मुक्त रहते।

5 महाराज कुमार की शिक्षा के लिये किसी मुसलमान या ईसाई को नियुक्त नहीं करने का परामर्श दिया।

6 महाराज कुमार के वेदोक्त सस्कार करने, 25 वर्ष तक उन्हे ब्रह्मचर्य पालन कराने तथा सस्कृत के आर्ष ग्रन्थो को पढाने का परामर्श दिया।

7 गणेशपुरी जैसे धूर्त सन्यासी से बच कर रहने के लिए कहा।

8 वेश्यागमन एव विषय सक्ति से बचने की प्रेरणा की।

स्वामी जी की अधिकाश शिक्षाओं को ग्रहण करने में महाराजा जसवन्तसिंह ने कोई रुचि प्रकट नही की, किन्तु 1881 की प्रथम जनगणना मे उन्होंने नन्हीं द्वारा स्वय को वैष्णवमतावलम्बी घोषित करने के आग्रह को ठुकरा कर जनगणना की पत्रिका मे अपने आपको वैदिक धर्मावलम्बी लिखाया।

(3 पृष्ठ का शेष)

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है इससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हमने सरकार को वह भूमि नही लेने दी जिसकी कालेज को आवश्यकता है। न ही वह भूमि स्वय बेची है केवल वह भूमि बेची गई है जो कालेज के किसी काम नहीं आ रही थी और जिसके विषय में हमे यह डर था कि सरकार इसको अधिग्रहण कर लेगी और जिसे बेचने की सिफारिश कालेज प्रबन्ध समिति ने पहले ही की थी। इस वक्त तक जो भूमि बेची गई है उसमे से हम डा हरिराम इन्टर कालेज मायापुर को डेढ लाख से ऊपर रुपया दे चुके हैं। हमारी सभा ने यह प्रस्ताव भी पारित कर रखा है कि हरिद्वार मे जो भी भूमि बेची जाएगी उससे जो भी धन प्राप्त होगा वह या तो गुरुकुल कागडी पर व्यय किया जाएगा या सभा की दूसरी सस्थाओ पर व्यय होगा। उसी मे से हम इस समय तक 6 लाख के लगभग गुरुकुल कागडी के लिए दे चुके हैं। एक लाख के लगभग कन्या गुरुकुल देहरादून को दे चुके हैं। पिछले सप्ताह 50 हजार रुपया हमने और हरिराम इन्टर कालेज के लिए भेजा है।

मैंने सारी स्थिति स्पष्ट रूप से जनता के सामने रख दी है। यदि हम हरिराम इन्टर कालेज की यह भूमि न बेचते तो सरकार या तो इसका अधिग्रहण कर लेती या बहुत थोडे मूल्य पर हम से ले लेती। जो भूमि बेची गई है उससे इस कालेज पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नही पडेगा। पाठको की जानकारी के लिए मैं यह भी बता दू कि जब से आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रबन्ध उसके वर्तमान अधिकारियो के हाथ मे आया है उससे बहुत पहले इस भूमि का एक प्लाट रोटरी क्लब को दिया गया था। जहा रगशाला बनी हुई है। यह प्लाट किसने दिया? क्यो दिया? हमे इसके विषय मे कुछ पता नही। उस समय इसके विषय में कोई आन्दोलन नहीं हुआ। अब भूमि बचाओ आन्दोलन शुरू कर दिया गया और वह वह लोग करा रहे हैं जिन्होने गुरुकुल कागडी फार्मेसी को दोनो हाथो से लूटा है और जिन्हें पुलिस ने आज अदालत के कटहरे में खडा कर दिया है। इस भूमि को बेचने का जो भी निर्णय लिया गया है वह किसी एक व्यक्ति ने नहीं लिया। सभा के सभी अधिकारियो ने सयुक्त रूप से लिया है और उस वक्त लिया जब इस कालेज की प्रबन्ध समिति ने हमे बार-2 लिखा था कि जो फालतू भूमि है उसे बेच दिया जाए और जब हमे पता चला कि सरकार इसको अधिग्रहण करना चाहती है तो हमने उसे बेच दिया ताकि जो राशि मिले वह इस कालेज के भवन के जीर्णोद्धार के लिए काम आ सके।

यह है सारी स्थिति जिसे बात का बतगड बनाया जा रहा।

—वीरेन्द्र

स्वामी वेदानन्द जी का अन्तिम सन्देश

लेखक—श्री अमरनाथ जी आर्य एम. ए
उप-प्रधान आर्य समाज तलवाड़ा (पंजाब)

सतरह अगस्त रात्रि को स्व. स्वामी वेदानन्द जी का आर्य समाज तलवाड़ा में, कृष्ण-जन्माष्टमी पर एक ओजस्वी व्याख्यान हुआ।

आपने भाव-विभोर होते हुए कहा कि न केवल भारत बल्कि सुदूर देशों में भी, जहां-जहां भी भारतीय हैं, यह उत्सव बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है। चाहे आर्य समाजी हो या सनातनी।

परन्तु सनातनी और आर्य समाजियों का इसे मनाने का ढंग अपना-2 है। इस में शक नहीं कि दोनों ही वर्ग इसे पूरी लग्न और श्रद्धा से मनाते हैं। परन्तु पहले ढंग से मनाने से समाज को इसका कोई लाभ नहीं होता। क्योंकि इसमें योगीराज श्री कृष्ण महाराज के जिस कल्पित रूप को प्रस्तुत किया जाता है। उससे भावी पीढ़ियों को तो कोई प्रेरणा नहीं मिलती। तथा न ही कोई ऐसा सन्देश ही मिलता है—जिसे प्रेरणाप्रद समझा जाए। और इसका बड़ा सबूत यह है कि कोई भी गृहस्थ मां अपने बेटों का माखन-चोर, मटकी-फोड़, चीर-हरता व नृत्यकर्ता, नहीं देखना चाहती। इससे पता चलता है। इसका सामाजिक पक्ष कितना निर्बल है।

परन्तु दूसरी ओर, आर्य समाज इस महापुरुष का, महाभारत और गीता-सम्मत, सच्चा और सुच्चा रूप पेश करता है। जिससे गीताकार श्री कृष्ण का राजनीतिज्ञ, नीति निपुण, धर्मात्मा-विद्वान्, युद्ध-विशारद, चतुर-सखा और भविष्य द्रष्टा का सुन्दर रूप निखर कर सामने आता है। जो मानवता के दिव्य गुणों को उजागर करता हुआ जनमानस को प्रभावित करता है।

और इस रूप के लोकप्रिय होने का प्रमाण यह है कि हर मां अपने लाडलों को, धीर-गम्भीर, वीर-बलवान, राजनीतिज्ञ, धार्मिक-विद्वान् और नेतृत्व-गुण-सम्पन्न देखना चाहती है। जो श्री कृष्ण के सहज गुण थे। इससे पता चलता है कि आर्य समाज श्री कृष्ण का जो रूप प्रस्तुत करता है वही ऐतिहासिक भी है और समाज सम्मत भी।

स्वामी जी ने आगे कहा कि यही कारण है कि महर्षि दयानन्द ने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा है कि श्री कृष्ण का चरित्र महाभारत में आदि से अन्त तक सर्वोत्तम है। वे आप्त पुरुष थे और उनके गुण-कर्म-स्वभाव से, कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि उन्होंने जन्म से मृत्यु पर्यन्त कोई बुरा काम किया हो।

अतः आर्य समाज अपने महापुरुषों का बड़ा आदर करता है। परन्तु यह उनके यथार्थ इतिहास और सत्य-जीवन का अन्वेषक और प्रस्तोता है। यह उनके मन-घड़न्त, मनमाने और कपोल-कल्पित चरित्रों का कायल नहीं। उसकी यह स्पष्ट घोषणा है कि 'चित्र नहीं बल्कि चरित्र ही अनुकरणीय है।'

फिर, महाभारत के उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि किस तरह श्री कृष्ण ने महाराज युधिष्ठिर को दो बार चक्रवर्ती सम्राट बनाया और अन्य देशों के नरेशों को उनके चरणों में झुका कर मनु की इस घोषणा को चरितार्थ किया कि :—

> एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद अग्रजन्मन: ।
> स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा: ॥

अर्थात्—यह देश भारत वालों में सबसे पहले आया। यहीं शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति का सबसे पहले विस्तार हुआ दुनिया के लोगो! यहां से शिक्षा लेकर अपने चरित्र को विशुद्ध बनाओ।

पुनः प्रसंगवश—सत्संग महिमा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि सत्संग की बड़ी महिमा है। परन्तु इसका लाभ, घर में बैठ कर दूर से सुनने में नहीं बल्कि समाज-मन्दिर या सत्संग भवन में बैठ कर सुनने में ही अधिक है। सत्संग के बहुत से लाभ हैं। पर, सात लाभ तो मुख्य हैं। यथा :—

(1) चक्षु साक्षात्कार :—घर से ही मन्दिर के माईक की आवाज सुनने से, रेडियो की भान्ति केवल कर्ण-संस्कार ही प्राप्त होता है। जिससे भाव बोधक स्पष्ट नहीं होते। परन्तु सामने आकर सुनने से टेलीविजन की भान्ति-वक्ता की भाव-भंगिमाओं से उनके अभिप्रायों को, नेत्र-संस्कार और कर्ण संस्कार दोनों से, समझने में अधिक सुगमता रहती है।

(2) स्पष्टता :—कुछ ध्वनियां दूर से स्पष्ट नहीं सुनाई देती। जिससे भाव-तारतम्य में व्यवधान पैदा हो जाता है। परन्तु समीप से सुनने से पूरी बात समझ में आ जाती है।

(3) सामाजिकता की पुष्टि :—सत्संग में आने से व्यक्ति को स्वयमेव समाज सम्मान मिलने लगता है। और उसे सज्जन समझा जाने लगता है। जिससे उसे समाज समर्थन का इतना बड़ा सर्टीफिकेट अनायास ही मिल जाता है। जिससे उसकी संसार यात्रा सरल और सुखद हो जाती है।

(4) अनिवार्य मन एकाग्रता :—मन्दिर का वातावरण शुद्ध और शान्त होता है और न ही शोरोगुल होता है और श्रोता पूरी बात तन्मयता से सुन लेता है। जिससे अधिक लाभ होता है।

(5) नींद से बचाव :—सामान्यतः सत्संग के दौरान नींद आने लगती है। परन्तु दूसरे श्रोताओं से संकोचवश—वह सावधान रहता है और निद्रा—आक्रमण को विफल बना देता है।

(6) अनापेक्षित—बातचीत से बचाव :—कई व्यक्ति बातूनी होते हैं। जिससे वे आमतौर पर अपना और दूसरों का अधिकांश समय बर्बाद कर देते हैं। परन्तु सभा भवन में ऐसी छूट नहीं होती। अतः अनिवार्यतः चुप रहना पड़ता है जिससे कई लाभ होते हैं।

(7) सुहृदय-समाज, सम्पर्क :—समाज में अधिकतर सत्संगी और परिपक्व व्यक्ति ही आते हैं। जिनसे परिचय बढ़ता है और पवित्र वातावरण में सांस लेने का सौभाग्य मिलता है। जिस से कई अप्रत्यक्ष लाभ होते हैं।

पाठक वृन्द! सत्संग महिमा वास्तव में ही अकथनीय है। सभी सुधी जन इस की बड़ाई करते हैं। संसार के सुख-साधन, मान मर्यादा और धन-दौलत तो प्रयत्न-साध्य हैं। परन्तु सत्संग की दौलत तो किसी भाग्यवान को ही मिलती है। कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है :—

> तात मिलें, पुनि मात मिलें, सुत-भ्रात मिलें, युवति सुखदायी।
> राज मिलें, गजराज मिलें, सब साज मिलें, मन वाछित पाई॥
> लोक मिलें, सुरलोक मिलें, विधि लोक मिलें, बैकुण्ठ जाई।
> 'सुन्दर दास' मिले सब ही सुख, पर दुर्लभ सन्त समागम भाई॥

स्वामी जी ने अपने विचारों को विराम देने से पूर्व सुझाया कि मानवता में प्राण-फूंकने वाला श्री कृष्ण का महाभारतोनुमोदित पावन-चरित्र ही कथनीय और अनुकरणीय है। यही वह संजीवनी है जो आज दिग्भ्रान्त मानवता का दिग्दर्शन कर सकती है।

कृष्ण—जन्माष्टमी, वैदिक सन्देश कलश लेकर सदैव आती रहेगी और इस के सुधापान से मानवता अनुप्राणित होती रहेगी। परन्तु जरूरत है इसे ठीक ढंग से समझ कर इसके अनुसार आचरण करने की। यदि ऐसा कर सके तो, वास्तव में ही हम श्री कृष्ण की सन्तान कहलाने के हकदार होंगे।

अपने पहत्तर मिन्ट के भाषण के अन्त में, आर्य जगत् को मानो प्रस्तुत चुनौतियां स्वीकार करने का सन्देश देते हुए—"वैदिक धर्म की जय" के साथ ही सदा की भान्ति स्वामी जी समीप बिछी शैय्या पर चिर निद्रा-वरण-हित, लेट गए।

मैंने सोचा! उनका यह पावन सन्देश हमारे तक सीमित न रह जाए। अतः उनके चरणों में अपनी अकिंचन श्रद्धा-जलि भेंट करता हुआ। ये कुछ शब्द आर्य बन्धुओं तक पहुंचने की धृष्टता कर रहा हूं।

—

जालन्धर में पारिवारिक सत्संग

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज वेद मन्दिर, आर्य नगर नगर की ओर से पारिवारिक सत्संग 6 9 87 दिन रविवार शाम 5 बजे से 8 बजे तक श्री वेद प्रकाश, मन्त्री आर्य समाज के गृह निवास, म न 24, गुलाब देवी हस्पताल रोड, आर्य नगर जालन्धर में रखा गया है। जिसमें जालन्धर की सभी आर्य समाजें भाग लेंगी। मेरी आप से प्रार्थना है कि आप अपने परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पहुंचने की कृपा करें।

—सतपाल-प्रधान आर्य समाज

कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया

आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती गुजां जालन्धर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़े समारोह से मनाया गया। इसकी अध्यक्षता समाज के प्रधान श्री राम-सुभाया नन्दा ने की। 16 अगस्त को प्रातः हवन यज्ञ से कार्यक्रम शुरू किया। श्री सतपाल व बहिन कौशल्या के भजन हुए। श्री सोहन लाल जी कालड़ा ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

—किशोरी लाल भोला
महामन्त्री

यह उलझन

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

यह एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर है, इससे कुछ दूरी पर एक प्रसिद्ध नदी बहती है। इस नदी और नगर के मध्य मे राजमार्ग से कुछ हटकर एक सेवाश्रम है। जिसमे एक वाचनालय, पुस्तकालय और धर्मार्थ औषधालय है। इससे समीपवर्ती क्षेत्र के लोग धन्वन्तरि जी की सेवाओ का लाभ उठाते है। इस आश्रम के सचालक का नाम सर्वप्रिय जी है, जो एक भूतपूर्व इन्जीनियर तथा एक बड़े औद्योगिक केन्द्र के भागीदार थे।

सर्वप्रिय जी की कार्यकुशलता से जहा भागीदार प्रसन्न थे, वहा उनकी लोक सम्पर्क की भावना से कर्मचारी भी उन्हे अपना हितैषी मानते थे। वे कर्मचारियो की खुशी-गमी मे सदा उनके सहभागी बनते, अपने भागीदारो और कर्मचारियो के किसी भी रिश्तदार की मृत्यु होने पर सर्वप्रिय जी उसमे अवश्य ही सम्मिलित होते। इस परिवार के विशाल होने के कारण अकस्मात मौत की कुछ ऐसी घटनाए घटी, कि जिससे इनके मन मे अनेक जिज्ञासाए उभरी। इन के सामाधान के लिए बहुत कुछ पढ़ा और समय समय पर जब जब ऐसे अवसर आए, तो महात्माओं को आमन्त्रित कर के सत्सग रचाए।

सर्वप्रिय जी का प्रथम पौत्र जब विशेषज्ञ बनकर आया, तो अपने पुत्र को लोक सम्पर्क का कार्य सौंप कर कुछ सेवाभावियो के सहयोग से सवाश्रम की स्थापना की। दो वर्ष पश्चात् यहा रविवार को साय के समय सत्सग का कार्यक्रम भी प्रारम्भ हो गया। एक दिन सत्सग से पूर्व कालेज के अनेक छात्र आए आए और सचालक जी से निवेदन किया, कि हमारा साथी कमलेश एक योग्य विद्यार्थी है। इस के पिता जी की अकस्मात् मृत्यु हो जाने के कारण यह एक दम बदल गया है और बड़े अजीब-अजीब प्रश्न पूछता है। हम इसके किसी प्रश्न का उत्तर तो क्या दे सकते है? हा, इससे उल्टा हमारे मन मे भी अनेक आशकायें उभर आती हैं। अत: आपसे प्रार्थना है, कि इन भावी सत्सगो मे इन प्रश्नो पर प्रकाश डालने की कृपा करेंगे।

सर्वप्रिय जी ने उस दिन विद्यार्थियो और सत्सगियो को सम्बोधित करते हुए कहा—जैसे नवजात को पहली सर्दी-गर्मी विशेष अनुभव होती है। ऐसे ही जब किसी युवक के सामने मौत की पहली घटना होती है और वह भी किसी विशेष कारण से। यदि वह विशेष रूप से निकटवर्ती की हो, तो उसके प्रभाव से अजीब-अजीब प्रश्न उभरना एक स्वाभाविक बात है। जैसे हर मौसम का अपना प्रभाव होता है, ऐसे ही अपने अड़ोस-पड़ोस की घटनाओ का भी प्रभाव होता है। इसके बाद अलग-अलग चीजो के उदाहरण दे देकर समझाया, कि जिस दुनिया मे हम रहते हैं, उस मे हजारो चीजें ऐसी हैं, जो स्पष्ट बनती हुई दिखाई देती हैं। समय के साथ वे चीजें फिर घिसने लगती हैं और वे जीर्ण होकर या किसी विशेष घटना से एक दम भी बिखर जाती हैं। इसी जन्म-मरण की कहानी को कठ उपनिषद् के ऋषि ने 'सस्यमिव मर्त्यं पच्यते, सस्यमिवा जायते पुन, के शब्दो द्वारा खेती की प्रक्रिया के आधार पर समझाने का प्रयास किया है। क्योकि मौत को दूर रखने के लिए शक्ति भर अनेक प्रकार के प्रयास करने पर भी अमर आत्मा इस भौतिक शरीर को छोड कर एक दिन अज्ञात दिशा की राह लेता है। जन्म और मरण की यह कहानी हमारे चारो ओर चल रही है। इस कहानी की मार्मिकता को ही किसी के बिछुड़ जाने पर मर गया, चला गया, खेल खत्म हो गया, प्राण पखेरू उड गए, ठण्डा पड गया आदि शब्दो से सकेतिक किया जाता है।

बदली हुई यह स्थिति जब किसी युवक के सामने पहली बार आती है, तो इस अवसर पर अनेक जिज्ञासाए उसके मन मे हल-चल मचा देती है, कि मौत किस की होती है? जब आत्मा अमर है, तो उसकी मौत कैसी? फिर मौत के भय से प्रत्येक भयभीत क्यो है? और उसके लिए शोक क्यो होता है? तथा उस आत्मा के साथ हमारे रिश्ते-नाते हैं या इस भौतिक शरीर के साथ? ये प्रश्न हर सोचने वाले को इस अवसर पर बहुत कुछ सोचने के लिए विवश कर देते हैं। इन प्रश्नो के साथ एक और प्रश्नमाला भी उभर आती है, कि इस अमर आत्मा का अपना स्वरूप क्या है? इस विनश्वर देह से सम्बन्ध कैसे होता है? यह इस मे स्वतन्त्र है या परतन्त्र? इस आत्मा की शरीर मे यदि स्वतन्त्र सत्ता है, तो इस देह के परिवर्तनो का आत्मा पर प्रभाव होता है या नही? शरीर से आत्मा का वियोग किसी निश्चित काल पर होता है या अकाल मृत्यु भी हो सकती है? क्या सभी प्राणियो के शरीर उन के लिए एक ही का जजाल है या यह एक क्रमश आगे बढने का अवसर है? इन सभी जिज्ञासाओ का सर्वप्रिय जी ने अनेक सत्सगो मे क्रमश समाधान बताया, शास्त्रो के प्रमाणो और दृष्टान्तो से स्पष्ट करते हुए इस चर्चा को रोचक रूप दिया। एक दिन आठवी बैठक मे सगीत प्रिय जी के भजन के बाद सर्वप्रिय जी ने कहा—आज तक हमने जो चर्चा की है, उसका यजुर्वेद के एक मन्त्र 'अश्वत्थे वो निषदनम्—12,79 मे बहुत ही सुन्दर विश्लेषण मिलता है। इस मे आता है, कि हमारा यह ससार अ+श्वत्थ है, अत: चलायमान है। केवल हमारे द्वारा बर्ते जाने वाली भौतिक चीजें ही नही, अपितु हमारा यह प्रिय शरीर भी पीपल के पत्ते की तरह पतनशील है। पता नहीं कब, किधर से हवा का कैसा झोंका आए और यह नीचे पड़ा हुआ दिखाई दे। अत: इस सुन्दर मानव चोले को रखने वालो! इसके अनोखेपन को समझो और सोचो क्या इस अनमोल अवसर को प्राप्त करके हम इस का लाभ उठा रहे हैं, या दूसरे को केवल यही कहने का मौका दे रहे हैं, कि 'चिड़ियों ने चुग जब खेत लिया, तब पछताए क्या होवत है।'

'इस ससार मे न आने-जाने का यह क्रम कब से चला आ रहा है, पर इतिहास बताता है, कि कुछ यहां ऐसे आएं, कि हजारों-लाखो साल बीत जाने पर भी हम उनको भूला नहीं सके। उन्होंने अपनी विद्या, श्रद्धा, साधना या कला से ऐसी अमिट छाप छोडी, कि समय उनको धूलिसात न कर सका। उनकी यह अमरता हर आने वाले को एक सन्देश देती है, कि हम इस दुनिया में चाहे कितने विवश हो, पर फिर भी हम इस चोले में आने के अवसर का लाभ उठा कर अपना और अपनो का जीवन कृतार्थ कर सकते हैं। तभी तो कहा—'ऐसी करनी कर चलो, तुम हसो, जग रोय'। अत: इस अनोखे अवसर को प्राप्त करके हमे जीवन के रहस्यो को समझते हुए एक सुसंगत जीवन पथ को अपनाना चाहिए।

इस प्रकार पन्द्रहवीं बैठक मे इस जन्म-मरण की कहानी का उपसहार करते हुए महात्मा जी ने कहा-मानव चोले मे आकर हमे ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हम अपनी मजिल पर पहुच कर अपने लक्ष्य मे सफल होने की खुशियो को स्पष्ट अनुभव कर सकें। इन्हीं सारी चर्चाओ को 'जन्म-मरण की उलझन' मे विस्तार से समझाया गया है। इस रचना को प्रकाशित कराने से ही यह पाठको के हाथो मे पहुच सकती है। देखिये ! कौन इस रचना के प्रकाशन के कार्य का यश लेता है।

आदरणीय पण्डित भद्रसेन जी दर्शनाचार्य के जन्म-मरण की उलझन पर आर्य मर्यादा मे निरन्तर कई लेख दिए गए हैं। मृत्यु और उसका रहस्य बड़ी अच्छी तरह से इन लेखो मे स्पष्ट किया गया है। इन लेखो के उपसहार के रूप मे आचार्य जी ने इस लेख के माध्यम से अपने विचार दिए हैं।

—सम्पादक

यज्ञ विशेषज्ञों की सेवा में

निवेदन है कि मातृ मन्दिर की यज्ञशाला का निर्माण प्राचीन ऋषि शैली पर करने का सकल्प है। यह यज्ञशाला प्रायोगिक होगी जिस में वेद मन्त्र ध्वनि मिश्रित सूर्य किरणो पर वैज्ञानिक प्रयोग किए जाएगे।

आर्य समाज व अन्यत्र अनेक सुविज्ञ विद्वान् हैं जिनका वैदिक यज्ञों पर इसी दृष्टि से विस्तृत अध्ययन व क्रियात्मक अनुभव है, कृपया वे हमें इस विषय मे पथ प्रदर्शन करें। साथ ही ऐसी यज्ञशाला का कोई चित्र तथा उपकरणो की सूची भी भेज सकें, तो अति कृपा होगी। इस सम्बन्ध में आवश्यक व्यय मातृ मन्दिर वहन करेगा।

यथा समय ऐसे विद्वानो की गोष्ठी भी आमन्त्रित की जाएगी। आशा है सुविज्ञ माननीय विद्वान् इस पुनीत कार्य मे पूर्ण सहयोग प्रदान कर ऋषि ऋण उतारने की दिशा मे एक ठोस कदम उठायेंगे व हमें कृतज्ञ करेंगे।

—डा. पुष्पावती अग्रवाल
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल गई वस्ती
रामापुरा वाराणसी।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' वेदाज्ञा एवं महर्षि का स्वप्न

लेखक—श्री सोमनाथ जी दिलावरी
प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

आर्य समाज के कार्य को कैसे गति दी जाए। अगले 2-3 वर्षों के अल्पकाल में इसे व्यापक रूप दिया जावे।

आर्य समाज की नींव आज से 112 वर्ष महर्षि दयानन्द ने रखी थी इस दृष्टि से कि लोप हुए वैदिक धर्म को पुनः स्थापित कर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" रूपी वेदाज्ञा, को मूर्त रूप दिया जावे। महर्षि ने अनुभव किया कि "आर्य सन्तान" अपनी चेतना खो बैठी है। अपने को आर्य न मान हिन्दू कहलाना प्रारम्भ कर दिया है। और नाना प्रकार के मत-मतान्तरों के झाड़ जंगल में बुरी तरह उलझ कर रह गई है। सर्व प्रथम इन्हें चेतना दी जावे। आर्य सनातन धर्म का ज्ञान कराया जावे। इसी महान् कार्य में वह अपनी मुक्ति का ध्यान छोड़, अपना सर्वस्व त्याग प्राणपन से जुट गए। स्वयं विष पी—हमें वेद ज्ञान-आर्यत्व का अमृत पिलाते पिलाते दीपमालोत्सर्ग—'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते-कहते कर दिया।

महर्षि हिन्दू आर्य सन्तानों को मुसलमान ईसाई बनाते देख अत्यन्त दुःखी रहते थे। इस बात का संकेत उनकी निम्न एक घटना से स्पष्ट हो जाता है।

महर्षि श्री मोहनलाल पाण्डेय के यहां ठहरे हुए थे। आधी रात का समय था। श्री पाण्डेय जी ने देखा कि स्वामी जी बेचैनी से कमरे में इधर से उधर आ जा रहे हैं। यह देख उनसे न रहा गया। पूछ ही लिया। "स्वामी जी आपको क्या कष्ट है? कोई वेदना है?" उन्होंने उत्तर में कहा—"भाई मुझे कोई शारीरिक कष्ट नहीं अपितु मानसिक चिन्ता जो मुझे बेचैन कर रही है वह यह है कि आर्य सन्तान हिन्दुओं को मुसलमान—ईसाई लूट-खसूट रहे हैं। विधर्मी बना रहे हैं। हिन्दू अपने को भूल व सनातन धर्म को भूल गए हैं। इन्हें कैसे बचा पाऊं। यह घटना आर्य समाज की स्थापना के बहुत पूर्व की है।

आर्य बन्धुओं! जानते हो, इसी चिन्ता के समनार्थ ही महर्षि ने आर्य समाज को जन्म दिया था।

सब ने देखा कि गत 112 वर्ष के अल्प काल में "आर्य समाज" ने हिन्दुओं में आर्य चेतना लाने में कितना अद्भुत कार्य किया। शिक्षा के क्षेत्र में तो अन्य किसी संस्था ने भी इतना कार्य न किया होगा। [illegible]

इसके अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियों स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार विधर्मी हुए बन्धुओं को वापिस आर्य धारा में लाने में तो मानो कमाल ही कर दिखाया। इस प्रकार हिन्दुओं में नया जीवन लाने में कोई कसर न उठा रखी।

"आर्य समाज" अब कोई साधारण संस्था नहीं है। बड़ी विशाल समृद्ध हो चुकी है। राष्ट्र भर में, तो स्थान स्थान पर इसकी शाखाएं विद्यमान हैं। बाहर विदेशों में भी हैं। डी ए. वी एवं अन्य आर्य स्कूल, कालेज हजारों की संख्या में देश देशान्तरों में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। एक सौ के करीब 'गुरुकुल' भी कार्य कर रहे हैं। करीब 2 सब प्रान्तों में आर्य प्रादेशिक सभाएं भी हैं।

अब केवल इसकी गति में तेजी एवं कार्य पद्धति में सुधार लाने की जरूरत है। बदले हालात में कार्य क्षेत्र का आकलन करना होगा। सुधरे नये-नये तरीकों से आर्य धर्म संस्कृति का सारे हिन्दू समाज में प्रचार प्रसार करना होगा। नया जीवन-आत्म चेतना लानी होगी।

आर्यो उठो! मत भूलो कि तुम महर्षि की मानस सन्तान हो। वह अकेला था—अब तुम करीब दो करोड़ हो। तुम्हारी शक्तिशाली भुजाएं आर्य संस्थाओं के रूप में विद्यमान हैं। तुम्हें ऋषि ऋण उतारना है। आलस्य प्रमाद को दूर भगा दो! महर्षि के लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को प्राप्त करने हेतु कटिबद्ध हो जाओ। प्रथम भारत को सच्चे अर्थों में "आर्यावर्त" बनाना है। तुम में बढ़ने की क्षमता है। महर्षि का वरदान तुम्हारे साथ है। तुम में विद्वानों धर्मानुरागियों, वीरों की कमी नहीं। अतः आओ, प्रण लें ऋषि मिशन की पूर्ति में जुट जावें।

इस पवित्र कार्य में हमारी शिक्षण संस्थाएं जिन में हर वर्ष लाखों बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। बच्चों में आर्यत्व कूट-कूट कर भर सकते हैं। इसी सम्बन्ध में मैंने अपने विचार आर्य बुद्धिजीवियों की गोष्ठी में भेजे थे, जो देहली में 20 से 30 अप्रैल 87 को हुई थी। उसमें क्या निर्णय लिये गए, मुझ कोई जानकारी नहीं।

अब इस लेख में विशेष रूप से इस बात की ओर अपने विचार केन्द्रित कर रहा हूं कि आर्यत्व के महत्वपूर्ण कार्य के प्रचार प्रसार में आर्य सभाओं के संगठन बड़े अद्भुत कार्य कर सकते हैं।

(क्रमशः)

सम्पादक के नाम पत्र—

बुद्धिजीवी आर्य सम्मेलन की आवश्यकता

सम्पादक महोदय जी!

आपकी सम्मानित पत्रिका में मैंने डा प्रशान्त जी वेदालंकार का लेख 'बुद्धिजीवी आर्य सम्मेलन' पढ़ा। यह सुन्दर विचार हैं। आर्य समाज इस समय लक्ष्य में विपरीत दिशा में चलने लगा है। इसका कारण है कि विद्वानों व सामान्य आर्य जनता का सम्पर्क कड़ी टूट रही है सामान्य आर्य जनता को आर्य सिद्धान्तों का परिपक्व बोध होना आवश्यक है तभी दृढ़ आस्था होगी। बुद्धिजीवी वर्ग प्रकारान्तर से ब्राह्मण स्थापनीय है। समाज का दिशा निर्देशन व व्यवस्थापन ब्राह्मणों का कर्तव्य है। अतः बुद्धिजीवी आर्य सम्मेलन अवश्य करणीय है।

मातृ मन्दिर अपने महोत्सव पर बुद्धिजीवी आर्य सम्मेलन का डा प्रशान्त जी के निर्देशन में सहर्ष आयोजन करेगा 30,31 अक्तूबर अथवा 7 नवम्बर 1987 में से किसी एक दिन होगा।

कृपया सभी विद्वान बुद्धिजीवी अपने सुझाव प्रस्ताव तथा कब तक वे स्वयं आ सकेंगे, इसकी सूचना देकर कृतार्थ करेंगे।

—पुष्पावती आचार्य
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल डी 45।127
नई बस्ती, रामापुरा वाराणसी

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पता नहीं लगा परन्तु बाद में पता चला कि वह कर्नाटक के एक गांव तालकावेरी में समाधी लगाए बैठे हैं। ताल कावेरी वह स्थान है जहां से कावेरी नदी शुरू होती है। किसी भी व्यक्ति को बताए बिना जयेन्द्र सरस्वती वहां बैठ पूजा-पाठ और प्रार्थना करते रहे परन्तु फिर उन्हें यह विचार आया कि इस प्रकार साधना से वह अपने उस उद्देश्य को पूरा न कर सकेंगे जिसके लिए उन्होंने अपना आश्रम छोड़ा था। वह देश का उद्धार करने के लिए अपने आश्रम को छोड़ कर आए थे। एक सुनसान जंगल में नदी के किनारे बैठ कर वह यह काम नहीं कर सकते। इसलिए वह फिर अपने आश्रम में वापिस आ गए जब उनके आने का समाचार लोगों को मिला तो वह उनके आश्रम में आने लग गए। परन्तु श्री जयेन्द्र सरस्वती ने कह दिया कि उनके मठ के मठाधिपति उनके उत्तराधिकारी श्री शंकर विजयेन्द्र सरस्वती ही रहेंगे और जैसा कि उन्होंने संकल्प लिया है वह अपने देश की सेवा करेंगे और उसके लिए यदि उन्हें सारे देश का भ्रमण करना पड़े तो वह भी करेंगे। जो लोग उनसे मिले हैं उनका कहना है कि श्री जयेन्द्र सरस्वती कुछ विचलित दिखाई देते हैं वह अभी यह अन्तिम निश्चय नहीं कर सके कि वह क्या करें। जब कोई उनसे बात करता है तो वह यह ही कहते हैं कि देश में अन्धकार फैल रहा है। स्थिति बहुत बिगड़ रही है। जनता का ध्यान वेद और वैदिक सिद्धान्तों से हट रहा है। इसलिए हमें उसी प्रकार फिर प्रचार करना चाहिए जैसे आदि शंकराचार्य ने किया था। हमारे राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन जी भी उनके परम भक्त हैं, कांची मठ की यह परम्परा है कि उसका पीठाधिपति वही व्यक्ति हो सकता है जिसने पहले वेद और दूसरे आर्ष ग्रन्थों का पूरी तरह से अध्ययन किया हो। यद्यपि यह सब शंकर वेदान्त की विचारधारा में विश्वास रखते हैं और उसका प्रचार भी करते हैं परन्तु कहते यही हैं कि हमारे धर्म और संस्कृति के आधार वेद ही हैं। इसलिए वेदों के उद्धार के लिए श्री आदि शंकराचार्य ने इतना संघर्ष किया था। अब शंकर जयेन्द्र सरस्वती इस काम को पूरा कर सकेंगे या नहीं यह कहना कठिन है परन्तु वह अपने उत्तराधिकारी श्री शंकराचार्य विजयेन्द्र सरस्वती से यह अवश्य आशा रखते हैं कि यदि वह यह काम सम्भवतः पूरा न कर सकें तो उनके उत्तराधिकारी इसे पूरा करेंगे।

—

बंगा में वेद प्रचार

आर्य समाज बंगा (जालन्धर) में 9-8-87 से 17-8-87 तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह से मनाया गया तथा पारिवारिक सत्संग भी निरन्तर होते रहे। श्री रामनाथ महोपदेशक के निरन्तर प्रवचन होते रहे। प्रोग्राम हर प्रकार से सफल रहा। जनता तथा सभासदों का पूरा-पूरा सहयोग मिलता रहा।

—शादी लाल महेन्द्र
मन्त्री

निष्क्रमण संस्कार

आर्य समाज संगरूर के पुस्तकाध्यक्ष श्री राजेन्द्र आर्य द्वारा अपने सुपुत्र का निष्क्रमण संस्कार श्री निरंजनदास गुप्ता के पौरोहित्य में करवाया गया। सुपुत्र को जन्म के 42 वें दिन 26-7-87 रविवार को प्रथम बार आर्य समाज मन्दिर में लाकर निष्क्रमण संस्कार की विशेष आहुतियों सहित विधिपूर्वक अग्नि होत्र किया गया। —अशोक आर्य

वैदिक यतिमण्डल का सम्मेलन एवं मठ का उत्सव

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव 6-7-8 नवम्बर 1987 तदनुसार 21-22-23 कार्तिक विक्रमी सं 2044 को होना निश्चित हुआ है। वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेशानुसार वैदिक यतिमण्डल का एक महत्वपूर्ण सम्मेलन इसी अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा में आयोजित किया जाएगा। सभी माननीय यतियों को एक ओर का मार्ग व्यय भी दिया जाएगा।

उत्सव धूम-धाम से समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। सभी भाई बहिन पर्वत शृंखलाओं के मध्य में रावी नदी के तीर पर स्थित इस शान्त तपो स्थली पर सादर आमंत्रित हैं। अतः अभी से आने की तैयारी आरम्भ कर दीजिए।

—स्वामी सुमेधानन्द

दयानन्द मठ, चम्बा (हि प्र)

आर्य समाज कोटकपूरा में समारोह

आर्य समाज कोटकपूरा में 15 अगस्त को समारोह मनाया गया। मन्त्री श्री महिन्द्र-पाल मैंनी ने हवन यज्ञ करवाया जिसमें आर्य समाज के सदस्यों के साथ आर्य माडल स्कूल के बच्चों व अध्यापकों ने भाग लिया।

आर्य समाज में बने चार कमरे जो नए बनाए गए हैं उनका उद्घाटन मान्य डा पृथ्वीपाल जी बाहोवालों ने किया व राष्ट्रीय ध्वज भी उन्होंने लह-राया। स्कूल के बच्चों ने बहुत अच्छा प्रोग्राम पेश किया। जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री रविराज जी देवड़ा ने की। स्वतन्त्रता सेनानी (शहीद भगतसिंह जी के साथी) श्री बिहारीलाल परवाना ने देश की स्वाधीनता पर रोशनी डाली। वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी महाशय केहरसिंह जी ने आशी-र्वाद दिया। अन्त में बच्चों को प्रसाद बांटा गया और बच्चों का प्रोग्राम सब ने पसन्द किया।

—महिन्द्रपाल मैंनी मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

पापों से छुटकारा पाने के लिए हमें अपनी आदतों का सुधार करना होगा और अपने जीवन की नित्य प्रति [illegible] करनी होगी। अर्थात् हमें अपने [illegible] पर निगाह रखनी होगी क्योंकि [illegible] आईना है, जो हमें हमारा [illegible] देता है। यदि हमारे कर्म [illegible] हमारा स्वरूप भी [illegible] और यदि हमारे कर्म बुरे हैं तो हमारा स्वरूप भी बुरा ही दिखाई देगा। और यदि आपने नित्य-प्रति [illegible] स्वरूप नहीं देखा और [illegible] बाद देखने का अवसर आया तो [illegible] ही अपना स्वरूप देख कर डर जाओगे, इसलिए अपने को प्रतिदिन आईना दिखाते रहो। आत्म निरीक्षण देखने के सदृश ही है। कहा भी है कि— [illegible] पाया हुआ शरीर [illegible] आईना है [illegible] सोने से रोज पहले फिर देखता हूं मैं॥ [illegible] पापों से बचने के लिए यह भी आवश्यक है कि हम मिथ्या सिद्धान्तों से बचें। प्राय लोग ईश्वर को सर्वव्यापक [illegible]

[illegible] और [illegible] पर [illegible] हैं। [illegible] मानते हैं [illegible] पर [illegible] हैं [illegible] नहीं [illegible] नहीं है। [illegible] कर्मों का फल [illegible] और [illegible] है, और [illegible] अवसर [illegible] है। इस प्रकार बुरे कर्म करने से जीव [illegible] जाएगा और ऐसे निरन्तर [illegible] यह पापों से सर्वथा छूट जाएगा। प्रभु करे कि हम में सच्ची आस्तिकता आये और हम कर्मफल व्यवस्था में पूर्ण आस्था रखते हुए अपने कर्मों की पड़-ताल करते हुए दुष्कर्मों को छोड़ते चलें और अच्छे कर्मों को नित्य करते हुए हमारा लोक और परलोक दोनों सुधार करें।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा नवहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 23, 28 भाद्रपद सम्वत् 2044 तदानुसार 13 सितम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

13 व 14 सितम्बर को पंजाब की सभी आर्य समाजों में हिन्दी दिवस मनाया जाए

"सभी हिन्दी प्रेमी हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए संकल्प लें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी महानुभावो की सेवा में

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। देश के नव निर्माण और पुनरुत्थान में इसका एक विशेष महत्व है। यही कारण है कि जब हमारे देश का संविधान बनाया गया था तो हिन्दी को राष्ट्र भाषा और राज्य भाषा घोषित किया था। अब इसे 40 वर्ष के लगभग होने लगे हैं। दूसरे प्रान्तो ने हिन्दी ने बहुत प्रगति की है। परन्तु हमारे पंजाब मे इसे सरकारी स्तर पर पूर्णतया समाप्त करने का प्रयास हो रहा है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसे प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को अपने लिए एक चुनौती समझना चाहिए। जो कुछ सरकार कर रही है। उसका एक कारण यह भी है कि हिन्दी को जो महत्व हमे स्वयं देना चाहिए था वह हम नहीं दे पाए। यही कारण है कि पंजाब मे हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को अधिक महत्व दिया जाता है। पंजाबी पंजाब की राजभाषा है। हम उसके विरोधी नहीं है। हमारे आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा था कि एक व्यक्ति अधिक से अधिक जितनी भाषाएं पढ़ सकता है उसे पढ़नी चाहिए। इसलिए हमे पंजाबी पढ़ने पर भी कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु हम यह भी सहन नहीं कर सकते कि पंजाब मे हिन्दी को सर्वथा समाप्त कर दिया जाए। जैसा कि आज पंजाब सरकार कर रही है। यह देश के साथ भी द्रोह होगा और सरकार को इस नीति से राष्ट्रीय एकता पर भी कुठाराघात होगा। यदि हिन्दी समाप्त होती है, तो देश की एकता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो सकता है।

इन परिस्थितियों मे आप से यह निवेदन है कि सोमवार 14 सितम्बर को सारे पंजाब मे हिन्दी दिवस मनाया जाए। सारे देश मे ही उस दिन हमारे देशवासी हिन्दी के प्रचार और प्रसार का संकल्प लेते हैं। कोई कारण नहीं कि आर्य समाज इससे पीछे रहे जब कि आर्य समाज हिन्दी भाषा को इस देश की सर्वोच्च भाषा मानती है। इसलिए आपसे यह प्रार्थना है कि सोमवार 14 सितम्बर को अपने आर्य समाज मन्दिर मे हिन्दी दिवस मनाएं। उस दिन एक सार्वजनिक सभा कर के पंजाब सरकार की हिन्दी के प्रति वर्तमान नीति के विरुद्ध अपने विरोध का प्रदर्शन करें। साथ ही उस दिन यह संकल्प भी करें कि आप अधिक से अधिक हिन्दी का प्रचार करेंगे और अपने नित्य प्रति के जीवन मे हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। इस सभा में केवल आर्य समाजो को ही न बुलाएं, सनातनधर्मी, जैनी और हिन्दी प्रेमी सिखो को भी बुलाया जाए। सिख भाईयो को विशेष रूप से यह समझाने की आवश्यकता है कि हिन्दी श्री गुरुगोविन्द सिंह महाराज की मातृभाषा थी। इसलिए पंजाब मे हिन्दी का प्रचार व प्रसार अत्यंत आवश्यक है। हिन्दी और पंजाबी यह दोनो भाषाएं पंजाब मे चलनी चाहिए। पंजाबी के साथ यदि अंग्रेजी को महत्व दिया गया और हिन्दी को पीछे धकेलने का प्रयास किया गया तो हम इसे सहन नहीं करेंगे। आज की परिस्थितियो मे आर्य समाज कोई नया आन्दोलन प्रारम्भ करना नहीं चाहता। परन्तु यदि सरकार ने हिन्दी के साथ इसी प्रकार का सौतेली मा का सा-व्यवहार किया तो हिन्दी की मान व प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए हमे जो भी पग उठाना पड़ेगा, हम उठाएंगे।

कृपया यह विज्ञप्ति आप रविवार 13 सितम्बर को अपने साप्ताहिक सत्संग मे भी पढ़ कर सुना दें। इसी के साथ यहा वह संकल्प पत्र भी दिया जा रहा है, जो 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस की सभा मे सब महानुभाव मिल कर पढ़ें और वे यह संकल्प करें कि हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे और हिन्दी को पंजाब मे नष्ट नहीं होने देंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हिन्दी के सम्बन्ध मे कुछ साहित्य भी प्रकाशित करवा रही है। आप किसी व्यक्ति को भेज कर वह मंगवा सकते हैं, जो कि जनता में बांटा जा सकता है।

आशा है आप पूरे उत्साह और लग्न के साथ इस बार पंजाब मे "हिन्दी दिवस" मनाने का प्रयास करेंगे।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

हिन्दी दिवस के उपलक्ष में "संकल्प-पत्र"

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्र भाषा है। और यह हमारी संस्कृति और धर्म की भाषा भी है। इसी के साथ यह देश की एकता और स्वाधीनता की प्रतीक है। हिन्दी का अपमान राष्ट्र का अपमान है। हम हिन्दी प्रेमी किसी भी स्थिति मे राष्ट्र के अपमान को सहन करने को तैयार नहीं हैं। पंजाब सरकार विशेष कर इस प्रदेश मे हिन्दी को पूर्णतया समाप्त करने का प्रयास कर रही है। सरकारी कामकाज मे हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को महत्व दिया जाता है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसे हम किसी भी प्रकार से सहन नहीं कर सकते। इसलिए हम संकल्प करते हैं कि तन, मन, धन से हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए हम से जो कुछ भी होगा हम करेंगे, प्रत्येक नाम पट्ट दूसरी भाषा के साथ हिन्दी मे अवश्य लिखा जाएगा अपना पत्र व्यवहार अधिक से अधिक हिन्दी मे करने का संकल्प करते हैं। अपने बच्चो को हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दिलाएंगे और हिन्दी के द्वारा प्राचीन संस्कृति का प्रचार करेंगे। हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है, मातृभाषा है और पुण्य भाषा है। इसलिए हम संकल्प करते हैं कि हिन्दी के प्रसार व प्रचार के लिए हमसे जो कुछ भी होगा हम करेंगे।

१४ सितम्बर हिन्दी दिवस पर—

भारत की एकता राष्ट्रभाषा की विशेषता

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

हमारे प्यारे देश का नाम भारत है। काश्मीर से लेकर कन्या कुमारी और कामरूप से कच्छ तक का सारा भू भाग भारत कहलाता है। देश के किसी एक विशेष भूखण्ड का नाम भारत नहीं है, अपितु सारा एक समान भारत है और इस के सभी नागरिक भारतीय हैं। आज भारत प्रशासनिक दृष्टि से केन्द्रीय और प्रादेशिक रूप मे 32 राज्यो मे बटा हुआ है। जिन के मैदानी, रेतीले, समुद्र तटीय और पठारी इलाके हैं। यहा 15 मान्यता प्राप्त भाषाए हैं।

भारत मे अनेक तरह की वेश भूषा, खान पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज और बोलिया चलती हैं। इसीलिए भारतीयो में अनेक तरह की भिन्नताए मिलती हैं। आज की तरह प्राचीनकाल में यातायात और सन्देश सचार के साधन नही थे। अत पहाडो, नदियो और दूरी के कारण एक क्षत्र दूसरे क्षत्र से भिन्न धर्म, भाषा, ज्ञान, वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन का विकास करता था। भारतीय उदारता ने इस विविधता के विकास मे कभी बाधा नहीं डाली।

आज के विकासशील युग मे समय के साथ अनेक परिवर्तन आ रहे हैं। जिससे एक राष्ट्र की भावना अपना विशेष स्थान बना रही है। इसीलिए अब यत्र-तत्र-सर्वत्र भारत मे राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की चर्चा सुनाई देती है, क्योंकि इसके बिना किसी राष्ट्र का अपनापन ही मिट सकता है और एकता में ही किसी देश की शक्ति, प्रगति, समृद्धि, सुरक्षा, सुदृढता गौरव निहित है।

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के महत्व की मांग है, कि हम सर्व प्रथम इन शब्दो का भाव हृदयगम करे। एकता का अर्थ है—एकपना, भारत के सभी नागरिको की एक सी स्थिति अर्थात् सभी भारतीयो स एक सा व्यवहार, सभी के लिए समान व्यवस्था सभी के जान-माल की सुरक्षा। इसी भाव को भारतीय सविधान मे समता, स्वतन्त्रता, बन्धुता, सुरक्षा तथा न्याय के मौलिक अधिकार से निर्दिष्ट किया है। एकता को दूसरे शब्दों में इस प्रकार से भी कह सकते हैं, कि भारत के एक-एक जन का आपस मे अपनापन। अखण्डता का भाव है—सारे भारत का इसी रूप मे इकट्ठे रहना अर्थात् भारतीय भूखण्ड के सारे प्रदेश आपस में एक रूप से जुड़ कर रहें। उनका कोई भी प्रदेश क्षत्र से किसी रूप मे अलग न हो।

जब किसी देश के नागरिको में अपने देश के प्रति अपनत्व, भक्ति और निष्ठा की भावना होती है, तभी उन मे राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भावना रहती है। भारत की इस एकता और अखण्डता का आधार जहा प्रशासन की एक रूपता, समान-व्यवस्था, समान-व्यवहार और सेना की सुदृढता है, वहा इसका सबसे पहला आधार है—एक भावना, एक भाषा, क्योकि एकता एक भावना है। इस भावना को सभी स्थानो और स्तरो पर प्रचारित करने और भावी पीढी मे यह भावना उजागर करने के लिए एक भाषा ही सरल माध्यम बन सकती है। वैसे भी एक देश के नाते एक भाषा का होना बहुत जरूरी हो जाता है। जैसे सारे देश का एक सविधान, एक ध्वज, एक सेना, एक राष्ट्रपति आदि होते हैं। ऐसे ही सारे भारतीयो को एक भाषा से बान्धने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है।

सभी भारतीय सेना, प्रशासन, व्यापार, पर्यटन, यातायात, धर्म और सन्देश-सचार आदि कार्यों के लिए एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश मे आते-जाते हैं। ऐसी स्थिति मे एक सम्पर्क भाषा के द्वारा ही परस्पर भावना का आदान-प्रदान किया जा सकता है। केन्द्रीय सरकार के मन्त्रियो और केन्द्रीय विभागो के अधिकारियो को समय-समय पर सारे प्रदेशो मे जाना पडता है। वे सारे प्रदेशो की सारी भाषाओ को तो सीख सकते। तब कार्य और प्रशासन के अनुरूप उस-उस प्रदेश मे जाने पर एक सम्पर्क भाषा के माध्यम से ही स्थानीय नागरिको से सम्पर्क कर सकते हैं। समय-समय पर भारत के विविध प्रदेशो के नागरिक एक ही समस्या को लेकर राजधानी मे तत्सम्बद्ध नेताओ, अधिकारियो से मिलते हैं। तब एक सम्पर्क भाषा के अभाव में न तो वे आपस में और न ही अधिकारियों से वार्तालाप करके अपने भाव स्पष्ट कर सकते हैं।

आज भारत मे पन्द्रह मान्यता प्राप्त भाषाए हैं। इन में से हिन्दी और सस्कृत को छोड कर अन्य सभी भाषाओ के नाम वहां अपने-अपने प्रदेश से जुडे हुए हैं, वहा उनका अधिकतर व्यवहार भी अपने प्रदेश में ही होता है। अत: उस भाषा द्वारा किसी भावना का प्रसार उस प्रदेश तक सीमित होता है। कोई प्रबुद्ध नागरिक भी इन सारी भाषाओं को सीख नही सकता और न ही वह इन के प्रयोग मे कुशल हो सकता है। इन सभी मान्यता प्राप्त भाषाओ मे से हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है, जो सारे देश मे बहुत जनसख्या द्वारा समझी और बोली जाती है। हिन्दी किसी विशेष क्षेत्र और वर्ग से जुडी हुई नहीं है। अत: यह सारे देश और देशवासियो की साझी भाषा है। यह भाषा भारतीय धर्म, सस्कृति, साहित्य, इतिहास से पूरी तरह से जुडी हुई है।

स्वाधीनता सग्राम के दिनो से ही हिन्दी भाषा भारत की राष्ट्रभाषा के रूप मे कार्य कर रही है। हिन्दी भाषियो की अपेक्षा अहिन्दी भाषा भाषी प्रान्तो के नेताओ ने ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रथम प्रतिष्ठित किया। भारतीय सविधान के निर्माताओं ने हिन्दी भाषा की साहित्यिक समृद्धि, भारतीयता से सम्बद्धता, भाषागत वैज्ञानिकता, भारतीयों की बहु सख्या द्वारा इस का प्रयोग आदि योग्यताओं को देख कर ही सविधान मे इस को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित किया। अब भारतीय लोकतन्त्र की राष्ट्रभाषा हिन्दी के द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भावना सरलता से सारे देश में प्रचारित की जा सकती है। अत: देश भक्ति, निष्ठा, एकता के प्रसार का हिन्दी भाषा सर्वथा सक्षम माध्यम है।

आज भारत की एकता और अखण्डता की दृष्टि से तथा भारतीय सविधान की भाषा विषयक मर्यादाओं के पालन के लिए जहां हिन्दी दिवस जोरशोर मनाना चाहिए, वहां हिन्दी प्रेमियो को अपनी भाषा के अपनत्व की दृष्टि से सर्व प्रथम राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव को उजागर करना चाहिए। इन भावनाओ और अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करने के लिए हम सब भारतीयो को भाषा सम्बन्धी व्यवहार मे अधिक से अधिक राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाना चाहिए। अपने व्यवहार में अपनी भाषा को अपना करके ही हम उसको अमर बना सकते हैं।

—

पंजाब के हिन्दी प्रेमियों से एक निवेदन

1 हिन्दी पढो, हिन्दी लिखो और बोलो।
2 अपने दिन प्रतिदिन के कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करो।
3 अपने घरो, दुकानों, कार्यालयो के नाम पट्ट पर हिन्दी मे अवश्य अपना और अपनी सस्था का नाम लिखो। किसी दूसरी भाषा मे भी लिखना चाहो, तो लिख सकते हो, परन्तु हिन्दी मे अवश्य होना चाहिए।
4 बैंक में अब खाता हिन्दी मे खोला जा सकता है। जो नया बैंक अकाऊट खोला जाये, वह हिन्दी में खोलें।
5 तार देते समय हिन्दी मे ही तार दें।
6 किसी विशेष कार्य के लिए कोई आवेदन पत्र देना हो, तो हिन्दी में दें। विशेष कर जब पजाब के राज्यपाल को कोई पत्र या आवेदन पत्र भेजना हो वह हिन्दी में भेजा जाए।
7 अपने बच्चो को प्राचीन इतिहास और महापुरुषो के जीवन की कहानिया हिन्दी मे पढाए।
8 अपनी सभाओं की कार्यवाही हिन्दी में लिखें।
9 पजाब के राज्यपाल महोदय को अपनी ओर से, अपनी सभा की ओर से, अपनी सस्था की ओर से यह पत्र अवश्य लिखें कि हिन्दी के स्थान पर अग्रेजी को महत्व न दिया जाए। हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा और राज भाषा है इसलिए पजाब मे पजाबी के साथ केवल हिन्दी चलनी चाहिए।
10 कोई व्यक्ति चाहे जितनी भी भाषाए पढना चाहे, पढ़े परन्तु हिन्दी पढना प्रत्येक के लिए अनिवार्य होना चाहिए।

—

सम्पादकीय—

हिन्दी दिवस मनाओ

14 सितम्बर को प्रत्येक वर्ष सारे भारत मे हिन्दी दिवस मनाया जाता है अब वह दिन फिर आ रहा है। हमारे देशवासी तो इसे मनाएंगे ही पजाब के हिन्दी प्रेमियों के लिए यह दिन मनाना अत्यन्त आवश्यक है आज के आर्य मर्यादा के प्रथम पृष्ठ पर पाठकगण उस परिपत्र को पढ़ लेंगे जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से अपने अधीन सभी आर्य समाजों को भेजा गया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी दिवस मनाना हमारे लिए क्यों आवश्यक है। यद्यपि बहुत समय से पजाब मे हिन्दी के महत्व को समाप्त करने का प्रयास हो रहा है। परन्तु इस समय विशेष रूप से हिन्दी को पजाब मे पूर्णतया समाप्त करने मे पजाब सरकार लगी हुई है। इसमे सन्देह नहीं कि पजाबी पजाब की राजभाषा है हम उसके विरोधी नहीं हैं। हमारे स्कूलों मे और कालेजो मे वह पढ़ाई जाती है। इसलिए जहां तक हिन्दी की पढ़ाई का सम्बन्ध है हमारे ऊपर कोई प्रतिबन्ध नहीं, सिवाए इसके कि सरकारी स्कूलों मे हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने की अनुमति नहीं दी जाती। जहां तक आर्य समाजी स्कूलों का सम्बन्ध है वहा हिन्दी को माध्यम बनाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। सबसे अधिक कठिनाई हमे सरकारी कामकाज मे आ रही है। वहा हिन्दी को पूर्णतया समाप्त करने की एक योजना बनाई गई है। पजाबी के साथ अंग्रेजी चलती है हिन्दी नहीं चलती। सरकार के जितने निमन्त्रण पत्र होते हैं उनमे कई केवल पजाबी और कई अंग्रेजी मे ही लिखे होते हैं। हिन्दी मे नहीं। पजाबी मे यह निमन्त्रण पत्र लिखने मे हमें कोई आपत्ति नहीं परन्तु उनके साथ हिन्दी क्यो न चले अंग्रेजी क्यो चले। मैं इसे अपने स्वाभिमान के लिए एक चुनौती समझता हू। अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं है। यह हम पर थोपी गई है। देश के विधान में जो राष्ट्रीय भाषाएं दी गई हैं उनमे अंग्रेजी का नाम नहीं आता फिर भी अंग्रेजी को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। पजाब मे यह सब कुछ एक राजनैतिक उद्देश्य को सामने रख कर किया जा रहा है। हिन्दी को समाप्त करने का अर्थ है हिन्दुओं को समाप्त करना। हमारे सब धार्मिक ग्रन्थ या तो सस्कृत मे है या हिन्दी मे, हमारे सिख भाईयो के सब धार्मिक ग्रन्थ गुरमुखी मे है। यदि पजाब मे गुरमुखी चलती है तो सिख धर्म पर कोई आच नहीं आ सकती। परन्तु यदि हिन्दी ही को समाप्त किया जाता है तो हम और हमारी आने वाली पीढ़िया अपने धार्मिक ग्रन्थो को नहीं पढ़ सकेंगी। इसके अतिरिक्त यह भी प्रश्न उठता है कि जब एक भाषा देश की राज भाषा है तो उसके महत्व को क्यों समाप्त किया जा रहा है। इसके पीछे एक राजनैतिक षड्यन्त्र है जिसे समझने की आवश्यकता है।

इसलिए मेरा पजाब के हिन्दी प्रेमियो से विशेषकर आर्य समाजियों से यह सविनय निवेदन है कि हिन्दी दिवस पर पूरे उत्साह के साथ हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए सकल्प लें कि पजाब मे हिन्दी को समाप्त करने का जो सरकारी प्रयास हो रहा है उसे विफल बनाने के लिए जो कुछ भी हो सकता है हम अवश्य करेंगे। हमें घर-2 यह सन्देश पहुचाना चाहिए कि हम हिन्दी बोलें, हिन्दी पढ़ें और हिन्दी लिखें। पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इस प्रदेश मे कुछ वह लोग भी हैं जो अपने आप को एक अलग कौम कहते हैं और पिस्तौल के द्वारा इस अलग कौम के लिए एक अलग प्रदेश लेने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपने व्यवहार से यह प्रमाणित कर दें कि हम विशाल भारत राष्ट्र के ही एक अटूट अग है और उसके साथ अपना सम्बन्ध सुदृढ़ बनाने के लिए हम देश की राष्ट्रभाषा को अधिक से अधिक अपनाएंगे और जो कुछ भी हम से होगा उसके लिए करेंगे।

आर्य समाज का इस दिशा में एक विशेष कर्तव्य है। महर्षि दयानन्द जी ने हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया था। उनका यह आदेश है कि प्रत्येक आर्य समाजी अधिक से अधिक हिन्दी को प्रोत्साहन दे और अपने व्यवहार मे उसका प्रयोग करे। महर्षि दयानन्द ने गुजराती होते हुए स्वय हिन्दी को ही अपनाया और अपने उपदेश हिन्दी मे ही दिया करते थे। हमे इस बात पर भी गर्व है कि हमारे देश के सर्वोच्च न्यायालय ने भी यह निर्णय दे रखा है कि आर्य समाजियो की भाषा हिन्दी है। इसलिए हिन्दी को प्रोत्साहन देना हमारे लिए और भी आवश्यक है। इसीलिए मैं पजाब के सब आर्य समाजियो से निवेदन करना चाहता हू कि 14 सितम्बर को पूरे उत्साह के साथ हिन्दी दिवस मनाए। किसी कारण वश यदि कुछ समाजें 14 सितम्बर को न मना सकें तो वह 13 सितम्बर को मनाए। जो सभाए की जाए उनमे आर्य समाजियो के अतिरिक्त सनातन धर्मी, जैनी और हिन्दी प्रेमी सिखो को भी निमन्त्रित करना चाहिए। सिखों को विशेष रूप से यह बताने की आवश्यकता है कि श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज की मातृ भाषा हिन्दी थी उनके साहित्य को पढ़ने के लिए भी हिन्दी को पढ़ना आवश्यक है। 13 या 14 सितम्बर जिस दिन भी हिन्दी दिवस मनाया जाए उसमे सब मिलकर यह सकल्प लें जो आज के आर्य मर्यादा मे प्रकाशित किया जा रहा है। हमने छोटे 2 विज्ञापन भी प्रकाशित कराए हैं जो आर्य समाजें चाहे वह मगवा सकती है वह अधिक से अधिक सख्या मे लोगो मे बाटने चाहिए।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का चुनाव

आर्य समाज दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना पजाब की उन बड़ी-2 आर्य समाजो मे से एक है जिस पर की हम गर्व कर सकते हैं। आर्य समाज की गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए यह आर्य समाज कभी किसी से पीछे नहीं रही परन्तु यह अत्यन्त दु खदायी स्थिति है कि पिछले कुछ समय से उसके सदस्यो मे कुछ मन मुटाव हो गया था फिर भी आर्य समाज का काम सुचारु रूप से चलता रहा। उसका वार्षिक अधिवेशन 6 सितम्बर को हुआ है। आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग के एक प्रतिष्ठित सदस्य श्री अमृतलाल जी बजाज सभा की ओर से वहा गए थे ताकि सर्वसम्मति से कोई चुनाव हो सके। उनके प्रयास पर भी ऐसा नहीं हो सका और श्री नरेन्द्र भल्ला इस समाज के प्रधान चुने गए। मै उन्हे इस पर बधाई देता हू। वह एक आर्य समाज के पुराने और कर्मठ कार्यकर्ता हैं मेरा यह विश्वास है कि उनके नेतृत्व मे आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना और भी अधिक प्रगति करेगा। इसी के साथ मेरी उनसे एक प्रार्थना भी है कि वह सब सदस्यो को साथ लेकर चलें और जो मतभेद पैदा हो गए हैं उन्हें दूर करके अपनी आर्य समाज को चलाने का प्रयास करें, मै जानता हू कि वह बहुत उदार और उच्च चरित्र के व्यक्ति हैं। आर्य समाज के लिए उनके दिल मे बहुत श्रद्धा है। मैं चाहता हू कि उनके प्रधान निर्वाचित होने के साथ-2 ही आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के पुराने सभी मतभेद दूर हो जाए और पिछला सारा विवाद और आपसी सघर्ष समाप्त हो जाए और इस आर्य समाज के इतिहास मे एक नया अध्याय प्रारम्भ हो और वह आर्य समाज पजाब की और आर्य समाजो के लिए सगठन, एकता, प्रेम और सहयोग का एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करे जिसे देख कर दूसरी आर्य समाजें भी अपने सगठन को प्रभावशाली बना सकें। आज सबसे अधिक आवश्यकता एकता और शक्तिशाली सगठन की है। आशा है कि श्री नरेन्द्र भल्ला मेरे इस निवेदन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना मे एक ऐसा सगठन बना कर दिखाए गे जो पजाब की दूसरी आर्य समाजो के लिए भी एक उदाहरण बन जाए।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज और राजनीति

ले—पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन 145।4 सेंट्रल टाउन जालन्धर

"आर्य मर्यादा" के मान्य सम्पादक श्री वीरेन्द्र जी ने इस विषय पर आर्य जनो से अपने विचार प्रगट करने का निर्देश दिया है। इसी सम्बन्ध में मेरा निम्न निवेदन है।

आर्य समाज एक धार्मिक सगठन है। उसके अपने निश्चित सिद्धान्त हैं, आदर्श हैं, परम्पराए हैं। कार्य कलाप भी विशिष्ट हैं। अत आर्य समाज की राजनीति उन सबसे प्रभावित होगी। आर्य समाज का राजनीति पक्ष ठीक वैसा ही होगा जैसा कि अकाली दल का है या मुस्लिम लीग का। अर्थात एक धर्म विशेष के लोगो के हितो की रक्षा इसका मुख्य उद्देश्य होगा। यह एक स्पष्ट तथ्य है।

कम्युनिस्ट दल, समाजवादी या कांग्रेस का आधार विशेष आर्थिक अथवा राजनीतिक विचार हैं। इन सगठनो मे धार्मिक बन्धन नही अत भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग इन सगठनो में मिलकर कार्य कर सकते हैं। एक विस्तृत विचार धारा बनती है। विस्तृत क्षेत्र बनता है। ऐसा धार्मिक सगठनो मे सम्भव नही।

एक और विचारणीय बात यह है कि आर्य समाज का कोई एक आर्थिक या राजनीतिक निश्चित चिन्तन नहीं। आर्य समाजी प्रजातन्त्र को भी मान सकता है, समाजवाद को भी। भिन्न-2 आर्थिक इकाईयो का सघर्ष, अमीरो-गरीबो का, मजदूरो मालिको का, जमीदारो तथा खेती मजदूरो का, इन सबके विषय में आर्य समाज का कोई निश्चित विचार या मान्यता नहीं।

मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि आर्य समाज के राजनीतिक सगठन का आधार राजनीतिक अथवा आर्थिक आदर्श न होकर नैतिक या धार्मिक आदर्श हो सकता है। 'आर्य मर्यादा' के जन्माष्टमी पर निकले अक मे श्री आत्माराम जी आर्य ने इन भावनाओ को स्पष्ट शब्दो मे दिया है —

"हिन्दू राज अमर रहे, यही एक समाधान है भारत मे सब लोगो का और प्यारे देश की सुरक्षा और अखण्डता का।"

एक बात आर्य समाज की बनावट के बारे मे निवेदन करना चाहता हू। आर्य समाज के दो मुख्य सगठन हैं, एक शिक्षा विभाग, दूसरा गुरुकुल विभाग। एक की आर्य प्र नि सभा दूसरी प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा। इन दोनो की कार्य विधि तथा कार्य मूल्यो में पर्याप्त अन्तर है, यद्यपि सिद्धान्तों की दृष्टि से विशेष भेद नहीं। प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का मुख्य व्यवसाय डी ए वी सस्थाओ का सचालन है। उनकी डी ए वी प्रबन्धकर्त्री सभा का मुख्य सगठन है, प्रादेशिक सभा अपेक्षा कृत उपेक्षित अग है। इसका प्रभाव उस आर्य समाज विभाग के सम्पूर्ण कार्य कलाप पर पड़ता है। सस्थाओ आदि मे पूर्णतया व्यस्त होने के कारण इस विभाग की रुचि न तो सामाजिक आन्दोलनो मे रही है और न ही राजनीति मे। प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र "आर्य जगत" राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के विचारो के बहुत समीप है, विशेष कर श्री बलराज मधोक तथा श्री अडवानी की विचारधारा के।

थोड़ी विसगति तब होती है जब डी ए वी सस्थाओ के विशेष उत्सव होते हैं। उनके लिए वे प्राय सरकार से सम्बद्ध कांग्रेस के नेताओ के सहयोग के प्रार्थी होते हैं।

इस परिस्थिति मे आर्य समाज सम्बन्धी आन्दोलनो का मुख्य आधार प्रतिनिधि सभाए ही हैं या आर्य समाज का वह विभाग जिसे गुरुकुल विभाग कहा जाता है। प्रारम्भ से ही आर्य समाज के इस मुख्य विभाग की रुचि प्रचार कार्य तथा देश हित के आन्दोलनो मे रही है। वस्तुत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा उसके आधीन प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाए ही आर्य समाज के विस्तृत कार्य क्षेत्र का आधार है।

राजनीति का क्षेत्र आर्य समाज के लिए नया नही है। महर्षि दयानन्द से लेकर वर्तमान काल तक आर्य समाज के मान्य नेता देश के प्राय सभी आन्दोलनो मे भाग लेते रहे हैं। क्रान्तिकारी आन्दोलन अथवा गाधी जी के अहिंसात्मक सत्याग्रह दोनो मे आर्य वीरो ने अपनी सख्या से कही अधिक महत्व का कार्य किया है। यह तो सूर्य के प्रकाश की तरह प्रत्यक्ष है।

जो नया प्रश्न उठ खड़ा है वह है आर्य समाज का अपना अलग राजनीतिक मच या राजनीतिक सगठन बनाने का। इसके सम्बन्ध मे कुछ बातों पर अवश्य विचार होना चाहिए। एक अलग, बिल्कुल अलग विचारधारा या आदर्श के लिए अलग सगठन की आवश्यकता होती है। आर्य समाज की दृष्टि से दो मुख्य पक्ष हैं। एक हिन्दू हितो का सरक्षण दूसरा राष्ट्रीय हितो का सरक्षण राष्ट्र की नई परिभाषा मे विभिन्न धर्मों के, सस्कृतियो के, भारत मे रहने वाले सब लोग आते हैं।

यदि आर्य समाज के राजनीतिक सगठन के पक्षपाती हिन्दू हितो की रक्षा अपना अधिक महत्व का कार्य समझते हैं तो इस ही कार्य मे आगे लगे हुए अनेक सगठनो दलो को ध्यान में रखना होगा। वीर वर सावरकर जी तथा भाई परमानन्द जी की हिन्दू सभा एक पुराना सगठन है। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ तथा विश्व हिन्दू परिषद् दो नए अपेक्षा कृत व्यापक सगठन हैं। छोटे-2 सगठनो का तो अन्त ही नहीं।

क्या आर्य समाज का राजनीतिक मच इन से कुछ अलग और विशिष्ट आदर्शों को लेकर चलना चाहता है—इनके साथ मिल कर नही चल सकता ?

राष्ट्रीय दृष्टि से—नई राष्ट्रीय दृष्टि से प्रजातन्त्र, समाजवाद तथा साम्यवाद के आधार पर कांग्रेस से लेकर साम्यवादी दलो तक न जाने कितने सगठन हैं। उनमे कम्युनिस्ट पार्टी को छोड कर सबमे आर्य समाजी कार्यकर्त्ता काम कर रहे हैं। मैं समझता हू कांग्रेस तथा अन्य समाजवादी दलो मे कार्य करने से आर्य समाज के विचारो मे कोई विरोध नही होता। तो क्या आर्य समाज का राजनीतिक मच इन सस्थाओं का सहयोग चाहेगा।

सक्षप में यह कहा जा सकता है कि यदि अलग आर्य समाज का मच बनाना है तो इन बातो का निश्चय तो अवश्य करना होगा

1 इस अलग मच के लिए कौन से पृथक् आदर्श, सिद्धान्त या मान्यताए होगी।

2 इस विशिष्ट मच के लिए क्या अपेक्षित जन-समूह तथा अन्य साधन जुटाए जा सकेंगे या नही।

3 हिन्दू हित के लिए या राष्ट्रीय हित के लिए काम कर रहे इतने सारे सगठनो से अलग रह कर यह नया मच क्या अपनी आवश्यकता, महत्व या सफलता को प्रदर्शित करने मे समर्थ हो सकेगा।

बात को समाप्त करने से पहले आर्य समाज के इतिहास की दृष्टि से एक विचार देना चाहता हू। जहा तक मै समझ पाया हू महर्षि दयानन्द का मूल आन्दोलन हिन्दू धर्म या जाति तक ही सीमित न था। महर्षि को देश से प्रेम अवश्य था, भारतीय परम्पराओं के वे प्रशसक थे पर धर्म विवेचन में वे सब धर्मों को एक नजर से देखते थे, सत्य के, वैदिक सत्य के पक्षपाती थे। यह भावना उनके प्रथम शिष्यों प. गुरुदत्त तथा प लेखराम जी आदि तक रही। पर परिस्थितियो के कारण आगे चल कर यह दृष्टिकोण क्रमश: बदलता गया। धीरे धीरे आर्य समाज का लक्ष्य हिन्दू धर्म अथवा जाति बन गया। हिन्दू धर्म की कुरीतियो का सशोधन करना तथा हिन्दू धर्म की अन्य धर्मों के आक्रमण से रक्षा करना यही आर्य समाज के कार्य का मूल मन्त्र बन गया। मानवीय दृष्टिकोण गहन पड़ गया।

इसलिए सम्भवत: अब जो आर्य समाज का अलग राजनीतिक मच बनेगा उसका भी यही सुर होगा। यह उद्देश्य भी प्रशसनीय है। आर्य समाज के प्राय: नेता इसी दिशा में कार्य कर रहे हैं। इस दिशा मे भी वर्तमान परिस्थितियो मे बहुत कुछ किया जा सकता है।

जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया इस क्षेत्र मे आगे भी अनेक पुराने और नए सगठन कार्य कर रहे हैं। जनता इस बात की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगी कि आर्य समाज का नया राजनीतिक मच या सगठन कौन से नए आदर्श, कार्यक्रम अथवा लक्ष्य लेकर सामने आता है। अन्यथा पुरानी कड़िया तो चल ही रही हैं।

राष्ट्र चिंतन

ले —स्व स्वामी वेदानन्द तीर्थ

भारत स्वतन्त्र हो गया है। जैसी स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उसके लिए बहुत बड़ा शुल्क देना पड़ा है। असख्यात जन सूली पर चढ़े हैं, जेलो में सड़े हैं, गोलियां खाई हैं। कई ग्रामो को चिन्ह तक मिटा दिया गया। स्वतन्त्रता देवी सचमुच बहुत बड़ी बलि लिया करती है। स्वतन्त्रता मिली, किन्तु भारत अखण्डित न रहा। भारत का बहुत बड़ा भू भाग भारत के अग से काट दिया गया। लाखो निरीह निर्दोष मनुष्य-बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष किसी अपराध के बिना मौत के घाट उतार दिये गये यह क्यो हुआ। आज इसकी विवेचना करना उपयुक्त नही है। भावी तटस्थ ऐतिहासिक कदाचित इसका विश्लेषण कर सकें। किन्तु इस बात के कहने में कुछ दोष नही कि लगभग एक सहस्र वर्ष से हम एक भयकर भूल करते आ रहे थे, उसका यह परिणाम हुआ है।।

यदि वर्तमान काल मे भारत से पृथक् किया गया भू-भाग वापिस न लिया जा सका, तो आगे आने वाली सन्तान भारत के इस स्वरूप को भूल जायेगी, इस खण्डित देश को ही सम्पूर्ण भारत मान लेगी। उसे यह कभी सूझेगा ही नहीं कि भारत इससे कहीं बहुत बड़ा था। जैसे आज के साधारण भारतीय को यह ज्ञात नहीं कि आज से सहस्रों वर्ष पूर्व भारत बहुत अधिक विस्तृत था।

क्या 'आर्य' हिन्दू नहीं

लेखक—श्री मालेराम आर्य, आर्य समाज, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

"आर्य" हिन्दू नहीं हो सकता क्योंकि "आर्य" शब्द की परिभाषा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्योद्देश्य रत्नमाला क्रम स 40 में इस प्रकार लिखी है—"आर्य" जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्य-विद्यादिगुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश मे सब दिन से रहने वाले हैं, उनको "आर्य" कहते हैं। इसी प्रकार स 42 में दस्यु (अनार्य) अर्थात् अनाड़ी, आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक डाकू, चोर, हिंसक जो कि दुष्ट मनुष्य है, वह दस्यु कहाता है। जैसे "आर्य" श्रेष्ठ और "दस्यु" दुष्ट मनुष्य को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हू ? (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश क स 29।)

हिन्दू शब्द हमारी वैदिक सस्कृति का नहीं है। यह विदेशी भाषा अरबी तथा फारसी का है जिसके अर्थ काला, काफिर और चोरादि होते हैं, जो दस्यु (अनार्य) शब्द का पर्यायवाची है, आर्य शब्द का नहीं। इसलिए "आर्य" हिन्दू नहीं हो सकता। और आगे देखिए महर्षि दयानन्द महाराज क्या कहते हैं। "आर्यो ब्राह्मणकुमार्यो"। (पाणिनि सूत्र) राजा भागीरथ के समय ब्रह्मचारी और ब्राह्मण का नाम "आर्य" था। ऐसी व्यवस्था होते हुए हमारे देश का नाम, आर्य स्थान "आर्य शब्द" होना चाहिए सो उसे छोड न जाने यह "हिन्दुस्तान" नाम कहा से निकला ? भाई लोगो मत। हिन्दू शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि और हिन्दुस्तान कहने से काले, काफिर, चोर लोगो की जगह अथवा देश, ऐसा अर्थ होता है, तो भाई इस प्रकार का बुरा नाम तुम क्यो ग्रहण करते हो ? और "आर्य" अर्थात् श्रेष्ठ अथवा अभिजात इत्यादि। और आर्यवर्त कहने से ऐसो का देश अर्थात आर्यावर्त्त का अर्थ श्रेष्ठो का देश, ऐसा होता है। सो भाई ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यो स्वीकार नही करते ? क्या तुम अपना मूल का नाम भी भूल गये ? हा ! हम लोगो की यह स्थिति देख कर किस के हृदय को क्लेश न होगा, सब ही को होगा। अस्तु सज्जन जन ! अब हिन्दू इस नाम का त्याग करो और आर्य तथा आर्यावर्त्त इन नामो का अभिमान करो। गुण भ्रष्ट हम लोग हुए, परन्तु नाम भ्रष्ट तो हमे न होना चाहिए। ऐसी आप सब से मेरी प्रार्थना है, (उपदेश मजरी व्याख्यान न 3 स्वामी दयानन्द सरस्वती)

इस ऊपर लिखे व्याख्यान स हिन्दू शब्द के प्रति महर्षि के द्वेष (दु,ख) का पता चलता है। इस के अपनाने को वह एक कुरीति समझते थे, जैसे मूर्ति पूजा, अन्धविश्वास और दूसरी रूढ़िया जो भारतीय व्यक्तियों में प्रचलित थी। इस लिए ऋषि ने जहा दूसरी कुरीतियो का खण्डन किया वहा "हिन्दू" शब्द का भी खण्डन किया। इस विषय मे उपदेश मजरी का व्याख्यान न 4 भी देखने योग्य है। इतना होते हुए भी अब तक आर्य समाजी विद्वान अपने लेखो मे आर्य (हिन्दू) लिखते हैं और तथा आर्यत्व को ओझल करके हिन्दू तथा हिन्दुत्व का दम भरते हैं, वह गुरुवर देव दयानन्द की प्रार्थना और मान्यता के विरुद्ध आचरण करते हैं। प्यारे ऋषि ने हिन्दू शब्द प्रयोग करने का बहिष्कार किया है, फिर भी आर्य समाजी विद्वान, पत्रकार और लेखक ऋषि सिद्धान्तों की अवहेलना करके अपनी मनमानी करते हैं। यह उनकी भूल है जो वेद के प्रतिकूल है क्योंकि यह शब्द आर्यों के धर्म शास्त्रो का नहीं है। कोष्ठ में सर्वदा समानार्थक ही शब्द लिखा जाता है। हिन्दू शब्द का समानार्थक शब्द दस्यु (अनार्य) है जिसको आप हिन्दू (अनार्य) या दस्यु (हिन्दू) लिख सकते हैं। क्या कोई वैदिक विद्वान् आर्य (अनार्य) आर्य (दस्यु) और सज्जन (दुर्जन) लिखना स्वीकार करेगा ? कदापि नही। इस प्रकार लिखना अनुचित है क्योंकि इन शब्दो के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं, सो आर्य (हिन्दू) लिखना सार्थक नही, उचित नही, भ्रम मूलक है और त्यागने योग्य है। अत मेरा सभी आर्य समाजी विद्वानो, लेखको और पत्रकारो से नम्र निवेदन है कि वह महान दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तो को मूल रूप में दृढ़तापूर्वक अपनाए और अपने लेखो व उपदेशो मे हिन्दू शब्द का खण्डन और आर्य शब्द का मण्डन सर्वत्र करें और इस श्रेष्ठ शब्द "आर्य" जो वेदो की धरोहर है, को उपयोग मे लावें। परमेश्वर आर्यों का आर्यत्व ग्रहण करने और हिन्दुत्व को छोड़ने की शक्ति, साहस और सद्बुद्धि प्रदान करें जिससे अपने धर्म, सस्कृति और सभ्यता का प्रचार प्रसार होवे। आर्य नेता असत्य को छोड कर सत्य को धारण करें, यही वेद का उपदेश और ऋषि का सन्देश है, जो हमारे लिए शिरोधार्य है। इस में कोई शक नही।

शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी चल बसे

यह समाचार आर्य जगत मे बड़े दुख के साथ पढ़ा जाएगा कि आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान्, प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी वयोवृद्ध सन्यासी अमर स्वामी जी महाराज जो चिरकाल से रुग्ण चले आ रहे थे। जिन्हें गले का कैंसर हो गया था। डाक्टरो ने उन्हें बचाने का बड़ा प्रयास किया, परन्तु उन्हें बचाया न जा सका वह चल बसे।

स्वामी जी का आर्य जगत मे अपना एक विशेष स्थान था। उन्होने अनेको शास्त्रार्थ जीते थे। अपना सारा जीवन उन्होने आर्य समाज के लिए अर्पण कर दिया था।

7-9-87 को उनका अन्तिम सस्कार गाजियाबाद मे कर दिया गया। उन के चले जाने से आर्य समाज मे जो स्थान रिक्त हुआ है उसे कभी भरा नही जा सकेगा।

हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से जहा उन्हे अपनी श्रद्धाजलि भेंट करते हैं वहा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह उन्हें सद्गति प्रदान करें और हम सब आर्य बन्धुओ को ऐसी शक्ति, सामर्थ्य और बुद्धि प्रदान करे कि हम उन के जीवन से प्रेरणा लेकर उन्ही की तरह आर्य समाज की सेवा कर सकें और उन के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने मे समर्थ हो सके।

—महामन्त्री

गुरुकुल करतारपुर में पधारें

आप के प्रिय गुरुकुल, गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर) का वार्षिकोत्सव 20 सितम्बर से 27 सितम्बर तक मनाया जा रहा है। जिस मे उच्चकोटि के विद्वान भाग ले रहे हैं। पजाब के एक मात्र गुरुकुल करतारपुर का अपना पूरा-2 सहयोग प्रदान करें। स्वय पधारें और अपने इष्ट मित्रो को अवश्य साथ लावें।

—चतुर्भुज मित्तल-महामन्त्री



आर्य विद्या परिषद् पजाब की बैठक को 30-8-87 को लुधियाना मे सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, साथ मे बैठे हैं, श्री सत्यव्रत शर्मा सभा महामन्त्री और श्री धर्म प्रकाश जी दत्त प्रस्तोता तथा नीचे बैठक में पधारे अन्य कार्यकर्त्ता दिखाई दे रहे हैं।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर

सभी आर्य सज्जनो को यह जानकर हर्ष होगा कि उत्तरी भारत मे आर्य जगत् की एकमात्र उपदेशक, प्रचारक तथा पुरोहितो का निर्माण करने वाली संस्था दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा) प्रति वर्ष निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है, आज से तीन वर्ष पूर्व यहा छात्रो की सख्या 30 थी, गत वर्ष बढ़ कर 38 हो गई थी, इस वर्ष के सत्र मे सख्या 54 हो गई है, जिसमे 15 के लगभग छात्रो को हमने विवशता के कारण प्रवेश देने से इन्कार कर दिया, क्योकि इस समय संस्था मे और अधिक छात्रो के लिए कमरे, तख्त, बर्तन आदि का सर्वथा ही अभाव है, आप सबको यह ज्ञात ही है कि यह संस्था सर्वथा ही निशुल्क है, यहा छात्रो से भोजन, निवास, पुस्तक, दूध तेल, साबुन आदि आवश्यक वस्तुए बिना शुल्क के ही देकर उपदेशक के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, शुल्क के नाम पर एक एक भी पैसा नहीं लिया जाता, इस वर्ष हमारी संस्था मे चार विदेशी छात्र भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनमे दो मारीशस के तथा दो फीजी के हैं, इनमे दो गत वर्ष प्रविष्ट हुए थे और दो इस वर्ष हुए हैं, इस युग मे उपदेशको की कितनी आवश्यकता है? यह भी सभी जानते हैं, तथा इस महगाई के युग मे इतने छात्रो का पालन कितना दुःसाध्य है, यह भी किसी से छिपा नहीं है, इस संस्था मे शिक्षा प्राप्त कर उपदेशक बन हमारे स्नातक सम्पूर्ण देश मे प्रचार कार्य कर रहे हैं, आर्य जगत् के एक पुराने अनुभवी उपदेशक के शब्दो मे आर्य समाज का उपदेशक वर्ग ही देश की बागडोर सम्भालेगा, 1960 से आज तक के रिकार्ड के अनुसार इस संस्था मे इतने छात्र कभी नहीं रहे हैं। अत मेरी समस्त आर्य जनता एव आर्य सज्जनो से हार्दिक प्रार्थना है कि इस संस्था की उपयोगिता को अनुभव करते हुए अधिक से अधिक दानरूप मे सहयोग करने की कृपा करें, जो सज्जन अन्न, सब्जी, दूध, तेल, साबुन, वस्त्र, सामग्री, यज्ञ के निमित्त घृत इत्यादि जो भी दे सकते हों देने की कृपा करें। आपके इस पवित्र सहयोग से हरियाणा, पजाब, यू पी मध्य प्रदेश महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, बगाल, बिहार, उडीसा इत्यादि भारतीय प्रदेशो तथा विदेश से आए छात्र वैदिक सिद्धान्तो की शिक्षा ग्रहण कर वैदिक धर्म के प्रचार की ध्वजा को देश-विदेश मे फहरा कर ऋषि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को मूर्त रूप देने मे अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकें। आशा है कि उदारमना दानी सज्जन इस संस्था को अपना भरपूर सहयोग देंगे।

सत्यप्रिय शास्त्री एम ए साहित्याचार्य
प्राचार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

देहरादून मे वेद प्रचार

आर्य समाज देहरादून मे 9 अगस्त को श्रावणी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। विशेष यज्ञ के अनन्तर वेद की महिमा पर प देवव्रत शास्त्री का सारगर्भित प्रवचन हुआ।

दिनाक 10 अगस्त से 23 अगस्त तक नगर के विभिन्न क्षेत्रो मे लोगो के घरो पर प्रात कालीन सत्सगो का आयोजन होता रहा रविवार 16 अगस्त को आर्य समाज मन्दिर मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया।

इसके अतिरिक्त न्यू फॉरेस्ट मे भी वेद प्रचार पखवाडे का आयोजन आर्य समाज की ओर से किया गया जिसमे विभिन्न गृहों पर 15 दिनो तक सत्सगो का आयोजन किया जाता रहा। यज्ञो मे [illegible] श्री [illegible] शर्मा ने [illegible]। पखवाडे का उद्घाटन भाषण श्री देवव्रत शास्त्री ने किया और समापन भाषण श्री यशपाल आर्य का रहा। बीच के दिनो मे मास्टर दलीप सिंह जी के प्रवचन चलते रहे।

वेद प्रचार की तीसरी शृंखला मे राजेन्द्रनगर मे सप्ताह भर का कार्यक्रम चलता रहा जिसमे मास्टर दलीपसिंह जी, श्री नैनसुख वर्मा, श्री देवव्रत शास्त्री और प सत्यव्रत जी के प्रवचन होते रहे। इसका समापन रविवार दिनाक 23 अगस्त को हुआ।

—दलीपसिंह-प्रचार प्रमुख

वेद पढ़ें हम तथा पढ़ाएं

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

वेद पढ़ें हम, तथा पढ़ाए,
वेदो का हम करें प्रचार।
वेदो के पथ पर चलने को—
उद्यत जिससे हो ससार।

ऋषि मुनियो के निर्देशो का,
जीवन मे करके अनुपालन।
आर्य बनें हम तथा बनाए—
आर्य जगति के सारे जन।

मानवता के पद चिन्हों पर,
चले निरन्तर वसुन्धरा।
मानवता के मूल तत्वो से,
पूज्य बने यह दिव्य धरा।

दानवता के तत्व सभी जो,
विस्तृत हैं भू पर अविराम,
अत विलग हो इस धरती से,
बने धरि भी ललित ललाम।

ज्ञान प्रदीप जले घर-घर मे,
स्वर्ग सदृश हो सतत स्वदेश।
वैदिक धर्म ध्वजा लहराए,
यही आर्यों का सन्देश।

जालन्धर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व

16 अगस्त 1987 दिनाक रविवार को स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ की ओर से श्री कृष्ण जन्माष्टमी आर्य समाज मन्दिर मे बडी धूमधाम से मनाई गई। जिसमे श्री गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर के विद्वान् श्री नरेश कुमार जी शास्त्री ने कृष्ण जन्माष्टमी पर अपने विचार बडे अच्छे ढग से जनता के सामने रखे, एव गुरु विरजानन्द स्मारक के विद्यार्थियो ने भजनो आदि द्वारा अपने विचार प्रकट किए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा ने भी भाग लिया। उपस्थिति आशाजनक रही। —[illegible] मन्त्री

वैदिक साधन आश्रम गुरदासपुर का वार्षिक उत्सव

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी वैदिक साधन आश्रम गुरदासपुर का वार्षिक उत्सव 13 सितम्बर से 20 सितम्बर तक बडे समारोह से मनाया जा रहा है। जिसमे उच्चकोटि के विद्वान् श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री एम ए आचार्य दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय हिसार। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर, श्री प निरञ्जनदेव जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री रामनाथ जी शास्त्री सगीत रत्न भजनोपदेशक, श्री प विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक प्रादेशिक सभा। इनके अतिरिक्त और भी कई विद्वान् उपदेशक, गायनाचार्य तथा सन्यासी, वानप्रस्थी आदि पधार रहे हैं। धर्म प्रेमी सज्जन समय पर पधार कर धर्म लाभ उठाए।

—स्वामी प्रकाशानन्द
अध्यक्ष वैदिक साधनाश्रम

आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर के लिए एक सुयोग्य हिन्दी टाईपिस्ट और एक अनुभवी क्लर्क की आवश्यकता है जो हिन्दी मे एकाऊट कर सके और एकाऊट का पूर्ण ज्ञान रखता हो। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा। शीघ्र मिलें या पत्र व्यवहार करें।

—ब्रह्मदत्त शर्मा-महामन्त्री

पहले हम आर्य हैं ?

लेखक—श्री अखिल कुमार जी गुप्ता
दयानन्द मठ दीनानगर

काश ! वह दिन कब देखने को मिलेगा, जब सम्पूर्ण विश्व की हिन्दू संस्थाएं एक मंच पर एकत्रित होकर एक स्वर में यह कहेंगी कि—"पहले हम आर्य हैं।" दुनिया के हालात को देख कर हमें इस बात की अत्यन्त आवश्यकता महसूस करनी चाहिए। चाहे वह आर्य समाज हो, या हो ब्रह्म समाज, पौराणिक, जैन, बौद्ध और अन्य सारी हिन्दू संस्थाएं सभी को एक मत होकर एक मन्तव्य को अपना लक्ष्य बिन्दु बना कर ही कार्य को सम्पन्न करना चाहिए। एक दिन ऐसा भी था कि हम 'जगत गुरु' कहलाते थे। भारत सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था। सारा विश्व भारत को शान्ति तथा ज्ञान वैभव का भण्डार मानता था। और आज हम पर इस कदर कहर ढाया जा रहा है कि न तो कोई हमारा देश है, न कोई वेश है, न कोई निश्चित संस्कृति है, न एक धर्म है, न एक धर्म पुस्तक है। विदेशी शक्तियां हमें इस कदर मिटा देना चाहती हैं कि हम एक दिन किसी भी योग्य न रह जाएं। वह दिन भूल गए जब हम से लोग सीखने आते थे, हमारी शिक्षा का बेहद इज्जत और आदर श्रीरोधार्य करते थे। हमारी संस्कृति तो सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति की आत्मा मानते थे। आत्मा की परिभाषा करते हुए योगीराज श्री कृष्ण जी लिखते हैं—

> नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
> न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

हमारी आर्य संस्कृति अजर अमर है। कौन अपनी संस्कृति से इसे मुका सकता है ? कोऽपि नैव कदापि नैव। विदेशियों ने इसको मिटाने के लिए भरपूर कोशिश की। मगर बिगाड़ कुछ न सके। कहा भी है—"सत्य के मूल को आसानी से उखाड़ा नहीं जा सकता।" बल्कि यूं कहना चाहिए कि 'सत्य के मूल को उखाड़ा ही नहीं जा सकता।" इसलिए ही तो किसी कवि ने कहा है कि—

> "यूनान मिस्र रोमां सब मिट गए जहां से।
> मगर बाकी है अभी नामो निशां हमारा॥"

अच्छी संस्कृति होते हुए भी हम क्यों भटक गए ? क्यों कि हमने अपना आचरण छोड़ दिया है। वैसे तो आर्य शब्द की परिभाषा सबने अच्छी ही की है पर मेरे मस्तिष्क में यही उपजता है कि "वेदानुकूल मर्यादित कार्यों को जो सम्पन्न करता है उसे हम आर्य कहते हैं। वेद हे हमारे पुराने ग्रन्थों में हेर फेर कर दूषित कर दिया गया। ... अपना प्रकाशकारी जीवन छोड़कर दूसरों से प्रभावित होने लगे। उसी समय से हमारा पतन शुरू हुआ आज हमारा देश पाश्चात्य संस्कृति के प्रवाह में प्रवाहित हो रहा है। प्रक्षेप सम्बन्ध में एक प्रमाण मैं श्री स्वामी विद्यानन्द जी की पुस्तक—"आर्यों का आदि देश" से दे रहा हूं। जो इस प्रकार है—

संस्कृत के यूरोपियन विद्वानों में लार्ड मैकाले द्वारा नियुक्त प्रोफेसर मैक्समूलर सर्वोपरि माने जाते हैं। उनके वेद के अनुसन्धान तथा अनुवादकार्य में उनका क्या उद्देश्य था, यह उन्होंने अपनी पत्नी के नाम लिखे पत्र में स्पष्ट किया है—

"मेरा यह संस्करण तथा वेद का अनुवाद भारत के भाग्य को दूर तक प्रभावित करेगा। यह उनके धर्म का मूल और उन्हें यह दिखाना कि यह मूल कैसा है, गत तीन हजार वर्षों में इससे उत्पन्न होने वाली सब बातों को मूल सहित उखाड़ फेंकने का एक मात्र उपाय है।" भारत सचिव के नाम 16 दिसम्बर 1868 को लिखे अपने पत्र में मैक्समूलर ने लिखा—

"भारत का प्राचीन धर्म अब नष्ट प्राय है। अब यदि ईसाइयत उसका स्थान नहीं लेती, तो इसके लिए कौन दोषी होगा ?" मैक्समूलर के प्रयासों की सराहना करते हुए उसके घनिष्ट मित्र मिस्टर ई बी पुसे ने अपने पत्र में उसे लिखा—"आपका कार्य भारतीयों को ईसाई बनाने के प्रयास में नवयुग लाने वाला होगा।"

जिसने हमारे ग्रन्थों को दूषित किया। आज हम उसी की नकल कर रहे हैं। यह कितनी शर्मनाक बात है। आज हम सुबह शाम सन्ध्या हवन की जगह वीडियो, सिनेमा, टेलीविजन से चिपके रहते हैं। आजकल बेटा बाप की बात मानने के लिए तैयार नहीं है। बल्कि जवाब भी असभ्य उत्तर देता है। अगर उसे अच्छी पुरानी बातें सुनाई जाएं तो वह यह जवाब देता है कि डैडी जी आप तो हर समय पुरानी बातों का ही रट्टा लगाते रहते हैं। दुनिया चांद पर पहुंच रही है और आप अधोगति को जा रहे हैं। आप मेरे व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप न कीजिये। अगर उसे यह कहा जाए कि पिता पुत्र का जनक होता है। कलियुगी लड़का जो पाश्चात्य सभ्यता को ही सब कुछ मानता है वह जवाब देता है कि क्या मैंने डैडी जी को अपने जन्म से पूर्व (आवेदन पत्र) दिया था ? यह है पश्चिमी संस्कृति जबकि हमारी संस्कृति अपने माता-पिता के प्रति क्या उपदेश करती है। यह वर्णन करते हुए संत तुलसीदास जी रामचन्द्र जी के बारे में लिखते हैं

> "प्रात काल उठ के रघुनाथा।
> माता पिता गुरु नावहि माथा॥"

यह है हमारी उत्तम प्राचीन संस्कृति पहले हम सब आर्य थे। यह हमें हमारा सबसे पुराना ग्रन्थ ऋग्वेद बताता है।

> "इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
> अपघ्नन्तो अराव्ण.॥"

ऋ का 9 सू 63 म 5

परमेश्वर का आदेश है कि तुम ज्ञानैश्वर्य अथवा आत्मिक शक्ति को बढ़ाते हुए, कर्मशील, प्रमाद रहित होकर अदान भाव कृपणता आदि का नाश करते हुए (विश्व आर्य कृण्वन्त) विश्व भर को आर्य बनाओ। इसी प्रकार यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी इसका प्रमाण आया है। बाल्मीकि रामायण का भी क्रमश उदाहरण देखिए—

> "कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
> अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन॥"
> गीता 2 2
> "आर्य सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शन"

रामायण बालकाण्ड— 6

यह प्रमाण हमें निश्चित कराते हैं कि पहले हम सब आर्य थे। हमारी रीति वेदरीति थी। हम सब वेदानुकूल आचरण करते थे। इसलिए हमें चाहिए कि अपनी संस्कृति को पहचाने और वेदानुकूल आचरण करें।

मारीशस के भूतपूर्व मंत्री एवं मारीशस के प्रसिद्ध आर्य नेता भारत यात्रा पर

मारीशस सरकार के भूतपूर्व मन्त्री एवं प्रसिद्ध आर्य नेता श्री रामनाथ जी जीवा भारत यात्रा पर आए हैं। वे मारीशस की एक शिरोमणि सभा "आर्य सभा" के कोषाध्यक्ष हैं तथा डी ए वी ईस्टन कालेज, मारीशस के मैनेजर हैं। अब यह कालेज डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से सम्बन्धित हो गया है। भारत पधारने पर डी ए वी मैनेजिंग कमेटी के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आर्य समाज के सदस्यों द्वारा उनका पुष्प मालाओं से भव्य स्वागत किया गया।

—दरबारी लाल
संगठन सचिव

संगरूर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मन्दिर संगरूर में 14 9 87 से 20 9 87 तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया है। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी सत्यानन्द जी परिव्राजक के सुन्दर ओजस्वी प्रवचन एवं पंजाब के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक व कथावाचक श्री सत्यपाल जी पथिक के मनोहर भजन होंगे।

इस अवसर पर आर्य समाज के वृद्ध समाज सेवी व हैदराबाद के सत्याग्रहियों को सम्मानित किया जाएगा व यजुर्वेद शतक का बृहद् यज्ञ किया जाएगा है।

[illegible] मन्त्री

रायकोट मे गृह प्रवेश यज्ञ

आर्य समाज रायकोट मे दिनांक 30-8-87 को साप्ताहिक सत्संग मे उपस्थित आर्य बहनो भाईयो के आग्रह पर हररोज साय काल 7 से 8 बजे तक सन्ध्या और भजनों का प्रोग्राम लगातार चलने रखने का निश्चय किया गया और इस के बाद श्री राजिन्द्र कुमार जी सच्चर के गृह प्रवेश पर इनके निवास स्थान पर हवन किया गया। सभी एकत्र बहनो और भाईयो ने शुभ कामनाए भेंट की।

—अशोक कुमार कन्नौजिया
मन्त्री

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का वार्षिक चुनाव 6-9-87 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विशेष प्रतिनिधि श्री अमृतलाल जी बजाज एडवोकेट की देख-रेख मे सम्पन्न हुआ।

श्री नरेन्द्र भल्ला और श्री आत्म प्रकाश जी प्रधान पद के दो उम्मीदवार खड़े थे। श्री नरेन्द्र भल्ला बहुत मत से प्रधान निर्वाचित हुए और शेष आर्य समाज के पदाधिकारी मनोनीत करने का उन्हें सर्व सम्मति से अधिकार दिया गया।

—(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

आर्य समाज मानसा मण्डी में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मानसा मण्डी (जिला भठिण्डा) की ओर से 24 से 27 अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से 9 बजे तक अलग-अलग आर्य परिवारो मे हवन-यज्ञ भजन तथा दोपहर को साढे तीन बजे से 5 बजे तक और रात्रि को 8 बजे से 9 बजे तक आर्य समाज मन्दिर मे श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी के प्रवचन होते थे।

तपा मण्डी में वैदिक नामकरण संस्कार

23-8 87 को श्री पवन कुमार जी तपा मण्डी वालो ने अपने पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा) द्वारा कराया बालक का नाम यजुर्वेद कुमार रखा गया। उपस्थित नर नारियों का चाय और मिठाई से सत्कार किया गया। सभी नर-नारियो ने फूलो से बालक को आशीर्वाद दिया।

—ओम् प्रकाश आर्य

भठिण्डा में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज भठिण्डा में वेद प्रचार सप्ताह 9 अगस्त से 16 अगस्त तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस समारोह मे प्रसिद्ध विद्वानो डा. रविदत्त शास्त्री मुरादाबाद वाले, श्री ओम् प्रकाश वानप्रस्थी तथा पुरोहित अजीत कुमार जी ने प्रवचन किये।

पारिवारिक सत्संग

वेद प्रचार सप्ताह के दौरान दो बड़े पारिवारिक सत्संग लाला सुधीर-चन्द जी प्रधान (जिला आर्य सभा) तथा श्री राजेन्द्र कुमार जी मित्तल मन्त्री आर्य समाज भठिण्डा के घरों में किए गए। इन सत्सगो मे शहर के गण-मान्य व्यक्तियो ने सत्सग में पहुच कर धर्म लाभ उठाया।

—ओम् प्रकाश मक्कड़
प्रधान
आर्य समाज भठिण्डा

शोक प्रस्ताव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् लुधियाना की एक आपात् बैठक हुई जिसमें महर्षि स्वामी वेदानन्द जी (जालन्धर) की असामयिक मृत्यु पर गहरा दुःख प्रकट किया गया। स्वामी जी नवयुवकों के प्रेरणा स्रोत थे, उनके नेतृत्व में आर्य समाज में नवयुवको की बाढ़ सी आ गई। पंजाब प्रान्तीय युवक परिषद् और स्थानीय परिषदों के उत्थान मे स्वामी जी का ही हाथ था। बैठक में शोक प्रस्ताव पास किया गया और परमपिता परमात्मा जी से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

—[illegible]
मन्त्री



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 24. 4 आश्विन सम्वत् 2044 तदानुसार 20 सितम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

वेद क्या, क्यों, कैसे ?

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्योपदेशक,
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

ओ३म्

वेद क्या है, परमात्मा ने वेद ज्ञान क्यों दिया तथा कैसे दिया आदि विभिन्न शंकाओं को उठा कर उनका समाधान प्रश्नोत्तर रूप मे प्रस्तुत है :—

प्र वेद किसे कहते हैं ?

उ. ईश्वरीय ज्ञान, जो मानव मात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के आदि मे दिया जाता है, उसे ही वेद की संज्ञा दी गई है।

प्र वेद कितने हैं ?

उ ऋक्, यजु साम और अथर्व ये चार संहिताएं ही वेद कहलाती है।

प्र. क्या ब्राह्मण ग्रन्थ तथा उपनिषदें आदि वेद नही है ?

उ. नही। ये अपौरुषेय ग्रन्थ नही अपितु ऋषियो की कृति हैं। इसलिए ये वेद की कोटि में नहीं आते।

प्र. अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान की पहचान क्या है ?

उ. अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि मे दिया जाता है। उसमे लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नही होता और ज्ञान सृष्टि क्रम के विरुद्ध या विपरीत नही होता। यह ज्ञान नित्य और निर्भ्रान्त होता है। उसमे सभी विद्याओ का मूल होता है। उस ज्ञान मे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का यथार्थ वर्णन होता है। उसमे मानव के अभ्युदय एव निःश्रेयस की सम्पूर्ण भावना निहित होती है। वह ज्ञान सर्वथा पक्षपात शून्य होता है। अर्थात् वह किसी जाति विशेष देश विशेष एव काल विशेष के लिए नहीं होता, अपितु सर्वजनीन, सार्वभौम तथा सर्वकालिक होता है। वह ज्ञान विज्ञान से मेल खाता है, उसमे कोई भी बात युक्ति और तर्क के विपरीत नहीं होता। वेद अनन्त विद्या के अधिकरण हैं।

प्र. क्या परमेश्वर का ज्ञान बस इतना ही है ?

उ नहीं। परमेश्वर का ज्ञान अनन्त है ?

प्र फिर इतना ही क्यो दिया ?

उ. मनुष्यो के लिए जितना आवश्यक था, उतना ही दिया।

प्र. क्या वेद मे सब विद्याओ का वर्णन है ?

उ हां। वेद मे सब विद्याओ का बीज निहित है किन्तु उसमे लौकिक विद्या अर्थात् इतिहास आदि नही।

प्र परमात्मा ने वेद ज्ञान क्यो दिया।

उ. परमात्मा ने वेद का ज्ञान जीवो के कल्याण के लिए दिया है। मनुष्य कर्मशील प्राणी है। कर्म के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। मनुष्य बिना निमित्त के ज्ञान प्राप्त नही कर सकता वेद का देकर प्रभु ने धर्म-अधर्म का, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का, विधि-निषेध का बोध करा दिया। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है किन्तु फल भोगने मे परतन्त्र है। विधि-निषेध का बोध करा देने के उपरान्त ही मानव अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, अन्यथा नही। वेद ज्ञान इसी लिए दिया गया।

प्र यदि परमात्मा वेद ज्ञान न देता तो क्या होता ?

उ यदि परमात्मा वेद-ज्ञान न देता तो सम्पूर्ण मानव समुदाय असभ्य और अज्ञानी बना रहता। वेद ज्ञान के बिना वह बोलना ही नही सीख पाता और गूंगा रहता। मानव ने वेद के ज्ञान द्वारा ही बोलना सीखा है। प्रभु ने वेद ज्ञान भाषा के साथ ही दिया है। वेद ज्ञान के प्रकाश का एक कारण और भी है। वह है ईश्वर की ज्ञान सामर्थ्य का सफल होना। जैसे सृष्टि रचने की सामर्थ्य का साफल्य सृष्टि रचने मे है, वैसे ही ज्ञान सामर्थ्य का साफल्य ज्ञान के प्रकाश करने मे है। महर्षि का कथन है कि—'अनन्त ज्ञान-सम्पन्न परमेश्वर मनुष्य की योग्यता बढाने के लिए और उसे ऊंचे दरजे को पहुंचाने के लिए सदा प्रवृत्त है और इसी हेतु को सफल करने के लिए विद्या का प्रकाश करता है, सो वही प्रकाश वेद है। मनुष्य इस अनन्त ज्ञान के लिए अर्थात् वेद के अर्थ योग्य अधिकारी है। इस ज्ञान की उत्पत्ति मनुष्य से नही है। (पूना का पांचवा प्रवचन)।

प्र वेद विद्या का आदि मूल कौन है ?

उ. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या के द्वारा जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमात्मा है। इस नियमानुसार सत्य विद्या वेद का भी आदि मूल परमात्मा ही है।

प्र ईश्वर ने विद्या का मूल ही क्यो दिया अर्थात् बीज रूप मे ही क्यो दी ?

उ. इसलिए कि मानव परिश्रम कर उसका विस्तार कर सके।

प्र ईश्वर ने अपना ज्ञान किस को दिया ?

उ ईश्वर ने अपनी सर्व शक्तिमत्ता से वेद का ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा, इन चार ऋषियो को दिया।

प्र क्या ईश्वर ने यह ज्ञान बोल कर अथवा पुस्तक के रूप मे दिया ?

उ. नही! ईश्वर ने उक्त ज्ञान उपरोक्त चार ऋषियो के अन्तरात्मा मे अपने सामर्थ्य से प्रकाशित किया। उनसे ब्रह्मा ने सुनकर प्राप्त किया और यह परम्परा श्रुति रूप मे आगे चल पडी।

प्र ईश्वर ने वेद-ज्ञान उन्ही चार ऋषियो को ही क्यो दिया ? क्या इससे ईश्वर पक्षपाती सिद्ध नही होता।

उ वही चार ऋषि सबसे अधिक पवित्रात्मा थे। इसलिए उन्हे ही पात्र समझ कर ज्ञान का प्रकाश किया गया। अतः इसमे पक्षपात की कोई भी बात नही।

प्र क्या वेद का ज्ञान उन ऋषियो का अपना नहीं माना जा सकता ?

उ नही! उन ऋषियो मे वैसी ज्ञान-सामर्थ्य नही थी। ईश्वर द्वारा ज्ञान के प्रकाश किये जाने से पूर्व वे ऋषि भी अज्ञानी ही थे। कोई भी अज्ञानी वेद की रचना नही कर सकता। अत, यही मानना पडता है कि वेद का ज्ञान परमेश्वर ने ही दिया।

प्र क्या ऐसा माने कि परमेश्वर ने ज्ञान के भाव दे दिये और उन भावो को भाषा रूप मे ऋषियो ने वर्णन किया ?

उ ऐसा नही हो सकता। भाषा ही भावो का वाहन होता है। बिना भाषा के भाव कैसे दिये जा सकते हैं ? परमेश्वर ने वेद ज्ञान भाषा के साथ दिया।

प्र इसका अर्थ तो यह हुआ कि भाषा भी ईश्वर ने ही प्रदान की है।

उ यह ठीक है। ईश्वर ने वेद का ज्ञान भाषा के साथ ही दिया है।

प्र ऋषियो को वेद के अर्थ कैसे ज्ञात हुए ?

उ. ईश्वर ने ही उन्हे वेद के अर्थ भी जनाए।

प्र वेद मन्त्रो के साथ ऋषियो के नाम क्यो जुडे है ?

उ जिन ऋषियो ने जिस-जिस मन्त्र का साक्षात्कार किया उनका नाम सम्मानार्थ उन मन्त्रो के साथ लगा दिया गया है। इससे यह न समझा जावे कि ऋषि मन्त्रो के कर्ता हैं, अपितु वे द्रष्टा है।

प्र मन्त्र के देवता से क्या तात्पर्य है ?

उ मन्त्र का मुख्य प्रतिपाद विषय ही मन्त्र का देवता है।

प्र वेद के पढने का अधिकार किस को है ?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

धरती माता को बांझ न बनने दिया जाए

किसान भाइयो आप अन्नदाता हो जागो-सोचो-समझो और करो

लेखक—श्री स्वामी सेवानन्द साधक द्वारा श्री आदर्श गौशाला सतनाली (इलाका) जिला महेन्द्रगढ़

आज आप गोबर सेंद्रीय खाद की जगह रासायनिक खाद जमीन में डाल कर जो पैदावार ले रहे हो उसमे स्वाद नही रहा, उसके पोषण मूल्य कम हो रहे हैं और अन्न मे विष (जहर) की मात्रा पाई जा रही है, आज आप अन्नदाता न रहते हुए विषदाता हो रहे हो। उसी प्रकार रासायनिक खादो से जमीन बांझ बनती है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है—जागो विचार करो।

कृषि भूमि की पैदावार बढाने के लिये रासायनिक खादो का उपयोग सब से घातक सिद्ध होगा, यन्त्रो से खेती की जुताई गहरी होती है जो अयोग्य है, यह सच है कि अमेरिका आदि यूरोपीय देशो ने रासायनिक खादो के प्रयोग से अपनी उपज चौगुनी करने मे सफलता प्राप्त की है किन्तु यह भी सत्य है कि रासायनिक खादो के लगातार प्रयोग के कारण आज अमेरिका मे 28 करोड एकड भूमि बांझ हो गई है और 77 करोड एकड भूमि उस शराबी या अफीमची की तरह हो गई है जिसे शराब मिल जाने पर थोडा काम कर देने की तरह, खाद से उत्तेजित कर फसलें उगाई जा सकती हैं, पर यदि उन्हे किसी वर्ष खाद न मिले तो वह भूमि एक दाना भी दे सकने मे असमर्थ होगी। अमेरिका का क्षेत्रफल भारत से चार गुना है और जनसंख्या चालीस प्रतिशत है, इसका मतलब अमेरिका भारत से दस गुना समृद्ध है, अमेरिका का किसान जमीन बांझ होने पर भूमि की विपुलता के कारण दूसरी नई जमीन जोत सकता है। भारत की कृषि भूमि यदि बांझ हुई तो हम जमीन कहा से लायेंगे ? भारत के किसान के लिए यह सब मे बडी समस्या होगी। ख्याल रहे अमेरिका ने भारत की कुल कृषि भूमि के दूनी भूमि गवाई है। किसान भाइयो जागो अपनी जमीन बचाओ।

खेती की पैदावार बढाने में आज हम पाश्चात्य देशो का अन्धानुकरण कर रहे हैं, यह भारतीय कृषि परम्परा पर कलंक है, जो कुछ भी हो रहा है उसे अपनी कृषि भूमि का बन्ध्याकरण ही कहना चाहिए। उपज बढाने के तेजस्वी तरीके भी हैं और उनका विकास भी किया जा सकता है। आवश्यक नही कि मनुष्य अपनी शक्ति बढाने के लिये शराब पीये, घी और दूध से बढाई गई शक्ति कही अधिक स्थिर और विधेयात्मक होती है। आज कृषि उत्पादन मे वृद्धि के लिये जो साधन अपनाये जा रहे हैं वो धरती को शराब पिलाकर सारी शक्ति निचोड लेने के समान हैं।

ख्याल रहे पाश्चात्य लोग आत्यधिक भोगवाद के कारण गलत राह पर जा रहे हैं उनका अन्धानुकरण हमारे लिये बडा घातक सिद्ध होगा—किसान भाइयो सोचो विचार करो।

1952 मे अमरिकी कृषि विभाग की भूमि संरक्षण संस्था ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की थी जिसका शीर्षक था "शेष भूमि की सुरक्षा" इस पुस्तक मे बताया था—अन्धाधुन्ध रासायनिक खादो के प्रयाग से अमेरिका की 28 करोड एकड भूमि नष्ट हो गई है और 70 करोड एकड नष्ट प्राय: है। प्रति वर्ष 50 लाख एकड भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट करने का पाप हम लोग कर रहे हैं।

बड़े खेद की बात है कि जो अमेरिका अपनी जमीन की शक्ति बचाने मे समर्थ नही उसी का कोई फोर्ड फाऊन्डेशन नामक प्रतिष्ठान भारतीय जनता को कृषि विकास की शिक्षा देने भारत आया था, इस प्रतिष्ठान ने करोडो रुपयो की विभिन्न विकास योजनाए भारत को दी जिसका अधिकांश भाग खाद्य पदार्थों के उत्पादन पर किया गया अर्थात् इससे बडी मात्रा मे विदेशो से रासायनिक खाद मगाने मे मदद मिली।

जो अमेरिका अपनी कुंवारी धरती की उर्वरा शक्ति बचाने मे असमर्थ है वह भारत जैसे देश को जिसने हजारो वर्षों से अपनी कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति बचाये रखी है उसे मार्ग दर्शन करे, यह बडी विडम्बना है।

भारतीय विचारो में धरती माता, गौ माता और गंगा माता ये तीन माताएँ मानी गई हैं। आज हम इन तीनो माताओ की हत्या का पाप अपने सिर पर ले रहे हैं।

(1) धरती माता को रासायनिक खादो से बांझ बना रहे हैं।

(2) देश में रोज चालीस हजार गोवंश कटता है।

(3) गंगा माता को प्रदूषित कर उसके जल को गन्दा एवं अपवित्र किया है।

धरती माता-जमीन कोई निर्जीव वस्तु नही, जिस प्रकार शरीर में जीवन है उसी प्रकार पृथ्वी मे भी ठीक वैसा ही जीवन विद्यमान है।

खनिज द्रव्य सेंद्रीय खाद तत्व तथा सूक्ष्म जीवाणुओ के मिश्रण से मिट्टी बनती है। मनुष्य प्राणी जगत् जो मल-मूत्र विसर्जन करते हैं तथा वनस्पति जो जमीन पर गिर जाती है उसे पृथ्वी के सूक्ष्म जीवाणु उसी प्रकार सेंद्रीय खाद तत्त्व या प्राण मे बदलते हैं जैसे हमारे शरीर के जीवाणु खाद्य से शरीर को पोषण प्रदान करते हैं। हमारी जीवन व्यवस्था और पृथ्वी के जीवन मे कोई अन्तर नही। इससे यह स्पष्ट है कि उत्तेजक पदार्थ से जैसी निष्क्रियता मनुष्य शरीर पर आती है वैसी ही पृथ्वी मे उत्तेजक खादो से आती है। अतएव विज्ञान की इस उपलब्धि का कोई महत्व नही, उसे एक नशा ही समझना चाहिये। धरती के लिये यह कभी भी उपयुक्त नही हो सकता।

प्राचीन भारत की स्थिति

भारत मे गोधन विपुल मात्रा मे था और उसका गोबर खाद बडी तादाद मे भूमि को मिलता था जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढती जाती थी और विपुल मात्रा मे अच्छा अन्न निर्माण होता था। आज भी भारत भूमि की जो उर्वरा शक्ति है इसका सर्व श्रेय जो बडी मात्रा मे गोधन था, उसी को है। इसी दृष्टि से भारतीय अर्थ-व्यवस्था मे गोधन को प्रथम क्रमांक दिया है। आज अन्धाधुन्ध गोवंश हत्या के कारण देश के पास गोबर की मात्रा बहुत कम हो गई है।

छठी पंचवर्षीय योजना के अनुसार देश के पास मुश्किल से दो प्रतिशत गोबर खाद है जिसका मतलब भूमि को 100 किलो खाद की आवश्यकता है वहा देश के पास 2 किलो खाद है आज गोसंवर्धन एवं गोचर भूमि की व्यवस्था करना भारत के अर्थ तन्त्र की मांग है।

हम जब अन्धानुकरण कर रहे हैं, अमेरिका एवं यूरोपीय देशो के विचारक वैज्ञानिक सेंद्रीय खाद की खेती का विचार कर रहे हैं, उनकी मान्यता है कि रासायनिक खादो से धरती पर अत्याचार हो रहा है, हजारो एकड भूमि रेगिस्तान बन गई है, भूरक्षण एक विकराल समस्या बन गई है। रासायनिक खाद देकर पैदा की गई चीज दिखने मे चाहे जितनी सुन्दर और आकर्षक लगे पर उसमें प्राकृतिक खाद के समान पोषक तत्व और जीवनी शक्ति नहीं है जिसके दूरगामी दुष्परिणाम हमारी बुद्धि और मस्तिष्क पर होते हैं, यह एक वैज्ञानिक सत्य है। परन्तु विज्ञान के अभिमान में पड़े स्वार्थी वैज्ञानिक, राजनीतिक और उद्योगपति अपने रासायनिक खादों का अन्धाधुन्ध प्रचार कर रहे हैं, उसी प्रकार जनता के कर्णधार जो कृषि विशेषज्ञ या कृषि शिक्षक हैं, वे अपनी नौकरियों पर टिके रहने के लिये न तो ग्रामीण जनता के हित की बात सोचते हैं, न आने वाली पीढ़ी और धरती के दीर्घकालीन जीवन तत्व के रक्षण की बात।

हम एटम बम के खतरे को जानते हैं पर आज धरती का जो शोषण हो रहा है, उससे बेखबर हैं। ख्याल रहे धरती का शोषण एटम बम के खतरे मे कम नही।

दोनो प्रकार के भविष्य आपके हाथ मे हैं। आज जबकि तथाकथित शिक्षित लोग ही दूरदर्शी और विवेकशील नही रहे, किसान भाइयो को आप ही निर्णय करना होगा कि वे क्या पसन्द करते हैं? एक तो भूमि को प्राकृतिक तौर पर शक्तिशाली बनाना या फिर उसे बांझ बनाना। यह आज की वह समस्या है जिस पर भावी पीढ़ियो का भविष्य निर्भर करेगा। अतएव उसे गम्भीरता से सोच-विचार कर क्रियान्वित करना होगा।

जागो-सोचो-समझो और करो

गौ के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर तो काफी लिखा जा चुका है किन्तु गांधी जी एवं डा कुमारप्पा जी के विचारो के अनुसार गौ की आर्थिक क्षमता एवं कामधेनु रूप को उजागर करने मे पुसद (महाराष्ट्र) के डा. कुमारप्पा जो गोवर्धन केन्द्र के संचालक श्री ना दे पांढरी पांडे (नाडेपकाका) ने सफलता प्राप्त की है। उन्होंने गौ के गोबर से खाद बनाने के सम्बन्ध मे जो अनुसंधान किया है उससे गौ का कामधेनु रूप ही प्रगट हो गया है। खाद बनाने के लिये उन्होंने जो नाडेप कम्पोस्ट पद्धति विकसित की है उससे उत्तम खाद का अक्षय भण्डार उपलब्ध होता है। इस पद्धति से एक किलो गोबर से चालीस किलो उत्तम खाद होता है। एक गौ के वार्षिक गोबर से 80 से 100 टन उत्तम खाद बनता है जिसका मूल्य 15 से 20 हजार रुपये होगा।

गोबर खाद के अलावा नहाने के लिए अनराज (साबुन), धूप, पंचगव्य अगरबत्ती औषधि वस्तु गोबर से बनाई

(शेष पृष्ठ 9 पर)

सम्पादकीय—

गुरुकुल कांगड़ी की यात्रा

गुरुकुल कांगड़ी से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक विशेष सम्बन्ध है न केवल इस सभा ने इस संस्था को स्थापित किया था परन्तु श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जब इसे प्रारम्भ किया उसके पश्चात् से आज तक किसी न किसी रूप में पंजाब सभा इन संस्थाओं का संरक्षण करती चली आ रही है। पहले एक विद्या सभा इसकी देखभाल करती थी। उस के पश्चात् कुछ महानुभावों ने एक नई विद्या सभा खड़ी कर दी परन्तु वह भी न चल सकी और उसके पश्चात् एक और विद्या सभा बना दी गई। उसका भी आज तक न तो कोई विधान बना है न ही और कोई कार्य प्रणाली बनी है। वास्तविक स्थिति यह है कि जो महानुभाव समय-समय पर विद्या सभा में परिवर्तन करते रहे हैं या करवाते रहे हैं उनके सामने एक ही लक्ष्य रहा है कि किसी प्रकार पंजाब सभा का प्रभाव इन संस्थाओं में समाप्त किया जाए। उन्हें भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय या गुरुकुल कांगड़ी में इतनी रुचि न थी जितनी कि गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में रही है। फार्मेसी इन महानुभावों के लिए कामधेनु बनी रही है। वहां से जो कुछ धन लेना चाहे ले सकते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल की सब संस्थाओं को बचाने के लिए आज से लगभग 6 वर्ष पहले यह कहना शुरू किया था कि फार्मेसी को दोनों हाथों से कुछ व्यक्ति लूट रहे हैं। मेरे पास वह बीसों पत्र पड़े हैं जो मैं समय-2 पर आर्य समाज के महान् नेताओं को लिखता रहा हूं कि फार्मेसी को बचाओ। यदि वह न रही तो गुरुकुल की आर्थिक सहायता का यह स्रोत समाप्त हो जाएगा। यदि फार्मेसी में लूट-खसूट समाप्त हो जाए और इसे उसी तरह से चलाया जाए जिस प्रकार हमारे देश की दूसरी फार्मेसियां डाबर,झंडू,हमदर्द और दूसरी फार्मेसियां चल रही हैं। यह फार्मेसी भी यदि उसी प्रकार चलती रहे तो यह न केवल गुरुकुल की आर्थिक समस्याओं का समाधान कर देगी। इसके द्वारा हम और भी कई संस्थाओं की सहायता कर सकेंगे।

लेकिन हमारी सभा की एक न सुनी गई और उसका यह परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश की पुलिस ने इस फार्मेसी की जांच करने के पश्चात् न केवल इसके भू. पू. व्यवसायाध्यक्ष डा. हरि प्रकाश को गिरफ्तार कर लिया है, इस फार्मेसी के पांच और व्यक्तियों के वारंट गिरफ्तारी के भी जारी कर दिए हैं। अभी यह जांच समाप्त नहीं हुई। इसलिए कहना कठिन है कि अभी कौन-2 और इसकी लपेट में आएंगे। आर्य प्र.नि.सभा पंजाब आज यह गर्व से कह सकती है कि उसके किसी भी अधिकारी पर किसी प्रकार का कोई आरोप नहीं है और वह केवल इसलिए कि आर्य प्र नि.सभा पंजाब का इतिहास उसकी परम्पराएं और उसकी मान्यताएं आज तक ऐसी रही हैं कि उसके किसी अधिकारी ने आर्य समाज की सम्पत्ति को किसी भी तरह से नष्ट नहीं होने दिया। वह आर्य समाज की सम्पत्ति को एक अपनी धरोहर समझते हैं। जिस पर वह कभी आंच नहीं आने देंगे। यही कारण है कि आज आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के किसी अधिकारी पर इस फार्मेसी में भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं है। परन्तु आर्य समाज के और कई बड़े-2 नेता हैं जिन से पुलिस पूछ रही है कि यह सब कुछ आपने कैसे होने दिया।

यद्यपि कुछ महानुभावों ने इन संस्थाओं को पंजाब सभा के हाथ से छीनने का बहुत प्रयास किया,परन्तु वह अभी तक इसमें सफल नहीं हुए। पंजाब सभा आज भी समझती है कि इन संस्थाओं के संरक्षण का दायित्व इस सभा पर है। इस उद्देश्य से और यह देखने के लिए कि अब गुरुकुल कांगड़ी और दूसरी संस्थाओं की स्थिति क्या है पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कुछ अधिकारी और दूसरे मान्य सदस्य गुरुकुल गए थे ताकि वहां जाकर देख सकें कि अब स्थिति क्या है ? जाने से पहले हम तक कई प्रकार की धमकियां पहुंची थी और यह भी कहा गया था कि हम देखेंगे यहां कौन आता है। इस पर हमारे कई शुभ चिन्तक महानुभावों ने हमें यह परामर्श दिया कि हम वहां न जाएं। हम वहां विद्या सभा की बैठक भी रखनी चाहते थे उन महानुभावों के कहने पर हमने उसे तो स्थगित कर दिया परन्तु साथ ही यह भी निश्चय किया कि जो धमकी हमें दी गई वह हमारे लिए एक चुनौती है। यदि हम इसे स्वीकार नहीं करते तो फिर इस गुरुकुल या इन सब संस्थाओं को अपनी संस्थाएं कहने का हमें कोई अधिकार नहीं रहता। इसलिए हमें इस चुनौती को स्वीकार करना ही चाहिए। इसलिए हम ग्यारह सितम्बर की रात को गाड़ी से हरिद्वार चले गए और वहां हमने सबको सूचित कर दिया था कि हम 12 सितम्बर को वहां पहुंच रहे हैं। मेरे साथ हमारी सभा के महामन्त्री श्री पं. ब्रह्मदत्त जी शर्मा, उप-प्रधान श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी, कानून मन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट, मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न और श्री ओम्प्रकाश जी पासी, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री आशानन्द जी, अन्तरंग सभा के सदस्य तथा लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी आयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा तथा श्री कुलवन्तराय जी सूद भी थे। हम सब 12 सितम्बर को प्रातः वहां पहुंच गए। दो दिन वहां रह कर हमने गुरुकुल विश्वविद्यालय के विषय में भी जानकारी प्राप्त की, गुरुकुल कांगड़ी के विषय में भी और हम सब गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में भी गए जिसके दरवाजे आज तक हमारे लिए बन्द रखे गए थे। फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष और विशेष कर कर्मचारियों ने हमारा जो स्वागत किया उसके लिए हम उनका जितना भी धन्यवाद करें थोड़ा है। वास्तविक स्थिति तो यह है कि हम जितना समय गुरुकुल में रहे हमें सब तरफ से स्नेह और सहयोग मिलता रहा और हम यह समझते थे कि हम अपने घर में आ गए हैं। जिस गुरुकुल से हमें निकालने का इतना प्रयास हो रहा था अब हमें निकालने वाले ही वहां से निकल रहे हैं। जो कुछ हमने देखा और जो कुछ वहां सुना वह वर्तमान स्थिति की एक अत्यन्त शोचनीय दशा हमारे सामने प्रस्तुत करती है। इस पर अत्यन्त गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाएं आर्य समाज की एक ऐसी धरोहर है जो हमारे पूर्वज हमें सौंप गए हैं और जिसकी रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य हो जाता है। वहां स्थिति क्या है ? हमने वहां क्या देखा और क्या सुना है यह आगामी अंक में पाठकों के सामने रखूंगा। —वीरेन्द्र

श्रद्धेय श्री अमर स्वामी जी भी चले गए

मैं इसे आर्य समाज का परम दुर्भाग्य समझता हूं कि हमारे पुराने कर्मठ और त्यागी तपस्वी नेता धीरे-2 हमें छोड़ कर जा रहे हैं। अभी थोड़ा ही समय हुआ कि श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती स्वर्ग सिधारे और अब श्री अमर स्वामी जी भी हमें छोड़ गए। उनकी आयु भी बहुत अधिक हो गई थी। इसी के साथ वह कैंसर की बीमारी में भी फंस गए थे जहां से वह निकल न सके। पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा उन्हें मिलने गए थे और उन्हें 2100 रुपये इलाज के लिए भेंट किये थे साथ ही सभा की ओर से यह भी उन्हें आश्वासन दिया गया था कि यदि वह लुधियाना के हस्पताल में आकर अपना इलाज कराना चाहें तो उसका सारा भार पंजाब सभा अपने ऊपर लेगी। स्वामी जी ने उसी वक्त कह दिया कि अब तो मेरा समय अधिक नहीं रहा। लुधियाना तक पहुंचने का समय सम्भवतः मुझे न मिले और अन्त में यही हुआ, श्रद्धेय स्वामी जी महाराज चले गए। वह एक तपस्वी और त्यागी सन्यासी थे और शास्त्रार्थ महारथी थे। सारा जीवन उन्होंने आर्य समाज की सेवा में गुजार दिया था और हम आज कह सकते है कि उनकी गणना आर्य समाज के उन दिवगत नेताओ में होगी जिन के खाली हुए स्थान को फिर कोई पूरा न कर सका। केवल गेरुवे कपड़े पहन लेने से ही कोई सन्यासी नहीं बन जाता। जिस व्यक्ति में वित्तैषणा, लोकैषणा और पुत्रैषणा यह तीनों प्रकार की कमजोरियां न रहें वह असली सन्यासी होता है। श्री अमर स्वामी जी महाराज इसी प्रकार के सन्यासी थे आर्य समाज अपने जिन सन्यासियो पर गर्व कर सकता है। श्री अमर स्वामी जी महाराज की गणना भी उनमे होगी। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए हम सब यह भी प्रार्थना करते हैं कि परम पिता परमात्मा हम में वह योग्यता और सेवा की भावना पैदा करे जैसी श्रद्धेय स्वामी अमर स्वामी जी महाराज में थी, उनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं उसका कुछ अंश भी हम अपने सामने रख कर उसके अनुसार चलने का प्रयास करें तो यही उन्हें एक बहुत बड़ी श्रद्धाञ्जलि होगी।

—वीरेन्द्र

देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए 6 सूत्री कार्यक्रम

लेखक—श्री किशन स्वरूप जी गोयल दिल्ली

आज देश के सामने समस्याए तो बहुत सी हैं जिनका निराकरण होने के स्थान पर उनका समाधान करने के लिए जो कदम उठाये जाते हैं उन से उन समस्याओ का समाधान तो होता ही नहीं अपितु नयी समस्या का जन्म और हो जाता है। किन्तु इन सभी समस्याओ मे इस समय देश के सामने जो प्रमुख समस्या है वह देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा करने की है। क्योकि इस समय देश मे अलगाववादी शक्तियो तथा साम्प्रदायिक तत्वो द्वारा इस देश की एकता और अखण्डता को समाप्त करने और इस देश को पूरी तरह तोड कर विश्व के मान चित्र से सदा के लिए समाप्त करने के लिए वे पूरी तरह सक्रिय हो चुके है।

इस देश की एकता और अखण्डता को केवल 6 सूत्री कार्यक्रम द्वारा बचाया जा सकता है अन्य कोई मार्ग दिखाई नही देता और यह 6 सूत्री कार्यक्रम अपनाने के लिए हमारी सरकार को ही सक्रिय कदम उठाने होगे क्योकि जनता नीतियो मे परिवर्तन नही कर सकती केवल दबाव ही डाल सकती है। यदि निम्न 6 सूत्री कार्यक्रम सरकार ने न अपनाया और इस पर अमल न किया तो इस देश की एकता और अखण्डता को नही बचाया जा सकेगा और यह देश टुकडो मे बिखर कर सदा के लिये विश्व के मानचित्र से लुप्त हो जाएगा।

६ सूत्री कार्यक्रम

काश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली धारा 370 अविलम्ब समाप्त की जाए।

देश मे अलगाववाद को बढावा देने और अलग अलग प्रदेशो की जातियो तथा भाषा के आधार पर जो मांगें उठ रही है उन सभी का प्रेरणा स्रोत यही धारा 370 है। यह धारा 1949 मे संविधान मे पण्डित जवाहर लाल नेहरू की कृपा से उस समय अस्थायी तौर पर इस कारण जोडी गई थी क्योकि स्वतन्त्रता मिलने के तुरन्त बाद ही पाकिस्तान ने काश्मीर पर हमला कर दिया था जिसके कारण काश्मीर की स्थिति खराब हो गयी थी। किन्तु इस धारा मे जो एक बात यह जोडी गयी कि कोई भी गैर काश्मीर मे एक इन्च भूमि खरीद कर आबाद नही हो सकता भले वह राष्ट्राध्यक्ष या प्रधानमन्त्री ही क्यो न हो। यह देश की एकता के लिये सबसे अधिक खतरनाक सिद्ध हुई है। इसके कारण वहा कोई गैर काश्मीरी नही बस सकता और काश्मीरी मुसलमान अपनी जनसख्या बढाने मे लगे हुए हैं जिसके कारण आज काश्मीर घाटी एक छोटा पाकिस्तान बन चुकी है। हमारी सरकार का चाहिये तो यह था कि यह धारा केवल थोडे समय के लिये अस्थायी तौर पर जोडी गयी थी इसे अब तक समाप्त कर देना था किन्तु यह आज तक स्थायी धारा की तरह ही विद्यमान है। काश्मीर के जिस भाग पर पाकिस्तान ने अधिकार कर लिया है उसे भी वापस लेने की माग करनी चाहिये किन्तु इस धारा को समाप्त न करने से ऐसा लगता है कि जो पाकिस्तान के अधिकार मे है उसे लेने की बात तो दूर कही यह काश्मीर भी पाकिस्तान मे न मिल जाये।

खालिस्तान की माग और गोरखा-लैण्ड की माग के लिये भी यही धारा 370 प्रेरणा स्रोत का काम कर रही है। यही नही उग्रवादी तत्वो को प्रशिक्षण तथा हथियार आदि देने का काम पाकिस्तान द्वारा इसी काश्मीर घाटी के माध्यम से ही प्राप्त हो रहे हैं इसके हमारी सरकार के पास प्रमाण मौजूद हैं। किन्तु इस धारा को केवल मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण समाप्त नही किया जा रहा है। अभी हाल ही मे काश्मीर के मुख्यमन्त्री डा, फारूक अब्दुल्लाह ने पुन यह घोषणा कर दी है कि धारा 370 समाप्त नही की जाएगी जबकि देश की एकता की सुरक्षा के लिये इसका समाप्त होना आवश्यक है और अब यह सरलता से समाप्त भी की जा सकती है क्योकि इस समय काश्मीर मे काग्रेस की मिली जुली सरकार है।

2 सभी के लिए समान सिविल कोड बनाया जाए।

धर्म निरपेक्ष राज्य होने के कारण सभी सम्प्रदायो और मजहबो के निजी कानून समाप्त कर सभी के लिये एक समान सिविल कोड बनाया जाना चाहिये और संविधान से अल्पसख्यक तथा बहुसख्यक शब्दों को हटा कर अल्पसख्यक आयोग समाप्त कर मानव अधिकार आयोग का गठन किया जाए। इससे अल्पसख्यक और बहुसख्यक का भेदभाव समाप्त हो कर देश की एकता को बल मिलेगा।

3 देश की राजकाज की भाषा के लिये हिन्दी को राष्ट्रभाषा बना कर देश की अन्य सभी भाषाओ की लिपि देवनागरी कर दी जाये।

देश की राजकाज की भाषा अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को स्थान दिया जाए और उसे सीखने के लिए सभी को एक अवधि निश्चित कर दी जाए। अंग्रेजी का प्रयोग केवल विदेशो से सम्पर्क भाषा के रूप मे ही किया जाए। देश की सभी प्रादेशिक भाषाओ की लिपि देवनागरी कर दी जाए। इससे जहा उत्तर दक्षिण का भेदभाव समाप्त हो हो कर एकता को बल मिलेगा वही देश के सभी लोग अधिकाश भाषाए सीखने मे भी सरलता का अनुभव करेंगे।

4 संविधान से उन सभी प्रावधानो को निकाला जाए जिन से अलगाववादी तत्वो को प्रेरणा मिलती है।

हमारे संविधान बेत्ता क्योकि कांग्रेस के ही लोग थे और सभी पण्डित नेहरू और महात्मा गान्धी के प्रभाव में थे। इसलिए उस समय संविधान में भी ऐसे कुछ प्रावधान शामिल कर दिये गये थे, जिनके कारण देश मे अलगाववादी शक्तियो को काफी प्रोत्साहन मिला। या तो इन प्रावधानो को संशोधित किया जाए या फिर देश की वर्तमान स्थिति के अनुरूप विधान को पुनः बनाया जाये।

5 आरक्षण तथा सरकारी सुविधाओ का आधार सम्प्रदाय विशेष न हो कर सभी सम्प्रदायो के पिछडे लोगो के लिये आर्थिक आधार पर हो।

आरक्षण तथा सरकारी आर्थिक सहायता एवं अनुदान देने का आधार कोई विशेष सम्प्रदाय या समुदाय नहीं होना चाहिये उसका आधार सभी वर्गों के पिछडे लोगो के उत्थान और विकास के लिये आर्थिक आधार होना चाहिये जिससे कोई भी समुदाय इन सुविधाओं का लाभ उठाने के लिये अपनी पहिचान अलग न बना कर देश की मुख्य धारा मे शामिल हो कर सब के साथ रहे इससे देश की एकता को काफी बल मिलेगा।

6 देश को भाषा के आधार पर प्रदेशों मे बाटने के स्थान पर उसे केन्द्र सरकार के अन्तर्गत लाया जाए और उसके शासन को चलाने के लिये चार या आठ भाग कर दिये जाएं और प्रदेशों को समाप्त कर दिया जाए।

देश को गणराज्य बनाने के लिये जो भाषा के आधार पर प्रदेशों मे बाटा गया है। इससे भी अलगाववाद को बहुत बडी शक्ति मिली है। आज इसी के कारण भाषा और प्रान्तवाद के झगडे बढ रहे हैं और उनमे परस्पर विवाद बढकर अलगाववाद पनप रहा है। चाहिये तो यह कि सभी प्रदेशो को समाप्त कर देश को चार या आठ भागो मे बाट कर सारा शासन तन्त्र केन्द्र सरकार द्वारा चलाया जाए किन्तु सुविधा के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किये जा सकते हैं। इससे पृथकतवाद समाप्त होगा और सभी लोगो को समान कानून और समान सुविधायें मिल सकेंगी।

यह बात तो ठीक है इन सब कामो को करने मे एक बार देश में खलबली तो मचेगी किन्तु इसे सख्ती से दबाने के लिये सागर मन्थन तो करना ही होगा और उसमे से जो अमृत निकलेगा और उसे जनता पीयेगी वह अमर हो जाएगी और फिर कभी भी किसी को हमारे देश की ओर आख उठा कर देखने का साहस नही होगा और न ही कांग्रेस के हाथ से कभी सत्ता ही छिन पायेगी क्योकि हिन्दू बहुमत उसके साथ रहेगा। और यदि यह कार्यक्रम न अपनाया तो फिर इस देश की दुनिया को कोई भी शक्ति टूटने से नही बचा सकेगी।

मारिशस में वैदिक विवाह सम्पन्न

मेरे द्वितीय पुत्र श्री भुवनमोहन माथुर (श्रम कल्याण अधिकारी, एच पी काटन टेक्सटाइलमिल हिसार) का विवाह मारिशस देश निवासी श्री प्रेम जीतन की सुपुत्री सौ सुनयना के साथ दिनांक 16 अगस्त को पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर मारिशस के प्रतिष्ठित आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित, श्री प्रह्लाद रामशरण, श्री राधा कृष्ण आदि सैकडो आर्य जन उपस्थित थे। भारत के मारिशस स्थित हाई कमिश्नर श्री क के भार्गव ने अपनी शुभ कामनाए नवदम्पती को प्रेषित की। वैवाहिक कार्य सहस्रो मील दूर मारिशस मे सम्पन्न हुआ। अत. मैं आर्य जगत् को इस मगल अवसर पर विधिवत आमन्त्रित करने मे असमर्थ रहा। आशा है आर्य समाज के गण मान्य नेता, विद्वान् और मेरे सभी हितैषी बन्धु नवदम्पती को अपना आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

—भवानी लाल भारती

अध्यक्ष—दयानन्द शोध पीठ,

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ

महात्मा अमर स्वामी जी के साथ कुछ क्षण

लेखक—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा सभा महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

मैंने सार्वदेशिक पत्रिका मे महात्मा अमर स्वामी जी के रुग्ण होने का समाचार पढ़ा, तो उनको देखने की इच्छा हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने श्री स्वामी जी के लिए चिकित्सा सहायतार्थ 1100 रुपये और इसी हेतु प हरबंसलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष ने 1000 रुपए स्वामी जी को देने का निर्णय किया। मुझे भी उन्हीं दिनो किसी कार्यवश दिल्ली जाना था। मेरे इस प्रोग्राम से सहमत करके उपरोक्त राशि भी श्री स्वामी जी तक पहुंचाने का कार्य मेरे जिम्मे लगाया गया। गाजियाबाद मे मैं श्री स्वामी जी के एक भक्त श्री भागमलराय जी अग्रवाल के साथ कवि नगर स्थित श्री स्वामी जी के आश्रम मे सायंकाल पहुंचा। श्री स्वामी जी रुग्ण तो थे ही पर उनके चेहरे पर रोग के कारण कोई उदासी अथवा चिन्ता के चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हो रहे थे। निहायत ही प्रसन्नचित एवं बड़ा-प्पाणी से वह मुझ से मिले। स्वामी जी का गला बिल्कुल बैठा हुआ था। आवाज बड़ी धीमी निकलती थी और यह अवस्था उनकी उनके कथनानुसार दो मास की निरन्तर खांसी के कारण हुई थी। और इसी कारण उन्हें तकलीफ थी, जो खाने-पीने मे गले मे होती थी। उन्हें कैन्सर होने का वहम डाल दिया गया था। इसी कारण बातचीत के द्वारा उनका यह वहम किसी सीमा तक दूर करने का प्रयास मैंने किया।

मैंने उन्हें लुधियाना नगर के आर्य भाइयो के सौहार्द पूर्ण आग्रह की चर्चा करते हुए कहा कि आपको इलाज के लिए लुधियाना ओसवाल कैन्सर इन्स्टीट्यूट मे भरती कराने के लिए मुझे आपको साथ लाने को कहा गया है। तो उन्होने कहा कि वह एक होमियोपैथ का इलाज करवा रहे हैं, जिसने उन्हे दो मास मे पूर्णतया स्वस्थ कर देने का आश्वासन दिया है। अत: उसकी चिकित्सा पूरी होने तक कहीं जाने का प्रश्न ही नहीं होता, और उन्होने ऐसे सभी सज्जनो के प्रति आभार प्रकट किया, जिन्होंने उन्हें इलाज के लिए दान राशि भेजी और इलाज के लिए लुधियाना ले जाने की योजना बनाई है।

श्री स्वामी जी बीकानेर मे जब वह एक बार आर्य समाज के उत्सव पर पधारे थे वहां, मैं मन्त्री था तब से मेरे परिचित थे और काफी स्नेह करते थे। आत्मीयता पूर्ण नि:संकोच व्यवहार स्वामी जी का होता था। उदाहरणत: श्री स्वामी जी के बीकानेर प्रवास के दौरान मुझे एक समय स्वामी जी की सेवा का अवसर मिला। श्री लाजपतराय जी भी श्री स्वामी जी के साथ मेरे गृह पर आए। स्वामी जी ने निहायत बेतकुल्लफी से कहा कि शर्मा जी मैं तो पहले क्षौर कराऊंगा और नहा-धो कर बाद में भोजन करूंगा! तुरन्त नापित को बुलाया गया और स्वामी जी ने क्षौर आदि करा स्नान कर भोजन एवं विश्राम किया।

श्री स्वामी जी से पूछा जाने पर कि स्वामी जी आपने यह आश्रम बनाया है और अभी इसमे काफी काम बाकी है, तो आपने कोई ऐसा उत्तराधिकारी के रूप मे नियत किया है? तो कहने लगे-शर्मा जी! कोई विश्वस्त विद्वान् व्यक्ति मिलता ही नहीं है। यह विद्वानो के बाद उनके कार्य को पूरा करने और आगे बढ़ाने वालो की स्थिति जो इस समय अत्यन्त शोचनीय प्रश्न बनी हुई है। श्री स्वामी जी के पास पुरानी पुस्तको का पर्याप्त भण्डार है उनकी योजना उस आश्रम को वैदिक अनुसंधान (रिसर्च) केन्द्र बनाने की थी। उस स्थल मे यज्ञशाला एवं पुस्तकालय के लिए कक्ष निर्माणाधीन हैं। क्या कोई वीतराग विद्वान इस दिशा मे श्री स्वामी जी को आश्वस्त कर सकने की स्थिति मे है? मुझे विश्वास है अवश्य मिलेंगे क्योंकि निराशा शब्द आर्यों की डिक्शनरी मे नही है। मैंने रात्रि उसी आश्रम मे ही विश्राम किया और प्रात:काल श्री स्वामी जी से विदा ली।

परन्तु अब स्वामी जी इस संसार मे नहीं रहे क्या हम आशा रखें कि कोई विद्वान् श्री स्वामी जी के सपनो को साकार बनाने के लिए उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करेगा।

—————

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

मीठी वाणी

लेखक—श्री कांशीराम जी बावला द्वारा श्री पथिक छुटमलपुर

मीठा बोलने की शिक्षा सभी धर्म-शास्त्र और महापुरुष देते हैं। जैसे—

मधु वचन है औषधि कटु वचन है तीर।
वचन द्वार से सचरे साले सकल शरीर॥
कुटिल वचन सबसे बुरा जार करे तन छार।
मधुर वचन जल रूप है बरसे अमृत धार॥

मीठा बोलने वाला व्यक्ति अपने सब काम बड़ी सुविधा से निकाल लेता है। उसके मित्र बहुत होते हैं और शत्रु कोई नहीं। जैसे कि ऊपर के दोहो मे बताया गया है कि मीठा शब्द तो अमृत के समान होता है और कड़वा वचन तीर के समान दूसरे के हृदय को चीर देता है। मीठा वचन झगड़े समाप्त कर देता है, रूठे मना देता है। इस पर एक दृष्टान्त सुनिये—

एक नगर मे कुछ गाने वाले आये। वे अपने गाने गलियो मे गाकर और सुना कर दान लेते थे, उनका एक गाना यह था।

कड़वा बोल न बोल तू मुख से मीठी वाणी बोल।
मान ले भाई मेरा कहना, मीठी वाणी है इक गहना॥
गहना भी अनमोल, मुख से मीठी वाणी बोल॥
यदि रहना तुझे है साथ शादाबी, मीठी वाणी उसकी चाबी।
प्रेम का फाटक खोल, मुख से मीठी वाणी बोल।
मीठी वाणी शहद समान। कड़वी वाणी जहर तू जान॥
लगता नहीं कुछ मोल, मुख से मीठी वाणी बोल।

एक दस वर्ष का लड़का वह गाना सुनने के लिए उनके साथ-साथ फिरता रहा। यह गाना उसको याद हो गया। फिर वह उनके साथ ही मिल कर गाता फिरता रहा और इस प्रकार यह गाना उसको पूरी तरह से याद हो गया। उसको वह समय 2 पर गाता रहता। स्कूल मे जाता तो अपने साथ पढ़ने वालों को सुनाता। एक दिन स्कूल के लड़के परस्पर झगड़ने लगे, तब उसने यह गाना गा दिया। सब लड़के गाना सुनने लगे और शान्त हो गए।

एक दिन जब वह लड़का स्कूल गया हुआ था तो उसके माता-पिता किसी बात पर झगड़ पड़े और मन-मुटाव हो गया। सायंकाल जब लड़का भी घर आ गया और उसका पिता भी काम से लौट आया तो उसने देखा कि उसके माता-पिता रूठे हुए हैं और एक दूसरे से बात नही करते। तब उसने वही गाना अपनी माता को सुनाया। वह बोली कि अपने पिता को जाकर सुना। तब उसने पिता को जा कर सुनाया। वह बोला कि अपनी मां को जाकर सुना। इस पर लड़के ने अपने पिता का हाथ पकड़ लिया और कहा चलो दोनो को इकट्ठा सुनाता हूं। गाना तो वे दोनो सुन ही चुके थे। उसका पिता उसके साथ चला गया। जब पति पत्नी दोनो एक दूसरे के सामने हुए तो दोनो ही हंस पड़े और रोष समाप्त हो गया।

मीठी वाणी के गाने ने ही झगड़ों का अन्त कर दिया।

—○—

(2 पृष्ठ का शेष)

है। यही नही गाय के गोबर से ऋतुराज नामक पेंट भी बनाया है जो सीमेंट मकानो के तापमान का सन्तुलन करता है।

किसान भाइयो नाडेप कम्पोस्ट पद्धति को अपना कर अपनी आवश्यकतानुसार खाद स्वयं बनाओ, धरती माता को पूरी मात्रा मे खाद देकर उपज बढ़ाओ, स्वावलम्बी बनो और रासायनिक खाद के कुचक्र से बचो—समृद्ध बनो।

अगर देश मे स्थान-स्थान पर योजनाबद्ध नाडेप कम्पोस्ट खाद बने तो प्रदूषण की समस्या हल होकर करोड़ो लोगो को आसानी से रोजगार मिलकर राष्ट्र सुखी एवं समृद्ध होगा।

हरियाणा क्षेत्र के लिए नाडेप कम्पोस्ट की जानकारी देने की व्यवस्था श्री आदर्श गौशाला सतनाली (इलाका) मे की गई हैं। कोई भी किसान भाई वहां जाकर यह जानकारी प्राप्त कर सकता है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' वेदाज्ञा एवं महर्षि का स्वप्न

लेखक—श्री भोलानाथ जी दिलावरी
प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

(6 सितम्बर से आगे)

उपदेशकों का अभाव कोई बाधक नहीं।

आर्य समाज के गत 112 वर्ष के इतिहास पर दृष्टि-पात करें तो इसमे हम देखेंगे कि इसमे उपदेशको की भूमिका ही प्रमुख रही है। परन्तु वर्तमान मे इन की अत्यन्त कमी हो गई है और आगे पूर्ति होने की कोई आशा भी नही। ऐसी अवस्था मे प्रचार प्रसार कार्य कैसे हो? बात है भी सत्य है अतः हमे इसका बदल ढूढना ही होगा।

यह एक तथ्य है कि कैसी भी जटिल दुष्कर समस्या मार्ग मे बाधक बन जावे तो यदि हम उसके समाधान के लिए दृढ सकल्प होगे, तो कोई न कोई समाधान मिल ही जावेगा। और हो सकता है कि वह पहले से भी उत्तम सिद्ध हो। महर्षि की ओर तनिक देखो, अकेले ही वह कुछ कर गए जो आज हम करोडो की सख्या मे होने पर भी नही कर पा रहे। कारण स्पष्ट है। हमे आलस्य प्रमाद ने घर लिया है। अपने इस दोष पर पर्दा डालने के लिए कोई न कोई बहाना बना रहे है। सच्ची दृढ लगन हो तो एक मार्ग बन्द होने पर, अन्य विकल्प मिल ही जाया करता है। सो मेरे समक्ष अब यह कोई समस्या या रुकावट नही रही। वरन् मुझे उपदेशक एक बोझल प्रभाव-हीन प्रतीत होने लग गए हैं। मिलते भी नही। जो है वह बोझल और कार्य भी नही कर सके। अतः इन्हे भूल जाना चाहिए।

इस आधुनिक युग मे नए-नए आविष्कार हो गए हैं जिनसे प्रचार-प्रसार का कार्य बडी सफलता से किया जा सकता है। इन्हे कार्य मे हम व्यापक रूप से, दूर समीप सब जगह छा सकते हैं। यात्रा आदि के खर्चों से बच सकते हैं। जनता मे आकर्षण भी सिद्ध हो सकते हैं। जबकि उपदेशक अपना जादू खो बैठा है। आधुनिक साधन द्वारा हम चाहे तो 2-3 वर्षो के अल्पकाल मे ही योजना बद्ध कार्य पद्धति से वह कार्य कर सकते है जो पूर्व मे 100 वर्षो मे भी सम्भव न था।

यह साधन है क्या? वर्तमान युग का आविष्कार है, इस वीडियो टी वी प्रणाली कहा जाता है। इसके द्वारा कैसेटो पर प्रसिद्ध विद्वानो के व्याख्यान फिल्माए जा सकते हैं। आर्य महापुरुषो की जीवन झाकिया, नाटक एव वैदिक धर्म सम्बन्धी अन्य रोचक प्रभावी कार्यक्रम तैयार करवाए जा सकते हैं और इन्हे बहुत कम खर्च पर, व्यापक रूप से, हर स्थान पर आसानी से भेजा जा सकता है। इस प्रकार प्रत्येक आर्य समाज मे, जलसो मे, स्कूलो, कालेजो मे बडी आसानी से दिखाया जा सकता है। मजे की बात यह है कि इन्हे देखने के लिए बाल-वृद्ध स्त्री-पुरुष स्वयमेव खिचे चले आते हैं। जितनी प्रभावी सूचना होगी, उतनी अधिक देखने वालो की उपस्थिति होगी।

योजना का कार्य रूप

उपरोक्त उद्देश्य प्राप्ति अर्थ योजना का प्रारूप क्या है? सक्षेप से मोट रूप से मेरे निम्न सुझाव हैं।

1 यह एक महान् एव आवश्यक कार्य है। इसका कार्य क्षेत्र बडा विस्तृत है। इसे स्थाई रूप भी देना है। अत. इस कार्य का सब प्रादेशिक आर्य सभाए एव सार्वदेशिक सभा मिल कर करें तो इसे पूरा बल मिलेगा।

2 इस विशेष कार्य के लिए अलग सस्था का निर्माण करना होगा। इसमे उच्चकोटि के मूर्धन्य आर्य विद्वान्, शिक्षा शास्त्री, लेखक, कवि, कलाकार, चित्रपट अनुभवी-विशेषज्ञ लेने होगे।

3 धन, अनुमानत. इस कार्य के लिए 20 25 लाख की राशि तो होनी ही चाहिए। इसके लिए सब सभाए एक एक लाख रुपया दें। ताकि कार्य शीघ्रातिशीघ्र प्रारम्भ किया जा सके। साथ ही इस नई सस्था की ओर से 20, 50, और 100 की रसीदें छपवा कर सब समाजो एव आर्य सज्जनो को दी जावे। ताकि धन मे भी कमी न आने पाये। इस कार्य मे हमारी केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर भी पूरी शक्ति के साथ हाथ बटाएगी। एक लाख तो कर ही देगी।

आर्य समाज का विशेष प्रचार, सर्व साधारण हिन्दू जनता पर डालने के लिए वीडियो कैसेटो द्वारा भरे जाने प्रोग्रामो मे कुछ-कुछ समय के अन्तर पर निम्न नारे (उद्घोष) भी भरे जावें। इनका भी भारी प्रभाव पड़ेगा।

नारों (उद्घोषों) की सूची

1 वेद ईश्वरीय ज्ञान है। आदि काल मे हम आर्यों पर प्रकट हुआ था। यही कारण है कि हम आर्यों ने ही ससार भर के मनुष्यो को सभ्य बनाया। हर प्रकार का ज्ञान दिया।

2 आर्य समाज हिन्दुओ का अभिन्न अग है, कोई अन्य मत मतान्तर नही।

3. वेद प्रचार सब हिन्दुओ का परम धर्म है।

4. वैदिक धर्म ही सच्चा सनातन धर्म है।

5 मनु महाराज भगवान रामचन्द्र जी और श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य थे हिन्दू नही थे। हम सब हिन्दू उनकी सन्तान होने के नाते आर्य हैं।

6 आर्य सस्कृति धर्म की रक्षा करना ही आर्य समाज का परम लक्ष्य है। अत. इसके सदस्य बनिये।

7 आर्य समाज हिन्दुओ की रक्षक सस्था है। इसके सदस्य बनिये।

8. हम आर्यों ने ही आदि मनुष्य को सभ्य बनाया था। ज्ञान वद्यानी सिखाई। बोलना, खाना, सिखाया। भाषा सिखाई। गणित विद्या एक से नौ गिनना और शून्य का महत्व सिखाया। अक्षरा, ज्योतिष्ट्री सिखाई। चिकित्सा का ज्ञान दिया।

9. हम आर्यों का आदिकाल से अविच्छिन्न चक्रवर्ती राज्य महाभारत काल तक सारे ससार पर रहा। हमे इसे फिर से प्राप्त करना है।

10 हमारी आर्य सस्कृति की आयु करीब 2 अरब वर्ष है। जबकि मुसलमानो की करीब 1400, ईसाइयो की करीब 2000 वर्ष और यहूदियो की 4-5 हजार वर्ष है।

11. सस्कृत भाषा ससार भर की भाषाओ की जननी है। इसका आदि नाम देव-भाषा है कारण कि यह ईश्वर प्रदत्त है। यही कारण है कि हर दृष्टि से यह सम्पूर्ण एव सर्वथा भूल रहित है।

12. आर्य समाज सच्ची आर्य सस्कृति का पोषक है। इसका सच्चा ज्ञान हिन्दू को कराना चाहता है। आओ इसके सहायक बनें।

13 हिन्दू मात्र की सेवा एव रक्षा आर्य समाज का परम धर्म है। इस लक्ष्य को बल देने के लिये इसके सदस्य बनिये।

—★—

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला की गतिविधियां

● श्री सतीशचन्द्र जी मेहता मन्त्री आर्य समाज बटाला ने दौड़-धूप करके कादिया के कुछ महापुरुषो के सहयोग से कादिया के एक मुस्लिम परिवार को दिनांक 25 8-87 को शुद्ध किया जिसमे पति-पत्नी और चार बच्चे थे। उसमे बटाला नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने भाग लिया।

● आर्य समाज बटाला की एक सम्पत्ति मुहल्ला अटेरिया मे खाली पड़ी हुई थी वहा गत दिनो कुछ शरारती तत्वो ने तकिया बनाने का प्रयास किया और वीरवार को देग, झडा और दिया जलाने की रसम करनी थी। स्थानीय आर्य समाज के प्रचार मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी कौडा को पता चला तो उन्होंने साहस करके जो कुछ वहा कब्र के रूप मे बनाया गया था वह तोड़-फोड दिया और अन्तरग सभा की विशेष बैठक उसी दिन बुलाई और शीघ्र निर्णय लेकर वहा पर चार-दीवारी करा दी। अब वहा कुछ दुकाने, सत्सग भवन और लगर बनाने का विचार है। नक्शा बन गया है और पानी आदि का कुनेक्शन मिल चुका है तकरीबन 30,35 हजार रुपये भी इकट्ठे कर लिये गये हैं। शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरु हो जाएगा। पजाब की आर्य समाजो से प्रार्थना है कि वह इस मे योगदान देने की कृपा करें।

—विजय कुमार अग्रवाल
प्रधान आर्य समाज बटाला

क्रियात्मक योग के लिए

लेखक—श्री पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज परिव्राजक

कुछ आवश्यक परिज्ञान

प्रश्न 1 सर्व प्रथम विचारणीय विषय यह है कि प्रत्येक मनुष्य क्या चाहता है?

उत्तर—नितान्त दुःख से छूट कर पूर्ण एवं स्थायी सुख को प्राप्त करना चाहता है। यह बात प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है। सुख को चाहने वाला सुख के साथ-साथ सुख के साधनों को भी चाहता है और दुःख को न चाहता हुआ दुःख के कारणों को भी नहीं चाहता।

प्रश्न 2 अर्थ किसे कहते हैं? (अर्थ—प्रयोजन—उद्देश्य)

उत्तर—सुख और सुख के साधन तथा दुःख और दुःख के कारण इन चारों को अर्थ कहते हैं। योग दर्शन में इन चारों को हेय—दुःख, हेय हेतु—दुःख का कारण, हान—मोक्ष तथा हानोपाय—विवेक ख्याति नाम से कहा है अर्थात दुःख और दुःख का कारण तथा सुख और सुख का उपाय।

प्रश्न 3 उपर्युक्त दुःख रहित पूर्ण एवं स्थायी सुख कैसे प्राप्त हो?

उत्तर—ऐसा सुख केवल योग से प्राप्त हो सकता है अन्यथा नहीं।

प्रश्न 4 इस में क्या प्रमाण है कि योग से ही पूर्ण एवं स्थायी सुख मिल सकता है?

उत्तर—वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थ इस बात को सिद्ध करते हैं कि योगी बन कर ही मनुष्य पूर्ण एवं स्थायी सुख को प्राप्त हो सकता है।

प्रश्न 5 सत्यासत्य का निर्णय कैसे करना चाहिए?

उत्तर—सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म को ठीक प्रकार से जानने के लिये ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में पांच कसौटियां लिखी हैं, जो निम्न हैं —

1—जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो वह-वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य।

2—जो-जो सृष्टि क्रम से अनुकूल हो वह-वह सत्य और जो जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह सब असत्य है।

3-आप्त अर्थात् जो धार्मिक विद्वान् सत्यवादी, निष्कपटियों का सङ्ग उपदेश के अनुकूल है वह-वह ग्राह्य और जो-जो विरुद्ध है वह-वह अग्राह्य है।

4—अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल, अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूंगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

5—आठों प्रमाण अर्थात प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव। इन उपरोक्त कसौटियों से सत्यासत्य का निर्णय करना चाहिये।

प्रश्न 6 क्या सांसारिक भोगों से पूर्ण एवं स्थायी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है?

उत्तर—नहीं, क्योंकि समस्त सांसारिक सुखों में परिणाम दुःख, ताप दुःख, संस्कार दुःख और गुणवृत्ति विरोध दुःख, यह चार प्रकार का दुःख मिला हुआ है। इस में पतञ्जलि ऋषि के योगदर्शन का प्रमाण है—

"परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः।" (यो॰ द॰ पा 2 सूत्र 15।)

प्रश्न 7 योग किसे कहते हैं?

उत्तर—चित्त की वृत्तियों के रोकने को योग कहते हैं।

प्रश्न 8 योगी बनने के क्या उपाय हैं?

उत्तर—शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध उपासना से ही मनुष्य योगी बनता है।

प्रश्न 9 ज्ञान का स्वरूप (परिभाषा) क्या है?

उत्तर—जिस से पदार्थ (वस्तु) का स्वरूप ठीक प्रकार से जाना जाए उसे ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 10 ज्ञान कितना होना चाहिए?

उत्तर—ईश्वर, जीव, प्रकृति इन तीन पदार्थों का ज्ञान होना आवश्यक है और वह ज्ञान व्यवहारिक होना चाहिए केवल शाब्दिक नहीं।

प्रश्न 11 ईश्वर, जीव और प्रकृति का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के क्या उपाय हैं?

उत्तर—वेद, वेदाङ्ग और उपाङ्ग को पढ़ने से तथा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि—योग के इन 8 अङ्गों का मन, वचन, कर्म से आचरण करने पर वास्तविक ज्ञान होता है।

(क्रमश.)

स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी को भावभीनी श्रद्धांजलियां

आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती को उनके द्वारा सस्थापित वैदिक साधु आश्रम रोपड़ में पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश से आए आर्य बन्धुओं ने 30-8-87 रविवार को भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां दीं। दिवंगतात्मा की शान्ति के लिए पहले श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर की अध्यक्षता में यज्ञ किया गया। इसके बाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी ने स्वामी वेदानन्द जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए आये हुये लोगों, आर्य बन्धुओं और बहनों से अपील की कि वह इस आश्रम के सम्बन्ध में कोई विवाद खड़ा न करें बल्कि उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का यहां संकल्प लें और सभी मिल कर इस आश्रम को चलाएं। श्री स्वामी सर्वानन्द जी ने स्वामी वेदानन्द जी की पुण्य स्मृति में खोले जाने वाले पुस्तकालय का [illegible] किया।

श्रद्धाञ्जलि समारोह स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में [illegible] हुआ। जिसमें सब प्रथम श्री ओमप्रकाश जी वर्मा ने स्वामी वेद [illegible] पर प्रकाश डालते हुये उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। [illegible] आये हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालयाध्यक्ष प॰ धर्मदेव जी [illegible] ने स्वामी जी के गुणों का वर्णन करते हुये बताया कि वह पंजाब के [illegible] थे जो अचानक हम से जुदा हो गये। आर्य प्रतिनिधि सभा प [illegible] उनका विशेष सम्बन्ध था। मैं सभा के सभी अधिकारियों तथा कार्यकर्ता [illegible] ओर से उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं।

इसके पश्चात श्रीमती अनुमती जी, श्रीमती विमला जी, श्री म [illegible] जी, श्री इन्द्र कुमार जी, श्री वेद प्रकाश सरीन जी, श्री दिलाराम जी श्री देश बन्धु जी चोपड़ा, श्री रोशनलाल जी आर्य, श्री स्वामी आनन्दबोध जी तथा अन्य कई सज्जनों ने स्वामी वेदानन्द जी को अपनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की वर्षा अधिक होने के कारण भी आर्य बन्धु बैठे रहे। वैसे तो सभी नगरों से आये आर्य बन्धुओं ने पूरा-2 सहयोग दिया परन्तु विशेष रूप से लुधियाना, नवांशहर, तलवाड़ा, रोपड़, खरड़ तथा मोरिण्डा से भारी संख्या में आर्य बन्धुओं ने भाग लिया और सभी ने पूरा-2 सहयोग दिया।

निश्चय किया गया कि स्वामी वेदानन्द पुस्तकालय का शीघ्र ही निर्माण किया जाएगा। इसके लिये कुछ आर्य बन्धुओं ने वहां धन भी दिया और कुछ ने देने का वचन दिया। स्वामी जी की स्मृति में आश्रम का नाम भी स्वामी वेदानन्द वैदिक साधु आश्रम रोपड़ रखा गया। इस समय स्वामी आनन्दबोध जी आश्रम का संचालन कर रहे हैं।

—ओम प्रकाश वर्मा प्रबन्धक

श्री लालचन्द सभ्रवाल भी चल बसे

जालन्धर के प्रसिद्ध वकील और आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री लालचन्द जी सभ्रवाल एडवोकेट का 14-9-87 सोमवार को देहावसान हो गया। उनके निधन का समाचार मिलते ही कचहरियों में वकीलों ने काम बन्द कर दिया। उनकी आयु 74 वर्ष थी। वह अपने पीछे एक लड़का एक लड़की और विधवा पत्नी छोड़ गए हैं। हम सब परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उ॰ वेद के पढ़ने का अधिकार मानव मात्र को है। फिर भी जिस के पास विद्या नहीं एवं जो मूर्ख है, उसके पास अधिकार होने से भी वह उसको पढ़ने के लिए समर्थ नहीं हो सकता। जैसे ईश्वर ने वेद पढ़ने का अधिकार किसी से भी नहीं छीना। महर्षि का कथन है कि—"जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि को पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, चन्द्र, सूर्य और अन्न आदि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं वैसे वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं। (सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास) तर्क भी यही कहता है कि जब संसार के सब पदार्थ सभी के लिए हैं, तो वेद भी सभी के लिए होना चाहिए। प्राचीनकाल में भी गार्गी, मैत्रेयी आदि स्त्रियां और जानश्रुति आदि तथा कथित शूद्र ने भी वेदाध्ययन किया था।

प्र॰ कल्याण का मार्ग कौन सा है?

उ॰ कल्याण का मार्ग तो वेद मार्ग ही है, इसलिए उसी मार्ग को अपना कर अपना जीवन सफल करना चाहिए।

आर्य महिला सभा को राष्ट्रपति जी ने पांच सौ रु.की राशि भेंट की

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली का एक शिष्ट मण्डल गत दिनो भारत के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति श्री आर वेंकट रमन से उनके निवास स्थान पर मिला। शिष्ट मण्डल की ओर से राष्ट्रपति जी को रक्षा बन्धन एवं निर्वाचित होने की शुभ कामनाए दी और उन्हे वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया। राष्ट्पति जी ने भाव विभोर होकर बहनो का धन्यवाद किया और अतिथि सत्कार के साथ 500 रुपये की राशि महिला सभा को भेट की।

—प्रकाश आर्या
महा मन्त्राणी

श्री वैद्य दलीप जी नहीं रहे

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की यह साप्ताहिक सभा श्री वैद्य दलीप सिंह जी, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द औषधालय "मोही" (लुधियाना) की अकस्मात् मृत्यु पर गहरा दुःख प्रकट करती है, श्री वैद्य जी का लुधियाना तथा आस-पास की समाजो से गहरा सम्बन्ध था वह एक कुशल चिकित्सक थे। उनके चले जाने से आय समाज की बहुत क्षति हुई जिसकी पूर्ति असम्भव है। आय समाज के सभी सदस्यो ने दो मिन्ट का मौन रख कर परम पिता परमात्मा से प्राथना की थी कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करे। पीछे उनके परिवार इष्ट मित्रो को यह दारुण दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—मन्त्री आर्य समाज
स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज मोहाली की अन्तरंग सभा की एक विशेष बैठक रविवार दिनांक 23-8-87 को हुई, जिसमें आर्य जगत् के महान् पण्डित ज्योति-पुञ्ज, आध्यात्म-वाद के महान् पण्डित वीतराग युवा-सन्यासी आर्य युवकों के हृदय-सम्राट, स्वामी वेदानन्द जी महाराज के के आकस्मिक देहावसान पर गहरा दुःख व्यक्त किया गया। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो में महान् नेता के दिवंगत होने से आर्य जगत् की जो क्षति हुई है उसे पूरा नही किया जा सकता।

आर्य समाज, मोहाली सर्व-सम्मति से परम-पिता परमात्मा से दिवंगत महात्मा की सुख-शान्ति के लिए प्रार्थना करती है तथा उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का सकल्प लेती है।

—विनोद कुमार
मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज एवं महिला आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला नगर, की ओर से दिनांक 23-8-87 को हुई। विशेष बैठक पूज्य स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती के अकस्मात् निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। यह दोनो समाजें स्वामी जी की कृपा के विशेष पात्र रही हैं। इसके निधन से आर्य जगत् में एक बड़ी कमी पैदा हो गई है। जिसके निकट भविष्य में पूर्ति होना असम्भव सा प्रतीत होता है। उनके उपदेशों पर चल कर ही हम उनको सच्ची श्रद्धांजलि दे सकेंगे।

परम-पिता परमात्मा से सविनय प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। —हरबंसलाल-मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

पंजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 25, 11 आश्विन सम्वत् 2044 तदानुसार 27 सितम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

दृढ़ इच्छा शक्ति

लेखक—श्री कोमलनाई 'केस', एम ए

भारती-भवन, कौडिया (आजमगढ़) 272, 142

●●●

इन्द्रस्य या मही दृषत्, क्रिमेर् विश्वस्य तर्हणी।
तया पिनष्मि स क्रिमीन्, दृषदा खल्वाइव ॥

काण्व । मही । अनु-ष्टुप् — अथर्ववेद 2 21 1

अन्वय : इन्द्रस्य या मही, विश्वस्य क्रिमेः तर्हणी दृषत् तया क्रिमीन् सम् पिनष्मि, इव दृषदा खल्वान् ।

अर्थ इन्द्र की जो महती, सब क्रिमि की हन्त्री, शिला (है) उससे क्रिमियो को मैं पीसता हू जैसे शिल—चक्की से चनो को ।

जीवनी शक्ति

इन्द्रियों को नियन्त्रित करने वाली शक्ति का नाम इन्द्र है। यह शक्ति बहुत सूक्ष्म है। यह शरीर मे रह कर जीवन देती है। इसकी उपस्थिति का नाम जीवन है। यदि यह शक्ति न रहे तो शरीर मृत हो जाए।

इसी को लोक मे आत्मा नाम से जाना जाता है। आत्मा और शरीर के संयोग से जो गति और विकास की प्रक्रिया जगत् मे चलती है उसका नाम जीवन है।

आत्मा 'स्व' है। जब शरीर मे उस के अस्तित्व का निरन्तर ध्यान रहता है तब शरीर 'स्व में स्थित' (स्व-स्थ) कहा जाता है। उससे जब शक्ति का संवर्द्धन होता है तो वह स्थिति 'स्वास्थ्य' कही जाती है। स्वास्थ्य शरीर की स्थूलता नहीं, आत्मशक्ति है। आत्मशक्ति जीवनी शक्ति कहलाती है।

जब बाहर की विकृति शरीर में प्रवेश करती है तब जीवनी शक्ति उसे बाहर निकालने के लिए सक्रिय हो जाती है। इस प्रकार दो विरोधी शक्तियो का संघर्ष शरीर के रणक्षेत्र को पराक्रान्त करता है। तब शरीर पीड़ित हो जाता है क्योंकि अन्दर का संघर्ष बाहर प्रकट होने लगता है। इसी का नाम रोग है। रोग के प्रकट होने से पहले, मस्तिष्क पर विकृतियों का आक्रमण धीरे-धीरे होता है। इसके परिणाम स्वरूप रोगी पहले चिड़-चिड़ा, क्रोधी, उग्र, उदास, खिन्न निराश आदि (मानसिक विकृतियो का शिकार) हो जाता है। जब ऐसी स्थिति आए तो समझ लेना चाहिए कि कोई रोग शरीर को खा रहा है। ऐसी स्थिति मे मन साधना ही मानव-मात्र का एक सहारा है जिससे वह जीवन के बहुत बड़े रोग से छुटकारा पा सकता है। जैसे किसी मे कामुकता की अति-वृद्धि उससे बार बार कहती है कि, 'सावधान! तुम्हारी यह मानसिक दुर्बलता किसी चर्म रोग की ओर इशारा कर रही है जो तुम्हे परेशान करने के लिए आ रहा है।' यदि जीवनी शक्ति की इस पुकार को मानव नही सुनता है तो वह अपनी दृढ इच्छा शक्ति को स्वत परा-जित करता हुआ अपने जीवन से हाथ धो लेता है।

इसीलिए इन्द्र भरपेट सोम पीता है। सोम सबसे बड़ी औषधि है। 'सोम' का अर्थ है शीतलता, शान्ति, आह्लाद, प्रसन्नता, चन्द्र गुण,। इससे मस्तिष्क को शान्ति मिलती है और रोग के आने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि मस्तिष्क सोम की मस्ती मे मस्त होता है। सोम पान करने से जीवनी शक्ति को इतनी अधिक शक्ति मिल जाती है कि कोई भी बाहरी विकृति शरीर मे प्रवेश करते ही मर जाती है और मनुष्य आरोग्ययुक्त रहता है। ध्यान रहे, बाहरी विकृतिया इन्द्रियों के मार्ग से शरीर में प्रवेश करती है। इन्द्रियों का नियमन करने वाला इन्द्र है और इन्द्र जीवनी शक्ति है।

क्रिमि (ऋत का अतिक्रमण)

विकृति को 'पाप' कहा जाता है। इसी को कानून 'अपराध' कहता है। चाहे इसे पाप कहें, अपराध कहें या विकृति कहें, बात एक है। भेड़िये की तरह धीरे धीरे चलकर पाप एकाएक स्वास्थ्य का गला घोटने के लिए झपट पड़ता है। पाप को क्रिमि कहा जाता है। क्रिमि जीवनी शक्ति को दबाने लगता है और शरीर के लक्षण उसे (शरीर को) बचाने के लिए चिल्लाने लगते हैं।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि स्थूल वस्तु का प्रभाव सूक्ष्म वस्तु पर नही पड़ता। जीवनी शक्ति सूक्ष्म है। इस पर कीड़े (बैक्टीरिया) अपना प्रभाव नही डाल सकते क्योंकि वे स्थूल होते हैं। इसलिए स्थूल क्रिमियों के द्वारा रोग फैलने का सिद्धात समझ में नही आता। इसलिए वेद मे आए क्रिमि पर विचार करना आवश्यक है।

'क्रिमि' मे 'क्रम' धातु है। 'क्रम्' का अर्थ है गति (पार करना, आगे बढना, कदम रखना आदि)। किसी मर्यादा, सीमा या नियम से आगे बढना उल्लंघन कहलाता है। प्रकृति के नियम को 'ऋत' कहते हैं। ऋत के अन्दर रहने से जीवनी शक्ति सक्रिय रहती है। पर ऋत का अतिक्रमण करने से पाप धीरे धीरे अन्दर घुस कर जीवन को खतरा बन जाता है।

कहना न होगा कि वेद किसी भी सूक्ष्म वस्तु को समझाने के लिए उसकी समानधर्मी किसी स्थूल वस्तु का सहारा लेता है। सूक्ष्म वस्तु को समझाने के लिए सूक्ष्म अनुभूति की आवश्यकता होती है पर जन-साधारण सूक्ष्म अनुभूति से वञ्चित रहता है। इसलिए स्थूल के द्वारा सूक्ष्म की ओर जाने की प्रक्रिया आरम्भ करनी होती है। वेद मे जिस स्थूल वस्तु का चित्रण है वह किसी सूक्ष्म वस्तु का प्रतीक है।

'क्रिमि' शब्द ऋत के अतिक्रमण का सूचक है। अतिक्रमण से पाप पनपता है। पाप का फल बहुत सूक्ष्म होता है। वह जीवनी शक्ति को अपनी सूक्ष्मता से दुष्प्रभावित कर देता है। फलत रोग पहले-पहल मस्तिष्क पर आक्रमण करता है। पाप से मस्तिष्क आक्रान्त होता है। बुद्धि या तो निष्क्रिय हो जाती है या अशुद्ध हो जाती है। जब बुद्धि शुद्ध नही रहती तो अपराध की ओर रुझान बढ़ता जाता है।

उदाहरण के लिए काम को लें। काम शरीर की बहुत आवश्यकता है किन्तु जब वह असयत हो जाता है तब मस्तिष्क रोगी हो जाता है। उस समय बुद्धि नहीं रह जाती। इसलिए अच्छे-बुरे का ज्ञान नही रहता। इतना ही नहीं, काम की तृष्णा मनुष्य को कुसंगति का शिकार बना देती है। फलस्वरूप अगम्या-गमन से सुजाक का रोग-विष शरीर मे फैलने लगता है। इससे गर्मी का रोग घर पकड़ता है और जीवन-भर हत्या अपराध तथा आत्म हत्या का पाप सिर पर मडराने लगता है जो धीरे धीरे यहीं से कुष्ठ या गलित कुष्ठ पर्यन्त क्रमिक होते रहते हैं। काम ही है जो पहले मानसिक दुर्बलता बन कर काला-न्तर मे चमड़े पर दिखाई पड़ता है। मरहम से दबा करने पर वह दब जाता है और इसका रोग विष फफड़े, हृदय, यकृत आदि पर अपना दुष्प्रभाव जमाने लगता है। इससे दमा, रक्तचाप (ब्लड प्रैशर) और पेट के तमाम रोग शरीर मे पलने लगते हैं। फलत शरीर व्याधियो का मन्दिर बन जाता है। इस प्रकार, काम एक ऐसा क्रिमि है जो शरीर के सब रोगो का मूल है। इस मूल से फूटा अंकुर क्रोध और लोभ के रूप मे फूलने फलने लगता है। 'गीता' मे काम, क्रोध और लोभ को नरक का द्वार ठीक ही बताया गया है।

दृढ इच्छा शक्ति

मानव की दृढ इच्छा शक्ति क्रिमियो का नाश करती है। इच्छा शक्ति (विल पावर) जब दृढ नही होती तो मनुष्य ऋत का अतिक्रमण करता है और रोग उसे धर दबाता है। प्रकृति के प्रतिकूल जाने वाली इच्छा इच्छा शक्ति को दबा देती है किन्तु दृढ इच्छा शक्ति उसे नष्ट कर देती है और जीवन सत्य-मार्ग पर चल पड़ता है। जैसे यद्यपि सूर्योदय के पहले सारी आध्यात्मिक साधनाए सम्पन्न करनी होती हैं किन्तु प्रात ही अन्तर्द्वन्द्व उठने लगता है और प्रमाद आ जाता है। परिणाम जो होता है उसे सब जानते हैं, दिन मे कार्य के बाहुल्य से साधनाए पड़ी रह जाती हैं। यदि प्रमाद का प्रवेश होते ही दृढ इच्छा शक्ति उसे तोड़-फोड़ डाले, चीर डाले, तो मनुष्य प्रात उठ कर अपने सारे कार्यों का सम्पन्न करता है। इससे जीवन संयत और नियत बनता है और वह अपने को निरतर तरो ताजा महसूस करता है। (क्रमशः)

हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण में महर्षि दयानन्द की भूमिका

लेखक—श्री देवव्रत आर्य बन्धु, आर्योपदेशक
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात में होने से उनकी मातृभाषा भी स्वभावतः गुजराती ही थी तथापि वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। अपने प्रारम्भिक सामाजिक जीवन में वे व्याख्यान आदि भी प्रायः संस्कृत में ही दिया करते थे। अपने कलकत्ता प्रवास तक वे संस्कृत में ही भाषणादि दिया करते थे। किन्तु कलकत्ता प्रवास के मध्य बाबू केशवचन्द्र सेन के परामर्श से वे भाषण तथा लेखन आदि समस्त कार्य हिन्दी भाषा में करने लग गये। महर्षि जिस समय हिन्दी के रंगमंच पर अवतीर्ण हुए, उस समय हिन्दी गद्य का स्वरूप ही अभी पूर्णतया निश्चित नहीं हो पाया था। इसके स्वरूप निर्धारण में महर्षि की क्या भूमिका रही है, प्रस्तुत लेख में इसी पर विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण के विषय में दो राजाओं की परस्पर विरोधी विचार धाराओं में टकराव चल रहा था। राजा शिव प्रसाद सितारे-हिन्द अपनी भाषा में उर्दू के शब्दों का बाहुल्य रखते थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह अपनी भाषा में संस्कृत के शब्दों को प्राथमिकता देते थे। उन दिनों सरकारी कार्यालयों में उर्दू का प्रचलन था, इसलिए राजा शिव प्रसाद सितारे-हिन्द अपनी भाषा में उर्दू-फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग करते थे। राजा लक्ष्मण सिंह का मत था हिन्दी का उद्गम संस्कृत होने से उसका शब्द भण्डार भी संस्कृत भाषा से ही भरा जाना चाहिए। तात्पर्य यह कि राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द तद्भव शब्दों के प्रयोग के पक्षधर थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह तत्सम शब्दों के प्रयोग के।

भारतेन्दु और दयानन्द

हिन्दी गद्य के स्वरूप विषयक संघर्ष के काल में हिन्दी के रंग मंच पर दो और महापुरुष अवतीर्ण हुए और हिन्दी की सेवा में जुट गए। ये थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और स्वामी दयानन्द सरस्वती। भारतेन्दु को हिन्दी गद्य का निर्माता कहा जाता है। उनका क्षेत्र भी केवल साहित्य तक ही सीमित था जबकि महर्षि दयानन्द का कार्य क्षेत्र भारतेन्दु की भांति संकुचित न था। और सत्य तो यह है कि महर्षि मूलतः धार्मिक व्यक्ति थे, साहित्यिक नहीं। फिर भी उन्होंने हिन्दी की जो सेवा की वह भारतेन्दु से किसी प्रकार भी कम नहीं, अपितु कई गुना अधिक है। इस पर हिन्दी भाषा के विकास के इतिहास में उनकी प्रायः उपेक्षा कर दी गई है। इस सम्बन्ध में डा लक्ष्मी नारायण गुप्त का यथार्थ कथन है कि—"आश्चर्य का विषय यह है कि स्वामी दयानन्द ने भी तत्कालीन परिस्थिति में हिन्दी के निर्माण और प्रचार में भारतेन्दु जी की अपेक्षा कम सहयोग नहीं दिया तथापि हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने उनका वर्णन अत्यन्त अल्पतः से किया और यदि उनका कार्य इतना महान् व्यापक और दीप्त न होता तो वे उन्हें बिल्कुल ही छोड़ जाते। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द ने जो धार्मिक सुधार का महा क्रान्तिकारी रूप प्रस्तुत किया वह अधिकांश में जनमत के विरुद्ध पड़ा। मूर्तिपूजा, श्राद्ध और अवतारवाद जैसी व्यापक धारणाओं का तीव्र प्रबल और ओजस्विनी भाषा में खण्डन बड़ा ही अप्रिय सिद्ध हुआ। सम्भव है ऐसे भयंकर व्यक्ति और उसके कार्यों का वर्णन हिन्दी इतिहास लेखकों ने उपेक्षात्मक रूप से करना ही ठीक समझा हो। (द्रष्टव्य—डा लक्ष्मी नारायण गुप्त का शोध प्रबन्ध हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन, पृष्ठ 94 95)

जो जो हो, यह सत्य है कि महर्षि दयानन्द के योगदान का यथार्थ मूल्यांकन एवं तदनुरूप वर्णन नहीं किया गया। यह भी उस अवस्था में जब कि महर्षि को भारतेन्दु की अपेक्षा कार्य करने का अवसर भी कम ही मिला है और फिर उनके सम्मुख भारतेन्दु की अपेक्षा कठिनाइयां भी अधिक थीं। भारतेन्दु की मातृभाषा हिन्दी थी और वे साहित्यिक क्षेत्र के व्यक्ति थे। महर्षि की भाषा गुजराती थी और वे धार्मिक क्षेत्र के व्यक्ति थे। साहित्य साधना तो उनका ध्येय था ही नहीं। उनका उद्देश्य तो वैदिकता का प्रचार-प्रसार करना और [illegible] का निवारण करना था। [illegible] से ही [illegible] की पूर्ति में संस्कृत-भाषा तो [illegible] गई। जो भी [illegible] स्वरूप ही [illegible] निश्चित [illegible] किया। [illegible] हिन्दी गद्य में प्रस्तुत करने को [illegible]।

भारतीयता का रंग

महर्षि दयानन्द पूर्ण रूप से भारतीयता में रंगे थे। अतः वे अपनी भाषा को भी भारतीयता की पूंट देना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने तत्सम शब्दों के प्रयोग पर अधिक बल दिया। वे हिन्दी को हिन्दी नहीं, "आर्य भाषा" कहा करते थे। महर्षि भारतवर्ष को भी उसके प्राचीन नाम से ही पुकारा करते थे, अर्थात् आर्यावर्त और आर्यावर्त की राष्ट्रभाषा के रूप में आर्य भाषा (हिन्दी) को आसीन करना चाहते थे। महर्षि ने आर्य भाषा हिन्दी को राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में जो परिकल्पना की थी, उसका साक्षात्कार करते हुए गोकुल चन्द्र शुक्ल ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में अपना सशक्त भाषण देते हुए कहा था कि—"पचास वर्ष के लगभग हुए, मैंने स्वामी दयानन्द को शिक्षा के प्रभाव से अनुभव किया कि देश की एकता के लिए हिन्दी का राजभाषा होना आवश्यक है। उपरोक्त विवरण यह बताने के लिए पर्याप्त है कि भारतेन्दु युग में भी भारतेन्दु की अपेक्षा महर्षि दयानन्द ने हिन्दी के भारतीयकरण की ओर अधिक ध्यान दिया।

महर्षि ने तत्सम शब्दों के प्रयोग पर जो बल दिया था, उसके पीछे एक अन्य रहस्य भी है और वह है हिन्दीतर प्रदेशों में तद्भव प्रधान हिन्दी तत्सम प्रधान हिन्दी की अपेक्षा अधिक कठिन प्रतीत होती है, क्योंकि हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषाएं प्रायः संस्कृतनिष्ठ होती हैं। (द्रष्टव्य—भारतेन्दु के विचार एक पुनर्विचार, लेखक—डा चन्द्रभानु सोनवणे विद्यालंकार पृष्ठ 59) वस्तुतः "यदि सरल हिन्दी का अर्थ वह हिन्दी है जो हिन्दी भाषायों और अहिन्दी भाषियों दोनों को ही आसानी से समझ में आ जाए तो संस्कृत शब्दों का प्रयोग आवश्यक है क्योंकि बिना अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में संस्कृत का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है, वहां ऐसे शब्द आसानी से समझ जाते हैं। (देखें—हिन्दी साहित्य के परिवर्तन के सौ वर्ष पृष्ठ 156)।

महर्षि दयानन्द की यह विशेषता है कि उन्होंने अपने ग्रन्थों में पारलौकिक [illegible] के [illegible] का बहुत [illegible] शब्दों के पर्याय की नींव [illegible]। [illegible] भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का [illegible] [illegible]। वे वेद, वेद, उपनिषद आदि [illegible] करते थे। हिन्दी [illegible] [illegible] [illegible] आदि शब्दों का प्रयोग [illegible] रहे हैं। [illegible] हिन्दी [illegible] स्वामी दयानन्द द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा के अनुसार हो रहा है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के स्वरूप को आधुनिक स्तर और स्थिरता प्रदान करने में स्वामी [illegible] का [illegible] हाथ है।

(द्रष्टव्य—हिन्दी गद्य साहित्य, लेखक—डा सोनवणे पृष्ठ 95)

इस प्रकार यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण और उसके विकास में आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द की अत्यन्त गौरवमयी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह और बात है कि किन्हीं पूर्वाग्रहों अथवा दुराग्रहों के कारण कोई उसका समुचित उल्लेख न करे, किन्तु यह वास्तविकता है कि महर्षि दयानन्द की हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण में भूमिका किसी भी दशा में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से कम नहीं रही। अपितु कई अंशों में अधिक ही रही है। यह भारतेन्दु के भाग्य की बात है कि वे हिन्दी के भव्य भवन के कलशस्वामी हो गए जबकि महर्षि नींव का पत्थर बनना पड़ा। लोगों की दृष्टि प्रायः कलश पर ही पड़ती है, नींव पर नहीं। पर क्या कोई भवन बिना सुदृढ़ नींव के कभी टिका है। महर्षि दयानन्द नींव के पत्थर तुल्य हैं और पत्थर नहीं दिखाई देता है? अतः यही कहना चाहते हैं कि :—

गड़ गये जो नींव में,
उन पत्थरों की याद कर लो।
जो नहीं देते दिखाई।

राष्ट्र चिन्तन

वयं राष्ट्रे जागृयाम॥

(यजुर्वेद)

हम राष्ट्र के प्रति सजग रहें।

"जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब मिल कर प्रीति से करें।"

"सृष्टि से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था।"

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

आर्य समाज भटिण्डा की गतिविधियां
हिन्दी दिवस समारोह

आर्य समाज भटिण्डा में दिनांक 14-9-87 को आर्य समाज मन्दिर में हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया। इसमें पटियाला जिला के 1939 तथा 1957 के हिन्दी सत्याग्रहों के दौरान जेल जाने वाले लोगों को सम्मानित किया गया। इस समारोह में श्री ओम् प्रकाश वानप्रस्थी, जयपाल दास जी, महाशय निहाल चन्द, श्री [illegible], [illegible] देव जी, [illegible] जी, [illegible]राम [illegible] तथा श्री [illegible] जी, [illegible]री जी को सम्मानित किया गया। इनको सत्यार्थ प्रकाश की प्रति तथा धोती कमीज भेंट स्वरूप दिए गए। लाला कबीर चन्द प्रधान जिला आर्य सभा भटिण्डा ने इन महान् महानुभावों का पधारने पर धन्यवाद किया। लाला अमरनाथ जी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। लाला अमरनाथ जी ने सत्याग्रहियों को सत्यार्थ प्रकाश तथा धोती कमीज भेंट किए।

भाषण प्रतियोगिता

आर्य समाज भटिण्डा द्वारा हिन्दी दिवस के उपलक्ष मे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता का विषय था "हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है और आर्य समाज का राष्ट्र भाषा के लिए योगदान" इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रीता एस.एस डी गर्ल्स हाई स्कूल की लड़की ने दूसरा इनाम रेनु [illegible] तथा तीसरा इनाम रेनु डोगर आर्य गर्ल्स हाई स्कूल की लड़कियों ने तथा विशेष इनाम [illegible] को दिया गया। दो विशेष इनाम मोनिका [illegible] तथा [illegible] आर्य [illegible] माडल स्कूल के विद्यार्थियों को दिए गए। यह इनाम लाला अमरनाथ जी प्रधान आर्य गर्ल्स हाई स्कूल के कर कमलों द्वारा बच्चों को दिए गए। इनके अतिरिक्त बच्चों को स्कूल से नकद रुपए के इनाम भी मिले।

महादेवी वर्मा को श्रद्धांजलि

आर्य समाज भटिण्डा द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर महादेवी वर्मा के निधन पर शोक व्यक्त किया गया व स्वर्गीय की श्रद्धांजली भेंट की गई।

—ओम् प्रकाश [illegible]
प्रधान

स्वामी दयानन्द-जन्म दिवस समारोह

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 164 वां जन्म दिवस प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री डा. सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता में राजौरी गार्डन स्थित वेद-संस्थान मे श्रद्धापूर्वक मनाया गया। डा. वेदव्रत "आलोक" एवं श्री आदित्यपाल सिंह आर्य द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द की जीवनी "अपना-जन्म चरित" का डा सत्यकेतु ने विमोचन किया। इस पुस्तक मे स्वामी दयानन्द के जीवन के अज्ञात पक्षों विशेष कर 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम मे उनके योगदान पर तथ्यों सहित प्रकाश डाला गया है। आर्य जगत् साप्ताहिक पत्र के सम्पादक तथा इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री क्षितीश वेदालंकार ने कहा कि जितना इतिहास हमें ज्ञात है वह पूर्ण नहीं और जो कुछ हम जानते हैं वह अन्तिम सत्य नहीं, यही कारण है कि आगे आने वाली पीढी भी सत्य का अन्वेषण कर लेती है। श्री आदित्यपाल सिंह द्वारा स्वामी दयानन्द जन्म दिवस के विषय में किया गया अन्वेषण इसका प्रमाण है। साथ ही श्री क्षितीश जी ने भी यह बताया कि महर्षि दयानन्द ने अनेकों क्रान्तिकारियों को प्रोत्साहित किया। कुछ के उनके साथ सीधे सम्बन्ध भी थे। जिस प्रकार राजस्थान के केसरसिंह बारठ का परिवार जो 1857 की क्रान्ति से लेकर लगातार 3 पीढ़ियो तक स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ा रहा। इस सन्दर्भ में उन्होंने आगे कि प [illegible] बन्धु शास्त्री द्वारा बंगला में लिखी पाण्डुलिपियो के अनुवाद और प्रकाशन की आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द की जन्म तिथि भाद्रपद शुक्ला नवमी का निर्णय हाल की खोजो से हुआ है और वेद संस्थान मे गत वर्ष पहली बार इस समारोह की परम्परा डाली थी। गाजियाबाद, इलाहाबाद एवं देहरादून की अनेक आर्य समाजो मे भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए।

—योगेन्द्र [illegible]

विजयी दशमी पर्व

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में विजय दशमी (दशहरा) का पर्व 2-10-87 को शुक्रवार प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक बड़ी धूम-धाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर वेद प्रचार भजन मण्डली के भजन होंगे तथा श्री [illegible] जी [illegible], [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को आमन्त्रित किया गया है।

—रोशनलाल शर्मा-मन्त्री

लुधियाना में हिन्दी दिवस

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में आज 13-9-87 रविवार को हिन्दी दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। जिस की अध्यक्षता डा. बांगिया प्रधान आर्य समाज ने की।

मुख्याध्यापक श्री नारायण दास भाटिया, डा रामस्वरूप, श्री यशपाल [illegible] जी ने हिन्दी के सम्बन्ध में अपने-2 विचार दिये। प्रधान डा बांगिया जी ने अपने विचारो द्वारा सभी से प्रार्थना की कि भारत की एकता, अखण्डता, और राष्ट्र की उन्नति के लिए राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करें, अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा का सन्देश पत्र पढ़ कर सुनाया गया और सभी आर्य बन्धुओं ने इस पर चलने का प्रण किया।

—यशपाल [illegible]

विकलांगों के लिए सुनहरा अवसर

देश में प्रति लाख व्यक्तियो मे लगभग सवा आठ सौ " अपंग हैं। कुछ जन्मजात अपंग हैं व कुछ पौष्टिक तत्वों की कमी के कारण व अन्य वृद्धावस्था, कैंसर या दुर्घटना के कारण अपंग हैं।

अब पैर नहीं लाचार नहीं।

मानवता की सेवा ही जीवन का सर्वोत्तम कार्य है। [illegible] म प्रेरित होकर [illegible] परिवार के आर्थिक सौजन्य मे आर्य समाज [illegible] चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से चूरू, नागौर व सीकर जिला [illegible] के अपंगों के पैर लगाने के लिए चिकित्सा व्यवस्था की गई है। इस [illegible] को मूर्त रूप देने मे चूरू के जिलाधीश श्री जी एस सन्धू एवम् समाज कल्याण विभाग ने जिले के समस्त विकास अधिकारियो, पंचायत समितियो, नगर परिषदो एवम् नगरपालिकाओ से भी अपंगो की सूचियां भेजने का आग्रह किया है।

जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर मे कमर से नीचे के हिस्से के विकलांगों की रहने, खाने, पीने एवम् उपकरण लगाने की निःशुल्क व्यवस्थाएं राज्य सरकार एवं भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के माध्यम से संचालित है। इन चिकित्सालयो में विकलांग व्यक्तियों के कृत्रिम पैर लगाकर चिकित्सा की जाती है जिससे वे अपने पैरो पर सुविधा से चल सकते हैं, साइकिल व अन्य मशीनें आसानी से चला सकते हैं तथा खेतो में कड़ी मेहनत करने मे सक्षम हो सकते हैं।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र के अपंगो की सूची सुश्री सन्तोदेवी शर्मा भूतपूर्व विधायिका, स्टेशन रोड, सुजानगढ़ को भेजने की कृपा करें। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत [illegible] की संख्या में विकलांगो को लेकर चिकित्सालय तक पहुचाने एवं उनकी अन्य आवश्यकताओ की पूर्ति करने का प्रबन्ध किया जायेगा।

सुविधा हेतु अन्य स्थानो पर सम्पर्क स्थापित करने से भी इस व्यवस्था का लाभ प्राप्त होगा।

सत्यनारायण साहोटी

आर्य समाज गोनियाना मण्डी का चुनाव

6-9-87 दिन रविवार को आर्य समाज गोनियाना मण्डी का चुनाव श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी, अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा की प्रधानता मे सर्वसम्मति से नीचे लिखे अनुसार सम्पन्न हुआ —

प्रधान—श्री महाशय चिरञ्जी लाल जी, मन्त्री—श्री राजेश कुमार जी आर्य कोषाध्यक्ष-श्री प्यारे लाल जी रत्न, श्री प्रधान जी को बाकी के पद अधिकारी मनोनीत करने का अधिकार दिया गया-श्री प्रधान जी ने नीचे लिखे अधिकारियो की घोषणा उसी समय कर दी—श्री जगदीशराम आर्य उप प्रधान, श्री मास्टर तरसेम कुमार जी आर्य उप मन्त्री, श्री रमेश कुमार जी आर्य पुस्तकाध्यक्ष बनाए गए। और नीचे लिखे अन्तरंग सदस्य बनाए गए—श्रीमती कैलाश रानी जी, श्रीमती सरिता रानी जी, श्रीमती पुष्पा देवी जी।

—ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी

शोक प्रस्ताव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् लुधियाना की दिनांक 13-9 87 की बैठक में महात्मा अमर स्वामी सरस्वती जी की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया। हमें स्वामी जी के साक्षात् शास्त्रार्थ सुनने का तो सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका लेकिन आर्य नवयुवको ने स्वामी जी के छप रहे शास्त्रार्थ के तीनो भागों को खरीद कर पढ़ने का संकल्प लिया। बैठक मे एक शोक प्रस्ताव पास किया गया तथा स्वामी जी की आत्मा की शान्ति के लिए परम पिता परमात्मा प्रार्थना की तथा आर्य जगत् को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि उन्होंने प्राचीन शास्त्रार्थों को जो छपवाने का संकल्प ले रखा था आर्य महानुभाव उसे पूरा करें।

—[illegible] शर्मा-मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज अजमेर की यह सभा आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी, एवं वेदादि शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित तथा वैदिक साधु आश्रम रोपड़ (पंजाब) के संस्थापक सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती के दिनांक 18 अगस्त 87 को तलवाड़ों में हुए आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है। स्वामी जी अपने अन्तिम श्वास तक वेद प्रचार के कार्य में लगे हुए थे। उन्होंने यौवनावस्था में ही आर्य समाज के कार्य से प्रभावित होकर संन्यास ग्रहण कर लिया था और अपना पूरा जीवन समाज के लिए अर्पित कर दिया था।

यह सभा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह पूज्य स्वामी जी की दिवंगत आत्मा को चिरशान्ति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिजनों एवं आर्य जनों को इस वज्रपात दुःख को सहन करने की शक्ति धैर्य एवं सांत्वना प्रदान करें। एक मिनट का मौन रखकर शान्ति पाठ किया गया।

—रासासिंह मन्त्री

आर्य समाज कोटा में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज रामपुरा कोटा में वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 1-9-87 से 6 9 87 तक सम्पन्न इस समारोह मे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर से पधारे विद्वान शान्ति प्रकाश जी वेदवागीश, भजनोपदेशक श्री अमरसिंह जी के उपदेश एवं भजनोपदेश हुए। नारी उत्थान मातृ पितृ भक्ति, सन्ध्या उपासना, वेदो मे नारी का स्थान आदि अनेक विषयो पर विद्वानो के सारगर्भित उपदेश हुए।

कार्यक्रमों का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री भगवती प्रसाद श्याम ने किया वहीं अन्य आर्यों का भी इस वेद प्रचार सप्ताह मे उत्साह वर्धन कार्य रहे मात सेवा सदन स्कूल के एव बाल भारती आर्य विद्यालय के बालक बालिकाए भी प्रवचनो से लाभान्वित हुए।

—राम दयाल मेहरा उपमन्त्री

तपा में वेद प्रचार सप्ताह

स्थानीय आर्य समाज तपा में 3 सितम्बर से 6 सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस कार्यक्रम के अन्दर आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य श्री सत्यप्रिय जी हिसार वाले और पूज्यपाद महात्मा प्रेम प्रकाश जी को सादर आमन्त्रित किया गया। संगीताचार्य श्री प्रेम कुमार जी की भजन मण्डली पुरी तथा श्री रामरक्षा शास्त्री जबरूर ने अपने दो बच्चों सहित इस कार्यक्रम की शान को बढ़ाया। कार्यक्रम इस प्रकार रखा गया-3-9 87 की सायंकाल पंचायती मन्दिर तपा से 8 से 10 बजे तक भजन एवं प्रवचन रखा गया।

6 9-87 को आर्य समाज के प्रधान डा राज कुमार के सपुत्र एवं उनके छोटे भाई श्री विनोद कुमार जी के लड़के का नामकरण संस्कार एवं मुण्डन संस्कार आचार्य जी ने करवाया। अन्त मे प्रधान जी व संरक्षक जी हृदय भाव की कोमल से सबका [illegible] किया। इस प्रकार साप्त कार्यक्रम रोचक सुन्दर, प्रभावशाली एवं सफल रहा।

—[illegible] आर्य मन्त्री

[illegible] एवं [illegible]-शिविर

वैदिक [illegible], [illegible], [illegible] 5 [illegible] से 11 [illegible] 1986 [illegible]

[illegible]

[illegible] है कि [illegible] में प्रति वर्ष होने वाले [illegible] से [illegible] संख्या में [illegible] आते हैं।

—[illegible]

मन्त्री, वैदिक [illegible]

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का पिछला वार्षिक अधिवेशन 11 मई 1986 को लुधियाना मे हुआ था। सभा के अधिकारियो का यह प्रयास रहता है कि सभा के संविधान के अनुसार एक वर्ष के पश्चात् चुनाव करा लिए जाएं, इसलिए पहले यह निर्णय लिया गया कि सभा का वार्षिक अधिवेशन 31 जुलाई को किया जाए। परन्तु पंजाब की परिस्थितिया कोई भी काम निश्चित रूप से नहीं होने देती। इसलिए यह वार्षिक अधिवेशन पुन: 4 अक्तूबर को करने का निश्चय किया गया। पंजाब सभा इस पर गर्व कर सकती है कि जहा दूसरी कई प्रान्तीय सभाएं तीन तीन, चार-चार वर्ष अपना चुनाव नही कराती, वहा पंजाब सभा नियमानुसार अपना वार्षिक चुनाव प्रतिवर्ष करा लेती है। इसी के अनुसार अब 4 अक्तूबर 1987 को सभा का अगला वार्षिक अधिवेशन जालन्धर मे होगा।

इस अधिवेशन मे आने वाले प्रतिनिधि महानुभावो की सेवा मे मैं कुछ बातें रखना चाहता हू कि मुझे यह स्वीकार करने मे कोई संकोच नही कि पिछले दो तीन वर्षों मे हम पंजाब मे वह कार्य नही कर सके जो हमे करना चाहिए था। उस का एक कारण यह भी है कि पंजाब की परिस्थितियो ने सारे वातावरण को इतना दूषित कर दिया है कि न तो हम पहले की तरह उस प्रकार के उत्सव और सम्मेलन कर सकते हैं जैसे कि हम पहले किया करते थे। न ही हम और कोई कार्यक्रम बना सकते है। हमारी सभा के पास इस समय केवल दो उपदेशक और दो भजनोपदेशक है। कभी इस सभा के पास तीस-चालीस उपदेशक हुआ करते थे। पंजाब से बाहिर का कोई व्यक्ति यहा आकर काम करने को तैयार नहीं है। हमने सार्वदेशिक सभा के प्रधान महोदय से भी प्रार्थना की थी कि वह हमे ऐसे दो चार उपदेशक भिजवा दें जो उच्चकोटि के उपदेशक हों और वह यहा आ कर काम कर सकें। एक भी उपदेशक नही भेजा। हमने देश की सब आर्य पत्रिकाओ मे यह विज्ञापन भी दिया कि हमे उपदेशको की आवश्यकता है। हम हजार, डेढ हजार रुपया मासिक वेतन भी देने के लिए तैयार थे परन्तु कोई बाहिर से नहीं आया, फिर भी मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियो और अन्तरग सभा के सदस्यो और दूसरे महानुभावो का हृदय से आभारी हू कि इन विषम परिस्थितियो मे भी उन का सहयोग हमे मिलता रहा है। आज हमारा संगठन कितना सुचारु रूप से चल रहा है। इस का सब से बडा प्रमाण यह है कि आज पंजाब की किसी भी आर्य समाज मे तदर्थ समिति नही है सब आर्य समाजो के विधिवत् चुनाव हो चुके है। जिन के नही हुए उन के भी हो जाएगे। और इस प्रकार हम ने इन अत्यन्त विषम परिस्थितियो मे भी आर्य समाज के संगठन को टूटने नही दिया। मैं इसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की एक बहुत बडी उपलब्धि समझता हू।

जो प्रतिनिधि महानुभाव 4 अक्तूबर को सभा के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए जालन्धर आ रहे है। मेरा उन सब से एक निवेदन है कि वह गम्भीरतापूर्वक विचार करें कि पंजाब की वर्तमान परि-

स्थितियों में हम आर्य समाज की ज्योति को किस प्रकार से प्रज्वलित रख सकते हैं। इस के लिए यह भी आवश्यक है कि जो नए अधिकारी निर्वाचित किये जाए वह ऐसे हों जो पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज को जीवित रख सकें। मैं बड़े गर्व से कह सकता हूं कि पंजाब की आर्य समाजों में ऐसे महानुभावो की कमी नही है जो सभा के काम को पूरी योग्यता, लग्न और तन्मयता से चला सकते हैं। समय के अनुसार और आवश्यकता के अनुसार यदि अधिकारी बदलते रहे तो संस्था को लाभ होता है। क्योंकि नए अधिकारी अपने अनुभव और योग्यता के आधार पर संस्था को नया जीवन प्रदान कर सकते हैं। वैसे तो सभा के प्रतिनिधियो का दायित्व सदा ही महत्वपूर्ण रहा है परन्तु आज की परिस्थितियो में वह और भी बहुत अधिक आवश्यक हो गया है। इसलिए चुनाव करते समय प्रतिनिधि महानुभाव जो भी निर्णय लें, वह ऐसा हो जिस से सभा का भविष्य और भी उज्ज्वल हो सके।

अन्त मे मैं सभा के अधिकारियो, अन्तरंग सभा के सदस्यों, सभा कार्यालय के कर्मचारी महानुभावों और पंजाब की आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन का पूरा सहयोग और आशीर्वाद सभा के प्रधान के दायित्व को पूरा करने में मुझे मिलता रहा है। परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारी यह सभा फलती-फूलती रहे और इस पर जो चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं, हम उन से इस सभा को बचा सकें। यह सभा सब से पुरानी सभा है। इस का सब से पुराना इतिहास है और कुछ गौरवमय परम्पराए हैं। इसलिए यह कई लोगो की आंखों मे खटकती रहती है। उनका प्रयास रहता है कि किसी प्रकार पंजाब सभा का महत्व समाप्त किया जाए। कई लोग आए और निकल गये परन्तु पंजाब प्रतिनिधि सभा पूरी शान के साथ वहीं खड़ी है, जहां वह पहले खड़ी थी और मेरा यह अटल विश्वास है कि चाहे कितनी आंधियां आएं यह सभा अपनी पुरानी परम्पराओ के अनुसार चट्टान की तरह अपने स्थान पर खड़ी रहेगी।

—वीरेन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी की यात्रा-3

कोई भी व्यक्ति जो गुरुकुल को देखने जाता है उसे वहां की स्थिति को देख कर अत्यन्त कष्ट होता है। जहां तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का सम्बन्ध है वह तो नियमानुसार चल रहा है। यद्यपि उसके पाठ्यक्रम और प्रबन्ध में सुधार की बहुत आवश्यकता है। यह केवल मेरा ही विचार नही उसके कई वरिष्ठ अधिकारियों का भी यही विचार है। उसके शिष्ट परिषद् को इस स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए देश की परिस्थितियां बहुत तेजी से बदल रही हैं और प्राय: सब शिक्षा संस्थाएं इस पर विचार कर रही हैं कि शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार के संशोधन या परिवर्तन की आवश्यकता है। भारत सरकार ने तो अपनी नई शिक्षा प्रणाली की घोषणा भी कर दी है। ऐसी स्थिति में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली में भी यदि किसी संशोधन की आवश्यकता है तो उसे भी लागू किया जाए। जो गुरुकुल श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने स्थापित किया था वह हमारी प्राचीनता का प्रतीक था आज की आधुनिक विचारधारा को सामने रखते हुए प्राचीनता और आधुनिकता इन दोनों के समन्वय के रूप में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को आगे कैसे चलाना चाहिए इस पर भी तुरन्त विचार करने की आवश्यकता है।

परन्तु सबसे अधिक शोचनीय स्थिति गुरुकुल कांगड़ी की है जहां छोटे-2 बच्चों को माता-पिता इस विचार से भेजते हैं कि सम्भवत: कोई इन मे से सत्यव्रत निकल आए, कोई शिवव्रत निकल आए, कोई प्राणनाथ निकल

जाए, कोई विश्वनाथ निकल आए या कोई सत्यकेतु निकल आए। गुरुकुल ने उच्चकोटि के कई बड़े-2 विद्वान् पैदा किए हैं। आज का गुरुकुल एक अजायबघर बना हुआ है। जिस गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधार पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने यह सस्था प्रारम्भ की थी आज गुरुकुल मे उसकी मिट्टी-पलीत हो रही है और इस का दायित्व आर्य समाज के उन नेताओ पर है जो समझते हैं कि गुरुकुल और गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी उनकी निजी सम्पत्ति है। आर्य जगत् के लिए इससे बढ कर शोचनीय स्थिति और क्या होगी कि गुरुकुल के इतिहास मे यह पहली बार हुआ है कि गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर नए विद्यार्थियो का वेदारम्भ सस्कार नही हुआ मैं भी गुरुकुल के उत्सव लगभग पचास वर्ष से देखता चला आ रहा हू और जानता हू कि गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर आर्य जनता के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण और आकर्षक समारोह नए बच्चो का वेदारम्भ सस्कार हुआ करता था। यह वह समय होता था जब गुरुकुल के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता वह तपस्वी त्यागी महानुभाव हुआ करते थे जो गुरुकुल को अपने पास से कुछ देते थे, लेते कुछ नही थे। आज के गुरुकुल के अधिकारी दो-दो अढाई 2 हजार रुपये मासिक लेते हैं और गुरुकुल मे नही रहते गुरुकुल से बाहर रहते हैं। कभी-कभार अपनी मोटर मे बैठ कर आ जाते हैं। क्योंकि उन्हें आर्य समाज के महान् नेताओ का आशीर्वाद प्राप्त है।

यह सब कुछ मैंने इस लिए लिखा है कि मेरी आवाज आर्य जनता के कानो तक पहुच सके और वह अब भी यदि इस सस्था को बचा सकती है तो बचा ले। मैंने पिछले लेख मे डी ए. वी. कालेज की प्रबन्ध समिति का जिकर किया था। उन्होंने सारे देश मे स्कूलो, कालेजो का जाल बिछा रखा है और एक अपनी उस सस्था को नही बचा सके जिसने कभी आर्य समाज का नाम सारे ससार मे चमकाया था। जिसे देखने के लिए ब्रिटिश सरकार के बड़े-2 अधिकारी आया करते थे।

मैंने यह सारी स्थिति इस लिए आर्य जनता के सामने रखी है कि कल को कोई यह न कहे कि हमे मालूम नही था कि वहा क्या हो रहा था। गुरुकुल फार्मेसी मे जो घपला चल रहा था मैं पिछले पाच वर्षों से उसके विरुद्ध कहता आ रहा हू। उसका एक परिणाम यह अवश्य हुआ है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान मेरे विरुद्ध कार्यवाही करने को तैयार हो गए। उनका अपना डर इस समय उन्हे परेशान कर रहा है। गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी के सम्बन्ध मे पुलिस ने जो जाच की है यदि वह सब सामने आ गई तो जनता देख कर हैरान हो जाएगी कि वहा क्या कुछ होता रहा है। जो कुछ भी हुआ है कल को और क्या हो सकता है उसके आधार पर कुछ नही कहा जा सकता। वहा की स्थिति देख कर उर्दू के एक कवि के यह शब्द मुझे याद आ गए।

"खुदारा तेरे यह सादा बन्दे किधर जाए।
कि सुलतानी भी ऐय्यारी है, दरवेशी भी ऐय्यारी ॥

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर का संवत् 2043 (1986-87) का वार्षिक विवरण

माननीय प्रतिनिधि बहनो तथा भाईयो !

आज हम फिर एक वर्ष के पश्चात सभा के साधारण अधिवेशन मे यहा उपस्थित हुए हैं। गत अधि-वेशन 11 मई 1986 को आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में हुआ था। हम इस बार भी मई या जून में वार्षिक चुनाव करवाना चाहते थे, परन्तु पजाब की विशेष परिस्थितियो के कारण हमे चुनाव लगभग चार या पाच मास पीछे हटाना पड़ा। हमे प्रयास करना चाहिये कि सभा का चुनाव प्रति वर्ष समय पर अर्थात् मई के अन्तिम रविवार को हो जाए।

गत कई वर्षों से पजाब मे आतकवादी निरन्तर निर्दोष लोगो की हत्याए कर रहे हैं पजाब का वातावरण बिगाड़ने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। हमे फिर भी अपना काम करते रहना है। आप सब आज सभा के पदाधिकारियो तथा अन्य सदस्यो का चुनाव करने के लिए और पजाब की वर्तमान स्थिति पर विचार करने के लिए अपना अमूल्य समय निकाल कर यहा पधारे हैं। इसके लिए मैं आप सब का हार्दिक स्वागत करता हू।

गत चुनाव जो 11 मई को आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना मे हुआ था। उसमे सर्व सम्मति से श्री वीरेन्द्र जी को सभा प्रधान चुना गया था और साधारण सभा ने सर्व सम्मति से उन्हे ही सभा के अन्य पदा-धिकारी, अन्तरग सदस्य, विद्यासभा के सदस्य, सार्वदेशिक सभा के सदस्य, न्याय सभा व आर्य विद्या परिषद पजाब आदि के सदस्यो को चुनने का अधिकार दिया था। उस अधिकार के आधार पर श्री सभा प्रधान जी ने निम्नलिखित महानुभावो को पदाधिकारी और अन्तरग सभा के सदस्य आदि घोषित किया था।

निम्नलिखित महानुभाव अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सन् १९८६-८७ के लिए घोषित हुए

सभा अधिकारी

1, श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान, दैनिक प्रताप, नेहरू गार्डन रोड जालन्धर शहर।
2 श्रीमती कमला आर्या 350 गली सती सूबा, लुधियाना उप प्रधान।
3 श्री राजेन्द्र कुमार जी दीवान उप-प्रधान, भारत चौक लुधियाना।
4 श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी उप-प्रधान, 326 कृष्ण नगर, गुरदासपुर।
5 श्री सन्तराम जी अग्रवाल, उपप्रधान मकान न 1224 सैक्टर 22, बी चण्डीगढ़।
6 श्री प ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा महामन्त्री, 232 एफ-रेलवे कालोनी जालन्धर न 3।
7 श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट सभा मन्त्री 1— कूलरोड, समीप रेडियो स्टेशन जालन्धर शहर।
8 श्री सरदारी लाल जी आर्य सभा मन्त्री, आजाद सरजीकल वर्क्स भार्गव कैम्प जालन्धर शहर।
9 श्री ओमप्रकाश जी पासी सभा मन्त्री, बी 2 659 माली गंज, लुधियाना।
10 श्री डा रामनाथ शर्मा, सभा मन्त्री भण्डारी निवास मजीठा रोड अमृतसर।
11 श्री प हरवंसलाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष, 406-एल, माडल टाउन जालन्धर शहर।
12 श्री चौ ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट, अधिष्ठाता वेद प्रचार, 2—अकुश, न्यूकोर्ट जालन्धर।
13 श्री प धर्म प्रकाश जी दत्त (प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद पंजाब) आदर्श बाल विद्यालय,
समीप बस स्टैंड बंगा रोड, नवाशहर द्वाबा (जालन्धर)।
14 सुश्री विमला छाबड़ा, अधिष्ठाता साहित्य विभाग, प्रिंसीपल लाल बहादुर शास्त्री
महिला कालेज, बरनाला जिला संगरूर।
15 श्री आशानन्द जी आर्य, अधिष्ठाता आर्य वीर दल, 49।63, हरपालनगर लुधियाना।

जिला प्रतिनिधि —

1 श्री ओमप्रकाश जी महेन्द्र वैदिक मिशनरी मोरिण्डा, जिला रोपड़।
2 श्रीमती कमला भाटिया, मुख्याध्यापिका आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल, भठिण्डा।
3 श्री वेद प्रकाश जी महता, प्लाट न 9 जगदीश आश्रम के अन्दर पटियाला।
4 श्री प मनोहर लाल जी आर्य, आर्य समाज मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर।
5 श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा, 169 इण्डस्ट्रियल एरिया लुधियाना।
6 श्री विजय कुमार जी, मैसर्ज राजकुमार होलसेल क्लाथ मर्चेंट मेन बाजार अहमदगढ़ (संगरूर)।
7 श्रीमती इन्दुपुरी मैसर्ज देवीदास, गोपाल कृष्ण आयल मिल्ज गान्धीरोड मोगा।
8 श्री प्रो स्वतन्त्र कुमार जी, 229 म्युनिसीपल कालोनी पठानकोट।
9 श्री सुभाष जी भाटिया, मकान, न 2027।27 कूचा कर्मों जलियांवाला अमृतसर।
10 श्री प्रो रोशनलाल जी, राजकीय हायर सैकण्डरी स्कूल कपूरथला।
11 श्री हुकमचन्द जी महता, बी एम 31।11 गली गंगा मन्दिर फिरोजपुर शहर।

अन्तरंग सभा के प्रतिष्ठित सदस्य

1. श्री प. देवेन्द्र कुमार जी, पुरानी मण्डी नवांशहर दुआबा (जालन्धर)।
2. श्री अमृतलाल जी बजाज एडवोकेट, इ-जी-933 गोबिन्दगढ़ जालन्धर।
3. श्री रामशुभाया जी नन्दा,जनरल स्टोर मेन बाजार बस्ती गुजां जालन्धर।
4. श्री कर्मचन्द जी माली मकान नं. 155 गढ़ा, जालन्धर।
5. श्री वैद्य वेणी प्रसाद जी शर्मा, 650 मलेरकोटला हाऊस, लुधियाना।
6. श्री महेन्द्रपाल वर्मा, 4321 बी 11 माली गंज लुधियाना।
7. श्रीमती शान्ता नन्दा जी,कोल डिपो समीप रैस्ट हाऊस गुरदासपुर।
8. श्री वैद्य ओमप्रकाश जी इन्दु, हिन्द फार्मेसी बंगा रोड फगवाड़ा।
9. श्री मुनि चेतन देव जी, मकान नं. 2652 राजपुरा टाऊनशिप।
10. श्री जगदीशराय जी बांसल, बांसल टी कम्पनी अनाज मण्डी मोगा।
11. श्री कुलवन्तराय सूद,सिम्पलेक्स निटवेयर्स माधोपुरी लुधियाना। 141008
12. श्री बधीरचन्द जी,मैसर्स सरनामल नत्थूराम एण्ड कम्पनी न्यू क्लाथ मार्कीट भठिण्डा।

विशेष निमंत्रित सदस्य

1. श्री ज्ञानचन्द जी मकान नं. 196 डब्ल्यू क्यू बस्ती दानिशमंदा, जालन्धर।
2. श्रीमती शान्ता गौड, प्रधाना स्त्री आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना।
3. श्री बलभद्र मल्होत्रा जी, प्रिंसीपल श्रीराम आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल पटियाला।
4. श्रीमती सुशीला भगत, 71 न्यू जवाहर नगर, जालन्धर।
5. श्री केवल कृष्ण पुरी, देवी दास गोपाल कृष्ण आयल मिल्ज गान्धी रोड़ मोगा।
6. श्री विजय कुमार जी अग्रवाल,मैसर्ज प्रेमनाथ एण्ड ब्रदर्ज जी- टी रोड बटाला।
7. श्री डा. मूलचन्द जी भारद्वाज, एम. बी. कालेज मण्डी बाग जवाहरियां लुधियाना 143505।
8. श्री ब्रह्मदत्त जी कौड़ा, गान्धी चौक बटाला (गुरदासपुर)।
9. श्री डा. कैलाशनाथ भारद्वाज, मोहल्ला लाभियां, सराफा बाजार फगवाड़ा।
10. श्री रोशनलाल जी शर्मा,संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब, 751 सिविल हस्पताल रोड़ लुधियाना।
11. श्री अमृतलाल जी गुलाटी, आर्य समाज बंगा रोड़, फगवाड़ा।
12. श्री वेद प्रकाश जी सरीन मोहल्ला लाभियां, नवांशहर दुआबा (जालन्धर)।
13. श्री डा. के. के. पसरीचा, पसरीचा हस्पताल, आदर्श नगर जालन्धर।
14. श्री रामकृष्ण जी महाजन, दयानन्द मठ दीनानगर, जिला गुरदासपुर।
15. श्री रणवीर जी भाटिया, लिल्ली सिलाई मशीन, चकड़बाजार लुधियाना।
16. श्री वेद बन्धु जी चोपड़ा,आर्य सदन न्यू माडल टाऊन फगवाड़ा।
17. श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ,मन्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर।

सभा कार्यालय

सभा कार्यालय मे ये बन्धु वर्ष भर कार्यरत रहे हैं।

1. श्री जुगलकिशोर जी कार्यालयाध्यक्ष।
2. श्री देवदत्त जी नारंग सभा मुख्य गणक।
3. श्री प. धर्मदेव जी आर्य सह-सम्पादक आर्य मर्यादा तथा सह-अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग
4. ठाकुर कर्मसिंह जी रिकार्ड कीपर तथा सभा मुख्तारे आम।
5 श्री रणियाराम जी गोस्वामी, टीपक।
6. श्री वीरेन्द्र शर्मा जी व्यवस्थापक, आर्य विद्या परिषद् पंजाब।
7. श्री विपिन शर्मा जी व्यवस्थापक साहित्य प्रकाशन विभाग।
8. कुमारी मीनाक्षी कालिया, टीपक।
9. श्री ठाकुर जोगेन्द्र सिंह पत्रवाहक।
10. श्री दाताराम जी शर्मा पत्र वाहक।
11 श्री मीनबहादुर थापा चौकीदार।
12. श्री देवराज सोन्धी सफाई सेवक।

इनमें कुमारी मीनाक्षी कालिया को नवम्बर 86 से सेवा मुक्त कर दिया गया, क्योंकि उनकी नियुक्ति अस्थायी रूप से ही की गई थी। जनवरी 1987 मे श्री जुगलकिशोर जी कार्यालयाध्यक्ष के सेवा मुक्त हो जाने पर उनके स्थान पर श्री प. धर्मदेव जी आर्य को सभा कार्यालयाध्यक्ष नियुक्त किया गया तथा 23-3-87 को श्री देवदत्त जी नारंग सभा मुख्य गणनिक के सेवा मुक्त होने पर उनके स्थान पर श्री वीरेन्द्र शर्मा को गणनिक नियुक्त किया गया। इस प्रकार कार्यालय के कार्यकर्ताओं की संख्या 12 से घट कर 9 रह गई है। सेवा मुक्त (रिटायर) होने वाले महानुभावो ने अपने समय मे सभा की बड़ी निष्ठा पूर्वक तत्परता से प्रशंसनीय सेवा की और जब कभी आवश्यकता पड़ने पर सभा का काम निःशुल्क करने का आश्वासन दिया। उपरोक्त तीनो के जाने से कार्यालय के कार्य को अन्य स्टाफ बहुत कुशलता से चला रहा है अन्य किसी नये कार्यकर्ता को रखने की आवश्यकता अभी महसूस नहीं हो रही। इन सभी बन्धुओ ने सभा के संचालन मे मुझे बहुत सहयोग दिया है और सभी बन्धु यथा शक्ति अपनी योग्यता के अनुसार पूरा कार्य कर रहे हैं। मैं भविष्य मे भी इन से ऐसी ही अपेक्षा रखता हू।

दायाद रक्षा (सम्पत्ति विभाग)

सभा की बहुत सी सम्पत्ति है जो भूमि के रूप मे है, इस की देख-रेख श्री मा.पूर्णचन्द वानप्रस्थी मुख्तारेआम करते रहे हैं। उनको इस विषयक पूर्ण ज्ञान था कि सभा की सम्पत्ति कहा-2 पड़ी है, वह उसकी सुरक्षा तथा उससे सभा के लिये आय के साधन बनाने का प्रयास सभा के निर्णय के अनुसार करते रहे हैं। मास्टर जी निरन्तर कई वर्षों से सभा की सेवा करते आ रहे थे। परन्तु जनवरी1987 से वह रुग्ण चले आ रहे थे अब16सितम्बर को उनका देहावसान हो गया।

विज्ञप्तियां

सभा अपना प्रचार कार्य कई ढंगो से जारी रखे हुए है, जहा वेद प्रचार विभाग और आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा सभा का प्रचार और प्रसार कार्य निरन्तर चल रहा है। वहा समय-समय पर सभा द्वारा भेजी गई विज्ञप्तिया भी प्रचार कार्य मे महान् सहायक सिद्ध हुई हैं। बहुत बड़ी संख्या मे छपवा कर सभी आर्य समाजो को यह निरन्तर भेजी जाती रही है।

सभा की ओर से आर्य समाजो को इस वर्ष मे कई बार विज्ञप्तियो के माध्यम से निर्देश व आदेश दिए गए। ऐसी विज्ञप्तिया सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजो को भेजी जाती हैं। दिनांक 13 मई 1986 को एक विज्ञप्ति द्वारा आर्य समाज और स्त्री आर्य समाज के सम्बन्ध मे निर्देश व आदेश देकर दोनो समाजो मे चल रहे विवादो को समाप्त करने का निर्देश दिया गया।

2. दिनांक 26-5-86 को जारी की गई विज्ञप्ति के द्वारा सभी आर्य समाजो से निवेदन किया गया कि वे रविवार पहली जून को पंजाब बचाओ दिवस मनायें।

3 दिनांक 5-6-86 को उग्रवाद से पीड़ित परिवारों को आर्य समाज के भवनो मे शरण देने एव उनकी सहायता करने की प्रार्थना सभी आर्य समाजो से की गई।

4 प्रथम जुलाई 86 को सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो को अपने नये प्रतिनिधि चुन कर सभा मे भेजने के लिए निर्देश दिया गया।

5 आठ अगस्त 86 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार सभी आर्य समाजो से प्रार्थना की गई कि 15 अगस्त को आर्य समाज मन्दिरो मे विशेष कार्यक्रम कर के सुरक्षा पट्टी लागू करने की सरकार से मांग की जाए।

6 दिनांक 28 अगस्त 86 को "एक आतक पीड़ित परिवार सहायक कोष,शुरू कर सभी आर्य समाजो से इसमे अपना सहयोग देने की अपील की गई।

7 तीन नवम्बर 86 को भेजी गई एक विज्ञप्ति द्वारा सभी आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना की गई कि वे विश्व शान्ति महायज्ञ करें एव 80-85 वर्ष की आयु के ऊपर के बुजुर्गों को आर्य समाज के समारोहो मे सम्मानित करें।

8 दिनांक 20 दिसम्बर 1987 को सभी आर्य समाजो को निर्देश दिया गया कि वे आर्य युवको को आगे लाए और अपनी आर्य समाज मे एक कुमार सभा या आर्य युवक सभा अवश्य बनायें।

9 6-12-86को अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को मनाने का आह्वान किया गया और उससे पूर्व 19 दिसम्बर को श्री रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस भी सभी आर्य समाजो से मनाने की प्रार्थना की गई।

10. 12 दिसम्बर 86 को पुन आर्य समाजो से प्रार्थना की गई कि वे अपने प्रतिनिधि चुनकर दशाश, वेद प्रचार आदि की राशि सहित शीघ्र अतिशीघ्र सभा मे भेजें।

11 31 दिसम्बर 86 को आर्य समाजो के अधिकारियो की सेवा मे एक विज्ञप्ति द्वारा प्रार्थना की गई कि पजाब मे आतकवादी परिस्थितियो के कारण बड़े2 उत्सव तो नही हो पा रहे परन्तु वह यज्ञ व कथाओ का आयोजन करें। सभा इसके लिए बाहर से विद्वानो को बुलाने की व्यवस्था करेगी।

12 11 फरवरी 1987 को पजाब की वर्तमान स्थिति सम्बन्धी विज्ञप्ति भेज कर एक प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री और पजाब के राज्यपाल को भेजने की प्रार्थना की गई।

13 25 फरवरी 87 को सभी आर्य समाजो से लुधियाना मे प्रथम मार्च 1987 को हो रहे "विशाल पजाब सम्मेलन" मे अधिकाधिक सख्या मे पहुचने की सभी आर्य समाजो से अपील की गई। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने की थी।

सभा की आवश्यकताए

सभा ने गत वर्षों मे निश्चित किया था कि सभा के कार्यालय का जो जीर्ण शीर्ण भवन है उसके स्थान नया भवन बनवाया जाए। सभा चाहती है कि जैसे लाहौर मे इस सभा का दर्शनीय कार्यालय था जो अब पाकिस्तान मे रह गया है। उसी के अनुरूप जालन्धर मे भी वैसा ही सभा कार्यालय बनाया जाए। इस दिशा में गत वर्षों मे कुछ कार्य हुआ भी है। सभा की 12 दुकानें, यज्ञशाला और तीन अतिथियो के कमरे बन कर तैयार हो गए हैं। परन्तु सभा कार्यालय का भवन, एक बड़ा हाल कमरा, पुस्तकालय भवन, चार दुकानें, तीन स्टाफ क्वाटर, पुरोहित के लिए दो कमरे का एक रिहायशी सैट, पन्तह लैट्रन, बाथरूम अन्य स्टोर आदि बनने अभी शेष हैं। इन सब के लिए सभा को लगभग 15 लाख रुपये की आवश्यकता है। यह निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया है।

2 एक समय था कि इस सभा के पास अधिक सख्या मे उपदेशक, भजनोपदेशक हुआ करते थे परन्तु पजाब मे आतंकवाद की कार्यवाहियों के कारण अभी उपदेशक एव भजनोपदेशक बाहर से पजाब [illegible]

जा रहे। इसलिए हमें आज जरूरत है उच्चकोटि के उप-देशकों व भजनोपदेशकों की। जो अपने प्रभावशाली ढंग से पंजाब में वेद प्रचार का काम कर सकें।

3 सभा की सम्पत्ति स्थान स्थान पर बिखरी पड़ी है। मास्टर पूर्णचन्द्र जी पहले कुछ देखभाल करते रहते थे, परन्तु हमें यथार्थ रक्षा के लिए किसी आर्य समाजी रिटायर्ड कानूनगो या पटवारी की आवश्यकता है जो सभा की यत्र तत्र बिखरी हुई सम्पत्ति की देखभाल भी कर सके और उसे सम्भालने में अपना पूरा सहयोग भी दे सके। काफी समय से इस दिशा में प्रयास हो रहा है पर कोई योग्य व्यक्ति अभी तक नहीं मिल पाया।

4 सभा और आर्य समाजों की कई शिक्षण संस्थाएं पंजाब में चल रही हैं। सभा से सम्बन्धित सभी स्कूल कालेजों का प्रबन्ध आर्य शिक्षा परिषद् पंजाब के तत्वा-धान में सुचारू रूप से चल रहा है परन्तु इन स्कूल कालेजों के निरीक्षण के लिए सभा को कुछ रिटायर्ड अनुभवी शिक्षा विद् महानुभावों की आवश्यकता है। जो समय-समय पर इन स्कूलों, कालेजों में जाकर वहां के प्रबन्ध को देखें और प्रबन्ध में आई त्रुटियों को दूर करने में सभा को अपना पूरा-2 सहयोग दे सकें।

5 सभा का प्रकाशन का कार्य निरन्तर चलता रहता है। कभी कोई पुस्तक कभी कोई विज्ञप्ति और इसके अतिरिक्त साप्ताहिक आर्य मर्यादा तो प्रति सप्ताह प्रकाशित होता ही रहता है। हमें इन सब कार्यों के लिए एक प्रिंटिंग प्रैस की आवश्यकता है। हम चाहते हैं कि सभा का आर्य मर्यादा का प्रकाशन का कार्य तो उसके द्वारा होता ही रहे साथ-साथ आर्य समाज की जितनी भी शाखाएं संस्थाएं हैं, उनका भी प्रकाशन कार्य उसमें विधिवत रूप से होता रहे। हमारे कई स्कूल व कालेजों की पत्र-पत्रिकाएं भी छपती रहती हैं और इनका भी प्रकाशन का कार्य निकलता रहता है। यदि सभा की अपना छपाई खाना हो तो प्रिंटिंग का काम सुचारू रूप से चलाया जा सकता है और इससे सभा को आर्थिक लाभ भी हो सकता है।

6 वर्तमान काल में कोई संस्था जब तक रचना-त्मक जनता से सीधा सम्बन्ध रखने वाला कार्य नहीं करती। तब तक वह लोकप्रिय नहीं बन सकती। इस दिशा में अग्रसर होने के लिए सभा एक डिस्पैंसरी गुरुदत्त भवन में खोलने का विचार भी रखती है।

7 सड़क पर आने जाने वाली जनता के लिए सभा भवन में एक पानी का कूलर भी लगाने की योजना है कि लोग बाहर से ही उसका प्रयोग कर सकें।

सभा का वेद प्रचार विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपनी एक शताब्दी पूरी कर चुकी है। पिछले सौ वर्षों का इसका इतिहास बड़ा उज्ज्वल रहा है। सन 1886 में इस सभा की स्थापना हुई थी तब से अब तक यह निरन्तर वेद प्रचार का काम करती चली आ रही है। परतन्त्र भारत में इस सभा ने पंजाब व पंजाब से बाहर वेद प्रचार का महान कार्य किया है। उस समय पंजाब भी पेशावर से दिल्ली तक अर्थात जम्मू कश्मीर, हिमाचल, प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली तक फैला हुआ था। उस समय सभा के पास सैकड़ों उपदेशक व भजनोपदेशक हुआ करते थे। उस समय सुनने वाले भी बहुत होते थे और सुनाने वाले भी। परन्तु स्वतन्त्रता के बाद वेद प्रचार के काम में कुछ शिथिलता आ गई है। निरन्तर सुनने वालों का भी अभाव हो रहा है और सुनाने वालों का भी। अब पंजाब एक छोटे से रूप में हमारे सामने है। जिसमें अब पांच दरियाओं को छोड़ कर मात्र दो दरिया रह गये हैं। फिर भी प्रचार का काम कुछ न कुछ तो चल ही रहा था परन्तु गत 7 वर्षों से पंजाब में जो आतंकवाद की

बान्दी चल रही है। इसने वेद प्रचार के कार्य को बहुत हानि पहुचाई है। कभी किसी शहर मे कर्फ्यू लगा रहता है और कभी सारा प्रान्त ही बन्द होता है। इसके अतिरिक्त और भी कई कारणों से आर्य समाजें अपने उत्सव नहीं कर सकी।

कुछेक आर्य समाजें हैं जो इन विघटन परिस्थितियों में भी अपने उत्सव व प्रचार कार्य को जारी रखे हुए हैं। कुछ तो पजाब मे आतक के डर के मारे बाहर से उपदेशक व प्रचारक आना नहीं चाहते। परन्तु जो हमारे पास हैं उन्हे भी आर्य समाजें बहुत कम बुलाती हैं। हमने कई बार नये उपदेशक रखने का निर्णय किया। विज्ञापन दिया और रखे भी हैं। परन्तु यदि आर्य समाजें यह निश्चय कर लें कि वह अपने उत्सव व कथाए पूर्ववत् करती रहेंगी तो हम और नये उपदेशक व भजनोपदेशक तुरन्त रखने का उद्योग करेंगे।

सम्वत् 2043 मे निम्न भजनोपदेशक व उपदेशक महानुभाव कार्य करते रहे हैं।

1 श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी सभा महोपदेशक।
2 श्री प धर्मदेव जी आर्य सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता।
3 श्री प रामनाथ जी सि वि महोपदेशक।
4 श्री प रामनाथ जी यात्री भजनोपदेशक।
5 श्री प सीताराम जी भजनोपदेशक।
6 श्री श्रीराम जी सहायक भजनोपदेशक।

इनमे से श्री प रामनाथ जी सि वि रुग्ण चल रहे हैं और सीताराम जी भजनोपदेशक पजाब के वातावरण के कारण सभा छोड गये हैं। सभा में अब श्री शेरसिंह जी भजनोपदेशक की नई नियुक्ति की गई है।

इनके अतिरिक्त इस वर्ष मे श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती अमृतसर वाले, श्री स्वामी मनीषानन्द जी ऐटा वाले, आचार्य भद्रसेन जी, स्वामी वेदानन्द जी आचार्य रामप्रसाद जी गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति आदि विद्वानों ने अवैतनिक रूप से आर्य समाजो के उत्सव में एव कथा आदि में हमें अपना पूरा सहयोग दिया है। श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी तो अब भी हमें सहयोग दे रहे हैं। इस सहयोग के लिए हम इन सभी उपदेशक महानुभावो का धन्यवाद करते हैं।

सम्वत् 2043 में उत्सव और प्रचार कार्य

पजाब मे उग्रवादियो की हिंसक कार्यवाईयो के बावजूद भी प्रचार का कार्य चलता ही रहा। कुछ ऐसी आर्य समाजें भी हैं, जिन्होंने गत वर्ष मे कई बार वेद प्रचार का आयोजन किया। आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना, आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर, आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर, आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज मंडी जालन्धर, आर्य समाज दीनानगर, आर्य समाज बगा रोड फगवाडा, आर्य समाज सैक्टर 22 चण्डीगढ, आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर, स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ, इन आर्य समाजो ने प्रचार कार्य मे किसी प्रकार की ढील नही आने दी। इनके उत्सव व प्रचार कार्य निरन्तर चलते रहे हैं।

आर्य समाज जालन्धर छावनी, आर्य समाज बाबाबैल, आर्य समाज दानिशमदां, आर्य समाज माडल हाऊस, आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर, आर्य समाज मढ़ाला रोड फगवाडा, आर्य समाज हबीबगज लुधियाना, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना, आर्य समाज वैक्फील्डगज लुधियाना। स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना, स्त्री आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना, रायकोट आर्यसमाज चौक पटियाला, सरहिन्दी गेट पटियाला, राजपुरा, मलेरकोटला, धूरी, बरनाला, सगरूर, अबोहर, फाजिल्का, लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी, बस्ती टैंका वाली, रानी का तालाब फिरोजपुर, जलालाबाद वर्मी, भटिण्डा, श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर, शक्ति नगर अमृतसर, तलवाडा टाऊनशिप, नया नगल तथा नगल टाऊनशिप, बगा, नवाशहर, बलाचौर, पचीद, पठानकोट, मुकेरिया, सुजानपुर, कादिया, राबौर (कुरुक्षेत्र) राजपुरा, सैक्टर-7 चण्डीगढ। इन आर्य समाजो मे से कई के उत्सव हुए कई ने साधारण कार्यक्रम बनाकर वेद प्रचार कार्य में सहयोग दिया।

सभा की ओर से आतंक पीड़ित परिवार सहायता

पंजाब में आतंकवादियों ने जो अत्याचार किए हैं, वह किसी से भी छिपे हुए नहीं हैं। जिला गुरदासपुर और जिला अमृतसर में बहुत से लोगों को जानमाल की हानि उठानी पड़ी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों ने 23 अगस्त 1986 को जब फतेहगढ़ चूड़िया का दौरा किया तो वहा से आकर श्री सरदारी लाल जी सभा मन्त्री ने बताया था कि वहा जो देखा हमने और सुना है उसे सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। किसी का भाई मार दिया गया किसी का बेटा मार दिया गया किसी का पति मार दिया गया। इस प्रकार उस कस्बा में बहुत हाहाकार मचा हुआ था। वहा के प्रमुख व्यक्ति आर्य समाज मन्दिर में इकट्ठे हो गए और उन्होंने अपनी दर्द भरी कहानी जो हृदय विदारक थी सुनाई। उन्होंने बताया कि पंजाब सरकार उन सिखों की सहायता तो करती है, जो दंगा पीड़ित हैं, और दूसरे प्रान्तों से आ रहे हैं परन्तु जो घर में पीड़ित हैं और जो उग्रवादियों की गोलियों का शिकार हो रहे हैं, जिनके परिवार अनाथ हो गए हैं, घर उजड़ चुके हैं, उनकी सरकार कोई सहायता नहीं करती न ही ध्यान देती है। वहा कुछ महिलाएं भी सभा के अधिकारियों को मिली और उन्होंने अपनी दर्दनाक कहानी सुनाई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों ने वहा के पीड़ित परिवारों को पांच-पांच हजार रुपया सहायता देने की घोषणा की थी और इसके साथ ही आर्य जनता से अपील की थी कि वह भी पीड़ित परिवारों की सहायतार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपना पूरा-पूरा सहयोग दें। इस पर पंजाब की आर्य समाजों ने दिल खोल कर सभा को सहयोग दिया है, आर्य बन्धुओं ने व्यक्तिगत रूप से अपनी आर्य समाजों की ओर से भी और अपनी शिक्षण संस्थाओं की ओर से भी, जितना हो सका इस सहायता कोष में सभा को धन भेजा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी श्री सभा महामन्त्री, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न सभा मन्त्री, श्री मनोहरलाल जी आर्य अन्तरंग सदस्य, तथा दूसरे कई सज्जन 16-10-86 को फतेहगढ़ चूड़िया जा कर लगभग चालीस हजार रुपया आतंक पीड़ित परिवारों में बांट कर आए। इसके बाद भी कई जरूरतमन्द परिवारों की सहायता की गई। जिसकी फतेहगढ़ चूड़िया के आर्य समाज के अधिकारियों तथा वहा की जनता ने बहुत सराहना की। यह कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का हर तरह से सफल रहा है।

इसके साथ ही सभा कुछ उन लोगों की भी सहायता करती रहती है जो रोगी है, असहाय हैं, जो निर्धन हैं। सभा उन विद्यार्थियों को भी छात्रवृत्ति देती है जिनके माता-पिता उनकी पढ़ाई के लिए साधन जुटाने में समर्थ नहीं है। उन्हें पुस्तकें खरीदने के लिए तथा फीस आदि के लिए भी मासिक सहायता देती रहती है। इस कार्य के लिए सभा ने एक अलग से सहायता कोष भी खोला हुआ है।

इस प्रकार गत वर्ष में सभा की गतिविधियां निरन्तर बढ़ती रहीं।

चमूपति साहित्य विभाग

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सभा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र वाला कलैण्डर 1987 का छपवाया जो बहुत शीघ्र ही समाप्त हो गया। बाद में भी आर्य समाजों से उसके आर्डर आते रहे। सम्वत् 2043 साहित्य बिक्री से5523 00रुपये प्राप्त हुए। पुराने साहित्य को निकालने का बहुत यत्न किया गया। कुछ पंजाबी का साहित्य निशुल्क भी आर्य समाजों को बांटने के लिए दिया गया। आर्य बन्धुओं को साहित्य खरीदने के लिए

प्रेरणा की गई और पुराने साहित्य पर कमीशन भी बढ़ा दिया गया।

हमारी यह इच्छा है कि जैसे भी हो पुराना साहित्य निकाला जाए और नया साहित्य छपवाया जाए। सभा ने पंजाबी में सत्यार्थ प्रकाश छपवाने का भी कई बार प्रस्ताव किया परन्तु अभी तक सभा को कोई ऐसा योग्य विद्वान नहीं मिल सका जो आर्य सिद्धान्तों को भी जानता हो और संस्कृत, हिन्दी तथा पंजाबी भी अच्छी तरह जानता हो। पंजाबी के सत्यार्थ प्रकाश की मांग कई आर्य बन्धुओं ने की है।

आर्य वीर दल

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य वीर दल का कार्य भी कई वर्षों से चल रहा है परन्तु जब से पंजाब में आतंकवाद, उग्रवाद आरम्भ हुआ तब से हमें बाहिर से कोई योग्य शिक्षक नहीं मिल सका।

इस विभाग के अधिष्ठाता श्री आत्मानन्द आर्य जी निरन्तर इस कार्य के लिए प्रयत्नशील रहे। गत वर्ष में तो इन्हें सफलता नहीं मिली परन्तु इस वर्ष में आर्य वीर दल का कैम्प लगाने के लिए उन्हें श्री सत्यपाल जी आर्य बुढ़लाडा की सेवाएं प्राप्त हो गईं जिसके फलस्वरूप हमने जालन्धर में गत दिनों एक विशाल कैम्प लगाया।

पंजाब के नौजवानों में उत्साह है। वह कार्य करना चाहते हैं परन्तु योग्य शिक्षक न मिलने के कारण वह कार्य नहीं कर पा रहे। आशा करनी चाहिए कि इस वर्ष में आर्य वीर दल का कुछ कार्य हो सकेगा। पंजाब की वर्तमान स्थिति में युवा पीढ़ी ही हमारी रक्षा के लिए कार्य कर सकती है उसे प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

आर्य विद्या परिषद् पंजाब का संवत् २०४३ का कार्य विवरण

सभा से सम्बन्धित मे आर्य शिक्षण संस्थाओ का सुचारू रूप से संचालन करने के लिए सभा के विधान की धारा 26 के अनुसार आर्य विद्या परिषद् पंजाब कार्यरत है। सभा से सम्बन्धित एवम् आर्य समाजो के अन्तर्गत चल रहे विद्यालयो के सम्पर्क मे आने वाले विद्यार्थियो को वैदिक धर्म सम्बन्धी जानकारी प्रदान करना परिषद् का मुख्य लक्ष्य है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए समस्त आर्य स्कूलो के प्रधानाचार्यों को समय-समय पर परिपत्रों द्वारा प्रेरित कर धर्म शिक्षा पुस्तको की अन्य विषयों की भान्ति पढ़ाने की व्यवस्था की गई। सम्वत् 2043 मे लगभग नौ हजार रु. की परिषद् की धर्म शिक्षा पुस्तको की बिक्री द्वारा आय हुई।

आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा गत वर्षों की भान्ति 20 सितम्बर 86 को स्कूलो की धर्म शिक्षा परीक्षाओ का आयोजन किया गया। इन परीक्षाओ मे 21 स्कूलो के लगभग दो हजार एक सौ विद्यार्थियो ने भाग लिया। परीक्षा शुल्क मद्दे परिषद् को लगभग 6 हजार तीन सौ रुपये प्राप्त हुए। धर्म शिक्षा परीक्षाओ मे प्रथम आये मेधावी छात्र एवं छात्राओ को यथा पूर्व पुरस्कृत किया गया, सम्वत् 2043 मे सम्बन्ध शुल्क मद्दे लगभग 4000रु. की आय हुई। 22 नवम्बर 1986 को आर्य विद्या परिषद् के तत्वावधान मे आर्य माडल हाई स्कूल फगवाड़ा मे प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिकूल परिस्थितियो के बावजूद प्रतियोगिता मे 11 स्कूलो के छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। प्रतियोगिता का चल विजयोपहार बी सी. एन. आर्य माडल हाई स्कूल लुधियाना की छात्राओ—कु. मीनू अरोड़ा तथा कु. सोनिया बिज ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए प्राप्त किया। आर्य गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना की छात्रा कु. रजनी ने प्रथम, व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किया। आर्य माडल हाई स्कूल फगवाड़ा की कु. सुषमा जोशी को द्वितीय व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किया गया। देवराज गर्ल्ज हा. सै. स्कूल जालन्धर की कु. रेनु कमल को तृतीय व्यक्तिगत पुरस्कार दिया गया।

इसके अतिरिक्त प्रतियोगिता में शामिल समस्त प्रतियोगी छात्र-छात्राओं को वैदिक साहित्य [illegible] अध्यक्ष महोदय द्वारा पारितोषिक रूप में प्रदान किए गए। प्रतियोगिता के अध्यक्ष पद को आर्य शिक्षा परिषद् पंजाब के रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश जी दत्त ने सुशोभित किया।

समस्त भाषण प्रतियोगिता का समारोह रोचक एवं उत्साहवर्धक रहा। स्थानीय स्कूल के प्रिंसीपल श्री एम. आर. भाटिया तथा प्रो. कैलाशनाथ जी भारद्वाज ने स्कूल की ओर से प्रतियोगिता में पधारे महानुभावों के लिए जलपान तथा [illegible], चाय आदि की उत्तम व्यवस्था की। आर्य माडल हाई स्कूल फगवाड़ा की प्रबन्ध समिति के प्रधान, मैनेजर, स्टाफ तथा अन्य पदाधिकारियों के अतिरिक्त प्रिंसीपल महोदय ने इस समारोह को सफल करने में अपना पूर्ण योगदान दिया।

दयानन्द संस्कृत विद्यालय दयानन्द मठ दीनानगर

इस वर्ष विद्यालय में 32 विद्यार्थी थे। शास्त्री-2 वर्ष में पांच, शास्त्री प्रथम खण्ड में छः विशारद में सात प्राज्ञ में 14, इनमें 23 विद्यार्थी परीक्षा में बैठे। शास्त्री तथा विशारद के सभी और प्राज्ञ के 5 विद्यार्थी परीक्षा मे बैठे। अर्थात् कुल 23 विद्यार्थियो ने परीक्षा दी। जिनमें शास्त्री—प्रथम खण्ड में 1 विशारद में 1 और प्राज्ञ में 1 विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हुए। प्राज्ञ में 1 और विशारद में 1 विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रथम रहा। और 1 विद्यार्थी विश्वविद्यालय में तृतीय रहा। इस प्रकार विद्यालय का परीक्षा परिणाम अच्छा ही रहा।

अध्यापक वर्ग :—

इस वर्ष विद्यालय में कुछ मास 4 और कुछ मास 3 अध्यापकों ने अध्यापन कार्य किया। आरम्भ से ही विद्यालय में एक अध्यापक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब देती चली आ रही है। इस वर्ष कोई योग्य अध्यापक न मिलने से सभा का वह अध्यापक नहीं रखा जा सका। सन् 1941 से ही मठ में पढ़ने वाले विद्यार्थी रहते चले आ रहे हैं किन्तु सन् 1953 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने विधिपूर्वक यहां दयानन्द मठ दीनानगर में जो दयानन्द संस्कृत विद्यालय आरम्भ किया था वह निरन्तर चल रहा है। सभा की आज्ञा से इसका प्रबन्ध दयानन्द मठ दीनानगर करता चला आ रहा है। पहले इस विद्यालय का सम्बन्ध पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से था। अब इसका सम्बन्ध गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर से है। कुछ वर्ष पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस विद्यालय के साथ उपदेशक विद्यालय की स्थापना भी की थी। जिसमें आर्य समाजों के लिए पुरोहित शिक्षित किए गए किन्तु कुछ समय के पश्चात् वह उपदेशक विद्यालय बन्द हो गया। क्योंकि कुछ आर्य समाजें ही पुरोहित रख सकती हैं। आर्य समाजें समयानुसार उचित वेतन नहीं दे सकतीं न ही कोई आर्य समाजी अपने लड़के को उपदेशक, पुरोहित बनाने के लिए तैयार है। आर्य समाज की हानि का यह भी एक कारण है।

दयानन्द संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी नगर तथा ग्रामों में यज्ञ हवन तथा वैदिक संस्कार कराने के लिए जाते रहते हैं। इस विद्यालय के कई शास्त्री आर्य समाजों मे पुरोहित का कार्य भी कर रहे हैं।

महाराष्ट्र उड़ीसा और बिहार के प्रान्तों में पांच छः विद्यार्थी शुद्धि तथा वैदिक धर्म प्रचार का कार्य कर रहे हैं और बहुत से विद्यार्थी अर्थ लाभ के लिए शिक्षण संस्थाओं में चले जाते हैं। वहां भी वे वहां संस्कृत प्रचार, संस्कृत रक्षा में सहायक होते हैं। वहां आर्य समाज के प्रचार में भी उनका योगदान होता ही है। इस प्रकार भी कुछ उपयोगिता है। इस संस्कृत विद्यालय की।

—स्वामी सर्वानन्द आचार्य

पंजाब बचाओ सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से 6 7 86 को जालन्धर मे 'पंजाब बचाओ सम्मेलन मे राज्य मे अल्पसंख्यको की जान व माल की सुरक्षा के लिए एक मजबूत संगठन कायम करने का फैसला किया गया है। क्योकि पंजाब और केन्द्र सरकारें आतंकवादियो से एक ही समुदाय के लोगो की जान व माल की रक्षा करने मे असफल रही।

उक्त सम्मेलन मे पंजाब भर के विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और व्यापारी नेताओ ने भाग लिया। इस अवसर पर सामूहिक रूप से उन्होने विश्वास दिलाया कि वह प्रत्येक मूल्य पर पंजाब को बचाने और खतरनाक हालात का मुकाबला करने के लिए तन, मन, धन से सहयोग देंगे और यदि कोई बलिदान भी देना पड़ा तो कदापि संकोच नही किया जाएगा।

सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी सच्चिदानन्द जी अमृतसर वालो ने की सभा मंच संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने किया।

इस अवसर पर तीन प्रस्ताव पास किए गए। पहला प्रस्ताव श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने पेश किया, दूसरा प्रस्ताव श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट व तीसरा श्रीमती कमला जी आर्या ने पेश किया जो सर्वसम्मति से पास हो गए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने कहा कि आज का सम्मेलन जो हम कर रहे हैं यह गम्भीर परिस्थितियो मे हो रहा है इसलिए हमने बहुत बड़ा सम्मेलन नही बुलाया। इस सम्मेलन मे जैन धर्म, सनातन धर्म और अन्य धर्मो के प्रतिनिधियो को भी आमन्त्रित किया गया है ताकि परस्पर इकट्ठे बैठ कर बातचीत कर सके और किसी निर्णायक परिणाम पर पहुंच जाए।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि खालिस्तान कदापि नही बनने दिया जाएगा। उन्होने कहा कि एक एक हिन्दू इस लड़ाई मे कट मरेगा परन्तु विदेशी शक्तियो के अपवित्र इरादे कदापि सफल नही होने दिए जाएगे।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से जो पंजाब समस्या का समझौता हुआ है उस मे एक गलती रह गई है वह यह कि समझौता केवल एक समुदाय के लोगो से हुआ है जिस कारण यह गलत समझौता हुआ है।

उन्होने कहा कि 15 अगस्त का आजादी दिवस के मौका पर सभी आर्य समाजो मे पंजाब बचाओ दिवस मनाया जाए। उन्होने कहा कि 12 13 जुलाई को दिल्ली मे हो रहे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मेलन मे अपने प्रतिनिधि भी भेजे जाएगे। उन्होने कहा कि हमारा यह दृढ़ फैसला है कि पंजाब मे रहना है। इसलिए हम यह नही चाहते कि जो कुछ अत्याचार हो रहे हैं वह चुपचाप देखते रहें अपितु अब वह समय आ गया है कि हमे तैयारी करनी चाहिए ताकि उचित उत्तर दिया जा सके। उन्होने कहा कि यदि हमे अपनी रक्षा के लिए हथियार उठाने पड़ें तो हम हथियार उठाएगे।

इस अवसर पर श्री यश ने कहा कि श्री वीरेन्द्र ने यह सम्मेलन बुला कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होने कहा कि जब से अकाली सरकार आई परिस्थितियां बिगड़ गई हैं। इन परिस्थितियो मे यह नहीं कहा जा सकता कि कब क्या हो जाए।

धार्मिक नेता श्री महाराज कृष्ण खन्ना ने सनसनी पूर्ण रहस्योद्घाटन करते हुए कहा कि सरकार अन्य राज्यों से आई. पी एस और आई ए एस के पंजाबी अफसरों को पंजाब मे बुलाने के प्रयास मे है। उन्होंने कहा कि जो सरकार लोगो की रक्षा नही कर सकती वह लोगो से कर वसूल करने का अधिकार भी नहीं रखती है। श्री खन्ना ने कहा कि देश की एकता और अखण्डता को बहाल करने के लिए हमे प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।

भाजपा विधायक वैद्य ओम् प्रकाश दत्त ने सरकार की आलोचना की और कहा कि पंजाब मे पुलिस की भर्ती के मध्य आतंकवादियो को भर्ती मे प्राथमिकता दी गई है। श्री तुलसीदास जेठवानी ने घोषणा की कि देश की अखण्डता एव एकता के लिए हमे हर समय तैयार रहना है।

इस अवसर पर कांग्रेस (इ) के श्री यश, भाजपा विधायक वैद्य ओमप्रकाश दत्त, उद्योगपति श्री महाराज कृष्ण खन्ना, व्यापार मण्डल पंजाब के प्रधान श्री तुलसीदास जेठवानी, श्री बलदेव मित्र बिजली, स्वामी वेदानन्द जी रोपड़ वाले, चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग पंजाब, श्री गोपि-चन्द्रपाल सेठ प्रधान आर्य समाज, श्रीमती कमला आर्या, श्री सरदारी लाल आर्य रत्न, श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट, श्री बलदेवराज शर्मा भूतपूर्व प्रधान जालन्धर नगरपालिका श्री हरबंसलाल शर्मा, श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट,श्री अमृत खोसला, श्री रामनाथ चड्ढा, श्री श्रीराम आहूजा, श्री सुभाष भाटिया अमृतसर,श्री नन्दकिशोर,दीवान राजेन्द्र कुमार लुधियाना, श्री केवल कृष्ण पुरी मोगा, श्री वैजनाथ गुप्ता, प्रधान देवी तालाब मन्दिर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस सम्मेलन मे निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए।

प्रस्ताव संख्या—1

पिछले 5 वर्षों से पंजाब मे जो परिस्थितियां पैदा हो रही हैं, उनके कारण आज स्थिति इतनी गम्भीर और भयानक हो गई है कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि कही 1947 के इतिहास की पुनरावृत्ति तो नही हो रही। सबसे अधिक दुःखद और निराशाजनक स्थिति यह है कि सरकार परिस्थितियो पर नियन्त्रण करने मे पूर्णतया विफल रही है। सितम्बर 1985 मे जब से पंजाब मे अकाली मन्त्रिमण्डल की स्थापना हुई। उस समय से स्थिति और भी अधिक बिगड़ गई है और इस सम्मेलन को यह कहने मे कोई संकोच नही कि पंजाब की अकाली सरकार ने इन परिस्थितियो को कई बार प्रोत्साहन दिया है। उससे अब पंजाब के अल्पसंख्यको की यह निश्चित धारणा होती जा रही है है कि यद्यपि कई अकाली नेता कहते हैं कि वे खालिस्तान के विरुद्ध हैं, परन्तु अपनी कार्य पद्धति के द्वारा वे खालिस्तान के लिए मार्ग प्रशस्त करते जा रहे हैं। पहले पंजाब मे निरपराध और नि सहाय हिन्दुओं की हत्याएं की गई और अब उन्हे अपना घर बाहर छोड़ कर जाने पर विवश किया जा रहा है। इस समय तक न तो पंजाब सरकार ने और न भारत सरकार ने कोई ऐसा सक्रिय पग उठाया है, जिसके द्वारा जो चले गये हैं, वे वापस आ सकें और जो जाना चाहते हैं उन्हे जाने मे रोका जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब कुछ एक सुनियोजित और सुनिश्चित योजना के अनुसार किया जा रहा है।

जो कुछ हो रहा है उसके कारण पंजाब के अल्पसंख्यक हिन्दुओ को तो बहुत अधिक हानि पहुंचेगी ही और हो सकता है कि ऐसा समय भी आये कि 1947 की तरह वे सब अपना घर-बार छोड़ कर दूसरे प्रान्तो मे जाने पर विवश हो जाए। परन्तु इसका सबसे अधिक आघात देश की एकता, स्वाधीनता व अखण्डता को पहुंचेगा। यदि एक बार पंजाब में पृथकतावादी वर्ग सफल हो गया तो देश के दूसरे कई प्रान्तों मे भी देश के विभाजन की योजनाएं बन जाएंगी। इसलिए

इस "पंजाब बचाओ सम्मेलन" की यह निश्चित धारणा है कि आज केवल पंजाब को ही बचाने का प्रश्न नहीं सारे देश की अखण्डता, एकता व स्वाधीनता को बचाने का प्रश्न है। पंजाब के अलगाववादी तत्व यदि सफल हो गए तो सारे देश में इस प्रकार के आन्दोलन चल पड़ेंगे। जिन्हें सम्भालना सरकार के लिए कठिन हो जाएगा। इसलिए इस सम्मेलन की यह निश्चित धारणा और निश्चित मांग है कि 1966 में भाषा के आधार पर पंजाब का जो विभाजन किया था, उसे तुरन्त समाप्त करके पंजाब और हरियाणा को मिला कर महा पंजाब बनाया जावे। पंजाब एक सीमान्त प्रदेश है। इसकी सुरक्षा देश की सुरक्षा है। इसलिए भी यह आवश्यक है कि पंजाब को एक सुदृढ़ और समृद्धिशाली प्रान्त बनाया जावे। यह तभी स्थिति से हो सकता है यदि पंजाब और हरियाणा के सारे क्षेत्र को फिर से उसी प्रकार का पंजाब बना दिया जाए, जो 31 अक्तूबर 1966 को था। पंजाब व हरियाणा प्रान्त में इस समय एक प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता पैदा हो रही है जो आगे चल कर देश के लिए अत्यन्त हानिकारक होगी। पंजाब में जो पृथकतावादी तत्व सिर उठा रहे हैं। उन्हें दबाने के लिए यह आवश्यक है कि फिर से महा पंजाब बनाया जाए। देश की स्वाधीनता और अखण्डता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा पैदा कर दिया गया है। पाकिस्तान और कुछ दूसरे देश इस आग को हवा देने के लिए अपना बहुत अधिक योगदान दे रहे हैं। यदि महा पंजाब बना दिया जाए तो न चण्डीगढ़ का झगड़ा रहेगा और न नहरी पानी का। इस महा पंजाब की दो भाषाएं होंगी पंजाबी और हिन्दी। इस प्रकार यह एक अत्यन्त शक्तिशाली और प्रभावशाली प्रदेश बन जाएगा। इस के बिना पंजाब समस्या का कोई समाधान नहीं है।

प्रस्ताव संख्या—2

पंजाब में आतंकवाद और उग्रवाद पिछले 5 वर्षों से किसी न किसी रूप में सामने आता रहा है। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि सरकार ने इसे दबाने के लिए कोई प्रभावशाली पग नहीं उठाया, बल्कि पंजाब की अकाली सरकार की नीति उग्रवाद और आतंकवाद दोनों को प्रोत्साहन देती है। इसलिए निकट भविष्य में इन दोनों के समाप्त होने की कोई आशा नहीं। पिछले एक वर्ष से 300 के लगभग व्यक्ति मारे जा चुके हैं और अब प्रान्त के भिन्न 2 नगरों व गावों से कई लोग अपना घर-बार छोड़ कर सुरक्षा की तलाश में दूसरे प्रान्तों में जा रहे हैं। किसी भी सरकार के लिए इससे बढ़ कर लज्जाजनक स्थिति और कोई नहीं हो सकती कि वह अपनी प्रजा की रक्षा न कर सके और लोग उसके संरक्षण को स्वीकार करने को तैयार न हों और दूसरे प्रान्तों में चले जाएं। अभी यह कहना कठिन है कि यह स्थिति निकट भविष्य में सुधर सकेगी या नहीं। इसलिये यह सम्मेलन पंजाब सरकार और भारत सरकार इन दोनों से यह मांग करता है कि —

1 1987 से लेकर आज तक पंजाब में आतंकवाद और उग्रवाद के कारणों का पता लगाने के लिये भारत सरकार उसी तरह का एक उच्चस्तरीय आयोग नियुक्त करे, जिस प्रकार का दिल्ली और दूसरों में हुए उपद्रवों की जांच के लिए नियुक्त किया गया था।

2 पिछले 5 वर्षों में जितने व्यक्ति पंजाब में उग्रवादियों के हाथों मारे गये हैं। उन सबके परिवारों को उसी प्रकार आर्थिक सहायता दी जाए, जिस प्रकार दिल्ली और दूसरे प्रान्तों के दंगा पीड़ितों की सहायता की गई है।

3 जो परिवार पंजाब छोड़ कर दूसरे प्रदेशों में जा रहे हैं, उनके पुनर्वास की सारी जिम्मेवारी भारत सरकार अपने ऊपर ले और उनमें से जो वापस आने को तैयार हों उनके पुनर्वास की जिम्मेवारी पंजाब सरकार ले।

4 पंजाब में एक ऐसी शक्तिशाली पुलिस की व्यवस्था हो जो पंजाब के आतंकवाद-प्रभावित क्षेत्रों में फिर से विश्वास पैदा करके उन्हें पंजाब से बाहर न जाने की प्रेरणा करें।

5 भारत सरकार उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश की अध्यक्षता मे एक ऐसा आयोग नियुक्त करे जो पजाब के मन्त्रिमण्डल की गतिविधियो के विषय मे जाच कर और यह पता करें कि पजाब के मन्त्रिमण्डल मे कितने ऐसे मन्त्री हैं, जिनका सम्बन्ध आतकवादियो और उग्रवादियो के साथ है। पिछले कुछ समय स समाचारपत्रो मे ऐसे समाचार प्रकाशित हो रहे हैं जिनसे पता चलता है कि उग्रवादियो का सीधा सम्पर्क पजाब के कई मन्त्रिया से है और वे उन्हे सरक्षण देते हैं। जब तक इस प्रकार के तत्वा को मन्त्रिमण्डल से नही निकाला जाएगा, उस समय तक पजाब मे आतकवाद और उग्रवाद समाप्त नही हो सकता। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि एक उच्चस्तरीय आयोग इस काम के लिए बनाया जाए। उसी स्थिति मे पजाब के अल्पसख्यको मे यह विश्वास पैदा होगा कि सरकार वास्तव मे आतकवाद और उग्रवाद को समाप्त करना चाहती है।

6 यह अब एक खुला रहस्य है कि पजाब की पुलिस मे भी ऐसे लोग बैठ हैं, जो उग्रवादियो की सहायता करते हैं। यही कारण है कि उनकी गतिविधिया दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। इसीलिए यह सम्मेलन यह माग करता है कि तुरन्त एक उच्च स्तरीय कमेटी बना कर पजाब पुलिस मे काम करने वाले अधिकारियो व सिपाहियो की छान बीन की जाए और जिनका सम्बन्ध उग्रवादियो के साथ है, उन्हे तुरन्त पुलिस मे स निकाला जाए।

प्रस्ताव सख्या—3

24 जुलाई 1985 को जब प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी और अकाली दल के अध्यक्ष श्री सन्त हरचन्द-सिह लौंगोवाल के बीच समझौता हुआ था, जब पजाब की जनता ने सुख का सास लिया था। यद्यपि इस समझौता से साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिल सकता था और सिद्धान्त रूप से सरकार का किसी साम्प्रदायिक पार्टी के साथ समझौता करना भी अनुचित था। फिर भी इसका स्वागत किया गया था। इस आशा के साथ कि अब पजाब की स्थिति सुधर जाएगी। परन्तु पिछले एक वर्ष मे जो कुछ हुआ है, उसने जनता की उन आशकाओ की सम्पुष्टि कर दी है कि साम्प्रदायिकता को बढावा देकर सरकार ने राष्ट्रवादी व्यक्तियो के लिये एक बहुत बडा सकट खडा कर दिया है। जब से पजाब मे अकाली दल सत्तारूढ हुआ है, उस समय स न केवल साम्प्रदायिकता की आग पहले से भी अधिक तेजी से फैल गई है साथ ही आतकवाद और उग्रवाद ने भी एक भयकर रूप धारण कर लिया है। कोई दिन ऐसा नही जाता, जिस दिन पजाब मे कही न कही हिन्दुओ की हत्या नही कर दी जाती और अब तो पजाब मे रहने वाले हिन्दू अपने आपको असुरक्षित समझते हुये अपने घर बार को छोडकर उसी प्रकार आने लगे है, जैसे 1947 म पाकिस्तान को छोड कर आए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि पाकिस्तान की पुनरावृत्ति हो रही है। पजाब का हिन्दू अपने आपको नि सहाय समझता है। अधिक शोचनीय स्थिति यह है कि भारत सरकार भी उसके लिए कुछ नही कर रही। प्रधानमन्त्री ने अपने वक्तव्यो के द्वारा अकाली दल की साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन ही दिया है और आज वह आग इतनी भडक उठी है कि वह दूसरे प्रान्तो मे भी फैल रही है।

इन परिस्थितियो को देखते हुए पजाब बचाओ सम्मेलन भारत सरकार स यह माग करता है कि पजाब की वर्तमान अकाली सरकार को तुरन्त हटा कर पजाब म राष्ट्रपति राज लागू किया जाए। भारत सरकार का भी पजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओ के प्रति कोई कर्तव्य है। यह खेद का विषय है कि वह अपने उस कर्तव्य को पूरा नही कर रही पजाब मे जो आग फैल रही है वह कल का एक भयकर रूप धारण कर सकती है। इसे बुझाने के लिए इस समय तक जो भी कार्यवाही की गई है, उसका कोई सन्तोषजनक परिणाम नही निकला। इसलिए यह 'पजाब बचाओ' सम्मेलन भारत सरकार स यह माग करता है कि पजाब को बचाने के लिए बरनाला मन्त्रिमण्डल को तुरन्त पदच्युत करके पजाब के शासन को अपने हाथ मे ले और इस प्रदेश की अल्पसख्यक जनता के जान व माल की रक्षा के लिए तुरन्त सक्रिय व सार्थक पग उठाए। इसके अतिरिक्त पजाब समस्या का और कोई समाधान नही हो सकता।

—

विशाल पंजाब सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में जिला आर्य सभा लुधियाना के द्वारा आर्य हाई सेकण्डरी स्कूल में 1-3-87 रविवार को विशाल पंजाब सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने की। इस सम्मेलन का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने किया। उद्घाटन भाषण श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया।

श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा कि आर्य समाज ने विशाल पंजाब में काम किया है। यह तेरा डेरे से आरम्भ होता था। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने देश जाति और समाज के लिए बड़े-2 बलिदान दिए हैं, जेलों में गए हैं। फांसी के तख्तों पर चढ़े हैं काला पानी की सजाएं भुगती हैं। आज यदि कोई राजनैतिक पार्टी भारत का बटवारा करना चाहेगी तो देश की जनता उसे उखाड़ कर फैंक देगी। राष्ट्र के कर्णधारों को चेताने के लिए आर्य समाज के सहयोग की आवश्यकता है। पंजाब की रक्षा के लिए पंजाब के आर्य भाई जो भी निर्णय करेंगे सार्वदेशिक सभा उन्हें अपना पूरा-पूरा सहयोग देगी।

इस सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पारित किए गए। इन प्रस्तावों पर बोलते हुए श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने कहा कि पंजाब में यदि कोई आन्दोलन आरम्भ किया गया तो उत्तर प्रदेश के आर्य भाई पीछे नहीं रहेंगे। हिन्दी आन्दोलन में भी उत्तर प्रदेश ने पूरा सहयोग दिया था अब भी वह इसके लिए तैयार हैं।

श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट ने प्रस्तावों पर बोलते हुए कहा कि अब पंजाब में जो कुछ होता है उसका प्रभाव व उसका दर्द सारे राजस्थान ने और सारे देश भर ने होता है। जब भी देश पर आपत्ति आई आर्य समाज उसे दूर करने के लिए आगे बढ़ा। जब भी कोई परीक्षा की घड़ी आई है हम उसमें सफल हुए हैं। अब भी यदि पंजाब में कोई संघर्ष करना पड़ा तो राजस्थान के लाखों आदमी पंजाब के हिन्दुओं के लिए जान तक देने के लिए तैयार हैं।

श्री स्वामी सुमेधानन्द जी आचार्य दयानन्द मठ चम्बा ने कहा प्रस्तावों से काम न चलेगा, अब कुछ करने का समय है। राजनैतिक दलों ने पंजाब की समस्या को पेचीदा बना दिया है। अब इसका इलाज एक ही है कि निडर हो कर इसके विरुद्ध आवाज उठाए। आर्य समाज अब राष्ट्र रक्षा के लिए आगे आए इसके राष्ट्र को कोई भय नहीं, आगे आना चाहिए। इसके लिए जो भी आदेश सार्वदेशिक सभा का होगा। हिमाचल के आर्य बन्धु उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

श्रीमती कमला जी आर्या, श्रीकृष्ण कान्त प्रो., श्री तुलसीदास जी, मेहता जी, . श्री देवेन्द्र जी, और सुभाष

कई महानुभावो ने अपने विचार दिए ।

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने विशाल पजाब जब पहली नवम्बर 1966 से पूर्व था कि. चर्चा करते हुए सरकार से माग की कि पजाब और उसके साथ साथ देश की वर्तमान समस्या का एक ही हल है और वह है 'विशाल पजाब' इस सम्बन्ध मे उन्होने और भी विस्तार से अपने विचार देते हुए निम्न प्रस्ताव पढा ।

प्रस्ताव संख्या 1

नवम्बर 1966 मे जब पजाब का बटवारा करके पजाबी सूबा बनाया गया था, तो यह समझा गया था कि इसके पश्चात पजाब मे अब कोई ऐसी समस्या नही रहेगी जिसके समाधान के लिए अकालियों को कोई नया आन्दोलन प्रारम्भ करना पडे । उस बटवारे के साथ पजाब की बहुसख्यक हिन्दू जनता को अल्पसख्यक बना दिया गया था । इसी के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी का अस्तित्व पजाब म समाप्त करने के लिए सरकार की ओर स एक अभियान भी प्रारम्भ कर दिया गया था । आर्य समाज ने उस समय पजाब के बटवारे का विरोध किया था, क्योकि जैसा कि हमारे पहले प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पण्डित जवाहर लाल जी नेहरू कहते थे पजाबी सूबा की माग एक साम्प्रदायिक माग है और यह पजाब की किसी समस्या को समाप्त नही करेगी । परन्तु हमारी कोई सुनवाई न हुई और पजाब का बटवारा कर दिया गया । इसके पश्चात 1973 मे अकालियो ने आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव पारित कर दिया और उसके साथ एक नया आन्दोलन शुरू कर दिया गया जो अब आतकवाद और उग्रवाद का रूप धारण कर गया है । पजाब मे पिछले पाच वर्षों में सैकडो निर्दोष व्यक्तियो की हत्या कर दी गई है, कई परिवार उजड गए है, कई हमारी बहनें विधवाए बना दी गई हैं, कई बच्चे अनाथ कर दिए गए हैं और आज स्थिति इतनी अधिक गम्भीर हो गई है कि जितनी इससे पहले न थी । जिन सिंह साहेबान के पिछले गुरु साहेबान ने यह काम सभाया था, कि वे सूबा गुरुओं का प्रचार करके देश मे भातृभाव, सद्भावना और शान्ति का वातावरण पैदा करेंगे वे ही आज खालिस्तान की बाते कर रहे हैं और उग्रवाद और आतकवाद का समर्थन कर रहे हैं । अब यह भी कोई छुपा हुआ नही है कि पजाब मे जो कुछ हो रहा है, इसे पाकिस्तान की ओर से प्रोत्साहन मिल रहा है । हमारे लिए यह स्थिति और भी अधिक चिन्तनीय है कि भारत सरकार पजाब की गम्भीर स्थिति पर नियन्त्रण करने मे पूर्णतया विफल रही है और जहा तक पजाब की अकाली सरकार का सम्बन्ध है, उसके कई मन्त्री आतकवाद और उग्रवाद को प्रोत्साहन देते रहे हैं । हम अकालियो के आन्तरिक विवाद म पडना नही चाहते, परन्तु यह सम्मेलन स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर देना चाहता है कि पजाब की सारी हिन्दू जनता अपने आपको अकाली राज मे सुरक्षित नही समझती । इसकी बागडोर चाहे किसी के हाथ मे हो, हमारे लिए कोई अन्तर नही पडता जब तक अकाली दल आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के अनुसार एक ऐसा क्षेत्र बनाने का प्रयास करता रहेगा, जिसमे 'खालसा का बोलबाला हो, जो निर्णय पिछले दिनो सिंह साहेबान ने लिए हैं, उनसे भी यह स्पष्ट है कि पजाब मे ऐसी परिस्थितिया पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है, जिनमे हिन्दू अल्पसख्यको के लिए पजाब मे एक सम्माननीय जीवन व्यतीत करना कठिन हो जाएगा ।

इन सब परिस्थितियो को सामने रखते हुए यह सम्मेलन घोषणा करना चाहता है कि पजाब के वर्तमान सकट को दूर करने का एक ही उपाय है कि पजाब को एक बार फिर उसी प्रकार का महा पजाब बना दिया जाए, जैसा कि यह पहली नवम्बर 1966 को था । आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव म भी हरियाणा, हिमाचल और राजस्थान के कुछ भाग पजाब मे सम्मिलित करने की माग की गई है । इसलिए अकाली भी हमारी विशाल पजाब की माग का विरोध नही कर सकते । प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी भी कह चुके हैं कि भाषा के आधार पर प्रान्तो का निर्माण एक भयकर भूल थी । जो कुछ पजाब मे रहा है यह प्रधानमन्त्री के विचारो की सम्पुष्टि करता है । इसलिए यह सम्मेलन भारत सरकार से यह माग करता है कि पजाब का पुनर्गठन किया जाए और

फिर से एक ऐसा प्रा त बनाया जाए जिसमे विघटकारी देशद्रोही और साम्प्रदायिक शक्तिया सिर न उठा सके। पजाब एक सीमान्त प्रदेश है देश को बचाने के लिए पजाब को बचाना आवश्यक है। इसलिए यह सम्मेलन माग करता है कि भारत सरकार शीघ्र ही पजाब के पुनर्गठन के लिए पग उठाए और एक ऐसा सीमा त प्रदेश बनाया जाए, जो पाकिस्तान की तरफ से भी सुरक्षित रहे और अन्दर से जो शक्तिया इसके विघटन के लिए काम कर रही हैं वे भी सफल न हो सके।

यह सम्मेलन यह भी स्पष्ट कर देना चाहता है कि अपने सिख बन्धुओ के साथ हिन्दुओ का कोई मतभेद या मनमुटाव नही है। परन्तु अकाली दल की साम्प्रदायिक व राष्ट्र विरोधी नीतियो को पजाब की हिन्दू जनता अपने लिए घोर सकट का विषय समझती है। जब तक अकाली दल अपनी सकीर्ण मनोवृत्ति को नही छोडता। उस समय तक पजाब मे शान्ति और सद्भावना का वातावरण पैदा नही हो सकता।

इसलिए यह सम्मेलन देश की राष्ट्रवादी और देश भक्त जनता से निवेदन करना चाहता है कि पजाब को बचाने के लिए और देश की एकता प्रभुसत्ता और सगठन की सुरक्षा के लिए एक विशाल पजाब बनाने मे हमारा हाथ बटाए ताकि जो कुछ पजाब मे हो रहा है वह शीघ्र समाप्त हो जाए और यह प्रदेश एक बार फिर उसी प्रकार प्रगति के रास्ता पर चल सके जैसे कि यह आज से पाच वर्ष पूर्व चल रहा था।

प्रस्ताव सख्या 2

पिछले पाच वर्षो मे पजाब मे सैकडो निर्दोष व्यक्ति उग्रवादियो के हाथो मारे गए हैं। इनमे कई महिलाए भी थी बच्चे भी थे। जो कुछ किया गया है वह केवल देश के हितो के विरुद्ध ही न था मानवता और धार्मिकता के भी विरुद्ध है। कोई भी धर्म निहत्थे और निर्दोष व्यक्तियो की हत्या की अनुमति नही देता। परन्तु पजाब मे यह सब कुछ धर्म के नाम पर किया गया। वह धर्म जिसके प्रवर्तक शान्ति के अग्रदूत श्री गुरुनानक देव थे, उनके अनुयायी आज जगह जगह निर्दोष व्यक्तियो की हत्या कर रहे हैं और पजाब के माथे पर एक ऐसा कलक लगाया जा रहा है जिसे मिटाना कठिन हो जाएगा।

यह सम्मेलन उन सब भाईयो बहिनो और बच्चो को अपनी श्रद्धाजलि भेट करता है जो निर्दोष मारे गए और जो उग्रवाद और आतकवाद की नृशस प्रवृत्ति के शिकार हुए। यह सम्मेलन भारत सरकार से यह भी माग करता है कि उन सबके परिवारो को केवल आर्थिक सहायता ही न दी जाए उन्हे इस योग्य भी बनाया जाए कि वे एक स्वावलम्बी और सम्मानित जीवन व्यतीत कर सके। उग्रवाद और आतकवाद प्रत्येक समाज के लिए अराष्ट्रीय प्रवृत्ति है। हम अपनी सस्कृति और धार्मिक भावनाओ की सुरक्षा के लिए उन शक्तियो के विरोध मे खडे हो जाना चाहिए जो पजाब का वातावरण बिगाडने और देश की स्वाधीनता एकता और प्रभुसत्ता के लिए एक सकट पैदा करना चाहती हैं जो भाई बहन और बच्चे इन नृशस हत्यारो के हाथो मारे गए हैं वह भी उसी प्रकार देश की एकता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए मारे गए हैं जिस प्रकार 1947 मे हमारे लाखो हिन्दू भाई मारे गए थे। इस सम्मेलन की यह निश्चित धारणा है कि प्रत्येक देश भक्त और धर्म प्रेमी भारतीय का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे विघटनकारी तत्त्वो के विरुद्ध एक जुट होकर देश की स्वाधीनता प्रभुसत्ता और एकता की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाए।

प्रस्ताव सख्या 3

हिन्दी न केवल देश की राष्ट्रभाषा है, यह हमारी एकता और प्रभुसत्ता की भी प्रतीक है। इसके साथ हमारी प्राचीन सस्कृति और परम्पराए भी सम्बन्धित हैं। इसलिए प्रत्येक देश भक्त भारतीय का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करें। परन्तु यह सम्मेलन अत्यन्त रोष और निराशा के साथ कहने पर विवश है कि पजाब मे हिन्दी का समाप्त करने के लिए सरकार की ओर से पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। सरकारी कार्यालयो मे विशेषकर हिन्दी के लिए अब कोई स्थान नही रहा। हिन्दी पर अग्रेजी को अधिक महत्त्व दिया

जाता है और पंजाब मे हिन्दी का अस्तित्व ही समाप्त करने की एक योजनाबद्ध कार्यवाही की जा रही है।

अकाली दल की ओर से यह कहा जा रहा है कि सिखो का एक पृथक् अस्तित्व है और उसकी सुरक्षा के लिये पंजाबी भाषा का प्रचार और भी अधिक आवश्यक है और उसके लिए सरकार पूरा प्रयत्न कर रही है। यह सम्मेलन यह निश्चित घोषणा करना चाहता है कि हम किसी भी भाषा के विरुद्ध नही हैं, न हमारा पंजाबी से कोई विरोध है, परन्तु हमारा यह भी निश्चित मत है कि देश की एकता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए हिन्दी की रक्षा और उन्नति भी आवश्यक है। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब के सब राष्ट्रवादी और देश भक्त भाईयो और बहनो मे यह निवेदन करना चाहता है कि अब हमे अपनी एकता की रक्षा के लिए हिन्दी की रक्षा करनी चाहिए। प्रदेश चलाने मे हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग होना चाहिए। अपने पत्र व्यवहार, निमन्त्रण पत्र और इस प्रकार के दूसरे सब कार्य हिन्दी मे होने चाहिए। हमारी शिक्षण संस्थाओ का माध्यम हिन्दी ही रहना चाहिए। पंजाब मे जो साम्प्रदायिक तत्त्व देश की एकता को नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयास कर रहे है, इसका हम एक ही उत्तर दे सकते हैं कि हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार व प्रयोग किया जाए। हम सब को यह संकल्प करना चाहिए कि हम हिन्दी पढ़ेंगे और हिन्दी लिखेंगे और अपने दिन प्रतिदिन के व्यवहार मे इस का अधिक मे प्रयोग करेंगे और अपने बच्चो को हिन्दी के माध्यम म शिक्षा दिलाएगे। हिन्दी के द्वारा ही हम पंजाब का सम्बन्ध अपने बाकी के देशवासियो के साथ रख सकते है। इसलिए हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए प्रत्येक देश भक्त व राष्ट्रवादी को अपना अधिक से अधिक सहयोग देना चाहिए। —ब्रह्मदत्त शर्मा-महामन्त्री

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ६० राजपुर रोड़ देहरादून

सन् 1986-87 की वार्षिक रिपोर्ट

1—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसकी रजिस्ट्री गवर्नमेंट आफ इण्डिया के के ऐक्ट 21, 1860 ई के अनुसार सन् 18ь4 मे हुई थी। 23 नवम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया, और उसकी निम्नलिखित परिभाषा की—

2—सभा ने बालको के लिये गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को स्थापित किया। और उन्ही नियमो के अनुसार बालिकाओ की शिक्षा के लिए 23कार्तिक 1980 तदनुसार 8 नवम्बर 1923 ई को दीपावली के दिन दिल्ली मे कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना हुई। सुप्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान नेता श्री स्व आचार्य रामदेव जी जिनका गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान है, इस संस्था के आदि संस्थापक थे। प्रथम आचार्य विद्यावती जी सेठ थी। कन्या गुरुकुल तीन साल के लगभग दिल्ली मे रह कर 1-5 1927 को देहरादून आ गया, और तब से यही पुष्पित पल्लवित हो रहा है।

3—प्राचीन ऋषि मुनियो द्वारा प्रतिपादित आदर्शो के अनुरूप अलग अलग जाति वर्ग सम्प्रदाय और धर्म की छात्राओ को बिना किसी भेदभाव गुरुकुल आश्रम व्यवस्था मे रख कर दीक्षित करके आर्य समाज के मन्तव्यो के अनुसार वेद-वेदांग संस्कृत साहित्य प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान विज्ञान मे शिक्षित करने और इस प्रकार देश और मानव जाति की सेवा के लिये बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न आदर्श नारिया तैयार करने के उद्देश्य से इस संस्था की स्थापना की गई थी। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल वट वृक्ष की भान्ति पुष्पित पल्लवित हो रहा है। और गुरुकुल विश्वविद्यालय के अंगभूत महाविद्यालय के रूप मे राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर रहा है। इस संस्था की गरिमा का सबसे बड़ा प्रमाण इसी से मिलता है कि यहा न केवल भारत के कोने कोने से बल्कि विदेशो से भी छात्राए आकर शिक्षा ग्रहण करती है। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस संस्था मे कुछ मुसलमान छात्राए भी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। नवम कक्षा से 14 कक्षा तक लगभग 111 छात्राएं गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय की परीक्षा मे बैठी, परीक्षा परिणाम लगभग 99 प्रतिशत रहा। कु प्रतिभा ने विद्यालकार मे विश्वविद्यालय मे सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

श्री स्व आचार्य रामदेव पुस्तकालय तथा वाचनालय

पुस्तकालय मे इस वर्ष पुस्तको की सख्या चौदह हजार रही। छात्राओ तथा शिक्षिकाओ ने लगभग छ हजार पुस्तको द्वारा लाभ उठाया।

ज्योति समिति

इस वर्ष ज्योति समिति का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। कन्याओ ने विभिन्न प्रकार ज्ञानवर्द्धक एव मनोरजक कायक्रम प्रस्तुत किए। सस्कृत, अग्रेजी, एव हिन्दी मे वाद-विवाद प्रतियोगिता नाटक, एव टेब्लो सगीत के कायक्रम अत्यन्त प्रशसनीय रहे। प्रतियोगिताओ का परिणाम निम्नलिखित रहा।

अल्का एव शैफालिका भवनो ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सुप्रा एव राका भवनो ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय आश्रम के समीप 48 हजार रु की लागत से कन्याओ की चिकित्सा के लिए एक चिकित्सालय बना हुआ है। जिसमे 20 शैयाओ के योग्य एक बड़ा तथा दो छोटे रोगी गृह बने हुए हैं। साथ मे लेडी डाक्टर का कमरा औषधालय, ड्रेसिंग रूम औषध भण्डार, कम्पाउण्डर तथा नर्स के रहने के कमरे, रसोई स्नान गृह फ्लश शौचालय आदि बने हुए हैं। चिकित्सालय के दोनो ओर सुन्दर हरी घास के मैदान हैं। यह चिकित्सालय उप-मैडिकल एडवाइजर तथा एक लेडी डाक्टर की अध्यक्षता मे चल रहा है। इनके साथ दो योग्यिकाएं कम्पाउण्डर परिचारिका (नर्स) तथा सेविका कार्य करती है। इस वर्ष चिकित्सालय में 15 हजार रोगियो की चिकित्सा की गई। इस वर्ष चिकित्सालय पर लगभग 30 हजार रुपया व्यय हुआ है।

4—यू जी सी द्वारा विद्यालकार विभाग को गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के अगभूत महाविद्यालय की मान्यता।

1954 तक यहा 12 श्रेणियो का पाठ्यक्रम था, और अन्तिम उपाधि का नाम विद्यालकार था, परन्तु सन 1955 से इस सस्था मे भी गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के अनुसार 14 श्रेणियो का पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया और कन्याओ को भी विद्यालकार की डिग्री मिलनी आरम्भ हो गई। कन्या गुरुकुल के विद्यालकार विभाग को यू जी सी द्वारा विधिवत मान्यता 1 जनवरी 1986 से प्राप्त हो गई है। तथा विद्यालकार विभाग की शिक्षिकाओ एव शिक्षणेत्तर कर्मचारियो को भी गुरुकुल कागड़ी का वेतन मान मिलना प्रारम्भ हो गया है। अत यू जी सी के नियमानुसार केवल विद्यालकार विभाग को विश्वविद्यालय के अधीन कर लिया गया है। शेष विद्याविनोद का सचालन एव प्रबन्ध पूर्ववत: आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब एव आर्य विद्या सभा के अधीन ही चलेगा।

विभिन्न सास्कृतिक प्रतियोगिता मे

1—दिनाक 17, 18, 19 नवम्बर 1986 को मण्डलीय स्तर की रैली उत्तर काशी मे आयोजित हुई। कन्या गुरुकुल की छात्राओ ने सीनियर चैम्पियन शिप की शील्ड प्राप्त की।

2—महावीर जैन कन्या पाठशाला मे आयोजित वाद-विवाद (1986) प्रतियोगिता मे सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

3—महादेवी कन्या पाठशाला मे आयोजित अन्तर्विद्यालय मे वाद-विवाद प्रतियोगिता मे सब प्रथम स्थान प्राप्त किया।

4—नारी शिल्प मन्दिर मे आयोजित अन्तर्विद्यालय मे गीता श्लोक प्रतियोगिता में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

5—तरुण क्लब द्वारा आयोजित पल्लव भावगीत प्रतियोगिता (1984-85-86) में निरन्तर तीन वर्ष तक प्रथम स्थान प्राप्त किया।

6—नारी शिल्प मन्दिर में आयोजित अर्न्तविद्या० भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित सामूहिक गान में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

7—दिसम्बर 1819 को जिला स्तरीय तथा मण्डलीयस्तर की मण्डलीय रैली जो कि श्रीनगर मे सम्पन्न हुई। जिसमे कु रेनू तोमर सर्व श्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुई, तथा सम्यागत शील्ड कन्या गुरुकुल महाविद्यालयको प्राप्त हुई।

8—नारी शिल्प मन्दिर में आयोजित अन्तविद्यालय भाव गीत प्रतियोगिता (1986) में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

9—दिसम्बर 1986 को रुड़की मे आयोजित स्टेट रैली मे कु रेनू तोमर सर्व श्रेष्ठ खिलाड़ी छात्रा होने के कारण विजयोपहार प्राप्त किया, सम्यागत शील्ड भी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय को प्राप्त हुई।

10—8,9 नवम्बर 1986 को लक्ष्मण विद्यालय देहरादून मे आयोजित जिला स्तरीय रेली मे कु सुमन सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुई। सर्व श्रेष्ठ खिलाड़ी छात्रा होने के कारण चैम्पियनशिप प्राप्त की।

5—कन्या गुरुकुल देहरादून का 63 वा स्थापना दिवस आनन्द समारोह पूर्वक मनाया गया। छात्राओ ने कुल भूमि के सम्पूर्ण परिसर को पुष्प लता एव अन्य विभिन्न विधाओ से अलकृत किया। प्रातःकाल सम्पूर्ण छात्राओ एव कुलवासियो ने मिल कर यज्ञ किया। तत्पश्चात् श्री आचार्य जी की अध्यक्षता मे एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमे छात्राओ ने अनेक प्रकार के शिक्षा प्रद एव मनोरजक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कुल माता को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

मण्डलीय खेल-कूद प्रतियोगिता

इस वर्ष जिला एव मण्डलीय खेल कूद प्रतियोगिता मे यहा की छात्राओ ने नाना प्रकार के पुरस्कार जीत कर राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त की। निम्नलिखित छात्राओ को 1640 रुपये की छात्रवृत्ति मिली।

कुमारी श्यामा	240	रुपये
,, अनिता	240	,,
,, सुशीला	240	,,
,, सैरेश	240	,,
,, मनोज	120	,,
,, सुमन	200	,,
,, रेखा	120	,,
,, सतविन्दर	240	,,

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

वर्ष 1986 मे राष्ट्रीय सेवा योजना का शिविर शानशाह आश्रम रायपुर लगाया गया। इस दस दिवसीय शिविर का उद्घाटन शानशाह आश्रम के सस्थापक श्री स्वामी गोविन्दानन्द जी महाराज के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। कन्याओ ने ग्रामीण क्षेत्रो मे श्रमदान द्वारा सड़क बनाने का कार्य किया। ग्रामो मे साक्षरता अभियान चलाया। तथा ग्रामीण महिलाओ को सफाई कढ़ाई बुनाई एव पढ़ाई का कार्य सिखाया।

आश्रम के ही प्रागण मे उक्त शिविर का समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

1 सितम्बर 1986 को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून मे श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अध्यक्षता मे विद्या सभा की एक बैठक हुई, जिसमे सभा के कई वरिष्ठ सदस्य सर्वश्री योगेन्द्रपाल जी सेठ, श्री हरवशलाल जी शर्मा, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, श्री अश्विनी कुमार जी एडवोकेट आदि उपस्थित थे। छात्राओ ने विभिन्न प्रकार के आकर्षक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। व्यायाम प्रदर्शन भी किया। सब सज्जनो ने छात्राओ की भूरि-भूरि प्रशसा भी की। श्री वीरेन्द्र जी प्रधान ने सब प्रकार से कन्या गुरुकुल की सहायता करने का आश्वासन भी दिया। इस समय तक पजाब प्रतिनिधि सभा पजाब कन्या गुरुकुल देहरादून को एक लाख रुपया सहायता दे चुकी है।

दमयन्ती कपूर
आचार्या
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

आर्य मर्यादा का दीपावली विशेषाँक

आर्य बन्धुओं को यह जान कर अति प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख पत्र आर्य मर्यादा साप्ताहिक का महर्षि निर्वाण दिवस दीपावली के अवसर प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी एक आकर्षक और प्रभावशाली सामग्री से भरपुर विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा। गत वर्ष के विशेषांक की बाद में मांग आती रही परन्तु हमारे पास भेजने के लिए प्रतियां शेष नहीं थी। इसलिए सभी आर्य समाजें व शिक्षण संस्थाएं अपनी प्रतियां अभी से सुरक्षित करा लें।

इसके साथ ही सभी आर्य बन्धुओं, बहनों, आर्य समाजों और शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से हमारी प्रार्थना है कि वह इस विशेषांक के लिए अपनी ओर से या अपनी संस्था की ओर से एक पृष्ठ का विज्ञापन भी अवश्य भिजवाने का कष्ट करें, गत वर्ष विज्ञापन शुल्क प्रति पृष्ठ 500 रुपये रखा गया था। परन्तु इस बार केवल 400 रुपये प्रति पृष्ठ रखा गया है।

हम वर्ष में केवल दो विशेषांकों के लिए विज्ञापन भेजने के लिए आपसे आग्रह करते हैं। एक शिवरात्रि, ऋषिबोध विशेषांक के लिए तथा दूसरा ऋषि निर्वाण विशेषांक के लिए। इसलिए विज्ञापन शुल्क तथा विज्ञापन मैटर भी शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि आपका पृष्ठ सुरक्षित कर लिया जाए।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

गत दिनों में किए गए कुछ मुख्य कार्य

यद्यपि यह विवरण मुख्यता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के 31-3-87 तक के कार्य कलापो के विषय मे है तथापि अपना यह कर्तव्य समझता हू कि सदन को सभा से सम्बन्धित उपरोक्त तिथि के उपरान्त होने वाले कार्यों एव घटनाओं की आद्यावधिक जानकारी प्राप्त कराने हेतु सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करू । इस सदर्भ मे निवेदन निम्न प्रकार है :—

सभा मे कार्य करने वाले कर्मचारियो एव उपदेशको के वेतन मान जो बीसियो वर्षों से चले आ रहे थे और जिनके सशोधन के विषय मे सभा ने सोचा और मह गाई बढ जाने के कारण कर्मचारियो की ओर से भी महगाई भत्ता बढाए जाने के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ। सभा द्वारा गठित उप समिति ने इन वेतन मानो को सशोधन करके नए वेतन मान 1-4-87 से लागू कर दिए । जिसके परिणाम स्वरूप सभा का लगभग 20000 रुपए प्रति वर्ष का व्यय भार तो बढा, परन्तु इस का व्यय का सभा की आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष प्रभाव नही पडा । क्योकि सभा के पूर्व कार्यालयाध्यक्ष एव मुख्य लेखक जिनको आयु सीमा पूरी होने पर 31-3-87 से पहले सेवा मुक्त किया गया और उनके स्थान पर फिलहाल कोई नई नियुक्ति न करके कार्यालय के ही अन्य कर्मचारियो को उनका कार्य भार सौंपा गया है। तो इस तरह से इन दोनो पदो पर होने वाले व्यय की बचत से उपयुक्त अतिरिक्त व्यय पूरा हो गया।

सभा के अधिकारियो को आर्य समाजो से सम्पर्क करने हेतु सभा के किसी निजी वाहन के अभाव के कारण बाहर जाने मे बहुत कठिनाई अनुभव करनी पडती थी। इसको दृष्टि मे रखते हुए कई बार यह विचार किया गया कि सभा का अपना एक वाहन होना चाहिए अन्त-तोगत्वा सभा के लिए एक एम्बेसडर कार मई मास मे क्रय कर ली गई। इस पर पहला दौरा जिला भटिण्डा मे आस पास उस जिला की आर्य समाजो की एक गोष्ठी करके उनकी कतिपय समस्याओ पर विचार करके समाधान खोजा गया। इस दौरान रामा मण्डी भी गए और वहा की स्थिति एव सभा की सम्पत्ति का जायजा सभा अधिकारियो द्वारा लिया गया। इस वाहन के होने से सभा के अधिकारी अब प्रत्येक जिला का बारी बारी से दौरा करके आर्य समाजो के अधिकारियो से समय-समय पर सम्पर्क प्राप्त करते रहेगे।

भारत मे ईसाई मिशनरियो की गतिविधिया जोर पकड रही है। उनका कार्य विशेष कर के आदि वासी क्षेत्रो मे है, जहा वह भोले भाले लोगो की अज्ञानता एव गरीबी का फायदा उठा कर फुसला बहला करके उन्हे ईसाई बनाते हैं। भारत मे वाहद एक ही सस्था है, जिसको इस तरह से जनता को ईसाई धर्म मे ले जाने के सम्बन्ध मे चिन्ता है वह आर्य समाज है इस सस्था के सन्यासी एव अन्य कार्यकर्ता आदिवासी क्षेत्रो मे जाते है और ईसाई मिशनरियो से लोहा लेते है। उनके समानान्तर अपनी स्वल्प आर्थिक शक्ति के बल पर मुकाबले मे छात्रावास हस्पताल आदि खोलते है। अपने प्रचार के माध्यम से आदिवासियो के सामने हिभाषियो के सह-योग से उनके पुरखाओ की गौरवमय ऐतिहासिक गाथाओ को सुना कर उद्बोधन करके उनकी सुसुप्त भावनाओ को जागृत करके ईसाई मिशनरियो के खिलाफ भडकाते हैं, जिसके फलस्वरूप वह अपने बच्चो को ईसाइयो के चगुल से छुडा कर लाते हैं। परन्तु उसी क्षेत्र मे ऐसे बच्चो को रखना उनके लिए पुनः ईसाइयो द्वारा बरगला कर वापस ले जाने का भय बना रहता है। इसलिए उडीसा के ऐसे ही क्षेत्रो से स्वामी धर्मानन्द जी जो बडी कर्मठता एव साहस से कार्य कर रहे हैं ने यह अनुभव किया कि इन बच्चो को इस क्षेत्र से बाहर किसी ऐसे स्थान पर रखा जाए, वहा इनकी शिक्षा-

(शेष पृष्ठ 32 पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर नगर

आय व्यय विवरण सम्वत् 2043 एवं बजट सम्वत् 2044

क स	निधिया	बजट 2043	वास्तविक आय 2043	बजट 2044
1	सभा मुख्य कार्यालय	11000 00	7807-05	11000-00
2	वेद प्रचार विभाग	117000-00	50863-00	127000-00
3	आर्य मर्यादा साप्ताहिक	40000-00	29275-06	51000-00
4	आय निधि परिषद पंजाब	50000-00	23012-40	45000-00
5	दयानन्द साहित्य विभाग	10000-00	5523-06	10000-00
6	विविध विभाग	82200-00	219766-85	82200-00
		310200 00	3360[illegible] 56	326200-00
	बजट घाटा	23300 00	——	128000-00
	सर्वयोग	333500 00	386[illegible]-66	454[illegible]-00

सभा मुख्य कार्यालय

	बजट 2043	वास्तविक आय 2043	बजट 2044
आर्य समाजो से दशांश	5000-00	7587 05	10000-00
,, ,, ,, विशेष दशांश	5000-00	——	——
किराया (सम्पत्ति विभाग)	1000-00	220-00	1000-00
	11000 00	7807 05	11000-00
घाटा	60000 00	58023 49	65100-00
योग	71000-00	65830-54	76100-00

क्र स	विधिया	बजट 2043	वास्तविक व्यय 2043	बजट 2044
1	सभा मुख्य कार्यालय	71000-00	65830-54	76100-00
2	वेद प्रचार विभाग	121500-00	82059-20	202000-00
3	आर्य मर्यादा साप्ताहिक	66000-00	51531-77	73000-00
4.	आर्य विद्या परिषद् पंजाब	33000 00	22393-75	34000-00
5.	साहित्य विभाग	30000-00	21670-22	43000-00
6	विविध व्यय	12000-00	18669-85	26000-00
		333500-00	262155-33	454100-00
	लाभ	——	73893 23	——
	सर्वयोग	333500-00	336048-56	454100-00

वेतन कर्मचारी कार्यालय	50000-00	43531-30	45000-00
कार्यालय कन्टि.	9000-00	13096-84	15000-00
वेतन सम्पत्ति विभाग (बायाब)	8000-00	6106-90	6600-00
मार्ग व्यय ,, ,,	1400-00	1531-25	5400-00
अतिथि सत्कार व्यय	1200-00	1065-25	1500-00
आकस्मिक व्यय	400-00	500-00	600-00
सार्वदेशिक सभा पचमास	1000-00	——	2000-00
योग	71000-00	65830-54	76100-00

क. स. निधिया	बजट 2043	वास्तविक आय 2043	बजट 2044
वेद प्रचार विभाग			
वेद प्रचार दान	15000-00	13756-00	20000-00
वेद प्रचार विशेष	100000-00	30721-00	100000-00
आर्य पर्व निधि	500-00	50-00	500-00
किराया (वेद प्रचार)	1500-00	586-60	1500-00
सहायता निधि मे दान		5550-00	5000-00
	117000-00	50663-60	127000-00
घाटा	4500-00	31395-60	75000-00
योग	121500-00	82059-20	202000-00
आर्य मर्यादा हिन्दी साप्ताहिक			
आर्य मर्यादा दान	1000-00	773-00	1000-00
,, शुल्क	12000-00	9955-00	15000-00
,, विशेषांक	20000-00	7747-66	20000-00
,, विज्ञापन	7000-00	10800-00	15000-00
	40000-00	29275-66	51000-00
घाटा	26000-00	22256-11	22000-00
योग	66000-00	51531-77	73000-00
आर्य शिक्षा परिषद् पंजाब			
कालेजो व स्कूलो से दशांश	15000-00	4200-00	10000-00
धर्म शिक्षा पुस्तको की बिक्री से आय	15000-00	10252-40	15000-00
धर्म शिक्षा परीक्षा शुल्क	10000-00	6315-00	10000-00
छात्र कल्याण कोष (शेष पत्र मे)	10000-00	2245-00	10000-00
	50000-00	23012-40	45000-00
योग	50000-00	23012-40	45000-00

क्र. सं. निधिया	बजट 2043	वास्तविक व्यय 2043	बजट 2044
उपदेशक वेतन	90000-00	31154-00	100000-00
,, मार्ग व्यय	5000-00	1923-80	5000-00
आर्य युवक सभा पजाब	—— —	1445-00	2000-00
वेतन वेद प्रचार कार्यालय	20000-00	20281-75	25000-00
वेद प्रचार कण्टि.	5000-00	11834-65	15000-00
सहायता व्यय	1500-00	15220-00	20000-00
आर्य वीर दल	———	200-00	25000-00
पैट्रोल एव ड्राईवर व्यय	———	———	10000-00
योग	121500-00	82059-20	202000-00

वेतन कर्मचारी	11000-00	11086-00	12000-00
डाक एव मिश्रित व्यय	5000-00	4846-30	6000-00
आर्य मर्यादा कागज	10000-00	7369-50	10000-00
,, छपाई	25000-00	16985-00	30000-00
,, विशेषांक	15000-00	11244-97	15000-00
योग	66000-00	51531-77	73000-00

वेतन कर्मचारी	9500-00	9802-00	11000-00
धर्म शिक्षा पुस्तको का क्रय मूल्य	15000 00	9774-00	15000-00
भाषण प्रतियोगिता पारितोषिक	1000-00	454-90	1000-00
उत्तरपुस्तिका जाच कराई,	1000-00	———	3000-00
डाक एव स्टेशनरी मिश्रित व्यय	6500-00	2362-85	4000-00
	33000-00	22393-75	34000-00
लाभ	7000-00	618-65	11000-00
योग	40000-00	23012-40	45000 00

क स	विविधा	बजट 2043	वास्तविक आय 2043	बजट 2044

अनूदित साहित्य विभाग विविध व्यय

पुस्तक बिक्री से आय	10000-00	5523-00	10000-00
	10000-00	5523 00	10000 00
घाटा	20000 00	16147-22	33000-00
योग	30000-00	21670-22	43000-00

विविध विभाग

बैंक में सूद से आय	80000-00	219789-90	80000-00
टेलीफोन से आय	200-00	76-95	200-00
उपजाऊ भूमियों से आय	1000-00	———	1000-00
धर्मार्थ सूखा	1000-00	———	1000-00
	82200-00	219766-85	82200-00
योग	82200-00	219766-85	82200-00

भवन निर्माण—आय व्यय विवरण 31-3-1986 तक बजट 31-3 1987

संस्थाओं से दान	501-00	10000-00
व्यक्तिगत दान	12930-55	25000-00
मिश्रित आय	2117-82	5000-00
	15549-37	40000-00
घाटा	16416-38	180000-00
सर्वयोग	31965-75	220000-00

[illegible]	[illegible] शर्मा	हरवंशलाल शर्मा
[illegible]	सभा-महामन्त्री	सभा कोषाध्यक्ष

क्र. सं.	विवरण	बजट 2043	वास्तविक व्यय 2043	बजट 2044
	वेतन कर्मचारी	9000-00	9334-60	12000-00
	साहित्य क्रय मूल्य	10000-00	8408-00	15000-00
	साहित्य के लिए कागज	6000-00	1362-00	4000-00
	,, की छपाई	———	2438-62	5000-00
	मिश्रित व्यय	5000-00	132-00	2000-00
	महाशय कृष्ण पुस्तकालय	———	———	5000-00
		30000-00	21670-82	43000-00
	योग	30000-00	21670-86	43000-00
	अभियोग व्यय	1000-00	10327 10	12000-00
	,, मुरकुलराय कोट	2000-00	692-75	3000-00
	बिजली व्यय सभा कार्यालय	2000-00	2252-00	3000-00
	टेलीफोन व्यय	4000-00	2648-00	5000-00
	दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला बाहर	3000-00	2750-00	3000-00
		12000 00	18669 85	26000-00
	साथ	70200-00	201097-00	56200-00
	योग	82200-00	219766-85	82200-00

[illegible] भवन निर्माण व्यय	29422-40	15000-00
सफेदी व पेंट कराने का व्यय	1528-65	5000-00
मिश्रित व्यय नव निर्माण	1014-70	200000-00
सर्वयोग	31969-75	220000-00

[illegible]
[illegible]

वीरेन्द्र शर्मा
[illegible]

चम्बा में सभा अधिकारी

दयानन्द मठ चम्बा हिमाचल प्रदेश के वार्षिकोत्सव पर सभा के अधिकारी वहा गए जिनमे सर्वश्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब एव महामन्त्री श्री प सत्यव्रत जी शर्मा, श्रीमती कमला आर्या, श्रीमती इन्दु पुरी मोगा अपनी इगलैड से आई हुई भानजी निधि के साथ,श्री एव श्रीमती आशानन्द जी आर्य, श्रीमती विद्या-वती जी आर्या लुधियाना। यह दयानन्द मठ चम्बा मेरावी नदी के किनारे स्थित है। कभी यह खण्डहर हुआ करता था अब वहा धीरे-2 आश्रम बनता जा रहा है। इस मठ का सचालन श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती कर रहे हैं। उन्होंने अपना जीवन धर्म प्रचार समाज सेवा के लिए अर्पित कर रखा है। मठ मे लडको व लडकियो को सस्कृत पढाई जाती है और एक फार्मेसी भी चल रही है। श्री स्वामी सुमेधानन्द जी को इसकी प्रेरणा पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से मिली है।

श्री स्वामी सुमेधानन्द जी अपना जीवन पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रचार मे व्यतीत करेंगे,उनका कहना है कि हमारे देश का भविष्य बहुत धूमिल रहेगा यदि हम नई सन्तान को चरित्रवान् और बलवान बनाने का प्रयास न करेंगे। इसके लिए वे यह आवश्यक समझते हैं कि अपने देश की युवा पीढी को समझाया जाए कि वह अपनी नई सन्तान किस प्रकार से ऐसी पैदा कर सकते हैं जो बड़ी होकर देश, धर्म और समाज की सेवा कर सके। स्वामी जी का कहना है कि परिवार नियोजन की जो योजना हमारी सरकार ने बना रखी है उससे हमारे देश को और विशेष कर हिन्दू जाति को बहुत हानि पहुचेगी। हमे सन्तान की सख्या को अवश्य सीमित रखना चाहिए, परन्तु जो भी सन्तान पैदा करें वह ऐसी होनी चाहिए जो चरित्र-वान हो और जो अपने आपको धर्म और देश के लिए समर्पित करने को तैयार हो।

इसके अतिरिक्त स्वामी सुमेधानन्द जी प्रचार कार्य एव सेवा कार्य मे सलग्न है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मान्य अधिकारियो ने श्री स्वामी सुमेधानन्द जी को आश्वासन दिया है कि जब वे अपनी प्रचार योजना बना कर आर्य जनता के सम्मुख रखेंगे तो सभा उन्हें पूरा सहयोग देगी।

इससे पूर्व भी विगत वर्ष सभा के मान्य अधिकारी चम्बा गए थे।

(25 पृष्ठ का शेष)

दीक्षा एव शासन पालन सन्तोषजनक ढग से हो सके, तो स्वामी जी गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर मे आए और वहा के अधिकारियो से इस विषय मे बात कर के दस बच्चो को करतारपुर भेजने की योजना बनाई गई। करतारपुर के गुरुकुल का इन बच्चो के आने पर व्यय बढ जाना स्वाभाविक ही था। करतारपुर के व्यवस्थापको ने आर्थिक सहयोग का आह्वान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने तुरन्त1000रुपये प्रति मास सहायता देना प्रारम्भ कर दिया।

पजाब प्रान्त मे गत पाच छ वर्षों से हो रहे उग्र-वाद के ताण्डव और निर्दोषो की हत्याओ की सारी स्थिति आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भारत सरकार एव अन्य उच्च अधिकारियो तक पहुचाने के लिए कई बार सम्मेलनो मे प्रस्ताव पारित करके भेजे गए और स्थानीय समाचार पत्र प्रतिनिधियो से भी प्रैस कान्फ्रैंसों का आयोजन कई बार किया गया। गवर्नर महोदय एव भारत के प्रधान-मन्त्री से भी समय मागा गया पर अभी तक सफलता नही हुई। पिछले दिनो पजाब की दर्दनाक स्थिति को भारत सरकार तक पहुचाने के लिए उनकी नाक तले दिल्ली मे ही 19 8 87 को एक प्रैस कान्फ्रैंस को सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सम्बोधित किया। मैं और श्री राजेन्द्र जी दीवान सभा उप-प्रधान भी साथ थे। श्री सभा प्रधान जी ने पजाब को बचाने के लिए इस प्रान्त को कुछ काल के लिए सेना के नियन्त्रण मे दिए जाने का सुझाव दिया और कहा कि गुरुद्वारो को राजनैतिक अड्डो के तौर पर प्रयोग किये जाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। सुरक्षा पट्टी बनाई जाए और अस्त्रो शस्त्रों की तस्करी रोकी जाए। श्री दीवान जी ने पजाब मे उद्योग की क्षति को जो उग्रवाद के कारण हुई, उससे प्रैस प्रतिनिधियो को अवगत कराया।

—सत्यव्रत शर्मा-महामन्त्री

। ओ३म ॥

दीपावली के मंगलमय पावन पर्व पर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएं

★

हवन यज्ञ सम्बन्धी सामान, जैसे हवनकुण्ड, सामग्री, धूप, अगरबत्ती, यज्ञोपवीत, यज्ञपात्र और धार्मिक साहित्य (पुस्तके) लागत मात्र मूल्य पर हर समय सभा कार्यालय मे उपलब्ध हैं। प्राप्त करने के लिए स्वयं पधारे या लिखे।

★

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा,
जालन्धर।

आर्य मर्यादा का अक 28, 29 दिनाक 18 तथा 25 अक्तूबर 1987 तदनुसार 2 नव। 9 कार्तिक सम्वत् 2044 का सम्मिलित अक

वार्षिक शुल्क 30 रुपये तथा इस अक का मूल्य 2 रुपये लागत मात्र

सम्पादकीय—

उस रात की कीमत क्या होगी ?

स्वर्गीय श्री पं. चमूपति जी ने दीवाली की रात के विषय में अपने उद्गार प्रकट करते हुए अपनी एक कविता में एक बार लिखा था—

ऐ दुनिया बता, इससे बढ़ कर,
फिर और हकीकत क्या होगी।
जां दे दी तलाशे हक के लिए,
फिर और इबादत क्या होगी।
यूं तो हर रात की तारिकी,
देती है पयाम उजाले का।
जिससे यह जहांपुर नूर हुआ।
उस रात की कीमत क्या होगी।

दीवाली की रात प्रत्येक भारतीय के लिए एक विशेष महत्व रखती है। दीवाली का वह दिन है जब भगवान राम अपनी पत्नी भगवती सीता और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष बनवास के पश्चात् आयोध्या में वापिस लौटे थे उससे पहले उन्होंने लंका में रावण पर विजय पाई थी। रामायण हम सब के लिए एक विशेष महत्व रखती है उसके द्वारा हमें हमारे प्राचीन धर्म और संस्कृति की एक झलक मिलती है। भगवान राम का जीवन हम सब के लिए प्रेरणा दायक जीवन है। यही कारण है कि हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हम जहां विजय-दशमी के दिन को एक पर्व के रूप मे मनाते है। उसी तरह दीवाली भी हमारे लिए एक ऐतिहासिक और गौरवमय पर्व है।

परन्तु दीवाली की रात का एक और महत्व भी है। उसी दिन महर्षि दयानन्द ने इस संसार से प्रस्थान किया था। विष देकर उनकी हत्या की गई। इस पर आज कुछ कहने की आवश्यकता नही हमारे लिए तो उनकी मृत्यु इस लिहाज से एक विशेष महत्व रखती है कि वह जीवन भर एक दीपक की तरह प्रकाश करते रहे और दीवाली की रात को जब दूसरे दीपक जलाए गए तो भारत की जनता को प्रकाश देने वाला यह महान् दीपक उस रात बुझ गया। श्री प. चमूपति जी ने ठीक ही लिखा था कि

"जिससे यह जहा पुर नूर हुआ,
उस रात की कीमत क्या होगी।"

इसमे सन्देह नही कि यह रात हमारे लिए एक विशेष महत्व रखती है। हमें प्रकाश दिखाने वाले तो चले गए। परन्तु अपने बलिदान से एक रास्ता दिखा गए ओर पिछली एक शताब्दी से हम उसी रास्ते पर चल रहे है। कई बार भटक जाते है और फिर अनुभव करते है कि जो रास्ता हमें महर्षि ने दिखाया था। वही हमारे लिए कल्याण और मोक्ष का रास्ता हो सकता है। हमारा देश बहुत सोभाग्यशाली है जो समय-समय पर यहा ऐसे पुरुष होते रहे है जो हमे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले आते

रहे है। हम उन सब का सन्मान करते है परन्तु महर्षि दयानन्द का एक विशेष स्थान था। उन्होने उस समय अपने देशवासियो मे एक वैचारिक क्रान्ति पैदा की थी जब कि हम अपनी प्राचीन सस्कृति, मान्यताओ और परम्पराओ को बिल्कुल भूल गए थे। उन्होने केवल हमे यही कहा था कि वेदो की तरफ वापिस चलो। वह समझते थे कि वेद ही सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है और क्योकि हम वेद को भूल चुके है इसीलिए भटक रहे हैं और दूसरे मत-मतान्तरो के अनुयायी हमे हडप करने का प्रयास कर रहे है। महर्षि के समकालीन और भी कई सुधारक हुए हैं। परन्तु उनमे से कोई भी जनता के मन पर इतना प्रभाव न छोड़ सका था जितना कि महर्षि दयानन्द ने छोडा था उनसे पहले उनके समय मे और उनके पश्चात जितने धर्माचार्य और समाज सुधारक हुए है। उन मे से कई उस समय के राजनैतिक समाजिक और धार्मिक तीनो प्रकार के विचारो से वैसे प्रभावित न हुए थे जैसे कि महर्षि दयानन्द। मैं इनकी यही सबसे बड़ी विशेषता समझता हू। कई सुधारक हुए है जिन्होने केवल सामाजिक क्षेत्र मे काम किया था। कई वह हुए है जिन्होने केवल धार्मिक क्षेत्र मे और कई राजनैतिक क्षेत्र मे ही काम करते रहे है। केवल महर्षि दयानन्द जी ही ऐसे थे जो सब तरफ देखते थे और जिन्होने सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक तीनो क्षेत्रो मे बडा महत्वपूर्ण कार्य किया था। जहा वह कोई ऐसी भावना का प्रादुर्भाव होते देखते थे जिसे वह अपने देश और समाज के लिए हानिकारक समझते थे। वह उसके विरुद्ध अपना झण्डा खडा कर देते थे। यही कारण था कि आर्य समाज ने पिछले एक सौ वर्षों मे इतनी प्रगति की थी, जो कुछ एक सौ वर्ष पहले महर्षि दयानन्द ने कहा था आज उनके देश-वासियो ने उसे अपना लिया। हमारे विधान निर्माताओ ने उसे देश के विधान मे विशेष स्थान दिया।

आज दीवाली भी है और महर्षि निर्वाण दिवस भी है। हमने यह दोनो पर्व मनाने है। दीवाली इसलिए कि इस के द्वारा हम भगवान राम को याद करे और उन्होने मानव जीवन का जो आदर्श हमारे सामने रखा था उसे समझते हुए उस पर चलने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द को इसलिए हम याद करें कि वह एक नई क्रान्ति के अग्रदूत थे। जहा उन्होने अपने देशवासियो को परतन्त्रता की जजीरो को तोड कर आजाद होने का पाठ पढाया था वहा उन्होने हमे यह भी कहा था कि वेद ही हमारे धर्म और हमारी सस्कृति के आधार हो सकते है। इसलिए वेदो का पढना पढाना और सुनना सुनाना हम सब का कर्त्तव्य है। आज का दिन जो कि ऋषि निर्वाण दिवस है हम इस दिन अपने महान् आचार्य के चरणो मे अपनी श्रद्धाञ्जलि भेट करने का अधिकार रखते है। यदि हम जो कुछ वह कह गए थे उसके अनुसार अपने जीवन को बनाने का प्रयास करें और उसी स्थिति मे हम यह समझ सकेंगे कि—

'जिससे यह जहा पुर नूर हुआ।
उस रात की कीमत क्या होगी॥

—वीरेन्द्र

एक चुनौती–

भारत की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को-2

सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा को भग करके उसके अधिकारियो को बदलने का दो बार प्रयास किया है, पहली बार उन्होने अन्तरग सभा भग कर दी और मुझ आर्य समाज से निष्कासित कर दिया और अब दूसरी बार उन्होने मुझे पजाब सभा का प्रधान बनने के अयोग्य घोषित कर दिया। इसके विरुद्ध मै किस प्रकार सभा का प्रधान बन गया यह पिछले अक मे आर्य मर्यादा के पाठको के सामने रख चुका हू। मै सभा का प्रधान बनू या न बनू यह कोई महत्वपूर्ण विषय नही है मुझ से पहले भी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब चलती रही है और मेरे बाद भी चलती रहेगी। ऐसी सस्थाए किसी व्यक्ति विशेष के सहारे नहीं चला करती अपितु वह व्यक्ति अपनी सभा के सहारे चलते है। मै भी आज जो कुछ पजाब मे हू वह उस समर्थन और सहयोग के कारण हू जो मुझे जनता और विशेष कर आर्य जनता का मिलता रहा है जिन भाईयो और बहनो ने मुझ चार अक्तूबर को इतने बडे बहुमत से फिर सभा का प्रधान निर्वाचित किया है मै उन सबका हृदय से आभारी हू। परम पिता से यही प्रार्थना है कि वह मुझे यह शक्ति दे कि जो आशाए मुझ से लगाई गई है मै उन्हे पूरा कर सकू।

परन्तु जिस स्थिति की ओर मै केवल पजाब का ही नहा सारे देश की आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू वह यह है कि आर्य समाज को बचाने के लिए उस तानाशाही को समाप्त करना पडगा जो कि अपना सिर उठा रही है। केवल तानाशाही हो वह भी कई बार सहन कर ली जाती है यदि उसके द्वारा किसी सस्था का उपकार हो सके परन्तु जब उस तानाशाही की आड मे भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन दिया जाए तो उस सस्था का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है आज सारे देश मे सब राजनैतिक पार्टिया यह कह रही है कि भ्रष्टाचार समाप्त होना चाहिए परन्तु प्रत्येक आर्य के लिए सबसे बडा प्रश्न यह है कि क्या अब आर्य समाज भी भ्रष्टाचार से प्रदूषित होगा ? आर्य समाज का महत्व और उसका सन्मान आज तक केवल इसलिए होता रहा है कि देश की जनता यह समझती है कि यह एक ऐसी सस्था है जहा लोगो की दी हुई कौडी-कोडी सुरक्षित रहती है और आज जब इसी सस्था मे लाखो का घपला होने लग जाए और जो लोग यह सब कुछ करते है उन्हे आर्य समाज के नेताओ का समर्थन प्राप्त हो तो इस सस्था को कौन बचा सकता है। मेरे विरुद्ध जो कार्यवाही की गई है वह केवल इसलिए कि मै पिछले पाच वर्ष से लगातार यह कहता चला आ रहा हू कि हमारी जिन सस्थाओ मे धन का दुरुपयोग

किया जा रहा है उसे रोका जाए। जो कुछ मै कहता था उसकी सम्पुष्टि पहले उन आडिट रिपोर्टो के द्वारा हो गई जो गुरुकुल कागडी फार्मेसी की कराई गई और अब पुलिस ने जो जाच की है उसके पश्चात यह प्रमाणित हो गया है कि जो कुछ मै और मेरे साथी कहते रहे वह ठीक था। केवल मै ही नही कहता रहा माननीय प सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, माननीय श्री सोमनाथ जी मरवाह मान्यवर श्री सरदारी लाल जी वर्मा मान्यवर श्री कृष्णलाल जी आर्य और कई दूसरे महानुभावो ने बार 2 यह कहा कि गुरुकुल कागडी फार्मेसी का बचाओ। यह फार्मेसी किसी समय हमारे देश की प्रथम श्रेणी की फार्मेसी हुआ करती थी। इसके द्वारा हम सरकार से एक पैसा लिए बिना अपने गुरुकुल को चला सकते थे। इसलिए हम बार 2 कहते रहे कि इसमे घपला हो रहा है इसे बचाओ परन्तु हमारी एक न सुनी गई जिन्होने घपला किया उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की गई परन्तु वीरेन्द्र को आर्य समाज से निकालने का प्रयास शुरू हो गया। हमारे नेता यह समझते थे कि वीरेन्द्र को आर्य समाज से निकाल दिया जाए तो यह विवाद समाप्त हो जाएगा। वह बहुत भ्रान्ति मे है। वह मुझे आर्य समाज से निकाल तो सकते है परन्तु मेरी जबान और कलम को बन्द नही कर सकते और जब तक मेरा बस चलेगा मै आर्य समाज मे इस बढते हुए भ्रष्टाचार और तानाशाही के विरुद्ध अपनी आवाज उठाता रहूगा। क्या कारण है कि यह सब कुछ होते हुए भी सार्वदेशिक सभा के प्रधान उन्हीं व्यक्तियो का समर्थन करते हैं जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप है। सन्यास ले लेने के पश्चात् उन्हे इस दुकानदारी को छोड कर अपना सारा समय केवल आर्य समाज के लिए ही लगाना चाहिए था परन्तु उनके दिमाग से फार्मेसी नहीं निकल रही। वह हर चौथे दिन वहा पहुच जाते हैं। अभी 4 अक्तूबर को वह फिर वहा गए और फार्मेसी के कर्मचारियो ने उनके विरुद्ध प्रदर्शन किया, हम सब के लिए यह अत्यन्त ही लज्जाजनक और खेदजनक विषय है कि हमारे एक सन्यासी का इस प्रकार से अपमान हुआ है। परन्तु इस के लिए वह किसी और को उत्तरदायी नही ठहरा सकते।

मै स्वय चाहता हू कि यह विवाद किसी प्रकार समाप्त हो जाए। इसलिए मेरा एक सुझाव है कि आर्य समाज के पाच मूर्धन्य सन्यासियो की एक न्याय सभा बना दी जाए। यह सन्यासी है श्री स्वामी सर्वानन्द जी, श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी श्री स्वामी दीक्षानन्द जी, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी और श्री स्वामी विद्यानन्द जी। वह मेरी बात सुन ल उनका जो भी निर्णय होगा मुझे शिरोधार्य होगा। वह मुझे जो भी दण्ड देंगे मै उसे स्वीकार करूगा। इसके अतिरिक्त इस विवाद को समाप्त करने का कोई और रास्ता दिखाई नहीं दे रहा। मै यह समझता हू कि आर्य समाज को बचाने के लिए भ्रष्टाचार और तानाशाही इन दो के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ होना चाहिए। जहा तक मेरा बस चलेगा मै इसे चलाऊगा उसका परिणाम चाहे कुछ भी हो।

—वीरेन्द्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पंच सूत्री कार्यक्रम

लेखक—श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेद मन्दिर बरेली (उ प्र)

यह हम उस समय का वर्णन कर रहे है, जब काग्रेस का जन्म भी नही हुआ था और महात्मा गाधी उस समय कही पढ रहे होगे। स्वामी जी ने इस विशाल भारत की आजादी के लिये अकेले ही सघर्ष प्रारम्भ किया। स्वामी जी के समय मे भारत वर्ष पजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान, बर्मा आदि तक एक महान् देश था। इतने महान् देश की आजादी के लिये स्वामी जी ने जो प्रोग्राम बनाया, वह इस प्रकार था :—

1 स्वामी जी का कहना था कि जब तक इतने बडे देश मे एक धर्म, एक भाषा, एक सस्कृति नही होगी तब तक शान्ति नही हो सकती। इस समय देख लो धर्म के नाम पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के टुकडे किये और भाषा ने बगला देश और पाकिस्तान के टुकडे किये तथा सस्कृति ने बर्मा को अलग किया और आतकवाद फैलाया। अत: शान्ति के लिय एक धर्म एक भाषा, एक सस्कृति का होना आवश्यक है।

न यावत् भाषैका न च मनुजधर्मोऽप्य विषय.
विरोधे सस्कृत्या: न हि भवति सशान्ति कथमपि।
दयानन्दस्येव कथनमिह देशे न हि श्रुतम्।
गतोऽह् यार्यावर्तो मुनिऋषिगृह पञ्चशकलान ॥

अर्थ .—जब तक भाषा एक नही होगी, मनुष्य का समान धर्म नही होगा। समान सस्कृति नही होगी तब तक देश मे शान्ति नही होगी। महर्षि दयानन्द का यह कहना किसी ने नही सुना, अत: देश पाच टुकडो मे विभक्त हो गया।

2 दूसरा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि :—

विभिन्नाया भाषा दिशि दिशि प्रचार परिगता।
कुरु ज्ञान तासा नु ऋषियत प्रचाराय विबुध।
तथा देशे देशे भ्रमत परितो विश्वमधुना।
तदार्य सामाज्य जगति प्रार्थित स्यात् द्रुततरम् ॥

अर्थ :—नाना देशो मे जो भाषाये है—उनका ज्ञान प्राप्त करो और उन भाषाओ मे उन देशो मे जाकर ऋषि के सिद्धान्तो को फैलाओ। इससे ससार के अन्दर जो आर्यों का साम्राज्य है, वह जल्दी हो जाएगा। शायद यह कार्य स्वामी जी ने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के सुपुर्द किया था।

3, तीसरा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि:—

समस्त साहित्य मुनिऋषिकृत भाष्यमिषतो,
विनाश सम्प्राप्त श्रुतिरपि च धूर्त्तैर्कलुषिता।
पुनर्भाष्य कृत्वा कुरु सकलग्रन्थान् ऋषिमतान्।
दयानन्द स्वामी कथयति च सर्वान् बुधवरान् ॥

अर्थ :—समस्त वैदिक साहित्य भाष्य करके नाश को प्राप्त कर दिया गया है और धूर्तों ने उल्टे भाष्य करके वेदो को भी कलुषित कर दिया है। अत समस्त ग्रन्थो का फिर से भाष्य करो जिससे वे ऋषियो के सिद्धान्तो के अनुसार ठीक प्रतीत हो—यह स्वामी दयानन्द सब विद्वानो से कह रहे है। इस बात मे

स्वामी जी ने अपना सहयोगी भीमसेन शर्मा इटावा वालो को बनाया।

4 चौथा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि —

या इक्ष्वाकूवस्या रविशशिकुला राजतनया.
विराजन्ते लोके कुरुत प्रणय तैर्सविनयम्।
अमीषा पूर्वेषा स्मृतिपथ मुपयानमधुना।
यश पु ज पुण्य प्रार्थततय ऐतिह्य जगति ॥

अर्थ —ससार के प्रथम राजा इक्ष्वाकु की परम्परा मे जो सूर्यवशी और चन्द्रवशी राजा हुए है—उनकी सन्तान जो इस समय विराजमान है, उनके साथ विनय पूर्वक प्रेम करके सम्बन्ध स्थापित करो। ऐतिहासिक जगत् मे उनके पूर्वजो का जो यश है, वह उन्हे याद दिलाओ। इस काम को स्वामी जी स्वय कर रहे थे।

5 स्वामी जी का पाचवा प्रोग्राम था —

न भाषा विज्ञान न च भुवि कार्लमाक्र्स सरणि:
न हितार्थं लोकाना नहि नहि डार्विनयतमपि।
न चास्थ्नोर्विज्ञान जन जन विवादाय हि च तत्।
कुविज्ञान्येनानतिवितथवादान् परिहृत ॥

अर्थ :—भाषा विज्ञान, कार्ल मार्क्स की थ्योरी, डार्विन का मत, अस्थि विज्ञान—ये सब ससार के हित के लिये नही है। ये कुविज्ञान है, इनको समाप्त करो।

तदा सर्वं कर्तु स्वयमपि प्रवृत्तो मह ऋषि
तथा भीमादीन्यानपि स: कृतवान् कार्यानिश्न।न्।
जगन्नाथो धूर्तो रत्नगहिता चापि गणिका।
महर्षे: स्वर्याने कुटिनमनियु: पश्य सफना ॥

अर्थ —इन सब पच सूत्री प्रोग्राम को स्वामी जी ने स्वय करना प्रारम्भ किया, भीमसेन शर्मा आदि को कार्य पर लगाया किन्तु धूर्त जगन्नाथ, अलीमर्दन खा और वेश्या नन्ही जान के कारण कुटिलमतियो की चाले सफल हुई और स्वामी जी स्वर्ग सिधारे।

महर्षोस्वर्गयंते दिशि दिशि प्रयातास्तदनुगा.
गता ईश्वर अल्लायत अथ च भीता अमनगा:।
तटस्था सजाता ऋषिवरसुभक्ता. नृपतय:
तथा भाईभीम प्रभृतय: इतो निर्गतिपर: ॥

अर्थ :—महर्षि के स्वर्ग सिधारने के बाद उनके अनुयायी भिन्न-भिन्न दिशाओ मे चले गये। कुछ ईश्वर, अल्ला मन (काग्रेस) मे प्रविष्ट हो गये। कुछ डरे हुए लोग अमनसभा मे चले गए ऋषि की भक्ति करने वाले राजा लोग तटस्थ हो गए तथा भाई परमानन्द जी तथा भीमसेन शर्मा आदि आर्य समाज से निष्कासित कर दिए गए।

समाप्त तद् सर्वं यदपि ऋषिणा भाषित चर।
समाज श्चार्याणा अनुकृत्त ईशोमतमयम्।
समाजे सर्वस्मिन्नुपकृति पर: कार्यानिवह:।
समाजो चर्चो वा न हि किमपि भिन्न द्वयमपि ॥

अर्थ :—ऋषि ने जो भी कहा था, वह सब समाप्त हो गया। आर्यो के समाज ने ईसाईयत का अनुकरण किया। समाज मे सब जगह उपकार परक कार्य किये जाने लगे। समाज मे और चर्च मे कुछ भी अन्तर शेष नही रहा।

क्वचित् डिस्पेंसर्या. क्वचिदपि रीडिंग गृहमपि।
समाचार सर्वं पठतु जनता दैनिकमपि।
क्वचित् सिलाई स्कूल क्वचिदपि मसाला गृहमपि।
अनाथाना स्त्रीणा कथमपि च स्यादर्जनमपि ॥

अर्थ .—(समाजो मे) कही डिस्पैंसरिया खुल गई, कही रीडिंग रूम खोले गये, कही जनता के पढने के लिए दैनिक समाचार पत्रो का प्रबन्ध किया गया। कही (आर्य समाज मन्दिर रोड, कानपुर) सिलाई स्कूल खोले गये, कही (आर्य समाज करोल बाग, दिल्ली) मसाला गृह खोले गये, कही अनाथ विधवा स्त्रियो के लिये धनार्जन की व्यवस्था की गई।

विवाहार्थं केचित् गृहमपि च निर्मान्ति बहव:
समस्तान् सभारान् ददति वरयात्रार्थमपि च ते।
क्वचित् रोटी वस्त्र वितरितमनाथालय इव।
यथा भूकम्पादि जलप्रवहणादि क्वचिदपि ॥

अर्थ :—कुछ लोग विवाह सम्पादन के लिए अनन्द घर बनवाते है, बरात के लिए उन्हे अन्य सभी

सामान देते हैं। (कलकत्ता) कभी-कभी भूकम्प या बाढ आने पर अनाथालय की तरह रोटी और वस्त्रो का वितरण भी करते हैं।

क्वचिच्चैम्बूलैंस शकटमपि दृष्ट धनवता।
समाजाना द्वारे स्थितमिति विजानन्तु सुधिय:।
क्वचित् कन्याशाला क्वचिदपि च शाला शिशुकृते।
दयानन्दो मार्कैट क्वचिदपि दयानन्द सरणि॰॥

अर्थ :—बुद्धिमान जनो को यह भी ज्ञात हो कि कही धनवानो की एम्बुलैंस गाडी भी समाज (आर्य समाज कोर्ट तथा सान्ताक्रूज बम्बई) के दरवाजे पर खडी दिखाई देती है। कही लडकियो की पाठशाला दिखाई देती है और कही बच्चो के स्कूल, कही दयानन्द मार्केट और कही दयानन्द मार्ग दृष्टिगोचर होता है।

क्वचित् एम पी लीला क्वचिदपि सत्याग्रह विधि:
प्रशसाग्रन्था वा क्वचिदपि चित्र प्रियतरम्।
क्वचित् टकारायाः प्रममयतयोयात्रिनिवहः।
पवित्र स्व कर्तु ऋषि जनन भूमौप्रचलनात्॥

अर्थ :—कही एम पी बनने की प्रक्रिया, कही किसी प्रकार का सत्याग्रह किया जाता है। कही अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किये जाते है और कही सुन्दर फोटो खीचे जाते है। कही यात्रियो के समूह अपने आपको पवित्र करने के लिये ऋषि की जन्मभूमि टकारा जाने का विचार करते है।

ऋषिकार्यं परित्यज्य कार्यन्तरेष्वभिरता:।
देशघातकरा ह्येते दयानन्दानुयायिन:॥

अर्थ :—दयानन्द के ये अनुयायी ऋषि के कार्य को छोड कर अन्य कार्यों मे सलग्न हो गये है, ये देश का नाश कर रहे हैं।

विशालोदेशोऽय सुमतिरहितैर्नीतिविरतै:
कृत: खण्ड खण्ड तदपि न शान्ता: विमतय
अह शके नून पुनरपि न भूमाच्छकलित:।
क्व कैलाशोऽस्माक क्व प्रियतरसिंधप्रभृतय:॥

अर्थ :—इस देश को नीति रहित बुद्धि विहीन इन लोगो ने टुकडे-टुकडे कर दिया है, फिर भी ये बुद्धिजन शान्त नही हुए है। मुझे आशका है कि पुन: देश के और अधिक टुकडे न कर दिये जाए। न अब कैलाश अपना है न प्यारा सिन्ध, न बिलोचिस्तान, न सीमा प्रान्त और न बर्मा अपना है।

(क्रमश:)

संक्षिप्त समाचार

● महर्षि दयानन्द मठ बन मोहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव 26-10-87 से 1-11-87 तक सम्पन्न होगा। स्वामी सत्यानन्द परिव्राजक हरिद्वार, श्री स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा, सन्त श्याम जी पराशर, ब्र कलावती जी, श्रीमती लक्ष्मी कान्ता चावला आदि विदुषी व विद्वान् पधार रहे है।

● दयानन्द मठ चम्बा का तृतीय वार्षिकोत्सव 6-7-8 नवम्बर को होगा। प्रथम नवम्बर से यजुर्वेद परायण यज्ञ आरम्भ। धर्म प्रेमी सज्जन चम्बा पधारे।

● भिन्न-2 आर्य समाजो तपा, भठिण्डा, दीनानगर सुजानपुर, अबोहर, सगरूर, और दूसरी कई आर्य समाज मे शोक सभाए करके स्व मास्टर पूर्णचन्द जी सभा मुख्तारआम को श्रद्धाञ्जलि भेट की गई।

● स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना मे, दशहरे का पर्व समारोह से मनाया गया। 18से 25 अक्तूबर तक वेद सप्ताह दीपावली पर्व मनाया जा रहा है।

● आर्य समाज भठिण्डा, आर्य समाज गढा जालन्धर, आर्य समाज जालन्धर छावनी, आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर और आर्य समाज दीनानगर मे ऋषि निर्वाण दिवस बडे समारोह स मनाया जा रहा है।

● आर्य समाज नगल टाऊनशिप (रोपड) के लिए एक सुयोग्य पुरोहित चाहिए इच्छुक पत्र व्यवहार करे।

दीपावली

लेखक—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

अविद्या का अन्धकार बराबर, छाया भारत देश रहा ।
उस तमसा मे निशि के राजा, करते चलते क्लेश रहा ॥
विद्या की उषा नही पनपी, नहिं वैदिक रवि प्रकटाया ।
धर्म, कर्म, सद विद्या सुरपदा, लोप हुई जग भरमाया ॥

वेद प्रकाश हीन सब भारत, जिसमे पोपा-पाखण्डी ।
भरमादी थी सारी जग को, गुरुडमियो की लगी मण्डी ॥
वर्ण-व्यवस्था बिगड चली सब, मानव-मानव ठुकराये ।
नियम-धर्म सब भिन्न-भिन्न हो, गुरुडमी सब कर पाये ॥

अस्तित्व न रह पाये थे, पाहन ईश्वर कर बैठे ।
कैसे ? वैदिक-ज्ञान प्राप्त हो, झूठे मद मे थे ऐठे ॥
घोर अन्याय अन्धेरा घर-घर, कैसे ? रही हे दिवाली ।
कवल-दीप जगा कर बैठे, वही दिवानी उज्जाली ॥

उधर चली तमकार रूप धर, घर-घर धसगी आ करके ।
उधर दयानन्द दिव्य दीप ले, खडा हुआ था आ करके ॥
अन्धकार मे चमत्कार था, योग दीप की ज्योती थी ।
दिखलाई ब्रह्मचारी-योगी, तेज रूप-सी होती थी ॥

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" इस तरफ आना सकेत किया ।
तब समझेगे आई दिवाली, दीप दिखाये सन्देश दिया ।.
वेद मार्तण्ड, जब से उगा, तब से अविद्या भाग चली ।
घर-घर "आर्य ज्योतिरग्रा: ये अनुपम ऐसी ज्योति चली ॥

क्षणिक दीप सी, ज्योति जिसमे, दीवाली कर आन रखी ।
वही अन्धेरा जिसमे सुखदा, गौरवता भर मान रखी ॥
लाखो कोशो दूर पडे थे, जैसा बन-मन मान लिया ।
उच्च वर्ण की ठेकेदारी, झूठा मन अभिमान लिया ॥

वेदोपदेश न माना जिसमे, मन-माने बन पथवादी ।
भ्रम-कम-भ्रान्ति अविद्या की, खूब बढा दी थी व्याधी ॥
अन्तरिक्ष लोप हुई है सारी, लौट कभी नही आएगी ।
दयानन्द ने दीप जलाया, बुझ कभी नही पावेगी ॥

वैदिक दीप, ज्ले घर-घर मे, अभी बराबर हो प्रकाश ।
तभी दिवाली समझे साची, घर-घर विद्या लक्ष्मी वास ॥
करे नमस्ते मिले परस्पर, विद्या-धरो को देवे माण ।
आर्योपदेश, सुने जिन द्वारा, मिले सदा सब सुखदा ज्ञान ॥

शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली

श्रीमद्दयानन्द निर्वाण : कार्तिक वदि अमावस्या

शारदीय शुभ शस्य सुहाई, अद्भुत सुन्दरता सरसाई।
मूंग, माष, तिल, शालि चुलाई, जन मन भरते मोद-बधाई।
लिपे पुते घर हैं छवि छाये, दीपावली की ज्योति जगमगाये।
नवान्नेष्टि सज्जन करते हैं, शुद्ध गन्ध घर-घर भरते हैं।
थल-थल मे रम रही रमा है, सदन सदन सुसमृद्धि सना है।

(श्री सिद्धगोपाल कविरत्न)

आनन्द सुधासार दया का पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया॥
"शंकर" दिया बुझाए दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल बदन मे मिला गया॥

(कविवर नाथूराम 'शंकर' कृत)

आज शरद् ऋतु की समाप्ति मे केवल पन्द्रह दिन शेष हैं। पन्द्रह दिन पीछे सर्वत्र हेमन्त ऋतु का राज्य होगा और शीत का शासन सबको स्वीकार करना होगा। वर्षा के बीतने और शीत लगने पर जनता को कुछ विशेष समारम्भ (तैयारिया) करने पडते है। वर्षा ऋतु मे वृष्टिबाहुल्य से वायु मण्डल तथा घर बार विकृत, मलिन और दुर्गन्धित हो जाते है। बरसात के अन्त मे उनकी सशुद्धि और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। वायु मण्डल का सशोधन हवन यज्ञ से होता है और घर बार की स्वच्छता लिपाई पुताई से की जाती है। अब ही भावी शीत निवारण के लिए गरम वस्त्रो का प्रबन्ध करना होता है। इसी समय सावनी की फसल का आगमन होता है। किसान के आनन्द की सीमा नही है। उसका घर अन्न धान, माष, मूग, बाजरा, तिल और कपास से भरपूर होने को है। इस अवसर पर श्रौत स्मार्त सूत्रो मे गोभिलगृह्य सूत्र, तृतीय प्रपाठक, सप्तम खण्ड, 7—24, सूत्र, पारस्करगृह्य सूत्र द्वितीय काड 17वी कण्डिका, 1—18 सूत्र, आपस्तम्बीय गृह्य सूत्र 19 खण्ड, मानव गृह्य सूत्र तृतीय खण्ड तथा मनुस्मृति के—

सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तयर्बन्ते द्विजोऽध्वरैः।

अध्याय 4 श्लोक 26॥

इस पद्य मे नवसस्येष्टि वा नवान्नेष्टि (नव=नवीन—सस्य=फसल वा खेती—इष्टि=यज्ञ,अर्थात् नवीन फसल के अन्न का यज्ञ) करने का विधान है। इन सब कार्यो के लिए पर्व कार्तिक वदि अमावस्या तिथि को प्राचीन काल से नियत चला आता है उस को दीपावली भी कहते है। वैसे तो प्रत्येक अमावस्या को दर्शेष्टि यज्ञ कर्मकाड ग्रन्थो मे विहित हैं, किन्तु कार्तिक अमावस्या को दर्शेष्टि और नवसस्येष्टि दोनो इष्टियो के विधान है, क्योकि उनसे इस अवसर पर वर्षा ऋतु मे विकृत वातावर्त की विशेष सशुद्धि अभीष्ट है। वर्षा के अवसान पर दलदलो के सडने मच्छरो के आधिक्य तथा आर्द्रता (नमी) के कारण ऋतु ज्वर (मौसमी मलेरिया बुखार) आदि रोग बहुत फैलते हैं। इसलिए इस ऋतु के शारदीय पूर्णिमा, विजय दशमी और दीपावली इन तीन पर्वो के होम, यज्ञो से उन रोगो का अनागत प्रतिकार भी अभिप्रेत है।

जैसे शारदीय आश्विन पूर्णिमा को चादनी वर्ष भर की बारह पौर्णमासियो मे सर्वोत्कृष्ट होती है, उसी प्रकार कार्तिकीय अमावस्य का अन्धकार वर्ष की बारह अमावस्याओं मे सघनतम होता है। इस अमावस्या के अन्धकार पर मृच्छकटिककार शूद्रक कवि की निम्न-लिखित उक्ति पूरी उतरती है।

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि, वर्षतीवाऽञ्जन नभ ।

असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलता गता ॥

अर्थ—अन्धियारी अगो पर पुत सी गई है, आकाश गाजन सा बरसा रहा है, दृष्टि शक्ति इस प्रकार निष्फल (बेकार) हो गई है, जिस प्रकार असज्जन की सेवा व्यर्थ जाती है।

ऐसी घनी अन्धियारी रात्रि मे, नवीन सावनी सस्य के आगमन से प्रमुदित कृषि प्रधान भारत वर्ष मे भी वर्ष की प्रथम उक्त सस्य (फसल) के स्वागत के लिए दीपमाला का उत्सव मनाया जाता है। यह दीपमाला भी गृहो की वर्षाकालीन आर्द्रता से उनके सशोधन म सहायक होती है।

आज राज प्रासाद से लेकर रककुटीर तक की शोभा अपूर्व है। प्रत्येक नगर और ग्राम का प्रत्येक आर्य घर परिमार्जन और सुधा (कली और चूना) वा पिडोल मृतिका के लेपन से श्वेत रूप धारण किए हुए है। प्रत्येक अट्टालिका, आगन और कक्ष्या (कोठरी) मे दीप पक्ति जगमगा रही है। धनियो के बहुमूल्य काचमय प्रकाशोपकरणो (झाड फानूस आदि शीशे आलाय) से लेकर दीनो के दीवलो (मृण्मय तेल के छोटे-छोटे दीपको) तक की कृत्रिम ज्योति प्रकृति के प्रगाढान्धकार से स्पर्धा (होडी होडी) कर रही है। पुरुषोत्तम प्रिया के कृपापात्रो के भवन नाना व्यञ्जनो और विविध मिष्ठानो की सरस सुगन्ध से परिपूर्ण है तो लक्ष्मी के कृपाकटाक्ष से वचित दीनालय धान्य की खीलो से ही सन्तुष्ट है। सक्षेपत. आज प्रत्येक आर्य परिवार ने अपने गृह को स्ववित्तानुसार मनोहर बनाने का भरपूर प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि चिरकाल से प्राय: प्रत्येक आर्य सन्तान के हृदय मे यह विश्वास बद्धमूल है कि आज की महारात्रि मे महालक्ष्मी (धन की देवी) भ्रमण करते निकलती है और जिस सदन को सबसे सुन्दर पाती है, उसी को वर्ष भर के लिए अपना आवास बना लेती है—उसमे वर्ष भर तक समृद्धि (धनधान्य) का वास रहता है। इस विश्वास का मूल स्रोत यही होगा कि मानस शास्त्र के तत्ववेत्ता भारतवासी शोभा और समृति तथा दारिद्र्य और दीनता के अन्योन्याश्रय वा समवाय-सम्बन्ध से पूर्ण परिचित थे। वे भली प्रकार जानते थे कि शोभनीय स्थानो मे ही समृद्धि रहती है, अथवा समृद्धि के स्थान मे शोभा स्वयमेव आन विराजती है। इसके विपरीत दारिद्र्य वा मालिन्य मे दीनता का वास रहता है वा दीनता की विद्यमानता मे दारिद्र्य आप ही आ जाता है। वस्तुत: लक्ष्मी देवी शोभा और समृद्धि के कविकल्पित रूपक की ही एक मूर्ति है। आज वर्ष के प्रथम शस्य श्रावणी शस्य के शुभागमन के अवसर पर गृहो को शोभा और समृद्धि के आवास योग्य बनाना स्वाभाविक और समुचित ही था। यही लक्ष्मी की पूजा थी, क्योकि पूजा का वास्तविक भाव योग्य को योग्य स्थान प्रदान ही है। आज नव-शस्य के शुभागमनावसर पर शोभा और समृद्धि को उसको योग्य स्थान प्रदान शोभा को समुचित स्थान और अवसर पर स्थापना ही उसकी वास्तविक पूजा है। किन्तु तत्व के परित्याग और रूढि की आरूढता के युग पौराणिक काल मे लक्ष्मी पूजा का यह तत्वार्थ अल्पदृष्टि से तिरोहित हो गया और उसके स्थान मे उल्लूकवाहनी की षोडशोपचार पूजा प्रचलित हो गई उसके वाहन (मूढता के साक्षात् स्वरूप उल्लू महाराज अपनी उपास्य देवी के पदार्पण की प्रतीक्षा मे दीवाली को सारी रात जागरण (रतजगा) करते है। प्राय बुद्धिविशारद भक्त शिरोमणि तो निद्रा के अप-सरण के लिए रात्रि भर द्यूत क्रीडा मे रत रहते है मन.कल्पित लक्ष्मी की प्रतीक्षा करते हुए भी साक्षात् लक्ष्मी (धन सम्पत्ति) को वे द्यूत द्वारा दुत्कारते है—

तिरस्कार पूर्वक उस को घर से धक्का देते हैं— "अर्मा दीव्य, इस अथर्ववेद की कल्याणी वाणी का प्रत्यक्ष प्रतिवाद वा अनादर करते हैं।

आजकल के कलि काल में वैदिक कालीन पर्व शारदीय नवसस्येष्टि तथा दर्शेष्टि का तो सर्वथा लोप हो गया है और केवल उसके बाह्य गृहपरिशोधन, परिमार्जन, दीपक पंक्ति (दीपावली—दीपमाला) प्रकाशन, मिष्टान्न तथा खाजा वितरण और घोर अविद्यान्धकार काल में प्रचारित द्यूत, दुराचार आदि उसके आनुषंगिक उपचार शेष रह गये हैं। नवान्नेष्टि के चिन्ह होम तक की परिपाटी प्राय: उठ गई है। शायद ही किन्हीं बिरले सौभाग्यशाली गृहो मे आज की रात्रि मे होम होता होगा। हां, कहीं-2 गुग्गुल की धूप जलाने की रीति अवश्य प्रचलित है जो प्रशंसनीय है।

दीपावली के विषय मे भी विजयादशमी के समान यह एक कल्पित कथा चल पडी है, कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र बनवास से लौट कर अपनी राजधानी अयोध्या मे वापिस आए थे और उनकी प्रजा ने उस हर्षोत्सव के उपलक्ष्य मे आज दीपावली की थी। उसका अनुकरण वर्तमान दीपावली चली आती है। विजयदशमी के विवरण मे इस प्रसंग के उल्लिखित ऊहापोह से भले प्रकार प्रकट होता है कि यह विचार भी सर्वथा कपोलकल्पित है, क्योंकि श्री रावणवध और लंका विजयान्तर के तत्काल ही अयोध्या लौट आये थे। और जब उक्त विवेचनानुसार रावणवध फाल्गुण वा वैशाख मे हुआ था तो श्री रामचन्द्र जी का अयोध्याप्रत्यागमन कार्तिक मास मे किस प्रकार सम्भव है। प्रतीत होता है कि दीपावली की दीपमाला मे प्रकाश से श्री रामचन्द्र के अयोध्याप्रत्यागमन के हर्षोत्सव की कल्पना कुब्ज मस्तिष्क मे हुई हो और उसी से यह दन्तकथा सर्वसाधारण मे प्रचलित हो गई हो। वैदिक धर्मावलम्बी आर्य सामाजिक महाशयो का परम कर्त्तव्य है कि वहां वे इस प्रकार के ऐतिहासिक तत्त्व को शिरोधार्य कर कपोलकल्पनाओ का निरसन करें। वहां शारदीय नवसस्येष्टि के वैदिक पर्व का प्रत्यावर्तन करके, उसके गृह संशोधन और दीपावली प्रकाशन आदि अनुषंगो के सहित आगे पद्धति प्रदर्शित प्रकारानुसार उसके स्वरूप का आर्य जनता मे प्रचार करें।

जैसा कि पर्वप्रादुर्भाव परिचय के प्रकरण मे विवेचना की गई है, आर्यों का एक-एक पर्व किसी विशेष कृत्य के लिए उद्दिष्ट है और इस प्रकार उसका सम्बन्ध किसी न किसी एक विशेष वर्ग के साथ स्थापित है। जिस प्रकार वैदिक धर्म की चातुर्वर्ण्य और चतुराश्रम-व्यवस्था चराचर जगत मे व्याप्त है, उसकी व्याप्ति केवल मनुष्यमात्र मे ही नहीं है, प्रत्युत तिर्यग्योनियो और उद्भिजो मे भी गुणकर्मानुसार वर्ण और आश्रम विद्यमान है-पशुओ मे गौ और वनस्पतियो मे अश्वत्थ (पीपल) ब्राह्मण वर्ग के अंतर्गत है। इस विषय का यहां अधिकार विस्तार, प्रकरणान्तर प्रवेश का दोषावह होगा—इसलिए संकेतमात्र इतना ही पर्याप्त है—इसी प्रकार आर्यों के पर्वो मे भी चातुर्वर्ण्य व्यवस्था पाई जाती है। श्रावणी उपाकर्म, स्वाध्याय से सम्बद्ध होने के कारण, ब्राह्मण पर्व है लोक मे भी श्रावणी(सलूनी)ब्राह्मण का पर्व कहलाती है। विजयादशमी क्षत्रियो का दिग्विजय यात्रा और क्षात्रधर्म के विकास से सम्बन्ध रखने के कारण क्षत्रिय पर्व कहते है, शारदीय नवसस्येष्टि वा दीवाली के पर्व का विशेष सम्बन्ध वैश्य कर्म (कृषि, वाणिज्य और उनकी अधिष्ठात्री समृद्धि की देवी लक्ष्मी से है, इसलिए दीवाली वैश्य पर्व है और लोग भी इसको वैश्यो का पर्व मानते है। शूद्र—पर्व होली का वर्णन उसके प्रकरण मे यथास्थान होगा। दीपावली के अवसर पर, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है, नवीन सावनी-सस्य के अन्न से होम होता है। इसी अवसर पर व्यवसायी जन अपने बही खातो का नवीन वर्ष आरम्भ करते हैं। बाजार की दुकानो पर नए बही खाते दीपमाला

से ही बदल जाते हैं। यह सब बातें इस पर्व का वैश्यत्व पूर्णरूपेण स्थापित करती है। परन्तु जिस प्रकार चारों वर्ण और उनके गुण कर्म मुख्यत: पृथक्-पृथक् होते हुए भी, गौण रूप से एक दूसरे के गुण कर्मों का समावेश चारों वर्णों में रहता है—ब्राह्मण वर्ण की सम्पत्ति स्वाध्याय, क्षत्रिय वर्ण की शूरता, वैश्य की समृद्धि और शूद्र का सेवा धर्म न्यूनाधिक चारों वर्णों के पुरुषों में पाया जाता है—उसी प्रकार हमारे पर्व भी विशेष वर्ग से सम्बन्ध रखते हुए भी सर्व साधारण के सम्मिलित (सांझे के) पर्व भी हैं।

ऋषि निर्वाण दिवस

किन्तु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्व एक महा घटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी के सायंकाल विक्रमी सं. 1942 तदनुसार 30 अक्तूबर सन् 1983 ई. मंगलवार को वीर विक्रम की 20 वी शताब्दि को अद्वितीय वेदोद्धारक और वर्तमान आर्य समाज के संस्थापक तथा आचार्य महर्षि दयानन्द की उज्ज्वल आत्मा ने इस नश्वर शरीर का परित्याग करके जगज्जननी के क्रोड में आश्रयण का आनन्द प्राप्त किया था। महापुरुषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोक जनक और रुलाने वाला नहीं होता। उनका प्रादुर्भाव और अन्तर्धान दोनों ही लोककल्याण और आनन्द प्रदान के लिए होते हैं। महापुरुषों का इस लोक में आगमन तो लोकाभ्युदय के लिए प्रत्यक्ष ही है। किन्तु उनका इहलोक लीला संवरण भी आनन्द का हेतु होता है। वे परोपकार में अपने प्राणों को अर्पण करते हैं। संसार के सुख के लिए अपने शरीर की बलि देते हैं, इसलिये जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्दानुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ देहोत्सर्ग का उत्तम आदर्श स्थापित करके, जनता में अनुकरण, उदाहरण तथा सत्सम्प्रदाय का प्रवर्तन और सुख का संयोजन करता है। इस पंच भौतिक शरीर को त्यागते हुए उनकी आत्मा स्वयं भी सन्तोष और आनन्द लाभ करती है। सन्तोष इस लिए कि वे अपने इस लोक में आने का उद्देश्य पूर्ण करते हुए अपने इस लोक के जीवन को परोपकार में विसर्जन कर रहे हैं और आनन्द इस लिये कि उनका जीवात्मा प्राकृतिक बन्धनों से मोक्ष पाकर परम पिता का संसर्ग व संयोग प्राप्त कर रहा है और साथ ही अपने प्रभु की इच्छा को पूर्ण कर रहा है। "प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो।" महर्षि दयानन्द के अन्तिम शब्द यही थे। किसी उर्दू कवि ने कहा है—

"राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।"

इसी लिए वैदिक धर्मावलम्बी आर्यों में मोहम्मदियों के समान महापुरुषों के अन्तर्धान की स्मारक तिथियों पर शोकातुर होने व रोने पीटने की रीति नहीं है, प्रत्युत इन अवसरों पर उनकी गुणावली गाकर आत्मा मे आनन्द का संचार किया जाता है। सिक्खों, कबीरपन्थियों, दादूपन्थियों आदि सनातनधर्मी आर्य सन्तान (हिन्दुओं) के अन्य सम्प्रदायो में भी अपने धर्म संस्थापक गुरुओं के चोला छोड़ने के दिन भण्डारा रचाने की रीति है जिसमें उनके शब्द कीर्तन करने और कड़ाह प्रसाद बांटने का आनन्द मनाया जाता है और शोक लेशमात्र भी नहीं होता। फलत: आर्य जाति में शोकप्रदर्शनार्थ कोई भी पर्व नहीं है, न ही शोक प्रदर्शन में किसी पर्वता (उत्सवता) का सम्भव है और अतएव मृत्यूत्सव, शोकोत्सव व शोकपर्व पद ही असंगत और असम्बद्ध हैं। आर्यों के यहां किसी महात्मा के भौतिक देह त्याग के दिन की पुण्य तिथि को तिथि(पवित्र तिथि) निर्वाण दिन व अन्तर्धान दिवस कहा जाता है।

अत: आज महर्षि दयानन्द के गुणानुवाद का अवसर उपस्थित है। महर्षि दयानन्द के आर्य जनता पर इतने असंख्य और अनन्त उपकार हैं कि भावुक क्षुद्र लेखकों की निर्बल लेखनी उनके लिखने में असमर्थ है। जिस प्रकार समुद्र की विस्तृत बालुका में असंख्य और अनन्त कण होते हैं और जिस प्रकार दिनकर की किरणावली की गणना नहीं हो सकती उसी प्रकार महापुरुष की भी गुणावली गणनातीत और महिमा

अप्रमेय होती है। विचारक उस पर विचार और मनन करते रहते हैं। कवि उसका कीर्तन करते रहते हैं। गायक उसके गान से स्वरसना को रसवती और पवित्र करते रहते हैं और ससारी जन उनसे शिक्षा ग्रहण करके अपना जन्म सुधारते रहते है। सच पूछिये तो सस्मृति सागर मे महात्माओ की चरितावली ही तरणी है और उनके आदर्श कर्म ही ज्योति स्तम्भ हैं, जो भूले भटके बटोहियो को मार्ग दिखलाते और पार लगाते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की जीवनी न जाने कितने कवीश्वरो के वाग्विलास का विषय बनी है। सस्कृत और हिन्दी काव्यो का प्रचुर भाग भी रामचन्द्र के गुणानुवाद से ही व्याप्त है। रामकथा ने न जाने कितने पथिको को सत्पथ दिखलाया है और न जाने उसने कितने भक्तो को भक्ति रस मे आप्लावित किया है। योगिराज श्री कृष्ण का पवित्र चरित्र पचासो काव्यो, गानो और घर 2 की चर्चा का विषय बना हुआ है। उनकी भगवद गीता का कर्मयोग सहस्रो आलसियो और उदासियो को कर्म मार्ग मे प्रवृत्त करके कर्मण्य और कर्म वीर बना रहा है। भगवान तथागत के जीवन ने पचासो बौद्ध जातको को घेरा हुआ है और वह विविध जातियो के करोडो नर नारियो और राव रको को शान्तिप्रद बना है। कहा तक गिनाए, ससार की सिरमौर भारत वसुन्धरा तो ऐसे अनेक महात्माओ के गुणगान से गुञ्जायमान है।

ऊपर कहा जा चुका है कि आज हमारे लिये भी एक महात्मा के गुणगान से अपने कर्ण कुहरो को पवित्र करने और उससे शिक्षा ग्रहण करने का सुयोग पुनरपि प्राप्त है। आओ, आज आचार्य दयानन्द के पवित्र चरित्र की कुछ विशेषताओ पर विचार करके अपने समय का सदुपयोग करें।

आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द के जीवन पर विचार करते हुए एक विचारक की दृष्टि से कर्मयोगी के नानारूप जिनमे उस कर्मवीर ने अपनी सारी आयु व्यतीत कर दी, तिरोहित (ओझल) नही रह सकते। यहा हमारा अभिप्राय उनकी आद्यावस्था के उन मत परिवर्तनो से नही है, जो सत्य की गवेषणा मे उस जिज्ञासु व तत्वान्वेषी के विचारो मे समय समय पर होते रहे, प्रत्युत उनकी निश्चित कार्य पद्धति को ग्रहण कर चुकने और आर्य समाज की सस्था को स्थापित करके क्रमबद्ध कर्म क्षेत्र मे अवतीर्ण होने पर जिन विविध रूपो मे उस उपकारी ने जनता का उपकार किया है। (अन्य लेखो मे ऋषि के विचारो व कर्मों को पढें।)

(पर्व पद्धति से साभार)

ऋषि ने लिखा है ?

आर्यों की यह एक बात बडी उत्तम थी कि जिस सभा वा न्यायाधीश के सामने अन्याय हो, वह प्रजा का दोष नहीं मानते थे, किन्तु वह दोष सभाध्यक्ष सभासद् और न्यायाधीश का ही गिना जाता था। इसलिये वे ही लोग सत्य न्याय करने मे अत्यन्त पुरुषार्थ करते थे, कि जिससे आर्यावर्त्त के राज्य भर मे कभी अन्याय नहीं होता था। और जहा होता था वहा उन्हीं न्यायाधीशो को दोष देते थे। यही सब आर्यों का सिद्धान्त है। अर्थात् इन्हीं वेदादि शास्त्रो की रीति से आर्यों ने करोडो वर्ष राज्य किया है। इसमे कुछ भी सन्देह नहीं।

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

ऋषि चरणों में श्रद्धाँजलि

लेखक—श्री देवेन्द्र गुप्ता 342 बख्शी नगर, जम्मू

अमर लोक से आए दयानन्द अमृत पान कराने को।
भेद-भाव और छुआ-छूत के मिथ्या भ्रम मिटाने को।
पीड़ित मानवता के धरती पर कष्ट मिटाने को।
लोप हुई वेदों की विद्या को पुन: दर्शाने को।
ऋषियों के प्राचीन धर्म की गौरव गाथा गाने को।
आर्य जाति की डूबती नैय्या परले पार लगाने को।
बन्धन से पराधीन राष्ट्र को सत्वर मुक्त कराने को।
भारत से अज्ञान निशा की कालिमा मिटाने को।
वेद की परम पुनीत और पावन मधुर ऋचायें सुनाने को।
सत्य का करके अनावरण असत्य विचार मिटाने को।
जाति को सुमार्ग दिखा कर नैतिक शक्ति बढ़ाने को।
मिथ्यावाद आडम्बर और कुप्रथायें जग से मिटाने को।
दे के चुनौती विधर्मियो को सत्यार्थ प्रकाश बनाने को।
अत्याचार अनैतिक कृत्य और आततताईता मिटाने को।
ईश्वर की सर्वज्ञ स्वतन्त्र सत्ता का भास कराने को।
बुतों की पूजा से मानव को मुक्ति दिलाने को।
तर्क और युक्ति से बुद्धि परक बातें मनवाने को।
कौम परस्ती और मतान्धता की दीवारें गिराने को।
वेदो के विरुद्ध भाष्य कर आस्तिकता फैलाने को।
नारी जाति का मूल्यांकन कर मातृत्व दर्शाने को।
कलह क्लेश, अकरुणा, क्रंदन से जगजीवन बचाने को।
त्रस्त मानवता को त्राण दे विश्व बन्धुत्व बढाने को।
विष के स्वयं प्याले पी कर अमृत पान कराने को।
आये थे युग पुरुष दयानन्द भारत राष्ट्र जगाने को।
परम धैर्य के युगावतार दयानन्द तुम थे दया के सागर।
करुणा, मैत्री और अहिंसा भाव किए थे तुमने उजागर।
युगो-युगों तक स्मरण करेंगे दयानन्द तुम्हें जग के मानव।
तेरे ऋण से उऋण न होंगे आर्य जाति के भावी बालक।
कोटि-कोटि प्रणाम तुम्हें हो देव दयानन्द युग प्रवर्तक।

ऋषि दयानन्द के भक्त-
श्री केशवचन्द्र सेन

लेखक—डा. भवानीलाल जी भारतीय

स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आने वाले ब्रह्म समाज के नेताओं में केशवचन्द्र सेन का नाम सर्वो-परि उल्लेखनीय है। सेन महाशय का जन्म 19 नवम्बर 1838 को एक सम्पन्न बंगाली वैद्य परिवार में हुआ था। उनके पितामह रामकमल सेन बंगाल बैंक के दीवान थे। उनके पिता का नाम श्री मोहन सेन था। उनकी शिक्षा कलकत्ता के हिन्दू कालेज में हुई जहां रह कर उन्होंने विभिन्न विषयो का सारगर्भित अध्ययन किया। केशव ने शेक्सपियर, मिल्टन, कालाईल तथा इमर्सन जैसे विख्यात साहित्यकारों की रचनाओं का गम्भीर अनु-शीलन किया था। वे बंगला तथा अंग्रेजी के प्रगल्भ वक्ता थे।

प्रारम्भ से ही केशव के विचार प्रगतिगामी तथा उदार थे। इसी कारण वे शीघ्र ही ब्रह्म समाज के सम्पर्क में आये और उसके विधिवत् सदस्य बने। केशव ने ब्रह्म समाज की सदस्यता 1857 ई. में ग्रहण की। अंग्रेजी शिक्षा ने सेन महाशय को मूर्ति पूजा तथा अन्य प्रचलित धार्मिक अन्धविश्वासों से विमुख कर दिया था। उन्होंने अनुभव किया कि एक मात्र ब्राह्म सिद्धान्त ही उनकी धार्मिक एवं आध्यात्मिक जिज्ञासाओ को शान्त कर सकते है। नवयुवक केशवचन्द्र का ब्रह्म समाज में सोत्साह स्वागत हुआ और महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें समाज के प्रधानाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित किया।

केशवचन्द्र के विचारों में क्रान्ति एवं अग्रगामिता का तत्व प्रमुख था। वे सामाजिक सुधारों को दृढ़ता तथा द्रुत गति से प्रवर्तित किए जाने के इच्छुक थे। अन्तर्जा-तीय विवाहों को प्रोत्साहन तथा विधवा विवाह को अनुमति देने के साथ-साथ वे हिन्दू धर्म में स्वीकृत यज्ञोपवीत जैसे संस्कारों को निरुत्साहित करना चाहते थे। उनके विचारानुसार यज्ञोपवीत ब्राह्मणत्व का चिन्ह है जिससे जन्मना जाति की धारणा को बल मिलता है। इसके विप-रीत देवेन्द्रनाथ ठाकुर की धारणा थी कि सामाजिक सुधारों को लेकर ब्रह्म समाज को बहुत अधिक जल्दबाजी नही करनी चाहिए। वे ब्रह्म समाज को वेद एवं उप-निषद् अनुमोदित प्राचीन धर्म के प्रचारक आन्दोलन के रूप में ही चलाना चाहते थे तथा उग्र समाज सुधार के कार्यक्रमों से इस संस्था को पृथक् रखना ही उचित मानते थे। किन्तु केशव तथा उनके सहयोगी नवयुवा ब्राह्म वर्ग के आगे देवेन्द्रनाथ को भी हार माननी पड़ी। सेन महाशय के कहने में आकर उन्होंने यज्ञोपवीत धारी आचार्यो को ब्राह्म वेदी पर आकर उपदेश करने से मना कर दिया किन्तु कुछ समय पश्चात् जब उन्होंने यह अनु-भव किया कि यदि केशवचन्द्र को ब्रह्म समाज में मन-माने तथा क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की इजाजत दी गई तो यह संस्था व्यापक हिन्दू समाज से सर्वथा पृथक् होकर जन साधारण के सम्पर्क एवं सहानुभूति से वंचित हो जाएगी।

देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशव सेन के मतभेद इतने बढ़े कि सेन महाशय अपने साथियों एवं अनुयायिओं को लेकर ब्रह्म समाज के पुराने सगठन से पृथक् हो गए और उन्होंने भारत वर्षीय ब्रह्म समाज के नाम से एक पृथक् संस्था की नींव डाली। कालान्तर में कूच बिहार के अल्प वयस्क राजा से अपनी कन्या के विवाह को लेकर जब उन्हे एक बार पुनः अपने सहकर्मियों एवं सह-धर्मियों से संघर्ष करना पड़ा तो केशव ने अपने आपको ही प्रधा-नता देने वाले नव विधान समाज की स्थापना की और भारत वर्षीय ब्रह्मसमाज से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

1870 में केशव ने इंगलैंड की यात्रा की तथा 1872 में ब्राह्म विवाह कानून पास करवाया। केशव के ब्रह्म समाज की मुख्य धारा से पृथक् होने के प्रमुख कारण

भिन्न थे। (1) उग्र समाज सुधार के कार्यक्रमों का समर्थन। (2) ईसाई मत और विश्वास के प्रति अत्यधिक झुकाव (3) रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आकर अनेक पौराणिक विश्वासों को नव विधान समाज में प्रविष्ट कराना।

स्वामी दयानन्द की सेन महाशय से भेंट कलकत्ता में ही हुई। श्री हेमचन्द्र चक्रवर्ती की डायरी से विदित होता है कि स्वामी जी ने एक जनवरी 1873 को सेन महाशय को साथ लेकर कलकत्ता नगर के कुछ स्थानों का भ्रमण किया था। 3 जनवरी को वे सेन महाशय को साथ लेकर पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से भेंट करने उनके निवास पर गए। 4 जनवरी को राजेन्द्रनाथ मलिक के निवास स्थान पर आयोजित एक बैठक का संयोजन केशव ने किया जिसमें स्वामी जी के अतिरिक्त कलकत्ता के अनेक प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। इसमें कलकत्ता में वेद विद्यालय की स्थापना पर चर्चा हुई। 9 जनवरी को केशव के लिली काटेज (कोलू टोला) नामक निवास पर स्वामी जी का संस्कृत भाषा में एक प्रभावशाली प्रवचन हुआ। केशव ने जो स्वयं संस्कृत नहीं जानते थे, यह स्वीकार किया कि स्वामी जी की संस्कृत इतनी सरल थी कि उसे समझने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई।

स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने लिखा है कि जब केशव की स्वामी जी से प्रथम भेंट हुई तो सेन महाशय ने स्वपरिचय न देते हुए उनसे पूछा कि क्या कभी वे केशव बाबू से मिले भी हैं। इस पर स्वामी जी ने 'हां' कहा और यह पूछने पर कि उन्होंने यह कैसे जाना कि उनसे मिलने वाले स्वयं केशव ही हैं, स्वामीजी ने उत्तर दिया कि जो वार्तालाप उनसे हुआ है वह केशव जी से भिन्न अन्य किसी के द्वारा होना सम्भव ही नहीं था। इस घटना से स्वामी जी की पुरुष परीक्षा की शक्ति का आभास मिलता है। 23 मार्च 1873 को केशव ने स्वामी दयानन्द का एक व्याख्यान गोपालचन्द्र के निवास स्थान पर करवाया, जिसका विवरण इण्डियन मिर्र ने अपने 25 मार्च के अंक में प्रकाशित किया था।

स्वामी दयानन्द ने केशव बाबू का सत्परामर्श स्वीकार कर सभाओं में व्याख्यान देते समय शरीर पर पूर्ण वस्त्र धारण करने तथा प्रवचनों को हिन्दी में ही प्रस्तुत करने की बात स्वीकार कर ली थी। उन्होंने कलकत्ता में ही यह अनुभव किया था कि जब वे संस्कृत में भाषण देते हैं और पौराणिक विद्वान् उस व्याख्यान का लोक भाषा में श्रोताओं के सामार्थ अनुवाद करते हैं तो उस समय वक्ता के आशय के प्रतिकूल अनुवाद में कुछ का कुछ कह देते हैं। इससे लोगों को स्वामी जी के मूल मन्तव्यों के सम्बन्ध में भ्रान्ति हो जाती है। इस कठिनाई से बचने का उपाय यही है कि वे जन साधारण के समक्ष हिन्दी में ही बोलें ताकि सुनने वालों को उनके अभिप्राय को समझने में दुविधा न हो। इसी प्रकार जन समूह में जहां स्त्रियां भी उपस्थित होती हैं, कौपीन मात्र धारण किये दिगम्बर प्राय: स्थिति में आना उचित नहीं है। केशव ने स्वामी जी से एक बार कहा कि यदि वे अंग्रेजी जानते होते तो वे उन्हें इंगलैंड में अपने साथ ले जाते और दोनो मिल कर ब्रिटेन वासियों के समक्ष आर्य जाति का सन्देश उपस्थित करते। इस पर स्वामी जी ने अपना सटीक उत्तर देते हुए कहा कि उन्हें अंग्रेजी जानने का तो अधिक दु:ख नही है, किन्तु इस बात का खेद अवश्य है कि ब्रह्म समाज का तेजस्वी नेता केशवचन्द्र अपने देश और धर्म की भाषा संस्कृत से अनभिज्ञ है।

स्वामी दयानन्द से केशव की दूसरी बार भेंट 1877 के जनवरी मास में दिल्ली में हुई थी जब कि दिल्ली दरबार के अवसर पर उन्हीं के द्वारा आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन मे स्वामी जी के निमन्त्रण पर केशव बाबू ब्रह्म समाज के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। इस सम्मेलन की विस्तृत कार्यवाही का विवरण तो नहीं मिलता किन्तु पंजाब ब्रह्म समाज के नेता श्री नवीनचन्द्र राय के कथनानुसार वेद को धर्मान्दोलन तथा राष्ट्रीय जागरण का आधार बनाने के स्वामी जी के आग्रह को सम्मेलन में उपस्थित अन्य मतावलम्बियों ने स्वीकार नही किया था, फलत: इस आयोजन का कोई आशाप्रद परिणाम नही निकल सका। दोनों महापुरुषों के सिद्धांतों और मान्यताओं में अन्तर होने पर भी स्वामी दयानन्द और केशव बाबू पारस्परिक सौहार्द के सूत्र में बन्धे हुए थे। सेन महाशय स्वामी जी के देश प्रेम, समाज सुधार की भावना तथा धर्म संशोधन के कार्यों के अत्यन्त प्रशंसक थे। स्वामी जी के निधन के कुछ काल पश्चात् ही 8 जनवरी 1884 को केशवचन्द्र सेन का कलकत्ता में निधन हो गया।

महर्षि के साथ दो शास्त्रार्थ

नवीन वेदान्ती साधु से हरिद्वार में—

[illegible] अप्रैल सन् 1879 रविवार तदनुसार पूर्णमासी चैत्र सम्वत् 1936 को जबकि स्वामी जी अतिसार की अधिकता के कारण रुग्ण हो गए और उदर भी दर्द करती थी अर्थात् एक छाला निकला हुआ था। मेले में धूम पड़ गई क्योंकि एक दिन व्याख्यान नहीं हुआ था। साधुओं ने इसको स्वर्ण अवसर समझा और सम्मिलित होकर शास्त्रार्थ के लिए आने लगे। इस अभिप्राय: से कि जब वह शास्त्रार्थ करना स्वीकार न करेंगे तो हम प्रसिद्ध कर देंगे कि हार गए। स्वामी जी इस दिन तम्बू मे चारपाई पर विश्राम कर रहे थे। जब दूर से उनको आता देखा तो उठ बैठे और साधारण सत्कार के पश्चात् आने का कारण पूछा। उनमे से एक परम प्रसिद्ध साधु ने जो सबसे अधिक विद्वान् था कहा—कि हम आपसे शास्त्रार्थ करने आये हैं। स्वामी जी ने कहा कि बहुत अच्छा आप किसी विषय पर बातचीत करें।

साधु जी : हम वेदान्त पर चर्चा करेंगे।

स्वामी जी . पहले आप मुझे समझा दें कि वेदान्त से आप का क्या अभिप्राय है।

साधु जी : वेदान्त से अभिप्राय है कि जगत् मिथ्या है और ब्रह्म सत्य है।

स्वामी जी : जगत् से क्या अभिप्राय और कौन-कौन पदार्थ जगत् के भीतर हैं और मिथ्या किसको कहते हैं?

साधु जी : परमाणु से लेकर सूर्य पर्यन्त जो कुछ है उसे जगत् कहते हैं और यह सब मिथ्या अर्थात् झूठा है।

स्वामी जी : तुम्हारा शरीर, बोलना चालना, उपदेश, गुरु और पुस्तक भी इसके भीतर हैं या नहीं?

साधु जी . हां यह सब इसके भीतर है।

स्वामी जी और आपका मत भी इसके भीतर है या बाहर?

साधु जी : हां वह भी जगत् के भीतर है।

स्वामी जी : जब तुम स्वयं ही कहते हो कि हम और हमारा गुरु, हमारा मन और हमारी पुस्तक, हमारा बोलना और उपदेश—यह सब मिथ्या ही मिथ्या हैं तो हम तुम्हें क्या कहें। स्वयं वादी के कहने से ही उसका दावा खारिज है। साक्षी आदि की कुछ आवश्यकता नहीं। साधु जी आश्चर्य चकित तथा पराजित होकर वहां से चले गए और फिर कभी इस प्रकार जत्था बांधकर स्वामी जी के सम्मुख शास्त्रार्थ करने को न आए।

(लेखराम जीवन चरित्र पृष्ठ 647 से)

अनूप शहर निवासी पं. हीरा वल्लभ का कर्णवास में शास्त्रार्थ

पौराणिकों को प. अम्बादत्त के पराजय की कालिमा धोने की चिन्ता थी ही। वह अनूप शहर गये और प. हीरा वल्लभ को बुला कर लाए। पौस मास की किसी तिथि को प हीरा वल्लभ कर्णवास गए और बड़े ठाठ से आये। वह अपने आराध्य देवों की मूर्तियों को एक सुन्दर सिंहासन मे सजा कर साथ लाये। शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। उनमे प हीरालाल प्रवृत्त हुए तो अनोखे ढंग से।

देव मूर्तियों का सिंहासन सामने रखकर और यह प्रतिज्ञा करके कि मैं इन देव मूर्तियों को दयानन्द के हाथ से भोग लगवा कर उठूंगा। छः दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा, नियम और न्यायपूर्वक होता रहा। छठे दिन पं. हीरा वल्लभ ने अस्त्र शस्त्र डाल दिए। अपनी हार स्वीकार की, वाणी से भी और कर्म से भी। पण्डित जी ने महाराज को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और साथ ही देव मूर्तियों को भी सदा के लिए हाथ जोड़ कर गंगा जल मे प्रविष्ट कर दिया। उन मूर्तियों को जिन्हें वह दयानन्द के हाथ से भोग लगाने की प्रतिज्ञा करके शास्त्रार्थ मे प्रवृत्त हुए थे, स्वयं भोग लगाना छोड़ कर शास्त्रार्थ से निवृत्त हुए। सभा मे 2000 मनुष्य उपस्थित थे।

स्वामी जी पं. हीरावल्लभ की न्यायप्रियता देखकर प्रसन्न हो गए और उन्होंने पण्डित जी की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की। निष्पक्ष मनुष्यों ने भी उन्हें हृदय से साधुवाद कहा। सबके मुख मण्डल हर्ष से खिल उठे। मूर्तिपूजकों के हृदय शोक सन्तप्त और उनके मुख विषाद से तेजहीन हो गए और दाह करते और ठण्डे सांस भरते सभा से उठ कर चले गए। इस शास्त्रार्थ का यह प्रभाव हुआ कि सैकड़ों मनुष्यों की आस्था मूर्तिपूजा के ऊपर से उठ गई और बीसियों लोगों ने पं. हीरा वल्लभ का अनुकरण करते हुए अपनी देव मूर्तियां गंगा के प्रवाह मे डाल दीं।

(देवेन्द्रनाथ जीवन चरित्र भाग. 1 पृ. 111)

ज्योतिर्मय हो बसुधा सारी

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

फैले वेदों का प्रकाश फिर, बने धरा पर नवल आश फिर।
ऋषियों के निर्देशन मे नव—हो भारत का भूमि विकास फिर ॥

वैदिक धर्म-ध्वजा लहराए, भारत का नर, देव कहाए।
पुनः पठन पाठन वेदों का—हो भू पर, नव स्वर गहराए ॥

'आर्य' बने वसुधा के वासी, जागृत हो सब भूमि निवासी।
सत्य-धर्म के लिए लड़ें हम—निर्भय होकर भारतवासी ॥

दीप निरन्तर जले ज्ञान का, आवाहन हो नव विज्ञान का।
धर्म समन्वित अन्वेषण हो—वसुन्धरा पर, नव विज्ञान का ॥

ज्योतिर्मय हो वसुधा सारी, नष्ट-विनष्ट रजनि हो कारी।
सत्य-शिवम्-सुन्दरता पूरित—जीवन पद्धति बने हमारी ॥

क्या ईश्वर जीव के आगामी कर्मों को जानता है ?

लेखक—श्री स्वामी सत्यपाल जी परिव्राजक

ईश्वर की सर्वज्ञता के विषय मे विद्वानो मे मतभेद है। कुछ लोग कहते हैं कि जो कुछ अनन्त काल मे कर्म करेंगे उन सबको ईश्वर प्रथम ही जानता है कि अमुक जीव अमुक समय मे यही कर्म करेंगे। दूसरी मान्यता यह है कि जो कर्म जीव कर सकता है अच्छे या बुरे उनको ईश्वर जानता है। परन्तु उन सब कर्मों मे से कौन से कर्म को जीव कब करेगा यह नही जानता।

हमारे विचार से दूसरी मान्यता ठीक है। क्योंकि जो कर्म जीव के विचार मे नही है और इससे अगली सृष्टि के मध्यकाल मे विचार मे आएगा पुन जीव उस कर्म को करेगा उसको ईश्वर नहीं जानता कि अमुक जीव इस कर्म को सृष्टि के मध्यकाल मे करेगा। क्योंकि जिन इन्द्रियो और शरीरादि साधनो से जीव विचार और कर्म करता है उनका अभाव है। इसलिए अभाव से भाव नही जाना जा सकता। जब जीव कर्म करने का विचार मन मे करता है और जब वाणी शरीर से कर्म करता है तब उसको परमात्मा जानता है। किन्तु जब जीव ा ज्ञान मे ही कर्म करने का अभाव है तब उस को ईश्वर नही जानता।

प्रश्न—यदि परमात्मा यह नही जानता कि इस से अगली सृष्टि के मध्यकाल मे अमुक जीव कौन सा कर्म करेगा तो परमात्मा सर्वज्ञ नही रहा ?

उत्तर—सर्वज्ञ शब्द का अर्थ यह नही है कि अभाव को भाव जानना अपितु सर्वज्ञ शब्द का अर्थ यह है कि किसी भी ज्ञान को उसके लिए नया न होना अर्थात् ऐसा कोई भी ज्ञान नही जिसको वह कभी न जानता हो। परन्तु उस परमात्मा के जाने हुए कर्मों मे से अमुक काल मे जीव किस कर्म को करेगा इसको परमात्मा जीव के विचार मे आने से पूर्व नही जानता। क्योंकि इस कर्म को का कर्ता जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है। जैसे सर्वशक्तिमान शब्द का अर्थ लोगो ने ठीक नही समझा वैसे ही सर्वज्ञ को भी अन्यथा समझा है। अत सर्वज्ञ का अभिप्राय: यही है कि जीव कौन कौन से शुभाशुभ कर्म कर सकता है यह ईश्वर जानता है, यही उसकी सर्वज्ञता है।

प्रश्न—ऐसा मानने से तो परमात्मा की सर्वज्ञता मे दोष आएगा कि जब जो जीव जिस कर्म को करेगा उस कर्म को परमात्मा जानेगा और इससे परमात्मा का ज्ञान बढ़ेगा।

उत्तर—इससे ज्ञान मे वृद्धि नही होती। क्योंकि परमात्मा के लिए यह कोई नया कर्म नही है। जैसे एक न्यायाधीश सौ प्रकार के विधानो को जानता है, उनमे से जो-जो मनुष्य जिस जिस कर्म को करता जाता है न्यायाधीश उस उस कर्म का फल कर्मानुसार देता रहता है। वह लाखो मनुष्यो को फल देता है। परन्तु उसके न्यायालय मे जो सौ प्रकार के विधान हैं उन्ही मे से किन्ही एक विधान के अनुसार मनुष्य कर्म करते हैं और

...च्छे कर्म करने
...व करता है। यदि

यह उनको फल देता है। बार बार उसी प्रकार से करते रहने पर भी न्यायाधीश का ज्ञान नहीं बढ़ता। इसी प्रकार से परमात्मा शुभाशुभ कर्मों का फल देता रहता है अत: ज्ञानवृद्धि का दोष नहीं आता।

जिन लोगों का यह मत है कि यदि जीव कर्म करेगा और पुन: उसके करने पर परमात्मा जानेगा तो परमात्मा का ज्ञान बढ़ जाएगा। उनके मत मे भी जीव के कर्म करने पर ही परमात्मा जानता है कि इस जीव ने यह कर्म किया है और इस कर्म का यह फल है। इसमे भी वही दोष आता है कि इस जीव ने यह कर्म किया इसको अमुक फल मिलना चाहिए। यदि इस बात को पूर्वपक्षी नहीं मानता तो फिर इस बात का उत्तर देवे कि इस ज्ञान के बिना जीवो के कर्मों का फल किस प्रकार से दे सकता है। क्योंकि कर्म करने से पूर्व तो परमात्मा यह निश्चित कर ही नहीं सकता कि इस कर्म का फल इस जीव को मिलना चाहिए। यदि कर्म करने से पूर्व निश्चय कर लेवे तो मिथ्या ज्ञान होगा। क्योंकि कर्म किया नहीं और बिना कम किए को किया हुआ मान लिया है। जिस प्रकार से एक घड़ी बनाने वाला जब घड़ी को बना देता है तब यह जाना जाता है कि इस मनुष्य ने घड़ी का निर्माण किया है और जब तक घड़ी का निर्माण नहीं होता तब तक यही जाना जाता है कि घड़ी नहीं बनाई। इसी प्रकार से परमात्मा भी किए हुए कर्मों को किए हुए और न किए हुए कर्मों को न किए हुए जानता है और कर्म करने के पश्चात उनका फल देता है। जैसे सृष्टि उत्पत्ति स्थिति व प्रलय इन तीन अवस्थाओ को जिस समय जो होती है वैसा ही जानता है इससे उसकी सर्वज्ञता मे दोष नहीं आता। इसी तरह जीवो के भूत भविष्यत व वर्तमान काल मे होने वाले कर्मों को यथासमय जानने में दोष नहीं आता। सर्वज्ञता मे अमुक जीव अमुक समय मे यही कर्म करेगा परमात्मा के ज्ञान से पूर्व से निश्चित है यह पौराणिक धारा है, जैसे—"होगा वही जो राम रच राखा" इत्यादि पौराणिक संस्कारो के कारण कुछ हमारे आर्य बन्धु भी इस भ्रम पूर्ण विचार धारा को मानते हैं। और इस विचार के विपरीत ऋषि दयानन्द के निम्न स्पष्ट उल्लेख को समझने मे भी भूल करते हैं—

प्रश्न—परमेश्वर त्रिकालदर्शी है, इससे भविष्यत की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा। इससे जीव स्वतन्त्र नहीं। और जीव को ईश्वर दण्ड भी नहीं दे सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है, वैसा ही जीव करता है।

उत्तर—ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है। क्योंकि जो होकर न रहे वह (भूतकाल) और न होके होवे वह (भविष्यतकाल) कहाता है। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है? इसलिए परमेश्वर का ज्ञान सदा एक रस अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत भविष्यत तो जीवो के लिए है। हा जीवो के कर्मों की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर मे है स्वत: नहीं। जैसे स्वतन्त्रता से जीव कर्म करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है। और वैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत भविष्यत वर्तमान के ज्ञान और फल देने मे ईश्वर स्वतन्त्र और जीव किञ्चित वर्तमान का ज्ञान और कर्म करने मे स्वतन्त्र है।

(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

सत्यार्थप्रकाश मे यह प्रकरण जीव की स्वतन्त्रता का है तदनुसार ही इस पाठ का अर्थ है। हा! जीवो के कर्मों की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर मे है। स्वत: नहीं।" जीवो के कर्मों की अपेक्षा से ईश्वर मे त्रिकालज्ञता का अभिप्राय है—कि जब जीव कर्म करता है तब ईश्वर जानता है कि यह वर्तमान काल है जिसमे यह जीव कर्म कर रहा है। जब जीव कर्म की समाप्ति कर देता है तब ईश्वर जानता है कि इस जीव ने यह कर्म

पूर्व कर लिया है यह भूतकाल का कर्म है । जब जीव कर्म कर रहा है तब परमात्मा इस कर्म को वर्तमानकाल में जानता है और जब कर्म समाप्त हो गया तब इस कर्म को भूतकाल में जानता है। जीव के जिस कर्म का फल परमात्मा वर्तमान समय में दे रहा है उसको परमात्मा वर्तमान काल जानता है और उसी जीव के जिन कर्मों का फल आगे आने वाले समय में देता है उस समय को परमात्मा भविष्यकाल जानता है । अर्थात इस जीव के इस कर्म का फल अब दे रहा रहा हूं और शेष कर्मों का फल आगे दूंगा ऐसा ईश्वर जानता है । इस प्रकार से जीवों के कर्मों की अपेक्षा से ईश्वर में त्रिकालज्ञता है। यदि ईश्वर में जीवों के कर्मों की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता न हो तो उसकी कर्म व्यवस्था नष्ट हो जाए। क्योंकि जब किसी जीव ने कर्म तो किया नहीं है परन्तु (तुम्हारे पक्ष में) परमात्मा किया हुआ जानता है। तो उसका ज्ञान मिथ्या माना जाएगा।

जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है, वैसा जीव करता है इसमें विशेष ध्यान देने की बात यह है कि जैसा स्वतन्त्रता से कर्म जीव करता है, वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है। यहां पर जैसा करता है वैसा ही ईश्वर जानता है इससे यह सिद्ध होता है कि जैसा जीव ने किया वैसा ईश्वर ने उसे जाना । यदि ईश्वर पहले से जानता होता तो यह कहना व्यर्थ हो जाता कि जैसा करता है वैसा ही जानता है । अतः इस का अभिप्राय यही है कि जीव कर्म करता है और परमात्मा उसको जानता है कि अमुक जीव ने यह कर्म किया है। दूसरा अंश यह है कि (जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है) इसका अभिप्राय यह है कि जीव अच्छे वा बुरे जो भी कर्म कर सकता है उनका विधान ईश्वर ने करने और न करने का वेद में कर दिया है। ऐसा कोई भी कर्म नहीं जिसको परमात्मा न जानता हो। उन कर्मों में से ही जीव किसी कर्म को करता है । अतः यह कहा है कि जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है।

जहां-जहां पर वेदमन्त्रों में अथवा सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थों में ईश्वर को सर्वज्ञ कहा है वहां यही जानना चाहिए कि भूत भविष्यत और वर्तमान में जो कुछ हो सकता है उसको ईश्वर जानता है। कर्म करने से पूर्व जानने में यह भी दोष आता है कि जो कुछ परमात्मा ने जाना उसी को जीव करेगा बदल नही सकता। यदि बदल सकता है तो परमात्मा का ज्ञान मिथ्या हो जाएगा। क्योंकि परमात्मा के ज्ञान में यह था कि देवदत्त 12 बजे वेद का पाठ पढ़ेगा परन्तु देवदत्त ने 12 बजे व्याकरण का पाठ पढ़ा। अतः जो परमात्मा ने जाना था वह मिथ्या हुआ । और यदि देवदत्त उस परमात्मा के जाने हुए को बदल नही सकता तो जीव कर्म करने में पराधीन है स्वतन्त्र नहीं रहा । जब जीव कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं है तो पुनः उसको कर्म का फल भी नहीं मिलना चाहिए। यदि पुनरपि कर्म का फल जीव को मिलता है तो यह न्याय नही कहा जा सकता ।

जो लोग यह मानते हैं कि परमात्मा जीव के कर्म करने से पूर्व ही जानता है कि अमुक जीव अमुक समय में अमुक कर्म करेगा और वे जीव को कर्म करने में स्वतन्त्र भी मानते हैं ये दोनों बातें परस्पर विरुद्ध हैं। इस मान्यता में यह भी दोष आता है कि जब परमात्मा पहले से ही यह जानता है कि अमुक जीव ने ये बुरे या अच्छे कर्म करे, तो सृष्टि की आदि में वेदज्ञान देना और यह कहना कि अमुक कर्म करो अमुक नहीं यह व्यर्थ हो जाएगा। क्योंकि परमात्मा के ज्ञान में पहले से ही सब जीवों के कर्म निश्चित हैं कि ये जीव ये ही कर्म करेंगे और ये जीव ये ही कर्म करेंगे। इस बात को ऋषियों ने स्वीकार किया है कि ईश्वर अच्छे कर्म करने का और बुरे कर्म को छोड़ने का उपदेश करता है। यदि

ईश्वर के ज्ञान से निश्चित ही है तो ईश्वर किसी को भी कर्म करने और छोड़ने का उपदेश नही दे सकता । यदि देता है तो निश्चित नही हो सकता । उपदेश करने वाले के ज्ञान मे जब यह बात होती है कि हो सकता है कि मेरी बात को सुन कर कोई अच्छे कर्म करेगा और बुरे कर्म छोड़ेगा तभी वह उपदेश दे सकता है । निश्चित अवस्था मे नही ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे यह लिखा कि जब जीव बुरे कर्म करने की इच्छा करता है तब उसके मन मे परमात्मा भय शका उत्पन्न करता है । परमात्मा का यह कर्म इसी लिए है कि जीव बुरे कर्म करने से रुक जाए । जब परमात्मा के ज्ञान मे निश्चित है तो फिर भयादि क्यो उत्पन्न करता है ।

अत परमात्मा अच्छे बुरे समस्त कर्मों को तो जानता है परन्तु कौन जीव आने वाली सृष्टि के मध्यकाल मे कौन सा कर्म करेगा उसको परमात्मा नहीं जानता । क्योकि उसका वर्तमानत्व नही है । जो वस्तु वर्तमान रूप मे नही है उसको वर्तमान अवस्था मे कैसे जाना जा सकता है ? जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र भी है । वह किसी भी कर्म को किसी समय बदल कर उसके स्थान मे दूसरा कर्म कर सकता है और इसी के कारण जीवो को कर्म का फल मिलना है । अत सब सज्जनो को यही मानना चाहिए कि जीव के सब कर्मों का ईश्वर के ज्ञान मे पहले से ही निश्चय नही है कि अमुक जीव इस समय यही कर्म करेगा ।

देव दयानन्द के अनुयाइयो उठो !

(गीतकार—श्री मृत्युञ्जय सिंह जी राही)

आज विश्व को तुम्हारा ज्ञान चाहिए ।
देव दयानन्द के अनुयाइयो उठो ।

हृदयहीनता मे बात मिट रही यहा, मानवीयता हताश लुट रही यहा,
स्वास्थ्य का धुआ उठा गगन के छोर तक, छूट रही है सस्कृति विगत के ओर तक ।
ओ३म ध्वजा कर गहे अभियान चाहिए । वेद की ऋचाओ के अनुयाइयो उठो । आज
तोड़ कर पतवार नाव खे रहे हैं हम । पश्चिमी विलासिता को ले रहे हैं हम ।
शून्य पर खड़ा है यहा प्यार देख लो । गली गली चल रहा व्यभिचार देख लो ।
गढ़ सके चरित्र वह विज्ञान चाहिए । धर्म की सौगात के अनुयाइयो उठो । आज .
कितनी जातिया उठी और नष्ट हो गई । निजी वास्तविकता से जो भ्रष्ट हो गई ।
रोक दो हवा के कदम जा चली है आज । सैक्स की धुनो मे गाए जिन्दगी का साज ।
राष्ट्र को महकता हुआ प्राण चाहिए । शिवा की पुकार के अनुयाइयो उठो । आज
रोशनी न बुझे इस भारत महान की । स्वर्णमयी सस्कृति से प्राप्त ज्ञान की ।
कौन ला रहा है चुम्बनो की सभ्यता । नारि बनी वेश्या, आई विलायतीयता ।
नष्ट भारतीयता की सेज जल रही । विश्व व्यवस्थाओ के अनुयाइयो उठो । आज

एकता के प्रतिपादक ऋषि दयानन्द

लेखक— श्री पं. सत्यप्रिय जी शास्त्री एम. ए.
आचार्य—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

महर्षि दयानन्द को लोगो ने विभिन्न दृष्टिकोणो से देखा है, परन्तु ऋषि के सत्य को प्रकट करने एवं मिथ्यामत को खण्डित करने के मानवोचित कार्य से कुछ लोगो को वैमनस्य तथा विघटनवादी प्रवृत्ति की गन्ध आती है यह बात केवल सामान्य लोगो की ही नही, बल्कि महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति ने भी इसी काल्पनिक भावावेश में आकर एक समय महर्षि तथा सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध अनर्गल बाते लिखकर सर्वप्रिय होने का असफल प्रयास किया था, तो क्या वास्तव मे महर्षि के के विचार एवं कार्य मानव समाज मे विघटन उत्पन्न करते हैं ? आइये मस्तिष्क के कपाट खोल कर शान्ति के साथ इस पर विचार करें। महर्षि से पूर्व ईश्वर की मान्यताओ का क्षेत्र एक विश्व-व्यापी अखाड़ा बना हुआ था। राम का उपासक कृष्ण को गाली देता था, कृष्ण के भक्त राम तथा विष्णु के भक्तो को कोसते थे, इसी प्रकार शिव, इन्द्र, ब्रह्मा, सरस्वती इत्यादि के भक्तो के वर्ग बने हुए थे जो एक दूसरे को देख कर राजी नही थे, सारा हिन्दू समाज ईश्वर के नाम पर असख्य गुटो मे बटकर युद्ध का अखाड़ा बना हुआ था, ऋषि ने उस समय ईश्वरैक्य का पाठ पढाया और उपरोक्त सारे नाम ईश्वर के बोधक तथा मार्मिक बताते हुये, सबको एकेश्वरोपासना के सूत्र मे बाध कर मानव समाज को सगठित किया, सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास ईश्वर के नाम पर झगड़ते हुये विघटित मानव समाज के सुसगठित के सत्य प्रयास का मु ह बोलता चित्र है, क्या इतने पर भी ऋषि को फूट डालने वाला कह कर अपनी अज्ञानता प्रकट करने का कोई साहस करेगा ?

ऋषि से पूर्व धर्म ग्रन्थ के नाम पर कितना रक्तपात होता था और मानव समाज कितने वर्गों मे बटा हुआ था ? इसका तो इतिहास ही साक्षी है, परन्तु ऋषि ने कहा कि सब साम्प्रदायो का मूल वेद है, अत: वेद को अपना धर्म ग्रन्थ मानो क्योकि यह सार्वभौम है, अन्य सारे ग्रन्थ किसी देश विशेष, वर्ग विशेष, एव विचार विशेष से ही बन्धे हुए है, औरो की क्या कहे, भारत मे ही धर्म ग्रन्थो के सम्बन्ध मे न जाने कितने वर्ग बने हुये थे, ऋषि ने प्रबल घोषणा की कि इन सभी धर्म ग्रन्थो मे जितना सत्य है, वह वेद से गया है, अत: आओ वेद पर एकमत होकर आचरण करें, पाठक सोचे कि ग्रन्थ विशेषो मे विभक्त निष्ठ लोगो को एक सूत्र मे पिरोने का कार्य सगठित करने का प्रशसनीय प्रयास नही कहलाये क्या ?

महर्षि के समय विश्व मजहबो की टुकड़ियो मे बट कर पारस्परिक जघन्य सघर्ष का घृणित क्षेत्र बना हुआ था, मजहब के नाम पर क्या 2 अमानवीय कृत्य किए किए गए उन्हे लिखते हुए लेखनी भी थर्राती है, ऋषि ने सबको सगठित होने का उपाय मानवीय धर्म वर्णन किया। अर्थात् धर्म उत्तमाचरणो

को धारण करने का नाम है। ऋषि ने कहा कि वर्तमान मजहबों में जो अच्छी बातें हैं, वे सभी मानव धर्म वेद से गई हैं, दूसरी बात यह कि सभी मत मनुष्य विशेषों के आश्रय पर खड़े किए गए हैं, इसलिए मजहब आपस की फूट का कारण बने हैं। ऋषि ने कहा जो भी उत्तमाचरण करो वह धार्मिक और उत्तमाचरण में सभी एकमत हैं, भेद है तो अपनी कपोल कल्पनाओं में है अतः तुम सब मानव समाज को झगड़ों की भट्ठी में झोंकने वाले इन मजहबों के प्रपञ्चों से ऊपर उठ कर 'आत्मवत् सर्वभूतेषु, आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् तथा" धारणाद्धर्म इत्याहुः। से यथार्थ धर्म को अपनाओ क्योंकि धर्म आपस में लड़ाता नहीं है, बल्कि परस्पर सौहार्द सिखाता है।

और की छोड़िए एक ही ईश्वर के मानने वाले ईश्वर के सगुण तथा निर्गुण स्वरूपों पर विभक्त होकर लड़ते थे, ऋषि ने समझाया प्रत्येक वस्तु सगुन तथा निर्गुण होती है, जो गुण वस्तु में हों उनके कारण तो सगुण और जो न हो उनके कारण निर्गुण होती है। यह नियम सर्वत्र लागू होगा, अतः ईश्वर सगुण भी है तथा निर्गुण भी है इस कारण एक ही ईश्वर के भक्तो तुम्हे एक ईश्वर के नाम पर काल्पनिक मिथ्या बातें बना कर झगड़ना नहीं चाहिए, मानवों को संगठित करने का कितना सुन्दर उपाय बताया।

इसके अतिरिक्त लोग कहते थे कि दर्शनकारों में परस्पर मतभेद हैं, इस विचार का प्रभाव आर्यों मे फूट को बढ़ाने में सहायक होता था, स्वामी जी ने कहा कि दर्शनकारों में कोई मतभेद नही था, सृष्टि के छः अवयवों की एक-2 दर्शनकार एक-2 की व्याख्या करता है, वेद एवं वैदिक मान्यताओं पर किसी का भी मतभेद नही है ऋषि ने इसी विचार के माध्यम से आर्यों को संगठित करने का प्रयास किया।

ऋषि दयानन्द के काल में जन्म गत जाति-पाति के द्वारा तो फूट पिशाचनी आर्यों को निगले ही जा रही थी, दयानन्द ने उसका विरोध कर गुण कर्म, एवं स्वभाव के आधार पर ऊंच-नीच का निर्णय दिया जिसके कारण मानव समाज को संगठित होने में अत्यधिक सहायता मिली उस समय प्रान्तवाद एवं भाषावाद तो सीमा पार करने को हो रहा था, ऋषि ने इनकी सीमायें तोड़ कर स्वयं उत्तर भारत में प्रचार किया और अपना साहित्य आर्य भाषा में लिख कर सारे राष्ट्र को संगठन के सूत्र में पिरोने का दूरदर्शिता पूर्ण कार्य किया। फूट के प्रतीक छूआ-छूत ने जो विनाश किए वे शताब्दियों तक मिटने असम्भव हैं। इसी डायन ने देश के टुकड़े करा दिए और आज भी और टुकड़े होने के आसार हो रहे हैं, काश हम महर्षि के बताए ऐक्य के उपायों को अपना पाते तो आज देश का नक्शा ही और कुछ होता। इस प्रकार ऋषि के लगभग प्रत्येक कार्य से देश के संगठन को बल ही मिला, परन्तु आज के भीरु एवं सर्व प्रियता वादी लोग ऋषि पर विघटन वाद का आक्षेप लगाते हैं। चूंकि ऋषि ने सत्य कह दिया है, यह उनका दोष समझ लीजिए आज तो जो हलवा एवं गोबर को एक जैसा बतावें वह ठीक परन्तु यदि बुद्धि से काम लेकर दोनों में भेद बताएं तो फूट डालने वाला साम्प्रदायिक कहलाएगा। ऋषि दयानन्द के साथ भी यही सब कुछ हो रहा है, यदि ऋषि भी चोर को चोर और शाह को शाह न कह कर दोनों को समान कह देते तो इन लोगों की दृष्टि में ठीक था, अतः ऋषि दयानन्द सत्यता के आधार पर ही एकता स्थापित करना चाहते थे, जो सर्वथा उचित था, आर्यो! अपने कार्य से मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोने वाले आचार्य दयानन्द के शिष्य हो कर क्यों अनेकता, विघटन एवं कलह के शिकार बन रहे हो, सोचो तुम अपने आचार्य के आदेशों से कितनी दूर जा रहे हो, क्या ऋषि का ज्वलन्त जीवन तुम्हें कुछ सिखाएगा नही ? लौटो, सम्भलो और होश मे आओ तथा ऋषि के सच्चे शिष्य होने के गौरव एवं अधिकार को प्राप्त करके अपने सच्चे आर्यत्व का प्रमाण दो।

—•—

सर्व-विजयी दयानन्द

लेखक—श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक

मोह पर विजय

बहन और चाचा की मृत्यु से मानव की क्षणभंगुरता को समझ कर "हरे भरे वैभव सम्पन्न अपने गृह को त्याग दिया।"

पुनः जीवन भर घर न आना, न सम्बन्धियों का परिचय देना, न कभी जिह्वा पर उनका नाम लाना कोई कम बात नहीं।

विवाह की पूर्ण तैयारी होने पर भी यह कह कर कि मैं गृहस्थ होकर नही रहूंगा गृहस्थ की मोह माया या सांसारिक सम्बन्धों का परित्याग कर देना मोह पर विजय की पराकाष्टा ही तो है।

लोभ पर विजय

लोभ पर विजय पाना आसान नहीं। बड़ी-2 महान् आत्माएं गृहस्थ को छोड़ कर परमार्थ पथ के पथिक बनने निकले, पर वहां भी गद्दियां बना ली और लाखों करोड़ों रुपयों के स्वामी बन बैठे।

सभी जानते हैं कि मूर्ति पूजा केवल आडम्बर है परन्तु जनता में खड़े होकर कहने की शक्ति किस में है।

यह गौरव महर्षि दयानन्द को ही प्राप्त था कि जिस बात को ठीक समझा कोई लोभ, लालच, उनको को कहने से विचलित नहीं कर सका—

काश्मीर नरेश महाराजा रणवीरसिंह ने पं. मनफूल द्वारा अनुरोध किया कि मूर्ति पूजा खण्डन छोड़ देवें तो राज्य का सारा खजाना स्वामी जी की भेंट कर दूंगा।

स्वामी जी ने कहा वेद प्रतिपादित ब्रह्म को प्रसन्न करू' या महाराजा को।

महाराणा सज्जन सिंह उदयपुर नरेश ने स्वामी जी से कहा कि यह रियासत एक लिङ्ग महादेव जी के आधीन है। आप मूर्ति पूजा का खण्डन त्याग कर मन्दिर के महन्त बन जावें। लाखों की गद्दी के मालिक बन जाओगे। स्वामी जी ने उत्तर दिया, आप मुझे लालच देकर ईश्वर की आज्ञा छुड़वाना चाहते है यह छोटी सी रियासत और इस का मन्दिर जिस से मैं एक दौड़ में बाहर जा सकता हूं, मुझे कभी भी वेद और ईश्वर की आज्ञा तोड़ने पर बाधित नही कर सकते।

कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैवेटस्की ने उन से अपनी थ्योसीफिकल सोसाईटी का परमगुरु बनाने का संकल्प किया। परन्तु वेदों में उनकी आस्था न देख कर ऋषि दयानन्द ने उन के द्वारा उपलब्ध होने वाली विश्व ख्याति के मोह पर विजय प्राप्त कर उन से किनारा कर लिया।

कष्टों पर विजय

गृह त्याग के पश्चात् स्वामी जी ने सच्चे शिव ईश्वर की खोज में नर्मदा के जङ्गलों, आबू पर्वत और अन्त में हिमालय के उत्तङ्ग शिखरो एव कन्दराओं में अपार कष्ट सहे।

वनों, पर्वतों, नदी, नालों को पार करते, सन्तों, साधुओं, मठाधीशों और ढोंगी व्यक्तियों से मिलते मिलाते अन्त में सच्चे गुरु विरजानन्द के आश्रम में पहुंचे।

खाने, रहने, पढ़ने के कष्टों के साथ-साथ गुरु जी की सेवा श्रद्धा और सच्चे मन से की। तब सफल हुए। ईश्वरीय ज्ञान वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ।

अज्ञान नष्ट हुआ और ज्ञान का प्रकाश हुआ।

बुराईयों व रूढ़ियों पर विजय

हर नई बात का विरोध होता है। पुरानी चली आ रही धार्मिक रीति रिवाज, अन्ध विश्वास, और आडम्बर तोड़ने की बात कौन सुने। लोग तरह-2 के पाखण्डों में फंसे थे, असली ज्ञान को भूल झूठें कर्म काण्ड में उलझे थे। छूआ छूत का चक्र, अपने-अपनों से अलग, जन्मना जाति-पाति का अभिमान, गोवंश का ह्रास, विधवाओं, अनाथों के प्रति उदासीनता, स्त्री शिक्षा का अभाव, भूत, प्रेत, गण्डा तावीज का कुचक्र, भारत अंग्रेजों के आधीन देश की एकता समाप्त, ईश्वर के स्थान पर जड़ मूर्ति पूजा, अवतार वाद, शास्त्रों का अनादर, वेदों के स्थान पर पुराणो से प्यार, जीवित पितरों का अनादर मृतक श्राद्ध मे विश्वास, जरा-2 सी भूल पर जाति बहिष्कार कर अपने भाईयों को विधर्मियों को सौंपने की कुप्रथा। आदि-2 अनेक बुराईयां, कठिनाईया एवं पाखण्ड, अकेले स्वामी दयानन्द सत्य का भरोसा ले, वेद ज्ञान के विश्वास, और ईश्वर के सहारे जुट, बुराईयो को दूर करने के काम, कठिन विरोध बहुत, पर एक कर्म, एक लक्ष्य, एक भाषा और एक सस्कृति, भारतोन्नति के साधनों का सहारा लेकर विजयी हुए।

हिंसक पशुओं पर विजय

महर्षि दयानन्द जी को नर्मदा के स्रोत की ओर जाते हुए मार्ग में बीहड़ वन मे मुंह फैलाये बहुत बड़ा काला रीछ दिखाई दिया, वह पिछली टांगों पर खड़ा होकर आक्रमण करने वाला था, स्वामी जी ने चेतना नहीं खोई वे लाठी उसके मुंह पर मारने को धीरे-2 उठा ही रहे थे कि रीछ भाग खड़ा हुआ।

मिर्जापुर में मार्ग में सांड आ गया, साथी भाग खड़े हुए। पर स्वामी जी डटे रहे, सांड मार्ग छोड़ चला गया। साथियों ने कहा सांड सींग मारता तो, स्वामी जी ने कहा हाथ से हटा देते।

स्वामी जी गङ्गा के तट में लेटे थे कि मगरमच्छ निकल आया, लोगों ने शोर मचाया, स्वामी जी ने कहा हम उसे कुछ नहीं कहते तो वह हमें क्यों छेड़ेगा।

लाहौर में स्वामी जी ने बताया था कि एक बार उन्हें सघन वन में शेर मिला, स्वामी जी सीना ताने सीधे बिना भय चलते रहे, यह देख शेर भी मुंह फेर कर टहलते-2 दृष्टि से ओझल हो जङ्गल में घुस गया।

द्वन्द्वों पर विजय

ग्रीष्म, शीत आदि द्वन्द्वों पर स्वामी जी ने विजय प्राप्त कर रखी थी—कड़ाके की सर्दी में स्वामी जी पद्मासन लगाए निर्वस्त्र अविचल बैठे थे। लोग रुई और ऊनी वस्त्रों में भी ठिठर रहे थे। ठाकुर गोपाल-सिंह के पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि योगा-भ्यास और ब्रह्मचर्य के कारण हम पर शीत का प्रभाव नही पड़ रहा। स्वामी जी एक रात चांदनी में चम-कते बालू पर कड़े शीत में समाधिस्थ थे। दो योरो-पियन उस रात शिकार के प्रयोजन से उधर आ निकले। सन्यासी को ऐसे शीत में नंगे शरीर समा-धिस्थ देख चकित रह गये। उनमे एक बदायूं के कलक्टर और दूसरे उनके कोई मित्र पादरी थे।

कलक्टर साहब ने पूछा-आपको शीत नहीं सताता? पादरी ने बीच मे कह दिया "माल खाकर मुटा गए है, इन्हे जाड़ा क्यों लगेगा?

महर्षि हंसे और कहा—हम दाल रोटी के खाने वाले क्या माल खाएगे? माल तो आप लोग खाते हैं, मांस, अण्डे, मदिरा आदि। स्वामी जी ने कहा, शीत न लगने का कारण अभ्यास है। जैसे आपने सारे शरीर को तो विविध वस्त्रों से ढक रखा है पर मुख सदा खुला रहता है उसे ढकने की जरूरत नहीं। ऐसे ही मेरा पूर्ण शरीर अभ्यासवश नग्न रहता है।

उन्नीसवीं शताब्दी का महान चमत्कार

महर्षि का प्रादुर्भाव

लेखक—स्वामी वेदमुनी जी परिव्राजक, अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ. प्र.)

उन्नीसवी शताब्दी का महान् चमत्कार है महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव। चमत्कार तो उस शताब्दी मे अन्य भी अनेक हुए होगे। न हमे सबकी जानकारी है और न हम अन्य चमत्कारो को झुठलाने का विचार रखते है किन्तु यह ध्रुव सत्य है कि महर्षि दयानन्द न केवल उन्नीसवी शताब्दी के ही अपितु गत पाच सहस्र वर्षों के महान चमत्कार हैं।

प्राय: चमत्कार मानवी ही होते है। मनुष्यो के द्वारा किए जाने वाले आविष्कारो तथा खोजो को ही चमत्कार कहा जाता है किन्तु महर्षि दयानन्द तो अलौकिक चमत्कार हैं। परमपिता परमात्मा की कारीगरी, उस परम पावन देव का वर्तमान युगीन आविष्कारक हो अथवा अलौकिक तथा वो चमत्कार—जो भी कहिए—है चमत्कार ही महान और अद्भुत चमत्कार। उस युग पुरुष महामानव के विषय मे किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

ऐ दयानन्द ! तुझे नूरे खुदावन्द कहू।
या कपिल, कणाद, पतञ्जलि का जिगरबन्द कहू॥

उस युग पुरुष की दार्शनिकता को जब उसकी कृतिया, वह भी विशेष कर उसके घोषणा पत्रो तथा वर्तमान युग के स्मृति ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे पढा जाता है तो पुराने-ऋषि परम्परा से सम्बद्ध-सम्पूर्ण दर्शन शास्त्र का साक्षातकार एक ही ग्रन्थ मे हो जाता है। केवल साक्षात ही नही होता अपितु भारतीय दर्शनो से सम्बद्ध दो प्रमुख भ्रान्तिया—एक तो यह कि छहो दर्शन परस्पर विरोधी हैं—सभी भारतीय व अभारतीय वर्तमान कालिक दार्शनिको की यह मान्यता और स्थापना धूरि धूमरित हो जाती है। दूसरी यह कि सांख्यकार कपिल नास्तिक था—एक दम समाप्त हो जाती है। आवश्यकता है केवल एक बार देव दयानन्द के इस सुप्रसिद्ध और अमर ग्रन्थ को ध्यानपूर्वक पढने की।

मार्क्सवाद और दयानन्द—

मार्क्स के जड-भौतिक, अनीश्वरवादी, नास्तिक तथा भोगवादी दर्शन की तुलना मे महान् आध्यात्मिक दर्शन—जिसमे आत्मिक तथा भौतिक दार्शनिक विचार-धाराओ का महान विस्मयकारी समन्वय है, उस महामानव ने वर्तमान युग मे ससार को प्रदान कर पश्चिम की घोर भोगवादी सस्कृति के सामने एक प्रकाश स्तम्भ सा खडा किया।

इस्लाम, ईसाइयत और दयानन्द

ईसाइयत के परमात्मा द्वारा सृष्टि निर्माण करते हुए चौथे दिन सूर्य की उत्पत्ति और इस्लाम के खुदा द्वारा छ: दिन सृष्टि बना कर थक जाने पर सातवें दिन अर्श अर्थात् तख्त पर विश्राम करने और इन दोनो की क्रमश. परमात्मा को चौथे और सातवे आसमान (आकाश) पर अवस्थित अवैज्ञानिक पूर्ण मान्यताओ के सम्मुख परमेश्वर की अनादि अनादि के कारण सृष्टि उत्पत्ति के नितान्त वैज्ञानिक, तर्क सम्मत, युक्ति युक्त तथा बुद्धि व विद्या से परिपूर्ण ज्ञानमय सामर्थ्य के द्वारा प्रलयकाल के महान् अन्धकार मे से प्रकृति रूपी विक्षुब्ध समुद्र को निकाल

कर इस सृष्टि को प्रकट कर दिया तथा विधिवत् सूर्य, चन्द्र व वर्ष, मास, दिन आदि का निर्माण किया और अपनी प्रजा मानव आदि प्राणियों के लिए समस्त सुख के साधन अग्नि, जल, वायु आदि भी पूर्व सृष्टि के अनुसार रच दिए तथैव अपनी व्यापक शक्तियों के द्वारा इस सम्पूर्ण सृष्टि का व्यवस्थापन व संचालन भी कर रहा है...यह सब महर्षि दयानन्द ने अपनी घोर तपस्या द्वारा सिद्ध कर दिखलाया ।

परमपावन प्रभु की सर्वव्यापकता के माध्यम से ही पैगम्बरवाद व अवतारवाद के गढ़ों को ढाया और जड़ पूजा के स्थान पर एक निराकार, व्यापक, अजन्मा, अनादि, अनन्त परमेश्वर पूजा की स्थापना की।

मैक्समूलर और दयानन्द—

जर्मन अध्यापक मैक्समूलर ने ब्रिटिश सरकार का वेतन भोगी बन कर वेदभाष्य के नाम पर वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध भ्रान्ति युक्त अर्थ करके भारत के ईसाईकरण के लिए वातावरण बनाने के प्रयत्न को ध्वस्त कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप मैक्समूलर को अपनी "भारत हमें क्या सिखा सकता है।" पुस्तक में अपनी वेदों के विषय में अनेकेश्वरवाद अथवा बहुदेवतावाद की मान्यता के विरुद्ध ऋग्वेद के शब्दों में यह स्वीकार करना पड़ा कि "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् उस एक ही सत्य स्वरूप परमात्मा को विद्वान लोग बहुत नामों से पुकारते है और अपनी "भारतीय दर्शन के छः सिद्धान्त" नामक पुस्तक में ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढ़ कर लिखा कि मेरी अब तक की मान्यता कि वेद ऋषियों की खोज है, भ्रान्त सिद्ध हुई। क्योंकि ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में प्रलयकाल का आंखों देखा जैसा वैज्ञानिक वर्णन है, जबकि प्रलयकाल में ऋषि ही क्या, किसी भी प्राणी की उपस्थिति सम्भव नहीं...उसे ऋषि आदि किसी व्यक्ति की खोज मानना उचित नहीं। इसे पढ़ कर तो वेद का यह ज्ञान परमेश्वर की ओर से ऋषियों की ओर आता हुआ प्रतीत होता है। वर्तमान युग में महर्षि दयानन्द ने ही सब से पहले यह घोषणा की कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि की उत्पत्ति के समय चार ऋषियों के हृदयों में उस परमपावन प्रभु ने मानवों के कल्याणार्थ प्रदान किया।

नारी जाति और महर्षि दयानन्द—

बाइबिल में 'पाषाणवत् जड़' कुरान में पुरुषों की खेती तथा आचार्य शंकर के शब्दों में विश्वास के सर्वथा अयोग्य और नर्क का द्वार, तुलसी दास की दृष्टि में अवगुणों की खान कहलाने वाली नारी जाति को महर्षि मनु के शब्दों में "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं कह कर सम्मान के आसन पर बिठाया। नारी शिक्षा की दुन्दुभी बजाई तथा पुरुषों के समान ही अन्य संस्कारों की भी अधिकारिणी बताया।

बाल विवाह को पाप बताया तथा पूर्ण यौवनावस्था में ..जब वर और कन्या सन्तानोत्पत्ति में शरीर से पूर्णतया पुष्ट होकर समर्थ हो जाएं "ब्रह्मचर्येण युवानं कन्या विन्दते पतिम्" का घोष लगा कर शास्त्रानुमोदित सिद्ध किया। उन्होंने कहा कि विवाह का मुख्य उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति है अतएव इसी बात को लक्ष्य में रख कर लड़के लड़की को जब स्वास्थ्य सन्तानोत्पत्ति में समर्थ हृष्ट पुष्ट हो, तभी विवाह करना चाहिए।

छुआछूत और महर्षि दयानन्द—

जन्म जात्याभिमान के कारण उत्पन्न छुआछूत की उन्होंने अतीव बड़ी भर्त्सना की, उसे निन्दित कर्म बताया। हां खान-पान व रहन-सहन की पवित्रता को स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम बतलाया और कर्मों से ही मानव को अच्छा व बुरा समझा जाने का समर्थन किया।

लार्ड मैकाले और देव दयानन्द—

लार्ड मैकाले की वर्तमान शिक्षा-पद्धति का घोर विरोध किया तथा ऋषि परम्परानुमोदित गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार किया। सह-शिक्षा के विपरीत बालक-बालिकाओं के विद्यालयों को एक दूसरे से चार कोस दूरी पर अवस्थित होने को उचित बताया और बालकों के विद्यालय में सब कर्मचारी पुरुष होने

तथा बालिकाओं के विद्यालयों में सभी कर्मचारी स्त्रियां ही रखे जाने का विधान किया तथा निर्देश किया कि बालकों के विद्यालयों में पांच वर्ष की बालिका और बालिकाओं के विद्यालयों में पांच वर्ष का लड़का भी न जाने पाए।

राष्ट्रीय स्वाधीनता व महर्षि दयानन्द—

यद्यपि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण मानव जाति के हित की कामना की और वेद के शब्दों में "मनुर्भव" मनुष्य बनों के सार्वभौमिक तथा विश्व जनीन घोष को गुंजाया किन्तु जिस प्रकार नारी-उत्थान समाज-सुधार आदि के अन्य क्षेत्रों को वह आंखों से ओझल न कर सके, ठीक इसी प्रकार मानवी स्वाधीनता के अधिकारों की भी उन्होंने उपेक्षा नहीं की। यही कारण है कि शताब्दियों के पददलित पराधीन आर्य जाति के को जगाने के लिए भी अपनी लेखनी की नोक को आर्य जाति के अविद्या और आलस्य ग्रस्त पराधीन शरीर में चुभा कर उसे झंझोरने का प्रबल प्रयास किया। विदेशियों के उत्तम से उत्तम शासन की उपेक्षा की अपने स्वतन्त्र और स्वाधीन राज्य को सर्वोपरी उत्तम बताया।

प्रथम बार पराधीन भारत में स्वराज्य शब्द का पवित्र उद्घोष किया। भारतीयों में स्वभिमान जागृत करने के लिए स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्व-संस्कृति की घोषणा की और इसके लिए आर्य, आर्य भाषा और आर्यावर्त शब्दों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। आर्य जाति की पराधीनता युक्त घोर पतनावस्था पर उस युग पुरुष को अर्द्धरात्री को जाग कर रोते हुए देखा गया। सम्भव है कवि ने उसी स्वाधीनता के अग्रदूत परम राष्ट्र-भक्त के विषय में लिखो हो—

एक टीस सी दिल में उठती है,
एक दर्द जिगर में होता है।
हम रातों बैठ के रोते हैं,
जब पूरा आलम सोता है॥

पास में सोता हुआ सेवक अकस्मात् जाग गया तो उसके रोने का कारण पूछने और किसी चिकित्सक को बुलाने अथवा औषधि लाने को कहने पर उस महा-पुरुष ने यही कहा था कि "मेरे दर्द की दवा इन चिकि-त्सकों के पास नहीं अपितु बत्तीस कोटि आर्य जाति के हाथों में है। यदि आर्य जाति जाग जाए और अपने कन्धों से पराधीनता का जुआ उतार कर फैंक दे तो मेरा दर्द दूर हो सकता है।"

वास्तविकता तो यह है कि मेरे जैसे अकिंचन के द्वारा यह सम्भव ही नहीं कि उस महामानव युग पुरुष तथा युग प्रवर्तक के गुणों का वर्णन करने में समर्थ हो सकूं। यह संक्षिप्त रूपेण कुछ शब्द लिख दिए हैं। यदि पाठकों को इनसे कुछ लाभ हो सके, उनका हित-साधन हो सके और वह इनसे कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकें तो मेरी उपर्युक्त चर्चा को शब्दों में ग्रथित कर लेखबद्ध करना सार्थक होगा। महर्षि के ग्रन्थों, उनके जीवन चरित्र तथा उनके विषय में विश्व के सैकड़ों विचारकों के दृष्टिकोण को पढ लेने के पश्चात् मेरी तो यह दृढ़ धारणा और परिपक्व निश्चय है—

कहूंगा पीरो पैगम्बर से,
तुम रुतबे में हारे हो।
दयानन्द चौदहवी का चांद है,
और तुम सब सितारे हो॥

महर्षि दयानन्द और भारतीय नारी

लेखक—श्री विद्याबन्धु जी शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना

राष्ट्र का निर्माण समाजों से समाज का निर्माण परिवारों से होता है, ठीक उसी तरह परिवार का निर्माण भी नारी से होता है। नारी सृष्टि की परम सौन्दर्यमयी, सर्वश्रेष्ठ, अद्वितीय कृति है। नारी की आत्मा में प्रेम का फूल खिलता है। उसकी सेवा रूपी गंगा की धारा समग्र सृष्टि को अपने प्रेम रूपी शीतल जल से सिंचती हुई राम-भरत सम वीर योद्धा पुत्रादि को सहस्र वर्षों से प्रदान करती हुई चली आ रही है अथवा हमें यूं कहना चाहिए कि नारी इस प्रकृति की अद्वितीय बेटी है। नारी ही पति के चरित्र का निर्माण करने वाली है, तो सन्तान के लिए ममता, समाज के लिए शीलता, सम्पूर्ण विश्व के लिए दया तथा प्राणि मात्र के लिए, करुणा संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है।

एक समय था जब भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था इसी भारत में विदेशों से लोग शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे। भारत अपने ज्ञान का सन्देश पृथ्वी भर में प्रसारित किया करता था इसकी योग्यता प्रतिभा से सम्पूर्ण विश्व आकर्षित था। यही भारत विश्व गुरु, कहलाता था। इस भारत भूमि में जन्म लेने वाला हर कोई पंडित कहलाता था। इस भारत भूमि में जन्म लेने वाला हर कोई पंडित, धीर, वीर, गम्भीर, ज्ञानी, ध्यानी व योगी होता था। हर मानव अपने सत्कर्तव्यों द्वारा देवत्व को प्राप्त होता था। प्रत्येक, मानव परस्पर में विश्वास को संजोये रखता था। वैदिक युग में नारी पुरुषों की तरह ही अध्ययन किया करती थी। शास्त्रार्थों में भाग लिया करती थीं। शस्त्र धारण कर युद्ध भूमि में अवतरित होती थी। वेदों का नित्यप्रति स्वाध्याय करती थीं। पुरुषों की अपेक्षा नारी कहीं आगे ही बढ़ कर थीं उन दिनों नारियों की अनुपस्थिति में कोई भी शुभ कार्य नही होता था। कोई कार्य उनके बिना पूर्ण होना असम्भव तथा अशुभ माना जाता था। उस युग मे नारी को कितना ही आदर दृष्टि से देखा जाता था। कितना मान सम्मान दिया जाता था। जिसका वर्णन भी असम्भव लगता है। इस पुण्य भूमि की भारतीय देवियां श्रद्धारूपी उपास्य आराध्य मूर्तियां थी। उनका गौरव अपार था। गार्गी गान्धारी-मन्दोदरी, मैत्रेयी, तारा, सीता, अनसूया, कुन्ती, द्रौपदी, शकुन्तलादि सभी नारियों के सामने सम्पूर्ण विश्व हाथ जोड़ कर नतमस्तक खड़ा था।

भारतीय समाज में आज भी नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। घर परिवार, समाज, देश प्रायः सभी की उन्नति नारी की उन्नति पर ही निर्भर करती है। उसके आदर्श चरित्र हमे विद्वान, वीर, धीर योद्धा महारथी गम्भीर ज्ञानी ध्यानी एवं योगी बना देती है। जननी, धर्म पत्नी भागिनी तथा पुत्री इन चार रूपों से नारी हमें क्या नहीं सिखलाती है वहीं नारी हमें विद्या पढ़ाने में सरस्वती मां का रूप धारण करती है। वहीं नारी हमें शक्ति की प्रेरणा देने में दुर्गा का रूप धारण करती है। वही नारी हमें युद्ध भूमि में रण कौशल सिखलाने के लिए कैकेयी चित्रांगदा व झांसी रानी का रूप धारण करती है। वही नारी हमें

शास्त्रार्थ महारथी पण्डित बनाने के लिए गार्गी का रूप धारण करती है वही नारी हमें शस्त्र शास्त्र गणित ज्ञानादि के लिए विद्योत्तमा लीलावती प्रभृतियों का रूप धारण करती है। इन्होंने ही सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान से चकित कर दिया था। नारी ही हमारे चरित्र का निर्माण करने वाली है। वह हमें जन्म ही नही देती, अपितु प्रारम्भिक गुरु होती हुई सम्पूर्ण सुविधाओं का मार्ग दिखाती है। इसलिए इस भारतीय समाज में नारी को सर्वप्रथम स्थान देते हुए कहा गया है—"मातृ देवो भव"।

आज वह समय नहीं रहा जो वैदिक युग में था क्योंकि समय जो परिवर्तनशील है। यह समय किसी को भी नही छोड़ता सभी को अपने साथ लिए हमेशा चलते रहता है। इसी प्रकार नारी की मर्यादा भी बदलती गई मानव की एकता नष्ट होती गई फलतः विदेशी आक्रान्ताओ ने भारत की क्या दुर्दशा नही की। अरबों की सम्पत्ति लूटने के बावजूद भी उन्होने हमारी भारतीय नारियों, देवियो, ललनाओं की लाज पर हाथ लगाने से तनिक भी संकोच नही किया। उनके नग्न जिस्म देखने में बिल्कुल भी लज्जा शर्म महसूस नहीं किया। परन्तु हमारी भारतीय नारियां जो भारतीय रही। इसके प्रतिकार के लिए कितनी ही विरांगना, कितनी ही पद्मिनियां, कितनी ही झांसी की रानियां जैसी अपनी शक्ति को प्रबल कर घोर प्रतिकार किया। जिसके कारण उन्हें उनके सामने झुकना ही नही पड़ा अपितु घुटने भी टेक देने पड़े।

वैदिक युग में वही नारियां निःसंकोच भाव से समाज के, देश के, प्रत्येक कार्यों मे भाग लिया करती थी। यहां तक कि युद्ध भूमि में भी अवतरित हुआ करती थीं। परन्तु वही नारियां अपनी मान मर्यादा वीरता विदुषिता को अपने साथ लिए रिजर्वेशन रूपी टिकट का रूप धारण किए मानव के हर घर में आरक्षित सी होती गई। स्वच्छ वातावरण में विचरण करने वाली नारियों को घर में हमेशा बन्द रखा जाने लगा। प्रेरणादायिनि शक्ति के रूप मे पूज्या, आराध्या की अपेक्षा विलासियों के लिये तो नारी को गेंद के समान खेला जाने लगा था। उसे मानव भोग का साधन घर की दासी व पैरों की जूती तक समझ बैठा था। उन आराध्या देवियों के अनुदानों को भूल बैठा था। नारी की समस्या समाज में एक परेशानी का रूप धारण कर चुकी थी। उसे धीरे धीरे बिल्कुल नीच माना जाने लगा था। तुलसी दास जी जैसे ने भी नारी के विषय में इस प्रकार कहा था। "ढोल गंवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी"।

परन्तु कभी किसी ने यह भी सोचा। कि नारी में नख से शिखा पर्यन्त कौन कौन से गुण और क्या विशेषता विद्यमान है? यह वर्णन न करने के लिए तो कवियों तथा लेखकों की लेखनी बर्राकर ही रह जाती है।

कुछ समय बाद नारियों के गौरवहीन दुर्दशाओं की घटना घटने के बाद समय ने अपना करवट फिर बदला क्योंकि "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" के अनुसार स्वामी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का अवतरण हुआ। उन्होने नारियों की गौरवहीन दुर्दशाओं कों देख कर अपने अमूल्य आसू बहाये और समाज में खड़े होकर सभी को यह सूचित कि किया "यथेमां वाचं कल्याणीमावदानिजनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय स्वाय चारणाय च" जिस प्रकार परमात्मा द्वारा बनाया गया सूर्य, चन्द्र, जल, पृथ्वी सबके लिए समान है ठीक उसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि प्रायः समस्त प्राणियों के लिए वेद का पढ़ना पढ़ाना अथवा सभी समाज सम्बन्धी कार्य सब के लिए समान अधिकार है।

समाज में नारी ने आज पुनः प्रवेश किया है। वह अब किसी भी क्षेत्र में किसी से पीछे नहीं रह गई है। जन्मदाती से लेकर देश के रक्षा करने तक का कार्य भी अब अपने हाथों सम्भाल रही है। वह आज पुरुषों के साथ हाथ बढ़ा कर हर क्षेत्र में कार्य कर रही है तथा दक्षता को हर चरण में प्राप्त हो रही है।

(शेष पृष्ठ 36 पर)

दीपावली पर्व और यज्ञ पद्धति

दीपावली के शुभ अवसर पर 22-10-87 को सभी घरों व आर्य समाजों में यज्ञ किये जायें। आर्य पर्व पद्धति में श्री पं. भवानी प्रसाद जी ने जो यज्ञ पद्धति दी है वह आर्य बन्धुओं के लाभार्थ यहां दी जा रही है इस पद्धति के अनुसार यज्ञ में विशेष आहुतियां भी दी जायें

—सम्पादक

गृहकृत्य—यतः दीवाली का पर्व वर्ष भर में घरों की लिपाई पुताई आदि संस्कार के लिए विशेषतः उद्दिष्ट है, इसलिए स्वसुभीते के अनुसार दीवाली से पूर्व दिन के सायंकाल तक प्रचलित प्रथानुसार यह सब कार्य समाप्त हो जाना चाहिए। कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातःकाल सामान्य पर्व पद्धति में प्रदर्शित प्रकारानुसार यज्ञशाला व आवास गृह के तल का गोमय से पुनः लेपन करके स्वदेशीय नवीन शुद्ध वस्त्र परिधानपूर्वक सामान्य होम करके निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक से 38विशेष आहुतियां दी जाएं। स्थालीपाक नवान्न श्रावणी शस्य अन्न से बनाया गया पायस (खीर) हो। हवन के अन्य साकल्य में लाजा (नवीन धानों की खील) विशेषतः मिलाई जाएं।

(1) ओ३म् परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्त्स्वाहा॥

(2) मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः। आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धा पूता भवत यज्ञियासः स्वाहा॥

(3) इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य। प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः स्वाहा॥

(4) इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्। शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन स्वाहा॥

(5) यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथा ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु। यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम् स्वाहा॥ ऋ.मन्त्र 10।सू.18।मन्त्र1.5॥

(6) ओ३म् आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः। व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा स्वाहा॥ अथ. कां. 3, सू. 31, मन्त्र 8॥

(7) ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् स्वाहा॥

अथ. कां. 11। सू. 5। मन्त्र 19॥

(8) ओ३म् शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे। शतं यो नः शरदो अजीजादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा स्वाहा॥

(9) ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति। तेषां यो अज्यानिमजीजिमावहास्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वम् स्वाहा॥

(10) ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु। तेषामृतूनां शतशारदानां निवात एषामभये स्याम स्वाहा।'

(11) इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः। तेषां वय सुमतौ यज्ञियानां ज्योग् जीता अहताः स्याम स्वाहा॥

(म. ब्रा. 2।1।9-12) गोभिलीय गृह्य सूत्र, प्रपाठक, खण्ड 7, सूत्र 10-11॥

(12) ओं पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः। तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा॥

(13) ओं यन्मे किंचिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्। तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतःशरदः शतम् स्वाहा।

(14) ओं सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यं श्रीःप्रजा-मिहावतु स्वाहा । इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥

(15) ओं यस्या भावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम् । इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा । इदमिन्द्रपत्न्यै, इदन्न मम ।

(16) ओं अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतो अतन्द्रिता । खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा । इदं सीतायै, इदन्न मम ॥

(17) ओ३म् सीतायै स्वाहा ।

(18) ओं प्रजायै स्वाहा ॥

(19) ओं शमायै स्वाहा ॥

(20) ओं भूत्यै स्वाहा ॥ पार कांड-2 । कण्डिका 17 । मन्त्र 7, 9, 10 ॥

(21) ओ३म् व्रीहयश्च मे यवाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा ॥

यजु. अध्या. 18, मन्त्र 12 ॥

(22) ओ३म् वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः । वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु स्वाहा ।

(23) ओ३म् वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति । वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम् ॥ स्वाहा ॥

(24) ओं वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति । वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा वाजपतिर्भवेयम् ॥ स्वाहा ॥यजुर्वेद, अध्याय 18,मन्त्र 32, 33, 34, 35, ॥

(25) ओ३म् सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुम्नयौ ॥ स्वाहा ॥

(23) युनक्त सीरा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् । विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमायवन् ॥ स्वाहा ॥

संख्या 1 से 7 तक 7 मन्त्र दीर्घायु आदि वर्णन परक होने से ऋग्वेद तथा अथर्ववेद से लिए गए हैं । संख्या 12 से 20 तक 9 मन्त्र महर्षि दयानन्द कृत संस्कार विधि ग्रन्थ पृष्ठ 179 स. 1947 वी. के प्रयाग मुद्रित संस्करण से उद्धृत किए गए हैं । उक्त ग्रन्थ में इनका विनियोग 'नवसस्येष्टि' तथा संवत्सरेष्टि' में किया गया है और पारस्कर गृह्यसूत्र तथा अन्य गोभिलीय, मानव तथा आपस्तम्बीय गृह्यसूत्रों में नवसस्येष्टि (नवान्नेष्टि) तथा सीता यज्ञ के कृत्य बिल्कुल भिन्न-भिन्न वर्णित है और उनमें किसी गृह्यसूत्र में उक्त 9 मन्त्रो का विनियोग नवसस्येष्टि में नही लिखा तथापि आर्य समाज के महर्षि दयानन्द की प्रामाणिकता को लक्ष्य में रख कर इन 9 मन्त्रों का विनियोग नवसस्येष्टि में ऊपर लिखा गया है । वर्णनपरक होने से नवसस्येष्टि के उपयोगी समझ कर मेरे संगृहीत हैं । शेष सब मन्त्रों का विनियोग नवान्नेष्टि में पारस्करादि गृह्य सूत्रों में दिया हुआ है ।

---

(27) लाङ्गलं पवीरवत् सुशीमं सोमसत्सरु । उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीबरीं च प्रफर्व्यम् स्वाहा ॥

(28) इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु । सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥ स्वाहा ॥

(29) शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान् । शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै स्वाहा ॥

(30) शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् । शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय स्वाहा ॥

(31) शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम् । यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुपसिञ्चतम् ॥स्वाहा ॥

(अथर्व. कां. 3 । सू. 17। मं. 1.7॥

(32) सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव । यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः स्वाहा ॥

(33) घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः । सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना ॥ स्वाहा ॥

अथर्व. कां. 3 । सू. 17 । मन्त्र 8-9 ॥

(34) इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा । इदमिन्द्राग्निभ्याम् इदन्न मम ॥

(35) विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य इदन्न मम ॥

(36) द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा । इदं द्यावापृथिवीभ्याम् इदन्न मम ॥

(37) स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वाश्च देवः पृतना अभिष्यक् । सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्येह्यजरं न आयुः स्वाहा ॥

(38) यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ॥ पार. 1।2।10

पूर्णाहुति के पश्चात् खीलों और मिष्ठान के (बताशे आदि) हुतशेष को यज्ञमण्डप में उपस्थित जनों में वितरण करके भक्षण किया जाए।

अपराह्न में प्रचलित प्रथानुसार इष्ट मित्रों को मिष्टान्न के उपायन (भेंट) दिये जाएं। सायंकाल के समय आवास गृहों को सुचारु रूपेण सजा कर स्वसामर्थ्यानुसार दीपमाला की जाए।

सामाजिक कृत्य अपराह्न वा रात्रि में स्वसुभीते के अनुसार समाज-मन्दिर आदि में एकत्र होकर आर्य समाज के संस्थापक ऋषि के गुणानुवाद पर भाषण लेख और कविताओं का पाठ किया जाए तथा इसी विषय पर मधु संगीत हो। इस अवसर पर दयानन्द मिशन फण्ड के लिए चार आना वा अधिक प्रत्येक पुरुष दान देवे।

(33 पृष्ठ का शेष)

भारतीय नारियों के इस उत्साह पूर्ण उन्नतिशील कार्य को देख कर हमें विश्वास करना चाहिए कि वास्तव में भारतीय नारियां अपने पूर्व गौरव को प्राप्त हो जाएंगी, अवनति से उन्नति की मार्ग पर अवश्य ही आरूढ़ हो जाएंगी। किन्तु नारियो के वर्तमान रूप को देख कर हमारे मन में बड़े दुःख के साथ यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि आज की नारियां विदेशी परम्परा को अपनाना तो अपनी उन्नति का सर्वश्रेष्ठ साधन समझ बैठी हैं। वे बहुत ही श्रद्धा के साथ ' विदेशी वस्तुओं को अपनाने लगी हैं। सम्प्रति जब नारियां अपने शरीर पर अनावश्यक चमकीली वस्तुओं तथा पारदर्शी पतले वस्त्रों को धारण कर अपने अमूल्य शरीर का प्रदर्शन करती हुई जब उन शहरों के राजमार्गों पर बड़े शान शौकत के साथ चलती हैं। तब भारतीय संस्कृति की मर्यादा अपनी आंखों से आंसू बहाती हुई सिर झुका कर आंखें बन्द कर लेती है। वर्तमान इस प्रकार के साज सज्जा से नारी पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उद्यत तो रही हैं। अपने आपको विलासमयी बनाने जा रही हैं। इस प्रकार के कार्य यदि हमेशा बढ़ते रहे तो व्यभिचार की उन्नति कोई असम्भव नहीं। अतः आज नारी जब हर क्षेत्र में उन्नति के शिखर में आरूढ़ होती ही जा रही है। तब उन्हें अवश्य ही अपने आचरण, चाल-चलन, व्यवहारादि को उत्तम तथा महत्वपूर्ण बनाना पड़ेगा। उसे आदर्श की मूर्ति बननी पड़ेगी त्याग और सेवा भावना के द्वारा दूसरों को प्रेरणा देनी होगी क्योंकि यह सृष्टि नर-नारी के संयुक्त से ही उन्नति को प्राप्त होती है। इसलिए भारत की हर उन्नति के लिये नारी को ही क्या प्रत्येक प्राणिमात्र को अपने सत्कर्त्तव्यों के प्रति हमेशा जागरूक रहना पड़ेगा। तभी देश की एकता और अखण्डता सम्भव हो सकेगी, जिससे कि हम आनन्द के साथ गौरव पूर्ण सभी एक साथ यह कहने में समर्थ हो सकेंगे कि "हम किसी से कम नही।"

ऋषि दी योग शक्ति

लेखक—श्री पं दौलतराम जी शास्त्री अमृतसर

श्री पं. दौलतराम जी शास्त्री अमृतसर वालों ने पंजाबी भाषा और देवनागरी लिपि में एक भावपूर्ण कविता लिखी है जो कई सज्जनों ने बड़ी पसन्द की है। पाठकों के लाभार्थ उसे हम यहां दे रहे हैं। —सम्पादक

मिल सारयां पंडयां कट्ठ कीता, जदों सामने आप न बोल सके,
आओ इस पर कोई कलंक लगाइये, किसी बहस दे नाल न तोल सके।
न ही जोर दे नाल ऐ बस्स हुन्दा, कोई सामने अब न बोल सके,
भीमसेन आया साडे वासो एह, तोपां दगदियां विच्च न डोल सके।
साडा दिल कहंदा झूठ नहीं रत्ती, कर लओ यकीन इस बान दा जे,
इस दा बिजली दे नाल दिमाग बणया, कद काठ सारा इस्पात दा जे।1।

2

सारे थक हारे इम्तहान करके, इसदे पास जेहड़ा पंडित ढुक जादा,
अद्धा राह विच रुकदा मुक जांदा, बाकी सामने जाके सुक जादा।
कई पंडिता नूं मोहरां लोभ दित्ता, जिसनूं लैण जाइये अन्दर लुक जांदा।
दस-वीह आये ओत्थो हार जाके, अखी नीर जादा मुंह तो थुक जांदा।
इस वास्ते कोई उपाय सोचो, किसी तरहां ऐत्थों साधू चला जावे,
एह निकले कोई कलंक लैके, मुड़के कदी न एत्थे चला आवे।2।

3—वेश्या

इक वेश्या पास जा हत्थ जोड़े, आखन हत्थ तेरे साडी पत्त बीबी,,
पिच्छों होर भी करांगे बहुत राजी, इक सैंकड़ा पेशगी रख बीबी,
एह साध कहंदा साडा अन्त आया, क्या आखिये हो गयी अत्त बीबी,
जिसदे नाल करदा बाबा चार गल्लां, ओह मार जादा सानूं लत्त बीबी,
इसदे पास जाके करीं कम्म एन्ना, किसी तरह कोई झगड़ा पा देई,
एस साधु ने मैंनू मखौल कीता, चीकां मारदी शोर मचा देईं।3।

4—खुशामद व प्रलोभन

तेरी चीक सुनके टोली पंडयां दी, अगली गल्ल नूं झट सम्भाल लेसी,
फेर देखी तूं लांभे खड़ी होके, अद्धी घड़ी च होऊं कमाल छेती,
तेरे सामने करागे चाल छिल्ली, नस्सी जाएगा होके निढाल छेती।
बीबी मा तू ही साडा पे तूं ही, जेकर गले तो लत्थे जवाल छेती
तैनूं समझांगे तरह धियानियां दी, असां आख दे हां कसम नाल बीबी,
सारी उमर तूं भी मौज नाल जीवी, अगर रही साडी रोटी दाल.बीबी।4।

5—कवि की आह

पैसे चुक के जेब विच पाए, बड़े हौसले नाल तैयार होके,
सरूपनखा चली राम जीतने नूं, ए पर मुड़ेगी बजल खुआर होके,
लालच नाल समुन्दर च कूद बैठी, देखो किस तरह आएगी पार होके।
ओत ऋषि दी देख के मोम हो गई, घरों आई जो तेज तलवार होके।
जदों ही मुनि दे कोल आई, तुरन्त अन्दरों ओहदे सवाल उठाया,
सारी उमर बीती पापां नाल तेरी, हुन ऋषि ते भैड़ा ख्याल उठया।5।

6

चल पवेगा करां च कोहड़ तेरे, मोइये अज्ज समुन्दर नूं सोण लगी,
उल्टी पच्छाते सूरज चढ़ान लगी, फूंका मार हिमालय उड़ान लगी।
जे रिहा नहीं दीन ते धर्म तेरा, कान्हू सन्त नूं कलंक लगौण लगी,
महामारी भूंचाल तूफ़ान हो सन, हाकां मार के प्रलय बुलौण लगी।
पच्छे मार छडन भावें बढ्डन छडन, नहीं चुकना मैं ओस चन्द उत्ते,
एह पौसे की चीज, सर्वस्व 'मेरा, वार दियांगी मैं दयानन्द उत्ते।6।

7

योगी ने वेखया खड़ी अग्गे, कोई शकल तां सूरतों जान है,
रूप रंग उसदा भावें चन्द वर्गा, उत्ते बछल दी पई मुरझानगी, है।
तारां हिल्लियां चूंटियां डिल्लियां ने, अते मारी खिलावदी खानगी है।
समझो मार खा के पश्चाताप कोलों, अज्ज पाप दी होई रवानगी है।
टुट्ट गई एहदी स्कीम सोची, विघ्न पै गया ते चोखी बट्ट लग्गी,
मेरी आत्मा अन्दरों बोलदी है, जीवन मोड़ दी डाढ़ी सट्ट लग्गी।7।

8

यती ने पुच्छया दस्स देवी, एह आवने दा कोई ढंग नाहीं,
इक समय भैड़ा दूजे कलड़ी तूं, सत्संगनी वी कोई संग नाहीं।
मैनूं नजर आंदा तू है डरी होई, तन्दुरुस्त वर्गा तेरा रंग नाहीं।
इक हिचकियां दूसरे साह चढ़या, तीजे जिस्म कंबे ठीक अंग नाहीं,
क्या किसी ने मारया कुट्टया है, गुस्सा खा के घरां तों नस्स आई,
या कि दुष्ट मालक पल्ले पै गया है, अथवा मिली कुपत्तड़ी सस्स माई।8।

9—वेश्या

महाराज मैं आई सी अज्ज बनके, बाहर खड़े हैं मैनूं मचौन वाले,
बनके सपणी आई सी डंगने नूं, ओधर छिपे हुन बीन वजौण वाले,
आके एस जमीन दी हद अन्दर, भाव रहे न पाप कमौण वाले,
अज्ज परख लीता सच्चे सन्त हुन्दे, मन्दे लोहे नूं सोना बनौण वाले।
ऊंचे साह लैंदी हंझू डोलदी ने, जेबों कढके नोट बगाह सुट्टे।
सच्च मनना नोटां दा रूप करके, सारे जन्म दे परे गुनाह सुट्टे।9।

10—ऋषि

ऋषि आखया गई दा फिक्र छड्डो, अगे वास्ते भला विचार करिये,
शुद्ध चित्त होया अन्दरों मैल निकली, बाकी जिन्दगी विच सुधार करिये,
पतित पावनी माई गायत्री दा, करो आप ते अगे प्रचार करिए।
जेकर अपना आप सुधारिया है, बाकी बीबियां दा बेड़ा पार करिये,
एह आखके देवी दे संग जाके, भैड़े खतरे ते पार लंघ आए,
फिक्का रंग उतारया पाप वाला, पक्का धर्म दा रंग चढ़ा आए।10।

11—नानी मरी

नानी मरी उडीक दे पंडया दो, घटना वेखदे ही चेहरे फक्क हो गये,
आखन पैसे भी साडे न हक्क हो गए, डिंगे मक्क हो गए-टुट्टे नक्क हो गये।
मचदे आए से तपे तन्दूर वर्गे, हुन मुड़न वेले ठंडे चक्क हो गये।
डोले जिन्हां दे मोटे शरीर वर्गे, अधी घड़ी च सुक्क के सक्क हो गये।
एन्हूं आखदे हुन सच्ची योग शक्ति, योगी कोले नूं हीरा बनौण वाले,
होर धोमड़े असां हजार डिठे, टिकटां नाल तमाशा विखौण वाले॥11॥

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद

लेखक—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार, नई दिल्ली

साम्राज्यवाद की पहिली सीढ़ी राष्ट्रवाद है। इसी से महर्षि दयानन्द ने अपने देश के लिए अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना करते हुए जो आदेश दिया है, वह यह है कि "मनुष्यैर्द्वाभ्यां प्रयोजनाभ्यां प्रवर्तितव्यम्। प्रथमं अत्यन्तपुरुषार्थशरीरोन्याभ्यां चक्रवर्तीराज्यश्रीप्राप्तिकरणम्। द्वितीय सर्वा विद्याः पठित्वा तासां सर्वत्र प्रचारीकरणम्।" इसका अभिप्राय यह है कि "मनुष्य को अपने सामने सदा दो प्रयोजन रख कर उनकी पूर्ति के लिए अपना सब व्यवहार करना चाहिए। पहिला यह कि अत्यन्त पुरुषार्थ करके और शरीर को स्वस्थ रख कर वह चक्रवर्ती राज्यरूपी श्री का सम्पादन करे और दूसरा यह है कि वह सब विद्याओं को पढ़ कर सारे जगत में उनका प्रचार करे।" यजुर्वेद के पहले अध्याय के छठे मन्त्र की व्याख्या में महर्षि ने ये पंक्तियां लिखी हैं। राजनीतिक भावना और स्वराज्य की स्थापना को विद्या प्रचार या धर्म प्रचार से पहिला स्थान दिया गया है। मनुष्य जीवन के लिए निर्धारित किए गए कार्यक्रम में उन्होंने उसका पहिला स्थान रखा है। महर्षि दयानन्द के हृदय में स्वदेश का, मातृ भूमि का, आर्यावर्त का सर्वोपरि स्थान था। आज वह भावा- आवेश में आकर, जनता की धार्मिक भावनाओं को उभारने के लिए और श्रोताओं में तालियां पिटवाने के लिए यह कह जाते हैं कि उनके एक हाथ में यदि स्वराज्य और दूसरे में वेद हो, तो वे स्वराज्य को छोड़ देंगे, लेकिन वेद को नहीं, क्योंकि वेद से वे स्वराज्य हासिल कर सकते हैं और स्वराज्य से वेद उन्हें नहीं मिल सकेगा। ऐसा कहना महर्षि दयानन्द की भावना, कल्पना, आदेश और उपदेश के सर्वथा विपरीत है। उनकी नजरों में 'स्वराज्य' की कीमत 'वेद' से किसी भी अंश में कम न थी। उनके लिए स्वराज्य एवं चक्रवर्ती साम्राज्य का स्थान पहिला और वेद अथवा विद्या का दूसरा है। उनको देश प्रेम या राष्ट्र भक्ति की भावना इतनी पवित्र, उत्कृष्ट और सर्वव्यापी थी कि उनके सारे जीवन में और जीवन के समस्त कार्यों में मनुष्य की देह में रुधिर की तरह समाई हुई थी। "सत्यार्थ प्रकाश" के ग्याहरवें समुल्लास में वे लिखते हैं कि "यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। ...जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।" ग्यारहवां समुल्लास खण्डनात्मक है और ये पंक्तियां भी खण्डनात्मक प्रकरण में से ही ली गई हैं। प्रार्थना समाजियों और ब्राह्मसमाजियों की आलोचना करते हुए वे कितनी वेदना और व्यथा के साथ यह लिखते हैं कि "इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है...भला जब आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं,

तब अपने माता पिता व पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना और एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंग्लिश भाषा पढ़ के पण्डिताभिमानी हो कर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना, मनुष्यों का स्थिर और वृद्धि कारक काम क्यों कर हो सकता है ?" स्वदेश, स्वभाषा तथा स्वधर्म से प्रेम और अपने पूर्वजों के लिए गौरव एवं अभिमान इन पंक्तियों के एक-एक शब्द में झलक रहा है।

कितने दुःख व्यथा और वेदना के साथ वे लिखते हैं कि "विदेशियों के आर्यावर्त में राज होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयम्बर विवाह विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है।" जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।" ...आपस की फूट से ही कौरव, पांडव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबो मारेगा। उसी दुष्ट गोत्र हत्यारे, स्वदेश, विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चल कर दुःख बढ़ा रहे है । परमात्मा कृपा करें कि यह राज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाए।"— इसी प्रसंग में ऋषि लिखते हैं कि "जब तक एक मत एक हानि लाभ, एक सुख दुःख परस्पर न मानें, तब तक उन्नति होना कठिन है।" ये पंक्तियां दसवें समुल्लास के भक्ष्याभक्ष्य और आचार अनाचार के प्रकरण में से ली गई है। इसी प्रकरण में समुद्र यात्रा की चर्चा करते हुए ऋषि ने लिखा है कि "क्या बिना देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में राज्य व व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है ? जब स्वदेश में ही स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेशी में व्यवहार व राज्य कर, तो बिना दुःख और दारिद्र्य कुछ भी नहीं हो सकता।" ...इसी प्रसंग में आगे वे कहते हैं कि "इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते, विरोध करते कराते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगा कर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।" दूसरे देशों में द्वीप द्वीपान्तर में और देश देशान्तर में राज्य एवं व्यापार करने स्वदेश को समृद्ध एवं वैभवशाली बनाने की भावना ऋषि दयानन्द के हृदय में किस प्रकार भरी हुई थी,—यह ऊपर की पंक्तियों से बिल्कुल स्पष्ट है। उस पर किसी प्रकार की टीका टिप्पणी करने की जरूरत नहीं है।

स्वराज्य की कल्पना—

ऋषि दयानन्द की स्वराज्य कल्पना कितनी सुन्दर, उत्कृष्ट और विशुद्ध है, यह भी उनके लेखों से स्पष्ट है। आज से 60-70 वर्ष पहले जब स्वामी जी ने स्वराज्य, साम्राज्य और अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की चर्चा अपने लेखों में की थी, तब 'स्वराज्य' का विचार भी किसी के दिमाग में पैदा न हुआ था। उन्होंने कहा—"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराए का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

देशवासियों के संगठित हुए बिना राष्ट्रीय भावना न पनप सकती है और न सुदृढ़ हो सकती है। बिना उसके 'स्वराज्य' का सम्पादन नहीं किया जा सकता। दूसरा भाव यह है कि 'स्वराज्य' का स्थान 'सुराज्य' नहीं ले सकता। बल्कि अपना राज्य कुछ खराब भी क्यों न हो, वह परायों, विदेशियों और आक्रान्ताओं के सुराज्य यानी अच्छे राज्य से भी कहीं अधिक अच्छा है।

(शेष पृष्ठ 42 पर)

अतुलनीय महापुरुष महर्षि दयानन्द

लेखक—श्री पिशोरी लाल जी प्रेम ददाहू (रेणुका) हिमाचल प्रदेश

संसार में समय समय पर अनेक महापुरुष हुए हैं। मैं हृदय से सबका सम्मान करता हूं। ऐसे महापुरुष भी हुए जिन्होंने अपने हत्यारों को भी क्षमा कर दिया था। मैंने अधिकांश महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े हैं। परन्तु किसी महापुरुष का ऐसा जीवन चरित्र न मैंने पढ़ा न सुना जिसने अपने हत्यारे को न केवल क्षमा किया, अपितु उसे बचाने के लिए अपने पास से धन दे कर उसे किसी दूर देश में भागने के लिए विवश किया हो।

महर्षि को कई बार विष दिया गया, परन्तु वह योग क्रिया द्वारा विष को बाहर निकाल देते थे। एक बार एक हत्यारा पकड़ा गया, परन्तु महर्षि ने यह कर उसे मुक्त करा दिया कि मैं संसार को मुक्त कराने आया हूं बन्धी बनाने नहीं आया।

अन्तिम बार जोधपुर में महर्षि को जगन्नाथ ने अतिघातक विष दूध में मिला कर दे दिया। थोड़ी देर में उनके पेट मे दर्द हुआ, तब उन्हें विष का सन्देह हुआ। महर्षि ने जगन्नाथ को बुला कर पूछा। जगन्नाथ ने भयभीत होकर कांपते हुए अपना अपराध स्वीकार कर लिया और महर्षि के पांव पकड़ लिए। महर्षि ने उसे उठाया धैर्य दिया और कहा जो होना था वह हो चुका। मुझे अपनी मृत्यु की चिंता नहीं परन्तु मेरा वेद भाष्य का कार्य अधूरा रह जाएगा। महर्षि ने उसे बचाने के लिए कुछ धन देकर उसे कहा कि अब तू बहुत दूर कहीं भाग जा नहीं तो तेरा बचना कठिन है। वाह रे दयालु दयानन्द कितना विशाल हृदय था तुम्हारा क्यों न संसार के लोग श्रद्धा से आपके समक्ष सिर झुकाएं। क्या यह क्षमाशीलता दया और अहिंसा की पराकाष्ठा नहीं।

मनुष्यों के लिए तो देव दयानन्द, दया के अवतार थे ही किन्तु दयानन्द की दया तो पशुओं के लिए भी अतुलनीय थी। एक बार एक बैलगाड़ी दलदल में फंस गई। गाड़ीवान बैलों को जोर जोर से मारता रहा। परन्तु बैल पूरी शक्ति लगा कर भी गाड़ी दलदल से न निकाल सके। यह दृश्य देख कर दयालु दयानन्द ने बैलों को गाड़ी से खुलवा दिया और स्वयं गाड़ी को खेंच कर दलदल से निकाल लाए।

महर्षि दयानन्द के वैदिक धर्म प्रचार और पाखण्ड के खण्डन से उत्तेजित हो कर राव कर्ण सिंह तलवार निकाल कर महर्षि को मारने के लिए आगे बढ़े। महर्षि ने उनसे तलवार छीन कर दो टुकड़े कर दिए और ललकार कर कहा—यदि धर्म चर्चा करनी हो तो मुझ से करो। यदि लड़ना है तो किसी राजपूत से जा कर लड़ो, साधू से क्या लड़ना। कर्ण सिंह लज्जित हो कर चले गए।

सरदार विक्रम सिंह ने महर्षि के ब्रह्मचर्य के विषय में जानना चाहा। महर्षि उस समय मौन रहे। परन्तु जाते समय जब विक्रम सिंह अपने दो घोड़ों के रथ पर बैठ कर घोड़ो को हाकने लगे तो घोड़ों के पूरा जोर लगाने पर भी रथ अपने स्थान से न हिल सका। विक्रम सिंह ने पीछे मुड़ कर देखा तो आदित्य ब्रह्मचारी देव दयानन्द ने पीछे से रथ को पकड़ा हुआ था। विक्रम-सिंह को प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया, वह महर्षि के समक्ष नतमस्तक हो गया।

कड़ाके की ठण्ड में महर्षि ने गंगा के किनारे केवल एक लंगोटी में कई रातें व्यतीत की। क्या बिना तक ब्रह्मचर्य का तेज और बल न हो ऐसे कार्य हो सकते हैं?

महर्षि ने अनेक मतवादियों के मूल ग्रन्थों को पढ़ा। उनकी आलोचना तथा वैदिक धर्म की पुष्टि में सत्यार्थ प्रकाश आदि कई ग्रन्थ लिखे। ऋग्वेद का 7/8 भाग और सम्पूर्ण यजुर्वेद का भाष्य किया। स्थान-स्थान पर घूम-घूम वेद प्रचार किया। शास्त्रार्थ किए, व्याख्यान दिए, कइयों को पढ़ाया भी। अल्प समय में महर्षि ने अकेले इतना अधिक कार्य किया जिसको सैकड़ों मनुष्य मिल कर भी नहीं कर सकते। बुद्धि को आश्चर्य चकित करने वाले ऐसे अनुपम कार्य केवल एक आदित्य ब्रह्मचारी ही कर सकता है।

महर्षि का आत्मिक बल भी अतुलनीय था। एक ओर समस्त संसार, तथा एक ओर अकेला लंगोट बन्द साधु जो पाखण्ड खण्डनी पताका लहराते हुए कहता है। चाहे मुझे तोप के मुंह के आगे बांध कर रख दो, चाहे मेरी उंगलियों की बत्तियां बना कर जला दो, परन्तु मैं सत्य धर्म प्रचार कभी नहीं छोड़ सकता। अन्तिम घातक विष से महर्षि के समस्त शरीर पर फोड़े निकल आए। डाक्टर आए देख कर आश्चर्य चकित रह गए। उंगलि मुंह में दबा ली। इतने भयानक कष्ट में कोई जीवित नहीं रह सकता। परन्तु इस भयानक कष्ट में भी गुरुवर दयानन्द शान्त चित थे। मुख मण्डल पर तेज तथा ओज बरस रहा था। महर्षि ने वेद मन्त्रों का उच्चारण किया "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" इतना कहा और इस नाशवान शरीर को त्याग कर परमपिता प्रभु की गोद में चले गए। महर्षि के अन्तिम समय के इन क्षणों में उनके आत्मिक बल और ईश्वर के अटूट विश्वास को देख कर मुनिवर गुरुदत्त जो कि पक्के नास्तिक थे वह सच्चे आस्तिक बन गए। गुरुदत्त ने देखा इतने घोर कष्ट में, भयंकर पीड़ा में, मृत्यु सामने खड़ी है। फिर भी दयानन्द ईश्वर का चिन्तन करते हुए कहते हैं "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" अवश्य कोई शक्ति ऐसी है जिसे ईश्वर कहते हैं। मुनिवर गुरुदत्त उच्चकोटि के विद्वान् तथा दार्शनिक तो थे ही केवल ईश्वर विश्वास की कमी थी। वह भी पूरी हो गई। मुनिवर गुरुदत्त के मन में ईश्वर विश्वास की ज्योति जल उठी और उसमें उसकी सब शंकाएं भस्म हो गई। दया-नन्द का जीवन तो परोपकार के लिए था ही परन्तु उनकी मृत्यु ने भी गुरुदत्त को ईश्वर और वेदों का भक्त बना दिया।

महर्षि में अनेक गुण थे इनका वर्णन करना कठिन है। कहते हैं गुणों में एक दोष था। वह दोष यह था कि सब गुण एक मनुष्य में इकट्ठे नहीं हो सकते थे। परन्तु महर्षि दयानन्द में सब गुणों ने इकट्ठे होकर अपने इस दोष को हटा दिया। तात्पर्य यह कि कोई भी गुण ऐसा नहीं है जो महर्षि में नहीं था। यथार्थ में महर्षि दयानन्द गुणों की खान थे।

(40 पृष्ठ का शेष)

मतमतान्तर के आग्रह से रहित, जैसा कि महारानी विक्टोरिया की घोषणा को लेकर अंग्रेज अपने राज्य को बताते हैं। अपने पराए का पक्षपातशून्य, जैसा कि अपनी अदालतों के न्याय की दुहाई देते हुए अंग्रेज अपने शासन को कहते हैं और प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ, जैसा कि अपनी हकूमत के बारे में आम तौर पर अंग्रेज दावा करते हैं—महर्षि कहते हैं कि विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। कोई कितना ही करे जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। कितनी सुन्दर कल्पना है, कितनी उज्ज्वल भावना है और कैसा उत्कृष्ट यह राष्ट्रवाद है? अंग्रेजी राज्य को इस कसोटी पर कसने की जरूरत नहीं। स्वामी दयानन्द की अनुयायी इस या किसी भी विदेशी राज्य का भक्त नहीं बन सकता। यदि वह उसका भक्त है, तो वह अपने को स्वामी दयानन्द का अनुयायी और सच्चा आर्य समाजी नहीं कह सकता। राज भक्ति और देश भक्ति में से यदि चुनाव करना होगा, तो निश्चय ही आर्य समाजी को ऋषि की भावना के अनुसार देशभक्ति को ही चुनना या अपनाना होगा। राज भक्ति को चुन कर या अपना कर वह ऋषि भक्त भी तो नहीं बन सकता।



अपने प्यारे बच्चों
के स्वास्थ्य के लिये
अपना आजमाया हुआ
मोगा शहर का मशहूर
पीमार्का
शुद्ध सरसों का
तेल
प्रयोग करें।
TRUTH
2239
2303
देवी दास गोपाल कृष्ण प्रा. लि. आयल मिल्ज़, मोगा.

टेलीफोन 74256

पंजि. नं. N.W/JL 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 30, 16 कार्तिक सम्वत् 2044 तदानुसार 1 नवम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

जगद्गुरु शंकराचार्य और उन के मठ

लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती—दिल्ली

'आर्य मर्यादा' के 6 सितम्बर 87 अंक में 'श्री शंकराचार्य के सिद्धान्त और उन की परम्परा' शीर्षक से श्री वीरेन्द्र जी का एक सामायिक लेख प्रकाशित हुआ है। इस लेख में तीन बातो पर प्रकाश डाला गया है—

1. आदि शंकराचार्य का 8वी शताब्दी मे प्रादुर्भाव।

2. काची कामकोटि पीठ का आदि शंकराचार्य के देहान्त के पश्चात स्थापित होना।

3. निवर्तमान शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती।

1—पाश्चात्य विद्वानो एवं तदनुयायी विद्वानो ने भारत के सम्पूर्ण इतिहास को अधिक से अधिक पाच हजार वर्ष की अवधि में सीमित करने का प्रयास किया है। तदनुसार ही उन्होंने इतिहास सम्बन्धी तारीखो का निर्धारण किया है। भारतीय वाङ्मय के अनुसार वे सभी तिथिया अशुद्ध है। आचार्य के मठो मे प्रत्येक मठ के आज तक के शंकराचार्यो की वंशावली तथा उन के पीठाध्यक्ष काल का निर्देश उपलब्ध है। उस के अनुसार शारदापीठ मे उपलब्ध आद्य शंकराचार्य का विवरण इस प्रकार है—

जन्म—वैशाख शुक्ला पचमी, 2631 युधिष्ठिर सवत्।

उपनयन—चैत्र शुक्ला नवमी, 2636 यु. स.।

सन्यास—कार्तिक शुक्ला एकादशी, 2639 यु. स।

शिक्षा—(गोविन्दपाद से) फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, 2630 तक।

ग्रन्थ रचना—(बदरिकाश्रम में) ज्येष्ठ वदी अमावस्या 2646 तक।-तत्पश्चात् विभिन्न मठों की स्थापना, शास्त्रार्थ आदि।

देहावसान—कार्तिक पौर्णमासी 2663।

इस विवरण के अनुसार आचार्य शंकर का आयुष्मान 32 वर्ष, 6 मास, 10 दिन होता है। शंकर का जन्म 2631 युधिष्ठर सवत् बताया है। युधिष्ठर सवत् कलि सवत् से 38 वर्ष पूर्व आरम्भ होता है। इस का प्रारम्भ युधिष्ठर का राज्याधिरोहण काल है। 36 वर्ष युधिष्ठर ने राज्य किया। उस के दो वर्ष बाद कलि का आरम्भ होता है। कलि सवत् का प्रारम्भ ईस्वी सन् से 3102 वर्ष पूर्व होता है। इसमे 38 जोड़ने पर युधिष्ठर सवत् का प्रारम्भ काल ईसा से 3140 वर्ष पूर्व बनता है। इस में से शंकर के जन्मकाल का 2631 घटाने (3140-2631=509) पर शंकर का जन्म काल ईसा से 509 वर्ष पूर्व सिद्ध होता है। शंकर के पाचो (द्वारका, काचीकाम कोटिपीठ, गोवर्द्धन, ज्योतिर्मठ, शृङ्गेरी) मठो मे अद्यावधि सुरक्षित सामग्री तथा सम्पूर्ण वैदिक, जैन बौद्ध साहित्य मे उपलब्ध प्रमाणो के आधार पर शंकर का प्रादुर्भाव ईसा पूर्व 509 वर्ष में सिद्ध होता है। विस्तृत जानकारी के लिए देखें—

आचार्य उदयवीर शास्त्री कृत वेदान्तदर्शन का इतिहास।

2—उपर्युक्त सामग्री पर आधारित हमारा 'दि ऐज आफ शंकरा'।

3-दि ऐज आफ शंकरा बाई टी एस नारायणा, आठवी शताब्दी की घोषणा अनुमानों और पूर्वकाल की सम्बन्धित अशुद्ध तिथियो पर आधारित है। उस का निर्धारण करने, वाले विद्वानो के लेखो में, मे, बी, परोबेबली, पौसिबली, जैसे शब्दों की भरमार है, जबकि मठो मे सुरक्षित रिकार्ड में रोजनामचे की तरह एक एक दिन का हिसाब लिखा है।

अलबत्ता भारतीय साहित्य के आधार पर 2-3 अन्य महत्त्वपूर्ण तिथि क्रमो का उल्लेख भी उपादेय होगा।

महात्मा बुद्ध का जन्म-निर्वाण सवत् से लगभग 1800 वर्ष पूर्व।

मौर्यराज्य का प्रारम्भ-लगभग 1500 वर्ष पूर्व।

2- काची मठ कैसे बना-आद्य शंकराचार्य कामाक्षी देवी के प्रति अत्यधिक निष्ठावान् थे। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे वह काची में निवास करते थे। यद्यपि उन्होंने काची मे विधिवत् किसी मठ की स्थापना नही की, पर अनेक वर्षों तक शिष्यो तथा भक्तजनो सहित काची मे उन के निवास के कारण स्वाभावतः वहा एक संस्थान स्थापित हो गया। उन्होने अन्त काल मे शंकर ने उस की देखभाल सुरेश्वराचार्य (मूहस्त के मण्डन मिश्र) को सौंप दिया। आगे चल कर वह संस्थान शंकर द्वारा स्थापित अन्य चार मठो की तरह एक धार्मिक केन्द्र के रूप मे प्रसिद्ध हो गया। परम्परागत रूप से वहा के अध्यक्ष अन्य मठाध्यक्षो की तरह जगद्गुरु शंकराचार्य कहलाने लगे। धीरे-धीरे शृङ्गेरी मठ क्षीण होता गया और शंकर के अन्तिम 6 वर्षों मे वहा निवास करने और उनके अनन्तर उनके अन्यतम शिष्य सुरेश्वराचार्य के पीठाध्यक्ष के रूप मे प्रतिष्ठित होने के कारण काची कामकोटि पीठ की मान्यता व प्रतिष्ठा बढ़ती गई। इस प्रकार अन्य मठो के समान उसे भी शंकराचार्य द्वारा स्थापित होने का गौरव प्राप्त हो गया।

काची पीठ मे सुरक्षित लेखों के अनुसार उस पीठ का स्थापना काल 2620 कलि सवत् अर्थात् 482 ईसा पूर्व बताया गया है। उस के आचार्यों की नामावलि मे पहला नाम शंकराचार्य का और दूसरा सुरेश्वराचार्य का है। वर्तमान मे पीठासीन श्री जयेन्द्र सरस्वती उस के 69 वें आचार्य हैं।

3 श्री जयेन्द्र सरस्वती से मेरी भेंट-सन् 1981के आरम्भ मे हुई मैं अमूल डेयरी के लिए प्रसिद्ध गुजरात के आनन्द मे ठहरा हुआ था पता चला कि काची कामकोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती 22 जनवरी को सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्म स्थान करमसद में निवास करेंगे। उससे एक दिन पूर्व सरदार पटेल यूनिवर्सिटी के परिसर मे स्थित रोटरी क्लब में वेद के विषय मे मेरा एक भाषण हो चुका था। उसी के माध्यम से श्री शंकराचार्य से मेरी भेंट हुई। मैंने उन से निवेदन किया कि जब हम सरकार से गोवध पर रोक लगाने की मांग करते हैं तो अन्य बातो के साथ प्रायः यह भी कहा जाता है कि जब हिन्दूओ द्वारा मान्य ग्रन्थो में अनेकत्र गोवध का विधान है तो वे किस मुंह से गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग कर सकते हैं। इस सन्दर्भ मे लाखो की संख्या मे छपने वाली पत्र-पत्रिकाओं वेद सहित अनेक हिन्दू शास्त्रो मे उपलब्ध गोवध का प्रतिपादन करने वाले प्रमाण प्रस्तुत किए जाते हैं। आप को हिन्दू धर्म के आचार्य के रूप मे तथा अधिकृत विद्वान् के नाते अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, अत, मैं चाहता हू कि आप की ओर से इस आशय का वक्तव्य कर दिया जाए-

"हिन्दू शास्त्रो में कही भी गोहत्या का विधान नही है। यदि कही इस के विपरीत अर्थात् गोवध के प्रतिपादक प्रमाण मिलते हैं तो वह स्वार्थी लोगो के द्वारा किए गए प्रक्षेपो अथवा वेद मन्त्रो के अशुद्ध अर्थों के कारण हैं। उन्हे प्रमाण नही मानना चाहिए।"

श्री शंकराचार्य जी ने उत्तर दिया कि हम केवल यह वक्तव्य दे सकते हैं कि "हिन्दू शास्त्रो मे मास भक्षण के लिए गोवध का विधान नही है।" जब मैंने इस को स्पष्ट करने को कहा तो वह बोले-"वेदादि शास्त्रो मे यज्ञ के निमित्त गोहत्या का स्पष्ट विधान है। जहा कही गोहत्या का निषध हैं। वह मास भक्षण के लिए गोहत्या न करने के उद्देश्य से है, यज्ञ मे आहुति देने के लिए गोहत्या का निषेध कही नही है, सर्वत्र उसका प्रतिपादन किया है। ऐसा गौ के हितार्थ किया गया है, क्योंकि यज्ञ मे आहुति डालने के लिए मारी गई गौ को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।"

उन के (शंकराचार्य) के ऐसा कहने पर लगभग पौन घण्टे तक शास्त्रार्थ जैसा चलता रहा। मैं आश्चर्यचकित था। उन के साथ रहने वाले 10-15 विद्वान् उन के मत का समर्थन कर रहे थे। मैं अकेला जूझता रहा। मेरे द्वारा वेदों में अनेकत्र

(शेष पृष्ठ 7 पर)

क्रियात्मक योग के लिए

लेखक—श्री पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज परिव्राजक

कुछ आवश्यक परिज्ञान

प्रश्न—ईश्वर का स्वरूप क्या है?

उत्तर—ईश्वर का स्वरूप वही है जो आर्य समाज के दूसरे नियम में वर्णित है—"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।"

जैसा कि योगदर्शन के प्रथम पाद में लिखा है "क्लेशकर्म विपाकाशयैर-परामृष्ट: पुरुष विशेष ईश्वर." "तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्"- सपूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात"—तस्य वाचक: प्रणव:" योगदर्शन पाद 1 सूत्र 24 से 27 अर्थात् "अविद्या आदि पांच क्लेश, शुभाशुभ कर्म, उन कर्मों का फल तथा उन फलों की वासनाओं (संस्कारों) से जो तीनों कालों में सर्वथा रहित सब जीवों से विशेष है, वह ईश्वर है।"(24) "उस परमेश्वर में सब से अधिक ज्ञान अर्थात् सर्वज्ञता का बीज—कारण विद्यमान है" (25) "वह पूर्व गुरुओं का भी गुरु है, क्योंकि काल से वह कभी नहीं मरता।" (26) "उस (ईश्वर) का नाम ओ३म् है।" (27)।

और जैसा कि यजुर्वेद के अध्याय 40 के 9 वें मन्त्र मे वर्णित है "स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभू: स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य: समाभ्य:, "अर्थात् वह ईश्वर सर्वव्यापक सब का नियन्ता, शरीर से रहित, छिद्रादि दोष रहित, नस-नाड़ी के बन्धन से पृथक् सर्वथा पाप से रहित, शुद्ध है वह वेद-ज्ञान का दाता, सब के मन को बनाने तथा मन को चलने की शक्ति देने द्वारा सर्वशक्तिमान् स्वय सिद्ध है, उसी परमेश्वर ने अपनी सनातन अनादि जीव रूप प्रजा को वेद का सत्य ज्ञान प्रदान किया है।

प्रश्न—. जीव का स्वरूप क्या है?

उत्तर—जैसा ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त मे स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश अङ्क 4 मे लिखा है। "जो इच्छा द्वेष, सुख दु:ख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ, नित्य है उसी को जीव मानता हूं।"

प्रश्न—. प्रकृति का स्वरूप क्या है?

उत्तर—जैसा कि योगदर्शनकार महर्षि पतञ्जलि ने लिखा है—

"प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम्"—विशेषाविशेषलिंगमात्रालिगानि गुणपर्वाणि" पाद 2 सूत्र 18,19. अर्थात् "प्रकाश, क्रिया और स्थिति स्वभाववाला, स्थूल सूक्ष्म भूतो तथा इन्द्रियरूप यह जगत् साधारण सुख भोग तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए है।" (18); "विशेष पांच सूक्ष्म भूत एवं अहंकार: लिङ्गमात्र-महत्तत्व (बुद्धि), अलिङ्ग प्रकृति (सत्वरजतममयी प्रकृति) ये तीन गुणो—प्रकृति (सत्व रज और तम के विभाग है।"(19)

और जैसा सांख्य दर्शनकार महर्षि कपिलाचार्य ने लिखा है "सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति: प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽहंकारात् पंचतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पंचतन्मात्रेभ्य: स्थूलभूतानि पुरुष इति पंचविंशतिर्गण:" सांख्यदर्शन अ. 1 सूत्र 61।

प्रश्न—. समस्त संसार को कितने भागों में बांटा जा सकता है?

उत्तर—तीन में। (1) साध्य (2) साधक (3) साधन ईश्वर साध्य, जीव और प्रकृति साधन है। इन तीनों के वास्तविक ज्ञान से ही मनुष्य जीवन सफल होता है, अन्यथा नही।

प्रश्न—. योगाभ्यासी उपासना के लिए क्या करें।

उत्तर—सर्वप्रथम एक उत्तम स्थान का निर्वाचन करें, प्रतिदिन उसी निश्चित स्थान पर ही उपासना किया करें और आसन ऐसा हो कि जिससे भूमि न चुभे उसके पश्चात् प्राणायाम—"तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेद: प्राणायाम:" योग 2।49 अर्थात् आसन के सिद्ध हो जाने पर श्वास और प्रश्वास की गति को यथाशक्ति रोक देना प्राणायाम है।

प्रश्न—. आसन पर बैठ कर क्या विचारना चाहिए?

उत्तर—आसन पर बैठ कर साधक यह देखे कि कोई आवश्यक कार्य करना शेष तो नहीं है यदि है तो उसको करके उपासना में बैठें। उपासना के समय ईश्वर के ही स्वरूप का विचार किया जावे और दूसरे विचारों को नितान्त बन्द कर दिया जाये चाहे वे अच्छे भी क्यों न हों—जैसे दान का विचार, कृतज्ञतादि प्रकट करने के विचार भी नहीं करने चाहिये।

प्रश्न—. ईश्वर की स्तुति—प्रार्थना उपासना कैसे करें?

उत्तर-योगाभ्यासी ईश्वर को अपना माता, पिता, आचार्य और राजा मान कर उसको अपने समीप और स्वयं को उसके समीप समझ कर आर्य समाज के दूसरे नियम, योगदर्शन अ. 2 सू. 24 यजुर्वेद अ. 40 मं. 8 के अनुसार शब्दार्थ के द्वारा ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करें। जैसा कि इस पुस्तिका के 12 वें अंक में लिखा है जैसे कि हे परमात्मन्! आप सत् है आप चित् हैं आप आनन्द स्वरूप हैं इत्यादि शब्दो से 'ओ३म्' का जप अर्थ सहित करें, और गायत्री मन्त्र का जप अर्थ सहित करें, इसके पश्चात् सम्पूर्ण वैदिक सन्ध्या अर्थ सहित करें। यदि पुनरपि उपासना का समय शेष रह जाए तो अपनी भाषा में, जो कि उपासकों के व्याकरणानुसार पढने लिखने में आती हो, ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करें और पांच वृत्तियों (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति) को रोक कर स्वयं को ईश्वर के स्वरूप में मग्न करने का अभ्यास करें।

प्रश्न—. योगाभ्यासियों को योग सम्बन्धी समस्या का समाधान कैसे करना चाहिये?

उत्तर—योगाभ्यासी जनों को अपनी शंकाओं व समस्याओं के समाधान हेतु श्रद्धा, प्रेम व विनय पूर्वक विद्वानों से संवाद करना चाहिए। और योग का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। हां योग की स्थिति दृढ़ हो जाने पर सबके कल्याण के लिए और सत्य की रक्षा के लिए शास्त्रार्थ भी किया जा सकता है। उपरोक्त वाद तथा शास्त्रार्थ न्यायदर्शन के प्रथम अध्याय आ. 2 सू. 1 "प्रमाणतर्कसाधनोपालम्भ: सिद्धान्ताविरुद्ध: पंचावयवोपपन्न: पक्षप्रतिपक्षपरिग्रहोवाद:" के अनुसार करें। अर्थात् प्रत्यक्षादि प्रमाणो और तर्क से अपने पक्ष की सिद्धि और दूसरे पक्ष का खण्डन करना, अपने स्थापित किये हुए सिद्धान्त से विरुद्ध न बोलना, प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय व निगमन इन पांच अवयवो से युक्त होकर कहना तथा पक्ष और प्रतिपक्ष को स्वीकार करना वाद कहलाता है।

प्रश्न—. योगाभ्यासियो के क्या आदर्श होने चाहिये।

उत्तर—योग जिज्ञासु आर्य समाज के दस नियमो और इक्कावन मन्तव्यो को ही आदर्श मान कर चले, क्योंकि आदि सृष्टि से लेकर महर्षि दयानन्द तक सब ऋषियो के यही सिद्धान्त है उनको आधार न मान कर चलने वाला व्यक्ति सच्चे योगमार्ग से भटक जाता है।

प्रश्न—. प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि किसे कहते हैं?

उत्तर—प्रत्याहार—"स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहार:" योगदर्शन 2-54 अर्थात् इन्द्रियों का अपने विषयों के साथ सम्बन्ध न होने पर चित्त के स्वरूप के अनुकूल हो जाना अर्थात् इन्द्रियों का भी रुक जाना प्रत्याहार है। इससे इन्द्रियों पर उत्कृष्ट अधिकार हो जाता है। धारणा—'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' यो. द. 3—1 अर्थात् चित्त को मस्तक, नासिका, कण्ठ आदि किसी एक स्थान में स्थिर करना धारणा कहलाती है।

ध्यान—(1) 'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्' यो.द.3—2 अर्थात् उस धारणा वाले स्थान पर ईश्वर की खोज विषयक ज्ञान की एकतानता बनी रहना (बीच में किसी दूसरे विषय का न आना) ध्यान है। (2) 'रागोपहतिर्ध्यानम्' सांख्य द. सूत्र 3—30 अर्थात् सांसारिक विषयों के प्रति राग का न रहना और ईश्वर के प्रति प्रेम विशेष हो जाना ध्यान है।(3) 'ध्यानं निर्विषयं मन:' सांख्य द. सूत्र 6, 25 मन में केवल ईश्वर विषय होना तथा किसी सांसारिक विषय का न रहना ध्यान है।

समाधि—'तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधि:' योग 3।3 अर्थात् वह ध्यान ही केवल वस्तु (ईश्वर) को प्रकाशित करने वाला, अपने स्वरूप से शून्य सा (हटा हुआ सा) समाधि है।

प्रश्न—. योग अथवा समाधि का फल क्या है?

उत्तर—परमपिता परमेश्वर के आनन्द स्वरूप में मग्न होना तथा अन्त में जन्म मरण के चक्र से छूट कर मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्त करना।

प्रश्न—. मुक्ति कब तक रहती है तथा क्या उससे लौट कर फिर जन्म लेना पड़ता है या कभी नहीं?

उत्तर—जब तक 36000 बार सृष्टि और प्रलय होवे, इतना समय मुक्ति का है तब तक जीवात्मा ईश्वर के आनन्द में रहता है, बीच में उसे कोई दु:ख छू नहीं सकता। उसके पश्चात् पाप पुण्यों के तुल्य होने से जीवात्मा फिर मनुष्य जन्म धारण करता है। इस विषय में ऋग्वेद मं. 1 सू. 24 मं. 2—'अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानाम्' का महर्षि दयानन्द भाष्य द्रष्टव्य है।

प्रश्न—. सृष्टि और प्रलय का समय कितना है?

उत्तर—4 अरब 32 करोड़ मानव वर्ष सृष्टि का समय तथा इतना ही प्रलय का समय है अर्थात् एक सृष्टि और एक प्रलय का कुल समय 8 अरब 64 करोड़ मानव वर्ष।

प्रश्न—. जब मुक्ति से लौटना ही है तो फिर इसके लिए प्रयत्न क्यों करना?

उत्तर—जैसे कुछ समय की भूख निवृत्ति आदि के लिए मनुष्य महान् प्रयास करता है कुछ समय पश्चात् फिर भूख लगती है, इसी प्रकार इतने लम्बे काल तक समस्त दु:खों से छुड़ाने वाले मोक्ष के लिये भी अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिए।

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज अब क्या करे ?

चार अक्तूबर 1987 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जो वार्षिक अधिवेशन हुआ और उसमें जो चुनाव किया गया वह एक ऐतिहासिक महत्व रखता है पंजाब के आर्य समाजियों ने आर्य समाज की लोकतान्त्रिक परम्पराओं को सुरक्षित रखते हुए और उनके प्रति अपनी निष्ठा व आस्था का प्रदर्शन करते हुए साथ ही यह भी घोषणा कर दी है कि आर्य समाज में तानाशाही किसी भी रूप में सहन नहीं की जाएगी। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज का आधार लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों पर रखा था उसी के आधार पर आज तक आर्य समाज जीवित रहा है और प्रगति करता रहा है।

पहली बार तानाशाही के बल पर आर्य समाज पर पूरा नियन्त्रण करने का प्रयास शुरू हुआ है। जून 1987 में पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा भंग की गई और उसके प्रधान को आर्य समाज से निष्कासित किया गया और अब दूसरी बार सभा के विधिवत निर्वाचित प्रधान को अपदस्थ करके उसे किसी नए चुनाव में खड़े होने से रोक दिया। यह सारी कार्यवाही अवैधानिक थी। हमें इस पर आश्चर्य इस लिए नहीं हुआ क्योंकि इस से पहले देश की कई प्रान्तीय सभाओं को भंग करके वहां तदर्थ समितियां बना दी गई हैं। सार्वदेशिक सभा के विधान में एक न्याय सभा का प्रावधान भी है जिसके द्वारा आर्य समाज के सब वाद-विवाद समाप्त हो सकते हैं परन्तु सार्वदेशिक सभा ने आज तक न्याय सभा नहीं बनाई और सार्वदेशिक सभा के प्रधान जिस भी प्रान्तीय सभा को भंग करना चाहें कर देते है और उसके स्थान पर कोई ऐसी तदर्थ समिति बना देते हैं जो उनके कहने के अनुसार ही चलती है। पंजाब के आर्य बन्धुओं ने यह तानाशाही नहीं चलने दी। इसलिए उन्होंने अपना चुनाव कर लिया। पंजाब सभा को इस बात का गर्व है कि हम विधिवत अपना वार्षिक चुनाव प्रतिवर्ष कर लेते है परन्तु देहली जैसे कई ऐसे प्रदेश भी है जहां कि प्रान्तीय सभाओं के चुनाव कई 2 वर्ष नहीं होते । सार्वदेशिक सभा वहां कोई कार्यवाही नहो करती। सार्वदेशिक सभा के प्रधान किस प्रकार सारी सत्ता अपने हाथ मे रखना चाहते हैं। इसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि वह स्वयं देहली की एक आर्य समाज के प्रधान भी बन गए। क्या किसी ने आज तक यह भी सुना है कि देश का राष्ट्रपति किसी शहर की म्यूनिसिपल कमेटी का अध्यक्ष बन जाए,कुछ ऐसी स्थिति आज आर्य समाज में पैदा हो रही है।

पंजाब सभा ने इस नई तानाशाही प्रवृत्ति के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया । हमारी यह निश्चित धारणा है कि आर्य समाज की सारी व्यवस्था उस विधान के अनुसार होनी चाहिए जो हम पारित कर चुके हैं। प्रत्येक स्थानीय आर्य समाज और सबसे सर्वोच्च सभा सार्वदेशिक सभा को अपने विधान के अनुसार ही सारा काम चलाना चाहिए। पंजाब सभा अपने विधान के अनुसार ही अपना वार्षिक चुनाव करती है इसलिए कोई यह नहीं कह सकता कि पंजाब सभा में कोई अवैधानिक कार्यवाही हुई।

चार अक्तूबर 1987 से पहले जो कुछ हुआ और जो कुछ उस दिन हुआ अब हमें उसे भूल जाना चाहिए और अब एक नया अध्याय प्रारम्भ करना चाहिए। पंजाब की स्थिति आज अत्यन्त भयानक है। इसके बावजूद पंजाब में आर्य समाज आज भी जीवित है और सक्रिय है इसका सारा श्रेय पंजाब के आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को है। हम किसी से कोई शिकायत करना नहीं चाहते परन्तु वास्तविक स्थिति यह है कि आज पंजाब से बाहिर हमारा कोई सहारा नहीं। हमारे उत्सव होते हैं हम बाहिर रहने वाले उपदेशकों और नेताओं को बुलाते हैं। कोई पंजाब में आना नहीं चाहता किसी से कहें कि यहां आकर शान्ति यज्ञ करा जाओ तो एक-2 यज्ञ के लिए कई 2 हजार रुपया मांगते हैं। आर्य समाज के इतिहास में पहली बार यज्ञ भी एक व्यापार बनते जा रहे हैं। फिर भी हम यज्ञ कराते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में यज्ञ होते हैं। मुझे इस बात का भी गर्व है कि हमारी सभा के भू. पू. महामन्त्री श्री यज्ञदत्त जी शर्मा और वर्तमान महामन्त्री आदरणीय बहन कमला आर्या यज्ञ में बहुत रुचि रखते हैं,यह दोनों जहां यज्ञ होता है वहां पहुंचते हैं और साथ ही यज्ञ भी करा सकते हैं। पंजाब में कई ऐसे परिवार भी है जो अपने घरों में बृहद् यज्ञ कराते हैं। मोगा का पुरी परिवार हर वर्ष श्री स्वामी दीक्षानन्द जी को बुला कर यज्ञ करवाता है। पिछले दिनों करतारपुर गुरुकुल में भी श्री महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता में सामवेद परायण यज्ञ हुआ था। गत दिनों आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर में श्री पं. जैमिनी जी ने बृहद् यज्ञ कराया था। और भी कई आर्य समाजें समय-2 पर यज्ञ कराती रहती है यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि पंजाब में वर्तमान विषम परिस्थितियो के होते हुए भी आर्य समाज के कार्यकर्ता सक्रिय रहते हैं और जो कुछ वह वेद प्रचार कर सकते है करते है। इसीलिए मैं कहता हूं कि यदि आज भी पंजाब में आर्य समाज की ज्योति जल रही है तो उसका सारा श्रेय आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को है। जो चुनाव चार अक्तूबर को हुआ उसमें मुझे यह अधिकार भी दिया गया था कि मैं शेष सभा के सभी अधिकारियों को मनोनीत कर दूं। वह मैंने मनोनीत कर दिए हैं और उनकी सूचि आर्य मर्यादा के इसी अंक में प्रकाशित की जा रही है। इस सूचि में मैंने कई उन महानुभावों को भी सम्मलित किया है जिन्होंने चार अक्तूबर के चुनाव में मेरा विरोध किया था। मैं आर्य समाज को किसी दल बन्दी में डालना नहीं चाहता। इसलिए जिन्होंने विरोध किया था, उन्हें भी साथ लेने का प्रयास किया है। अन्तरंग सभा में प्रायः सभी बड़ी-2 आर्य समाजों के प्रतिनिधि ले लिए गए हैं। इसलिए भिन्न भिन्न कार्यों को करने के लिए समितियां बना दी गई हैं। ताकि आर्य समाज के प्रचार की जिम्मेवारी केवल सभा के अधिकारियों पर न हो, अपितु सभा के सब प्रतिनिधि इसे एक संयुक्त जिम्मेवारी समझें। क्षेत्रीय समितियां भी बनाई गई हैं, और भिन्न-भिन्न विभागों की समितियां भी बनाई गई हैं। प्रत्येक समिति के जिम्मे कुछ न कुछ काम रहेगा। यह काम क्या होगा और उसे आगे कैसे चलाना है, इस विषय में आगामी अंक में अपने विचार आर्य जनता के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

"मैं न माला पहनता हूं न पहनाता हूं"

18 अक्तूबर को देहली में आर्य समाज लोदी रोड नई दिल्ली में ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया। जिस की अध्यक्षता श्री पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार ने की थी। श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज भी उस में सम्मिलित हुए थे। जब कुछ व्यक्ति उन्हें माला पहनाने लगे तो उन्होंने कहा कि:—

"मैं न माला पहनता हूं न पहनाता हूं। न मैंने आर्य समाज में कोई पद ग्रहण किया है, न करूंगा।" एक संन्यासी विशेष कर आर्य समाज के सन्यासी को पूर्णतया निस्वार्थ भावना से जनता की सेवा करनी चाहिए। यदि हम सन्यासी भी पदों के लालच में उलझ जाएं तो फिर किसी और को उपदेश देने का हमें अधिकार नहीं रहता। मैं आर्य समाज के उत्सवों में जाता हूं। वहां केवल आर्य समाज के विषय में ही बात करता हूं।"

जो कुछ श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने कहा यह आर्य समाज के एक सच्चे सन्यासी के विचार हैं। आर्य समाज को अपने ऐसे सन्यासियों पर गर्व रहा है और मै कह सकता हूं कि आज हमारा यह सौभाग्य है कि ऐसे सन्यासी आर्य समाज में मौजूद हैं। जो वास्तव में वीतराग है। परन्तु सब सन्यासियों के विषय में यह नहीं कहा जा सकता, फिर भी जो कुछ श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा है, उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। यदि हम सब अपने इन सन्यासियों से कुछ शिक्षा ग्रहण कर के अपने जीवन को बनाने का प्रयास करें तो और भी हमारे जीवन का कायाकल्प हो सकता है।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्यों की सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र द्वारा घोषणा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साधारण अधिवेशन में दिनांक 4-10-87 को श्री वीरेन्द्र जी को सभा का प्रधान निर्वाचित किया गया था। इस के साथ ही एक प्रस्ताव के द्वारा उन्हें यह अधिकार दे दिए गए थे कि वह सभा के अन्य अधिकारी व अन्तरंग सदस्य आदि मनोनीत कर दें। साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार के आधार पर उन्होंने निम्न अधिकारी व अन्तरंग सदस्य आदि मनोनीत किए हैं —

1 प्रधान—श्री वीरेन्द्र जी जालन्धर
2 उपप्रधान—श्री दीवान राजेन्द्र कुमार लुधियाना
3 उपप्रधान—श्री सरदारी लाल आर्यरत्न जालन्धर
4 उपप्रधान—श्री डा रामनाथ शर्मा अमृतसर
5 उपप्रधान—श्री सन्तराम अग्रवाल चण्डीगढ़
6 महामन्त्री—श्रीमती कमला आर्या जी
7 मन्त्री व प्रस्तोता—श्री अश्विनीकुमार शर्मा एडवोकेट जालन्धर
8 मन्त्री—श्री ओमप्रकाश जी पासी लुधियाना
9 मन्त्री—श्री वैद्य ओमप्रकाश इन्दु फगवाड़ा
10 मन्त्री—श्री सुभाष भाटिया अमृतसर
11 कोषाध्यक्ष—श्री हरबंस लाल शर्मा जालन्धर
12 वेद प्रचार अधिष्ठाता—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा जालन्धर
13 अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री आशानन्द आर्य लुधियाना
14 अधिष्ठाता साहित्य विभाग—श्री धर्म प्रकाश दत्त नवांशहर

अन्तरंग सभा के सदस्य (जिला प्रतिनिधि)

15 श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा लुधियाना
16 श्री वेद प्रकाश मेहता, पटियाला
17 श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू, रोपड़
18 श्री मनोहर लाल चोपड़ा फगवाड़ा (कपूरथला)
19 श्री हुकन लाल मेहता, फिरोजपुर
20 श्री राजकुमार गर्ग, बरनाला (संगरूर)
21 श्री केवल कृष्ण पुरी, मोगा (फरीदकोट)
22 श्री राकेश मेहरा, अमृतसर
23, श्री कृष्ण कुमार, भटिण्डा
24 श्री विजय कुमार, बटाला (गुरदासपुर)
25 श्री मनोहर लाल, तलवाड़ा टाऊनशिप (होशियारपुर)
26 श्री रामसुभाया जी नन्दा जालन्धर
27 श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा, लुधियाना
28 श्रीमती कृष्णा कोछड़ जालन्धर

अन्तरंग सभा के प्रतिष्ठित सदस्य

29 श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा लुधियाना
30 पण्डित देवेन्द्र कुमार नवांशहर
31 श्री अमृत लाल बजाज एडवोकेट जालन्धर
32 श्री कर्म चन्द माली जालन्धर
33 श्री नरेन्द्र सिंह भल्ला लुधियाना
34 श्री सुभाष मित्तल, पठानकोट
35 श्री सत्यभूषण बागिया, लुधियाना
36 श्री डा के के पसरीचा, जालन्धर
37 श्री रोशन लाल जी, कपूरथला
38 श्री द्वारिका नाथ, फिरोजपुर छावनी
39 श्रीमती कृष्णा रानी, संगरूर
40 डा मूलचन्द जी भारद्वाज लुधियाना
41 श्री कुलवन्त राय सूद लुधियाना

विशेष निमन्त्रित सदस्य

1 श्री जगदीश राय बांसल, मोगा
2 श्रीमती बहिन सुमनावति लुधियाना
3 श्रीमती इन्दुपुरी मोगा
4 श्री इन्द्रराज शर्मा चण्डीगढ़
5 श्री रणबीर जी भाटिया लुधियाना
6 श्री ओमप्रकाश मनसा भटिण्डा
7 श्री वीरेन्द्र जी अग्रवाल जालन्धर
8 श्रीमती कमला आर्या जालन्धर
9 श्री रोशन लाल शर्मा लुधियाना
10 श्री वेद प्रकाश सरीन नवांशहर
11 श्री राम कृष्ण महाजन दीनानगर
12 श्री वेदबन्धु चोपड़ा फगवाड़ा
13 मास्टर रामप्रसाद सन्धड़ लुधियाना
14 श्री वैद्य सच्चिदानन्द मोगा
15 श्री डा ज्ञानचन्द जी जालन्धर
16 श्री चौधरी रूपचन्द जी एडवोकेट चण्डीगढ़
17 श्री डा रामस्वरूप जी लुधियाना
18 श्री के के सैंभर नवांशहर
19 श्री ललित बजाज फिरोजपुर शहर
20 श्री बलभद्र मल्होत्रा पटियाला
21, श्री ब्रह्मदत्त जी कौड़ा बटाला
22 प्रि शान्ति लाल दत्त लुधियाना
23 श्री राम रखामल अमृतसर
24 श्री सुरेशकुमार बस्तीगुजां जालन्धर

—कमला आर्या महामन्त्री

सभा कार्य संचालन के लिए उप समितियों का निर्माण

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 25-10-87 में सभा के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए निम्न उप समितियां बनाई हैं, जो अपने कार्य की प्रति तीन माह के पश्चात् अन्तरंग सभा को रिपोर्ट दिया करेंगी।

वेद प्रचार समिति

1 श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा अधिष्ठाता व संयोजक
2 श्रीमती कमला आर्या
3. श्री दीवान राजेन्द्र कुमार
4 श्री ओमप्रकाश इन्दु
5 श्री वेद प्रकाश सरीन
6 श्री कर्मचन्द माली, सदस्य होंगे।

2 साहित्य प्रकाशन व प्रसारण समिति

1 श्री धर्म प्रकाशदत्त अधिष्ठाता व संयोजक
2 श्रीमती कमला आर्या
3. श्री ब्रह्मदत्त शर्मा
4 श्री सुभाष भाटिया
5. श्री सत्यभूषण बागिया, सदस्य होंगे।

3. दलित उद्धार समिति

1. श्री सरदारीलाल आर्यरत्न अधिष्ठाता व संयोजक
2. श्रीमती कमला आर्या,
3. श्री कर्म चन्द माली,
4. श्री अश्विनी कुमार शर्मा,
5 श्री हरबंसलाल शर्मा,
6 श्री भगत लालचन्द, सदस्य होंगे।

4. युवक संगठन समिति

1 श्री सुभाष जी भाटिया-संयोजक
2. श्री रोशन लाल शर्मा लुधियाना
3. श्री ललित बजाज फिरोजपुर
4 श्री सत्यभूषण बागिया लुधियाना
5. श्री ओमप्रकाश मनसा भटिण्डा
6 श्री विजय कुमार बटाला
7. श्री मनोहरलाल चोपड़ा सदस्य होंगे।

5. आर्य वीर दल समिति

1. श्री आशानन्द आर्य संयोजक व अधिष्ठाता लुधियाना
2. श्री रोशन लाल लुधियाना
3. श्री ओमप्रकाश मनसा भटिण्डा
4. श्री मूलचन्द भारद्वाज लुधियाना
5. श्री राम सुभाया नन्दा जालन्धर
6. श्री ब्रह्मदत्त कौड़ा बटाला
7. श्री कुलवन्त राय सूद लुधियाना
8. श्री मनोहर लाल जी आर्य, जालन्धर सदस्य होंगे।

6. भवन निर्माण समिति

1 श्री अश्विनी कुमार शर्मा संयोजक
2. श्रीमती कमला आर्या,
3. श्री ब्रह्मदत्त शर्मा,
4. श्री हरबन्स लाल शर्मा,
5. श्री केवल कृष्णपुरी,
6 श्री महेन्द्रपाल वर्मा,
7. डाक्टर के.के. पसरीचा,
8. श्री अमृत लाल बजाज सदस्य होंगे।

7. धन संग्रह समिति

1. श्री दीवान राजेन्द्र कुमार संयोजक
2. श्री हरबंस लाल शर्मा
3. श्री केवल कृष्ण पुरी मोगा
4 श्री रामनाथ शर्मा अमृतसर
5. श्री कृष्ण कुमार भटिण्डा

क्षेत्रीय संगठन समितियां जिला लुधियाना, फरीदकोट, फिरोजपुर

श्री ओमप्रकाश जी पासी संयोजक
श्री दीवान राजेन्द्र कुमार, लुधियाना
श्रीमती कमला आर्या
श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा
श्री मूल चन्द जी भारद्वाज
श्री रणबीर भाटिया
श्री हुकन लाल मेहता फिरोजपुर
श्रीमती इन्दु पुरी मोगा,

जिला अमृतसर, गुरदासपुर, जालन्धर, होशियारपुर, कपूरथला

श्री रामनाथ जी शर्मा संयोजक
श्री सुभाष भाटिया अमृतसर,
श्री विजय कुमार जी बटाला
श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न
श्री सुभाष मित्तल पठानकोट
श्री रोशनलाल जी कपूरथला
श्री लालचन्द पसरीचा सुलतानपुर लोधी
श्री वेद प्रकाश सरीन नवांशहर

जिला भटिण्डा, बरनाला, संगरूर

श्री ओमप्रकाश मनसा संयोजक
श्री राजकुमार गर्ग बरनाला
श्रीमती कृष्णा रानी संगरूर
श्री तरसेम लाल गोनियाना मंडी

चण्डीगढ़, रोपड़, पटियाला

श्री इन्द्रराज शर्मा चण्डीगढ़
श्री सन्तराम अग्रवाल चण्डीगढ़
श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू रोपड़ संयोजक
श्री बलदेव राज सैक्टर 19 चण्डीगढ़
श्रीमती सावित्री सेठी चण्डीगढ़

समाज कल्याण समिति

श्रीमती इन्दु पुरी संयोजक
श्रीमती कमला आर्या
श्री ब्रह्मदत्त शर्मा
श्रीमती कृष्णा कोछड़
श्री सतीश मेहता बटाला,

—कमला आर्या महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पंच सूत्री कार्यक्रम

लेखक—श्री आचार्य विश्वश्रवा: व्यास वेद मन्दिर बरेली (उ.प्र.)

(गतांक से आगे)

शिरोहीने माता कर रहति आये विभरले।
कबंध ते शिष्ट तदपि न शान्ति: पुनरपि।
सदार्या: धावन्ते न हि शरणमेषा क्वचिदपि।
क्व गच्छामो भीता न हि वदति कोऽपि प्रभुवर: ॥

अर्थ :—भारत माता का सिर कट गया है। उसके हाथ अलग कर दिये गये हैं, वह पैरों से भी विहीन हो गई है, उसका केवल धड़ शेष रह गया है, फिर भी कहीं शान्ति नहीं है, कोई भी अधिकारी यह नहीं बताता ये डरे हुए (हिन्दू लोग) कहां जायें।

न पजाबे शान्ति: ज्वलन् परिमेहात् अभिनिश।
पलायन्ते सर्वे पथि पथि भ्रमन्त दिशि दिशि।
महात्मा गान्धी चित वदतु किमुराज्यं रघुपते:।
दयानन्द हित्वा तव चरण लग्ना: इह जना: ॥

अर्थ :—न पजाब में शान्ति है, निरन्तर रात-रात भर घर जल रहे हैं। सभी लोग रास्ते-रास्ते में, दिशा-दिशाओं में भटकते हुए भाग रहे हैं। महात्मा गान्धी बताओ क्या यही तुम्हारा राम राज्य है, यहां के जन ऋषि दयानन्द को छोड़ कर तुम्हारे चरणों में आ गये हैं।

मिलित्वा रक्षोभि: सुरवरजनै: आंग्लजना:।
स्वदेशात् निष्काम्या इति कुमतिपूर्णं तव मत।
त्यजध्व हे आर्या: उपकृतिपरान् कार्यनिवहान्।
सभी भाषाधर्मों कुरुत निजदेशे पुनरपि ॥

अर्थ :—राक्षसों (यवनों) से मिलकर देवता लोग (हिन्दू) अंग्रेजों को भारत से निकाल दें। तुम्हारा यह विचार दुर्बुद्धिपूर्ण था। हे आर्यो उपकार करने वाले कार्यों को छोड़ दो और अपने देश में फिर समान धर्म तथा समान भाषा करो।

कृते देशेऽस्माभि: बहुव उपकारा: प्रतिदिनम्।
कृतास्तेनास्माक क्वचिदपि च रक्षा प्रतिदधु:।
धन गेह नार्या: यवनयवनै: परिहृता:।
धृता: भल्ले बाला: सदय विलपन्तो दिशि दिशि ॥

अर्थ :—इस देश में हमने यवनों के साथ बहुत से उपकार किये, किन्तु हमारे ये उपकार परक कार्य उनसे हमारी रक्षा नहीं कर सके। हमारे धन, घर और स्त्रियों को इन मदमस्त यवनों ने छीना, बच्चों को भालों की नोक पर रखा और हर दिशा में वे विलाप करते रहे।

कृता: नग्ना नार्या: यवनपशुभिर्नीचमतिभि:।
कृतावेशास्तास्ता: रुदन् परभ्रान्ता: पथि पथि।
समक्ष हा पित्रो: स्वमकलपिपासा प्रशमिता।
हतार्या: युष्माक स्मरण पथि नायाति किमपि ॥

अर्थ :—नीच बुद्धि वाले यवन पशुओं ने स्त्रियों को नंगे होने का आदेश दिया। सड़क-सड़क पर वे रोती हुई घूमती रहीं। मा-बाप के सामने ही इन्होंने उनसे व्यभिचार किया। धिक्कार है आर्यो तुम्हें ये सब कुछ भी याद नहीं आ रहा।

मृता: यूय सर्वे श्वसति किमसन् कश्चन नहि।
गता: स्वर्ग सर्वे रविशशिकुला: भूमिपतय:।
न राम: कृष्णो वा न च कपिसुत. पाण्डुतनय:।
न भीम पश्याम: क्व हलधरसूरो यदुप्रिय: ॥

अर्थ :—अरे आर्यो क्या तुम सब मर गए हो। क्या किसी में भी प्राण बाकी नहीं रहे हैं। सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजा लोग स्वर्ग सिधार चुके हैं। न कहीं राम दिखाई देते हैं न कृष्ण: न हनुमान न अर्जुन, बलराम और युद्धवीर कृष्ण भी कहीं चले गए हैं।

अरे आर्या मूर्खा: मतिरपि गता वो विरिञ्चहाम्।
न जानीध्वे यूय यदपि महर्षि कार्य सुमहताम्।
तपो विद्या कीर्ति: सकलमपि नष्टं महर्षे:।
न जानीते कोऽपि क्व च आयात इति वा ॥

अर्थ :—अरे आर्यो तुम लोग मूर्ख हो गए हो। क्या तुम्हारी अक्ल भी भी जाने चली गई है। तुम ऋषि के महान् कार्यों को भी नहीं जानते हो। महर्षि (दयानन्द सरस्वती) की सब तपस्या, समस्त विद्या और सम्पूर्ण कीर्ति नष्ट हो गई है। अब तो लोग यह भी नहीं जानते कि (महर्षि) कब आए थे और कब चले गए।

यत ईश्वर अल्ला न भवति शान्ते. प्रतिनिधि:।
अनार्यै: सम्वृद्धा भवति निजदेश: प्रतिदिन।
अरे आर्या निद्रा त्यजत बहुसुप्त परवशै.।
न काल: सुप्ताना चरति स हि जीवेत् कथमपि ॥

अर्थ :—ईश्वर अल्ला का नाम लेने वाली पार्टी (मुस्लिम पक्ष लेने वाली कांग्रेस आदि) शान्ति का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती। अपने देश में प्रतिदिन इन अनार्यों की गिनती बढ़ती जा रही है। अरे आर्यो पराधीन रह कर बहुत समय तक सो लिए। अब तो नींद को त्यागो। समय सोने वालों का साथ नहीं देता, जो चलता रहता है, वह ही किसी तरह से जिन्दा रहता है।

महाकूपे मग्न: न हितकर श्रोता हित जन:।
त्वमाया: हे स्वामिन् पुनरपि यथार्थ कथयितुम्।
त्यजनय ते भक्ता: उपकृतिपरान् कार्यनिवहान्।
भवेयु: सलग्ना: तवकथित कार्यव्रतिरता: ॥

अर्थ :—पूरे कुएं में भांग पड़ी हुई है, श्रोताओं के हित की बात करने वाला कोई नहीं रहा। हे स्वामी (दयानन्द सरस्वती) यथार्थ बात को कहने के लिए तुम फिर आओ, ताकि तुम्हारे भक्त (तथाकथित) उपकार वाले कार्यों को छोड़कर तुम्हारे द्वारा बताए गए कार्यों में लग जायें।

विहायालस्य स्व कुरुत यवनान् आर्यमतिषु।
मतिं सिक्खान् दधु: न गुरव: आसन् ऋषिद्रुह:।
प्रभु बुद्धिं दद्यात् पुनरपि समाज कथमपि।
समे स्यु: सलग्ना: विगतनिजदेशप्रतिहर: ॥

अर्थ :—अपने आलस्य को छोड़कर यवनों को आर्य बुद्धि वाला बनाओ। सिक्खों को यह बुद्धि दो कि गुरु लोग (सिक्खों के दस गुरु) ऋषियों से द्रोह करने वाले नहीं थे। भगवान इस समाज को फिर किसी तरह से बुद्धि दे—सभी लोग अपने देश की दुरवस्था को दूर करने में लग जाएं।

अनार्या वर्धन्ते न नयनवन्तो जन जगति।
ऋषीणा देशेऽस्मिन् प्रतिदिनसमेते बहुतरा:।
समाजश्चार्याणा भवति ऋषि कार्येष्वभिरत:।
तथाह्यार्यावर्तो भवतु ऋषिदेश: पुनरपि ॥

अर्थ :—इस संसार में नीति का पालन न करने वाले अनार्य बढ़ते जा रहे हैं। ऋषियों के इस देश में उनकी संख्या प्रतिदिन अधिक होती जा रही है। आर्यों का यह समाज ऋषि के कार्यों में लग जाये और यह आर्यावर्त पुन. ऋषियों का देश हो जाए।

दयाया: आनन्दो विलसति पर: स्वात्मविदित।
सरस्वत्याग्रे विलसति मुदा वेदयवना।
श्रुतीना उद्धर्ता सफल जन मानने गुरुवर.।
दयानन्दस्वामि जयतु सुचिर विश्व जगति ॥

अर्थ :—अपनी और दूसरों की आत्मा को जानने वाला दया का आनन्द शोभायमान हो रहा है। वेदों का मनन करने के कारण इसके आगे सरस्वती प्रसन्नतापूर्वक विराजमान है। दयानन्द स्वामी वेदों के उद्धारक हैं, सभी व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत श्रेष्ठ गुरु हैं। इस समस्त संसार में चिरकाल तक उनकी जय हो।

—

वृष्टि यज्ञ की उपादेयता

लेखक—श्री आचार्य धर्मवीर जी विद्यालंकार

आर्य जगत 6 सितम्बर 1987 के अंक के "पत्रों के दर्पण में" प्रथम पत्र में "अब देश को सूखे से बचाइए न" शीर्षक के अन्तर्गत श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार, जालन्धर निवासी ने बताया है कि —"कि वे सन 1912 से गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ते थे। तब से सुन रहे हैं कि यज्ञ से वर्षा होती है। अब क्या इस आश्वासन पर कोरी श्रद्धा रखे हुए जीवन बिताएं। धार्मिक धारणाओं को जब जब कसौटी पर कसने का समय आता है, धर्म नेता बहाने बना कर समय टाल देते हैं। यह आर्य समाज को शोभा नहीं देता।"

इस विषय में मेरे आदरणीय विद्वान श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार जो महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अन्तर्गत सफलतापूर्वक चल रहे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य पद पर 16 वर्षों तक गौरवपूर्ण कार्य करते रहे हैं।) से अत्यन्त नम्र निवेदन है कि जब भी अनावृष्टि हुई है, वृष्टि यज्ञ कराने वाले आर्य विद्वानों ने यज्ञ द्वारा वृष्टि कराई है। यह हमारी आस है कि श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार को इस यज्ञ द्वारा कराई गई वृष्टि एवं उससे प्राप्त सफलता का ज्ञान न हुआ न हो।

मेरा अनुभव निम्न प्रकार से है —

(1) आज से लगभग 30 वर्ष पूर्व पीलीभीत नगर में श्री धारसेन वेदश्रमी जी द्वारा यहां के व्यापारी वर्ग ने वृष्टि यज्ञ कराया था। उसमें 40 मील के चारों ओर के वृत्त में घनघोर वर्षा हुई थी। अच्छी फसलों के कारण पीलीभीत जनपद अकाल से बच गया था।

(2) इस वर्ष दो से चार जुलाई तक मैंने अपने कृषि फार्म पर अपनी पत्नी श्रीमती पुष्पा विद्यालंकार के साथ वृष्टि यज्ञ किया। इसका वृत्तान्त आर्य मित्र सितम्बर 6, के अंक में पृष्ठ 10 पर प्रकाशित हुआ है।

इस क्षेत्र के किसान मई के अन्तिम सप्ताह में धान बोते हैं। और जून के तीसरे सप्ताह में रोपाई करते हैं। इस वर्ष अब 9 जून के बाद वर्षा नहीं हुई, तो रोपा गया धान सूखने लगा। तब यह समस्या उत्पन्न हुई कि क्या किसान रोपे गए धान बचाने में इंजिन चालित पंपिंग सैट से सिंचाई करें या और अधिक मात्रा में धान की रोपाई करें। उस समय अधिकतर किसानों ने धान रोपाई बन्द कर दी थी। यथोचित समय मैंने वृष्टि यज्ञ किया। परिणामतः भरपूर घनघोर वर्षा हुई। सभी किसानों ने पूरा धान रोपा। आज जिला पीलीभीत में और समीपस्थ जिला नैनीताल के प्रदेश में भरपूर एवं अच्छी फसल धान की खड़ी है। यह ठीक है कि स्वाभाविक प्राकृतिक वृष्टि से जो लाभ होता, उतना इससे नहीं हो सकता। परन्तु इतना अवश्य है कि मेरे कृषि फार्म के चारों ओर 30 40 कि मी के क्षेत्र में फसलों की स्थिति बहुत अच्छी है। सामान्य वर्षा की स्थिति से 90 प्रतिशत है। गन्ने की फसल जहां अन्य जिलों में सूख रही है, वहां जिलों में सूख रही है। वहां पीलीभीत में गन्ने की फसल गत वर्ष से 20 प्रतिशत अधिक है।

अगर जिला पीलीभीत की जनता यह समझे कि वृष्टि यज्ञ से कोई लाभ नहीं हुआ, तो यह मात्र हठधर्मिता होगी।

(3) गत वर्ष सन 1986 के जून मास की 14 से 17 तारीख तक आर्य समाज राजकोट ने श्रीराम नारायण जी एम ए पी एच डी निवासी ग्राम फरमाना, जिला सोनीपत (हरियाणा) से वृष्टि यज्ञ कराया था। घनघोर वर्षा हुई। भाव नगर, जामनगर आदि जिलों के समस्त तालाब सागर भर गए। राजकोट के दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्रों में 50 60 मील तक अच्छी वर्षा हुई। उत्तर में 30 कि मी तक ही हुई। टंकारा राजकोट से 45 कि मी उत्तर में है। वहां नहीं हुई। अतः 18 से 22 जून तक म द स स्मारक ट्रस्ट टंकारा के महालय में वृष्टि-यज्ञ मैंने श्रीराम नारायण जी से करवाया, बहुत अच्छी वर्षा हुई। उस क्षेत्र के नदी-तालाब सागर सभी भर गये। टंकारा की डैमी नदी में भरा पानी जब नवम्बर में समाप्त हो गया, तब सरकार ने दयानन्द सागर के जल से डैमी नदी को भरा, जो जून 1987 तक काम आता रहा। शिवरात्रि महोत्सव पर मात्र पीने के जल की ही व्यवस्था करनी पड़ी। स्नानालयों में स्नान तथा वस्त्र प्रक्षालन हेतु एवं शौचालयों में नदी के जल से ही काम किया गया। जल वितरण में किया जाने वाला गुजरात सरकार को लाखों रुपया बचा। ट्रस्ट का भी जल खर्च बचा।

इस प्रत्यक्ष लाभकारी अनुभवों के बाद भी वृष्टि-यज्ञ पर विश्वास न हो पाए और मात्र झूठा आश्वासन और कोरी श्रद्धा समझा जाए, तो इसे आर्य समाज का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। आर्य समाजों और प्रतिनिधि सभाओं की इस सर्वहितकारी कार्य अरुचि या अश्रद्धा अवश्य बाधक है।

अन्त में वृष्टि यज्ञ कराने वालों तथा आर्य समाजों से निवेदन है—

कि वे सभी विद्वान महानुभाव सार्वदेशिक सभा या आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में (जो समाज या सभा उन्हें आमंत्रित करें) एकत्रित होकर परस्पर गम्भीर विचार करें। वृष्टि यज्ञ से जहां वृष्टि कराई जाती है, वहां अति वृष्टि का नियन्त्रण भी किया जाता है। भारत के कुछ निश्चित प्रदेशों जैसे बिहार, बंगाल, आसाम आदि) में वृष्टि अधिक होती है। परिणामतः बाढ़ आती हैं। जन एवं सम्पत्ति की भारी क्षति होती है। दूसरे कुछ प्रदेशों में वृष्टि बहुत कम होती है। दोनों प्रदेशों में यदि पशु और मानव—सभी पीड़ित हैं। विद्वज्जन वृष्टि का नियन्त्रण करें। अर्थात् अनावृष्टि प्रदेशों में वृष्टि कराएं तथा अतिवृष्टि प्रदेशों में वृष्टि की कमी करें। समाजें और प्रतिनिधि सभाएं इसके लिए पर्याप्त धन एवं सामग्री इकट्ठी करें। विद्वानों को आमन्त्रित वर्षा नियन्त्रण का कार्यक्रम बनवाने का कार्य कोई भी समर्थ समाज कर सकता है।

इस पुण्यमय, लोकोपकारी, सर्वहितकारी कार्य से कार्य से भारत का प्रत्येक प्राणी—पक्षी, पशु, मनुष्य-राहत अनुभव करेगा। सुख एवं शान्ति बढ़ेगी, जनसाधारण का विश्वास और श्रद्धा वेदों और यज्ञों के प्रति जगेगी। इसके लिए सरकार के द्वार खटखटाये अथवा उससे सहायता पाने या प्रमाण पत्र लेने के पक्ष में मेरा मत नहीं है। आर्य समाज यह कार्य स्वयं अपने भरोसे से करें और अपने वर्चस्व और यश को स्वयं स्थापित कर वेद के महात्म्य को सिद्ध करें।

वृष्टि-यज्ञ वैज्ञानिक प्रक्रिया है। कोई जादू टोना नहीं है।

—

क्या भारत इस दिशा में अखण्ड रह सकेगा

अंग्रेज एक कतरा खून बहाए बिना 1947 में यहां से चला गया। और जाते जाते दो पाकिस्तान बना कर देश खण्डित कर गया, यही नहीं परन्तु साम्प्रदायिकता के बीज सदा के लिए बो गया हमारे सिख भाईयों को भड़का गया कि हिन्दू को मिला हिन्दुस्तान, मुस्लिम को पाकिस्तान, तुम को क्या मिला, बस इसी बात को लेकर सदियों से भाई-भाई की तरह रहते हिन्दू सिखों को लड़ा गया। सिखों की कुल जनसंख्या भारत में दो करोड़ है वह 80 करोड़ भारत-वासियों की नींद हराम कर रहे हैं। उन की देखा देखी यदि मुस्लिम व ईसाई व अन्य भी अपने अपने भाषाई प्रान्त, जाति वाद, पर आधारित प्रान्त मांगने लग पड़ें तो 190 साल की अंग्रेज से लड़ाई के बाद हासिल की गई आजादी के क्या मायने, फिर वही गुलामी में रहने वाले हालात पैदा करने के मंसूबे हैं किसी सूबे में ऐसी उथल पुथल नहीं जैसी पंजाब में 6-7 साल से है अभी 1947 की पृथकता के जख्म पूरे नहीं हुए कि कुछ उग्रवादी, पाकिस्तान, चीन व अमरीका आदि देशों की राह पर सारे देश में अशान्ति फैलाने का यत्न कर रहे हैं हिन्दू को कायर समझ कर डराया धमकाया जा रहा है। निहत्थों का कत्ल हो रहा है। बैंक लूटे जा रहे हैं, आग लगाई जाती है। सरकारी काम बिगाड़े जा रहे हैं। रेलों, मोटरों, को उड़ाने के यत्न हो रहे हैं। यह कब तक होगा जब तक जनता जागरूक नहीं होती और केन्द्रिय सरकार कड़े कदम नहीं उठाती कहीं भाषाई झगड़ा है कहीं मन्दिर गुरुद्वारे—मस्जिद, पर दंगा कराया जा रहा है आज तक हिन्दू व सरकार ने ही किया है। पहल कभी नहीं की। आत्म रक्षा ही करते रहे। यदि जुल्म पर जुल्म होते रहे और इसी तरह अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक दबाते रहे, तो जनता व सरकार कोई नहीं रहेगी। अभी तक तो सभी इस पालिसी पर चल रहे हैं कि शायद उग्रवाद खुद व खुद शान्त हो जावे। यह जनता व सैंट्र सरकार की नर्मी का ही नतीजा है, कि 6 7 साल से यह आग बुझ नहीं सकी समय की पुकार है कि जनता व सरकार जागे, और हालात को ज्यादा न बिगड़ने दें।

—सुबोधानन्द स्वामी
सोनानगर

———

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

एक चुप और सौ सुख

लेखक—श्री काशीराम जी चावला द्वारा श्री पथिक छुटमलपुर

एक महापुरुष ने बड़े रहस्य की बात कही है जो दिल की पट्टी पर लिख लेने के योग्य है। उसने कहा है कि "ऐसा तो कई बार हुआ है कि मुझे बोल कर अर्थात कोई बात कह कर पश्चाताप करना पड़ा है किन्तु ऐसा कभी नही हुआ कि चुप रहने पर मुझे पछताना पड़ा हो।" महाजन का यह कथन शत प्रतिशत सत्य है। आगन भाषा की एक लोकोक्ति है अर्थात चुप रहने का मूल्य सुवर्ण या सोने के मूल्य के तुल्य है। किस प्रकार चुप रहना लाभप्रद है और व्यर्थ बोलना हानिकारक होता है, इस पर एक दृष्टान्त सुनिये —

एक गुरु अपने शिष्य के साथ परिभ्रमण करते हुए एक नगर मे पहुचे। गुरु जी मौन रहने की महानता से अनभिज्ञ थे। इसलिए उन्होने अपने शिष्य को सावधान किया कि हम एक नए नगर मे आये हैं यहा के लोगो के रीति-रिवाज तथा स्वभाव से हम अनभिज्ञ हैं। इसलिए हमें यहा मौन रह कर स्थिति का निरीक्षण करना चाहिए और फिर कोई बात-चीत करना उचित होगा शिष्य ने कहा "बहुत अच्छा महाराज"।

तब वे दोनो जाकर एक धर्मशाला मे ठहर गए। वहा कई आदमी प्रस्तुत थे। जब उन्होने देखा कि दो साधु आए हैं, तब वे उनके पास गए और पूछा कि महाराज आप अभी पधारे हैं, कोई सेवा हो तो आज्ञा दीजिए। किन्तु उन्होने मौन धारण किया हुआ था। इसलिए चुप रहे। यह देख कर लोगो ने सोचा कि ये कोई उच्चकोटि के साधु हैं जो कोई इच्छा ही नही रखते। इसलिए इनके खान-पान का ठीक प्रबन्ध होना चाहिए। ऐसा सोच कर वे अपने घर गए और बड़ी श्रद्धा से सुन्दर भोजन बना कर दो थालो मे लगाकर ले आए और उनके सामने रख दिया और प्रार्थना की कि महाराज। कृपा करके यह स्वीकार कीजिये और साथ ही अपना नाम धाम बताने का तथा यहा पधारने का उद्देश्य बताने का कष्ट कीजिए, ताकि हम आपकी कुछ और सेवा भी कर सकें। गुरु और शिष्य दोनो ने यह बात सुनी। गुरु तो अनुभवी थे और शान्त रह सकते थे। इसलिए वह तो चुप रहे किन्तु शिष्य अनभिज्ञ तथा अनाड़ी था। उसने विचार किया कि यदि अब भी उत्तर न दिया तो ये भोजन और सेवा नहीं करेंगे। इसलिए बोल उठा कि—"हम आत्म-ज्ञानी तथा आत्म-अनुभवी साधु हैं। हम सदा आत्म आनन्द मे ही मगन रहते हैं, मेरा तो नाम भी आत्मानन्द है।"

लोगो ने जब यह बात सुनी तो कहा कि—"जो आत्म-ज्ञानी तथा आत्म आनन्द मे मगन रहने वाले होते हैं वे लोभ मे नही फसते। वे तो आत्म-आनन्द मे ही मस्त रहते हैं। देखो जब हमने नाम धाम पूछा और सेवा की बात की तो आप तत्काल बोल उठे, यद्यपि आप को बुलाने का प्रयास पहले भी किया गया था, किन्तु आप मौन रहे थे। इससे सिद्ध होता है कि लोभ ने ही आपकी जिह्वा खुलवाई है। इसलिए तुम झूठ और कपटी मानव हो और साधु वेश मे लोगो को ठगते फिरते हो। उठो यहा से निकल जाओ। इतना कह कर दो चार आदमियो ने शिष्य को पकड़ कर धर्मशाला से बाहर निकाल दिया। किन्तु गुरु जी को कुछ नही कहा और उनसे पुन भोजन करने की प्रार्थना की। तब गुरु जी ने बड़े प्रेम से भोजन किया, किन्तु मुख से एक शब्द भी नही निकाला। लोगो ने समझा कि यह पूर्ण साधु है। इसलिए उसको कुछ और समय विराजमान रहने की प्रार्थना की। किन्तु गुरु जी अपने शिष्य की सुध लेने के लिये उठ खड़े हुए और नगर से बाहर जाकर उसे ढूढा। वह एक वृक्ष के नीचे उदास और हताश बैठा हुआ था। गुरु को देख कर शिष्य बोला "महाराज! मेरी तो आज बुरी गत बनी।" गुरु जी ने कहा "बेटा! तुझे पहले ही मौन रहने के लिए आग्रह किया था। यदि तू अपनी जिह्वा बन्द रखता तो तेरी यह अवस्था न होती। तूने बोल कर अपनी दुर्गति करवाई।" शिष्य ने अपनी भूल स्वीकार की और फिर वे आगे चले गये।

❂❂❂

कुछ श्रेष्ठ विचार सूत्र

❂ अपने जीवन का ध्येय निश्चित कीजिए। बिना उद्देश्य सारे दिन व्यस्त रहना और परिश्रम करना—कहा की बुद्धिमानी है? जियो तो ऐसे जियो कि लोग तुम्हे देखने को लालायित हो और मरने के बाद वर्तमान शरीर से अच्छा शरीर मिले और लोग कहे कि एक ईमानदार और सच्चा आदमी चला गया।

❂ धन के दो उपयोग हैं। पहिला दान और दूसरा भोग। जो मनुष्य धन का न दान करता है और न भोग करता है उसका धन तीसरी गति अर्थात नाश को प्राप्त होता है। धन कमाने की भी एक सीमा होनी चाहिए। लोभ नहीं करना चाहिए। देखो! हृष्ट पुष्ट ब्राह्मण सोने के कड़े के लालच मे निर्बल बूढे सिंह द्वारा मारा गया और सिकन्दर अन्त समय मे अपने संग्रह को देखता जाता था और रोता जाता था और रोते-रोते मर गया। सर्वोत्तम सुख का लाभ सन्तोष मे प्राप्त है।

★ जो मनुष्य जगत की जितनी भलाई करेगा, उसे ईश्वर की व्यवस्था से उतना ही सुख प्राप्त होगा। जो ... दूसरा ... कता पूरी करता है उसकी हर जरूर का ध्यान ... ईश्वर ... है। शिक्षा का महान् उद्देश्य ज्ञान नहीं कर्म है।

★ देखो! विज्ञान ने बहुत उन्नति की परन्तु ऐसी मशीन आज तक नहीं बनाई जिसमे दाल, रोटी डालने पर रक्त और फूस-पत्ता डालने पर दूध बनकर तैयार हो जाए।

★ सब कुछ छोड़ने की क्या आवश्यकता है? बस ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहो। जो भाषण नहीं देते बल्कि कुछ करके दिखाते हैं भला उनसे बड़ा समाज सेवक कौन हो सकता है?

प्रकाशक

डा एस एन गुप्त एण्ड सन्,

डा मसान चौराहा गली, मुरादाबाद,

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव

हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव मठ के अध्यक्ष पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता म आगामी 7 नवम्बर से 8 नवम्बर तक हो रहा है। 6 तथा 7 नवम्बर को वैदिक यतिमण्डल का सम्मेलन होगा जिसमे आर्य जगत के सन्यासी वानप्रस्थी एव ब्रह्मचारी भाग लेगे। 8 नवम्बर को पूर्णाहुति एव ऋषिलंगर होगा। इसके अतिरिक्त इन दिनो अनेक महात्माओ, विद्वानो एव संगीतज्ञो के वेदोपदेश एव मनोहर भजन सुनने को मिलेंगे।

उत्सव से पूर्व 30 अक्तूबर तक चम्बा के ग्रामो एव आर्य समाज बैंनून डलहौजी मे वेद प्रचार किया जाएगा। उत्सव के दिनो बाहर से आने वालो के निवास एव भोजन की व्यवस्था मठ की ओर से होगी। 1⁵ दिन का वेद प्रचार एव योग साधना शिविर भी लगेगा। पहली नवम्बर से मठ मे यजुर्वेद परायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। इस कार्यक्रम का आयोजन स्वामी सुमेधानन्द एव सदस्य प्रबन्ध कमेटी दयानन्द मठ चम्बा द्वारा किया गया।

स्वामी सुमेधानन्द

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गौ के लिए अघ्न्या(न मारने योग्य) तथा यज्ञ के पर्याय रूप मे अध्वर' (जिस मे हिंसा नही होती) शब्दो का उल्लेख किए जाने तथा गोहत्या का स्पष्ट निषेध करने वाले अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए जाने पर भी वह अपनी बात पर अडिग रहे। गौ वध पर रोक लगाने सम्बन्धी आन्दोलन के सन्दर्भ मे भी शकराचार्य ने इतना और कहा कि हम इस प्रकार की माग कलियुग के लिए कर रहे हैं और इस विषय मे हम प्रधानमन्त्री श्रीमती गाधी को समझा चुके।

शिवरात्रि के दिन स्वामी दयानन्द को भले ही ज्ञान हो गया हो हिन्दू जगत् के सर्वाधिक मान्य सर्वोपरि धार्मिक नेता महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव और आर्य समाज की स्थापना के सौ वर्ष से अधिक बीत जाने पर भी वही खड़े हैं। जहा उन्हे मकड़ो वर्ष पूर्व सायणाचार्य ने खड़ा कर दिया था। दो दिन पश्चात् समाचार पत्रो मे पता चला कि जगदगुरु शकराचार्य गुजरात मे 4 वैदिक पाठशालाओ की स्थापना करने जा रहा है। निश्चय ही उन मे वेद के उसी स्वरूप का पठन-पाठन हो रहा होगा। जिस का नमूना शकराचार्य जी और उन के सहयोगी विद्वानो ने उक्त वार्ता मे प्रस्तुत किया था। इन्ही दिनो मुझे बड़ौदा मे सियाजी राव यूनिवर्सिटी मे संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डाक्टर कान्तावाला से मिलने का अवसर मिला। बातचीत करने पर पता चला कि वहा भी सायणाचार्य का वेदभाष्य ही पढ़ाया जाता है। सवत्र यही स्थिति है।

लुधियाना में महर्षि निर्वाण दिवस

आर्य समाज हबीबगज अमरपुरा लुधियाना मे महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। 22-10-87 वीरवार को आर्य समाज मन्दिर मे प्रातः 7-30 से 10-30 तक महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस बडी धूम-धाम से मनाया गया। प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् आर. डी. स्कूल की छात्राओ ने सुन्दर गीत गाए। उसके पश्चात् डा. अनूप कुमार, भक्त ज्ञानचन्द, श्री आशानन्द आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल पजाब ने महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धाञ्जलि भेंट की और जनता से अपील की कि वह स्वामी जी महाराज के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए आज के दिन प्रण करें यज्ञ शेष के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

1—इसके साथ ही इस आर्य समाज मे अगस्त माह मे शान्ति यज्ञ किया गया जिसमे यहा नगर के सैकडो आर्य बन्धुओ ने भाग लिया इस अवसर पर श्री मगलसेन जी चढ्ढा, श्री कुलवन्तराय जी सूद, श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा, श्री आशानन्द आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल पजाब ने अपने विचार रखे।

2—14 9-87 को हिन्दी दिवस मनाया गया यज्ञ के पश्चात्, श्री बहादुर चन्द (सनातनधर्मी) श्री केवल कृष्ण शर्मा श्री मूलचन्द भारद्वाज, श्री आशानन्द जी आर्य ने हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डाला और अपने काम काज मे उसे अपनाने पर जोर दिया।

3—एक शोक प्रस्ताव द्वारा श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती और वैद्य दलीप चन्द जी, मा. पूर्णचन्द जी को श्रद्धाञ्जलिया भेंट की गई।

—रविन्द्र कुमार आर्य
उप-मन्त्री

ईसाई अन्तर्जातीय विधवा विवाह सम्पन्न

दोनो परिवारो से परित्यक्ततप्ता एव प्रताडित हुई श्रीमती कुसुमलता शर्मा, पूर्व पत्नी स्वर्गीय रतनलाल शर्मा की विधवा का पुनः विवाह श्री लक्ष्मण "बरोड़" सुपुत्र श्री मनीराम "बरोड़" सिरसा निवासी (हरियाणा) के साथ दोनो की स्वेच्छा से अन्तर्जातीय विधवा विवाह का प्रस्ताव आने पर पौराणिक सनातियो ने घोर विरोध अपनी आदत के अनुसार किया। किन्तु कुछ भोले सहृदय सज्जनो ने गिरजाघर मे शादी करवाने की सलाह दी। गिरजाघर मे ईसाई धर्म स्वीकारने व विवाह से पहले ही आर्य सज्जनो को ज्ञान हो गया। श्री डा. ओम्पाल शास्त्री, गोपी चन्द महिला कालेज अबोहर व अन्य सहयोगी आर्यों के प्रशसनीय प्रयास से दिनाक 11-10-87 अक्तूबर को सायकाल प्रधान—श्री कुलवन्त राय शाह, मन्त्री श्री वेदप्रकाश जुनेजा, तथा पदाधिकारी व सदस्यो की उपस्थिति मे पूर्ण वैदिक रीति से प. ओम् प्रकाश शास्त्री के पौरोहित्य मे विधवा व अन्तर्जातीय विवाह आर्य समाज मन्दिर मे सम्पन्न हुआ। सभी उपस्थित सज्जनो ने आशीर्वाद दिया और आर्थिक सहयोग देते हुए आश्वस्त किया।

मन्त्री

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का वार्षिकोत्सव

रजत जयन्ती—प्रथम वर्षीय समारोह (आर्यों का जागरण मेला) कार्तिक शुक्ला 8 वी. 9 वी. 10 वमी, 2044 (30,31, अक्तूबर, 1 नवम्बर 1987) को मनाया जा रहा है।

27-10-87 तक मातृ मन्दिर भवन मे। 28-10-87 से मारवाडी युवक सघ भवन, लक्सा रोड वाराणसी मे मनाया जाएगा।

धर्म बन्धु ! भगिनि ! मातृ मन्दिर के महोत्सव मे उक्त तिथियो मे हम आपको सानुरोध आमन्त्रित करते हैं। अवश्य पधार कर, सगठन शक्ति का परिचय देकर जनाकाक्षा को पूर्ण करें।

—डा. पुष्पावती अध्यक्ष

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं N.W/J.D.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 31 23 कार्तिक सम्वत् 2044 तदानुसार 8 नवम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

यज्ञ के दो पंख

लेखक —श्री स्व. महात्मा प्रभु आश्रित जी

मुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽअप्सरसस्तावा नाम ।
इद स न ब्रह्म क्षत्र पातु तस्मै स्वाहा वाट् । ताभ्य स्वाहा ।।

यजु 18-42

प्यारे महानुभावो ! यह सब जगत यज्ञ का साधन है अर्थात यज्ञ मे ही प्रतीक रूप से सम्पूर्ण जगत भेंट होता है, तब बनता है ।

ससार क्या है ? ससार दो प्रकार का है, जड और चेतन । चेतन जगत मे मनुष्य और पशु और जड जगत मे जल, जगल, धातु और वनस्पति शामिल हैं ।

पूर्ण यज्ञ केवल मानव ही कर सकता है ।

अब देखिए ! यज्ञ मे घृत, दुग्ध, मधु आदि पदार्थ तो पशुओ के प्रतिनिधि है । समिधा जगल की, अन्न, फल, मेवा औषधि आदि वनस्पति की—यह चीजें तो भेंट हुई जड अग्नि देवताओ को ।

यज्ञ की दूसरी अग्नि है चेतन देव— जिनकी भेंट होती है, दक्षिणा और दान, स्वर्ण, रजत, ताम्र धातु आदि रूप मे । चेतन देवो मे जीव और परमात्मा हैं । अत पूर्ण यज्ञ केवल मानव ही कर सकता है अन्य प्राणी नही । यज्ञ मे जीव यजमान है और वेद ज्ञाता पुरोहित (ऋत्विज) परमात्मा के प्रतिनिधि रूप मे विद्यमान होता है । मानो यज्ञ ही एक ऐसा प्रतीक है जिस मे सारा जगत और जगदीश्वर सम्मिलित होते हैं ।

यज्ञ की पूर्णाहुति कब समझनी चाहिए —

जड की अग्नि का यज्ञ तो हो गया, इस की पूर्णाहुति होगी चेतन अग्नि मे आहुति देने से । उस आहुति का नाम है दक्षिणा और दान ।

दक्षिणा और दान का रूप तथा फल —

इन का रूप क्या है और फल क्या है ? यज्ञ गौ है और दक्षिणा उस को ले जाने वाली अथवा बाधने वाली रज्जु है । रज्जु जिधर चाहे गौ को ले जाए, पूर्व मे पश्चिम मे, उत्तर मे दक्षिण मे अथवा अपने ही घर बाध रखें । बिना रज्जु गौ भाग जाती है । ऐसे दक्षिणा और यज्ञ का सम्बन्ध है । शास्त्रकारो ने कहा है —

दक्षिणा वै यज्ञाना पुरो गवी ।

अर्थात् दक्षिणा यज्ञ को आगे आगे ले जाती है ।

वेद क्या कहता है —

इसी ऋग्वेद मे जिस का यज्ञ किया गया है, दसवें मण्डल का सूक्त 107 दक्षिणा का ही है । इस सूक्त मे दक्षिणा का फल बताया है —

1 दक्षिणा अन्धकार से मुक्त कराने वाली ज्योति है ।

2 दक्षिणा दिव्य पूर्ति करने वाली है ।

3 दक्षिणावान की समाज मे उत्तम स्थिति होती है ।

4 दक्षिणावान ही समाज का वास्तविक नेता होता है ।

5 दक्षिणा से भौतिक सम्पत्ति का भी प्राप्ति होती है ।

6 दक्षिणावान का गृहस्थ सुखमय होता है ।

7 दक्षिणावान की लोग सब प्रकार की सेवा शुश्रूषा करते हैं ।

8 सर्व साधारण की आयु शरीर समाप्ति के साथ समाप्त हो जाती है । परन्तु दक्षिणावान पुरुषो का आयु उसके बाद भी रहती है, वह अपना नाम पीछे भी छोड जाते हैं ।

9 जिस कामना से यज्ञ शुरू किया जाता है । उसी कामना की पूर्ति इस यज्ञ से होती है । यदि धन सग्रह के लिए यज्ञ किया गया हो तो धन प्राप्ति होगी और यदि विद्या भावना की पूर्ति के लिए, शिक्षा आदि की हर प्रकार वृद्धि के लिए यज्ञ सम्पादन हुआ हो तो उसी की पूर्ति होगी । यज्ञ का नाम इष्ट कामधुक है । भगवान कृष्ण ने गीता मे कहा है —

सह यज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वो ऽस्ति इष्ट कामधुक ।।

गीता 3 10

अर्थात प्रजापति परमात्मा ने प्रजा को रच कर सृष्टि के आदि मे कहा कि ऐ जीवो ! इस यज्ञ से तुम बढो । इस से तुम्हारी सब प्रकार की शुभ इच्छाए पूर्ण होगी ।

यज्ञ की दक्षिणा न देने से क्या होता है वह भी सुन लीजिए —

ऐतरेय ब्राह्मण मे लिखा है

यज्ञोऽदक्षिणोरिष्यति । तस्मादाहु दातव्यैव यज्ञे दक्षिणा ।

अर्थात दक्षिणा के बिना यज्ञ का वास्तविक स्वरूप नष्ट हो जाता है अथवा यो समझिए —

1 दक्षिणा के बिना यज्ञ सूख जाता है जैसे गौ तो बडी बलवान हो परन्तु दूध सूख गया हो । अब खायेगी, देगी कुछ नही ।

2 भावना रहित यज्ञ सक्षय रोग है ! जितना भी खाए फिर भी अन्दर से सूखता ही जाता है ।

3 दूसरे की हिंसा अथवा हानि के लिए जो यज्ञ किया जाता है । वह कुष्ट रोग के समान है ।

4 अपने यज्ञ मे जो हिंसा की जाए वह आकाश बेल के समान है ! जो बड वृक्ष को सुखा देती है ।

5 दीन को दान, लगर भोजन के बिना यज्ञ, आख मे पीलिया पाण्डु रोग के समान है ।

दक्षिणा के बाद दान की बारी है —

दक्षिणा से तो देव पूजा होती है । यह दो प्रकार की है एक द्रव्य रूप से, दूसरा आत्म कल्याण रूप से और भोजन अन्न दान से सगतिकरण होता है ।

यज्ञ का तीसरा अग है दान —

जो दीन पराधीनो के बन्धन काटता है । दान=दा+न, दा का अर्थ है तोडना 'न' का अर्थ है बन्धन अर्थात बन्धन का तोडना । दान कई प्रकार का है । दान की बडी महिमा है अनेक चीजो का दान होता है । मनुष्य के कार्यों मे यह एक (अमानत रखी हुई) पूजी का काम करता है । आप देखते हैं कि ससार मे कितने धनी हैं, कोई अरबपति, कोई करोडपति, कोई लखपति । धन की प्राप्ति तो धन के दान से होती है । किसने दान का कितना फल होता है ? यह उत्तर यथार्थ रूप से गिन कर बताना तो मानव की बुद्धि से बाहर है असम्भव है । प्रभु कर्म फल दाता भी है और सर्वान्तर्यामी और सर्वज्ञ भी । यथार्थ ज्ञान दान, भाव उचित और अनुचित को वही जानते हैं । हा ! जो अनुमान खेती और वनस्पतियो द्वारा हो सकता है, वही समझाया जा सकता है । वह भी सुनने वाला बडे ध्यान और एकाग्रचित हो कर यदि सुने ! देखने मे आता है कि कई अनाज ऐसे है, जो एक दाना बोने से 50 60 दाने हो जाते हैं परन्तु उन का मूल्य कम है और शान (शोभा) भी कम है । जैसे गेहू का एक दाना का 50 60 हो जाता है और मक्की ज्वार, बाजरा, चने के एक एक दाने से सकडो दाने हो जाते है ऐसे ही फल की एक गुठली बोने से सहस्रो दान हो जाते है और कईयो के जैसे बेर आम, खजूर, जामुन तो सहस्रो हो जाते है और सतरा, सेब अनार आदि के सकडो, फिर, बट पीपल आदि तो लाखो फल और बीज देने वाले हैं ।

अब यो समझिये कि जो मनुष्य दान देता है (जरा अधिक सावधान हो कर सुन और पढ) ।

1 सद वस्तु का दान जो दाता देता भी सद पात्र मे और सद बुद्धि से देता है, उसे तो फल मिलता है बट की तरह ।

2 और जो मनुष्य देता तो सदबुद्धि का दान है और देता भी सद पात्र मे, परन्तु देता राजसिक बुद्धि से है तो उस

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आज दयानन्द की याद आती है

लेखक—डा प्रशान्त वेदालंकार, 7/2 रूपनगर दिल्ली

जब से देवराला में रूप कंवर (18) ने अपने पति के साथ अपने प्राणो की आहुति दी है तब से मुझे बराबर यह लग रहा है कि यदि आज दयानन्द होते तो वे सीधे देवराला जा पहुचते और वहा के राजपूतो को एकत्र कर उनसे पूछते—जिस देश की प्रधानमन्त्री विधवा रही हो वहा सती प्रथा का क्या औचित्य है ? यदि श्रीमती इन्दिरा गान्धी विधवा होने के उपरान्त अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जीवन मे सामान्य रूप से सक्रिय रह सकती हैं तो क्या रूप कंवर जीवित भी नही रह सकती थी ? वे रूप कंवर के नाम से सती मन्दिर के स्थान पर एक विशाल वनिता आश्रम की स्थापना करते, जहा रूप कंवर जैसी बाल व युवा विधवाओ की शिक्षा व उनके पुनर्विवाह की व्यवस्था होती। और यदि कोई उनकी इस बात का विरोध करता तो वे अपनी हुंकार से उसको शास्त्रार्थ के लिए ललकारते और उसे निस्तेज कर अन्ततः अपनी मृदु वाणी से उसे अपने वश मे करके उसे वनिता आश्रम का कार्यकर्ता बना देते। यह उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने घोषणा की थी कि ईश्वर के समीप स्त्री-पुरुष दोनो बराबर हैं, क्योकि वह न्यायकारी है, इसमें पक्षपात का लेश नहीं है। जब पुरुषों को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जाए तो स्त्रियो को दूसरे विवाह से क्यो रोका जाए ? महर्षि दयानन्द ने उस काल मे ही राजस्थान के राजाओ के विधवाओ की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए अपने बजट का कुछ अंश निर्धारित करने प्रेरणा दी थी।

और यदि पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरञ्जनदेव तीर्थ की यह बात उनके कानो मे पड जाती कि वे शास्त्रार्थ द्वारा यह प्रमाणित कर सकते हैं कि सती प्रथा सही है तो वे झट ऋग्वेद और अथर्ववेद का निम्नलिखित मन्त्र उद्धृत कर देते—

> उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
>
> हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ॥
>
> —ऋग् 10-18-8, अथर्व. 18।3।2

इस मन्त्र का भावार्थ सायणाचार्य के अनुसार इस प्रकार है—हे मरे हुए पति की पत्नि जीवित लडको, पोतों का लोक अर्थात् जो गृह है, उसका विचार करके इस जगह से उठ। प्राणान्त हुए पति के समीप तू न सो, वहा से आ। जिसने तू पाणिग्रहण करने वाले गर्भ को धारण करने वाले (द्वितीय) पति के सम्बन्ध से आए हुए इस (व्यक्ति) को स्त्री होने के विचार से निश्चय-पूर्वक अनुसरण कर।

अथर्ववेद के एक अन्य मन्त्र (18।3।1) मे भी विधवा स्त्री के दूसरे पति का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। सच तो यह है कि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य यहा तक कि मनुस्मृति (9।69), वसिष्ठ धर्म सूत्र (17।16) व मानव धर्म सूत्र (9।175) आदि ग्रन्थो मे भी स्त्री के दूसरे विवाह के समर्थक अनेक प्रमाण भरे हुए हैं। दयानन्द के सामने कोई 'निरञ्जन' ठहर नही पाता। वे श्री निरञ्जन के कि राजाराम मोहनराय के विरुद्ध बोलते तथा यह कहते कि सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाने से देश मे विधवाओ की समस्या उत्पन्न हुई है—के उत्तर में नारी जागरण का ऐसा आन्दोलन खड़ा कर देते कि कोई भी कुमारी कन्या किसी विधुर से विवाह न करती।

दयानन्द मे निर्भीकता, सप्रमाण शास्त्रार्थ करने की योग्यता तथा सामाजिक आन्दोलन चलाने की अद्भुत शक्ति थी। जो काम सरकारी कानून नही कर सकते वे उनके आन्दोलन कर दिखाते थे।

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय एकता के लिए वे राष्ट्र तथा हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य समझते थे। यदि कोई प्रधानमन्त्री उनके सम्मुख अपनी नयी शिक्षा नीति मे माध्यमिक कक्षाओ मे संस्कृत पर प्रतिबन्ध लगाता तो वे उसके विरुद्ध खड़े हो जाते। आर्य समाज की 5हजार से अधिक शिक्षा संस्थाओ में संस्कृत को अनिवार्य घोषित कर वे सरकारी नीति की अवहेलना करते। संस्कृत की समर्थक अन्य संस्थाओ को भी अपने इस आन्दोलन मे शामिल कर लेते। वे कहते—संस्कृत पर जो संकट मुस्लिम व ब्रिटिश राज्य भी नही ला सके उसे स्वतन्त्र भारत मे भारत की सरकार कैसे ला सकती है ? यह उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने स्वयं अनेक विद्यालयो की स्थापना कर संस्कृत अध्यापन पर बल दिया था। 23 मई 1881 को उन्होने अपनी फर्रुखाबाद की पाठशाला के संचालक सेठ निर्भयराम को लिखा था—'आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त मे संस्कृत का अभाव हो रहा है। परन्तु संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह समुद्र की और से निकली यह मातृभाषा है, वही प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुम को इसकी आवश्यकता नहीं दीखती। और न समुद्र के समान कुछ कर सकते हैं। हा, हमारी अति प्राचीन मातृ भाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान मे कोई नही है। यही व्यवस्था देख कर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगो ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्त्तव्य अवश्य है कि सर्वदा पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।'

वे भारत सरकार के विरुद्ध भी खड़े हो जाते। भारत सरकार को बताते कि इस देश की कोई भाषा ऐसी नही है जिसका शब्द भण्डार संस्कृत का न हो। केवल आर्य भाषाए ही नही, दक्षिण की भाषाए भी संस्कृत शब्द भण्डार पर ही आधारित हैं। तेलगु, कन्नड और मलयालम मे 90 प्रतिशत तथा तमिल मे 90 प्रतिशत से अधिक संस्कृत के शब्द हैं। देश की सभी भाषाओ के साहित्यकार साहित्य रचना के लिए संस्कृत साहित्य का अवलम्ब ग्रहण करते हैं।

दयानन्द पहले गैर हिन्दी राज्य के व्यक्ति थे जिन्होने राष्ट्रीय एकता के लिए संस्कृत के साथ हिन्दी का प्रयोग आवश्यक समझा था। उन्होंने अपने भाषण व लेखन का कार्य संस्कृत के साथ हिन्दी मे प्रारम्भ किया। महर्षि दयानन्द ने कहा था—"दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि जब कश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरो का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर मे भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित किए हैं।"

जब मैं सुनता हू कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के 40 वर्षों के बाद भी देश की 70 प्रतिशत जनता अशिक्षित है तब भी मुझे महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के निम्नलिखित अमर वाक्य याद आते हैं—इसमे राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लडके और लडकियो को घर मे न रख सकें। पाठशाला मे अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय है।" महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-प्रणाली के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है। युवकों में बढ़ती अपराध वृद्धि की रोकथाम दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है। पब्लिक स्कूलो की नकल पर नयी शिक्षा नीति में प्रस्तावित आदर्श विद्यालय देश के नागरिकों में भेद वृत्ति ही उत्पन्न करेंगे।

महर्षि दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने वर्ण-व्यवस्था को गुण कर्म-स्वभाव के अनुसार बता कर और जाति के आधार पर उत्पन्न उच्च और नीच भावना पर कुठाराघात किया था। वे भी शूद्रों को विशेषाधिकार देना चाहते थे। शूद्र बालक को घर के संकुचित वातावरण से हटा कर अध्यापक व व्यापारी के पुत्र के साथ रख कर सबको समान खान-पान, रहन सहन व समान शिक्षा देने के वे पक्षधर थे। वे भारतीय संविधान की इस व्यवस्था पर जबरदस्त चोट करते। जिसके अनुसार शिक्षित, धनी व समाज में मान्य हरिजनो के लिए भी आरक्षण की व्यवस्था है। यह दलित और पीड़ित हरिजन को यह संविधान कोई अधिकार नहीं दिलवा पा रहा।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित अर्थ-व्यवस्था में कोई भूखा नही रह सकता। किसान को देश का राजा कह कर उन्होंने कृषि व ग्रामोन्नति तथा स्वदेशी पर निर्भर रह कर देश को स्वावलम्बी बनाने का पाठ पढ़ाया था। उन्होने मैक्स को धन संग्रह का अधिकार अवश्य दिया पर 50 वर्षों की आयु के उपरान्त उसे वानप्रस्थी बना कर सारा धन छोड जाने की भी व्यवस्था की।

महर्षि दयानन्द को वैदिक धर्म का पुनरुद्धारक कह कर आर्य समाज नामक नए मत का प्रवर्तक कह दिया जाता है। पर महर्षि का स्पष्ट मत था—"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू जो तीन काल मे सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा नवीन कल्पना का मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना, मुझ को अभीष्ट है। सत्यार्थ प्रकाश में लिखा—सब सत्य भाषण में धर्म और असत्य भाषण मे अधर्म मानते हैं। इसी प्रकार विद्या पढ़ने, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्संग, पुरुषार्थ आदि को भी सत्य धर्म मानते हैं। धर्म की इस व्याख्या से महर्षि ने सभी धर्मों एवं सम्प्रदायो मे एकता कर सबको देश की उन्नति की प्रेरणा दी। दयानन्द के इन प्रयत्नो से एक नयी दिशा मिली, और देश मे नव जागरण की एक लहर सी आ गई। यदि वे आज होते तो सब धर्मों को मानवता के कल्याण मे लगा देते।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज अब क्या करे ?–2

4 अक्तूबर को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जो अधिवेशन हुआ था उसमें सभा के अधिकारी और अन्तरंग सभा के सदस्य मनोनीत करने का मुझे जो अधिकार दिया गया था उसके अनुसार मैंने जिन महानुभावों को मनोनीत किया है उसकी घोषणा आर्य मर्यादा के पिछले अंक में की जा चुकी है। उसी अंक में उन समितियों का विवरण भी दिया गया है जो पंजाब में आर्य समाज के प्रचार के लिए बनाई गई हैं। मैं आर्य जनता का ध्यान उन समितियों की ओर विशेष रूप से दिलाना चाहता हूं। प्रायः देखा गया है कि जो महानुभाव अधिकारी बनते हैं संस्था को चलाने का सारा कार्यभार उनके कन्धों पर। ही डाल दिया जाता है उनमें भी विशेष कर प्रधान और मन्त्री पर, इस का यह परिणाम होता है कि इससे लोगों को उसमें कोई रुचि नहीं रहती। इसलिए अब कुछ समितियां बना दी गई हैं। विशेष कर वेद प्रचार समिति, साहित्य प्रकाशन व प्रसारण समिति, दलित उद्धार समिति, युवक संगठन समिति, आर्य वीर दल समिति और समाज कल्याण समिति प्रत्येक समिति का एक-2 संयोजक बना दिया गया और उसके साथ कुछ अन्तरंग सदस्य भी मनोनीत कर दिए गए हैं। सभा की गत बैठक में मैंने इस बात पर जोर दिया था कि अब इन समितियों को अपने दायित्व को समझते हुए अपने क्षेत्र में कार्य करना चाहिए और तीन माह के पश्चात् जब फिर अन्तरंग सभा की बैठक हो तो सब समितियों के संयोजक अपनी-2 रिपोर्ट सभा के सामने रखें और बताएं कि उन्होंने क्या-2 काम किया है।

इसी के साथ कुछ क्षेत्रीय समितियां भी बनाई गई हैं पंजाब चार भागों में बांट दिया गया है और प्रत्येक भाग में तीन-चार जिले रख दिए गए हैं। उस क्षेत्र की समिति के जिम्मे यह काम होगा कि वह अपने क्षेत्र की सब आर्य समाजों से सम्पर्क रखें और देखें कि वह सक्रिय रूप से काम कर रही हैं या नहीं। कई ऐसी आर्य समाजें भी हैं जिनमें विधिवत सत्संग भी नहीं लगता क्षेत्रिय समितियों का यह कार्य होगा कि वह देखें कि उन आर्य समाजों में सत्संग लगते हैं या नहीं यदि वहां कोई कमी है तो उसे दूर करने का प्रयास किया जाए।

इन सब समितियों को बनाने का मुख्य अभिप्राय यह है कि सारा काम आपस में बांट दिया जाए और सभा का प्रत्येक सदस्य यह अनुभव करें कि उसके ऊपर कुछ जिम्मेदारी है। हमारा यह स्वभाव बन गया है कि हम काम कम करते हैं और नुक्ताचीनी ज्यादा करते हैं इसी के साथ यह भी समझ लिया जाता है कि सारी जिम्मेदारी प्रधान और मन्त्री की है। अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि अन्तरंग सभा के सदस्य बनने के लिए सभा के प्रतिनिधि बहुत उत्सुक रहते हैं। मैंने जब तक अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों को मनोनीत न किया था मुझे कई सदस्यों के पत्र भी आते थे और टैलीफोन भी आते थे। कई दूसरे सदस्यों से सिफारिश कराते थे। यदि मैं सब की बात मान लेता तो 156 में से एक सौ सदस्यों को अन्तरंग सभा में लेना पड़ता। मैं समझता हूं कि जो सूची मैंने बनाई है उसमें फिर भी कई ऐसे सज्जन रह गए हैं जो अन्तरंग में आ सकते थे परन्तु विवशता के कारण मैं उन्हें नहीं ले सका। इसका मुझे खेद है। फिर भी मुझे आशा है कि उनका सहयोग अब भी हमें पहले की तरह ही मिलता रहेगा।

अधिकारियों के और अन्तरंग सभा के सदस्यों के मनोनीत हो जाने के बाद हमारी जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती, बल्कि और बढ़ जाती है जैसा कि मैं बार-2 लिख चुका हूं कि पंजाब की परिस्थितियों में हमारे लिए काम करना कठिन है परन्तु हमें करना भी अवश्य है बाहिर से हमें कोई सहायता न मिली है न मिलेगी। हमें स्वयं अपने पांव पर खड़ा होना है। यह उसी स्थिति में सम्भव हो सकता है यदि पंजाब की सब आर्य समाजें सक्रिय हो जाएं। इस समय पंजाब में लगभग 150 आर्य समाजें हैं उनमें कुछ विशेष कर वह जो देहात में हैं वह कुछ अधिक सक्रिय नहीं हैं। उनकी तरफ भी हमें ध्यान देना है। हम सब मिल कर ही ऋषि के मिशन को पूरा कर सकते हैं इसलिए पंजाब के प्रत्येक आर्य समाजो को पहले से अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है।

आर्य समाजों के अधिकारियों और अन्तरंग सभा के सदस्य महानुभावों से मेरा एक और निवेदन भी है कि आर्य मर्यादा सभा का मुख पत्र है यह एक प्रकार से सभा के अधिकारियों के दूत का काम भी करता है। सभा और उससे सम्बन्धित आर्य समाजो की गतिविधियां इसमें प्रकाशित होती रहती है। सभा ने समय-समय पर जो आदेश देने हों वह भी इसमें प्रकाशित होते हैं। इसलिए प्रत्येक आर्य समाजो का विशेष कर आर्य समाजो के अधिकारियो का यह कर्त्तव्य है कि वह आर्य मर्यादा को स्वयं भी पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं इसके द्वारा आर्य समाज का दृष्टिकोण सबके सामने आता रहता है। जैसा कि मैं पहले भी लिख चुका हूं कि इस बार सभा का चुनाव एक ऐतिहासिक महत्व रखता है इसके साथ हमारी जिम्मेदारी बढ़ गई है मुझे इस बात की भी हार्दिक प्रसन्नता है कि कुछ नए युवक आगे आ रहे हैं मैंने सभा की अन्तरंग सभा में उन्हें भी विशेष स्थान दिया है। इसलिए उन्हें भी सभा के और आर्य समाज के काम में अधिक रुचि लेनी चाहिए। मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है कि यह अवसर वर्ष सभा के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहेगा और हम पंजाब में आर्य समाज की ज्वाला को और भी अधिक प्रज्वलित करके इसका प्रकाश दूर-2 तक फैलाने में सफल हो जाएंगे।

—वीरेन्द्र

संघर्ष जारी रहेगा

आज सारे देश में भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक अभियान चल रहा है प्रायः सब राजनैतिक दल अब यह कह रहे हैं कि भ्रष्टाचार समाप्त करना चाहिए आर्य समाज सदा ही ऐसे अभियान में सबसे आगे रहा है। उसका गौरवमय इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज को इस देश में जो सम्मान और प्रतिष्ठा मिली है यह केवल इसलिए कि लोग समझते थे कि यही वह एक संस्था है जहां नैतिकता के उच्च सिद्धान्तों पर आचरण किया जाता है। आर्य समाज में जब कौड़ी-2 और पैसे-2 का हिसाब रखा जाता था तो लोग भी इसे दिल खोल कर दान देते थे। जनता का सिर श्रद्धा से आर्य समाजियों के आगे झुक जाता था। अब स्थिति बदलती जा रही है आर्य समाज का रूप भी बदल रहा है। इसमें भ्रष्टाचार को केवल सहन ही नहीं किया जाता उसे प्रोत्साहन भी दिया जा रहा है, कई स्थानों पर इसके विरुद्ध जनमत तैयार हो रहा है। मैं इसे आर्य समाज के नेतृत्व की परीक्षा की घड़ी समझता हूं यदि हमारे नेता गण आर्य समाज आदर्श और सम्मान की रक्षा करना चाहते हैं और यदि वह चाहते हैं कि आर्य समाज को फिर वही महत्व मिल जाए जो पहले मिला करता था तो उन्हें देश में चलते हुए भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व करना चाहिए और उससे पहले अपनी संस्थाओं को गंगा की तरह पवित्र और स्वच्छ बनाना चाहिए। यह आर्य समाज की परीक्षा की घड़ी है हमें यह संकल्प करना चाहिए कि आर्य समाज की किसी भी संस्था में किसी भी रूप में भ्रष्टाचार सहन नहीं किया जा सकता। यदि हम सब मिल कर इस दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाएंगे तो आर्य समाज एक बार फिर जनता का नेतृत्व करने के योग्य बन जाएगा नहीं तो धीरे-2 इस का नाम मिट जाएगा और इसका दायित्व आर्य समाज के नेताओं पर होगा। आज वह अपने आपको चाहे कुछ समझते रहें इतिहास उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।

—वीरेन्द्र

आदर्श राष्ट्र

लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्य शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। यजु अ 22 म 22। हमारे राष्ट्र मे शिक्षक और उपदेशक ओजस्वी और तेजस्वी हो वे विद्या के भण्डार हो। वे वेद ज्ञाता हो।

उनका चरित्र उच्च एव आदर्श हो। देश मे ब्राह्मण जितना उच्च कोटि का विद्वान होगा वह देश को उतना ही अधिक उन्नति की ओर ले जाएगा। टकापन्थी पेटू स्वार्थी काला भैंस बराबर जन्म का ब्राह्मण देश को गर्त मे गिराएगा। ब्राह्मण जन्म से नही गुण-कर्म स्वभाव से बनता है। ब्राह्मण ही विद्या दान के द्वारा देश का सच्चा सु-निर्माण करता है। शराबी कबाबी बीडी सिग्रेट पीने वाला ब्राह्मण, ब्राह्मण विद्यार्थियो मे उच्च भावनाए नही भर सकता। देश को आगे बढाने और उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए राष्ट्र मे ज्ञान की ज्योति से चमकते हुए ब्राह्मण होने चाहिए।

2 राजन्य शूर इषव्य: अति-व्याधी महारथ: आजायताम् हमारे राष्ट्र मे क्षत्रिय शूर-वीर-धनुर्धर अतिवेध और बल से शत्रु को पीड़ित और परास्त करने वाले तथा महारथी अकेला ही हजारो से लडने वाला हो देश की रक्षा का भार क्षत्रिय शूरवीर रण मे कुशल और युद्ध विद्या मे कुशल है तो वे देश को कभी पराधीन नही होने देगा। यदि कभी किसी देश ने अपने देश पर आक्रमण किया, तो वे शत्रु के दात खट्टे कर देगा। देश मे क्षत्रिय होना चाहिए महा-राणा प्रताप जैसा।

महाराणा प्रताप बिना साधनो से भी मुगल सम्राट अकबर से जूझता रहा वे जगलो की खाक छानते हैं परन्तु अकबर के सामने सिर नही झुकाते। एक कवि ने उसकी प्रशसा मे ठीक ही कहा—

> आके देखो दोस्तो इस राजपूती शान को।
> लडते लडने मर गया लेकिन न छोडा आनको।

क्षत्रिय होने चाहिए महाराणा सावा छत्रपति शिवा जी और पृथ्वीराज चौहान जैसे। ऐसे वीर देश को शत्रु के आक्रमण से बचा कर देश को आगे ले जाते हैं।

3 धेनु दोग्ध्री —राष्ट्र मे दूध देने वाली गौए होनी चाहिए। देश के युवकों का स्वास्थ्य दुग्ध पान से ही बनेगा। चाय कोका-कोला और शराब पीने स देश के नौजवान हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ नही हो सकते।

देश मे घी दूध दही आदि पदार्थ भारी मात्रा मे उपलब्ध हो सकें इसके लिए देश मे गाये होनी चाहिए और गायें भी मरियल नही सूखी सडकी नही। गाय सबल हो और खूब दूध देने वाली हो। प्रत्येक गाय 10 15 लीटर दूध दे सकें। गायो की नस्ल को सुधारने का प्रबन्ध होना चाहिए।

4 अनड्वान वोढा

बैल बोझ उठाने में समर्थ हो। खेती के लिए बलशाली बैलो की आव-श्यकता है। बैल जितने बलशाली होगे उतनी अधिक राष्ट्र की उपज भी बढ़ेगी। देश अन्न से भरपूर होगा।

5 आशु. सप्ति

राष्ट्र मे वेगवान घोडे भी होने चाहिए। घोडे सवारी का कार्य देंवे। आज का युग स्कूटरो का युग है।

6 योषा पुरन्धि

स्त्रिया राष्ट्र की रक्षा करने मे समर्थ हो। वेद मे नारी को अबला नहीं कहा उसे वरारु (सबला) और शत्रु सहारक कहा है। स्त्रिया किसी भी देश का नक्शा बदल सकती हैं। वेद मे पुराणो की भान्ति नारी को पददलित और अपमानित नही बताया गया। नारी तो गृह की शोभा और राष्ट्र का भार वहन करने वाली है।

7 जिष्णु रथेष्ठा

रथ पर बैठने वाले सवार युद्ध करने वाले वीर विजयशील हो। वे सदा विजय करके ही लौटें कभी भी पराजित होकर न लौटे। समर-भूमि मे शत्रु के छक्के छुडा दें।

8 अस्य यजमानस्य सभेयो युवा वीर आजायताम्—

यज्ञ करने वाले पुरुष के पुत्र सभ्य सभा मे उत्तम बोलने वाले और वीर हो। देश के सभी नागरिक सभ्य बनें। उनका व्यवहार रहन-सहन चाल-चलन ऐसा हो जिससे सभ्यता प्रकट हो। वे असभ्यता का कोई काम न करें। जिसके साथ जैसा व्यवहार करना चाहिए उसके साथ ही वे वीर हो कायर डरपोक और भीरु न हो।

9. निकामे निकामे न: पर्जन्य वर्षतु—

हमारे राष्ट्र में समय-समय पर वर्षा हो। जब हम चाहें उसी समय वर्षा हो जब न चाहे उस समय वर्षा न हो। यज्ञ के द्वारा समय पर वर्षा कराई जा सकती है। यज्ञ के द्वारा वृष्टि को रोका जा सकता है। देश मे यज्ञो का ऐसा वातावरण तैयार किया जाए कि हम जब-जब कामना करें तब-तब वृष्टि हो।

10 फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम्—

हमारी औषधिया जडी-बूटिया गेहू जौ, चना, चावल आदि सभी फल वाली होकर पकें। औषधियो पर जनता का जीवन निर्भर है। देश मे नाना प्रकार के अन्न पर्याप्त मात्रा मे उत्पन्न हो। अन्न के सेवन से हमारे शरीर पुष्ट रहेंगे और जडी-बूटियो के सेवन से स्वस्थ रहेंगे।

11 योगक्षेम: न: कल्पताम्

हमारा योग क्षेम और क्षेम रहे योग का अर्थ है जो पदार्थ हमारे पास नही हैं उनकी हमें प्राप्ति हो।

हमारे राष्ट्र मे जिन वस्तुओ की कमी है उस कमी को पूरा करने के लिए प्रबल प्रयत्न और पुरुषार्थ किया जाए। उद्योग और परिश्रम से जिस वस्तु को हमने प्राप्त कर लिया है उसका क्षेम उसे सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया जाए। ये 11 बातें हैं।

जिस राष्ट्र मे ये वस्तुए होगी वह राष्ट्र एक आदर्श वैदिक राष्ट्र होगा। इस मन्त्र मे देश के लिए सभी आवश्यक वस्तुओ का निर्देश कर दिया गया है। इस से सुन्दर क्या किसी राष्ट्र की कल्पना हो सकती है?

आर्य मीरायति जी की पंजाब यात्रा

वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) मे एक सुन्दर कुटिया की निवासनी आर्य मीरायती को उत्तर भारतीय (विशेष कर पंजाब) के आर्य जगत् का शायद ही कोई व्यक्ति हो जो न जानता हो। मधुर भाषिणी, विदुषी, अपने स्वास्थ्य की ओर पंजाब की वर्तमान आतंक ग्रस्त परिस्थितियों की परवाह न करते हुए पिछले दिनो पंजाब की वेद प्रचारार्थ यात्रा कर के गई हैं, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

वेद के गहनाध्ययन से उन्होंने इस के मर्म को जाना ही नहीं अपितु अनु-शीलता से उसे मानवोपयोगी कैसे बनाया जा सकता है। इसके ऊपर व्यापक अनुसंधान भी किया है। तभी तो उनके जीवन की गाथा पढने और भाषण सुनने मे कोई अन्तर नही होता। उनकी विलक्षण शैली, बुद्धि गम्या, सरल भाषा, हृदय-ग्राही भाव दृढ संकल्प जनक विचार, मर्मस्पर्शी उदाहरणो से जीवन मे क्रियात्मि-कता लाकर आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। उनकी दिनचर्या मे उनके जीवन के क्षणो का बहुत थोडा भाग वह अपने निजी प्रयोजनार्थ रख पाती हैं दिन मे 3 घण्टे मौन के सपुर्द करती हैं। बाकी दिन का समय पारिवारिक सत्सग स्कूली बच्चो को मार्ग दर्शक भाषण आर्य समाजो परिवारो में वेद प्रचार और शेष समय स्वाध्याय और पुस्तक लेखन के निमित्त है यह स्वाध्याय प्रतियो को निः-शुल्क बाटती हैं। रात्रि का कुछ समय चिन्तन और शेष निद्रा देवी के अर्पण कर देती हैं। उनकी पंजाब की प्रचार यात्रा 10 अक्तूबर 87 को लुधियाना महर्षि दयानन्द (दाल बाजार) आर्य समाज से प्रारम्भ हुई। 11 तक वहा रह कर 12, 13 आर्य समाज मारिण्डा एव वहा बच्चो के एक स्कूल मे प्रचार किया, एव पुस्तकें बाटी। 13 से 18 तक आर्य समाज नया नगल एव परिवारो मे सत्सग। 19 को माडल टाऊन लुधियाना मुजाल परिवार मे सत्सग 20 को रेलवे कालोनी जालन्धर मे एक शोक सभा मे जीवन और मृत्यु की वास्तविकता पर वेद, मत बतलाया। 21 को जालन्धर मे माता परमेश्वरी देवी के घर पर सत्सग। 22 को आर्य समाज गोविन्दगढ मे निराकार ब्रह्म पर भाषण, साय को गुरु नानकपुरा मे श्रीमती कृष्णा कोछड के गृह पर सत्सग। 23 को एक आर्य परिवार जालन्धर में श्रीमती ज्ञानदेवी के गृह पर बालक के जन्मदिन पर माता पिता के बालको के प्रति कर्त्तव्य पर विचार दिए। 24 से 27 तक आर्य समाज मेन बाजार पठान-कोट मे वेद प्रचार के अतिरिक्त पारिवारिक सत्सग प्राय प्रतिदिन हुआ। 28, 29 को जालन्धर मे पारिवारिक सत्सग। 30 को दयानन्द मठ दन मोहल्ला जालन्धर के वार्षिकोत्सव पर आयोजित महिला सम्मेलन मे व्याख्यान दिया और साय हरिद्वार के लिए प्रस्थान। यती जी को अपने यहा प्रचारार्थ बुलाने वाले सज्जन लगभग एक दो माह पूर्व उनसे अनुमति ले लेवें। क्यो कि उनका प्रोग्राम मध्य प्रदेश राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल, पंजाब आदि का प्राय पूर्व ही बना रहता है। ऐसी विदुषी सन्यासिन को अपने उत्सवो और परिवारो में बुला कर जीवन लाभ उठाने से वंचित न रहें।

—ब्रह्मदत्त शर्मा

सभा वेद प्रचार अधिष्ठाता जालन्धर

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

खूनी से मुनि

लेखक—श्री कांशीराम जी बावला द्वारा श्री पथिक कुटमलपुर

महाराजा रणजीतसिंह के शासन काल में एक ग्राम में धूर्त युवक दुष्ट प्रकृति के रहते थे जो लोगों पर बड़े अत्याचार करके उन से धन माल छीनते थे। लोग उनसे बड़े भयभीत रहते थे। कुछ काल के पश्चात् वे लाहौर चले गए ताकि लूट मार का धन्धा वहां चलायें। किन्तु वहां पुलिस के भय से वे अपना आशय पूरा न कर सके। तब उन्होंने एक और उपाय सोचा। उनमें से एक तो बड़े लम्बे आकार का तथा हृष्ट पुष्ट था और दूसरा पतला और दुर्बल था। मोटा आदमी तो रावी नदी को जाने वाले मार्ग पर एक ऐसे स्थान पर साधु बन कर बैठ गया कि वहां बहुत से लोगों का आना जाना होता था और दूसरा लोगों में उसकी सिद्धियों और अलौकिक शक्तियों का प्रसार करने लगा। भारत के लोगों को तो ऐसे साधुओं में झट श्रद्धा बन जाती है। लोग उस साधु के पास अनेक पदार्थों के चढ़ावे लेकर जाते और उसकी आशीर्वाद के अभिलाषी होते। कोई पुत्र मांगता कोई पत्नी कोई धन तो कोई नौकरी। रात के समय वे दोनों बड़े आनन्दपूर्वक खाते-पीते और दिन के समय वह बनावटी साधु फिर बगुला समाधि लगा कर बैठ जाता। काफी दिनों तक उन का यह धन्धा सफलतापूर्वक चलता रहा। साथ ही नगर में उस साधु की प्रसिद्धि की चर्चा स्थान-स्थान पर होने लगी। और उसके पास लोगों की भीड़ लगी रहती।

धीरे-धीरे उस साधु की कीर्ति राजमहल में भी जा पहुंची। एक दिन महाराजा ने साथ लगती भूमि पर अधिकार जमाने के लिए आक्रमण करने का निश्चय किया। तब उनके मुख्यमन्त्री ने कहा कि जाने से पूर्व उस साधु का आशीर्वाद ले लेना चाहिए कि जिस की इतनी महानता तथा प्रतिष्ठा हो रही है। महाराजा रणजीतसिंह को उसका विचार पसन्द आया और वह सेना लेकर पहले उस साधु की ओर गए। वहां पहुंच कर घोड़े से उतरे। साधु को आदर पूर्वक प्रणाम किया, सोने की मोहरों की भेंट रखी और आशीर्वाद लेकर सेना आगे बढ़ा दी।

जब वे दोनों अकेले रह गए, तो शिष्य ने साधु को आंखें खोल कर मोहरों इत्यादि की भेंट को देखने के लिए कहा, किन्तु उस साधु ने आंखें खोलने की भी न कर दी। शिष्य ने तब महाराज के आने और प्रणाम करके भेंट रखने का भाव विस्तार से साधु को सुनाया। किन्तु साधु ने फिर भी आंखें बन्द रखीं और कहा कि जो कुछ भेंट आई है, वह तुम लेकर उसी ग्राम में लौट जाओ और वहां इस धन से सुख पूर्वक स्वच्छ जीवन व्यतीत करो। शिष्य ने समझा कि वह साधु ये सारा कुछ कह कर भी ढोंग रचा रहा है और उसको कई ठठोली बातें भी कहीं। किन्तु साधु तो फिर भी टस से मस न हुआ। शिष्य ने तब बलपूर्वक कहा कि अब हम दोनों ही ग्राम में चले चलें, क्योंकि यह धन दोनों के लिए पर्याप्त है। तब साधु ने उससे कहा "सुनो प्यारे! जब नकली समाधि लगाने से महाराजा आकर मेरे चरणों में झुक सकता है और इतना धन भेंट कर सकता है तो क्यों न मैं सच्चे दिल से उस परम पिता परमेश्वर के ध्यान में बैठ कर समाधि लगाऊं। इसलिए मेरा मोह अब इस संसार से छूट गया है। मुझे भगवान ने सद्-मार्ग दिखा दिया है। अब मेरा किसी भी प्राणी तथा पदार्थ से लगाव नहीं है। मैं तो अब इसी स्थान पर बैठा सच्ची समाधि लगाऊंगा। तुम ये सब धन इत्यादि लेकर चले जाओ। मुझे न तो इससे प्यार है और न इसकी आवश्यकता, यह कह कर वह साधु फिर चुप हो गया और वहीं सच्ची समाधि लगा ली।

०००

शुद्धि समाचार

आर्य समाज समालखा के तत्वावधान में 25 और 28 अक्तूबर को शुद्धि का कार्य हुआ जिसमें यज्ञ के उपरान्त मुसलमान नट परिवारों के 18 सदस्यों का शुद्धि संस्कार किया गया। इन सबने स्वेच्छा से हिन्दू धर्म को स्वीकार किया। इस कार्य में स्वामी सेवानन्द जी, बहन एम. एन. आर्या श्री रामेश्वर दयाल जी, मांगे राम उपदेशक का सहयोग भी प्राप्त रहा।

पाखण्डों के उन्मूलन के लिए आर्य समाज अभियान चलाए

आज देश में "रूप कंवर" सती काण्ड हो रहे हैं और शंकराचार्य उनका समर्थन कर रहे हैं परन्तु हम अपनी माताओं, बहिनों व बेटियों को जलने नहीं देंगे चाहे इसके लिए कितनी कुर्बानियां भी क्यों न देनी पड़ें। यह उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा रामलीला मैदान, नई दिल्ली में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती के 104 वें निर्वाणोत्सव पर व्यक्त किए।

"भाषा" के सम्पादक डा वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि इस दिन हमें महर्षि के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी के समर्थन में एक जन आन्दोलन चलाया जाए।

सांसद व पूर्व राज्यमन्त्री श्री डी पी यादव ने कहा कि दयानन्द एक युग पुरुष थे जिनके बताये हुए मार्ग पर चलकर देश वर्तमान संकट से उभर सकता है। इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा शिव कुमार शास्त्री, डा. श्रीमती सरोज दीक्षा, स्वामी अग्निवेश, श्री सन्त कुमार सिंह (दक्षिण अफ्रीका), पण्डित चिन्तामणि आदि नेताओं ने भी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि बुराइयों के उन्मूलन के विरुद्ध क्रान्तिकारी अभियान चला कर स्वामी जी के कार्य को पूरा करना चाहिए।

स्वामी डा. सत्यप्रकाश सरस्वती ने अध्यक्षीय भाषण में वैदिक साहित्य के प्रकाशन व प्रचार पर बल दिया और आचार्य विशुद्धानन्द को 1100 रुपये एवम् प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

—विमलकान्ता वर्मा

एक आवश्यक सूचना

आर्य समाज का इतिहास—सम्पादक डा सत्यकेतु विद्यालंकार

सात-सात सौ से भी अधिक पृष्ठों के सात भागों में आर्य समाज का विस्तृत इतिहास सम्पादित व प्रकाशित करने का जो कार्य हमने प्रारम्भ किया था। वह अब पूर्ण होने को है। उसके छः भाग प्रकाशित हो चुके हैं और सातवां भाग मई, 1988 तक छप कर तैयार हो जाएगा। यह इतिहास आर्य समाज के विश्वकोष के समान है। जिसे सब आर्य समाजों तथा शिक्षण-संस्थाओं के पुस्तकालयों में अवश्य ही रहना चाहिए। इतिहास के प्रत्येक भाग का मूल्य एक सौ रुपए (पुस्तकालय संस्करण का एक सौ पचीस रुपये) है। पर सातों भागों के पूरे सैट का मूल्य केवल पांच सौ रुपए रखा गया है। पहले भाग की बहुत थोड़ी सी प्रतियां अब शेष बची हैं. अतः जो महानुभाव 'इतिहास' का पूरा सेट लेना चाहें, वे शीघ्र पांच सौ रुपए भेजने की कृपा करें, जिनके प्राप्त होते ही छ. भाग तुरन्त उनकी सेवा में भेज दिए जाएंगे, और सातवां भाग मई, 1988 में उनके पते पर पहुंचा दिया जाएगा। पहले भाग के समाप्त हो जाने पर पूरा सैट प्राप्त कर सकना सम्भव नहीं रहेगा। आर्य बन्धुओं से यह भी प्रार्थना है कि आर्यों द्वारा जो विविध ट्रस्ट व स्थायी निधियां स्थापित हैं, उनके विवरण हमें शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। ताकि सातवें भाग में उन्हें प्रकाशित किया जा सके।

—आर्य स्वाध्याय केन्द्र

ए 32 सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-29

श्री बी. के. दीवान जी का निधन

प्रिंसीपल बालकृष्ण दीवान वेदालंकार के आकस्मिक निधन का समाचार सुन कर विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ को अत्यन्त दुःख हुआ। जिनके वैदिक सत्संग आदि सभी उन्हीं से ही सुशोभित होते थे।

वह सारे आर्य सामाजिक जगत् चण्डीगढ़ के परम उदार निष्काम सेवी वैदिक सिद्धान्तों के प्रवक्ता थे।

परमेश्वर देव स्वर्गीय दीवान जी को परलोक में भी ऐसा वेद विद्या सम्पन्न जीवन प्रदान करें जिस से मानव जगत् को शान्ति की प्राप्ति हो तथा उनके प्यारे परिवार को भी इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति और शान्ति प्रदान करें।

—आसुराम आर्य-महामन्त्री

भूतल पर स्वर्ग की साकार कल्पना

लेखिका—डा. पुष्पावती जी आचार्या, मातृ मन्दिर
कन्या गुरुकुल वाराणसी

वेद व वैदिक साहित्य मे यज्ञ महिमा पढ कर यज्ञ के विषय मे गहराई से विचारने को मन विवश हुआ। 'स्वर्ग कामो यजेत' इस मीमांसा वाक्य ने यज्ञ के प्रति और अधिक आकृष्ट किया। वैज्ञानिक गवेषणाओ ने इस जिज्ञासा को तीव्रतर किया। अपना प्रथम शोध प्रबन्ध ग्रन्थ लिखते समय भी यज्ञ पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता अनुभव हुई। पन्द्रह-बीस वर्षों के फुट-फुट विचार प्रवाह के परिणाम स्वरूप प्रायोगिकी यज्ञशाला का निश्चय हुआ। अभी भी यज्ञ सम्बन्धी अनेक तथ्य विचार ही नही अपितु गवेषणा कोटि में ही है, क्योकि उन पर विद्वानो का अभी ध्यान नही गया है। मैं भी मातृ मन्दिर के सचालन मे उलझी हू।

प्रभु की असीम कृपा से ऐसा कुछ आभास मिलने लगा है कि यदि समुचित गवेषणा की जाए तो यज्ञ से वह कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कुछ कि हम चाहते हैं, जिसकी हम अभिलाषा करते हैं। "स्वर्ग कामो यजेत" की ऋषि मान्यता वास्तविकता पर आधारित है केवल कल्पना पर नही या कोरा अर्थवाद नही। सक्षेप मे मैं अपने विचार सुविज्ञ जनों के सम्मुख विनम्र प्रश्न व स प्रस्तुत कर रही हू कि उनसे पथ प्रदर्शन तथा सहयोग मिलेगा।

यज्ञ मे मुख्यत: तीन वस्तुए हमारे लिए विचारणीय या गवेषणीय हैं—यज्ञ धूम, वेद मन्त्रो की ध्वनिया तथा सूर्य रश्मिया। इन तीनो का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यो तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन म तथा सृष्टि विकास मे तीनो का प्रभाव अनुभव करता ही है। यज्ञो के द्वारा वर्षा तो अनेक स्थानो पर अनेक बार कराई गई है। आचार्य वीरसेन जी वेद श्रमी ने अनेक भयकर रोगो की चिकित्सा भी यज्ञ के द्वारा की है। अब आवश्यकता है कि वैज्ञानिक आधार पर इस की व्याख्या व प्रयोग किए जाए। ऐसा होने पर यज्ञ सर्व लोकप्रिय हो जाएगा। इस समय की यह माग भी है। प्रदूषण का राक्षस अपने फौलादी पजे फैलाए बढा आ रहा है, दिन पर दिन अभाव की (अकाल जैसी) काली छाया मानव जीवन पर घनीभूत हुई आ रही है, पारस्परिक सम्बन्धो मे भी मानवीयता की प्ररणा दब रही है। यह सब दम्यु व यज्ञ के द्वारा ही दूर होगा क्योकि यज्ञ मे सब देवता (प्राकृति शक्तिया) तृप्त होते हैं और वे बदले मे सुख समृद्धि शांति प्रदान करते हैं।

यज्ञ पर गवेषणा का अभिप्राय है कि सूर्य रश्मियो, यज्ञधूम एव मन्त्र ध्वनियों के प्रभावो का विश्लेषण करना होगा। अब सूर्य रश्मियो के द्वारा रोग चिकित्सा तो प्रचलित हो रही है। प्राकृतिक चिकित्सा मे इसका प्रकृष्ट स्थान है। औषधियो का प्रभाव तो प्रत्यक्ष अनुभवगम्य है ही। मानव शरीर की शक्ति तथा प्राकृतिक जगत् पर भी औषधियो का प्रकृष्ट प्रभाव पडता है, बस यही तथ्य मुख्यत: गवेषणीय है, साथ ही यह भी कि आहुत औषधियो का धुआ (गैस) मानव शरीर को भी कैसे प्रभावित करता है। वेद मन्त्रो के ध्वनि जनित प्रभावो पर अभी विचार नगण्य रूप मे हुआ है। यह ध्यान रहे कि सभी मन्त्र (यज्ञ मन्त्र) भी छन्दोबद्ध है। छन्द शब्द विन्यास के अनुपात विशेष का नाम है। शब्द का सृष्टि उत्पत्ति (पदार्थ रचना) तथा मानव मन से गहरा सम्बन्ध है। वाणी की उच्चता गुह्यावस्था म एक सृजनात्मक स्वरूप लिए रहता है, और इसमे अर्थ दर्शन की भी क्षमता रहती है। वेद की वाणी पश्यन्ती अवस्था की वाणी है, जो अर्थ-दर्शन मे सक्षम है। इसीलिए निरुक्त कहता है, 'ऋषि दर्शनात्' इस का अर्थ दर्शन की प्रक्रिया है, इसकी व्याख्या का यहा प्रसग नही है। हमे इतना जानना पर्याप्त है कि शब्द की महती शक्ति है और वह हमारे जीवन को प्रभावित करती है। शब्द जितना शुद्ध व सकल्पमय होगा, उतना ही वह प्रभावोत्पादक होगा। वेद क्योकि ईश्वरीय वाणी है, इसलिए इसका प्रभाव भी उतना ही अधिक है। महा भाष्य कार का कथन "एक शब्द: सम्यम् ज्ञात: लोके परत्र कामधुग् भवति" सर्वथा सत्य है।

यज्ञ मे वेद मन्त्रो का उच्चारण का विनियोग के अतिरिक्त यह अभिप्राय भी है कि मन्त्र ध्वनिया का सूर्य रश्मियों को प्रभावित करती व उन्हें शक्ति शालिनी बनाती है। यज्ञ धूम तथा मन्त्र ध्वनियों से समन्वित होकर सूर्य रश्मिया व वायु मण्डल समृद्धि के अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करती है, जिससे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एव विभिन्न रोगो तथा अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि का नाश होकर धन धान्य की वृद्धि एव मानसिक सन्तुलन होता है।

यज्ञो का अनुष्ठान विधान इसी तथ्य को दृष्टि मे रख कर किया जाना उचित है। इसी दृष्टि से मातृ मन्दिर के तत्वावधान मे 1-11-87 को प्रायोगिकी यज्ञशाला का शिलान्यास किया जा रहा है। इस यज्ञशाला के दो विभाग होगे। (1) सामान्य विभाग जिसमे सर्वसाधारण यज्ञानुष्ठान होगा। (2) यज्ञानुसन्धान विभाग इसमे शब्द ग्राहक, यज्ञधूम ग्राहक तथा सूर्य रश्मि ग्राहक यन्त्रो के माध्यम से यज्ञ पर गवेषणा व प्रयोग (परीक्षण) होगे।

यह कार्य भारी व्यय साध्य है। आरम्भ मे 5 लाख का आनुमानिक व्यय है जो उक्त यज्ञशाला के बाह्य भवन (यज्ञ वेदियो आदि के) निर्माण, वैज्ञानिको व विद्वानो से परामर्श, मार्ग दर्शन व प्रारम्भिक परीक्षण, यन्त्रक्रय आदि पर व्यय होगा। विद्वानो के उत्साहजनक परामर्श प्राप्त हो रहे हैं। यह अपने आप मे नूतन प्रयास व मौलिक विचारणा है, जिसके क्रियान्वयन पर समस्त विश्व जातिगत व सम्प्रदायगत भेदभाव भूल कर वेद की शरण मे आ जाएगा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न पूरा करने का यह अन्तिम साधन है व अवसर ही ऋषि दयानन्द को यह सच्ची श्रद्धाञ्जलि है।

समस्त प्रबुद्ध धार्मिक, परोपकारी सज्जनों से अनुरोध है कि वे धन की कमी न रहने दे। यज्ञ मे दिया धन सहस्र गुणा होकर मिलता है। अत: खोल कर दान दें। अच्छा होगा कि एक-2 उदार धनी दाता एक-2 कार्य को पूरा करा दे, अपने पास से या सग्रह करके। हम यह साहसिक कदम आप जैसे उदार भाई बहनो के विश्वास पर उठा रहे हैं। प्रभु अवश्य आपको इस सत्प्रयास में दान देने की प्रेरणा करेंगे। 501 या अधिक देने वाले नाम शिला पट्ट पर अंकित रहेगा साधारण (201 या अधिक देने वाले, विशिष्ट (1000 या अधिक देने वाले) अति विशिष्ट (5000 या अधिक देने वाले) सरक्षक (10000 या अधिक देने वाले आदि दानदाताओ की श्रेणिया हैं। सभी के श्रद्धामय सहयोग का स्वागत है। सग्रह करके देने वाले का भी समान महत्व है। श्रेयनुसार दानदाता का शिलाकलन व अधिकार रहेगे। आशा है प्रबुद्ध, परोपकारी एव विश्वशान्ति के इच्छुक महानुभाव यथाशक्ति आर्थिक सहायता शीघ्र भेज कर पुण्य के भागी बनेंगे। इस सत्प्रयास मे हमारा अपने ईसाई, यवन आदि भाई बहनो को भी आह्वान् है। सहायता शीघ्र भेजें क्योकि मानव जाति विनाश के कगार पर आ रही है।

मानव धर्म

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नही, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यो न हो उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश अवनति, अप्रियाचरण सदा किया करें अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सदा किया करें। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे॥

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

अमूल्य सलाह :—महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत् क्रांतिकारी ग्रन्थ।
"सत्यार्थ प्रकाश" का शान्त चित्त से अवश्य स्वाध्याय करें॥

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

फल मिलता है आम, बेर आदि की तरह,

3 और जो मनुष्य देता तो सद् वस्तु का दान है, सद् पात्र भी है, परन्तु तामसिक बुद्धि से देता है तो उसे अनाज की तरह फल मिलता है।

4. अब सावधानी से समझने वाली बात यह है कि इन मे सद् वस्तु की हैसियत और सद्पात्र की स्थिति अथवा दरजा जैसा होता है उसी के अनुसार फल मिलता है और बुद्धि के सद्भावो मे (1) बल निर्बलता (2) अपनी इच्छा से दिया अथवा दूसरे की प्रेरणा से अथवा (3) शिष्टाचार मर्यादा के भाव से दिया उसे प्रभु ही यथार्थता अन्तर्यामी रूप से जान सकते है, इसीलिए अनाजों मे गेहूं ज्वार, मक्की, बाजरा, चने कहें और फलों मे आम, बेर, जामुन कहें।

(क्रमश:)

महर्षि दयानन्द एक विचारक सुधारक

लेखक—श्री सतेन्द्र कुमार जी उपमन्त्री आर्य समाज भटिण्डा

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने दीपावली के दिन अनगिनत दीपकों को छोड़ कर अपना जीवन दीपक बुझा दिया। वेदो के इस सूर्य महर्षि दयानन्द ने अपने समय में भी एक नास्तिक पुरुष गुरुदत्त को ईश्वर में आस्था दिला कर आस्तिक बना दिया।

महर्षि दयानन्द ने भारतवासियों की सर्वांगीण उन्नति के लिए एक तेजस्वी धारा ही नहीं दी अपितु देश की चारो दिशाओ मे एक नवचेतना का संचार किया। महर्षि दयानन्द भारत के ऐसे विचारक सुधारक थे जिन्होने देश की हजारों वर्षों की गुलामी के कारणो को पहचाना। यद्यपि अनेक महापुरुषों ने भारत की स्वाधीनता के लिए कार्य किया। मुगलों तथा अंग्रेजो ने भारतीयो में हीनता के भाव भर दिए थे तथा हमारी मूल संस्कृति को समाप्त करने के सभी उपाय किए महर्षि ने अपनी विचारधारा से देशवासियो में स्वाभिमान जगा दिया।

महर्षि दयानन्द ने देश मे फैली हुई सामाजिक कुरीतियो, जादू टोना, तावीज, गण्डो आदि मे अन्धविश्वास रखने वाले भारतीयों को एक नई चेतना देकर इसे हटाने का प्रयास किया। पाखण्डों के खण्ड को अपने ओ३म् के झण्डे नीचे पनपने नहीं दिया। सृष्टि नियम विरुद्ध चमत्कारों को न मानकर विज्ञान का अभिनन्दन किया।

नारी जाति के लिए नारी उत्थान के लिए जो कार्य आर्य समाज ने किया वह महर्षि दयानन्द से ही प्रेरित हो कर किया। क्योंकि जो सम्मान नारी को महर्षि ने दिया। शायद किसी महापुरुष ने नहीं दिया। कबीर जैसे सन्त ने भी नारी को ढोल, गंवार की संज्ञा देकर अपमानित किया। महर्षि दयानन्द के उपकारों का अहसान सदैव नारी जाति पर रहेगा।

महर्षि को सत्य कितना प्रिय था। सत्य कहने के कारण ही उन्हें विष पीना पड़ा। सत्य कहने मे वे कभी डरे नहीं अपने सबसे उत्तम ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा। आर्य समाज के जो दस नियम बनाए उनमे भी अनेक बार सत्य शब्द का प्रयोग किया।

महर्षि दयानन्द ने स्वाधीनता से लेकर सामाजिक, धार्मिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो उपकार किए उसे सारा संसार भुला नहीं सकता क्योंकि महर्षि ने आर्य समाज के छठे नियम में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है कहा महर्षि के बताए हुए रास्ते पर चलते हुए पर हमें महर्षि के सपनो का संसार बनाने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए तथा वेद की ज्योति सारे संसार मे दीपमाला की तरह जगमगा देनी चाहिए।

आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर में प्रचार

आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर में वेद प्रचार तथा महर्षि निर्वाण उत्सव दिनांक 22-10-87 से 25 10 87 तक बड़े धूम धाम तथा उत्साह के साथ मनाया गया। सारा कार्यक्रम पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे हुआ। जिसमे मुहल्ले के बड़े अधिकारी श्री सुरेन्द्रपाल दत्त तथा श्री अरुण मलक जी की कोठियो पर यज्ञ तथा भजन और स्वामी जी के उपदेश हुए और वेद अमृत की वर्षा हुई। चार पांच सौ लोगो ने भाग लिया और सारी जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। इन महानुभावो ने बड़ी श्रद्धा—प्रेम से भोजन, चाय, मिष्ठान से जनता का स्वागत किया। कार्यक्रम मे श्री मनोज जी तथा विजय जी तथा श्री रोशनलाल मलक जी के परिवार के भजन हुए। पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी के उपदेशो से जनता को लाभ हुआ और कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहा। इसमे श्री अमरनाथ छिब्बड़ तथा श्री दयानन्द जी को समाज की तन मन धन से सेवा करने पर सम्मानित किया गया।

—सत्यपाल शर्मा मन्त्री

आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर में वेद सप्ताह

आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर में श्री विजय कुमार जी शास्त्री उपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब चण्डीगढ़ द्वारा वेद प्रचार 18 अक्तूबर से 25 अक्तूबर तक हुआ। 25 अक्तूबर को महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री सोमनाथ जी सिकन्दरी (प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर) ने की।

दिल्ली महर्षि निर्वाण उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज एक क्रान्तिकारी सुधारक संस्था है उन्होंने अनेक श्रेष्ठ कार्य किये हैं। सती प्रथा जो एक अवैदिक प्रथा है आर्य समाज को उसके विरोध मे एक जोरदार आन्दोलन चलाना चाहिए। उक्त विचार भारत सरकार के वस्त्र मन्त्रालय के राज्य मन्त्री श्री रामनिवास मिर्धा ने जोरबाग स्थित महाशय कृष्ण हाल मे महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव के विशाल समारोह में व्यक्त किये।

महान वैदिक विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा आर्य समाज के कार्यों को तेज करने के लिए समाज के सन्यासियों को किसी भी पद पर न रह कर परिव्राजक बन कर संसार के भले के लिए कार्य करना चाहिए। सांसद श्री धर्मचन्द लाल भाटिया ने कहा आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र की जो महान सेवा की है उसे कभी कोई भूल नही सकता, उन्होंने कहा कि श्री वीरेन्द्र जी की सेवाएं महान् हैं वे सफेद कपड़ो में सच्चे सन्यासी हैं।

डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन प्रोफेसर वेद व्यास जी ने कहा मुझे इस बात की खुशी है कि आज इस समारोह मे गुरुकुल डी ए वी तथा सार्वदेशिक सभा आदि के प्रतिष्ठित नेतागण यहां मौजूद हैं, हमे मिलकर कुरीतियो और भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए कार्य करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द फिल्म के डायरेक्टर श्री मोती सागर जी ने कहा कि फिल्म आज के युग मे श्रेष्ठ प्रचार का माध्यम है, मैं महर्षि दयानन्द जी की फिल्म बना कर उनको श्रद्धाञ्जलि देना चाहता हू, मुझे इस बात की खुशी है कि आचार्य भगवान देव जी महर्षि दयानन्द के रूप मे उपयुक्त कलाकार मुझे मिले हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि हमे आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों को करने में जुट जाना चाहिए। भूतपूर्व सांसद आचार्य भगवान देव जी ने कहा आर्य समाज को जन सेवा के कार्यों मे जुट जाना चाहिए और कुरीतियो के खिलाफ आन्दोलन करना चाहिए। इस अवसर पर पंजाब के आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी के पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चुने जाने पर तथा श्री प्रोफेसर वेद व्यास जी द्वारा अपना बाकी का जीवन आर्य समाज तथा डी ए वी संस्थाओ के लिये अपने जीवन को समर्पित करने एवम् महर्षि दयानन्द की निःस्वार्थ भाव से फिल्म की डायरेक्शन करने के लिए इन तीनो महानुभावो का दिल्ली की तमाम आर्य समाजो तथा अन्य संस्थाओ द्वारा फूल मालाएं पहना कर अभिनन्दन किया गया।

सभा की अध्यक्षता वैदिक विद्वान् डा सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने की। उन्होने आर्य समाजो में ... आर्य समाज मे आई ... भ्रष्टाचार आदि ... करने के लिए संगठित होकर प्रयास करना चाहिये और महर्षि दयानन्द के पवित्र वैदिक सिद्धान्तो का निष्ठापूर्वक प्रचार करना चाहिए।

श्री वीरेन्द्र जी ने अपने किए गये अभिनन्दन का उत्तर देते हुए कहा कि आज संसार के अन्य देशो से बड़े बड़े विद्वान् आर्य समाज की महान् क्रान्तिकारी विचारधाराओ पर शोध ग्रन्थ लिखने के लिए भारत का भ्रमण करते हुए नजर आते हैं परन्तु भारत मे रहने वाले जो आर्य समाज के चन्द स्वार्थी और पद लोलुप्त व्यक्ति आर्य समाज के संगठन को छिन्न-भिन्न करने पर तुले हुए हैं। हमे चाहिये कि हम प्रथम स्वयं सच्चे आर्य बनें। आपने पंजाब की परिस्थितियो पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज दृढ़ता से भारत की अखण्डता और प्रभुसत्ता कायम रखने के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देने के लिए तैयार है। उन्होने सरकार से मांग की कि बार्डर का क्षेत्र सेना के हवाले कर देना चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट ने कहा कि आर्य समाज की संस्थाओ मे कुछ भ्रष्ट स्वार्थी व्यक्तियों का प्रवेश हो गया है उनका शुद्धीकरण करने का आज संकल्प करना चाहिए और मिलकर महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए।

—मन्त्री

धर्मवीर जी विद्यालंकार वानप्रस्थी बने

आर्य समाज के कर्मठ एवं निष्ठावान् संस्थापक सदस्य श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे सह मुख्याधिष्ठाता पद पर और फिर अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के आचार्य पद पर अपनी बहुमुखी योग्यता से सफलतापूर्वक कार्य करते रहे हैं—ने 18-10 87 रविवार को दयानन्द मठ, दीनानगर पंजाब मे परम पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ग्रहण की तथा उनके करकमलो से पीत वस्त्र धारण किया। भविष्य मे वेदाध्ययन और अर्वाचीन के अध्यापन लेखन-व्याख्यान मे निरन्तर कार्य करने का तथा प्राप्त दक्षिणा को परोपकार मे व्यय करने का संकल्प किया। स्वामी जी के आदेश का पालन किया।

—विजय कुमार-मन्त्री

आर्य समाज भठिण्डा में दीपावली उत्सव एवं ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज भठिण्डा मे दीपावली उत्सव एव ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक मनाया गया। यज्ञ के बाद महिलाओ ने भजन गाकर ऋषि का गुणगान किया। उसके पश्चात प० अजीत कुमार जी पुरोहित एव ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने ऋषि जीवन पर बड़े ही आकर्षक ढग से महर्षि दयानन्द की गाथा गाई। श्री कृष्ण कुमार जी मैनेजर आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भठिण्डा ने जहा वैदिक काम से यज्ञ करने की महिमा पर प्रकाश डाला तथा वातावरण को शुद्ध करने का वैज्ञानिक ढग कहा। आज दीपावली पर आतिशबाजी जला कर वातावरण को इतना दूषित कर दिया जाता है जिससे सास लेना भी दुलभ हो जाता है कहा।

साय के समय आर्य समाज मन्दिर मे दीपमाला करके समाज को सजाया गया। तथा भक्ति गीत गाए गए।

साय के ही समय श्री कृष्ण जी ने अपनी दुकान पर परिवार सहित हवन यज्ञ करवाया तथा अपने परिचितो को भी दीपावली पर हवन यज्ञ करने को कहा कुछ और भी आर्य परिवारो मे इस अवसर पर हवन यज्ञ किया गया।

— राजेन्द्र कुमार-मन्त्री

आर्य वीर दल का चुनाव

आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर का चुनाव गत दिनो निम्न प्रकार से हुआ।

सरक्षक—श्री सुखदेव राज जी शास्त्री। प्रधान—श्री सिंहासन जी शास्त्री। उप-प्रधान—श्री सत्यदेव जी आर्य। मन्त्री—श्री अजय जी शास्त्री। प्रचार मन्त्री—श्री आर्य नरेन्द्र जी शास्त्री, उप मन्त्री—श्री देवबन्धु जी शास्त्री। कोषाध्यक्ष—श्री राजेश जी शास्त्री। सहायक कोषाध्यक्ष—श्री श्रुति शर्मा।

आर्य समाज कठुआ में ऋषि निर्वाण दिवस

22-10 87 को आर्य समाज कठुआ मे दीपावली के परम पवित्र दिन पर ऋषि निर्वाण उत्सव बड़ी श्रद्धा और धूमधाम के साथ मनाया गया। कार्यवाही प्रात: 9 बजे हवन यज्ञ से आरम्भ होकर 12 बजे शान्तिपाठ के साथ समाप्त हुई। डी ए. वी. स्कूल कठुआ के विद्यार्थियों ने स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन से सम्बन्धित झांकियां और गीत पेश करके समारोह को मनोरंजक बनाया।

श्री भारत भूषण प्रधान आर्य समाज डा कुलदीप, विद्यानसिंह जी एडवोकेट डी ए वी स्कूल के प्रिंसीपल श्री जसवन्त सिंह जी ने स्वामी जी के जीवन और मिशन पर प्रकाश डाल कर श्रद्धांजलि भेंट की।

मन्त्री आर्य समाज कठुआ प्रिंसीपल श्री अचलसिंह जी ने अपने विचार रखते हुए जन समूह और विद्यार्थियों से आग्रह किया कि हमें स्वामी दयानन्द द्वारा बताए हुए मार्ग पर चल कर समाज में फैली हुई कुरीतियों व असमानताओं जैसे दहेज, पाप, पाखण्ड, सती प्रथा, मद्यपान, जुआ, छूतछात ब्लैक मारकीट, रिश्वत चोरी इत्यादि बुराईयों के खिलाफ एक जुट होकर लड़ने का संकल्प लेना होगा। तभी स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि भेंट कर सकते हैं। अन्यथा हम उनके सच्चे शिष्य और भक्त कहलाने के हकदार नहीं हो सकते।

मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगद्गीत प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 | रजि. नं. N.W/J.B.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 32. 30 कार्तिक सम्वत् 2044 तदानुसार 15 नवम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

सब देव ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं

लेखकः—श्री आचार्य अभयदेव जी विद्यालङ्कार

ब्रह्मचारिणं पितरो देवजनाः, पृथग्देवा अनुसंयन्ति सर्वे।
गन्धर्वा एनमन्वायन् ।
त्रयस्त्रिंशत् त्रिशताः षट्सहस्राः, सर्वान्त्स देवांस्तपसा पिपर्ति ॥
(अथर्ववेद 11-5-2)

ब्रह्मचारी जगत् को धारण करता है, यह बतलाते हुए प्रथम मन्त्र में इतना तो कहा ही है कि सब देवता ब्रह्मचारी के अनुकूल हो जाते हैं, अर्थात् देवता की अनुकूलता के द्वारा ही वह ब्रह्मचारी द्यावापृथिवी को धारण करता है। पर इस मन्त्र में तो यही बात मुख्यतया और कही गई है कि सब देवता किस प्रकार ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं। ऐसा क्यों न हो? जो मनुष्य "ब्रह्म" के लिए तपश्चर्या करने लगता है। चाहे कितने कष्ट आवें, उन्हें सहर्ष झेलता हुआ भी ब्रह्म का केवल ब्रह्म का अनुसरण करता है तो उस का अनुसरण सब देव क्यों न करेंगे? जो महाराजा का मेहमान हो गया है, शरणागत हुआ है, उस के लिए महाराजा के सब नौकर-चाकर उस के नौकर-चाकर क्यों न बन जावेंगे? हम भोगी लोग विषयों की तरफ दौड़ते हुए कितना चाहते रहते हैं कि हमारे इस प्रयोजन के लिए संसार की सब अवस्थायें अनुकूल हो जाएं (जिस का अर्थ यह होता है सब देवता, दिव्य शक्तियां अनुकूल हो जाएं) पर ये कभी नहीं होतीं। हम कभी भी निर्विघ्न रूप से भोग नहीं प्राप्त कर सकते। एक तरफ कुछ सुधारते हैं तो दूसरी कई तरफ बिगाड़ हो जाता है। देव हमें चैन नहीं लेने देते। इस प्रकार हम अशान्ति में ही जीवन बिता देते हैं। पर दूसरी तरफ जिस ने उस ब्रह्म को (उस महान् देव व ज्ञान रूप व सत्यस्वरूप को) पा लेने की सच्ची लगन लग गई है, उस के लिए यह देव अपने आप रास्ता साफ कर देते हैं, सहायक हो जाते हैं, हाथ बांध कर उस के अनुचर हो जाते हैं। ब्रह्मचर्य का यह भारी प्रताप है।

मैं फिर दोहराता हूं कि जिसने उस परम देव की तरफ मुंह उठा लिया है, उस 'ब्रह्म' की चर्या का व्रत ले लिया है, उस की सहायता के लिए उस की दिव्य शक्तियां, उस के देव, क्यों नहीं उठ खड़े होंगे! मनुष्य जितना-जितना ब्रह्म के नजदीक हो जाता है, उतना-उतना ही ये देवता अधिक मात्रा में उस के साथ आ कर जुड़ते जाते हैं, उतने-उतने ही यह देव उस के अनुचर बनते जाते हैं और अन्त में उसे उस के लिए अभीष्ट परम देव से मिला देते हैं।

तो ये देवता कौन हैं, कहां हैं, कितने हैं? वेद वेदक कहता है कि 'पितर देव जन' ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं, सब देव जुदा जुदा ब्रह्मचारी के अनुयायी होते हैं गन्धर्व इस का अनुसरण करते हैं। वह तीन, तीस, तीन सौ, छः हजार देव हैं। जिन्हें ब्रह्मचारी अपनी तपस्या से सन्तुष्ट करता है। पर वह पितर और गन्धर्व आदि देव कहां हैं?

वे हमारे अन्दर ही हैं। इन्हें पहले अपने अन्दर ही कुछ अनुभव करो। मुख्य देव तीन हैं, उन्हीं की विभूतियां 30 या 33 हैं, फिर 333 हैं, और फिर 6 हजार 3 सौ 33 हैं और फिर अनगिनत हैं। इस की व्याख्या बृहदारण्यक उपनिषद (अध्याय 3 ब्राह्मण 9) में याज्ञवल्क्य ने विदग्ध शाकल्य के प्रश्न का उत्तर देते हुए बड़ी अच्छी तरह की है। पर इस मन्त्र के स्पष्टीकरण के लिए मैं इस बात को दूसरी तरह कहना चाहता हूं।

हमारे अन्दर प्राण वाही नाड़ियां मुख्यतया तीन हैं—इडा (चन्द्र) पिंगला (सूर्य) और सुषुम्ना (अग्नि)। इन में से प्रत्येक के दस-दस विभाग बताए गए हैं। जिस से ये 30 या 33 बनती हैं, इन के शत शत विभाग किए जाएं तो 333 हो जाती हैं। प्रश्नोपनिषद् (3-6) में कहा है—अत्रैतदेकशतं नाडीनां तासां शतं शतमेकैकस्यां द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणि भवन्ति, आसु व्यानश्चरति। हृदय में सौ नाड़ियां हैं, उन में से प्रत्येक की सौ-सौ शाखा हैं। फिर उन की प्रत्येक की 72 हजार उपशाखायें हैं, उन सब में व्यान वायु चलता है। तात्पर्य यह है कि तीन से बढ़ कर 6333 या अनगिनत नाड़ियां रूपी देवता हैं जिनको ब्रह्मचारी प्राण क्रिया द्वारा सतृप्त करता है। जागृत करता है और ये प्राण नाड़ियां ब्रह्मचारी के अनुकूल चलती हैं। इन्हें तीन विभागों में इस तरह विभक्त किया गया है कि यह अग्नि (सुषुम्ना) नाड़ियां हैं। जिन्हें 'गन्धर्वा' कहा गया है, चन्द्र (इडा) नाड़ियां हैं जिन्हें 'पितर' कहा गया है और सूर्य (पिंगला) नाड़ियां हैं। जिन्हें यहां देव कहा गया है, इस प्रकार ये 6333 देव हैं। इसीलिए ज्ञानी लोग बतलाते हैं कि प्राणायाम का साधन, प्राण पर विजय, प्राण-आवृति ब्रह्मचर्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है। प्राणायाम के तप द्वारा (प्राणायाम पर तप) ब्रह्मचारी इन देवताओं को तृप्त करता है। तभी ये देवता उस के अनुगामी हो जाते हैं। जरा आधुनिक भाषा में बोलें तो कर्मेन्द्रिय वृत्तियां (गन्धर्वाः) ज्ञानेन्द्रिय वृत्तियां (देवाः) और मन-इन्द्रिय वृत्तियां (पितरो देवजनाः) ये सब अनगिनत अन्दर के देवता ब्रह्मचारी के पूर्ण वश में हो जाते हैं। उस के अनुयायी हो कर चलते हैं। मतलब यह हुआ कि इन्द्रियां ब्रह्मचारी की सर्वथा अनुवर्तिनी हो जाती हैं। ब्रह्मचारी तपस्या द्वारा उन की दिव्य शक्ति को जगा कर उन्हें पालित और पूरित करता है। हम भोगी लोग तो इन्द्रियों के गुलाम होते हैं और हमारी इन्द्रियां अशक्त, अदिव्य, तुच्छ रूप में रह कर हमें भटकाती रहती हैं।

ये तो अध्यात्म देवता हुए। आधिभौतिक में समाज में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य ही देव, पितर और गन्धर्व नामक देवता हैं। ये सब ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं। सब मस्तिष्क वाले ज्ञानी लोग सब रक्षा करने की शक्ति रखने वाले लोग बली लोग और पृथ्वी को (स्थूल जगत को) स्थूल अर्थ शक्ति से धारण करने वाले सम्पन्न लोग अपने युग में ब्रह्मचारी के नेतृत्व में ही काम करते रहे हैं। इस युग में महर्षि दयानन्द इसके उदाहरण हो गुजरे हैं। ब्रह्मचारी ही है जो कि समाज की इन शक्तियों को अपने वश में कर अपना अनुयायी बना सकता है। ब्रह्मचर्य के तेज के सामने ही यह शक्तियां झुकती हैं, मिलकर काम करती हैं। ब्रह्मचारी के इस मनुष्य समाज में प्रकट होने वाले सामर्थ्य को तो हम मनुष्य अच्छी तरह अनुभव कर सकते हैं।

इसी तरह आधिभौतिक सब दव-भूलोक को 'गन्धर्व' शक्तियां, अन्तरिक्ष की 'पितर' शक्तियां और द्युलोक की 'देव' शक्तियां परमेश्वर रूपी ब्रह्मचारी का अनुसरण कर रही हैं। यह देखा जा सकता है। परमेश्वर ही नहीं किन्तु मनुष्य जो पूर्ण ब्रह्मचर्य करता है। उस के भी यह सब प्राकृतिक शक्तियां अनुकूल हो जाती हैं, अनुचर बन जाती हैं। यह पहले ही बतलाया जा चुका है। जिसने अपने अन्दर के देवों को वश में किया है, उस ने बाहर के सब प्राकृत देवों को भी स्वयमेव वश में कर लिया है। यह पहले स्पष्ट किया जा चुका है। बाहर का सब कुछ अन्दर का ही प्रतिबिम्ब है। इसी की सत्यता को याद रखें तभी यह कथन हमारे अन्दर स्थान प्राप्त कर सकता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

यज्ञ के दो पंख

लेखक—श्री स्व. महात्मा प्रभु आश्रित जी

(गतांक से आगे)

अब प्रश्न होता है कि सद् वस्तु, राजसिक बुद्धि, तामसिक बुद्धि, सद् पात्र यह क्या है ? क्रमश सुनिये :—

(1) सद् वस्तु वह है जो सत्य और न्याय से संग्रह की गई हो।

(2) रज बुद्धि का अर्थ है यश के भाव से देना।

(3) तम बुद्धि का अर्थ है अपने व्यवहार बढ़ाने, प्रसिद्ध करने अपना अथवा विश्वास जमाने के लिये व्यावहारिक बुद्धि से देना।

(4) सद् पात्र—जैसे भूमि उत्तम निकृष्ट अथवा साधारण और विशेष होती है ऐसे ही सद पात्र भी उत्तम मध्यम और अधम कोटि के भी होते हैं। जैसे बीज उत्तम मूल्यवान और श्रेष्ठ प्रकार का होता है ऐसे सद् वस्तु उत्तम, मध्यम, मूल्यवान अथवा घटिया मूल्य वाली, आवश्यकताओ को पूरा करने अथवा बढ़ा देने वाली होती है।

यह तो कहा सद् वस्तु का सद् पात्र के सत्व, रज तम भाव बुद्धि से दान देना अब दूसरा सुनिये :—

1. वस्तु तो सत् है, देता भी सद्-बुद्धि से है परन्तु देता है उसे जो पात्र नहीं। उसका फल क्या होगा ?

2 यदि बुद्धि की भावना इतनी दृढ़ और सत्य है कि पात्र को सुपात्र बनाने के लिये दी गई है तब तो पात्र सुधर जाएगा।

3 यदि दी गई है निर्बल भावो से अथवा शिष्टाचार से तो हानिकारक होगी अपने और संसार के लिये।

अब तीसरा प्रकार भी सुनिये। पहले तो सद् वस्तु का सत पात्र और कुपात्र को देना सुना अब अशुद्ध वस्तु का सुनिए। यदि अशुद्ध अन्न सद बुद्धि से और सत पात्र मे दी जाए तो फल क्या होगा ?

(1) यदि सत् पात्र अग्नि समान है तो अशुद्ध को भी शुद्ध कर देगा। इस दान का फल दाता को सद बुद्धि के रूप मे मिलेगा, धन वस्तु के रूप मे नही क्योंकि वस्तु उसकी अपनी नही थी।

(2) पहली सूरत वाला दान सत् बुद्धि से सत् पात्र मे सत् वस्तु को देना ऐसा है मानो प्रभु तक जड़ मूल तक रसाई करना है। इसका फल वर्षो तक चला जाएगा। परन्तु जैसे वायु तथा जल के बड़े वेग से वट वृक्ष भी मूल से उखड़ परे जा पड़ता है ऐसे कभी किसी काल मे ब्रह्म वेत्ता का अनादर, उसे दु:खी करने से, उसकी हिंसा अथवा हत्या करने से तत्काल उस फल की समाप्ति ही जाएगी। सुतराम जिस विधि, हेतु, कारण अथवा उपाय से जो वस्तु प्राप्त होती है उसके सर्वथा विपरीत कारण बनने पर उसका विनाश अथवा समाप्ति भी हो जाती है।

उत्कट इच्छा उत्पन्न हो गई होगी !

मैं समझता हू ऐसी बातें सुनने पर आप में से सबकी अथवा किसी न किसी की यह उत्कट इच्छा अवश्य पैदा हो गई होगी कि वह सद पात्र कौन-कौन होगा जिसे सद् बुद्धि पूर्ण श्रद्धा से देने पर शीघ्र और उत्तम ही नही अपितु सहस्रो गुणा फिर स्थाई फल देने वाला होता है और ऐसा फल कैसे देता है ?

1. सद् पात्र प्रभु स्वयं हैं।

2. उनसे नीचे प्रभु भक्त ब्रह्म निष्ठ जिसने प्रभु को अपने हृदय मे 24 घण्टे बिठाया हुआ है।

3. उससे नीचे जो ब्रह्म दान देकर प्रजा को सन्मार्ग पर ले जाता है और पाप वृत्ति से छुड़ाता है।

4. उससे नीचे गुरु, जो ब्रह्म विद्या का दान, ब्रह्म प्राप्ति का दान देता है।

5 उससे नीचे अतिथि जो वेद प्रचार करता और बिना सूचना छापा मारता है, गृहस्थियो के अवगुणो, त्रुटियो को देख कर प्रेम से समझाता है।

6. उससे नीचे वह संस्थाए जो शिक्षा से देश को उन्नत करती और शिष्टाचार सिखाती, देश व जाति के नाम को उज्ज्वल बनाती हैं।

7 इससे नीचे याजक लोग जो यज्ञ द्वारा वेद का प्रचार और संसार का कल्याण करते और कराते हैं।

उनसे नीचे सत्संग के स्थान, मन्दिर आदि जहा असन्तोष सन्तप्त दु:खी और भूले भटके लोगो को कुछ विश्वास मिलता और धर्म, कर्म मे रुचि होती और पाप पुण्य का ज्ञान होता है।

9 उससे नीचे स्वाध्याय के पुस्तकालय जहा निर्धन साधारण स्थिति के लोग जिनको स्वाध्याय मे रुचि है, ज्ञान है परन्तु सामर्थ्य नही, वहा अपने ज्ञान बुद्धि का लाभ लेते हैं और वह अनुसन्धान विद्यार्थी जो संसार अथवा देश जाति के लिये अनेक प्रकार की खोज के लिए लगे रहते हैं।

10. उससे नीचे बेरोजगारी को दूर करने के लिए शिल्पशालाएं इत्यादि जिनके द्वारा आत्मा में प्रकाश और बुद्धि का विकास हो, शरीर की रक्षा की व्यव-स्था हो। वह क्रमश: सद् पात्र हैं।

सहस्रो गुणा और स्थाई फल कैसे मिलता है ?

जैसे एक ग्रास भोजन खाया हुआ रक्त बन कर शरीर की अनेक नाड़ियो मे संचार करता है, वह ग्रास भर भोजन फैल जाता है। वह तब फैलता है जब आत्मा से जीवित शरीर में दिया जाता है। ऐसे ही जो ब्रह्म निष्ठ सद् पात्र व्यक्ति भी एक प्रकार से ब्रह्माण्ड में आत्मा समान है उस एक तक एक के लिए देता है उसकी नाड़िया मानो एक के साथ शून्य के समान हैं। जितनी शून्य हो उतनी गुणा शक्ति बढ़ जाती है जैसे 10, 100, 1000, 10000 बनते हैं।

देवो वो द्रविणोदा: पूर्णां विवष्ट्वासि-
चम्।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्व
मादिद्वो देव ओहते।
ऋ. 7-16-11

हे मनुष्य ! (वा) तुम्हारा (देवा:) देव इष्ट, भक्ति पात्र परमेश्वर (द्रविणोदा) सब प्रकार के द्रव्यो को देने हारा है। इसलिए (पूर्णां) भरी हुई (आसिचम्) स्रुचा को (विवष्ट) वह कामना करे और स्वीकार करे (व) और (उत्सिञ्चध्व) खूब ऊपर से आहुति भर कर डालो (वा) और (उप पृणध्व) उसको पुन: भरो (आदित्) तब शीघ्र ही (व:) तुम्हारे लिये (देव:) वह दिव्य गुण ईश्वर (ओहते) अभिलाषित फल देता।

जो ईश्वर सब कुछ देता है उसके नाम पर कंजूसी से दान न देकर खुले हाथ दान करना चाहिये। पात्र मे दान देने से फल भी शीघ्र प्राप्त होता है।

शत हस्त समाहर सहस्रहस्त
स किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं
समावह॥
अथर्व. 3, 24-5॥

(शत हस्त) हे सौ हाथो वाले मनुष्य ! (समाहर) तू इकट्ठा कर और (सहस्र हस्त) हे हजारो हाथों वाले ! (सकर) तू दान कर, बखेर। इस तरह (कृतस्य) अपने किए हुए को (कार्यस्य च) और किए जाने वाले की (स्फातिं) बढ़ती को, फसल को (इह) तू इस संसार मे (समावह) ठीक प्रकार से प्रकार से प्राप्त कर।

अर्थात् सौ हाथो से इकट्ठा करो और हजार हाथो से बखेर दो इस मन्त्र में दान की आवश्यकता और माहात्म्य बताया गया है।

कयाचन स्वरीरसि नेन्द्र सश्चसि
दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं
देवस्य पृच्यते॥
यजु. 3-34

हे इन्द्र ! आप कभी भी हिंसक वा दु:खदायक (ना) भी के समान दूर न देने हारे नहीं हैं, अर्थात् दान शील पुरुष को और भी देते हो। हे भगवन ! तुझ देव का दान बराबर ही समीप प्राप्त होता ही रहता है अर्थात् प्रभु प्रजा को बार-बार समीप आकर फल देते हैं।

शरीर मे एक आत्मा है। जैसे आत्मा के पेट मे ग्रास भर भोजन दिया जाता है तो रक्त आदि बन कर शरीर की सब नाड़ियों मे पहुचता है, ऐसे ही ब्रह्मनिष्ठ परमात्मा का पेट है। सारा ब्रह्माण्ड उस की शरीर है। परमेश्वर स्वयं उस ब्रह्माण्ड का आत्मा है जब हम उस परमेश्वर के लिये देते हैं तो ब्रह्मनिष्ठ रूपी पेट मे दिया जाता है और वहा से वह शरीर के अर्थात् ब्रह्माण्ड के अवयवो मे पहुच जाता है जैसे शरीर के अन्दर 72, 72, 10, 201 नाड़िया हैं ऐसे ब्रह्माण्ड में अनेको प्राणी हैं।

दान तो बहुत लोग करते हैं। भय, लज्जा से भी करते हैं और कर्त्तव्य जान कर भी करने वाले हैं परन्तु उन सबमे से वह दानी धीर और गम्भीर समझा जाता है जो दान के मूल तत्व को जानता है। मूल तत्व है गुप्त दान।

गुप्त दान का माहात्म्य

(1) गुप्त दान का बड़ा माहात्म्य है परन्तु यह भी दो प्रकार का होता है। एक जिसे दिया जाए उसे पता रहे अन्य किसी को पता न लगे। दूसरा वह गुप्त दान है जो जिसे दिया जाए उसे भी पता न लगे किसने दिया है।

(2) फिर उनमे भी दानी का भाव दो प्रकार का होता है। एक दानी तो ऐसा है कि उसे अपना किया हुआ दान अपने मन मे याद रहता है और यह भी याद रहता है कि कहा-कहा कितना-2 दान दिया। बस इतना है कि वह मुख से प्रकट नही करता। दूसरा दानी वह है जो मन मे भी कभी स्मृति नहीं लाता।

(3) फिर इस दान मे भी दो प्रकार की इच्छा होती है एक तो कर्त्तव्य रूप से बिना फल की इच्छा के और दूसरी होती है कि मुझे ऐसा ऐसा गुप्त फल मिले।

(4) और फिर इस गुप्त भाव दान के भी दो प्रकार हैं एक तो कभी-कभी आवश्यकतानुसार दान करना, दूसरा सदावत के निरन्तर दान गुप्त करना जैसे शौच पेशाब अनिवार्य होता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज की राजनीति का नया अध्याय

आर्य समाज एक धार्मिक संस्था है। ऐसी संस्था की सारी व्यवस्था और अनुशासन धार्मिक सिद्धान्तों और मान्यताओं के अनुसार ही होना चाहिए। जब तक आर्य समाज का नेतृत्व इन सिद्धान्तों के अनुसार चलता रहा आर्य समाज की प्रतिष्ठा, आदर और सम्मान बना रहा। जन-मानस में आर्य समाज के लिए जो श्रद्धा थी वह अब धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। उसका एक कारण यह भी है कि जिन के हाथ में आज आर्य समाज की बागडोर है वह किसी सिद्धान्त या आदर्श के अनुसार नहीं चलते केवल अपने स्वार्थ को सामने रख कर चलते हैं। उसका यह परिणाम हो रहा है कि आर्य समाज आज कई समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में चर्चा का विषय बन गया है और कई बार यह समझना भी कठिन हो जाता है कि जो कुछ हमारे नेता गण करते हैं उसमें उनका उद्देश्य क्या है। उनके किसी भी न्याय संगत निर्णय से यदि आर्य समाज का कुछ लाभ हो सकता हो, तो उसका सब स्वागत करेंगे वह निर्णय चाहे कितना ही कठिन व कटु क्यों न हो, परन्तु जब केवल अपने स्वार्थ के लिए कुछ निर्णय लिए जाते हैं उन्हें समझना कठिन हो जाता है।

1975 में सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विसर्जन का आदेश दिया इन्द्रवेश और अग्निवेश ने उसका विरोध किया। इस पर अग्निवेश को सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज से निष्कासित कर दिया और फिर उसी आदेश को चुनौती देते हुए इन्द्रवेश और अग्निवेश की ओर से एक मुकद्दमा भी दायर किया गया जो अभी भी इलाहाबाद हाईकोर्ट में पड़ा है।

सार्वदेशिक सभा ने इन्द्रवेश और अग्निवेश के विरुद्ध जो आदेश दिया था वह अभी वापिस नहीं लिया गया परन्तु पिछले दिनों दिल्ली में महिला मुक्ति मोर्चा व आर्य महिला सभा की ओर से सती प्रथा के विरोध में एक सम्मेलन किया गया। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने की। उस सम्मेलन की कार्यवाही पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र 'सार्वदेशिक' ने अपने सम्पादकीय में लिखा है कि—

"एक नवम्बर को महिला मुक्ति मोर्चा के तत्वावधान में आर्य महिला सभा व महिलाओं की अनेकों संस्थाओं की ओर से प्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य सन्यासी श्री स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में नारी के प्रति होने वाले अन्यायों व अत्याचारों के विरुद्ध शंखनाद किया गया। स्वामी आनन्दबोध जी ने इस समारोह की दिल्ली के मावलंकर हाल में अध्यक्षता की।"

और आगे चल कर फिर सार्वदेशिक लिखता है कि—"हम स्वामी आनन्दबोध सरस्वती व श्री अग्निवेश जी के सत्प्रयासों की न केवल सराहना व समर्थन करते हैं आशा करते हैं कि अब यह आन्दोलन एक देशव्यापी रूप ग्रहण करेगा व आर्य समाज फिर अपने गत गौरव को प्राप्त करेगा।"

सती प्रथा के विरुद्ध जो भी व्यक्ति या संस्था अपना अभियान चलाना चाहे उस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती अपितु हमें उसका समर्थन भी करना चाहिए। यदि आर्य समाज सती विरोधी आन्दोलन का नेतृत्व कर सके तो यह आर्य जगत् के लिए एक गौरवमय स्थिति होगी। जिस पर हम सब अपने सन्तोष और प्रसन्नता का प्रदर्शन कर सकते हैं। मेरे सामने प्रश्न दूसरा है स्वामी अग्निवेश को सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज से निष्कासित करने का जो निर्णय लिया था वह अभी निरस्त नहीं हुआ और सार्वदेशिक सभा के प्रधान ऐसे व्यक्ति के साथ मिल कर एक आन्दोलन चलाना चाहते हैं। उस पर भी इतनी आपत्ति न हो क्योंकि अच्छे काम के लिए किसी भी व्यक्ति को अपने साथ लिया जा सकता है परन्तु जब सार्वदेशिक सभा अग्निवेश को प्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य सन्यासी की पदवी प्रदान करती है और उसके सत्प्रयासों की सराहना व समर्थन करती है तो फिर यह प्रश्न अवश्य पैदा होता है कि आर्य समाज का अनुशासन कहां गया और सार्वदेशिक सभा के अनुशासन का कोई मापदण्ड है या नहीं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान के विरुद्ध कार्यवाही की जा सकती है क्योंकि उसने कुछ ऐसे व्यक्तियों के भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई है जिन्हें सार्वदेशिक सभा के प्रधान अपना प्रियतम साथी समझते हैं परन्तु वह दूसरी ओर एक ऐसे व्यक्ति के साथ मिलकर एक आन्दोलन चलाते हैं जिसके विरुद्ध स्वयं सार्वदेशिक सभा एक निर्णय कर चुकी है और वह निर्णय अभी तक वापिस नहीं लिया गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने जो अब नई नीति अपनाई है उसमें किसी व्यक्ति विशेष के पक्ष में या विरोध में मैं कुछ कहना नहीं चाहता। स्वामी अग्निवेश की राजनीति क्या है? यह सब जानते हैं फिर भी आज उन्हें सार्वदेशिक सभा की ओर से एक क्रान्तिकारी आर्य सन्यासी का प्रमाण पत्र दिया जाता है और यह उस स्थिति में जब कि इलाहाबाद के हाईकोर्ट में वह मुकद्दमा पड़ा है जो अग्निवेश के सहयोगियों ने किया है और जिसमें गुरुकुल कांगड़ी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी सब उसमें आते हैं।

किसी भी संस्था में अनुशासन अत्यन्त आवश्यक होता है परन्तु जिन महानुभावों ने उस अनुशासन को लागू करना है या कराना है उनका कोई सिद्धान्त या मापदण्ड तो होना चाहिए। केवल निजी भावनाओं से प्रेरित होकर कोई संस्था नहीं चलाई जा सकती विशेषकर आर्य समाज जैसी संस्था। यदि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश से आर्य समाज के लिए काम लेना चाहते हैं तो उन्हें पहले सार्वदेशिक सभा का वह निर्णय वापिस लेना चाहिए जो 1975 में लिया गया था। उसके पश्चात् इनमें से किसी को सार्वदेशिक सभा का महामन्त्री भी बनाया जा सकता है। प्रधान भी बनाया जा सकता है। परन्तु दो प्रकार की नीति न चलें, किसी व्यक्ति को इस लिए निकाल दिया जाए कि उसने आर्य समाज के हित में एक आवाज उठाई है और दूसरे व्यक्ति को इस लिए गले लगा लिया जाए कि अब उससे बड़े अधिकारियों का कुछ स्वार्थ सिद्ध हो सकता है।

मैंने ऊपर लिखा है कि संस्था और संगठन सुदृढ़ बनता है सफल होता है यह बहुत कुछ उसके अधिकारियों पर निर्भर होता है उनके व्यवहार को जनता देखती है और फिर वह नियमों को देखती है कि संस्था किधर जा रही है। आज यदि कई क्षेत्रों में विशेषकर कई समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में आर्य समाज चर्चा का विषय बन गया है। उसका एक कारण यह भी है कि वह सारी स्थिति को देख कर यह कहने पर विवश हो रहे हैं कि आर्य समाज जैसी संस्था जिसका अतीत इतना उज्ज्वल था आज उसे क्या हो गया?

—वीरेन्द्र

हम आभारी हैं?

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने पंजाब की सब आर्य समाजों को यह आदेश दिया था कि वह देश के राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री और पंजाब के राज्यपाल को यह तारें दें कि पंजाब में राष्ट्रपति राज अभी चलना चाहिए। सभा के अधिकारियों को हार्दिक प्रसन्नता है कि पंजाब की आर्य समाजों ने इन महानुभावों को यह तारें दे दी हैं और इसका एक परिणाम यह भी होगा कि भारत सरकार और पंजाब सरकार दोनों को यह पता चल जाएगा कि पंजाब का आर्य समाज कितना सक्रिय है और वह पंजाब की वर्तमान स्थिति के लिए कितना चिन्तित है। कोई भी संस्था चाहे वह धार्मिक क्यों न हो अपने चारों तरफ के वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती और आर्य समाज तो एक जीती जागती संस्था है उसका अपने देश और राष्ट्र के प्रति कुछ कर्त्तव्य है। देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेकर वह अपने लिए कुछ लेना नहीं चाहती देश के लिए कुछ देना ही चाहती है उसी उद्देश्य को सामने रखते हुए पंजाब सभा की अन्तरंग सभा ने यह निर्णय लिया था कि देश के कर्णधारों को पंजाब की जनता की भावनाओं से अवगत कराया जाए। हमें इस बात का भी सन्तोष है कि राष्ट्रपति राज आगामी छः माह के लिए बढ़ा दिया गया है। इसमें पंजाब की सभी आर्य समाजों का भी योगदान रहा है। उस पर आर्य समाज गर्व कर सकता है।

—वीरेन्द्र

स्वास्थ्य सुधा—

सुबह जल्दी उठें लेकिन क्यों?

प्राय: यह कहा जाता है कि सुबह तड़के जल्दी ही बिस्तर छोड़ देना चाहिए। बात ठीक भी है, स्वास्थ्य के लिए हितकारी भी, लेकिन जब तक यह ठीक तरह से न समझ लिया जाए कि सुबह जल्दी उठने से क्या क्या लाभ होते हैं और क्यों होते हैं तब तक बहुत से व्यक्ति सुबह-सुबह की मीठी नींद खराब करके जाग जाना पसन्द नहीं करेंगे। प्रस्तुत लेख में यही विवरण दिया जा रहा है। छोटे बच्चों को सवेरे उठने के फायदे समझा कर अभी से यह आदत डाल देना उनके पूरे जीवन के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

—सम्पादक

प्रात: सूर्योदय से पहले उठने से दिन भर मन में उमंग और तन में स्फूर्ति बनी रहती है इसका रहस्य यह है कि जब हम सोये रहते हैं तब हमारा पूरा शरीर शिथिल और मूर्छित सा रहता है। ऐसी शारीरिक स्थिति में सूर्योदय के पश्चात् जो ऊष्मा (गर्मी) और सूर्य की रश्मियां वातावरण में फैल जाती हैं उनका हमारे अलसाये और शिथिल शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सूर्य की रश्मियां व गर्मी वातावरण में फैले इससे पूर्व जागने व बिस्तर छोड़ने का पहला लाभ इस कारण होता है कि हमारे पैर पृथ्वी से लग जाते हैं और हमारे शरीर को (अर्थिंग) भूमि स्पर्श मिल जाता है जैसे इलैक्ट्रिक यन्त्रों में 'अर्थिंग वायर' लगाने का नियम है। ऐसा ही अर्थकनेक्शन सूर्योदय से पूर्व हमारे शरीर को मिल जाना जरूरी है ताकि सूर्य की ऊष्मा एवं रश्मियों का हमारे शरीर पर बुरा, प्रतिकूल एवं हानिकारक प्रभाव न पड़ सके। हमारा शरीर 'मानव योनी' का होने से 'वर्टि-कल पोजीशन' याने खड़ी स्थिति का (सिर आकाश की तरफ व पैर जमीन की तरफ) है जबकि पशुओं का शरीर होरीजन्टल याने आड़ी स्थिति का होता है। हम 'वर्टिकल' (खड़ी) स्थिति में जाग्रत और स्फूर्त रहते हैं और 'होरो-जन्टल' स्थिति याने लेटने पर ही निद्रा, शिथिलता या मूर्छा के प्रभाव में आ पाते हैं। हम खड़े खड़े नहीं सो सकते। अत: सूर्योदय से पहले हमें होरीजन्टल स्थिति से वर्टिकल स्थिति में आ जाना चाहिए ताकि चैतन्य, जाग्रत और स्फूर्तिमय होकर जमीन (अर्थ) से पैरों द्वारा सम्बन्धित हो जाए और वातावरण में सूर्य की गर्मी फैले इससे पूर्व शौच क्रिया व स्नान करके शरीर में रात भर सोने से उत्पन्न हुई गर्मी और शिथिलता समाप्त कर सामान्य शारीरिक स्थिति में सूर्य रश्मियां ग्रहण कर सकें। इसका सबसे बड़ा लाभ हमारे पेट, स्नायुमंडल मस्तिष्क और नेत्रों को मिलता है। पेट साफ रहता है, पाचन शक्ति व जठराग्नि बढ़ती है, स्मरण शक्ति और मानसिक शक्ति बढ़ती है और नेत्रों की ज्योति ठीक रहती है।

दूसरा लाभ इस कारण होता है कि सूर्योदय से पहले लगभग एक डेढ़ घण्टे का समय ब्रह्म मुहूर्त का होता है। इस समय बड़ी शुद्ध और निर्मल वायु और प्राण वायु हमारे फफड़ों को बलवान बनाने के लिए मुफ्त की दवा है। फफड़े सारे शरीर को शुद्ध रक्त देकर बल व शक्ति देने वाले प्रमुख अंग हैं अत: फेफड़ों को शुद्ध प्राण वायु देने के लिए सूर्योदय से पहले उठ जाना निहायत जरूरी है। इस समय अधिकांश रूप में आवागमन, सवारियां मोटर गाड़ी वगैरह का आना जाना बन्द रहने से वातावरण शान्त स्वच्छ और निर्मल बना रहता है। सूर्योदय के बाद तो चहल-पहल बढ़ती जाती है धूल-धुंआ फैलने से वातावरण दूषित हो जाता है और प्राणवायु में कमी आ जाती है। सारे दिन फिर हमें उसी दूषित वातावरण में सांस लेना पड़ता है चलना फिरना और काम करना पड़ता है। सुबह सूर्योदय से पूर्व घण्टे डेढ़ घण्टे का समय 24 घण्टे में सिर्फ एक बार उपलब्ध होता है और यह प्रकृति की बड़ी कृपा है कि 24 घण्टे में कुछ समय उसने ऐसा रखा है जब हम अपने स्वास्थ्य और शरीर की रक्षा के लिये उस समय का उपयोग करें तो बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह लाभ अमूल्य होते हुए भी हम प्रकृति की ओर से उपकार स्वरूप मुफ्त ही मिलता है। यह हमारा दुर्भाग्य और आलस्य ही है कि इस बहुमूल्य समय को हम रजाई में पड़े-पड़े गुजार देते हैं। ऐसे लोग अनगिनत होंगे जिन्होंने सूर्योदय के वर्षों से दर्शन नहीं किए होंगे। वे उस उमंग और मस्ती से वंचित हैं जो सुबह सूर्योदय के पहले के शान्त, निर्मल और ताजगी भरे वातावरण से प्राप्त हो सकती है। उन्होंने उन नाना प्रकार की दृश्यावलियों का आनन्द भी नहीं लिया जो आकाश में, पूर्व दिशा में बनती बिगड़ती है। एक पुरानी कहावत है कि

जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है, उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।

आप इस बात को ठीक से समझ लीजिए कि प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व उठ जाने से हमारा शरीर स्वस्थ स्फूर्तिमय और बलवान रहता है और रोज-रोज इस प्रकार शरीर को बल व स्फूर्ति प्राप्त होते रहने से हमारा शरीर निरोग व बलवान होता चला जाता है, युवावस्था जैसी स्थिति बहुत आयु तक बनी रहती है और बुढ़ापा जल्दी नहीं आता।

सूर्योदय के बाद तक सोते रहने से प्रतिदिन हमारे शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है और रोज रोज यह बुरा प्रभाव शरीर को धीरे-धीरे कमजोर, रुग्ण और विकारी बनाता चला जाता है। युवाकाल में ही बुढ़ापा आ दबोचता है।

देर तक सोये रहने से मस्तिष्क, नेत्र, चेहरा, उदर एवं स्नायुमण्डल सर्वाधिक मात्रा में प्रभावित होते हैं। दिमाग कमजोर आंखें खराब, चेहरा बुझा हुआ सा, उदर (पेट) में कब्जी और स्नायुओं की शिथिलता देर तक सोने के बुरे परिणाम हैं। जिस दिन आप सूर्योदय से पूर्व उठकर नियम से नित्य कर्म से निबट कर थोड़ा घूम आएं उस दिन अपने मुख व नेत्रों को आइने में देखें। आपको नेत्र चमकते हुए और तेजपूर्ण तथा चेहरा खिला हुआ दिखाई देगा। सूर्योदय के बाद देर तक सोए रहिए और फिर उठ कर आंखें व चेहरा देखिए, फर्क मालूम पड़ेगा। (क्रमश:)

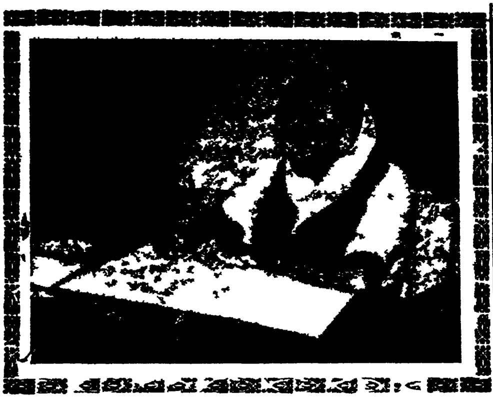
आर्य समाज के अधिकारियों की सेवा में

आशा है आपका आर्य समाज महर्षि के मिशन को यथार्थ रूप में गति दे रहा है। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों के कारण जो आतंकवाद फैला है, हर दिशा में आर्य समाज के कार्यों में शिथिलता होना स्वाभाविक ही है। मुझे विश्वास है कि आप सभी इन परिस्थितियों के कारण उदासीन निराश एवं हताश नहीं होंगे।

आप जानते हैं कि सभा ने वेद प्रचार के लिए उपदेशक और भजनोपदेशक रखे हुए हैं जो आप लोगों के आह्वान पर एवं स्वत: भी आर्य समाज के उत्सवों और पर्वों के समय आपको सहयोग देते रहते हैं। परन्तु खेद है कि सभा के उपदेशकों की वर्तमान शक्ति भी पूरी तरह प्रयोग में नहीं लाई जा रही, क्योंकि आर्य समाजों की ओर से अपने उत्सवों और यज्ञों के लिए उपदेशकों की मांग नहीं आ रही। होता यह है कि मुख्य पर्वों पर हर एक आर्य समाज उपदेशक मांगता है और सभा के पास सब की मांग पूरी करने के लिए भरपूर उपदेशक न होने के कारण सब की मांग पूरी नहीं हो सकती। देखा यह भी गया है कि चन्द एक आर्य समाजों को छोड़ कर सभा के पास उपदेशकों की मांग ही नहीं आती। इसका कारण या तो यह हो सकता है कि आर्य समाजें अपना उत्सव करती नहीं और पर्व मनाती ही नहीं हैं या वह उपदेशक बाहर से प्रबन्ध कर लेते हैं। यह दोनो बातें सभा की प्रगति के हित में नहीं हैं। ऐसा अनुभव भी हुआ है कि कुछ आर्य समाजों को छोड़ कर जहां भी सभा ने अपनी ओर से बिना मांग के आर्य समाज में उपदेशक भजनोपदेशक भेजे हैं उन्हें वापस लौटा दिया गया यह कह कर कि वह प्रचार कराने में असमर्थ हैं। ऐसी हालत में आप लोग सोच सकते हैं कि सभा में आर्य समाजों से उपदेशकों के लिये मांग न आए और सभा उपदेशकों का अमूल्य समय प्रचार में लगाने के लिए अपनी ओर से किसी आर्य समाज में उन्हें वेद प्रचारार्थ भेजें और वह आर्य समाज उस उपदेशक की सेवाएं लेने में सक्षम होते हुए भी असमर्थता व्यक्त करके उपदेशक को लौटा देवें तो कितनी शोचनीय और असमञ्जस्य स्थिति सभा की होती है। मैं यह चाहता हूं कि ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो और आर्य समाजें उपदेशकों की निरन्तर मांग करती रहें और सभा द्वारा भेजे गए उपदेशकों के द्वारा अवश्य अपने यहां प्रचार कराएं ताकि आपके द्वारा दी गई वेद प्रचार की राशि से रखे गए उपदेशक आपकी सेवा कर सकें। इसलिए मैं चाहूंगा कि उपदेशकों की मांग प्रत्येक आर्य समाज कम से कम तीन दिन के लिए अवश्य करे ताकि उपदेशक द्वारा किया गया मार्ग व्यय लाभप्रद हो सके। एक क्षेत्र की आर्य समाजें आपस में तय कर के एक ऐसा समय नियत कर सकती हैं कि एक या दो उपदेशक उस क्षेत्र में एक के बाद एक प्रोग्राम आस-पास देते रहें। अत: यह प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव कब करना चाहते हैं? आपकी आर्य समाज में कौन कौन से पर्व मनाए जाते हैं? इनका प्रबन्ध आप उपदेशकों आदि का कैसे करते हैं? यह सूचना शीघ्र ही सभा कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें ताकि वास्तविक स्थिति के दृष्टिगत आवश्यकतानुसार सभा और उपदेशक रखने के विषय पर विचार कर सकें।

—ब्रह्मदत्त शर्मा

अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग



बहन कमला आर्या मन्त्री मनोनीत होने पर 23 10 87 को मन्त्राणी के रूप मे काय आरम्भ करते हुए।



बहन कमला आर्या क आय प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री मनोनीत होने पर 3 10 87 को सभा कार्यालय मे पधारने पर उनका स मान किया गया। श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा सभा म त्री तथा रजिस्टार आय विद्या परिषद साथ बठे हैं। श्री कर्मसिंह जी श्री धर्मदेव जी श्री विपिन शर्मा श्री रामाराम जी और श्री रघिया राम जी साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना मे ऋषि निर्वाण उत्सव

स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना म 1 11 87 रविवार को ऋषि निर्वाण दिवस एव आय समाज स्थापना दिवस बड उत्साह पूवक सम्पन्न हुआ जिसमे अनेक विद्वान एव गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए उन्होने अपने प्रवचनो मे इस बात पर जोर दिया कि ऋषि के बताये हुए माग पर चलकर ही भारत वष उन्नति की तरफ अग्रसर हो सकता है। आर्य समाज स्थापना दिवस क विषय मे कहा कि यह समाज सबसे पुरानी है जिसन आय जगत क लिए बहुत ही काय किया है आर्या समनायति जी श्री स मान द जी म ज ल उपप्रधान स वदशिक सभा श्री रविन्द्र दीवान उप प्रधान आय प्रतिनिधि सभा पजाब श्री ओम प्रकाश पासी मन्त्री आय प्रतिनिधि सभा पजाब डा बालकृष्ण जी शास्त्री प्रिंसपल एम एल आनन्द प्रिंसीपल डी पी टण्डन प्रो वेदव्रत विद्यालंकार श्री यशपाल बांगिया श्री रोशनलाल शर्मा डा रामस्वरूप इन सब विद्वानो ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा आय समाज की उन्नति के लिए शुभ कामनाए की।

यह सारा कायक्रम डा एस की कालिया प्रधान आय समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की अध्यक्षता म बडी सफलता पूवक सम्पन्न हुआ। अधिकारी वग एव सभा सदस्यो ने इस कायक्रम मे उनका पूरा सहयोग दिया। इस समारोह मे शहर की सब समाजो ने भाग लिया। -समपाल मन्त्री मन्त्री

आर्य समाज हबीबगंज अमरपुरा लुधियाना में पंजाब दिवस

1 11 87 रविवार सत्सग के पश्चात पजाब दिवस मनाया गया। सबसम्मति से निम्न प्रस्ताव पास हुआ —

पजाब को बचाने के लिए और स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिये आवश्यक है कि पजाब मे राष्ट्रपति राज उस समय तक चलता रहे जब तक स्थिति पूणतया सामान्य नही हो जाती।

इस प्रस्ताव की कापिया तार द्वारा आदरणीय श्री राष्टपति प्रधानमन्त्री होम मन्त्री दिल्ली तथा गवनर पजाब चण्डीगढ को भेजी गई।

—रविन्द्र कुमार आय उपम त्री

(प्रथम पष्ठ का शेष)

अन्त मे म त्र के अन्तिम भाग की तरफ पाठको का ध्यान आकर्षित करता हू। पहले म त्र मे कहा था स आचाय तपसा पिपर्ति। यहा कहा है सर्वान देवान तपसा पिपर्ति। ब्रह्मचारी सबको पूण करता है स तुष्ट करता है। इसी प्रयाजन के लिए ब्रह्मचारी जन्मता है इस भारी काय के लिए जो जबरदस्त साधन उसके पास है वह है तपसा तपस्या से। तपस्या से वह आचाय को सतप्त करता है। तपस्या से ही वह सब देवो को सतप्त करता है। तपस्या ही ब्रह्मचारी की सम्पत्ति है तपस्या मे ही ब्रह्मचारी का ब्रह्मचारीपन है।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि सब देवता ब्रह्मचारी के अनुयायी यू ही नही हो जाते ब्रह्मचारी तपस्या से उन्हे सप्तत करता है। इसलिए वे उसके वशवर्ती उसके अनुयायी होते हैं। ब्रह्मचारी देवो को सतप्त करता है असुरो का नही। वह देवो को तपस्या द्वारा सतप्त करता है—इसका भी क्या मत लब हुआ? कौन सी वस्तु से सतप्त करता है? अब्रह्मचारी देवो को सतृप्त क्यो नही कर सकता? इसलिए इसकी व्याख्या करनी चाहिए कि आत्मा की शक्ति अनन्त है वह जीवन रस का अक्षय समुद्र है वह दिव्यता का अटूट भण्डार है ब्रह्मचारी जितनी जितनी तपस्या करता है सयम करता है किसी प्रकार भी आत्म शक्ति को व्यय व्यय न होने देता हुआ उसे सचित करता है रक्षित रखता है उतना उसमे आत्म की शक्ति आत्मा का जीवन आत्मा की दिव्यता भरती जाती है और वह अधिक 2 बडा ब्रह्मचारी बनता जाता है उसमे भरती जाती यही आत्म शक्ति जीवन रस व दिव्यता है जिससे कि वह देवो को सतप्त करता है और उन्हे अपना बना लेता है। यह ब्रह्मचारी ही कर सकता मानो ब्रह्मचारी अपनी तपस्या क बल से आत्मधनु को दुह दुह कर देवो का आप्यायित करता जाता है। इसका स्पष्ट अनुभव तब हो जाता है जब कोई ब्रह्मचारी तपस्या और सयम द्वारा ज्यो ज्यो वीय सरक्षण करता है। त्यो त्यो उसका वीय प्राणशक्ति का रूप धारण कर उसमे भरता जाता है और उसकी सब सोयी पडी हुई अनगिनत प्राणनाडी रूपी देवताय इस प्राणपूर्ति को प्राप्त कर एक अवणनीय शक्ति जीवन और दिव्यता से भरपूर हो हिलोरे मारने लगती है यह सब चित्र हमारे सामने आ जाना चाहिए जब हम उच्चारण करते हैं—सर्वान स देवान तपसा पिपर्ति।

मन्त्राथ

(पितरो देवजना) रक्षा करने वाले पितर देवजन (पृथक सर्व देवा) पृथक सब देव लोग (ब्रह्मचारिण अनुसयन्ति) ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं। (गन्धर्वा एन अन्वायन) गौ (पृथ्वी धन वाणी) को धारण करने वाले देव इसके पीछे चलते हैं। (त्रयस्त्रिशत् त्रिशता षटसहस्रा) तीन तीस तीन सौ छ हजार ये देव हैं। (सर्वान स देवान तपसा पिपर्ति) इन सब देवो को ब्रह्मचारी अपने तप से सतप्त करता है।

("वैदिक ब्रह्मचय गीत से उद्धत)

आर्य के गुण लक्षण

लेखक—श्रीमती कमलावती जी आर्या

आर्य के अर्थ श्रेष्ठ, कर्मठ, सक्रिय, धर्मात्मा, उपकारी, सत्यमार्गी, सत्यकामी विद्यायुक्त न्यायप्रिय प्रगतिशील, समृद्धिमय आदर्श उन्नत नागरिक होना है। यह गुण मानवता के उत्कर्ष के साधक हैं। मानव के उत्थान का मूलभूत गुण विशेषण उत्साह पौरुष, वीरत्व, कर्मठता और क्रियाशीलता है। आर्य 'ऋ' धातु से बना है, जिसके अर्थ प्रगति क्रियाशीलता और आगे बढ़ना है। आर्य की जन्म घुटटी उत्साह है, आर्य आलसी, हिम्मत हारा हुआ नही हो सकता। आलस्य का परिणाम शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा, प्राण सभी शारीरिक अगो की दुर्बलता के रूप मे उभरता है। क्योकि आलस्य समस्त आसुरी मलिन विकृतियो की जड है। तभी तो वेद ने अकर्मा दस्यु: कर्महीन अनार्य होता है का आदेश दिया है। आर्य तो 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा: 100 वर्ष तक स्वतन्त्र निर्भय कर्म करते हुए जीने की कामना करता है। आर्यत्व सत्य तप साधना का सघर्षमय जीवन है।

आर्य का आदर्श ईश्वर है आर्य ईश्वर पुत्र ' वह अपने आप को ईश्वर का अमृत पुत्र मानता है। पिता के गुण कर्म स्वभाव दया, न्याय कल्याण निर्भयता निर्वैरता सर्व उपकारी गुणो का उसके मन मस्तिष्क व्यवहार मे स्वत: ही स्फुरण होना स्वाभाविक है जिसस उसकी भावनाए पवित्र होती हैं और आचरण निर्मल बनता है। फिर डर भय कुकर्म अनाचार ईर्ष्या द्वेष वैर विरोध की कुत्सित कामनाओ का जीवन म क्या काम? पवित्रता स चित्त शात होने से बुद्धि मेधावी और आत्मा आनन्द विभोर हो उठती है। मानव देवता बन जाता महर्षि दयानन्द न इसका स्वर्णिम चित्रण करते हुए कहा 'परमेश्वर का सामीप्य प्राप्त होने से सब दु.ख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते है।'

वेद ने कहा प्रकृति का सुख भोग करो परन्तु उसके दास मत बनो। प्रकृति का दास बनने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहकार दोष जागत है, पाप उभरता है। क्योकि प्रकृति शारीरिक सुख, स्वार्थ, मोह वासना और प्रभुत्व लालसा है। धर्म परमार्थ कल्याण उपकार साधना है। प्रकृति की गुलामी जीवन की हार है यह आर्यत्व है। इस की लालसा मे फसा मनुष्य राक्षस बन जाता है। भगवान ने हमे सुख साधन दिए हैं उन्हे अपना साधन बनाओ साध्य नही। ईश्वर के सत् चित् आनन्द गुणो को जीवन-लक्ष्य बना, अमृतत्व की प्राप्ति की चाह मे, धर्म पर आरूढ हो कुत्सित वासनाओ को पूर्णत: जीत, प्रकृति की गुलामी से स्वतन्त्र होकर ही हम आर्यत्व की जीत करा सकते है।

प्रभु 'प्रजापति' है। उसके सबका रक्षक होने से लोकहित भावना जागती है। "आर्यते सतत चार्ते" 'आर्य दु.खी पीड़ितो की सहायता के लिए अग्रणी हो, वह दूसरो की उन्नति मे अपनी उन्नति समझे। इसी भावना से प्रेरित महर्षि दयानन्द ने अपने मोक्ष को छोड कर ससार का उपकार करते हुए कहा 'दु.खी पीड़ितो को दु:खो से विमुक्त कराते मुझे मोक्ष आनन्द की प्राप्ति स्वत' ही हो जाएगी। नास्तिक गुरुदत्त ने महर्षि की मृत्यु का आलौकिक दिव्य दृश्य देखा, और अपना जीवन आर्यत्व के प्रसार मे जुटा दिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि के विचार सुने तो उनके आदर्शों की पूर्ति मे ससार भर के ऐश्वर्य छोड कर सन्यास ले लिया और गुरुकुल की स्थापना के लिए अपने दोनो बच्चो को लेकर गगा के किनारे जा बैठे, पडित लेखराम ने धर्म प्रचार की मस्ती मे, जहा मेल ट्रेन नही ठहरती थी छलाग लगा दी थी। स्वय कष्ट सह कर दूसरो का उपकार करना ही आर्यत्व का ज्वलन्त आदर्श है—

क्रोध एव निराशा आर्य के निकट नही फटती, वह आशा विश्वास का देवता है। धन उसकी जीविका का साधन है, सौ हाथो से कमाना और हजारो हाथो से बाटना उसकी दिव्यता है। भूखा नगा आर्य नही होता। कठोर परिश्रम और कुशलता से सात्विक कमाई कर सुख समृद्धि निर्माण करना उसके विशेषण हैं। अपने लिए किसी के आगे हाथ फैलाना पाप और योग्य को दान देना धर्म है। अब यह है कि समाज उत्थान मे समाज को हमारा सहयोग स्वत: ही मिले और समाज का हर अग सर्वांगीण उन्नति करे। समाज को हम दान अपने धन का दे सकते हैं, श्रम और रक्त का भी, त्याग और बलिदान ही आर्यत्व की आधारशिला है। भगतसिंह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर, राजगुरु और सुखदेव देश के लिए फासी के रस्से को चूमने वाले, देश की अखण्डता सुरक्षा और स्वाभिमान के लिए शत्रु से सीमाओ पर लडने वाले सब आर्य हैं। जीवन-ज्योति बनकर जिन्होने जहर पिया, धर्म रक्षा मे छुरे खाये, कत्ल हुए जीवन तिलतिल जलाया और जो आज भी वैदिक धर्म के प्रचार मे अपनी जवानी की बहारें लुटा रहे हैं, वह सब आर्य क्षितिज पर चमकते ध्रुव सितारे हैं। इनका तप तेज ही आर्यत्व की गौरव गरिमा है। यह गौरव दीप्तिमान प्रतिभा उदय होती है, सत्य विद्या, तप, सदाचार, अजेय, अक्षय, वीरत्व तेज ओज और पौरुषमय व्यक्तित्व निर्माण से आर्य बनना जीवन साधना की कुठाली मे तप कर कुन्दन बना है। जो सकट विपदाओ और बाधाओ म सिह समान पूर्ण विजय का व्रत सकल्प सदा आगे बढे वह ही निर्भीक, साहसी, नरकेसरी, चरित्रवान, मननशील, उपकार, सत्यनिष्ठ, धर्मात्मा राष्ट्राभिमानी आदर्श वीर विजयी आर्य कहला सकता है।

आज मानवता राष्ट्र जाति, भाषा, प्रान्त धर्म, अमीर, गरीब, सभ्यता और मान्यताओं में बट रही है एक ईश्वर के सभी पुत्र, मतभेद, अज्ञान, ईर्ष्या, द्वेष स्वार्थ के कारण परस्पर एक-दूसरे के शत्रु बने हुए हैं, आर्य हर मनुष्य को अपना भाई मानता और उसका कल्याण अपना आदर्श समझता है वह मनुष्य-मनुष्य के दरम्यान तमाम दीवारो को गिराकर आदर्श मानव समाज का निर्माण ही आर्यत्व समझता है। आचार, विचार और प्रचार उसके साधन हैं। शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति इसके आदर्श का स्पष्टीकरण हैं।

परमात्मा सब आर्य बहन, भाइयो का आर्यत्व के इन उत्तम गुण लक्षणो से युक्त करें, जिसस उनमें स्फूर्ति और नवजीवन का सचार हो, और वे अपने स्वर्णिम अतीत के गौरव को आत्मसात कर, उसके अनुरूप अपने और आर्य समाज के उज्ज्वल ज्योतिमय भविष्य का अरुणोदय करने के समर्थ हो।

—0—

पंचपुरी में समारोह सम्पन्न

इस वर्ष 19 अक्तूबर 1987 को आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता क्रान्तिकारी समाज सुधारक, महान् स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी स्व श्री जयानन्द जी भारतीय की 107 वी जयन्ती आ स. मन्दिर पचपुरी गढवाल मे समारोह पूर्वक मनाई गई। प्रात.काल प्रभात फेरी हुई। बृहद् यज्ञ हवन हुआ। अनेक भाई, बहनो ने यज्ञ मे यजमान के रूप मे भाग लिया। अपराह्न 2 बजे से श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य श्री राजेसिंह जी नेगी की अध्यक्षता मे हुआ। सम्मेलन मे श्री शान्ति प्रकाश जी प्रम स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी श्री सुशील कुमार जो निरञ्जन, श्री वृद्धिसिंह जी आर्य श्री कालूराम जी पथिक, श्री उमेदसिंह जी कठारी, श्री वासुदेव जो विमल, श्री गगा प्रसाद जी अध्यापक के भावपूर्ण श्रद्धाजलि देते हुए प्रभावशाली भाषण हुए। श्री बख्तारामजी आय भजनोपदेशक क भजनोपदेश, कन्या पाठशाला, पचपुरी क छात्राओ द्वारा प्रभावशाली सास्कृतिक कार्यक्रम सराहनीय रहा। आय सगठन को मजबूत करने के लिए तथा स्व श्री भारतीय जी का स्मारक भवन निर्माण के लिए प्रस्ताव पारित किए गए। उ प्र सरकार से निवेदन किया गया कि स्मारक भवन निर्माण के लिए पूर्ण आर्थिक सहयोग प्रदान करें।

—वासुदेव विमल
मन्त्री

श्री जयप्रकाश जी की हत्या

आर्य समाज मनीमाजरा के कोषाध्यक्ष श्री जयप्रकाश जी की 4-11 87 को प्रात: जब वह भ्रमण के लिए जा रहे थे किसी ने निर्मम हत्या कर दी हत्यारो का कोई पता नहीं चल सका।

आर्य समाज मनीमाजरा की यह सभा उनकी आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करती है। प्रभु उनके परिवार को इस असहाय दु.ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। —मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

(5) और दान कई प्रकार का है, अन्न दान, वस्त्र दान, जल दान, फल मेवा, दूध तथा अन्य-अन्य खाद्य पदार्थ, गाय, घोडा, सोना, चादी अन्य धातु, भूमि आदि और लड़की का दान।

(6) फिर पात्र, सत् पात्र और बिना भेद के पात्र, कुपात्र, सत् पात्र। ये भी किस-किस श्रेणी वालो को मिला। जैसे यज्ञ और लगर, अन्न क्षेत्र का दान यद्यपि प्रगट रूप है तदपि वह भी गुप्त रूप बन जाता है क्योकि बिना भेद बन जाता है।

(7) इन गुप्त दानो का फल दो प्रकार स गुप्त मिलता है। एक तो किसी राजा, रईस, जागीरदार बडे धनी, अमीर के घर पैदा होना कि उसके गर्भ मे आने से पहले ही उसके लिए सर्व सुख सामग्री उपस्थित होती हैं। उसके जन्म लेने पर वह बिना परिश्रम उन वस्तुओ का भोग करता है। और बड़ा होने पर उन सबका स्वामी बन जाता है और उसे उसके व्यय करने का पूरा अधिकार होता है।

(क्रमश:)

आज दयानन्द की याद आती है

लेखक—डा. [illegible] वेदालंकार, 7/2 [illegible] दिल्ली

(पिछले से आगे)

यदि आज महर्षि दयानन्द होते तो वे राजीव को मनु का "दण्ड शास्ति प्रजा: सर्वा:" का पाठ पढ़ाते और समझाते कि पंजाब में सेना भेजो, गोरखालैंड और उत्तरा खण्ड जैसी मांगो के पीछे विदेशी शक्तियों के षड्यन्त्र को पहचानो, अणुबम का निर्माण कर पाकिस्तान, श्रीलंका तथा अन्य पड़ोसी राष्ट्रों के कारण उत्पन्न तनावों को दूर भगाओ । विश्व की एक महान् शक्ति बन जाओ । तभी तुम फिजी तथा विश्व के अन्य देशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की रक्षा कर सकोगे ।

दयानन्द ने प्रजातन्त्र और विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त के आधार पर राज्यों का विभाजन व उनकी शासन व्यवस्था की योजना प्रस्तुत की थी । और अपने देश की उन्नति के बाद सारे विश्व में एक सार्वभौम राज्य की स्थापना कर विश्व शान्ति का उन्होंने मार्ग प्रशस्त किया था । पर महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राज्य व्यवस्था में प्रजा की इच्छा और उसका कल्याण प्रमुख था । कोई भी राजा निरंकुश नहीं हो सकता । सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में उन्होंने 'राजा' को राजार्य, सभार्य व विद्यार्य इन सभाओं के निर्णयों को क्रियान्वित करने वाला कहा है । वह प्रजा का भृत्य है, उसे प्रजा को पुत्र मानकर पितृवत उसका पालन करना चाहिए । यदि आज दयानन्द होते तो वे प्रजातन्त्र का स्वरूप दलों के परस्पर विरोध के स्थान पर सबके मिल कर राष्ट्र की उन्नति के प्रयत्न पर निर्भर होता ।

1 जनवरी 1877 को दिल्ली में महारानी विक्टोरिया के महारानी होने पर आयोजित दरबार में महर्षि दयानन्द ने दिल्ली पहुंच कर और आर्यावर्त के समस्त राजाओं के हृदय में सच्चे आर्य धर्म को जगा कर देश जगाने का प्रयत्न किया तथा साथ ही देश के भिन्न-भिन्न धार्मिक नेताओं को एकत्र करके ऐसा महानद ढूंढने का प्रयत्न किया, जिसमें सब सम्प्रदाय रूपी नाले आकर मिल जाएं । सभी प्रजा के सुधार का दावा करते हैं, पर सभी परस्पर झगड़ों में पड़े हैं । स्वामी जी के निमन्त्रण पर बा. केशवचन्द्र सेन पर सैय्यद अहमद खां मुन्शी कन्हैया लाल अलखधारी, बा. नवीन चन्द्रराय, मुन्शी इन्द्रमणि और बा. हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि महानुभाव इकट्ठे हुए । इसमें पंजाब, बम्बई, उत्तर प्रदेश और पंजाब से आए इस्लाम ब्राह्म समाज, सनातन धर्म तथा आर्य समाज के प्रतिनिधि विद्यमान थे । स्वामी जी ने सभी मतवालों से कहा—"आर्य समाज से मिलकर भारत की उन्नति का कार्य करें, क्योंकि जिस देश का अन्न खावें, शरीर पले उस देश की उन्नति करना परम कर्त्तव्य है ।"

महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य, स्वदेशोन्नति और स्वायत्त शासन के सत्यार्थ प्रकाश में न केवल कुछ सूत्र लिखे थे, वरन् अपने क्रियात्मक जीवन से देश की स्वाधीनता के लिए अथक प्रयत्न किया था । श्री शैले के अनुसार वर्तमान स्वतन्त्र भारत की वास्तविक आधारशिला दयानन्द ने रखी थी । रोम्यांरोला का कथन है—"राष्ट्रीय पुनर्जागरण में, जो इस समय दौड़ पड़ रहा है, दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप में कार्य किया था । थियोसोफिकल सोसाइटी की मैडम ब्लैवट्स्की ने कहा था—महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम नारा लगाया था कि भारत भारतीयों का है । सर वैलनटाइन चिरोल के अनुसार महर्षि दयानन्द के उपदेश हिन्दुओं में सुधारने के लिए न होकर केवल भारत में विदेशी प्रभाव का विरोध करने के लिए हैं । दादा भाई नैरोजी ने सन् 1904 में कहा—मैंने स्वराज्य शब्द सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा ।

आज दयानन्द की याद आती है । देश स्वतन्त्र हो गया, पर उन्नति का ठीक मार्ग वह नहीं खोज पा रहा । भारत मिस भी आता ? को उस पर सत्य और दृढ़ता पूर्वक चलना सिखाने के लिए दयानन्द की आवश्यकता है, जिसकी अंगुली पकड़ कर वह आगे बढ़ सके ।

आर्य सज्जनों से अनुरोध

विद्वानों का कथन है—

कि होते देश से निकल जाना बुद्धि मानता,
आकुपर्यन्त अवैध अधिकार, देश लालसा, अपमानता,

आज जिस प्रकार आर्य समाजों में कर्म हीनता छा रही है, वैसी आज तक देखने में नहीं आई, देश को जगाने वाला आर्य समाज देश को जगा कर, स्वयं शिथिलता रूपी निद्रा की ओर गिरता जा रहा है ।

देव दयानन्द का स्वयं को अनुयायी कहलवाने वाला आर्य समाजी त्याग भाव रहित पद की लालसा में अधिक रुची पर अभिद्धांतिक मार्ग ढूंढ रहा है, एवं आकुपर्यन्त पद पर छाये रहने के स्वप्न देखता है । स्व[illegible] [illegible] [illegible] रहित साकार नहीं हो पाते क्योंकि सिद्धान्तिक आचरण न[illegible] ।

पदों की लालसा में अधिक मोह रखने वाला, [illegible] [illegible] जागो, वर्तमान भारत की अवस्था पर ध्यान दो —

आज मेरा प्यारा भारत देश नैतिकता से विमुख भ्रष्टाचार [illegible] पर तीव्र गति से बढ़ रहा है, भारत हमारा है, और हम भारत के हैं । [illegible] संस्कृति भारतीयों का जीवन है ।

भारत में बढ़ रही अनैतिकता, आर्य समाजियों [illegible] [illegible] चैलिंज है । चैलिंज स्वीकार करना, अनैतिकता का दृढ़ता से [illegible], भारतीय [illegible] आर्य समाज का कर्त्तव्य है । क्योंकि हम सब आर्य समाजी उस देव दयानन्द के अनुयायी हैं जिन्हे पदों से कोई लगाव नहीं था, देश प्रगति हित, वेद प्रचार परोपकार जिन का उद्देश्य रहा, लालच त्याग ब्रह्मचर्य का नियम रहा मठों की प्रलोभन जिन्हें झुका न सको, हम सब ब्रह्मचर्य के पद चिन्हों पर चलने का परिचय देते हुए पदों का त्याग भूला धर्म को देश सुधार हित महर्षि के बतलाये मार्ग पर लाने का मार्ग दर्शन करें, एवं आगे आएं—आज देश को अति आवश्यकता है । आर्य समाज की सेवाओं की, आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो देश हित संकटों से कभी नहीं घबराई, विभाजन से पूर्व स्वतन्त्रता संग्राम में अधिकता एवं निर्भयता प्रमाण है । देश में बढ़ रही कुरीतियों को मिटाना और देश को सुमार्ग पर लाना देव दयानन्द के भक्तों का परम धर्म है ।

परमात्मा हमें भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने में समर्थ करें ।

—गोवर्धन दास आर्य-नाभा पंजाब

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम निर्माण शुभारम्भ समारोह

22 नवम्बर 1987 (7 मार्गशीर्ष 2044) रविवार को धर्मपुरा कालोनी (अशोक नगर) रेलवे वर्कशाप रोड निकट आई टी आई यमुना नगर जिला अम्बाला, हरियाणा में कमला ज्ञान विमल धर्मार्थ प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त स्थान में वैदिक वृद्ध सन्यास आश्रम निर्माण शुभारम्भ समारोह प्रात दस बजे से एक बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन इत्यादि के बाद श्रीमती यश जी गुप्ता (करनाल) द्वारा किया जा रहा है । जिसमें उच्चकोटि के विद्वान सर्व श्री वेदराज जी, प. जयदेव जी जठोई वाले, नरदेव जी शास्त्री, लाजपतराय जी, सूरज प्रकाश जी गुलाटी, लोकनाथ जी डा. अम्बा जी, विजय जी बत्रा, हंसराज जी वदार्थी, श्रीमती सन्तोष कुमारी जी तथा सुश्री शशीकान्ता जी पधार रहे हैं । आप अपने इष्ट मित्रों सहित सपरिवार पधार कर लाभ उठाएं ।

निर्माण शुभारम्भ के बाद सहभोज होगा ।

—अध्यक्ष : स्वामी सच्चिदानन्द

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में

1-11 87 रविवार जिला आर्य सभा की बैठक में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ, पंजाब को बचाने के लिये और स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि पंजाब में राष्ट्रपति राज उस समय तक चलता रहे जब तक स्थिति पूर्णतया सामान्य नहीं हो जाती । इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां तार द्वारा आदरणीय राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, होम मन्त्री दिल्ली तथा गवर्नर पंजाब चण्डीगढ़ को भेजी गई ।

—आत्मानन्द आर्य-महा सचिव

आर्य समाज संगरूर के समाचार

दीपावली के शुभ पर्व पर ऋषि निर्वाण उत्सव मनाया गया इस उपलक्ष्य मे 21 10 87 को प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। सारे नगर मे स्त्री, पुरुषो तथा विद्यालय की छात्राओ ने ऋषि गान किया। 22 10 87 प्रात हवन यज्ञ हुआ, बच्चो न रंगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा श्री धर्मवीर जी भारती ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। रात्रि को दो मंजिल पूरे भवन पर दीपावली का प्रकाश कि । गया।

25 10 87 को आर्य समाज संगरूर के प्रधान श्री सुरेन्द्र पाल जी गुप्ता ने अपने नव ि्मित मकान मे गृह प्रवेश यज्ञ करवाया। इस अवसर पर उन्होने श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी को 101 रु दक्षिणा, श्री सुरेन्द्र पाल जी शास्त्री 21 रु आर्य समाज धूरी 51 रु लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय 51रु तथा आर्य समाज संगरूर को लगभग 200 रु का बिजली का समान दान म दिया।

—अशोक आर्य-मन्त्री

दीनानगर में ऋषि निर्वाण उत्सव

16-10 87 से 22 10 87 तक आर्य समाज मन्दिर दीनानगर मे निर्वाण उत्सव मनाया गया। 16-10 87 को शोभा यात्रा निकली। हाई स्कूल मिडल स्कूल प्राइमरी पाठशाला के छात्र-छात्राओ न शोभा बढाई रिक्शा पर लाऊड स्पीकर लगा कर मुनादी की जाती रही है। सारे बाजार मे 50 के करीब मा"ो, पट लगाए गए थे गुरुकुल करतारपुर स श्री नरेश कुमार आचार्य व 3 ब्रह्मचारियो ने मनोहर भजनो व भाषणो से रोनक बढाई। प निरञ्जन देव इतिहास केसरी उपदेशक सभा व साईदास तबला मास्टर ने भी 3 दिन अपने व्याख्यानो व वादन स सेवा की उत्सव बड़ा सफल रहा सत्यपाल पथिक भजनीक ने भजनो द्वारा तथा बाबा स्वामी नित्यानन्द जी योगी राज व स्वामी सुबोधानन्द जी समय-समय पर भाषण देते रहे। 22-10 87 को कवि सम्मेलन हुआ। जनता ने बड़ा लाभ उठाया।

दयानन्द मठ दीनानगर मे 15 दिन महर्षि दयानन्द के जीवन पर स्वामी सर्वानन्द जी की कथा प्रारम्भ हो कर 22 10 87 को यज्ञ की पूर्णाहुति पर खत्म हुई।

22-10-87 को श्री धर्मवीर शिक्षा सलाहकार व श्री शिव मूर्ति सिंह ने श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से वानप्रस्थ की दीक्षा ली। आशीर्वाद के बाद केले व हलवा वितरण हुआ।

आर्य शिरोमणी सभा फिरोजपुर की बैठक

आर्य शिरोमणी सभा फिरोजपुर का कार्यक्रम श्री मोहन लाल जी की अध्यक्षता मे हर माह भिन्न-भिन्न समाजों मे मनाया जाता है। पिछली बैठक दिनांक 5-7-87, 9-8-87, 13-9 87 को सम्पन्न हुई। केवल आर्य समाज की उन्नति पर ही विचार हुआ। सर्व सम्मति से नीचे लिखे निर्णय लिए गए।

1 साप्ताहिक सत्संग (रविवार) में हर सदस्य अपने परिवार के सभी सदस्यो को लाने का पूर्णतया प्रबन्ध करें।

2 हर रविवार को सुन्दर उपदेश का प्रबन्ध किया जाए।

3 सदस्य के न आने पर उनके घर कुशलता पूछने के लिए जाया जावे।

इसके अनुसार फिरोजपुर की सभी समाजों का मासिक साप्ताहिक कार्यक्रम बना कर भेजा गया जिस से उन्नति की आशा नजर आई। सभी पंजाब की समाजो से निवेदन है कि इन बातो पर ध्यान देवें।

—सत्यपाल शर्मा
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 33   7 मार्गशीर्ष सम्वत् 2044 तदनुसार 22 नवम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पंजाब के चार हिन्दी साहित्यकारों का सन्मान

चारों साहित्यकारों को एक-एक शाल, ममेन्टो और इक्तीस-२ सौ रु. की राशि भेंट की गई

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से भव्य स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा आयोजित पंजाब के गणमान्य हिन्दी साहित्यकारों का सम्मानित समारोह 15-11-87 को बड़े उत्साहजनक वातावरण मे आर्य कालेज लुधियाना मे हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी स्नातक व कुलाधिपति श्री डा. सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने इसकी अध्यक्षता की। आर्य कालेज लुधियाना की प्रबन्ध समिति के मन्त्री श्री दीवान राजेन्द्र कुमार और कालेज के प्रधानाचार्य श्री मनोहर लाल जी आनन्द ने इस सारे समारोह को सफल बनाने के लिए विशेष प्रयत्न किया। इसमे शहर के प्रसिद्ध नागरिक बहुत भारी संख्या मे वहा पहुचे थे उनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के निमन्त्रण पर पंजाब के भिन्न शहरो से कई प्रमुख आर्य समाजी भी वहा पहुचे।

जिन साहित्यकारो को सम्मानित किया गया उनमे श्री सुरेशचन्द्र वात्सायन प्रसिद्ध कवि और संस्कृत के उच्चकोटि विद्वान्, श्री डा. चन्द्रशेखर पटियाला यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री डा. ज्ञानसिंह मान गवर्नमैंट कालेज पटियाला के प्रधानाचार्य और लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी स्व. श्री विक्रम प्रसाद जी की पुत्र वधु और प्रसिद्ध कवित्री श्रीमती शकुन्तला श्री वास्तव, इन सब को आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इक्तीस-2 सौ रुपये और एक-2 शाल और ममेन्टो भेंट किए गए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस समारोह का विशेष उद्देश्य एक तो यह है कि पंजाब के हिन्दी साहित्यकारो का सम्मान किया जाए। सरकार प्रायः उन का सन्मान नही करती इसलिए पंजाब मे हिन्दी के प्रचार और साहित्यकारो को प्रोत्साहन देने के लिए यह समारोह किया गया। श्री वीरेन्द्र जी ने यह भी कहा कि आर्य समाज के विरुद्ध यह प्रचार किया जाता है कि वह पंजाबी भाषा के विरोधी हैं। श्री वीरेन्द्र ने कहा कि मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि आर्य समाज पंजाबी का विरोधी नही है, हिन्दी का समर्थक अवश्य है। हम केवल यह चाहते हैं कि पंजाब में हिन्दी और पंजाबी दोनो भाषाए चलें। परन्तु सरकार हिन्दी को पीछे फैंक कर अंग्रेजी को आगे लाना चाहती है। हम इसे सहन करने के लिए तैयार नही। पंजाब मे हिन्दी को एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए आर्य समाज संघर्ष कर रहा है और करता रहेगा। यह समारोह उसी की एक कड़ी है।

इस समारोह के अध्यक्ष श्री डा. सत्यकेतु विद्यालंकार ने भाषा समस्या पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सारे देश मे हिन्दी का जो महत्व है उसकी अवहेलना नही की जा सकती। हिन्दी के बिना देश की एकता भी नही रह सकती और आर्य समाज तो सदा ही हिन्दी का समर्थक रहा है। महर्षि दयानन्द जी ने हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया था। हमारी सब संस्थाओ में हिन्दी के द्वारा ही आज तक शिक्षा दी गई है। इस लिए हिन्दी का प्रचार और प्रसार हमारा कर्त्तव्य है हम किसी दूसरी भाषा के विरोधी नहीं है परन्तु हिन्दी की उन्नति के लिए जो भी कुछ हम से हो सके हमे करना चाहिए।

इस अवसर पर चारो महानुभावो ने जिन्हे सम्मानित किया गया। अपनी अपनी रचनाए पढ़ कर सुनाई और अपने विचार प्रस्तुत किए। आर्य कालेज लुधियाना की प्रबन्धकर्तृ सभा के मन्त्री और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी ने अध्यक्ष महोदय और दूसरे सभी अतिथि महानुभावो का स्वागत किया और सभा की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या ने सभी आए हुए अतिथियो का धन्यवाद किया। यह सारा कार्यक्रम आर्य कालेज के प्रधानाचार्य श्री मनोहर लाल जी आनन्द और उनके सहायक श्री सुखदेव त्यागी के संरक्षण और देख-रेख मे आयोजित किया गया था। समारोह के पश्चात् जल पान का भी प्रबन्ध किया गया।

इसके साथ ही शनिवार 14-11 87 को जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से आर्य कालेज महिला विभाग के हाल मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के सम्मान मे एक प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। इसमे लुधियाना की सब आर्य समाजो के प्रधान, मन्त्री और दूसरे प्रसिद्ध आर्य समाजी सम्मलित हुए। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रति श्री वीरेन्द्र जी की सेवाओ का उल्लेख करते हुए कई महानुभावो ने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि उन्हे फिर सभा का प्रधान निर्वाचित किया गया और सब आर्य समाजो ने श्री वीरेन्द्र जी को अपने सहयोग का आश्वासन दिया। जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा और मन्त्री श्री आशानन्द जी ने सर्व प्रथम फूल मालाओ से श्री वीरेन्द्र जी का स्वागत किया और उसके पश्चात् लुधियाना की सभी आर्य समाजो के अधिकारियो ने अपनी-2 आर्य समाज की ओर से उन्हे फूल मालाए पहनाई।

इस अवसर पर श्री वीरेन्द्र ने सबका धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्य समाज के किसी सेवक का सन्मान वास्तव मे आर्य समाज का सन्मान है। उन्होंने कहा कि 1956 मे मैं पहली बार जब सभा का मन्त्री निर्वाचित हुआ था तो वह लुधियाना मे ही हुआ था। इस प्रकार लुधियाना मेरे लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। लुधियाना के सब आर्य भाईयो और बहनो की ओर से मुझे आज तक जो सहयोग मिलता रहा है उसके लिए मैं उनका आभारी हू। मुझ से आर्य समाज की जो सेवा हो सकी है मैंने आज तक की है परन्तु मैं यह अनुभव करता हू कि मेरी परीक्षा का समय तो अभी आना है किसी संस्था का बड़ा अधिकारी बन कर उसकी सेवा करना कोई बड़ी बात नहीं असली परीक्षा तो उसी समय होती है जब वह व्यक्ति उस पद से हट जाता है इसलिए यदि हमने आर्य समाज की वास्तविक सेवा करनी है तो हमे अपने

(शेष-पृष्ठ 6 पर)

भारत में साम्प्रदायिकता बढ़ती जा रही है ?

लेखक—श्री आनन्दशंकर पंड्या 1401, ग्लोकेन्ड पैलेस
16 नारायण दभोलकर मार्ग, बम्बई

भारत मे साम्प्रदायिक नफरत व हिंसा की समस्या सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। उसे सुलझाने के सब प्रयास असफल हुए हैं। पहले तो उसका सारा दोष विदेशी सरकारो की फूट डालो राज्य करो, की नीति पर डाला जाता था पर आजादी के बाद भी हमारी सरकार इस समस्या को हल करने मे असफल रही है। इसका कारण यह है कि गांधी, नेहरू और विनोबा की तरह सभी हिन्दू सिर्फ एक तरफा, सब धर्म समभाव, मे विश्वास करते रहे हैं, मुस्लिम लीग जैसी संस्थाओ के कट्टरपंथी नेताओ को हमेशा सौम्य स्वभाव के उन हिन्दू नेताओ के साथ एक ही तराजू पर तोला गया है जो बचपन से एक चींटी भी मारना अधर्म समझते हैं, हिन्दुओ के प्रति इस अन्याय ने ही मुस्लिम नेताओ को अपनी दुस्साहस पूर्ण हिंसा के कार्यों मे उत्साहित किया है। जब तक इस अन्याय का पूर्ण पर्दाफाश नही होता है तब तक साम्प्रदायिक हिंसा की समस्या कदापि नही सुलझेगी।

हमारा राष्ट्रीय आदर्श 'सत्यमेव जयते' है पर हम बिल्कुल उल्टा मार्ग ग्रहण कर रहे हैं, उदाहरण स्वरूप भारत मे यदि कोई सत्य बोलता है तो उसका अनादर होता है और वो साम्प्रदायिक कहलाता है और यदि वो झूठ बोलता है तो उसका राजनीतिक क्षेत्र मे आदर होता है और वो सेक्यूलर कहलाता है, पर इतिहास बतलाता है कि जो देश झूठ की नींव पर बनता है वो शीघ्र ही विघटित होकर नष्ट हो जाता है। आज भारत मे जो भी बुराइयां उत्पन्न हो गई हैं। वे सिर्फ सत्य के प्रकाशित करने से ही दूर हो सकती है। इस सत्य को छिपाने से सारा देश नष्ट हो जाएगा फिर इसे कोई भी नही बचा सकेगा।

एक ऐसा ही झूठ है कि हिन्दू संस्थाए साम्प्रदायिक हैं। नीचे लिखे तथ्य इस दोषारोपण का खण्डन करते हैं।

हिन्दुओ ने कभी भी अन्य धर्मावलम्बियो के पूजा स्थलो, उनकी संस्थाओ व धर्म ग्रन्थो को नष्ट नही किया। यद्यपि उनके हजारो मन्दिर, मठ, धार्मिक संस्थाए व धार्मिक ग्रन्थ विधर्मी आक्रमणकारियों द्वारा एक सौ वर्ष तक जलाये जाते रहे। इस तरह दासता के 700 वर्षों मे हिन्दुओ पर अनेक अत्याचार हुए पर फिर भी हिन्दू अपने 'सर्व धर्म समभाव' के आदर्श को आज तक नही भूले साम्प्रदायिक कटुता को दूर करने के लिए यद्यपि सैकड़ो वर्षों से श्री कबीर और नानक जैसे संतो ने अनेक भावनात्मक व आदर्शवादी बातें की पर उससे कोई समस्या हल नहीं हुई।

वेद, गीता और रामायण मे लिखित तथा वेद व्यास, शंकराचार्य, महावीर, बुद्ध, गांधी इत्यादि के द्वारा प्रचारित 'वसुधैव कुटुम्बकम' के आदर्श के कारण हिन्दुओ ने देश के बटवारे के बाद हिन्दुस्तान को एक हिन्दू राज्य घोषित नही किया तथा अल्पसंख्यको को ऐसे विशेषाधिकार दिए जो हिन्दुओ को भी प्राप्त नही है। यद्यपि पाकिस्तान ने इन सब बातो के विरुद्ध ही कार्य किया।

मध्य युगीन इतिहास मे हिन्दुओ के हजारो मन्दिर नष्ट कर दिए गए तथा उन पर मस्जिद बना कर मुसलमानो ने कब्जा कर लिया पर आजादी के बाद भी हिन्दुओ ने उन्हे वापिस मांग कर अपने कानूनी अधिकार का उपयोग नही किया। उन्होंने अहमदाबाद, औरंगाबाद, इलाहाबाद जैसे शहर तथा हजारो सड़को के मुसलमानी नामो को कभी बदलने की कोशिश नहीं की यद्यपि पाकिस्तान मे सम्पूर्ण शहर व सड़को के नाम बदलकर मुसलमानी ही कर दिए गये हैं, तथा पचासो मन्दिर तोड़ दिए गए हैं, पर हिन्दुओ की इस उदारता व शान्तिप्रिय नीति को कायरता समझ कर उनकी एक सर्वोपरि आराध्य भूमि अयोध्या भी उन्हे वापस नही दी जा रही है।

गांधी, नेहरू, विनोबा भावे, जयप्रकाश इत्यादि के विचार अत्यन्त उदार व विश्वव्यापी थे क्योकि वे हिन्दू थे उन्होने सेक्यूलरिज्म का सिर्फ प्रचार ही नही किया बल्कि उन्हे मनसा, वाचा, कर्मणा अपने जीवन मे उतारा भी।

आपने इन नेताओ के उपदेश मान कर हिन्दुओ ने विश्वास के साथ 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम' के भजन गाये जब 'हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई के नारे लगाए गए तब सिर्फ हिन्दुओ ने ही उस पर सच्चाई से अमल किया। अन्य धर्मावलम्बियो ने इसे काफिरो व कायरो के लक्षण मानकर उसकी हंसी उड़ाई, हिन्दू हिन्दू, भाई-भाई हो एक ऐसा नारा है जो उन्होंने कभी नहीं लगाया और यही सब दुर्भाग्य का कारण रहा है, इस तरह की उदारता हिन्दुओ ने अपना धर्म मान कर अन्य धर्मावलम्बियो के प्रति दिखाई वह हिन्दुओं की कायरता समझी गई।

मुहर्रम मे हिन्दू लोग ताजिया की सजावट के लिए उदारतापूर्वक धन देते रहे हैं। हिन्दू राजाओं व व्यापारियो ने भूतकाल मे मस्जिदें तथा अलीगढ़ यूनिवर्सिटी बनाने के लिए बहुत धन दिया है पर आज मस्जिद मे मुल्ला लोग जोर-जोर से लाऊड स्पीकर पर पांच बार नमाजें पढ़ सकते हैं, और यदि हिन्दुओ का जलूस बाजे गाजे के साथ भजन गाता हुआ मस्जिद के सामने से निकलता है तो उस जलूस पर पत्थर फेंके जाते हैं और दंगा शुरू हो जाता है।

हिन्दुस्तान मे पचासों मुसलमानों को देश के ऊंचे-ऊंचे पदो पर नियुक्त किया गया है, उन्हे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मुख्य न्यायाधीश, राजदूत, गवर्नर, एम. पी इत्यादि सभी बनाया जाता है जबकि किसी इस्लामिक देश मे हिन्दू, बौद्ध अथवा ईसाई को एम. पी भी नही बनने दिया जाता।

महाराष्ट्र जैसे प्रांत मे जहां मुसलमानो की 5 प्रतिशत आबादी है एक मुसलमान मुख्यमन्त्री बन सकता है परन्तु जम्मू और काश्मीर में जहां 30 प्रतिशत हिन्दू हैं एक हिन्दू मुख्यमन्त्री बनने की कल्पना भी नही की जा सकती। भारत मे बहुत से ऐसे मुस्लिमो को राष्ट्रीय सम्मान व अवार्ड मिले हैं तथा सड़कें उनके नाम पर बनाई गई हैं। इस्लाम का प्रसिद्ध विद्वान केन्टवेल स्मिथ कहता है, शायद दुनिया के किसी भी इस्लामिक देश में, एक मुसलमान इतना स्वतन्त्र नहीं है जितना वह भारत मे है, वो यहां अपना ईमानदारी व लगन से अपनी धार्मिक समस्याओ को सुलझाने मे लगा सकता और निर्भय होकर कुछ भी बोल सकता है या लिखकर छपवा सकता है।
(लेखक एस के घोष-मुस्लिम इण्डियन)

1984 मे विश्व हिन्दू परिषद् ने भारत मे उत्तर से लेकर दक्षिण तक एकात्मता यात्रा निकाली जिसमे लगभग 8 करोड़ व्यक्तियो ने भाग लिया पर उसमे एक छोटा घटना के अलावा कही भी हिंसा व अल्पसंख्यको को परेशान करने की वारदात नही हुई थी, इसी तरह अयोध्या मे रामनवमी पर 10 लाख हिन्दू एकत्र हुए थे पर उन्होंने वहां बसे हुए थोड़े से मुसलमानो को सताया नही। इस तरह के सैकड़ो उदाहरण दिये जा सकते हैं।

इसके विरुद्ध विश्व के इस्लामिक देशों मे हिन्दुओ को उनके दीवाली, विजयादशमी जैसे धार्मिक त्योहारों पर कोई छुट्टी नही दी जाती जिस तरह मुसलमानों को भारत में उनके ईद पर और मुहर्रम में दी जाती है, हिन्दू लोग गीता या रामायण जैसी धार्मिक पुस्तकों को छपवा या बेच नहीं सकते। यदि कोई हिन्दू किसी मुसलमान का धर्म परिवर्तन करने की कोशिश करेगा या सुअर का मांस बेचेगा तो उसे जीवन कारावास की सजा दी जाएगी।

हिन्दुओ को खुले स्थान में अपने भजन गाना व पूजा करने की इजाजत नहीं दी जाती न वे अपने शवों का अग्नि-दाह कर सकते हैं। वे अपनी भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते तथा उन्हे सरकारी दफ्तरो में अल्पसंख्यको के अधिकार के नाम पर नौकरियां मिलने में कोई सुविधा नहीं दी जाती। वे अपने घरो मे कोई हिन्दू नेताओ की तस्वीरें नही लगा सकते।

हिन्दू लोग चुनावो मे कोई भाग नहीं ले सकते। वे किसी इस्लामिक देश के प्रैसिडेन्ट, गवर्नर, मुख्य न्यायाधीश अथवा मन्त्री नही बन सकते। हिन्दू लोग कोई व्यापार तब तक शुरू नहीं कर सकते जब तक वे किसी मुसलमान को अपने व्यापार मे 51 प्रतिशत का हिस्सेदार ना बनावे।

इतिहास मे हिन्दुओ पर उनके ही देश हिन्दुस्तान मे अन्य धर्मावलम्बियो द्वारा असंख्य अत्याचार किए गए। पाकिस्तान बनने के समय भी उन पर अनेको जघन्य अत्याचार किए गये थे पर हिन्दुओ ने कभी उनकी चर्चा नहीं की इस तरह उन्होंने लगातार विधर्मियो तथा आक्रमणकारियो को क्षमा किया। क्योकि हिन्दू लोग आत्म त्याग करके भी साम्प्रदायिक शान्ति व सद्भाव बनाये रखना चाहते हैं। संसार के किसी भी देश मे बहुसंख्यको ने अल्पसंख्यको के लिए इतना आत्म त्याग नही किया है।

हिन्दू नेता लेखक, कवि और फिल्म बनाने वालो ने भी हमेशा मुसलमानो तथा ईसाइयो के प्रति बहुत आदर दिखलाया है पर उनकी हृदय की विशालता के बदले हिन्दुओ को हमेशा तिरस्कार और गालियां ही मिली हैं क्या कभी भी किसी ने हिन्दुओ के इस गुण की प्रशंसा की है।

जब किसी हाकी या क्रिकेट के मैच मे पाकिस्तानी टीम हिन्दुस्तान की टीम से जीत जाती है तब हिन्दुस्तान के मुसलमान अल्ला हो अकबर चिल्लाते हैं तथा अपने रेडियो को माला पहनाते हैं उनके घर मे आयातुल्ला खुमैनी या सद्दाम हुसैन के चित्र लगे रहते हैं ना कि गांधी जी के और यद्यपि गांधी जी ने मुसलमानों की रक्षा करने के लिए अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया पर किसी मुसलमान नेता ने उनकी प्रशंसा नहीं की बल्कि उल्टा मौलाना मुहम्मद अली ने जिन्हें गांधी जी ने 1983 मे काकीनाडा कांग्रेस का प्रेसीडेन्ट बनाया था यह कहा कि नीच मुसलमान भी मेरे लिए महात्मा गांधी के मुकाबले हजारो गुणा बेहतर है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

कुछ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विषय में

चार अक्तूबर 1987 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन जालन्धर में हुआ था उसमें 156 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे और उसी दिन नए अधिकारियों का चुनाव भी हो गया था। उसमें जालन्धर के श्री योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान पद के लिए निर्वाचित न हो सके क्योंकि उन्हें 156 में से केवल 12 वोट मिले थे। उन्हें और महीपाल सिंह एडवोकेट को नई अन्तरंग सभा में नहीं लिया गया था। इसलिए इन दोनो ने मिलकर अपनी डेढ़-ईंट की एक नई मस्जिद बनाने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने 1५ नवम्बर 1987 को जालन्धर में एक बैठक बुलाई उसमें 25 के लगभग व्यक्ति सम्मलित हुए। जिनमे, 12 के लगभग सभा के प्रतिनिधि थे बाकी यह थे जो सभा के प्रतिनिधि न थे कुछ ऐसे भी व्यक्ति थे जो किसी भी आर्य समाज के सदस्य नहीं हैं। यह बैठक 15 नवम्बर को हुई थी परन्तु श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने 6 नवम्बर को ही अपने आपको सभा का तथा कथित प्रधान घोषित कर दिया था और 14 नवम्बर को तथा कथित सब अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यो की घोषणा कर दी। जब उस सभा मे उनसे पूछा गया कि एक दिन पहले ही उन्होंने चुनाव की घोषणा क्यो कर दी तो उन्होने कहा कि यह सब कुछ सार्वदेशिक सभा के आदेश पर किया गया है। जहा तक हमारी जानकारी है सार्वदेशिक सभा ने इस प्रकार का कोई आदेश नही दिया। पिछले दिनो श्री महीपाल सिंह ने अपनी कुछ शिकायतें सार्वदेशिक सभा को लिख कर भेजी थी। इन पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक के अधिकारियो की बैठक पांच नवम्बर को देहली मे हुई और उसमे यह निर्णय किया गया था कि श्री महीपाल ने जो आरोप लगाए हैं उनकी पहले तहकीकात की जाए। उसके पश्चात् ही निर्णय लिया जाए कि क्या करना है इससे अधिक और कुछ भी नहीं हुआ।

पंजाब के आर्य भाईयो और बहनों से मेरा यह निवेदन है कि इसके विषय में कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नही है। श्री योगेन्द्रपाल द्वारा जो महानुभाव इस तथा कथित अन्तरंग सभा मे रखे गए हैं। उनमे से कईयो के पत्र हमे मिल गए हैं कि न वह इस बैठक मे सम्मलित हुए थे न उनसे इसकी अनुमति ली गई है और न वह इससे सहमत हैं। सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो को भी इसके विषय में कुछ पता नही है। श्री योगेन्द्रपाल सेठ और महीपाल ने केवल अपनी लालसा को पूरा करने के लिए एक ढोंग खड़ा किया है। जिसका कोई नैतिक या कानूनी महत्व नही है। सभा के जिन अधिकारियो को 156 मे से 144 सदस्यो ने निर्वाचित किया था उन्हें कोई हटा नही सकता। अपने घर मे बैठकर कोई कहे कि मैं देश का राष्ट्रपति बन गया हू तो उसके विषय मे जनता जो कुछ सोच सकती है और कह सकती है। वही इन महानुभावों के विषय मे भी कहा जा सकता है। जिन्होंने यह बोगस सभा बनाई है और जिसे किसी का भी समर्थन प्राप्त नही है इसलिए इसके विषय मे आर्य बन्धुओ को किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

—वीरेन्द्र

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिक उत्सव

प्रति वर्ष की तरह इस बार भी दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिक उत्सव 6, 7,8 नवम्बर को बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। चम्बा धीरे-2 पंजाब और हिमाचल के आर्य समाजियों के लिये एक धार्मिक मेला बनता चला जा रहा है। प्रत्येक वर्ष वहा दूर-2 से लोग पहुचते हैं। इस बार भी पंजाब और हिमाचल से बहुत बड़ी संख्या में यहां लोग पहुचे थे। इस बार के उत्सव की एक विशेषता यह भी थी कि वैदिक यतिमण्डल की बैठक भी वहा रखी गई थी। इसलिए तीस-पैंतीस सन्यासी वहां पहुचे हुए थे। उनके साथ जब शोभा यात्रा निकली तो चम्बा की सारी जनता पर उसका बहुत ही प्रभाव पड़ा था। सम्भवतः पहली बार चम्बा में इक इतनी बड़ी शोभा यात्रा निकाली गई थी। दयानन्द मठ चम्बा के आचार्य श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने चम्बा और हिमाचल के दूसरे क्षेत्रों में जनता की जो सेवा की है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। वहां की जनता स्वामी जी महाराज का हृदय से आदर और सम्मान करती है यही कारण है कि दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिक उत्सव प्रत्येक वर्ष बहुत प्रभावशाली रहता है। हिमाचल एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है फिर भी चम्बा का दयानन्द मठ उसकी जो सेवा कर रहा है उसकी सब प्रशंसा करते हैं वहां रचनात्मक कार्य अधिक होता है बातें कम होती हैं। यही कारण है कि दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है। चम्बा पंजाब से बहुत दूर है फिर भी लोग वहा पहुचते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने अपने तप और त्याग से लोगो का दिल जीत लिया है। स्वामी जी महाराज को उनके आचार्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त है उसी के सहारे वह चम्बा जैसे क्षेत्र में इतना कार्य कर रहे हैं।

—वीरेन्द्र

महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी

आर्य समाज के साहित्यकार समय पर आर्य समाज की गतिविधियो के विषय मे जो साहित्य प्रकाशित करते रहते हैं उसे हम नही देखते यदि आर्य जनता अपने लेखको के द्वारा लिखित पुस्तको का अध्ययन करती रहे तो आर्य समाज के विषय मे भी और दूसरी सस्थाओ के विषय मे भी उन्हे बहुत कुछ पता चलता रहेगा।

डा भवानी लाल जी भारतीय आर्य समाज के उन यशस्वी साहित्यकारो मे से हैं जो समय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के विषय में पुस्तक प्रकाशित करते रहते हैं उनकी विशेषतया यह है कि वह बहुत खोज के पश्चात ही कोई पुस्तक लिखते हैं जिस विषय पर वह प्रकाश डालते हैं उसकी सम्बन्ध मे सारी स्थिति की पूरी जानकारी हो जाती है जब भी कोई विद्वान कोई पुस्तक लिखता है तो उसके विषय मे कई बार कुछ न कुछ मतभेद तो हो ही जाता है फिर भी उनके द्वारा जो जानकारी मिलती है वह हमे दूसरी पुस्तको मे नही मिल सकती। इसलिए आर्य समाज मे खोज प्रथा को प्रोत्साहित करने का श्रेय बहुत कुछ श्री डा भवानी लाल जी भारतीय को जाता है। उनकी एक पुस्तक पिछले दिनो मैंने देखी है वह है महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी। इसे प्रकाशित हुए तो अब एक वर्ष से भी अधिक हो गया है परन्तु मैंने अभी पिछले दिनो ही यह पुस्तक देखी है इसे पढ़ने के पश्चात मैंने यह सोचा कि क्यो न आर्य जनता का ध्यान इस पुस्तक की ओर दिलाऊ। इसमे उन्होने लगभग 50 व्यक्तियो की सम्मति महर्षि दयानन्द और उनकी विचारधारा के सम्बन्ध मे दी है। इन पच्चास मे से कुछ मुसलमान भी हैं और कुछ विदेशी भी हैं। राजस्थान के कई पुराने महाराजे भी हैं महर्षि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री केशवचन्द्र सेन, श्री रामकृष्ण परमहस, न्यायमूर्ति गोविन्द रानाडे, आदि विख्यात व्यक्ति भी हैं। मुसलमानो मे सर सैय्यद अहमदखान और खान बहादुर डा रहीम खान भी हैं। महर्षि के निर्वाण पर सर सैय्यद अहमदखान ने उन्हे अपनी श्रद्धाजलि निम्न शब्दो मे भेंट की थी .—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती सस्कृत के गम्भीर विद्वान तथा वेदो के सतर्क अध्येता थे। एक उच्च विद्वान होने के साथ-2 वह उच्च चरित्र तथा आध्यात्मिक वृत्ति के पुरुष भी थे। उनके अनुयायी उन्हे ईश्वर के तुल्य सम्मान देते थे निश्चय ही वह उसके पात्र भी थे। उन्होने हिन्दू धर्म मे अनेक सुधार किए वह मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी थे तथा इस विषय को लेकर उनके पण्डितो से अनेक शास्त्रार्थ भी हुए थे। जिसमे उन्होने यह निर्विवाद रूप से सिद्ध किया था कि मूर्तिपूजा के लिए वेदो मे स्वीकृति नही है। वह निराकार से भिन्न किसी अन्य ईश्वर की उपासना को अनुचित मानते थे उन्होने यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया था कि वेदो मे जड़ तत्वो की पूजा का विधान नही है। मेरे विचार के अनुसार स्वामी जी प्रकृति को अनादि तथा शाश्वत मानते थे तथा उसे माया कह कर भी सम्बोधित करते थे। यदि वह प्रकृति की अनादिता मे विश्वास नही रखते तो सम्भवत ईश्वर के स्वरूप को लेकर उनके तथा मुसलमानो के विचारो म कोई अन्तर नही रह जाता"

जो कुछ सर सैय्यद अहमद खान ने महर्षि के विषय मे कहा था उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके दिल मे महर्षि का कितना आदर और सम्मान था। मैंने डा भवानी लाल जी भारतीय की पुस्तक से केवल एक व्यक्ति की सम्मति उधृत की है। यदि इस पुस्तक को पढ़ा जाए तो फिर हम अनुमान लगा सकते हैं कि महर्षि कितने महान् थे और उन्होने किस प्रकार अपने देशवासियो का नेतृत्व किया था। डा भवानी लाल जी भारतीय की यह पुस्तक स्वामी सत्यप्रकाश प्रतिष्ठान लखमीपुर-खीरी (उ प्र) से मिल सकती है।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज तब और अब

लेखक—श्री ऋषिपालार्य विद्यावाचस्पति
दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय हिसार (हरियाणा)

जब तक संस्था या राष्ट्र के अन्दर त्याग और तपस्या होती है। वह संस्था और राष्ट्र दिन-प्रतिदिन आगे ही आगे बढ़ती जाती है। इसी प्रकार जब तक आर्य समाज के अन्दर त्याग और तपस्या रही है कोई भी संस्था इसका मुकाबला नही कर सकी है और जैसे ही आर्य समाज मे त्याग और तपस्या प्राय समाप्त है। अब समझिए उसका ह्रास शुरू हो गया है। दिन-प्रतिदिन जो विद्वानो का साया आर्य समाज से उठता जा रहा है। कोई उसका स्थान लेने वाला नही है। इसका एक कारण है आज आर्य समाजो के अन्दर ज्यादातर वे लोग हैं जो स्वार्थी कहे जा सकते हैं। जब किसी संस्था या राष्ट्र मे ज्यादातर लोग स्वार्थी हो जाते हैं तब वह संस्था या राष्ट्र ज्यादा देर तक नहीं टिका करता। जिस समय यह आर्य समाज का सूर्य अपने पूरे यौवन पर था उस समय इसके अन्दर किस प्रकार के लोग थे। जिन्होने इस आर्य समाज को अपने खून से सींच कर ऊपर उठाया।

इसके कुछ उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत हैं।

पं गुरुदत्त विद्यार्थी जो महर्षि दयानन्द की मृत्यु को देख कर आस्तिक बने थे। क्या रंग चढ़ा था उसके ऊपर आर्य समाज का। आर्य समाज के पांच नियम आगे और पांच नियम पीछे लटका लेते थे। जहां भी जाते थे वहीं आर्य समाज का प्रचार करते थे। एक तरह से कहिये चलती फिरती आर्य समाज थे पं गुरुदत्त विद्यार्थी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी डायरी मे लिखते हैं। "जालन्धर से लौटते हुए नकोदर मे प्रचार हुआ। चिरञ्जी लाल ही मेरा सबसे बड़ा विज्ञापन था। वह इस प्रकार कि मुझे उस स्थान पर बिठा कर जहां मैं व्याख्यान देना चाहता था। चिरञ्जी लाल बाजार चला जाता और जिस दुकान पर ऊंचा मूढ़ा देखता वहीं खड़ होकर सिंह गर्जना से एक बैंत सुनाता फिर कहता प्यार या मूढ़ा कुछ देर और दे तो और बैंत सुनाता। कहां कब इनकार था। मूढ़ पर खड़ होकर बैंत द्वारा लच्छेदार खण्डन होने लगा जब पचास (50) आदमी हो जाते चिरञ्जी लाल मूढ़ा उठा कर बीस (20) कदम आगे बढ़ जाते और फिर मूढ़ पर चढ़ कर भाषण शुरू कर देते इस प्रकार वह भीड़ इकट्ठा करके मेरे सामने ले आते फिर श्रोताओ से कहते कि हुण विदवाणा दियां गल्लां सुनो।" इस प्रकार उन लोगो ने आर्य समाज का प्रचार किया। यही कारण था कि आर्य समाज का प्रचार घर घर तक पहुंचा है। स्वामी श्रद्धानन्द की लड़की वेद कुमारी घर आकर एक भजन सुनाती है जो उनकी मैडम ने सिखाया था।

ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया॥

यह सुनते ही (स्वामी श्रद्धानन्द) मुंशी राम ने विचार किया कि आर्य समाज का अपना कन्या महाविद्यालय होना चाहिए और अगले दिन आर्य समाज के सभासदो की बैठक मे यह प्रस्ताव पारित कर दिया गया और आर्य कन्या महाविद्यालय की जालन्धर मे स्थापना कर दी गयी इस प्रकार आज के आर्य समाजियो की तथा पुराने आर्य समाजियो की तुलना करने से पता चलता है कि वे क्या थे और हम क्या हैं व तो अपने बच्चो को ईसाई स्कूल मे भेजना पसन्द नही करते थे और हम स्टेजो पर खड़ होकर तो ईसाई स्कूलो का खण्डन कर देते हैं परन्तु अपने बच्चो को ईसाई स्कूलो मे पढ़ने भेजते हैं और इसी मे अपना गौरव समझते हैं। एक बार गंगा प्रसाद उपाध्याय अपने गृह का निर्माण करा रहे थे। घर का निर्माण पूरा होने वाला था एक दिन गंगा प्रसाद उपाध्याय घर का निरीक्षण कर रहे थे। अचानक पता नही क्या सूझा घर का निर्माण रुकवा दिया और आर्य समाज का निर्माण शुरू करा दिया ऐसे थे वो लोग जो आर्य समाज की नींव के पत्थर बने हैं उन्होने अपने घर को तोड़ कर आर्य समाज का निर्माण करवाया और आज के स्वार्थी लोग आर्य समाज को तोड़ कर अपना घर बनवाते हैं। जहां पहले विद्वानो का यथोचित आदर होता था और वह भी उचित प्रकार से अपने कार्य का निरूपण करते थे परन्तु आज स्थिति इसके विपरीत है। पुरोहित या उपदेशक मन्त्री व प्रधान की सब्जी लाना उनके बच्चो को घुमाना आदि कार्य करते देखे गये हैं जब उनसे पूछा गया तो पुरोहित निराशापूर्ण उत्तर देते हैं कहां जाएं सभी आर्य समाजो का यही हाल है जिस संस्था के अन्दर विद्वानो की ये स्थिति हो उस संस्था से किस प्रकार यह आशा की जा सकती है यह देश का सुधार कर सकेगी। सिद्धान्त ही सब कुछ नहीं होते उनके साथ मे त्याग तपस्या का होना बहुत ही जरूरी है। बिना त्याग और तपस्या के उनके सिद्धान्त कुछ नहीं कर सकते जब तक हमारी कथनी और करनी एक समान न होगी दूसरे लोगो पर हमारा कोई असर नहीं पड़ेगा।

हमारे दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय से जो भी विद्यार्थी निकलते हैं जब वे यहां से निकलते हैं तो उनके दिल के अन्दर बड़े अरमान होते हैं यहां से वह यह प्रतिज्ञा लेकर निकलते हैं कि आर्य आर्य समाज का प्रचार करेंगे परन्तु थोड़े ही दिनो के बाद परिस्थितियां उन्हें घर लेती है तथा आर्य समाज का प्रचार करने से मजबूर कर देती हैं और फिर वह स्कूल, कालेजो का चक्कर लगाना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार की स्थिति मे यह आशा करना कि आर्य समाज के अन्दर युवको का आगमन होगा नितान्त भ्रान्ति है। आर्य समाजो की स्टेजो के ऊपर उन लोगो का अस्तित्व है जो आर्य समाज का क ख तक नहीं जानते और उनको ही आर्य समाज मे सम्मान दिया जाता है चाहे वो कितने ही बड़े चरित्रहीन क्यो न हो जब स्टेज के ऊपर भाषण चरित्रहीन व्यक्ति भाषण देंगे तो क्या असर पड़ेगा। उनका जनता के ऊपर क्या फिर भी यह आशा की जा सकती है कि आर्य समाज मे युवको का आगमन होगा।

जो लोग श्रद्धापूर्वक आर्य समाज का काम कर भी रहे हैं कहीं पत्र पत्रिकाओ मे उनका नाम तक नही मिलता उनका सारा श्रेय वही लोग ले लेते हैं जो आर्य समाज का कुछ नही करते जब तक हम अपने कार्यकर्ताओ का सम्मान नही करेंगे तथा उत्साह वर्धन नहीं करेंगे, तब तक यह आशा करना नितान्त भ्रान्तिजनक है कि आर्य समाज फूले फलेगी। इसलिए जो हमारे कार्यकर्ता बिना स्वार्थ आर्य समाज का कार्य कर रहे हैं उनका नाम आर्य समाज की पत्र पत्रिकाओ में देकर उत्साह करना चाहिए जिससे वे भविष्य मे अच्छी तरह कार्य कर सकेंगे।

आर्य समाज के मंचों से चरित्रहीन व्यक्ति को स्थान न देकर सुशिक्षित विद्वानो को स्थान देना चाहिए। ये बातें आर्य समाज के अन्दर पुनः आ जायेंगी तो आर्य समाज संसार की बुलन्दियो को छूता नजर आएगा। जो संस्थाए आज उन्नति के शिखर पर आज आरूढ़ हैं जब हम उनकी जड़ में झांक कर देखते हैं तो पता चलता है उस संस्था के अन्दर कितना त्याग और तपकार्य कर रहा है आर्य समाज की भी जो संस्थाए इस समय उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हैं उनके अन्दर भी तप और त्याग छिपा हुआ है गुरुकुल आर्य नगर हिसार के आचार्य ने अपने वार्षिक उत्सव के उपलक्ष मे बोलते हुए कहा हमारे गुरुकुल की उन्नति का कारण त्याग और चरित्रहीन व्यक्ति को स्थान न देना ही है। उन्होंने कहा यदि हम चरित्रहीन व्यक्ति को माफ करके स्थान दे भी दें तो वह स्थान नही बन पाता जो आचारवान व्यक्ति का होता है जो निन्दक हैं पार्टीबाज हैं उनको हम अपनी संस्था में एक मिनट भी रखना नही चाहते यदि इस प्रकार का रूप सभी आर्य समाज की संस्थाए अपनाएं तो आर्य समाज के अन्दर किसी प्रकार का अभाव नही होगा। और तभी हम यह नारा लगा सकेंगे। (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्)

आर्य समाज कोटकपूरा की गतिविधियां

14-9 87 को प्रात 8 बजे आर्य समाज मे हवन यज्ञ के बाद श्री रविराज जी प्रधान की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस मनाया गया। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। सब ने हिन्दी के प्रसार व प्रचार के लिए तन-मन धन से जो कुछ होगा करेंगे। नित्य प्रति प्रयोग मे हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे।

20-9 87 को प्रात 8 बजे हवन यज्ञ के बाद श्री रविराज जी देवडा की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई। जिसमे मास्टर पूर्णचन्द जी वानप्रस्थी मुख्तयार आम सभा जी के निधन पर गहरा दुःख अनुभव किया गया। मास्टर पूर्णचन्द जी निस्वार्थ भाव से आर्य जगत् का कार्य दिन रात लगन से करते थे। उनके निधन से आर्य जगत को गहरा नुकसान हुआ है।

1-11 87 को आर्य समाज कोटकपूरा मे पंजाब दिवस मनाया गया और सरकार को पंजाब मे राष्ट्रपति राज पूर्ण शान्ति तक जारी रखने के सम्बन्ध में सरकार को तारें दी गईं।

—महेन्द्र प्रधान मैणी मन्त्री

शोक समाचार

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की साप्ताहिक सत्संग सभा डा ललित कुमार जी मुखनिज की माता श्रीमती विद्यावती जी एवं डा हरे कृष्ण जी सूद की धर्म पत्नी श्रीमती कृष्णा जी सूद के असामयिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करती हुई परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओ की शान्ति प्रदान करें तथा परिवार के सदस्यो को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—रोशनलाल शर्मा-मन्त्री

उपनयन संस्कार

लेखक—श्री सत्येन्द्र जी शास्त्री, गुरुकुल होशंगाबाद

संस्कार शब्द की कैसे उत्पत्ति हुई, इसका क्या तात्पर्य है। सर्व प्रथम संस्कार शब्द सम्+कृ धातु से सुडागम करने से यह पद सिद्ध होता है। इसका अर्थ है पवित्र करना अपने अनुरूप बना लेना निखारना, प्रभावित करना।

अतः उपनयन संस्कार: "हम देखते हैं कि वैद्य लोग वत्सनाभ से भयानक विष का संस्कार कर अमृत सम औषधि का निर्माण करते हैं। एक शिल्पकार बेडौल पत्थरों का परिष्कार कर सुन्दर भवन का निर्माण करता है। एक लोहे का टुकड़ा जिसकी कीमत दो पैसे की है, उसी का संस्कार कर जब वह घड़ी का पुर्जा बन जाता है तो उसका मूल्य कई गुना बढ़ जाता है। उसी प्रकार प्रतिदिन हम अपने कपड़ो और खाद्य पदार्थों को संस्कारित करके शुद्ध व रोचक बनाते हैं। ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी जो कुछ करता, सुनता व देखता और अनुभव करता है उसका प्रभाव उसके मस्तिष्क मे रह जाता है। शनैः शनैः वही प्रभाव इतना दृढ़ हो जाता है कि मनुष्य परवश होकर उसके अनुसार चलने लगता है। यदि वह व्यक्ति उससे बचना चाहे तब भी अज्ञात रूप मे उसे करता रहता है। ये अज्ञात शक्तियां ही संस्कार कहलाती हैं। ये ये अच्छे बुरे दोनो तरह से ही सकते हैं। जिस तरह एक शराबी शराब को नुकसान दायक समझते हुए भी अपने संस्कार के कारण उसे छोड़ने मे असमर्थता प्रकट करता है। संस्कार मानव की वे प्रवृत्तियां हैं जो अनेक परिस्थिति मे उत्पन्न हुआ करती हैं। मानव न अकेला विचरण करता है न सोचता है। वह एक सामाजिक प्राणी है। अतः वह अन्यो से प्रभावित होता है, और अन्यो को प्रभावित करता भी है। इसी कारण मानव को एक सभ्य व समाजोपयोगी तथा आत्मोन्नति के लिए निर्माण करने के उद्देश्य से उस पर कुछ शुद्ध संस्कार डालने की आवश्यकता हुआ करती है। इस ध्यान म रखते हुए हमारे प्राचीन ऋषियों और मुनियों ने वेद का आश्रय लेकर मनुष्य के जीवन को 16 संस्कारो से युक्त किया है। उनमे से उपनयन संस्कार पर मैं कुछ प्रकाश डालना चाहता हू। पहले हम यह देखते हैं कि इसकी क्या आवश्यकता है? यह संस्कार कुमारावस्था मे कराया जाता है। इस समय बालक के शारीरिक व मानसिक परिवर्तन हुआ करते हैं। उसमे शनै-शनै कामादि विकारो का भी उत्पन्न होना प्रारम्भ होता है।

इन सब बातो को संयमित किया जाना नितान्त आवश्यक है। अन्यथा उच्छृंखलता के प्रवेश से समाज की व्यवस्था को हानि पहुंचेगी उसे आत्म संयम के साथ अपने प्रति और समाज के प्रति कर्तव्यों की शिक्षा और उस पर आचरण कराने का अभ्यास डालना परम आवश्यक है। यह अभ्यास उपनयन मे ही प्रारम्भ होता है। उपनयन की समस्त क्रियाओ मे गूढ़ भावनाएं निहित है। बालक को उन भावो के हृदयगम करने से वह आत्म संयम कुल का दीपक सिद्ध हो सकता है।

इस यज्ञोपवीत मे तीन तार हैं। तीन ही तार क्यो है?

इसका भी रहस्य है तीन का बहुत बड़ा महत्व है। सत्व रज और तम तथा पृथिवी अन्तरिक्ष, द्युलोक गार्हपत्य आवाहनीय दक्षिण अग्नि तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, यज्ञोपवीत के अधिकारी भी तीन ही हैं। इसलिए यज्ञोपवीत मे तीन धागों का होना अत्यावश्यक है। यज्ञोपवीत तीन आश्रमो मे धारण किया जाता है। ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ और इसे सन्यास आश्रम मे उतार दिया जाता है और मनुष्य को पैदा होते ही तीन ऋणो का ऋणी होना पड़ता है। तीन ऋण हैं देव ऋण अर्थात परमेश्वर का ऋण है क्योकि इसी ने मुझे पैदा किया है। अतः तू इसी की उपासना किया कर। दूसरा ऋण माता पिता का है। जिन्होने तुझे पाल कर इतना बड़ा किया है। भूल मत उनकी सेवा किया कर नित्य प्रति और तीसरा ऋण गुरु है। जिस गुरु ने अपना सब कुछ ज्ञान तुझ दिया विद्वान बनाया। तू उसका सदा किया कर और उनकी विद्या का तू प्रचार प्रसार किया कर। अतः तीन धागे सदा मनुष्य के कन्धे पर ऋण का प्रतिनिधित्व करते हुए तर कन्धे पर छाती के ऊपर से होते हुए लटकते है। इसलिए तू इसे धारण कर इसी कारण तीन तार होने आवश्यक है।

ऋषि पुत्रो! भारत माता के वीर नौजवानों आर्य युवको! अब भी समय है यज्ञोपवीत के महत्व को जानकर यज्ञोपवीत धारण करो। संस्कार कराओ और विनाश की राह इस पाश्चात्य सभ्यता को छोड़ कर अपनी एवं दूसरो की उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए प्राचीन आर्ष पद्धति वेदानुकूल इस परम पवित्र यज्ञोपवीत को धारण करो और पापाचरण को छोड़ कर अपना जीवन वेदो के अनुसार मोक्षगामी बनाओ।

हे मानव तू कर विश्वास ईश्वर का
तुझे कभी धोखा न होगा।
ये तुम्हारी जिन्दगी सुख से बीत
जायगी कभी रोना न होगा॥

अतः ईश्वर पर विश्वास करके परम पावन इस यज्ञोपवीत को धारण करो तभी कल्याण है अन्यथा नहीं?

"ए दुनिया के लोगो पकड़ा चाहे तो वेद मार्ग पकड़ो वरना यूं ही गोते खाते रहोगे॥"

वेद—सुधा

(प्रोफेसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज)

मन्त्र—मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥
अथर्व 3-30 3

अर्थ—भाई-भाई को और बहिन बहिन को मत द्वेष करे। एक विचार वाले (और) एक व्रत वाले होकर तुम (सब) शुभ वाणी बोलो।

व्याख्या—भाई-बहिनो को आपस मे प्रेम हो जिससे परिवार मे शान्ति बनी रहे। द्वेष से सुख शान्ति नष्ट हो जाया करती है। मन के अन्दर स्वार्थ और द्वेष के उदय होने पर संगठन की बुनियाद कमजोर होनी शुरू हो जाती है। संसार मे सब से निकट का सम्बन्ध भाई बहिनो का आपस मे हुआ करता है क्योकि वे एक ही माता पिता की सन्तान हैं। इनका शरीर एक ही मा बाप के शरीर का हिस्सा होता है। सन्तान में द्वेष उनमें फूट का कारण बन जाता है। इससे माता पिता के दुःख का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। उनकी सभी आशाएं धूल मे मिल जाया करती हैं। परिवार नरक समान बन जाया करते हैं। द्वेष स्वार्थ के अलावा विचारो मे विरोध और कठोर वाणी भी भाई-बहिनो के सम्बन्धो को तोड़ देते हैं। द्वेष का न होना बहुत जरूरी है, परन्तु मधुर वाणी और उत्तम व्यवहार अवश्य हो। इन से भाई बहिनो का प्रेम बना रहता है, जिस से सभी सुख और शान्ति भोगते हैं।

दार्शनिक विद्वान् डा. जयदेव वेदालकार का सन्मान

मुरादाबाद (उ प्र) 8 अक्तूबर, 1987 अखिल भारतीय दर्शन परिषद का 32 वां वार्षिक अधिवेशन रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के अंगीभूत के जी के महाविद्यालय मुरादाबाद मे सम्पन्न हुआ। इसके उद्घाटन के समारोह पर डा जयदेव वेदालकार रीडर अध्यक्ष दर्शन विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार को, "स्वामी प्रणवानन्द पुरस्कार" से पुरस्कृत किया गया है। यह पुरस्कार उनके शोधग्रन्थ भारतीय दर्शन की समस्यायें, पर प्रदान किया गया।

उनके "भारतीय दर्शन की समस्यायें" ग्रन्थ को विद्वानो की चयन-समिति ने 1987 की सर्वोत्कृष्ट कृति के रूप मे स्वीकार किया है।

इस प्रस्तुत शोध ग्रन्थ म विद्वान् लेखक ने भारतीय दर्शन को 12 समस्याओ की एक विस्तार पूर्वक निरूपति किया है। ग्रन्थ 12 अध्यायो मे निबद्ध 416 पृष्ठ 18×22 के आकार मे है। प्राप्त विषय शोध प्रकाशन हरिद्वार से 1986 म प्रकाशित हुआ है। उक्त ग्रन्थ मे ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, ब्रह्म, सृष्टि रचना, जीवात्मा आचार शास्त्र, कर्म का दर्शन, अन्तःकरण, विज्ञानवाद, शून्यवाद, स्याद्वाद, मायावाद, और मोक्ष मीमांसा आदि भारतीय दर्शन की समस्याओं का विस्तारपूर्वक विवेचन है।

इस शोध ग्रन्थ की मौलिक विशेषता यह है कि प्रत्येक विषय पर वैदिक दर्शन से लेकर मध्यकालीन प्रतिनिधि आचार्यों के दर्शन का समालोचनात्मक ढंग से मौलिक प्रमाणों सहित प्रतिष्ठित किया है। यह ग्रन्थ दर्शन के जिज्ञासुओ से लेकर शोधार्थियों सहित पठनीय है। प्रत्येक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के पुस्तकालयो के लिए संग्रहणीय है।

—रामप्रसाद वेदालकार
आचार्य-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

यज्ञ के दो पंख

लेखक—श्री स्व महात्मा प्रभु आश्रित जी

(गतांक से आगे)

दूसरा मिलता है गुप्त दान से, अलबूझ भण्डार, भूमि का गुप्त कोष।

1 स्वर्ण, रजत ताम्र, लोहा, कांसा, अभ्रक आदि धातु की खान।

2 अथवा ऐसे अरण्य जिनमे चन्दन, अगर, तगर आदि देवदारु गन्धा बीरोजा पैदा करने वाले चीड के वृक्ष और अन्य-अन्य मूल्यवान उद्भिज बन आदि जो सदा बनते रहते और अपने आप फैलते रहते हैं, कभी समाप्त होने को नही आते।

3 और पत्थर, पत्थरो की उपज, सीमेंट, बालू मिट्टी, कंकर रोडी।

4 अनेक प्रकार की मिट्टी, हरी, पीली, लाल सिर धोने वाली, रेशमी वस्त्र धोने वाली मिट्टी के पर्वत।

5 खार सोडा, पैट्रोल, मिट्टी का तेल आदि आदि ऐसे गुप्त कोष जो वर्षों तक आय के साधन बने रहे।

6 जलाशय से मोती मू गे कोडिया, शंख आदि अनेक प्रकार की वस्तुए। क्या क्या गिनाए इनकी महान गति का किसी को कोयला की खान, किसी को पत्थर सोना, चादी किस किस वस्तु के दान से और किस किस पात्र का फल मिलता है? प्रभु जाने। इतना अनुमान लगता है कि सब धातुओ और उपरोक्त वस्तुओ और उपरोक्त वस्तुओ के बनाने में नक्षत्रो (ज्योतिमण्डल) की सहायता होती है। कई नक्षत्र ऐसे हैं जो आग्नेय हैं, कई जलीय, कई वायु की और कई पार्थिव हैं—। यह नीलम और हीरे आदि इन्हीं नक्षत्रो के प्रताप से बनते है। सब जगह यह धातु नही होते। पृथ्वी के विशेष विशेष विभागो मे प्रभु ने विशेष चीज रखी हैं जैसे उत्तराखण्ड की भूमि में एक आध्यात्मिक चुम्बक का प्रभाव है वहा जिन नक्षत्रो का प्रभाव पडता है वह आध्यात्मिक होता है। कही दैवी कही भौतिक पडता है। इन नक्षत्रो मे और सूर्य और चन्द्रमा मे तीनो प्रकार की शक्तिया हैं, हा यज्ञ के सम्बन्ध मे तो कहा जा सकता है कि अमुक नक्षत्र मे यज्ञ करने से वर्षा होती है अमुक नक्षत्र में सन्तान की वृद्धि होती है। अमुक मे धन वृद्धि आदि अथवा पशु वृद्धि अथवा दान और नाम वृद्धि होती है जैसा कि ज्योतिष शास्त्र के आधार पर विद्वान कहते हैं। यज्ञ विधी का सम्बन्ध अनेक विद्याओ से है। यज्ञ विद्या का ज्ञाता इस जान सकता है। हम साधारण व्यक्ति उनका सिवा ही बता सकते हैं।

परमात्मा करे! हम यज्ञ, तप, दान के वास्तविक स्वरूप को जानने के योग्य बन आचरण कर सकें ताकि हमारा जीवन, मानव जीवन सफल हो जावे।

वेद भगवान ने तो बताया है—

भुज्यू सुपर्णो यज्ञो
गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा
अप्सरसस्तावा नाम।

यज्ञ एक पक्षी है जिसके सुन्दर दो पंख हैं। एक है दक्षिणा और दूसरा है दान। इन्ही दोनो पंखो से यज्ञ रूपी पक्षी उडान कर सकता और हमे प्रकाश युक्त लोको मे पहुचा सकता है। दक्षिणा हो और दान न हो अथवा दान हो दक्षिणा न हो तो यज्ञ लगडा है, उड नही सकता अर्थात् जिस यज्ञ मे दक्षिणा और दान नही दी जाती वह यज्ञ सफल नही हो सकता।

दक्षिणा का फल

दक्षिणा और दान का द्रव्य रूप तो आप जानते ही हैं और जान भी गये। इस दक्षिणा दान का फल यह है कि यज्ञ कराने वाले विद्वानो और दीन कंगालो को लाभ तो तुरन्त इस लोक मे मिल जाता है और यजमान को कुछ इस लोक मे और सारा परलोक म मिलता है।

परन्तु आध्यात्मिक दक्षिणा का फल यजमान को तुरन्त इसी जन्म मे मिल जाता है और जन्मान्तर तक चला जाता है। परिभू (जामिन) और साधन बना रहता है।

आध्यात्मिक दक्षिणा क्या है

यजमान अपने ही कल्याण आत्मिकोन्नति के लिए ऐसे व्रत की प्रतिज्ञा करता है जिसके पालन करने से और उन्नत होने से समाज अथवा जाति देश का अपने आप भला होता रहता है। उन व्रतो का नाम यम है।

यम पांच है

पातंजली महाराज ने योग दर्शन मे लिखा है—

अहिंसा सत्य अस्तेय
ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यमा

अर्थात यम पांच हैं, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

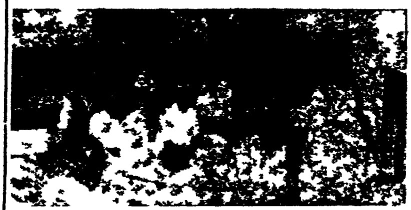
अहिंसा और सत्य का सर्वथा पालन तो देव, सन्यासी, ब्राह्मण और योगी कर सकते हैं क्योंकि सत्य का जानना कठिन है और अहिंसा का पालन कठिन है। साधारण लोगो के लिए तो केवल मात्र सत्य बोलना भी कठिन होता है। वास्तव मे तो बड-बड विद्वानो का भी सिर चकरा जाता है। राग द्वेष पक्ष पात से रहित फिर विवेकी मनुष्य ही जान सकता है कि किस समय मे क्या करना सत्य है।

महात्मा गांधी लिखते है कि अहिंसा का जानना तो सुगम है परन्तु पालन करना अति कठिन है हा सत्य और अहिंसा का कुछ कुछ ज्ञान भी जा सकता है और पाला भी जा सकता है, गृहस्थी और व्यावहारिक मनुष्य के लिए अपरिग्रह और पूर्ण ब्रह्मचर्य भी कठिन सा ही है। वानप्रस्थ अकेला हो, उस पर कोई उत्तरदायित्व न हो तो उसे बहुत सुगम है। शेष रह जाता है अस्तेय।—(क्रमशः)

आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर मे ऋषि निर्वाण उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला जी आर्या ने की।



दयानन्द आर्य माडल स्कूल बस्ती गुजां का नन्हा बालक विवेक शर्मा ने श्रीमती कमला आर्या जी को पुष्प माला पहनाई। इस नन्हे बच्चे को बहु प्यार करती हुई साथ मे समाज महामन्त्री श्री सुदेश कुमार जी ने सभा के महामन्त्री का हार्दिक स्वागत करते हुए।



आर्य समाज के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री जगदीश नारायण जी मान्य महामन्त्री का धन्यवाद करते हुए। साथ में सामने बैठ आर्य बन्धु दिखाई दे रहे हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अन्दर यह शक्ति पैदा करनी चाहिए कि हम किसी भी स्थिति मे रहे आर्य समाज की सेवा करते रहें। लुधियाना के आर्य समाजियो ने आर्य समाज के संगठन को सुदृढ बनाने की जो भूमिका निभाई है वह सराहनीय है और उसके लिए मैं लुधियाना के सब आर्य भाईयों बहनो को बधाई देता हू और यह आशा रखता हू कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को उन का सहयोग पहले की तरह ही मिलता रहेगा।

इस अवसर पर बहन कमला आर्या श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा, श्री आत्मानन्द जी, श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी, श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला, श्री रणबीर जी भाटिया, श्री सत्यभूषण वालिया जी, श्री मूलचन्द भारद्वाज, श्री अयोध्या प्रसाद जी, श्री रामरतन जोशी, श्री वेद वेणी प्रसाद जी। श्री धर्मपाल शहीन, श्री मदन मोहन अग्रवाल, श्री सत्यपाल जी अग्रवाल, आर्य समाज किदवई नगर के मन्त्री व प्रधान जी, सुमना जी मति, आर्य क्लब के प्रधान श्री प्रवीण स्याल, श्री महेन्द्रपाल स्याल, श्री प्रिंसीपल मनोहर लाल जी आनन्द, प्रो सुरेशचन्द्र जी प्रधान आर्य समाज लुधियाना पश्चिम।

इन सब ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री वीरेन्द्र जी को अपना-2 सहयोग और समर्थन देने की घोषणा की।

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

स्वास्थ्य सुधा—

सुबह जल्दी उठें लेकिन क्यों?

(गतांक से आगे)

तीसरा लाभ यह है कि सुबह जल्दी उठने से भूख भी समय पर, जल्दी और खुल कर लगती है। पाचन क्रिया अच्छी तरह काम करती है, खाया पिया ठीक से हजम होकर शरीर को बल देता है। निरोगता रहती है और बीमार पड़ने की सम्भावना क्षीण होती है प्रातः जल्दी भोजन करने वाले को शाम को भी जल्दी भूख लग जाती है। सोने से लगभग 3-4 घण्टे पूर्व भोजन कर लेना स्वास्थ्य रक्षा के लिए परमावश्यक सिद्धान्त है।

चौथा लाभ यह है कि सुबह जल्दी उठने वाले को रात को समय से नीद आ जाती है, गहरी नीद आती है और अनिद्रा रोग नही होता। आज अनिद्रा रोग व्यापक रूप से फैलता जा रहा है और हजारो लोग नीद की गोलियां खाए बिना सो भी नही पाते। देर रात तक निशाचरो की तरह जागना और सुबह देर तक सोये पड़े रहना आजकल फैशन हो गया है। यही अनिद्रा का प्रमुख कारण है। एक पुरानी कहावत है। 'जल्दी उठना, जल्दी सोना बुद्धिमान और स्वस्थ रहने का मार्ग है।' तो अब आप सोच लीजिए। बिना कुछ खर्च किए केवल सुबह उठकर खुली हवा मे घूमना, लम्बी व गहरी सांस लेकर शुद्ध प्राणवायु का सेवन कर फेफड़ों व रक्त को शुद्ध रखना और सूर्योदय होने तक नित्य कर्मों से निपट कर पूरे दिन काम काज के लिए चुस्त होकर उमंग स्फूर्ति और जोश के साथ तैयार हो जाना कितनी उपयोगी और लाभकारी बात होगी। दिन की शुरुआत अच्छे ढंग से होगी तो सारे दिन आप प्रसन्नता और उत्साह के साथ अपने कार्य कर सकेंगे। आपका सारा दिन अच्छा बीतेगा। तन-मन प्रसन्न और उत्साहपूर्ण रहने से आप सभी कार्यों, समस्याओं और परिस्थितियों का उचित ढंग से मुकाबला कर सकेंगे। मन मे गिरावट, तन मे थकान और उत्साह में कमी होने से जो कुछ हम कर सकते हैं सो कर नही पाते और फिर परेशानियों, विपरीत परिस्थितियों और असफलताओं से घिर जाते हैं।

नियम विपरीत आप 8,9 बजे तक सोए पड़े रहते हैं और जागकर भी सोने की, थोड़ी-थोड़ी झपकियां लेने की कोशिश करके कितना समय व्यर्थ नष्ट कर देते हैं इसका आपने कभी हिसाब लगाया? मान लीजिए आप 8 बजे तक सोया करते है जबकि आपको 5 बजे उठना चाहिए तो आप प्रतिदिन 3 घण्टे व्यर्थ नष्ट कर रहे हैं।

इस प्रकार एक वर्ष के 365 दिनो में आपने 1095 घण्टे यानी 45 दिन 15 घण्टे अतिरिक्त सोकर व्यर्थ ही गुजार दिए। अब जरा बुरा न मानियेगा, आप 75 वर्ष की आयु तक ही यदि जीवित रहे तो जरा हिसाब लगाइये कि तीन घण्टे रोज के हिसाब से कितने घण्टे आपने व्यर्थ खो दिए। आपके बाल्यकाल के 15 वर्ष यह समझ कर छोड़ दीजिए कि आप बच्चे थे बाकी रहे 60 वर्ष तो 3 घण्टे रोज के हिसाब से कुल 2731 दिन 12 घण्टे अर्थात् 7 वर्ष सवा सात माह के लगभग आप व्यर्थ ही सोये रहे। आप वैसे सोचें तो 8 घण्टे रोज सोने वाला 75 वर्ष मे से 25 वर्ष 4 माह 5दिन तो सोकर ही गुजार देता है।

नही नही, समय सबसे मूल्यवान वस्तु है जो एक बार निकल जाने पर सदैव के लिए खो जाता है। गया वक्त फिर हाथ नहीं आता। अतः आप प्रतिदिन समय की इस प्रकार निर्दयतापूर्वक हत्या मत कीजिए और इस समय का अच्छे से अच्छा उपयोग कीजिए। आप छात्र हो, शिक्षक हो, डाक्टर या वकील हो, व्यापारी या कर्मचारी हो, जो भी हो अपनी-अपनी कार्य प्रणाली के अनुसार इस समय को भली प्रकार से उपयोग मे ला सकते हैं।

एक बात पर जरा गम्भीरता से विचार कीजिए। जैसे हमारा जन्म होता है वैसे सूर्योदय से दिन का जन्म होता है। हमारा जन्म होते हमने नही देखा और काफी समय यू ही शैशवकाल के अबोधपन मे गुजार दिया। 9 माह मा के पेट मे गुजारे, इस सबका यह परिणाम हुआ कि हमे जन्म स पहले के हालात का कोई होश, कोई ज्ञान नही है। काश! हमारी जानकारी मे, पूरे होशोहवास मे हमारा जन्म होता और हम जाग्रत अवस्था मे जन्म लेते तो हमे पिछले जीवन का भी पता रहता कि हम पहले क्या थे। हमारा जन्म और देहान्त वह सन्धिकाल है जहां हम एक शरीर, एक माता, एक जीवन से दूसरे मे प्रवेश करते हैं। और चूंकि यह सन्धिकाल और एक शरीर से दूसरे शरीर में, एक जीवन से दूसरे जीवन मे प्रवेश करते हैं। और चूंकि यह सन्धिकाल और एक शरीर से दूसरे शरीर में, एक जीवन से दूसरे जीवन में प्रवेश करते समय का क्रिया-कलाप हमारी जानकारी, जाग्रत अवस्था और चैतन्यता मे नही होता इसलिए हमे पहले और बाद का कुछ पता नहीं चल पाता कि आए कहां से और कहां को चल दिए।

इसी प्रकार जैसे शैशवकाल व किशोरावस्था पूरे जीवन की शुरुआत होती है। उसी तरह सूर्योदय का समय पूरे दिन की शुरुआत होती है। इस दिन की शुरुआत को जाग्रत अवस्था मे होशपूर्वक कीजिए। सूर्योदय होने से पहले ही जाग जाइये और दिन को अपने सामने पैदा होते देखिए और अपने ढंग से दिन को शुरू कीजिए। उस वक्त सोये पड़े रहकर आप वह सुअवसर खो देते हैं जो आपको प्रतिदिन नए दिन का स्वागत करने के लिए प्राप्त होता है। यू सारे दिन की कार्य व्यवस्था आपके हाथ मे हो सकती थी ऐसा न करके तो आप अपने अधिकार और नियन्त्रण से वंचित हो जाते हैं फिर जैसा होता चल जाता है वैसा करने को बाध्य होकर करते रहते हैं।

दिन भर की दौड़-धूप और थकान से छुटकारा पा कर रात को गहरी नीद लेने से हमारा शरीर फिर से तरोताजा व चुस्त होकर नए दिन के प्रारम्भ मे फिर कार्य क्षेत्र मे कूदने के लिए तत्पर हो जाता है इस चुस्ती दुरुस्ती को कायम रखने के लिए सूर्योदय से पहले उठना निहायत जरूरी है ताकि पूरे दिन आप स्फूर्ति और उमंग के साथ कार्य करते रह सके। सूर्योदय के बाद देर तक सोये रहने वाले स्वयं अपने अनुभव से जानते होंगे कि वे आलस्य के कारण बिस्तर पर पड़े जरूर रहते हो पर उठने पर न तो कोई ताजगी का अनुभव होता होगा न स्फूर्ति का। मुंह का जायका खराब, सिर भारी और हाथ पैरो मे टूटन, पेट की स्थिति खराब, शौच मे अनियमितता जैसे हालात देर तक सोने से पैदा होते हैं और होंगे। हमारे पूरे जीवन भर के स्वास्थ्य और शरीर पर इसका धीरे-2 बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

तो संक्षेप मे प्रस्तुत इस विवरण को पढ़कर आप सुबह सूर्योदय से पहले उठने की उपयोगिता और महत्ता को समझने की कोशिश कीजिए और दृढ़ संकल्प करके तुरन्त सुबह जल्दी उठना शुरू कर दीजिए। कुछ दिन तक पुरानी आदत पड़ी होने से सुबह आपको जल्दी उठने मे तकलीफ होगी पर धीरे-धीरे जल्दी उठने की आदत पड़ जाएगी और एक बार आपको जल्दी उठने के आनन्द का स्वाद मिला कि फिर आप कभी बिस्तर मे पड़े रहना पसन्द नही करेंगे।

एक गुर की बात अन्त मे और कह दूं। सुबह जैसे ही नींद खुले बिना कुछ सोचे विचारे फौरन रजाई फेंक कर पलंग से कूद जाइए। आप आश्चर्य करेंगे कि 2 4 मिनट मे ही जैसे ही आपकी खुमारी हटी कि आपका आलस्य और सोने का मूड ही खत्म हो जाएगा। सारी गड़बड़ी बिस्तर मे दुबके हुए रह कर उठू न उठू पर विचार करते रहने से होती है।

(निरोगधाम से साभार)

●

अमर स्वामी जी महाराज की अंतिम इच्छा पूरी करें

सभी आर्य सज्जनो को यह तो विदित ही है कि पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज शास्त्रार्थ केसरी, 4 सितम्बर सन् 1987 को साय 5 बजे स्वर्गवास हो गए हैं। स्वामी जी महाराज की मरते दम तक यही इच्छा रही कि "किसी भी तरह हमारे पूज्य शास्त्रार्थ कर्त्ताओ के शास्त्रार्थ जो भी उपलब्ध हो जावें उन का प्रकाशन हो जाना चाहिए।" इनके प्रकाशन का भार वह मेरे ऊपर छोड़ गये हैं एवं जो भी शास्त्रार्थ सम्बन्धी सामग्री उनके पास विपुल मात्रा मे थी वह भी प्रकाशनार्थ मुझे दे गये हैं, कुछ मुख्य 2 शास्त्रार्थों की सूची भी बनवा गये थे कि तलाश करो इनमे से बहुत से शास्त्रार्थ उर्दू आदि भाषाओ मे छपे है, वह अवश्य मिल जाएंगे।

"मेरा सभी आर्य भाइयो से तथा सभा के अधिकारियो से, व अन्य जिम्मेदार व्यक्तियो से अनुरोध है कि जिसके पास जो भी शास्त्रार्थ सम्बन्धी सामग्री उपलब्ध है, सूचित करें, मैं उस सामग्री को उन्ही सज्जन के नाम का उल्लेख करते हुए प्रकाशित करा दूंगा।"

प्राचीन शास्त्रार्थों के दो भाग तो छप चुके हैं, तीसरा भाग शीघ्र ही जनता के सामने आने वाला है, इन तीनो भागो मे लगभग "एक सौ शास्त्रार्थ" आ जायेंगे, शेष सामग्री चौथे भाग मे आयेगी। "हमारा उद्देश्य इससे धन कमाना नही है, अपितु पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छानुसार इस लुप्त सामग्री को प्रकाश मे लाने का है।" मुझे विश्वास है कि सभी आर्यजन इस ओर ध्यान देकर इस कार्य में सहयोग प्रदान करेंगे एवं पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छा को पूरा करेंगे।

—लाजपतराय अग्रवाल

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

(कार्यालय) 1058, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर की बैठक सम्पन्न अनेक महत्वपूर्ण निर्णय

स्थानीय दयानन्द कालेज, डी ए वी स्कूल, जियालाल संस्थान तथा अन्य दस विभिन्न शिक्षण संस्थाओ की प्रबन्धकारिणी संस्था आर्य समाज शिक्षा सभा की कार्यकारिणी की एक विशेष बैठक रविवार 1 नवम्बर 1987 ई को सभा के प्रधान न्यायमूर्ति श्री बी पी बेरी की अध्यक्षता मे दयानन्द कालेज सभा-गार मे सम्पन्न हुई।

आर्य समाज शिक्षा सभा की प्रबन्ध समिति ने तीन लाख के नवीन भवन निर्माण एवं दयानन्द कालेज मे अजमेर विश्वविद्यालय को स्थान देने के प्रस्तावो की स्वीकृति प्रदान की।

इस बैठक मे डी ए वी मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली के अध्यक्ष प्रो व्यास जी, श्री दरबारी लाल जी व श्री रामनाथ सहगल तथा बम्बई के कैप्टन देवरत्न आर्य ने भी भाग लिया।

दयानन्द कालेज ट्रस्ट की स्थापना

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर के अन्तर्गत संचालित दयानन्द कालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाओ की अचल सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु "दयानन्द कालेज ट्रस्ट" की स्थापना की गई है। ट्रस्ट के सात ट्रस्टी सर्व सम्मति से नाम-जद किए गए है। जिनमे न्यायमूर्ति श्री बी पी बेरी, डी ए वी मैनेजिंग कमेटी दिल्ली के प्रधान प्रो वेद व्यास व मन्त्री श्री दरबारी लाल, श्री दत्तात्रेय वाब्ले, श्री गंगासिंह, कैप्टन देवरत्न आर्य (बम्बई) श्री मेजर प्रभाकर वाब्ले जी के नाम शामिल है।

रविवार 1 नवम्बर को हुई ट्रस्ट की प्रथम बैठक मे आर्य समाज शिक्षा सभा की सम्पत्ति की सूची प्रस्तुत की गई। जिसमे लगभग चार करोड के छोटे-मोटे भवन है। बैठक मे इन सभी का रख-रखाव, नक्शा व रजिस्टर सुव्यवस्थित रखने का निश्चय किया गया।

—हरिशचन्द शर्मा
संगठन सचिव अजमेर

आर्य समाज वैक्फील्डगंज लुधियाना का वार्षिक चुनाव

दिनांक 25-10-87 रविवार को 11 बजे आयोजित साधारण सभा की बैठक मे आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना का 1987 88 वर्ष के लिए निर्वाचन हुआ। जिसमे सर्व सम्मति से श्री चाननराम जी प्रधान निर्वाचित हुए। प्रधान जी ने प्रदत्त अधिकारो का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित पदाधिकारियो तथा अन्तरंग सदस्यो को मनोनीत किया :—

प्रधान—श्री चाननराम
उप प्रधान—श्रीमती सावित्री देवी
,, —श्रीमती कौशल्या देवी
,, —श्रीमती दर्शना देवी
मन्त्री—श्री हरीशचन्द्र सूद
उप-मन्त्री—श्रीमती जानकी देवी
प्रचार मन्त्री—श्री हर्ष कुमार सूद
कोषाध्यक्ष—श्री मुलखराज
सहायक—श्री रमेश चन्द्र सूद
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री रामदयाल
अन्तरंग सदस्य :—

सर्व श्रीमती लीला देवी, शान्ती देवी दर्शना देवी, आशा रानी, कमलेश सूद, सत्या देवी, विनोद गांधी।

—हरीश चन्द्र सूद-मन्त्री

आर्य समाज पठानकोट का सराहनीय कार्य

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट मे गत रविवार स्कूलो के असहाय विद्यार्थियो तथा कुछ निर्धन एव वृद्ध लोगो को स्वैटर शाल तथा कम्बल बांटे गये। साथ जूते व चप्पलें भी दी गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री गिरधारीलाल गुप्ता ने की। इस अवसर पर श्री लाल-चन्द प्रधान आर्य समाज मेन बाजार ने सभी दानी महानुभावो का धन्यवाद किया इस अवसर पर आर्य समाज के दोनो हाल खचाखच भरे हुए थे।

—प्रो स्वतन्त्र कुमार-मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 34. 14 मार्गशीर्ष सम्वत् 2044 तदानुसार 29 नवम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

वेद में शिवसंकल्प मन्त्र

लेखक—श्री पं. धर्मदेव जी 'मनीषी' व्याकरणाचार्य:

यजुर्वेद मे चौतीसवें अध्याय के आरम्भ में छः मन्त्र मन के शिवसंकल्प विषय में वर्णन करते हैं। रात्रि शयन समय मे उन मन्त्रो का सब लोग चिन्तन करें तो अति उत्तम हो। यहा पर विशेष रूप से विद्यार्थियो के लिये मन्त्र, अर्थ भावार्थ और मन्त्र से क्या शिक्षा प्राप्त होती है, यह प्रस्तुत किया जाता है।

ओ३म्—यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

अर्थ—हे जगदीश्वर वा राजन् आपकी कृपा से (यत्) जो (दैवम्)आत्मा मे रहने वा जीवात्मा का साधन (दूर-गमम) दूर जाने, मनुष्य को दूर तक ले जाने वा अनेक पदार्थों का ग्रहण करने वाला (ज्योतिषाम्) शब्द आदि विषयो के प्रकाशक श्रोत्र आदि इन्द्रियो को (ज्योतिः) प्रवृत्त करने हारा (एकम्)एक (जाग्रतः) जागृत अवस्था के (दूरम्) दूर-दूर (उत् ऐति) भागता है (उ) और (तत्) वह (मे) मेरा (मनः) संकल्प विकल्पात्मक मन(शिवसंकल्पम्) कल्याणकारी धर्म विषयक इच्छा वाला (अस्तु) हो।

भावार्थ—जो मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा का सेवन और विद्वानो का संग करके अनेकविध सामर्थ्ययुक्त मन को शुद्ध करते हैं जो जागृतावस्था मे विस्तृत व्यवहार वाला वही मन सुषुप्ति अवस्था मे शान्त होता है। जो वेग वाले पदार्थों मे अतिवेगवान् ज्ञान के साधन होने से इन्द्रियो के प्रवर्तक मन को वश मे करते हैं वे अशुभ व्यवहार को छोड शुभ व्यवहार मे मन को प्रवृत्त कर सकते हैं।

शिक्षा—रावण के पुत्र मेघनाद का नाम सब ने सुना होगा। उसे 'मेघनाद' इसलिए कहते थे क्योंकि जब वह बोलता था, बादल की गम्भीर गर्जन की तरह आवाज बाण पड़ती थी। वीर्यवान् ब्रह्मचारी और संयम से रहने वाले पुरुषो की आवाज ऐसी ही गम्भीर निकलती है। बोलता क्या है। मानो घन-गर्जना होती है। मेघनाद को 'इन्द्रजित्' के नाम से पुकारते थे। इन्द्रियां मनके पीछे चलती हैं। जिधर मन उनको नचाना चाहता है, वे उधर ही नाचने लग जाती हैं। इससे मन इन्द्रियो का स्वामी इन्द्र हुआ। जिसने इस मनरूप 'इन्द्र' पर विजय पा ली वह 'इन्द्रजित्' कहलाया। मेघनाद का मन पर पूरा काबू था, इसी से वह जितेन्द्रिय भी था अपने समय का लंका मे अद्वितीय नौजवान था। युद्ध मे 'इन्द्रजित्' जैसे वीर और पराक्रमी को पछाडना साधारण काम न था। लक्ष्मण जैसे संयमी और यती ही उस पर विजय पा सकते थे। लक्ष्मण ने वन-जीवन के 14 वर्ष विशेष संयम के साथ बिताये थे। स्त्री मात्र को मातृ दृष्टि से देखा। सीता जी केवल चरणो के ही आभूषण पहचान सके, अन्य अंगो के नही। इसी से वे 'लक्ष्मण-यती' के नाम से प्रसिद्ध हुए और इसी से वे मेघनाद का प्राणान्त करने मे भी सफल हुए। 'मेघनाद' का पराभव इसलिए हुआ कि वह 'इन्द्रजित्' होता हुआ भी शिवसंकल्प मन न था। तुम शिवसंकल्प वाले 'इन्द्रजित्' बनो।

ओ३म्—येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

अर्थ—हे परमेश्वर वा विद्वान्-जन आपके संग से (येन) जिस (अपसः) सदा कर्म धर्मनिष्ठ (मनीषिणः) मन का दमन करने वाले (धीराः) ध्यान करने वाले बुद्धिमान लोग (यज्ञे) अग्निहोत्रादि वा धर्म संयुक्त व्यवहार वा याग-यज्ञ में और (विदथेषु) विज्ञान सम्बन्धी और युद्धादि व्यवहारो में (कर्माणि) अत्यन्त इष्ट कर्मों को (कृण्वन्ति) करते हैं (यत्) जो (अपूर्वम्) सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव वाला (प्रजानाम्) प्राणिमात्र के (अन्तः) हृदय मे (यक्षम्) पूजनीय वा संगत एकीभूत हो रहा है (तत्) वह (मे) मेरा (मनः) मनन विचार करना रूप मन (शिवसंकल्पम) धर्मेष्ठ (अस्तु) होवे।

भावार्थ—मनुष्यो को चाहिए कि परमेश्वर की उपासना सुन्दर विचार विद्या और सत्संग से अपने अन्तःकरण को अधर्माचरण से निवृत्त कर धर्म के आचरण मे प्रवृत्त करें।

शिक्षा—मननशील, विचारशील मनुष्यो को जिन्होने अपने मन पर ईशत्व प्रभुत्व अधिकार जमा लिया हो 'मनीषी' कहते हैं—यदि तुमने अपने बाल्यकाल ही से 'मनीषी' बनने का प्रयत्न, अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया तो धीरे-धीरे तुम्हारा शारीरिक-बल, मानसिक-बल और आत्मिक बल भी बढने लगेगा और तुम्हारी प्रवृत्ति, अभिरुचि, यज्ञ कर्मों मे पुरुषार्थ के कामो मे दृढ हो जावेगी, आपत्तियो को सिर आते देख तुम अधीर न हो उठोगे। (प्रजाना अन्तः) लोगो के बीच मे तुम आश्चर्य उत्पन्न करने वाले, अद्वितीय अपूर्व(यक्षम्)पूज्य बन जाओगे। जहा जा निकलोगे, लोग तुम्हारे लिये नमन करेंगे, सिर झुकाएगे।

ओ३म्—यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

अर्थ—हे जगदीश्वर वा परमयोगिन् विद्वान् आपके जताने से (यत्) जो (प्रज्ञानम्) विशेषकर ज्ञान का उत्पादक बुद्धि रूप (उत) और भी (चेतः) स्मृति का साधन (धृतिः) धैर्य स्वरूप (च)और लज्जादि कर्मों का हेतु (यत्) जो(प्रजासु) मनुष्यों के (अन्तः) अन्तःकरण का साक्षी होने से (अमृतम्) नाश रहित (ज्योतिः) प्रकाशक रूप (यस्मात्) जिससे (ऋते) बिना (किम्, चन) कोई भी (कर्म) काम (न क्रियते) नही किया जाता (तत्) वह (मे) मुझ जीवात्मा का (मनः) सब कर्मों का साधन रूप मन (शिवसंकल्पम्) कल्याणकारी परमात्मा मे इच्छा रखने वाला (अस्तु) हो।

भावार्थ—हे मनुष्यो! जो अन्तःकरण, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार रूप वृत्ति वाला होने से चार प्रकार से भीतर प्रकाश करने वाला प्राणियो के सब कर्मों का साधक अविनाशी मन है उसको न्याय और सत्य आचरण मे प्रवृत्त कर पक्षपात अन्याय और अधर्माचरण से तुम लोग निवृत्त करो।

शिक्षा—यह वेद मन्त्र मन की शक्तियो का वर्णन कर रहा है। उनका राष्ट्रीय स्वतन्त्रता से बडा गहरा सम्बन्ध है। यह ठीक ही कहा है—"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धिस्तु कुतो बलम् ?" जिसमे बुद्धि बल है वही सच्चा बलवान् है, बुद्धिहीन मे बल कहा? कोई समय था जब शारीरिक बल ही प्रधान समझा जाता था। किन्तु जब से बन्दूक और मशीनगन बुद्धि ने बना दी तब से शरीर बल निकम्मा पड गया। अब जबकि विज्ञान ने आकाशयान जहरीली गैसें और अणु बम्ब खडे किए थे, तो तलवार, बन्दूक, मशीनगन, किले सब बेकार हो गये हैं। आकाशयानो से बिजली की लहरो के द्वारा ऐसी-ऐसी जहरीली गैसे छोडी जा सकती है, जिन से मिनटो मे शहर तबाह हो जावेंगे। युद्ध मे जिसकी आग सभ्य कहलाने वाले जगत मे प्रज्वलित हो रही है। ऐसी ही भयकर जहरीली गैसे अन्तिम प्रयोग मे लाई जावेगी। जिस जाति का विज्ञान बढा-चढा होगा वही जाति विजयी होगी। विश्व मे सदा मस्तिष्क ने राज्य किया और वही हमेशा हकूमत करेगा।

(क्रमशः)

क्या आर्य समाज महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग से हटता जा रहा है

लेखक—श्री किशन स्वरूप जी गोयल—दिल्ली

लेखक के विचारों से पूर्णतया सहमत न होते हुए भी इस लेख को प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि आर्य जगत् इस ज्वलन्त प्रश्न पर विचार कर सके। —सम्पादक

आर्य समाज जैसा शक्तिशाली संगठन जिस ने स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रणिक भूमिका निभाई, आज क्यों मृत प्राय पड़ा है। आर्य समाज के अधिकांश नेताओं की राजनैतिक बद्धता के कारण इस संगठन के कंकाल बनने का प्रमाण है। आर्य समाज द्वारा आरम्भ किया गया शिक्षा प्रसार आन्दोलन आज कुछ हाथों में सिमट कर व्यवसाय बन गया है। गुरुकुल आश्रम व अन्य सम्पत्तियां कुछ लोगों की निजी जागीरें बन गई हैं। आज आवश्यकता है आर्य समाज की धमनियों में नए रक्त प्रवाह की ताकि वह धर्म निरपेक्षता के शिकार हो रहे देश के हिन्दुओं को केवल सामाजिक ही नहीं, राजनैतिक मंच भी प्रदान कर सके और हिन्दू आर्य का नेतृत्व भी।

आज आर्य समाज में एक नई जान फूंकने की आवश्यकता महसूस होने लगी है। क्योंकि वह आर्य समाज के सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग से हटती जा रही है। महर्षि ने अस्पृश्यता निवारण, गोसंरक्षण, मद्यनिषेध, मांस भक्षण, तथा धूम्रपान आदि नशीली चीजों के प्रयोग का विरोध किया था। और जीवन में नैतिकता, निष्ठा का प्रतिपादन, स्वधर्म और स्वराष्ट्र रक्षा के सिद्धान्तों को अपनाने का मार्ग दिखलाया था और उस पर चलने का ही आह्वान किया था।

किन्तु आज ऐसा आभास हो रहा है कि आर्य समाज के लोग इस ओर से उदासीन हो कर अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति तथा कुर्सी और सत्ता प्राप्ति की भूख मिटाने के लिए विभिन्न विचार धाराओं वाले राजनीतिक दलों में शामिल हो गए हैं और परस्पर बटते जा रहे हैं, जबकि उन सभी की विचारधारा एक ही है अधिकांश आर्य समाजी कांग्रेस में शामिल हैं। इसलिए कि उन्हें भी सत्ता भागीदारी मिल जाए। शायद वे यह भूल गए हैं कि कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज ह्यूम ने की थी और आज यह कांग्रेस उस मुस्लिम लीग से हाथ मिलाए हुए है जिस ने इस देश का बटवारा करा कर लाखों हिन्दुओं का नरसंहार कराया था। आज कांग्रेस ने उसी मुस्लिम लीग से गठबंधन कर केरल में उसे सत्ता में भागीदार बनाया। यही कारण है कि अधिकांश आर्य समाजी जो कांग्रेस में हैं, वे आर्य समाज के हितों की उपेक्षा होते हुए भी मूक दर्शक बने रहते हैं। क्योंकि उस का विरोध करना उनके दल कांग्रेस की नीतियों के खिलाफ है और वे उसकी नीतियों से अपनी सत्ता की भूख मिटाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आर्य समाज के जो लोग राजनीति से बाहिर हैं वे देश तथा समाज हितों के लिए अपनी आवाज तो उठाते हैं किन्तु उन की आवाज को जो सरकार या संसद अथवा विधान सभा के सदस्य हैं। उन का समर्थन नहीं मिलता। यही कारण है कि उन की कोई बात नहीं सुनी जाती, आर्य समाज के नेताओं ने इस कारण को जानने की आज तक चेष्टा नहीं की है। इस का यही एक मुख्य कारण है कि एक ही आर्य समाज की विचारधारा के लोग विभिन्न विचारधाराओं के दलों में शामिल हो कर उन की नीतियों से प्रतिबद्ध हो गए हैं। इसी कारण वे उन दलों में जा कर अपने मूल आर्य समाज के सिद्धान्तों को या तो भूल गए हैं या फिर वे अपने स्वार्थ के कारण उन का प्रतिपादन नहीं करते। इस का यह स्पष्ट अर्थ है कि आर्य समाजी आज तक उस निर्भीक सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती जिस अकेले ने ही जीवन भर समस्त धर्म को जगा कर इस देश और समाज की रक्षा की थी। उस के मार्ग से भटकते जा रहे हैं। यदि यह कहा जाए कि भटक चुके हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ऐसा भी नहीं कह सकते कि आर्य समाज ने कुछ कार्य नहीं किया है। आर्य समाज ने देश की आजादी के लिए विशेष भूमिका निभाई बलिदान दिए, शिक्षा का प्रसार किया, शुद्धि का कार्य किया गोरक्षा आन्दोलन चलाया, हिन्दी आन्दोलन चलाया तथा हैदराबाद सत्याग्रह किया। किन्तु इतना होने पर भी आर्य समाज को अपने इन कामों में विशेष सफलता नहीं मिली। आज भी हमारे देश की शिक्षा नीति से संस्कृत जो हमारी मूल भाषा है, जिस में हमारे जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कार होते हैं। हमारे सभी प्राचीन ग्रन्थ जो हमें हमारी संस्कृति का बोध कराते हैं। वे सभी संस्कृत में ही है। उस का सरकार ने पूरी तरह बहिष्कार कर दिया है। उस के लिए आज आर्य समाजी चुप बैठे हैं। बस केवल एक समिति का गठन कर ही उन्होंने अपने काम की इति श्री मान ली है। जब कि इस के लिए आर्य समाज को एक देश व्यापी आन्दोलन चलाना चाहिए किन्तु उस के नेता आज इस विषय पर मौन साधे बैठे हैं।

इस सब का एक ही मुख्य कारण है कि आर्य समाज को आज कोई राजनीतिक अपनी निजी पहचान नहीं है या यों कह लीजिए कि सभी आर्य समाज की विचारधारा वाले लोगों का अपना कोई राजनीतिक मंच नहीं। जिस से वे अपनी आवाज उठा कर सरकार को अपनी बात मनवाने के लिए बाध्य कर सकें। इस बात पर आर्य समाज के विद्वानों ने कभी गम्भीरता से विचार ही नहीं किया है। इस के बिना यह लोग देश, समाज तथा आर्य विचार धारा की रक्षा करने की जो बातें करते हैं। वे केवल नक्कारखाने में तूती की आवाज के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

बड़े ही दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे देश में लगभग दो प्रतिशत सिख पन्थ की अपनी अकाली दल के रूप में राजनीतिक पहचान है। मुसलमानों की मुस्लिम लीग के रूप में राजनीतिक पहचान है किन्तु 75 80 प्रतिशत हिन्दू आर्य की अपनी कोई राजनीतिक पहचान नहीं है। आज तो कुछ लोग आर्य समाज को भी हिन्दू से अलग करने की बात करने लगे हैं। जबकि हिन्दू और आर्य एक ही हैं। यही कारण है कि विभिन्न राजनीतिक दलों में शामिल आर्य समाजी अपने हितों की अवहेलना होते हुए भी कुछ नहीं बोलते। जबकि मुसलमान अपने हितों के लिए अपने दलों की नीतिबद्धता की चिन्ता किए बिना एक मंच पर एकत्र हो कर अपनी आवाज उठाते हैं। उसका शाहबानो का केस एक ज्वलन्त उदाहरण है कि उस समय सभी दलों के मुसलमान एक ही मंच से उच्चतम न्यायालय के निर्णय का विरोध कर रहे थे और उन्होंने अपनी बात सरकार से मनवा कर छोड़ी, किसी भी आर्य समाजी ने संसद या विधान सभा में कभी भी इस बात के खिलाफ आवाज नहीं उठाई कि इस देश में करोड़ों रुपया ईसाई देशों से यहां के हिन्दुओं का परिवर्तन करने के लिए और अरब देशों से मुसलमानों को हिन्दुओं का मत परिवर्तन करने के लिए जो धन आता है उस पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। साथ ही बलात या प्रलोभन द्वारा मत परिवर्तन को कानूनी अपराध माना जाए। जिस प्रकार नेपाल में इस प्रकार मत परिवर्तन करने वाले को 6 साल का कठोर कारावास देने के दण्ड का प्रावधान है। इस का यही कारण है कि ये आर्य समाजी और राजनीति में शामिल हो कर धर्मनिरपेक्षता का चोला पहन चुके हैं ताकि उन की कुर्सी बनी रहे उन्हें सिवाय अपनी कुर्सी या सत्ता की चिन्ता है देश और समाज की उनकी चिन्ता नहीं है।

आज देश तथा हिन्दू आर्य समाज को आवश्यकता है कि उस का नेतृत्व गम्भीरता से इस पर विचार करे कि क्या वह ईमानदारी से महर्षि के बताए मार्ग पर चल रहा है। क्या वह महर्षि के स्वप्न को साकार करने के लिए प्रयत्नशील है। अब चाहिए तो यह कि जितने आर्य समाजी विभिन्न राजनीतिक दलों में शामिल हैं वे उन्हें तलाक देकर बाहर आ जाएं। और अपनी अलग एक राजनीतिक दल के रूप में पहचान स्थापित कर देश तथा समाज की रक्षा हेतु संगठित हो जाएं और अपने हितों को बचाते हुए महर्षि के स्वप्न को साकार करने के लिए कटिबद्ध हो जाए। आर्य समाज एक विशाल शक्तिशाली सामाजिक संगठन है उस के पास कार्यकर्ता और सभी साधन उपलब्ध हैं। यदि वह इस ओर पहल करे तो अन्य भी हिन्दू संगठन उसके साथ जुड़ जाएं जिस से कि देश तथा हिन्दू आर्य समाज को बचाया जा सके। आज जो हिन्दू निष्ठ व्यक्ति बाहर नहीं आते उस का यही कारण है कि उन्हें कोई हिन्दू हितों की रक्षा करने वाला राजनीतिक दल दिखाई नहीं देता। यदि अब भी आर्य समाज का नेतृत्व इस पर गम्भीरता से विचार नहीं करेगा और अपनी राजनीतिक पहचान स्थापित कर आर्य हिन्दू समाज को नेतृत्व प्रदान नहीं करेगा तो न यह देश बचेगा न आर्य समाज ही बच सकेगा। आज देश के बाहर और भीतर तथा सरकार की गलत मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण देश में अलगाववादी तत्व इस देश और समाज को पूरी तरह समाप्त कर इसे पुन दूसरे पाकिस्तान या मुस्लिम इण्डिया बनाने के लिए सक्रिय हो चुके हैं। उधर दूसरी ओर ईसाई मिशनरियां बिहार के संथाल परगने में स्थित विश्व की प्राचीन सभ्यता संस्कृति जिसे इतिहास में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सभ्यता के नाम से जाना जाता है उसे पूरी तरह से समाप्त करने पर तुली हुई है। वे सारे संथाल परगना को ईसाई बना कर इस सभ्यता को ही सदा के लिए समाप्त कर देना चाहते हैं। किन्तु हमारे यह महर्षि के अनुयायी चुप बैठे हैं। इस के विरुद्ध कोई आवाज तक उठाने को तयार नहीं है।

आज आवश्यकता है कि आर्य समाज एक राजनीतिक दल की स्थापना कर उसे हिन्दू निष्ठ दल बना कर नेतृत्व प्रदान करे। इस लेख में बार बार हिन्दू शब्द का प्रयोग करने का तात्पर्य मात्र

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय—

पंजाब की भाषा और आर्य समाज

पंजाब के माहौल को बेहतर बनाने के लिए आजकल कई पग उठाए जा रहे हैं। सरकार अपनी ओर से जो कुछ कर सकती है कर रही है। कई राजनीतिक पार्टिया भी इसमे अपना योगदान दे रही हैं। अकालियों मे भी अब एक वर्ग ऐसा पैदा हो गया है जो चाहता है कि पजाब के हालात किसी तरह सामान्य बनाए जाए। इन सब कोशिशो का परिणाम क्या निकलता है इसके बारे मे अभी कुछ कहना कठिन है लेकिन यह एक वास्तविकता है कि पजाब की जनता इस समय अत्यन्त परेशान है और यह चाहती है कि किसी न किसी तरह जो कटुता आज पैदा हो गई है वह दूर की जाए।

वर्तमान परिस्थितियो के लिए कई प्रकार के आपसी मतभेद जिम्मेदार हैं। उनमे भाषा का मामला भी एक है। चू कि अभी तक इसे हल करने की कोई गम्भीरता से कोशिश नहीं की गई। इसलिए इसके कारण भी कई प्रकार की गलतफहमिया पैदा हुई हैं। और कई बार आर्य समाज पर यह आरोप लगाया गया है कि यह पजाबी विरोधी है। इसलिए यह हिन्दुओ को पजाबी भाषा को अपनाने नहीं देता। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पदाधिकारियों ने इस सारी वस्तु स्थिति पर विचार करने के बाद यह निर्णय किया है कि भाषा के आधार पर जो कटुता पैदा हो रही है उसे समाप्त करने का प्रयास किया जाए। अतः इस सम्बन्ध मे 15 नवम्बर को आर्य कालेज लुधियाना मे हिन्दी के साहित्यकारो को सम्मानित करने के लिए एक समारोह किया गया। इस के दो उद्देश्य थे। एक यह कि पजाब के हिन्दी साहित्यकारो को सम्मानित किया जाए। पजाब सरकार उनकी ओर वह ध्यान नहीं देती जो उसे देना चाहिए। इसका यह परिणाम है कि पजाब मे हिन्दी साहित्यकारो को वह प्रोत्साहन नहीं मिल रहा जो मिलना चाहिए और इस कारण कुछ साहित्यकारो मे हीन भावना पैदा हो रही है। इसे दूर करने के लिए और उनको प्रोत्साहन देने के लिए यह समारोह किया गया इस मे चार हिन्दी साहित्यकारो को सम्मानित किया गया। लुधियाना के गवर्नमैंट कालेज के प्रोफैसर श्री सुरेशचन्द्र वात्स्यायन, पटियाला विश्वविद्यालय के डा चन्द्रशेखर और पटियाला गवर्नमैंट कालेज के डा हरमहेन्द्रसिंह मान और लुधियाना गवर्नमैंट कालेज फार वीमेन की श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव। यह पहला अवसर है जब आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने यह पग उठाया है।

दूसरा उद्देश्य इस समारोह का यह भी था कि भाषा समस्या के बारे मे आर्य समाज के विरुद्ध जो आरोप लगाए जाते हैं उनका उत्तर दिया जाए। अत मैंने वहा स्पष्ट शब्दो मे यह कह दिया आर्य समाज पजाबी का विरुद्ध नहीं है। पजाबी पजाब की राजभाषा है। इसलिए कोई पजाबी इसका विरोध नहीं कर सकता। हमारे बच्चे स्कूलो मे पजाबी पढ़ते हैं। इसलिए यह आरोप सरासर गलत है कि आर्य समाज पजाबी विरोधी है। हमे जो शिकायत है वह यह कि पजाबी के अतिरिक्त अंग्रेजी को अधिमान दिया जाता है। यदि पजाबी पजाब की राजभाषा है तो हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा भी है और राजभाषा भी है। यदि पजाब मे दो भाषाए चलनी हैं तो पजाबी और अंग्रेजी क्यों चले पजाबी और हिन्दी क्यो न चले। जैसे पजाब मे पजाबी के बिना काम नहीं चल सकता। इसी तरह पजाब से बाहर अंग्रेजी के बिना तो काम चल सकता है हिन्दी के बिना नहीं। इसलिए हमारी यह मांग है कि पजाब मे पजाबी के साथ हिन्दी भी चलनी चाहिए। यदि सरकार यह स्वीकार कर ले तो फिर पजाब मे भाषा की कोई समस्या नहीं रहती।

हिन्दी और पजाबी इन दोनों के बीच एक और कड़ी भी है जो कभी टूट नहीं सकती और न जो कभी इन दोनों को एक दूसरे से अलग होने देगी। वह है श्री गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज। उनकी मातृभाषा हिन्दी थी लेकिन पजाब में आकर उन्होंने पजाबी को अपना लिया। उन्होंने अपना बहुत सा साहित्य हिन्दी मे लिखा है। उन्हें संस्कृत मे भी दिलचस्पी थी इसलिए उन्होंने अपने दरबार के 12 पंडित संस्कृत पढ़ने के लिये बनारस भेजे थे।

साराश यह कि हिन्दी और पजाबी के बीच किसी प्रकार का कोई झगड़ा नहीं है। झगडा उन राजनीतिक नेताओ ने पैदा कर रखा है जो पजाब मे हिन्दी को नीचा दिखाने के लिए अंग्रेजी को अधिमान देते हैं। पजाब सरकार इस मामले मे सबसे बडी दोषी है। अंग्रेजी को अधिमान देकर और हिन्दी का दर्जा घटा कर यह अकारण हिन्दी प्रेमियो के दिलो मे कई प्रकार के सन्देह पैदा करती है और उसके कारण फिर यह भाषायी प्रश्न शुरू हो जाता है।

जैसा समारोह 15 नवम्बर को लुधियाना मे किया गया है इसी तरह के और भी कई जगह किए जाएंगे और कुछ देर बाद हम पजाबी के साहित्यकारों को भी सम्मानित करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने यह निर्णय भी किया है कि अपने हिन्दी साहित्य का पजाबी मे अनुवाद कराया जाए। साराश यह कि भाषा के प्रश्न पर जो कटुता पैदा हो रही है उसे दूर करने के लिए यह पहला कदम उठाया गया है। यदि पजाब सरकार और हमारे पजाबी के ठेकेदार भाई यह मान ले कि पजाबी के साथ साथ पजाब मे हिन्दी चलेगी और अंग्रेजी को अधिमान नहीं दिया जाएगा तो फिर यह समस्या हल हो जाएगी। हम अंग्रेजी पढने के विरुद्ध नहीं है। जो पढना चाहे शौक से पढे। हम केवल यह चाहते हैं कि हिन्दी को पजाब मे वही दर्जा मिलना चाहिए जो एक देश की राष्ट्रभाषा को मिल सकता है। इसके कारण पजाबी का दर्जा किसी तरह नहीं घटेगा। केवल हिन्दी का जो अपमान किया जा रहा है जिसे हम राष्ट्र का अपमान समझते हैं वह बन्द हो जाएगा और हिन्दी तथा पजाबी दोनो भाषाए एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिला कर इस राज्य मे उन्नति कर सकेंगी।

—वीरेन्द्र

आर्य समाजें पारिवारिक सत्संग व यज्ञ आरम्भ करें ?

एक समय था आर्य समाज की ओर से कई समाज सुधारात्मक कार्य हुआ करते थे। कहीं शुद्धि के कार्य का आयोजन, कही शास्त्रार्थों का आयोजन, कहीं दलित उद्धारात्मक कार्यों का आयोजन और कहीं देश जाति तथा समाज की उन्नति के कार्यों का आयोजन हुआ करता था अब कुछ समय भी बदल गया है। शास्त्रार्थ तो लगभग समाप्त हो चुके हैं। दलितोद्धार का बहुत सा कार्य सरकार ने अपने हाथ मे ले लिया है। शुद्धि का कार्य भी नाम मात्र का रह गया। समाज सुधार के कार्य भी अब नाम मात्र के ही हो रहे हैं। जो आर्य समाज का प्रचण्ड रूप था उसमे धीरे 2 न्यूनता आ रही है। आज इस सारी स्थिति पर आर्य बन्धुओ को बैठ कर विचार करना चाहिए कि आज की परिस्थितियो मे आर्य समाज क्या कार्य करे ? मेरा एक सुझाव है जितनी भी सक्रिय आर्य समाजें हैं और जिनके पास साधन भी हैं और अपने पुरोहित भी हैं। वह यदि और कुछ नहीं कर पाती तो कम से कम पारिवारिक सत्संग व यज्ञ अवश्य आरम्भ कर दें। पारिवारिक सत्संग प्रचार का एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा आर्य समाज के कार्य को गति दी जा सकती है। आर्य समाज का फिर वही रूप लोगो के सामने आ सकता है जो आज से 50 वर्ष पहले था। पारिवारिक सत्संग मे आर्य समाजी विचारधारा के लोग तो आ ही जाएगे, इसके साथ ही वह लोग भी आ जाएगे जो किन्हीं कारणो से आर्य समाज के समीप नहीं आते। इसके साथ ही जिनको आर्य समाज के स्वरूप का पता ही नहीं है उन्हें उसके स्वरूप का भी पता चल जाएगा। कुछ आर्य समाजो की ओर से यह कार्य हो भी रहा है और उन्हें सफलता मिल रही है। इसलिए यदि हम पुनः आर्य समाज का पुराना युग लाना चाहते हैं तो आज की परिस्थितियो और वातावरण मे सफलता प्राप्त करने के लिए पारिवारिक सत्संगो व यज्ञो को तुरन्त आरम्भ कर दें।

—सह सम्पादक

यज्ञ के दो पंख

लेखक—श्री स्व. महात्मा प्रभु आश्रित जी

(गतांक से आगे)

अस्तेय इसकी पालना गृहस्थी और व्यावहारिक मनुष्य के लिए बहुत आवश्यक है। इसके बिना गृहस्थी की व्यावहारिक कमाई पवित्र कभी नही गिनी जा सकती। और सब पवित्रताओ में बड़ी पवित्रता अर्थ की शास्त्रकारो ने कही है। इस व्रत के न पालन करने से ही संसार मे दरिद्र और निर्धनता है!

अस्तेय के अर्थ है चोरी न करना — चोरी चार प्रकार की है :—

आहार मे चोरी, व्यवहार में चोरी।
विचार मे चोरी, आचार में चोरी॥

केवल व्यावहारिक मनुष्य चोरी करते हो, ऐसा नहीं है। कई बड़े-बड़े विद्वान् साधु महात्मा भी इस पाप से नही बच सके। महात्मा गांधी तो कहते है कि ऐसा कोई नही कह सकता कि चोरी करने वाला सत्य को जान सकता है अथवा प्रेम धर्म का पालन कर सकता है। जाने अनजाने हम सभी लोग स्वल्पाधिक इस दोष के दोषी ठहरेंगे।

यह दोष (चोरी) उन्नीस प्रकार का है —

1—दूसरे की वस्तु बिना पूछे उठा लेना तो प्रत्यक्ष चोरी है परन्तु—

2—बालक माता के बिना पूछे अपने घर से पैसा उठाये अथवा रोटी उठाये, यह दोनों बराबर की चोरी है।

3—माता अथवा पिता बच्चो से छिपाकर खा लेवें यह चोरी है।

4— अपने घर, आश्रम, चार दीवारी मे पड़ी अथवा कोई, अथवा रखी वस्तु जो है तो सबके लिये, परन्तु किसी के अधिकार मे दे रखी है, उसे भी बिना अधिकार के ले लेना चोरी है।

5—बिना जरूरत कोई वस्तु खा लेना अथवा ओढ़ लेना पहन लेना, ले लेना जो कि दूसरे के काम आ सकती हो यह भी चोरी है।

6—मार्ग मे लावारिस पड़ी चीज उठा लेना अथवा किसी खेत से, वाटिका मे, चना, मटर, गन्ना, शाक, पुष्प, फल को उखाड़ लेना यह सब चोरी है।

7—गृहस्थी अपने-अपने परिवार, अपने खान पान अपने भावी जन्म के लिए दान आदि के लिए अधिकाधिक संग्रह करता है उसका लोभ बढ़ता है, वह तृष्णा लोभ उससे चोरी कराता है और साधु विरक्त अपने शारीरिक सुख के लिए लोभ करता है वही उसकी चोरी बन जाती है।

8—टैक्स, चुंगी कर, रेल भाड़ा आदि बचाना चोरी है। कम तोलना, कम मापना भमी, का काम से जी चुराना यह सब चोरी है।

9—धूस लेना धरोहर तथा ऋण न अदा करना चोरी है।

10—वकीलों और डाक्टरों की कमाई अधिकांश चोरी में गिनी गई है। वकील जो झूठा मुकद्दमा लेता है अपने लोभ के लिए चोरी करता है। डाक्टर लोभ मे फीस लेता और दवाई अधिक देता है।

अब मानसिक चोरी भी सुनिये! जो आत्मा का पतन करने वाली है।

मानसिक चोरी— महात्मा गांधी के शब्दों में .—

11—मन से हमने किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा की अथवा उस पर झूठी दृष्टि डाली कि किसी प्रकार हमको बिना मांगे मिल जावे अथवा संकेत से अथवा अन्य किसी विधि से अथवा संकल्प से कह कर या कहलवा कर या प्रभाव डालकर आचरण करना मानसिक चोरी है जैसे बच्चे किसी के पास अच्छी वस्तु को देखकर मन ही मन मे ललचाते हैं अथवा आंख चुरा कर देखने, कभी एक ओर कभी दूसरी ओर स्वार्थ को मन मे छिपाये खड़े होने कि किसी प्रकार अपने आप वह दे देवे।

12—उपवास करने वाला अथवा रोजादार मुसलमान किसी को खाता देख कर, खाता नही परन्तु अन्दर-अन्दर स्वाद ले रहा है, यह भी चोरी है।

13—जो भविष्य मे प्राप्त होने वाली वस्तुओं के आकाशी भवन अथवा दुर्ग निर्माण करता रहता है अथवा संग्रह करके भविष्य में धन के लोभ से दूसरो को पराधीन अथवा भूखा बनाता है। क्षुधा शान्त करने के स्थान पर क्षुधा तीव्र करता है वह भी चोर ही है। परिणाम यह होगा कि अपना घर लुटा बैठेगा अथवा बाल बच्चो को अथवा दूसरो को भूखा मारेगा। यह लोभ मूल कारण है चोरी का।

14—एक और विचार की चोरी इससे भी सूक्ष्म है जिसमे धन का लोभ तो नही परन्तु मान और नाम की प्रतिष्ठा शेष है। यह एक चिह्न है जो उत्तम विचार अपने मन मे उत्पन्न न तो हुआ हो, अपने बुद्धि बल से अथवा आत्मिक शक्ति से अथवा अन्तर्ध्यान अवस्था से तो प्राप्त नही हुआ हो, तो भी जो वह कार बार अपने को उस विचार का प्रथम कर्ता बताता है, दूसरे के विचारों को अपने नाम से प्रकट और सिद्ध करता है वह चोरी करता है। यह चोरी अनेक विद्वानो ने भी संसार के इतिहास मे की है और अब भी जारी है क्योंकि जैसे गृहस्थियो की सम्पत्ति पदार्थ और भूमि आदि है। ऐसे विद्वानो की सम्पत्ति उन का आविष्कार, उनका अपने अन्दर ऊंचा विचार, अनुभव तथा ज्ञान है। गृहस्थी की चोरी-चोरी है। विद्वान के आविष्कार और वस्तु को विचार की चोरी भी चोरी है।

इसलिये अस्तेय व्रत का पालन करने वाले को बहुत नम्र, बहुत विचारशील, बहुत सावधान और बहुत सादगी से रहना चाहिए। वह सिनेमा नहीं देख सकता, सिगरेट मद्यपान नहीं कर सकता। अपने सुख, यश तथा आराम के लिए बढ़िया से बढ़िया मूल्यवान वेष धारण नही कर सकता। उसकी सब वस्तुएं, खान-पान की, पहरान की, मोटर, नौकर, भृत्य आदि तक भी उसके जीवन निर्वाह और व्रत निमित्त ही होते हैं। उदाहरणार्थ—ग्रीष्म ऋतु है, आप कार्यालय का कार्य कर रहे हैं और एक कुली पंखा खींच रहा है यह तक उसका जीवन निर्वाह व्रत है और यदि आप निद्रा कर रहे हैं और कुली पंखा खींच रहा हो तो वह पाप है। हां माता पिता सो रहे हैं, श्रान्त हैं अथवा वृद्ध हैं और पुत्र अपने आप पंखा कर रहा है, पांव दबा रहा है, तो यह सेवा भक्ति है और यदि पुत्र अपने माता पिता को आराम विश्राम देने के लिए कुली नियुक्त कर देता है और आप भी आराम करता है तो यह पाप है और यदि आप भी कार्य कर रहा है अपने और माता-पिता के जीवन निर्वाह के लिए और माता-पिता असमर्थ और रोगी हैं तब किसी सेवाधार को धन देकर सेवा कराता है तो पाप नहीं। काम के अर्थ काम लिया जावे सेवार्थ सेवा ली जावे तो वह सब काम मे दाखिल है आराम यश के लिये न हो।

एक व्यावहारिक मनुष्य को व्रत का एक अंग प्रथम पाल कर देखना चाहिए जब उसमे दृढ़ हो जाए तो दूसरे अंग का पालन करे। इसी प्रकार व्रत सम्पूर्ण को यदि अपने जीवन काल मे पूरा कर लिया जावे तो यह जन्म भी सफल है और आगामी जन्म भी उत्तम से उत्तम मिलेगा। परमात्मन् देव हम सब में ऐसी शक्ति और मति देवें कि हम व्रत पति प्रभु के व्रत को धारण कर सकें।

15—जो कृपण है वह तो देश का, जाति का समाज-का, परिवार का चोर है ही, वस्तु को उसकी शक्ति का पूरा उपयोग नहीं लिया जाता, वह भी चोरी करता है।

16—जो देवताओं की आहुति दिये बिना अन्न खाता है, वह देवताओं का चोर है।

17—जो कभी बलि वैश्व देव यज्ञ नहीं करता वह कुत्ता, कौवा और कीड़ी का चोर है।

18—जो श्रमी, भृत्य, सेवकों आदि द्वारा धनोपार्जन करता है, यदि वह भूखे मरते हैं, उनके शरीर, रोग तथा पढ़ाई के कार्य पूरे नहीं होते, तो वह भी चोरी करता है।

19—किसान (काश्तकार) जो जमीन को पूरा चारा नही देता, कम देता है तो वह भी चोरी करता है।

संसार मे जितना भी प्रकाश प्राप्त है वह सब सूर्य (सवितः) देव की किरणो द्वारा मिलता है। इसी तरह प्रत्येक मनुष्य की बुद्धि में जो प्रेरणा, प्रकाश प्राप्त होता है वह सब प्रभु सवित देव से मिलती है।

(क्रमशः)

(2 पृष्ठ का शेष)

नही है कि हिन्दू ही एक शब्द ऐसा है जिसके नाम पर समस्त हिन्दू समाज चाहे वह आर्य समाजी है या सनातन धर्मी या अन्य कोई संगठित हो सकते हैं अथवा सनातन धर्म के लोगों को आर्य शब्द से एलर्जी है वे आर्य के नाम सुनते ही कोसों दूर भागते हैं। इसलिए हिन्दू निष्ट या हिन्दुत्ववादी दल का गठन होना आवश्यक है जिसके लिए पहल आर्य समाज को करनी चाहिए। आर्य समाज मे विद्वानो और बुद्धिजीवियों की कमी नही है किन्तु वे सभी इस ओर से उदासीन हैं उन्हे इस पर गम्भीरता से विचार करना होगा वरना तो वह दिन दूर नही है जब यहां कोई राधगोपाल या मोहन लाल नहीं मिलेगा कोई करीमबख्श होगा तो कोई रहीम बख्श तो कोई स्टीफन होगा और कोई जोजफ। यही दशा हो जाएगी जो महर्षि द्वारा स्थापित लाहौर का डी ए वी कालिज एक सराय बना दिया गया है यहां के ये सभी आर्य समाज मन्दिर, सनातनधर्म के मन्दिर धर्मशालाएं, सराय, मस्जिद और चर्च बना दिये जाएंगे। इसलिए आज आर्य समाज के विद्वानो को आगे आ कर हिन्दू-आर्य समाज का नेतृत्व कर इस देश तथा समाज को विधर्मियो से बचाने के लिए एक हिन्दू निष्ठ राजनीतिक दल की स्थापना कर राजनीतिक पहिचान स्थापित करें इसके लिए वे रा. स्व. संघ, सनातन धर्म सभा, विश्व हिन्दू परिषद् तथा हिन्दू निष्ठ सामाजिक संगठनों से भी बातचीत कर उन्हे सभी को इसमें शामिल करने की चेष्टा करें ताकि यह देश एक हिन्दू राष्ट्र या आर्यवर्त का रूप ले सके और हिन्दू समाज तथा देश को बचाया जा सके।

संस्कृति-मूलक शिक्षा साधना के सौ वर्ष

लेखक—श्री दरबारी लाल, संगठन सचिव
डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति दिल्ली

आजादी के बाद से ही शिक्षा पद्धति मे सुधार की जोर-शोर से चर्चा हो रही है। इसके लिए अनेक आयोग भी बने, और उन्होंने अपनी सिफारिशें भी प्रस्तुत की, लेकिन शिक्षा पद्धति में वह परिवर्तन नही हो पाया जो अपेक्षित था। स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष के चिन्तन और विचार-मन्थन से देश के प्रकाण्ड शिक्षाविद् और राजनेता इस राष्ट्र की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त शिक्षा पद्धति का आविष्कार नहीं कर पाये। आखिर ऐसा क्यो हुआ क्या किसी स्वतन्त्र देश को चार दशक का समय इस बात का निर्णय करने मे ही लग जाना चाहिए कि शिक्षा का ढांचा क्या हो और वह पाठ्यक्रम क्या हो जो देश के युवकों को पढ़ाया जाना है ?

सच तो यह है कि चार दशकों मे इस शिक्षा के परिणाम दिखाई दे जाने चाहिए थे और इसका समाधान हो जाना चाहिए था कि देश के युवक वही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जिसकी उन्हे जरूरत है, राष्ट्र को आवश्यकता है।

शिक्षा पद्धति की परिकल्पना के निर्धारण में इतना विलम्ब हमारे चिन्तन के भटकाव की ओर इंगित करता है। भटकाव यह है कि हमने यह निश्चित नहीं किया है कि हमारे देश की जीवन शक्ति का स्रोत क्या है, विश्व मंच पर इस देश की भूमिका क्या है और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें इस देश के युवकों को बनाना क्या है ?

शिक्षा क्षेत्र मे इसी दिशा भ्रम के कारण हमारा शिक्षित युवा वर्ग भी दिग्भ्रमित, हताश और निराश है। शिक्षा उसे कोई जीवन मूल्य नही दे पाती, कोई स्पष्ट जीवन दृष्टि नही दे पाती। खेद तो यह है कि यह शिक्षा आजीविका कमाने के लिए सक्षम भी नही बना पाती।

शिक्षण क्षेत्र मे यह मूल्य हीनता इसलिए है कि इस दिशा मे चिन्तन करने वाले विद्वानो की दृष्टि भी पश्चिमी देशो की तरह केवल विषय परक रही, तत्व परक नहीं। उन्होंने छात्रो को विविध विषयों की जानकारियां प्रदान करके उन्हे योग्य कम्प्यूटर बना देने मे ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझी, इस राष्ट्र का जागृत प्राणवान घटक बनाने का चिन्तन नही रहा।

किन्तु एक शताब्दी पूर्व, स्वाधीनता से भी पहले भारतीय मनीषी, क्रान्तदर्शी महर्षि दयानन्द ने इस तथ्य को समझ लिया था कि इस राष्ट्र की सारी समस्याओं का कारण अज्ञान है। शासकों की उस समय की नीति, चाहे ही वैध थीं, किन्तु अंग्रेजी शिक्षा पद्धति में भी पूर्व लोगों मे भी उन्होने ज्ञान का अभाव देखा था। वह केवल साक्षरता और जानकारी थी जो अंग्रेजी शिक्षा दी जा रही थी और वहीं अंग्रेज शासको का उद्देश्य भी था। वह तो ऐसी शिक्षा देना चाहते थे जिससे उनके लिए बाबू लोग पैदा हो सकें पर इस राष्ट्र की चेतना समाप्त हो जाए।

महर्षि दयानन्द ने इस दुरभिसन्धि को पहचाना। उन्होंने अनुभव किया कि जन-सामान्य की सम्यक शिक्षा ही मुक्ति का एकमात्र साधन है। महर्षि दयानन्द के इस अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समाज के कुछ व्यक्तियो ने 1883 मे एक बैठक बुलाई और दयानन्द एंग्लो वैदिक (डी ए वी) कालेज ट्रस्ट और प्रबन्धकर्तृ समिति की स्थापना की।

इस आन्दोलन का महत्व एक-दूसरे ऐतिहासिक कारण से भी है। मैकाले द्वारा स्थापित शिक्षा पद्धति से अंग्रेजी शासक तो प्रसन्न थे ही, कि इसके कारण राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाली भारतीय संस्कार प्रक्रिया स्वयं लुप्त हो जाएगी, इसके कारण ईसाई मिशनरी और भी अधिक उत्साहित थे। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को वे ईसाईकरण के विस्तार की भूमिका के रूप मे महत्वपूर्ण मानते थे। इसलिए उन्होंने मिशनरी स्कूलों की एक विराट शृंखला शुरू कर दी। इन स्कूलो में न केवल भारतीय जीवन मूल्यो की उपेक्षा हो की गयी बल्कि उसका उपहास भी उड़ाया जाता था। यह एक खतरनाक सांस्कृतिक आक्रमण था। डी ए वी शिक्षा आंदोलन के सामने इसका प्रतिकार करने का लक्ष्य भी स्पष्ट था।

अतः डी ए वी शिक्षा पद्धति में राष्ट्रीय चेतना के संस्कार और भारतीय संस्कार और भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था निर्माण के कार्यक्रम को विशेष महत्व दिया गया। इसका प्रभाव भी दिखाई दिया और राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में पुनर्जागरण में नये उत्साहशील देश भक्त इस आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुए। इनमे लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द लाला द्वारकादास जैसे महापुरुष भी हैं जो स्वाधीनता के यज्ञ मे सक्रिय रूप से संलग्न थे।

डी ए वी प्रबन्ध समिति ने एक जून, 1886 को लाहौर मे सर्वप्रथम स्कूल की स्थापना की जिसके अवैतनिक प्रधानाध्यापक लाला हंसराज (महात्मा हंसराज) थे। वे बिना किसी पारिश्रमिक जीवन पर्यन्त इस अभियान के लिए समर्पित रहे। आगामी कुछ ही वर्षों मे डी ए वी संस्थाओ की एक सुदीर्घ शृंखला अपने शक्तिशाली रूप मे प्रकट हो गयी। सन 1947 तक यह डी ए वी आन्दोलन एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन बन गया था। आन्दोलन का उचित भार वहन करने वाले व्यक्तियो मे प्रधानाचार्य मेहरचन्द, लाला बलराज, न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन न्यायमूर्ति जीवनलाल कपूर, डा जी एल दत्ता, लाला सूरजभान एवं प्रो वेद व्यास जैसी विशिष्ट विभूतियो एवं उनके सहयोगियो का अपूर्व योगदान रहा है।

वर्तमान समय मे डी ए वी कालेज ट्रस्ट एवं प्रबन्धकर्तृ समिति भारत मे सबसे बड़ा गैर सरकारी शैक्षणिक संगठन है जो कि अपनी 400 से अधिक संस्थाओ के माध्यम सामान्यतः सम्पूर्ण शैक्षणिक विषयो की शिक्षा के द्वारा राष्ट्र की अमूल्य सेवा कर रहा है। इस प्रकार इस आन्दोलन ने सांस्कृतिक आक्रमण की चुनौती का सफल रूप से सामना किया है। अब तक डी ए वी संस्थाओ से असंख्य विद्यार्थी पढ़ कर निकले हुए विद्यार्थियों की प्रथम पंक्ति मे शहीद-ए-आजम भगतसिंह और नोबल पुरस्कार विजेता हरगोविन्द खुराना का उल्लेख किया जा सकता है।

हाल ही मे डी ए वी कालेज ट्रस्ट एवं प्रबन्ध समिति ने पिछड़े और वनजाति क्षेत्रो मे शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के अतिरिक्त ग्रामीण और पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम आरम्भ किए हैं।

हरिजनो और कमजोर वर्गों के छात्रो को मुख्यधारा मे शामिल करने की घोषित राष्ट्रीय नीति का भी इस संगठन ने परिपालन शुरू किया है। फिलहाल प्रयोगात्मक स्तर पर यह योजना दिल्ली के एक विद्यालय, हंसराज माडल स्कूल मे शुरू की गयी है। इस विद्यालय मे प्रतिवर्ष 80 विद्यार्थियो को प्रवेश दिया जाता है जिन्हे निःशुल्क शिक्षा, परिवहन, पुस्तकें, वर्दियां और अपराह्न अल्पाहार दिया जाता है। योजना यह है कि आगामी 5 वर्षों मे कम से कम 50 डी ए वी स्कूलो मे कमजोर वर्ग के कम से कम 10 हजार विद्यार्थियो को निःशुल्क शिक्षा व अन्य सुविधाएं प्राप्त हो सकें।

इस आन्दोलन की सफलता का सबसे प्रधान कारण है डी ए वी संस्थाओ मे कार्यरत अध्यापको का लक्ष्य के प्रति समर्पित जीवन। यहां अध्यापक आजीविका मात्र के लिए कार्यरत नहीं हैं अपितु उनकी दृष्टि मे अपने लक्ष्य का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।

भारत मे इस शिक्षा आन्दोलन की सफलता को देखते हुए विदेशो मे बसे भारतवंशी भी डी ए वी संस्थाओ की शृंखलाएं डालने के लिए प्रयत्नशील हो गए हैं।

———

लुधियाना मे पारिवारिक सत्संग एवं विश्व शान्ति यज्ञ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से सिविल लाइन सिंडीकेट बिल्डिंग के सामने पार्क लेन में रविवार 29 11 1987 को 2 बजे से 4 00 बजे तक पारिवारिक सत्संग एवं विश्व शान्ति यज्ञ आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ के पश्चात वेद प्रचार भजन मण्डली के भजन तथा श्रद्धेय स्वामी वेद भारती जी महाराज का प्रवचन होगा। अन्तरंग सभा की मीटिंग श्री नरेन्द्रसिंह, भल्ला की अध्यक्षता मे 15 1187 को सम्पन्न हुई। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को सायंकाल पारिवारिक सत्संग का आयोजन लुधियाना के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों मे किया जाए। यह भी निश्चय हुआ कि पारिवारिक सत्संग के प्रबन्ध के लिए जो भी व्यय होगा, वह आर्य समाज के द्वारा किया जाएगा। इसलिए जो भी महानुभाव लुधियाना मे अपने परिवार, गली एवं मोहल्ला में सत्संग कराना चाहता है, वह अधिकारियो से सम्पर्क करें।

—रोशनलाल शर्मा-मन्त्री

सगुण और निर्गुण-महर्षि दयानन्द का अभीमत

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्योपदेशक,
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

धार्मिक एव दार्शनिक जगत् मे 'सगुण' और 'निर्गुण' शब्दो के विषय म जितनी भ्रातिया व्याप्त है, उतनी स्यात् किसी अन्य के विषय मे नही। इन शब्दो के वास्तविक अर्थों को न समझ कर लोगो ने मनमाने अर्थ कर अर्थ का अनर्थ कर दिया है। सगुण से साकार एव निर्गुण स निराकार की अवधारणा ऐसी ही भ्रातिया है जो धार्मिक जगत मे प्राय बद्धमूल हो चुकी है। महर्षि दयानन्द प्रथम महामानव थे जिन्होंने इन भ्रातियो की ओर ससार का ध्यान आकृष्ट किया और इन शब्दो को उनके यथार्थ स्वरूप मे प्रस्तुत किया। उनके अनुसार सगुण से साकार एव निर्गुण से निराकार लेना अर्थ का अनर्थ करना है क्योकि आकार से सहित होने से साकार होता है और आकार मे रहित होने से निराकार होता है, जबकि गुण से सहित होने से सगुण होता है और गुण स रहित होन से निर्गुण होता है। इस दृष्टि से महर्षि ईश्वर को ही नही ससार के समस्त पदार्थो को सगुण और निर्गुण मानते हैं। उनका कथन है कि "कोई भी ऐसा पदार्थ नही है कि जिस मे केवल निर्गुणता वा केवल सगुणता हो किन्तु एक ही मे सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है।" (देखें—स प्र सप्त समुल्लास) अतः इस दृष्टि स महर्षि जब ईश्वर को सगुण और निर्गुण दोनो बताते है तो उस पर शका की जाती है कि एक ही ईश्वर मे दोनो सगुणता एव निर्गुणता कैसे हो सकती है? इसका उत्तर महर्षि निम्न शब्दो मे देते हैं—"जैसे जड के रूपादि गुण हैं और चेतन के ज्ञानादि गुण जड मे नहीं हैं। वैसे चेतन मे रूपादि गुण हैं और रूपादि जड के गुण नही है। इसलिए 'यद्गुणैस्सह वर्तमान तत्सगुणम्' 'गुणेभ्यो यन्निर्गत पृथग्भूत तन्निर्गुणम्' जो गुणो से सहित वह सगुण और जो गुणो स रहित वह निर्गुण कहाता है। अपने-अपने स्वाभाविक गुणो से सहित और दूसरे विरोधी के गुणो से रहित होन म सब मत्र पदार्थ, सगुण और निर्गुण है।" फिर शका उठाते हैं कि "ससार मे निराकार को निर्गुण और साकार को सगुण कहते हैं। अर्थात् जब परमेश्वर जन्म नही लेता तब निर्गुण और जब अवतार लेता है तब सगुण कहलाता है?" महर्षि इसे केवल अज्ञानी और अविद्वानो की कल्पना ही मानते हैं। सगुण का सीधा सादा अर्थ गुण सहित है न कि आकार सहित और निर्गुण का अर्थ गुण रहित है न कि आकार रहित। यद्यपि आकार भी एक गुण है पर यही एक मात्र गुण नही। आकार गुण सहित होने से हम किसी पदार्थ को सगुण भले ही कह ले पर अन्य गुणो से रहित होने से वह निर्गुण भी है। अत. सगुण से अर्थ साकार और निर्गुण से अर्थ निराकार लेना युक्ति-युक्त न होगा।

इस सम्बन्ध मे पण्डित गगा प्रसाद उपाध्याय लिखते हैं कि—"जब हम 'गुण' शब्द का प्रयोग करते हैं तो एक और विवाद उठ खड़ा होता है—ईश्वर सगुण है या निर्गुण या दोनो कुछ लोगो ने निर्गुण का निराकार और सगुण का साकार का पर्याय मान कर इस विवाद को साकार-निराकारवाद का रूप दे दिया है। आकार भी एक गुण है परन्तु गुण का अर्थ आकार नही है। इस समस्या का सबसे अच्छा समाधान महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश मे मिलता है जो न्याय-युक्त भी, मनोवैज्ञानिक भी तथा स्वाभाविक भी। महर्षि दयानन्द ने अपनी व्याख्या की पुष्टि मे यजुर्वेद के इसी मन्त्र "स पर्यगात्" का प्रमाण दिया है। महर्षिवर की यह नई सूझ है जो किसी अन्य भाष्यकार अथवा प्रवर्तक को नही सूझी यद्यपि सगुण और निर्गुण का प्रश्न बहुत स धार्मिक नेताओ को खटकता रहा। महर्षि दयानन्द कहते है कि सगुण और निर्गुण का प्रश्न तो ज्ञातव्य वस्तु के अवबोधन के साथ लगा रहता है। केवल ईश्वर के ही साथ यह प्रश्न नही है।" (देखें-वेद-प्रवचन पृष्ठ 162)

सगुण निर्गुण स्तुति प्रार्थनोपासना

इसी आधार पर महर्षि दयानन्द ने सगुण और निर्गुण स्तुति प्रार्थनोपासना का विधान किया है। स्व मन्तव्या मन्तव्य प्रकाश मे महर्षि लिखते हैं कि—"जो जो गुण परमेश्वर मे है उन से युक्त और जो-जो गुण नही हैं उनसे पृथक् मान कर प्रशसा करना सगुण-निर्गुण स्तुति शुभ गुणो के ग्रहण की ईश्वर स इच्छा और दोष छुड़ाने के लिए परमात्मा का सहाय चाहना सगुण-निर्गुण प्रार्थना और सब गुणो से सहित सब दोषो से रहित परमेश्वर को मान कर अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना सगुण-निर्गुणोपासना कहाती है।"

स्पष्ट है कि जब परमेश्वर भी सगुण और निर्गुण दोनो ही है तो फिर उसकी स्तुति प्रार्थनोपासना भी दोनो रूपो मे ही होनी चाहिये। जब हम ईश्वर को न्यायकारी, दयालु आदि गुणों सहित याद करते हैं तो यह सगुण स्तुति है एवं जब हम अजन्मा, अशरीरी आदि गुणों से रहित उसका स्मरण करते हैं तो यह निर्गुण स्तुति होगी। ऐसी ही महर्षि दयानन्द का सगुण और निर्गुण के सम्बन्ध मे अभीमत है। और यह उनका मन्तव्य अपने में पूर्ण युक्ति-युक्त एव समीचीन है।

"जिन्हें हम भुला नहीं सकते"

आर्य जगत् का लौह स्तम्भ, शास्त्रार्थ युग के महान् योद्धा, प्रकाण्ड विद्वान् महात्मा अमर स्वामी जी महाराज 93 वर्ष की आयु मे नश्वर देह को त्याग कर सदा के लिए हम से विदा हो गए। स्वामी जी वाणी और लेखनी के धनी थे। स्वामी जी ने हजारो शास्त्रार्थ किए और आर्य समाज की विजय पताका फहराई, स्वामी जी प्रखर वाक् प्रतिभा के धनी, अकाट्य प्रमाणो के प्रेणता, विरोधी पक्ष को चुटकियो मे हरा देने वाले महान् तार्किक थे। उनकी प्रवचन शैली मधुर हास्य रस से भरी हुई, व्यग्य के द्वारा विपक्ष पर चुस्की लेने की आदत श्रोताओ के आनन्द का कारण बनती थी। स्वामी जी के निधन से न केवल आर्य समाज की बल्कि पूरे देश की महान् क्षति हुई है।

श्री मास्टर पूर्णचन्द जी भी अब इस ससार मे नही रहे। उनका रिक्त स्थान भरना भी कठिन है। वह कुछ ऐसी यादें छोड़ कर गए हैं कि आर्य जन विशेषकर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब उन्हे भुला नहीं सकता है। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की सम्पत्ति के इन्चार्ज थे। आर्य समाज का जब बोलबाला था तो उस समय वैदिक धर्म प्रेमियो ने आर्य समाज के भवनो का नाना बाध दिया तथा कई भवनो के साथ सम्पत्तिया खरीद कर दी। भारत विभाजन के पश्चात् आर्य समाज का प्रभाव कम हो गया तो नए आर्यों को यह भी पता नही था कि कहा कहा आर्य समाजें हैं तथा कितनी सम्पत्ति आर्य समाज के अधीन है। मास्टर पूर्णचन्द जी ने पजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश के गाव-गाव में जाकर ऐसी सम्पत्तियो का पता ही नही लगाया बल्कि जिन सम्पत्तियो पर अन्य लोगो ने जबरदस्ती कब्जा कर लिया था, उन सम्पत्तियो को छुड़ाया। यह एक ऐसा कार्य था जो मास्टर पूर्णचन्द ही कर गए। अन्यथा कोई दूसरा व्यक्ति नही कर सकता था। इस प्रकार लाखो की नही बल्कि करोडो की सम्पत्ति वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को खोज कर दे गए। वह काफी वृद्ध एव अस्वस्थ थे किन्तु खोज का कार्य उन्होने जारी रखा।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की साप्ताहिक सत्सग सभा (13-9-1987) महात्मा अमर स्वामी जी एव मास्टर पूर्णचन्द जी के निधन पर गहरा दु.ख व्यक्त करती है तथा ईश्वर स प्रार्थना करती है कि उन्हे सद्गति प्रदान करे तथा आर्य जनो को उन द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्यों को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करे।

—रोशनलाल शर्मा-मन्त्री
आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार-लुधियाना

स्वामी निगमानन्द जी लुधियाना मे

श्रद्धेय स्वामी निगमानन्द जी के 28-10 87 से 1-11-87 तक प्रतिदिन आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे दैनिक एव साप्ताहिक सत्सग मे प्रवचन होते रहे। आपने आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमे प्रकृति एव ब्रह्माण्ड के नियमो का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि ब्रह्माण्ड मे जो भी कार्य हो रहे हैं, वे वेद के अनुसार हैं। इसलिए हमे भी अपने जीवन को वेद के अनुसार बनाना चाहिए।, इस अवसर पर माननीय बहन कनक रानी जी के सुपुत्र आयुष्मान रविकुमार का जन्मदिन आर्य समाज मे मनाया गया। हमे इस प्रकार अपने बच्चो को आर्य समाज मे आने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

—रोशनलाल शर्मा मन्त्री

शोक समाचार

माता माया देवी जी का गत दिनो देहान्त हो गया। उनका अन्तिम शोक दिवस 13-11-87 को उनके निवास स्थान 16 मजीठा रोड अमृतसर में मनाया गया। माता माया देवी जी ने 100 वर्ष की लम्बी आयु प्राप्त की। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

भारत में साम्प्रदायिकता बढ़ती जा रही है ?

लेखक—श्री ज्ञानप्रकाश,पंखा 1401, प्रसिडेन्ट पैलेस
10 नारायण दभोलकर मार्ग, बम्बई

(गतांक से आगे)

अत: आम हिन्दू समाज यह अनुभव करने लगा है कि यदि सर्व धर्म समभाव व सेक्यूलरिज्म के नाम पर किया हुआ कांग्रेसियों का हिन्दू समाज का त्याग व बलिदान इन अल्पसंख्यकों को हिन्दू धर्म व समाज की उदारता के बारे में विश्वास नहीं दिला सका तो फिर इस उदारता का आखिर में क्या उपयोग है। धार्मिक सहनशीलता के नाम पर एक बहुत बड़ी कीमत अदा की गई। अत: जब हिन्दू संस्कृति पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं तब हिन्दू का अपनी इस सहनशीलता व उदारता पर से विश्वास उठ रहा है हिन्दुओं को यह अनुभव होने लगा है कि उन्होंने अल्पसंख्यकों को जितनी अधिक से अधिक सुविधा देने की कोशिश की है उतने ही अल्पसंख्यक लोग आक्रामक बन कर अधिकार मांगने लगे हैं, वे जिस मकान में मेहमान की तरह रखे गये थे उसके वे मालिक बनना चाहते हैं तथा असली मालिक को निकाल बाहर करना चाहते हैं, दुर्भाग्य से प्रेस ने भी इस सत्य को बजाए उजागर करने के हमेशा छिपाने की कोशिश की जिसके कारण आम मुसलमान नहीं समझ रहे हैं कि हिन्दुओं ने उन पर बहुत अन्याय किया है।

कट्टरपंथी हिन्दू

मुसलमानों के इस देश पर आक्रमण के पहले हिन्दुओं को यह मालूम ही नहीं था कि धर्मान्धता अथवा साम्प्रदायिकता क्या वस्तु होती है और एक धर्म के अनुयायी अन्य धर्मावलम्बियों के पूजा स्थल नष्ट करना भी अपना धर्म मान सकते हैं। आज यदि कुछ हिन्दुओं के कार्य अथवा आचरण साम्प्रदायिक हैं वो कट्टरपंथी मुसलमानों को निरन्तर कार्य व भावनों के प्रतिक्रिया स्वरूप ही हैं आखिर में सहनशीलता की भी कोई मानवीय सीमा होती है। मुसलमान लोग विश्व के सब देशों में कट्टरपंथिता का पाठ पढ़ाते रहे हैं।

विश्व के विद्वानों ने रिसर्च में यह साबित कर दिया है कि हिन्दू धर्म ही विश्व के धर्मों की जननी है और इसने हमेशा अन्य धर्मों को भारत में फलने-फूलने में मदद किया है क्योंकि हिन्दू धर्म 'सब धर्म समभाव' तथा सब धर्मों के सह अस्तित्व की नींव पर ही बना हुआ है। हिन्दुओं का इकम कट्टर विश्वास है और यही हिन्दू कट्टरवादिता है। उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म व समाज सेक्यूलरिज्म का मूर्तिमान स्वरूप है पर उसकी उदारता का हमेशा उसी के विरुद्ध दुरुपयोग हुआ है।

इस तरह के उदार धर्म व समाज को साम्प्रदायिक कहना दुनिया का सबसे बड़ा झूठ है। यह पाखण्ड की पराकाष्ठा है और एक महान संस्कृति को नष्ट करने की सुनियोजित प्रयत्न है आखिरकार इन पाश्चात्य विचार वाले लोगों को किसने यह अधिकार दिया है कि हिन्दू उस बुजुर्गों का प्रचार कर।

यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि जहां मुसलमान, ईसाई, यहूदी इत्यादि विश्व के सब समाज दिन और रात अपने समाज के उत्थान के लिए कार्य करना अपना कर्तव्य समझते हैं तब पाश्चात्य विचार वाले हिन्दू अपने समाज की रक्षा व नैतिक उत्थान करने वालों को साम्प्रदायिक कह कर उनका अनादर करके हिन्दू समाज की नींव खोदना चाहते हैं।

वास्तव में यह एक गलत भावना है यदि अन्य समाज को नुकसान पहुंचाये बिना कोई व्यक्ति या संस्था अपने धर्म व समाज का उत्थान करती है तो वो कदापि साम्प्रदायिक नहीं है। मां यदि अपने बच्चों को दूध पहले पिलाती है और दूसरों को बाद में देती है तो क्या वो स्वार्थी व साम्प्रदायिक कहलायेगी। हिन्दू लोग जब इस सत्य को समझ सकें तभी से उनकी अनेक समस्याएं हल होने लगेंगी।

यह स्पष्ट रूप से समझ लिया जाना चाहिए कि देश में सब साम्प्रदायिकता की जड़ तथा राष्ट्र में विघटनकारी शक्तियों के बढ़ने का प्रथम कारण है, खोखले आदर्शवाद व झूठ मकबा सेक्यूलरिज्म के नाम पर अल्पसंख्यकों का अन्धाधुन्ध तुष्टिकरण तथा दूसरा कारण है इस झूठ का प्रचार कि जो हिन्दू संस्थाएं अपने समाज की सेवा करती हैं वे साम्प्रदायिक हैं। झूठे प्रचार के आधार पर किसी देश में भावनात्मक एकता उत्पन्न नहीं की जा सकती है जब तक इन दो दोषों का परिमार्जन नहीं होता है तब तक देश की साम्प्रदायिक व राजनैतिक परिस्थिति बिगड़ती ही जाएगी। इसे कोई भी रोक नहीं सकेगा।

सेक्यूलरिज्म का दुरुपयोग

श्री राजगोपालाचार्य जी ने कहा था कि—"सेक्यूलरिज्म एक अत्यन्त गलत समझा हुआ शब्द है। अल्पसंख्यकों के साथ न्याय करने का अर्थ यह नहीं है कि बहुसंख्यकों के साथ अन्याय किया जाए।" (स्वराज्य वार्षिक अंक 1971) सेक्यूलरिज्म का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हिन्दू लोग अपने व्यक्तित्व को ही खो बैठें यह स्वाभाविक ही है कि हिन्दू समाज अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए चिन्तित हो, (ए के घोष, मुस्लिम इस्लिम्स)

हिन्दुओं का जो भारत की आबादी के 85 प्रतिशत और समस्त विश्व की आबादी के 15 प्रतिशत है। यह पूरा लोकतांत्रिक व संवैधानिक अधिकार है कि वे अपने सांस्कृतिक व नैतिक अधिकारों की रक्षा करें, हिन्दुओं को यह समझना चाहिये कि जबकि विश्व में मुसलमान व ईसाईयों के पचासों देश हैं उनकी सिर्फ एक ही मातृ भूमि हिन्दुस्तान है अत उसकी रक्षा करने का उन्हें पूर्ण अधिकार है। पर आज सेक्यूलरिज्म के नाम पर हिन्दुओं के अधिकारों का हनन हो रहा है जबकि अल्पसंख्यक उस के नाम से अधिक से अधिक लाभ उठाना अपना अधिकार समझते हैं।

बाबरी मस्जिद पर दिये कुछ मुस्लिम नेताओं के भाषण अत्यन्त आपत्तिजनक हैं पर विश्व हिन्दू परिषद जैसी संस्थाओं के अहिंसक नेताओं द्वारा दिए गये भाषणों को उनके समकक्ष रख कर दोनों को एक ही तराजू पर तौलना और अधिक झूठी व शर्मनाक बात है प्रसिद्ध लेखक श्री सीताराम गोयल के अनुसार हिन्दुओं को उन्हीं के देश में साम्प्रदायिक कहना दुनिया का नौवा आश्चर्य है।

आज मुस्लिम नेता यह चिल्लाने लगे हैं कि वे आजादी के 40 वर्षों के बाद भी अपनी गरीबी दूर नहीं कर सके हैं पर इसके लिए कौन जिम्मेदार है। मुस्लिम लीग स्वयं ही अपने पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार है। वे अपना पिछड़ापन आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके अपनी बुद्धि व योग्यता बढ़ा कर तथा हिन्दुओं के साथ बजाए विदेशी प्रभाव में आकर झगड़ा करने के, प्रेम के साथ रह कर ही कर सकते हैं।

दुर्भाग्य से उनके नेता भी अपने स्वार्थ वश उन्हें झूठा डराते रहते हैं कि उन्हें हिन्दू समाज से खतरा है जिससे आम मुसलमान उत्तेजित रहता है अत प्रेस तथा सरकार को चाहिए कि वे इस सत्य का कि हिन्दू समाज विश्व में सबसे उदार है उदाहरण सहित प्रचार करें यही आपसी सम्बन्ध सुधरने का एक मात्र मार्ग बचा है।

स्वतन्त्रता व लोकतन्त्र

महात्मा गांधी यह जानते थे कि देश में नागरिकों की स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र, समाजवाद व सब धर्म समभाव तभी तक सुरक्षित रह सकता है जब तक हिन्दुस्तान में हिन्दू धर्म सुरक्षित है अत गांधी जी हमेशा राम राज्य की बात करते थे। गांधी जी कहते थे कि—हिन्दू धर्म सब धर्मों व सम्प्रदायों के कल्याण के लिए प्रयत्नशील है और उनके द्वारा वो समस्त विश्व का कल्याण करना चाहता है। अत हिन्दू धर्म मानव धर्म के रूप में एक अत्यन्त बहुमूल्य धरोहर है जिस की विश्व के समस्त लोगों को रक्षा करनी चाहिए। यह समझ लिया जाना चाहिए कि हिन्दू धर्म का दुश्मन समस्त मानव जाति का दुश्मन है। यदि आज गांधी जी जीवित होते तो वे अपनी पिछली भूलों को स्वीकार करके हिन्दू समाज व धर्म के उत्थान के लिए अवश्य कार्य करते चाहे उन्हें कुछ स्वार्थी हित वाले उनके इस कार्य के लिए साम्प्रदायिक ही क्यों न कहते। (हिन्दू समाज के प्रति विश्वासघात नामक पुस्तक से उद्धरित।

केरल में वैदिक संस्कृति के प्रचारक विद्वान का अभिनन्दन

आर्य समाज बडा बाजार पानीपत पिछले दस वर्षों से वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक आर्य वैदिक विद्वान को नकद राशि शाल व वैदिक पुस्तकें भेंट कर सम्मानित व पुरस्कृत कर रहा है। वेदो पर लेखन व वाणी से प्रचार करने वाले विद्वानो का सम्मान करने वाला हरियाणा मे एक मात्र आर्य समाज बडा बाजार पानीपत ही है। इस बार आचार्य नरेन्द्र भूषण केरल निवासी को सम्मानित किया गया। श्री भूषण ने आर्य ग्रन्थो का ज्ञान हरियाणा से ही प्राप्त किया।

अभिनन्दन के समय बताया गया कि आचार्य नरेन्द्र भूषण का अनेक भाषाओ पर पूर्ण अधिकार है। संस्कृत, हिन्दी, मलयालम, अंग्रेजी, तमिल, तेलगू व कन्नड आदि भाषाओ मे वे महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का प्रचार कर रहे हैं। केरल सरकार द्वारा भी उन्हे 'साहित्य पुरस्कार' दिया गया। यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे केरल के सबसे छोटी आयु के विद्वान् हैं।

अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता कर रहे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने आर्य समाज बडा बाजार द्वारा आर्य विद्वानो को सम्मानित करने की प्रशंसा की। उन्होने कहा कि जो लोग विद्वानो को धन नही दे सकते वे कम से कम सम्मान तो करें। उन्होने कहा कि जब से आर्य समाज ने शास्त्रार्थ व खण्डन का कार्य बन्द किया है, तब से देश मे अन्ध-विश्वास बढता जा रहा है।

उन्होने नई शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षा की उपेक्षा पर चिन्ता प्रकट की। आचार्य नरेन्द्र देव ने कहा कि यह सम्मान मेरा नही हुआ अपितु ऋषि दयानन्द का हुआ। उन्होने लोगो से अपील की कि वे आने वाली सन्तानो के लिए जहा सम्पत्ति छोडने की चिन्ता मे लगे रहते हैं। उन्हे उनके लिए भारतीय संस्कृति व वैदिक शिक्षा की सम्पत्ति भी छोडनी चाहिए।

आर्य समाज बडा बाजार के प्रधान रामानन्द सिंगला ने आचार्य नरेन्द्र देव को पन्द्रह सौ रुपए की थैली, पुस्तकें व अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

●

चम्बा दयानन्द मठ का तीसरा वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया

चम्बा दयानन्द मठ का तीसरा वार्षिक उत्सव बडी धूमधाम से 6-7 नवम्बर 87 को मनाया गया। अमृतसर से 150 कांगडा से 60, शिमला से दो सुन्दरनगर से 8, जम्मू से 10, दीनानगर से 10, अन्य स्थानो से कुल 300 दर्शक पहुंचे 6-7को वैदिक यति मण्डल की दो बैठकें श्री स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर की अध्यक्षता मे हुईं और उनके लाभ के लिए कार्यक्रम बना 7 को एक हजार नर-नारियों ने शोभा यात्रा निकाली जो सब बाजारो से होती हुई चौगान ठहरी। वहा आचाराम आर्य ने वीर कमाल के बढ़ा वेदीराम के खेल दिखाए। जनता 8000 से ऊपर थी। जनता ने 700 रुपया इनाम दिया। 3 देवियां नारदी सम्मान से इस सम्मेलन मे पधारी। 6 नवम्बर को पूर्ण आहुति हुई। 40 साधुओ को मार्ग व्यय 1200 रुपए दिया गया कुल आय 22000 रुपए व खर्च 32000 रुपए हुआ। यहा 1971 में एक झोपडी थी अब12 कमरे एक फार्मेसी 10 औषधालय 3 स्नानागार हैं। हाल व यज्ञशाला बन रही है। इस समय तक 4 लाख रुपया लग चुका है। 4 लाख और लगेगा 300 दर्शको के खाने पीने ठहरने का प्रबन्ध बहुत बढिया था। इस सब कार्य का सेहरा स्वामी सुमेधानन्द के सिर है उन्होने दो गुरुकुल व फार्मेसी भी चला रखे हैं।

—सुमेधानन्द स्वामी
दयानन्द मठ दीनानगर

●

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 35 21 मार्गशीर्ष सम्वत् 2044 तदानुसार 6 दिसम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी को सूखा पीड़ित फण्ड के लिए एक लाख 6 हजार रुपये की राशि भेंट की गई



चित्र मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी जी के साथ, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अतिरिक्त श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट, कुलपति श्री आर सी शर्मा, श्री सत्यदेव जी भारद्वाज विद्यालंकार, आचार्य भगवानदेव पूर्व सांसद और श्री बलभद्र कुमार हूजा, श्री सरदारीलाल जी वर्मा आदि खड़े दिखाई दे रहे हैं।

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करते समय अपने सामने एक विशेष उद्देश्य रखा था कि यहा से पढ कर निकलने वाला प्रत्येक विद्यार्थी एक सच्चा नागरिक बन कर देश, जाति और समाज की सेवा का कार्य करेगा। सचमुच गुरुकुल के विद्यार्थियो, व स्नातको ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदर्श की बहुत कुछ पालना की है।

गुरुकुल के विद्यार्थी धार्मिक कार्यों के साथ-2 सामाजिक कार्यों में भी सदा अग्रसर रहे हैं। महात्मा गान्धी जी ने जब अफ्रीका मे अपना आन्दोलन आरम्भ किया तो गुरुकुल के विद्यार्थियो द्वारा मजदूरी करके और उपवास आदि रख कर इस कार्य के लिए सैंकड़ो रुपया इकट्ठा करके महात्मा मुन्शीराम, (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने उन्हे सहायतार्थ भिजवाया था और भी देश मे जहा बाढ, सूखा आदि पडा गुरुकुल की ओर से वहा पूर्ण सहयोग दिया गया और जो सहायता दी जा सकती थी की गई।

इस बार जो देश मे सूखा पड़ा है। इसकी लपेट मे देश के कई राज्य आ गए हैं। राजस्थान की स्थिति इनमे सब से खराब है। वर्षा न होने से तालाबो और कुआ का पानी सूख गया है। पानी के बिना त्राहि 2 मची हुई है न पशुओ को चारा है न पीने के लिए पानी है। पशुओ की बात छोडिए मनुष्यो के लिए भी दूर-दूर तक पीने का पानी नही मिल रहा। फसल न होने से अन्न तो कहा से मिलना था।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

यज्ञ के दो पंख

लेखक—श्री स्व. महात्मा प्रभु आश्रित जी

(गतांक से आगे)

जैसे सूर्य का प्रकाश हर क्षण आता है ऐसे ही मनुष्य की बुद्धि मे भी प्रभु सवित: देव की प्रेरणा हर क्षण चलती है परन्तु '—

1 वह लोग जो प्रभु से विमुख हैं वह तमोगुणी कहलाते हैं, वह प्रेरणा को समझ नही सकते जैसे नेत्रहीन सूर्य के प्रकाश को नही देख सकता।

2 जो रजोगुणी है—अर्थात् जो प्रभु स्मरण करते हैं, यज्ञ जप गायत्री द्वारा प्रभु की आराधना करते हैं परन्तु काम, क्रोध, लोभ ग्रस्त रहते हैं, वह प्रभु प्रेरणा पाकर खो बैठते हैं।

3. जो काम, क्रोध, लोभ को वश में करते और गायत्री, जप और यज्ञ द्वारा प्रभु की उपासना करते हैं उनकी सात्विक वृत्ति होती है और नाना प्रकार की प्रेरणायें प्रभु की मिली हुई को समझ सकते हैं क्योकि यज्ञ, गायत्री और बुद्धि का देवता सवित है।

(बृहस्पति ज्ञान विद्या का देवता है क्योकि ज्ञान और विद्या बुद्धि मे प्राप्त होती है। इसलिए बृहस्पति को भी बुद्धि का देवता कहा परन्तु बुद्धि की जात का देवता सवित है ऐसे यज्ञ की जात का देवता सवित, और क्रिया का देवता इन्द्र है)।

महापुरुषो का आदर्श

यज्ञ दो प्रकार के है

1 नैत्यिक—साधारण यह नित्य कर्म है।

2, नैमित्तिक—इसमे दश पूर्णमाशी, कामना सिद्धि तथा प्रायश्चित्त के यज्ञ शामिल हैं।

यज्ञ प्रत्येक गृहस्थी और वानप्रस्थी कर सकता है परन्तु।

विशेष यज्ञ

विशेष अधिकार और विशेष रूप म और विशेष नियमो के आधीन किये जात हैं। उन यज्ञो मे वही अधिकारी होता है जिसके पास अपने पशु, घृत, दुग्ध के लिए दान दक्षिणा के लिए, प्रजा सहायता और सेवा के लिए चादी, सोना, अन्न, फल हो।

3 यज्ञ म बरने योग्य ऋत्विज, यज्ञ विद्या के ज्ञाता हो, अहकार, लोभ और हिंसा रहित वृत्ति, और जितेन्द्रिय और सयमी हो।

4 वरा हुआ ऋत्विज यजमान का रूप बन सके।

5 यज्ञ काल मे यजमान के सब पापों का ऋत्विज आशीर्वाद होता है।

1 यज्ञ और गायत्री आराधना में जो काम, क्रोध, लोभ को जितना अपने वश मे रखता है, उतना वह सात्विक वृत्ति वाला बनकर बुद्धि मे प्रभु प्रेरणा को समझने के योग्य होता है।

2 योग में तो काम जीतने से नाना प्रकार के तप की प्रेरणाए मिलती हैं जो आत्मा से सम्बन्ध रखती है।

3 क्रोध जीतने पर ब्रह्म ज्ञान का अनुभव, लोभ के जीतने पर त्याग वैराग्य की प्रेरणाए मिलती हैं।

4 यज्ञ, जप करने वाले को —

काम जीतने पर मानसिक बल, सकल्प बल, सकल्प बल और क्रोध जीतन पर नाना प्रकार के यज्ञो की प्रेरणाए और लोभ जीतने पर उत्तम और नाना ऐश्वर्य और बड़े भारी यज्ञ की प्रेरणाए मिलती हैं।

सवित देव सबका उत्पादक, पालक पोषक, रक्षक और नियामक है वह अपने उपासक को जो जो प्रेरणाए बुद्धि मे प्रदान करता है, उसके सात अथ हे —

1 जीवन प्रवाह को न टूटने देने वाला।

2 गर्भ से छुड़ाने वाला।

3 कच्चे को पका देने वाला।

4 भून देने वाला।

5 आनन्द मे जो विघ्न बाधाए आती हैं, उनका नाश करने वाला।

6 सब सिद्धिया का देन वाला।

7 स—से सूक्ष्म, व—से शून्य, त—से रक्षा करने वाला अर्थात् (अपने भक्त की तो विशेष रूप से उसके शरणागत कम के बदले और साधारण जनता की कम फल के रूप मे रक्षा करना है। सूक्ष्म स शू य अवस्था म गुप्त रूप मे रक्षा करने वाला जहा मानव की बुद्धि नही पहुच सकती है, न अनुमान लगा सकती है, बिना आश्रय के एस प्रभु सवित देव की उपासना और शरण उपासक को क्यो प्राप्त नही होती। क्योकि काम, क्रोध, लोभ की वृद्धि ही बाधक है।

काम—एसा लोटा है जिसके नीचे मे छिद्र निकला हुआ है, वह समुन्द्र से भी भरा जाए तो सारे का सारा जल निकाल देता है, लोटे मे धारण नही हो सकता।

क्रोध—ऐसी छलनी है, जिसमे सहस्रो छिद्र हैं, जल समुद्र से भरने पर भी तुरन्त बिना देर लगे सारे का सारा निकल जाता है।

लोभ—चालीदार छलनी है, भरा हुआ जल भी कुछ देर में निकल जाता है, इसलिए शास्त्रकारों और अनुभवी योगियो ने यही अनुभव किया है। मोह और अहकार का नाम आया में क्यों नहीं आता? काम, क्रोध, लोभ तो वश में करने की वृत्तियां हैं, परन्तु मोह और अहकार नहीं।

परमेश्वर की भक्ति नमस्कार से आरम्भ होती और समर्पण पर समाप्त होती है।

मोह इतना बढाया जावे कि अपने पुत्र, शरीर, परिवार से बढता-बढता ससार के प्राणी मात्र तक पहुच जावे और अहकार मे प्रभु के अर्पण हो जावे।

मोह और अहंकार का स्वरूप

मोह अन्दर से मूर्छित करता है और अहकार बाहर से मूर्छित करता है इस लिए प्रभु सवित: देव की उपासना और शरण लेने से मोह ता प्रेम मे बदल कर अन्दर सारे अन्त करण को आनन्दित और सचेत कर देता है और अहकार अर्पण होने से बाहर की आखें खुल जाती हैं और बाहर उस हर जगह प्रभु की आत्मा ही आत्मा नजर आती है।

वह मनुष्य निकृष्ट है जो मनुष्य देह को पाकर कुछ नही देता। उपासक जो गायत्री माता की शरण लेता है। उसके हृदय मे भूभु व स्व व्याहृति ज्यो-ज्यों व्याप्त होती जाती है वह निकृष्टता से उत्कृष्टता और श्रेष्ठता की ओर बढने लगता है। पहला अवस्था उसकी त्याग की यह होती है कि मागने वाला दर पर आता है ता उसे देने म खुशी मनाता है। यह मनुष्य म भक्त बनने की पहली और अच्छी अवस्था है।

उससे अच्छी अवस्था यह होती है कि बिना मागे भी अपन आप देने की इच्छा बनी रहती है इसस उत्तम और श्रेष्ठ अवस्था यह होती है कि वह अपना नियमानुकूल दशाश निकाल कर दान करना और अपनी सम्पत्ति की रक्षा करता और बढाता है। इससे श्रेष्ठतर अवस्था यह हाती है कि अपने जीवन निर्वाह के लिए अपनी आमदनी स कुछ रख कर बाकी सारी सम्पत्ति प्रभु अपण करता है और नाना प्रकार क यज्ञो को करने म लग जाता है और श्रेष्ठतम अवस्था इसस ऊपर वह हाती है जो देवो की होती है उनका लने आर देने का स्टोर सारे का सारा प्रभु अपण होता है वह अपने को न मालिक मानता है न नौकर, वह अपन आपको ट्रस्टी मानता है यह अवस्थाए लोभ की वृत्तियो को त्यागने से प्राप्त हाती ह। ससार मे कोई वस्तु या व्यक्ति, पद या पदार्थ हो, उसमे अच्छाई और बुराई दोनो होंगे। इसलिए उपासक की बुद्धि प्रभु प्रेरणा से अच्छाई को और अच्छे को ग्रहण करती है और बुरे और बुराई को छोडती जाती है उपासक मे प्रभुदेव अपने दर्शन का रूप प्रवेश करते हैं और उसके जब मनुष्य में आत्म-ज्योति जगने लगती है, उसको अपना छोटे से छोटा दोष भी बड़ा नजर आने लगता है और अपना बड़ा गुण भी तुच्छ नजर आता है अपने से अधिक योग्य व्यक्तियों के लिए उसे अति प्रसन्नता होती है और अपने से छोटे के लिए सहानुभूति पैदा हो जाती है।

गायत्री में भर्ग: से आगे देव शब्द है। जब मैं जब आत्म ज्योति जगने लगती है तब उपासक दृष्टिकोण मनुष्यों और पशुओ की वृत्ति से बदल कर दिव्य गुण वाला बन जाता है। देव का अर्थ है—प्रकाश, दान और सुख देने वाला। साधारण सुख तो ससार के सब पदार्थों में है और सब जीवों को मिलता है, परन्तु पूर्ण सुख तो पूर्ण ज्ञान से ही मिलता है और केवल मनुष्यो को ही मिल सकता है और पूर्ण सात्विक वृत्ति प्रभु सवित देव पूर्ण रूप से उपासना के प्रसाद रूप मे मिलता है।

अब हम पड़ताल करें हमारे शरीर, तन, मन, चित्त, बुद्धि, अहकार, आत्मा, आख, नाक, कान, जिह्वा वाणी, हाथ, पाव, त्वचा और प्राण मे से कौन से ऐसे भाग हैं जो प्रभु की उपासना मे पूर्ण रूप से अर्पण हैं। यदि इनमें से कोई नही तो और हमारी क्या वस्तु उसकी उपासना मे अर्पण है और वह कितनी, ताकि हम अपनी सात्विक, राजसिक और तामसिक वृत्ति का अनुमान लगा सकें कि हमने कौन सी वृत्ति अधिक है।

तामसिक वृत्ति वह है जो दूसरे को अथवा अपना अनिष्ट करती या चाहती है।

राजसिक वृत्ति वह है जो यश और नाम चाहती है, सुख चाहती है।

सात्विक वृत्ति वह है जो सब की भलाई मे नि स्वार्थ प्रभु अपण होती है।

प्रभु का नाम मगलकारी है। प्रभु के भक्त का जब भक्ति म प्रवेश होने लगता है तो उसकी निशानी यह है कि उसके हृदय मे दूसरो की भलाई की इच्छा पैदा होनी शुरू हो जाती है परन्तु वह भलाई नही कर सकता और जो करता भी है उसमे उसका स्वार्थ छिपा रहता है। चाहे नाम का हो चाहे काम का—निष्काम भलाई से तो केवल इच्छा ही पैदा होती है और जब भक्ति मे प्रवेश करती है तो भक्त दूसरो की तन, मन, धन से सरल स्वभाव से भलाई करने लग जाता है परन्तु भलाई अपने आप सोच नही सकता और जब भले काम करते 2 उस का यश फैल जाता है या फैलने लगता है तो लोगो की, दीन दु खियो की आशीष और सत महात्माओ की प्रसन्नता और शिव सकल्प आकाश के परमाणु द्वारा उसकी बुद्धि मे एक प्रकार का पवित्र सात्विक प्रकाश उत्पन्न हो जाता है या होने लगता है जिसके दिमाग में हर समय या समय-समय पर ससार के हित-जनता के कल्याण की स्कीम सूझने लगती है।

सम्पादकीय—

चौदहवीं का चाँद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने हिन्दू जगत् और विशेष कर आर्य जगत् पर बहुत उपकार किया है जो "चौदहवीं का चांद" नाम की पुस्तक पुनः प्रकाशित कर दी है। यह वही पुस्तक है जिस के लिए अमर शहीद महाशय राजपाल की हत्या सन् 1929 मे कर दी थी। यह पुस्तक स्वर्गीय श्री प. चमूपति जी ने लिखी थी। सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस्लाम के विषय मे जो कुछ लिखा था उस के उत्तर मे मुसलमानो की ओर से महर्षि के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा जाता था और उन पर कई प्रकार के निराधार आरोप लगाए जाते थे। आर्य समाज की ओर से इन का उत्तर पहले श्रीमान् मुन्शी इन्द्रमणी मुरादाबादी की तरफ से दिया जाता था उस के पश्चात् धर्मवीर पण्डित लेखराम जी इस के विषय मे बही कुछ लिखते रहे। इस के लिए उन की भी हत्या कर दी गई थी। उस के पश्चात् किसी और को साहस न हुआ कि मुसलमानो द्वारा महर्षि दयानन्द पर लगाए गए आरोपो का उत्तर कोई दे सके। श्री पण्डित लेखराम जी ने मरने से पहले एक प्रकार से यह वसीयत की थी कि उन के पश्चात् आर्य समाज मे साहित्य निर्माण का काम बन्द नही होना चाहिए। उसी आदेश का पालन करते हुए श्री पण्डित चमूपति जी ने चौदहवी का चाद नाम की पुस्तक लिखी थी। उस समय तक कई मुस्लिम उग्रवादी उन की हत्या करने का षड्यन्त्र भी बनाते रहे। उस में तो वह सफल न हुए परन्तु उन्होने महाशय राजपाल जी की हत्या कर दी।

पण्डित चमूपति जी ने जो पुस्तक लिखी थी वह उर्दू मे थी और मुसलमानो के कई साहित्यकारो द्वारा लिखित पुस्तको से भी बहुत कुछ लिया गया था। साथ ही कुरान मे जो कुछ लिखा गया है वह भी उन्होने उधृत किया था और उन्होने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस्लाम के विषय मे जो कुछ लिखा था वह बिल्कुल ठीक था, कई बार मुसलमानो की तरफ से यह आपत्ति की जाती रही है कि महर्षि दयानन्द न तो उर्दू जानते थे न अर्बी। उन्होने कुरान के विषय मे यह सब कुछ कैसे लिख दिया। इस का स्पष्टीकरण करते हुए श्री पण्डित चमूपति जी ने अपनी पुस्तक मे महर्षि दयानन्द के शब्दो मे ही इस आरोप का उत्तर दिया है कि सत्यार्थ प्रकाश मे इस्लाम के विषय मे यह सब कुछ कैसे लिखा गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं सत्यार्थ प्रकाश मे इस के विषय मे जो कुछ लिखा है वह निम्न प्रकार है.—

"यह चौदहवा समुल्लास मुसलमानो के मत के बारे मे केवल कुरान के वास्तविक अर्थों को सामने रखने के लिए लिखा गया है। दूसरे मुसलमान जो इस के विषय मे कहते हैं। उस के अनुसार नही लिखा गया। मुसलमान जिन्हे कुरान पर विश्वास है, इस्लाम पर श्रद्धा है। उन्हे कुरान पर ही विश्वास है यद्यपि और कई बातो के विषय मे इन मे आपस मे मतभेद है, पर कुरान के विषय मे सब एक मत हैं। अर्बी कुरान का जो अनुवाद मौलवी साहिबान ने उर्दू मे किया है, उसे देवनागरी अक्षरो मे और आर्य भाषा मे प्रकाशित किया गया है और उस के विषय मे कई बड़े-2 मौलवियो की सम्मति भी ले ली गई है। जब उन्होने कहा कि यह ठीक है, उसी समय इसे प्रकाशित किया गया।"

इसी विषय मे आगे चल कर वह लिखते हैं:—

"हमारी खुश किस्मती से कुरान का वह उर्दू अनुवाद मौजूद है, जिसे आर्य भाषा का रूप दे कर मौलवियो ने शुद्ध किया था। वह अनुवाद शाह रफीयुद्दीन साहब का है। पाठक यह जान कर हैरान होंगे कि आर्य भाषा के सत्यार्थ प्रकाश मे उधृत किया गया कुरान का अनुवाद शाह रफीयुद्दीन के विचारो के मुताबिक है। उर्दू सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशित होने पर किसी और अनुवाद के प्रकाशित करने के स्थान पर शाह रफीयुद्दीन का अनुवाद ही प्रकाशित किया गया है।"

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है वह इसलिए कि आर्य जनता को यह पता लग जाए कि महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश मे इस्लाम के विषय मे जो कुछ लिखा था। वह बिना सोचे समझे न लिखा था अपितु कई मौलवियो के अनुवाद को सामने रख कर ही लिखा था। इसलिए उन पर यह आरोप नही लगाया जा सकता कि उन्होंने अज्ञान और बिना सोचे समझे इस्लाम के विषय मे यह सब कुछ लिख दिया।

श्री पण्डित चमूपति जी ने अपनी पुस्तक मे इस्लाम के कई पक्ष प्रस्तुत किए हैं। उदाहरणार्थ क्यामत की रात क्या होती है? बहिश्त क्या है? फरिश्ते कौन है? अल्ला मियां की कितनी किस्में हैं? इस्लाम मे औरत का क्या दर्जा है? इस प्रकार की और कई बातें हैं। इस पुस्तक को पढ कर इस्लाम के विषय मे बहुत कुछ मालूम हो जाता है। यह पुस्तक उर्दू मे लिखी गई है और कई जगह इसमे कुरान की आयतें भी उधृत की गई हैं परन्तु साथ ही उन का अनुवाद भी दे दिया गया है। इस पुस्तक की सब से बड़ी विशेषता यह है कि सरल भाषा मे इस्लाम के विषय मे बहुत जानकारी मिल जाती है। जो भाई उर्दू जानते हैं उन्हे यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए। इसका मूल्य केवल 12 रुपए है और यह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली से मिल सकती है।

—वीरेन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय का प्रशंसनीय कार्य

गुरुकुल कांगडी की स्थापना श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने केवल वैदिक धर्म के प्रचार के लिए ही न की थी। वह अपने समाज में एक नई क्रांति लाना चाहते थे। गुरुकुल मे जो ब्रह्मचारी पढा करते थे, वह अपनी शिक्षा के साथ 2 समय-2 पर समाज की सेवा भी किया करते थे। जब गान्धी जी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे, उस समय गुरुकुल के विद्यार्थी उन के सत्याग्रह मे सम्मिलित होते रहते थे। कई बार स्वयं व्रत रख कर कुछ पैसे जमा कर के उस के लिए दान भी दिया करते थे। गुरुकुल की उस पुरानी परम्परा को कायम रखते हुए पिछले दिनो गुरुकुल के सारे प्राध्यापको, विद्यार्थियो और समर्थको ने प्रधानमन्त्री के सूखा पीड़ित कोष के लिए एक लाख छ हजार रुपए प्रधानमन्त्री को दिया। यदि मेरा अनुमान गलत नही तो गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय पहली संस्था है जिस ने इस कोष मे अपना योगदान दिया है। यह एक अत्यन्त प्रशंसनीय उदाहरण है जो गुरुकुल के प्राध्यापको ने दूसरी संस्थाओ के सामने रखा है। इस के लिए मैं इस के प्रेरणा स्रोत गुरुकुल के परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट और कुलपति श्री रामचन्द्र शर्मा को बधाई देता हूं। इसी के साथ उन प्राध्यापको और विद्यार्थियो की भी प्रशंसा करना चाहता हूं जिन्होने इस कार्य के लिए दान दिया है। जो कुछ किया गया है इस के लिए सारा आर्य जगत् गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय पर गर्व कर सकता है।

—वीरेन्द्र

आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की यह विख्यात संस्था 1930 मे नौ कन्याओ से प्रारम्भ हुई थी। आज 84 वर्ष के पश्चात् इसमे 2000 लड़कियां पढ रही हैं। प्रथम दिसम्बर को इसका वार्षिकोत्सव मनाया गया। मुझे भी इस अवसर पर वहां बुलाया गया और उसका जो कार्यक्रम मैंने देखा उसके आधार पर मैं बड़े गर्व से कह सकता हूं कि हमारी यह संस्था शिक्षा के क्षेत्र मे अत्यन्त सराहनीय कार्य कर रही है। यह आर्य समाज की संस्था है। इसलिए आर्य समाज के सिद्धान्तो के अनुसार ही वहां कन्याओ को शिक्षा दी जाती है। कई दूसरी संस्थाओ मे जब सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाया जाता है तो उसमे कई बार अश्लीलता भी होती है परन्तु जो कार्यक्रम वहां दिखाया गया है वह देश प्रेम, देश भक्ति और समाज सुधार की भावनाओ से प्रेरित छोटी-2 बच्चियो ने अपने गीत संगीत और नृत्य द्वारा अद्वितीय कार्यक्रम दिखाया। इस संस्था के परीक्षा परिणाम भी बहुत सन्तोषजनक होते है इसलिए मैंने लिखा है कि हम इस पर गर्व कर सकते है। इस अवसर पर इस संस्था की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए 5100 रुपए की राशि भेंट की गई। मैं इस विद्यालय की प्रबन्धकर्तृ सभा की प्रधाना बहन कमला आर्या और प्रधानाचार्य श्रीमती कान्ता सूरी को बधाई देता हूं कि वह इस संस्था को बड़ी योग्यता और लगन से चला रही है और अब इस संस्था ने एक ऐसा रूप धारण कर लिया है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य महान् भावों व सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों को सेवा में

श्रीमन्नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक अधिवेशन 4 अक्तूबर 1987 को हुआ था। सभा के 156 प्रतिनिधियो ने उसमे भाग लिया था। प्रधान के चुनाव के लिए दो नाम पेश किए गए थे। श्री वीरेन्द्र जी का और श्री योगेन्द्रपाल सेठ का मतदान होने पर 144 सदस्यो ने श्री वीरेन्द्र के पक्ष मे और 12 ने श्री योगेन्द्रपाल सेठ के पक्ष मे अपना मत दिया था। उसी के साथ श्री वीरेन्द्र को यह अधिकार भी दिया गया था कि वह सभा के बाकी अधिकारी, अन्तरग सभा के सदस्य, सार्वदेशिक सभा के लिये पजाब सभा के प्रतिनिधि मनोनीत कर दें।

इस चुनाव के साथ चुनाव की प्रक्रिया समाप्त हो जानी चाहिए थी। परन्तु श्री योगेन्द्रपाल सेठ और श्री ऋषिपाल सिंह ने अपने किसी स्वार्थ और महत्वाकांक्षा से प्ररित हो कर 15 नवम्बर को अपनी एक और सभा बुला ली। उस सम्बध मे जो परिपत्र जारी किया गया था वह दिनांक 6 नवम्बर 1987 का था। जिसमे लिखा गया था कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने भिन्न विभागो, व आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भिन्न-2 संस्थाओ के लिए जो सदस्य व अधिकारी नियुक्त किए हैं। उनकी घोषणा 15 नवम्बर को की जायेगी। परन्तु यह 15 नवम्बर से भी एक दिन पहले अर्थात् 14 नवम्बर को घोषित कर दी गई। 15 नवम्बर को जो बैठक हुई उसमे सभा के प्रतिनिधि 12 से अधिक न थे बाकी वह महानुभाव थे जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सदस्य न थे और कई वह थे जो किसी आर्य समाज के सदस्य भी न थे।

156 सदस्यो मे से केवल 12 सदस्यो का समर्थन प्राप्त करने वाला व्यक्ति सभा का प्रधान कैसे बन गया। इसका निर्णय आर्य जनता स्वय कर सकती है। श्री योगेन्द्रपाल सेठ व श्री ऋषिपाल सिंह कहते हैं कि जो प्रसभा 4 अक्तूबर को हुई थी वह अवैध थी। प्रश्न किया जा सकता है कि यदि वह सभा अवैध थी तो वह उसमे सम्मलित क्यो हुए और श्री योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान पद के लिए क्यो खडे हुए। जब वह उस चुनाव मे हार गए तो उन्होने अपने आपको उस सभा मे निर्वाचित प्रधान घोषित कर दिया, जिसे वह अवैध कहते हैं। उनके विचारानुसार जो कुछ उस सभा म हुआ था, यदि वह अवैध था तो उनका चुनाव वैध कैसे हो सकता है और 156 मे से 12 वोट लेने वाला तो किसी भी स्थिति मे सभा का प्रधान नही बन सकता।

श्री योगेन्द्रपाल सठ और श्री ऋषिपाल सिंह ने अपने चुनाव के विषय मे जो विवरण समाचार पत्रा मे प्रकाशित किया उसमे लिखा है कि श्री योगेन्द्रपाल सेठ के चुनाव को सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा ने मान्यता दे दी है। हम इस सम्बन्ध मे किसी सावजनिक विवाद म पडना न चाहते थे। इसलिए हमने समाचार पत्रो मे प्रकाशित इनकी झूठी, निराधार और मन घडन्त खबरो का निराकरण करने का कोई प्रयास न किया था। परन्तु हम जानना चाहते थ कि वास्तविक स्थिति क्या है? सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जो पिछले दिनो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की एक बैठक मे सम्मिलित होने के पश्चात दिल्ली गए थ वहा उन्होने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह और सावदेशिक सभा के दूसरे अधिकारियो मे इस विषय मे बात की और सारी स्थिति उनके सामने रखी। सावदेशिक सभा क प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी व श्री सोमनाथ जी मरवाह दोनो ने सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी से स्पष्ट रूप से कहा कि सावदेशिक सभा ने श्री योगेन्द्रपाल सेठ या उनक किसी सहयोगी का मान्यता नही दी। श्री योगेन्द्रपाल सठ और श्री ऋषिपाल सिंह ने 4 अक्तूबर के चुनाव के सम्बन्ध मे कुछ आरोप लगाए है। सावदाशक सभा उनकी जाच करेगी। इससे अधिक और कुछ नही किया गया। इस विषय मे श्री सोमनाथ जी मरवाह ने सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को पत्र लिखा है उसमे उन्होंने सारी स्थिति स्पष्ट कर दी है। वह लिखते हैं —

श्री वीरेन्द्र जी,
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, जालन्धर

सादर नमस्ते !

मैं आपके साथ जब 25-11-87 को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी से मिला था तो आपने पूछा था कि क्या सार्वदेशिक सभा ने श्री योगेन्द्रपाल सेठ और उसके सहयोगी श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट को यह आदेश दिया था कि वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो का नया चुनाव करा लें। आपने यह भी पूछा था कि जो चुनाव उन्होंने किया है क्या सार्वदेशिक सभा ने उसे मान्यता दे दी है।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने उसी समय कहा था कि न तो उन्होंने सार्वदेशिक सभा की ओर से नया चुनाव कराने के लिए कहा गया न ही किसी ऐसे चुनाव को मान्यता दी गई है। मैंने भी इस विषय मे और जानकारी प्राप्त की है और विश्वास से कह सकता हू कि जो कुछ योगेन्द्रपाल सेठ और श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट ने किया है उसे सार्वदेशिक सभा का समर्थन प्राप्त नही है। कुछ विषयो पर जो मतभेद है। उन पर हम बैठ कर विचार करेंगे। जैसा कि स्वामी आनन्दबोध जी ने आपसे कहा था।

भवदीय
सोमनाथ मरवाह एडवोकेट

इस स्पष्टीकरण के पश्चात् अब किसी प्रकार की भ्रान्ति न रहना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और उसी के साथ पजाब मे आर्य समाज के सगठन को छिन्न-भिन्न करने के लिए कुछ विघटनकारी तत्वो द्वारा एक षडयन्त्र रचा गया है। इस स्पष्टीकरण के पश्चात् अब यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिए। केवल आशा ही नही विश्वास है कि पजाब की आर्य जनता श्री वीरेन्द्र जी के नेतृत्व मे चल रही आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को वह ही सहयोग और समर्थन देती रहेगी जैसाकि पहले देती रही है।

यह भी भ्रान्तिपूर्ण प्रचार किया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वर्तमान अधिकारी सावदेशिक सभा के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं। मैं सभा के समस्त अधिकारी वर्ग की ओर से स्पष्ट कर देना चाहती हू कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारी सार्वदेशिक सभा के प्रति पूर्णतया निष्ठा और विश्वास के आधार पर काम कर रहे हैं। किसी समय यदि किसी विषय पर मतभेद हो जाए तो उसे विद्रोह की सज्ञा नही दी जा सकती। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब आर्य समाज के सगठन को सुदृढ, शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाना चाहती है। उसी के लिये वह इस समय तक सघर्ष करती रही है और भविष्य मे भी करती रहेगी।

भवदीय

कमला आर्या
सभा महामन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस सूखा का प्रभाव अधिकतर थोडी जमीन वाले किसानो, मजदूरो और निधन लोगो पर अधिक पडा है।

सरकार की आर से और समाज सेवी सस्थाओ की ओर से राहत काय हो रहा है। सरकार पानी का भी प्रबन्ध कर रही है। पशुओ के लिए घास का भी कुछ प्रब ध किया जा रहा हे। राज्य सरकारे भी इसके लिए कार्य कर रही हैं। प्रधानमन्त्री ने एक सूखा पीडित कोष खोला है जिसके लिए जनता से अपील की गई है कि वह इसके लिए अधिक से अधिक दान देकर सहायता दें।

इसी अपील के आधार पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति प्राध्यापको और विद्यार्थियो तथा दूसरे समर्थको ने इसमे अपना योगदान देने का निश्चय किया और गत दिनो एक लाख 6 हजार रुपया एकत्रित करके उसका ड्राफ्ट बना कर आर्य समाज के नेताओ के एक शिष्टमण्डल ने यह राशि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी से मुलाकात करके उन्हें भेंट की। शिष्टमण्डल म आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब क प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के अतिरिक्त गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा और सार्वदेशिक सभा दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट। गुरुकुल के कुलपति श्री आर सी शर्मा, श्री सत्यदेव जी भारद्वाज विद्यालकार, आचार्य भगवानदेव जी पूव सासद, श्री सरदारी लाल जी वर्मा तथा अन्य कई गण मान्य आय नेताओ ने इसमे भाग लिया।

यह एक एसा काय है जिसकी जितनी सराहना की जाए उतनी थोडी है। आर्य समाज की एक सस्था न इतनी बडी राशि देकर और सस्थाओ का भी मार्ग दर्शन किया है कि वह इस पुण्य कार्य मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी का अपना सहयोग दें ताकि देश के उन असहाय और सूखा से पीडित लोगो की सहायता की जाए जो सूखे की लपेट में आ गए हैं।

व्याख्यान माला—११

धनी को कृपण नहीं होना चाहिए

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स, अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

विद्यायां दुर्मदो येषां कार्पण्यं विभवे सति ।
तेषां देवाभिशप्तानां सलिलादग्निरुत्थितः ।19।

जिनको विद्या होने पर अभिमान हो जाता है और धन होने पर जिन में कृपणता आ जाती है। उन भाग्य के द्वारा अभिशिप्त विद्वानो तथा धनियो की वैसी ही विपरीत एव भयावह स्थिति है जैसे पानी मे आग लग गई हो। अर्थात् विद्वान् का अभिमानी होना तथा धनी का कृपण होना दोनों ही भयावह सकट के सूचक हैं न तो विद्वान् को अभिमानी ही होना चाहिए और न धनी को कृपण ही होना चाहिए ।

यस्य दानविहीनस्य धनाग्यायाग्नि यान्ति किम् ।
आरण्यकुसुमानीव निरर्थास्तस्य सम्पद ।20।

जिस दान हीन मनुष्य के घर (बिना दान के ही) धन का आय तथा व्यय ही जाता है, उस की सब सम्पत्तियां जगली पुष्पो की भान्ति व्यर्थ ही हैं।

द्वाविमौ पुरुषौ राजन् स्वर्गस्योपरि तिष्ठत. ।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान् ।21।

हे राजन् ? क्षमा युक्त राजा और दान करने वाला निर्धन ये दोनो पुरुष स्वर्ग मे अधिष्ठित होते हैं।

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढां शिलाम् ।
धनवन्तमदातारं दरिद्रञ्चातपस्विनम् ।22।

इन दो व्यक्तियो को उनके गले मे दृढ शिला बाध कर नदी मे डूबा देना चाहिए। (1) जो धनी होकर दान न करे और (2) जो निर्धन होकर कठिनाई न सह सके।

मितं भुङ्क्ते सविभज्याश्रितेभ्यो मितं स्वपित्यमितं कर्म कृत्वा ।
ददात्यमित्रेष्वपि याचित संस्तमात्मवन्तं प्रजहत्यनर्था ।23।

जो मनुष्य अपनी सम्पत्ति मे स अपने आश्रितो को उनका समुचित भाग देकर स्वय सन्तुलित मात्रा मे उसका भोग करता है, जो पर्याप्त कर्म करके भी सन्तुलित नींद लेता है और जो शत्रुओ द्वारा प्रार्थना किये जाने पर शत्रुओ को भी दे देता है। उस आत्मिक बल वाले को अनर्थ छोड देते हैं। अर्थात् उसके समीप कोई अनर्थ नही आता।

त्यागो गुणो गुण शतादधिको मतो मे,
विद्या विभूषयति तं यदि किं ब्रवीमि ।
शौर्यं हि नाम यदि तत्र नमोऽस्तु,
तस्मै तच्च त्रयं न च मदोऽस्तु विचित्रमेतत् ।24।

मैं सैकडो गुणो से अधिक त्याग गुण को मानता हू। यदि त्यागी को विद्या भी विभूषित करती हो तो क्या ही कहना इसी के साथ के साथ साथ यदि तीसरा शूरता का भी गुण हो जावे तो मैं उसे आदर पूर्वक नमस्कार करता हू। उक्त त्याग, विद्या और शूरवीरता इन तीन गुणो के धनी मनुष्य मे यदि मद (अभिमान) न हो तो यह बात और भी विचित्र है।

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यञ्च दमः श्रुतञ्च ।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ।25।

बुद्धि, कुलीनता, दम और शास्त्र स्वाध्याय, पराक्रम, कम बोलना, यथा शक्ति दान और कृतज्ञता ये आठ गुण पुरुष को प्रकाशित करते हैं।

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम् ।
वित्तं दानसमेत दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ।26।

मधुर वाणी से सत्कार करते हुए दिया हुआ दान, गर्व शून्य ज्ञान, क्षमा युक्त शूरता, त्याग भाव से भोगा जाता हुआ धन ये चार पदार्थ ससार में दुर्लभ हैं।

अर्था पादरजा समा गिरिनदीवेगोपमं यौवनम्,
आयुष्यं जलबिन्दुलोलचपलं फेनोपमं जीवनम् ।
दानं यो न करोति निश्चलमतिर्भोगं न भुङ्क्ते च य;,
पश्चात्तापयुतो जरापरिगत शोकाग्निना दह्यते ।27।

धन तो पाव की धूल के समान है अर्थात् शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। पहाडी से नदी के वेग के समान शीघ्र ही ढल जाने वाला जीवन है। चचल जल के चचल बिन्दु की भान्ति यह आयु चचल है। झाग के तुल्य जीवन है। जो मनुष्य एक मति होकर दान नही देता और धन का भी भोग नही करता वह वृद्धावस्था मे पश्चाताप करता हुआ शोक की अग्नि से दग्ध होता है।

विप्रेभ्य साधु दानं रिपुजनसुहृदाञ्चोपकारान्कुरु त्वम् ।
सौजन्यं बन्धुवर्गे निजहितमुचितं स्वामिकार्यं यथार्थम् ।
श्रोत्रे ते तथ्यमेतत्कथयति सतत लेखनी भाग्यशालिन् ।
नो चेन्नष्टेऽधिकारे मम मुखसदृशं तावकास्यं भवेद्धि ।28।

हे भाग्यवान पुरुष ? तेरे कानो मे यह लेखनी सदा सत्य कहती रहती है कि ब्राह्मणो को खूब दान दो, शत्रुओ और मित्रो दोनो पर उपकार करो। सम्बन्धियो से सज्जनता का व्यवहार करो, उचित रीति से अपना हित करो, अपने स्वामी का काम ठीक-ठीक करना चाहिए। नही तो जब तेरा अधिकार छिन गया तो तेरा मुख मेरे मुख जैसा ही हो जाएगा।

पात्रे दानं स्वल्पमपि काले दत्तं युधिष्ठिर ।
मनसा हि विशुद्धेन प्रेत्यानन्तफलं स्मृतम् ।29।

हे युधिष्ठिर ! शुद्ध मन से किसी सुपात्र को थोडा भी दिया हुआ दान परलोक मे अनन्त फल देने वाला होता है।

अपात्रेभ्यस्तु दत्तानि दानानि सुबहून्यपि ।
वृथा भवन्ति राजेन्द्र भस्मन्याज्याहुतिर्यथा ।30।

हे राजाधिराज ! जैसे भस्म मे दी गई घृत आहुतिया फल हीन होती हैं, ऐसे ही कुपात्र को दिया हुआ अधिक दान भी व्यर्थ होता है।

पात्रापात्रविवेकोऽस्ति धेनुपन्नगयोर्यथा ।
तृणात्संजायते क्षीर क्षीरात्संजायते विषम् ।31।

पात्र और अपात्र का विवेक गाय और सर्प के उदाहरण स करना चाहिये। गाये को तो दिये गये घास से भी दूध पैदा होना है और सर्प दूध पीकर भी विष ही उगलता है।

पात्रेभ्यो दीयते नित्यमनपेक्ष्य प्रयोजनम् ।
केवलं त्यागबुद्ध्या यत् धर्मदानं तदुच्यते ।32।

बिना किसी प्रयोजन के अर्थात् निष्काम भाव मे तथा त्याग बुद्धि से सुपात्र को जो दान निरन्तर दिया जाता है उसे ही धर्म दान अर्थात धर्म युक्त दान कहा जाता है।

सुक्षेत्रे वापयेद्बीजं सुपात्रे निक्षिपेद्धनम् ।
सुक्षेत्रे च सुपात्रे च ह्युप्तं दत्तं न नश्यति ।33।

अच्छे खेत मे बीज की बिजाई करनी चाहिए और अच्छे पात्र मे धन देना चाहिए क्योकि सुक्षेत्र मे बोया गया तथा सुपात्र को दिया हुआ नष्ट नहीं होता वह निश्चित रूपेण फलीभूत होता है।

न विद्यया केवलया तपसा वापि पात्रता ।
यत्र वृत्तमिमे चोभे तद्धि पात्रं प्रकीर्तितम् ।34।

केवल विद्या से ही पात्र नही होता और केवल तपस्या से भी पात्रता नही आ जाती। अपितु जहा आचार-विद्या और तपस्या इन तीनो का एक मे दर्शन हो उसे ही वस्तुतः पात्र कहा जाता है।

(क्रमशः)

धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षार्थ हैदराबाद में आर्य समाज का संघर्ष

लेखक—श्री लक्ष्मणार्य 'विद्यावाचस्पति' उप-प्रधान
आर्य समाज वरंगल आन्ध्र

उन्नीसवी शताब्दी ने जिन महान् आत्माओ को जन्म दिया है उनमे महर्षि दयानन्द को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उसी महान् आत्मा के कारण भारत मे धार्मिक पुनर्जीवन का प्रारम्भ हुआ। महर्षि दयानन्द ने जिस सार्वभौम सस्था की नीव डाली थी। वह आर्य समाज के नाम से एक जीवित तथा शक्तिशाली सगठन के रूप म भारत और भारत के बाहर के अनेक देशो मे अपनी सत्ता तथा प्रभाव जमा चुकी है। मानव मात्र से स्नेह तथा उसकी सेवा आर्य समाज का अन्तिम उद्देश्य है तथा ससार को सन्मार्ग पर चलाना उसका उच्चतम लक्ष्य है।

हैदराबाद मे आर्य समाजी आन्दोलन महर्षि दयानन्द के उपरान्त उनके लाखो अनुयायी बडे उत्साह और उमग के साथ उनके कार्य को आगे बढाने आर्य समाज की स्थापना करके अविद्या और अन्ध-विश्वास को समाप्त करने तथा विद्या एव शिक्षा प्रचार व प्रसार करके ईश्वरोपासना, दया, प्रयत्नशील बनाये। यद्यपि भारत के दो राज्यो मे सबसे बडा होने के कारण हैदराबाद का स्थान प्रमुख था, तथापि अविद्या अन्ध-विश्वास तथा अविवेकता ने यहा भी अपनी सत्ता जमा रखी थी, जिनके उन्मूलन के लिए आवश्यकता कि हैदराबाद मे आर्य समाज की स्थापना की गयी।

हैदराबाद राज्य मे आर्य समाज के आन्दोलन के अल्प रूप रेखा मात्र रखू गा हैदराबाद मे आर्य समाज के आन्दोलन को दो कालो मे विभक्त किया जाता है। प्रथम काल 1931 से 1940 तक का है। द्वितीय काल 1941 से 1948 तक का है। 1931 से 1940 तक का काल हैदराबाद राज्य के आर्य समाज के आन्दोलन को निजामशाही के अन्याय, अत्याचार का सामना कर धर्म एव सस्कृति की रक्षा करनी पडी। 1941 से 1948 तक का द्वितीय काल मे आर्य समाज को एक क्रान्ति आन्दोलन का रूप लेकर हैदराबाद की स्वतन्त्र के सघर्ष मे प्रमुख भाग लेकर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। तथा हैदराबाद राज्य को स्वतन्त्र भारत का अविच्छिन्न भाग बना दिया।

1931 से 1940 तक सभी धार्मिक कार्यों पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिये गये। काग्रेस अवैध घोषित कर दी गयी, जिसका कार्यक्रम शान्तिपूर्वक, अहिंसा नीति पर चल रहा था। केवल सदस्यो की भर्ती की जा रही थी। किन्तु शासन इसको भी सहन न कर सका, अन्त मे आर्य नेता प नरेन्द्र जी के अथक प्रयत्नो से काग्रेस ने कुछ काम करना आरम्भ किया था। 1938 मे निजाम की सरकार ने हवन कुण्ड बनाने, उत्सवो, जलूसो, नगर कीर्तनो, महान् पुरुषो के जन्म दिवस अथवा मृत्यु दिवस की सभाओ, सस्कृत अथवा ऐतिहासिक भाषणो धार्मिक ग्रन्थो तथा ओ३म् ध्वज फहराने आदि पर प्रतिबन्ध लगाये। तो इनके विरुद्ध आर्य समाजी जनता ने डट कर मुकाबला किया। राज्य के विभिन्न स्थानो पर अनेक मुसलमान गुण्डो ने आर्य समाजियो तथा हिन्दू जनता पर अत्याचार, दुकानें लूटना, आदि स दगा करना शुरू किये। हैदराबाद के आर्य प. विनायक राव जी के निवास स्थान पर, हैदराबाद नगर तथा राज्य के विभिन्न स्थानो पर सरकार की सहायता से धर्मान्ध गुण्डो ने धावा बोल दिया। अनेक मुख्य-2 व्यक्तियो को (अनेक) कोई न कोई अभियोग लगा कर बन्दी बनाए। इस प्रकार आर्यों के विरुद्ध पुलिस और हकूमत के निरन्तर बढते हुए अन्याय तथा अत्याचार से प्रेरित होकर राज्य भर के विभिन्न प्रातो मे धर्मान्ध गुण्डो ने रक्तपात, लूटमार, सतीत्वनष्ट करना मचा दी। प, विनायक राव तथा नरेन्द्र जी के नेतृत्व मे स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन अत्याचारो तथा अपने उचित अधिकारो की ओर निरन्तर सरकार का ध्यान आकर्षित करती रहे। किन्तु उसका कोई परिणाम नही निकला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने भी बहुत कुछ प्रयत्न किया किन्तु अत्याचार, अन्याय तो होते ही गये। फलस्वरूप आर्य सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया। इस सत्याग्रह का सर्व प्रथम नेता महात्मा नारायण स्वामी जी बने। इस प्रकार भारत के विभिन्न प्रान्तो मे आर्य समाजी कार्यकर्ता सत्याग्रह करके जेलो मे गए। इस प्रकार हजारो आर्य वीर सत्याग्रह करके जेलो मे बन्दी बनाये गये। अनेक स्थानो पर सत्याग्रहियो पर पुलिस की उपस्थिति मे ही मुसलमान गुण्डो ने आक्रमण किये और उन्हे घायल किया। श्रीराम चन्द्र-राव नामक सत्याग्रही केवल 'वन्देमातरम्' के उच्चारण मात्र पर दो दर्जन बेंतों की सजा दी गयी। जब सत्याग्रही ने हर बेंत पर वन्देमातरम् कहा तो उसे बेहोश होने तक निर्दयता से पीटा गया। इन अत्याचारो का यह परिणाम हुआ कि सत्याग्रह की समाप्ति तक अनेक आर्य समाजियो का स्वर्गवास हो गया। अन्त मे शहीदो के खून ने रग दिखाया तो हैदराबाद की सरकार को झुकना पडा। यहा उल्लेखनीय है कि आर्य सत्याग्रह को राजनीतिक दृष्टि से इतना महत्व प्राप्त हुआ कि इगलैंड की विधान सभा मे भी इसके बारे मे प्रश्न उठे। फलस्वरूप 7 अगस्त 1935 को आर्य समाज की सभी मांगो को सरकार ने स्वीकार किया और सत्याग्रह बन्द करने की घोषणा की गयी। इस प्रकार इस आन्दोलन से धर्म और सस्कृति की रक्षा हुई है।

1941 से 1948 मे निजाम सरकार का अत्याचार अपनी सीमा से बाहर होगा। आर्य समाज को प्रत्येक अग्नि परीक्षा से होकर उस अन्तिम द्वन्द्व के लिए तैयार होना पडा जो हैदराबाद मे जनतन्त्र तथा स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए हुआ। धर्मान्ध मुसलमान गुण्डो तथा पुलिसो द्वारा गोलिया चलाई गयी थी, दुकानें व मकान जलाये गये और वरगल मे भी 1947 मे हिन्दुओ के घरो, दुकानो को लूट लिया गया तो आर्य वीर दल के नायक श्री मधुसूदन राव जी के नेतृत्व मे आर्य वीर ने इनका सामना किया। इस अवसर पर वरगल नगर मे डा. नारायण रेड्डी, मुत्तलय्या जी, और तीन आर्य वीरो की हत्या की गई। इस प्रकार हैदराबाद सरकार तथा मुसलमान गुण्डो द्वारा अत्याचार होते रहे थे तो आर्य वीर उनका मुकाबला करते ही रहे। जब 15 अगस्त 1947 को वर्षों की दासता के बाद भारत स्वतन्त्र हुआ तो समस्त देश मे आशाओ और अभिलाषाओ पर एक प्रकाश झलक पडा, पर हैदराबाद राज्य पर कुछ काल तक अन्धकार वहा की जनता पर छा गई क्योंकि इस राज्य को भारत से सर्वथा अलग रखने और फासिस्ती सिद्धान्तो पर एक स्वतन्त्र सार्वभौम सत्ता प्राप्त राज्य का स्वरूप देने की योजना बनायी गयी। जिससे नवाब मीर उस्मान अली खा ने 15 अगस्त1947को हैदराबाद की आजादी की घोषणा कर दी! इससे हैदराबाद राज्य एक इस्लामी राज्य और उस्मानअली खा को अपनी स्वतन्त्र राजनीतिक सत्ता का प्रतीक समझती आयी थी। वास्तव मे 85 प्रतिशत हिन्दू 15 प्रतिशत मुसलमान थे। इसके कारण यहा की जनता निजाम सरकार की इस नीति के सर्वथा विपरीत थी। इस नीति को राज्य वासियो के लिये घातक समझा गया। जनता मे आजाद हैदराबाद के नारों से अशान्ति उत्पन्न हो गयी। बहुसंख्यक जनता के मत को कुचल कर निजाम सरकार ने वहा अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हाथ-पाव मारना शुरू किये, वहा मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन ने तीन चार के रजाकार गुण्डो की भर्ती करउन्हे सैनिक शिक्षा देकर चारो ओर लूटमार और आतक फैला दिया। यह काल आर्य समाज तथा अन्य सभी देश भक्त सगठनो के लिए अत्यन्त कठिन समय था क्योकि निजाम सरकार ने राज्य मे समस्त स्वाधीनता तथा लोकतन्त्र प्रिय शक्तियो को पदुदलित करने का भीषण चक्र चला रही थी। आर्य समाज ने आजाद हैदराबाद नामक हकूमत के आन्दोलन को डट कर विरोध किया और उनके विरुद्ध युद्ध करने मे अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी। आर्य समाज के नेतागण सर्वश्री विनायकराव जी, नरेन्द्र जी, वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी आदि ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दो मे घोषित किया कि हैदराबाद स्वतन्त्र भारत का एक अग बन कर समृद्ध बन सकता है। इस हैदराबाद सरकार ने आर्य समाजो के अधिकारियो को गिरफ्तार करके जेलो मे भेज दिया। और राज्यकारो को पूर्ण छूट्टी दे दी कि हैदराबाद की आजादी को जो कोई विरोध करेगा उसे गोलियो से उडा दिया जाए। इसके लिये कासिम रजवी के नेतृत्व मे रजाकारो की सेना खडी कर दी गई थी। राज्य के भोली-भाली जनता को खत्म करने का प्लान भी बनाया गया। इसके लिए एक पिरेट सिडनी काटन नामक अग्रेज के द्वारा पाकिस्तान तथा गोआ के रास्ते हथियारो की खेपें लाया करता था। यह जहाज कभी हैदराबाद, बीदर और वरगल मे हथियारो की पेटिया उतार कर लौट जाया करता था तो सर्वश्री विनायक राव, नरेन्द्र जी, वन्देमातरम् जी आदि के आदेश से कुछ आर्य वीर अपने वेशभूषा रूप बदल कर गुप्तचर बन कर भूमिगत कार्य गुप्त रूप मे आ कर हवाई अड्डे के निकट साधारण व्यक्तियो के वेश मे जाकर रातो मे बराबर जागकर प्राण हथेली पर रख कर इस जहाज का नम्बर, पेटियो के नम्बर हथियारो की सख्या क्वालिटी तथा उन्हे विभिन्न स्थानो तक पहुंचाने वाले ट्रको के नम्बर ठीक-ठीक ज्ञात करते थे। जब सारी जनता निद्रादेवी की गोद मे विश्राम करती थी तब ये रात भर जाग कर प्राण हथेली मे रख कर ये भूमिगत देश भक्त उसकी टोह लेते थे और भारत सरकार के द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि हैदराबाद मे कोठी मे रहने वाले के. एम. मुन्शी तक ठीक-ठीक समाचार पहुचाने मे सफल होते थे।

(क्रमशः)

स्वामी वेदानन्द सरस्वती तथा वैदिक साधु आश्रम

लेखक—श्री बाबूराम जी आर्य-महामन्त्री
वि. वे. परिषद् 1584-7 सी चण्डीगढ़

बड़े दुःख और चिन्ता की बात है कि नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से सीधे सन्यास आश्रम को ग्रहण कर वेद धर्म के प्रचार के लिए असीम उत्साह तथा धार्मिक जोश अपने हृदय में ही संजोये हुए स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती अल्प आयु में ही समाहित अवस्था में ब्रह्म मुहूर्त में ही 18 अगस्त की प्रातः को काल का ग्रास बन ईश्वर को समर्पित हो गए।

इससे आर्य जगत् को प्रायः पंजाब और चण्डीगढ़ की जो क्षति विशेष हुई है वह अपूरणीय है। वैसे तो स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अतिरिक्त स्थाई रूप से पंजाब में कोई सन्यासी ही नहीं है हां स्वामी सच्चिदानन्द जी नया कोट अमृतसर भी सन्यास आश्रम प्रवेश करके प्रचार में अनथक संलग्न हैं।

स्वामी वेदानन्द जी तो पंजाब के अतिरिक्त दूर-दूर तक बड़े उत्साह के साथ जब-तब निमन्त्रण आने पर चले जाते थे। अब तो हमारे महान् विद्वान् पण्डित शास्त्रार्थ महारथी श्री अमरस्वामी जी महाराज भी चले गये और वह सन्यासाश्रम की अग्नि जो स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी सत्यानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी अच्युतानन्द और स्वामी दर्शनानन्द जी आदि वैदिक धर्म निष्ठों ने जलाई थी, वह धीरे-धीरे मद होती हुई बुझने को आ गई है।

अब तो हमारे वार्षिक उत्सवों की वेदी जो अनेक आर्य सन्यासियों से शोभायमान होती थी वहां अब अपनी पुरानी शान को बनाये रखने के लिए बहुत दौड़ धूप के पश्चात् एक भी सन्यासी महात्मा उत्सव में नहीं मिल पाते, यह अवस्था अति शोचनीय तथा विचारणीय है। जबकि आज भी सम्पूर्ण आर्य हिन्दू जनों में साधु सन्यासियों के दर्शन की लालसा बड़ी तीव्रता से बनी हुई है।

आज से बीस-पच्चीस वर्ष पहले स्वामी जी जब नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे तत्काल ही वृन्दावन गुरुकुल से स्नातक बन कर आए थे एकान्त में रह कर तप स्वाध्याय योगाभ्यास करने की इनकी तीव्र इच्छा के अनुसार चण्डीगढ़ और मुल्लापुर के मध्य एक कुटिया का प्रबन्ध किया गया। इन दिनों कई बार चण्डीगढ़ की आर्य समाजों में प्रचार के लिए आते रहे। एक दिन अभ्यास में बैठे हुए मैंने देखा प्राणायाम में श्वास की ध्वनि बड़े जोर से आ रही थी। बाद में मैंने इन से कहा कि महर्षि स्वामी जी ने प्राणायाम के सम्बन्ध में जो लिखा है आपने तो पढ़ा होगा। वह कहने लगे कि आप बतलाईये कि क्या लिखा है, मैंने कहा कि प्राणायाम के अभ्यास में श्वास की आवाज अपने को भी सुनाई न दे" वह अभ्यास सर्वोत्तम है" कहने लगे कि ह" यह बात आपकी ठीक है। यह स्वीकार उक्ति उनकी जिज्ञासा और सादगी का उदाहरण है। एक बार जब यह कहीं से आए एक गृहस्थ में ठहरे हुए थे तो मैं इन्हें मिलने गया, तो कहने लगे कि आज तो मैं आपके घर आ रहा था अच्छा हुआ आप यहां आ गये, मैंने कहा जो सेवा हो आज्ञा कीजिए, तो कहने लगे कि आपको बधाई देने के लिए आना था। उर्दू में जो आपने वेदों की व्याख्या की है वह एक ऐसा महान् कार्य है जिस की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है, उन्हें वेद अध्ययन और प्रवचन का बड़ा शौक था साथ ही अपना एक आश्रम स्थाई रूप में बनाने की धुन भी सवार थी बहुत इधर-उधर भ्रमण करने के पश्चात् रोपड़ का यह वैदिक साधु आश्रम है, जो रोपड़ के अनेक आर्य महानुभावों मा. दिलाराम, स्वर्गीय प्राणनाथ एडवोकेट, श्री ख्याली राम, और श्री बाबूराम आदि के सहयोग और अपने अनन्य उत्साह और परिश्रम से इसका निर्माण किया।

अच्छी प्रकार तो मैंने अन्दर बाहर देखा नहीं किन्तु सुनने में आया है कि इसमें अखरोट और बादाम के पेड़ भी लगाये हुए हैं और इसकी बोवा-बाद गोडी सिंचाई आदि अपने हाथों में कस्सी ले कर बड़े उत्साह से करते रहे, अब दौड़ धूप कर ट्यूबवैल भी लगा लिया जिस का अमृत जैसा शीतल जल उस समय हमें पीने को मिला जब अन्त्येष्टि संस्कार कराने के लिए चण्डीगढ़ से दापाहुरी को पहुंचे।

जब कि तलवाड़ा के आर्य बहन भाई बड़ी श्रद्धा और सुरक्षा से इनके शव को आश्रम में ले आये थे। मुखारविन्द की आकृति सर्वथा तेजोमयी, पचकी बनी हुई वैसी थी जैसे कि बीच में शान्त मुद्रा में बैठे हुए हैं।

सभी आर्य समाजों के श्रद्धा और योगदान से 20 किलो से ऊपर घृत और उससे अधिक हवन सामग्री आदि जिसमें चन्दन काफूर गुग्गल आदि की अधिकता थी मिला कर विधिवत् संस्कार कर दिया गया और एक श्रद्धाञ्जलि समारोह मनाने का निश्चय हो गया और उसके अनुसार समारोह भी 23 को सम्पन्न हो गया।

आश्रम की भावी व्यवस्था

मैंने आश्रम से पत्र आने पर श्री ओम् प्रकाश वर्मा को भी लिखा कि मैं तो आ नहीं सकूंगा। परन्तु इस आश्रम की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में कुछ सुझाव रूप में लिख दिया था और उधर पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को भी कुछ विस्तार सहित लिखा कि आप तो सभा प्रधान के नाते जाएंगे ही यह मेरा कुछ निवेदन है इत्यादि।

बाद में उनका उत्तर भी आ गया था अब इन शिष्टाचारी कार्यों के पश्चात् यह प्रश्न है कि इस आश्रम की व्यवस्था आगे कैसे हो या तो स्वामी जी अपने जीवन काल में कोई अपना साथी उत्तरदायी सन्यासी या ब्रह्मचारी बना जाते तो फिर इस पर अधिक सोचने की आवश्यकता शायद न होती, किन्तु अब यह स्थान सर्वथा रिक्त है इसलिए इस का यथोचित सम्बन्ध या व्यवस्था करनी अत्यन्त और तुरन्त आवश्यक है कि जिस से यह नहर के किनारे स्थित सुन्दर और रमणीय आश्रम सन्यास, वानप्रस्थ या किसी वैदिक आदर्श संस्था का स्थान बन कर आर्य समाज और वैदिक धर्म की गतिविधियों का केन्द्र हो सके।

स्वामी वेदानन्द जी कोई चलते-फिरते सन्यासी नहीं थे। ये अपितु एक महान् विशाल सार्वभौमिक संस्था आर्य समाज के प्रसिद्ध आर्य सन्यासी थे। जिस का संगठन सूत्र विश्व व्यापक और प्रसिद्ध प्रजातन्त्र के रूप में है आर्य सन्यासी का आश्रम आर्य समाज का है। आर्य समाज अपने प्रान्त की प्रतिनिधि सभा की शाखा है और प्रान्तीय सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ पूरी तरह सम्बन्धित है। इस में कोई एक व्यक्ति समाज या संस्था का मालिक नहीं हो सकता। यह सार्वभौमिक संगठन है जो 1875 से लेकर आज तक विश्व भर की आर्य समाजों और संस्थाओं में लागू है।

मेरा निवेदन

इसलिये मेरा निवेदन यह है कि जिस स्थान पर यह आश्रम है रोपड़ आर्य समाज, मोरिण्डा, खरड़, मोहाली और स्वामी जी की विशेष स्नेह पात्र आर्य समाज तलवाड़ा के दो-दो प्रतिनिधि, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के तत्वावधान में आश्रम में ही बैठ कर इसका निश्चय कर लें, अब इस में देर कदापि नहीं होनी चाहिए। विशेष कर रोपड़ आर्य समाज के मन्त्री प्रधान मा. दिलाराम, बाबूराम और खरड़ के श्री नन्दलाल जी मोहाली के मा. विशेष जी और मोरिण्डा के श्री ओम्प्रकाश महेन्द्र आदि बैठक में सम्मलित अवश्य हों।

मेरी अन्त में पुनः प्रार्थना है कि इस में देर न करें, ज्यों-ज्यों समय गुजरता जाएगा हो सकता है कई समस्याएं उभरती जाएं। इसके सिवा रोपड़ की आर्य समाजें, तथा दूसरे स्वामी वेदानन्द जी के श्रद्धालु इस ओर तुरन्त ध्यान देकर आश्रम की उन्नति के लिए कार्य आरम्भ कर दें।

स्वामी वेदानन्द स्मारक के लिए अपील

स्वामी वेदानन्द सरस्वती आर्य जगत् की महान् विभूति थे। वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् और प्रखर वक्ता थे, महायोगी थे, चरित्र के धनी थे, परम तपस्वी थे, वीतराग महात्मा थे, कुशल समाज सुधारक थे, प्रेम के देवता थे, युवक हृदय सम्राट थे, सन्त शिरोमणि थे, आर्य युवक परिषद के महान योद्धा थे, आर्य समाज के ज्योति स्तम्भ। उन्होंने अपना सारा जीवन देश, जाति, धर्म और समाज को अर्पण कर दिया था।

30 अगस्त को उनके हजारों भक्तों ने अश्रुधारा बहाते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं और यह फैसला किया कि ऐसे महामानव की स्मृति को चिरस्थाई रखने के लिए उनके द्वारा संस्थापित वैदिक साधु आश्रम रोपड़ में एक भव्य स्मारक स्वामी वेदानन्द पुस्तकालय के रूप में बनाया जाए। इसके साथ-साथ उनका प्रेरणादायक जीवन चरित्र लिखा जाए।

हमें अपने सन्यासियों पर सदा गर्व रहा है। उनकी ख्याति को अमर रखने के लिए हमारा कर्त्तव्य है कि हम से जो कुछ भी हो सकता है—हम करें।

जीवन चरित्र और उनके विशाल स्मारक में कम से कम एक लाख रुपय खर्च होने का अनुमान है। उनके भक्तों से और धर्म परायण जनता से अपील है कि वे अपनी दानशीलता का परिचय दें और स्वामी जी के स्मारक को स्वल्प समय में बनाकर खड़ा कर दें। जो दानी महानुभाव ग्यारह सौ रुपय या इससे अधिक धन राशि देंगे उनका नाम पत्थर पर अंकित किया जाएगा।

स्मरण रहे कि स्मारक का शिलान्यास पूज्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दीनानगर के कर-कमलों द्वारा 30-8-87 को सम्पन्न हो चुका है।

दानी महानुभाव अपनी धनराशि बैंक ड्राफ्ट, मनीआर्डर व चैक द्वारा आश्रम के संचालक या प्रधान के पते पर भेजने का कष्ट करें।

पता—स्वामी वेदानन्द वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड, रोपड़ (पंजाब)

गुरुकुल शुक्रताल का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

2 से 5 नवम्बर तक गुरुकुल महा विद्यालय शुक्रताल का 23 वा वार्षिक महोत्सव अपूर्व धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलन का आयोजन किया गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा सरिया मोड़ना, जंजीर तोड़ना, कांच पीसना आदि के शक्ति प्रदर्शन किए गए। श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी आनन्दवेश जी की प्रेरणा पर अनेक लोगो ने आर्य समाज के कार्य को आगे बढाने का सकल्प लिया, अनेको युवको ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये और कुरीतियो के परित्याग का व्रत ग्रहण किया उत्सव मे आने वाले सभी हजारो लोगो के लिए आश्रम की ओर से भण्डारे का प्रबन्ध किया गया। आर्य जगत मे यह एक ऐसा गुरुकुल है जो एक पौराणिक गढ शुक्रताल मे जहा अनेको गंगा स्नान के मेले लगते हैं। यह अपनी वेद पताका फहरा रहा है, और वेदो का शखनाद कर रहा है।

—

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से 18 10 87 से 28-10 87 तक वेद प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। यजुर्वेद के मन्त्रो से दोनो समय यज्ञ किया गया।

प राम कुमार जी आर्य उपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा हरियाणा, के पूरे सप्ताह तक प्रवचन होते रहे। डा वासुदेव कृष्ण जी शास्त्री एम ए पी एच डी के अतिरिक्त आचार्य राम प्रसाद जी वेदालकार उपकुलपति गुरुकुल कांगडी के मनोहर उपदेश हुए। प सत्यपाल जी पथिक के भजन हुए। 24-10-87 रात्रि को युवकों का प्रतिनिधि सम्मेलन हुआ। जिसमे आर्य युवक सभा पजाब का सविधान स्वीकृत किया गया तथा नए पदाधिकारियो का चुनाव हुआ।"

25 10 1987 को मुख्य समारोह का आयोजन किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया गया। 80 के लगभग नए यजमान सपरिवार बने। श्रीमति सुशील जी वर्मा प्रिंसीपल एस डी बी कालेज ने ध्वजारोहण किया। बच्चो के गीत के साथ प राम कुमार जी आर्य, प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री, प सुखपाल जी शास्त्री, आचार्य रामप्रसाद जी का प्रवचन हुआ। जनता मे बहुत अधिक उत्साह था एवं अच्छा प्रभाव रहा। इसके पश्चात् ऋषिलगर का प्रबन्ध था। जो इस समारोह की शोभा बढ़ा रहे थे वे श्री नरेन्द्रसिंह जी मल्ला के और शर्मा ने सभी अधिकारियों एवं सदस्यो ने जो सहयोग दिया वह सराहनीय था।

—रोशनलाल शर्मा
मन्त्री

शुद्धि समाचार

दिनाक 15-11-87 को आर्य समाज मन्दिर समालखा मे यज्ञ हवन किया तथा मुसलमान नटो ने अपनी इच्छानुसार वैदिक धर्म ग्रहण किया। यह कार्यवाही हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति, हरियाणा के महामन्त्री देवानन्द सरस्वती ने शुद्धि संस्कार करवाया और कार्यकर्ता प्रधान श्री रामरत्न तथा श्री मानेराम उपदेशक डा बलराज, श्री ऋषि प्रकाश और श्री वेदप्रकाश आदि ने भाग लिया और शादरी मे सम्मत दिखाई गई तथा प्रीतिभोज उन्ही द्वारा वितरण कराया गया।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/J.L 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 36. 28 मार्गशीष सम्वत् 2044 तदानुसार 13 दिसम्बर 1987 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के विघटन का प्रयास क्यों हो रहा है

क्या इसके पीछे आर्य समाज को पंजाब में समाप्त करने का कोई बड़ा षड्यन्त्र तो नहीं है ?

लेखक—श्री —वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन 4 अक्तूबर 1987 को हुआ था। प्रधान पद के लिए दो नाम पेश किए गए थे एक वीरेन्द्र का दूसरा योगेन्द्रपाल सेठ का। जब मतदान हुआ तो वीरेन्द्र के पक्ष मे 144 और योगेन्द्र-पाल सेठ के पक्ष मे केवल 12 वोट पड़े। नैतिकता, विधान और सिद्धान्त तीनो के अनुसार यदि श्री योगेन्द्रपाल सेठ को कोई आपत्ति थी तो वह यह सारा विषय सार्वदेशिक सभा के सामने रख सकते थे। वह जाच करने के पश्चात् जो भी फैसला करती उस उन्हे स्वीकार कर लेना चाहिए था परन्तु उन्होने ऐसा नही किया। क्योकि वह सभा के प्रधान बनने के लिए बहुत उत्सुक थे। इसलिए उन्होने अपनी एक अलग सभा बना ली और 6 नवम्बर को उन्होने स्वय को एक बोगस सभा का प्रधान घोषित कर दिया। 15 नवम्बर को अपनी इस सभा के अधिकारियो के नामो की घोषणा करने के लिए एक सभा बुलाई जिसमे केवल 25 व्यक्ति सम्मि-लित हुये। उनमे से 13 वह थे जो सभा के प्रतिनिधि ही न थे और उनमे वह भी थे जो किसी समाज के सदस्य भी नही थे। परन्तु श्री योगेन्द्रपाल ने उस सभा की भी प्रतीक्षा नही की और उससे भी एक दिन पहले ही अपनी बोगस सभा के अधिकारियो और अन्त-रग सभा के सदस्यो के नामो की घोषणा कर दी। किसी भी प्रजातान्त्रिक सस्था मे यह नही देखा गया कि एक व्यक्ति स्वय ही प्रधान बन जाए स्वय ही अपने अधिकारियो की नियुक्ति कर दे और कहने लगे कि वह सभा का प्रधान है। कल को कोई भी व्यक्ति अपने घर मे बैठ कर यह कह दे कि वह देश का राष्ट्रपति है तो उसे कोई राष्ट्रपति नहीं कहेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का एक विधिवत पारित विधान है जो भी व्यक्ति उस विधान के अनुसार निर्वाचित नही होता वह सभा का प्रधान नही बन सकता। श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने सभा के विधान को जला दिया और घोषणा कर दी कि वह सभा का प्रधान है। और उसके पश्चात् उन्होंने सब समाचार पत्रो मे यह प्रकाशित करा दिया कि वह पजाब सभा के प्रधान है और उन्होने जो कुछ किया है सार्वदेशिक सभा के आदेश पर किया है।

मैं इस समय तक इस विषय मे चुप रहा हू क्योकि मैं इस विवाद को सार्व-जनिक रूप नही देना चाहता था। मै नही चाहता कि पजाब मे जो स्थिति इस समय अकाली दल की बन गई है वही आर्य समाज की भी बने। इसलिये मैने आज तक उन समाचारो का खण्डन नही किया जो श्री योगेन्द्रपाल सेठ और ऋषि-पाल सिह ने पजाब के समाचार पत्रो मे प्रकाशित कराये हैं अब जबकि पानी सिर से गुजरने लगा है मैं चाहता हू कि सारी स्थिति आर्य जनता के सामने रख देना चाहता हू ताकि वह स्वय फैसला करें कि अपराधी कौन है।

जो कुछ योगेन्द्रपाल सेठ और ऋषि-पाल सिह कर रहे हैं उससे न तो उनका कुछ बिगड़ेगा न मेरा कुछ बिगड़ेगा। यदि कुछ बिगड़ेगा तो आर्य समाज और आर्य समाज की सस्थाओ का बिगड़ेगा। इन्होने पजाब सरकार के शिक्षा विभाग को लिख दिया है कि वह शिक्षा सस्थाओ की नई कमेटिया बना रहे हैं। इसका एक परिणाम यह होगा कि सभा से सम्बन्धित सब स्कूलो और कालेजो की दो-दो कमेटिया बन जाएगी। इस आधार पर सरकार उन सब की ग्रान्ट बन्द कर सकती है और विघटनकारी तत्वो को इससे प्रोत्साहन मिलेगा इसीलिए मैं यह आरोप लगा रहा हू कि आर्य समाज के विघटन के लिए एक बहुत बड़ा षड्यन्त्र रचा जा रहा है। इसलिए मेरा यह आरोप निरा-धार नही है।

अब इस सभा की वास्तविक स्थिति क्या है ? वह भी मैं आर्य जनता के सामने रख देना चाहता हू ताकि किसी को कोई भ्रान्ति न रहे और सब को पता चल जाए कि यह जो बोगस सभा बनाई गई है, यह किस उद्देश्य से बनाई गई है और उसके द्वारा आर्य समाज के लिए किस प्रकार की कठिनाईया पैदा हो सकती है। श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने अपनी बोगस सभा के अधिकारियो और अन्त-रग सदस्यो की जो सूचि घोषित की है उसमे 71 व्यक्तियो के नाम दिए गए है। इनमे 23 वह हैं जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रतिनिधि ही नही है और कुछ वह भी है जो किसी आर्य समाज के भी सदस्य नही है, उन्हे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा मे कैसे रखा जा सकता है इसका फैसला मैं आर्य जनता पर छोड़ता हू। एक यही तथ्य बताता है कि यह आर्य प्रतिनिधि सभा सर्वथा अवैधानिक और बोगस है। 71 मे से जो शेष 48 रह जाते है उनमे से 30 के लगभग वह है जिन के पत्र मेरे पास आ गए हैं कि उनका इस सभा से कोई सम्बन्ध नही है न उन्हे इसकी अन्त-रग सभा मे रखने से पहले उनसे पूछा गया है।

श्री योगेन्द्रपाल सेठ और श्री ऋषि-पाल सिह जी सम्भवत: यह कहे कि मैं जो कुछ लिख रहा हू मेरे पास इसका क्या प्रमाण है। मैं वह भी नीचे दे रहा हू।

1. लुधियाना से श्री नरेन्द्र सिंह भल्ला, श्री एस. बी. वाधिया और श्री धर्मपाल भसीन लिखते हैं कि ईश्वर आप को शक्ति दे कि आप इन सभी कठि-नाईयो का शीघ्र हल ढूढ कर आर्य समाज को सही रास्ता दिखाए हम सब आपके साथ है सेठ जी की बैठक मे हम शामिल नही हुए।

2 भठिण्डा से श्री प्रकाश जी मगगा लिखते है कि वे तो योगेन्द्रपाल सेठ जी को जानता भी नही मैंने और बजीर चन्द जी ने उनको किसी किस्म की अनुमति नही दी है।

3 अमृतसर से डा रामनाथ जी शर्मा लिखते हैं—कि बड़े दु:ख की बात है कि सेठ ने बोगस सभा बना कर मेरा नाम दे दिया है। मेरा सेठ की बोगस सभा से कोई भी सम्बन्ध नही है।

4 नवाशहर से श्री वेद प्रकाश जी सरीन लिखते है कि—मुझे पता भी नही कि सेठ जी ने कोई अन्तरग सभा बनाई है। सेठ जी ने मुझे अपनी अन्तरग सभा मे लिया है इसके बारे मे मुझ से कोई बात नही हुई।

5 कपूरथला से श्री रोशनलाल जी लिखते है कि श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ द्वारा बनाई गई अन्तरग सभा मे सम्मि-लित होने के लिए मैंने कोई स्वीकृति नही दी न ही उनके द्वारा बनाई गई किसी सभा मे मैं सम्मलित हुआ हू।

6 आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर के मन्त्री श्री नरेश कुमार जी एक पत्र द्वारा श्री ऋषिपाल सिह को लिखते है। जिसकी प्रतिलिपि मुझे आई है कि आपकी सभा मे अपना तथा इस समाज के मान्य प्रधान श्री राम प्रताप जी का नाम देख कर मन को दु:ख हुआ क्षमा करे हम आर्य समाज के अपयश का कारण बनने वाली नव गठित आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे किसी भी रूप मे सम्मलित नही हो सकते।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

यज्ञ विधि को महर्षि दयानन्द के अनुरूप करें

लेखक—श्री आचार्य वेदभूषण जी अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद—27

वास्तव मे महर्षि दयानन्द शास्त्रो के अद्भुत मर्मज्ञ थे। अग्निहोत्र विधि के सयोजन मे महर्षि ने जिस सूक्ष्म-बूझ का परिचय दिया है उससे पता चलता है कि महर्षि परम वैज्ञानिक व कर्मकाण्ड के ज्ञाता थे।

महर्षि दयानन्द के समय अग्निहोत्र विधि मे वैसे ही अनर्थ चल रहा था जैसे आज आर्य समाज के क्षेत्र मे चल रहा है।

एक दर्जन से भी अधिक गृह्य सूत्र प्रचलित थे जिनमे परस्पर यज्ञ विधि भेद दृष्टिगोचर होता था।

तब महर्षि ने कुछ चुने हुए आचार्यों के गृह्य सूत्रो का गहन अध्ययन कर सबका वैज्ञानिक आधार पर सामजस्य कर सस्कार विधि का प्रणयन किया। किन्तु आज विद्वानो एव पुरोहितो के आलस्य व स्वाध्यायहीनता के कारण यज्ञ व सस्कारो की विधि मे मनमाने दिल चाहे उलटफर हो रहे हैं।

प्राय: पुरोहितो मे असन्तोष रहता है कि उन्हे दक्षिणा बहुत ही कम मिलती है। इसीलिए अनेक पुरोहित अपने बच्चो मे भी वैश्य वृत्ति भर रहे हैं। परम्परागत पौरोहित्य के कार्य को वे तिलाजली दे रहे है। इसमे जहा यजमानो की प्रवृत्ति का दोष है कि विद्वानो का सम्मान न करना तथा 21 अथवा 31 रुपए की दक्षिणा मात्र देकर विद्वान् को विदा करना जिसका परिणाम यह हो रहा है कि यजमान की मृत्यु हो जाने पर अन्त्येष्टि क्रिया के लिए भी समय पर पुरोहित तक नही मिल रहे। इस पर यजमानो को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

किन्तु हमारे पुरोहितो को भी सोचना चाहिए कि वे विधिहीन यज्ञ व सस्कार न कराया करें। महर्षि की सस्कार विधि को ध्यान से पढा करे और उसी प्रकार से विधि पूर्वक यज्ञ व सस्कार कराया करें। यज्ञ व सस्कारो मे मन चाहे परिवर्तन परिवर्द्धन व सशोधन से यज्ञ भी एक पारम्परिक तमाशा मात्र बनकर रह जाएगा।

यज्ञ मे किसी भी मन्त्र को कही पर भी विनियुक्त कर देने की दुष्प्रवृत्ति को हमे रोकना होगा।

यज्ञ और सस्कारो मे जो विधि विधान हैं उनके पीछे वैज्ञानिक रहस्य छिपे हैं। मन्त्रों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होता है। जिस सन्दर्भ मे यज्ञ किया जाता है उस सदर्भ का पृथक्-पृथक् विनियोजन महर्षि ने कर रखा है उसे समझ कर ठीक विधि सहित यज्ञ कराना पुरोहितो का दायित्व है। यदि केवल मात्र एक ही प्रचलित पद्धति से ही सस्कार अथवा विशिष्ट यज्ञ करने हैं तो फिर पुरोहित की आवश्यकता ही क्या है?

वास्तव मे आर्य जगत् मे प्रचलित यज्ञ को तमोगुणी यज्ञ ही कहा जाएगा। योगेश्वर कृष्ण ने गीता मे सत्व, रज और तमोगुणी भेद यज्ञ के किए हैं उस आधार पर हमारा यज्ञ तामसिक कोटि मे ही गिना जाएगा।

क्योकि हम यज्ञ मे कुछ भयकर भूले अनजाने मे कर रहे हैं। यज्ञ के प्रति हमारी उपेक्षा का ही फल है कि यजमान पुरोहितो की उपेक्षा करने लगता है। क्योकि कर्म जैसा होगा फल भी वैसा ही होगा।

देखिए हमारे यज्ञ मे जो भीषण दोष है उनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना ही हमार लेख का उद्देश्य हैं।

ध्यान दीजिए कहा आप भी तामसिक यज्ञ तो नही करते? यदि आप कपास अथवा रूई की बत्ती बना कर यज्ञ कुण्ड मे अग्नि का आधान करते है तो यह निश्चय ही भयकर दोष है।

कपास या कपडे का जलाने से वायु मण्डल मे दुर्गन्ध फैलता है। अत. यज्ञ कुण्ड मे कपास का प्रयोग यज्ञ को भ्रष्ट करना मात्र है। कपास का प्रयोग केवल दीप मे ही किया जाना चाहिए न कि यज्ञ कुण्ड मे। देखिए सस्कार विधि मे महर्षि लिखते हैं कि—

ओम् भूर्भुव. स्व:। इन तीन महाव्याहृतियो से घृत दीप प्रज्वलित कर फिर उससे कपूर आदि प्रज्वलित कर अग्न्याधान करें।

इससे स्पष्ट हो जाता है यज्ञ कुण्ड मे कपास या रूई का प्रयोग बिलकुल नही होगा। दूसरे प्रत्येक यज्ञ के अवसर पर घृत दीप अवश्य रखा जाना चाहिए।

दीपक मे कपास तो नाम मात्र की जलती है केवल बत्ती के सामने की नोक भर। दीपक मे कपास केवल घी पहुंचाने मात्र का काम करती है। पर यज्ञ मे तो पूरी की पूरी कपास जल जाती है,

यदि दस हजार घरो मे भी मान लीजिए कि कपास की बत्ती जलाई जाए तो प्रतिदिन हम वातावरण मे कितना प्रदूषण बढा रहे हैं? यह गम्भीरता से विचारने की बात है। इस प्रथा को दृढता से रोका जाना चाहिए।

दूसरा यज्ञ में गाय के घृत का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। भैंस का घृत तमोगुणी होता है।

आप विचारिए कि महर्षि ने तमोगुण के दो लक्षण बताए है—प्रथम आलस्य दूसरा जाड्यता। भैंस मे ये दोनो गुण स्पष्ट देखे जा सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि भैंस के घी मे भैंस के ही गुण होगे। जो भैंस के घी से यज्ञ करता है वह यज्ञ तामसिक ही हो जाएगा।

पुरोहितो को चाहिए कि वे यजमान को बतला दें कि गाय का घी यज्ञ के लिए अनिवार्य है। अन्यथा तुम यज्ञ के पुण्य से वंचित ही रह जाओगे। आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है। गोपालन नारो से नही होगा जब गाय के दूध और घी के सेवन की जनता मे प्रवृत्ति बढेगी तभी गोपालन मे वृद्धि होगी।

हमने इस वर्ष लगभग एक हजार किलो गाय का घी यज्ञ मे जलवाया है। प्रत्येक यजमान को प्रेरणा देना व उन्हे सस्कारित करने का ही तो दायित्व पुरोहित का है।

जब यजमान ही नियमो व धर्म का पालन नही कराता तब "धर्म एव हतो हन्ति" ही होगा। इसीलिए पुरोहित मारा जा रहा है।

सरकार ने चन्दन की लकडी की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। महर्षि ने यज्ञ मे चन्दन की लकडी जलाने का विधान किया है कम से कम समिदाधान तो चन्दन मे ही करना चाहिए देखिए सस्कार विधि मे समिदाधान प्रकरण को।

हमे सरकार से माग करनी चाहिए कि आर्य समाजो को चन्दन की लकडी के लिए लायसैंस दिए जाने चाहिए। पर हम तो अपने शास्त्रो को मानें तभी तो यह बात उठेगी।

घृत मे केसर या कस्तूरी मिलाने का आदेश है। हमे कस्तूरी न मिले तो केसर तो मिलवानी ही चाहिए। बौद्धिक मानसिक और भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रदूषण नष्ट करना ही तो मुख्य रूप से ब्राह्मणो का विद्वानो का पुरोहितो का दायित्व है।

आज ससार मे प्रदूषण ही सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या के रूप मे उभर रहा है कारण स्पष्ट है कि ब्राह्मण विद्वान् प्रमादी हो गया है। हम अपने दायित्व के प्रति जागरूक होना चाहिए।

यह दोष तो कुछ आहुतानीय द्रव्यों के हो गए। अब विधि पर भी ध्यान दीजिए—

आचमन का सम्बन्ध यज्ञ से है। स्तुति प्रार्थना से नही है अत: आचमन यज्ञ के ठीक आरम्भ मे ही होना चाहिए देखिए सस्कार विधि को।

यदि सस्कार विधि को ध्यानपूर्वक पढा तो पता चलेगा कि—स्वस्ति वाचन और शान्तिकरण सब सस्कारो मे यज्ञ से पूर्व ही नही है। कही आदि मे, कही मध्य मे, कही अन्त मे पढा जाना चाहिए जहा जैसा विधान महर्षि ने किया है। कही इन मन्त्रो के स्वाहाकार का भी विधान है।

अयन्त इध्म आत्मा से पाच घृताहुतिया केवल गृहस्थी के लिए ही हैं वह भी विशेष सस्कारो मे यह तब पता चलेगा जब ध्यान से सस्कार विधि को पढने का कष्ट किया जाएगा।

आघारावाज्य आहुति से जलसिंचन के बाद व यज्ञ के अन्त मे भी चार घृताहुति दी जानी चाहिए।

एक ही समय मे दोनो कालो की आहुति मे दूसरी बार दूसरे काल की आहुति देते समय भी सर्वप्रथम इन्ही चार मन्त्रो से घृताहुति दी जानी चाहिए।

सायकाल के यज्ञ मे दोनो समय की आहुति देनी हो तो प्रथम सायकालीन बाद मे प्रात: कालीन मन्त्रो से आहुति होनी चाहिए। जब तीन बार सर्वं वै पूर्णं स्वाहा हो जाए तो उसके बाद [illegible] शतधार सहस्रधार का मन्त्र पढना [illegible] घी डालना सर्वं वै पूर्ण" का उपहास मात्र लगता है।

सामान्य प्रकरण के यज्ञ मे प्रथम विशेष मन्त्रो से आहुति देकर फिर दैनिक मन्त्रो की आहुति देना भी अव्यावहारिक है। नित्य यज्ञ की आहुति प्रथम दी जानी चाहिए फिर विशेष मन्त्रो की।

किन्तु हम सभी सस्कार विधि के विधान की उपेक्षा करके स्वेच्छा से विधि विधान चला रहे हैं परिणाम यह हो रहा है कि यज्ञ से सगतिकरण (सगठन) न होकर विघटन हो रहा है। जब यज्ञ अर्थात् क्रिया विपरीत होगी तो परिणाम भी उलटा ही होगा।

इसलिए हम बडी विनम्रतापूर्वक अपने विद्वानो व पुरोहितो का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहते हैं कि—हमे सस्कार विधि को सामने रख कर उसे बारम्बार गम्भीरता से पढ कर ठीक विधि के अनुरूप ही यज्ञ कराना चाहिए। तब यजमान आपको दक्षिणा देते समय सम्मानपूर्वक देगा।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के पत्र और पत्रकार

पिछले दिनों मैंने डा. भवानी लाल जी भारतीय की पुस्तक महर्षि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक के विषय में अपने विचार आर्य मर्यादा के पाठकों के सामने रखे थे। अब उनकी एक और पुस्तक "आर्य समाज के पत्र और पत्रकार भी मुझे देखने को मिली है जैसा कि मैंने पहले भी एक बार लिखा था आर्य समाज में अच्छे लेखकों की कमी नहीं है एक से एक बढ़ कर मिलते हैं। परन्तु उनको तो वह प्रोत्साहन मिलता है जो मिलना चाहिए न वह संरक्षण और समर्थन मिलता है जिसकी कि आवश्यकता है। आर्य समाज के गौरवमय अतीत का कुछ अनुमान इन्हीं पुस्तकों से हम लगा सकते हैं। डा. भवानी लाल जी भारतीय आर्य समाज के उन जाने माने लेखकों में से हैं जो पिछले तीस वर्षों से आर्य समाज में साहित्य लेखन और शोध का कार्य कर रहे हैं और उनके इस समय तक 60 के लगभग छोटे बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

आर्य समाज के पत्र और पत्रकार नाम की पुस्तक को पढ़ने से कुछ अनुमान हो जाता है कि आर्य समाज का कितना विस्तार हुआ था अब वह धीरे-2 कुछ सिकुड़ रहा है। इसलिए अब उस प्रकार का साहित्य भी पढ़ने को नहीं मिलता। जिससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि आर्य समाज क्या था। डा. भवानी लाल भारतीय ने जो पुस्तक लिखी है उसे प्रकाशित हुए तो अब लगभग 15 वर्ष से ऊपर हो चुके हैं परन्तु आर्य जनता का ध्यान इसकी ओर नहीं गया। इसमें उन्होंने लगभग साढ़े तीन सौ ऐसे समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का उल्लेख किया गया है जो पिछली एक शताब्दी में आर्य समाज और उसकी विचारधारा का प्रचार करते रहे हैं। केवल यही नहीं उन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त मराठी उड़िया, तेलगू, मलयालम कन्नड, बंगला भाषा और सिन्धी भाषा के पत्रों का भी उल्लेख किया है। उर्दू के पत्र तो कई थे और अंग्रेजी में भी कई पत्रिकाएं प्रकाशित होती रही है। कई ऐसे पत्र भी थे जो किसी आर्य संस्था से सम्बन्धित तो न थे परन्तु आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के सामने रखते रहते थे। श्री भारतीय ने विदेश में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं के विषय में भी बहुत कुछ लिखा है और उन विख्यात आर्य समाजी पत्रकारों का परिचय भी दिया है जिन्होंने इस क्षेत्र में नाम पैदा किया था उनमें गुरुकुल कांगड़ी के कई स्नातक भी थे।

"आर्य समाज के पत्र और पत्रकार, यह पुस्तक एक प्रकार से आर्य समाज के अतीत के इतिहास को हमारे सामने रखती है। आज भी कई स्थानों पर ऐसे पत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं जिनके द्वारा आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार होता है परन्तु यह अधिकतर वह है जो या तो प्रान्तीय सभाओं से सम्बन्धित हैं या आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं से हैं परन्तु आज से लगभग तीस-चालीस वर्ष पहले ऐसे दैनिक पत्र भी हुआ करते थे जो जहां एक तरफ देश और विदेश की स्थिति पर अपने विचार अपने पाठकों के सामने रखते थे वहां आर्य समाज की विचारधारा भी जनता के सामने रखते थे। पंजाब में दो ऐसे पत्रों ने दैनिक प्रताप और दैनिक मिलाप ने इस दिशा में सराहनीय काम किया है। दैनिक प्रताप को प्रारम्भ करने से पहले इसके संस्थापक स्वर्गीय श्री महाशय कृष्ण जी ने अपना साप्ताहिक प्रकाश चलाया था जो एक प्रकार से आर्य समाज का मुख पत्र समझा जाता था। इस प्रकार श्री महाशय खुशहाल चन्द जी ने साप्ताहिक गजट शुरू किया था। इसी प्रकार और भी कई पत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित होती रही हैं। आर्य समाज का जो प्रचार हुआ उसमें उन पत्र पत्रिकाओं का बहुत अधिक योगदान था। देश के बंटवारा से पहले मुसलमानों की ओर से आर्य समाज पर और महर्षि दयानन्द के विरुद्ध जो कुछ लिखा जाता था उसका उत्तर यह पत्र पत्रिकाएं ही दिया करती थी।

श्री भवानी लाल जी भारतीय ने इस दिशा में जो शोध कार्य किया है वह अत्यन्त सराहनीय है। जब बड़े-2 शिक्षा विशेषज्ञ या साहित्यकार शोध का कोई कार्य करते हैं तो कई बार उनका लक्ष्य यह होता है कि उसके द्वारा कोई धनोपार्जन कर सकें जो व्यक्ति आर्य समाज के विषय में शोध करता है उसे धनोपार्जन की कोई आशा नहीं होती वह केवल अपना कर्त्तव्य समझ कर ही यह काम करता है। इस प्रकार डा. भवानी लाल जी भारतीय आर्य समाज की जो सेवा कर रहे हैं इसके लिए उनकी जितनी प्रसंशा की जाए कम है। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि अब आर्य समाजों में उस प्रकार के पुस्तकालय नहीं रहे जैसे कि पहले हुआ करते थे परन्तु यदि हम चाहते हैं कि वैदिक विचारधारा का प्रचार हो तो प्रत्येक आर्य समाज में कुछ पुस्तकें ऐसी अवश्य रखनी चाहिए जिनके द्वारा आर्य समाज की विचारधारा, महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित साहित्य और आर्य समाज के इतिहास की कुछ पुस्तकें अवश्य होनी चाहिए। लगभग 50 वर्ष पहले आर्य समाजियों के विषय में यह कहा जाता था कि इन में से प्रत्येक चलती-फिरती आर्य समाज है आज वह स्थिति नहीं है क्योंकि स्वाध्याय के लिए जो प्रवृत्ति थी वह अब नहीं रही। आवश्यकता इस बात की है कि हम आर्य समाज के अतीत को समझने का प्रयत्न करें उसी के आधार पर हम अपने वर्तमान को समझने और अपने भविष्य को बना सकेंगे। डा. भवानीलाल जी भारतीय द्वारा लिखित साहित्य हमारे लिए बहुत उपयोगी हो सकता है। इसलिए उन्होंने जितनी भी पुस्तकें आर्य समाज के विषय में लिखी हैं जो आर्य समाजें वह मंगवा सकें। उन्हें मंगवानी चाहिएं।

—वीरेन्द्र

दक्षिण भारत में वेद प्रचार

दक्षिण भारत और उत्तर भारत में कितना अन्तर है इसका कुछ अनुमान हम दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कई नाटकों और कहानियों से लगा सकते है उन्हें देख कर हमें यह भी पता चलता है कि एक तो वहां संस्कृत का प्रचार अधिक है दूसरा यह कि वेदों और दूसरे शास्त्रों में जनता की अधिक श्रद्धा है। कई बार हम यह देखते हैं कि दक्षिण भारत में प्रायः सब लोग यज्ञोपवीत भी पहनते हैं सिर पर चोटी भी रखते है। पाठशालाओं में पढ़ने वाले छोटे-छोटे बच्चों को यज्ञोपवीत पहनाया जाता है और सिर पर मोटी सी चोटी रखने के लिए भी प्रेरित किया जाता है पूजा, पाठ के समय वह धोती पहन कर नित्य कर्म करते हैं।

मै बहुत देर से यह सोच रहा था कि दक्षिण भारत में वेदों के प्रति इतनी श्रद्धा क्यों है। वेदों का वह जो अर्थ करते हैं वह कुछ हमसे भिन्न होता है परन्तु उन्हें वेदादि धर्म ग्रन्थों में श्रद्धा बहुत अधिक है इस का कुछ अनुमान मैंने मद्रास से प्रकाशित होने वाले एक अंग्रेजी दैनिक पत्र हिन्दू को देख कर लगाया है। यह पत्र शायद हमारे देश में सबसे पुराना पत्र है। एक शताब्दी पूरी कर चुका है। इस पत्र में प्रतिदिन वेद के एक मन्त्र का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित होता है। मै क्योंकि इस समाचार पत्र को प्रायः प्रतिदिन पढ़ता हूं इसलिए मेरा पहले ध्यान वेद मन्त्र के उस अनुवाद की तरफ जाता है उसके साथ जो व्याख्या की होती है। यह मै बहुत देर से देख रहा हूं कि दैनिक हिन्दू में वेद के एक मन्त्र का अंग्रेजी अनुवाद अवश्य दिया जाता है इसे देख कर ही मैंने समझा कि दक्षिण भारत में वेदादि धर्म ग्रन्थों के लिए इतनी श्रद्धा क्यों है। जिस पत्र को सबसे अधिक पढ़ा जाता है उसमें यदि नित्य प्रति वेद मन्त्रों की व्याख्या प्रकाशित की जाती है तो उनका कुछ न कुछ प्रभाव तो इसके पाठकों पर पड़ता है। उत्तर भारत में स्थिति बिलकुल और है। हमारे दैनिक समाचार पत्र विशेषकर अंग्रेजी दैनिक पत्र अपने आपको धर्म-निर्पेक्ष कहते हैं इसलिए वह अपने धर्म के विषय में कुछ भी प्रकाशित नहीं करते उनकी एक कठिनाई यह भी होती है कि उनके सम्पादक कई बार भिन्न 2 धर्मावलम्बी होते हैं। कभी कोई हिन्दू होता है, कभी कोई मुसलमान, कभी कोई इसाई इसलिए वह इधर ध्यान नहीं देते। दक्षिण भारत में हिन्दू धर्म के लिए अधिक श्रद्धा है। इसलिए उसका सबसे बड़ा दैनिक पत्र प्रतिदिन वेद मन्त्रों की व्याख्या प्रकाशित करने पर विवश हो जाता है। यह सम्भवतः इसलिए भी हो कि लोगों को अपने धर्म में विश्वास और श्रद्धा है इसलिए यह दैनिक पत्र भी यह समझता है कि यदि उसने अपने पाठकों की संख्या बढ़ानी है तो उसे धर्म प्रचार का आश्रय भी लेना पड़ेगा। हमें भी इस दिशा में सोचना चाहिए कि हम जनता तक पहुंचने के लिए क्या कुछ कर सकते हैं और जो भी साधन इस के लिए हमें अपनाने पड़ें हमें अपनाने चाहिएं।

—वीरेन्द्र

व्याख्यान माला—११

धनी को कृपण नहीं होना चाहिए

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गतांक से आगे)

दातव्यमितियद्दान दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दान सात्त्विक स्मृतम् ।35।

देने योग्य दान, ऐसे व्यक्ति को, जिसको प्रतिफल मे उपकार की इच्छा न हो, ऐसे सपात्र को दिया जाता है, तो उस दान को सात्त्विक दान कहा जाता है।

यद्यदिष्टतम लोके यच्चास्य दयित गृहे ।
तत्तद्गुणवते देय तदेवाक्षयमिच्छता ।36।

ससार मे जो जो वस्तु बहुत प्यारी है तथा जो इस के (दान लेने वाले को) गृह मे प्यारा है। उस उस पदार्थ के अक्षय को चाहता हुआ दाता गुणवान् मनुष्य को वही वही पदार्थ दान मे देवे।

प्रियाणि लभते नित्य प्रियद प्रियकृत्तथा ।
प्रियो भवति भूतानामिह चैव परत्र च ।37।

प्रिय वस्तु को दान करने वाला तथा प्रिय हित करने वाला मनुष्य दान के प्रति फलो मे प्रिय पदार्थ ही पाता है तथा इस लोक मे व परलोक मे सभी प्राणियो का आदर पात्र होता है।

अमित्रमपि चेद्दीन शरणैषिणमागतम् ।
व्यसने योऽनुगृह्णाति स वै पुरुषसत्तम ।38।

विपत्ति म हीन अवस्था वाले शरणागत शत्रु पर भी यदि कोई मनुष्य अनुग्रह करता है तो ऐसा मनुष्य निश्चय ही पुरुषो मे श्रेष्ठ होता है।

ईश्वरा भूरिदानेन यल्लभन्ते फल किल ।
दरिद्रस्तच्च काकिण्या प्राप्नुयादिति न श्रुतम् ।39।

धनाढय लोग बहुत दान से जिस फल को प्राप्त करते हैं, दरिद्री उसी फल को एक कौडी से पा सकता है, ऐसा हमने आप्तजनोसे सुना है।

न्यायार्जितधनञ्चापि विधिवद्यत्प्रदीयते ।
अर्थिभ्य श्रद्धया युक्त दानमेतदुदाहृतम् ।40।

न्याय से कमाया हुआ जो धन विधि अनुसार श्रद्धा से प्रार्थियो को दिया जाता है। उसी दान को दान कहा गया है।

अपहृत्य परस्यार्थान्य परेभ्य प्रयच्छति ।
स दाता नरक याति यस्यार्थास्तस्य तत्फलम् ।41।

जो किसी दूसरे के धन को छीन कर दूसरो को देता है। वह दाता नरक को जाता है और उस दान का फल उसी को मिलता है जिसका कि वह धन होता है न कि कराने वाले को ?

सार्थ प्रवसतो मित्रभार्या मित्र गृहे सत ।
आतुरस्य भिषड्मित्र दान मित्र मरिष्यत ।42।

प्रवास मे मनुष्य का मित्र धन होता है गृह मे भार्या ही मित्र होती है, रोगावस्था म वैद्य तथा म मृ जिसके सन्निकट है ऐसे मनुष्य का मित्र केवल दान ही होता है।

अभिगम्योत्तम दानमाहूतञ्चैव मध्यमम् ।
अधम याच्यमान स्यात्सेवादानन्तु निष्फलम् ।43।

किसी पात्र के पास जाकर दान करना तो उत्तम होता है। बुलाके दान देना मध्यम कोटि का, तथा मांगने पर देना अधम होता है। इन तीनो दानो का यथा दान फल मिलता है। परन्तु सेवा कराने के प्रतिफल मे जो दान दिया जाता है उस दान का कोई फल नही होता।

चत्वारो धनदायादा धर्माग्निनृपतस्करा ।
तेषां ज्येष्ठावमानेन त्रय कुप्यन्ति बान्धवा ।44।

धन के दायभागी (पीढी दर पीढी बनने वाले उत्तरदाई) चार होते हैं। (1) धम (2) अग्नि (3) राजा और (4) चोर। इन में से ज्येष्ठ अर्थात धम का अपमान करने से शेष तीनो ही भाई कुपित हो जाते हैं। अर्थात धम न करे तो धन को अग्नि, राजा और चोर छीन लेते हैं। अर्थात यदि धम पूवक धन का भोग नही किया जाता तो वह सम्पत्ति या तो आग द्वारा जल कर नष्ट हो जाती है या राजा उसे राज्य कोष मे बलात मिला लेता है, अथवा चोर उसे चुरा लेता है।

विद्यमाने धने लोभाद्दानभोगविवर्जित ।
पश्चान्नास्तीति यो ब्रूयात्सोऽक्षय नरक व्रजेत् ।45।

धन के होते हुए भी जो मनुष्य लोभ वश उस धन के दान तथा भोग से वचित रहता है, तथा बाद मे पूछने पर 'ना ऽऽ जी' ऐसा कह देवे वह मनुष्य कभी न समाप्त होने वाले नरक को प्राप्त होता है।

स्थितो मृत्युमुखे चाह क्षणमायुर्ममास्ति न ।
इति मत्वा दानधर्मौ यथेष्टौ तु समाचरेत् ।46।

मनुष्य, 'मैं मृत्यु मुख मे स्थित हू, और मेरी आयु क्षण भर भी नही है' ऐसा विचार करके दान और धम का यथेष्ट आचरण करे।

दान वाचस्तथा बुद्धेर्वित्तस्य विविधस्य च ।
शरीरस्य च कुत्रापि केचिदिच्छन्ति पण्डिता ।47।

अलग अलग विद्वानो के मत मे सामर्थ्य अनुसार दान की अलग अलग विधाय हैं। कुछ विद्वान बुद्धि पूवक वाणी के दान को उत्तम मानते हैं, कुछ के मत मे विविध प्रकार के धन धा यो का दान श्रेष्ठ है। तो कुछ विद्वान आवश्यकता पडने पर (जैसे कि राष्ट्र रक्षा) शरीर दान को भी उत्तम गिनते हैं।

न्यायागतस्य द्रव्यस्य बोद्धव्यौ द्वावतिक्रमौ ।
अपात्रे प्रतिपत्तिश्च पात्रे चाप्रतिपादनम् ।।48।।

न्याय पूवक कमाये हुए धन के दो ही व्यतिक्रम, अर्थात दुरुपयोग हैं. (1) कुपात्र को दान तथा (2) सत पात्र को न देना।

गोदुग्ध वाटिका पुष्प विद्या कूपोदक धनम् ।
दानाद्विवर्द्धते नित्यमदानाच्च विनश्यति ।।49।।

गाय का दूध, फुलवारी का फूल, विद्या कूप का जल और धन य सब दान करने से सदा बढते हैं। और न दान करने से क्षीण हो जाते है।

हिरण्यदान गोदान पृथिवीदानमेव च ।
एतानि वै पवित्राणि तारयन्त्यपि दुष्कृतम् ।।50।।

सुवण का दान, गाय का दान, पृथ्वी का दान, ये पवित्र दान पापी मनुष्य को भी तार देते हैं।

पानीय परम दान दानाना मनुरब्रवीत् ।
तस्मात्कूपाश्च वापीश्च तडागानि च खानयेत् ।।51।।

भगवान मनु ने दानो मे से परम दान जल को कहा है अत कुए बावनिया और तालाब आदि जल के पीने योग्य स्थान बनवाने चाहिए।

जलाशयाश्च वृक्षाश्च विश्रामगृहमध्वनि ।
सेतु प्रतिष्ठितो येन तेन सर्वं वशीकृतम् ।।52।।

जिस व्यक्ति ने यात्रा के मार्ग मे, जलाशय, वृक्ष, विश्राम स्थान, और गहरी नदी पर पुल बधवाने का पुण्य कम कर लिया, मानो उसने सब कुछ वश में कर लिया।

(क्रमश)

शिक्षा में भारतीय भाषाएं

लेखक—श्री जगन्नाथ बी ए—26 रोहित कुंज,
डाकखाना-रानी बाग दिल्ली

भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रमुख भाषा हिन्दी रही है। धार्मिक क्षेत्र मे भी और भारतीय रियासतो के राज-काज मे भी सदियो से हिन्दी का प्रयोग होता रहा है। हिन्दी पढना-पढाना और उसका प्रचार करना महात्मा गाधी के रचनात्मक कार्यक्रमो मे सबसे अधिक प्रमुख कार्यक्रम था।

यही कारण है कि स्वाधीनता के तुरन्त बाद देश के प्रथम प्रधानमन्त्री ने लाल किले से 15 अगस्त 1947 को अपना प्रथम भाषण हिन्दी मे दिया। लाल किले पर दिया गया वह ऐतिहासिक भाषण केवल भारतीय नागरिको के लिए ही नही, अपितु विश्व भर के लिए था। उसका अग्रेजी मे अनुवाद भी नही सुनाया गया था। उसके पश्चात् जितने भी भारत के प्रधानमन्त्री हुए हैं उन सब ने इस परम्परा को निभाया है। भारत के सविधान मे भी हिन्दी को न केवल भारत सरकार की प्रमुख राजभाषा के रूप मे स्थान दिया गया है अपितु राज्य सरकारो को यह सुविधा देकर कि वह अपने क्षेत्र मे बोली जाने वाली भाषा को अथवा हिन्दी को अपनी राजभाषा घोषित कर सकती है, हिन्दी को विशेष स्थान दिया गया है। किन्तु यह सब होते हुए भी विडम्बना यह है कि कुछ स्वार्थियो अथवा अदूरदर्शी व्यक्तियो के कारण हिन्दी को स्वतन्त्र भारत मे वह स्थान नहीं मिल सका जिसकी वह अधिकारिणी थी। राष्ट्र की एकमात्र प्रमुख सम्पर्क भाषा होने के नाते, हिन्दी की पढाई सभी प्राइमरी कक्षाओ के बाद सभी हिन्दीतर भाषी क्षेत्रो मे भी अनिवार्य रूप से दसवी कक्षा तक आवश्यक थी। किन्तु राजनीति के कुचक्र के कारण उसका विरोध कुछ क्षेत्रो मे हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ की स्थिति अग्रेजी की तुलना मे काफी कमजोर पड रही है। इजीनियरिंग, चिकित्सा और प्रबन्ध आदि विषय तो सामान्यत: अग्रेजी मे ही पढाए जा रहे हैं और अग्रेजी माध्यम के स्कूलो की बाढ सी आ रही है। यदि यही स्थिति रही तो भारतीय भाषाओ की स्थिति दिन प्रतिदिन कमजोर पडती जाएगी।

इस स्थिति के निराकरण के लिए काफी विचार-विमर्श के बाद भारत सरकार के शिक्षा विभाग को कुछ मार्गदर्शी सिद्धान्त सुझाए गए है जो निम्न प्रकार है :—

(1) अहिन्दी भाषी प्रदेशो में तीसरी कक्षा से 10+2 योजना के अन्तर्गत अन्त तक हिन्दी भाषा अनिवार्य विषय के रूप मे पढाई जाए।

(2) सभी हिन्दी प्रदेशो मे यह अनिवार्य किया जाए कि वे किसी अन्य प्रदेश की भाषाओ को इस योजना के अन्तर्गत 10+2 व्यवस्था मे अन्तिम कक्षा तक अनिवार्य विषय के रूप मे पढाए। इसमे सस्कृत भाषा को वे तीसरी कक्षा से दसवी कक्षा तक हिन्दी भाषा के साथ एक प्रश्न-पत्र के रूप मे और दूसरी भारतीय भाषा के साथ भी एक प्रश्न-पत्र के रूप मे पढाए तो उचित होगा। किन्तु सस्कृत को किसी अन्य प्रदेश की भाषा के स्थान पर रखने की अनुमति न हो। इसमे उर्दू को भी किसी अन्य भारतीय भाषाओ के विकल्प मे रखने की छूट न हो, क्योकि उर्दू को सामान्यत: यदि देवनागरी लिपि मे ही लिख दिया जाए तो वह हिन्दी की ही एक शैली बन जाती है और अधिकाश विद्वान् भी यही कहने लगे हैं कि उर्दू तो हिन्दी की ही एक शैली है।

(3) उपर्युक्त न 2 के सुझाव मे राजस्थान प्रदेश यदि गुजराती, मराठी अथवा उडिया आदि को अनिवार्य विषय के रूप मे पढाने का इच्छुक हो तो उस प्रदेश म ऐसा किए जाने की छूट रहे। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश यदि मलयालम, तेलगू अथवा गुजराती, मराठी या बगाली आदि मे से कोई एक भाषा अनिवार्य करना उचित समझे तो वहा ऐसा करने की छूट रहे। इसी प्रकार मध्य प्रदेश यदि तेलगू, गुजराती, मराठी अथवा कन्नड मे से कोई एक भाषा अनिवार्य रखना चाहे तो वहा ऐसा करने की छूट रहे। कहने का भाव यह है कि किसी भी प्रदेश मे किसी भी भारतीय भाषा को अनिवार्य विषय के रूप मे पढाने की छूट रहे।

(4) हिन्दीतर भाषी प्रदेशो मे हिन्दी की पढाई पर आने वाले व्यय को केन्द्रीय सरकार पूरा या आशिक रूप म वहन करे और हिन्दी भाषी प्रदेशो मे अन्य भाषाओ की पढाई के लिए भी वही व्यवस्था रहे जो हिन्दीतर-भाषी प्रदेशो की पढाई के सम्बन्ध मे रहेगी।

(5) हिन्दी भाषा का पाठ्यक्रम सम्पूर्ण देश में प्रत्येक कक्षा मे वही रहे, जो इस दिनो केन्द्रीय विद्यालयो मे चलता है।

उपर्युक्त मार्गदर्शी सिद्धान्तो मे निम्न विशेषताए हैं :—

(1) सारी भारतीय भाषाओ की जननी सस्कृत को विशेष स्थान मिल जाता है। उसके माध्यम से सारी भारतीय भाषाए एक दूसरे के निकट आएगी क्योकि सभी का स्रोत सस्कृत है।

(2) हिन्दीतर भाषी राज्यो को हिन्दी और हिन्दी भाषी राज्यो को आधुनिक भारतीय भाषा अनिवार्य रूप से पढने को मिलेगी। इससे शिक्षा के क्षेत्र "समान भार" का सिद्धान्त सभी क्षेत्रो मे लागू हो जाता है।

(3) सभी भारतीय भाषाओ की शब्दावलियो मे काफी अधिक समानता है। अत उपर्युक्त तीन भाषाओ की पढाई से विद्यार्थियो पर उतना अधिक भार नही पडेगा जितना कि कल्पना की जाती है।

(4) उर्दू और हिन्दी मे कोई अन्तर नही है, केवल लिपि का भेद है। इस प्रकार हिन्दी भाषी क्षेत्रो के व्यक्ति तीसरी भाषा के रूप मे उर्दू को लेकर किसी अन्य भारतीय भाषा की पढाई से नहीं बच सकेंगे।

(5) अग्रेजी एक विदेशी भाषा है जिसको सीखने और समझने मे बहुत प्रयत्न करना पडता है। अब जो व्यक्ति इजीनियरिंग अथवा चिकित्सा की पढाई करने के लिए रूस, जर्मनी अथवा जापान जाना चाहते हैं वे उन देशो को अपने-अपने विषय के सम्बन्ध मे काम चलाऊ भाषा सीख कर जाते हैं। इस प्रकार जो विद्यार्थी इजीनियरिंग और चिकित्सा की पढाई करना चाहें वे विद्यालय मे ऐच्छिक विषयो मे से अग्रेजी व किसी अन्य भाषा को चुन सकते हैं। सभी पर एक विदेशी, अवैज्ञानिक तथा बोझिल अग्रेजी भाषा लादना वाछनीय नही है। इसम अनावश्यक रूप म क [illegible] रुपया और विद्यार्थियो का समय तथा परिश्रम बेकार जा रहा है। [illegible] शक्ति अग्रेजी की अनिवार्यता के कारण विषय को समझने की बजाए भाषा के रटने मे लग जाती है। दसवी श्रेणी के बाद राष्ट्रीय जनसख्या का [illegible] प्रतिशत को केन्द्रीय सरकार की [illegible] क्रिया मिल पाती सम्भव है। कि [illegible] वश्यक रूप से सभी पर एक [illegible] भाषा लादना कहा तक उचित है। इस का उत्तर पाठकगण स्वय सोच सकते है।

इस प्रकार सुधरे हुए रूप मे त्रिभाषा सूत्र "त्रिभारतीय भाषाओ का सूत्र" के रूप मे उभर कर सामने आता है। आशा है सभी राष्ट्रभक्त, चिन्तक और मनीषी इस नए त्रिभाषा सूत्र के पक्ष मे वातावरण बनाएगे।

आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र के लिए वक्तव्य कलापूर्ण, योग्यतार्किक उपदेशक, प्रचारक एव भजनोपदेशक की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त उस वैदिक सिद्धान्तो का पूर्ण ज्ञाता तथा क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान होना अत्यन्तावश्यक है। जो महानुभाव इस सम्बन्ध म आवेदन पत्र देना चाहते हो तो उन्हे 'कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश दयानन्द मार्ग सुल्तान बाजार हैदराबाद के पते पर 30 दिसम्बर 1987 के पूर्व भेज दे। उसके साथ योग्यता प्रमाण पत्र सलग्न करें।

—माणिकराव शर्मा मन्त्री सभा

चौदहवीं का चांद

लेखक—स्वनामधन्य
प चमूपति एम ए

उक्त पुस्तक उर्दू भाषा मे लगभग 60 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी। सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवे समुल्लास के सम्बन्ध मे अत्यन्त उपयोगी व उत्तम पुस्तक है। यह उर्दू भाषा मे थी जिसका पुन प्रकाशन सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने कर दिया है। इसी का हिन्दी अनुवाद मैंने किया है। उसे छपवाने का शीघ्र प्रबन्ध किया जा रहा है जो सज्जन इस पुस्तक को खरीदना चाहें शीघ्र सम्पर्क करें।

—आचार्य शिवराज सिंह,
शास्त्री द्वारा सार्वदेशिक सभा दिल्ली

पटियाला में वेद प्रचार

आर्य समाज चिनाडी गेट पटियाला मे वेद प्रचार 5-11 87 से 8 11-87 तक बडी धूम धाम से किया गया। [illegible] ऊषा शर्मा ने यजुर्वेद क [illegible] विधिपूर्वक करवाया। पूर्णाहुति 8-11 87 को हुई। इसके पश्चात् प्रीतिभोज दिया गया। इस समय पर हाजरी बहुत अच्छी रही।

—डा रामलक्ष्मण दास-मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

यदि आपने सब सामान्य विधि मे ही यज्ञ करा दिया त वह दक्षिणा देते हुए आप पर [illegible] क्योकि इस प्रकार का यज्ञ तो वह स्वय भी कर करा सकता है।

आशा है आर्य जगत के यज्ञ प्रेमी लोग और विद्वान पुरोहित हमारी इस प्रार्थना की ओर ध्यान देगे व सर्वथा सस्कार विधि के अनुरूप ही विधि विधान कराएगे। इससे एकरूपता भी आएगी और फल भी ठीक निकलेगा।

मन चाहे मन्त्रो का पाठ विधि भ्रष्टता का कारण बनता है। यज्ञ कोई अन्ध परम्परा नही है। यज्ञ एक वैज्ञानिक आधार लिए हुए है। आशा है कि यजमान व पुरोहित दोनो भी इस सम्बन्ध मे ध्यान देगे और शुद्ध विधि से ही सारे यज्ञ करेंगे व कराएगे।

आर्य विद्या परिषद् पंजाब रजि. के सदस्यों की घोषणा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य विद्या परिषद् के सदस्यो की निम्न प्रकार घोषणा की है —

श्री वीरेन्द्र जी प्रधान, श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी उपप्रधान लुधियाना, श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न उपप्रधान जालन्धर, श्री डा रामनाथ जी शर्मा उपप्रधान अमृतसर, श्री सन्तराम जी अग्रवाल उपप्रधान चण्डीगढ, श्रीमती कमला आर्या महामन्त्री लुधियाना, श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट मन्त्री तथा रजिस्ट्रार जालन्धर, श्री ओमप्रकाश जी इन्दु मन्त्री फगवाडा, श्री ओमप्रकाश जी पासी मन्त्री लुधियाना, श्री सुभाष भाटिया अमृतसर, श्री हरबंसलाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, श्री धर्मप्रकाशदत्त, श्री आशानन्द जी आर्य लुधियाना।

अन्तरग सभा द्वारा मनोनीत

श्री प्रो सुरेश वात्स्यायन लुधियाना, श्रीमती प्रिंसिपल मजु मेहता जालन्धर, श्री यशपाल जी भाटिया बरनाला, श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना, श्रीमती प्रिंसिपल देवेच्छा नवाशहर द्वाबा।

कालेज प्रिंसिपलो के प्रतिनिध

श्री प्रिंसिपल एम एल जी आनन्द लुधियाना, श्री प्रिंसिपल एस सी नन्दा जी जालन्धर।

स्कूलो के प्राधनाचार्यों के प्रतिनिधि

श्रीमती प्रिंसिपल अजूला लूथरा जी मोगा, श्रीमती प्रिंसिपल कान्ता सूरी जी लुधियाना, श्री प्रिंसिपल ओमप्रकाश जी टण्डन लुधियाना, श्री प्रिंसिपल रामकुमार जी शर्मा जालन्धर।

श्री सभा प्रधान जी द्वारा मनोनीत

श्रीमती सनीशा शर्मा लुधियाना, श्री प्रिंसिपल बलभद्र कुमार जी मल्होत्रा पटियाला, श्री प्रिंसिपल रत्नसिंह जी सोलकी ज्वालापुर, श्री प्रिंसिपल देवीप्रसाद जी महता हरिद्वार, श्री प्रो ओमप्रकाश जी मंगला भटिण्डा।

प्रबन्धकर्त्री सभाओ के प्रतिनिधि

श्री प देवेन्द्र कुमार जी नवाशहर, श्री वेद प्रकाश जी सरीन नवाशहर, श्री डा राम स्वरुप जी लुधियाना, श्री यशपाल जी दुग्गल फगवाडा, श्री राजकुमार जी गर्ग बरनाला, श्री के के पुरी जी मोगा, श्री के के सैगर नवाशहर द्वाबा, श्री डा सत राम जी धूरी, श्री कृष्ण कुमार जी भटिण्डा, श्री डा मूलचन्द जी भारद्वाज लुधियाना, श्री देवर ज जी विज जालन्धर।

विशेष आमन्त्रित

श्रीमती हृष अरोडा जालन्धर, श्री शान्ति लाल जी ढल लुधियाना, श्री वेद प्रकाश जी महिन्द्र लुधियाना, श्री प्रो स्वतन्त्र कुमार जी पठानकोट, श्री डाक्टर कैलाश नाथ जी भारद्वाज फगवाडा, श्री चतुर्भुज मित्तल जालन्धर।

सी ब्लाक जनकपुरी दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पंखा रोड "सी" ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली का आठवा वार्षिकोत्सव 8 नवम्बर रविवार से 15 नवम्बर रविवार तक बहुत ही उत्साह एव उल्लास के साथ मनाया गया। इस मे बृहत यज्ञ, वेद प्रवचन, भक्ति सगीत, खेल प्रतियोगिता, मन्त्र पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, नारी चेतना सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एव आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इन सभी सम्मेलनो मे आशा से कही अधिक सफलता मिली। प श्याम सुन्दर जी स्नातक के वेद प्रवचन एव गुलाब सिह राघव के भक्ति सगीत से श्रोतागण बहुत प्रभावित हुए। नारी चेतना सम्मेलन मे महिलाओ की उपस्थिति आशा से कही अधिक रही। श्रीमती डा सुषमा पाल मल्होत्रा एव श्रीमती बृजबाला भल्ला के विचारो से यहा का वातावरण सजीव हो उठा। इन सम्मेलनो मे सतीप्रथा के पूर्ण उन्मूलन एव राष्ट्र की रक्षा एव अखण्डता के प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर के प्रधानमन्त्री एव गृहमन्त्री के पास भेज दिए गए। महानगर पार्षद प्रो जगदीश मुखी, दयानन्द कालेज फरीदाबाद के प्रबन्धक श्री कन्हैया लाल मेहता, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री डा धर्मपाल, मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य तथा आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा शिवकुमार शास्त्री ने उदबोधक विचार देकर सामयिक समस्याओ पर विचार रखे। इस प्रकार कार्य से प्रभावित हो कर कई व्यक्तियो ने आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण की।

आर्य समाज के संरक्षक, श्री व्यासदेव मेहता, मेजर श्री रामप्रकाश जी धाम एव प्रधान श्री रामकृष्ण सनीजा ने सब का हार्दिक धन्यवाद किया।

—केशवदेव सूद मन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

7 श्री ललित बजाज फिरोजपुर से लिखते हैं—

ऐसे सिद्धान्तहीन लोगो से मेरा कोई सम्बन्ध नही है। मैं आपके नेतृत्व मे पूरी आस्था रखता हू।

8 श्री विजयहिन्द प्रधान आर्य समाज अहमदगढ लिखते हैं—मैं उनकी सभा मे सम्मलित नही हुआ, न मैं उन्हे जानता हू। इसलिए उन्हे अनुमति देने का प्रश्न ही पैदा नही होता। उन्होने जो कुछ मेरे विषय मे प्रकाशित कराया है वह निराधार है।

9 आर्य समाज रायकोट के प्रधान श्री भीमसेन जी ने कहा है कि वह श्री वीरेन्द्र को ही प्रधान मानते है उन्ही के साथ ही रहेंगे।

10 आर्य समाज सन्नौर के प्रधान वैद्य ईश्वर दास जी लिखते हैं कि उनका उस सभा के चुनाव से कोई सम्बन्ध नही है।

11 चण्डीगढ से श्री रूपचन्द जी एडवोकेट लिखते हैं कि मैंने श्री सेठ द्वारा बनाई गई अन्तरग सभा हेतु कोई अनुमति अथवा सहमति नही दी है। वास्तव मे मैं उनके खिलाफ हू।

12 आर्य समाज सै 22 चण्डीगढ के प्रधान श्री इन्द्रराज जी शर्मा लिखते हैं कि योगेन्द्रपाल सेठ ने जो कोई सभा बनाई है उसका मुझे कोई ज्ञान नही है न ही मैंने उसकी अन्तरग सभा के लिए कोई स्वीकृति दी है।

13 फगवाडा के श्री मनोहर लाल चोपडा लिखते है कि योगेन्दपाल सेठ ने जो बोगस सभा बनाई है जिसमे उन्होने मेरा नाम भी दिया है मेरा उस सभा से कोई सम्बन्ध नही है।

14 श्री कैलाश नाथ भारद्वाज फगवाडा से लिखते है—श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने पजाब मे समानान्तर स्तर पर अपनी ओर से एक सभा बना कर उसमे बिना मेरी स्वीकृति लिए अथवा सम्पर्क किए मेरा नाम जोड लिया है। मैं 4 10-87 को जो चुनाव हुआ है उसे वैध मानता हू जिसमे मैंने प्रतिनिधि के रूप मे भाग लिया था और जिसमे श्री वीरेन्द्र जी प्रधान चुने गए थे।

15 आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर से श्री रामरखामल मन्त्री और श्री राकेश मेहरा लिखते है कि श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने जो अपनी अलग सभा बनाई है जिसमे मेरा और राकेश मेहरा का नाम दिया है उस सभा से हमारा कोई सम्बन्ध नही है।

16 आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर के प्रधान श्री सुभाष भाटिया जी लिखते है कि मैंने अपना नाम समाचार पत्रो मे पढा है इसके लिए इस तथाकथित सभा वाले न ही मुझे मिले हैं न ही मैने उन्हे कोई स्वीकृति दी है।

17. आर्य समाज भोगपुर के श्री लालचन्द जी कुलका लिखते है कि मैं सूचित कर रहा हू कि मेरा किसी भी ऐसी सभा से कोई सम्बन्ध नही मेरा सम्बन्ध उस सभा से है जिसके प्रधान श्री वीरेन्द्र जी हैं।

18 श्री जगतनाथ चन्द जी जालन्धर से लिखते हैं कि योगेन्द्रपाल सेठ ने मेरा नाम अपने आप दे दिया है। न मैं उनकी किसी भी मीटिंग मे गया हू मेरा उनकी सभा से कोई सम्बन्ध नही है।

19 आर्य समाज पटियाला के प्रधान श्री वेदप्रकाश जी और श्री बलभद्र मल्होत्रा ने तार द्वारा और पत्र द्वारा स्पष्ट किया है कि उनका योगेन्द्रपाल सेठ की सभा के साथ कोई सम्बन्ध नही। हम सब तो आपके साथ हैं। हमारे योग्य कोई सेवा हो तो लिखें।

20 स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर की प्रधाना माता परमेश्वरी देवी लिखती हैं कि हमारी आर्य समाज की श्रीमती कृष्णा कोछड का और मेरा श्री योगेन्द्रपाल की सभा से कोई सम्बन्ध नही है उन्होने अपने आप ही हमारे नाम दे दिए है हम पूरी तरह आपके साथ हैं।

इसके साथ ही कुछ वह लोग भी हैं जिनके पत्र हमे मिले हैं। जिन्होने लिखा है कि हम श्री योगेन्द्रपाल सेठ की सभा को तो नही मानते परन्तु हम किसी झगडे मे भी पडना नही चाहते।

मैंने जो कुछ ऊपर लिखा है इससे आर्य जनता का पता चल गया होगा कि जो बोगस सभा योगेन्द्रपाल सेठ और महिपाल सिंह ने बनाई है उसकी वास्तविक स्थिति क्या है। जिन लोगो के नाम उन्होने अपनी बोगस सभा मे दिए हैं वह भी उनके साथ नही हैं। रही बात सार्वदेशिक सभा की इस विषय मे इस समय तक जो भी जानकारी प्राप्त की गई है उसके आधार पर मैं पूरे विश्वास से कह सकता हू कि सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने न तो इनको नया चुनाव करने के लिए कहा है न ही इनके चुनाव को कोई मान्यता दी है।

ऐसी स्थिति मे यह प्रश्न पैदा होगा कि फिर यह बोगस सभा क्यो बनाई गई है इसके उत्तर मे मैं यही कहूगा कि आर्य समाज को पजाब मे समाप्त करने का यह एक षड्यन्त्र रचा गया है कौन नही जानता कि 156 मे से जिस व्यक्ति को केवल 12 वोट मिले हो वह कैसे अपने को सभा का प्रधान कह रहा है। यदि कल को यह लोग कोई सरकार और अकालियो का समर्थन लेने मे सफल हो जाए तो इस पर किसी को आश्चर्य नही करना चाहिए। बहुत देर से यह प्रयास चल रहा था कि किसी प्रकार पजाब मे आर्य समाज को समाप्त किया जाए। यह षड्यन्त्र इस दिशा मैं पहला पग है। आर्य जनता को इससे सावधान हो जाना चाहिए।

धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षार्थ हैदराबाद में आर्यसमाज का संघर्ष

लेखक—श्री लक्ष्मणार्य 'विद्यावाचस्पति' उप प्रधान
आर्य समाज वरगल आन्ध्र

(गताङ्क से आगे)

इतना ही नही बल्कि अपनी जान पर खेल कर और कुछ देश भक्त, निजाम की आर्डिनेंस फैक्टरी मे प्रवेश कर वहा की सारी गुप्त जानकारी लेकर जनता को सचेत करते थे। उस समय सरकारी मिलस हैंडग्रेनेड तथा आपनी टाइप थी नाट थ्री की जानकारी अपेक्षित थी। इस प्रकार भूमिगत आर्य वीर रजाकार गुण्डो के प्लान को जान कर जनता पर होने वाले अत्याचारो से जनता एवं स्त्रियो के मान की रक्षा करते थे। साथ साथ वन्देमातरम, विनायकराव आदि नेता गण के आदेशो से भूमिगत इन वीरो ने मिलटरी वर्दी पहन कर निजामी सेना के कुछ को साथ लिये निषिद्ध क्षेत्रो मे सेना निर्धारित कोडवर्ड, शब्द का प्रयोग कर प्रवेश पा लिया और कुछ घण्टे इधर-उधर घूम कर सारी जानकारी लेकर, इनके अत्याचारो से साधारण जनता की रक्षा की।

इन सब अत्याचारो के मुख्य मीर उस्मान अली खा को समझ कर वरगल नगर निवासी श्री नारायणराव पवार जी मीर उस्मान अली खा पर बम्ब फैंके थे। और गिरफ्तार किया जाकर जेल की अन्धेरी कोठरी मे रखे गये। निजाम सरकार की सेना, रजाकार गुण्ड आदि स्थान स्थान पर अत्याचार, लूटमार, सतीत्व नष्ट आदि कुकार्य करते रहते तो भूमिगत आर्य वीरो ने उन सभी की रक्षा मे प्रशसनीय कार्य किये। जब निजाम गुप्त रूप से स्वतन्त्र भारत की सरकार से युद्ध करने की अन्दर ही अन्दर जो जोरदार तैयारिया कर रहा था उसका सारा भेदभाव इन भूमिगत आर्य वीरो ने जाना और के एम मुन्शी को इन जानकारियो को भेज दिया करते थे। दूसरी ओर भूमिगत कार्यकर्ता कुछ साधारण जनता एवं सतीत्व नष्ट की रक्षा मे जान हथेली मे लेकर लगे रहते थे। 1947 के जून, जुलाई मे निजाम राज्य के विभिन्न स्थानो पर रजाकारो एवं पुलिसो ने मिल कर हिन्दुओ पर फायरिंग कर दी तो अनेक हिन्दू जनता की हत्या हुई जिन मे वरगल के पाच व्यक्ति भी शिकार बने। रजाकारो द्वारा ग्रामो को उजाड दिया गया। बेतिया भस्म की गई। स्त्रियो के शरीर से आभूषण उतरवा लिये गये और उन के सतीत्व पर हाथ डाला गया। ऐसी भीषण स्थिति पर आर्य समाजी वीरो ने निजाम सरकार से सविनय प्रार्थना की कि हैदराबाद तुरन्त ही स्वतन्त्र भारत मे विलीन हो गया। जब तक हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली खा भारत मे विलीन होने की अपनी सम्मति प्रकट न की तब तक आर्य वीर अन्य देश भक्त वीरो ने पुलिस की आख बचा कर हिन्दू जनता और स्त्रियो के मान रक्षा के लिए अपने वेशभूषा को बदल कर भूमिगत आर्य जान हथेली मे रख कर किया है। उसका वर्णन करना कठिन ही है। जेल मे रहने वालो की अपेक्षा मे बाहर भूमिगत रह कर कार्य करने वाले आर्य वीर बेहतर ही समझ गए। इस प्रकार आर्य समाज के कार्यकर्ता एवं आर्य वीरो ने रजाकार गुण्डो एवं निजाम सरकार के अत्याचारो का विरोध किया और साथ-साथ इसका विवरण वन्देमातरम तथा विनायकराव आदि के द्वारा श्री के एम मुन्शी को भेज देते थे, तो के एम मुन्शी इन विवरणो को स्वतन्त्र भारत के उप प्रधान सरदार पटेल को पहुचा देते थे। फलस्वरूप भारत सरकार ने निजाम राज्य पर 14 सितम्बर 1947 को सैनिक कार्यवाही करना शुरू की तो भूमिगत कार्य करने वाले आर्य वीर भारत की सेना की मदद करते रहे ता की जिससे तीन ही दिन मे भारतीय सेना ने आजाद हैदराबाद पर विजय पाई। इसके श्रेय भूमिगत आर्यो को मिलना चाहिए। इसका कारण मेजर जनरल जे एन चौधरी को मिलटरी गवनर पद पर नियुक्त किया गया।

जब भारत के उपप्रधान मन्त्री सरदार पटेल ने हैदराबाद राज्य मे आगमन के अवसर पर कहा था कि यदि पहले से आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने भूमिगत रह कर भूमिका न निभाते तो भारत की सेना का तीन ही दिन मे हैदराबाद पर अधिकार करना सम्भव न था। इस प्रकार भूमिगत आर्यो का महत्व है। इस महत्व को भारत सरकार के गृहमन्त्री को अपनी दृष्टि मे रखनी चाहिए और उन्हे पैंशन देने मे पीछे कभी भी न हटना चाहिए। मानवता की दृष्टि से सोच विचार कर उन्हे भी पैंशन दिलाने के लिए श्री को (प्रकाशित) जारी करें ताकि उन्हे पैंशन एवं अन्य सुविधाए भी सरलता से प्राप्त हो सकें।

———

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियां

● आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे 21 11 87 को श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु म म [illegible] युवक सभा पजाब का श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला प्रधान, श्री जगजीवन पाल जी सूद, वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना तथा श्री अरुण भारद्वाज म [illegible] युवक सभा लुधियाना द्वारा स्वागत किया गया।

पारिवारिक सत्सग एव विश्वशान्ति यज्ञ

आर्य समाज की ओर से 29 11 87 को पाकलेन सिण्डीकेट [illegible] सिविल लाईन मे 2 से 4 बजे तक पारिवारिक सत्सग एव विश्व शान्ति महायज्ञ किया गया जिसमे प सुरेन्द्र कुमार [illegible] शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा स्वामी वेद भारती जी महाराज का मनोहर प्रवचन हुआ।

शहीद ए आजम राम प्रसाद बिस्मिल एव स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

19 12 87 को प्रात 7 बजे से 8 [illegible] बजे तक शहीद ए आजम राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस तथा [illegible] 12 87 को प्रात [illegible] मे 8-30 बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाएगा। यह कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ होगा [illegible] सुरेन्द्र कुमार [illegible] प्रचार [illegible] भजन होंगे।

शोक समाचार

आर्य समाज महर्षि [illegible] बाजार लुधियाना की साप्ताहिक [illegible] सभा (29 11 87) श्री प्रम [illegible] मेम्बर [illegible] हरिसिंह [illegible] [illegible] असामयिक [illegible] गहरा शोक प्रकट करती [illegible] परमपिता परमात्मा [illegible] दिवगत आत्मा को सद्गति एव [illegible] प्रदान करे तथा परिवार के सदस्यो को यह दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करे, दो मिनट का मौन भी रखा गया।

—रा[illegible] न समा मन्त्री

———

लुधियाना मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द [illegible] (माडल बाजार) लुधियाना एवं आर्य समाज श्री दयानन्द बाजार लुधियाना सम्मिलित रूप से [illegible]0 12 87 [illegible] को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े उत्साह पूर्वक मना रहे है जिनमे उत्कृष्ट विद्वान सम्मिलित होकर स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलिया भेंट करेंगे।

प्रात 8 30 से हवन यज्ञ से आरम्भ होकर 12-30 बजे पर समाप्त होगा। विद्वानो के अतिरिक्त इसमे आर्य महिला कालेज, आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल आर्य गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल के छात्र छात्राओ के भजन होंगे। वेद प्रचार भजन मण्डली के गीत होंगे। सब आर्य समाजो तथा शिक्षा संस्थाओ से प्रार्थना है कि इसमे सम्मिलित होकर उत्सव की शोभा बढाए [illegible] कार्यक्रम [illegible] भूषण [illegible] प्रधान आर्य समाज स्वामी श्र[illegible] बाजार [illegible] होगा। [illegible] [illegible] श्री [illegible] आर्या [illegible] राजेन्द्र कुमार [illegible] प्रिंसीपल एम [illegible] प्रिंसीपल [illegible] गुरदियाल सिंह आर्य, ओमप्रकाश पासी नरेन्द्र सिंह भल्ला [illegible] रोशनलाल शर्मा, यशपाल [illegible] रामस्वरूप राजा राम [illegible] आर्य श्री [illegible] प्रधान [illegible] [illegible] इस मे सम्मिलित होंगे।

—धर्मपाल भसीन
मन्त्री

पठानकोट मे निर्धन सहायता समारोह

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट मे 8 11 87 रविवार को निर्धन सहायता समारोह सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्री गिरधारी लाल गुप्ता प्रधान आर्य विद्या सभा पठानकोट ने की। इस अवसर पर 150 निर्धन विधवाओ को गर्म स्वेटर तथा बूट और वृद्ध महिलाओ को गर्म शाल और कम्बल आर्य समाज की ओर से बांटे गए।

इसके साथ ही उडीसा प्रान्त मे आर्य समाज की ओर से चल रहे सहायता फण्ड मे 2100रु नकद और 500 जोडी वस्त्र की पहली किस्त निर्धन परिवारो के लिए भेजी गई जिन्हे ईसाई व मुसलमान बनने से रोकने के लिए स्वामी धर्मानन्द जी आर्य सेना गुरुकुल के माध्यम से कार्य कर रहे है। इसी प्रकार प्रधान श्री लालचन्द जी ने सभी दानदाताओ का धन्यवाद किया।

लुधियाना में प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर

30-12-87 से 3-1-88तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान मे जिला आय सभा लुधियाना की ओर से प्रान्तीय आय वीर दल के शिविर का आयोजन आय हायर सैकण्डरी स्कूल मे किया जा रहा है। इसमे आय युवको को नैतिक,शिक्षा व्यायाम,दण्डभक्ति योगासनो की शिक्षा दी जायेगी। सब आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी आय समाज की ओर से कम से कम पाच आय युवको को सम्मिलित होने के लिए भेजे। सम्मिलित होने वाले आय युवको की सूची 15 12 87 तक सभा कार्यालय मे भेज दी जावे। आर्य युवक 29-12-87 को साय तक आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल समीप पुरानी सब्जी मण्डी लुधियाना मे अवश्य पहुच जावें।

—आशानन्द आर्य अधिष्ठाता
आय वीर दल पजाब

आर्यसमाज बस्ती बाबा-खेल जालन्धर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आय समाज बस्ती बाबा खेल जालन्धर मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड समारोह से 13 दिसम्बर से 20 दिसम्बर तक मनाया जा रहा है। जिस मे श्री प निरञ्जन देव जी महोपदेशक श्री प राम नाथ जी शास्त्री भजनोपदेशक, श्री प मनोहर लाल जी, श्री प रत्नलाल जी, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, डा सत्यपाल जी तथा दूसरे कई विद्वान् पधार रहे ह। धर्म प्रेमी सज्जन पधार कर स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेट करे।

—दर्शनलाल-मन्त्री

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में सूखाग्रस्त राहत कार्य जोरों पर

आर्य जनो को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे टकारा ट्रस्ट के अन्तर्गत सूखा राहत काय आरम्भ कर दिया है। पीछे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी सस्थाओ की ओर से लगभग 15 क्विटल खाद्य सामग्री आई थी, जिसमे चावल, आटा, चीनी, चाय, बिस्किट आदि आदि थे, वह लोगो मे बाटने आरम्भ कर दिये हैं। टकारा के आसपास सौराष्ट्र मे जितने गाव ह, उनम हमारे कार्यकर्ता जाकर खाद्य सामग्री तथा कपडे आदि वितरित करते है। सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे जो लोग बीमार हैं उनकी दवाई आदि का प्रबन्ध किया गया है। वहा पर पिछले तीन वर्षों से वर्षा नही हुई है जिसके कारण वहा के निर्धन लोग बहुत दु खी हैं।

मेरी समस्त भारतवासियो से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक खाद्य सामग्री महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे 'श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा राजकोट-363650, गुजरात" के पते पर भिजवाने की कृपा करें। यह सामग्री आप मोरवी तथा राजकोट स्टेशन पर रेल द्वारा अथवा ट्रान्सपोर्ट द्वारा भिजवा सकते हैं।

जो लोग धन भेजना चाहें वह बैंक ड्राफ्ट, चैक, मनीआर्डर द्वारा "महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टकारा के नाम केवल जाने मे रजिस्ट्री द्वारा भिजवा सकते हैं। सबको यह भी जानकारी दी जाती है कि महर्षि दयानन्द स्मारक टकारा मे जो राशि जाती है वह कर मुक्त होती है।

—अरुण कुमार

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सम्पादकीय—

निर्भीक सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

आर्य समाज का जन्म देश की बिगड़ी हुई परिस्थितियों में हुआ था। जब देश परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजों का दमन चक्र चारों ओर जब बड़ी तेजी से चल रहा था, जब कहीं मुसलमान कहीं ईसाई, अपनी मनमानी कर के हिन्दुओं को समाप्त करने पर तुले हुए थे। इस के साथ हिन्दू धर्म भी अनेकों कुरीतियों का घर बन चुका था। जब अनाथ और विधवाओं का क्रन्दन चारों ओर सुनाई पड़ रहा था। ऐसे समय में आर्य समाज का जन्म हुआ।

अपने जन्मकाल से ही आर्य समाज देश जाति और समाज का कार्य करता हुआ देश की रक्षा की राह पर अग्रसर रहा है। आर्य समाज ने देश को अनगिनत बलिदानी दिये। कुछ ऐसे बलिदानी भी हैं, जिन का इतिहास के पृष्ठों में भी नाम तक नहीं मिलता परन्तु उन के बलिदानों की दास्ता आज भी भुलाई नहीं जा सकती।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सर्व प्रथम अपना बलिदान दे कर इस बलिदान के रास्ते को खोल दिया था। देश की आजादी के लिए काम आने वाले शहीदों में राम प्रसाद बिस्मिल सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव और अनेकों उनके सहयोगियों का प्रेरणा स्रोत आर्य समाज ही है। महाशय राजपाल, पण्डित लेखराम और दूसरे कई कार्यकर्ताओं ने समाज के उद्धार के लिए अपना बलिदान दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी भी एक ऐसे ही बलिदानी थे, वह आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से प्रेरणा ले कर बलिदान की राह पर अग्रसर हुए। उन में निर्भीकता, शालीनता, भावुकता और अदम्य साहस था। उन के कदम भी अपने गुरु महर्षि दयानन्द की भान्ति सदा आगे बढ़ते रहे। उन्होंने जो मन में ठान लिया वह कर के छोड़ा। कोई उन का रास्ता नहीं रोक सका। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में 1898 में जब यह प्रस्ताव पास हो गया कि गुरुकुल खोला जाए तो विचार किया जा रहा था। गुरुकुल कौन चलाएगा? उस में पढ़ने के लिए बच्चे कौन भेजेगा? उस के प्रबन्ध के लिए रुपया कहां से आएगा। परन्तु उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा गुरुकुल मैं चलाऊंगा। उन्होंने घोषणा कर दी कि मैं चालीस हजार रुपया गुरुकुल के लिए इकट्ठा कर के ही मानूंगा। वह इस के लिए निकले और रुपया लेकर ही वापिस लौटे। जब गुरुकुल के लिए विद्यार्थियों का प्रश्न उठा तो अपने दोनों बच्चों को ले कर महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) हरिद्वार की तीन में आ बैठे। फिर क्या था अब देखते ही देखते दूर-दूर से गुरुकुल में पढ़ने के लिए विद्यार्थी आने लगे। गंगा के किनारे बिहड़ जंगल के पास हिंसक जानवरों के बीच में स्वामी श्रद्धानन्द निर्भीकता से बैठे रहे। पंजाब में जलियांवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा नरसंहार काण्ड के बाद भय का आतंक चारों ओर छाया हुआ था। ऐसे समय वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अमृतसर में कांग्रेस का और से एक सभा बुला कर उस की अध्यक्षता करते हुए अपना अध्यक्षीय भाषण दिया था। जिस से उनकी निर्भीकता की गूंज सारे देश में चारों ओर पहुंच गई थी। रौलट एक्ट के विरुद्ध जब दिल्ली में जलूस निकाला

गया और चांदनी चौक के पास उस जलूस को जब अंग्रेज सिपाहियों ने आगे बढ़ने से रोक दिया तो स्वामी श्रद्धानन्द अचानक भीड़ में से आगे बढ़ कर गोरखों की संगीनों के आगे छाती तानते हुए बोले चलाओ गोली सन्यासी की छाती खुली है। संगीने झुक गई। जलूस आगे निकल गया और स्वामी श्रद्धानन्द जी की जय-जय-कारों से सारा आकाश गूंज उठा।

उन के जीवन में कहीं भी निराशा का नामोनिशान नहीं था। वह आशावादी थे, इसलिए हर असम्भव काम को भी सम्भव बना लिया करते थे। वकील मुन्शी राम से महात्मा मुंशीराम और महात्मा मुन्शी राम से स्वामी श्रद्धानन्द तक पहुचते उन्हे कोई देर न लगी। एक बार जब सच्चाई के रास्ते पर चल पड़े फिर उनके कदम कहीं रुके नहीं। वह जो कहते थे वही कर के दिखा देते थे, उन की कथनी और करनी एक थी। समाज सुधार का कार्य करते हुए उन्होंने रात दिन एक कर दिया था। एक बार जब उन्होंने अपने सद्धर्म प्रचारक अखबार में पण्डित गोपीनाथ जी का कच्चा चिट्ठा छाप दिया तो उस ने उन पर मान हानि का अभियोग कर दिया। लोगो ने कहा महात्मा जी आप ने यह लेख सुन-सुना कर छाप दिया अब अदालत तो प्रमाण मांगेगी, अब क्या होगा प्रमाण तो कुछ भी हमारे पास नहीं है। वह घबराए नही बोले चिन्ता न करो, सब ठीक हो जाएगा। विजय हमारी होगी। अदालत में अभियोग की आवाज पड़ने वाली थी। दोनों तरफ के लोग अभियोग को सुनने के लिए इकट्ठे हो रहे थे। गोपीनाथ विजय हो जाने के घमण्ड में चूर हो कर अपने चेलों के साथ स्वागत के लिए रथ सजाये खड़ा था। अचानक किसी ने भीड़ में से महात्मा जी के हाथों में जब वह पीछे हाथ किये घूम रहे थे, कागजों का एक पुलिन्दा थमा दिया जब महात्मा जी ने देखा तो उस में गोपीनाथ जी के प्रेम पत्र और अश्लील तस्वीरें थी। फिर क्या था, विजय महात्मा मुन्शीराम जी को मिली और गोपीनाथ अपना मूंह लटकाये खड़ा रहा।

शुद्धि के आन्दोलन को उन्होंने बहुत तेज कर दिया था। दिन रात इसी कार्य में लगे रहते थे। धड़ाधड़ मुसलमान हिन्दू बनने लगे थे। हजारों मलकाने मुसलमानों को उन्होने शुद्ध कर के हिन्दू धर्म की दीक्षा दे दी थी। असगरी बेगम नाम की एक मुसलमान महिला को भी उन्होंने शुद्ध किया और इसी प्रकार अनेकों मुसलमान यह जान गये थे कि वह एक दिन हिन्दू थे और मुगल राजाओं ने उन्हें बलात् मुसलमान बनाया है। वह वास्तविकता को जान कर धड़ाधड़ हिन्दू बन रहे थे। वह शिकायत महात्मा गांधी जी के पास भी पहुंची कि स्वामी श्रद्धानन्द जी मुसलमानों को हिन्दू बनाते जा रहे हैं, उन्हें रोका जाए। महात्मा गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को लिखा की कि वह शुद्धि का काम बन्द कर दें, इससे मुसलमानो को कष्ट पहुंचता है। स्वामी जी ने लिखा महात्मा जी यदि मुसलमान नेता इस बात का विश्वास दिला दें और घोषणा कर दें कि आज से किसी हिन्दू को मुसलमान नही बनाया जाएगा तो मैं भी यह कार्य बन्द कर दूंगा। अन्यथा शुद्धि का कार्य बन्द नहीं होगा। भला मुसलमान नेताओं को यह प्रस्ताव कहां स्वीकार था। इसलिए स्वामी जी महाराज ने अपना शुद्धि का कार्य बन्द नहीं किया। उन्हें जान से मार देने की धमकियां भी आने लगी। वह भला मरने से कहां डरने वाले थे। मित्रो ने उन्हें सावधान किया कि उन के जीवन के लिए खतरा है, वह सावधानी रखें। परन्तु वह बड़े निर्भीक थे उन्हें इस की तनिक भी चिन्ता नही थी। बिमारी की हालत में जब दिसम्बर 1926 में वह दिल्ली पहुचे तो वह निमोनिए से पीड़ित थे। 23 दिसम्बर को अब्दुल रशीद नाम का एक जनूनी व्यक्ति शुद्धि का बहाना कर के उन के पास आया और मौका देख कर उस ने तीन गोलियां स्वामी जी की छाती में दे मारी।

स्वामी जी महाराज देश, जाति और समाज का कार्य करते-2 शहीद हो गए परन्तु उन्होने जीवन में कही भी किसी से भी कोई भय नही खाया। वह निर्भीकता की साक्षात् मूर्ति थे।

23 दिसम्बर को सारे आर्य जगत में उन का बलिदान दिवस मनाया जाता है। इस दिन हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करें कि वह हम सब को उन के पदचिन्हों पर चलने की शक्ति, सामर्थ और सद्बुद्धि प्रदान करे। ताकि हम भी देश जाति और समाज का कुछ कार्य कर सकें। —सह-सम्पादक

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—स्व. महाशय कृष्ण जी

मैंने स्वामी जी के पहली बार दर्शन उस समय किये जबकि मैं कालेज का विद्यार्थी था। वह अभी तक लाला मुन्शीराम थे और जालन्धर के एक प्रसिद्ध वकील थे। मेरे देखते-2 उन्होंने घर-बार को त्याग दिया और गुरुकुल के लिए भिक्षा करने को निकले। मेरी आंखों के सामने वह लाला से महात्मा मुन्शीराम बने और फिर महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द इस प्रकार मेरा उनका सम्पर्क 25 वर्ष रहा। मार्च 1902 में उन्होने गुरुकुल की स्थापना की। नवम्बर 1902 में जब आर्य समाज लाहौर का उत्सव हुआ तो वह भी उसमें सम्मिलित हुए उस समय उनकी सर्व प्रियता अपने जोरों पर थी। आर्य समाज के उत्सव का नगर कीर्तन रेलवे स्टेशन से चला करता था। पहले उत्सवों के नगर कीर्तनों में वह सम्मिलित हुआ ही करते थे किन्तु इस वर्ष के नगर कीर्तन मे उनकी शान निराली ही थी। उनके पांव मे खड़ाऊं थी उनके वस्त्र पितम्बर थे उनके सिर पर जो पगड़ी थी ऋषि दयानन्द की भान्ति उन्होने उसके दो लट छोड़ रखे थे। कद व बुत के लिहाज से वह शानदार थे ही, इस वेश में उनकी शान और भी बढ़ गई। नगर कीर्तन में उन पर स्थान-2 पर पुष्प वर्षा होती रही, वह दृश्य भी मेरे सामने है, जब उन्होंने सन्यास ग्रहण किया। कह नहीं सकता कि मेरे मन का क्या हुआ मेरा हृदय थमने को न आता था।

मुझे कुछ ऐसा अनुभव होता था कि मेरा निहायत ही प्रिय सम्बन्धी मुझ से जुदा होने को है स्वामी सत्यानन्द ने मुझे इस स्थिति में देखा तो उन्होंने महात्मा मुन्शीराम से कहा कि कृष्ण निढाल हो रहा है उसे ढाडस दो। इस प्रकार महात्मा जी ने मुझे अपने पास बुलाकर ढाडस दी जिस प्रकार बड़े छोटों को देते हैं। किन्तु मेरी ढाडस न बन्धी। मुझे उस समय कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि सन्यास लेने के पश्चात् महात्मा मुन्शीराम का सम्बन्ध मुझ से टूट जाएगा। उनकी मौत के समय मैं उपस्थित न था किन्तु समाचार मिलते ही मैं लाहौर से चल पड़ा। सायंकाल 7 या साढ़े 7 बजे का समय था जबकि एक सज्जन आए और उन्होंने मुझ से बताया कि अब्दुल रशीद मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द को गोली मार दी है। यह सुनते ही मै बेचैन हो उठा। उन दिनों भी बम्बई मेल 9 बजे रात चला करती थी। पं. विशम्भरनाथ कुलभूषण और मैं दूसरी प्रातः देहली पहुंच गए और सात दिन वही रहे। स्वामी जी का मृतक शरीर दो दिन तक रखा गया ताकि देहली से बाहिर के आर्य पुरुष पहुंच जावें। अर्थी उठी और पूरी शान से उठी। हजारो लोग शहीद की अर्थी के साथ थे। स्वामी श्रद्धानन्द की जय, वैदिक धर्म की जय के नारे लगा रहे थे। जिस अर्थी पर स्वामी जी का शरीर रखा गया था वह भी बड़ी ऊंची थी इस पर मैंने कहा था—

आशिक का जनाजा है जरा धूम से उठे। आशिक का जनाजा है जरा शान से उठे।

देहली के बाजारो से होते हुए अर्थी अपने अन्तिम स्थान पर पहुंची। वेद मन्त्रों की ध्वनि से आग लगाई गई और जिस समय शोले बुलन्द हुए मेरे मानसिक नेत्रों ने कुछ ऐसा देखा कि शहीद श्रद्धानन्द सामाजिक जीवन से ऊपर उठ रहे है और जिस प्रकार वह भाषण देते हुए अपनी ऊंगली उठाया करते थे। इसी प्रकार वह ऊंगली उठाते हुए लोगों से कह रहे थे :—

'कहा मन्सूर सूली पर पुकारा इश्क बाजों का यह जीना बांम का उसके आए जिसका जी चाहे।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन एक शहीद का जीवन

था। इससे बढ़ कर उनके अपना होने का क्या प्रमाण हो सकता है। इसलिए महात्मा गांधी ने उनकी शहादत का समाचार सुनते ही कहा था—

अर्थात् "जैसा शानदार उनका जीवन था वैसी ही उनकी शानदार मृत्यु हुई।" शहीद तीन प्रकार के होते हैं। एक वह जो जीवन के लिहाज से शहीद हों, उन्हें जिंदा शहीद का नाम दिया है परन्तु शहीदी उन्हें प्राप्त न हो। दूसरे वह जिनका जीवन तो शहीदों का सा नहीं परन्तु मृत्यु शहीद की सी मिलती है और तीसरे वह जो जीवन में भी शहीद थे और मृत्यु में भी। ऋषि दयानन्द पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। महात्मा हंसराज सरीखे नेता जीवन में शहीद थे किन्तु उन्हें शहीदों की सी मौत प्राप्त न हुई। स्वामी श्रद्धानन्द जी बड़े भाग्यशाली थे कि उन्हें शहीद की सी मृत्यु प्राप्त हुई। जिस अवस्था में उनकी मौत हुई उसमें उनके भाग्यशाली होने का एक और प्रमाण भी प्रस्तुत कर दिया गया। वह निमोनिया में ग्रस्त थे रोग शैय्या पर लेटे हुये थे, वृद्धावस्था थी। कह नहीं सकते थे कि ऐसी अवस्था में वह निमोनिया का मुकाबिला कर सकेंगे या नहीं, कि अब्दुल रशीद आ गया और उन्हें गोली मार कर, जामे शहादत पिला गया। उनका महत्व इस बात में है कि उन्होंने त्याग का जीवन व्यतीत किया। मैंने कहा कि वह बड़े भाग्यशाली थे और इसका प्रमाण यह है कि आर्य समाज में सुधार और उन्नति की ओर जो भी पग उठा, वह उन्हीं ने उठाया। आर्य समाज इतनी उन्नति को प्राप्त हुआ तो उनकी बदौलत ही। सबसे पहले उन्होंने छुआछूत को दूर करने के लिए क्रियात्मक पग उठाए। जात-पात को तोड़ा तो उन्होंने अपनी सुपुत्री का विवाह अपनी जाति के बाहर के युवक से किया। उनकी धर्मपत्नी का देहान्त उस समय हुआ जबकि वह 30, 32 वर्ष के थे किन्तु उन्होंने वैदिक मर्यादा का पालन करते हुये दूसरे विवाह तक का नाम न लिया। ब्रह्मचारी और वैदिक विद्वान् पैदा करने के लिये उन्होंने गुरुकुल की स्थापना वर्षों तक एक वानप्रस्थी का जीवन व्यतीत करने के पश्चात् भी उन्होंने चतुर्थ आश्रम में प्रवेश करने का निश्चय किया। इस प्रकार आर्य समाज में प्रत्येक सुधार करने का उन्हें यश प्राप्त था। उन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में भी कार्य किया। जब महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन फलस्वरूप पंजाब में मार्शल-ला लगाया गया और उसमें हजारों स्त्री-पुरुषों को कष्ट पहुंचाया गया तो उस कष्ट के निवारणार्थ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सारे पंजाब का भ्रमण करके पीड़ितों को उनके घर सहायता पहुंचाई। उनकी सेवा का यह फल निकला कि जब मार्शल-ला के समाप्त होते ही अमृतसर में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो अमृतसर निवासियों ने स्वामी जी के तई अपनी कृतज्ञता का प्रकाश करने के लिये उनके चरणों में स्वागत समिति का अध्यक्षपद पेश किया। स्वामी जी ने उसे स्वीकार किया और जो भाषण उन्होंने दिया वह बड़े महत्व और चित्ताकर्षण का था। वस्तुत: उनका ही भाषण सुना गया और जब कांग्रेस के प्रधान के भाषण की बारी आई तो जनता उठ गई उसका यह भी एक कारण था कि स्वामी जी का भाषण आर्य भाषा में था। कांग्रेस की वेदी से पहली बार आर्य भाषा में भाषण दिया गया और पहली बार कांग्रेस के मण्डप में वेद मन्त्रों की ध्वनि गूंजी थी।

मेरा स्वामी जी से 25 वर्ष सम्बन्ध रहा। इस अन्तर में मैंने उनके जीवन को हर प्रकार से देखा। उनके गुण भी और दोष भी मेरे सामने आये। दोष कोई बड़े न थे, केवल स्वभाव के दोष थे। उनके स्वभाव का गुण समझो या दोष। उनके स्वभाव में यह बात थी कि जो उनके सम्पर्क में आता था और उन्हें कोई बात कह देता था तो उसकी बात पर वह विश्वास कर लिया करते थे। अपने समाचार पत्र "सद्धर्म प्रचारक" में उसका वर्णन कर दिया करते थे और जब उसका खण्डन हो जाता था तो उन्हें अपनी भूल स्वीकार करने में कोई संकोच न होता था। महात्मा मुन्शीराम आर्य पुरुषों के हृदय सम्राट थे। उनके एक-एक शब्द वाक् का दर्जा रखते थे। इसलिये जिसकी प्रशंसा कर देते वह उठ जाता और

(शेष पृष्ठ 34 पर)

स्वामी श्रद्धानन्द : लेखक और साहित्यकार के रूप में

लेखकः—श्री डा. भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़

स्वामी दयानन्द के सुयोग्य शिष्य और अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहुमुखी आयामों वाला था। उन्होंने एक साथ ही धर्म, समाज, शिक्षा तथा राष्ट्र इन चार विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अवतीर्ण हो कर उल्लेखनीय कर्मठता प्रदर्शित की। वे एक ओर जहां अत्यन्त कर्मशील भावना प्रवण तथा अनेकानेक रचनात्मक कार्यक्रमों के विधाता तथा संयोजक रहे। वहां उन की लेखनी से एक ऐसी विशाल साहित्य राशि भी प्रसूत हुई है, जिसे पढ़ कर न केवल उन के समकालीन जनों ने ही प्रेरणा प्राप्त की, अपितु वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियां भी उस से असीम आशा, उत्साह तथा सम्बल प्राप्त करेंगी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का साहित्य मुख्यतः हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दू इन तीन भाषाओं में उपलब्ध होता है। उन्होंने 'कल्याण मार्ग का पथिक' शीर्षक से अपनी आत्मकथा लिखी थी। जिसका प्रथम संस्करण ज्ञानमंडल काशी ने 1981 वि. में प्रकाशित किया था। इस में स्वामी जी ने अपने चारित्रिक पतन और तदनन्तर उत्थान की कहानी को नितान्त बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया है। महापुरुषों के चरित्र की एक विशेषता होती है कि वे अपनी उपलब्धियों का बखान करने में चाहे कितनी ही कृपणता क्यों न बरतें, अपनी त्रुटियों, कमजोरियों और चारित्रिक स्खलनों को जन समाज के समक्ष प्रस्तुत करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करते। यही कारण है ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आने से पूर्व तक युवक मुन्शी राम का जीवन पतन के भयानक गर्त में गिरता ही चला गया, किन्तु दयानन्द के चमत्कारी सम्पर्क ने इस व्यक्ति के जीवन की दिशा ही बदल दी पाठक देखेंगे कि कल्याण मार्ग का पथिक जहां एक व्यक्ति की जीवन कथा है वह तत्कालिक आर्य समाज, हिन्दू समाज तथा भारतीय परिस्थितियों का निष्पक्ष मूल्यांकन भी है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने एक अन्य ग्रन्थ में अपने जेल जीवन के संस्करण भी लिखे हैं। वे गुरु का बाग सत्याग्रह में सिखों के पक्ष को सत्य समझ कर सम्मिलित हुए थे। उस दौरान उन्हें पर्याप्त समय तक कारावास भी भोगना पड़ा। ब्रिटिश जेलों की दुरावस्था, किन्तु सत्याग्रही स्वामी ने उस विषम अवस्था में भी अपने धैर्य को न खोकर किस प्रकार अपना तपस्या, अनुशासन, आत्म संयम तथा स्वाभिमान युक्त जीवन जिया। इस की मुंह बोलती कहानी आप बन्दी घर के विचित्र अनुभव में पढ़ेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने ही एक सहयोगी और सहकर्मी किन्तु अपने से बहुत पहले ही शहादत का जाम पी कर अमर हो जाने वाले वीर लेखराम की जीवनी को भी लेखनी बद्ध किया था। यों तो पण्डित लेखराम की अनेक छोटी बड़ी जीवनियां लिखी गई हैं किन्तु कथानायक को वर्षों तक निकट से देखने वाले तथा वैदिक धर्म के प्रति उन की अनन्य निष्ठा को अनुभव करने वाले मुंशी राम जिज्ञासु की लेखनी का चमत्कार कुछ अलग ही है। आर्य समाज के जीवनी साहित्य में यह ग्रन्थ अनोखा ही है।

अपने विभिन्न सार्वजनिक कार्यों और सामाजिक

गतिविधियों के प्रति पूर्ण न्याय कर के भी स्वामी श्रद्धानन्द अध्ययन, लेखन और शोध के लिए पर्याप्त समय निकाल लेते थे। यह उन के व्यक्तित्व का एक उल्लेखनीय पक्ष है। उन्होंने दयानन्द वाङ्मय का विशद एवं गम्भीर अध्ययन किया था। यही कारण है कि पौराणिक पण्डित कालूराम ने जब सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण दूसरी बार छाप कर आर्य समाज में आवश्यक हलचल उत्पन्न करने का असफल प्रयास किया तो महात्मा मुंशीराम ने अपनी सुदृढ़ लेखनी को उठाया और 'आदिम सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्य समाज के सिद्धान्त' शीर्षक विस्तृत विवेचनायुक्त ग्रन्थ लिखा। इस में उन्होने प्रथम संस्करण की विशेषताओं और सीमाओं का सतर्क विश्लेषण करते हुए सिद्ध किया कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण भी आर्य समाज की एक अपूर्व धरोहर है तथा इस के पुन: प्रकाशित होने से (चाहे यह प्रकाशन कालूराम जैसे मत्सर ग्रस्त व्यक्ति ने विद्वेष भाव से ही किया है) हमे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

समय-समय पर आर्य समाज के मन्तव्यों और सिद्धान्तों पर अन्य मतानुयायियों द्वारा किए गए आक्षेपों का विधिवत् अध्ययन कर उन के निराकरण प्रसिद्ध पादरी फर्कुहर ने अपनी विख्यात पुस्तक 'माडर्न रिलिजियस मूवमैंटस इन इण्डिया' में आर्य समाज का विवेचन करते हुए जो निराधार तथा अलीक धारणाएं प्रकट की, उनका सटीक उत्तर देना स्वामी श्रद्धानन्द जैसे चिन्तक एवं विचारक के ही सामर्थ्य की बात की थी। इसी प्रकार वेद और आर्य समाज में उन्होने आर्य समाज तथा उस के प्रवर्तक के वेद विषयक मन्तव्यों को तर्क पूर्ण शैली में प्रस्तुत तो किया ही है। स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों में किए गए प्रक्षेपों तथा तज्जन्य भ्रान्तियों का भी सप्रमाण निराकरण किया है। इसी प्रकार उपदेश मंजरी के उर्दू अनुवाद की भूमिका, ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार की भूमिका, पण्डित लेखराम कृत महर्षि के उर्दू जीवन चरित की भूमिका, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के उर्दू अनुवाद की भूमिका भी उन के दयानन्द विषयक अध्ययन की विशालता तथा उन की व्यापक दृष्टि परिचायक है।

स्वामी श्रद्धानन्द अपने युग के एक सफल पत्रकार भी थे। उन्होंने वर्षों तक सद्धर्म प्रचारक का उर्दू तथा हिन्दी में प्रकाशन एवं सम्पादन किया। इस पत्र में उन के जो महत्वपूर्ण लेख छपते थे। वे ही कालान्तर में आर्य ग्रन्थ माला के कतिपय पृष्पों के रूप में पुस्तकाकार भी छपे। उन्होंने सद्धर्म प्रचारक में वेद उपनिषद् तथा मनुस्मृति आदि धर्म ग्रन्थों के मन्त्रों, वाक्यों एवं श्लोकों के आधार पर आध्यात्मिक एव नैतिक उपदेशों की जो सतत प्रवहमान धारा बहाई थी। उसे कालान्तर में 'धर्मोपदेश' तथा 'मुक्तिसोपान' शीर्षक ग्रन्थों में लिपिबद्ध किया गया था। इन ग्रन्थों को पढने से स्वामी श्रद्धानन्द के आध्यात्मिक व्यक्तित्व का परिचय पाठकों को मिलता है।

महात्मा मुंशीराम गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक और आचार्य भी थे। वे महाविद्यालय की कक्षाओं को तुलनात्मक धर्म तथा आर्य सिद्धान्त पढाया करते थे। इसी प्रसंग में उन्होंने पारसी मत और वैदिक धर्म का तुलनात्मक अध्ययन किया और उसे छात्रोपयोगी शैली मे लिख कर ग्रन्थाकार छपाया। आर्यों की नित्याकर्म विधि, पंच महा यज्ञ की विधि आदि उन के कर्मकाण्ड परक ग्रन्थ हैं। उन के एक मित्र भी ज्वालासहाय ने 'विस्तारपूर्वक संध्या' शीर्षक उर्दू ग्रन्थ अपने अनुभवों के आधार पर लिखा था। मुंशी राम जी को यह ग्रन्थ इतना अच्छा लगा कि उन्होने उसे हिन्दी में अनुदित कर प्रकाशित किया।

धर्म विषयक ग्रन्थों के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द को रचनाओं में ऐसी कृतियां भी प्रचुर सख्या में हैं। जो हिन्दू संगठन, छुआछूत की समस्या, इस्लाम और ईसाइयत के हिन्दू समाज पर किये गये आक्रमणों के प्रतिकार तथा इसी प्रकार की अन्य समस्याओं से सम्बद्ध है। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् स्वामी जी देश और समाज के विराट् फलक पर अवतीर्ण हो गये थे। लाला लाजपत राय और पण्डित मदन मोहन मालवीय जैसे हिन्दुत्व निष्ठ नेताओं के सहयोग से उन्होंने हिन्दू महासभा को भी पुनरजीवित तथा शुद्धि और संगठन का शंखनाद किया।

कहना नहीं होगा कि हिन्दू धर्म और समाज की रक्षा की दृष्टि से उनका यह कार्य अत्यन्त महत्व का था। हिन्दू संगठन, जाति के दोनों को मत त्यागो, अचार-अनाचार और छूतछात आदि उन के ऐसे ही ग्रन्थों मे उपर्युक्त प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है।

कांग्रेस मे कार्य करने का अवसर भी स्वामी श्रद्धानन्द को मिला था। यों तो महात्मा गांधी से उन का सम्पर्क तब से ही था जब महात्मा जी दक्षिण अफ्रीका मे सत्याग्रह करने के पश्चात् स्वदेश मे आए थे। उन दिनों वे कर्मवीर गांधी के नाम से जाने जाते थे। 'महात्मा' का पद तो उन्हे स्वयं महात्मा मुंशी राम ने ही प्रदान किया था। रौलेट एक्ट के विरोध मे गांधी जी द्वारा प्रदत्त आह्वान को स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी अन्तरात्मा मे अनुभव किया और अपने अन्य सभी कार्यक्रमों को स्थगित कर, वे आजादी की लड़ाई म कूद पडे। रौलेट एक्ट के विरोध मे दिल्ली की जनता को जागृत करने तथा उन्हे प्रभावशाली नेतृत्व प्रदान करने म स्वामी श्रद्धानन्द सर्वात्मना जुट गये तथा डा अन्सारी और हकीम अजमल खां जैसे नेताओं को साथ लेकर दिल्ली मे सत्याग्रह का सफल सचालन किया। इसी दौरान उन्हे अंग्रेजी सेना के गोरखों की संगीनों के आसन्न प्रहार के लिए अपनी छाती खोलनी पड़ी तथा मुसलमानों को राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति का संदेश देने के लिए जामा मस्जिद की वेदी से साम्प्रदायिक सौहार्द का उपदेश भी देना पड़ा। स्वामी जी के सार्वजनिक जीवन के ये स्वर्णिम दिन थे। किन्तु कांग्रेस को ले कर उन का शीघ्र ही मोह भंग हो गया। खिलाफत के बाद मुसलमानों मे साम्प्रदायिक विद्वेष का जो विस्फोट हुआ और जिस के फलस्वरूप देश मे सर्वत्र हिन्दू मुस्लिम दगे फूट पडे, उस के घिनौने दृश्य भी स्वामी जी ने देखे। उन्होंने अनुभव किया कि मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति पर यदि कांग्रेस चलती रही तो उस से हिन्दू जाति का तो अहित होगा ही, स्वराज्य प्राप्ति का लक्ष्य भी दूर हो जायेगा। स्वामी श्रद्धानन्द ने चाहे 1947 की घटनाओं को न देखा। किन्तु यह अप्रकट नहीं है कि कांग्रेस की नीति मे मुस्लिम तुष्टिकरण का जो दानव प्रविष्ट हुआ। उस की राक्षसी क्षुधा निरन्तर बढ़ती ही गई और वह पृथक् निर्वाचन, अल्पमतों के अधिकार तथा आरक्षण तक ही सीमित नहीं रही किन्तु उस ने इन्हीं नेताओं से देश का विभाजन भी करवाया।

स्वामी श्रद्धानन्द की व्यापक दृष्टि ने देश के राजनैतिक क्षितिज को निरन्तर तीस वर्षों तक सतर्कता से देखा था। अपने इन्हीं अनुभवों को उन्होंने स्व सम्पादित अंग्रेजी पत्र 'दि लिबरेटर' मे धारावाही लेखमाला के रूप मे प्रकाशित किया। कालान्तर मे उन के ये लेख 'इन साइड कांग्रेस' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। स्वामी जी का अपने युग के सभी विख्यात नेताओं तथा राजनीतिज्ञों से महत्वपूर्ण पत्र व्यवहार हुआ था। महात्मा गांधी, गोपाल कृष्ण गोखले तथा देशबन्धु सी एफ. एण्ड्रूज से हुए उन के पत्र व्यवहार मे अनेक महत्वपूर्ण सार्वजनिक प्रश्नों की चर्चा हुई है।

स्वामी श्रद्धानन्द अंग्रेजी भाषा के एक प्रौढ़ लेखक थे। उन का इस भाषा पर असाधारण अधिकार था। जब पटियाला राज्य मे ब्रिटिश शासकों के संकेत से आर्य समाजियों पर सत्ता पलटने और शासन के विरुद्ध षड्यन्त्र करने का अभियोग चलाया गया और बेकसूर आर्यों को बनावटी मुकद्दमों मे फांसकर नाना प्रकार की अमानुषिक यातनाएं दी गईं तो महात्मा मुंशी राम का हृदय क्रन्दन कर उठा। उन्होंने थोड़े समय के लिए ही सही, आचार्य के अपने पीतवेश को उतारा और वकील का काला कोट एक बार पुनः पहना। तब वे बैरिस्टर रोशन लाल (लाहौर निवासी) तथा दीवान बद्रीदास जालन्धर निवासी जैसे आर्य समाजी विधिवेत्ताओं के सहयोग से पटियाला षड्यन्त्र अभियोग का पर्दाफाश करने तथा वहां के आर्य समाजियों को निर्दोष सिद्ध करने के गुरुतर कार्य मे लग गए। अन्ततः सत्य की विजय हुई और पटियाला राज्य को यह अभियोग समाप्त कर देना पड़ा। किन्तु शीघ्र

मुकद्दमें की पैरवी के दौरान महात्मा मुंशीराम ने अनुभव किया कि अंग्रेज शासक आर्य समाज को सन्देह की नजर से देखते हैं और उस के निर्दोष कार्यक्रमों तथा धार्मिक मन्तव्यों में भी उन्हें राजद्रोह तथा षड्यन्त्र की गन्ध आती है। इसी बात को ध्यान में रख कर तथा विदेशी हकूमत द्वारा भविष्य में किये जाने वाले अत्याचारों और उत्पीड़न से दयानन्द के महान् मिशन को बचाने की दृष्टि से मुंशी राम ने अपने सहयोगी आचार्य रामदेव के सहलेखन में एक ऐतिहासिक ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखा। इस का शीर्षक था आर्य समाज तथा उस के शत्रु : आक्षेपों का निराकरण और प्रतिवाद। 1910 में केवल एक बार छपी यह ऐतिहासिक पुस्तक आर्य समाज की नीति पर एक प्रामाणिक दस्तावेज है। उन के अंग्रेजी मे लिखे अन्य लघु ग्रन्थ 'दि फ्यूचर आफ आर्य समाज' और 'दि आर्य समाज एण्ड पोलिटिक्स' आदि भी महत्वपूर्ण हैं। पं. गोपाल कृष्ण गोखले विषयक संस्मरणों पर आधारित एक लेख स्वामी श्रद्धानन्द ने 'वैदिक मैगजीन' के जून 1920 के अंक में भी छपाया था। दुर्भाग्यवश यह लेख अधूरा ही छपा और इस की अवशिष्ट सामग्री प्रमादवश नष्ट हो गई।

स्वामी जी के उर्दू में रचित ग्रन्थों की संख्या भी पर्याप्त है। अपने आर्य सामाजिक जीवन के आरम्भ में ही उन्हें काश्मीरी पण्डित गोपीनाथ के साथ एक मानहानि के मुकद्दमें मे उलझना पड़ा था। सद्धर्म प्रचारक में जब पं. गोपीनाथ पर कुछ सत्य आरोप लगाये गये तो उस ने प्रचारक के सम्पादक व प्रकाशक महाशय मुन्शी राम को अदालत में खींच लिया। परन्तु इस से गोपीनाथ का ही भाण्डा फूटा और अभियोग के दौरान यह सिद्ध हुआ कि वह ईसाई पादरियों का वेतनभोगी एजेण्ट है। स्वामी जी ने इस अभियोग का पूरा विवरण जो अनेक ऐतिहासिक तथ्यों और जानकारियों से भरपूर है। उर्दू में पुस्तकाकार प्रकाशित किया था। इस का हिन्दी भी उन्होंने किया जो 1901 ई. में छपा।

स्वामी जी के अन्य उर्दू ग्रन्थ निम्न हैं —

वर्ण व्यवस्था, एक मांस प्रचारक महापुरुष की गुप्त लीला का प्रकाश, खास धर्म पालन का गैर मामूली मौका यज्ञ का पहला अंग, आर्य समाज के आनाथाव दुश्मन, (सद्धर्म प्रचारक में छपे लेखों का संग्रह) सुबह जो मीद (स्वामी दयानन्द की वेद भाष्य शैली का विवेचन) पुराणों की नापाक तालीम से बचो, महात्मा मुन्शीराम के साथ लेक्चरों का मजमुआ, दुखी दिल की पुरदर्द दास्तां, मेरी जिन्दगी के नशेबोफराज, हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी, अंधा एतकाद और सूफिया जेहाद, मुहम्मदी साजिश का इन्कशाफ, अछूतोद्धार एक फौरी मसला, मेरा आखिरी मशूवरा तथा वाइए इस्लाम या तबाहिए इस्लाम।

उपर्युक्त सूची पर दृष्टिपात करने से विदित हो जाता है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने उर्दू में अपने जीवन के अनेक खट्टे मीठे अनुभवों को वहां लेखनी द्वारा उतारा है। वहां आर्य समाज की अनेक आन्तरिक समस्याओं और उस के विवादों पर भी साधिकार विचार व्यक्त किए हैं। इस प्रसंग में उन की बृहदाकार कृति 'दुखी दिल की पुरदर्द दास्तां' विशेष रूप से उल्लेख योग्य है। इसमें उन्होंने आर्य समाज की उस दुखती रग पर अंगुली रखी है जिस की पीड़ा स्वयं स्वामी जी ने भी भोगी थी। 'कुलियात सन्यासी' शीर्षक से स्वामी जी की प्रतिनिधि उर्दू कृतियां छप चुकी हैं।

सम्पूर्ण श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का पुनः प्रकाशन

यह अत्यन्त हर्ष का प्रसंग है कि आर्य समाज के यशस्वी प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द ने स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पूर्ण साहित्य को 11 खण्डों में प्रकाशित करने का सराहनीय प्रयास किया है। इस ग्रन्थावली के सम्पादन का प्रमुख भार इन पंक्तियो के लेखक पर ही है। उर्दू ग्रन्थों का अनुवाद व सम्पादन श्री राजेन्द्र जिज्ञासु करेंगे। स्वामी जी के दुर्लभ व अनुपलब्ध ग्रन्थों को प्राप्त कराने में हमें बदायूं के श्री राधाराम जिज्ञासु पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा कतिपय अन्य सज्जनों से सहयोग मिला। तदर्थ उन के प्रति आभार व्यक्त करना आवश्यक है। आशा है आर्य जनता 11 खण्डों में प्रकाशित इस ग्रन्थावली को हाथों हाथ अपना कर सम्पादक एवं प्रकाशक का उत्साहवर्धन करेगी।

कल्याण मार्ग के पथिक अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

लेखक—श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा

इनका बचपन का नाम मुन्शीराम था—आप नास्तिक विचार के होने के कारण ईश्वर को नहीं मानते थे—एक बार जब महर्षि दयानन्द बरेली 1936 विक्रमी में 14 श्रावण से 3 भादों तक प्रचारार्थ पधारे तब आपको उनके प्रवचन सुन कर बड़ा आनन्द आया-आपने महर्षि दयानन्द से शंका समाधान द्वारा अपनी सभी शंकाओं का निवारण किया और महर्षि से कहा कि आपकी युक्तियों द्वारा तो ईश्वर हस्ति को स्वीकार करता हूं—परन्तु अभी तक बुद्धि स्वीकार नही करती महर्षि दयानन्द ने कहा कि जब ईश्वर की कृपा होगी तो बुद्धि भी स्वीकार कर लेगी। उसी दिन से आपके जीवन का कांटा ही बदल गया और आपने बड़ी मेहनत से महर्षि का अमर ग्रन्थ प्राप्त करके बड़ी श्रद्धा से पढ़ा—जिससे ज्ञान चक्षु खुले-सच्चाई का जीवन पर प्रभाव पड़ा—वकील होते हुए भी झूठा केस लेना बन्द कर दिया—उनका जीवन एक दृष्टि में :—

1. महर्षि दयानन्द से प्रथम भेंट	1936 विक्रमी
2. आर्य समाज में प्रवेश	1834 ई.
3. वकालत पास	1887 ई.
4. धर्म प्रचार की लग्न	1888 ई.
5. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान	1892 ई.
6. गुरुकुल खोलने का संकल्प	1898 ई.
7. गुरुकुल जारी किया	1902 ई.
8. सत्य धर्म प्रचारक (उर्दू) पत्रिका जारी की।	1889 ई.
9. पटियाला केस के 85 आर्य समाजियों के केस की पैरवी करके जेल से छुड़ाए।	1909 ई.
10. सत्यधर्म प्रचारक उर्दू से हिन्दी में किया	1907 ई.
11. सन्यास आश्रम में प्रवेश	1917 ई.
12. सार्वदेशिक सभा के प्रधान	1908 ई.
13. पंजाब कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण को स्वीकार करके अपना भाषण प्रथम बार हिन्दी में दिया—जलियांवाला गोली काण्ड के कारण जब कोई भी अधिवेशन करने को तैयार न था।	1919 ई.
14. गुरुकुल भठिण्डा की स्थापना अपने कर कमलों से उद्घाटन किया-आधारशिला रख कर	1924 ई.
15. अमर बलिदान 23 दिसम्बर	1926 ई.

मुख्य घटनाएं

1. जामा मसजिद देहली में आज तक किसी गैर मुसलमान को व्याख्यान देने का अवसर न मिला केवल स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को ही प्राप्त हुआ।

2. महात्मा गान्धी इन को अपना बड़ा भाई मानते थे।

3. अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी—सन्तान के लिए कुछ नही रखा।

4. गुरुकुल में अपने दोनो पुत्रों को दाखल करके गुरुकुल शुरू किया।

5. कराची की असगरी बेगम को शुद्ध करके शान्ति देवी नाम रखा—इस पर स्वामी जी के वारन्ट गिरफ्तारी—जमानत हुई—केस में विजय हुई।

(शेष पृष्ट 16 पर)

शत् शत् वन्दन

लेखक—श्री प्रो. उत्तम चन्द जी शरर एम. ए.

गान्धी जी के सत्यशोध की प्रबल साधना,
महामना की भावभीनी सांस्कृतिक अर्चना ।
टण्डन जी का श्रद्धामय वह भारती वन्दन,
लाला लाजपतराय का मुखरित तेजस्वी जीवन ।
गोखले की निज देश प्रेम की पूत भावना,
वह स्वराज्य के लिये तिलक की सतत साधना ।
यह सद्गुण सब चमक उठे जिस एक व्यक्ति मे,
ईसा का प्रति रूप अग्रणी शक्ति भक्ति मे ।
जिसे दे गया दयानन्द दर्शन नव जीवन,
उस बलिदानी श्रद्धानन्द को शत् शत् वन्दन ।

उठ जाग रे स्वाभिमान

मेरे मानस की अमर ज्योति, मेरे जीवन के अमर प्राण । उठ जाग.........
तेरे बल वैभव का न पार, तेरी शक्ति का क्या बखान ? उठ जाग ....
तेरे माथे की भृकुटि से, रिपुदल थर-थर कम्पायमान । उठ जाग ... .
तेरी हुंकृति से जगता है, मानव का सुप्त वैभव महान् । उठ जाग.... .
तुझ बिन अमृत भी गरल तुल्य, तु दे तो विष भी सुधा पान । उठ जाग .
तू जागे तो जीवन जागे, तू सोए तो नर मृत समान ।
तू प्राणी का प्रेरणा स्रोत, तुझ बिन प्राणी केवल मसान ।
उठ जाग रे स्वाभिमान ।

विद्वान् एवं निर्भीक शिष्य,
विद्वान् एवं निर्भीक आचार्य का

महात्मा मुंशीराम

(श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द संस्मरण)

लेखक—श्री पं. धर्मवीर जी
आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

श्री विद्यानिधि (अथवा श्री निधि) सिद्धान्तालंकार विद्वान् व्यक्ति हैं। वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में चारों वेदों के व्याख्याता के रूप में प्रसिद्ध हैं। चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराने में निष्णात हैं। वेद मन्त्रों का स्पष्ट, शुद्ध, सम्यक् उच्चारण करते हैं। साथ ही निर्भय होकर वन्य-हिंसक पशुओं के जीवन का अध्ययन करते रहे हैं। वन्य जीवन के सम्बन्ध में उनकी सात पुस्तकें आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों द्वारा वे प्रशंसनीय प्रसिद्धि पा चुके हैं।

श्री निधि जी इस समय 87 वसन्त बिताकर आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में निवास कर रहे है। सन् 1907 में गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट हुए थे। सन् 1921 मे स्नातक हुए। श्रद्धेय आचार्य महात्मा मुन्शीराम जी का स्मरण कर वे भाव-विभोर हो जाते हैं।

गुरुकुल प्रवेश की घटना उन्हें आज भी ऐसी स्मरण है, जैसे कि कल की बात हो। उनके पितृ श्री और मातृ श्री. उन्हे गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराने लाए थे। आयु भी लगभग 5 6 वर्ष मां कब अपने हृदय के टुकड़े को प्रसन्नता से अलग कर सकती है। पितृ श्री बालक के भावी जीवन को दृष्टि में रखकर उसके निर्माण का सत्प्रयत्न करता है। माता ने कह दिया—"रात्रि भोजनोपरान्त दूध पीकर आ जाना।" बालक वासुदेव (उनके घर का नाम वासुदेव था) ने रात्रि भोजनोपरान्त दूध पीकर रोना आरम्भ कर दिया—"अम्मा ने कहा था, दूध पीकर आ जाना।" स्नेहसिक्त अधिष्ठाता महोदय ने बहलाने का बहुत प्रयत्न किया। दूसरे सहपाठी ब्रह्मचारियों ने भी प्रलोभन दिए। पर बालक ने जो रट लगाई "अम्मा ने कहा था, दूध पीकर आ जाना" सो वह बन्द नही हुई यह रुदन सुन महात्मा मुन्शीराम जी भी आ गए। बालक को गोद में उठाया। पुचकारा। ममता से दुलारा। पर बालक अपनी रट से अविचलित रहा। महात्मा जी अपनी कुटिया मे गए। एक सन्तरा लाए। छील-छील कर गोद में बैठे बालक को खिलाया। श्री निधि कहते हैं कि उनका परम सौभाग्य है कि उन्होने महात्मा जी की गोद में बैठने का पुण्य अवसर पाया। उन्होंने आगे बताया कि महात्मा जी को संतरा बहुत प्रिय था। वे ब्रह्मचारियों से कहा करते थे कि जब प्यास लगे तो सन्तरे का रस पिया करो। उनके समय ब्रह्मचारियों को सन्तरा आदि अनेक फल प्रचुर मात्रा में मिला करते थे।

ब्रह्मचारियों को अधिक से अधिक दूध पिलाने का चाव महात्मा जी को था। दिन में तीन बार प्रात: मध्याह्न् और रात्रि को ब्रह्मचारियों को दूध मिलता था। प्रातराश के समय प्रात:काल महात्मा जी स्वयं वितरण करते थे। एक कटोरा (लगभग डेढ़ पाव का) दूध पीने के बाद दूसरा कटोरा दूध पीना आवश्यक था। महात्मा जी स्वयं दूध बांटते थे। अत: सभी ब्रह्मचारियों का ध्यान रखते थे। अत: सबको दूसरा कटोरा दूध पीना ही पड़ता था। अगर कोई ब्रह्मचारी न पिये, तो उसे डाक्टर के पास इलाज के लिए भेजा

जाता था। डाक्टर से बचने के लिए जैसे-तैसे दूध पीना ही पड़ता था। (आज इतने स्नेहपूर्ण आग्रह कौन करता है?) जो ब्रह्मचारी दो कटोरो से भी अधिक दूध पी सकते थे, उन्हे अधिक दूध पिलाकर महात्मा जी को परम सतोष मिलता था। ब्रह्मचारी बलवान दृढ एव पुष्ट बने, ऐसा उनका विशेष आग्रह रहता था। ऐसा वे ब्रह्मचारियो को कहते और प्रोत्साहित करते रहते थे। विजया दशमी के दिनो मे लका विजय, खेलो के बाद,मिठाई से भरे कनस्तर,ढू ढने का भी खेल खिलाया जाता था। दिवाली आदि प्रत्यक पर्व पर ब्रह्मचारियो को पौष्टिक भोजन, मिठाई, फल आदि खिलाने मे महात्मा जी को आत्म सन्तोष होता था।

जहा महात्मा जी ब्रह्मचारियो को बलवान् और विद्वान् बनाने के लिए सतत प्रयत्नशील थे, वहा उन्हे "वीर" साहसी बनाने के लिए भी प्रोत्साहित करते थे। एक बार तीन ब्रह्मचारियो—देश बन्धु, कृष्ण स्वरूप, परमानन्द—को जगल मे भ्रमण करते हुए 6 डाकू मिल गए। उनके साथ ब्रह्मचारियो का प्रबल सघर्ष हुआ। बन्दूकधारी डाकुओ को भगा कर वे जब गुरुकुल पहुचे, तो चर्चा का विषय बन। महात्मा जी को पता चला। वे भी उन ब्रह्मचारियो के पास आए। (अपने पास बुलाया नही, कारण यह था कि महात्मा जी की दृष्टि मे यह वीरता, सम्मान का कार्य था।) सारा विवरण सहर्ष, सकुतूहल सुना। ब्रह्मचारियो को डाटा-फटकारा नही अपितु उत्साहित करते हुए बोले—"अच्छा तो तुम उन्हे पकड कर न ला सके।" अर्थात् इतना काम अभी और करना था। जब कि ब्रह्मचारी इसलिए उन्हे पकड नहीं लाए कि कही आचार्य जी नाराज न हो।

गुरुकुल कागडी के चारो ओर घना बन था। उस मैं हिंसक वन्य प्राणी घूमते-2 गुरुकुल मे भी आ जाते थे। एक बार रात्रि के दो बजे एक बघेरा गुरुकुल आ गया। तीन-चार ब्रह्मचारियो ने उसे मारने के लिए उसका पीछा किया। बघेरा अपनी जान बचाता भागा। वह महात्मा जी की कुटिया के चारों ओर चक्कर लगाने लगा। ब्रह्मचारी भी उसके पीछे, महात्मा जी की कुटिया के चारो ओर, उसका पीछा करते, दौड़ने लगे। महात्मा जी जाग गए। आवाज दी—"कौन है?" ब्रह्मचारी रुके। महात्मा जी बाहिर आए। यह जानकर कि बघेरा है, वे भी उनके साथ आगे 2 चल पड़े। वे ब्रह्मचारियो के उत्साह को कभी टोकते नही थे। बघेरा तब तक गगा की धार के पार जा रहा था। उसे पार पहुचते देखा। महात्मा जी ने पूछा—"ब्रह्मचारियो। अब क्या इरादा है।" उन्होंने स्वय नहीं कहा कि अब पीछा करना व्यर्थ है। चलो, आश्रम चलो।" न ही उन्होने डाटा कि रात मे हिंसक पशुओ का पीछा करना अच्छा नही। वे तो ब्रह्मचारियो की वीरता एव साहस को चुनौती देकर बढाते थे। उनके प्रश्न मे छिपा भाव था कि हिम्मत हो तो चलो गगा के पार चलें। पर ब्रह्मचारी स्वय ही उनके साथ वापिस आश्रम आ गए।

एक दिन एक अन्य बघेरा महात्मा जी की कुटिया मे ही आ गया। महात्मा जी कुर्सी पर बैठे थे। सामने मेज थी। जगह तग थी महात्मा जी एक दम जल्दी उठ न सकते थे। बघेरे ने द्वार की चिक एक तरफ की ओर अन्दर आकर सामने खड़ा हो गया। दोनो ने एक दूसरे को भरपूर देखा महात्मा जी ने एक छोटी सी, रद्दी कागज वाली टोकरी उसके ऊपर "भू " कहते हुए फैंकी, बघेरा चिक उठाकर भाग गया।

इस घटना की बात तुरन्त गुरुकुल मे फैल गई। धीरे-2 महात्मा जी की कुटिया पर सभी इकट्ठे होने लगे। महात्मा जी के चेहरे पर भय का कुछ भी चिन्ह नही था। सभी को भयमुक्त करते हुए, शान्तभाव से घटना बताते रहे। मानो कुछ हुआ ही नही। निधि जी छात्रावस्था मे विनोद प्रिय ब्रह्मचारी थे। उन्होंने विनोद की बात अत्यन्त गम्भीर बनते हुए कही। "महात्मा जी बघेरा आपके पास शिकायत लेकर आया था।" सभी ने आश्चर्य एव क्रोध से निधि की ओर देखा। मानो डाट रहे हो, क्या यह मजाक का

समय है ?" ब्र. निधि स्थिर, शान्त बना खड़ा रहा। महात्मा जी ने पूछा—"क्या शिकायत लाया था ?"

ब्र. निधि ने उत्तर दिया—"यह यह शिकायत लेकर आया था कि आपने ब्रह्मचारियों की झोंपड़ियों के लिए जंगल की सारी घास कटवा ली है। अब वह कहां छिपे ?"

महात्मा जी ने इस उत्तर को मजाक समझ टाला नहीं। गम्भीरता से लिया। तत्कालीन मुख्याधिष्ठाता श्री नन्दलाल जी को आदेश किया कि अब जंगल की घास न काटी जाए। यह थी, उनके हृदय की करुणा, उन हिंसक पशुओं के लिए।

महात्मा मुंशी राम जी का सदा यह प्रयत्न रहता था कि गुरुकुल के वातावरण में सहृदयता सौमनस्यता बनी रहे। ब्रह्मचारियों में, या गुरुजनों में या अन्य कार्यकर्ताओं में किसी प्रकार से भी विद्वेष अथवा ईर्ष्या न फैले।

गुरुकुल में एक व्यायाम—शिक्षक गतका सिखाया करते थे। एक दूसरे शिक्षक भी गतका, लाठी चलाना जानते थे। वे 29-30 वर्ष के युवक थे। जब व्यायाम शिक्षक मैदान में ब्रह्मचारियों को गतका सिखाते, तभी वे युवक शिक्षक आते, व्यायाम-शिक्षक को घृणा एवं अपमान से देखते, दो-तीन अपमानजनक शब्द बोलते, ब्रह्मचारियों को अच्छा न लगता। खेल का मैदान नदी तट पर था। ऊपर किनारे पर महात्मा जी की कुटिया थी। वे भी प्रतिदिन यह देख दुःखी होते। उपाय सोचते।

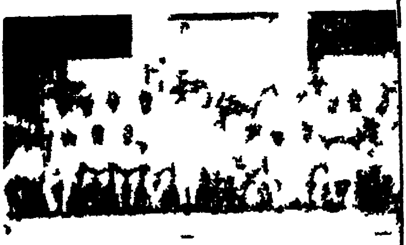
एक दिन व्यायाम शिक्षक ने ब्रह्मचारियों की परीक्षा ली और जांच की कौन गतका चलाने में अच्छा खेल प्रदर्शन कर सकता है। ब्र. निधि उन्हें श्रेष्ठ लगा दूसरे दिन जब युवक शिक्षक खेल के मैदान में आए, और प्रतिदिन की भान्ति व्यवहार किया। तो ब्र. निधि का उनसे मुकाबिला करा दिया। ब्र. निधि ने दो-चार बचाव किए, दो-चार प्रहार भी इधर-उधर किए। फिर एक ऐसा वार किया कि युवक शिक्षक महोदय के हाथ की अंगुलियां गतका न पकड़ सकी। गतका भूमि पर गिर पड़ा। शिक्षक महोदय अपना हाथ मलते हुए चले गए। बाद में ब्र.निधि से बोले-"अपने गुरु का कुछ लिहाज तो करना चाहिए था। उनका हाथ कई दिनों तक दुःखता रहा। महात्मा जी प्रतिदिन की भान्ति आज भी अपनी कुटीया के बाहिर खड़े देख रहे थे। न वे पहले कभी बोले थे, न आज बोले। उनके चेहरे पर कुछ सन्तोष अवश्य था।

एक दिन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री रैम्चे मैकडानल्ड गुरुकुल पधारे। उनका स्वागत मुख्य द्वार पर किया गया सभी अध्यापक एवं ब्रह्मचारी द्वार के दोनों ओर पंक्ति बद्ध खड़े थे। श्री मैकडानल्ड हाथी से उतरे। महात्मा जी ने उनकी अगवानी की। गुरुकुल के अन्दर ले आए। ब्रह्मचारियों की दृष्टि में महात्मा मुंशीराम जी का व्यक्तित्व विश्व में सर्वोत्कृष्ट था। श्री मैकडानल्ड को हाथी पर देखकर लगा कि यह व्यक्तित्व भी कम नहीं। जब वे हाथी से उतरे और दोनों ने परस्पर अभिवादन किया, तब भी महात्मा जी का व्यक्तित्व उनसे अधिक भव्य था। बाद में, प्रधानमन्त्री ने लन्दन जाकर वहां के समाचार पत्र "टाइम्स" में अपनी गुरुकुल यात्रा का विस्तृत विवरण छापा था। गुरुकुल के पवित्र सादे वातावरण से वे बहुत प्रभावित हुए थे। सायंकालीन यज्ञकुण्ड की अग्नि की थिरकती हुई ज्वालाओं से ब्रह्मचारियों के शरीर की छाया नाचती हुई ऐसी मनोहारी,प्रतीत हो रही थी, मानों स्वर्ग से उतर अप्सराएं नृत्य कर रही हों। उसी विवरण में आगे जो लिखा, उससे स्पष्ट होता है कि वे महात्मा जी के व्यक्तित्व से कितने अधिक प्रभावित हुए थे। वे लिखते हैं :—

"अगर आप आज के युग में पवित्र ईसा के भव्य दर्शन करना चाहते हैं तो भारत के गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में, हिमालय की रमणीय तलहटी में, गंगा की पवित्र धाराओं के मध्य, थोड़े से शिष्यों को प्राचीन ऋषियों के रूप में निर्माण कर रहे, महात्मा मुंशीराम से मिलिये। आपकी आत्मा अद्भुत, अनिर्वचनीय पवित्रता से आनन्दित होगी।"

श्री निधि ने भावविभोर होते हुए बताया—ऐसे पितृ-मातृ वात्सल्य से ओत-प्रोत हृदय वाले। परम विद्वान, साहसी, पवित्र एवं प्रवचन हम सब के हित की चिन्ता में अहर्निश तल्लीन महात्मा के चरणों में विद्या-मधु का पान करते, तपस्वी जीवन की शिक्षा ग्रहण करते हमारे वे दिन परम सौभाग्य के थे। अनुपम श्रद्धा से रचित उनके कवित्त स्मरणीय हैं —

पावन पादुका चारु बसै,
गुरु हस्त में दक्षिण दण्ड विराजैं।
भाल विशाल, प्रभा भरे नैन,
अवम्य दयाघन आनन साजैं।
मूरति यह मन मेरे सदा,
शुभ श्री गुरु श्रद्धानन्द की राजै।।1।।
आश्रम रम्य बना वन में,
फिर सूने हिमाचल भाग बसाए।
स्वर्ग नदी के मनोहर तीर पे,
ओ३म के अम्बर झण्डे उड़ाए।
चातक भूख मिटाई, दे जीवन,
जीवन देकर प्यास बुझाई।
ऐसी दया दिखलाएगा कौन ?
श्री श्रद्धानन्द ने जैसी दिखाई।।



पिछले दिनों आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दास बाजार) में। वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया सभी अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य उसमें सम्मलित हुए। चित्र में सभी बैठे दिखाई दे रहे हैं।

(11 पृष्ठ का शेष)

6 मिस्टर गान्धी के आगे से मिस्टर हटा कर महात्मा गान्धी का नाम दिया।

7 टर्की के कमाल पाशाह ने पर्दे के विरुद्ध विजय प्राप्त की उस खुशी में अपने निवास स्थान पर दीपमाला की कि वरना यह शुभ कार्य हमें करना पड़ता।

8 दिल्ली चान्दनी चौक—घण्टा घर के पास (रोल्ट एक्ट के विरुद्ध में जलूस के नेतृत्व करते समय) अंग्रेजी फौज की संगीनों के आगे छाती तान दी कि गोली मुझे मारो—फौज पीछे हट गई।

9 वायसराय चैम्सफोर्ड जब गुरुकुल आए—तुलसी के पत्तों की चाय पिला कर स्वागत किया।

10 जब महात्मा गान्धी ने हिन्दुओं (भारतीयों के लिए) सत्याग्रह किया तो गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने एक समय भोजन नहीं किया उससे जो धन बचा वह महात्मा गान्धी को भेजा।

11 एक बार महात्मा गान्धी ने स्वामी जी से कहा कि आप मुसलमानों की शुद्धि न किया करो—स्वामी जी ने कहा कि आज से किसी हिन्दू को भी मुसलमान न बनाया जावे—यह कानून दोनों पर लागू करें—महात्मा गान्धी जवाब न दे सके चुप हो गए।

12 23 दिसम्बर 1926 ई को अब्दुल रशीद नामी जनूनी मुसलमान ने एक बेगुनाह सन्यासी (जो नमूनिया के कारण बीमार पड़े थे) के सीने पर पिस्तौल से तीन गोली मार कर हत्या कर दी।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी

लेखक—श्री प्रो. ओमप्रकाश जी मंगला, प्रधान आर्य समाज भठिण्डा

श्रद्धानन्द जी का जन्म मार्च 1856 में पंजाब प्रदेश के जालन्धर जिला के तलवन नामक ग्राम में हुआ। इन का घरेलू नाम मुंशीराम था। इनके पिता श्री नानकचन्द जी उत्तर प्रदेश में पुलिस अधिकारी थे।

मुंशीराम जी की आरम्भिक शिक्षा बनारस के सरकारी स्कूल में हुई और कालेज की शिक्षा म्योर सैण्ट्रल कालेज इलाहाबाद में ग्रहण की। इन्होंने वकालत की शिक्षा लाहौर से ग्रहण की।

मुंशीराम जी का विवाह 21 वर्ष की आयु में जालन्धर के राय सालिगराम की कन्या शिवदेवी से हुआ। शिवदेवी धर्म परायण पतिव्रता अत्यन्त सजीली लड़की थी। उसने अपने स्नेह तथा कर्त्तव्य परायणता से मुंशीराम को कुव्यसनों से छुड़ा दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी 1882 में स्वामी दयानन्द जी के सम्पर्क में आए। स्वामी जी के विचारों तथा कार्यों का श्रद्धानन्द जी पर बहुत प्रभाव पड़ा और इसके फलस्वरूप प्रमुख आर्य समाज सेवक बन गए। इन्होंने अपने जीवन में निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किए।

गुरुकुल की स्थापना—

आर्य प्रतिनिधि सभा ने 26नवम्बर 1898 को एक प्रस्ताव पास किया कि गुरुकुल की स्थापना की जाए। अब सवाल आया रुपया कहां से आए। श्रद्धानन्द जी घर का काम-काज छोड़, फलती-फूलती वकालत छोड़ घर से निकल पड़े और निश्चय किया कि जब तक चालीस-हजार रुपए इकट्ठे न कर लूंगा घर में कदम नहीं रखूंगा।

स्वामी जी की मेहनत तथा दृढ़ प्रतिज्ञा रंग लाई। फलस्वरूप सर्वप्रथम गुरुकुल की स्थापना पंजाब के गुजरांवाला नगर में हुई। इसके पश्चात् स्वामी दयानन्द जी के भक्त मुंशी अमनसिंह ने उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिला के कांगड़ी ग्राम में विशाल भूमि गुरुकुल को दान दी। यह स्थान हरिद्वार से लगभग पांच या छः मील दूर है।

24 मार्च 1902 को वैदिक यज्ञ के पश्चात् इस संस्था का प्रारम्भ हुआ। सबसे पहले महात्मा मुंशीराम ने अपने दोनों पुत्रों इन्द्र और हरीशचन्द्र को गुरुकुल के अर्पण किया। मुंशीराम जी ने अपनी जालन्धर वाली कोठी तथा अपना पुस्तकालय जिसकी कीमत लगभग तीस हजार थी गुरुकुल को दे दिए। इस प्रकार स्वामी जी ने अपनी जवानी गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना और विकास के लिए भेंट की।

स्त्री शिक्षा—

उस समय स्त्री शिक्षा का प्रचार न था। उन दिनों लड़कियों को पढ़ाना पाप समझा जाता था। समाज में स्त्री को उचित स्थान नहीं दिया जाता था। इस कार्य को स्वामी जी ने अपने हाथ में लिया और सर्वप्रथम अपने साले श्री देवराज जी के सहयोग से कन्याओं के लिए पाठशाला खोली। यह पाठशाला आज एक बड़ा वृक्ष बन गया है। यह कन्या महाविद्यालय न केवल पंजाब में बल्कि देश में विख्यात है।

अछूतोद्धार—

स्वामी जी ने कहा कोई अछूत नहीं है। समस्त वर्ण गुण कर्मानुसार होता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक ब्रह्मचर्य को अपने घर में अछूत रखना चाहिए। उन्होंने अपने लिए रसोइया एक अछूत को रखा।

स्वामी जी सच्चे सन्यासी थे। उनका जीवन त्याग का अनुपम उदाहरण है। वस्तुतः स्वामी जी देश,जाति और समाज के काम आए, मेरा उन्हें कोटि-2 प्रणाम।

—

एक दुर्लभ-ऐतिहासिक पत्र के सन्दर्भ में:–

लोकमान्य तिलक और स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक:—श्री प्रा. कुशलदेव जी शास्त्री रामानन्द नगर नांदेड़ (महाराष्ट्र)

मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) द्वारा (लोकमान्य) बाल गंगाधर तिलक को लिखे पत्र का अवलोकन करने से पूर्व मैं यह जरूरी समझता हूं कि हम दोनो महापुरुषो के समानान्तर जीवनक्रम पर हम दृष्टिपात करें जिस से स्पष्ट हो कि दोनों असाधारण महापुरुषो ने प्रस्तुत पत्र लेखन काल (1813) से पूर्व और पश्चात् देश के सामाजिक और राजकीय क्षेत्र में कितना गौरवपूर्ण स्थान बना लिया था।

बाल गंगाधर तिलक के पितामह रामचन्द्र पन्त अंग्रेजी सरकार के सर्वे विभाग में नौकर थे तो मुन्शी राम के पिता नानक चन्द अंग्रेजी शासन मे पुलिस इन्सपैक्टर थे। तिलक का जन्म ईस्वी सन् 1856 में हुआ तो मुंशी राम का भी जन्म 1856 मे ही हुआ। दोनो ही समवयस्क और समकालीन थे।

तिलक का जीवन छात्रावस्था से ही सन्मार्ग की ओर अग्रसर हुआ तो मुन्शी राम का जीवन कुमार्ग के ऊबड़-खाबड़ रास्तो से गुजरता हुआ कल्याण मार्ग का पथिक बना। सन् 1872 में तिलक को पितृ वियोग सहन करना पड़ा तो सन् 1875 मे मुन्शी राम को मातृ वियोग की व्यथा सहन करनी पड़ी। 1871 मे तिलक परिणय सूत्र में बन्धे तो मुन्शी राम ने 1877 मे द्वितीय आश्रम में पदार्पण किया। परिणयोत्सव पर तिलक की आयु 15 वर्ष और उन की धर्मपत्नी की आयु 9 वर्ष की थी तो विवाहोत्सव पर मुन्शी राम की आयु 21 वर्ष और उन की धर्मपत्नी की आयु 12 वर्ष की थी। 1879 में तिलक वकील हुए तो 1888 मे मुन्शी राम ने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की।

1880 मे विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, गोपाल गणेश आगरकर और बाल गंगाधर तिलक ने संयुक्त प्रयास से न्यूनतम शुल्क वाले राष्ट्रीय विद्यालय हेतु 'न्यू इंग्लिश स्कूल' की स्थापना की तो मुन्शी राम ने अपने वैयक्तिक प्रयास से ही क्रमश: 1889 में कन्या पाठशाला जालन्धर (1902 में गुरुकुल कांगड़ी और 1923 में कन्या गुरुकुल देहरादून) की स्थापना की। 1891 में मुन्शी राम जी की धर्मपत्नी का देहावसान हुआ तो इस से 21 वर्ष बाद 1912 मे मांडले में कठोर कारावास भोग रहे तिलक की धर्मपत्नी का देहान्त हुआ।

1881 में 'केसरी' के सिंहनाद के साथ तिलक पत्रकारिता के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए तो 1889 में मुन्शी राम ने 'सद्धर्म प्रचारक' के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा। पूने नगर से प्रतिनिधि के रूप में तिलक ने पहली बार 1889 मुंबई में सम्पन्न हो रहे (राष्ट्रीय महासभा) कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया तो मुंशी राम 1888 में ही जालन्धर शहर कांग्रेस व जिले की विभिन्न कांग्रेस शाखाओं के संस्थापक सभासद् के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे, पर केवल 1888 में ही मुन्शी राम जी कांग्रेस के कार्यों में सक्रिय रहे, फिर उन की जीवन धारा तत्कालीन 'दूषित राजनीति' से विमुख हो कर पूर्णत: सामाजिक कार्यों की ओर उन्मुख हो गये। गांधी जी के रचनात्मक राजनीति में अवतीर्ण (1919) होने के बाद ही उन्होंने फिर से सक्रिय राजनीति के रणक्षेत्र में कदम रखा। जब कि तिलक का कांग्रेस के साथ आजीवन सम्पर्क रहा।

लोकमान्य तिलक समाज सुधार की अपेक्षा राजनैतिक सुधार को अग्रक्रम देते थे जबकि मुन्शी राम राजनैतिक सुधार की अपेक्षा समाज सुधार को अग्रक्रम देते थे। (किंवा उन के समग्र जीवन पर दृष्टिक्षेप करने पर यह भी पता चलता है कि समाज सुधार और राजनैतिक सुधार उन की दृष्टि में परस्पर पूरक थे।) तिलक के आदर्श विष्णु शास्त्री चिपलूणकर थे तो मुन्शी राम के आदर्श स्वामी दयानन्द थे। 1893 से 1895 तक तिलक ने गणेशोत्सव व शिवाजी उत्सव को लोक जागृति साधन के रूप में अपनाया तो 1892 से 1895 तक मुन्शीराम (अविभाजित) पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान की हैसियत से सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर मातृभूमि के पुनरुद्धार के लिए प्रयत्नशील थे।

इस प्रकार तिलक और मुन्शीराम का अपने अपने क्षेत्र में यशस्वी अभियान चालू था पर दोनों भी अभी लोकप्रियता के उच्चतम शिखिर पर नहीं पहुंच पाये थे। तब मुन्शी राम ने तिलक को प्रस्तुत पत्र लिखा था।

प्रस्तुत पत्र लेखन काल (1893) में अंग्रेज अधिकारी रैंड व आयर्स्ट की चाफेकर द्वारा न तो अभी हत्या (1897) की गई थी और न ही अभी उस के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों के रोष का शिकार हो तिलक ने एक वर्षीय यरवदा जेल भुगती थी और न ही उन्होंने हैदराबाद के प्रसिद्ध वकील आर्य समाजी नेता केशवराव कोरटकर (विनायकराव विद्यालंकार के पिता) को फरार, भूमिगत अज्ञातवास में जीवन बिता रहे बालकृष्ण चापेकर की सहायता करने का अभी सन्देशा भेजा था। यह गर्व की बात है कि नरम दल के अनुयायी होते हुए भी कोरटकर ने तिलक के निर्देशानुसार रैंड-आयर्स्ट हत्याकांड के अभियुक्त बाल कृष्ण चाफेकर की अन्न, वस्त्र, औषधि द्वारा उत्कृष्ट व्यवस्था की थी। (य. दि. फडके, लोकमान्य तिलक आणि क्रान्तिकारक पृ. 10) और न ही अभी उन्होंने गीता रहस्य (1911) की रचना की थी। काकोरी कांड सुप्रसिद्ध आर्य समाजी क्रांतिकारी नेता पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल आदि असंख्य युवकों और छात्रों ने लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन (1916) के अवसर पर तिलक को घोड़ागाड़ी मे बिठा, घोड़े खोल तथा घोड़ागाड़ी खींचकर अपने आप को कृतार्थ समझा था। (य. दि. फड़के लोकमान्य टिलक आणि क्रान्तिकारी पृ. 136) और न ही लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन (1916) में सम्पन्न कांग्रेस, मुस्लिम लीग समझौते का तिलक ने अभी समर्थन किया था और न ही अभी स्वराज्य तथा होमरूल लीग में उन्होंने 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे ले कर रहूंगा।' नामक सुप्रसिद्ध घोषणा की थी और न ही अभी वे मुंबई की अस्पृश्यता निवारक परिषद् (1917) मे भाषण दे चुके थे और न ही अभी उन्होंने अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन (1919) में यह भविष्यवाणी की थी कि 'भविष्य में सर्वसाधारण के नेता महात्मा गांधी होंगे।' इस परिच्छेद की समस्त घटनाएं प्रस्तुत पत्र लेखन काल के बाद की है।

प्रस्तुत पत्र लेखन काल (1893) तक अभी मुंशी राम ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना नहीं की थी और न ही अभी वे 'जलियांवाला बाग' के हत्याकांड (1916) में आहत व्यक्तियों की सेवा सुश्रूषा कर पाए थे। अभी उन्होंने मुन्शी राम से स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में पट परिवर्तन (1917) भी नहीं किया था और न ही अभी अभी उन्होंने रौलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह (1919) का नेतृत्व करते हुए नंगी संगीनों के सामने सीना तान कर यह घोषणा की थी कि 'मेरा सीना खुला है हिम्मत है तो गोली चला दो' न ही अभी वे दिल्ली की जामा-मस्जिद और फतेहपुरी मस्जिद की वेदी से भाषण कर पाए थे। न ही अभी वे अमृतसर कांग्रेस(1919)के स्वागताध्यक्ष के नाते कांग्रेस के मंच से सर्वप्रथम हिन्दी में भाषण करने का श्रेय प्राप्त कर चुके थे। और न ही अभी वे सिखों के मूलभूत अधिकारों की प्राप्ति हेतु सम्पन्न 'गुरु के बाग' सत्याग्रह (1922) के सिलसिले में अमृतसर के अकाल तख्त के समीप व्याख्यान देने के फलस्वरूप जेल के सींखचों में बन्द किये गए थे। दलितोद्धार

का सकल्प (1922) भी अभी शेष था और न ही अभी उन्होने काग्रेस से त्यागपत्र दिया था। शुद्धि का अभियान अभी प्रारम्भ नही हुआ था और न ही वे अब तक गोहाटी काग्रेस अधिवेशन (1926) हेतु यह तार भेज पाए थे कि 'भारत का भावी सुख हिन्दू, मुस्लिम एकता पर आश्रित है। इस परिच्छेद की समस्त घटनाए पत्र लेखन काल (1893) से बाद की हैं।

लोकमान्य तिलक और स्वामी श्रद्धानन्द मे परस्पर विलक्षण आदर भाव था। मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द का सन्यास लेने से पूर्व का नाम) ने अपने घर की बैठक का महर्षि दयानन्द, महादेव गोविन्द रानडे और लोकमान्य तिलक के भव्य चित्रो से सजाया था। उन की हर रोज की सान्ध्यकालीन राष्ट्रीय धार्मिक चर्चाओ मे प्राय: रानडे, तिलक महाराज व डी ए वी कालेज का उल्लेख होता था। 'मेरे पिता' लेखक इन्द्र विद्यावाचस्पति पिता जी का घर गृहस्थी पृ 20) प्रस्तुत पत्र मे मुन्शीराम ने बाल गगाधर तिलक को स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारी सभा मे निमन्त्रित किया है। 1919 म सम्पन्न अमृतसर काग्रस अधिवेशन के अवसर पर लोकमान्य तिलक जी की अविस्मरणीय शोभा यात्रा निकली थी। इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे। स्वामी जी ने अपने स्वागताध्यक्षीय भाषण मे लाक मान्य के सम्बन्ध मे निम्न भाव प्रकाशित किए थे—

"राष्ट्र के पूराने राष्ट्रीयता के अग्रगामी महारथियो मे से तिलक का नाम बहुत ऊचा है। भारत के गौरव और आत्म सम्मान की रक्षा मे कष्ट सहने वालो मे से कौन है, जो उन से ऊचा हो। (भारत की स्वाधीनता के लिए लडने वाले सिपाहियो के सेनापतिने मार्ग दर्शन कर दिया है। क्या हम सब नेता के दिखाए मार्ग को स्वीकार न करेंगे? (लोक मान्य तिलक और उन का युग- इन्द्र विद्यावाचस्पति पृ 219)

अमृतसर काग्रेस अधिवेशन से दो दिन पूर्व ब्रिटिश सरकार ने यह घोषणा की थी कि 'सम्राट भारतवासियो को धीरे-धीरे स्वराज्य देंगे, इस घोषणा के कारण काग्रेस तीन विभागो मे विभक्त हुई थी और तिलक ने प्रतियोगी सहयोग का समर्थन किया था अर्थात् ब्रिटिश सरकार सहयोग का जितना हाथ बढावे उतना ही हम भी बढावें।

लोकमान्य तिलक ने अपने भतेवासियो को 'आप बीती जग बीती' सुनाते हुए बताया कि 'मेरे गीता रहस्य मे जो कर्मयोग का स्वरूप अकित है उस के साक्षात् प्रत्यक्ष रूप स्वामी श्रद्धानन्द हैं।' (गुरु शिष्य याज्ञ्या आठवणी व चरित्र सम्पादन किशोर शकर बापट) स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कागडी मे हिन्दी 'केसरी' बडे चाव से पढा जाता था। (मैं इस का ऋणी हू लेखक इन्द्र विद्यावाचस्पति पृ 9) स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लोकमान्य तिलक की जीवनी के अतिरिक्त उन की वक्तृत्व कला और व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे मनोहारी सस्मरण लिखे हैं। वे धार्मिक क्षेत्र मे स्वामी दयानन्द को और राजनैतिक क्षेत्र मे लोकमान्य तिलक को अपना गुरु मानते थे। (आधुनिक भारत मे वक्तृत्व कला की प्रगति इन्द्र विद्यावाचस्पति पृ 8)

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम अद्भुत तप त्याग और बलिदान के कारण सम्प्रति समस्त भारत वर्ष मे विख्यात है। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के सम्पर्क मे आने से पूर्व वे लाला मुन्शीराम से रूप मे प्रख्यात थे। अपने पुत्रो के लिए कुछ भी बाकि न रखते हुए आर्य समाज और गुरुकुल के लिए अपना व अपनी सम्पत्ति का सर्वमेध यज्ञ करने पर वे महात्मा मुन्शीराम के नाम से विख्यात हुए। श्रद्धा पूर्वक सन्यास की दीक्षा मे दीक्षित हो कर वे स्वामी श्रद्धानन्द बने और रौलट एक्ट विरोधी विशाल जलूस का नेतृत्व करते हुए जब उन्होने गोरे अग्रेज की सगीनो के सामने निर्भीकता से सीना ताना तो उन का नाम बिजली की तरह सारे भारतवर्ष मे फैल गया। कालान्तर मे उन्हे एक शहीद की मौत मिली जिस से उन की कीर्ति मे चार चाद लग गए। सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्र मे स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान अविस्मरणीय है।

मेरी दृष्टि से प्रस्तुत पृष्ठ भूमि और तत्युगीन परिवेश को ध्यान मे रख कर लाला मुन्शीराम द्वारा बाल गगाधर तिलक को लिखे गए पत्र का अवलोकन, विश्लेषण होना चाहिए। एतदर्थ मूल का हिन्दी अनुवाद पाद टिप्पणियो के साथ प्रस्तुत है:—

मूल अग्रेजी पत्र का नागरी लिप्यतरण

जालन्धर सिटी
दि 26 थ सप्टे

माई डियर सर,

आइ एम सारी आइ कुडनाट राइट टु यु अर्लियर आइ थैक्यू फार युवर काइन्डली सेन्डिग टु माय अड्रेस व नबर्स आफ राजस्थान समाचार कन्टेनिंग अ शार्ट अकाउट आफ युवर लाइफ बट आइ डिडनाट वान्ट देम आइ हड आलरेडी रिसिवड द पेपर एण्ड वाण्ट अ लिटल मोर मटेरियल दन दट फार दिस रीजन आइ विश टु ट्रबल यू अ लिटिल मोर, आर यू कमिंग टु आइन द मिटिंग आफ परोपकारिणी विच टु बी हेल्ड नेक्स्ट डिसेंबर अट लाहौर ? इफ सो आइ विल सी यू देअर अदरवाइज आइ शल हव टु सेण्ड सम क्वेश्चन्स टू यू, टु विच आइ विल सालिसिट रिप्लाईज फ्राम यू

होपिंग टु बी एक्सक्यूज्ड फार दिस ट्रबल

आइ रिमेन
युवर्स फेथफुली,
मुन्शीराम

मूल अग्रेजी पत्र का हिन्दी अनुवाद : पाद टिप्पणियो के साथ —

जालन्धर शहर
26 सितम्बर (1893)1

मेरे प्रिय महाशय जी,

मुझे बहुत अफसोस है कि मैं आपको इस से पूर्व नही लिख सका, मेरे पते पर आप ने अपने सक्षिप्त जीवनवृत्त से सम्बन्धित राजस्थान समाचार (2) के जो अक भेजने का कष्ट किया। तदर्थ मैं आप का आभारी हू, किन्तु मुझे उस की आवश्यकता नही थी, क्योकि मुझे वह समाचार पत्र (इस से पूर्व ही) मिल चुका है। इस की अपेक्षा मुझ और अधिक विवरण की आवश्यकता है। इसलिए मैं आप को और थोडी तकलीफ देना चाहता हू। क्या आप परोपकारिणी सभा (3) के लिए आ सकेंगे ? जो कि आगामी दिसम्बर को लाहौर (4) मे होने वाली है ? यदि यह निश्चित हुआ तो मैं आप से वहा मिलूगा, यदि ऐसा नही हो सका तो मझ कुछ प्रश्न आपको भेजने होगे जिनका उत्तर मैं आप से प्राप्त करना चाहूगा।

आशा है आप मुझ इस कष्ट के लिए क्षमा करेंगे।

हमेशा के लिए
तुम्हारा विश्वसनीय
मुन्शी राम

मुन्शीराम और परोपकारिणी सभा —

यह प्रश्न सहज उत्पन्न होता है कि लाला मुन्शीराम जी ने किस हैसियत से (या परोपकारिणी सभा के किस पदाधिकारी के निर्देश पर) परोपकारिणी सभा मे तिलक जी को पधारने हेतु निमन्त्रण पत्र भेजा था ? डा भवानी लाल भारतीय के अनुसार सर्वप्रथम महात्मा मुन्शीराम जी को 27 दिसम्बर 1906 मे परोपकारिणी सभा का सभासद् मनोनीत किया गया था। इस से स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त पत्र लेखन के समय वे परोपकारिणी के सदस्य नही थे। हा, परोपकारिणी सभा की नजर मे वे श्रद्धेय व्यक्ति जरुर रहे होगे, क्योकि अब तक उन का आर्य समाज मे प्रवेश हो चुका था। वच्छोवाली (लाहौर) जालन्धर, मुबई, फिलौर, अमृतसर, लुधियाना, धर्मशाला स्थित आर्य समाजो मे उन के प्रभावशाली व्याख्यान हो चुके थे। उन के द्वारा सचालित "सद्धर्म प्रचारक" साप्ताहिक को वैदिक धर्म और सदाचार का प्रचार करते हुए साढे चार वर्ष हो चुके थे। सन 1892 मे हरिद्वार के कुम्भ मेले पर सम्पन्न वैदिक धर्म प्रचार योजना के आप कल्पक, सयोजक और प्रबन्धक भी रह चुके थे। 1892 से 1895 तक आप पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। ऐसी स्थिति मे यह पूर्ण रूपेण सम्भव है कि वे परोपकारिणी सभा के सम्पर्क मे आए हो, भले ही विधिवत् वे परोपकारिणी सभा के सभासद न हो, परन्तु

महर्षि के सच्चे विनीत शिष्य होने के कारण उन का परोपकारिणी सभा से आत्मीय सम्बन्ध तो था ही।

सन् 1888 में ही परोपकारिणी सभा के लिए लाला मुन्शीराम आकर्षण के केन्द्र और एक अपरिहार्य, अत्या-वश्यक अत्यावश्यक व्यक्ति हो चुके थे। प्रमाण स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द लिखित आत्म कथा का यह प्रथम उद्धरण प्रस्तुत है—

"लाहौर आर्य समाज के उत्सव के पश्चात स्वामी स्वात्मानन्द जी, स्वामी अच्युतानन्द जी आदि सब स्वामियों को साथ ले कर लगभग 41 आर्य भाईयो सहित 25 दिसम्बर 1888 के मध्याह्नोत्तर पण्डित गुरुदत्त जी रेल से जालन्धर उतरे। स्वर्गीय लाला साईंदास और लाला हंसराज जी बी ए भी साथ ही उतरे किन्तु रात की ट्रेन से ही अजमेर पधार गए। उन्हें परोपकारिणी सभा के सम्बन्ध में पूरा भाग लेने की लगन थी और गुरुदत्त को वैदिक धर्म प्रचार की। अजमेर से पत्र पर पत्र प्राप्त होने पर भी मै जालन्धर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव की तैयारी मे लगा रहा।" (कल्याण मार्ग का पथिक सार्वदेशिक विशेषांक पृ 113)

मुन्शीराम जी की आत्म कथा का द्वितीय उद्धरण 1891 का है, जब उन्होंने परोपकारिणी सभा मे श्याम जी कृष्ण वर्मा व भक्त रैमल मे हो रहे विवाद को सद्धर्म प्रचारक के माध्यम से सुलझाया था। स्वामी श्रद्धानन्द के शब्दो मे—

"इसी समय (जून 1891 मे) परोपकारिणी सभा के वैदिक यन्त्रालय (अजमेर) मे (डी ए वी कालेज लाहौर के अध्यापक भक्त) पण्डित रैमल (राम) तथा पण्डित श्याम जी कृष्ण का झगडा आरम्भ हुआ। इस झगडे के मिटाने और वैदिक यन्त्रालय की रक्षा का काम जो सद्धर्म प्रचारक ने उस समय किया उस को (परोपकारिणी सभा के प्रथम उपसभापति, आर्य समाज लाहौर के सर्व प्रथम उपप्रधान) राय मूलराज तक ने स्वीकार किया था। इस प्रश्न को हल करने के लिए उन दिनों मुझे गरमी की तीन रातो जाग कर काम करना पडा था। (कल्याण मार्ग का पथिक सार्वदेशिक विशेषांक पृ 139) इस उद्धरण से स्पष्ट है कि मुन्शीराम परोपकारिणी सभा के विधिवत सदस्य न होते हुए भी उसे अपनी आत्मीय संस्था मानते थे और अहर्निश उस की उन्नति चाहते थे।

प्रस्तुत पत्र लेखन काल मे तिलक और मुन्शीराम दोनो भी पत्रकार थे। तिलक एक राष्ट्रीय विद्यालय के संस्थापक अध्यापक थे तो मुन्शी राम के मन में भी (राष्ट्रीय विद्यालय) गुरुकुल की स्थापना का विचार उमड घुमड रहा था। इसलिए यह भी सम्भव है कि मुन्शीराम तिलक से जो प्रश्न पूछना चाहते हो वह पत्रकारिता और राष्ट्रीय शिक्षा नीति से सम्बन्ध हो। इसी समय तिलक ने विभिन्न समारोहो के माध्यम से राष्ट्र जागरण का अभियान आरम्भ किया था। मनचले क्रांतिकारी (तथाकथित आतंकवादी) युवक उन के चारो ओर मडराने लगे थे। प्रस्तुत पत्र मे, पत्र द्वारा प्रश्न पूछने की अपेक्षा मुन्शीराम जी ने प्रत्यक्ष चर्चा पर अधिक जोर दिया है, इसलिए इस बात की सम्भावना की जा सकती है कि मुन्शीराम तिलक से कुछ गोपनीय चर्चा करना चाहते हो और यह चर्चा क्रान्तिकारियो की गुप्त योजनाओ के सम्बन्ध मे भी हो सकती है।

मुन्शीराम जी के मन मे तिलक-जीवनवृत्त के अतिरिक्त अन्य किन प्रश्नो के सन्दर्भ मे जिज्ञासा थी। यह अज्ञात है, इस सन्दर्भ मे निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन है। सम्प्रति हमारे लिए यह भी अज्ञात है कि प्रस्तुत पत्र मे दिए गए संकेतानुसार तिलक और मुन्शी राम की लाहौर या अजमेर मे किंवा अन्यत्र कही (कांग्रेस आदि के अधिवेशन मे) प्रत्यक्ष मुलाकात हुई या नही?

—आक्षेपो के घेर मे प्रस्तुत पत्र—

प्रस्तुत पत्र के सदर्भ मे अनेक आक्षेप उठाए जा सकते हैं। जैसे—क्या यह पत्र मुन्शी राम के ही हस्ताक्षरो मे है? स्वयं मुन्शीराम द्वारा ईस्वी सन् का उल्लेख न किये जाने के कारण यह निश्चित रूप से कैसे कहा जा सकता है कि यह पत्र सन् 1893 का ही है? सम्बोधन मे यह स्पष्ट रूप से तिलक का उल्लेख न होने के कारण यह कैसे मान लिया जाये कि प्रस्तुत पत्र तिलक को ही

लिखा गया है ? सम्भव है अन्य किसी स्थान से यह पत्रा-भिलेख मिला हो। इस संदर्भ में पाठकों के सूचनार्थ इतना ही निवेदन है कि सन् 1893 में जब मैंने और श्यामलाल विद्यालय उदगीर के मुख्याध्यापक श्री विश्वंभरराव लिंबा श्री होलीकर ने इस पत्र के दर्शन किए थे तो (तिलक निवास में स्थित केसरी मराठा ग्रन्थ शाला के प्रबन्धकों द्वारा) प्रस्तुत पत्र पर रोमन लिपि में निम्न निर्देश लिखा पाया था—"स्वामी श्रद्धानन्द लेटर टु बाल गंगाधर तिलक-डेट 26 स्थ सप्टे 1893।"

मेरे अनुरोध पर प्रस्तुत पत्र की प्रतिलिपि तत्काल श्री होलीकर जी ने अपने हस्ताक्षरों में मेरी कापी में उपर्युक्त निर्देशानुसार अंकित कर दी थी, वह अब भी मेरे पास सुरक्षित है। इस लेख के साथ मूल पत्र का जो रूप दिया है उस में 'टू बाल गंगाधर तिलक' यह अब नजर नहीं आ रहा है। प्रस्तुत पत्र की फोटोस्टेट प्रति से इस बात का भी अहसास होता है कि मुन्शीराम ने निजी डायरी के पन्नों पर ही यह पत्र लिखा था। जिस की पृष्ट संख्या 16-17 है। पत्र के आरम्भ में रोमन लिपि में 5 लिखा है।

इस प्रकार लाला मुन्शीराम द्वारा बाल गंगाधर तिलक को भेजे गये पत्र को स्पष्ट करने की भावना से यह विवरण पाठकों के विचारार्थ प्रस्तुत है। सम्भव है हमें ये तथ्य किसी निष्कर्ष तक पहुंचाने में सहयोगी हों। कुछ अनुमानों के गलत भी होने की सम्भावना है। ऐसी स्थिति में आशा है प्रस्तुत विषय के सक्षम अधिकारी व्यक्ति और इतिहास वेत्ता यथार्थ स्थिति पर प्रकाश डाल कर प्रस्तुत दुर्लभ ऐतिहासिक पत्र को और अधिक सूर्य प्रकाश में लाने का प्रयास करेंगे।

1—(1893) प्रस्तुत पत्र व्यवहार का काल निर्धारण—

तिलक के पुणे निवास स्थान 'गायकवाड वाडा' के व्यवस्थापकों द्वारा पत्र समाप्ति पर अंकित ईस्वी सन् के अनुसार प्रस्तुत पत्र 1893 को मुन्शीराम ने तिलक को लिखा है। मूल पत्र के मुन्शीराम असावधानता के कारण ईस्वी का उल्लेख करना भूल गये हैं। अत: पत्र के अन्त में गायकवाड़ वाड़ा के व्यवस्थापकों द्वारा निर्दिष्ट 1893 ईस्वी सन् को ही प्रमाणिक मानना होगा।

मुझे यह दुर्लभ और ऐतिहासिक पत्र लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के पौत्र, महाराष्ट्र राज्य विधान परिषद् के सभापति जयन्तराव तिलक व केसरी मराठी ग्रन्थशाला के ग्रन्थपाल प्रकाश गजानन फणसलकर के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। मैंने इस पत्र के सर्वप्रथम दर्शन 1973 में किये थे। प्रस्तुत पत्र के अतिरिक्त चित्रकार बसन्त द्वारा निकाला गया रेखाचित्र भी मिला है केसरी मराठी ग्रन्थशाला में स्वामी श्रद्धानन्द की अर्धाकृति प्रतिमा भी जो कि प्रस्तुत रेखाचित्र से मिलती जुलती है।

2—राजस्थान समाचार—

सन् 1945 वि. के फाल्गुण में राजस्थान समाचार नामक साप्ताहिक पत्र सफेद चिकने चौपेज रायल साइज के 12 पृष्ठो में हिन्दी में शुरु किया गया जो अजमेर से प्रति गुरुवार को प्रकाशित होता था। उस का वार्षिक मूल्य केवल 3. 50 रुपए था। राजपूताना प्रान्त में उच्चभावों का यह प्रथम पत्र था जो जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कश्मीर के राजघरानों में अतीव प्रतिष्ठित और विश्वसनीय था। कालान्तर में यह पत्र अर्ध साप्ताहिक हुआ। रूस जापान युद्ध छिड़ने पर (7 फरवरी 1904 को यह पत्र दैनिक हो गया। सच कहा जाए तो हिन्दी का यह पहला दैनिक था। 19 मास के युद्धोपरान्त यह साप्ताहिक हो कर सन् 1907 में सदा के लिए बन्द हो गया। युधिष्ठर मीमांसक ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन द्वितीय भाग पृ. 976)। सन् 1894 में प्रकाशित 'हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास' के लेखक बाबू राधाकृष्ण दास ने राजस्थान समाचार को आर्य समाज का पत्र माना है।

प्रस्तुत समाचार पत्र में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित रोचक लेख होते थे। इस में राजस्थान के देशी राज्यों से सम्बद्ध समस्याओं की चर्चा भी होती थी।

मुन्शी (मनीषी) समर्थदान (1856-1914) राजस्थान समाचार के संस्थापक, संचालक व प्रकाशक थे। इस से पूर्व वे महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य मुद्रण के व्यवस्थापक थे और स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक (1882-1886) रह चुके थे। मुन्शीजी की देख रेख मे स्वामी जी के लगभग सभी ग्रन्थ छपे। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सस्करण की पाद टिप्पणियो भी उन्होने ऋषि के निर्देशानुसार लिखी थी। स्वामी जी के वे विश्वसनीय और निष्ठावान सहायक थे। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के प्रति उन की श्रद्धा आखिर तक अक्षुण रही। (आर्य समाज के पत्र और पत्रकार डा भवानीलाल भारतीय पृ 146-147 महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशसक और सत्सगी प्रो. भवानीलाल भारतीय प 94)

प्रस्तुत पत्र लेखन काल मे मुन्शीराम जी पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सजग पत्रकार के रूप मे प्रतिष्ठित हो चुके थे। इसलिए आर्य विचारधारा से प्रभावित राजस्थान समाचार के अक तिलक जी के भेजने से पूर्व मुन्शीराम जी के पास होना स्वाभाविक है।

3—परोपकारिणी सभा—

लाला मुन्शीराम जी ने बाल गगाधर तिलक से यह जानना चाहा है कि वे परोपकारिणी की मीटिंग मे आ सकेंगे या नही? मेरे पास उपलब्ध सबूतों के आधार पर मैं इसी निष्कर्ष पर पहुचा हू कि यह परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा ही है। इस निष्कर्ष तक पहुचने के निम्न कारण है.—

1—उपर्युक्त पत्र लेखन काल मे लाला मुन्शीराम काग्रेस मे सक्रिय नही थे।

2—काग्रेसी सभासद अपनी किसी समिति या उपसमिति का परोपकारी तो नाम रख सकते है, पर वे अपनी सभा का नाम परोपकारिणी रखेंगे, इस पर विश्वास नही होता।

4—आगामी दिसम्बर को लाहौर मे—

सम्भवत: मुन्शीराम जी ने 29 दिसम्बर की परोपकारिणी सभा के आयोजन की इस पत्र द्वारा पूर्व सूचना दी है। परोपकारिणी सभा के स्थापना काल (1883) से ले कर (1893) तक की सभी बैठकें 27 व 29 दिसम्बर को ही हुई हैं। अपवाद केवल 1891 का है। पर यह सभी बैठकें अजमेर मे ही सम्पन्न हुई हैं। लाहौर मे एक भी बैठक नही हुई और 1893 की भी बैठक लाहौर मे न हो कर अजमेर मे ही हुई। मुन्शीराम जी पजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। सम्भव है यदि तिलक जी का लाहौर आना निश्चित हो जाता तो मुन्शीरामजी अपने प्रभाव और सम्बन्धो के आधार पर अजमेर की मीटिंग लाहौर मे भी रखवा सकते थे।



श्री ज्ञानी गुरदित्तसिंह आर्य वरिष्ठ उप-प्रधान, आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना तथा इनकी सुपत्नी श्रीमती कृष्णा आर्या, आर्य कन्या विद्यालय की सेविका की सुपुत्री के विवाह पर एक सिलाई मशीन भेंट करते हुए।

गुरुकुल-जीवन के कुछ संस्मरण

लेखक—श्री दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार

मैं अपना यह परम सौभाग्य समझता हू कि मुझे पूज्य आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी (उस समय महात्मा मुन्शीराम जी) का विनीत शिष्य और 15 वर्ष तक निरन्तर उनके चरणो के सान्निध्य मे रहने का सुअवसर मिला। आज अपनी आयु के लगभग चौथे चरण मे प्रवेश करते हुए मैं प्राय: यह सोचता हू कि अगर मुझे गुरुकुल की शिक्षा और और महात्मा जी का शिष्यत्व प्राप्त न होता, तो न जाने मेरा जीवन कैसा होता ? गुरुकुल की शिक्षा के फलस्वरूप ही इस समय मैं यदि निर्बाध नही तो, कभी कभी अवश्य ही, एक प्रकार का आत्मिक आह्लाद और मानसिक शान्ति अनुभव करता हू। जिस समय अपने भूतकाल के जीवन पर एक विहगम दृष्टि डालता हू, तो इतना सन्तोष तो अवश्य होता है कि यदि किसी मन्दिर का मैं कलश नही बन सका, तो नीव की ईट तो अवश्य बन सका हू। जीवन के सामान्य मार्ग पर एक साधारण पथिक की तरह यात्रा करते हुए मैंने अपने जाने मे ऐसा कोई काय नही किया कि जिससे अपने पूज्य आचार्य के यश को धब्बा लगता हो अथवा उस सस्था की कीर्ति को कलकित किया हो जहा ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिये छात्र रूप मे मैंने अपनी आयु के 15 वर्ष बिताये थे। इस प्रकार के आत्मिक परितोष की सहानुभूति क्या जीवन की एक अमल्य निधि नही है ?

वीर की तरह जीये, वीर की तरह मरे-गान्धी

मुझे इस बात का गौरव है कि मेरे पूज्य आचार्य का जिस प्रकार सम्पूर्ण जीवन क्रान्तिकारी घटनाओ से पूर्ण और प्रत्येक क्षेत्र मे नेतृत्वपूर्ण रहा, उसी प्रकार उनका अन्तकाल भी देदीप्यमान रहा। गान्धी जी के शब्दो मे—"वे वीर की तरह जीये, वीर की तरह ही मरे।" पजाब केसरी लाला लाजपतराय ने ठीक ही कहा था "मुझे उनके बलिदान से ईर्ष्या होती है।" शिष्य रूप मे गुरुकुल मे रहते हुए और स्नातक बनने के बाद, पहले उनके निजी सचिव, फिर गुरुकुल से ही स्वामी जी द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक "श्रद्धा" के उप-सम्पादक और अन्त मे उन्ही के सरक्षण मे दिल्ली से प्रकाशित दैनिक 'अर्जुन' मे स सम्पादक के रूप मे मुझे इस महापुरुष के अत्यन्त समीप आने के जो अनेक बार अवसर मिले, उनके कई सस्मरण हृदय पर अभी तक अकित हैं। कुछ का ही यहा उल्लेख करूगा।

रात को भी छात्रो की स्वयं देख-रेख

महात्मा जी नियम पूर्वक रात्रि को आश्रम मे चक्कर लगाते और सोए हुए ब्रह्मचारियो का निरीक्षण करते। गुरुकुल चारो ओर घने जगलो से परिवेष्ठित था। हिंसक पशुओ और साप बिच्छू आदि विषैले प्राणियो का बाहुल्य था। ऐसे अनेक अवसर आये, जब निद्रा ग्रस्त बालक काष्ठ शय्या से नीचे गिर पडा है, उसके पैर के पास व टागो के नीचे विषधर साप फन उठाकर बैठा अथवा बिच्छू सरक रहा है, शीत ऋतु मे रजाई नीचे गिर पडी है और ब्रह्मचारी सिकुडा औंधे मु ह पडा है—इत्यादि महात्मा जी स्वय ब्रह्मचारी की सुरक्षा और सुविधा की पूरी व्यवस्था करते, उसे नीचे से उठाकर काष्ठ शय्या पर लेटाते, रजाई इत्यादि ओढाते। साप इत्यादि के वहा उपस्थिति काल मे धैर्य से काम लेते। पहले ब्रह्मचारी को सम्भालते फिर विषधर को मारते अथवा वहा से हटाते। ऐसे अवसरो पर अगर महात्मा जी न आये होते तो ब्रह्म-

चारी की मृत्यु का भय तो अवश्य ही था। वैसे तो प्रत्येक श्रेणी का एक अधिष्ठाता होता था और उस पर भी ब्रह्मचारियों को नियन्त्रण में रखने और सुविधाओं का ध्यान रखने की जिम्मेदारी थी, पर आचार्य जी अपना पितृ धर्म पालन करने में कभी न चूकते।

रोगी की उल्टी अपने हाथों में·

इसी प्रकार दिन में दो बार अस्पताल का चक्कर भी लगाते और प्रत्येक रोगी का हाल चाल स्वयं देखते व पूछते। एक बार एक रोगी ब्रह्मचारी के पास बैठे थे। उसे उल्टी आई, चिलमची पास में नहीं थी। आचार्य जी ने तत्काल बिना किसी कर्मचारी की प्रतीक्षा किये, अपने हाथों में उसकी उल्टी ले ली और बाहर जाकर उसे नाली में फेंक दिया। स्वयं हाथ धोकर रोगी को कुल्ला इत्यादि कराया। क्या वह ब्रह्मचारी आचार्य जी के इस वात्सल्य को कभी भूल सकता था।

आम चूसना और गंगा की बाढ़ में तैरना

आचार्य जी ब्रह्मचारियों को खेल-कूद तैरना, कुश्ती, अरण्य यात्रा, पर्वतारोहण इत्यादि में सोत्साह भाग लेने की सदा प्रेरणा देते रहते थे। वे स्वयं अपने जीवन में इन चीजों के शौकीन थे। प्रभु कृपा तथा अपने संयमित व तपस्वी जीवन के कारण उनका व्यक्तित्व बड़ा आक-र्षक और प्रभावशाली था—इसलिए ब्रह्मचारियों के लिए इस सम्बन्ध में प्रचुर सुविधाएं उन्होंने दी हुई थीं। गुरुकुल की हाकी की टीम उस समय मेरठ, देहरादून, बिजनौर, मुरादाबाद आदि जिलों में प्राय: टूर्नामेंट जीतने के कारण सुविख्यात हो गयी थी। गुरुकुल की टीम का नंगे पैर खेलना, शहरी टीमों और जनता के लिए एक अनोखा दृश्य था। फुटबाल और क्रिकेट के मैच भी होते रहते थे। बरसात में जब गंगा अपने उग्र रूप में होती और बल्लियों उछलती उसमें लहरें होती तब आचार्य जी स्वयं खड़े होकर, तैरने की प्रतियोगिता कराते। गंगा के किनारे टोकरों में भरे चूसने वाले छोटे आमों के ढेरों के पास दूध की कच्ची लस्सी के ऊंचे और बड़े कलस भरे होते। ब्रह्मचारियों के लिये आदेश था कि वे खूब तैरें और यथेष्ट आमों का मजा लूटें।

एक बार इन्हीं बाढ़ के दिनों में हमारे एक साथी क्वेटा के सत्यपाल (जो स्नातक बनने के बाद दक्षिण अफ्रीका चले गये थे। गंगा पार चले गए। मस्त तबियत के थे। वहीं जंगल में सैर करते रहे। शाम हो गयी। वापस नहीं आए। आचार्य जी और सब आश्रमवासी बहुत चिन्तित हुए। लगभग एक मील चौड़े गंगा के पाट को अन्धेरे में कौन पार करे? यह भी संकट से खाली नहीं था। तब इस पार आग जला कर और सम्मिलित स्वर में ऊंची ध्वनि से 'सत्यपाल' नाम पुकारा गया। ब्रह्मचारी भी स्थिति भांप गया। वह भी साहसी और दृढ़ निश्चय था। वह तत्काल गंगा में कूद पड़ा और आधा पौन घण्टे में इस पार आ गया। ब्रह्म-चारी के इस अदम्य साहस को देख कर पूज्य आचार्य जी प्रसन्न हुए और सत्यपाल की पीठ को खूब थपथपाया।

ब्रह्मचारियों में राष्ट्रीय भावना का उद्दीपन

गुरुकुल जंगल में एकान्त स्थान में संसार की चहल पहल से अछूता गंगा तट तथा शिवालक की पहाड़ियों तराई में होता हुआ भी राष्ट्र का एक अंग था और देश सेवा में उसे सदा तत्पर रहना चाहिए। आचार्य जी यह भावना सदा ब्रह्मचारियों में भरते रहते। जब भी राष्ट्र में कहीं कोई संकट आता तो वे स्वयं और सब ब्रह्मचारी उसके निवारण में पूरा सहयोग देते। इस सम्बन्ध में कुछ घटनाएं, उदाहरण रूप में उल्लेखनीय हैं। सम्भवत: सन् 1913 में दक्षिण हैदराबाद मे भयंकर बाढ़ में काफी क्षति हो गयी थी। आचार्य सहित सब ब्रह्मचारियों ने अपने भोजन में कटौती करके लगभग एक हजार रुपए की राशि वहां सहायतार्थ भेजी।

ब्रह्मचारियों द्वारा मजदूरी और सत्याग्रह की सहायता

दूसरी घटना ने तत्काल राष्ट्रीय नेताओं के साथ गुरुकुल का विशेष सम्पर्क पैदा कर दिया था। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गान्धी का सत्याग्रह चल रहा था।

वहां श्रम की बड़ी आवश्यकता थी । उस समय सारे भारत में गुरुकुल पहली संस्था थी। जिसके छात्रों ने मेहनत मजदूरी करके 1500 रुपये की राशि वहां भेजी थी। मेरे मानस पटल पर टोकरी भर पत्थर उठाते हुए मजदूरी करने के संस्कार अभी तक लगभग आधी सदी के बाद भी स्पष्ट रूप से अंकित है। गुरुकुल हरिद्वार से लगभग 5 मील दूर गंगा के पार था। हरिद्वार नगर से 3-4 मील ऊपर एक भारी बांध जिसे दूधिया बांध कहा जाता था—बन रहा था। पौष-माघ की कड़ी सर्दी के दिन थे। गुरुकुल के सब ब्रह्मचारी लगभग 300 अध्यापक वर्ग सहित करीब एक मास तक छोलदारियों मे वही रहे। दिन भर इस बाध के लिए पत्थर ढोते व तोड़ते। मैं उस समय निम्न कक्षा मे ही था। हरिद्वार का शीत, फिर, वहां शाम से सवेरे तक तेज चलने वाली अत्यन्त शीत पूर्ण ठोडू हवा, बर्फ सदृश गगा का ठण्डा जल इन सब कष्टो का सामना आचार्य जी ने स्वयं और उनसे स्फूर्ति या राष्ट्रीय सेवा भावना से ही हम सब ब्रह्मचारियो ने प्रसन्नता पूर्वक किया।

जब राजर्षि गोखले कुर्सी से उछल पड़े

जिस समय महात्मा मुन्शीराम जो यह राशि लेकर इस आन्दोलन के नेता राजर्षि गोपाल कृष्ण गोखले से दिल्ली मे मिले और गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के इस त्याग और कष्ट सहन का सारा वृतान्त सुनाया तो उस समय श्री गोपाल कृष्ण गोखले के नेत्रों से आनन्द के आसू, अनायास ही छलक पड़े और अपनी कुर्सी से उछलते हुए वे बोले :—

'बस, अब हमारी विजय निश्चित है। जिस देश मे ऐसी राष्ट्रीय भावना के छात्र हों वह देश इस संग्राम में कभी हार नही सकता । मै तो गुरुकुल को एक सामान्य संस्कृत पाठशाला ही समझे बैठा था। आज पता चला कि मातृभूमि के त्याग की भावना वहां कितनी प्रबल है।

इस घटना ने गान्धी जी को अत्यन्त प्रभावित किया। इसीलिए वे जब दक्षिण अफ्रीका से भारत आये तो, अपने काठियावाड़ी वेश में सबसे पहले गुरुकुल पधारे और महात्मा जी के चरणों में श्रद्धापूर्वक नत-मस्तक हुए । उस समय गान्धी जी "कर्मवीर" की उपाधि से प्रसिद्ध थे।

छात्रों की अनुशासनहीनता का हल : श्रद्धानन्द जी के अनुकरण से

आचार्य जी किसी ब्रह्मचारी को शारीरिक दण्ड नहीं देते थे। छात्रों की समस्याएं उस समय भी किसी न किसी रूप में विद्यमान थी। हम लोगों से अध्यापकों के प्रति अशिष्ट व्यवहार भी कई बार हो जाते थे। अनुशासन भग की घटनाएं भी होती रहती थी। पर आचार्य श्री स्थिति को इस बुद्धिमत्ता और स्नेहभाव से सम्भालते कि समस्या हल हो जाती और कभी तनाव की स्थिति न आती। महात्मा जी का यह नियम था कि जो छात्र उनकी सेवा मे जाकर अपराध स्वीकार कर लेता, उसके प्रति वे अवश्य ही उदार दृष्टिकोण अपना लेते। उन दिनों ब्रह्मचारियों द्वारा हड़ताल—किसी के स्वप्न में भी नही आता था। इसका एक मात्र कारण यह था कि आचार्य जी का यह अटल विश्वास था कि—"माता-पिता की गोदी से इन लाडले बच्चों को मै जंगल में लाया हूं। प्रत्येक ब्रह्मचारी के प्रति अपने असीम वात्सल्य मे माता-पिता का स्थान मैंने ही पूरा करना है।" गुरुकुल के अध्यापक वर्ग भी आचार्य जी के चरण चिन्हो पर चलने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता था।

आज देश की ज्वलन्त समस्याओं में एक छात्रों की अनुशासनहीनता है। अगर शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी, आचार्य, कुलपति इत्यादि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से यही एक शिक्षा ले ले, तो भारत की एक बड़ी समस्या तो, बहुत कुछ, हल हो जाएगी।

शत् शत् तुम्हें प्रणाम

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र)

वेद पथिक ! हे दिव्य तपस्वी, सच्चे, दयानन्द, सेनानी ।
त्याग तपो की दिव्य मूर्ति हे ! जय-जय हे बलिदानी ।
शिक्षा की वह तपस्थली सा, खोला तमने था गुरुकुल ।
स्वतन्त्रता का मन्त्र फूंक कर, नव जागृति भर दिया विपुल ।
शुद्धि यज्ञ का सूत्रपात कर, बिछड़ो को फिर गले मिलाया ।
शुद्धि यज्ञ मे तुमने अपने—प्राणो की फिर छवि चढ़ाया ।
जाति पाति का छुआ छूत का, तमने घोर विरोध किया ।
गलत रूढ़िया का तुमने ही निर्भय हो प्रतिरोध किया ।
स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे, कूद पड़ तम बन कर नेता ।
नई दिशा देकर युवको का, बने जनो के हृदय विजेता ।
तेरी भव्य मूर्ति के सम्मुख, नतमस्तक है नगर ग्राम ।
बलिदानो के अहे प्रणता—शत शत तुम्हे प्रणाम ।

आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर 28 दिसम्बर 1987 से 3 जनवरी 1988 रविवार तक आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के निकट पुरानी सब्जी मण्डी लुधियाना मे हो रहा है। सभी आर्य समाजो व शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह इस शिविर मे प्रशिक्षण के लिए अधिक से अधिक बच्चे भेजें।

यह बच्चे 15 वर्ष से कम आयु के न हो और वह अपने साथ दो सफेद बुनियान काला कच्छा खाने के लिए थाली, कटोरी आदि बर्तन, और बिस्तर आदि साथ लावें और 27-12 87 रविवार को सायंकाल तक आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना मे पहुच जावें।

—आशानन्द आर्य अधिष्ठाता
आर्य वीर दल पंजाब

दूसरों की नजर में:...

स्वामी श्रद्धानन्द और उनका गुरुकुल

लेखक:—श्री कृष्णदत्त जी भूतपूर्व प्रिंसिपल हिन्दी कालेज हैदराबाद

स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व और कार्य अखिल भारतीय स्वरूप के थे। उन्होंने इतिहास की धारा को बदल दिया था। सामाजिक तथा राजनैतिक धारा को स्वामी जी ने नवीनतम रूप प्रदान किया था। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना ने तो देश के शिक्षा क्षेत्र में एक आदर्श स्थापित किया। गुरुकुल की स्थापना कर के यह सिद्ध किया था कि उच्च तथा वैज्ञानिक शिक्षा में भारतीय भाषाएं और हिन्दी उतनी ही सक्षम है जितनी अंग्रेजी है। भारत में भारतीय भाषा हिन्दी के माध्यम का सर्वप्रथम विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी है। उस के (19) वर्ष के बाद हैदराबाद का उस्मानिया विश्वविद्यालय दूसरा है। जहां शिक्षा का माध्यम उर्दू को बनाया गया था। गुरुकुल कांगड़ी का रैम्जे मेकडानल्ड ने जो बाद में इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री बने विस्तार से निरीक्षण किया था और इंग्लैंड लौट कर उन्होंने "डेली क्रानिकल" नामक पत्र में सन् 1914 में एक विस्तृत लेख लिखा था। जिस की ये पंक्तियां उल्लेखनीय है—"भारत के शिक्षा विकास में गुरुकुल का विशेष स्थान है, यह लार्ड मैकाले द्वारा सन् 1835 ई. में उद्घोषित नीति को एक चुनौती है। भारत मे लार्ड मैकाले की नीति से सभी असन्तुष्ट थे परन्तु गुरुकुल के संस्थापकों के अतिरिक्त किसी ने अपने असन्तोष को रचनात्मक रूप नहीं दिया।"

इसी प्रकार भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी ने स्वामी जी द्वारा स्थापित गुरुकुल के सम्बन्ध में अपनी सम्मति इन शब्दो में प्रकट की है—"दूरदर्शी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल में उच्चतम शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बना कर बड़े साहस का काम किया है। वह एक ऐसा सफल प्रयोग था, जिस ने प्रमाणित कर दिया कि हिन्दी माध्यम से पढने वाले विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम मे पढने वाले शिक्षार्थियों से कम योग्य नही होते।" इसी तरह बंगाल के तत्कालीन मूर्धन्य चिन्तक तथा नेता सर आशुतोष मुखर्जी ने गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली की इन शब्दों में सराहना की है—"भारत के पुनरुत्थान मे गुरुकुल का योगदान होगा। मैं इस शिक्षा संस्था की कार्य प्रणाली का पूरी तरह समर्थन करता हूं। यह बहुत वैज्ञानिक और निर्दोष है। हमारे देश में यही एकमात्र शिक्षा संस्था है जिस को राष्ट्रीय संस्था कहा जा सकता है।" महात्मा गांधी ने जिन्हे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल मे कई दिनों तक ठहरा लिया था, इन शब्दों में अपना मन अभिव्यक्त किया है, "गुरुकुल वस्तुत: पूर्णरूप से एक राष्ट्रीय संस्था है। गुरुकुल की स्थापना आर्य समाज का एक महान कार्य है।"

गुरुकुल ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में—

जिस संस्था और संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी

की राष्ट्रीय एवं शिक्षा की दृष्टि से उपयोगिता तथा दूरदर्शिता को ले कर देश के मूर्धन्य नेता और मनीषियों ने प्रशंसा की थी, वही गुरुकुल विश्वविद्यालय ब्रिटिश सरकार की आंख में खटक रहा था। सरकारी क्षेत्रों में आर्य समाज और गुरुकुल कांगड़ी विद्रोही विचारों और क्रान्तिकारियों के केन्द्र समझे जाते थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक 25 वर्षों में स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्यसमाज और गुरुकुल के मूर्धन्य नेता और संचालक थे। सरकारी क्षेत्रों में इन के सम्बन्ध में सन्देह और शकाएं बढ़ने लगी, एक सरकारी गोपनीय रिपोर्ट में यह दर्शाया गया था कि आर्य समाज के संगठन मे अभी जो महत्वपूर्ण विकास हुआ है। वह सरकार के लिए संकट का द्योतक है और वह विकास है। गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली, यदि इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली का क्रम आर्य समाज के सुयोग्य और उत्साही नेताओं की सीधी देख-रेख मे जारी रहा तो इस पद्धति से जो युवक तैयार होंगे, वे सरकार के लिए अत्यन्त भयानक होंगे। (अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द—लेखक सत्यकाम विद्यालंकार पृ.36, 80)

इसी प्रकार 'सिविल मिलिटरी गजट' नामक पत्र में जो पंजाब से प्रकाशित होता था और सरकारी नीतियो का समर्थक था। ब्रिटिश सरकार को इन शब्दों मे सचेत किया है, "अगर इस संस्था के क्रान्तिकारी प्रचार पर प्रतिबन्ध न लगाया गया और इस की बढ़ती हुई शक्ति को रोका न गया तो सरकार खतरे में पड़ जाएगी।" (वही-पृष्ठ 40)

सन् 1919 में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस द्वारा संचालित राजनीतिक आन्दोलन का पूरी तरह से समर्थन ही नहीं किया अपितु वे आन्दोलन के समर्थन में भारत के दिल्ली, बम्बई, सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों के दौरे किये और आन्दोलन के पक्ष में भाषण दिए। इस सम्बन्ध में तत्कालीन वायसराय चेम्सफोर्ड (1916-21) ने इंग्लैंड में भारत सचिव मि. मांटेग्यु को अपनी रिपोर्ट भेजी जिस में लिखा—"आन्दोलन तेजी पर है। महात्मा मुन्शीराम जिस ने अब स्वामी श्रद्धानन्द नाम रख लिया है। गांधी जी के साथ इस आन्दोलन मे मिल गया है। यह बहुत पुराना धार्मिक नेता है तथा समाज सुधार के नाते भी उस ने बहुत नाम पैदा किया है।

"इस का एक बड़ा पुत्र (क्रांतिकारी हरिश्चन्द्र, जिन्होंने जापान, अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों का दौरा किया था।) अब ब्यूनोएरिस (दक्षिण अमेरिका मे अर्जेटीना की राजधानी) में एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति का मेहमान है। उस का छोटा लड़का (इन्द्र) देहली में सरकार विरोधी देशी भाषा का 'गरम' (क्रान्तिकारी) दैनिक पत्र (विजय) निकाल रहा है।" (वही पृष्ठ 79) कोष्ठकों में लिखे हुए शब्द हमारे हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के भव्य व्यक्तित्व के सम्बन्ध में रेम्जे मेकडानल्ड ने लिखा है—"वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए जीवित माडेल चाहे तो मैं इस भव्य व्यक्ति की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के लिए नमूना मांगेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूंगा।"

पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने इन शब्दों में स्वामी जी का चित्र खींचा—"स्वामी श्रद्धानन्द में निर्भीकता की आश्चर्यजनक मात्रा थी। लम्बा कद, शाही सरल, सन्यासी के वेश में बहुत उम्र होने पर भी बिल्कुल सरल और चमकती हुई आंखे, मैं ऐसी अजीब तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं।" श्रीमती सरोजनी नायडू ने कहा है—"मैं सदैव अनुभव करती हूं कि स्वामी श्रद्धानन्द वीर-काल की दिव्य मूर्ति थे।" दीन बन्धु सी. एफ. एण्ड्रयूज ने स्वामी जी के हृदय में झांक कर अपनी अनुभूति इन शब्दों में प्रकट की, "स्वामी श्रद्धानन्द एक अत्यन्त प्यारा हृदय रखते थे।" स्वामी जी महाराज को एक भजन की निम्न दो पंक्तियां बहुत प्रिय थी, जिन्हें वे प्राय: दोहराते रहते थे—

लगे जख्म दिल पे अगर किसी के तो मेरे दिल में तड़प उठे।
मुझे ऐसा दे दिले दर्द-रस, मुझे ऐसा सीना फ़िगार दे॥

महात्मा गांधी के शब्दों में—"वे एक बहादुर की तरह जिन्दा रहे, एक बहादुर की तरह मरे।"

आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषाँक

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के अब सभी विशेषांकों की बड़ी सराहना की जाती है। हमारा प्रयास होता है कि अच्छे से अच्छा मैटर इन विशेषांकों में दिया जाए। ऋषिबोध पर्व पर फरवरी 1988 में गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी एक बृहद विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। हमारी इच्छा है कि यह अंक कम से कम मैगजिन साईज के 100 पृष्ठों का अवश्य हो। इसके लिए हमने अभी से तैयारी आरम्भ कर दी है। हमारी विज्ञापन दाताओं से प्रार्थना है कि वह इस विशेषांक के लिए अपने विज्ञापन शीघ्र सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन शुल्क केवल 300 रुपये और आधे पृष्ठ का 150 रुपये रखा गया है। जो पूर्ण पृष्ठ न दे सके, वह आधा पृष्ठ अवश्य दें। हम इसे हजारों की संख्या में छपवाना चाहते हैं।

हमने उच्चकोटि के लेखक महानुभावों को पत्र लिख दिए हैं कि वह अपनी अमूल्य रचनाएं इस विशेषांक के लिए शीघ्र हमें भेजने की कृपा करें।

हमारी सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षण संस्थाओं और आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि जहां वह इस विशेषांक के लिए विज्ञापन भिजवाने में सभा को सहयोग दें वहां इस विशेषांक की अधिक से अधिक प्रतियों का आर्डर भी सभा कार्यालय में शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। ताकि उनकी प्रतियां सुरक्षित रखी जा सकें।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

कमला आर्या
महामन्त्री

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का विद्यार्थियों को अमर सन्देश

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल एक कट्टर आर्य समाजी नव युवक थे। जब उन्होंने महर्षि द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा तो उनके जीवन का काटा ही बदल गया। वह दोनो समय सन्ध्या किया करते थे। यज्ञ के प्रति उनकी बहुत अधिक आस्था थी।

जब एक बार उनके पिता जी ने कहा कि आर्य समाज को अपना लो या घर को, दोनो मे से एक को छोड़ना होगा। तो राम प्रसाद ने एक दम फैसला कर लिया और कहा पिता जी मैं घर को छोड़ सकता हू परन्तु आर्य समाज को नही छोड़ सकता क्योकि आर्य समाज से मुझे वह शिक्षा मिली जिसने मेरे जीवन को ही बदल दिया अब मैं उसे नही छोड़ सकता और सचमुच राम प्रसाद उन्ही कपड़ो मे जैसे खड़े थे वैसे ही भूखे प्यासे घर से निकल पड़े, इतना प्यार था उनका आर्य समाज से।

राम प्रसाद महान् क्रान्तिकारी थे। काकोरी काण्ड और दूसरे कई उन्होंने ऐसे कार्य किए थे जिससे अग्रेज सरकार ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया, उन्हे फासी की सजा हुई। वह जेल मे बन्द थे। परन्तु वहा भी उन्होंने अपने नित्य कर्म को नही छोड़ा सन्ध्या वन्दना यज्ञ यथा सम्भव वह वहा भी करते रहे और जेल की काल कोठरी मे बैठे ही उन्होने अपनी आत्म कथा लिखी। आत्म कथा मे जहा उन्होने बहुत सी मार्मिक बातें लिखी वहा विद्यार्थियो के लिए भी एक अमर सन्देश दिया है जो इस प्रकार है :—

"प्रत्येक विद्यार्थी या नवयुवक को जो कि ब्रह्मचर्यव्रत के पालन की इच्छा रखता है, उचित है कि अपनी दिनचर्या निश्चित करें। खान-पानादि का विशेष ध्यान रखें। महात्माओ के जीवन चरित्र तथा चरित्र गठन सम्बन्धी पुस्तको का अवलोकन करे। प्रेमालाप तथा उपन्यासो मे समय नष्ट न करें। खाली समय अकेला न बैठे। जिस समय कोई बुरे विचार उत्पन्न हो, तुरन्त शीतल जलपान कर घूमने लगे या किसी अपने से बड़े के पास जाकर बातचीत करने लगे अश्लील गजलो, शेरो तथा गानो को न पढ़ें और न सुनें। स्त्रियो के दर्शन से बचता रहे। माता तथा बहन से भी एकान्त मे न मिलें।

प्रातःकाल सूर्योदय होने से एक घण्टा पहले शैय्या त्याग कर शौचादि से निवृत्त हो व्यायाम करे या वायु सेवनार्थ बाहर मैदान मे जावे। सब व्यायामो मे दण्ड बैठक सर्वोत्तम है। यदि हो सके तो प्रोफैसर राममूर्ति की विधि से दण्ड बैठक करे। प्रोफैसर साहब की रीति विद्यार्थियो के लिए लाभदायक है। थोड़े समय मे ही पर्याप्त परिश्रम हो जाता है। दण्ड बैठक के अलावा शीर्षासन और पद्मासन का भी अभ्यास करना चाहिए और अपने कमरे मे वीरो और महात्माओ के चित्र रखने चाहिए।

भोजन मे मास, मछली, चरपरे खट्टे, गरिष्ट बासी तथा उत्तेजक पदार्थों का त्याग करें। सूर्य उदय होने के पाच दस मिनट पूर्व स्नान से निवृत्त होकर यथा विश्वास परमा मा का ध्यान करें। सर्वैव कुए (नल) के ताजे जल से स्नान करें।"

इस छोटे से सन्देश मे रामप्रसाद बिस्मिल ने वह कोई बात नहीं छोडी जो विद्यार्थी के लिए उपयोगी हो, रहन-सहन, खान पान, आहार व्यवहार सभी बातो को दे दिया है। यह जो कुछ भी उन्होंने लिखा अपने जीवन के आधार पर लिखा। यह उनके विद्यार्थी जीवन की एक झलक है जिससे पता चलता है कि रामप्रसाद बिस्मिल क्या थे ? और उनका चरित्र कितना महान् था। यदि विद्यार्थी जीवन मे नवयुवक इन बातो को अपना लें तो वास्तव मे वह भी उन्ही की तरह चरित्र के धनी बन जाए। 19 दिसम्बर को उनका बलिदान दिवस मनाते हुए काश ! कि हम उनके जीवन से कुछ प्रेरणा ले सकें। —धर्मदेव आर्य

नवांशहर की शिक्षण संस्थाओं का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।

मैं आर्य विद्या परिषद् पंजाब (रजि.) के रजिस्ट्रार का कार्यभार सम्भालने के पश्चात् दिनांक 7-12-87 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शिक्षण संस्थाओं को देखने के लिए वहां गया। इस समय वहां सभा के राधा कृष्ण आर्य कालेज नवांशहर, दयानन्द अमरनाथ कालेज आफ ऐजुकेशन नवांशहर, भागवन्ती लड़ोईया मैमोरियल गर्ल्ज कालेज नवांशहर, दोआबा सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर, बच्छोवाली लड़ोईया गर्ल्ज हाई स्कूल नवांशहर तथा डा. आशानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर नवांशहर शिक्षण संस्थाएं कार्यरत हैं।

जब मैं नवांशहर पहुंचा तो शंकर राकेश पैलेस नवांशहर मे आर्य समाज के प्रधान श्री पं. देवेन्द्र कुमार, श्री के. के. सैंगर, श्री प्रेम सागर, श्री प्रेम चोपड़ा, श्री सूर्य प्रकाश जी और बहुत से महानुभावों ने मेरा हार्दिक स्वागत किया।

इसके बाद हम बी. एल. एम. गर्ल्ज कालेज नवांशहर को देखने के लिए गए। वहां की प्रबन्धकर्तृ सभा के प्रधान श्री पं. देवेन्द्र कुमार जी व प्रधानाचार्य श्रीमती नीलम गोयल और कालेज के स्टाफ ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। और इसके बाद कालेज का निरीक्षण करने पर पता चला कि प्रबन्धकर्तृ सभा व प्रधानाचार्य के प्रयासों से कालेज के भवन में और कई नये कमरे बनवाए गये हैं। इसके साथ ही कन्याओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है। परीक्षा परिणाम बहुत अच्छे रहे हैं।

इसके बाद हम डब्ल्यू. एल. आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल में गए। वहां जाकर देखा कि वहां प्रधानाचार्य श्रीमती इन्द्रा वर्मा के परिश्रम से उन्होंने स्कूल के भवन में लगभग एक लाख रुपया की लागत से स्कूल के कमरों के आगे बरामदा बनवाया है। इस स्कूल के परीक्षा परिणाम भी पहले से बहुत अच्छे हैं। अवश्य ही उन का कार्य बहुत सराहनीय है।

इसके बाद हम डा. आशानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर में गए वहां ज्यो ही हमने स्कूल में प्रवेश किया तो स्कूल के बच्चों के गायत्री मन्त्र के उच्चारण से सारा वातावरण गूंज उठा, स्कूल की प्रिंसीपल बीना भल्ला और प्रबन्धकर्तृ सभा के प्रधान श्री पं. देवेन्द्र कुमार, मैनेजर श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने अपने प्रयास से स्कूल के लिए पांच कमरे बनवाये और बच्चों के लिए स्कूल मे पढ़ाई के प्रबन्ध मे भी सुधार किया। इस स्कूल के परीक्षा परिणाम भी बहुत अच्छे रहे हैं।

इसके बाद हम दोआबा आर्य सीनियर स्कूल में गए। यह देख कर वहां बहुत प्रसन्नता हुई कि स्कूल में आने से बहुत अधिक उन्नति एवं प्रगति हुई है। इसके प्रधानाचार्य श्री हरवंसलाल जी तनेजा और प्रबन्धकर्तृ सभा के प्रधान व मैनेजर ने बहुत सराहनीय कार्य किया है। मेरे भाई श्री वेद प्रकाश जी सरीन किसी अत्यावश्यक कार्य के लिए नवांशहर से उस दिन बाहर गये थे, अतः वे उस दिन वहां उपस्थित नही हो

सके। परन्तु जो कुछ उन्होंने स्कूल के लिए किया है वह वास्तव में ही प्रशंसनीय है।

इसके बाद हम आर. के. आर्य कालेज जो कि वहां का सब से बड़ा कालेज है में गए। वहां पर कालेज के लिए एक बहुत बड़ा हाल बनाया जा रहा है, जिस पर लगभग अढ़ाई लाख रुपया खर्च हो चुका है और अभी बहुत खर्च होने वाला है। इसमें 25 हजार रुपया श्री के. के. सैंबर जी ने व्यक्तिगत रूप में दान दिया है। जिसके लिए मैं सभा की ओर से उनका धन्यवाद करता हूं। इस कालेज का प्रबन्ध,कार्य-वाहक प्रिंसीपल श्री सिक्का जी और उनका स्टाफ एवं प्रबन्धकर्तृ सभा बहुत मेहनत से कर रहे हैं। यह कालेज पिछले कुछ समय से अवनति की तरफ जा रहा था अब फिर एक बार उन्नति करने लगा है। इसके लिए मैं पं. देवेन्द्र कुमार और श्री के. के. सैंबर दोनों को बधाई देता हूं।

इसके बाद हम डी. ए. एन. कालेज आफ एजु-केशन को देखने के लिए गए। वहां श्रीमती देवेच्छा प्रधानाचार्य बहुत ही मेहनत से काम कर रही हैं। कालेज बिलकुल ठीक चल रहा है।

इन सभी शिक्षण संस्थाओं में जब मैं गया तो वहां उनकी उन्नति देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। सभी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य विद्या परिषद् के प्रति अपना आभार प्रकट किया और सभा को पूरा-पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। वहां पर पं. देवेन्द्र कुमार जी ने इन शिक्षण संस्थाओं की ओर से 5100 रुपये नकद सभा भवन निर्माण के लिए मुझे दिए। मैं सभा की ओर से इन सबका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

इस सारे प्रोग्राम को सफल बनाने में श्री पं. देवेन्द्र कुमार जी, श्री के.के. सैंबर, श्री प्रेम सागर जी, श्री प्रेम चोपड़ा जी, श्री सूर्य प्रकाश जी ओहरी, श्री वेद प्रकाश जी लखोरिया और बहुत से आर्य जनों का सहयोग रहा।

—अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पंजाब (रजि.)

(6 पृष्ठ का शेष)

जिसकी निन्दा कर देते वह आर्य की नजरों में गिर जाता था। आर्य समाज के एक सरगर्म सेवक पर किसी ने दोषारोपण किया। महात्मा मुन्शीराम जी के कानों तक यह बात पहुंची तो उन्होंने आर्य समाज को सचेत करने के लिये अपने समाचार पत्र में सम्पादकीय लिख लिख दिया, बस फिर क्या था वह सेवक आर्य पुरुषों की नजर में गिर गया। कुछ समय के बाद वह महात्मा जी के पास आए और उनसे निवेदन किया कि मुझ पर मिथ्या दोषारोपण किया गया है। इस पर उन्होंने समाचार पत्र में लिख दिया कि काश! मुझे कागजात पहले दिखाए गये होते।

25 वर्षों में महात्मा मुन्शीराम और स्वामी श्रद्धानन्द की इतनी घटनाएं मेरे सम्मुख आईं कि उन्हें एक लेख में बन्द करना असम्भव है। यह कह कर इस लेख को समाप्त करता हूं कि आर्य समाज में महात्मा मुन्शीराम का स्थान इस समय तक रिक्त है। उस की पूर्ति अभी तक नहीं हुई। इसलिये कुछेक आर्य पुरुषों का यह विचार हो रहा है कि आर्य समाज की उन्नति रुक गई है। उन्नति तो नहीं रुकी बड़े वेग से हो रही है। हां! यह हो सकता है कि यदि आर्य समाज को वास्तविक अर्थों में कोई उत्तराधिकारी मिल जाता है तो उसकी गति और भी तीव्र हो जाती। परमात्मा करे कि आर्य समाज में महात्मा मुन्शीराम सरीखे तप और त्याग के धनी उत्पन्न हों, ताकि ऋषि दयानन्द ने जिस उद्देश्य के लिये स्थापना की थी वह भी शीघ्र पूरा हो सके।

(26 दिसम्बर 1954 साप्ताहिक आर्य जालन्धर)


अपने प्यारे बच्चों
के स्वास्थ्य के लिये
अपना आजमाया हुआ
मोगा शहर का मशहूर
पीमार्का
शुद्ध सरसों का
तेल
प्रयोग करें।
"TRUTH'
फोन 2239
2303
देवी दास गोपाल कृष्ण प्रा. लि. आयल मिल्ज़, मोगा.

टेलीफोन 74250

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 39, 23 पौष सम्वत् 2044 तदनुसार 3 जनवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

नारी पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ एक पुकार : दिल्ली से देवराला तक 101 आर्य संन्यासियों की पद यात्रा

पूर्व दिसम्बर को कृष्ण विहार के नये आर्य समाज दीवान हाल से सुबह जब अत्याचारी साधु-सन्यासी ने और कुछ समाजवादी परिवार में कामकार लिया था। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक उत्साहित और उत्तेजित थी, यह वही थी, क्या विडम्बना है कि हमारी कुरीतियों से लड़ने का बीड़ा एक पुरुष ने उठाया है और वह भी सन्यासी ने। इस बीच समाज की पचास फीसदी भागी जाती है, लेकिन हमारा प्रतिनिधित्व करने वालों में भी सन्यासिनी ही हैं माता मीरावती।

अवसर था दिल्ली से देवराला जाने वाली कूच का। इस पद यात्रा का मकसद सिर्फ सती प्रथा के खिलाफ आवाज बुलन्द करना ही नहीं बल्कि दहेज प्रथा और नारी के अमानवीय प्रबंध के खिलाफ जन चेतना पैदा करना भी है। 5 दिसम्बर को मन्त्रों के उच्चारण के बीच यह पद यात्रा शुरू हुई शाम को दिल्ली के ही गौतम नगर के गुरुकुल में इसका पहला पड़ाव था—करीब 15 किलोमीटर दूर यात्रा के पहले चरण में करीब 350 लोगों ने भाग लिया, हालांकि स्वामी अग्निवेश को सिर्फ सवा सौ लोगों के साथ लेने की उम्मीद थी। स्वामी अग्निवेश कहते हैं,—हम लोग रोज 20 से 25 किलोमीटर की यात्रा करेंगे। रास्ते में लोग जुड़ते जाएंगे। हम सिर्फ वेद मन्त्रों का उच्चारण करेंगे और नारी पर होने वाले अत्याचारों के प्रति लोगों के विवेक और अन्तरात्मा को जगाने का प्रयास करेंगे।

स्वामी अग्निवेश से गौतम नगर में शाम 6 बजे जब मुलाकात हुई तो वे इस बात से खुश थे कि पद यात्रा के उनके इस प्रयास को आम लोगों ने सराहा है। प्रस्तुत है उनसे हुई बातचीत के कुछ प्रमुख अंश :

स्वामी जी, इस पद यात्रा का उद्देश्य क्या है ?



आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली से प्रस्थान करते समय श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री स्वामी अग्निवेश और बहन मीरावति व दूसरे सन्यासी गण

दिल्ली से देवराला तक 101 सन्यासियों और समाज सेवियों के नेतृत्व में 18 दिनों की इस पद यात्रा का मूल उद्देश्य है जड़ता को तोड़ कर समाज में एक संवाद स्थापित करना और एक बहस की शुरुआत करना कि आखिर कब तक नारी पर, जो हमारे समाज का पचास प्रतिशत है, इस प्रकार के अत्याचार होते रहें। ये अत्याचार कभी दहेज के नाम पर और कभी सती के नाम पर होते आते हैं। आखिर कब तक हमारी बहनें वैधव्य, शोषण तथा अपमान का जीवन व्यतीत करने के लिए खून के आंसू पीती रहेंगी। यह सवाल हम रास्ते में लाखों लोगों से संवाद के रूप से पूछेंगे और जवाब भी चाहेंगे।

रास्ते में आपके क्या कार्यक्रम होंगे ?

रास्ते में हम अपना साहित्य बांटते हुए आगे बढ़ेंगे, जहां हमें लोगों का समूह मिलेगा वहां अपने कार्यक्रम, नीचे से उन तक अपनी बात पहुंचाएंगे। रेवाड़ी, कुचामन, जयपुर में विभिन्न सभाओं के आयोजन की तैयारियां हैं, हमारा विश्वास है कि हमारे रास्ते के कुल 18 पड़ावों में कम से कम दो-दो, तीन-तीन सभाएं तो होंगी ही हमारी यह भी कोशिश है कि जो धर्माचार्य अपने मठों में बैठ कर वेदों की गरिमा, हमारे धर्म और संस्कृति की मर्यादाओं के खिलाफ गलत बयान देकर सती प्रथा को वेदानुकूल बताते हैं, ऐसे धर्माचार्यों को हम शास्त्रार्थ की चुनौती देंगे—चाहे वे पुरी के शंकराचार्य निरञ्जनदेव तीर्थ हों चाहे उनके और कोई समतत्व।

आपकी इस यात्रा का समर्थन कौन-कौन से तबके कर रहे हैं और विरोध करने वालों में कौन-2 से तबके हैं ?

हमें व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है। मुझे पहले यह पता नहीं था कि सनातन धर्म का भी एक बहुत बड़ा तबका सती प्रथा को अधार्मिक मानता है। जब मैंने सती प्रथा के विरोध में पद यात्रा का प्रस्ताव रखा तो विश्व धर्म के अध्यक्ष आचार्य प्रभाकर मिश्र, जो दरभंगा विश्वविद्यालय में उपकुलपति रह चुके हैं, ने हमारी पदयात्रा का स्वागत किया उन्होंने पद यात्रा के शुभारम्भ में उपस्थित होकर हमारा हौंसला भी बढ़ाया। इसी तरह से अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के महामन्त्री गोस्वामी गिरधारीलाल जी ने पुरी के शंकराचार्य के खिलाफ अपना स्पष्ट मतभेद प्रकट किया। अणुव्रत समाज के आचार्य तुलसी से भी हमारी बात हुई। उन्होंने बताया कि पहले किसी समय में राजस्थान में जैन विधवाओं की बड़ी जटिल समस्या थी। लेकिन उनके सद्प्रयासों से काफी कुछ समस्याएं दूर हो गई हैं। लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ जिनके निर्वाचन क्षेत्र सीकर में देवराला गांव आता है, ने भी हमें अपनी शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया है कि 23 दिसम्बर से पहले वे स्वयं देवराला के आस-पास उपस्थित होंगे।

क्या कुछ राजनीतिक पार्टियां भी पदयात्रा का समर्थन कर रही हैं ?

राजनीतिक पार्टियों का हाल कुछ अजीबो गरीब है। उनके कुछ नेता तो काफी प्रगतिशील विचारों के हैं और कुछ वोट की राजनीति का शिकार होकर दकियानूसी ख्यालों में पड़े और जकड़े हुए हैं। स्पष्ट रूप से कोई एक पार्टी साफ-साफ तरीके से ऐसी दिखाई नहीं पड़ रही है, जो नारी उत्पीड़न के सवाल पर आगे बढ़ने का साहस कर सके। आज सवाल सिर्फ सती प्रथा के उन्मूलन का ही नहीं है। हम तो भ्रूण हत्या की समाप्ति दहेज और दहेज हत्याओं के बन्द किए जाने की आवाज भी उठा रहे हैं। हम चाहते हैं। विधवा विवाह प्रचलित हो। नर-नारी के बीच जो असमानताएं हैं—पैदा होने से लेकर आखिरी दम तक वे समाप्त हो। इस संघर्ष के लिए हम आगे बढ़ रहे हैं। क्या विडम्बना है कि हमारे इस संघर्ष में कोई भी राजनीतिक दल खुल कर सामने आने से कतरा रहा है, दुर्भाग्य से आज राजनीतिक पार्टियों का चरित्र ही ऐसा है कि कहीं भी औरत को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मेरा शत-शत प्रणाम है उस वीर संन्यासी को

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस है। इस दिन 1926 में एक धर्मान्ध मुसलमान ने गोली मार कर उनकी हत्या कर दी थी। उन दिनों वह अपने घर में बीमार पड़े थे। एक मुसलमान आया उसने कहा कि वह स्वामी जी से मिलने आया है और उनके साथ अपने बारे कुछ परामर्श करना चाहता है। स्वामी जी के सेवक धर्मपाल ने कहा कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है। किसी और दिन आ जाए तो अच्छा रहेगा। हत्यारे ने कहा कि उसे जरूरी काम है इसलिए आज ही मिलना है। उन दोनों की बातचीत स्वामी जी के कानों तक पहुंच गई। उन्होंने धर्मपाल से कहा कि इसे आने दो वह अन्दर आ गया और स्वामी जी के पास बैठ गया। जब स्वामी जी ने उससे पूछा कि वह कैसे आया है तो उसने कहा कि पहले मुझे पानी पिलाइये मैं प्यासा हूं स्वामी जी ने अपने सेवक से कहा कि वह उसके लिए पानी लाए। जब धर्मपाल पानी लेने गया तो अब्दुल रशीद नाम के उस हत्यारे ने उठ कर स्वामी जी की छाती में चार गोलियां दाग दी और स्वामी जी का वहीं देहांत हो गया।

गांधी जी स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपना बड़ा भाई कहते थे। जब स्वामी जी की हत्या की गई तो कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन गोहाटी में हो रहा था। जब उनकी हत्या का समाचार वहां पहुंचा तो गांधी जी ने इसे एक बहुत बड़ी त्रासदी कहा। कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी ने स्वयं एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें जहां इस हत्या की निंदा की गई वहां स्वामी जी को सब नेताओं ने श्रद्धांजलि भेंट की। और वह प्रस्ताव कांग्रेस अधिवेशन में सर्वसम्मति से पास हो गया।

गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या को एक त्रासदी इसलिए कहा था कि सात वर्ष पहले दिल्ली की जामा मस्जिद में स्वामी जी को बुलाकर उनका उपदेश कराया गया था। यह इतिहास में पहली बार था कि किसी हिन्दू को और वह भी आर्य समाजी को जामा मस्जिद में बुलाकर जामा मस्जिद के मंच से किसी गैर मुसलमान का उपदेश कराया गया। और फिर उसी व्यक्ति को जिसे तत्कालीन मुसलमान इतना महान समझते थे, एक धर्मान्ध मुसलमान ने गोली का निशाना बना दिया। उनका दोष केवल यह था कि जो हिन्दू किसी भी कारण अपना धर्म छोड़कर मुसलमान बन गये थे, वह उन्हें फिर वापिस हिन्दू-समाज में लाने का प्रयास कर रहे थे। इस तरह वह हजारों मुसलमान बने हिन्दुओं को वापिस हिन्दू समाज में लाने मे सफल हो गये थे। उन्हीं दिनों उन्होंने असगरी बेगम नाम की एक मुस्लिम लड़की को हिन्दू बनाकर उसका नाम शान्ति देवी रखा था और एक हिन्दू नौजवान से उसकी शादी करा दी थी। कुछ मुसलमानों को यह भी असह्य था।

स्वामी जी महाराज के जी जीवन के कई पहलू हैं जिन पर यदि हम लिखना चाहें तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि हरिद्वार मे एक गुरुकुल की स्थापना थी। उससे पहले उनके देशवासी अपने इतिहास में तो यह पढ़ा करते थे कि पुराने समय में हमारे देश में गुरुकुल हुआ करते थे हमने यह भी पढ़ा है कि भगवान राम और भगवान कृष्ण ने भी गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण की थी लेकिन फिर वह समय भी आया कि जब गुरुकुल का रिवाज हमारे देश में खत्म हो गया। पहले मुगलशाही के समय फिर अंग्रेज के समय हमारी कई प्राचीन परम्परायें समाप्त हो गई थी। स्वामी जी महाराज ने नए सिरे से हरिद्वार में गंगा के पार एक जंगल में गुरुकुल बसाया और अपने दोनों बेटों को सबसे पहले उसमें दाखिल किया। शुरु-शुरु में लोग मजाक करते थे कि एक जंगल में अपने बच्चों को कौन भेजेगा लेकिन फिर वह समय भी आया जब देश के बड़े-2 नेता इस नए परीक्षण को देखने के लिए वहां जाने लगे। महात्मा गान्धी दक्षिणी अफ्रीका में थे जब उनके कानों तक इस गुरुकुल की ख्याति पहुंची थी। उन्होंने स्वामी जी को पत्र लिखा कि वह वापिस आकर उनके गुरुकुल को देखना चाहते हैं। और फिर वह एक दिन आए भी। गान्धी जी के गुरुकुल जाने से ब्रिटिश सरकार को चिन्ता हो गई कि यह संस्था है क्या? उसकी सी. आई. डी ने सरकार को यह रिपोर्ट दी कि यह वह जगह है जहां विद्रोहियों को विद्रोह का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस पर भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल देखने गये। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर लार्ड मेस्टन भी गए और फिर एक दिन ब्रिटेन के भावी प्रधानमन्त्री रेम्जे मेकडानल्ड भी वहां गए। सारांश यह कि जो भी वहां गया उसने उस संस्था की प्रशंसा की और कहा कि यह एक नया परीक्षण हो रहा है। उस गुरुकुल ने बड़े-2 विद्वान पैदा किए हैं जिन्होंने शिक्षा जगत् में विशेष नाम कमाया है।

मैं पाठकों का ध्यान स्वामी जी के जीवन के राजनीतिक पक्ष की ओर भी दिलाना चाहता हूं। स्वामी जी महाराज एक पंजाबी थे। उनका जन्म जालन्धर के पास एक गांव तलवन में हुआ था। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने वकालत जालन्धर में शुरू की थी उस समय वह लाला मुंशीराम के नाम से प्रसिद्ध थे और लाला देवराज जी के साथ मिल कर कन्या महाविद्यालय की नींव रखी। बाद में लाला देवराज लड़कियों के इस विद्यालय को चलाते रहे और स्वामी जी महाराज ने हरिद्वार जाकर लड़कों के लिए एक गुरुकुल खोल दिया। यह गुरुकुल भी वास्तव में 1902 में गुजरांवाला में शुरू किया गया था। वहां से वह उसे हरिद्वार ले गए।

इसीलिए स्वामी जी को पंजाब में गहरी दिलचस्पी थी। अतः जब 1919 में पंजाब में मार्शल ला लागू किया गया और सभी बड़े-बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए तो कांग्रेसी नेताओं ने यह फैसला किया कि कांग्रेस अधिवेशन अमृतसर में किया जाए। लेकिन उसकी स्वागत समिति की अध्यक्षता के लिए कोई व्यक्ति नहीं मिल रहा था। स्वामी जी से कहा गया कि वह यह दायित्व सम्भालें और वह मान गए। और जब कांग्रेस अधिवेशन शुरू हुआ तो स्वामी जी ने हिन्दी शब्दों के साथ अपना स्वागत भाषण पढ़ा। इसके साथ उनके राजनीतिक जीवन का श्रीगणेश हो गया। उसके कुछ समय बाद जब वह दिल्ली पहुंचे तो सरकार ने शहर में किसी प्रकार का जुलूस निकालने पर रोक लगा दी थी। श्री स्वामी जी महाराज और हकीम अजमल खां दोनों ने उस पाबन्दी को तोड़ने का निर्णय कर लिया। जब उनका जुलूस चांदनी चौक में पहुंचा तो वहां गोरखा फौज संगीनें ताने खड़ी थी। उसने स्वामी जी से कहा कि यदि वह आगे बढ़ेंगे तो उन्हें गोली मार दी जाएगी। स्वामी जी महाराज ने अपनी छाती से कपड़ा हटा लिया और गोरखा फौज से कहा कि यदि वह गोली चलाना चाहते हैं तो चला लें। इस पर गोरखा फौज ने अपनी बन्दूकें नीचे कर लीं। और स्वामी जी के लिए रास्ता खोल दिया।

और फिर एक दिन वह भी आया जब 1920 में हमारे अकाली भाईयों ने अमृतसर में गुरु का बाग का मोर्चा शुरू किया। देश के और भी बड़े-बड़े नेता उसे देखने गए। स्वामी श्रद्धानन्द भी वहां गए। अकाली नेताओं ने उनसे कहा कि वह इस मोर्चे में उनकी मदद करें। स्वामी जी महाराज तैयार हो गए। और एक अकाली जत्थे के साथ उन्होंने भी अपने आपको गिरफ्तारी के लिए पेश कर दिया और उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा देकर मियांवाली जेल में भेज दिया गया।

पाठकगण! मैंने आपके सामने उस वीर संन्यासी की कहानी संक्षेप में पेश कर दी है। वह सही अर्थों में कर्मयोगी थे, त्यागी थे। यदि वह चाहते तो अपने देश के एक बहुत बड़े राजनीतिक नेता बन सकते थे। गांधी जी उन्हें अत्यन्त सम्मान दिया करते थे। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में उनका उल्लेख अत्यन्त श्रद्धा से किया। आज उनका शहीदी दिवस है। आओ! एक बार फिर हम उन्हें याद करें और यह सोचने की कोशिश करें कि वह क्या थे और उन्होंने इतना बड़ा बलिदान क्यों दिया था?

—वीरेन्द्र

सभा प्रधान जी के नाम पत्र—

आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी!

सादर नमस्ते,

सभा का परिपत्र सं. 3 तारीख 2-12-87

चार अक्तूबर 1987 के आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के वार्षिक अधिवेशन पर जो निर्णय प्रधान पद के चुनाव पर लिया गया था, जिसमें 1[illegible]4 सदस्यों ने आपके पक्ष में मतदान दिया था हम उसी को अधिमानता देकर आपको ही सभा का प्रधान मानते हैं किसी अन्य को नहीं। हमारी समाज सदा ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ रही है, और रहेगी।

हम हैरान हैं कि श्री योगेन्द्रपाल सेठ जी ने श्री रामचन्द्र आर्य (जो हमारी समाज के पूर्व प्रधान थे) का नाम अपनी नई अन्तरंग सभा में कैसे रख लिया है वे तो बम्बई जा चुके हैं, वे तो अब भी हमारे साथ हैं। श्री सेठ ने उनका नाम देकर लोगों को भ्रान्ति में, अर्थात् ये अन्धेरे में रखने वाली शरारत है, बगैर पूछे और उनकी अनुपस्थिति में उनका नाम ऐसे ही लिख दिया गया प्रतीत होता है, वे तो सदा ही आपके साथ हैं और रहेंगे।

हमें यह लिखते हुए कोई संकोच नहीं हो रहा है कि श्री योगेन्द्रपाल सेठ को हम न तो प्रधान मानते हैं और न ही हमारा किसी प्रकार का सहयोग उनकी नई सभा के साथ होगा और न ही हम उसे मान्यता देते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि वर्तमान स्थितियों का ध्यान रखते हुए सभा के कार्यादि में आप कोई शिथिलता नहीं आने देंगे और सभा का कार्यादि भी पूर्ण लग्न के साथ पहले की तरह ही आप द्वारा होता रहेगा।

प्रभु—आपको दीर्घ जीवन और स्वस्थ जीवन प्रदान करता रहे।

—द्वारकानाथ शर्मा-प्रधान-आर्य समाज बुढ़िवाला रोड फिरोजपुर छावनी

सम्पादकीय—

देवराला यात्रा का महत्व

सती प्रथा के विरुद्ध तो हमारे देश में उसी दिन से शोर हो रहा है जब राजस्थान के एक गांव देवराला में रूपकंवर नाम की एक युवती ने अपने पति के साथ अपने आपको सती कर लिया था। यह उसने सब कुछ स्वयं किया था उसे यह करने पर विवश किया गया, यह एक विवादस्पद विषय है। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि इस एक कांड ने सारे देश को एक बार फिर झंझोड़ दिया है। और चारों तरफ से यह डर एक बार फिर प्रकट किया जाने लगा कि कहीं सती की प्रथा फिर से हमारे देश में प्रचलित न हो जाए। इसलिये कई संस्थाओं ने प्रस्ताव भी पारित किए और कई स्थानों पर प्रदर्शन भी किए गए। हमारे देश की संसद ने एक ऐसा प्रस्ताव भी पारित किया जो आगे के लिये इस कुप्रथा को रोक सके। यद्यपि हमें इस नए कानून का स्वागत करना चाहिए फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कानून किसी भी अपराध को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं होता। यदि कानून के द्वारा आए दिन की दुर्घटनाओं पर नियन्त्रण किया जा सके तो सम्भवत: लोगों की हत्याएं डाके, चोरियां और इस प्रकार की सब घटनाएं समाप्त हो जाएं। परन्तु हम जानते हैं कि केवल कानून इन्हें नहीं रोक सकता आवश्यकता इस बात की होती है कि जनमत इस प्रकार संगठित किया जाए और जनता में यह जागृति पैदा की जाए कि कोई कानून बने या न बने फिर भी एक ऐसा वातावरण पैदा कर दिया जाए कि कोई व्यक्ति कोई ऐसी कार्यवाही न करे जो सदाचार और अनैतिकता के विरुद्ध हो। सती की प्रथा आज से कोई सौ डेढ़ सौ वर्ष पहले हमारे देश मे उस समय की परिस्थितियो के कारण प्रारम्भ हुई थी उससे भी पहले राजस्थान में जब मुगलशाही जोरों पर थी और हमारी माताएं और बहने अपने आपको सुरक्षित न समझती थी तो आततायियों के हाथों से बचने के लिए सती हो जाया करती थी। इससे हम यह तो अनुमान लगा सकते हैं कि सती प्रथा का वास्तविक अभिप्राय क्या था। परन्तु आज परिस्थितियां बदल गई हैं। आर्य समाज और दूसरी धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं ने जनता में जो जागृति पैदा की है उसके कारण न तो पहले की तरह नारी जाति पर उस प्रकार के अत्याचार होते हैं जैसे कि मुगलों के समय में हुआ करते थे और न हमारा समाज अपनी बेटियों के अपमान को सहन करता है। इसलिए यदि आज राजस्थान की एक युवती सती होने पर विवश हो गई है या की गई है तो यह एक ऐसी घटना है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। इस लिए सारे देश में इसका विरोध हुआ है और सब तरफ से यह मांग की गई है कि ऐसे पग उठाए जाएं कि फिर हमारे देश में सती जैसी कोई घटना न हो। लेकिन देखा गया है। कि हम बातें तो बहुत करते हैं परन्तु किसी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कोई क्रियात्मिक पग नहीं उठाते। यही कुछ सती प्रथा के विरुद्ध जो अभियान सारे देश में चल रहा है उस में हुआ है। जलसे हुए है, जलूस निकाले गए हैं। कई स्थानों पर प्रदर्शन भी किए गए हैं परन्तु इससे अधिक कुछ नहीं।

आर्य समाज को इस बात का श्रेय है कि वह जो कुछ कहता है वह करके भी दिखाता है। देश मे नारी जागरण के लिए जो कुछ आर्य समाज ने किया है किसी दूसरी संस्था ने नही किया। आज हम इस पर गर्व करते हैं कि हमारे देश की महिलाओं के लिए प्रगति के सब दरवाजे खुले हैं कोई भी क्षेत्र आज ऐसा नही जहां महिलाएं यदि आगे बढ़ना चाहें तो न बढ़ सके। हमारे देश को इस बात का गर्व भी है कि हमने अपनी एक बहन को प्रधानमन्त्री भी बनाया। देश में यह परिवर्तन कैसे आया और इसका श्रेय किस को है इसे समझने के लिए यदि हम एक सौ वर्ष पीछे जाएं तो जब अभी आर्य समाज की स्थापना न हुई थी और उसके पश्चात् पिछले एक सौ वर्षों में नारी जाति के उत्थान के लिए आर्य समाज ने जो कुछ किया है उस पर यदि हम दृष्टिपात करें तब पता चलता है कि आर्य समाज ने इस देश में कितनी बड़ी वैचारिक क्रान्ति पैदा की है। इस पृष्ठ भूमि को सामने रखते हुए उस पद यात्रा का महत्व भी समझ में आ सकता है जो पिछले दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रद्धेय श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और आदरणीय स्वामी अग्निवेश जी और सम्माननीय बहन मीरायति जी और दूसरे सन्यासियों के नेतृत्व में देहली से लेकर देवराला तक की गई। उसके द्वारा देश की जनता को एक बार फिर यह पता चल गया है कि दूसरी संस्थाएं तो केवल कुछ कहती हैं परन्तु आर्य समाज जो कुछ कहता है वह करके भी दिखाता है। जहां तक इस पद यात्रा का सम्बन्ध है वह तो समाप्त हो गई। सरकार ने इसे रोकने का प्रयास किया था, पद यात्रियों पर लाठियां भी बरसाई गई उन्हें गिरफ्तार भी किया गया फिर भी यह पद यात्रा चलती रही और देव-राला की सीमा पर पहुंच कर एक यज्ञ के साथ इसे समाप्त किया गया।

पद यात्रा तो समाप्त हो गई परन्तु सती प्रथा और दूसरे अत्याचारों के विरुद्ध जो आन्दोलन प्रारम्भ किया गया है वह तो समाप्त नहीं हुआ। उसे चलाने की आवश्यकता है वह हम उसी स्थिति में चला सकते हैं यदि उसके महत्व को समझने का प्रयास करें। उसका महत्व क्या है। इस विषय में आगामी अंक में अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

एक सौ वर्ष पहले पंजाब का आर्य समाज

वही संस्था प्रगति कर सकती है जो समय-2 पर अपने अतीत की ओर देखती रहती है और जिस संस्था का अतीत गौरवमय और प्रेरणादायक हो उसके लिए यह और भी आवश्यक है कि वह अपने अतीत की तरफ देखती रहे। आर्य समाज का भविष्य कल को क्या होगा इसके विषय में आज कुछ कहना कठिन है, यद्यपि प्रयास आज भी हमारा यही होना चाहिए कि इसका भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल और गौरवमय हो जितना कि इसका अतीत था। इसके लिये यह भी आवश्यक है कि हमें अपने अतीत का भी पता होना चाहिए। कुछ बातें इति-हास का एक अंग बन जाती हैं। लोग कई बार उन्हें भूल जाते हैं जब उन्हे याद दिलाया जाता है तो उसे सुन कर उनमें एक नया उत्साह पैदा हो जाता है। आर्य मर्यादा का भी यह प्रयास रहता है कि समय-2 पर आर्य समाज के इतिहास को आर्य जनता के सामने रखा जाए। इसी दिशा में हम अब एक नया प्रयास करने लगे हैं। आज से एक सौ वर्ष पहले लाहौर से आर्य पत्रिका नाम की एक साप्ता-हिक पत्रिका अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ करती थी यह वह समय था जब डी.ए.वी. आन्दोलन अभी प्रारम्भ हुआ ही था। इस पत्रिका के द्वारा आर्य जनता को जहां एक ओर डी. ए. वी. आन्दोलन की प्रगति के विषय में सारी जानकारी दी जाती थी वहां दूसरी ओर पंजाब की भिन्न-2 आर्य समाजों की गतिविधियों के समाचार भी प्रकाशित किए जाते थे, मैं चाहता हूं कि पंजाब की आर्य जनता को उसके विषय में जानकारी दी जाए। इसलिए आर्य मर्यादा के आगामी अंक से उस समय की पंजाब की आर्य समाजों की गतिविधियों के विषय में कुछ जानकारी दी जाया करेगी। यह वह पंजाब है जिसका आधा भाग तो अब पाकिस्तान में रह गया है, लेकिन आज का हरियाणा, हिमाचल, देहली यह सब उस समय पंजाब में ही शामिल थे ऐसे पंजाब में आर्य समाज की गतिविधिया क्या थी? यह आर्य मर्यादा के पाठक आगामी अंक से पढ़ सकते हैं इन्हे पढ कर उन्हें उत्साह मिलेगा और यह भी पता चलेगा कि पिछले एक सौ वर्ष मे आर्य समाज कहा से कहा जा पहुंचा।

—वीरेन्द्र

नए वर्ष के कलैण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब प्रति वर्ष नए वर्ष के कलैण्डर महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले छपवाता है। इस बार भी सभा ने यह कलैण्डर छपवा लिया है। इसका मूल्य लागत मात्र केवल डेढ रुपया रखा गया है। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होगा। हमारी सभी आर्य समाजो से प्रार्थना है कि वह इस कलैण्डर को अधिक से अधिक संख्या में मंगवाएं। सभा कार्यालय से इसके लिए सम्पर्क करे या स्वयं आकर ले जाएं अथवा पत्र द्वारा अपने कलैण्डर सुरक्षित रखवा लें ताकि किसी समय भी आप कार्यालय से आकर ले सकें। हम उन्हीं आर्य समाजों के लिए कलैण्डर रखेंगे जो पूर्व हमे पत्र द्वारा इसके लिये सूचित कर देंगे। कृपया पत्र व्यवहार शीघ्र करें।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

भारत भ्रमण आर्य स्पेशल ट्रेन यात्रा का विवरण

लेखक—श्री रामलाल मलिक प्रधान

अखिल भारत वर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली के तत्वाधान मे भारत दर्शन की योजना रेल द्वारा करना निश्चय हुआ। दिनाक 25 अक्तूबर 1987 साय 3 बजे आय समाज करोल बाग मे सार्वदेशिका सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता मे यात्रियो का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमे यात्रा की सफलता के लिए शुभकामनाए प्रस्तुत की गई।

इस यात्रा मे अमेरिका, अफ्रीका, पजाब हरियाणा, राजस्थान, उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र और बिहार के यात्रियो ने सोत्साह भाग लिया। भारत भ्रमण की यह यात्रा रेल द्वारा दस हजार किलोमीटर की हुई। मार्ग मे एक हजार रेलवे स्टेशन आए।

प्रत्येक रलवे स्टशन पर आय समाज के गौरव एव सुपरिचय से लाईन क्लियर सुगमता स प्राप्त रहा। कायक्रमानुसार यह यात्रा दिनाक 25 10 87 को रात्रि 11 30 बजे पुरानी दिल्ली जनक्शन से प्रारम्भ हुई। आय स्पेशल ट्रेन मे भारत भ्रमण के लिए दिल्ली से प्रस्थान किया।

माग मे प्रत्यक स्टशन पर आय नर नारी ओ३म् के झण्डे लेकर स्वागत हेतु पधारे। यात्री माग मे केवल तीन समाजो और तीन गुरुकुलो म शोभा यात्रा क रूप म गए। समयाभाव के कारण माग मे आने वाले आय समाजो म यात्रियो का जाना सम्भव नही था।

प्रथम पडाव जयपुर मे हुआ। दोनो आय समाजो ने यात्रियो का हार्दिक स्वागत किया। किशनगढ रेलवे स्टेशन के आर्यों ने ट्रेन रुकवाकर स्वागत किया। अजमेर पहुचकर, पुष्कर मे ब्रह्मा मन्दिर देख कर चित्तौडगढ पहुचे।

चित्तौडगढ गुरुकुल के ब्रह्मचारियो कर्मचारियो और अधिकारियो ने बैण्ड द्वारा यात्रियो का अभिनन्दन किया। जलूस के रूप मे सभी यात्री गुरुकुल म गए। सभी ने मिल कर सध्या हवन किया। श्री रामनाथ जी मलिक की प्रेरणा से यात्रियो ने अनुमानत दस हजार रुपये गुरुकुल को दान दिया। प्रातराश गुरुकुल मे करके रेलवे स्टशन पर आकर नीमच के लिए प्रस्थान किया।

नीमच मध्य प्रदेश का प्रमुख नगर है। नीमच, मन्दसौर और मऊ छावनी के आर्य समाजो ने स्मरणीय स्वागत रेलवे स्टेशन पर किया। जलपान समाजो ने कराया। मऊ कैण्ट से औरगाबाद के के लिए प्रस्थान किया।

औरगाबाद पहुचने पर सभी यात्री अजन्ता एव एलोरा की गुफाए देखने के लिए बसो मे सवार हुए जिसका सारा प्रबन्ध आय समाज के यशस्वी उपदेशक श्री प ज्ञानेन्द्र जी शर्मा ने किया था। गुफाए देखने के पश्चात् सिकन्दराबाद के लिए प्रस्थान किया।

सिकन्दराबाद और हैदराबाद के ऐतिहासिक स्थान बसो मे जाकर देखे। वापिस आकर वास्कोडीगामा (गोआ) के लिए प्रस्थान किया। गोआ पूरा देखने की यात्रियो की इच्छा के कारण गाडी विलम्ब से चली। गोआ से हुबली के लिए प्रस्थान किया। हुबली होते हुए मैसूर पहुचे। मैसूर मे वृन्दावन गार्डन और ऐतिहासिक स्थान देखे। मैसूर मे जो स्वागत सेवा एव सहयोग श्री भगतराम जी शर्मा के दामाद श्री गणपति वेदालकार धम पत्नी सुमिता देवी ने दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा। सारा सारा दिन यात्रियो की सेवा मे लगा दिया सभी यात्रियो को फल वितरण आय समाज मैसूर की ओर से किए गए। यज्ञ प्रवचन प्लेट फार्म पर ही हुए।

बगलौर होते हुए पाण्डीचिरी पहुचे। अरविन्दाश्रम देखकर, समुद्र मे स्थित रामेश्वर पहुच कर ऐतिहासिक एव धार्मिक सभी स्थानो के भली भाति दर्शन किये फिर मदुरै पहुच कर, मदुरै मे मीनाक्षी मन्दिर देखा जो शिल्पकला वास्तु कला एव चित्रकारी की मुह बोलती तस्वीर है। सभी प्रकार की कलाओ को यात्री देख कर भाव विभोर हो उठे।

मदुरै मे कन्याकुमारी के पास टीयूली रलवे स्टेशन से मीटर गेज छोडकर ब्राडगेज बदलनी थी। रलवे स्टेशन पर कठिनाई आई और समय भी अधिक लगा। श्री रामचन्द्र जी विकल और बडौदा हाऊस रेलवे भवन के सहयोग से रात्रि को गाडी मिली। देरी होने के कारण अगले दिन कन्या कुमारी पहुचे। रात्रि हो चुकी थी। सूर्योदय दर्शन हेतु रात्रि मे कन्या कुमारी ही ठहरे। प्रात -काल विवेकानन्द स्मारक दर्शन हेतु पहुचे। स्वामी विवेकानन्द स्मारक को देख कर यात्री अत्याधिक प्रभावित हुए। वैसे भी अधिकतर यात्रियो ने कन्या कुमारी नही देखा। अत कन्या कुमारी के सभी रमणीक स्थान देखकर लोग प्रसन्न हो उठे।

त्रिवेन्द्रम होते हुए कोयम्बटूर पहुचे। वहा से ऊटी पहुच कर सभी रमणीक स्थान देख कर मद्रास के लिए प्रस्थान किया। मद्रास से तिरुपति गए। वहां वेंकटेश्वर महाराज का मन्दिर देखा। लौटकर 12 सौ मी की यात्रा करके जगन्नाथपुरी पहुचे। जगन्नाथपुरी से भुवनेश्वर पहुच कर रेलवे स्टेशन पर भावभीना स्वागत हुआ। रेलवे स्टेशन पर ही सभा हुई जिसमें उडीसा सभा के मन्त्री श्री प्रियव्रत दास जी एव उनकी धर्म पत्नी सन्तो देवी जी ने सारे सुन्दर आयोजन का प्रबन्ध किया।

भुवनेश्वर से चलकर कलकत्ता पहुचे। कलकत्ता से पटना पहुच कर वाराणसी के लिए प्रस्थान किया। वाराणसी रेलवे स्टेशन पर कन्या गुरुकुल मातृ मन्दिर की छात्राओ, अध्यापिकाओ, आचार्य आदि ने बैंड से सुस्वागत कर शोभा-यात्रा के रूप मे गुरुकुल मे ले गए यज्ञ एव सभा हुई श्री रामलाल जी की अपील पर गुरुकुल की सहायतार्थ यात्रियो ने लगभग पन्द्रह हजार रुपये दान दिये। भोजन कन्या गुरुकुल मे दिया। वाराणसी के धार्मिक एव ऐतिहासिक स्थान देख कर इलाहाबाद के लिए प्रस्थान किया।

इलाहाबाद के आनन्द भवन और त्रिवेणी सगम और धार्मिक एव ऐतिहासिक स्थान देखकर टूण्डला के लिए प्रस्थान किया। टूण्डला से एटा के लिए रवाना हुए। एटा मे गुरुकुल मे ब्रह्मचारियो, अधिकारियो ने स्वागत किया। चौरासी खम्भो से युक्त यज्ञशाला मे सभा हुई जिसमें श्री रामलाल जी मलिक की अपील पर आर्य स्पेशल रेल के यात्रियों ने गुरुकुल एटा को गौओं सहित अनुमानत पैंतीस हजार रुपये दान दिए। गुरुकुल के प्रबन्धकों ने सभी यात्रियों को भोजन कराया। एटा से रात्रि में दिल्ली के लिए रवाना हुए। यह आर्य स्पेशल रेल यात्रा भारत दर्शनार्थ 25 10-87 को आरम्भ होकर 22 नवम्बर 1987 को पूरी हुई। यात्रा में कठिनाई होना स्वाभाविक है। कठिनाईया होने पर यात्रियो ने जिस सौहार्द और आत्मीयता का परिचय दिया उसके लिए सभा उनका आभार प्रकट करती है जो भी यात्रियो को यात्रा मे असुविधा हुई उसके लिए हमें खेद है। यात्रियो के अतिरिक्त इस यात्रा को सफल बनाने मे जिन व्यक्तियो ने पूरा सहयोग दिया उन सबके हम आभारी है श्री चेतन स्वरूप जी कपूर और आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, कुशल प्रवक्ता, सुयोग्य धर्माधिकारी आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री ने कठिन परिश्रम के साथ दिन-रात सहयोग दिया। दोनो महानुभावो के लिए सभा हृदय से आभार प्रकट करती है। सभा मन्त्री श्री बलराम जी राणा व रामचन्द्र दत्ता उप प्रधान भी धन्यवाद के पात्र हैं।

20 नवम्बर 1987को आर्य स्पेशल ट्रेन वापिस दिल्ली न पहुच कर 22 नवम्बर 87 को प्रात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सकुशल सफल यात्रा करके पहुची।

नोट—इस यात्रा की विडीयो बनाई गयी है जो यात्रा हमने 27 दिन मे की वह आप विडीयो मगवा कर 2-3 घण्टे मे देख सकते।

आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषांक

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के अब तक सभी विशेषाको की बडी सराहना की जाती है। हमारा प्रयास होता है कि अच्छे से अच्छा मैटर इन विशेषाको मे दिया जाए। ऋषिबोध पर्व पर फरवरी 1988 मे गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी एक बृहद विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। हमारी इच्छा है कि यह अक कम से कम मैगजिन साईज के 100 पृष्ठों का अवश्य हो। इसके लिए हमने अभी से तैयारी आरम्भ कर दी है। हमारी विज्ञापन दाताओ से प्रार्थना है कि वह इस विशेषाक के लिए अपने विज्ञापन शीघ्र सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करें पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन शुल्क केवल 300 रुपये और आधे पृष्ठ का 150 रुपये रखा गया है। जो पूर्ण पृष्ठ न दे सके, वह आधा पृष्ठ अवश्य दें। हम इसे हजारो की सख्या मे छपवाना चाहते हैं।

हमने उच्चकोटि के लेखक महानुभावो को पत्र लिख दिए हैं कि वह अपनी अमूल्य रचनाए इस विशेषाक के लिए शीघ्र हमे भेजने की कृपा करें।

हमारी सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षण सस्थाओ और आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावो से प्रार्थना है कि जहा वह इस विशेषाक के लिए विज्ञापन दिलवाने मे सभा को सहयोग दें वहा इस विशेषाक की अधिक से अधिक प्रतियो का आर्डर भी सभा कार्यालय मे शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। ताकि उनकी प्रतिया सुरक्षित रखी जा सकें।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

कमला आर्या
महामन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण वार्षिक समारोह के सम्बन्ध में मेरा एक दृष्टिकोण और मेरे अतीत के कुछ संस्मरण

लेखक—डा. श्री भारत भूषण जी भारत भवन
828 ऋषिनगर, आर्य समाज मार्ग, शकूरबस्ती, दिल्ली-34

1—प्रतिदिन बृहद् यज्ञ, 2—चरित्र निर्माण सम्मेलन, 3—वेद सम्मेलन, 4—वैदिक विद्वान् सम्मान सम्मेलन, 5—सूखा पीड़ित सम्मेलन, 6—कवि सम्मेलन, 7—अन्तरंग सभा—पत्रकार सम्मेलन, 8—हैदराबाद आर्य सत्याग्रही सम्मान आर्य सम्मेलन तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की जन्मभूमि महर्षि से सम्बन्धित चारो विशेष स्थानों को एक विश्व दर्शनीय स्थान बनाने की मांग एवं दिल्ली के बस आर्य यात्रियों का मार्ग में आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया (अलवर) के सम्बन्ध में कुछ अनुभव और डी. ए. वी.- आन्दोलन आर्य करण की ओर—

प्रथम जन्म शताब्दी मथुरा की यात्रा मेरे अतीत के कुछ संस्मरण-मथुरा की प्रथम जन्म शताब्दी—

मुझे स्मरण आ रहा है कि बचपन मे एक बार हम मातृ-विहीन दोनो बहन-भाईयो को मेरे स्वर्गीय पिता जी "महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा" में ले गये थे। मुझ स्मरण आ रहा है कि उस समय प्रान्त वार अपार छोलदारियो मे हजारो आर्य स्त्री पुरुष बाल युवा वृद्ध ठहरे हुए थे। वह एक आर्य नगरी जैसा दृश्य स्मरण आ रहा है।

दूसरी आर्य समाज स्थापना शताब्दी दिल्ली

फिर दूसरी बार आर्य समाज स्थापना शताब्दी दिल्ली मे होने पर तो मैं स्वयं दिल्ली निवासी होने के कारण इस शताब्दी मे सम्मिलित होता रहा।

अजमेर की तीसरी महर्षि दयानन्द निर्वाण बलिदान शताब्दी

जब महर्षि दयानन्द निर्वाण बलिदान शताब्दी अजमेर मे हुई। मुझे अपने जीवन की इस तीसरी शताब्दी में भी परिवार सहित सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस निर्वाण शताब्दी हम आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूरबस्ती के दस स्त्री पुरुष यात्रियो ने आर्य समाज मोती नगर की साझी बस मे श्री ओमप्रकाश जी घूमड प्रधान आर्य समाज के साथ सानन्द यात्रा की थी।

और मैंने आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूरबस्ती की ओर शताब्दी यज्ञशाला निर्माण में टिकटो आदि सहित एकत्रित 5100 रु. की दान राशि भी भेंट की थी।

इस निर्वाण शताब्दी मे विश्व भर के लाखो यात्री सम्मिलित हुए। यह सफलता परोपकारिणी सभा के स्वर्गीय मन्त्री श्री करण शारदा पूर्व संसद सदस्य के अथक परिश्रम का परिणाम थी।

इस वर्ष का महर्षि निर्वाण वार्षिक समारोह और आर्यों का कर्तव्य

मुझे निर्वाण शताब्दी के पश्चात् इस वर्ष के वार्षिक निर्वाण समारोह मे सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस समारोह मे हुए आवश्यक सम्मेलनो के ऊपर अंकित शीर्षको के नामो से ही पाठक महानुभावको को उनके महत्व की जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

मेरी समझ मे वेद सम्मेलन अथवा विद्वान् सम्मान सम्मेलन और शिक्षा सम्मेलन आदि सम्मेलनो मे वेदादि शास्त्रो के खरीद के बाजार का अर्थात् इन के पाठको के कम होने पर चिन्ता व्यक्त की, यह सब भारत के शिक्षित कहे जाने वाले नवयुवको और नवयुवतियो का पश्चिमी चकाचौंध की आधुनिकता नकल की ओर अन्धाधुन्ध दौडते जाने का परिणाम है जबकि पश्चिमी जगत् अपने आधुनिकता के परिणामो से तंग आकर भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर होता आ रहा है।

क—डी. ए वी मे से ऐंग्लो शब्द की जगह "आर्य" शब्द प्रयुक्त करने तथा पब्लिक स्कूलो मे हिन्दी माध्यम भी करने की पुनः मांग की।

ख—वार्षिक निर्वाण समारोह मे शिक्षा सम्मेलन और डी ए,वी. सोसायटी।

यह शिक्षा सम्मेलन डी. ए वी. के अध्यक्ष श्री वेद व्यास जी की अध्यक्षता मे हुआ। इस सम्मेलन मे तथा पिछले दिनो दूर-दर्शन मे एक साक्षात्कार मे तथा अपने आर्य जगत् साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम से आप देखेंगे कि डी ए. वी के वर्तमान सर्वे सर्वा मेरे पुराने सुपरिचित श्री दरबारी लाल जी भी अब डी. ए, वी. की अपनी ऐंग्लो शब्द तथा अंग्रेजी माध्यम एव अपने नकटाई आदि पश्चिमी परिधानो आदि की नीति में कुछ सुधार करने के सम्बन्ध में विचार करने पर विवश हो रहे हैं। मैंने डी. ए. वी. कालेज सोसायटी की सदस्यता से भी डी. ए वी. की ओर से हिन्दी संस्कृत भाषा की उपेक्षा तथा डी. ए वी. मे से "ऐंग्लो" शब्द की जगह आर्य शब्द प्रयुक्त न करने की हठधर्मी के कारण त्याग पत्र दे दिया था।

इस समारोह मे भी डी. ए वी वालो ने अपनी शिक्षण संस्थाओ मे हिन्दी धार्मिक शिक्षा तथा भारतीय परिधान करने की चर्चा की।

आर्य आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया की श्रेष्ठता

आर्य प्रादेशिक प्र नि. सभा की ओर से श्री रामचन्द्र जी आर्य के प्रबन्ध मे संचालित बस द्वारा अजमेर के इस वार्षिक निर्वाण समारोह मे जाने का अवसर मिला। बस की यात्रा प्रबन्ध मे तो फिर कभी लिखू गा परन्तु दिनांक 29 अक्तूबर की रात को हम बस यात्रियो को अजमेर जाते हुए मार्ग मे गुरुकुल दाधिया मे ठहरना पडा, गुरुकुल की प्रबन्धक आचार्य विदुषी श्रीमती शकुन्तला जी ने तथा उनकी शिष्या ब्रह्मचारिणीयो ने रात के 12 बजे हम यात्रियो को भोजन आदि करने पर विवश कर दिया और प्रातः हवन यज्ञ आदि के पश्चात् अजमेर की ओर बढने से पहले प्रातः खाना खिला कर भेजा। हम यात्रियो ने लगभग 550 रु. केवल धन इकट्ठा करके अपनी तुच्छ भेंट गुरुकुल को दी, श्रीमती गुणवती सूद ने एक बाजा और श्री रामनाथ जी सहगल एडवोकेट पूर्व मन्त्री दिल्ली आ प्र, सभा ने एक टेप ट्रांजिस्टर भी देने का वचन दिया।

एक आपत्ति

मैंने जब यज्ञशाला मे लगी दान शिलाओ मे मेरे द्वारा आर्य समाज दयानन्द मार्ग रेलवे रोड शकूरबस्ती, दिल्ली—34 की ओर से निर्वाण शताब्दी की यज्ञशाला के लिए 5100 रुपये की प्रदत्त दान राशि की शिला को न देखा तो मैंने परोपकारिणी के अपने पुराने मित्र कविराज धर्मसिंह जी कोठारी तथा वर्तमान मन्त्री श्री गजानन्द जी आय से शिकायत की तो उन्होने कहा कि आप अपने द्वारा आर्य समाज की प्रदत्त दान राशि की रसीद की फोटो-स्टेट की एक प्रति भेज देवें (हमे अपना रिकार्ड देखने मे देर लग सकती है) हम शिला लगा देंगे। इसी प्रकार की चर्चा मैंने अन्य जनता से भी सुनी थी।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रही सम्मान हेतु आर्य सम्मेलन

आर्य सत्याग्रहियो के सम्बन्ध मे स्वतन्त्रता सेनानी श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक ने दिनांक 1 नवम्बर 1987 को प्रातः एक पत्रकार सम्मेलन बुलाया था और उस मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव के 9 भागो मे इसकी मांग रखी थी और आर्य समाज कैसरगंज की ओर से श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक का स्वागत किया गया था। इसके पश्चात् मैं तो दिल्ली वापिस चल दिया था, मेरी अनुपस्थिति में आर्य सम्मेलन मे उपस्थित आर्य सत्याग्रहियो को परोपकारिणी सभा, आर्य प्रादेशिक प्र. नि. सभा और बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक-एक सौ रुपया भेंट किया गया और परोपकारिणी सभा की ओर से आर्य सत्याग्रहियो को किराया भी भेंट किया गया और आर्य सत्याग्रह के शाहपुरा निवासी एक मात्र मुसलमान सत्याग्रही का विशेष सम्मान किया गया यह सम्मान राशि श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक ने नहीं ली।

समारोह का ऋषिलगर

समारोह के ऋषिलंगर के भोजनादि का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। हम दिल्ली के बस यात्रियो ने इस समारोह के ऋषिलंगर आदि हेतु लगभग छः सौ रुपया एकत्रित करके दिया था।

जन्म स्थान टंकारा, मथुरा ऋषि-उद्यान तथा भिनाय कोठी के भवन को एक ऐतिहासिक विश्व दर्शनीय स्थान बनाने की आवश्यकता

मैं जब ऋषि निर्वाण शताब्दी पर अजमेर गया था और चार वर्ष पश्चात् जब मैं अब वार्षिक निर्वाण समारोह पर गया तो मुझे चार वर्ष पूर्व के ऋषि-उद्यान तथा भिनाय कोठी भवन मे कोई परिवर्तन दिखलाई नही दिया। निर्वाण शताब्दी पर कहा तो आर्य जगत् को यह आशा दिलाई गई थी कि शताब्दी समारोह स्थली की विशाल भूमि पर एक आर्य नगर बनाने की राजस्थान सरकार से माग स्वीकार करवा ली जाएगी। और देखा तो वहा भी कुछ नही और ऋषि उद्यान भवन मे एव भिनाय कोठी भवन मे भी कोई परिवर्तन नही हुआ, न जाने प्रबन्धको के आश्वासन कहा गए। प्रबन्धक महानुभाव कहते थे कि इन आश्वासनो-कार्यों को पूरा करने के लिए पैसा कहा से आए ?

हम दूसरे धार्मिक सगठनो के सामान्य धार्मिक भवनो को विशेष कर सिखो के छोटे से छोटे गुरुद्वारो के भवनो को भी किला नुमा विशाल देखते हैं और सनातन धर्म के अनेक मन्दिरो के भवनो को भी विशाल रूप मे देखते हैं तो आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द से विशेष सम्बन्धित केवल चार स्थानो के भवनो को देखते है तो उन भवनो के कम से कम प्रवेश द्वार यज्ञशाला और समारोह भवन (हाल) को भी एक विश्व-दर्शनीय रूप मे बना हुआ भवन भी देख नही पाते अपितु ऋषि उद्यान मे न तो बाहर का कोई प्रवेश द्वारा ही दर्शनीय कहा जा सकता है और न ही अन्दर की

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मानव मात्र को ऋषि उपदेश

ले.—श्री स्व, स्वामी अमृतानन्द सरस्वती

स्व श्री स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (श्री ताराचन्द वानप्रस्थी सरगोधावाले) एक लेखक और कर्मठ कार्यकर्ता थे। वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर मे उन्होंने स्वामी आत्मानन्द साहित्य प्रकाशन आरम्भ किया था जो एक विशाल रूप धारण कर गया था परन्तु उनकी मृत्यु के बाद वह प्रकाशन बन्द हो गया। उन द्वारा सग्रहीत एक लेख नीचे दिया जा रहा है जो अप्रकाशित है और बडा उपयोगी है।

—स सम्पादक

1— ईश्वर गुण-गान

जो मनुष्य परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नही करता वह कृतघ्न और महा मूर्ख भी होता है। क्योकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवो को सुख के लिए दे रखे हैं उस का गुण भूल जाना ईश्वर को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

2 राजा प्रजा धर्म न्याय से वर्ते—

ध्यान रखना चाहिए कि—"यथा राजा तथा प्रजा" जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। इसलिए राजा और राज पुरुषो को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न कर, किन्तु सब दिन धर्म न्याय से वर्त कर सब क सुधार का दृष्टान्त बने।

3 ईश्वर से डरो

जो मनुष्य ईश्वर से डरते हैं कि वह हम को सदा सब ओर से देखता है। यह जगत ईश्वर से व्याप्त और सवत्र ईश्वर विद्यमान है इस प्रकार अन्तर्यामी परमात्मा का निश्चय करके भी अन्याय के आचरण से किसी का कुछ भी द्रव्य ग्रहण नही किया चाहते, वे धर्मात्मा हाकर इस लोक क सुख और परलोक मे मुक्ति रूप सुख को प्राप्त होकर सदा आनन्द मे रहते हैं।

4 माता-पिता कर्त्तव्य

यही माता पिता का कर्त्तव्य कम, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानो को तन,मन, धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना।

4 मानवता

मनुष्य किसी से वैर न रखे, सर्वदा सब से प्रीति करे, सत्य बोले, चोरी न करे, सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और अभिमान न करे।

6 ध्यान दो—

परमात्मा की सृष्टि मे अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगो को राज्य बहुत दिन नही चलता।

7 पशु का बडा भाई—

जैसे पशु बलवान होकर निर्बलो को दु.ख देते हैं, और मार भी डालते हैं, जब मानव शरीर पाकर वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नही किन्तु पशु वत हैं। और जो बलवान हो कर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है। और जो स्वार्थ वश होकर पर हानि मात्र करता रहता है वह जानो पशुओ का भी बडा भाई है।

हितोपदेश

सभा म वैसे स्थान मे बैठे जैसी अपनी योग्यता हो और दूसरा कोई न न उठावे। विरोध किसी से न करे, सम्पन्न होकर गुणो का ग्रहण और दोषो का त्याग करे।

राजा और प्रजा

राज्य पुरुष, प्रजा के लिए सुमाता और सुपिता के समान और प्रजा पुरुष राज सम्बन्ध मे सुसन्तान के सदृश वत कर परस्पर आनन्द बढावे।

आर्य राज्य—

देखो! जब आर्यों का राज्य था तब यह महोपकारक गाय आदि पशु नही मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त व अन्य भूगोल देशो मे बडे आनन्द मे मनुष्यादि प्राणी रहते थे, क्योकि दूध, घी, बैल आदि पशुओ की बहुताई होन से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थ जब स विदेशी मांसाहारी इस देश मे आ के गौ आदि पशुओ के मारने वाले मद्य पानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश आर्यों के दु ख की बढती होती जाती है।

कहा सदा कल्याण होता है

जिस कुल मे पति अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति स सन्तुष्ट होती है वहा सदा कल्याण होता है। (मनु)

फूट से बचो

आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवो का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जाने यह भयकर राक्षस कभी छूटगा व आर्यों को सब सुखो से छुडा कर दु ख सागर मे डुबा मारेगा।

परमेश्वर कृपा करे कि यह राज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाए।

दुष्टो से बचो—

दुराचारी पुरुष सदा ही लोक मे निन्दित और दुःख भोगने वाला तथा रोगी एव अल्पायु होता है। (मनु)

जैसी प्रार्थना वैसा ही आचरण

मनुष्यो को अत्यन्त उचित है कि इस जगत् के उत्पन्न करने का सब उत्तम सब दोषो के नाश करने तथा अत्यन्त शुद्ध परमेश्वर ही की स्तुति प्रार्थना और उपासना कर। जिससे वह हम लोगो को खोटे-2 गुण और कर्मों से अलग करके अच्छे गुण कर्म और स्वभावो मे प्रवृत्त कर, जैसी प्रार्थना करनी वैसी ही पुरुषार्थ से कर्म का आचरण करना चाहिए।

सौभाग्यवान देश

जिस देश मे यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान होता है।

आर्य नरेश का आदर्श राज्य

मेरे राज्य मे न चोर, न कायर-कजूस, न शराबी, न अग्निहोत्र न करने वाला, न अविद्वान, न व्यभिचारी ही है, फिर व्यभिचारिणी तो कहा ? मैं नियम-पूर्वक यज्ञ करता हू।

(महाराज अश्वपति)

मित्र वर ! ऋषि कृत ग्रन्थो का प्रेम से स्वाध्याय करें, आप को उपरोक्त प्रकार के अनेक उपदेश मिलेंगे। इन्ही मे ससार का सुधार और उपकार है।

ध्यान रखें। सज्जनो का सग और दुष्टो का त्याग, अपने माता-पिता और आचार्य की तन-मन और धनादि उत्तम उत्तम पदार्थों से प्रीति पूर्वक सेवा करें।

धन का स्वभाव

धन का स्वभाव है कि जहा यह इकट्ठा होता है उन जनो को निद्रालु, आलसी और कमहीन कर देता है। अतः धन पाकर भी मनुष्य को पुरुषार्थ ही करना चाहिए।

शोक करने योग्य कौन

डरपोक और सर्व भक्षी क्षत्रिय, सत्य से हीन ब्राह्मण, निर्धन वैश्य,आलसी शूद्र, शीलहीन विद्वान सदाचार शून्य कुलीन दुराचारणी स्त्री, विषय लम्पट योगी, केवल अपने ही लिये भोजन बनाने वाला, मूर्ख वक्ता,राजा हीन राष्ट्र तथा अजितेन्द्रिय और प्रजा से स्नेह न करने वाला राजा यह सबके सब शोक करने योग्य है। (मनु)

राजा प्रजा या चोर

जो राजा अपना हित और प्रजा का अहित करना चाहे, वह न राजा और जो अपना हित और राजा का अहित चाहे, वह प्रजा भी नही है, किन्तु उन को एक दूसरे का शत्रु, डाकू, चोर समझना चाहिए।

व्यभिचारी और व्यभिचारिणी

यदि स्त्री, जाति और गुण के अभिमान से पति को छोड कर अन्य से व्यभिचार करे तो उसे राजा बहुत से मनुष्यों के सम्मुख कुत्तों से कटवा दे। यदि पुरुष व्यभिचारी हो तो उसे अग्नि से तप्त लोहे के पलग पर सुलवा कर जलवा देवे। (मनु)

मनुष्य कौन

जो बुरे कामो के करने मे भय और सत्य कामो के करने मे किंचित भी भय शका नहीं करते, वे ही मनुष्य धन्यवाद के पात्र कहाते हैं।

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के दुःख-सुख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नही किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ की, चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यो न हो उनकी रक्षा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे, अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वथा किया करे, इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दु ख प्राप्त हो चाहे प्राण भी चले जावें परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। (क्रमश:)

(5 पृष्ठ का शेष)

चार दीवारी और आगन का ही अभी सुधार हो पाया है केवल यज्ञशाला बडे आकार की तो अवश्य है परन्तु उस को एक विश्व दर्शनीय विशाल कार्य भवन का रूप नही कह सकते और एक विशाल समारोह भवन (हाल) की तथा अतिथि भवनो की सी सुव्यवस्थित रूप मे बहुत कमी दिखलाई दे रही है।

इसी प्रकार महर्षि का देहावसान निर्वाण स्थान भिनाय कोठी की भी वही पूर्व दशा है जब इसके प्रबन्धको की अपील पर पर्याप्त आर्य जनता ने यथाशक्ति पर्याप्त दान आदि दिया था।

इसी प्रकार महर्षि से सम्बन्धित गुरु विरजानन्द जी की मथुरा की कुटिया तथा जन्म स्थली टकारा के किसी भवन को भी कोई विश्व दर्शनीय नही कहा जा सकता।

टकारा के लिए आदरणीय श्री रामनाथ जी सहगल पर्याप्त प्रयत्नशील रहते हैं। बैंक से सेवा मुक्त होकर श्री रामनाथ सहगल और उनका एक सुपुत्र भी आर्य समाज की बहुमुखी सेवा मे दिन रात लगे रहते हैं।

आशा है परोपकारिणी सभा के अधिकारी तथा अन्य शुभचिन्तक प्रभावी धनी दानी एव क्रियाशील आर्य महानुभाव इन चारो स्थानो को एक विश्व दर्शनीय स्थान बनाने की किसी योजना को शीघ्र ही क्रियात्मक रूप देने का प्रयत्न करेंगे।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ढंग से प्रतिनिधित्व प्रदान नहीं किया जाता, जबकि वोटों के हिसाब से उनकी संख्या आधी से भी ज्यादा है। पार्टी संगठनों को ही ले लीजिए, पदाधिकारियों में कहीं कोई इक्की-दुक्की औरत होगी। विधान सभाओं, संसद में भी औरतों की संख्या नगण्य होती है। ऐसा क्यों? हम यह भी चाहते हैं कि सरकारी नौकरियों में औरतों के लिए आधे स्थान आरक्षित रखे जाएं। आखिर कब तक हम औरतों के सवाल पर जबानी जमा खर्च करते रहेंगे। आज औरत को दूसरों की सहानुभूति नहीं, अपना कुदरती हक चाहिए।

मान लीजिए, पद यात्रियों पर रास्ते में हमला होता है, तो हमलावरों से आप कैसे निपटेंगे।

इस तरह की चेतावनियां तो हमें बराबर मिल रही हैं। इनमें कहा जा रहा है कि हम पद यात्रियों को राजस्थान में घुसने नहीं देंगे कि अग्निवेश और उनका आर्य समाज हिन्दू समाज में संघर्ष के बीज बोने वाला है, विघटन के बीज बो रहा है। हमारा ऐसा कोई उद्देश्य या नीयत नहीं है कि हम विघटन संघर्ष या तनाव बढ़ाएं, बल्कि हम तो इसे कम करना चाहते हैं। इसलिए हमने उनसे निवेदन किया कि यदि मतभेद हैं तो रुकावट बढ़ सकती है, लेकिन अगर मतभेद हैं और हम हिन्दू समाज का उत्कर्ष चाहते हैं। समाज में आयी कुरीतियों, जड़ता और ठहराव को हटाना चाहते हैं तो ये सबसे अच्छा मौका है। मैंने उनसे कहा कि अगर आप अपने डेरे में बैठे रहेंगे और हम अपने डेरे में बैठे रहेंगे तो बात बनने वाली नहीं। हम जब सड़कों पर निकलें, तो आप भी आइए। आपसी संवाद सही मायने में प्रजातांत्रिक तरीका है। हमारे समझाने-बुझाने के बावजूद अगर वे हिंसा पर उतारू हो जाते हैं, तो हम उसका जवाब अहिंसा से देंगे, प्रेम से देंगे, सद्भावना से देंगे, हमने तो यहां तक सुझाव दिया है कि राजपूत समाज के भीतर जो विधवाएं हैं, उन बहनों के जीवनोद्धार के लिए कुछ नौजवान सामने आएं तो इस पद यात्रा के दौरान उनकी शादी हो। इस समय ऐसा दीखता नहीं, लेकिन हम यह निश्चय करके चल रहे हैं यदि उत्तेजना या आवेश में बह कर हमारे ये मित्र हमें गलत समझ कर अपनी नंगी तलवारें निकालने और अपना पौरुष दिखाना चाहेंगे, तो हम उतनी ही खुशी से अपनी नंगी गर्दन उनके सामने पेश कर देंगे और हम कहेंगे कि यदि इसी से तुम्हारा जातीय गौरव और धार्मिक परम्पराओं का गौरव सुरक्षित रहता है, तो हमारे लिए इससे ज्यादा खुशी की बात और कुछ नहीं होगी।

सती विरोधी कानून की आप कितनी उपयोगिता पाते हैं।

कानून की एक सीमित उपयोगिता है, ऐसा हम इस देश के अन्दर देख रहे हैं कि बाल विवाह के खिलाफ शारदा एक्ट पास हुए 80 वर्ष हो गए। सती प्रथा के खिलाफ राजा राम मोहनराय के जमाने में पास हुए कानून को 160 साल हो चुके हैं। इसी तरह के अन्य कानून हैं, लेकिन जब तक ऐसे कानूनों को सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती और समय-समय पर उनमें कुछ परिमार्जन नहीं होता रहता, तब तक ये कानून किताबों में सिमट कर रह जाते हैं, उन का व्यापक असर नहीं पड़ पाता। कानून तो वास्तव में एक व्यापक स्वीकृति के बाद बनने चाहिए। राजस्थान ने पहले अध्यादेश जारी करके और फिर जो कानून बनाया है, वह बुरा नहीं किया है, लेकिन सवाल राजनेताओं की सोच का पैदा होता है, जब से देवराला में घटना घटी है, किसी राष्ट्रीय नेता ने वहां जाने के बारे में नहीं सोचा। उनमें हिम्मत नहीं है, जरूरत नहीं है, वे संसद में बैठ कर पुलिस और कमांडो के पहरे में घिरे हुए कहते हैं। कानून बना दो। जब कानून की धज्जी उड़ती है जैसे जयपुर में लोगों ने उड़ा दी, तो किसी में हिम्मत नहीं कि वहां जाकर इसका विरोध करे या लोगों को समझाए।

इस बारे में हाईकोर्ट के निर्णय पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

हाईकोर्ट ने दो व्यवस्थाएं दी हैं वेदों के मुताबिक सती प्रथा का अनुमोदन नहीं किया जा सकता। हम भी यही बात कर रहे हैं, जो गुमानमल लोढा और जैन साहब ने अपने फैसले में कही है।

आपकी इस पद यात्रा को मुख्य रूप से सती विरोधी पद यात्रा के तौर पर प्रचारित किया जा रहा है। क्या आपका कार्यक्रम भी यहीं तक सीमित है?

हमने तो इसे एक प्रासंगिकता के ढंग से स्वीकार किया है। हम बार बार यह कह रहे हैं कि जो सती काण्ड हुआ है, वह नारी समाज पर निरन्तर जन्म से मृत्यु तक—जो अत्याचार हो रहे हैं, उसकी चरम परिणति है, इस चरम परिणति को फोकस में रखते हुए तमाम कुरीतियों को हम इस यात्रा में उठाएंगे, इस यात्रा में हमें जो जनसमर्थन मिलेगा, उसे लेकर हम पूरे समाज में बदलाव लाने का प्रयास करेंगे ताकि भविष्य में नारी पर होने वाले अत्याचारों को रोका जा सके।

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि आप अपनी खोयी हुई राजनीतिक प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करने के लिए एक नया शिगूफा छोड़ रहे हैं इस बारे में आपकी क्या राय है?

ऐसा कोई सोचता है तो वह दुर्भाग्यपूर्ण है राजनीति में मैं काफी पुराना हूं। आज भी कई राजनीतिज्ञों की दुकानें खुली हुई हैं और सभी मुझे निमन्त्रण दे रहे हैं। राजनीति बुरी चीज नहीं है, लेकिन बुनियादी परिवर्तन की धारा एक जन आन्दोलन के माध्यम से पैदा हो, तो सक्रिय राजनीति करने में मुझे सुविधा होगी। मुझे नहीं लगता कि वर्तमान पद यात्रा से ऐसी शोहरत मिल पायेगी, जिसे मैं आम चुनाव में भुनाऊंगा यह सब बकवास है।

आप समझते नहीं कि अगर आपके साथ दूसरे सम्प्रदायों और धर्मों के लोग चलते, तो इस पद यात्रा को अखिल भारतीय स्वरूप मिल जाता?

हां, यह तो ठीक है मैंने इस बारे में जयेन्द्र सरस्वती जी को लिखा था। कई महामण्डलेश्वरों को भी सूचित किया था, शायद कम समय की वजह से लोगों को सूचनाएं नहीं मिल सकीं, फिर भी ईसाई मत और इस्लाम के कुछ प्रगतिशील विचार वाले लोगों ने जयपुर पहुंचने का भरोसा दिलाया है।

(27 दिसम्बर 1987 के धर्मयुग से साभार)

आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर द्वारा ५१०० रु. की थैली भेंट

17 12 87 को श्री रामसुभाया जी नन्दा जो आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ, जालन्धर की प्रबन्ध समिति के मैनेजर हैं ने मुझे अपना पत्र लिख कर स्कूल में 18 12 87 को आने के लिए निमन्त्रण दिया और उनके अनुरोध पर मैं दिनांक 18 12 87 को आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ में गया। वहां पर श्री कमचन्द जी माली प्रधान प्रबन्ध समिति आर्य कन्या हाई स्कूल, श्री रामसुभाया जी नन्दा, मैनेजर, श्री अनन्तराम, श्री मगन नाथ चन्द एक्स एम सी श्री द्वारकानाथ मायपाल, श्री रामकुमार जी शर्मा प्रिंसीपल आर्य सी नियर सैकण्डरी स्कूल बस्ती गुजां, और श्री बलदेव राज जी तनेजा मुख्याध्यापक साईदास एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल बस्ती नौ, और श्रीमती हुष अरोड़ा मुख्याध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ एवं स्कूल के स्टाफ तथा छात्राओं ने मेरा हार्दिक स्वागत किया और उसके बाद स्कूल में स्वागत समारोह सम्पन्न हुआ।

इसके बाद मुझे स्कूल की इमारत भी दिखाई गई। स्कूल में एक बड़ा भारी हाल बनाया गया है और बहुत से नये कमरे बनाये गये हैं, जिस पर लाखों रुपया खर्च आया है। और यह सारा रुपया स्कूल की प्रबन्ध समिति और प्रिंसीपल श्रीमती हुष अरोड़ा के परिश्रम से एकत्रित हो सका। मैं इसके लिये उन्हें बधाई देता हूं। स्कूल का परिणाम भी इस वर्ष बहुत अच्छा रहा और स्कूल उन्नति के शिखर पर पहुंच रहा है। स्कूल की प्रबन्ध समिति ने स्कूल की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भवन निर्माण के लिये 5100 रुपये की थैली भेंट की। जिसके लिये मैं उनका अपनी और सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद करता हूं। और स्कूल को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। —अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट

सभा मन्त्री

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर की गतिविधियां

● आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर में 11-12 87 को एक निर्धन परिवार की लड़की का विवाह किया गया जिसका सारा व्यय आर्य समाज की ओर से किया गया। विवाह संस्कार श्री प. वेद प्रकाश जी ने कराया।

● 4-1 88 से 10-1-88 तक आर्य समाज में कथोत्सव का आयोजन किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री प. निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी तथा श्री शेरसिंह, श्रीराम भजन मण्डली पधार रही हैं। इस उत्सव के अवसर पर निर्धन परिवारों के लिए गर्म वस्त्र भी बांटे जाएंगे।

आर्य समाज में एक सिलाई स्कूल बड़े सुचारु ढंग से चला रहा है। जिसमें बहुत सी लड़कियां सिलाई सीख रही हैं।

—रामसुभाया नन्दा
प्रधान

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द महाराज का बलिदान दिवस

अम शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस 20 12-87 रविवार को आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में श्री राजा राम सरीन जी की अध्यक्षता मे बड़ी धूमधाम और श्रद्धापूर्वक मनाया गया। प सुरेन्द्र जी ने प्रातः यज्ञ करवाया पश्चात श्रद्धाञ्जलि सभा दोपहर एक बजे तक मनाया गया जिसमे श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी, स्वामी सुमनावति, डा एस वी बाजिवा (प्रधान आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना) श्री बालकृष्ण जी शास्त्री, ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, प्रि ओ पी अर्जुन, डा. रामस्वरूप जी, श्री नरेन्द्र सिंह बस्सा, श्री रोशन लाल शर्मा, श्री आत्मानन्द आर्य, श्री ओमप्रकाश पासी, श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा, महाशय राम प्यारे लाल, माता कान्ता जी, श्री नन्दलाल जी, श्री भवन कुमार बत्ता, श्री राजा-राम जी सरीन, ने स्वामी जी के प्रति अपनी 2 श्रद्धाञ्जलिया अर्पण की और स्वामी जी के कार्यों को और बढ़ाने की प्रेरणा की।

आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल आर्य सी सै स्कूल, आर्य युवक सभा लुधियाना की भजन मण्डली ने अपने-2 सुन्दर गीतो द्वारा आर्य जनता को मोहित किया एव गीतो द्वारा ही स्वामी जी के कार्यों की सराहना की।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने इस अवसर पर तन, मन, एव धन से भी इस समारोह मे हाथ बटाया। इसके साथ ही जिला आर्य सभा आर्य समाज जवाहर नगर, किदवई नगर फील्डगंज, फोकस प्लाट, अमरपुरा, आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल, आर्य सी सै स्कूल और आर्य युवक सभा ने पूरा 2 सहयोग दिया।

डा बाजिवा जी ने सब आर्य जनता का धन्यवाद किया और सभी से भविष्य मे इस समाज को सहयोग देने की प्रार्थना की। अन्त मे फलाहार एव मिष्ठान सारी जनता ने श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया और शान्ति पाठ के पश्चात् समारोह की कार्यवाही सम्पन्न हुई। —जगदीश आर्य

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज लुधियाना (...) का साप्ताहिक सत्संग ... विद्यालय के ... के निवास स्थान पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री जवाहर लाल ... यजमान बने।

सत्संग मे हवन यज्ञ के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को हिन्दी के ..., कविता के प्रवर्तक राष्ट्र कवि और भारतीयता के ... केन्द्र के राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अभिनन्दित श्री सुरेश चन्द्र वात्स्यायन के ... डा पनशेवार, डा आत्मसिंह ... और श्रीमती ... को हिन्दी साहित्य सेवा के लिये सम्मानित करने पर बधाई दी और ... कश्यप तथा यूनिवर्सिटी के ... द्वारा प्रस्तुत तथा अनुमोदित प्रस्ताव द्वारा सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को इस आर्य ... किया कि आर्य समाज द्वारा हिन्दी के जोरदार समर्थन का मतलब यह नहीं है कि वह पंजाबी का विरोधी है।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा आर्य समाज ने श्री सुरेशचन्द्र वात्स्यायन के बड़े ... श्री रमेश चन्द्र वात्स्यायन जी के शरीर छोड़ जाने पर ... के लिये प्रार्थना की और इस वियोग से दु.खी परिवार के लिए भी शान्ति प्रार्थना की।

—वर्धमान चन्द ...

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जनहित प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. P b/J L 56

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 40. 26 पौष सम्वत् 2044 तदनुसार 10 जनवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

नारी का स्थान मानव समाज में महत्वपूर्ण व सबसे ऊंचा है।

नारी जागरण का अभियान फिर से आरम्भ किया जाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में ३-१-८८ को पारित प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे सती प्रथा के विरुद्ध देहली से दिवराला तक आर्य समाज के सन्यासियो व दूसरे कर्मठ कार्यकर्ताओ और सेवको ने जो पद यात्रा की है, उसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उन्हें बधाई देती है। इस पद यात्रा के द्वारा हमारे देश की ज्वलन्त समस्या की ओर जनता का ध्यान दिला कर आर्य समाज के नेताओ ने सारे देश को समाज सुधार की एक नई दिशा दिखाई है। हमारे सामने केवल सती प्रथा की समस्या नहीं है। दहेज के नाम पर विवाहित लडकियो को जलाना, विवाह के समय वर इच्छा के अनुसार दहेज न मिलने पर कोई बहाना करके विवाह विच्छेद करके एक नया विवाह रचा लेना साथ ही तलाक की प्रथा को प्रोत्साहन देना और इस प्रकार की कई और समस्याए एक विकराल रूप धारण करके हमारी समाज के सामने खडी हैं। आर्य समाज के लिए यह गर्व और गौरव का विषय है कि उसके नेतृत्व मे देहली से दिवराला तक पद यात्रा करके अपने देशवासियो का ध्यान नारी पर हो रहे, अत्याचारों की तरफ दिलाया है। हमारी संस्कृति मे नारी का एक विशेष और आदरणीय स्थान रहा है। परन्तु कुछ तो महिलाओ के अपने दृष्टिकोण मे, परिवर्तन के कारण और कुछ पुरुष से समानता की लालसा के कारण और कुछ नारी के प्रति पुरुषो के सम्मान अभाव के कारण यह स्थिति पैदा हो रही है। आर्य समाज जो पिछली एक शताब्दी से नारी उद्धार व स्त्री शिक्षा के पक्ष मे सतत प्रयास करता आ रहा है एक बार फिर इस विषय मे अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए यह घोषणा करना चाहता है कि उसकी यह निश्चित धारणा है कि—

1—नारी का स्थान मानव समाज मे सब से ऊंचा है। माता के रूप मे पत्नी के रूप मे, बहिन के और बेटी के तो रूप मे मनुष्य जीवन मे जो महत्व नारी को प्राप्त है, वह किसी और को नहीं है।

2—विवाह समाज के युवा वर्ग का एक मौलिक अधिकार है। महर्षि दयानन्द के कथनानुसार आर्य समाज का यह निश्चित मत है कि विवाह किसी पर ठोसा नहीं जाना चाहिए। लडका और लडकी दोनो की इच्छानुसार ही विवाह होना चाहिए।

3—दहेज वैवाहिक बन्धन का आधार नहीं हो सकता। दहेज देने या लेने मे दोनो परिवार स्वतन्त्र रहने चाहिए। जो व्यक्ति किसी भी रूप मे दहेज लेने के लिए वधू पक्ष को विवश करे, समाज को उसके परिवार का बहिष्कार करना चाहिए और कोई व्यक्ति अपनी बेटी का विवाह मे न करे।

4—जिस परिवार मे किसी और कारण हत्या की जाए या किसी और प्रकार की यातना पहुंचाई जाए, उस परिवार का पूर्णतया सामाजिक बहिष्कार किया जाए।

5—विधवा विवाह को समाज को एक आवश्यक प्रक्रिया समझ कर जो विधवाए पुर्नविवाह की इच्छुक हो उन्हे इसकी अनुमति मिलनी चाहिए। और विधवा के पुर्नविवाह को निन्दा की दृष्टि से न देखा जाए अपितु विधवाओ को सम्मानित और स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करने मे समाज को उनकी पूरी तरह सहायक होना चाहिए।

6—नारी जागरण का अभियान फिर से प्रारम्भ किया जाए और समाज मे यह भावना पैदा की जाए कि नारी का अपमान किसी रूप मे सहन नहीं किया जाए। यह भी आवश्यक है कि महिलाओ मे भी यह भावना पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जाए कि नारी को अपना महत्व समझते हुए फिर से अपने उस आदर और सम्मान को प्राप्त करना चाहिए, जो प्राचीन काल मे भारतीय नारी की एक विशेषता समझी जाती थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब नारी के सम्मान को सुरक्षित रखने और उस पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चलाए गए अभियान मे उसे अपने पूरे समर्थन व सहयोग का विश्वास दिलाती है। और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजो को यह आदेश देती है कि वह रविवार 24 1-1988 को नारी जागरण दिवस मनाए—अपने अपने साप्ताहिक सत्संग के समय नारी समस्या के विषय मे आर्य समाज के दृष्टिकोण को जनता के सामने रखें और एक ऐसा वातावरण पैदा करने का प्रयास करें कि हमारे देश मे सती या दहेज के नाम पर हमारी महिलाओ पर जो अत्याचार हो रहा है, वह बन्द हो जाए और भारत मे फिर से यह नाद गूंज उठे।

'यत्र नारीयस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

—★—

व्याख्यान माला—१०

दानी सदा सुखी रहता है।

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स, अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(13 दिसम्बर से आगे)

वारिदस्तृप्तिमाप्नोति सुखमक्षय्यमन्नद: ।
तिलदश्च प्रजामिष्टां दीपदश्चक्षुरुत्तमम् ॥53॥

जल दान करने वाला तृप्त रहता है। अन्न दान करने वाला सब सुखो को पाता है। तिल दान करने वाले को इच्छित सन्तान की प्राप्ति होती है। तथा दीप दान करने वाले को सुन्दर नेत्र प्राप्त होते हैं।

भूमिदो भूमिमाप्नोति दीर्घमायुर्हिरण्यद. ।
गृहदोऽग्रयाणि वेश्मानि रूप्यदो रूप्यमुत्तमम् ॥54॥

एतानि पुरुषव्याघ्र साधुभ्यो देहि नित्यदा ।
दानानीह पां पापान्मोक्षयन्ति न संशय ॥55॥

भूमि देने वाले को भूमि प्राप्त होती है, स्वर्ण दान करने वाले लम्बी आयु को प्राप्त होता है, निराश्रय को आश्रम स्थल बनवा देने वाला उत्तमोत्तम सुविधा वाले आभास को प्राप्त करता है, तथा चान्दी का दान देने वाला उत्तम धन को प्राप्त करता है।

अतएव हे पुरुष श्रेष्ठ ? ये पूर्वोक्त दान तू सत पात्रों को यथा सामर्थ्य, नित्य दिया कर। क्योकि ये दान निश्चय ही सब पापो से मुक्त कराने वाले हैं।

देयं भेषजमार्तस्य परिश्रान्तस्य चासनम् ।
तृषितस्य च पानीयं क्षुधितस्य च भोजनम् ॥56॥

रोगी को औषधी देना, थके हुए को विश्राम के लिये आसन या बिस्तर देना, और प्यासे को पानी तथा भूखे को भोजन देना उचित है।

अन्नाद्बलञ्च तेजश्च प्राणिनां वर्द्धते सदा ।
अन्न दानमतो हेतोः श्रेष्ठमाह प्रजापति ॥57॥

सदा प्राणियो का बल और तेज बढता रहता है। अत. प्रजापति ने अन्न दान को श्रेष्ठ दान कहा है।

यस्मादन्नात्प्रजा सर्वा कल्पे कल्पेऽसृजत्प्रभुः ।
तस्मादन्नात्परन्दानं न भूतं न भविष्यति ॥58॥

क्योकि परमात्मा ने प्रत्येक कल्प मे अन्न से सब प्रजाए उत्पन्न की हैं। इसीलिए अन्न से बडा दान न तो हुआ, और न ही होगा।

अन्नदानं परन्दानं विद्यादानमत परम् ।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिर्यावज्जीवन्तु विद्यया ॥59॥

अन्न दान श्रेष्ठ दान है, विद्या दान इससे भी बढ कर है। क्योकि अन्न से मनुष्य की प्रीति अर्थात् तृप्ति कुछ समय के लिए ही होती है। परन्तु विद्या से सम्पूर्ण आयु तृप्त रहता है, अर्थात् विद्वान् आयु पर्यन्त अपनी तृप्ति के साधन स्वरूप विद्या धन को प्राप्त कर परम प्रसन्न रहता है।

(समाप्त)

व्याख्यान माला—11

नारी और उसका धर्म

सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता ॥1॥

वही नारी अच्छी है जो घर के कार्यों में चतुर है, वही स्त्री पूजा योग्य है जो पतिव्रता है, वही देवी स्तुति योग्य है जो पति को प्राण समझे व जिसे पति प्राण समान जाने, वही भार्या वन्दनीय है। जो प्रजा—सुसन्तान वाली है।

भर्ता हि परमं नार्या भूषणं भूषणैर्विना ।
एषा विरहिता तेन शोभमाना न शोभते ।2।

स्वर्णादि से निर्मित आभूषणो से वियुक्त नारी के लिये उसका पति ही श्रेष्ठ आभूषण है परन्तु पति रहित नारी भले ही स्वर्ण निर्मित आभूषणो से सजी हुई हो फिर भी शोभा नही देती।

श्वश्रूश्वशुरयोः पादौ जोषन्ती सुगुणान्विता ।
मातापितृपरा नित्यं या नारी सा तपोधना ।3।

जो गुणवती स्त्री सास-ससुर के चरणो की सेवा करती है और माता-पिता को भी आदर देती है वह स्त्री तपस्विनी है।

भर्ता देवो गुरुर्भर्ता धर्म तीर्थव्रतानि च ।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य पतिमेकं भजेत्सति ।4।

नारी के लिये पति ही देवता है, पति ही गुरु और वही तीर्थ, व्रत है। इसलिये सब कुछ छोडकर सती स्त्री पति की ही सेवा करे।

नेक्षेत्पतिं क्रूरदृष्ट्या भाषयेन्नैव दुर्वचः ।
ना प्रियं मनसाचाऽपि चरेत्पत्युः पतिव्रता ।5।

पति को क्रूर दृष्टि से नही देखना चाहिये, दुर्वचन भी नही कहने चाहिए और मन से भी उसका अप्रिय न सोचे यही पतिव्रता स्त्री का धर्म है।

सुस्वभावा सुवचना सुव्रता सुखदर्शना ।
अनन्यचित्ता सुमुखी भर्तु: सा धर्मचारिणी ।6।

जो स्त्री सुन्दर स्वभाव वाली, मधुर वचन वाली, शुभ व्रत वाली, शुभ दर्शन वाली, पति के सिवाय किसी मे भी चित्त न रखने वाली और सुन्दर मुख वाली है वही पति की सहधर्मिणी है।

मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुत. ।
अमितस्य प्रदातारं भर्तारं का न पूजयेत् ।7।

बेटी के रूप मे पिता अपनी पुत्री को जो भी कुछ देता है सीमित मात्रा में देता है। बहन के रूप मे भाई भी अपनी बहन को सीमित ही दे पाता है, परन्तु पत्नी के रूप मे जो पति असीमित तथा निरन्तर देने वाला है। उसकी पूजा वह क्यो न करे अर्थात् अवश्य करे।

नास्ति भर्तृसमो नाथो नास्ति भर्तृसमं सुखम् ।
विसृज्य धनसर्वस्वं भर्ता वै शरणं स्त्रियः ।8।

पति के समान कोई स्वामी नही, पति के तुल्य कोई सुख भी नही। अतः धन व सर्वस्व छोड कर स्त्री के लिये पति ही शरण है।

छायेवानुगता स्वच्छा सखीव हितकर्मसु ।
दासीवादिष्टकार्येषु भार्या भर्तु: सदा भवेत् ।9।

नारी पति के साथ सदा छाया की भान्ति रहे। हितकारी कार्यों में सखी तुल्य सहायक होवे, पति द्वारा आदिष्ट कार्यों में सदा दासी की भान्ति आचरण करे।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

देवराला यात्रा का महत्व-2

आज के आर्य मर्यादा के इस अंक में पाठक गण उस प्रस्ताव को पढ़ चुके होंगे जो देवराला यात्रा के सम्बन्ध में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पारित किया है। मैं इसे आर्य समाज का दुर्भाग्य समझता हूं कि प्रचार के क्षेत्र में हम सदा ही पिछड़ते रहे हैं। दूसरी संस्थाएं अपनी छोटी-छोटी बातों को उठा कर आसमान तक ले जाती हैं और हम अपने किसी महत्वपूर्ण कार्यक्रम का भी प्रचार नहीं कर सकते। देवराला पद यात्रा के द्वारा आर्य समाज का कुछ प्रचार हुआ था और समझा यह जाने लगा था कि यह एक संस्था है जो समाज सुधार के लिए पहले की तरह फिर मैदान में आ रही है। देवराला में जो कुछ हुआ था उसने सारे देश को एक बार झंझोड़ दिया था। कुछ देर के लिए तो बहुत शोर मचा था। सभाएं भी हुईं, प्रस्ताव भी पास किए गए। प्रदर्शन भी हुए, अब यह सब शान्त हो रहा है और धीरे-धीरे लोग रूपकंवर के सती होने की घटना को भूल रहे हैं परन्तु जो पद यात्रा आर्य समाज के सन्यासियों ने देहली से देवराला तक की थी उसका उद्देश्य केवल उस घटना के विरुद्ध अपनी भावना को प्रकट करना ही न था। वास्तव में नारी जाति पर आजकल जो अत्याचार किए जा रहे हैं। उन सब की ओर जनता का ध्यान दिलाना ही एक विशेष उद्देश्य था। स्वामी अग्निवेश ने स्थान-2 पर जो भाषण दिए थे उन सब में यही कहा था कि इस पद यात्रा के द्वारा केवल सती प्रथा के विरुद्ध ही हम अपनी आवाज नहीं उठाना चाहते अपितु दहेज और इस प्रकार की दूसरी जो कुरीतियां हमारी समाज में प्रारम्भ हो गई हैं। उनके विरुद्ध भी जनता को जागृत करना चाहते हैं। परन्तु यह अभियान आगे नहीं चलाया जा रहा है जो कुछ इस पद यात्रा के द्वारा आर्य समाज ने प्राप्त किया था उसका कोई लाभ नहीं उठाया जा रहा है।

"आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने जो प्रस्ताव पारित किया उसमें नारी जाति पर जो अत्याचार किए जा रहे हैं। उन सब का वर्णन किया गया है और उनके विरुद्ध अभियान प्रारम्भ करने के लिए 24 जनवरी को नारी जागरण दिवस मनाने का सब आर्य समाजों को आदेश दिया गया है यह इस लिए कि दहेज के नाम पर आज लड़कियों पर जो अत्याचार हो रहा है इसके विरुद्ध भी जनमत को संगठित करने की आवश्यकता है। मैंने पिछले दिनों इस विषय में जो लेख लिखे थे उन्हें कई दूसरे पत्रों में तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित किया गया है परन्तु मेरा वास्तविक अभिप्राय केवल यह है कि हमें सारा जोर केवल सती प्रथा को रोकने पर ही नहीं लगाना चाहिए अपितु दहेज के नाम पर जो अत्याचार किए जा रहे हैं उनके विरुद्ध भी वातावरण तैयार करना चाहिए। सती की घटना तो बहुत वर्षों के बाद एक हुई है। दहेज के नाम पर तो लड़कियों को प्रतिदिन जलाया जा रहा है। कोई कारण नहीं कि हम उसके विरुद्ध अभियान आरम्भ न करें। आर्य समाज को इस दिशा में भी जनता का नेतृत्व करना चाहिए।"

पंजाब सभा की अन्तरंग सभा ने जो प्रस्ताव पारित किया है उसमें नारी समस्या के विषय में आर्य समाज के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है। हमें अधिक से अधिक इसका प्रचार करना चाहिए। इस समय और कोई संस्था यह काम नहीं कर रही। आर्य समाज को आगे आकर इस विषय में जनता का नेतृत्व करना चाहिए। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा यह निवेदन है कि वह 24 जनवरी को नारी जागरण दिवस मनाएं जो प्रस्ताव अन्तरंग सभा में पारित किया है वह न केवल आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संग में पढ़ कर सुनाया जाए। अपितु जनसाधारण को विशेष कर महिलाओं को बताया जाए कि उनके अधिकारों के लिए आर्य समाज क्या कुछ कर रही है। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है कि आज ऐसा समय है जब आर्य समाज को आगे आकर हिन्दू समाज की एक ज्वलन्त समस्या के विषय में अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रख कर एक बार फिर यह सिद्ध कर देना चाहिए कि आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो इन समस्याओं के समाधान के लिए कुछ कर सकती है। आशा है सब आर्य समाजें 24 जनवरी को नारी जागरण दिवस मनाएंगी और नारी जाति की समस्याओं के विषय में आर्य समाज के दृष्टिकोण को जनता के सामने रखेंगी।

—वीरेन्द्र

आर्य वीर दल का शिविर

आर्य वीर दल का दूसरा शिविर 28 दिसम्बर से 3 जनवरी तक इस बार लुधियाना में आयोजित किया गया। पहला शिविर जालन्धर में लगाया गया था अब लुधियाना का शिविर भी सफल रहा है। 60 के लगभग बच्चे एक सप्ताह तक वहां रह कर शिक्षा प्राप्त करते रहे। इन में तीन सिख बच्चे भी थे। जहां उन्हें आर्य समाज की विचार धारा के विषय में जानकारी दी गई वहां व्यायाम आसन, प्राणायाम और अपनी रक्षा के लिए क्या-2 ढंग करना चाहिए और किस प्रकार आवश्यकता पड़ने पर लाठी आदि का प्रहार किया जा सकता है यह सब सिखाया गया था। यह सारा शिविर आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री आशानन्द के निरीक्षण में आयोजित किया गया। पलवल से श्री सत्यपाल जी, और गुरुकुल करतारपुर के मुख्याधिष्ठाता श्री सुखदेव राज जी इन दिनों वहां रह कर आर्य वीरों को प्रशिक्षण देते रहे। इस शिविर को देख कर मुझे प्रसन्नता हुई और साथ ही यह विचार भी आया कि इस प्रकार के शिविर हमें और भी स्थानों पर लगाने चाहिएं। धीरे-धीरे यह बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। इसी सम्बन्ध में मैंने मान्य भाई श्री आशानन्द जी से यह भी कहा कि वह एक ऐसी योजना बनाएं कि हम इस प्रकार के शिविर कुछ बड़े स्तर पर सारे प्रान्त में कर सकें। लुधियाना शिविर पर यह घोषणा भी की गई कि मोगा में एक वीरांगना शिविर भी लगाया जाएगा। लुधियाना का शिविर भी सफल रहा। इसके लिए मैं लुधियाना के आर्य भाई और बहनों का धन्यवाद करना चाहता हूं। उनके परिश्रम से यह शिविर सफल रहा है। आशा है दूसरे बड़े-2 शहरों के आर्य बन्धु भी जालन्धर और लुधियाना से शिक्षा ग्रहण करके अपने-अपने शहरों में इस प्रकार के शिविर लगाने की योजना बनाएंगे। इनमें सभा उन्हें अपना पूरा-पूरा सहयोग देगी।

—वीरेन्द्र

एक सौ वर्ष पहले पंजाब का आर्य समाज

चार अक्तूबर १८८६

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की पहली बैठक चार और पांच अक्तूबर 1886 को लाहौर में हुई। इसमें देहली, कोहाट, रावलपिण्डी, गुजरांवाला, अमृतसर, फिरोजपुर छावनी, होशियारपुर, पेशावर, दीनानगर, गुजरात, जेहलम, शिमला, रायकोट, जालन्धर, लुधियाना और लाहौर के प्रतिनिधि सम्मलित हुए। आर्य समाज मेरठ की ओर से लाला शिवप्रसाद और लाला बाबूराम आए थे। आर्य समाज प्रयाग की ओर से डा. गंगादीन और बाबू रघुवीर प्रसाद आए हुए थे। सहारनपुर की ओर से लाला बिहारी लाल आए हुए थे।

पहली बैठक में सभा और उसकी अन्तरंग सभा का विधान बनाने पर विचार हुआ किस आधार पर यह बनाए जाए। इसके विषय में भी निर्णय लिया गया यह भी निश्चय किया गया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय लाहौर में रहेगा। यह भी फैसला किया गया कि अन्तरंग सभा के सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा के कुल सदस्यों का एक तिहाई से अधिक न हो, परन्तु किसी भी स्थिति मे 15 से अधिक न हों। यह एक नया आर्य समाज के संगठन के लिए प्रयास किया जा रहा है। इसमें निम्नलिखित महानुभावों को पहली आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य निर्वाचित किया गया।

1. पं. शिवदत्त राम अमृतसर, 2. ला. नारायण दास गुजरांवाला, 3. ला. मुरलीधर होशियारपुर, 4. ला. साईं दास लाहौर, 5. लाला जीवनदास लाहौर, 6. ला. लालचन्द लाहौर, 7. ला. मदनसिंह लाहौर, 8. ला. बाबूराम कोहाट, 9. ला. ईश्वरदास रावलपिण्डी, 10. ला. मगाराम फिरोजपुर छावनी, 11. ला. उमरावसिंह देहली, 12. ला. मूलचन्द पेशावर, 13. ला. तुलसीराम लुधियाना। एक प्रतिनिधि मुलतान शहर का और एक फिरोजपुर शहर का बाद मे लिया जाएगा।

इस समाचार से स्पष्ट पता चलता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की पहली बैठक लाहौर में हुई और उसमें किन-2 नगरों से आर्य बन्धु पधारे।

—वीरेन्द्र

गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

लेखक—श्री ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता
आर्य वानप्रस्थ आश्रम (गुरुकुल) भठिण्डा

ॐ

गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन 3-1-78 ई. को था। उनके जीवन की कुछ घटनाएं नीचे लिख रहा हूं।

1. रामां मण्डी (जिला भठिण्डा-पंजाब) मे आर्य समाज के क्षेत्र में आने से पहले कुछ समय महाशय रौनकसिंह जी के घर ठहर कर आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय किया और सरकारी प्राइमरी स्कूल के मुसलमान मास्टर मंजूर अली से अंग्रेजी भाषा सीखी।

2. दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य बने और गुरु दक्षिणा के रूप में अपने सुयोग्य शिष्य पं. रुचिराम को आर्य समाज के प्रचार के लिए अरब भेजा।

3. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्ता प्रधान के रूप मे कार्य किया।

4. पंजाब आर्य वीर दल के नेता बने।

5. आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता रहे।

6. लोहारू स्टेट के आर्य समाज के उत्सव पर नगर कीर्तन मे गुण्डों द्वारा लहू-लुहान हुए।

7. आपकी प्रेरणा से श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने स्थूल अक्षरो का सत्यार्थ प्रकाश लिखा।

8. मारीशियस मे दृष्टि चली गई भारत वापिस आ कर हरड़ो का 6-7 मास लगातार प्रयोग करने पर पुनः दृष्टि आई।

9. हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की बागडोर अपने हाथ में लेकर फील्ड मार्शल के रूप में कार्य करके सत्याग्रह को सफल बनाया।

10. दीनानगर (जिला गुरदासपुर-पंजाब) में दयानन्द मठ की स्थापना करके भिक्षा के नियम को प्राचीन रूप में चालू किया—

11. आप समय के सदा पालन करने पर जोर देते थे। आपके भोजन का समय नियत था। समय बीत जाने पर भोजन नहीं करते थे। इस वास्ते कई-कई दिन भूखा भी रहना पड़ा।

12. सैन्ट्रल जेल लाहौर में आपने जेल का अपवित्र बिस्तर लेने से इन्कार कर दिया तो जेल अधिकारी ने पूछा यदि आप लाहौर के किसी व्यक्ति से परिचित हैं तो उसका नाम बता देवें—हम वहां से बिस्तर मंगवा देंगे—स्वामी जी ने तत्कालीन पंजाब के वजीर सर छोटूराम का नाम ले दिया—तो जेल अधिकारी ने कहा कि वह तो वजीर हैं हम वहां नहीं जा सकते कोई दूसरा नाम बताओ तो स्वामी जी ने श्री महाशय कृष्ण जी का नाम ले दिया—इस पर जेल अधिकारी ने कहा कि वह तो 'दैनिक प्रताप' में प्रकाशित कर देंगे—कोई और व्यक्ति बताओ—फिर स्वामी जी ने श्री विशम्भर नाथ जी—गुरुदत्त भवन का नाम बताया और वहां से स्वामी जी के लिए बिस्तर मंगवाया गया।

13. देसु मलकाणा गांव के डेरे में सन्तराम संन्यासी के पास कुछ दिन रहे। उसने स्वामी जी को खिचड़ी में लगभग एक सेर घी प्रतिदिन डाल कर खिलाया स्वामी जी को कभी बदहज़मी नही हुई। इतनी पाचन शक्ति थी।

14. एक बार आप गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार आ रहे थे—मुकसर रेलवे स्टेशन पर एक टिकट चैकर ने आपके डिब्बे में आकर केवल आपसे ही टिकट दिखाने को कहा—स्वामी जी ने टिकट दिखा दिया और टिकट चैकर से पूछा कि आपने मेरा ही टिकट पूछा बाकी यात्रियो को क्यों नही पूछा—क्या आपकी दृष्टि में केवल मैं बिना टिकट था? टिकट चैकर ने बड़ा सुन्दर उत्तर दिया कि भगवें वस्त्रों वाले सभी साधू बिना टिकट ही मिलते हैं—मै पहली बार एक साधु का टिकट देख रहा हू। आप कई बार पैदल जाते परन्तु बिना टिकट कभी न जाते मालेरकोटला से धूरी-कालांवाली से रामामण्डी कई बार पैदल जाते थे।

15. एक बार आपके पिता जी ने भगवे वस्त्रो में आपको साधुओं की मण्डली में देख कर बड़े दुःखी दिल से कहा कि बेटा मैं तो तुझे सरदार बनाना चाहता था—तू तो साधू बन गया—स्वामी जी ने अपने पिता के चरण छू कर नमस्ते की और पिता जी को कहा कि मैं सरदार बन के ही दिखा दूंगा—इसीलिए साधु बना हू—पिता जी ने कहा कि एक बार घर चलो—तो स्वामी जी ने कहा कि आप मेरे साथ के सभी साधुओं को भोजन का निमन्त्रण दें—इनके साथ मैं भी आ जाऊंगा—परन्तु भोजन करके हम वहा रुकेंगे नही तुरन्त वापिस आ जावेंगे—पिता ने भोजन का निमन्त्रण दे दिया—साधुओं की मण्डली ने भोजन किया और बिना रुके तुरन्त वापिस आ गए—स्वामी जी की यह अपने पिता जी से अन्तिम भेंट थी।

16. स्वामी जी प्रति वर्ष रामामण्डी एवं निकट के गांवों (खतरावां-देसु-बाघा-कालावाली-तनवन्डी साबो) में भी आया करते थे। जिस से सबको एक प्रकार का नया धार्मिक जीवन मिलता था—बातों द्वारा उनके चरणों में बड़ी रात्रि तक नगर निवासी शंका समाधान द्वारा भी धर्म लाभ उठाते थे।

17. खतरावां गांव जिला सिरसा (हरियाणा) का सारा गांव आर्य समाजी था—वहा कोई सिग्रेट तक न पीता था अनपढ़ होते हुए भी स्वामी के प्रभाव से स्वामी जी के आदेशों का पालन करते थे—स्वामी जी इस गांव में जरूर आया करते। अब वहां वह बात नही—शराब-मांस आदि का सेवन भी शुरु हो गया। क्योंकि स्वामी जी के पश्चात् उनको किसी ने सम्भाला नही। बहुत घर अब भी अपने आप को आर्य समाजी नहीं बल्कि आर्य समाज बताते हैं। मैं वहां कई बार गया भी—एक बार पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को भी ले गया था—

मानव मात्र को ऋषि उपदेश

ले.—श्री स्व: स्वामी अमृतानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

धार्मिक बनो—

जब मनुष्य धार्मिक होता है तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है तब उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते।

गोरक्षा—

गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है।

मांसाहारियों से—

हे मांसाहारियो! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं?

प्रश्न—आर्य समाज किस को कहते हैं?

उत्तर—जो आर्य लोगो का समाज हो उसको आर्य समाज या सभा कहते हैं।

प्रश्न—आर्य किसको कहते हैं?

उत्तर—जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी सत्यविद्यादि गुण युक्त और आर्यावर्त मे सब दिन से रहने वाले हैं, उनको आर्य कहते हैं।

दोहा—श्रेष्ठ स्वभाव धर्मात्मा,
परोपकारी मीत।
सत्यवादी सत्य कर्म में, रहे जो मन
को जीत॥
वासी आर्यवर्त के, सब दिन से
आबाद।
करना ऐसे पुरुषों को, आर्य नाम से
याद॥

प्रश्न—दस्यु किसको कहते हैं?

उत्तर—दस्यु, अनार्य, अनाड़ी अर्थात् जो आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक डाकू, चोर, हिंसक जो कि दुष्ट मनुष्य हैं वह दस्यु कहाते हैं।

दोहा—जो अनाड़ी दुष्ट हैं, डाकू
हिंसक चोर।
दस्यु इन का नाम है, बुरे कुकर्मी
घोर॥

क्या आर्य समाज भी एक नवीन मत है?

प्रश्न—जिस प्रकार हजरत मूसा, हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद, गुरु नानक कबीर आदि जब तक संसार में नहीं आए थे तब तक इनके मजहबों का नाम भी संसार में नहीं था। इसी प्रकार जब तक स्वामी दयानन्द जी नहीं आए थे। तब तक आर्य समाज का मत या मजहब भी संसार में नहीं था। इस प्रकार आर्य समाज भी क्या एक नवीन मत नहीं?

उत्तर—मित्र वर! यदि आप स्वामी जी के रचे ग्रन्थों को ध्यान से पढ़ें और ऋषि उपदेश को ही जो थोड़ा सा इससे पहले दिया गया है। देखें तो आप स्पष्ट जान जाएंगे कि महर्षि दयानन्द तो सभी मनुष्यकृत नवीन पंथों की जड़ों को उखेड़ने वाले और संसार के लोगों को सावधान करके इनके चंगुल से बचाने वाले थे। वह तो सत्य सनातन वेद के धर्म को जो सच्चे प्रभु का सत्यपथ है का प्रदर्शन कराने वाले थे। यदि ऋषि ने आर्य समाज को एक नया मजहब बनाया होता तो इसके साथ भी अपने नाम का लेबल लगाया होता और आर्यों से अपने नाम का जाप कराया होता। उन्होंने तो आर्य समाज के नियमों में वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म और संसार का उपकार मुख्य उद्देश्य बतलाया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में साफ लिखा कि—मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन मत चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं।

यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यवर्त में प्रचलित मतों मेंसे किसी एक मत का आग्रही होता, किन्तु मैं तो उसी धर्म को मानता हूं जिसको सदा से सब मानते चले आए, मानते हैं और मानेंगे भी। और वही सत्य सनातन वेद के सिद्धान्त जिन को "ब्रह्मा" से 'जैमिनी' तक जितने भी ऋषि हो चुके हैं वह जिस प्रकार ईश्वर आदि पदार्थों को मानते आए हैं उसी प्रकार मैं भी मानता हूं और उसी सत्य सनातन वैदिक धर्म को ही सब के सम्मुख रखता हूं।

मित्र वर—महर्षि ने वेद की इस आज्ञा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को पूरा करने के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा का अधिवेशन 20 दिसम्बर 1987 को आर्य समाज दीवान हाल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के सानिध्य में, उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान श्री राम चन्द्रराव वन्देमातरम् की अध्यक्षता में सम्पन्न निर्वाचन में डा. धर्मपाल आर्य को तुमुल करतल ध्वनि के बीच निर्वाचित घोषित किया गया। डा. धर्मपाल को 287 और श्री सरदारी लाल वर्मा को 62 मत प्राप्त हुए। डा. धर्मपाल का नाम पूर्व प्रधान श्री सूर्यदेव ने प्रस्तावित किया।

साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार के अनुसार सभा प्रधान डा. धर्मपाल ने अन्तरंग सभा का गठन निम्न प्रकार किया।

प्रधान—डा. धर्मपाल आर्य।

उप-प्रधान—श्री महाशय धर्मपाल, श्री रतनचन्द सूद, प्रो.भारत मित्र शास्त्री श्रीमती ईश्वर देवी अवल।

महामन्त्री—श्री सूर्य देव।

मन्त्री—श्री मूलचन्द गुप्ता, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री रामशरण दास आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री मांगे राम आर्य, श्री श्याम सुन्दर विरमानी।

कोषाध्यक्ष-श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्ता,

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री तीर्थ राम आहूजा, श्री श्याम सुन्दर आर्य, श्री डा. महेश विद्यालंकार, श्री हरवंससिंह जी, श्री डा. शिव कुमार शास्त्री, श्री नेतराम शर्मा, श्री इन्द्रदेव।

प्रधान जी द्वारा मनोनीत :

डा. श्री जगन्नाथ, श्री रोशन लाल गुप्ता, श्री गोपाल दास लगरा, श्री रुचीराम आर्य, श्री राजेन्द्र दुर्गा।

समूह प्रतिनिधि :—श्री राजसिंह भल्ला, श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री विमल कान्त शर्मा, श्री लाजपतराय निझावन, श्री वैद्य कर्मवीर, श्री शिव भगवान लाहोटी, श्री विजय गुप्ता, श्री रामकृष्ण सतीजा, श्री रामसिंह शर्मा, श्री लखीराम कटारिया, श्री आर्य मित्र बजाज, श्री पुरुषोत्तम शर्मा, श्री आर. सी.कपूरिया।

श्री यशपाल जी आर्य बन्धु द्वारा लिखि साहित्य

श्री यशपाल जी आर्य बन्धु (आर्य निवास चन्द्र नगर, मुरादाबाद) एक सुयोग्य वक्ता तथा लेखक हैं। आर्य मर्यादा में अक्सर उनके लेख छपते रहते हैं। वह 27 दिसम्बर को लुधियाना में पधारे थे, वहां उन्होंने 6 पुस्तकें मुझे दी, जो उनके द्वारा लिखी गई हैं उनका विवरण निम्न प्रकार है।

1. धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रवाद। इस पुस्तक के पृष्ठ 16 हैं और उन्होंने इसमें धर्म निरपेक्षता का स्वरूप बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है।

2. हवन यज्ञ आधुनिक संदर्भ में—इस पुस्तक में उन्होंने सिद्ध किया है कि आज के युग में यज्ञ की कितनी आवश्यकता है? यह चालीस पृष्ठों की पुस्तक है।

3. प्रणव उपासना—इस पुस्तक में भी उन्होंने प्रभु भक्ति के तीनों अंगों अर्थात् स्तुति, प्रार्थना और उपासना का वर्णन करते हुए जप का वैदिक स्वरूप प्रस्तुत किया है। यह भी चालीस पृष्ठों की पुस्तक बड़ी उपयोगी है।

4. प्रभु दर्शन-इस पुस्तक में यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के 8 वें मन्त्र—स पर्यगा...समाभ्य, की बड़ी हृदयग्राही व्याख्या की गई है। 32 पृष्ठ की यह पुस्तक भी बड़ी उपयोगी है।

5. सुख-दुःख मीमांसा तथा 6 पाप-पुण्य—इन दोनों पुस्तकों में जहां दुःखों से छूट कर सुख प्राप्ति का विवेचन किया गया है। वहां सुख और दु.ख दोनों शब्दों की व्याख्या भी की गई है।

इसी प्रकार पाप-पुण्य मीमांसा, में उन्होने पाप और पुण्य के स्वरूप का विवेचन करते हुए सिद्ध किया है कि पुण्य क्या है और पाप क्या है। यह बहुत उपयोगी पुस्तकें हैं। यह दोनों पुस्तकें भी 32 पृष्ठों की है।

इस प्रकार श्री यशपाल जी आर्य बन्धु आर्योपदेशक ने जो यह छः पुस्तकें लिखी हैं, मैंने इन्हे पढा है यह पुस्तकें बहुत उपयोगी हैं। जो भी आर्य बन्धु इन्हें मंगवाना चाहें श्री यशपाल जी आर्य बन्धु आर्योपदेशक आर्य निवास चन्द्र नगर मुरादाबाद-पिन 244032 से पत्र व्यवहार करके इन्हें मंगवा सकते हैं। इन पुस्तकों का कोई मूल्य नही रखा गया है यह उन्होने प्रचारार्थ ही छपवाई हैं।

कमला आर्या
सभा महामन्त्री

श्री पं. वीरसेन जी वेदश्रमी का देहावसान

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् वेद मूर्ति श्री पं. वीरसेन जी वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य का देहावसान मंगलवार 22 दिसम्बर 1987 को उनके गृह नगर इन्दौर में हो गया।

उन्होने वेदों पर अनुसंधान कर 30 से भी अधिक पुस्तकें लिखी, जिनमें प्रमुख हैं, "वैदिक सम्पदा" यज्ञ महाविज्ञान, संध्या योग रहस्य, याज्ञिक आचार संहिता, वेद कथा आदि। उन्हें अपनी पुस्तकों पर अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए।

आपने याज्ञिक वृष्टि विज्ञान एवं याज्ञिक चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में अन्तराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की, उन्होंने दिल्ली, अजमेर, जयपुर, पानीपत, खंडवा, बिलासपुर, रायपुर आदि अनेक स्थानों पर सफल प्रयोग किए। पं. वीरसेन वेदश्रमी जी का जन्म 5 दिसम्बर 1908 को देवास में हुआ था। उन्होंने 1930 में गुरुकुल,वृन्दावन, मथुरा से आयुर्वेद शिरोमणि की उपाधि प्रतिष्ठित स्नातक के रूप में प्राप्त की। वे म.प्र. केमिस्ट एसो. के संस्थापक,सचिव के पद पर लगातार दस वर्ष तक इस पद पर रहे, वे वेद विश्व परिषद् के भी अध्यक्ष रहे।

23 दिसम्बर 1987 को उनकी अन्त्येष्टि संस्कार मे भारी संख्या में नागरिको ने हिस्सा लिया जिसमे नगर के प्रतिष्ठित नागरिक एवं विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी शामिल थे।

25 दिसम्बर को 4 बजे उनके सम्मान में श्रद्धानन्द भवन,कोठारी मार्कीट में श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमे नगर के गणमान्य नागरिक एवं आर्य प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया तथा वेद मूर्ति जी के क्रांतिकारी एवं समाज सेवा सम्बन्धी कार्य तथा वेद सम्बन्धी उनकी अमूल्य साहित्य सेवा का स्मरण एवं उल्लेख करते हुए विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और डा. मधुकर घोलप का यह प्रस्ताव सभी ने स्वीकार किया कि उनकी स्मृति में एक ट्रस्ट बनाया जावे। जो उनके द्वारा रचित प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थों के प्रकाशन की व्यवस्था करें। तथा उनके विचारों के आधार पर वेद एवं यज्ञ सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य करेगा।

इस श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम में सर्वश्री स्वामी कर्तव्यानन्द जी महाराज, श्री मेघामुनिजी (जोधपुर) डा. मधुकर घोलप किशोरीलाल जी गोयल, जगदीशचन्द्र जी वैदिक, गणपतिलाल जी वर्मा, नाथूलाल जी, प्रो. भट्ट, प्रो. वाजपेयी, ठाकुरदास जी, सुभाष कर्णिक, (सभी इन्दौर) एवं श्री द्विवेन्द्रप्रताप जी (बरेली) आदि गणमान्य नागरिकों एवं वक्ताओं ने हिस्सा लिया।

सुन्दरगढ़ में विशाल शुद्धि समारोह

29 दिसम्बर 1987 को राउरकेला से 6 कि. मी. दूर ग्रामीण वनाञ्चल में लगा लता मे पंचायत के पचु पडा ग्राम में 175 परिवारो के 700 से अधिक ईसाई मत स्वीकार किये मुण्डा उराव खड़ियां जाति के वनवासी बन्धुओं ने पुन: वैदिक धर्म को स्वीकार किया। इस समारोह को देखने दो हजार से अधिक ग्रामीण जनता उपस्थित थी। समारोह अतीव उत्साहमय वातावरण में सम्पन्न हुआ, यज्ञ का सचालन तथा दीक्षा कार्य श्री पं. अखिलेश जी आचार्य आमसेना एव श्री योगेन्द्रकुमार शास्त्री आर्य समाज भुवनेश्वर ने सम्पन्न कराया। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने दीक्षित बन्धुओ को नवीन वस्त्र देकर उनका स्वागत किया। तथा अपने मार्मिक उद्बोधन में उनके पूर्वजो के अपने सनातन धर्म के लिए त्याग तप तथा बलिदान का उल्लेख किया। जिससे सभी मे उत्साह भर गया।

इसका आयोजन श्री मन्नकुमार शास्त्री एवं पाण्डव कुमार शास्त्री के प्रयत्न से हुआ था। जब 20 दिसम्बर को स्वामी धर्मानन्द जी पहुंचे तो वनवासी बन्धुओ ने अपनी पारम्परिक स्वागत पद्धति नृत्य आदि से भव्य स्वागत किया। —बिकिकेसन शास्त्री
संयुक्त मन्त्री

आर्य समाज गौशाला रोड़ फगवाड़ा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गौशालारोड़ फगवाड़ा का वार्षिकोत्सव 25 से 27 दिसम्बर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर27-12-87 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस भी मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्रीआई. के. सरदाना मैनेजिंग डायरैक्टर स्टार्च मिल फगवाड़ा ने की। उत्सव में प्रसिद्ध विद्वान् श्री प. जैमिनी जी शास्त्री और श्री योगेन्द्रपाल जी शर्मा के प्रवचन हुए। श्री बीरेन्द्र शर्मा तथा कुलदीप साथी के प्रभावशाली भजन हुए। इसके साथ ही स्टार्च मिल के स्कूल के बच्चों के भी भजन हुए। —अमृतलाल गुलाटी
प्रधान

सत्यार्थ प्रकाश का महत्व

संसार में जितने धर्म ग्रन्थ हैं, उनमें से केवल सत्यार्थ प्रकाश ही ऐसी पुस्तक है, जिसमे सभी धर्म-मतों की निष्पक्ष आलोचना और सच्चे धर्म की मीमांसा है। जो धार्मिक सुधारक सत्य के सच्चे प्रेमी है, जिनमें पक्षपात का लेश भी नहीं है, वे खुले तौर से तुलनात्मक धर्म विचार करने और सब मतमतान्तरों से सत्य का ही ग्रहण करते हैं। जो अपने मत की ही घोषणा करता, और दूसरो की समीक्षा के बदले में निन्दा करता है वह निश्चित ही दूरदर्शी नही कहा जा सकता। लोभी दुकानदार, पक्षपात के कारण सामान को ही ग्राहकों को दिखलाता, और बाजार में जो उससे भी अच्छी चीजे मिलती हैं, उनका नाम भी नही लेता। दुनिया की सब मजहबी किताबो के सम्बन्ध में भी यही बात है। परन्तु सत्यार्थ प्रकाश ही केवल सत्य और निष्पक्ष पुस्तक है, क्योंकि उसमें सच्च तुलनात्मक धर्म विचार किया गया है।

ईसाई लोगों की धर्म पुस्तक, बाइबल को देखिये इसमें यहूदी लोगो के पुरोहित पारसियों को खूब गन्दी गालिया दी गई हैं। परन्तु पारसी के धर्म और व्यवहार का कुछ प्रमाण नही दिया गया, जिससे पाठकों को पता लग जाए कि पारसी लोगो का धर्म पुस्तक अमुक प्रकार का है और उनमे त्रुटि क्या है।

मुसलमानों की मानवीय किताब कुरान को देखिए। काफिरों को कितनी गन्दी से गन्दी गालियां दी गई हैं। काफिरो को कत्ल तक कर देने की आज्ञा दी है, परन्तु यह नही बतलाया गया कि काफिर बेचारे का कसूर क्या है। उनके धर्म मे त्रुटियां कौन सी है। अथवा उनके धार्मिक सिद्धान्तों की तुलना में इस्लाम की कितनी श्रेष्ठता है,

भारत के पुराणों में भी ऐसी ही युक्तिहीन बातें भरी पड़ी हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में क्या किया है। उन्होंने एक ओर तो युक्ति-प्रमाणों से वैदिक सिद्धान्त की स्थापना की, दूसरी ओर विविध मत-मतान्तरों की न्यायपूर्ण और युक्तियुक्त समीक्षा भी की। तुलनात्मक और निष्पक्ष धार्मिक विचार का आदर्श ही स्वामी दयानन्द थे। सत्यार्थ प्रकाश से जो लोग चिढ़ते है और इसके लिए आर्य समाज को कोसते हैं, वे लोग भूल जाते हैं कि यह युग तुलनात्मक विचार का ही है। जो किसी देश का इतिहास लिखते या साहित्य अथवा किसी महापुरुष के जीवन की आलोचना करते हैं, उनको तो तुलनात्मक विचार करना ही पड़ेगा। वर्तमान युग तुलनात्मक भाषा व्याकरण और विचार का युग है। ऐसी दशा में स्वामी जी ने धार्मिक विषय में तुलनात्मक विचार किया तो क्या अपराध किया। जो मनुष्य सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध मे विचारक (जज) बनकर अपनी व्यवस्था देते हैं, उन्हें इस बात का स्मरण रखना चाहिये। चाहे वह महात्मा हो अथवा कोई और। सत्यार्थ प्रकाश ने धार्मिक संसार में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इस तुलनात्मक युग में, जब साहित्य इतिहास, गणित, विज्ञान इत्यादि सभी विषयों मे तुलनात्मक विचार होता रहता है, सत्यार्थ प्रकाश धार्मिक विषय में तुलनात्मक विचार का प्रथम मार्ग-प्रदर्शक है। एक दिन सारे संसार को इस मार्ग पर आना पड़ेगा। ज्ञान और युक्ति से काम लेना होगा। अनजान मनुष्य सत्यार्थ प्रकाश की निन्दा किस बुरी तरह से करता है। एक सज्जन ने तो इसको निराशाजनक पुस्तक बतला दिया। कारण, इसमें खण्डन मण्डन दिखाई देता है। परन्तु वह महाशय भूल जाते हैं कि यदि इस दृष्टि से स्वामी शंकराचार्य जी का विचार किया जाये तो वह भी निराशाजनक सिद्ध हो जावेंगे। क्या शंकराचार्य जी ने शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर, कापालिक इत्यादि सभी अवैदिक सम्प्रदायों का खण्डन नही किया था।

वस्तुत: बात यह है कि जो तुलनात्मक विचार का साहस करेगा उसे खण्डन-मण्डन करना ही पड़ेगा। जिन महापुरुषों ने सत्य की घोषणा के लिए जन्म धारण किये उन्हे मिथ्यावाद की समीक्षा करनी ही पड़ी। जो महापुरुष लोगो को ज्ञान का भंडार दिग्दर्शन करावेगा उसे मिथ्या का खण्डन और सत्य का मण्डन करना ही पड़ेगा। सत्यार्थ प्रकाश संसार का दिग्दर्शन यन्त्र है। जो सुधारक दूसरे मतों की तुलना में अपना मत रखने से हिचकते हैं, उन्हे केवल स्वमत प्रकाश रूप एक देशदर्शिता दीख पड़ती है—मुकाबिले से वह डरते है। परन्तु जिस महापुरुष ने साहस और शक्ति से काम लिया, जो सत्य की मूर्ति है और अप्रिय सत्य से भी नही डरते उसका वाक्य संसार को हिला देता और जगत् को वश में कर लेता है। सत्यार्थ ऐसी ही पुस्तक है, भीरू इससे डरते हैं, परन्तु संसार धीरे-धीरे इसकी ओर आता जाता है।

—स्व.श्री प्रोफैसर रमेशचन्द्र बनर्जी एम. ए. संदर्भ-ग्रन्थ—दिव्यदयानन्द पृ. 162-64 सम्पादक-पूर्णचन्द एडवोकेट नारायण गोस्वामी वैद्य

—

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९८८

संचड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित 1200 रु. का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। गत सात वर्षों में यह पुरस्कार क्रमश: प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार, डा. भवानी लाल भारतीय, पं. विश्वनाथ विद्यालंकार, आचार्य सत्यकाम विद्यालंकार, पं. जगत्कुमार वेदालंकार, डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, प्रो. [illegible] आर्य तथा चेतनदास (मरणोपरान्त) को वेद प्रचार तथा सामाजिक सेवाओं के लिये प्रदान किया गया।

चयन सम्बन्धी नियम

1—आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनों एवं सभाओं को दिया जा सकेगा जो वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एवं प्रसार जनसामान्य तक करें।

2—उक्त विषय पर शोध करने वाले व्यक्ति-संस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं।

3. उक्त विषयों पर संगीत काव्य तथा नाटक रचकर अथवा नाटक को रंगमंच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किये जा सकते हैं।

4—उक्त विषयों पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एवं नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या संस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलित किया जा सकेगा।

5—उक्त विषयों का ग्राम-ग्राम में जाकर मैजिक लालटेन, पुतली प्रदर्शन अथवा भजनों द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली-सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं। सकती है।

6—आधुनिक युग में विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा संतुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को प्रभावित कर सके, लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति, सभा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पाने वालों में सम्मिलित किया जा सकता है।

7—उक्त पुरस्कार चयन नियमों को परिवर्तित एवं परिवर्धित करने का अधिकार संचड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर को होगा।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि में कोई महानुभाव अथवा आगामी वर्ष के लिये पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण-पत्र संलग्न-पत्र में निम्न पतो पर 15-1-1988 तक भेजने की कृपा करें।

1—श्रीमती सावित्री कपूरिया, उप-सचिव, संचड़ विद्या सभा ट्रस्ट, सी-211ए, ज्ञानमार्ग तिलक नगर, जयपुर।

2—श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुल सचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

—वीरेन्द्र अरोड़ा, कुल सचिव

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूरबस्ती दिल्ली का वार्षिक चुनाव श्री प. वेदव्रत जी त्यागी प्रिंसीपल की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से सर्व सम्मत चुनाव सम्पन्न हुआ :—

प्रधान—श्री पं. वेदव्रत त्यागी,

संरक्षक तथा उप-प्रधान—श्री नेकी राम गुप्त, पूर्व उपशिक्षा निर्देशक दिल्ली राज्य, उप-प्रधान—श्रीमती राजकुमारी खोसला, मन्त्री—डा. भारत भूषण, उप-मन्त्री—श्री सुशील कुमार एडवोकेट, उप-मन्त्री—(निर्माण) श्री प. सन्तराम शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री विनय कुमार आर्य पुस्तकाध्यक्ष—श्री बनारसी दास, आन्तरिक—आय-व्यय निरीक्षक, श्री पण्डित राजकुमार शर्मा।

अन्तरंग सदस्य—

श्री इन्द्र स्वरूप, श्री नानक चन्द, श्री रमेश लाल, श्री हंसराज, श्री डा. आर्य भूषण, श्री श्रीचन्द, श्री भगवानदास श्रीमती इन्द्रा देवी, श्रीमती निर्मला देवी शर्मा, संयोजिका आर्य महिला सत्संग।

—भारत भूषण-मन्त्री

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का उत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का 108 वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर शनिवार 13 फरवरी से मङ्गलवार, 16 फरवरी 1988 तदनुसार फाल्गुण कृष्ण 10से त्रयोदशी2044 तक श्रद्धानन्द पार्क व आर्य समाज भवन में समारोह पूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है। उत्सव में संन्यासी, महोपदेशक एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक आदि पधारेंगे। शोभा यात्रा (नगर कीर्तन) शनिवार 16 फरवरी को सायं 3 बजे से होगा।

—विजयपाल शास्त्री

दिवराला पद यात्रियों पर लाठी प्रहार से आर्य जगत् में भारी रोष

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य द्वारा विरोध व्यक्त

आर्य समाज के वरिष्ठ नेता तथा हरियाणा के भू. पू. शिक्षा मन्त्री स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे सती प्रथा तथा नारी उत्पीडन के विरोध मे आयोजित पद यात्रा को अचानक दिवराला से 25 मील दूरी पर ही रोक दिये जाने तथा महिलाओ और बच्चो सहित पद यात्रियो पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज के समाचार से समस्त आर्य जगत् मे रोष की लहर सी फैल गई है। स्वामी अग्निवेश द्वारा 144 धारा का उल्लघन कर दिवराला की सीमा में प्रवेश न करने तथा लगभग 100 आर्य सन्यासियो के नेतृत्व में आयोजित इस अभियान मे सम्मिलित लोगो द्वारा पूर्ण शान्ति बनाये रखने के आश्वासन के बावजूद सरकार द्वारा उठाया गया यह कदम उसकी निर्बलता और असमता का ज्वलन्त उदाहरण है। एक ओर सरकार सती जैसी अमानवीय कार्य के विरुद्ध कानून बनाती है और दूसरी ओर इस प्रकार के धार्मिक अन्ध-विश्वासों के विरुद्ध जनमत जागृत करने के प्रयत्न को बलपूर्वक रोकती है यह दोनो परस्पर विरोधी नीतिया इस बात का सबूत है कि वास्तव में अपने राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए सत्ताधारी दल केवल दिखाने के लिये ही सती आदि कुरीतियो का निराकरण करने का दिखावा मात्र करती है।

कानून और व्यवस्था बनाये रखने का दायित्व सरकार पर है इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि जो लोग इस प्रकार की पद यात्रा जैसे अपने कानूनी अधिकार का उपयोग करते हैं उसमें बाधा पहुचाने वाले तत्वो को रोका जाए और यदि वे हिंसा और तनाव उत्पन्न करते हैं तो उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही की जाए किन्तु आर्य समाज जैसे धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन द्वारा स्वय सरकार के तथा कथित सती विरोधी नीति के समर्थन मे आयोजित जन जागरण के इस अभियान का कुछ मुट्ठीभर सती समर्थक लोगो द्वारा विरोध किये जाने के कारण शान्ति और व्यवस्था के नाम पर इस प्रकार का प्रतिबन्ध स्पष्ट रूप से सती प्रथा के समर्थकों के लिये खुला प्रोत्साहन है। इसका परिणाम यह होगा कि कुछ असामाजिक तथा विरोधी तत्व हिंसा और अशान्ति का सहारा लेकर किसी भी समाज सुधार के कार्य को रोकने मे समर्थ होगी। इस पद यात्रा मे आर्य समाज अजमेर की ओर से भी 51 व्यक्तियो का एक जत्था सम्मिलित है। पुलिस द्वारा पद यात्रियो पर किये गए लाठियो के प्रहार से अजमेर मे इन यात्रियो के सम्बन्धी ही नही अन्य लोगो मे भी चिन्ता और रोष व्याप्त है। आर्य समाज अजमेर के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य आचार्य दत्तात्रय जी आर्य ने पद यात्रियो को इस प्रकार रोके जाने और उन पर लाठीचार्ज किये जाने के विरुद्ध एक वक्तव्य जारी किया है और राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार को तार द्वारा आग्रह किया है कि वे फौरन इन पद यात्रियो पर से प्रतिबन्ध हटाकर उन्हे अपने अधिकार का शान्तिपूर्ण उपयोग करने दे और कडी सर्दी के इस मौसम मे खुले मैदान मे डेरा डाले महिलाओ और छोटे बच्चो तथा सन्यासियो के समूह की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिये कदम उठाये।

मन्त्री—आर्य समाज अजमेर

जन्म दिवस मनाया गया

कर्मठ समाज सेवी, स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम प्रभाकर का 78 वा जन्म दिवस दिनाक 1८, 19, 21 को आर्य समाज मन्दिर पचपुरी गढवाल में श्री वन्शीराम जी आर्य की अध्यक्षता में वैदिक विधि के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर स्थानीय विशिष्ट व्यक्ति भी उपस्थित थे। श्री जयानन्द भारतीय कन्या विद्यालय पचपुरी गढवाल की छात्र-छात्राओ ने अपना सास्कृतिक कार्यक्रम प्रदर्शित किया। श्री 'प्रेम' जी अस्वस्थ हैं स्वास्थ्य लाभ हेतु दिल्ली गए हुए हैं। उपस्थित सभी सज्जनो ने श्री प्रेम जी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना की है।

—वासुदेव विमल मन्त्री

टंकारा में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज टकारा द्वारा सचालित आर्य वीर दल टकारा ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस निमित्त चेस टूर्नामेंट का आयोजन किया। जिसमे विजेताओ को स्वातन्त्र्य सेनानी श्र. प्रकाश स्वरूप भारद्वाज जी की अध्यक्षता मे श्रद्धाजलि समारोह के अवसर पर पुरस्कार दिये गये।

श्री दिवाकर विद्यार्थी, श्री जगदीश विद्यार्थी, श्री अरुण कुमार विद्यार्थी, श्री रघुनन्दन पडया आदि ने स्वामी को प्रवचन व गीतों से श्रद्धाजलि अर्पित की।

—मन्त्री

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

लुधियाना मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान मे 27-1 -87 रविवार प्रात 9 बजे से बाद दोपहर 2 बजे तक आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के हाल मे श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा की प्रधानता मे बडे समारोह से मनाया गया। इस समारोह मे यहा लुधियाना की आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ ने भाग लिया यहा आर्य समाज रायकोट के अधिकारी विशेष रूप से पधारे हुए थे—यज्ञ के पश्चात आर्य गर्ल्ज स्कूल, आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल—दयानन्द माडल स्कूल एम जी स्कूल, कुमारी रश्मा, कुमारी दीप नारग, श्री श्रवणकुमार आर्य, के पश्चात्, दीवान राजेन्द्र कुमार कमला जी आर्या, श्री ज्ञान प्रकाश, मनोज कुमार रायकोट ने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाञ्जलि भेंट की उसके पश्चात् आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् प. यशपाल जी आर्य बन्धु मुरादाबाद वाले ने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को अपने ओजस्वी भाषण द्वारा स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि भेट की। समारोह के अध्यक्ष श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा ने सबका धन्यवाद किया। जलपान के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई। इस समारोह को सफल बनाने मे श्री खुन्बक्तराय सूद प्रि ओ पी टण्डन, वीरेन्द्र कुमार, डा मूलचन्द भारद्वाज, ओमप्रकाश पासी अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा, महेन्द्रपाल ल, हरीश कमार सूद, रविन्द्र विनोद य स्कू के स्टाफ ने पूरा सहयोग किया। —श्रद्धानन्द आर्य

मह मन्त्री

आर्य समाज दीनानगर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

22-12 87 से 23-12 87 तक आर्य समाज दीनानगर मे पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस बडी धूम धाम से मनाया गया जिस मे भिन्न-भिन्न वक्ताओ ने अपने अपने विचार स्वामी जी के जीवन पर प्रकट किये।

साय 7 30 से 8 बजे तक भजन प्रतिदिन होत रहे। इसके पश्चात् ही पृथ्वीराज जिज्ञासु, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज तथा पण्डित निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी के प्रवचन हुए।

—मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

1 क्षेत्रीय सगठन समिति भठिण्डा द्वारा स्वामी जी के बलिदान दिवस पर आर्य समाज मन्दिर मे एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता श्री अशोक कुमार अग्रवाल ने की। उन्होने क्षेत्रीय समिति के कार्यक्रम को बढाने के लिए 251 रुपए दान दिए। इस अवसर पर प्रात 9 बजे हवन यज्ञ किया गया। इसके बाद प्रो ओ पी ममता प्रधान आर्य समाज भठिण्डा, श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी तथा पुरोहित अजीत कुमार जी ने स्वामी जी के जीवन चरित्र पर रोशनी डाली। श्रीमती कमला भाटिया प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भठिण्डा ने स्थानीय तथा बाहर से आए लोगो का धन्यवाद किया।

2—आर्य समाज भठिण्डा मे 20-12-87 को प रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस मनाया गया। पुरोहित जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। —ओमप्रकाश ममता

राम प्रसाद बिस्मिल का बलिदान

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे गत 19 दिसम्बर को साय 3 बजे से पाच बजे तक अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी सुमनायति जी महाराज ने की। उसमे प श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि देश की स्वतन्त्रता के लिए सबसे अधिक बलिदान आर्य समाजियो ने दिये, उनमे से एक प रामप्रसाद बिस्मिल भी था, जिसने देश की आजादी के लिये महत्वपूर्ण कार्य किया और अन्त मे अपनी आहुति देकर उस ज्योति को प्रज्वलित रखा।

—वेदरानी-मन्त्राणि

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियाँ

16-12 87 को आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाज र लुधियाना मे सक्रान्ति पर्व के उपलक्ष्य मे प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया। श्री ज्ञानचन्द जी, सरक्षक यजमान बने एव प्रभु भक्ति के भजन से सभी को आनन्दित किया। प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री का प्रवचन हुआ। आर्य भाइयो के साथ स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की बहनो ने भी बडी श्रद्धापूर्वक इस आयोजन मे भाग लिया।

पारिवारिक सत्सग—

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी के निवास स्थान 102,इन्डस्ट्रीयल एरिया जनकपुरी मे 3-1-1988 रविवार साय 2-30 बजे से 4 30 बजे तक पारिवारिक सत्सग किया गया यज्ञ के पश्चात् वेद प्रचार भजन मण्डली के भजन एव प. बालकृष्ण जी शास्त्रीएम ए पी एच डी का प्रवचन हुआ सत्सग बडा सफल रहा।

प रामप्रसाद बिस्मिल श्रद्धाजलि समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे प रामप्रसाद बिस्मिल दिवस 19-12-87 को मनाया गया। कार्यवाही यज्ञ से आरम्भ हुई। श्री ज्ञानचन्द जी आर्य यजमान बने। सबसे पहले श्रीमती शान्ता जी गुप्ता, श्री किरपाराम जी आर्य ने भजन रखा। माता सुमनावति जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो जाति बलिदानियो को भूल जाती है, उसका कभी उत्थान नही होता। श्री रोशनलाल शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा पजाब ने युवकों को आह्वान किया कि हमे प रामप्रसाद बिस्मिल जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए देश तथा समाज मे फैली कुरीतियो के विरुद्ध अभियान चलाना चाहिए। प. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा श्री ज्ञान प्रकाश जी वर्मा ने भी श्रद्धाजलि भेंट की। युवको ने विशेष रूप से भाग लिया। शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

● श्री हरकृष्णलाल जी सोनी एडवोकेट सदस्य आर्य समाज लुधियाना डिस्टिक बार कौंसल के प्रधान चुने गए।

—नरेन्द्रभल्ला
प्रधान

आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर पलवल का चुनाव

आर्य समाज श्रद्धानन्दनगर, पलवल की साधारण सभा ने सर्व सम्मति से श्री लालचन्द जी सचदेवा को आगामी वर्ष के लिए प्रधान पद पर आसीन किया। उन्हें पूर्ण अधिकार दिए गए कि वह अपनी कार्यकारिणी सभा के अधिकारियो को मनोनीत करें। माननीय प्रधान जी ने सभी के सहयोग से निम्नलिखित नियुक्तिया की :—

सरक्षक—श्री उत्तमचन्द जी दीवान 2. श्री धावीराम जी, 3 श्री लोकूराम जी, 4 श्री. हरदेव जी,

प्रधान—श्री लालचन्द सचदेवा, वरिष्ठ उप-प्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य, उप-प्रधान—श्री शान्ती स्वरूप मन्त्री—श्री अजीत कुमार आर्य, उप-मन्त्री—श्री हेमराज, श्री [illegible] कुमार आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री सेवकराम आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सत्यपाल जी, एम ए निरीक्षक—श्री धीरजान आर्य, भण्डारी—श्री विशनदास तनेजा, प्रबन्धक—श्री देवीदयाल मक्कड़।

—अजीत कुमार
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 41, 4 माघ सम्वत् 2044 तदानुसार 17 जनवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

स नो बन्धुः जनिता

लेखक—श्री डाक्टर विश्वबन्धु जी

संसार के दिग्दिगन्तराल में हुए ईश्वर भक्ति के प्रचार-प्रसार के बावजूद आज भी आधी जनसंख्या नास्तिक है। और बहुत बार तो आस्तिक मन में ईश्वर के प्रति यह जिज्ञासा जड़ पकड़ लेती है कि आखिर ईश्वर की हमारे भौतिक जीवन में क्या उपयोगिता है? हमारे दैनन्दिन जीवन में इस अलौकिक शक्ति का क्या दखल है? ईश्वर को हम चामत्कारिक सिद्धियों का दाता मान कर स्मरण करें अथवा जन्म का कारण होने से कृतज्ञता ज्ञापनार्थ मात्र?

अनेकानेक शास्त्रों में ईश्वर के गुणों का वर्णन अर्थवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने के कारण मन और भी अकाकुल हो उठता है। अनेक मत मतान्तर परस्पर विरोधी वक्तव्य देते हैं। कोई उस की सत्ता का पार्थक्य बताता है तो कोई ब्रह्म और जीव की एकता की घोषणा करने में सन्तुष्टि अनुभव करता है। किसी का कहना है कि गुरु के माध्यम से गोविन्द के दर्शन सुलभ होते हैं तो कुछ का विश्वास है कि ईश्वर अपने किसी विशेष पुत्र को धरती पर भेज कर उसके माध्यम से ही भक्तों की पुकार सुनता है। कुछ आचार्य कहते हैं कि वह अलौकिक और दिव्य शक्ति निराकार और सूक्ष्म एवं सर्वव्यापक सत्ता है। दूसरे उसे अवतार धारण कर के ही संसार के कष्टों का निवारण करने वाली ताकत मान कर उस के दर्जनों अवतारों की कथाओं की विस्तार से चर्चा करते हैं। और अब तो यह हालत है कि कुछ चेले चेलियों की भीड़ एकत्र कर के कोई भी चालाक धार्मिक या राजनैतिक व्यक्ति स्वयं को ही भगवान के रूप में प्रस्तुत करने में कोई झिझक महसूस नहीं करता।

ऐसी स्थिति में भगवान के स्वरूप की सरल पहचान और उस के सामान्य जीवन में दखल के सम्बन्ध में चिन्तन करना अब आवश्यक प्रतीत हो गया है। वेद में एक मन्त्र है—

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥

वैसे तो यह मन्त्र हमारे सभी उक्त प्रश्नों का समाधान करने में समर्थ है। लेकिन इस के प्रथमार्ध की व्याख्या ही मानव जीवन का मार्ग दर्शन करने हेतु पर्याप्त समर्थ है।

इस की प्रथम पंक्ति का सरलार्थ है कि वह परमपिता परमेश्वर हम सभी का निकट सम्बन्धी, जनक (माता-पिता) है। वही हमारा निर्माता और भाग्य विधाता है। वह सर्वज्ञ और सर्वव्यापक होने से चर अचर में व्याप्त रह सृष्टि के कण-कण के प्रत्येक क्रिया कलाप को पूरी तरह जानता और इन समस्त भुवनों का सम्यक् संचालन करता है।

अब आस्तिक जन के लिए तो इससे अधिक महत्वपूर्ण दिशा निर्देश और क्या हो सकता है कि जिस इष्ट की पूजा कर के जिस का सामीप्य-सान्निध्य पाने को हम उतावले हैं, वह एक ओर तो संसार में सर्वाधिक शक्तिमान, ज्ञानपूर्ण और सर्वत्र व्यापक होने से सदा हमारा सहायक है, और दूसरे हमारा उस से इतना गहरा भावात्मक सम्बन्ध है कि हमें उस से निकटता अनुभव करने के लिए किसी भी अन्य माध्यम की कतई आवश्यकता नहीं है। भला किसी भी व्यक्ति के लिए उस के माता पिता से अधिक और कौन सा सम्बन्ध अधिक समीपता का द्योतक हो सकता है। और फिर वह माता-पिता ही नहीं बन्धु अर्थात् साथी और सखा भी है। यह सिद्धान्त कितना प्रोत्साहनकारी है।

जीवन के लौकिक व्यवहार में भी तो हम अपना दुख बांटने के लिए माता पिता या भाई बन्धुओं का सहारा खोजते हैं, लेकिन प्राय लौकिक सम्बन्धों में हमें अनेक प्रकार की निराशा का मुख देखना पड़ता है। और कभी कभी हम अनुचित प्रयोजनों में भी ऐसे सहारे खोजते हैं। परमपिता परमेश्वर की आराधना करते हुए भी कुछ अज्ञानी लोग अपनी अनुचित प्रार्थनाएं दोहराते रहते हैं। और उन के पूर्ण न होने पर ईश्वर के दोष निकालते हैं। मन्त्र का द्वितीय पाद "धामानि वेद भुवनानि विश्वा" इस दोष का मार्जन करने में पूरी तरह सफल है। वह परमेश्वर सर्वव्यापक और सर्वज्ञ होने से किसी अनुचित प्रार्थना के भुलावे में नहीं आता। न्यायकारी और संरक्षक होने से वह हमारे पक्षपात पूर्ण कार्य व्यापार का सहायक भी नहीं हो सकता, यदि हमें उस प्रभु की सहायता प्राप्त करनी है तो हमें अपने कार्यों का स्वयं विश्लेषण करना होगा। पक्षपात और अन्याय से बचना होगा, तभी हम प्रभु की कृपा के पात्र बन सकेंगे। अत यह मार्ग सदाचार का प्रवर्तक भी है।

आस्तिक व्यक्ति तो निश्चित रूपेण इसी मार्ग से अपने कष्टों का निवारण करता है।

अतएव वैदिक पद्धति में इस मन्त्र का पाठ दैनिक प्रार्थना में करने का विधान किया गया है, ताकि आस्तिक चेतना सदैव जागृतभाव से परमेश्वर के उत्तम गुणों का स्मरण कर के उस से अनुकूल प्रेरणा और सम्बल की प्राप्ति करती रह सके।

अर्धनास्तिकों व नास्तिक जनों के लिए भी इस मन्त्र का सन्देश एक सुन्दर मनोवैज्ञानिक आश्वासन प्रदान करने में समर्थ है। इस विषय में मुझे एक घटना स्मरण होती है। सन् 1953 में मैं रिवाड़ी के निकट एक 'कारावरा मानिकपुर' ग्राम में अध्यापक के रूप में नियुक्त था। वहां एक सामान्य छात्र था जो कि 'अफीमची का बेटा' नाम से प्रसिद्ध था। मुझे विस्मय होता कि अफीमची की समृद्धि का क्या रहस्य है? एक दिन पूछने पर ज्ञात हुआ कि इन अफीमची साहेब को अंग्रेजों ने द्वितीय विश्व युद्ध में अनुपम साहस दिखाने के फलस्वरूप कई मुरब्बे जमीन दे कर पुरस्कृत किया था। अब तो उत्सुकता और बढ़ गई, अफीमची और अनुपम साहस? आखिर इस का क्या रहस्य है। विवरण इस प्रकार ज्ञात हुआ :—

जब यह अफीमची महोदय मोर्चे पर तैनात थे। शत्रु काफी आगे बढ़ आया तो सेना को पीछे लौटने का आदेश मिला, जिसे अफीम की पिनक में हमारे कथनायक न सुन सके और निरन्तर निर्द्वन्द्व भाव से रह रह कर गोली चलाते चले गए। उन्हें क्या पता कि सारी सेना पीछे हट चुकी है। वे तो यही समझते थे कि उन के पीछे सारा सैन्य बल तैनात खड़ा है, इसी झूठे दिलासे पर वे बिना किसी भय और झिझक के लगातार गोलीबारी करते रहे। उधर शत्रु सेना इस रहस्य को न समझ सकी। एक ओर तो सेना की वापिसी के संकेत थे, तो दूसरी ओर सामने से रुक रुक कर गोली चल रही थी। शत्रु सेना ने इस को एक विशेष व्यूह रचना मान कर पीछे हट कर मोर्चा लेने का निर्णय लिया। इस प्रकार अफीमची के झूठे दिलासे और अज्ञान पर आधारित साहस के कारण अंग्रेजों को विजय प्राप्त हुई।

हम सभी के जीवन के किसी मोड़ पर जब भी कभी ऐसी घटनाएं घटित होती हैं, तो एक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है कि मनुष्य की शक्ति और हिम्मत में किसी बलवान सहायक की उपस्थिति आश्चर्यजनक वृद्धि करती है। वे सहारा यदि वास्तविक न हो कर काल्पनिक भी हो तो भी सामान्य व्यक्ति की क्षमता और हिम्मत में उससे असाधारण वृद्धि होती है। और केवल मिथ्या आश्वासन के सहारे भी लोग प्राय: आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाते हैं। राजनीति के मैदान में तो इस सिद्धान्त के असंख्य उदाहरण खोजे जा सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

व्याख्यान माला—११

नारी और उसका धर्म

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गतांक से आगे)

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ।10।

गृह कार्यों मे दक्ष गृहिणी सदैव प्रसन्नचित रहे, घर के सामानादि की सजावट रखे तथा खर्च करने म बहुत ज्यादा खुला खर्च करने वाली न होवे ।

नातन्त्री विद्यते वीणा नाचक्रो विद्यते रथः ।
नापतिः सुखमेधते या स्यादपि शतात्मजा ।11।

जैसे बिना तार के वीणा-वीणा नही होती, बिना चक्र के रथ रथ नहीं होता । उसी प्रकार नारी बिना पति के सौ पुत्रो से पुत्रवती होकर भी सुख पूर्वक वृद्धि को प्राप्त नही होती ।

नास्ति यज्ञ स्त्रिय किञ्चिन्न व्रतं नोपवासकम् ।
या हि भर्तुश्च शुश्रुषा तया स्वर्गं जयत्यसौ ।12।

स्त्री के लिये न तो कोई यज्ञ होता है और न व्रत न उपवास । वह तो स्वामी (पति) की सेवा से ही स्वर्ग को जीत लेती है । अर्थात् स्त्री के लिये पति सुश्रूषा ही यज्ञ यागादि से अधिक महत्वपूर्ण एव स्वर्ग प्रद होती है ।

मण्डनं वर्जयेन्नित्यं तथा प्रोषितभर्तृका ।
धारयेन्मङ्गलार्थानि किञ्चिदाभरणानि च ।
देवताराधनपरा तिष्ठेद्भर्तृ हिते रता ।13।

जिसका पति परदेश गया हुआ हो उसके लिये नित्य प्रति के शृंगार विशेष करना उचित नही (सामान्य शृंगार तो करने ही चाहिये । अत्यधिक नही। मङ्गल अर्थात् सौभाग्य के कुछ चिन्ह मङ्गल सूत्र, सिन्दूर भरना, चूड़िया पहनना, बिन्दी लगाना तथा कर्णभूषण आदि को अवश्य धारण करना चाहिये तथा पति के हित का चिन्तन करती हुई देव पूजा मे लीन रहे ।

कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा ।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री षाड्गुण्यमेतद्धि पतिव्रतानाम् 14

सेवा मे दासी के तुल्य, भोजन के समय माता के तुल्य, शयन के समय रम्भा नामक अपसरा साक्षात् कामपूर्ति के तुल्य, धार्मिक कृत्यो मे अनुकूल रहना, पृथ्वी के तुल्य सहन शक्ति रखना पतिव्रता स्त्रियो के ये छः गुण कहे गये हैं ।

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम् ।
स्वप्नमन्यगृहे वासो नारीणां दूषणानि षट् ।15।

सुरा पान, दुष्टो का सङ्ग, पति से वियोग, व्यर्थ घूमना, सोते रहना, दूसरो के घर मे अनावश्यक रहना स्त्रियो के ये छः दोष हैं ।

पत्यौ जीवति या योषिदुपवासव्रतं चरेत् ।
आयुः सा हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति ।16।

जो स्त्री पति के जीते जी उससे अलग होकर उपवास और व्रत रखती है, वह पति की आयु को हरती है, और नरक गामिनी होती है ।

नित्यं स्नाता सुगन्धा च नित्यं च प्रियवादिनी ।
अल्पभुक् मितवक्त्री च देवता सा न मानुषी ।17।

नित्य स्नान शीला, सुन्दर गन्ध वाली, सदा मधुर भाषिणी, कम खाने वाली, कम बोलने वाली स्त्री मानुषी नहीं अपितु साक्षात् देवता स्वरूपिणी होती है ।

यस्य भार्या शुचिर्दक्षा भर्तारमनुगामिनी ।
नित्य मधुरवक्त्री च सा रमा न रमा रमा ।18।

जिसकी भार्या पवित्र, चतुर, भर्ता की आज्ञाकारिणी और सदा मधुर-भाषिणी हो, (फिर उसके लिए लक्ष्मी-लक्ष्मी नही है ।) अपितु ऐसी पत्नी ही उसके लिये साक्षात् लक्ष्मी है ।

उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम् ।
प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्रीनिबन्धनम् ।19।

सन्तानोत्पत्ति, उत्पन्न सन्तान की रक्षा, प्रतिदिन लोक यात्रा का ध्यान अर्थात् दैनिक भोजनादि के द्वारा जीवन निर्वाह करना । स्त्री के ये नैसर्गिक बन्धन—धर्म है ।

काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि ।
न चैवैनां प्रयच्छेत् गुणहीनाय कर्हिचित् ।20।

ऋतुमती कन्या भले ही मरण पर्यन्त कुमारी रहे, परन्तु इसे किसी गुणहीन के साथ कभी न विवाहे ।

पतिशुश्रूषणान्नार्यास्तपो नान्यद्विधीयते ।
सावित्री पतिशुश्रूषां कृत्वा स्वर्गे महीयते ।21।

पति की सेवा के अतिरिक्त स्त्री के लिए और कोई तपस्या नहीं कही गई, तभी तो सावित्री पति की सेवा रूप तप करके स्वर्गीय महत्व को प्राप्त हुई ।

इमं धर्मपथं नारी पालयन्ती समाहिता ।
अरुन्धतीव नारीणां स्वर्गे लोके महीयते ।22।

एक चित्त होकर इस धर्म के मार्ग की रक्षा करती हुई समस्त नारियो मे अरुन्धती के समान स्वर्ग लोक मे पूजित होती है ।

वैषम्यमपि संप्राप्ता गोपायन्ति कुलस्त्रियः ।
आत्मानमात्मना सत्योजितः स्वर्गो न संशयः ।23।

विषम (ऊंचे नीचे) भाव को प्राप्त होती हुई भी कुलीन नारिया आत्म-ज्ञान से अपने आपको और घर को सुरक्षित रखती हैं, ऐसी स्त्रियो ने मानो स्वर्ग ही जीत लिया है । इसमे संशय नहीं ।

यदन्नं नाभिजानाति यद् भोज्यं नाभिनन्दति ।
भक्ष्यं वा यदि वा लेह्यं तत्सर्वं वर्जयेत्सती ।24।

सती स्त्री जिस अन्न को नही जानती, जिस खाने योग्य पदार्थ को, चाटने योग्य पदार्थ को, अथवा खिलाने योग्य पदार्थ को स्वय नही चाहती उन सबका परित्याग कर देवे । अर्थात् अपरिचित के हाथ का अन्न भक्षण न करे तथा रसोई मे भी ऐसे पुष्टि प्रद भोज्य पदार्थों को ही बनावे जिनमें अतिथि तथा परि-वार के सदस्यो की रुचि होवे ।

कार्यार्थे निर्गतञ्चापि भर्तारं गृहमागतम् ।
आसनेनोपसंयोज्य पूजयेत्सुसमाहिता ।25।

कामकाज के लिये बाहर गये भर्ता को, लौट आने पर अतिथिवत् आसनादि द्वारा स्थिर भक्ति से सत्कार करना चाहिए ।

नोत्थापयति भर्तारं सुखसुप्तमियं सदा ।
अन्तरेष्वपि कार्येषु तेन तुष्यति तन्मनः ।26।

अनावश्यक कार्य पड़ने पर भी जो नारी अपने स्वामी की सुखद निद्रा में बाधा नहीं डालती उसके स्वामी सदैव सन्तुष्ट रहता है तथा जब पति संतुष्ट है तो उसकी पत्नी भी स्वतः सन्तुष्ट है क्योंकि पति की सन्तुष्टि में ही पत्नी की सन्तुष्टि होती है ।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

कुछ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विषय में

4 अक्तूबर 1987 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जो चुनाव हुआ था उससे यह स्पष्ट हो गया था कि पंजाब की आर्य जनता क्या चाहती है। मुझे उसमें प्रधान चुन लिया गया था परन्तु वास्तव में जो कुछ किया गया था वह केवल इसलिए कि पंजाब के आर्य बन्धु इस प्रान्त की वर्तमान परिस्थितियों में किसी किस्म का विघटन नहीं चाहते। मैं यह नहीं कहता कि मैंने कभी कोई गलती नहीं की। प्रत्येक मनुष्य कई बार अपनी कुछ कमजोरियों के कारण न चाहते हुए भी अनजानेपन में कई गलतियां कर जाता है। हो सकता है कि मुझ से भी कभी कुछ ऐसे कार्य हुए हों जिन से कुछ मेरे साथी मुझ से नाराज हुए हों। परन्तु मैं यह बड़े गर्व से कह सकता हूं कि आज तक मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे आर्य समाज को किसी प्रकार की कोई हानि पहुंची हो। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने मेरे विरुद्ध कुछ आरोप लगाए हैं जिनके आधार पर मुझे आर्य समाज में कोई भी पद ग्रहण करने के आयोग्य करार दिया गया जो आक्षेप लगाए गए हैं उनमें एक भी ऐसा नहीं जिसके द्वारा मेरे विरुद्ध सिद्धान्त हीनता या चरित्र हीनता या आर्य समाज के अहित में काम करने का कोई आरोप हो। जो आरोप लगाए गए हैं वह केवल यह हैं कि मैंने सार्वदेशिक सभा के आदेशो का पालन नहीं किया। मैं इन आरोपों को पूर्णतया और सर्वथा निराधार समझता हूं। इसी लिए मैंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी से यह मांग की है कि मेरे विरुद्ध जो आरोप लगाए गए हैं उनकी जांच करने के लिए निम्न-लिखित महानुभावों की एक समिति बना दी जाए।

1—श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज,
2—श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज,
3—श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज,
4—श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज,
5—श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज,

सार्वदेशिक सभा के विधान में न्याय सभा का भी विधान है परन्तु जब से लाला रामगोपाल जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने उन्होंने कभी भी न्याय सभा नहीं बनाई और क्योंकि आज भी कोई न्याय सभा नहीं है इसलिए मैंने इन पांच सन्यासियो के नाम पेश किए हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान चाहे तो इन पांचों की एक समिति बना दे या तीन की बना दें जैसा वह चाहें बना दें। यह समिति उन आरोपों की जांच करे जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने मेरे विरुद्ध लगाए हैं और जिन के आधार पर मुझे आर्य समाज में कोई भी पद ग्रहण करने के अयोग्य घोषित किया गया। यदि यह समिति यह कह दे कि जो आरोप सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने मेरे विरुद्ध लगाए हैं वह ठीक हैं तो मै सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करता हूं कि मै भविष्य में न केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कोई पद नहीं लूंगा अपितु आर्य समाज में भी कोई पद ग्रहण नहीं करूंगा और यदि यह समिति इस परिणाम पर पहुंचे कि जो आरोप मुझ पर लगाए गए है वह सब निराधार हैं तो उसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान को यह आरोप वापिस लेकर मेरे ऊपर उन्होंने जो प्रतिबन्ध लगाया है वह भी वापिस ले लेना चाहिए।

मैंने लगभग पैंतीस वर्ष आर्य समाज की सेवा की है। आज तक मेरे विरुद्ध कभी किसी प्रकार का कोई आरोप नहीं लगा। पहली बार मुझे दोषी ठहरा कर आर्य समाज से निकालने का प्रयास हो रहा है वह केवल इस लिए कि पिछले छ: सात वर्ष से मैं गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में जो घपला हो रहा था उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाता रहा हूं। कई बार कहा जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के शिक्षालय के विषय में श्री वन्देमातरम् ने अपना जो निर्णय दिया था मैंने उसकी अवहेलना की है। आज मैं पूरे जोर से कह सकता हूं कि हमने उसका पूरी तरह पालन किया है। इसीलिए मैं कहता हूं कि मेरे विरुद्ध जो आरोप लगाए गए हैं उनमें एक भी ऐसा नहीं है जिसके आधार पर कोई कार्यवाही की जा सके। आर्य समाज के नियम उपनियम के अनुसार यदि किसी व्यक्ति के विरुद्ध कोई कार्यवाही करनी हो तो केवल निम्नलिखित परिस्थितियों में ही की जा सकती है। (1) मृत्यु होने पर, (2) विक्षिप्त होने पर, (3) पद परित्याग करने पर, (4) यदि कोई व्यक्ति आर्य न्याय सभा अथवा राजकीय न्यायालय के निर्णय अनुसार किसी ऐसे अपराध के लिए दण्डित हुआ हो जो अन्तरंग सभा की सम्मति में उस समासद् को समासद् रहने के अयोग्य सिद्ध करें।

इनमें से कोई भी मेरे ऊपर लागू नहीं होता और यह कार्यवाही केवल वह आर्य समाज ही कर सकती है जिसका वह सदस्य हो। जहां तक सार्वदेशिक सभा का सम्बन्ध है उसने यदि किसी व्यक्ति के विरुद्ध कोई कार्यवाही करनी हो या उसे किसी पद से हटाना हो तो निम्नलिखित कारणों से हटाया जा सकता है :—

(क) मृत्यु (ख) विक्षिप्त दशा (ग) पद त्याग (घ) ऐसे अपराध के लिए दण्डित होना जो इस सभा की सम्मति में उसे सभासदी के अयोग्य सिद्ध करे। (च) इस सभा के नियमों का उल्लंघन करने पर सभा द्वारा सभासदी के आयोग्य ठहराया जाना। (छ) आर्य सभासद् न रहना। (ज) निर्वाचक संस्था, आर्य समाज या प्रान्तीय सभा से निर्वाचित न होना अथवा पृथक् किया जाना।

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान अधिक से अधिक मुझे सार्वदेशिक सभा की सदस्यता से हटा सकते थे। मुझे प्रान्तीय सभा के पद के अयोग्य घोषित करने का उन्हें कोई अधिकार न था। सार्वदेशिक सभा के सारे विधान में प्रधान को कहीं भी यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह किसी प्रान्तीय सभा के विधिवत निर्वाचित प्रधान को हटा सके। प्रधान को वही सभा हटा सकती है जिसने उसे निर्वाचित किया हो। यदि यह परम्परा चल पड़ी कि प्रान्तीय सभाएं प्रधान चुनती जाएं और सार्वदेशिक सभा उन्हे हटाती जाए तो आर्य समाज का सारा ढांचा ही छिन्न भिन्न हो जाएगा।

मैंने यह सारी स्थिति इस लिए आर्य जनता के सामने रखी है कि पंजाब के आर्य बन्धु बहुत परेशान हैं कि यह सब क्यो और कैसे हुआ। मै चाहता हूं कि उन्हें पता चले की वास्तविक स्थिति क्या है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आज भी वही चल रही और चलती रहेगी जिसका चुनाव 4 अक्तूबर 1987 को हुआ था। वह चुनाव सभा के संविधान के अनुसार हुआ था इसलिए उस सभा को कोई तोड़ नहीं सकता। जहा तक मेरा सम्बन्ध है मै एक बार फिर अपनी इस मांग को दोहराता हूं कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने मेरे विरुद्ध जो आरोप लगाए है उनकी जांच कराई जाए। यदि मै दोषी पाया जाऊं तो मुझे वह जो दण्ड देना चाहें दें। यदि मेरे विरुद्ध वह यह आरोप सिद्ध न कर सके तो एक संन्यासी होते हुए उन्हें उदारता से अपनी गलती स्वीकार करते हुए अपना आदेश वापिस लेना चाहिए।

—वीरेन्द्र

एक सौ वर्ष पहले पंजाब का आर्य समाज

१६ नवम्बर १८८६

★ आर्य समाज जालन्धर शहर का पहला वार्षिक उत्सव 26,27 दिसम्बर 1886 को होगा। श्री स्वामी आत्मानन्द जी और स्वामी ईश्वरानन्द जी जहा कहीं हो उनसे निवेदन है कि वह इस अवसर पर जालन्धर पहुंच कर अनुगृहीत करें। जिन समाजो मे यह दोनो महानुभाव इस समय हो उनके मन्त्री महोदयो से भी निवेदन है कि आर्य समाज जालन्धर के मन्त्री महोदय को इनकी सूचना दे ताकि स्वामी जी का मार्ग व्यय उन्हे भेजा जा सके। इसके अतिरिक्त जिन आर्य भाईयो और बहनो ने इस उत्सव पर आना है विशेष कर देश के दूसरे प्रान्तो मे से उनसे भी निवेदन है कि वह अपने आने की सूचना एक सप्ताह पहले आर्य समाज जालन्धर के मन्त्री जी को दे दे। आशा की जाती है क्योंकि यह आर्य समाज जालन्धर का पहला उत्सव है इसलिए भारी संख्या मे भाई और बहने इस उत्सव पर वहा पहुंच कर हमारा उत्साह बढ़ाए गे।

★ डसका मे श्री मुन्शी नारायणकिशन उप प्रधान आर्य समाज गुजरांवाला के प्रयत्नो से एक नई आर्य समाज की स्थापना हुई। निम्नलिखित महानुभाव इसके अधिकारी नियुक्त हुए :—सरदार गुरदित्त सिंह-प्रधान, लाला ताराचन्द उप-प्रधान, मास्टर भगवानसिंह मन्त्री, सरदार ईशरसिंह कोषाध्यक्ष।

★ आर्य समाज लाहौर का नौवा वार्षिकोत्सव 27,28 नवम्बर को होगा। भिन्न-2 आर्य समाजों के सदस्यों और दूसरे महानुभावो से यह निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में वहां पहुँचें ताकि आर्य समाज का प्रचार हो सके।

—वीरेन्द्र

भारतीय नारी और उसकी महानता

लेखक—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु एम ए संस्कृत दीनानगर

नारी तू कितनी महान है। कितनी करुणा भरी है तुझ मे। कितने व्यक्तियो पर तेरी छाप है। कितना ओज है तुझ मे। वास्तव मे तू अवतार है ओज का, तू निर्माता है, व्यक्तियो के व्यक्तित्व को कितना उच्च आदर्श दिया है तूने। देश-प्रेम, वीरता, भक्ति, स्नेह, दयालता तेरी कोख मे जन्म लेते हैं।

यदि तू न होती तो आज मानवता का नामोनिशान न होता। ... तेरी ही महानता है कि तूने कालीदास को विश्व कवि बना दिया और आज मेघदूत, रघुवंश, अभिज्ञान शकुन्तलम और ऋतु सहार मे तेरा उच्च आदर्श ही परिलक्षित होता है। क्या तेरे बिना हमे ऐसा साहित्य मिल सकता था? कदापि नही।

तुलसी दास क्या राम चरित मानस की रचना कर सकते थे? यदि तू न होती तो क्या तुलसी कभी तुलसी दास बन सकते थे। कितना लक्ष्य होगा तेरे सामने कुमारिल भटट को प्रचारक बनाने का। कुमारिल भटट यदि कार्य क्षेत्र मे आए तो उसके पीछे तेरी ही प्रेरणा थी। तूने ही उन्हे कहा था, किम करोमि क्व गच्छामि, को वेदान उद्धरिष्यति'। मैं सोचता हू कि वेदो का सूर्य अस्त हो गया है। अब वेदो का प्रचार कौन करेगा? तेरी इस बात से कुमारिल के हृदय मे आग लग गई और वह कह उठा 'मा विषीद वरारोहे भट्टाचार्योऽस्मि महीतले"। अर्थात ऐ मा! तू दु:खी न हो तेरा पुत्र कुमारिल यह करके दिखाएगा। उसको यह शिक्षा यह दीक्षा किसने दी। नारी ने। उसको महान किसने बनाया? नारी ने।

शिवा जी को वीर बनाने मे क्या नारी का हाथ नही था? जीजा-बाई न होती तो शिवाजी कभी भी "हिन्दू पद पादशाह न बनते। हिन्दू राष्ट्र से अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता एवम गौरव सदा सर्वदा के लिए लुप्त हो जाता।

आज मुझ याद आ रहे है, नैपोलियन बोनापार्ट के ये शब्द—"गिव मी गुड मदर, आई विल गिव यू ए गुड नेशन,

क्या नारी के बिना एक जाति अपना अस्तित्व कायम रख सकती है। नारी वह ज्वाला है जो पीतल को सोना बना देती है।

आज संसार के हर महापुरुष को यदि देखा जाए तो उसके पीछे नारी का प्रतिबिम्ब ही दिखाई देगा। क्या गान्धी, टैगोर, सुभाष, तिलक, अरविन्द और बिस्मिल व अश्फाक आदि देश और जाति के लिए इतना काम कर सकते यदि इनके पीछे नारी का हाथ न होता। यदि नारी ने इन्हे लोरिया न दी होती।

क्या आज देश स्वतन्त्र हो सकता था? यदि नारी ने रण बाकुरो को जन्म न दिया होता। क्या हमे गीताञ्जलि मिल सकती थी? यह केवल नारी के हृदय मे बैठी श्रद्धा थी। सत्य मार्ग था, उच्च संस्कार थे और सबसे बढ कर था जीजाबाई तथा पदमावती का त्याग, श्रद्धा, देश भक्ति और आत्मिक बल। यदि हम संसार के प्रत्येक महापुरुष को देखे तो उसके पीछे नारी का उच्च व्यक्तित्व एवम आदर्श ही पाएंगे।

हमारी संस्कृति मे आज जो बाढ के पानी की तरह गदलापन और कूडा-कर्कट सम्मिलित हो रहा है उसे निकालने के लिये केवल नारी ही आगे आएगी। वही किसी पुत्र अथवा पति के हृदय मे ऐसे संस्कार भरेगी जिससे यह संस्कृति सदैव जीवित रहेगी। नारी वास्तव मे हमारी सभ्यता की रीढ की हड्डी है। पुनर्जन्म, कर्मफल व्यक्ति से राष्ट्र की श्रेष्ठता। सभ्यता के ये अमिट अंग यदि जीवित रखने है तो किसी नारी ने।

अन्त मे नारी से प्रेरित उन महापुरुषो की स्मृति मे जिन्होंने हिन्दू संस्कृति और परम्पराओ को बनाया, जिन्होंने सर्वोत्कृष्ट सभ्यता की रूप रेखा खीची है, जिन्होंने अपने सर्वस्व की आहुति देकर उस संस्कृति और सभ्यता की ज्योति को जलाए रखा है, मैं उन महामानवो मे बैठी नारी को शत शत प्रणाम करता हू।

धिक्कार है उन लोगो पर जो नारी को दहेज की खातिर जला देते हैं तथा उसे सती होने के लिये विवश करते हैं। हमे ऐसे लोगो के विरुद्ध अभियान चलाना चाहिए, तथा ऐसी पुस्तको की होली जलानी चाहिए जिनमे नारी का अपमान किया गया है।

—

हिन्दी के ही अशुलिपिक रखे जाने के आदेश

भारत सरकार के आदेशो के अनुसार हिन्दी भाषी क्षेत्रों मे स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो मे लगभग सभी कार्य हिन्दी मे होना आवश्यक है। अधिकारियो को अपना बढता हुआ हिन्दी का कार्य निपटाने के लिए अब गृह मन्त्रालय के राजभाषा विभाग ने 20 अगस्त 1987 को यह आदेश दिए हैं कि कुल आशुलिपिको के पदो का हिन्दी भाषी क्षेत्र मे कम से कम 50 प्रतिशत और गुजरात, महाराष्ट्र, पजाब आदि मे 25 प्रतिशत पद हिन्दी जानने वाले आशुलिपिको से भरे जाए। यह आदेश भारत सरकार के सभी अधीनस्थ कार्यालयो, निगमो, राष्ट्रीयकृत बैंको पर लागू होते हैं और इस प्रकार सन् 1990 तक हिन्दी आशुलिपिको का यह प्रतिशत प्राप्त करना है। ऐसी स्थिति मे अग्रेजी आशुलिपिको की भर्ती करना भारत सरकार की राजभाषा नीति और आदेशो का उल्लघन होगा।

2 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो मे अग्रेजी के आशुलिपिको तथा टाइपिस्टो की माग सम्बन्धी जब भी आप विज्ञापन देखें तो सम्बन्धित विज्ञापनो की कतरने सहित सम्बन्धित विभाग के अध्यक्ष को पत्र भिजवा कर उसकी प्रति संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, नई दिल्ली को भी भेज दी जाए और एक प्रति सयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, एक्स वाई 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली को भी भिजवा दें।

3 जहा तक हिन्दी भाषी राज्य सरकारो के कार्यालयो द्वारा अग्रजी के आशुलिपिको तथा अग्रजी के टाइपिस्टो के रखे जाने विषयक विज्ञापन देखें तो सम्बन्धित राज्य के सम्बन्धित विभाग के मन्त्री को 100 प्रतिशत हिन्दी के ही आशुलिपिक तथा टाइपिस्ट रखे जाने के लिए पत्र लिखें और उसकी एक प्रति केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली को भेज दें।

—जगन्नाथ सयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् एक्स वाई 68,
सरोजिनी नगर, नई दिल्ली

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जो लोग ईश्वर की सत्ता मे सन्देह करते हैं, वे भी इस सिद्धान्त के अनुसार एक अदृश्य सत्ता की सहायता के आश्वासन पर सफलता के सोपान पार कर सकने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसा व्यक्ति इसी सन्देह की छाया मे अपने कर्तव्य पालन मे जुटा रह सकता है कि कहीं न कहीं छुपी कोई अज्ञात सत्ता मेरी पीठ पर रह कर शायद मेरी कोई सहायता कर रही हो। इस तरह भी तो सामान्य व्यक्ति को एक अदृश्य सम्बल प्राप्त होना ही है। साइकल चलाना सिखाने वाले व्यक्ति बालक को साइकल पर बैठा कर थोडा सा चलाकर छोड देते हैं। लेकिन बालक यही समझता है कि पीछे से मुझे सहारा मिल रहा है। और इसी झूठे सहारे के बल पर वह काफी दूर तक साइकल को खेंच कर ले जाता है। इसी उदाहरण से अर्द्ध-नास्तिक व्यक्ति भी ईश्वरीय सत्ता का अवलम्बन प्राप्त करके अपने जीवन की गाडी को खेंच ले जाता है, तो क्या अशिक्षित और असभ्य जातियो की देव पूजा के पीछे यही सिद्धान्त तो कार्यरत नही होता है और सत्य बात तो यह है कि अध्यात्म दर्शन और भक्ति के क्षेत्र मे अधिकतर व्यक्ति मिथ्या आश्वासन ही का सहारा लेते हैं।

ईश्वरीय सत्ता के सूक्ष्म और निराकार होने और केवल अनुभूतिगम्य होने के कारण ही जनसामान्य को उसकी विद्यमानता का आश्वासन दिलाने के लिए उसके अनेकानेक साकार रूपो और अवतारो की परिकल्पना की गई है। अनेक मतमतान्तर वालो ने अपने अपने इष्ट देवो या पीरो और पैगम्बरो आदि को इसीलिए मध्यस्थ बना कर प्रस्तुत किया है। और अन्तत उन पैगम्बरो की शक्ति सम्पन्नता को प्रमाणित करने के लिए उन्हे परमात्मा का पुत्र सिद्ध किया है। इन सभी उदाहरणो के पीछे यही सिद्धान्त कार्य करता है।

विचारणीय है कि यदि मिथ्या प्रेरणा और अलीकाश्वासन इतना व्यापक सम्बल प्रदान करने मे समर्थ है, तो वेदोक्त प्रणाली से ईश्वर के उपर्युक्त गुणो का चिन्तन करते हुए उसे सदैव अपना माता-पिता, सखा बन्धु और परम सहायक मानकर हम सब कितना निश्चिन्त हो सकते हैं। यदि हम जीवन के प्रत्येक क्षण मे इसी मन्त्र भाव का ध्यान करते हुए अपने जीवन के समस्त कार्यों का निर्वाह करें तो न तो हमे कभी निराशा का मुख देखना पडे, और न ही हम अपने मिथ्या-कर्तृत्व के अभिमान मे मोहग्रस्त होकर मदान्धता का आश्रय ग्रहण करें।

———

ऋषि दयानन्द की सफलता

लेखक—स्व. श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

ऋषि दयानन्द की सफलता असन्दिग्ध है। कट्टर समालोचक भी इससे इन्कार नहीं कर सकते। कोई उस सफलता से प्रसन्न है, और कोई नाराज है, परन्तु इन्कारी कोई भी नही हो सकती। विजित सफलता के कारणो पर जब विचार करने लगें तब मतभेद आरम्भ होता है। महात्मा गांधी से पूछिये तो वह ऋषि की सफलता का एक मात्र कारण ब्रह्मचर्य को बतलाएंगे। एक कट्टर मुसलमान से प्रश्न कीजिये तो वह कहेगा कि एक ईश्वर मे दृढ विश्वास ही स्वामी जी की विजय का कारण हुआ, एक आर्य समाजी से पूछिये तो वह वेद पर विश्वास को ही कारण बतलायेगा और एक मनोवैज्ञानिक पर सवाल डालिये तो वह उत्तर देगा कि—'ऋषि दयानन्द की अद्भुत सफलता का प्रधान कारण उनकी प्रतिभा थी। एक इतिहास लेखक सभी प्रकार के विचारको की सम्मति पर विचार करता है और गुण तथा दोषो को तोल कर देखता है, उसे कोई भी प्रश्न इतना गहन नही दिखाई देता कि उसका उत्तर न दे सके, और न इतना सरल ही दिखाई देता है कि उसका एक शब्द मे चुभता हुआ जवाब दिया जा सके। वह सफलता के सभी कारणो को जोड़ता है और परिणाम निकालता है।

ऋषि दयानन्द जी की सफलता मे तीन तरह के गुण कारण थे। (1) शारीरिक (2) मानसिक (3) आध्यात्मिक। शारीरिक गुणो मे से हृष्ट-पुष्ट उन्नत शरीर, तेजस्वी चेहरा, और सिंह समान आंखे थी। यह बतलाने की आवश्यकता नही कि ऋषि की सफलता में उनके शारीरिक गुणो का एक बड़ा हिस्सा था।

मानसिक कारणो मे से प्रतिभा और स्मृति प्रधान थे। प्रतिभा के कारण बड़े से बड़े नाद मे सैकड़ो प्रतिपक्षियो के बीच मे उनकी नाजी अटूट अस्त्रो का प्रयोग करती थी। स्मृति की सहायता के बिना शास्त्रो के धुरन्धर पण्डितो को कौन चुप करा सकता था? किताब की विद्या शास्त्रार्थ मे काम नही देती। वहा तो याद ही सबसे बड़ा हथियार है। प्रतिभा और स्मृति यह दोनो बहिनें स्वामी जी की वशवर्ती होकर काम देती थी।

आत्मिक गुणो मे से योग, ब्रह्मचर्य और तप यह मुख्य थे। इन तीनो को सक्षेप से कहे तो ईश्वर विश्वास और सयम, इन दो के अन्तर्गत हो जाते हैं। यह दोनो भी एक दूसरे पर आश्रित हैं। ईश्वर विश्वास के बिना पूरा सयम नही हो सकता। कर्मशील उग्र आत्मिक भाव ही सयम योग और तप का आधार है।

शरीर की पुष्टि, प्रतिभा और आत्मिकता यह तीन गुण थे, जिनसे ऋषि दयानन्द को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। किसी एक अकेले गुण को तलाश करने मे दिमाग न लगा कर यदि हम ऋषि चरित्र पर व्यापी नजर दौड़ाए तो हम इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि सर्वांगीण उत्कृष्टता ही उसके गौरव का मूल हेतु थी। यही महापुरुष के महत्व की निशानी है। जिसमे केवल गुणो का एक देशी विकास है वह पूरे महत्व तक नही पहुच सकता। सर्व देशी विकास ही महत्व का हेतु है। जो केवल शारीरिक या केवल मानसिक गुणो पर भरोसा रखता है वह पूरी सफलता नही प्राप्त कर सकता।

अपनी सर्वांगीणता के लिए ऋषि का जीवन आदर्श रूप है। उसकी व्यापक ज्योति मे सदियो तक प्रजा अपने-अपने दिया जलाया करेगी।

(पेज न. 84 से 86 तक)

सदर्भ ग्रन्थ—दिव्य दयानन्द
द्वारा—पूर्णचन्द एडवोकेट

जिसके घर में वेद नहीं वह आर्य समाजी नहीं

समाज सुधार आदि के जो कार्य महर्षि दयानन्द या आर्य समाज ने किये उनके करने वाले महापुरुष और सन्यासी पहले भी हो चुके थे और आज भी हैं। एक ही बात ऐसी है जिसे करना तो दूर न किसी ने पहले कहा और न आज कहता है और वह है आर्य समाज का तीसरा नियम—"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना, और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" यही दयानन्द की विशेषता है और इसी मे आर्य समाजी की पहचान होती है। वेद को पढ कर उसके अनुकूल आचरण करने वाला ही आर्य समाजी कहला सकता है। और यह तब तक सम्भव नही जब तक उसके घर से वेद न हो। जिनके घर मे वेद नही उन मे मिल कर बना सगठन और कुछ भी हो, आर्य समाज नही कहला सकता। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि अपने रजिस्टर मे अंकित प्रत्येक सदस्य के घर मे कम से कम एक वेद तो पहुचाये ही। मैं इसे आन्दोलन का रूप देना चाहता हू, आर्य समाजो के सहयोग से जुटा जाता हू, इसकी प्रेरणा करता हू। लोग मेरी बात मानते हैं। प्रत्येक समाज स्वामी जी के भाष्य वाले यजुर्वेद की सौ-सौ प्रतियो का आर्डर देती हैं। परन्तु इस पवित्र कार्य मे न सार्वदेशिक सभा सहयोग कर रही है और परोपकारिणी सभा। दोनो सभाओ ने उक्त वेद का मूल्य चालीस रुपये रखा हुआ था। परन्तु जैसे ही सौ-सौ प्रतियो के आर्डर पहुचे, वैसे ही पहले से छपे मूल्य को बढा कर पहले परोपकारिणी सभा ने सौ रुपये और तत्पश्चात सार्वदेशिक सभा ने 60 रुपये कर दिये। इससे मुझे और मेरे साथ आर्य समाजो और दयानन्द मठ को बड़ी निराशा हुई, विवश होकर मुझे दूसरी व्यवस्था करनी पड़ी। मेरे अनुरोध पर 'भगवती प्रकाशन ने 40 मूल्य पर ही उक्त वेद देने की योजना को स्वीकार कर उसे तत्काल कार्यान्वित करना स्वीकार कर लिया है। यह सस्करण अब तक उपलब्ध सभी सस्करणो से कही अधिक सुन्दर, शुद्ध और प्रामाणिक होगा। इस शुभ कार्य मे जनता का सहयोग अपेक्षित है। मेरा प्रत्येक आर्य समाज से अनुरोध है कि वह अपनी सदस्यो की सख्या को देख कर 25, 50 व 100 प्रतियो के अगाऊ मूल्य के रूप मे एक, दो या चार हजार रुपये के ड्राफ्ट द्वारा श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, मन्त्री भगवती प्रकाशन, एच 1/2 माडल टाउन दिल्ली को तत्काल भेज दे। उन्ही का पैसा यजुर्वेद भाष्य के रूप मे उन्हे वापिस मिल जाएगा। क्योंकि पुस्तक बिल्कुल लागत मात्र मूल्य पर दी जाएगी, इस लिए प्रेषण व्यय ग्राहको को वहन करना होगा। यह आर्य समाजो और आर्य समाजियो की वेद के प्रति आस्था का प्रश्न है। —विद्यानन्द सरस्वती

आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषांक

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के अब सभी विशेषांकों की बड़ी सराहना की जाती है। हमारा प्रयास होता है कि अच्छे से अच्छा मैटर इन विशेषांकों में दिया जाए। ऋषिबोध पर्व पर फरवरी 1988 मे गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी एक बृहद विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। हमारी इच्छा है कि यह अंक कम से कम मैगजिन साईज के 100 पृष्ठों का अवश्य हो। इसके लिए हमने अभी से तैयारी आरम्भ कर दी है। हमारी विज्ञापन दाताओं से प्रार्थना है कि वह इस विशेषांक के लिए अपने विज्ञापन शीघ्र सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करें पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन शुल्क केवल 300 रुपये और आधे पृष्ठ का 150 रुपये रखा गया है। जो पूर्ण पृष्ठ न दे सके, वह आधा पृष्ठ अवश्य दें। हम इसे हजारों की संख्या में छपवाना चाहते हैं।

हमने उच्चकोटि के लेखक महानुभावों को पत्र लिख दिए हैं कि वह अपनी अमूल्य रचनाएं इस विशेषांक के लिए शीघ्र हमें भेजने की कृपा करें।

हमारी सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षण संस्थाओं और आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि जहां वह इस विशेषांक के लिए विज्ञापन भिजवाने में सभा को सहयोग दें वहा इस विशेषांक की अधिक से अधिक प्रतियों का आर्डर भी सभा कार्यालय में शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। ताकि उनकी प्रतियां सुरक्षित रखी जा सकें।

वीरेन्द्र — कमला आर्या
सभा प्रधान — महामन्त्री

नवांकोट अमृतसर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

दिनांक 2-1-1988 को आर्य समाज नवांकोट मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह अपूर्व धूमधाम के साथ मनाया गया। इस शुभावसर पर अपनी श्रद्धांजलि देते हुए स्वामी आनन्द बोध जी महाराज ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस तभी सार्थक हो सकता है जबकि आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए हमारी श्रद्धा जाग जाए और हम सब एक हो कर आर्य समाज का कार्य करें। श्री सुरजीत जी दुग्गी, श्री मास्टर गिरधारी जी, श्री सत्यपाल जी पथिक, श्री हरविलास, डा. अशोक कुमार बजाज ने भी सभा को सम्बोधित किया।

28 दिसम्बर से 2 जनवरी तक पारिवारिक सत्संग करके वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। आर्य समाज मन्दिर में योग साधना शिविर एवं योग प्रवचन स्वामी आनन्द बोध जी द्वारा किये गये।

—डा. प्रकाशचन्द प्रधान

आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संस्था है।

लेखक—श्री स्वामी सुबोधानन्द जी दयानन्द मठ दीनानगर

महर्षि दयानन्द जी ने देश की दशा देखी। अन्ध विश्वास देखा, अनेको ईश्वर अनेको अवतार, अनेको ग्रन्थ देखे, मुट्ठी भर अंग्रेज व्यापारी बन कर आए और देश के मालिक बन बैठे। हमारी वैदिक सस्कृति को मिटाकर हमारे हाथ मे बाईबल पकड़ा दी। स्वर्ग, नर्क के ढकोसलो मे जकड़ी जाति को पडे, पुजारी, पुरोहित, ज्योतिषी, नाम निहाद ब्राह्मण, दोनो हाथो से लूट रहे थे, उन्होने सच्चे शिव की तलाश, मृत्यु पर विजय, और देश को स्वतन्त्र कराने के लिए व वैदिक सस्कृति पर पड़ी गर्द को दूर करने व ईश्वर का सत्य स्वरूप दिखाने व वेदो की ओर मुड़ो और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर बल दिया और देश मे एक क्रान्ति लाई उन्हे बड़ी मुश्किल से 20 साल ही कार्य करने का समय मिला। जब रेल, तार, मोटर, हवाई जहाज, डाक प्रैस व सम्पर्क व शिक्षा की कोई सुविधा न थी कोई सगी साथी न था कोई वर्कर न थे। अंग्रेज सरकार का भय था सारा देश उन के विरुद्ध था केवल एक ईश्वर सहाई था—वेद विद्या पर मान था। ब्रह्मचर्य का तेज था। आत्म विश्वास था सत्य का शस्त्र हाथ था। मानव मात्र की सेवा लक्ष्य था। धेला-पैसा पास न था। ससार का कोई प्रलोभन उनको उनके सत्य मार्ग से विचलित न कर सका एक ऐसी क्रान्ति जलाई जिस मे सब अन्धविश्वास भस्म हो गया तभी अमरीकन, पादरी, रोम्या व डेविड जैकसन उनकी स्तुती करते नही थकते जब तक आर्य जनो, आर्य समाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओ मे क्रान्ति रही। यह जीवन का परिचय देती रही। अब 1939-40 हैदराबाद आन्दोलन के बाद तवा ठण्डा पड गया है न हमारी शिक्षा ठीक रही न गौ रक्षा, न राष्ट्र रक्षा, न हिन्दी राष्ट्र भाषा न हमारा स्वराज्य, सुराज्य बन सका। अत: महर्षि ऋण उतारने हेतु क्रान्तिकारी पग उठाने होग यह भवन व स्कूल मूक है।

धर्म के बिना राष्ट्रीय एकता असम्भव

भारत वर्ष एक महान देश है और अतीत म यह वैदिक राष्ट्र के रूप मे रहा। जहा से सम्पूर्ण विश्व को मानवता का सन्देश दिया जाता था, परन्तु आज सम्पूर्ण देश मे अशान्ति फैल रही है। कही जातिगत, कही दमगत, कही सम्प्रदायगत विद्वेष विषधर राष्ट्रीय एकता की आत्मा को डस रहा है। इसलिये सम्पूर्ण देश मे राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिये सभी चिन्तित है, परन्तु एकता स्थापित करने की जितनी चिन्ताए हो रही है, उतना ही भटकाव पैदा हो रहा है। क्योकि देश मे सहिष्णुता शान्ति के स्थान पर उग्रवाद, अशान्ति, मानवता के स्थान पर दानवता बढ रही है। क्योकि धर्म को मानने वाले वह राजनीतिक आत्माए आज कहा है—जैसे महात्मा गाधी, लाला लाजपतराय, सरदार पटेल, पुरषोत्तम दास टण्डन, नेता जी सुभाष बाबू, लाल बहादुर शास्त्री, जिनके दर्शन मात्र के लिये जन मानस श्रद्धा से नत मस्तक होता था तथा देश की एकता के लिए अपने जीवन का सर्व बलिदान करने को तैयार रहता था। क्योकि उस समय एकता, समता, समानता और बन्धुता का आदेश देदीप्यमान हो रहा था।

राष्ट्रीय एकता के महर्षि दयानन्द कितने अधिक समर्थक थे, यह इसी से ज्ञात होता है कि उन्होंने देश की एकता के लिए समस्त देशवासियो के परस्पर व्यवहार मे हिन्दी को अपनाने का जोर दिया तथा 1809 म एकता सम्मेलन का आयोजन दिल्ली दरबार के समय किया था। वह हमेशा ही देश की एकता के कट्टर समर्थक रहे। परन्तु आज हमारे देश म भय, एक दूसरे के प्रति आक्रोश, घृणा बढ़ रही है, इसके चिन्तन म हमे एक ही उत्तर मिलता है कि आज देश के शासक व नागरिक सभी अपने 2 धर्म से च्युत हो रहे है। राष्ट्र रक्षा के लिए हमे अपने पूर्वजो की भाति ही अपना अपना धर्म सुनिश्चित करना होगा। हमे वही कार्य अपनाना होगा जिसमे सबकी उन्नति म ही अपनी उन्नति दिखाई पड़े। अत हमे पश्चिमी वेशभूषा, चकाचौंध से हटकर भारतीय सस्कृति तथा भारतीय दर्शन को देखना, समझना और अपनाना होगा।

आओ आज हम जन-जन मे धर्म तथा स्वदेशी के सच्चे स्वरूप को पहचाने तथा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहे।

ओ३म् सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो!
पूर्वजो की भाति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।

—वैद मित्र हापुड़ वाले सदस्य हरियाणा विधान सभा 72 बी, गोविन्द नगर, अम्बाला छावनी,

सूचना एवं प्रसारण मन्त्री के नाम पत्र—

ऋषिबोध पर्व का कार्यक्रम दूरदर्शन पर प्रसारित किया जाए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा श्री अजीत पांजा जी सूचना एवं प्रसारण मन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली को लिखा गया पत्र

श्रीमान जी, सादर नमस्ते!

आपकी सेवा मे निवेदन है कि 19 वी शती मे महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुप्रथाओ, रूढिवाद, अन्धविश्वास, आडम्बर, बाल विवाह, छूत-छात जैसी प्रथाओ का घोर विरोध करते हुए वेद प्रतिपादित सिद्धान्तो के आधार पर विश्व के मानव मात्र मे भाई-चारा, राष्ट्र प्रेम, सद्भाव, धार्मिक जागृति के सदर्भ मे सर्व व्यापक एक ईश्वर की उपासना तथा प्राचीन वैदिक धर्म की स्थापना के साथ 1875 मे आर्य समाज की स्थापना करके देश को अंग्रेजी पराधीनता से मुक्त कराने का उद्घोष किया था। स्वामी दयानन्द ने ही स्वराज्य शब्द को भारतीय जनता के समक्ष रखा था। उनके इस महान् कार्य की प्रशसा दादा भाई नौरोजी तथा महात्मा गाधी ने भी की थी।

शिवरात्रि का पावन पर्व हिन्दुओ द्वारा विभिन्न रूपो मे मनाया जाता है। किन्तु आर्य जगत् की ओर से यह पर्व महर्षि दयानन्द बोध दिवस के रूप मे मनाया जाता है। शिवरात्रि पर्व पर ही उन्हे बोध हुआ था और शिव मन्दिर से निकल कर वह सच्चे शिव की खोज मे घर छोडकर चले गए थे।

आगामी 16 फरवरी 1988 को शिवरात्रि (महर्षि बोध दिवस) पर्व है। हमारा निवेदन है कि इस दिन आर्य समाज द्वारा सचालित बोध दिवस के कार्यक्रमो को राष्ट्रीय स्तर पर दूर दर्शन से प्रसारित किया जावे। इसके लिए जो सामग्री आदि अपेक्षित होगी, वह हम देगे।

इस विषय मे आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल आपसे मिलना चाहता है, कृपया तिथि व समय की सूचना देकर अनुगृहीत करें।

प्रधान—(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
(पूर्व नाम : रामगोपाल शालवाले)

वेद—सुधा

लेखक—श्री (प्रोफैसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज)
प्रधान—आर्य समाज लन्दन

मन्त्र बलधेहि तनूष नो बलं इन्द्र अनडुत्सु नः।
बल तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि॥

ऋग्वेद 3 53 18

अर्थ : हे ईश्वर, हमारे शरीरों में बल दो, हमारे बैलादि पशुओं में बल दो। पुत्र-पौत्र के जीवन के लिए बल दो (क्योंकि) तुम ही बल के देने वाले हो।

व्याख्या : शरीर बल सब बलों की बुनियाद हैं। शरीर की इन्द्रियों के स्वामी को इन्द्र कहते हैं। परमात्मा का नाम इन्द्र भी है। उससे शारीरिक बल के लिए प्रार्थना की गई है। स्वस्थ और मजबूत व्यक्ति राष्ट्र की सब से बड़ी दौलत हैं। शासन, व्यवस्था और राष्ट्र की सुरक्षा का बड़ा आधार यही बल है। शुद्ध पवित्र भोजन, व्यायाम, और ऊचा चरित्र शरीर बल के कारण हैं। पशुधन भी मानव समाज की दौलत है। हमारे बैल, घोड़े, सांड, गौएं, भेड़-बकरियें इत्यादि पशु स्वास्थ्य, जीवन, व्यापार, खेती और रक्षा के लिए बेहद उपयोगी हैं। इन सब के स्वास्थ्य और बल के लिए इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है। पूर्ण स्वस्थ, सशिक्षित और बलवती माताएं ही सबल और स्वस्थ सन्तान पैदा कर सकती हैं। नशीली चीजों और सिगरेट तम्बाकू के सेवन पर कानूनी रुकावट लगाना जरूरी है। वेदादि शास्त्रों में ईश्वर के दिए आदेशों को मानने से बल प्राप्त होता है। इस तरह सर्व शक्तिमान्, सर्वज्ञ, सर्व व्यापक और परम दयालु ईश्वर से ही सब बल प्राप्त होते हैं। वही बलदाता है।

दूसरा प्रान्तीय आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

लुधियाना में 28-12-87 से 3-1-88 तक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से दूसरा प्रान्तीय आर्य वीर दल का शिविर आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में 28-12-87 से 3-1-88 तक लगाया गया। इस शिविर में लुधियाना, नवांशहर, मोगा, फगवाड़ा जालन्धर, करतारपुर, अमृतसर, दीना-नगर, बरनाला (गुरदासपुर) के 63 युवकों ने भाग लिया। 28-12 87 को प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा ने ओ३म् का ध्वज लहरा कर इस का उद्घाटन किया। श्री सत्यपाल जी आर्य पसखल तथा श्री सुखदेव जी शास्त्री करतारपुर ने लगातार सात दिन इन युवकों को प्राणायाम, आसन, व्यायाम, योग—अभ्यास द्वारा शिक्षा दी और देश धर्म, प्यार और वैदिक विचारों से ओत-प्रोत किया। प्रातः काल 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक अनुशासन में कार्य चलता रहता था। इस शिविर मे स्वा सुमना-नन्द, प. बालकृष्ण शास्त्री, प. वेदप्रकाश शास्त्री, प. सत्यपाल शास्त्री, प. सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री सत्यानन्द मुन्जाल, श्री राजेन्द्र कुमार जी, डा. मूलचन्द जी भारद्वाज, श्री महेन्द्रपाल मनाल, श्री अयोध्या प्रसाद बरडोला ने अपने प्रवचनो द्वारा युवको को शिक्षा दी। 3 1 88 रविवार को समापन समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम ए ने की। युवको ने आसन, प्राणायाम, भाषण, गीत, कविता द्वारा जनता को प्रसन्न किया। श्री वीरेन्द्र जी ने अपने प्रधानगी भाषण मे युवको को कहा कि सात दिनो मे जो उन्होंने शिक्षा ग्रहण की है वह केवल अपने पास ही न रखें—अपने मित्रो, साथियो तक भी पहुचायें—प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाले को पारितोषिक और सब युवको को धार्मिक, पुस्तकें, प्रमाण पत्र दिया गया। इस समारोह को देखने के लिए पजाब के सब बडे नगरो से बहन, भाई आए हुए थे। जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा ने सब का धन्यवाद किया। प्रीत भोजन की प्रबन्ध अति उत्तम था। इस समारोह को सफल बनाने की जहा जिला आर्य सभा लुधियाना के अधिकारियो ने दिन रात परिश्रम किया। वहा श्री सुखवन्त राय जी सूद, प्रि. ओमप्रकाश जी टण्डन श्री विनोद कुमार जी जैन ने इस समारोह को सफल बनाने मे पूरा सहयोग दिया।

—आशानन्द आर्य अधिष्ठाता
आर्य वीर दल पजाब

श्री रणवीर भाटिया को पत्नि वियोग

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के भूतपूर्व मन्त्री व लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी कार्यकर्ता श्री रणवीर जी भाटिया की धर्म पत्नी श्रीमती रमेश भाटिया का 8-1-1988 को देहावसान हो गया। वह कुछ दिन से रुग्न चल रही थी। उनके चले जाने का सभी को अतीव दुःख है। परिवार को जो आघात लगा है वह असहनीय है। परन्तु परमात्मा की व्यवस्था अटल है उसके आगे किसी का वश नही चलता। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। उनका अन्तिम शोक दिवस (रसम पगडी) 18 1-88 सोमवार को 2 से 3 बजे तक आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल समीप पुरानी सब्जी मण्डी लुधियाना मे मनाया जाएगा।

—नरेन्द्रसिंह भल्ला
प्रधान

सूखा पीड़ितों की सहायता करें।

मानवता के प्रेमी सज्जनो!

आपका ध्यान हम उत्कल प्रान्त मे आए भयकर सूखे के प्रति आकर्षित कर रहे हैं। इधर उड़ीसा के कालाहाण्डी जिले की स्थिति काफी बिगड चुकी है। अन्नाभाव से जनता तड़प रही है व जो भागने मे सक्षम हैं वे अन्य प्रान्तो को पलायन कर रहे हैं। स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है जिसकी सूचना आप दैनिक पत्रो मे पढते रहते हैं। सरकारी सहायता के नाम पर दिखावा मात्र है।

ऐसी स्थिति मे गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी धर्मानन्द जी ने आर्य समाज व आर्य सज्जनो की सहायता से अन्न वस्त्र बाटने का कार्य शुरू कर रखा है। लगभग 20 ग्रामों में वस्त्र, औषध, चावल वगैरा बाटे जा चुके हैं। हमे कुछ सहायता आर्यजनो से मिल रही है लेकिन स्थिति को देखते हुए जो काफी कम है। अतः हम सभी भद्रजनो से आग्रह करते हैं कि इन गरीब जनो की सहायता कर उन्हें बचावें। ध्यान रहे मानव की रक्षा सबसे बड़ा धर्म है।

अपनी सहायता निम्न पते पर भेजें।
गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड जि कालाहाडी, (उडीसा)

पजाब के बन्धु धन या नकद रूप मे पूज्य महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी (पजाब) के पते पर भी भेज सकते हैं। वे स्वय इस दिशा में पहले भी बहुत काय कर रहे हैं।

—आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड कालाहाडी (उडीसा)

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, जयपुर रोड़ अजमेर

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास मे दिवराला गए आर्य वीरागनाओ के जत्थे का स्वागत किया गया। स्वागत समारोह सकल्प समारोह के रूप मे मनाया गया। न्यास के सभा कक्ष में आयोजित उक्त समारोह की अध्यक्षता श्री महावीर बहल उप-प्रधान महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास ने की तथा सयोजन न्यास मन्त्री श्री मदन मोहन शास्त्री ने किया।

श्री वेदवती मन्त्राणी महिला समाज ने दिवराला यात्रा के लिए गए वीरा-गनाओं के जत्थे के संस्मरण सुनाये तथा बताया कि इस यात्रा यज्ञ मे भाग लेने वाले हुए नर-नारी में अपार उत्साह था। श्रीमती वेदवती ने अपने भाषण मे सरकार के कदम की कडी शब्दो में भर्त्सना करते हुए कहा कि हम सभी इस बात का संकल्प लेते हैं कि जब तक नारी शोषण व उत्पीड़न का कलक समाज में से नहीं मिटेगा हम हर संघर्ष के लिए अन्तिम श्वास तक तैयार हैं। समारोह उपस्थित सभी श्री नर नारियों ने प्रस्ताव पास कर सरकार के अवसरवादी कदम की भर्त्सना की तथा स्वामी अग्निवेश द्वारा भविष्य मे नारी सुधारण के लिए किये जाने वाले कार्यक्रमो को पूरा समर्थन दिया।

न्यास की ओर से सभी महिलाओं का स्वागत न्यास मन्त्री श्री प. मदन मोहन शास्त्री ने किया।

—वीरेन्द्र सिंह सेवासिंह आर्य

शुद्धि समाचार

दिनाक 29 12 87 को आर्य समाज मन्दिर समालखा मे एक परिवार मुसल-मान मट को उसकी इच्छा के अनुसार वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया और यज्ञ हवन किया गया। और यज्ञ हवन में श्री मांगेराम उपदेशक और श्री कर्मसिंह आदि ने भाग लिया। ये कार्यवाही हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती के द्वारा ये कार्यवाही की गई। और वस्त्र वितरण किए गए। उस परिवार को एक कम्बल भी दिया गया जो भगवत भिक्षु वानप्रस्थी मन्त्री आर्य समाज पानी-पत के द्वारा दिया गया।

प्रधान—रामरत्न

भूल सुधार

आर्य मर्यादा के अक 10 1 88 के पृष्ठ 4 के प्रथम कालम मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन 3-1 88 के स्थान पर 3-1-78 छप गया है। क्योकि उनका जन्म 3-1-1878 ई को ग्रा मोही जिला लुधियाना मे हुआ था।

—सम्पादक

शोक समाचार

आर्य समाज पीपाड के भूतपूर्व प्रधान श्री हीरालाल जी बडिया का आत्मिक निधन दिनाक 21-11-8 को सांय 5 बजे हो गया। हीरालाल जी बडिया ने विभिन्न पदो पर बडी लगन से कार्य किया। आर्य समाज ने एक कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया है जिसकी पूर्ति होना कठिन है। शोक सभा स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में दिनांक 23 11-87 को रात्रि के 8 बजे आर्य समाज मन्दिर में हुई जिसमें सभी सदस्यों ने उनके किये हुये कार्यों की सराहना की व श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—आर्य कवर परिहार
मन्त्री

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के भावी कार्यक्रम

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए सक्रिय एवं कार्यरत है। श्री नरेन्द्रसिंह जी भल्ला की अध्यक्षता में हुई बैठक में आगामी कार्यक्रम निश्चित किए गए —

(1) आर्य समाज के सदस्य श्री हरकिशन लाल सोनी एडवोकेट को लुधियाना बार एसोसियेशन के प्रधान निर्वाचित होने के उपलक्ष्य में एक समारोह आयोजित करके सम्मानित किया जाएगा।

(2) 14 1 1988 वीरवार को मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में एक बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया।

(3) 26 1 1988 को गणतन्त्र दिवस को राष्ट्रीय एकता के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन युवक देश की एकता एवं अखण्डता के लिए एक जुट कार्य करने की शपथ ग्रहण करेंगे।

(4) ऋषि बोधोत्सव—14 15 16 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में मनाया जाएगा। ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) के पर्व पर सायंकाल 3 00 बजे से 5 00 बजे तक मुख्य समारोह आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर लुधियाना के प्रमुख नागरिकों को आमन्त्रित किया जाएगा तथा जलपान का प्रबन्ध भी होगा।

(5) साप्ताहिक सत्संग में विशेष प्रवचन का प्रबन्ध (समय 8 30 से 11 बजे तक)

10 1 88 रविवार श्री मंगल सेन जी वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी।

17 1 88 श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री पुरोहित।

आर्य समाज [illegible] के समाचार

आर्य समाज [illegible] में 20 12 87 को साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ [illegible]

24 1 88 माता सुमनावति जी, प्रधाना स्त्री आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना।

31 1 88 डा [illegible] जी शास्त्री एम ए पी एच डी

/ स्त्री आर्य समाज द्वारा 14-1 88 से 21 1 88 तक सायंकाल 3 00 बजे से 5-00 बजे तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

सभी लुधियाना वासियों से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में इस कार्यक्रमों में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

— रोशनलाल शर्मा
महामन्त्री

[illegible] द्वारा उसी [illegible] उसी प्रथा पर रोक कर उनसे विदाई [illegible] किए तथा वेदों में इस प्रकार का कोई भी विधान नहीं है।

23-12-87 को [illegible] विचार [illegible]। [illegible] स्वामी [illegible] जी [illegible] पर [illegible] कार्यक्रम प्रस्तुत किया। [illegible] उपेक्षा आदि कुप्रथाओं के लिए [illegible] आदि एकत्रित करने की अपील की गई।

—[illegible] आर्य
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जनहित प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. P.b/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 42. 11 माघ सम्वत् 2044 तदानुसार 24 जनवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

26 जनवरी गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व

भारत एक धार्मिक देश है। यहां कई धार्मिक पर्व समय समय पर मनाए जाते हैं। कुछ धार्मिक और सामाजिक पर्वों के अतिरिक्त यहां राष्ट्रीय पर्व भी मनाए जाते हैं। 15 अगस्त और 26 जनवरी यह दोनों हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत वर्षों की गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर आजाद हुआ था और 26 जनवरी 1950 को भारतीय गणतन्त्रात्मक लोकराज का अपना-अपना बनाया गया संविधान लागू किया गया था अर्थात् 26 जनवरी 1950 को भारत में गवर्नर जनरल के पद की समाप्ति हुई थी। इसी दिन प्रथम एवं अन्तिम गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य ने नए चुने गए राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद जी को अपना कार्यभार सौंपा था।

26 जनवरी को पर्व के रूप में 1950 से पहले भी प्रतिवर्ष मनाया जाता था क्योंकि 1929 में लाहौर में जो कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था। उस समय कांग्रेस के प्रधान श्री जवाहरलाल नेहरू ने एक आदेश निकाला था कि 26 जनवरी के दिन प्रत्येक भारतवासी राष्ट्रीय झण्डे के नीचे खड़ा होकर प्रतिज्ञा करे कि हम भारत के लिए आजादी की मांग करेंगे और उसके लिए आजादी तक संघर्ष करेंगे। तभी से 26 जनवरी का पर्व मनाने की परम्परा चल पड़ी।

वैसे तो यह पर्व देश के हर छोटे बड़े शहर में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। परन्तु भारत की राजधानी दिल्ली में इसकी शोभा देखने को बनती है। दिल्ली के बाजारों में एक विशाल शोभा यात्रा निकाली जाती है। जिसमें जहां लाखों लोग भाग लेते हैं वहां सैनिक प्रदर्शन भी किया जाता है। कई प्रकार की झांकियां निकाली जाती हैं। जिनकी तैयारी लगभग एक माह पहले आरम्भ हो जाती है। सैनिक अस्त्र-शस्त्रों का भी प्रदर्शन किया जाता है। इसके साथ ही कई ऐतिहासिक तथा महत्वपूर्ण वस्तुएं भी दिखाई जाती हैं।

15 अगस्त की भान्ति यह पर्व भी हमें आकर झकझोर जाता है और अपने देश के सम्बन्ध में विचार करने पर विवश कर देता है। इसको मनाते समय जहां हमें वर्तमान का पता चलता है वहां अतीत की याद भी अनायास ही आ जाती है। कितने बलिदानों के बाद भारत में यह दिन आया था। यदि यह कहा जाए कि यह दिन लेखा-जोखा करने का दिन है तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। हम इस पर्व को मनाते हुए विचार करें कि हमने क्या खोया-क्या पाया? हम अपनी निश्चित योजना में कहां तक सफल हुए हैं? आज हमारा देश किस बुलन्दी पर पहुंचा है। आज वह कितना आत्म-निर्भर है?

यह पर्व देश के बारे में चिन्तन करने का पर्व है। जिस देश की मिट्टी से हमारा शरीर बना है जिसकी भूमि पर हम सरक-सरक कर बड़े हुए हैं जो हमें अन्न-जल देने वाली हमारी मातृ भूमि है उसके प्रति हम क्या कर रहे हैं अर्थात् उसके प्रति अपना कर्त्तव्य कहां तक निभा रहे हैं। इस दिन इसका भी चिन्तन करें और इस दिन प्रतिज्ञा करें कि हम अनेकों बलिदानों से प्राप्त आजादी को हर कीमत पर कायम रखेंगे। किसी भी देश-द्रोही गद्दार की यहां दाल न गलने देंगे। न ही इस भूमि पर उसका पांव जमने देंगे।

आओ 26 जनवरी को इस पर्व को हम सब भी समारोहपूर्वक मनाएं और देश के भूतकाल वर्तमान काल और भविष्यत काल का चिन्तन करें।

हम क्या थे और क्या होंगे,
अभी।
आओ विचारें बैठकर यह
समस्याएं सभी
आओ इस गौरवमय पर्व को
सब छोटे बड़े मिल कर मनाएं।

—स सम्पादक

अमर रहे यह देश हमारा

अमर रहे यह देश हमारा।
तन-मन-धन सब इस पर वारा॥
इस देश हित हम मरेंगे।
इस देश हित हम कटेंगे॥
हम वीर हैं नित आगे बढ़ेंगे।
आगे बढ़ना अधिकार हमारा।
अमर रहे यह देश हमारा॥
इसका नाम है भारत प्यारा।
रंग बिरंगे फूलों से है सजा सारा।
जय जय भारत प्यारा देश हमारा॥
अमर रहे यह देश हमारा॥

व्याख्यान- माला-[illegible]

परोपकारमय जीवन ही जीवन है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर)

वाणी रसवती यस्य भार्या पुत्रवती सती ।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम् ।1।

जिसकी वाणी रसीली, पत्नी सदाचारिणी एवं पुत्रवती तथा दान में लगी लक्ष्मी दान युक्त हो, उसका जीवन सफल है।

धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ।2।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन में से जिसके जीवन में एक भी नहीं उसका जन्म बकरी के गले के स्तन की भांति व्यर्थ है।

दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथितं यश ।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव स ।3।

जिस मनुष्य का यश, दान, तपस्या तथा शूरता में प्रसिद्ध नहीं है, विद्या तथा धन कमाने में भी प्रख्यात नहीं है, वह मनुष्य तो माता का पुत्र नहीं अपितु मल मात्र ही है।

स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य स जीवति ।
गुणधर्मविहीनो यो निष्फलं तस्य जीवितम् ।4।

वही व्यक्ति जीवित है जिसमें सदाचार आदि गुण हैं, वही जीता है जिसने धार्मिक कार्य किए हैं, गुण व धर्म से हीन जो है उसका जीवन निष्फल है।

स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नितम् ।
परिवर्तिनि ससारे मृतः को वा न जायते ।5।

जिसके जन्म से वंश की उन्नति होती है उसी का जन्म सफल है अन्यथा इस परिवर्तनशील ससार में कौन नहीं मरता या कौन जन्म नहीं लेता ?

दानोपभोगरहिता दिवसा यस्य यान्ति वै ।
स लोहकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति ।6।

जिस मनुष्य के दिन दान तथा धन के सद्व्यय से शून्य व्यतीत होते हैं, वह लोहार की धौंकनी के समान श्वास लेता हुआ भी जीवित नहीं है।

यस्य जीवन्ति धर्मेण पुत्रा मित्राणी बान्धवा ।
सफलं जीवित तस्य आत्मार्थे को हि जीवति ।7।

जिसके धार्मिक जीवन से प्रेरणा पाकर पुत्र, मित्र तथा सम्बन्धी जीवन यापन करते हैं, उसका जीवन सफल होता है, अथवा केवल अपने लिये ही कौन नहीं जीता ? सभी जीते हैं।

धान वित्तादृत वाच कीर्तिधर्मौ तथाऽऽयुष ।
परोपकरण कायादसारात्सार महरेत् ।8।

मानव को चाहिए कि आगे लिखी निस्सार वस्तुओं से सार तत्व को ग्रहण करे, धन से दान का, वाणी से ज्ञान व सत्य का आयु मात्र से यश और धर्म का तथा शरीर से परोपकार रूप सार को ग्रहण करें। अर्थात् दान से धन, सत्या-चरण से वाणी, यश कमाने से आयु तथा परोपकार से शरीर सफल होता है।

अस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवति ।
काकोऽपि किन्न कुरुते चञ्चा स्वोदरपूरणम् ।9।

जिसके जीवन से बहुतेरे जन जीते हैं, वस्तुतः वही जीता है। अन्यथा अपनी उदरपूर्ति तो कौवे भी चोंच से [illegible]।

परोपकरणं येषां जागति हृदये सताम् ।
विपदस्तेषां नश्यन्ति सम्पदः स्युः पदे पदे ।10।

जिन सत्पुरुषों के हृदय में परोपकार जागता है, उनकी विपत्तियां नष्ट हो जाती हैं और पग-पग पर सम्पत्तियां आती हैं।

आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन्को न जीवति मानवः ।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ।11।

इस जीव लोक में अपने लिये कौन नहीं जीता। परन्तु परोपकार के लिये जो जीता है वास्तव में वही जीता है।

दधीचिना पुरा गीतः श्लोकश्चायं भुवि ।
सर्व धर्ममयः सार: सर्वधर्मज्ञसंमत: ।12।

परोपकार: कर्तव्यः प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात्क्रतुशतैरपि ।13।

पहले समय में दधीचि ऋषि द्वारा भूमि पर गाया गया श्लोक सुना जाता है कि सब धर्मज्ञों द्वारा सम्मत सभी के द्वारा धारण करने योग्य तथा सार स्वरूप है।

परोपकार प्राणों के गले तक पहुंच जाने पर भी करना चाहिए क्योंकि परोपकार से पैदा होने वाला पुण्य सैंकडों यज्ञों से भी बढ़ कर होता है।

धनानि जीवितञ्चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत् ।
तन्निमित्तो वरं त्यागो विनाशे नियते सति ।14।

बुद्धिमान धन और जीवन को परोपकार के लिए त्याग देवे क्योंकि विनाश अवश्यम्भावी है अत अच्छे निमित्त के लिये प्राणों का त्यागना श्रेयस्कर है।

रविश्चन्द्रो घना वृक्षा नदी गावश्च सज्जना: ।
एते परोपकाराय युगे दैवेन निर्मिता ।15।

सत्युगादि प्रत्येक युग में सूर्य, चन्द्र, बादल, वृक्ष, नदी, गऊएं और सज्जन को परमात्मा ने परोपकार के लिए ही बनाया है।

तृणं चाहं वरं मन्ये नरादनुपकारिण: ।
घासो भूत्वा पशून्पाति भीरून्पाति रणाङ्गणे ।16।

जो व्यक्ति उपकार नहीं कर सकता उससे मैं घास को अच्छा मानता हूं। क्योंकि घास (पशुओं का भोजन होने से) पशुओं को पालता है, और डरपोकों को युद्ध में बचाता है। वे डर कर घास की आड़ में ही छिपकर प्राण बचाते हैं।

परोपकारो देहेन भवेच्चेत्किमत परम् ।
देहिन: करणीयं स्याच्चार्सं देहफलं यत ।17।

यदि इस शरीर से परोपकार हो जाए तो इससे बढ़ा और क्या लाभ होगा। क्योंकि शरीर धारी के लिए शरीर को धारण करने का फल परोपकार रूप कर्तव्य ही है।

गच्छतस्तिष्ठतोवाऽपि जाग्रत स्वपतोऽपि वा ।
यन्न भूतहितार्थाय तत्पशोरिव चेष्टितम् ।18।

चलते हुए, बैठे हुए, अथवा सोते हुए पुरुष की जो चेष्टा प्राणी हित के लिये नहीं होती वह चेष्टा तो मानो पशु तुल्य ही है।

कृते प्रत्युपकारो यो वणिग्धर्मो न साधुता ।
तत्रापि ये न कुर्वन्ति पशवस्ते न मानुषा. ।19।

जो किसी के उपकार का बदला है वह तो वणिओ का धर्म है कोई साधुपन नहीं। फिर भी जो किए के बदले में भी नहीं करते वे पशु हैं। मानव नहीं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

हम गोष्ठियां करते रहेंगे और दुनिया आगे निकल जाएगी

स्वामी अग्निवेश जी एक योग्य शिक्षित और कर्मठ युवक हैं। कुछ वर्ष पहले आर्य समाज के लिए उनमें बहुत उत्साह था। इसीलिए उन्होंने सन्यास भी ले लिया था। फिर उनके दिमाग में राजनीति आ गई और उन्होंने समझा कि आज के युग में इसके बिना कोई संस्था आगे नहीं चल सकती उन्होंने और स्वामी इन्द्रवेश से मिल कर आर्य सभा बना ली परन्तु अग्निवेश जी का झुकाव शुरू से साम्यवाद की तरफ था। मैं उनके साथ अन्याय करना नहीं चाहता। इसीलिए यह कह सकता हूं कि वह समाज के दलित और पीड़ित वर्ग को उठाना चाहते थे। वह विधिवत किसी कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मलित तो न हुए परन्तु ऐसी संस्थाओ और ऐसे आन्दोलनों का समर्थन करते रहे जिन्हें साम्यवादी चलाते थे। इसका यह परिणाम भी हुआ कि वह धीरे-2 आर्य समाज से बिल्कुल दूर चले गए और राजनीति में उन्होंने अपनी आर्य सभा को छोड़ कर जनता पार्टी का साथ देना प्रारम्भ कर दिया उनके सहारे वह एक बार हरियाणा असैम्बली के सदस्य भी चुने गए और हरियाणा मन्त्रिमण्डल मे भी ले लिए गए। परन्तु वहां भी वह न चल सके और उन्हें जनता पार्टी भी छोड़नी पड़ी। कई बार मैं सोचता हूं कि यह एक ऐसा युवक है जिसके अन्दर कुछ करने की तड़प है और तड़प मे वह भटकता फिरता है। कभी किधर जाता है कभी किधर। इसका एक परिणाम यह भी हो रहा है कि अब उस पर किसी को विश्वास नहीं हो रहा है। परन्तु उसकी तड़प भी उसे चैन से नहीं बैठने देती है इसलिए कुछ न कुछ करता रहता है। पिछले दिनों उसने सती प्रथा के विरोध में दिल्ली से दिवराला तक पद यात्रा की। और यह सब कुछ आर्य समाज के नाम पर किया उसका प्रभाव अग्निवेश जी के लिए भी अच्छा रहा और आर्य समाज के लिए भी। जन साधारण में आर्य समाज का नाम एक बार फिर चमका और लोगों ने समझना शुरू किया कि यह एक संस्था है जो इस समय तक मौन बैठी थी और कुछ भी न कर रही थी फिर सक्रिय हो गई है। समाचार पत्रों में भी आर्य समाज के विषय में बहुत कुछ लिखा जाने लगा और इस तरह से उसका प्रचार भी होने लगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि अग्निवेश जी अब इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि आर्य समाज के द्वारा वह बहुत कुछ कर सकते हैं। इस लिए उचित यही रहेगा कि उसे ही अपने प्रचार का साधन बना कर आगे काम किया जाए परन्तु आज आर्य समाज ऐसी संस्था नहीं जिसे कोई व्यक्ति जिधर ले जाना चाहे ले जाए। यह एक सुशिक्षित और बुद्धिजीवियों की संस्था है जो कोई व्यक्ति उन्हे अपने साथ ले जाना चाहे उन्हें पहले अपने पक्ष में करना पड़ता है। तब कहीं आर्य समाजी उसके साथ चलते हैं। इस तथ्य को समझते हुए स्वामी अग्निवेश ने 24,25 और 26 जनवरी को दिल्ली में आर्य समाज के कुछ विशिष्ट विचारवान मित्रों की एक संगोष्ठी आयोजित करने का फैसला किया है ताकि सब मिल बैठ कर आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर विचार विमर्श करके कम से कम एक वर्ष की गतिविधियों का प्रारूप तैयार कर सकें।

मैं स्वामी अग्निवेश जी के इस प्रयास का स्वागत करता हू कोई भी व्यक्ति जो आर्य समाज के वर्तमान गतिरोध को समाप्त करके उसमें एक नए जीवन का संचार करने के लिए कोई भी पग उठाए हमे उसका स्वागत करना चाहिए। परन्तु मुझे डर है कि स्वामी अग्निवेश जी की इस संगोष्ठी का अन्त में वही परिणाम निकलेगा जो इससे पहले इसी प्रकार की और संगोष्ठियों का परिणाम निकल चुका है। अजमेर के श्री दत्तात्रेय आर्य बहुत देर से इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। उन्होने नया कार्यक्रम भी बनाया। संगोष्ठियां भी की। परन्तु बना बनाया कुछ नहीं। इसी प्रकार श्री प्रशान्त वेदालंकार और डा. भवानीलाल जी भारतीय भी इस दिशा में बहुत देर से लगे हुए हैं लेकिन कुछ भी नहीं कर सके। मेरे विचार में यही अन्त में स्वामी अग्निवेश जी की संगोष्ठी का होगा। कारण यह कि जब तक आर्य समाज का नेतृत्व उन लोगो के हाथ में नहीं आता जो इसमें कुछ परिवर्तन लाना चाहते हैं और आर्य जनता को कोई नई दिशा दिखा सकते हैं उस समय तक कोई भी संगोष्ठी सफल नहीं हो सकती। कोई भी सम्मेलन या संगोष्ठी यदि किसी परिणाम पर पहुंचे और उसे आगे क्रियान्वित करने वाली संस्था न हो तो उसमें कोई सफलता नहीं हो सकती। मैं इसे आर्य समाज का दुर्भाग्य समझता हूं कि जिन के हाथ में आर्य समाज का नेतृत्व है वह देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आर्य समाज को कोई नई दिशा नहीं दिखा सकते न उनके पास इसके लिए समय है न उनमें यह योग्यता है। स्वामी अग्निवेश दिवराला की पद यात्रा के लिए निकले तो कुछ लोग उनके साथ हो लिए केवल इस लिए कि उन्हे इससे जो श्रेय मिल सकता है वह मिल जाए इससे अधिक उन्हें इसमें कोई दिलचस्पी न थी। श्री दत्तात्रेय ने 1983 में जब अजमेर ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाई गई थी। उससे पहले यह कहना शुरू किया था कि देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आर्य समाज के सामने कोई नया कार्यक्रम प्रस्तुत करने की आवश्यकता है परन्तु उनका सारा प्रयत्न विफल गया। मैं समझता कि अन्त में अग्निवेश जी की संगोष्ठी का भी यही असर होगा। आर्य समाजी संगोष्ठियां करते रहेंगे और दुनिया आगे बढ़ती रहेगी और यह क्रम उस समय तक चलता रहेगा जब तक आर्य समाज की बागडोर उन लोगों के हाथ में नहीं आती जो आर्य समाज को एक नई दिशा दिखा सकते है।

—वीरेन्द्र

श्री रणवीर भाटिया की धर्मपत्नी का देहावसान

लुधियाना के कर्मठ आर्य समाजी श्री रणवीर भाटिया की धर्मपत्नी श्रीमती रमेशरानी का पिछले दिनो देहान्त हो गया। इसके कारण भाटिया परिवार को जो आघात पहुचा है उसका अनुमान लगाना कठिन नही। वह देवी इस परिवार की प्रेरणा स्रोत थी। भाटिया जी आर्य समाज की इतना सेवा करते थे तो बहुत कुछ अपनी पत्नी के सहारे। उन्हे कभी अपने परिवार की चिन्ता न होती थी। उनके पिता श्री महाशय खुशहालचन्द जी भी अब बहुत वृद्ध हो गए हैं और उनकी नेत्र ज्योति भी जाती रही वह श्रीमती रमेशरानी के सहारे ही चल रहे थे अब सारा परिवार अपने आप को निस्सहाय समझता है। परन्तु यह एक ऐसी स्थिति है जिसमे कि कोई कुछ नही कर सकता, यह अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है परन्तु जो कुछ परमात्मा को स्वीकार होता है उसके आगे सब को सिर झुकाना पड़ता है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से भाटिया परिवार के इस दु:ख मे सम्मिलित होते हुए परमात्मा से यही प्रार्थना करता हू कि दिवंगतात्मा को शान्ति प्रदान करे और भाटिया परिवार को यह शक्ति दे कि वह इस वियोग को सहन कर सके।

—वीरेन्द्र

एक सौ वर्ष पहले पंजाब का आर्य समाज

१५ जून १८८६

आर्य समाज जालन्धर ने अपना एक मन्दिर बनवाने के लिए चन्दा इकट्ठा करना शुरू किया है, यद्यपि मौसम खराब होने के कारण बहुत व्यक्ति इसमे भाग नही ले सके फिर भी चार सौ रुपया इकट्ठा कर लिया गया जिसमे से एक सौ रुपया लाला देवराज जी ने दिया और एक सौ रुपया लाला मुन्शीराम ने दिया। इसके अतिरिक्त एक रुपया एक सज्जन शाह मोहम्मद ने दिया। दो रुपया मुन्शी बरकतअली ने दिए, तीन रुपये मुन्शी अहमद बख्श ने दिए और मुसम्मत जीवनी ने दो हजार ईंटे दी। इनके इलावा भवन बनाने के लिए दो राज मिस्त्रियो ने चार दिन के लिए निशुल्क काम करने के लिए श्रमदान दिया।

❂ बाबू नत्थु मल और प. रूड़चन्द पटवारी डेरा बाबा नानक और फतेहगढ मे आर्य समाज की स्थापना का प्रयास कर रहे है।

❂ धारीवाल की देश उपकारक सभा ने अब अपना नाम आर्य समाज रख लिया है। इसके प्रधान लाला सहाराम ने इसके व्यय के लिए अपने पास से रुपया देने का वचन दिया और कहा कि जब तक यह अपने पांव पर नही खड़ी हो जाती वह इसका सारा खर्चा दिया करेंगे।

—वीरेन्द्र

प्रभु-दर्शन का एक साधन ब्रह्मचर्य

लेखक—स्व. श्री पं. मुनीश्वरदेव जी सिद्धान्तशिरोमणि
भू. पू. महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

स्व. श्री पं. मुनीश्वरदेव जी सिद्धान्त शिरोमणि आर्य समाज के एक सुयोग्य विद्वान् उपदेशक थे वह एक अच्छे लेखक भी थे। ब्रह्मचर्य के महत्व पर उनका लिखा एक लेख बहुत ही उपयोगी समझते हुए पाठकों के लाभार्थ नीचे दिया जा रहा है। मैं समझता हूं कि इस लेख से नवयुवकों को एक नई प्रेरणा मिलेगी। —प्र. सम्पादक

ओ३म्। विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।

पूजा के योग्य पवित्र माताओ! बहिनों! और उपस्थित आदरणीय आर्य सज्जनो!

वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर आप अनेक बार अपने पूज्य विद्वानों द्वारा सुन चुके हैं, कि इस प्राणी जगत् में एक मनुष्य रूप प्राणी ही सर्वश्रेष्ठ है, इसकी सर्वश्रेष्ठता इसी बात में है कि वह उस मार्ग पर चले जिस पर मनुष्येतर प्राणी चलने में सर्वथा असमर्थ रहता है, वह मार्ग प्रभु-प्राप्ति अर्थात् उसके यथार्थ ज्ञान का है। बताइये इस मार्ग पर गाय, घोड़ा अथवा कुत्ता, कौवा आदि कभी चल सकते हैं? अब यदि मैं और आप इस पवित्र मानव चोले को धारण करके भी इस ओर न चले तो फिर क्या यह आशा की जा सकती है कि यह चोला दुबारा हम को मिल सकेगा। अतः सदा सचेत रहने की आवश्यकता है। यह तो हमने जान लिया कि मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य 'ब्रह्म प्राप्ति' है परन्तु अब प्रश्न यह है कि हम उसको किन साधनों से प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि जब तक साधक, साधनों से सम्पन्न न हो तब तक साध्य की सिद्धि में भला कैसे समर्थ हो सकता है। अतः सर्वतः प्रथम साधक हम लोगों को साध्य-ब्रह्म की प्राप्ति के लिए, साधनों को जुटाने की आवश्यकता है। क्या आप नहीं देखते कि प्रत्येक मनुष्य कार्य के सम्पादन से पूर्व, कार्य सम्पादक साधनों को जुटाता है, फिर हम साधक बिना साधनों को जुटाए साध्य की सिद्धि में कैसे सफल हो सकते हैं?

वह साधन कौन से हैं।

जिन से हम साध्य को सिद्ध कर सकते हैं। वह प्रमुख चार साधन हैं, जिन का निर्देश, हमारे पूर्वज ऋषियों महर्षियों ने योग और समाधि में विचार विमर्श करके अत्यन्तप्रबुद्ध द्वारा किया, वह यह है:—

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा,
सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।

अर्थात्—सत्य, तप, यथार्थ ज्ञान और ब्रह्मचर्य, इन साधनों द्वारा वह ब्रह्म लभ्य अर्थात् प्राप्त होने योग्य है, इनमें से आज अन्तिम साधन 'ब्रह्मचर्य' पर ही विचार करेंगे। क्योंकि वर्तमान में सभी दृष्टियों से यदि देखा जाए तो इसी पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है।

यह ब्रह्मचर्य क्या है।

यदि किसी से पूछा जाए कि 'ब्रह्मचर्य' क्या है, तो वह यही उत्तर देगा है कि 'गृहस्थ में प्रविष्ट न होना'। है तो यह भी एक अर्थ ब्रह्मचर्य का, पर यही एक नहीं, कुछ और भी इसके महत्वपूर्ण भाव हैं, जिनको आज मानव प्रायः भूल सा गया है, अतः ध्यान दीजिए। ब्रह्म शब्द के अनेक अर्थों में से हम इस समय केवल 3 ही अर्थ आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं:—

1—ब्रह्म का अर्थ परमेश्वर है, उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना में सदा संलग्न व मग्न रहना। जो ऐसा ईश्वरोपासक है, वह किसी भी आश्रम में हो ब्रह्मचारी ही कहलाता है।

2—ब्रह्म का अर्थ वेद है जो सदा स्वसामर्थ्यानुसार वेद को पढ़ता-पढ़ाता, सुनता सुनाता और तदनुसार आचरण करता है, वह भी ब्रह्मचारी ही है। भले ही वह किसी आश्रम में हो।

3—ब्रह्म का अर्थ शुक्र अर्थात् वीर्य संरक्षण है, जो इस दिशा में सदा प्रयत्नशील व जागरूक रहता है, वह भी ब्रह्मचारी कहलाता है।

इस प्रकार ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले व्यक्तियों को चार अमूल्य रत्नों की प्राप्ति सुगम हो जाती है, यह निम्न प्रकार है:—

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः तथा च।

निश्चिन्तता निर्भयता नीरोग्य च माधुरी॥

नियमतः पूर्वोक्त रीति से ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले व्यक्ति को निश्चिन्तता-बेफिक्री निर्भयता-बेखौफी, नीरोग्यम्-तन्दुरुस्ती और च माधुरी-खूबसूरती, यह चार बहुमूल्य रत्न प्राप्त होते हैं। क्या यह किसी जौहरी की दुकान पर मिल सकते हैं? नहीं।

अब ब्रह्मचारी की परीक्षा कैसे हो, कि यह ब्रह्मचारी है, इसके लिये प्रमुख चार कसौटियां हैं। जो इन पर पूर्ण रूप से उतरता है, वही सच्चा ब्रह्मचारी है।

चार कसौटियां

1—जिसका शुद्ध आहार है।
2—जिसका शुद्ध विचार है।
3—जिसका शुद्ध आचार है।
4—जिसका शुद्ध व्यवहार है।

बिना इन चार शुद्धियों के कोई ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता और नहीं ब्रह्मचारी कहला सकता है। अब सुनिए, वेद में इसके महत्व पर कितना प्रकाश डाला है:—

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

अर्थात्—देवजन भी ब्रह्मचर्य के तपोबल से मृत्यु को जीतने में समर्थ होते हैं। अर्थात् जो मृत्यु सबको दबाता है, देव पुरुष उसको भी ब्रह्मचर्य से दबा देते हैं।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।

ब्रह्मचर्य के तेज से राजा, राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। आज राष्ट्र के कर्णधारों ने ब्रह्मचर्य की महत्ता को, सुरैया और नरगिस की महत्ता बढ़ा कर, बिल्कुल घटा दिया है। इसी कारण राष्ट्र में अनैतिकता और चरित्र हीनता दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई दीख रही है, ऐसी दशा में क्या राष्ट्रोन्नायकों को इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है? बराबर है।

आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते।

अर्थात्—आचार्य, उपाध्याय और अध्यापक भी ब्रह्मचर्य पालन द्वारा अपने शिष्यों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं, बिना ब्रह्मचर्य पालन के आचार्य और शिष्य के सम्बन्ध बिगड़ते हुए दीख रहे हैं। अतः आचार्यादि के लिए भी यह साधन अत्युपयोगी और आवश्यक है। इसी लिए वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान्, बाल ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि:—

"जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान् होता है"

इससे सिद्ध है कि राष्ट्र-कल्याण व विश्व-कल्याण के लिए ब्रह्मचर्य पालन एक परमोपयोगी साधन है।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी

ब्रह्मचर्य पालन की आवश्यकता है, आपने पढ़ा व सुना होगा कि एक बार प्रजापति गुरु ने देवों और असुरों की भरी सभा में यह प्रवचन किया कि:—

य आत्माऽपहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको
ऽविजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः
सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः।

अर्थात् जो आत्मा निष्पाप, अजर, अमर, अशोक, भूख और प्यास से पृथक्, सत्यकाम और सत्य संकल्प वाला है वही ढूंढना और विशेष रूप से जानना चाहिए।

इस पर देवों और असुरों में पर्याप्त चर्चा चली, और निश्चय किया कि इस 'आत्मतत्व' को अवश्य जानना चाहिए, बिना इस के जाने मानव जीवन निष्फल और नीरस है। अन्ततः दोनों दलों ने अपना एक-एक प्रतिनिधि क्रमशः इन्द्र और विरोचन को गुरु प्रजापति के पास उक्त रहस्य को जानने के लिए भेजा। इन्द्र और विरोचन के आगमन के प्रयोजन को सुन कर प्रजापति ने 32 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पूर्वक आश्रम में निवास करो, दोनों से कहा, तदनुसार दोनों प्रतिनिधि ब्रह्मचारी रहे, तदनुसार गुरु ने पूछा कि अच्छा तुम यह जल का प्याला लो और देख कर बताओ कि तुम्हें इसमें क्या दीखता है। इस पर दोनों जिज्ञासु बोले कि अपने शरीर का प्रतिबिम्ब दीखता है। गुरु बोले, बस यही है सब कुछ इसे समझो। यह सुन कर असुर प्रतिनिधि विरोचन तो बल्लियों उछलता हुआ अपने दल की ओर चल दिया, परन्तु देव प्रतिनिधि इन्द्र कुछ देर वहीं खड़ा रह सोचने लगा कि यह शरीर ही सब कुछ है। शरीर तो नाशवान् है, जल-बुद्बुद की भान्ति क्षणभंगुर है। (नाहमत्र भोग्यं पश्यामि) इस में तो कोई कल्याण नहीं दीखता यह विचार कर फिर गुरु जी के पास गया, गुरु बोले, कि अब क्या पूछते हो, इन्द्र बोला कि मेरी सन्तुष्टि नहीं हुई, गुरु बोले कि अच्छा (वस अपराणि द्वात्रिंशत वर्षाणि) और 32 वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन करो, इन्द्र जिज्ञासु ने फिर ऐसा ही किया, करने के बाद फिर गुरु जी से कहा कि भगवन्! अब तो कृपा करो, गुरु जी बोले प्यारे। अभी समय बैठा है। इन्द्र ने कहा, अनेक बार, तो अब मैं क्या देखते हो।

(क्रमशः)

बाल जगत्—

जीवन सुधार कहानियां

धैर्य तथा आत्म-विश्वास

लेखक—श्री काशीराम जी चावला [illegible]

अमोला गाड़ी में [illegible] नामी एक ब्राह्मण की दो सन्तानें थी। बड़ा लड़का था और छोटी लड़की। लड़का बड़ा बलिष्ठ था और पहलवानी करता था। एक बार कुश्ती लड़ते उसके सिर और गर्दन में इतनी गहरी चोट लगी कि अस्पताल में उसकी चिकित्सा करने पर भी वह बच न सका। माता-पिता का इकलौता पुत्र होने के कारण स्वभावतः उनके इस [illegible] को बड़ा गम्भीर धक्का लगा। दोनो रोग ग्रस्त रहने लगे। इसलिए उन्होंने अपनी बेटी सरला का विवाह अपनी [illegible] वर्ष की कुमार आयु में ही काशी नगरी के 14 वर्षीय ब्राह्मण लड़के राम प्रकाश से कर दिया। राम प्रकाश की माता सौतेली थी। इसलिये वह रामप्रकाश से अच्छा व्यवहार न करती थी। सरला ने आकर अपनी सास को अपनी सेवा से प्रसन्न करने का पूरा प्रयास किया। किन्तु वह रामप्रकाश और सरला दोनो को ही घर में रहने देना नही चाहती थी। अन्ततः रामप्रकाश ने निश्चय किया कि वह कही और स्थान पर जा कर किसी काम की खोज करें। सरला को वह जाता हुआ कह गया कि काम मिल जाने पर उसे भी बुला लेगा। कुछ समय तक तो राम-प्रकाश के पत्र आते रहे, किन्तु फिर बन्द हो गये, स्वभावतः सरला को बड़ी व्याकुलता हुई। कुछ दिन पश्चात् एक आदमी का पत्र आया कि रामप्रकाश का पेट के एक भयंकर रोग से देहान्त हो गया है। सरला पत्र पढ़ते ही बेसुध हो कर गिर पड़ी। पर्याप्त समय के पश्चात् उसे होश आई तो सास ने कहा कि तू डाइन है, तूने अपने पति को खा लिया है। यह सुन कर वह पुनः बेहोश हो गई और देर तक वैसे ही पड़ी रही। होश आने पर बिना खाये पिये लेट गई और ठण्डी आहें भर-भर कर रात काटी।

दूसरे दिन सास ने फिर उसे कुछ चुभते शब्द कहे और बोली जिधर हमारा लड़का गया है तू भी उधर जा। ऐसी अवस्था में सरला ने सोचा कि ऐसे अप-मानित जीवन से तो मर जाना या भीख मांगना ही अच्छा है। उसने बहुत गम्भी-रता से विचार करके एक योजना बनाई। रात होने पर जब सब सो गये तो कैंची लेकर उसने अपने लम्बे बाल काट कर छोटे-छोटे कर लिये। अपने पति के जो पुराने कपड़े पड़े थे वह पहन लिये। सिर पर पगड़ी बांध ली और इस प्रकार एक लड़के का वेष धारण करके वह आधी रात के समय घर से निकल पड़ी। अंधेरी रात में डर बहुत लग रहा था। किन्तु और कोई उपाय ही न था। प्रातःकाल होने तक वह एक नगर में आ पहुंची। एक धर्म-शाला में जाकर थकी हुई लेट गई और प्रभु भक्ति का एक भजन गाने लगी। राम आश्रय नाम का एक समृद्ध सज्जन प्रातःकाल उसी धर्मशाला में स्नान करने आता था। वह आया तो उसे सरला का गाया भजन बहुत प्यारा लगा। तब वह सरला के पास चला गया और पूछा कि लड़के तुम कौन हो और यहां कैसे लेटे हुए हो। सरला बोली कि मैं पर-देसी हूं और नौकरी की तलाश में आया हूं। राम आश्रय ने पूछा कि क्या तुम रोटी बनाना भी जानते हो तो उसने कहा कि हां जानता हूं।

तब राम आश्रय उसको अपने घर ले गया और अपनी पत्नी लक्ष्मी को दिखाया। वह बोली कि लड़का तो भला मानस प्रतीत होता है, इसलिये इसे रख लेना चाहिये, किन्तु इससे वेतन के विषय में पूछना चाहिए कि क्या लेगा। यह सुन कर सरला ने स्वयं ही कहा कि जो कुछ आप उचित समझेंगे मुझे स्वी-कार होगा। उस दिन का खाना उसी ने बनाया। तब तो वे लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। उनके यहां सन्तान एक लड़की ही थी जो स्कूल में पढ़ती थी। लड़के ने अपना नाम अमृतलाल बताया। लड़की ने एक दिन पढ़ते समय कुछ गलती की तब अमृतलाल ने उसे ठीक किया। यह जानकर कि वह लड़का पढ़ा लिखा भी है वे लोग और अधिक प्रसन्न हुए।

अमृतलाल ने उन लोगो को अपनी सेवा और व्यवहार से इतना प्रसन्न किया कि वे पति-पत्नी तो उसे बेटा-बेटा कह कर पुकारते थे और लड़की भाई कह कर बुलाती थी। घर में बड़ा सुख-भरा वातावरण बना हुआ था।

सरला लड़की से लड़का तो बन गई किन्तु उसकी आवाज, चालढाल और और अन्य चिन्हों से वह लड़का प्रतीत नही होती थी। एक दिन लक्ष्मी ने उसे कह दिया कि बेटा अमृतलाल तुम्हारा आचरण तो सब लड़कियों जैसा है। अमृतलाल लक्ष्मी के ये शब्द सुन कर कुछ घबरा गया और फिर उसके उसके पैरो पर गिर कर रो-रो कर अपनी सारी आप-बीती कह सुनाई। तब लक्ष्मी ने उसे गले लगाया और वह भी उसकी दुःख-भरी कहानी सुन कर रो पड़ी। लड़की ने जब सुना तो वह बोल उठी कि मैं उससे सदा संकोच करती थी, किन्तु भगवान ने मुझे घर में ही ऐसी प्यारी सहेली ही नही अपितु बहन दे दी है। राम आश्रय को जब पता लगा तो उसने सरला को बहुत प्यार किया और बोला कि बेटी मैं एक वैद्य हूं। तुम भी मेरे साथ काम किया करो। तुम स्त्रियों के रोग देख कर मुझे बताया करो। मैं तुम को साथ के साथ वैद्य का काम अर्थात् वैद्य-विद्या भी सिखाता रहूंगा।

एक वर्ष के पश्चात् सरला स्वयं भी रोगियो की चिकित्सा करने लगी। वह बड़े प्यार से बोलती और शुद्ध भाव से इलाज करती इसलिये प्रायः सभी रोगी निरोगता प्राप्त करते। इसी कारण राम आश्रय की दुकान और अधिक चमक उठी।

तब राम आश्रय ने अपनी लड़की की शादी कर दी और सरला से भी आग्रह पूर्वक शादी करने के लिए बल दिया। किन्तु उसने न करते हुए कहा कि मुझे इस प्रकार के जीवन में अधिक सुख और प्रसन्नता मिल रही है।

कुछ वर्षों के पश्चात् राम आश्रय का शरीर दुर्बल हो गया। तब उसने सरला से कहा कि बेटी मैं तो अब अगले लोक जाने वाला हूं। अब तुम ही मेरी सन्तान हो। इसलिए मेरे पश्चात् तुमने ही सब कुछ करना और सम्भालना है। ठीक वैसा ही हुआ। उसके अल्पकाल पश्चात् ही राम आश्रय का निधन हो गया और सरला तन, मन, धन से रोगी सेवा के काम में जुट गयी। उसकी इतनी प्रसिद्धि हुई कि राज-रानियां भी उससे इलाज कराने लगी। धन की कोई कमी न रही। तब सरला ने एक अस्पताल बनाना आरम्भ किया। अन्य दानी लोगो ने भी सहयोग दिया और शीघ्र ही एक भव्य भवन खड़ा हो गया। कई और वैद्य नौकर रख लिये और सैकड़ो लोग उससे लाभ उठाने लगे।

काम क्यों कि बढ़ता जा रहा था, इसलिए सरला ने फिर एक संस्कृत पाठशाला भी जारी कर दी। फिर एक शिल्पशाला का निर्माण कर लिया। फलतः इन तीनो संस्थाओ से सब लोगो का भला हुआ। इस प्रकार सरला ने अपना जीवन बना लिया। और स्थान स्थान पर उसका धन्य-धन्य होने लगा। हमें सरला के जीवन से कई शिक्षायें मिलती हैं। धैर्य धारण करके आत्म-विश्वास रखने, प्रभु का आश्रय लेने और शुद्ध भाव से जनता जनार्दन की सेवा करने के कितने उत्तम परिणाम निकल सकते हैं। यदि सरला धैर्य छोड़ कर आत्म-हत्या कर लेती या कोई और अनुचित पग उठाती तो जाति और देश का इतना भला किस प्रकार हो सकता? सरला का जीवन वास्तव में सराहनीय और अनुकरणीय है।

हिन्दी लिखने में वर्तनी की अशुद्धियां

हिन्दी की पढ़ाई का स्तर कितना गिर चुका है यह इससे स्पष्ट है कि अनेक छात्र दैनिक प्रयोग के शब्दो को गलत रूप में लिखते हैं। उदाहरण के रूप में "गौड़" को "गोड़" 'आशय' को 'आयश', 'ढूंढना' को 'ढूढना' 'पर्याप्त' को 'प्रयाप्त', 'परामर्श' को 'प्रामर्श' आदि लिखा जा रहा है। स्पष्ट है कि प्रारम्भिक कक्षाओ में हिन्दी ठीक ढंग से नही पढ़ाई जा रही है। यह चिन्ता का विषय है। सभी अध्यापको, शिक्षण संस्थाओ आदि से अनुरोध है कि वे इस ओर गम्भीरता से ध्यान दें ताकि छात्र हिन्दी लिखते समय वर्तनी की गलतियां न करें।

कई वर्ष पूर्व भारत सरकार ने हिन्दी वर्तनी के मानकीकरण के विषय में एक समिति नियुक्त की थी जिसकी सिफा-रिशो को सरकार ने स्वीकार किया था। आश्चर्य की बात है कि उस समिति के निर्णयो को भारत सरकार के विभिन्न विभागो के हिन्दी अधिकारी तथा अनु-वादको तक नही जानते और न स्कूलो तथा कालेजो के हिन्दी अध्यापको तथा प्राध्यापको को उसकी जानकारी है। उस समिति की रिपोर्ट निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, पश्चिमी ब्लाक न 7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-66 से प्राप्त की जा सकती है। आशा है हिन्दी के कार्य से सम्बन्धित सभी व्यक्ति हिन्दी वर्तनी के मानकीकरण में तथा अशुद्धियो के निवारण में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

—हरि बाबू कसल-महामन्त्री
हिन्दी व्यवहार संगठन, ई.9/23,
बसंत बिहार, नई दिल्ली

सभी भाषाओं की लिपि देवनागरी क्यों न हो।

लेखक—श्री विशन स्वरूप जी गोयल 3314 बैंक स्ट्रीट करोल बाग पटवारी जी कार्नर नई दिल्ली—5

❖

आज देश की एकता और अखण्डता को तोडने के लिए इस पर चारो ओर से प्रहार किए जा रहे हैं, यहा तक कि सरकार की नीतिया भी इसे तोडने मे ही सहायक सिद्ध हो रही हैं। प्रत्येक बुद्धिजीवी देश भक्त यह सोचने पर विवश है कि इस की रक्षा कैसे की जाए किन्तु उसे कोई मार्ग दिखाई नही दे रहा है। आजादी के बाद इन 40 सालो मे हमारी सरकार ने जो नीतिया अपनायी हैं उनसे अलगाववादी तत्वो को ही बढावा मिला है। इन नीतियो मे विशेषकर सविधान की धारा 370 जिससे कश्मीर को विशेष दर्जा प्राप्त है, विशेष सम्प्रदायो को आरक्षण आदि की सुविधायें देना, सविधान मे अल्पसख्यक-बहुसख्यक शब्दो का समावेश करना, विभिन्न सम्प्रदायो के लिए अलग-अलग कानून बनाना और हिन्दी को राज भाषा का स्थान न देना आदि प्रमुख हैं। भाषा के आधार पर प्रदेशो का गठन भी इसमे पूरा योगदान प्रदान करता है। इन नीतियो से पृथकतावादी तत्वो को विशेष बल मिला है।

आज विशेषत. भाषा पर आधारित प्रदेशो के गठन तथा अपने देश को अपनी भाषाओ मे से किसी का भी राजभाषा न होकर वह स्थान अग्रेजी भाषा को देना इस एकता और अखण्डता को समाप्त करने का मुख्य कारण है। इसी कारण आज अलग-अलग भाषा भाषी अपनी भाषा के आधार पर प्रदेशो के गठन की माग कर रहे हैं इसके लिए सर्व प्रथम भाषा विवाद को समाप्त करना होगा। भाषाओ का विवाद हल करने के लिए देश के सभी लोगो को अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओ को सीखना भी आवश्यक है। जिससे परस्पर भावनात्मक एकता स्थापित हो सके।

हमारे देश की अधिकाश भाषाओ मे सस्कृत के शब्दो का काफी समावेश है किन्तु लिपि देवनागरी न होने क कारण उसे पढना और सीखना और समझना कठिन है क्योकि सस्कृत की लिपि भी देवनागरी ही है। यदि वही भाषा देवनागरी लिपि मे लिखी जाए तो उसे पढने और समझने मे सुविधा होगी और देश की विभिन्न भाषाओ को सीखने मे सरलता हो जाएगी। ऐसा करने से उत्तर दक्षिण और पूर्व पश्चिम का भेदभाव समाप्त हो कर भावनात्मक एकता को साकार रूप दिया जा सकता है।

देश की अधिकाश भाषाओ को यदि एक ही लिपि मे लिखा जाए तो उसे समझने और पढने मे सभी को सुविधा होगी। इसलिए देश म सभी भाषाओ को एक ही लिपि होनी अनिवार्य है। इसके लिए हम चीन से पाठ सीखना चाहिए। चीन एक बहुत विशाल देश है और वहा भी बहुत सारी भाषाए हैं। किन्तु उन सभी की लिपि एक ही है। यह कारण है कि वहा भावनात्मक एकता पायी जाती है। इसी प्रकार यूरोप के भी सभी देशो की भाषाए भिन्न-भिन्न हैं किन्तु उन सभी की लिपि एक हो "रोमन" हैं। किन्तु हमारी सरकार तथा वर्तमान प्रधानमन्त्री देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा की बात तो करत है किन्तु जिन नीतियो से सुरक्षा की जा सकती है उन्ह न अपना कर उन के विपरीत ऐसी नीतिया अपनाते हैं जिन से देश टूट जाए। कारण है कि वे इस ओर से आखे बन्द किए बैठे हैं। उनकी करनी और कथनी मे जमीन और आसमान का अन्तर है। वे कहते हैं बात एकता की रक्षा की और नीति अपनाते हैं एकता का तोडन की। विशेष सम्प्रदाया को तुष्टिकरण की नीति अपनाने के कारण ही शाहबानो के केस मे इन्ही प्रधानमन्त्री ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का स्वागत करन की बजाए उसे रद्द करने के लिए ससद मे एक विधेयक प्रस्तुत कर उसे रद्द कर दिया। इससे मुस्लिम सम्प्रदाय म अलगाववाद को बहुत ही बढावा मिला है। जबकि प्रधानमन्त्री ने जिन्हे न्याय के मामले मे थोडी सी भी जानकारी नही है न्यायविदो का निर्णय रद्द कर दिया। यह कार्यपालिका का न्यायपालिका मे सीधा हस्तक्षेप ही कहा जा सकता है।

अब प्रश्न आता है कि देश को ऐसी कौन सी भाषा है जिसकी लिपि सभी भाषाओ के लिए उपयुक्त हो सकती है और वह वैज्ञानिक दृष्टि से भी सम्पन्न हो। हमे अपने देश को सभी भाषाओ की लिपियो का अध्ययन करने से पता लगता है कि केवल देवनागरी लिपि ही एक ऐसी लिपि है जो जैसी लिखी जाती है वैसी ही पढी जाती है, वैसी ही बोली जाती है और वैसा ही इसका अर्थ होता है। इसके अतिरिक्त देश की अन्य भाषाओ की लिपियो मे यह बात नहीं पायी जाती। इसके अतिरिक्त देश की सभी भाषाओ की लिपियो का उद्गम भी इसी देवनागरी लिपि के अक्षरो को तोड-मरोड कर तथा उनके उच्चारण और अर्थ बदल कर ही निर्माण किया गया है। चाहे वह पजाबी हो, गुजराती हो, मराठी हो, उडीया हो और या बगाली हो। इस लिये देवनागरी लिपि ही सभी भाषाओ की लिपि बनने मे समर्थ हो सकती है। हिन्दी और सस्कृत भाषाओ मे तो यह प्रयोग की ही जाती है। हिन्दी बोलने वाले लोगो की सख्या भी अन्य भाषाओ के बोलने वालो से कही अधिक है। इसलिए देवनागरी का ही दूसरा नाम नागरी भी है। साधारणत: लोग नागरी शब्द का ही प्रयोग करते हैं।

लिपि के बारे मे की गयी खोज के अनुसार सभी भाषाओ की लिपि का जन्म ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ई. पू 500 से ई पू 350 तक ब्राह्मी लिपि का प्रचलन रहा। यही लिपि गुप्तकाल मे गुप्त लिपि बनी और बाद मे यह कुटिल लिपि के नाम से प्रचलित हुई। इसी कुटिल लिपि को बाद मे देवनागरी का रूप दे दिया गया। इसी कारण यह देश की सभी भाषाओ की लिपि का उद्गम कही जा सकती है। क्योकि यह वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न है जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि यह लिपि जैसी लिखी जाती है वैसी ही बोली जाती है, वैसी ही पढी जाती है और वैसा ही अर्थ होता है। यह वैज्ञानिक प्रमाणिकता अन्य किसी लिपि मे नही पायी जाती। वे लिखी किसी तरह जाती है और पढी और बोली किसी अन्य तरह जाती है तथा अर्थ कुछ और ही होते हैं। यही कारण है कि केवल देवनागरी या नागरी लिपि ही देश की सभी भाषाओ को लिपि बनने के योग्य है। यही कारण है कि दक्षिण तथा अन्य भाषा भाषी हिन्दी को देवनागरी लिपि मे लिखे जाने के कारण जल्दी सीख लेते हैं। किन्तु हिन्दी भाषा भाषी दक्षिण तथा देश की अन्य भाषाओ को सरलता से नही सीख पाते। यदि देवनागरी लिपि अन्य भाषाओ की लिपि हो जाए तो हिन्दी भाषी लोगो को भी देश की अन्य भाषाओ को सीखने मे सुविधा होगी जिससे दक्षिण उत्तर का भेदभाव समाप्त हो कर देश एक सूत्र में बंध सकता है और देश की एकता और अखण्डता को बचाया जा सकता है। इसका एक लाभ यह भी होगा कि आज तक गत 40 सालो मे भी सविधान में व्यवस्था होते हुए भी हिन्दी राज भाषा नही बन सकी वह भी राजभाषा का स्थान लेकर अग्रेजी को अलविदा कहा जा सकेगा। आज तक यह दु.ख की ही बात है कि विश्व के किसी भी देश मे कोई विदेशी भाषा राजभाषा नही है। किन्तु हमारे देश में विदेशी भाषा अग्रेजी ने ही राजभाषा का स्थान ले रखा है जिस के कारण आज हम अपनी सस्कृति और और सभ्यता को भूल कर पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण कर रहे हैं। किन्तु हमारा शासक वर्ग और कर्मचारी अग्रेजी को ही अपनाने मे गौरव का अनुभव कर रहे हैं जबकि यह दासता की ही निशानी है।

यहां एक बात का संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक है कि अधिकतर अंग्रेजी का प्रयोग हिन्दी भाषी लोग ही करते हैं जबकि उन्हें नहीं करना चाहिए। दक्षिण के तथा अन्य भाषी लोग अधिकाश अपनी भाषाओं का ही प्रयोग करते हैं। वे अंग्रेजी केवल तभी उपयोग मे लाते हैं जबकि दूसरा उनकी भाषा न जानता हो। किन्तु हिन्दी भाषी लोग हिन्दी मे बातें न कर अग्रेजी मे ही बातें करने में गौरव समझते हैं। यही नहीं एक गाव का एक अनपढ किसान या मजदूर भी अपने बच्चो से पापा या डैडी कहलवाना ही पसन्द करता है पिता जी या बापू नहीं। इसी लिए हिन्दी को राजभाषा बनने मे सब से अधिक बाधक हिन्दी भाषी लोग ही हैं, न कि दक्षिण के या अन्य भाषा भाषी लोग। क्योकि हिन्दी का टकराव केवल अग्रेजी से है देश की भाषाओं से नहीं। यदि हिन्दी भाषी लोग अग्रेजी का पूरी तरह बहिष्कार कर दें तो अग्रेजी बहुत जल्दी यहा से विदा हो जाएगी और हिन्दी राजभाषा बन जाएगी। इसलिए देवनागरी लिपि ही सभी के लिए उपयुक्त हो सकती है।

(क्रमश:)

डी॰ ए॰ वी॰ संस्थाओं की ओर से सूखा राहत कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी संस्थाओ की ओर से पिछले तीन महीनों से सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में निम्न तीन सूखा राहत केन्द्र कार्य कर रहे हैं।

1. राजस्थान में—आर्य समाज ब्यावर में सूखा राहत कार्य चल रहा है। पीछे लगभग 50 क्विंटल खाद्य सामग्री राजस्थान के सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में इस केन्द्र द्वारा बांटी गई। इस केन्द्र के कार्यकर्ता श्री ओम् प्रकाश भंवर मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एव श्री विष्णु देव जी मन्त्री आर्य समाज ब्यावर हैं।

2. सौराष्ट्र में—महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में लगभग 80 क्विंटल खाद्य सामग्री एवं काफी मात्रा मे कपड़े सौराष्ट्र के सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे बांटे गए हैं। उसके कार्यकर्ता श्री सत्यदेव जी रिटायर्ड इंजीनियर एव श्री अरुण कुमार पुरुषार्थ उपदेशक विद्यालय टंकारा हैं।

3. उड़ीसा में—गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, कालाहाण्डी मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी के नेतृत्व में सूखा राहत केन्द्र चल रहा है। इसमें लगभग 150 क्विंटल खाद्य सामग्री और लगभग 25 हजार रुपए के नये तथा पुराने वस्त्र बांटे गए हैं।

हमारे उड़ीसा केन्द्र में नयापाड़ा, सब डिवीजन बौडेन, सोनापाड़ा, आमसेना, ..., ..., कोदोमेरी, घूरुपी, दर्री नयापारा, कल्याणपुर, पटपरपाली आदि गावो में खाद्य सामग्री तथा कपड़े आदि बांटे जा रहे हैं।

अब तक लगभग दो लाख रु की खाद्य सामग्री एव कपड़े आदि उपरोक्त तीनो सूखा राहत केन्द्रो में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी संस्थाओ की ओर से भेजा जा चुका है। ये केन्द्र 30 सितम्बर 1988 तक चलेंगे जिसमे कि लगभग दस लाख रु की खाद्य सामग्री की आवश्यकता है।

हमारी समस्त आर्य जनो से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक खाद्य सामग्री तथा नकद राशि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करें। वहां से यह सारा माल उपरोक्त तीनो केन्द्रों में भेजा जाता है और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में बांटा जाता है। जो भी आर्य जन खाद्य सामग्री एव राशि भेजेंगे उनके नाम "आर्य जगत्" साप्ताहिक समाचार पत्र में प्रकाशित किए जाएंगे।

—रामनाथ सहगल
सभा मन्त्री

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जन्म दिवस

आर्य समाज भठिण्डा ने 3-1 88 को आर्य समाज मन्दिर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया इस शुभ अवसर पर पहले हवन किया गया तत्पश्चात श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम (गुरुकुल) भठिण्डा ने स्वामी जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला।

नारी जागरण दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार आर्य समाज भठिण्डा 24-1 88 को नारी जागरण दिवस मना रहा है। इस अवसर पर श्रीमती कमला भाटिया जी प्रिंसीपल आर्य गर्ल्स हाई स्कूल "नारी उत्थान मे आर्य समाज का योगदान" विषय पर भाषण देंगी।

—श्री ओमप्रकाश ममता
प्रधान आर्य समाज भठिण्डा

पं. उदयवीर शास्त्री की पत्नि का निधन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एव वयोवृद्ध दार्शनिक श्री पं, उदयवीर जी शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती शास्त्री का निधन 30 दिसम्बर रात्रि को नौ बजे हो गया आपकी आयु 82 वर्ष थी।

4 जनवरी को शास्त्री जी के अजमेर स्थित निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति एव परिजनो के लिए धैर्य, शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

श्रीमती विद्यावती शास्त्री अपने जीवन मे अतिथि सत्कार के आदर्श थी अपने स्वस्थ जीवन मे अतिथि उनके घर पर कभी भी आया किसी भी समय रात्रि में चाहे एक बजे आया उसी समय भोजन बनाया उन्हें कार्य करते हुए कभी असुविधा का अनुभव नहीं किया। —धर्मवीर सदस्य परोपकारिणी सभा

गीत

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

जनहित मे निर्भय होकर जो—
करते प्राणो का बलिदान।
वसुन्धरा उस दिव्य पुरुष को—
देती सदा सुयश—सम्मान ॥

रण मे कदम बढाते हैं जो,
प्राण हथेली पर लेकर।
दुश्मन मार भगाते हैं जो,
सिंह द्वार से सहस निकर।

अचल हिला करते हैं जिनके,
ठहरे पौरुष के सम्मुख।
सदा जिनकी वीरत्व भावना,
अरिदल होता रहा विमुख।

अपन बलिदानो पर किंचित—
कभी न करते हैं अभिमान।
वसुन्धरा उस दिव्य पुरुष को—
देती सदा सुयश सम्मान ॥

चट्टानों को तोड सदा जो,
अपनी राह बनाते हैं।
तूफानो से निर्भय होकर,
भिड़ते हैं, टकराते हैं।

युग के नद की मोड दिया —
करते रहते हैं जो धारा।
सदा कठिनता देख जिन्हें—
चुप-चुप ही कसती रही किनारा।

त्याग तपस्याओ के बदले—
कभी न लेते हैं प्रतिदान।
वसुन्धरा उस दिव्य पुरुष को—
देती सदा सुयश—सम्मान ॥

कलकत्ता में प्रथम डी. ए. वी. विद्यालय का उद्घाटन

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के आदर्शों को अक्षुण रखने के लिए देश मे शिक्षण केन्द्रो की स्थापना के क्रम मे कलकत्ता महानगर मे स्थापित प्रथम डी ए वी सार्वजनिक विद्यालय का उद्घाटन आज सम्पन्न हुआ। दक्षिण कलकत्ता मे (तारातल्ला के समीप) 6 डायमंड हार्बर रोड पर खुले इस विद्यालय मे अभी चौथी कक्षा तक पढ़ाई होगी। आगे चल कर इस उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे परिणित किया जाएगा। आज के उद्घाटन समारोह मे डी ए वी सोसायटी के अध्यक्ष श्री वेद व्यास एव संगठन सचिव श्री दरबारीलाल ने दिल्ली से आकर योगदान किया।

उद्घाटन की रस्म दीप जलाकर पूरी की जनकार्य मन्त्री श्री यतीन चक्रवर्ती ने की आयोजन मे प्रधान अतिथि थे "विश्वमित्र" के सम्पादक श्री कृष्णचन्द्र अग्रवाल। यहा के आर्य समाज से सम्बन्धित लोग बडी संख्या मे उपस्थित थे। आचार्य उमाकान्त जी के नेतृत्व मे होम एव प्रार्थना से समारोह की कार्यवाही आरम्भ हुई। उल्लेखनीय है कि भवानीपुर आर्य समाज एव आर्य विद्यालय के प्रयास से इस विद्यालय की स्थापना हुई है। मंच पर प्रधान श्री मुलख राज आनन्द एव सर्वश्री रामनाथ सहगल, हीरालाल चोपड़ा, आनन्द कुमार अग्रवाल और विद्यालय के प्रिंसीपल श्री आर एस शर्मा आदि उपस्थित थे।

पारिवारिक सत्संग

आयुष्मान् अजितेश का जन्म दिवस 30 दिसम्बर को 230 सी रणधीर सिंह नगर लुधियाना, पारिवारिक सत्सग के रूप मे मनाया गया। इस अवसर पर आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान एव आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के महामन्त्री श्री रोशनलाल शर्मा ने सम्पन्न कराया। बच्चो ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा बाल कला केन्द्र की स्थापना की गई।

नव दम्पति को वैदिक साहित्य भेंट

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के उपमन्त्री श्री यशपाल आर्य के सुपुत्र आयुष्मान् सुशील का विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। रविवार 3-1-88 को नव दम्पति यजमान बने। श्री नरेन्द्रसिंह जी भल्ला प्रधान, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने वैदिक साहित्य भेंट किया। श्री यशपाल जी ने आर्य समाज को 151 रु. दान दिया।

बिना दहेज के वैदिक रीति से पाणि ग्रहण सस्कार

डा. नवनीत कुमार चौधरी तथा डा गुरमीत कौर का विवाह आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे बिना दहेज के वैदिक रीति स सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारी श्री नरेन्द्रसिंह जी भल्ला, श्री रोशनलाल शर्मा महामन्त्री, श्री बलदेव राज जी सेठी कोषाध्यक्ष, श्री जगजीवन पाल जी सूद वेद प्रचार अधिष्ठाता उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त और भी कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्य समाज की ओर से वैदिक साहित्य भेंट किया। विवाह प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने सम्पन्न कराई।

—रोशनलाल शर्मा
महामन्त्री

आर्य समाज दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द दिवस मनाया गया

3-1-88 रविवार को आर्य समाज मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिन बडी धूमधाम से मनाया गया। जिस मे सर्व प्रथम प्रातः प्रभात फेरी निकाली गई। 9 बजे प्रात. एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। पश्चात् ब्रह्मचारी रामानन्द जी, ब्र. धर्मवीर ब्र बलवान सिंह जी, शास्त्री धर्मवीर जी प्रो विनयसिंह जी, शास्त्री दलीप कुमार जी, स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, स्वामी सोमानन्द जी महाराज, पृथ्वीराज जी जिज्ञासु तथा स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उनके जीवन पर बोलते हुए कहा कि स्वामी जी आज होते तो पजाब की इस प्रकार की दुर्दशा न होती आज आर्य समाज मे ही नहीं देश मे उन जैसा दूरदर्शी तथा राजनीति व्यक्ति मिलना कठिन है।

—रघुनाथसिंह
मन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज चिनोडी गेट पटियाला का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री वेदव्रत 'साहिर'
उप-प्रधान—श्री हसराज गुप्ता,
मन्त्री—श्री डा. लक्ष्मण दास जी,
कोषाध्यक्ष—श्रीमती कृष्णा जोशी

मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. Pb/JL 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 45 18 माघ सम्वत् 2044 तदानुसार 31 जनवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

आज की परिस्थितियों में पंजाब में पारिवारिक सत्संगों द्वारा आर्य समाज का प्रचार किया जाए

प्रत्येक आर्य समाज द्वारा स्थान-2 पर बड़े-2 यज्ञ किए जाएं

जिला गुरदासपुर की आर्यसमाजों के अधिकारियों की बैठक में सभाप्रधान श्रीवीरेन्द्र जी का सुझाव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान मे जिला गुरदासपुर की आर्य समाजो के अधिकारियो की एक बैठक 24-1 88 रविवार को दयानन्द मठ दीनानगर मे प्रातः 11 बजे से दोपहर दो बजे तक सम्पन्न हुई। जिसमे विचार किया गया कि आज की वर्तमान परिस्थितियो मे जबकि चारो तरफ आतंक का बोल-बाला है आर्य समाज का प्रचार जनता मे किस प्रकार किया जाए यह बैठक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। उन्होने आर्य बन्धुओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज की परिस्थितियो में हम बड़े-2 उत्सव खुले मैदानों में नही कर सकते विशेष कर जिला गुरदासपुर मे, रात्रि में अब प्रचार कार्य पंजाब मे कहीं भी नहीं हो पाता क्योकि लोग इतने भयभीत हैं कि वह रात को घर से बाहर जाना नहीं चाहते। वैसे तो सारे पंजाब का ही वातावरण उग्रवाद की गतिविधियों के कारण बिगड़ा हुआ है परन्तु जिला गुरदासपुर इससे बहुत अधिक प्रभावित है। इसलिए आज की बैठक मे जिला गुरदासपुर की स्थिति पर विचार कर लिया जाए। मेरे विचार मे हम एक तो पारिवारिक सत्संग अपनी अपनी आर्य समाजो की ओर से आरम्भ करें क्योकि जिस घर मे सत्संग होता है उस परिवार के आस पास के परिवारो के सदस्य तथा उसके सब रिश्तेदार सम्बन्धी भी यज्ञ मे सम्मिलित हो जाते हैं जो कभी आर्य समाज में नहीं आते और न ही आर्य समाज के बारे मे कुछ अधिक जानते हैं। इस प्रकार आर्य समाज का सन्देश अधिक से अधिक लोगो तक पहुंच जाता है। ऐसे अवसरों पर सस्ता आर्य साहित्य भी प्रसाद रूप में बांटा जाए। छोटे 2 ट्रैक्टो से आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ है। प्रारम्भिक युग मे यह प्रचार का सबसे सरल और उत्तम साधन सिद्ध हुआ है। आर्य समाज के इन ट्रैक्टो ने कई बड़े 2 आर्य समाजी बनाए आज फिर छोटे 2 ट्रैक्टो के द्वारा आर्य समाज के सन्देश को घर-2 पहुंचाया जा सकता है, सभा भी इस दिशा मे कार्य कर रही है। हमने कुछ ऐसा साहित्य प्रकाशित भी किया है कुछ किया जा रहा है। हम सभी आर्य समाजो को वह भेज देंगे। आर्य समाज के नियम सभा ने हिन्दी पंजाबी दोनो भाषाओ मे छपवाए हैं वह भी इस प्रकार घर 2 पहुंचाए जा सकते हैं। हम अंग्रेजी और हिन्दी मे पुनः नियमो को छपवा रहे हैं। क्योकि आर्य समाज के नियमो मे कहीं भी कोई ऐसी बात नहीं जिस पर किसी को कोई एतराज हो। इसलिए आर्य समाजो के अधिकारियो को यह नियम कार्ड सभा से मंगवा कर अधिक से अधिक लोगो मे बांटने चाहिए ताकि लोगो को पता चले कि आर्य समाज क्या चाहता है और उस के सिद्धान्त क्या हैं। इसके साथ ही स्थान-2 पर यज्ञो का आयोजन किया जाए। आज यज्ञ प्रचार का एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम सनातन धर्मी भाईयो तक तो पहुंच ही सकते हैं वह तो यज्ञ मे सम्मलित होते ही हैं इसके साथ ही हमारे सिख भाई भी यज्ञ मे आकर आहुति डालते हैं। यज्ञ के प्रति उनकी भी श्रद्धा है। हमने कई बार देखा कि यज्ञ मे जितने भी हमारे सिख बहन-भाई बैठे होते हैं वह भी आहुतियां डालते हैं। इस प्रकार यज्ञ के माध्यम से हमारा प्रचार और भी अधिक हो जाता है।

बटाला के एक सज्जन ने सुझाव दिया कि यज्ञ के साथ यज्ञ समाप्ति पर यदि ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध हो तो इससे यज्ञ का प्रभाव बहुत बढ़ जाता है इससे जनता का यज्ञ प्रति और आकर्षण बढ़ जाएगा। यह सुझाव भी सभी ने पसन्द किया। श्री सतीश जी वानप्रस्थी दीनानगर, श्री नन्दा जी गुरदासपुर, श्री सतीश महता जी बटाला, श्री मुन्शीराम जी मनियाल, श्री जितेन्द्र जी, श्री बोहरा जी तथा अन्य कई सज्जनो ने अपने विचार इस सम्बन्ध मे दिए। सभी सदस्यो का मत था कि पारिवारिक सत्संग, यज्ञ और सस्ता साहित्य प्रचार के अच्छे साधन हैं। श्री स्वामी सुबोधानन्द जी ने बताया कि उन्होने दयानन्द मठ दीनानगर की ओर से यतिमण्डल के तत्वावधान मे जिला गुरदासपुर मे ग्राम प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया है। हमने प्रत्येक महीने का पहला रविवार आर्य समाज घरोटा मे प्रचार के लिए नियत कर दिया है। प्रत्येक पहले रविवार को मठ से वहां ब्रह्मचारी व हम लोग पहुंच जाते हैं पहले यज्ञ करते हैं फिर भजन उपदेश भी हो जाता है। वहां के लोगो का सहयोग हमे मिल रहा है पहले यह समाज बन्द पड़ी थी अब फिर कार्य आरम्भ हो गया है। दूसरा रविवार ग्राम भरत के लिए निश्चित कर दिया है, तीसरा रविवार नरोट जयमलसिंह और चौथा रविवार गुमरा के लिए इस प्रकार हम इन ग्रामो के अतिरिक्त और ग्रामो मे भी प्रचार की योजना बना रहे हैं।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या ने कहा कि हमे यह भी निश्चय करना चाहिए कि हम स्वयं भी सत्संगो मे जाएं और अपने बेटे बेटियों और पुत्र वधुओ को भी सत्संग मे साथ लेकर आएं। क्योकि एक सज्जन ने कहा कि अब सत्संगो मे केवल बूढ़े लोग ही आते हैं। जब हम अपने बच्चो को साथ लेकर नहीं आ सकते तो दूसरो को कैसे कह सकते हैं कि वह सत्संग मे आएं। बच्चे कहीं बाहिर से नहीं आ सकेंगे हमारे घरों से ही आ सकते हैं। हम निश्चय करें कि हम प्रत्येक सत्संग मे अपने बच्चे भी अवश्य साथ लेकर आएं। श्री सन्तोष अम्मा गुरदासपुर ने तथा अन्य बहनो ने भी इस विषय पर अपने सुझाव दिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा ने कहा कि हमने वेद प्रचार की गतिविधियो को तेज करने के लिए कई योजनाएं बनाई हैं। क्योकि अब पंजाब से बाहिर के उच्चकोटि के उपदेशक पंजाब मे आकर सभा मे कार्य करना नहीं चाहते इसलिए हमने अवैतनिक तथा स्वतन्त्र प्रचारकों से सम्पर्क किया है ताकि उनको समय 2 पर पंजाब मे बुलाकर आर्य समाजो मे कार्यक्रम रखे जाएं। आर्य समाजो की उदासीनता को देखते हुए हमने अब यह भी निश्चय किया है कि आर्यसमाजें अब अपने उत्सव तथा कथा आदि नहीं रख रहीं। इसलिए सभा की ओर से हम उन्हें स्वयं तिथियां देकर उनके पास विद्वान भेजेंगे और उन्हें हर अवस्था मे प्रचार कराना ही होगा।

क्षत्रिय मण्डल के अध्यक्ष तथा सभा उपप्रधान श्री रामनाथ जी शर्मा अमृतसर भी इस अवसर पर दीनानगर पधारे हुए थे श्रीपूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने इस बैठक का बहुत उत्तम प्रबन्ध किया हुआ था सभी सदस्यो को उन्होंने दूध व केलो से जलपान कराया तथा भोजन का बहुत उत्तम प्रबन्ध किया हुआ था।

व्याख्यान माला—१३

परोपकार का जीवन ही जीवन है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर)

(गतांक से आगे)

मातुः किन्तेन जातेन यस्यात्माऽपीह दुर्भरः ।
समर्थोनोपकारी चेत्तस्यापि जातेन किम् ।20।

जो अपने आपका भी भरण नहीं कर सकता उसके जन्म से माता को क्या लाभ या प्रसन्नता हो सकती है, और जो समर्थ होकर भी उपकारी नहीं उसके जन्म से भी क्या लाभ?

एष मे प्रवरो भाति शुद्धधर्ममयो विधिः ।
परोपकारजातस्यात्सर्वमन्यत् स्मृतं बुधैः ।21।

परोपकार को छोड़कर अन्य सभी कर्त्तव्यों को विद्वान् लोग बहुत कम महत्व देते हैं मुझे इसीलिए विशुद्ध धर्मफल प्रदान कराने वाली परोपकार विधि बहुत भाती है ।

परोपकारशून्यस्य धिक् मनुष्यस्य जीवितम् ।
धन्यास्ते पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति ।22।

परोपकार से शून्य मनुष्य के जीवन को धिक्कार है । उससे तो पशु ही धन्य हैं मरणोपरान्त जिनकी चमड़ी भी उपकार करेगी ।

जीवितान्मरणं श्रेष्ठं परोपकृतिवर्जितात् ।
मरणं जीवितं मन्ये यत्परोपकृतिक्षमम् ।23।

परोपकार से शून्य जीवन से मरना अच्छा है, और परोपकार में लगकर यदि मृत्यु भी हो जाए तो मैं उस मृत्यु को भी जीवन ही मानता हूं ।

चलं चित्तं चलं वित्तं चले जीवितयौवने ।
चलाचलमिदं सर्वं कीर्तिर्यस्य स जीवति ।24।

चित्त, धन, जीवन तथा यौवन ये सब चंचल (आते-जाते रहते) हैं । अतः परोपकारादि से जिसने अपने जीवन में यश कमाया है उसी का जीवन सफल है ।

पशवोऽपि हि जीवन्ति केवलात्मोदरम्भराः ।
स पुनर्जीवितश्लाघ्यो यः परार्थं हि जीवति ।25।

केवल अपना पेट भरने के लिए तो पशु भी जीते हैं, अतः वही प्रशंसनीय जीवन वाला है जो दूसरों के लिये जीता है ।

यदि प्राण्युपकाराय देहोऽयं नोपयुज्यते ।
ततः किमुपकारोऽस्य प्रत्यहं क्रियते वृथा ।26।

यदि प्राणियों पर भलाई के लिये यह देह उपयोगी नहीं तो व्यर्थ में प्रतिदिन इसको सजाने संवारने से क्या लाभ ?

अनेन मर्त्यदेहेन यल्लोकद्वयशर्मदम् ।
विचिन्त्य तदनुष्ठेयं कर्म हेयं ततोऽन्यथा ।27।

अच्छी तरह विचार कर इस शरीर से ऐसे कर्म करने चाहिए जो लोक तथा परलोक दोनों में ही कल्याणकारी हों । तथा जो इसके विपरीत अकल्याण कर हों उन्हें छोड़ देना चाहिए ।

सज्जनाः परोपकारं शूरा शस्त्रं धनं कृपणाः ।
कुलवत्यो मन्दाक्षं प्राणात्यय एव मुञ्चन्ति ।28।

सत्पुरुष परोपकार को, वीर पुरुष शस्त्र को, कंजूस धन को, और कुलीन स्त्रियां [illegible] को अथवा लज्जायुक्त निम्न दृष्टि से प्राण निकल जाने पर ही छोड़ती हैं ।

[illegible] अर्थं विभवं वा ।
न [illegible] महात्मनां या तस्य [illegible] ।29।

[illegible] प्रति को [illegible], धन तथा [illegible] स्वीकार नहीं करते क्योंकि [illegible] है ।

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः परोपकाराय सतां विभूतयः ।30।

नदियां अपना जल स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपने फलों को स्वयं नहीं खाते मेघ खेती को स्वयं नहीं खाते; सत्पुरुषों की सम्पत्तियां परोपकारार्थ ही हुआ करती ।

रत्नाकरः किं कुरुते हि रत्नैर्विन्ध्याचलः किं करिभिः करोति ।
श्रीखण्डखण्डैर्मलयाचलः किं परोपकाराय सतां विभूतयः ।31।

समुद्र रत्नों से अपना क्या बनाता है ? कुछ नहीं, विन्ध्याचल हाथियों से अपना कौन सा प्रयोजन साधता है ? कोई नहीं, मलयपर्वत चन्दन के टुकड़ों से क्या करता है ? कुछ नहीं, क्योंकि उदारचेता महापुरुषों की विभूतियां परोपकार के लिए ही हुआ करती हैं ।

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ।32।

फल लगने पर वृक्ष झुक जाते हैं, नया जल आने पर मेघ भी झुक जाते हैं, सज्जन पुरुष ऐश्वर्य आने पर भी उद्दंडता का व्यवहार नहीं करते यही परोपकारियों का स्वभाव है ।

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन ।
विभाति कायः खलु सज्जनानां परोपकारेण न चन्दनेन ।33।

कानों की शोभा शास्त्रों के सुनने से है न कि कुण्डल पहनने से, हाथ की शोभा दान देने से है न कि कड़े पहन लेने में, दयालु जनों का शरीर परोपकार के कार्यों से प्रकाशित होता है न कि चन्दन के लेप से ।

पद्माकरं दिनकरो विकचं करोति,
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति,
सन्तः स्वयंपरहितेषु कृताभियोगाः ।34।

कमल प्रार्थना नहीं करते फिर भी सूर्य कमलों को खिला देता है, चन्द्रमा भी बिना किसी प्रार्थना को सुने कुमुदिनियों को विकसित करता है, मेघ भी प्रार्थना करने के बिना ही जल देता है, वस्तुतः सत्पुरुष दूसरों के कल्याण के लिए ही कृत प्रतिज्ञ होते हैं ।

यत्नतः रक्षितं हि विकृष्यमाणं कालेन यत्नादपि रक्ष्यमाणम् ।
वपुर्मनुष्यस्य यदि चेत्परार्थः स एव मर्त्यस्य परः पुमर्थः ।35।

यत्नपूर्वक रक्षा किया जाता हुआ यह शरीर काल रूप यम के द्वारा खींचा जाता हुआ होने से इसका विनाश अवश्यम्भावी है परन्तु यदि इससे थोड़ा सा भी परोपकार हो जाए तो इस परोपकार से ही मनुष्य जीवन का परम प्रयोजन सिद्ध है ।

दातुः परोपकृतिनिर्भर चित्तवृत्तेः
आसन्नदूरगणना नहि संश्रितेषु ।
भानुर्विकासयति हस्त सरोजमध्य,
पाणिस्थ पङ्कजसमं भुवनान्तरेषु ।36।

ऐसे पुण्य शील दान दाता अपने आश्रितों में कौन दूर है ? और कौन निकट ? की गणना नहीं करते वे अपने आश्रितों पर वैसे ही समान दृष्टि रखते हैं जैसे सूर्य लोक लोकान्तरों अथवा गहराई और ऊंचाई पर स्थित कमलवनों को अपने से दूरस्थ होते हुए भी हाथ में स्थित कमल के तुल्य एक समान विकसित करता है ।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

बिल्ली थैले बाहिर आ ही गई

4 अक्तूबर 1987 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक चुनाव जालन्धर में हुआ था। उसी में सभा के अधिकारियो का निर्वाचन भी हुआ था। प्रधान पद के लिए दो नाम पेश किए गए। एक वीरेन्द्र का दूसरा योगेन्द्रपाल सेठ का जब वोट लिए गए तो वीरेन्द्र के पक्ष में 146 और योगेन्द्रपाल के पक्ष में केवल 12 वोट पड़े।

समझा यह गया कि इसके पश्चात् यह विवाद समाप्त हो जाएगा परन्तु सेठ योगेन्द्रपाल ने अपने आपको 6-11-87 को स्वयं प्रधान घोषित कर दिया और 15-11-87 को अपनी एक तथाकथित सभा की बैठक बुला ली। जिसमें उस सभा के अधिकारियों, विद्या सभा के लिए प्रतिनिधियों, सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियों और दूसरे कई प्रतिनिधियो का निर्वाचन होना था परन्तु इससे एक दिन पहले अर्थात् 14 अक्तूबर को उन्होंने इन सब अधिकारियो व सदस्यों के नाम घोषित कर दिए। कोई चुनाव नहीं हुआ। कोई सभा का अधिवेशन नहीं हुआ लेकिन घर बैठ कर एक सूची बना कर सभा के अधिकारियों और सदस्यो की घोषणा कर दी गई जिन 73 महानुभावों के नामो की घोषणा की गई उनमें से 30 वह थे जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधि ही नहीं थे बाकी जो नाम घोषित किए गए उनमें से लगभग 30 ने मुझे पत्र लिखे जो मेरे पास हैं कि उनसे बिना पूछे ही उनके नामों की घोषणा कर दी गई है।

यह सब कुछ मैंने इसलिए लिखा है कि आर्य जनता को यह पता चल सके कि इस बोगस सभा की वास्तविक स्थिति क्या है? जब इस सभा के अधिकारियों और सदस्यो की घोषणा की गई तो समाचार पत्रो में यह लिखा गया कि यह सब कुछ सार्वदेशिक सभा के आदेश पर किया गया। जब सार्वदेशिक सभा से पूछा गया कि वास्तविक स्थिति क्या है तो उन्होंने हमें लिखित रूप में बताया कि सार्वदेशिक सभा ने किसी भी सभा को न तो मान्यता दी है न नया चुनाव करने का कोई आदेश दिया है। कुछ समय के पश्चात् श्री ऋषिपाल सिंह ने 4 अक्तूबर वाले चुनाव के विरुद्ध एक 15 पृष्ठों की शिकायत सार्वदेशिक सभा को भेजी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने उस पर विचार करने के लिए अपनी अन्तरंग सभा की बैठक बुलाई और वहां यह निर्णय लिया गया कि पंजाब सभा के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने से पहले जो आरोप ऋषिपाल सिंह ने लगाए हैं उनकी जांच कराई जाए। आज तक वह जांच नहीं कराई गई। इसी बीच मैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी से दो बार मिला और दोनो बार उन्होंने मुझे यह कहा कि मैं पंजाब सभा के प्रधान पद से त्याग पत्र दे दूं और साथ ही यह भी कहा कि उसके पश्चात् वह जालन्धर आकर स्वयं चुनाव कराएंगे और मुझे सर्व सम्मति से पंजाब सभा का प्रधान बनाएंगे इस पर मैंने उन्हें 18-12-87 को एक पत्र लिखा जिसमें अपने विचार निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किए—

"आपने मुझे यह भी आश्वासन दिया था कि नया चुनाव करवाकर आप मुझे दोबारा प्रधान बना देंगे। इस अनुकम्पा के लिए आपका आभारी हूं। मैं पद का भूखा नहीं हूं, सम्मान और विश्वास का इच्छुक हूं जो व्यक्ति सात बार सभा का प्रधान निर्वाचित हो चुका हो जिसमें से 6बार सर्वसम्मति से निर्वाचित हुआ हो वह अब किसी दूसरे का सहारा लेकर प्रधान बनने को तैयार नहीं हो सकता। आर्य समाज की सेवा एक स्वयंसेवक बन कर भी कर सकता हूं। मैं आपके प्रत्याशी के लिए वह जो भी हो मार्ग प्रशस्त कर रहा हूं। यह मेरा पत्र, त्याग पत्र समझ कर इसे स्वीकार करें क्योंकि—

"राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।"

मैंने अपने पत्र में उन्हें यह भी लिखा था कि जब उन्होंने मुझे यह कहा था कि मैं चुनाव न लडूं तो मैंने आपके आदेश का पालन न किया था, क्योंकि यह अवैध था। सार्वदेशिक सभा का विधान अपने प्रधान को यह अधिकार नहीं देता कि वह किसी सभा के विधिवत निर्वाचित प्रधान को हटा सके। किसी प्रधान को हटाने का अधिकार केवल उस सभा को है जिसने उसे निर्वाचित किया हो।

मेरे मिलने के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, कोषाध्यक्ष श्री हरबंसलाल जी शर्मा और मन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा भी उनसे मिले। इन सब से भी स्वामी आनन्दबोध जी यही कहते रहे हैं कि वह स्वयं पंजाब सभा का नया चुनाव कराना चाहते हैं। इस पर श्री सरदारी लाल जी ने उनसे कहा कि यदि आप नया चुनाव कराना चाहते हैं तो हम स्वयं करा देंगे, परन्तु आपके हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेंगे। आपको जालन्धर नहीं आना चाहिए कहीं यह न हो कि आपका प्रत्याशी हार जाए और आपका अपमान हो जाए। इस पर वह मान गए और कहने लगे कि मैं स्वयं नहीं आऊंगा अपने किसी प्रतिनिधि को भेज दूंगा और बात यहां समाप्त हुई कि पंजाब सभा का नया चुनाव करा दिया जाए।

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है इससे दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं एक यह कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान किसी न किसी तरह पंजाब सभा के प्रधान वीरेन्द्र से छुटकारा पाना चाहते हैं। वीरेन्द्र से क्यो छुटकारा पाना चाहते थे? इसका पांच-छः वर्ष का पुराना इतिहास है वह मैं आगे चल कर जनता के सामने रखूंगा और साथ ही पंजाब सभा का चुनाव इसलिए स्वयं कराना चाहते थे कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान का चुनाव होने वाला है। वह पंजाब से ऐसे प्रतिनिधि भिजवाना चाहते हैं जो उस चुनाव में उनके पक्ष में वोट डालें। यही कुछ उन्होंने बिहार में, उत्तर प्रदेश और देहली में किया है और अब पंजाब में करना चाहते हैं। स्वामी आनन्दबोध सार्वदेशिक सभा के पहले प्रधान हैं जो जगह-जगह सभाओं में विघटन पैदा कर रहे हैं और स्वयं सभी जगह जाकर चुनाव कराते हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान का यह काम नहीं है कि वह प्रान्तीय सभाओं के मामले में हस्तक्षेप करें। इसका एक परिणाम यह भी हो रहा है कि वह एक विवादास्पद व्यक्तित्व बनते जा रहे हैं।

जहां तक पंजाब सभा का सम्बन्ध है मैं उन पर यह आरोप लगा रहा हूं कि उन्होंने इस सभा के साथ धोखा किया है हमें कहते रहे कि उन्होंने किसी नई सभा को मान्यता नहीं दी है लेकिन जो कुछ भी हुआ है वह उनके कहने पर और उनके इशारे पर हुआ है। उन्होंने पंजाब सभा में विघटन पैदा किया है। उनके प्रतिनिधि जालन्धर आकर बैठे रहे और यहां सारी योजना बनती रही। हम समझ रहे थे कि जिस दिन से लाला रामगोपाल ने सन्यास लिया है वह बदल गए हैं परन्तु अब पता चला कि केवल कपड़ो का रंग बदला है। उनका मन नहीं बदला।

(शेष अगले अंक में) —वीरेन्द्र

बोगस आर्य प्रतिनिधि सभा के बोगस प्रधान से एक प्रश्न

क्या यह सच है कि पिछले दिसम्बर माह मे आर्य समाज अड्डा होशियारपुर मे जिसके कि योगेन्द्रपाल स्वय मन्त्री है गुरुग्रन्थ साहेब का पाठ हुआ है और जब उसका भोग पड़ा तो वहा चढ़ावा भी चढ़ाया गया। क्या श्री योगेन्द्रपाल सेठ इस से इन्कार करेंगे? मैं उनके प्रधान से पहले पूछ चुका हू कि वह बताएं कि यह सच है या नही? इसी के साथ मैं यह भी पूछना चाहता हू कि जो चढ़ावा चढ़ाया गया वह किस के पास है योगेन्द्रपाल सेठ के पास है या समाज के कोष मे रखा गया है या उसे कोई और ले गया है। क्या कारण है कि गुरुग्रन्थ साहब का यह पाठ गुरुद्वारे मे नही किया गया जबकि गुरुद्वारा अड्डा होशियारपुर के बिल्कुल समीप है। क्या यह सब कुछ उनकी अनुमति से हुआ है? आर्य जनता इन प्रश्नो का उत्तर मांगती है।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा के ग्राहकों व पाठकों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषिबोध (शिवरात्रि) पर्व पर एक बृहद् विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। यह 7 फरवरी और 14 फरवरी का सम्मिलित अंक होगा। जिन आर्य समाजो व ग्राहको को इसकी एक से अधिक प्रतियां मंगवानी हैं वह शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय को सूचित कर दें। विज्ञापनदाता भी अतिशीघ्र विज्ञापन मैटर भेजने का कष्ट करें ताकि समय पर उनका विज्ञापन प्रकाशित किया जा सके। —स. सम्पादक

राष्ट्र के प्रथम उद्धारक, राष्ट्र निर्माता—

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—श्री लक्ष्मणार्य 'विद्यावाचस्पति' उप-प्रधान
आर्य समाज वरंगल आन्ध्र

महा शिवरात्रि का पुनीत पर्व ही था जब कि 19 वीं शताब्दी के एक महान् क्रान्तिकारी योगी महर्षि दयानन्द सरस्वती के ज्ञान नेत्र खुल गये और उनके हृदय मे सच्चे ईश्वर को जानने की लालसा जाग उठी। आत्म दर्शन के लक्ष्य की पूर्ति के लिये घर से निकल पड़े। इसके कारण आर्य समाजी लोग महा शिवरात्रि पर्व के अवसर पर "ऋषि बोधोत्सव" मनाते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत माता के उज्ज्वल रत्न है। उनका प्रादुर्भाव मानो भारत की डगमगाती नैया को सहारा देने के लिए हुआ। काठियावाड़ के मोरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा नामक गांव मे श्री कर्षण जी नामक औदिच्य त्रिवेदी ब्राह्मण के घर सन् 1824 ई. में उनका जन्म हुआ। घर में उन्हें मूलशंकर नाम से पुकारा जाता था। सन् 1837 की शिवरात्रि को जब उन्हे पिता के निर्देश पर व्रत के लिए सारी रात जागना पड़ा तो मूर्ति पर चढ़ कर पूजा की, मिठाई आदि खाने वाले चूहो को देख कर होनहार बालक के ज्ञान नेत्र खुल गए और उसके हृदय में ईश्वर खोज की लालसा जाग उठी। आत्म दर्शन की इस चिनगारी को बहन तथा चाचा की मृत्यु ने संसार की नश्वरता का नग्न-चित्र दिखा कर वैराग्य के झोंको से धक्का दिया तो वे अपने महान् लक्ष्य की पूर्ति के लिए घर से निकल पड़े।

15 वर्ष तक निरन्तर आत्म तत्त्व के दर्शन के लिए वे अनेको विद्वानो, योगियों तथा महात्माओ की खोज मे घूमते रहे, भयंकर वनों, हिमालय की ऊंची चोटियों, बर्फीली नदियो तथा अज्ञात गुफाओं को छान मारा। 24 वर्ष की आयु मे प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से उन्होंने सन्यास की दीक्षा ली और दयानन्द सरस्वती बने। इन पन्द्रह वर्षों में घोर तपस्या के साथ संस्कृत साहित्य की विद्वता तथा योग की उच्चतम सिद्धियां प्राप्त कर ली। परन्तु वे अभी अधूरापन ही अनुभव कर रहे थे। तत्व ज्ञान की पिपासा अभी शान्त न हो पायी। अन्त में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती के निर्देशानुसार वे मथुरा पहुंच कर गुरुवर विरजानन्द जी की सेवा में रह कर सरस्वती माता जी का पूर्ण वरदान प्राप्त किया और इन्ही गुरु जी के आदेश पर वेद प्रचार तथा मानव जाति के उद्धार का संकल्प लेकर कार्य क्षेत्र में कूद पड़े। शिवरात्रि का व्रत महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं तत्कालीन भारतीय जनता के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदों के बड़े ही प्रकाण्ड पण्डित थे। मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने के अधिकार का आधुनिक युग में उन्होने ही सर्व प्रथम प्रतिपादन किया। वेदों का उन्होंने बड़ा ही सरल, मार्मिक तथा प्रामाणिक भाष्य किया। उन्होने ही सर्व प्रथम कहा कि स्त्रियों को पुरुषो के समान ही वेद पढ़ने का अधिकार तथा समाज में समान मिलना चाहिए। आज जो सरकार के कार्यक्रम हैं वह वास्तव में महर्षि' दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज कार्यक्रम के ही कुछ अंश है। दहेज विरोध जाति विरोध की बात सर्व-प्रथम स्वामी जी ने ही की। जन्म के आधार पर जाति-पाति की व्यवस्था दोषपूर्ण है। समाज में प्रतिष्ठा का आधार गुण, कर्म, स्वभाव होना चाहिये। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होने प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को अपनाने की प्रेरणा कर स्पष्ट कहा कि ब्रह्मचर्य की सुदृढ़ भित्ति पर स्वस्थ, सदाचारी एवं सबल समाज खड़ा किया जा सकता है।

सामाजिक क्रान्ति से स्वामी जी ने दलितोद्धार, अछूतोद्धार, नारी उद्धार समाज में स्थित अन्ध-विश्वास एवं कुरीतियो का खण्डन आदि जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए और उन्होंने जन्म गत जाति-पाति, बाल-विवाह, अनमेल विवाह आदि अभिशापों की नींव को हिला दिया वैदिक परम्पराओं पर आधारित स्वस्थ समाज के निर्माणार्थ उन्होने भारत में वैदिक गुरुकुल शिक्षण प्रणाली की स्थापना की। इसी परम्परा के आधार पर आज देश भर में लगभग हजारो आर्य संस्थाएं शिक्षा के क्षेत्र मे कार्यरत है।

देश के दुख, दारिद्रय एवं असाहय अवस्था को देख कर महर्षि दयानन्द का अन्तकरण बड़ा दुखी था। वे भली-भान्ति समझते थे कि देश की गिरावट का एक मात्र कारण विदेशी शासन के कारण विदेशी वस्तुओं का व्यवहार ही है। उन्होंने महात्मा गान्धी जी के स्वदेशी वस्तु के प्रचार कार्यक्रम से 50-60 वर्ष पहले ही विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार का जबरदस्त प्रचार किया। स्वयं गुजराती होते हुए भी उन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी का व्यापक प्रचार किया और अपने सभी ग्रन्थों की रचना हिन्दी में ही की। उन्होंने कहा—"राष्ट्र भाषा हिन्दी द्वारा ही समस्त विशृंखलित भारत को एकता सूत्र में पिरोया जा सकता है।" महर्षि का यह दृढ़ विश्वास था—"अपनी संस्कृति, अपना वेश, अपनी भाषा, अपना देश सारे गुणों का सार सादा जीवन उच्च विचार, महर्षि ने उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना 1875 में की। आज साधारण जनता में जो कुछ वैदिक साहित्य तथा संस्कृत के प्रति रुचि है उन्हीं के द्वारा स्थापित आर्य समाज की देन है। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लिखने वाले सबसे पहले भारतीय दयानन्द ही थे, जिन्होने घोषणा की थी कि कोई कितना अच्छा करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वही सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान दया, न्याय युक्त विदेशियों का राज्य सुखदायक नही है।

विदेशी दासता की कड़ियों में जकड़े भारत को स्वतन्त्र करा कर इसे प्राचीन गौरव की प्राप्ति कराने के निमित्त भी महर्षि ने अद्वितीय प्रयास किया। सन् 1875 की क्रान्ति की असफलता के पश्चात् जब भारत में स्वतन्त्रता व देश भक्ति की बात करना अपनी मौत को आमंत्रित करना समझा जाता था, तब वह प्रथम निर्भीक सन्यासी था जिसने खुले शब्दों में कहा कि माता-पिता के समान विदेशियों का राज्य होने पर भी वह स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं हो सकता और स्वराज्य ही नहीं अपितु चक्रवर्ती राज्य की प्राप्ति करना आर्यों का जन्म सिद्ध अधिकार है। वे ही पहले व्यक्ति थे जिसने समूचे भारत को एक सूत्र में बान्धने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने की कल्पना की थी।

इनके बारे में प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् श्री रोमारोलां ने लिखा है कि सिंह समान निर्भीक प्रकृतिवाला, यह महापुरुष उन व्यक्तियों में से जिन्होंने भारत का मूल्यांकन करते समय यूरोप भुलाने की चेष्टा करता हुआ भी भुला न सकेगा क्योंकि ऐसा करना उसके (यूरोप के) लिए महंगा सौदा सिद्ध होगा। इस महान् पुरुष दयानन्द में विचार, कर्म और नेतृत्व की प्रतिभा का अनुपम सम्मिश्रण था।

हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि हम महान् क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द का सादर अभिवादन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि उनके चरणों मे समर्पित करें तथा उनकी कल्पना अथवा लक्ष्य पूरा करने की प्रतिज्ञा करें।

—

स्वामी दयानन्द सरस्वती की अनमोल सूक्तियां

संकलनकर्ता—वेदमित्र हापुड़ वाले, 72-बी गोविन्द नगर,
अम्बाला छावनी

1. संगठन—जिस संगठन में अधर्म धर्म, असत्य से सत्य सब सदस्यों के देखते हुए मारा जाता है, वहां सब मृतक के समान हैं, मानों उनमें कोई भी नहीं जीता।

2. उन्नति—प्रत्येक को अपनी उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

3. भलाई—जो मनुष्य जगत् की जितनी भलाई करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।

4. प्रेम—परमात्मा प्रार्थना का नहीं, प्रेम का भूखा है।

. सत्य—जो पदार्थ जैसा है उस को वैसा ही कहना लिखना और मानना "सत्य" कहाता है।

6. अनिवार्य कर्म—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

7. अर्थ—अर्थ वह है जो कि धर्म ही से प्राप्त किया जावे और जो अधर्म से सिद्ध होता है, उसको अधर्म कहते हैं।

8. काम—काम वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाए।

9. व्यवहार—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

10. मनुष्य और पशु—जैसे पशु बलवान होकर निर्बलता को दुःख देता और मार भी डालते हैं जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं, किन्तु पशुवत हैं।

जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानिमात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

३-१-८८ को लुधियाना में आर्य वीर दल के समापन समारोह का एक दृश्य चित्रों के माध्यम से



सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का स्वागत करते हुए श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा, अयोध्या प्रसाद,श्री राजेन्द्र कुमार,प बलदेव,अश्विनी कुमार जी दिखाई दे रहे है।



शिविर के समापन समारोह की प्रधानता करते हुए श्री वीरेन्द्र जी एम ए सभा प्रधान उनके साथ बैठे श्री आशानन्द आर्य श्री सरदारीलाल आर्य रत्न, श्री राजेन्द्र कुमार शावान, श्री अश्विनी कुमार जी श्री ब्रह्मानन्द शर्मा



पण्डाल में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी प्रवेश करते हुए। श्री महेन्द्रपाल वर्मा, श्री अयोध्या प्रसाद साथ खड़े हैं श्री ओम प्रकाश अरोड़ा, डा सत्यभूषण वागिया रामलुभाया नन्दा, के के सगर भी दिखाई दे रहे हैं।



शिविर समापन समारोह पर युवक व्यायाम करते हुए

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियां

मकर संक्रान्ति पर्व

14-1-88 को मकर संक्रान्ति का पर्व बड़ी धूम धाम से मनाया गया। श्री देवराज उप प्रधान, श्री यशपाल जी, श्री रविकान्त जी, श्री विश्वनाथ जी श्री कन्हैयालाल जी, श्री मोहित शर्मा। यजमान बने। श्री प सुरेन्द्र जी शास्त्री ने यज्ञ कराया। श्री डा बालकृष्ण जी शास्त्री एम ए का उपदेश हुआ।

पारिवारिक सत्संग

गत दिनों आर्य समाज की ओर से फतेहगढ़ मोहल्ला लुधियाना में मादक महाजना के सहयोग से पारिवारिक सत्संग किया गया जो बड़ा प्रभावशाली रहा। जिसमें श्री कामरेड हंसराज, ओमप्रकाश, अमरनाथ आदि ने सहयोग दिया।

प्रचार कार्य

श्री प राम कुमार जी आर्य उपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा हरियाणा का उपदेश आर्य समाज में 17 तथा 18 जनवरी को होता रहा।

शोक समाचार

17-1-88 को साप्ताहिक सत्संग में श्री राजाराम जी आर्य भू पू प्रधान आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति और परिवार को उनके वियोग को सहन की शक्ति प्रदान करें।

—रोशनलाल शर्मा-महामन्त्री

बृहद् यज्ञ एव विराट् ऋषि मेला

क्रान्तिदूत महान युग निर्माता तप पूत योगीवर, आदित्य ब्रह्मचारी वेद ममज्ञ महर्षि प्रवर देव दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली होने से टंकारा को और मृत्यु स्थली होने के कारण मथुरा नगरी को जो सौभाग्य प्राप्त है उससे कम गौरव सुरसरि तटस्थ फर्रुखाबाद नगरी का भी नहीं है। क्योंकि इस जनपद को ही महर्षि के पावन पद रज से सर्वाधिक (आठ बार) पवित्र होने का अहोभाग्य प्राप्त हुआ है। सर्वप्रथम इस जनपद में जाह्नवी तट पर महर्षि ने स्व कर कमलों से एक संस्कृत पाठशाला (गुरुकुल) की संस्थापना की थी। यहीं पर ही महर्षि ने अपनी प्रखर बुद्धि एवं अलौकिक विद्वत्ता से हलधर ओझा आदि पाखण्डियों को शास्त्रार्थ में पराजित कर धराशायी किया था। अपने अन्तिम समय में महर्षि ने कहा था—जब तक फर्रुखाबाद के लोग न आ जाएं तब तक मेरी दाह क्रिया मत करना' हुआ भी ऐसा ही। इस प्रकार इस जनपद के प्रति महर्षि की महती आस्था रही है तथा यह जनपद ही उनका सर्वाधिक महत्व-पूर्ण कार्यस्थल रहा है।

इसी जनपद फर्रुखाबाद के अन्तर्गत महर्षि के नाम को सार्थक सिद्ध करते हुए आपके प्रिय महर्षि दयानन्दाश्रम गुरुकुल कृष्णपुर के पावन प्रांगण में गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी 20,21, 22 फरवरी 1988 को बृहद यज्ञ एव विराट ऋषि मेला का समायोजन अति हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठ मूर्धन्य विद्वान सन्यासी महोपदेशक एव उपदेशक पधार रहे हैं।

गुरुकुल पधारने वाले सभी सज्जनों के लिये आवास एव भोजन की नि शुल्क व्यवस्था की जाती है।

—आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री
कुलपति

—

आर्य समाज और राजनीति

लेखक—श्री मुलखराज आर्य कार्यकर्ता प्रधान
आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर

श्री किशन स्वरूप जी गोयल दिल्ली का आर्य मर्यादा 29 नवम्बर 1987 के अंक में लेख छपा है जिसका शीर्षक है (क्या आर्य समाज महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग से हटता जा रहा है, हटता ही नहीं जा रहा? परन्तु स्वामी जी के उस भाव को जो स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के छटे सम्मुलास में लिखा है उसको बिल्कुल ही समाप्त कर दिया है। आर्य मर्यादा के सम्पादक ने लिखा है कि लेखक के विचारो से पूर्णतया सहमत न होते हुए भी इस लेख का प्रकाशन किया जा रहा है ताकि आर्य जगत् इस ज्वलन्त प्रश्न पर विचार कर सके यह सम्पादक के लेखन पर ही मैं अपने विचार आर्य जनता के सामने रख रहा हु लेखक ने जो विचार दिए हैं उनसे तो हम सहमत हैं परन्तु जहा पर वह लिखते हैं कि आज आवश्यकता है कि आर्य समाज एक राजनीतिक दल की स्थापना कर उसे हिन्दू निष्ठ दल बना कर नेतृत्व प्रदान करे इस लेख मे बार-2 हिन्दू शब्द का आर्य व्रत का इतना लम्बा और हिन्दू समाज तथा देश का बचाया जा सकता वह बार-2 यह कह रहे है कि हिन्दू शब्द एक ऐसा शब्द है जिसके नाम पर समस्त हिन्दू चाहे आर्य समाजी हैं या सनातन धर्मी या अन्य कोई और यह भी लिखा है कि सनातन धर्म के लोगो को आर्य शब्द से एलर्जी है आर्य का नाम सुनते ही कोसो दूर भाग जाते हैं। आर्य शब्द हटाने से एलर्जी किसी की भी हटाई नही जा सकती भारत से अंग्रेज सरकार को निकालने के लिए आर्य समाज ने कांग्रेस की नींव रखी जिससे समस्त हिन्दू-सिख मुसलमान इसमे 90 प्रतिशत योगदान आर्य समाज का था बड़ी-बड़ी कुर्बानी आर्य समाज ने दी अपना सारा जोर कांग्रेस पर लगा दिया ईंट, सीमेंट तथा लोहा लकड़ी सब कुछ आर्य समाज का था परन्तु भवन कांग्रेस नाम का यह सब कुछ क्यो किया गया कि आर्य नाम से दूसरो को एलर्जी न हो जावे आर्य समाज के बलिदान से ही हमारा देश स्वतन्त्र हुआ था और राज सत्ता कांग्रेस के हाथ आ गई। बड़े-2 आर्य नेताओ को जिनको गद्दिया मिल गई। कांग्रेस की नीतियां पर चल कर आर्य समाज का ही नीचे गिराना आरम्भ कर दिया। क्योंकि कांग्रेस मे हर विचारधारा के लोग थे इसलिए अपने स्वार्थ के कारण आर्य समाज को नीचे फेंक दिया और आर्य समाज को प्रयोग करने के लिए ही अपने आपको आर्य समाजी बनाया यदि आर्य समाज के नेता आरम्भ से ही अपनी कोई राजनीतिक पार्टी राज्य सभा स्वामी जी के आदेशानुसार बना लेते तो आज भारत का नक्शा कुछ और ही होता। आर्य समाज स्वतन्त्रता के पश्चात् भी यदि कोई राजनीतिक पार्टी बना लेता तो आर्य समाज की यह दशा जो आज है कभी न होती राजनीतिक पार्टी के बिना सरकार किसी की भी बात नही सुनती भारत मे सिखो की संख्या कितनी है परन्तु उन्होंने अकाली पार्टी द्वारा सारे देश को झिंझोड़ दिया है आर्य समाज की राजनीतिक पार्टी न होने के कारण ही आर्य समाजो मे झगड़े है क्योंकि आर्य समाज मे कांग्रेस भी है भारतीय जनता वाले भी हैं दूसरी पार्टियो वाले भी आर्य समाज मे है, उसका परिणाम क्या है कि एक दूसरे के विचार नही मिलते और आर्य समाज मे झगड़े पैदा हो जाते है। फिर आर्य समाज मे आर्य समाज की विचारधारा समाप्त होकर राजनीतिक विचारधारा हो जाती है। हमारे बड़े-2 नेता आज तक यही घोषणा करते आ रहे हैं कि आर्य समाज को राजनीतिक के दलदल मे नही फंसना चाहिए। मैं आर्य समाज के नेताओ से पूछना चाहता हू कि क्या वह दूसरी पार्टियो मे जाकर राजनीति मे भाग ले रहे है या नही आज भी आर्य समाज यदि अपना राज सभा बना कर काम करना आरम्भ कर दे यदि सच्चे दिल से राज आर्य सभा लोगो की सेवा करेगी तो लोग अपने आप ही पीछे आ जाएगे। अपनी राजनीति होगी तो आर्य समाज के अन्दर जो दूसरी राजनीतिक पार्टिया हैं आर्य समाज मे प्रवेश न कर सकेगी और आर्य समाज मे विवाद समाप्त हो जाएगे। किसी के साथ मिल कर जैसा कि लेखक ने लिखा है जैसाकि उनके सुझाव के अनुसार हिन्दू निष्ठ दल बनाया जावे यह आर्य समाज ने पहले देख लिया है क्योंकि कांग्रेस को बनाने वाली आर्य समाज थी। जनसंघ को भी बनाने वाली आर्य समाज ही थी और हिन्दू महासभा को बनाने वाली भी आर्य समाज ही थी। जो असर पहले हुआ था वही अब भी होगा। राज आर्य सभा बनाकर यदि आर्य समाज काम करेगा तो लोग अपने आप पीछे आ जाएगे अभी-2 हमारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सूखा पीड़ितो के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को एक लाख रुपया गुरुकुल कांगड़ी के द्वारा दिया है। यह कार्य तो बहुत अच्छा है परन्तु उसकी कीमत नहीं पड़ेगी यदि अपनी राज सभा बनाई होती तो उसकी ओर से प्रधानमन्त्री को एक लाख रुपया सूखा पीड़ितो को दिया जाता तो सब लोग आर्य समाज के पीछे-2 फिरते। इस लेखक के सारे लेख से तो हम सहमत है परन्तु स्वामी जी के बताए हुए मार्ग पर चल कर ही राज आर्य सभा द्वारा ही समस्त हिन्दुओ का भला किया जा सकता है। हमारी तो परमात्मा से ही प्रार्थना है कि आर्य समाजी नेताओं को बुद्धि दे ताकि राज आर्य सभा की स्थापना करके स्वामी जी की भावनाओ का आदर करते हुए विश्व मे आर्य राज्य को स्थापित कर सकें यदि स्वामी जी के आदेश का पालन न कर सकें तो सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास का भी लाभ नहीं है। आर्य समाज मे संख्या के बजाए आचार ही आवश्यकता है यदि राज आर्य सभा का आचार तथा व्यवहार शुद्ध होगा तो सब हिन्दू अपने आप पीछे आ जाएंगे चाहे सनातन धर्मी, चाहे कोई हो किसी को भी एलर्जी नही होगी। मुझे आशा ही नही परन्तु पूर्ण विश्वास है, कि आर्य नेता इस पर विचार करेंगे।

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर बस्ती गुजा का वार्षिक उत्सव 4-1-88 से 10-1-88 तक सफलतापूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, उपदेश तथा बच्चो के मनोहर गीत होते रहे। मिलटन माडल स्कूल बस्ती गुजा तथा आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ के बच्चो ने सुन्दर गीतो से लोगो को प्रसन्न किया।

7-1 88को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री तथा प्रस्तोता श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा मन्दिर मे पधारे। आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ के बच्चो ने स्वागत गीत गाकर तथा आर्य हाई स्कूल के बच्चो ने बैण्ड बजा कर स्वागत किया और मन्दिर के अधिकारियो ने शर्मा जी को फूलो से लाद दिया। अन्त मे श्री शर्मा जी ने बहुत सुन्दर उपदेश दिया। 8-1-88 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला जी आर्या, आर्य समाज मे पधारी। मिलटन माडल स्कूल के बच्चो ने स्वागत गीत पेश किया और बहन जी को समाज के अधिकारियो ने फूलो से लाद दिया इसके बाद बहन जी ने ओ३म् का झण्डा लहराया और आर्य कन्या हाई स्कूल के बच्चो ने झण्डे का गीत गाया। अन्त मे बहन कमला जी आर्या ने 45 मिन्ट उपदेश दिया।

10-1-88 रविवार को प्रातः 9-30 बजे सामवेद यज्ञ की पूर्ण आहुति डाली गई और यज्ञ शेष बाटा गया। ठीक 10-00 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी पधारे। समाज के अधिकारियो ने मान्य प्रधान जी को फूलो से लाद दिया। आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ के बच्चो ने स्वागत गीत पेश किया। इसके बाद पूज्य स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती ज्ञान गंगा का मनोहर उपदेश हुआ। मन्दिर का हाल तथा बरामदा सब बच्चों से भरे हुए थे। आर्य रत्न सरदारी लाल जी उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भी पधारे और उत्सव की शोभा को बढाया। आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर के महामन्त्री श्री किशोरी लाल जी भोला ने सभा को वेद प्रचार के लिए 2100 सौ रुपए की थैली भेंट की और पूज्य प्रधान जी ने आर्य समाज की सराहना की और आर्य समाज के कार्य से प्रसन्न होकर 600 रुपए दान दिए। प्रधान श्री राम लुभाया जी नन्दा ने प्रधान जी का धन्यवाद किया और शान्ति पाठ के बाद कार्यवाही समाप्त हुई। उत्सव की समाप्ति के बाद ऋषि लंगर हुआ जिस मे कम से कम एक हजार नर-नारियो तथा बच्चो ने भोजन किया। मन्दिर की ओर से 15 कम्बल बाटे गए।

इस सारे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्रीमती हर्ष जी अरोड़ा, श्री राम कुमार जी शर्मा, श्रीमती मंजू जी कपूर, श्री लालचन्द जी नन्दा, श्री किशोरी लाल जी भोला, श्री त्रिलोक चन्द जी, श्रीमती कौशल्या देवी जी नागरथ, पण्डित वेद प्रकाश जी आर्य, पण्डित निरञ्जन देव जी महोपदेशक, श्री श्रीराम जी तथा मन्दिर की सेविका श्रीमती शान्ति देवी का बहुत-2 धन्यवाद किया। 13 1-88 को लोहड़ी मनाई गई तथा यज्ञ के बाद 4 रजाईयां बाटी गई। 14-1-88 को प्रातः 8-30 बजे मकर सक्रान्ति का उत्सव मनाया गया।

—रामलुभाया नन्दा
प्रधान

महान् सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

[illegible] गुरुकुल के संस्थापक [illegible] से प्रेरित स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म [illegible] हुआ। बाद में [illegible] को [illegible] में अपना एक बहुत बड़ा योगदान दिया।

[illegible] के बीच [illegible] की आयु में [illegible] कर स्वामी श्रद्धानन्द के [illegible] से [illegible] हुए तथा [illegible] बन गए। महर्षि दयानन्द के सम्पर्क आते ही [illegible] दूर हो गए। [illegible] रंग में रंग गए। सारा जीवन [illegible] गया। नास्तिक से आस्तिक, व्यभिचारी से सदाचारी, मांसाहारी से शाकाहारी बन कर सारे राष्ट्र में अपने नाम को सार्थक कर दिया एक व्यभिचारी पुरुष सन्यासी पद पर [illegible] की एक महान् [illegible]।

अपने जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर रोलट ऐक्ट के विरुद्ध दिल्ली के चांदनी चौक में एक विशाल जलूस का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सरकार की संगीनों के सामने अपनी छाती को तान कर ललकारा था।

महर्षि दयानन्द के ही प्रभाव से स्वामी जी ने शिक्षा के लिए गुरुकुलो की स्थापना की जिसके लिए सरकार से किसी भी प्रकार की कोई सहायता नही ली। यद्यपि स्वामी जी का महात्मा हंसराज जी के साथ शिक्षा प्रणाली पर मतभेद हो गया था। जहा स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर जोर देते थे वहां हंसराज जी आधुनिक शिक्षा पर, जिन्होंने डी ए वी स्कूलो की स्थापना की। दोनों ही महापुरुषों की अपनी-2 विचारधारा ठीक थी और दोनों ही संस्थाओ ने अपार उन्नति की। गुरुकुलो ने देश को बहुत बड़े-2 विद्वान् पैदा करके दिए तथा हमारी आर्य संस्कृति को उजागर किया।

बहुत कम लोग जानते हैं महात्मा गान्धी को महात्मा की उपाधि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही दी थी तथा स्वामी जी ने गान्धी जी के अफ्रीका आन्दोलन के लिए गुरुकुल से धन भेज कर उनकी वित्तीय सहायता की थी। जिससे गान्धी जी अत्यन्त प्रभावित हुए। दिल्ली की जामा मस्जिद मे हिन्दी मे भाषण देने का गौरव स्वामी श्रद्धानन्द के सिवा किसी भी हिन्दू राष्ट्रीय नेता को नही मिला।

स्वामी जी ने शुद्धि का कार्य करके अपने समय में लाखो मुसलमानो को पुन हिन्दू धर्म मे लाकर हिन्दू जाति की अपार सेवा की। तथा छुआछूत जैसी अनेक कुरीतियो के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया। उनके बलिदान पर हम अपनी श्रद्धाजलि स्वामी जी के पद चिन्हो पर अग्रसर होकर उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करके तथा जो गुरुकुल आज जीर्ण अवस्था मे पड़े हैं उनका पुन निर्माण करके दे सकते हैं।

—राजेन्द्र कुमार
मन्त्री

ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पहुंचें

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव 15 16-17 फरवरी 1988 तदनुसार सोम, मंगल और बुधवार को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याए, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी, आर्य [illegible] एवं [illegible] संस्थाओ के युवक समारोह मे कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। अभ्यागतो के आवास, भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निशुल्क होगा किन्तु बाहर से पधारने वाले [illegible] अपने बिस्तर [illegible]

[illegible] अभी और भी अनेक विशेष करणीय काम हैं पानी की [illegible] दूर करने की व्यवस्था ऋषि [illegible] को अपने अधिकार में [illegible] संस्थाओ का विकास तथा ऋषि जन्म स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा वहां के कार्य की कठिनाइयो को दूर करने का प्रयत्न प्रयत्न कर रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कम से कम पांच लाख रुपये की तुरन्त आवश्यकता है।

टंकारा पहुचने के लिए दिल्ली से बस द्वारा, रेल द्वारा, और हवाई जहाज द्वारा यात्रा का प्रबन्ध किया गया है।

1—हवाई जहाजो का किराया।
दिल्ली से अहमदाबाद तक
आने-जाने का किराया 1500 रु
2—बस का किराया 600 रु
3—रेल का किराया
दिल्ली से राजकोट
राजकोट से टंकारा वापस
दिल्ली 300 रु

सीट बुक करवाने की अन्तिम तिथि

- हवाई जहाज द्वारा 30-1-88 तक
- बस द्वारा ,, 1 2 88 तक
- रेल द्वारा ,, 26-1-88 तक

नोट .—सीट बुक करने के लिए आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से सम्पर्क करें।

1 बुक हुई सीट कैंसिल नहीं होगी।

2 इस बार भयंकर सूखा की लपेट मे टंकारा है। आप अधिक से अधिक सहयोग देवें। अन्न के रूप में, आटा, चावल, दाल, घी ऋषि लंगर के लिए भेजें।

—रामनाथ सहगल

आर्य समाज लुधियाना (पश्चिम) प्रिंसीपल ताराचन्द शर्मा का प्रवचन

चन्द्रनगर निवासी [illegible] जी के निवास पर सम्पन्न साप्ताहिक सत्संग मे हवन यज्ञ के बाद गुरु गोबिन्द सिंह कालेज गिदड़बाहा के प्रिंसीपल और डी ए वी कालेज मलोट के संस्थापक श्री ताराचन्द जी शर्मा ने अन्ननय सूपत को आधार बना कर यज्ञ की व्याख्या की।

शान्ति पाठ के बाद प्रसिद्ध आर्य सेवक श्री रणबीर भाटिया जी की धर्मपत्नी के निधन पर गहरा दु ख व्यक्त किया गया और भाटिया परिवार के लिए सहन शक्ति के साथ दिवंगता के लिए शान्ति प्रार्थना भी की गई।

—रमेशचन्द्र कश्यप
महा सचिव

आर्य समाज भठिण्डा में शिवरात्रि उत्सव

आर्य समाज भठिण्डा मे शिवरात्रि के उपलक्ष्य मे 9 फरवरी से 16 फरवरी तक सामवेद का पाठ किया जा रहा है। इस उत्सव मे बाहर से सन्यासी भी पधारे जाएंगे। श्री जय देव जी बैंजोई वाले के इस अवसर पर भजन होंगे,।

अन्तर कालेज भाषण प्रतियोगिता

आर्य समाज भठिण्डा ने 16 फरवरी 1988 को अन्तर कालेज भाषण प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय किया है। यज्ञ तथा भाषण प्रतियोगिता की समाप्ति पर ऋषि लंगर का आयोजन किया है।

आर्य समाज भठिण्डा में मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य समाज भठिण्डा द्वारा 14 1-88 दिन वीरवार को आर्य समाज मन्दिर मे "मकर संक्रान्ति पर्व" बड़े उत्साह तथा उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पुरोहित अजीत कुमार जी ने इस पर्व पर दान की महिमा तथा सूर्य के अधिक प्रकाश प्रदान करने पर भाषण दिया। इस अवसर पर रिवोड़िया, तिल तथा बताशा भी बांटा गया।

—ओम्प्रकाश मनचन्दा
प्रधान—आर्य समाज भठिण्डा

मकर संक्रांति पर हवन यज्ञ

श्री लाला दीवान चन्द जी सिंगला मण्डी अवकाशी ने अपने घर पर ओमप्रकाश वानप्रस्थी भठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ कराया। इस अवसर पर लाला दीवानचन्द जी सिंगला ने 1125 रु शहीद परिवार फण्ड मे और 1100 रु वानप्रस्थ आश्रम मे भवन निर्माण सहायतार्थ दान दिए।

श्री वेद प्रकाश जी भठिण्डा के घर पारिवारिक सत्संग

17 जनवरी रविवार श्री वेद प्रकाश जी ने अपने पुत्र दीपक कुमार के जन्म दिन पर अपने घर पर हवन यज्ञ कराया इस शुभ अवसर पर श्री वेद प्रकाश जी ने 100 रु आर्य समाज भठिण्डा को और 100 रु आर्य वानप्रस्थ आश्रम भठिण्डा को दान दिया।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य युवक सभा शक्तिनगर अमृतसर के तत्वावधान मे मकर संक्रान्ति की पूर्व सन्ध्या पर लोहड़ी का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर की ओर से मकर संक्रान्ति का पर्व बड़े अच्छे प्रकार मनाया गया। मन्त्री मा राम रक्खामल जी ने मकर संक्रान्ति के महत्व पर अपना ओजस्वी व्याख्यान दिया।

— डा हरभगवान आर्य

आर्य समाज न गल टाऊनशिप मे वेद प्रचार

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता ने 4 जनवरी से 6 जनवरी 1988 तक नंगल टाउनशिप में विभिन्न स्थानों पर प्रवचन किए और वैदिक मान्यताओं पर प्रकाश डाला। जिस में उन्होंने चरित्र निर्माण मानव प्रेम मातृभाव राष्ट्र प्रेम तथा अध्यात्मवाद पर प्रवचन दिए। सब धर्मों एवं वर्गों के लोग भारी संख्या में उन्हें सुनने के लिए आते रहे। उन्होंने राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भावना पर विशेष बल दिया। उनके प्रवचनों से प्रभावित हो कर सिख परिवारों में भी यज्ञ व प्रवचन हुए

—उप मन्त्री
आर्य समाज नंगल

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी की यह साधारण सभा श्रीमती सुशीला देवी (धर्म पत्नी श्री रामचन्द्र आर्य) जिस प्रभु देव ने दिनांक 19 2 87 रविवार को अपनी अमृत मयी गोद में ले लिया है उस आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करती है श्रीमती सुशीला देवी जी वर्षों स्त्री आर्य समाज के प्रधान पद पर सुशोभित रही और आर्य समाज की सेवा में संलग्न रही। विगत कुछ वर्षों से वे कष्ट प्रकार के असाध्य रोग से ग्रसित होते हुए भी भरसक प्रयत्न उनका सहयोग समाज को निरन्तर मिलता रहा

ये सभा प्रभु से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके सन्तप्त परिवार को भी इस असहनीय दुःख सहने की शक्ति दे।

—द्वारका नाथ वर्मा प्रधान

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर में संक्रान्ति पर्व मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर में मकर संक्रान्ति का पर्व 14 1 88 वीरवार को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें पर्व पद्धति के अनुसार यज्ञ किया और मकर संक्रान्ति पर्व पर प्रकाश डाला गया। इसके पश्चात रेवड़िया मूंगफली का यज्ञ शेष बांटा गया जिसका बहुत प्रभाव रहा। आर्य समाज में प्रतिदिन 7 15 प्रातः यज्ञ होता है। यज्ञ प्रेमी लाभ उठावें।

—मुलखराज आर्य
प्रधान

श्रीमती शास्त्री देवी का देहावसान

आर्य जगत में यह समाचार दुःख के साथ सुना जाएगा कि महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्य समाज के दीवाने अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल की बहन श्रीमती शास्त्री देवी जी काफी समय से रुग्ण चल रही थी का 24 दिसम्बर को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने भाई बिस्मिल के साथ अनेको क्रान्तिकारी कार्यों मे सहयोग दिया था।

'आर्य मर्यादा' और सभा की ओर से हम उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। —सम्पादक

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाए



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सदा जागते रहो

यो जागार तमृच कामयन्ते, यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह, तवाह=मस्मि सख्ये न्योका. ऋग्—5—44—14

शब्दार्थ—(य: जागार) जो जागता है (त) उसे (ऋच.) ऋचाए (कामयन्ते) चाहती है। (य: जागार) जो जागता है (त उ) उसे ही (सामानि) साम, स्तुतिगान (यन्ति) प्राप्त होते है और (य: जागार) जो जागता है। (त) उसके सामने आकर (अय) यह (सोम:) सोम-भोग्य ससार (आह) कहता है कि (तव अह अस्मि) मै तेरा हू (सख्ये न्योका.) तेरी मित्रता मे ही मेरा निवास है। तेरे सख्ये के लिए मै सदा नियत-स्थान पर उपस्थित हू।

व्याख्या—

ससार मे परिपूर्ण जागृत तो एक ही है, वह (अग्नि) परमात्मा है। वह सर्वथा अनिद्र है, त्रिकाल मे जागृत है। उसमे अज्ञान आलस्य का स्पर्श नही अतएव सब ऋचाए ससार की स्तुतिया उसी को चाह रही है।

इसी तरह यदि मनुष्य भी अपनी शक्ति भर जागृत रहेगा, सावधान और कटिबद्ध रहेगा। तमोगुण को दूर हटा कर सदा चैतन्य युक्त रहेगा। आलस्य के कभी भी वशीभूत न होकर अपने कर्त्तव्य को तत्क्षण करने के लिए सदा तैयार व उद्यत रहेगा। कभी प्रमाद न करेगा। बिना भूल-चूक के अपने कर्त्तव्य को ठीक-ठीक करने का अभ्यासी हो जाएगा तो ससार के सब भोग्य पदार्थ उसके सामने हाथ जोड कर खडे हो जाएगे और कहेगे कि हम तुम्हारे है। वेद का ज्ञान भी उसे प्राप्त हो जाएगा और वह कर्त्तव्य अकर्त्तव्य को बडी आसानी मे पहचान जाएगा और वह सच्चे प्रभु को भी प्राप्त कर लेगा।

शिवरात्रि की रात मे शिव पूजन के लिए जैसे मूलशकर जागता रहा जबकि सारे पण्डे पुजारी सो गए थे और उसने जागते हुए यह जान लिया कि यह सच्चा शिव नही है और इस जागने के बाद ही जब वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप मे आगे बढे तो चारो वेदो की ऋचाए उन्हे प्राप्त थी और उन्होने पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

अत: हे मनुष्यो जागो सदा जागृत रहो तामसिकता त्यागो और निरालस्य-जीवन का अभ्यास करो। जाग=रूको के लिए ही ससार है।

आर्य मर्यादा अंक 44 तथा 45 दिनांक 7 तथा 14 फरवरी 1988 तदानुसार 25 माघ तथा 2 फाल्गुन सम्वत् 2044 का सम्मिलित अंक

वार्षिक शुल्क 30 रुपये इस अंक का मूल्य—2 रुपये

सम्पादकीय—

आर्यो ! शिवरात्रि के सन्देश को न भूलो

यह मैं आर्य समाजियों से नहीं कह रहा आर्यों से कह रहा हूं। स्वर्गीय श्री पं. इन्द्र जी वेद वाचस्पति ने एक बार कहा था "आर्य बनो आर्य समाजी न बनो।" वह दूर द्रष्टा थे इसलिये देख सकते थे कि आर्य समाज की क्या दशा हो रही है। यह उनके समय में ही प्रारम्भ हो गई थी। इसलिए वह देख सकते थे कि आर्य समाज किधर जा रहा है यदि आज वह जीवित होते और देखते किस प्रकार आर्य समाज के नेता आर्य समाज को एक ऐसे मार्ग पर ले जा रहे हैं जो धीरे-धीरे इसके अस्तित्व को ही समाप्त कर देगा तो वह कह देते कि मैंने तो पहले ही कहा था कि आर्य बनो आर्य समाजी न बनो।

आर्य बनने के लिए आर्य समाजी बनना आवश्यक नहीं है परन्तु आर्य समाजी बनने के लिए आर्य बनना आवश्यक है। जो आर्य नहीं है वह आर्य समाजी भी नहीं हो सकता। जब पण्डित इन्द्र जी ने यह कहा था कि आर्य बनो आर्य समाजी न बनो तो वह भी शायद यही समझते थे कि यदि आर्य समाज के सभी सदस्य आर्य बन जाएं तो सम्भव है आर्य समाज का सुधार हो जाए और अब हम जब आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोध उत्सव मनाने जा रहे हैं तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम यह समझने का प्रयास करें कि वह किस प्रकार का आर्य समाज बनाना चाहते थे। यदि हम आज से 50 वर्ष पीछे चले जाएं और उस समय के आर्य समाजियों को देखें विशेष कर उस समय के आर्य समाजी नेताओं को, तो हमें पता चल जाएगा कि हमारा कितना पतन हुआ। आज हमारे पास कोई स्वामी श्रद्धानन्द नही है। कोई महात्मा हंसराज भी नही है। कोई स्वामी सर्वदानन्द नही है। कोई महात्मा नारायण स्वामी नही है। कोई आचार्य रामदेव नही है। कोई प. चमूपति नही है। चारों तरफ देखा जाए तो निराशा ही निराशा दिखाई देती है इसका यह अर्थ भी नही कि आज आर्य समाज में योग्य, कमर्ठ और त्यागी व्यक्ति नही है। आज भी आपको ऐसे आर्य समाजी जगह-जगह मिल जाएंगे। परन्तु हर जगह उन्हे पीछे धकेलने की कोशिश हो रही है और आगे वह लोग आ रहे हैं जिनमें न तो योग्यता है न जनता पर उनका कोई प्रभाव है। यदि कोई व्यक्ति परिश्रम करके आगे आ भी जाता है तो किसी न किसी ढंग से उसे पीछे धकेल दिया जाता है यह एक पुरानी कहावत प्रसिद्ध है कि —नकली सिक्का हमेशा असली सिक्के को बाहिर निकाल देता है और स्वयं चलने लगता है, आज आर्य समाज में नकली सिक्कों का बोलबाला है। यही कारण है कि आर्य समाज की वह प्रतिष्ठा नहीं रही जो पहले थी। इसलिए शिवरात्रि के दिन जब हम अपने उस महान् नेता को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए इकट्ठे होंगे तो सबसे पहला काम जो हमें करना चाहिए वह यह कि हम अपने अन्तकरण से यह प्रश्न करें कि क्या हम उस कर्त्तव्य को पूरा

कर रहे हैं जो महर्षि ने हमारे ऊपर डाला था देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज पर बहुत बड़ा दायित्व है आज चारों ओर से ऐसे तत्व सिर उठा रहे हैं जो देश की एकता और राष्ट्रीयता को कमजोर करना चाहते हैं उनका सबसे अधिक आक्रमण आर्य समाज पर होता है। कई आर्य भाइयों और बहनों ने दूरदर्शन पर तमस नाम का एक धारावाहिक नाटक कुछ समय से दिखाया जा रहा है इसमें भी यह बताने का प्रयास किया जा रहा है कि 1947 में जो कुछ हुआ था उसके लिए बहुत कुछ आर्य समाज जिम्मेदार था। जबकि वास्तविक स्थिति यह थी कि जो कुछ उस समय हुआ था वह मुस्लिम लीग ने करवाया था आर्य समाज ने उनके षड्यन्त्र के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी। उसका श्रेय आर्य समाज को मिलना चाहिए था वह तो नहीं मिला परन्तु जो कुछ हुआ उसकी जिम्मेदारी आर्य समाज पर डाली जा रही है। आवश्यकता इस बात की थी कि हमारे देश का आर्य समाज इसके विरुद्ध एक आंदोलन करता। आज कई स्थानों पर भारतीय जनता पार्टी या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वालों ने तो प्रदर्शन किए हैं परन्तु आर्य समाज की ओर से दो चार स्थानों पर ही प्रदर्शन हुआ और इस विषय में भी नेतृत्व की ओर से लोगों को नहीं बताया गया कि उन्हें क्या करना चाहिए।

कहने को तो बहुत कुछ कहा जा सकता है लेकिन सुनने वाला कौन है। अब आर्य समाज में ही कई दरबारी पैदा हो गए हैं। जिस संस्था में ऐसे व्यक्ति आगे आ जाएं वह संस्था फिर आगे नहीं बढ़ सकती। इसीलिए सम्भवत: पण्डित इन्द्र जी ने कहा था कि आर्य बनो, आर्य समाजी न बनो लेकिन आर्य समाज हमारे पास महर्षि दयानन्द की एक धरोहर है। इसकी स्थापना वह कर गए थे। इसलिए भी आवश्यक है कि इसे बचाने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं हमें करना चाहिए। शिवरात्रि पर्व पर हमें यह संकल्प करना चाहिए कि आर्य समाज की पवित्रता की सुरक्षा के लिए हम से जो कुछ भी हो सकेगा हम करेंगे। उस के लिए यदि हमें बड़े से बड़ा त्याग करना पड़े तो वह भी करेंगे। आर्य समाज किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं है। इसे बनाने के लिए शहीदों ने अपना खून दिया। बड़े-2 सन्यासियों ने तप, त्याग और अपना बलिदान दिया। तब कहीं जाकर यह इतनी बड़ी संस्था बनी है यदि अब किसी भी कारण से विघटन का शिकार हो जाती है या कुछ लोगों के स्वार्थ के कारण यह बदनाम हो जाती है या कमजोर हो जाती है तो इतिहास आर्य समाजियों को कभी क्षमा नहीं करेगा। जो कुछ बिहार में हुआ। उत्तर प्रदेश में हुआ। देहली में हुआ, और अब पंजाब मे हुआ इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि आर्य समाज किधर जा रहा है। इसकी लोकतान्त्रिक परम्पराओं को समाप्त करके इसमें तानाशाही का युग प्रारम्भ हो रहा है। यदि इसे न रोका गया तो कहना कठिन है कि अन्त में इसका क्या रूप बनेगा। शिवरात्रि के पावन पर्व पर हम सबने अपने इस महान् गुरु आचार्य और नेता के चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करनी है। वह इस से बढ़ कर और कोई नहीं हो सकती कि हम यह संकल्प करें कि जिस प्रकार का आर्य समाज महर्षि बनाना चाहते थे, जिस आर्य समाज के लिए स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज जैसे त्यागी तपस्वी नेताओं ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। आर्य समाज के उस स्वरूप को किसी भी स्थिति में बदलने नहीं दिया जाएगा। यह पहले की तरह ही गंगा की तरह पवित्र और पावन संस्था रहेगी। इसे किसी प्रकार के भ्रष्टाचार से प्रदूषित नहीं होने दिया जाएगा। यही एक सन्देश है जो हमने घर-2 पहुंचाना है।

—वीरेन्द्र

ऋषिबोध उत्सव (शिवरात्रि) का संदेश

लेखक—श्रीमती कमला आर्या-महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

जो कुछ ढेर सारी पुस्तकों के पढ़ने से नहीं मिल पाता, बड़े-बड़े उपदेष्टाओं के उपदेश भी जब सारहीन हो जाते हैं, शास्त्र-धुरन्धर आचार्यों द्वारा दिया गया ज्ञान भी जब थोथा रह जाता है। ऐसे में कई बार यह अचेतन प्रकृति मनुष्य के अवचेतन मन में ऐसी चेतना, ऐसा प्रकाश, ऐसा ज्ञान भर देती है कि जिसकी कोई कल्पना भी नहीं होती।

हम नित्य प्रति कितने बूढ़े, रोगी अथवा मृतकों को देखते हैं परन्तु इन अचेतन दृश्यों के मूक सन्देश से जो चेतना राज कुमार गौतम ने पाई, जिस चेतना ने उसे गौतम से महात्मा बुद्ध बना दिया, उस दिव्य दृष्टि से इन दृश्यों को किसी अन्य ने नहीं देखा। उबलते पानी की केतली से निकलती हुई भाप की शक्ति की ओर केवल जार्ज स्टीफेन्सन की ही दृष्टि गई। इससे पूर्व भी नित्य प्रति रसोई घरों में भाप से ढक्कन हिलते रहे परन्तु किसी ने इसे नहीं पहचाना। इसी प्रकार फाल्गुण मास की चतुर्दशी भी पता नहीं कब से "शिवरात्रि" के रूप में मनाई जाती रही, असंख्य लोगों ने शिव की उपासना में रातें जागी को, शिव पिण्डी पर चूहों के इस ताण्डव-नर्तन का कोई स्वर बालक मूलशंकर से पूर्व किसी भी शिव भक्त के कानों में नहीं पड़ा, किसी को भी तत्व ज्ञान का बोध नहीं हो पाया। सच्चे शिव को पाने की अभिलाषा बालक मूलशंकर के मन में इन चूहों की उच्छृंखलता से ही पैदा हुई। जिसकी खोज में मूलशंकर ने घर बार छोड़ा, दर दर की ठोकरें खाई, भूख, प्यास सर्दी, गर्मी, की परवाह किए बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते गए अन्तत: वह दिन भी आ गया जब महर्षि गुरु विरजानन्द जैसे सद्गुरु की शरण प्राप्त हुई जिनसे सच्चे शिव का पता चला जिनसे प्रकाश पाकर मूल शंकर महर्षि दयानन्द बन गये और सारे संसार को अपने ज्ञानालोक से आलोकित कर गए।

अब भी शिवरात्रि प्रति वर्ष आती है अब भी इसके अन्तर में अनेकों तत्व छिपे पड़े हैं। परन्तु वह रत्न पानी की ऊपरी सतह की तरह कोरे पूजा पाठ से नहीं मिलते। वह तो तभी मिलेंगे जब हमारी दृष्टि इतनी सूक्ष्म तथा हमारी प्रवृत्ति गहराई तक सोचने वाली हो जायेगी। शिवरात्रि जिसे बोध रात्रि भी कहा जाता है। इसका सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण सन्देश है कि सब का कल्याण करने हारे जिस भगवान शंकर ने इस कल्याण कारिणी विचित्र तथा मनोहर प्रकृति की रचना की है। हम उस प्यारे प्रभु की इस अनुपम रचना की छोटी से छोटी घटना को गम्भीरता से लेकर उससे ज्ञान ग्रहण करने का प्रयत्न करें। यही शिवरात्रि का कल्याणकारी सन्देश है।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

॥ ओ३म् ॥

कृतज्ञता-अभिव्यक्ति

सदा सर्वत्र सभी मेधा एवं शक्ति का आधान करने वाले परमपिता परमात्मा का कोटिशः धन्यवाद है कि जिनकी अपार अनुकम्पा से बहुमुखी प्रतिभा के धनी वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति उन्हीं के बोध दिवस पर सभा के मुख पत्र आर्य मर्यादा के इस 'ऋषि बोधांक' के रूप में हम अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर पाए हैं।

हम आभार प्रकट करते हैं—

अपने सभी उन विद्वानों के प्रति,
जिनकी लेखनी के सहयोग से हम इस अंक को सजा संवार कर प्रकाशित कर पाए हैं।

अपने सभी विज्ञापन दाताओं के प्रति,

अपने सभी आर्य संस्थाओं के प्रति,

अपनी सभी आर्य समाजों एवं स्त्री आर्य समाजों के प्रति,

★उन सभी आर्य बन्धुओं के प्रति जिन्होंने इस अंक में अपने प्रियजनों की स्मृति में पुण्य पृष्ठ दिए हैं।

तथा अपने सभी सहयोगी कार्यकर्ताओं के प्रति जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में अपना सहयोग देकर इस प्रकाशन को सफल बनाया है।

हम क्षमा चाहते हैं—
उन सभी भूलो के लिए जो इस प्रकाशन कार्य में भूल से हमसे अनजानेपन में हो गई हों।

आप सभी के सहयोग के अभिलाषी—

वीरेन्द्र	**हरबन्स लाल शर्मा**	**कमला आर्या**
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब गुरुदत्त भवन
चौक किशनपुरा जालन्धर शहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्तमान अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य

पदाधिकारी :—

1. श्री वीरेन्द्र जी संचालक प्रताप व वीर प्रताप जालन्धर-सभा प्रधान।
2. श्री दीवान राजेन्द्र कुमार दीवान वाटिका नजदीक, न्यू टैलिफोन एक्सचेन्ज के पास, लुधियाना सभा-उपप्रधान।
3. श्री रामनाथ शर्मा, भण्डारी निवास मजीठा रोड अमृतसर, सभा-उप-प्रधान।
4. श्री सरदारी लाल आर्य रत्न, आजाद सर्जीकल वर्क्स, भार्गव कैम्प जालन्धर, सभा-उपप्रधान।
5. श्री सन्तराम अग्रवाल मकान नं. 1224-सैक्टर 22 बी चण्डीगढ़, सभा-उपप्रधान।
6. श्रीमती कमला आर्या, 350 गली सती सूवां, लुधियाना, सभा-महामन्त्री।
7. श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट, 1-कूल रोड, निकट आकाशवाणी जालन्धर, सभा मन्त्री व प्रस्तोता।
8. वैद्य ओम प्रकाश इन्दु, हिन्द फार्मेसी गौशाला रोड फगवाड़ा, सभा-मन्त्री।
9. श्री ओमप्रकाश पासी, बी-11-659 माली गन्ज, लुधियाना सभा-मन्त्री।
10. श्री सुभाष भाटिया 2027/27 गली कम्बो अलियांवाला बाग, अमृतसर सभा-मन्त्री।
11. पं. हुरबन्स लाल जी शर्मा, 406-एल माडल टाउन जालन्धर, सभा-कोषाध्यक्ष।
12. पं. ब्रह्मदत्त शर्मा एफ 232 रेलवे कालोनी-3 जालन्धर सभा-अधिष्ठाता वेद प्रचार।
13. श्री धर्म प्रकाश दत्त, प्रि. आदर्श बाल विद्यालय, बंगा रोड, नवांशहर दोआबा, सभा-अधिष्ठाता-साहित्य विभाग।
14. श्री आशानन्द आर्य, 49/63 हरपाल नगर, लुधियाना, सभा-अधिष्ठाता आर्य वीरदल।

अन्तरंग सदस्य :—

15. श्री महेन्द्र पाल वर्मा, बी-11-932 माली गन्ज, लुधियाना।
16. श्री वेदप्रकाश महता पलाट नं. 19 अन्दर जगदीश आश्रम, पटियाला।
17. श्री ओमप्रकाश महेन्द्र, वैदिक मिशनरी, मोरिंडा (रोपड़)।
18. श्री मनोहर लाल चोपड़ा, मैनेजर आर्य माडल स्कूल फगवाड़ा।
19. महता हवन लाल, बी. एम. 31/11 गंगा मन्दिर गली, फिरोजपुर शहर।
20. श्री राज कुमार गर्ग मै. देवीदयाल शिव कुमार कच्चा आढ़ती दरिया बाजार, बरनाला।
21. श्री राकेश मेहरा 248 बसन्त ऐवन्यू अमृतसर।
22. श्री कृष्ण कुमार जी, मै. इन्द्र सिंह हजारा सिंह टी मर्चेन्ट, भटिंडा।
23. श्री विजय कुमार अग्रवाल मै. प्रेमनाथ एण्ड ब्रदर्ज, जी. टी. रोड, बटाला।
24. श्री मनोहर लाल जी, आर्य समाज तलवाड़ा टाउनशिप (होशियारपुर)।
25. श्री रामलुभाया जी नन्दा, नन्दा दी हट्टी, बस्ती गुजां, जालन्धर शहर।
26. श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा, 7-ए लिंक रोड, जालन्धर।
27. श्रीमती कृष्णा कोछड़ द्वारा आर्य समाज मो. गोविन्दगढ़ जालन्धर।

28. प. देवेन्द्र कुमार,श्रीराम देवेन्द्र कुमार पुरानी अनाज मण्डी, नवाशहर द्वाबा ।
29. श्री अमृत लाल बजाज एडवोकेट इ-बी 933 गोबिन्दगढ जालन्धर शहर ।
30. श्री कर्मचन्द माली मकान न. 155 मडा, जालन्धर ।
31. श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा बी 1-1362 कूचा बाननराम मन्डी सिविल लाइन्ज लुधियाना ।
32. श्री नरेन्द्र सिंह मल्ला बी-1-502 पार्क लेन सिंडीकेट, बिल्डिंग के सामने सिविल लाईन्ज, लुधियाना ।
33. श्री सुभाष मित्तल, कुलदीप निवास मेन बाजार पठानकोट ।
34. डा. सत्य भूषण बामिया, पिण्डी स्ट्रीट लुधियाना ।
35. डा. के. के. पसरीचा, आदर्श नगर, जालन्धर ।
36. श्री प्रो. रोशन लाल जी, राजकीय हा सै. स्कूल, कपूरथला ।
37. श्री द्वारकानाथ आर्य समाज लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी ।
38. श्रीमती कृष्णा रानी, बी-9।273 निकट सन्तोषी माता मन्दिर, सगरूर ।
39. श्री डा. मूलचन्द जी भारद्वाज, एम बी. कालेज मण्डी बाग बजानन्दिया लुधियाना ।
40. श्री बृजबख्तराय जी सूद सिम्पलैक्स निटवेयर्स माधोपुरी, लुधियाना ।
41. श्री केवल कृष्ण जी पुरी गांधी रोड, मोगा ।

निमन्त्रित :—

1. बहिन सुमना पति जी, स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार, लुधियाना ।
2. श्री ब्रह्मदत्त जी कौड़ा, कौडा मशीनरी स्टोर गांधी चौक, बटाला (पजाब) ।
3. डा. ज्ञानचन्द जी मकान न. डब्ल्यू ओ 196 बस्ती दानिशमन्दा, जालन्धर ।
4. श्रीमती कमला भाटिया आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भठिण्डा
5. श्रीमती कमला आर्या द्वारा आर्य समाज पक्का बाग, जालन्धर ।
6. श्री रोशन लाल जी शर्मा, महामन्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना
7. श्री वेद प्रकाश जी सरीन मुहल्ला लालिया, नवाशहर द्वाबा (जिला जालन्धर) ।
8. श्री रामकृष्ण जी महाजन, द्वारा दयानन्द मठ, दीनानगर (गुरदासपुर) ।
9. श्री देशबन्धु चोपडा मन्त्री-आर्य समाज बंगा रोड, फगवाड़ा (पजाब) ।
10. मास्टर रामप्रसाद जी द्वारा बी-11-659 माली गन्ज, लुधियाना ।
11. वैद्य सच्चिदानन्द जी, निकट सूवा दा शिवाला मेन बाजार मोगा ।
12 श्री इन्द्रराज जी शर्मा प्रधान आर्य समाज सैक्टर 24 सं. 9 चण्डीगढ ।
13. चौ रूपचन्द जी एडवोकेट, कोठी न. 9 चण्डीगढ ।
14. श्री ओम प्रकाश जी भगला प्रधान आर्य समाज चौक भटिंडा ।
15, श्री के. के. सैगर, सैगर निवास सैगर मुहल्ला, नवाशहर द्वाबा ।
16 श्री ललित बजाज आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर ।
17. प्रिंसीपल बलभद्र कुमार मल्होत्रा, श्रीराम मीनियर सैकेण्डरी स्कूल, पटियाला ।
18. श्रीमती इन्दु पुरी मै. देवीदास गोपाल कृष्णा, गांधी रोड, मोगा (पजाब) ।
19. श्री शान्तिलाल जी डल्ल 76-सी उधम सिंह नगर लुधियाना ।
20. मा. रामरखामल जी मन्त्री आर्य समाज ललित नगर अमृतसर ।
21. प. सुदेश कुमार जी महामन्त्री आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर ।

शिवरात्रि पर्व का क्रान्तिकारी संदेश

लेखक—श्री पं धर्मदेव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

प्रति वर्ष शिवरात्रि का पर्व चिरकाल से फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस वर्ष भी यह पर्व 16 फरवरी को मनाया जा रहा है। इस दिन छोटे से एक बालक मूलशंकर ने अपने पिता कर्षण जी तिवारी के कहने पर महा शिव-रात्रि का व्रत रखा और रात्रि को शिव पूजन के लिए पिता जी के साथ मन्दिर मे चले गए और उस रात्रि के सन्नाटे मे जब सब सो गए थे तो चूहो को शिव पिण्डी पर उच्छल कूद करते हुए तथा वहा चढा हुआ भोग खाते हुए देख कर मूल शंकर के हृदय मे क्रान्ति की एक ज्वाला जल उठी। उनका हृदय क्रान्ति कर उठा। उनके हृदय मे जो विचार शिव-रात्रि के व्रत और मन्दिर मे पूजन के लिए आते समय विद्यमान थे, जो आदर सत्कार उनके हृदय मे शिव मूर्ति के प्रति था, वह सब काफूर हो गया। वह अपने पैत्रिक मूर्ति पूजा के विचारो के विरुद्ध बगावत करने के लिए खडे हो गए। और जो पुरानी परम्परा परि-वार मे पूजा-पाठ की निरन्तर चली आ रही थी उसके प्रति उनका हृदय विद्रोह कर उठा।

उस दिन के बाद मूल शंकर चैन से नही बैठा जो क्रान्ति की ज्वाला उनके हृदय मे उठी थी वह निरन्तर जलती रही। वह अपने माता-पिता के विचारो से भी सहमत नही हुए और उन्होने एक दिन घर छोड दिया।

घर छोड कर मूल शंकर सच्चे शिव की खोज मे दर-2 भटका, नगर, ग्राम, जंगल, पहाड तथा नदी नालो के संगमो पर भी वह सच्चे गुरु की खोज मे गया। अन्त मे उन्होने मथुरा मे, गुरु विरजानन्द जी के चरणो मे बैठ कर सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लिया और सच्चे शिव को पहचान लिया, परन्तु अब वह मूलशंकर नही, शुद्ध चैतन्य भी नही, महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप मे संसार के सामने आए और उन्होने अपना एक क्रान्तिकारी आन्दोलन आरम्भ कर दिया और उस आन्दोलन का नाम उन्होने रखा। "आर्य समाज"। कई लोगो को भ्रम है कि आर्य समाज भी एक उसी प्रकार का मजहब या धर्म है जैसे कि अन्य मजहब या धर्म है। आर्य समाज कोई मजहब या धर्म नही है। आर्य समाज तो एक आन्दोलन है जिसने सारे देश मे एक क्रान्ति पैदा की है।

कौन सा ऐसा क्षेत्र है जहा महर्षि दयानन्द जी महाराज की आवाज नही पहुंची और उसमे एक विशेष क्रान्ति पैदा नही हुई। आर्य समाज की प्रेरणा से देश की आजादी के लिए एक क्रान्तिकारी आन्दोलन हुआ जिसके परिणाम स्वरूप आज भारत आजाद है। अन-पढता को दूर करने के लिए आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र मे महान् क्रान्ति की, जिसके परिणाम स्वरूप आज हजारो शिक्षा संस्थाए स्कूल और कालेज आर्य समाज की ओर से चल रहे हैं। कभी कन्याओ को पढाना पाप समझा जाता था परन्तु आर्य समाज की क्रान्ति के आगे ऐसे विचार देर तक न ठहर सके और आज स्त्री शिक्षा के कट्टर विरोधी स्वयं सनातन धर्म कालेज स्कूल व अन्य संस्थाए चला रहे हैं।

विधवा उद्धार, अछूतोद्धार, शुद्धि प्रचार आदि के लिए आर्य समाज ने जो कार्य किया है वह कौन नहीं जानता। मूर्ति पूजा और अन्ध विश्वास की जड़ों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बड़े तीखे व तीव्र प्रहार किए। सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में एक क्रान्ति पैदा कर दी।

एक बार सारे देश में नगर-2 और ग्राम-2 में महर्षि दयानन्द की चर्चा होने लगी। उनके क्रान्तिकारी विचारों को सुन कर लोगो ने अपने घरों से मूर्तियों को उठा कर जल में विसर्जन कर दिया। उन्होंने जहां भी बुराई देखी उसी के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। चाहे कोई किसी भी मजहब के मानने वाला था चाहे कोई किसी भी धर्म के मानने वाला था, जो भी उनके सामने जाता था वह उनके विचारों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। भारत के सभी क्षेत्रों, नगर-2 व ग्राम में एक क्रान्ति की ज्वाला प्रज्वलित हुई जिसमें सभी प्रकार के अन्धविश्वास रूढ़ियां और आडम्बर धीरे-धीरे भस्म होने लगे।

आज भारत में बहुत जागृति है। हर क्षेत्र में भारत आगे बढ़ रहा है। चाहे वह सामाजिक हो, राजनैतिक हो या धार्मिक हो, परन्तु इस सब के पीछे एक वही क्रान्ति कार्य कर रही है जो इसी शिवरात्रि की रात को टंकारा (सौराष्ट्र) के एक शिवालय में एक छोटे से बालक मूल शंकर के हृदय में पैदा हुई थी।

शिवरात्रि प्रति वर्ष आती है और आकर चली जाती है परन्तु आज वह शिवरात्रि किसी मूलशंकर के हृदय में वह क्रान्ति पैदा नहीं कर रही जो उसने आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व मूल शंकर के हृदय में पैदा की थी।

आओ हम भी इस पर्व को मनाते हुए अपने जीवन को टटोलें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताए हुए मार्ग पर हम कहां तक चल पाए हैं और कितने आगे बढ़े हैं। यदि आगे नहीं बढ़े तो क्यों नहीं आगे बढ़ पा रहे हैं? शिवरात्रि अब हमें केवल शिव अर्चना का ही सन्देश नहीं देती बल्कि एक क्रान्तिकारी सन्देश भी देती है कि उठो जागो अपने आपको पहचानो और सच्चे शिव परम-पिता परमात्मा को प्राप्त करो जिस प्रकार से जगत् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्राप्त किया था।

ऋषि-बोध

(रचयिता—कविवर श्री "प्रणव" शास्त्री,)

देखा शिव ज्योति का प्रकाश सुप्रभावपूर्ण, लोचन ललित मधु मस्त मचने लगे।
देखा चढ़ा चूहा शिवलिङ्ग पर उड़ा आगी, बुद्धि के वितान में विचार सजने लगे॥
मनन किया तो मनमोद का ठिकाना नहीं, अशिव, असत्य भाव दूर भजने लगे।
सहसा "प्रणव" आर्ष बोध से हिलोर ले के, तार-तार हृदय-सितार बजने लगे॥
भेद भावना के भेद भाव को मिटा के सत्य, विश्व बन्धुता को मन्त्र वैदिक विचारते।
सतत सहाय हो के पुण्य पथ प्रेमियों के, जन के अशेष क्लेश कठिन निवारते॥
धर्म धनी मानवों में ज्ञान की जगा के ज्योति, संस्कृति सुधार-सुधा संस्कृत सुधारते।
"प्रणव" निडर चले ऋषि विश्व-प्राङ्गण में, सत्यं, शिवं, सुन्दरं की सरिता प्रसारते॥

स्वामी दयानन्द और नारी जागरण—

नारी उत्थान विषयक कार्यों में आर्य समाज की उपलब्धियां

लेखक:—श्री डा भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ

नारी की गृह, परिवार, समाज तथा राष्ट्र मे जो महत्वपूर्ण भूमिका है, उसका निर्धारण भी आर्य समाज ने अत्यन्त सतर्क दृष्टि से किया है। वेदो मे जहा नारी को परिवार की सम्राज्ञी तथा गृह लक्ष्मी जैसे उदात्त विशेषणो से विभूषित तथा स्मृतियो मे उसे आदर, सम्मान तथा पूजा का पात्र कहा, वहा मध्यकाल में उस की स्थिति सर्वथा हेय एव शोचनीय हो गई। वह तिर-स्कृता दासी के तुल्य मानी गई। नारी की इस अधो-गति के अनेक सामाजिक कारण भी हैं। मुसलमानी शासन काल में हिन्दुओ ने अपनी कन्याओ को विधर्मी आततायियो का शिकार बनने से बचाने के लिए उनके विवाह बाल्यकाल मे ही करने आरम्भ किए, ताकि विवाहितो का अपहरण न किया जा सके। इसी प्रकार विवाहित स्त्रियो को पर्दे मे रखने की प्रथा भी जारी हुई। किन्तु इन रूढियो ने अन्ततः भारतीय नारी को निर्बल, हीन तथा पराधीन ही बनाया।

स्वामी दयानन्द के आविर्भाव के युग मे नारियो की दुर्दशा अपनी चरम सीमा पर पहुच चुकी थी। बाल विवाह का प्रचलन जोरो पर था जिसके परिणाम स्वरूप लाखो विधवाए आजीवन यातना, अत्याचार तथा उत्पी-डन का जीवन व्यतीत करती थी। मध्ययुगीन धार्मिक अन्धविश्वासो के कारण विधवाओ के पुनर्विवाह पर प्रतिबन्ध लगाया जा चुका था, फलतः सहस्रो विधवा स्त्रिया विधर्मियो द्वारा अपहृत की जाती थी अथवा वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए विवश होती थी।

विधवाओ के पुनर्विवाह को तो प्रतिबन्धित कर दिया गया था, किन्तु अधेड़, प्रौढ यहा तक कि वृद्ध पुरुषो को कुमारी कन्याओ से विवाह करने की छूट मिली हुई थी। वासनालोलुप वृद्ध जीवन के सन्ध्याकाल मे भी तरुणी युवतियो से विवाह का स्वल्प समय पश्चात् ससार से कूच कर जाते और अपने पीछे विधवा को आजन्म असहाय जीवन व्यतीत करने की यन्त्रणा प्रदान कर जाते। महर्षि दयानन्द ने स्त्री जाति को नितान्त शोच-नीय स्थिति तक पहुचाने वाली इन सभी सामाजिक कुप्रथाओ का दृढता पूर्वक विरोध किया और कन्याओं के सर्वविध शिक्षण, युवावस्था मे स्वयवर विवाह, तथा पूर्ण स्वावलम्बन युक्त जीवन व्यतीत करने पर बल दिया। इस दृष्टि से यदि स्वामी दयानन्द को नारी जाति की सर्वांगीण मुक्ति का विधाता कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

आर्य समाज और नारी शिक्षा

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित आदर्शों का ही अनु-करण करते हुए आर्य समाज ने नारी के सर्वतोमुखी उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम प्रचलित किये। सर्वप्रथम

उन्हें शिक्षित करने का अभियान चलाया गया। आर्य समाज का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि कन्या शिक्षण हेतु पाठशालाएं स्थापित होने का कार्यक्रम स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही हो गया था। लाहौर, मेरठ तथा फर्रुखाबाद की आर्य समाजों ने कन्या पाठशालाएं स्थापित कर इस कार्य का शुभारम्भ किया। कालान्तर में कन्या पाठशालाओं तथा कन्या गुरुकुलो की जिस तेजी के साथ स्थापना होने लगी, वह तो अपने आप में एक चमत्कार ही था।

सर्वप्रथम लाला देवराज ने जालन्धर में आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। जहां लड़कियों के बौद्धिक चारित्रिक तथा शारीरिक प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था थी। इसके पश्चात् तो देहरादून, सासनी (हाथरस) भेंसवाल (हरियाणा) पोरबन्दर तथा बड़ौदा में कन्या गुरुकुलों के द्वारा नारी शिक्षा में जो क्रान्ति की गई वह भारत की शिक्षा के इतिहास का एक महत्वपूर्ण पृष्ठ बन गया है। आज अकेले हरियाणा प्रान्त मे ही कन्याओं के अनेक गुरुकुल नारी शिक्षा को विशिष्ट दिशा प्रदान कर रहे हैं। गुरुकुलों की ही भान्ति कन्या स्कूलों और कालेजों की स्थापना के द्वारा आर्य समाज ने नारी शिक्षा की प्रचलित पद्धति को अपना उल्लेखनीय योगदान किया है। आर्य समाज द्वारा संचालित इन कन्या विद्यालयो और महाविद्यालयों ने छात्राओं के सर्वविध विकास के लिए अनेक साधन उपलब्ध किये हैं। जिन आर्य महिलाओं ने कन्या गुरुकुलो तथा अन्य शिक्षण संस्थाओ का सफल संचालन कर नारी शिक्षा के क्षेत्र मे युगान्तरकारी कार्य किया है उनमें से कतिपय के नाम उल्लेखनी हैं :— आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर की आचार्या कुमारी लज्जावती, कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या दमयन्ती देवी, कन्या गुरुकुल हाथरस की संस्थापिका माता लक्ष्मी देवी, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर की आचार्या सवितावेन मेहता तथा राजस्थान जैसे पिछड़े प्रदेश मे वैदिक शिक्षा का सूत्रपात करने वाली श्रीमती गुलाब देवी (चाची जी) आदि। इसी प्रकार आचार्य रामदेव, लाला देवराज जी, मास्टर आत्माराम अमृतसरी, तथा पं. आनन्द प्रिय आदि महानुभावों ने भी नारी शिक्षा को जिस प्रकार प्रोत्साहित किया तथा विभिन्न गुरुकुलों का सफल संचालन किया। तदर्थ वे शिक्षा जगत् में अपना सम्मानास्पद स्थान बना चुके हैं।

नारी के धार्मिक अधिकार

स्त्रियों की सामाजिक दशा को सुधारने तथा उन्हें सुशिक्षित करने के लिए आर्य समाज ने जो प्रयत्न किये, उनकी कुछ चर्चा हम कर आए हैं। परन्तु आर्य समाज द्वारा नारी जाति के धार्मिक अधिकारों की रक्षा हेतु किये जाने वाले संघर्षों की कथा भी कुछ कम रोचक नही है। जैसा कि हम देख चुके हैं, मध्यकालीन धर्माचार्यों ने स्त्रियों के वेदादि शास्त्रों के पठन-पाठन के अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगा दिए थे। उन्हें केवल तुलसी कृत राम चरित मानस जैसे भाषा ग्रन्थों को ही पढ़ने की प्रेरणा दी जाती थी। परमात्मा के प्रमुख एवं शास्त्रोक्त नाम ओम् का उच्चारण करने तथा गायत्री मन्त्र की दीक्षा का अधिकार भी उन्हें नहीं था। भागवतकार ने तो यहां तक लिख दिया था—

स्त्री शूद्रद्विजबंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा।
इति भारतमाख्यानं मुनिना कृपया कृतम्।

अर्थात् स्त्रियों और शूद्रों का वेदों में अधिकार नहीं है। अतः उनके लिए महर्षि व्यास ने कृपा पूर्वक महाभारत जैसे ग्रन्थ की रचना की है। वेदों के मध्यकालीन भाष्यकार सायण ने नारी को उपनयन संस्कार का अनाधिकारी बताया और अपनी ऋग्वेद भाष्योपक्रमणिका में स्पष्ट लिखा—"स्त्री शूद्रयोस्तु सत्यामपि ज्ञानापेक्षायाम् उपनयनाभावेन अध्ययन राहित्याद् वेदे अधिकारः प्रतिषिद्धः। ऐसी स्थिति में जब कि स्त्रियों के वेद पठन-पाठन तथा वैदिक कर्मकाण्ड के करने कराने के

सभी अधिकार छीने जा चुके थे, स्वामी दयानन्द ने नारी के इन अधिकारों को पुन: दिये जाने के लिये एक प्रबल अभियान चलाया। आर्य समाज ने इस सम्बन्ध में जो कुछ किया है उसका मूल्यांकन समाज शास्त्रियों और इतिहासकारों ने विस्तारपूर्वक किया है।

इस प्रसंग में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अरबी, फारसी के भूतपूर्व प्रोफैसर पं. महेश प्रसाद मौलवी की विदुषी पुत्री कल्याणी देवी का प्रसंग स्मरणीय है। कल्याणी देवी ने हिन्दू विश्वविद्यालय की वेद और पौराहित्य प्रशिक्षण की कक्षा में प्रवेश लेना चाहा था, किन्तु जन्म जात्याभिमानी पण्डितों ने यह कह कर इस विदुषी को प्रवेश देने से इन्कार किया कि यह न केवल लड़की है, अपितु अब्राह्मण की सन्तान है। पण्डितों के इस संकीर्ण दृष्टिकोण का प्रतिवाद करने के लिए आर्य विद्वान् सन्नद्ध हुए और उन्होंने विश्वविद्यालय के कुल-पति पं. मदनमोहन मालवीय के समक्ष उपस्थित होकर कन्याओं के वेदाधिकार विषयक अनेक शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत किये। फलत: कल्याणी देवी का वेद कक्षा में प्रवेश सम्भव हो सका। विगत एक शताब्दी के काल में आर्य समाज ने वेदादि शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन में निष्णात् जिन विदुषी देवियों को तैयार किया है, उन सबका नामोल्लेख करना भी सम्भव नहीं है। डा. प्रज्ञा-देवी, डा. पुष्पावती आदि विदुषी आर्य महिलाओं ने अपने पाण्डित्य द्वारा सर्वत्र प्रशंसा एवं ख्याति प्राप्त की है।

राष्ट्रीय क्षेत्र में नारी—

समाज की ही भान्ति राष्ट्रीय एवं राजनीति के क्षेत्र में भी भारतीय नारी को स्वकर्त्तव्य पालन की प्रेरणा देने में आर्य समाज कभी पीछे नहीं रहा। आर्य पुरुषों की ही भान्ति आर्य नारियों ने भी देश हित के लिए आत्म बलिदान का मार्ग चुना तथा स्वाधीनता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री श्रीमती सत्यवती ने स्वतन्त्रता आन्दोलनों में भाग लिया तथा वर्षों तक कारावास की यन्त्रणाएं सहन की। गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता आचार्य सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पत्नी स्व. चन्द्रावती लखनपाल ने भी महात्मा गान्धी की प्रेरणा से स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया। वे अनेकों बार जेल गईं तथा विदेशी शासन के दमन को धैर्य पूर्वक सहन किया। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् उन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया। इस अवधि में उन्होंने नारी जागरण विषयक अनेक उल्लेखनीय कार्य किये। यहां यह लिख देना सर्वथा उचित ही है कि आर्य नारियो ने स्वदेशी वस्त्र प्रचार, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, मादकद्रव्य निषेध, अछूतोद्धार, प्रौढ़ शिक्षा जैसे रचनात्मक कार्यों में अग्रणी होकर भाग लिया है। इन्हीं आर्य देवियों के त्याग, बलिदान और निष्काम सेवा का यह परिणाम है कि देश की स्वाधीनता का वरदान प्राप्त हुआ और ऋषि दयानन्द द्वारा निर्धारित स्वराज्य का लक्ष्य पूरा हो सका।

भविष्य के लिए कर्त्तव्य निर्धारण

उपर्युक्त पंक्तियों में हमने नारी उत्थान में आर्य समाज के योगदान की विस्तृत चर्चा की है। किन्तु हमारी यह विवेचना अधूरी ही रहेगी यदि हम भारतीय नारी और विशेषत: आर्य नारी के समक्ष उपस्थित उन चुनौतियों का उल्लेख न करें जो आज उन्हें स्वकर्त्तव्य पालन में जुट जाने की प्रेरणा दे रही है। आज के भारतीय समाज में यद्यपि पर्याप्त प्रगतिशीलता दृष्टि-गोचर हो रही है, तथापि विवाह के अवसर पर दहेज प्राप्ति हेतु किये जाने वाली निन्दास्पद कार्यवाहियों, विवाह मे फिजूलखर्ची, दिखावा तथा कन्या पक्ष को परे-शान करने की हरकतें, सर्वथा अनुचित तथा त्याज्य हैं। नारी जाति की गौरव रक्षा मे तत्पर आर्य समाज के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह नारी की सम्मान रक्षा के लिए जोरदार अभियान चलाये तथा विवाहों एवं अन्य सामाजिक प्रथाओं में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए जनमत बनाएं।

आज पश्चिमी जगत् मे नारी की स्वतन्त्रता (वोमेन लिब) का जो आन्दोलन चल रहा है वह नारी की गरिमा मर्यादा और शालीनता को चुनौती देता सा प्रतीत हो रहा है। इसी का यह परिणाम है कि आज की भारतीय महिला भी फैशन परस्ती, पश्चिम के अनुकरण तथा विलास और भोग के जीवन को अपनाने मे ही अपनी कृतकार्यता समझती है। कन्या महाविद्यालयो और छात्रावासो में नशीली वस्तुओ के सेवन, धूम्रपान तथा अश्लील फिल्मो को देखने की प्रवृत्ति निरन्तर बढ रही है, जिसके परिणाम स्वरूप आज की युवती पुरातन आचार विचार, मर्यादा तथा शिष्टाचार को तिलाञ्जलि देकर तितली का सा जीवन व्यतीत करना पसन्द करती है। कविवर सुमित्रानन्दन पन्त के शब्दो मे आधुनिका नारी तितली, विहगी (पक्षी) और मार्जारी (बिल्ली) तो बन गई किन्तु यदि कुछ नही बनी तो नारी ही नही बनी। आज की परिस्थियो मे आर्य समाज द्वारा सचालित कन्या गुरुकुलो तथा कन्या महाविद्यालयो मे जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है वह नारी के सार्वजनीन विकास मे पूर्णतया सहायक नही हो सकती। पाठ्यक्रम से भिन्न उन्हे अपने शारीरिक उत्थान, मानसिक उन्नति तथा चरित्र निर्माण मे सहायक उपादानो का प्राप्त कराया जाना आवश्यक है।

नारी की आर्थिक स्वाधीनता

आर्थिक दृष्टि से नारी जाति की पराधीनता को दूर करना भी अत्यावश्यक है। यद्यपि विगत काल में आर्य समाज द्वारा सचालित कन्या विद्यालयो मे स्त्रियो को स्वावलम्बी बनाने की दृष्टि से सिलाई, कताई, बुनाई तथा अन्यान्य प्रकार के कला-कौशल सिखाने की समुचित व्यवस्था थी, किन्तु आज के कम्प्यूटर प्रधान युग में उपर्युक्त प्रकार के प्रशिक्षण का अधिक महत्व नहीं है। आज की नारी विज्ञान, तकनीक तथा विभिन्न प्रकार के उद्योग एव व्यवसायो मे भी पुरुष की प्रतिस्पर्धा करना चाहती है। अतः उनकी नारी जनोचित गरिमा एव मर्यादा की रक्षा करते हुए भी उसे आधुनिक युग में विकसित तकनीक तथा प्रौद्योगिक के सभी क्षेत्रो मे आगे बढने के लिए तैयार करना होगा। आर्य समाज को धर्म और समाज की ही भान्ति नारी को आर्थिक क्षेत्र मे भी आत्मनिर्भर बनाना होगा।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप मे हम यह कहना चाहते है कि आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित नारी उत्थान का कार्यक्रम न केवल भारतीय जन समुदाय के जीवन मे परिवर्तन करने वाली एक युगान्तकारी घटना सिद्ध हुआ है, अपितु इसने सम्पूर्ण मानव समाज के लिए चिन्तन की एक नवीन दिशा प्रदान की है। आज पश्चिम की सस्कृति ने नारी को विलास की वस्तु बना कर उसके शारीरिक सौन्दर्य के प्रदर्शन एव उद्दाम विलास क्रीडा को ही उसके जीवन का लक्ष्य माना है जब कि भारतीय आर्य नारी ने स्व कर्त्तव्य पालन, सन्तान निर्माण, गृहस्थ के दायित्वो का सम्यक् निर्वाह तथा जीवन यात्रा मे पुरुष की सहभागिनी बन कर उससे कदम व कदम चलने में ही अपने जीवन को सफल माना है।

आर्य समाज ने मध्यकालीन युग में नारी पर किए जाने वाले अत्याचार, अन्याय एव उत्पीडन से उसे मुक्त किया तथा उसे सम्मानजनक जीने के योग्य बनाया। यही कारण है कि भारतीय नारी ने स्वामी दयानन्द के तथा उसके अनुयायी आर्य समाज को अपने परित्राता तथा पराधीनता के पाशो से मुक्त कराने वाले मुक्तिदाता के रूप मे देखा। आगे भी यदि आर्य समाज के अनुयायी नारी उत्थान के उन्हीं पावन कर्त्तव्यों के पालन मे रत रहेगे तो स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो के अनुकूल महिलाओ को समाज एव राष्ट्र में आदरास्पद स्थान प्राप्त होगा और वे राष्ट्र के निर्माण मे अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकेंगी।

महर्षि दयानन्द और मूर्तिपूजा

लेखक—श्री विद्याबन्धु शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना

इस पवित्र भारत वर्ष में वैदिक धर्मी हिन्दू भाई न जाने कितने युगों से शिवरात्रि पर्व को मनाते हुए चले आ रहे हैं वर्तमान हम शिवरात्रि को महर्षि दयानन्द बोधरात्रि के रूप में मनाते हैं। इसी शिवरात्रि ने देश के सोये और खोए भाग्य को जगाया था। इसी अन्धेरी रात में महर्षि दयानन्द को सच्चे शिव का आत्मबोध हुआ था। इससे पहले उन हजारों वर्षों में अनेक शिवरात्रिया आई और आकर चली गई हम उस रात्रि को शिवरात्रि अर्थात् कल्याणमयी रात्रि कह कर पुकारते रहे। तथा उन पत्थर की मूर्तियों में भगवान की मौजूदगी समझते हुए अपनी मूर्खता के कारण चिल्लाते रहे कि भगवान है तो इन्ही पत्थरो में किन्तु इसका फल हमें हमारे लिए, हमारी सस्कृति के लिए, हमारी सभ्यता के लिए, हमारी जाति के लिए, हमारे देश के लिए, यमराज का रूप धारण कर प्रतिवर्ष आती रही और हम उन अन्धकार-मयी रात्रि में बहुमूल्य खजानों सहित लूटते रहे, अनजान वार के चोट खाते रहे, बे मौत मरते रहे, और बेदाग मिटते रहे, किन्तु कितनी दुर्भाग्य की बात है इतने होने पर भी हम सभी मूर्तिपूजा की मूर्खता से चिपटे ही रहे, इस लहर की चपेट मे आकर बडे-बड़े विग्गजों, पंडितों, राजपुरुषों, धर्माचार्यों, का मन मस्तिष्क भी पत्थर की भांति कठोर हो चुका था। हर प्राणि को परमात्मा ने जो दिल और दिमाग सोचने, समझने और परखने को दिया था। उस वक्त वह दिल और दिमाग पत्थर के समान निस्तेज और कुण्ठित हो चुका था। अन्याय अत्याचार और भ्रष्टाचार से टक्कर लेने के लिए पर-मात्मा ने दो हाथ दिए थे वे भी उस अन्धकार से टकरा-कर लुंज हो चुके थे। धर्म, अर्थ, काम,मोक्ष को सुरक्षित रखने के लिए परमात्मा ने हमे जो झोली दे रखी थी, उसे अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार से भर कर अन्धकार के गड्ढे में झोंक दिया। परमात्मा ने हमे देश की, सभ्यता की, संस्कृति की, जाति की, समाज रूपी भार को ढोने के लिए शरीर रूपी गाड़ी को दो पहिये जो परमात्मा ने हमे दिये थे उन पहियों के धुरे सटीक और सही चाल के अभाव से अलग-अलग हो चुके थे। अर्थात् वैदिक धर्म अनेक धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, कुरीतियों का शिकार होकर मृत प्राय: हो चुका था। बाकी जितने राजा महाराजा बचे वे लोभ अपने भक्त प्रजाजो अशिक्षितों के उनकी खून-पसीने की कमाई को धर्म और भगवान के नाम पर लूट-खसोट कर अपने अत्याचार के गोदामो में भरने लगे थे। उस समय की अन्याय ओर अत्याचार की आंधी से एकता रूपी समुद्र में तूफान उठने लगा जिस तूफान की चपेट में सम्पूर्ण वैदिक धर्म, हिन्दू जाति, सभ्यता, एव सस्कृति सभी परस्पर टकरा कर चकना चूर हो गए। परस्पर की एकता रूपी दीवार अर्थात् हिन्दू एकता का समूल नष्ट हो चुका था। इन सभी दृश्यों को देख कर हमारी भारत माता जो सोने की चिड़िया कही जाती थी वह अपनी आंखों मे आंसू भरे ज्यों ही उड़ने वाली थी कि विदेशी विधर्मी गजनी के महमूद गजनवी गिद्ध का रूप धारण कर पंखों को नोच-नोच कर मास रक्तों को खा-पीकर सफाया करके पत्थरों के घिनौने उन मूर्तियों में जटित हीरे जवाहरातों को उखाड़ कर मूर्तियों को फेंक कर चला गया वे मूर्तियां उसका कुछ भी न बिगाड़ सकी।

ऐ मेरे देश के वीरो ! राम कृष्ण की सन्तानों ! अब भी तो उठो और बताओ कि हममें मूर्तिपूजा की मूर्खता कब तक बनी रहेगी, उन दिनों से आज तक शिवरात्रि के उस अन्धकार के डण्डे से कब तक हम मार खाते रहेंगे ? ऐ मेरे देशवासियों स्मरण करो ! जब सन् 1018 से 1030 के बीच जब गजनवी महमूद ने मथुरा और सोमनाथ के मन्दिरों को लूटा उसमें जड़ित हीरे जवाहरातों की माला इतनी थी कि तोली न जा सके मूल्य भी अगणित था। हमारे ही भाई, बहिनों, माताओं को अपने देश की ओर से भागा और उनको पाई पाई के मोल बेच डाला। तथा सन् 1300 के बीच अलाउद्दीन खिलजी ने भी लूटमार किया। जिस लूट के स्वर्ण भूषणों की हीरे जवाहरातों के भार को ढोते-ढोते उसके गधे, घोड़े, हाथी तक थक कर थकनाचूर हो कर कराहने लगे थे।

ऐ मेरे देश के भाईयो ! क्या जिस समय स्वर्ण भूषणों को लेने के लिए हमारे मन्दिरों में स्थापित मूर्तियों को उन्होंने तोड़ा, मूर्ति पूजकों, भक्तों, पुजारियों को जब कत्ल किया, उन्हीं के सामने हमारी बहनें लूटी गई तब उन मन्दिरों में स्थापित मूर्तियां अरे हमारी तो नहीं कम से कम अपनी भी तो रक्षा की होती और जो उनकी सेवा करते थे, उन भक्त, पुजारियों की भी तो रक्षा की होती। नहीं, कभी नहीं, हरगिज नही, क्यों नहीं की ? हमारे देश की अरबों, खरबों की सम्पत्ति खोने के बाद भी मूर्तिपूजक और हिन्दू भाईयों ने तो इससे कोई शिक्षा पाई और, ना ही किसी ने इस रास्ते से मुंह मोड़ा। हमने तो अपने इतिहास से भी कोई सबक नहीं सीखा। समय-समय पर हमारी मूर्खता कमजोरियां तथा अन्य खराबियों की चेतावनी अनेकानेक महापुरुषों से मिलती रही परन्तु काश ! हम सचेत हुए होते, उनसे कोई प्रेरणा ली होती, उनसे कोई उपदेश ग्रहण किए होते। इसी प्रकार भारत में सातवीं सदी से लेकर एक हजार वर्ष तक भारत के सभी मन्दिर लूटते रहे, उनमें स्थापित मूर्तियों के अंग प्रत्यंग तोड़ जाते रहे, तथा उन त्रुटियों को पूरा करने के लिए अरबों रुपये व्यर्थ ही व्यय होते रहे। परन्तु किसी को होश नहीं आया कि हम कितने पानी में हैं। आता भी कैसे जब एकता किसी में भी हो नहीं। विचारिये मेरे भाई देश के कर्णधारो ! अभी तक भी मूर्तिपूजा हमारे देश में वृक्ष का रूप धारण कर हमारे दिल और दिमाग में कितनी कठोर जड़ जमा चुका है।

मूर्तिपूजा की इसी परम्परा ने करीब उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में अपनी करवट बदलते हुए टंकारा की ओर शिवरात्रि के काले अन्धकार में कदम बढ़ाते हुए टंकारा के शिवालय में स्वागत रूप घण्टियों के मधुर गूंजों सहित भक्त जनों के मध्य अपने पग को विराम देते हुए शायद हमेशा के लिए विश्राम ले लिया था। उन्हीं भक्तों में से एक भक्त थे मूलशंकर अर्थात् स्वामी महर्षि दयानन्द शिवशंकर स्वामी दयानन्द सच्चे शिव की खोज के लिए एक योग्य और सच्चे गुरु की खोज की थे कई वर्षों तक घनघोर जंगलों, पर्वतों, नदी तटों, गुफाओं, तीर्थ स्थानों की छानबीन के उपरान्त विरजानन्द नामी स्वामी से वेदादि अनेक शास्त्रों का अध्ययन एवं सम्पूर्ण शिक्षा की प्राप्ति एवं सच्चे शिव की प्राप्ति कर लेने के बाद सारे देश को जगाते हुए कहा कि वह परमात्मा शिव शंकर जो सभी का कल्याणकारी है वह हर जगह व्याप्त निराकार अजर-अमर सर्व शक्तिमान है तथा इसी प्रकार कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा लगाते हुए बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की तथा हमारे देश की धार्मिक रूढ़ियां, एवं सामाजिक कुरीतियों, का समूल नष्ट किया। देश में व्यापे अनेक प्रकार के मत मतान्तरों को पाखण्ड खण्डनी पताका लेकर मुकाबला किया जिस दयानन्द के मुकाबले के सामने किसी की दाल तक नहीं गली। स्वामी ने हमे अथवा इस संसार को कितना प्रकाश युक्त आनन्द का लम्बा रास्ता बताया जिस रास्ते पर चलकर हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। महर्षि ने न तो अपने नाम से कोई सम्प्रदाय तैयार किया अपितु

(शेष पृष्ठ 19 पर)

सत्यं शिवं सुन्दरम्

लेखक—श्री नरेश कुमार शास्त्री एम. ए.
आचार्य—श्री गुरु वि. वै.सं. महाविद्यालय
करतारपुर (जालन्धर)

फाल्गुन मास की चतुर्दशी लोगों के मनों को शिव पूजन के लिए आह्वान कर रही थी। लोग इस रात्रि की चिरकाल से प्रतीक्षा कर रहे थे। श्री कर्दम जी अपने लाडले को त्रयोदशी के दिन शिवरात्रि, उसकी पूजन विधि एवं माहात्म्य बता कर शिवरात्रि की व्रतोपवासचर्या हेतु आग्रह कर रहे थे। पर मां का हृदय कोमल था। हिम की तरह द्रवीभूत। वे पुत्र की सतप्ति के ताप को सहन करने में सर्वथा असमर्थ थी। मां ने आखिर पति से कह ही दिया। मूल इस चतुर्दशी के उपवास में भाग न ले सकेगा।

"नहीं" मूल उपवास अवश्य करेगा, बच्चे में प्रारम्भ से ही धार्मिक भाव उद्दीप्त किये जाएं तो अच्छा रहता है। उसे यह उपवास करना ही होगा।"

पतिदेव! मेरी प्रार्थना स्वीकार करो! मेरा लाडला अबोध है। कहीं बुभुक्षावश व्रत भंग कर बैठा तो बड़ा अनिष्ट होगा। भगवान शंकर रुष्ट हो जाएंगे। फिर उसकी आयु भी क्या है? अगले वर्ष उपवास कर लेगा। उसे भूख सहन कदापि न होगी। मेरे हृदय की विचित्र अवस्था है। कभी उल्लास और हर्ष की तरङ्ग तो कभी अज्ञात भय और आतङ्क। कभी शिवव्रत कुल के लिए अभिशाप तो कभी वरदान सा दिखाई देता है। मैं भ्रमित सी हूं। मेरे हृदय में कभी ज्योति पुञ्ज तो कभी साक्षात् गहन अन्धकार सा पैदा होता है। मेरा हृदय स्वीकार नहीं करता। आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान दें। मैं आपके पैर पकड़ती हूं। मैं फिर कहती हूं कि आप उससे उपवास न कराएं, उसे भूख सहन न होगी।

पर पिता ने एक न सुनी। स्त्रियां विपरीतमति होती हैं। उन्हें प्रत्येक शुभ कार्य में वरदान तथा अभिशाप दिखाई पड़ते हैं। हर जगह दुर्गुण और भय की आशंका होती है मुझे यह स्वीकार नहीं है। पुत्र में बाल्यकाल से ही ईश्वर भक्ति एवं सहन शक्ति होना परमावश्यक है। हमारा यह तनिक सा मोह भविष्य का अन्धकार बन सकता है फिर परम्परागत शिवपूजन तो होना ही चाहिए—

मैंने मूल को इसके लिए प्रसन्न कर लिया है। उसके हर्षोल्लास का कोई पारावार नहीं है। वह उपवास के लिए सहर्ष तैयार है।"

मां अधिक बहस न कर सकी। उसकी एक न चली। मूल ने चतुर्दशी को दिन भर उपवास किया। पूजापयोगी सकल साकल्य एकत्रित हो गया। भगवान अंशुमाली ने अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर लिया। पक्षियों ने भी शनैः शनैः अपना कलरव बन्द कर दिया। और अपने-2 नीड़ों में समाधिस्थ हो गए। मूल का मन हर्षोल्लास पूर्ण और शिवदर्शन के लिये आकुल है। मन्द 2 शीतल पवन बह रही है। शिवालय आज पूर्वापेक्षा अधिक सजाया गया है। इस सान्ध्यकाल में शिव भक्तों की भीड़ लगी हुई है। सम्पूर्ण शिवालय टन-टन, हर-हर महादेव, बम-बम भोले नाथ के जयघोषों से गूंज रहा है। शिवपिण्डी पर फल-पुष्प मिष्ठान्न व बेल पत्रों के ढेर दिखाई दे रहे हैं। सारा मन्दिर चन्दन की मधुर गन्ध से सुगन्धित है। लोग श्रद्धापूर्वक घटानिनाद तथा शिवस्तोत्रों का तन्मयता से पाठ कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त अब कुछ सुनाई नहीं दे रहा है। हां मन्दिर

के बाहर खड़े पीपल के पत्ते मन्द-मन्द शीतल पवन के झोंकों से बीच-बीच में ध्वनित हो जाते हैं। मानों वे भी जयजयध्वनि में ताल देकर तरङ्गित हो रहे हैं। वैसे ही प्रथम प्रहर की पूजा ठीक प्रकार से सम्पन्न हुई। धीरे-धीरे भीड़ छटने लगी, रात्रि की नीरवता घर करने लगी, मन्दिर में केवल कुछ शिवभक्त आनिशाजागरण के लिए रह गये। दीप पंक्ति अब भी सुशोभित हो रही थी। मूल ने तो मानो निश्चय ही कर लिया था। शिवदर्शन का, उसकी भक्ति भाव विभोर-मुखाकृति शान्त ललाट और शिवपिण्डी पर पड़ रही अविचल दृष्टि सब कुछ इस बात के प्रबल साक्षी हो रहे हैं।

मूल के चाचा, पिता, अन्य पड़ोसी तथा शिवभक्त सभी को निद्रादेवी ने शनैः शनैः अपनी ममतामयी सुखद गोदी में धीरे-धीरे से स्थान दे दिया। मूल को भी निद्रादेवी ने बहुत झकझोरा पर शिवदर्शन की अटूट अभिलाषा ने उसे ऐसा करने से धिक्कारा। पानी के छींटों को निद्रा देवी के चापल्य में प्रहरी बना दिया। शिव माहात्म्य में सब कुछ स्पष्ट सुन रखा था। पितृ मुख से कि वह शिव, त्रिशूलधारी, दुष्टों के संहार करने वाले हाथ में डमरू लिये अर्धरात्री के व्यतीत होने पर अपने भक्तों को स्वयं दर्शन देते हैं। मुमुक्षु तो केवल कैलाशपति के दर्शन की ,प्रतीक्षा में था। जिसके लिये वह पापड़ बेल रहा था। कैसी अटूट श्रद्धा थी बालक की शिव दर्शन में हां शंकर' विश्व का कल्याण करने द्वारा शिव मुझे अपने परम भक्त को जरूर-2 दर्शन देगा। वह भगवान कभी अपने भक्तों को धोखा नहीं दे सकता। वे तो सब कुछ जानते हैं। उनसे छिपा भी क्या है। फिर मेरा नाम भी तो पिता ने मूलशंकर ही रखा है। मैं उस शंकर के दर्शन अवश्य करूंगा, मैं सो नहीं सकता मुझे निद्रादेवी छू भी नहीं सकती। केवल जागरण बस केवल जागरण और "सत्यं शिवं सुन्दरम्" के अनुपम दर्शन निर्मल मनस्वी यह चिन्तन कर रही है। उसकी टकटकी शिवपिण्डी पर लगी है। भगवान् कैसे प्रकट होते हैं। वह बैल की सवारी करने द्वारा कैसे साफल्य का भक्षण करेगा। मैं आज यह सब कुछ अपनी आंखों से देखूंगा।

प्रकृति की नीरवता ने मूषकराज को.सहसा चारों ओर नीरवता और गम्भीर निस्तब्धता का साम्राज्य है। और जाग रहा है। केवल शिव दर्शन का प्रत्येच्छु मूल-शंकर। मूषकराज आ पहुंचे सपरिवार और लगे निर्भयता से शिवपिण्डी पर पड़े मिष्ठान फलादि का मधुर भक्षण करने। यह देख कर मूलशंकर भौचक्का रह गया मन विविध विचार तरङ्गों से आलोड़ित हो उठा, जैसे विचार समुद्र में ज्वार भाटा आ गया हो। उसका हृदय आकाश विद्युत् की तरह विचार मंथन से ज्योतिर्मान् होने लगा उसने-सुना था मैंने कि वह त्रिपुरारिशिव त्रिशूल-धारी कैलाश-विहारी दैत्यों का संहारी बैल की सवारी करने द्वारा है। क्या इन क्षुद्र चूहों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और जगा लिया पिता को पिता जी उठो! देखो तो सही यह क्या हो रहा है। "ओह" ओह! ये चूहे सारा फल मिष्ठान खाये जा रहे हैं। यह आपका शिव कहां है? वही त्रिशूलधारी बैल की सवारी वाला, आह! पिता जी यह देखो उस चूहे ने तो मलमूत्र भी पिण्डी पर ही कर दिया। क्या शिव को इससे घृणा नहीं होती? क्या ये पवित्र फल मिष्ठान्न इसीलिये हैं। अवश्य यह वास्तविक शिव की प्रतिमा नहीं हो सकती, हां विश्व का कर्ता धर्ता हर्ता एक देवी हो .भी कैसे सकता है? वह तो सर्वव्यापक है सर्वज्ञ। वह एक पिण्डी में कैसे स्थिर रह सकता है। वह शिव कहां है। पिता जी! बताओ तो सही। मैं यह सब स्वप्न देख रहा हूं या वस्तु स्थिति में होश में तो हूं। पिता ने पुत्र के शंकात्मक प्रश्नोत्तर करने पर उसे डांटा। उत्तर की असन्तुष्टि से मूल की व्याकुलता जोर पकड़ गई। विचार नदी का प्रवाह विपरीतदिशा में आ गया। वह कैलाशपति शिव अवश्य ही कोई और होगा। यह कदापि नहीं हो सकता? मैं उस शिव की अवश्य खोज करूंगा। आखिर

जिसका इतना गुणगान है, इसमें कहीं कुछ तो सत्य होगा ही। मुझे सत्य की खोज करनी होगी। मैंने व्रत किया है शिव दर्शन का मैं इसे भंग नहीं कर सकता।

शिव दर्शन हां शिव दर्शन सच्चा शिव विश्व का धारण पोषण और प्रलय करने वाला। मै उसके अवश्य दर्शन करूंगा। यह इस पिण्डी से आजीवन प्राप्य नही। मुझे इसके लिये साधना उचित साधना करनी होगी। पर अब तो भूख सताये जा रही है। तीसरा पहर भी बीत चुका पिता जी फिर सो गए हैं अब सहन नहीं होता। भूख से शिवदर्शन का क्या सम्बन्ध? घर चलता हूं मां कुछ न कुछ खाने को अवश्य दे देगी।

मानो आज निर्मल शर्वरी की नीरवता में शिवपिण्ड, दीप और मन्दिर की दीवारें सभी जड़ होते हुए भी चेतन में वास्तविक शिव के अस्तित्व का भास करा रहे हैं। मानो मूषक समूह भी प्रकृति के इस नव प्रबोध में साक्षी हो रहा है।

इस विचार चिन्तन में मूल के चरण मन्दिर से घर की ओर तेजी से बढ़ने लगे। द्वार खट-खटाया, मां-मां वह बैल की सवारी वाला शिव वहां नहीं मिला। मुझे भूख लगी है। कुछ खाने को दे दो न अब मुझे सहन नही होता।

मैंने तुझे पहले ही मना किया था। भोजन करने पर व्रत भंग हो जाएगा। तुम्हारे पिता जी क्रुद्ध होंगे।

नहीं मां! भूख बहुत लगी है। दिन भर से कुछ नही खाया, मन व्याकुल है। अब मेरे लिये प्रतीक्षा करना कठिन है। मां थोड़ा सा कुछ खाने को दे ही दो।

बच्चे की करुणा एवं दीनता मय कोमलवाणी ने मां के कठोर हृदय को जलवत् कर दिया। मूल ने भरपेट फल मिष्ठान खाये और भविष्य में यह "सत्यं शिवं सुन्दरम्" के दर्शनों का जागरण युग के नव दिशा बोध का आवरण बन गया।

(16 पृष्ठ का शेष)

आर्य जगत् के लिए वास्तव में जो वास्तविक और सत्य-ोचित है, उसी के अनुसार आर्य समाज के दस नियम तथा अपने जीवन में आजीवन प्रकाश पाने के लिए हमें 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसे अमूल्य ग्रन्थ दे गए। उनके इन उपहारों को लेकर उन्ही के रास्ते का अनुसरण कर हमने अपने को आर्य कहलाने का गौरव प्राप्त किया है, सबसे बड़े सौभाग्य की बात तो यह है कि महर्षि ने हमें सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान देकर स्वराज्य की आवाज इस संसार में गूंजाई और स्वतन्त्रता का बीज बोया वास्तव में उन्हीं के द्वारा लगाए गए वृक्षों का सुमधुर फलों का सम्प्रति हम रसास्वादन कर रहे हैं, वैदिक ज्ञान को प्राप्त कर रहे हैं। उन्हीं का फल है, जो हम सभी आज स्वतन्त्र होकर वेद पढ़ रहे हैं। इन गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं। यदि महर्षि न होते तो क्या हम आज भारतीय संस्कृति वैदिक संस्कृति से परिचित होते? उस दयानन्द को कोटि-कोटि प्रणाम! वास्तव में वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए जो कार्य युग-युग से आती रही शिवरात्रि न कर सकी वहीं टंकारा में मनाई गई एक ही शिवरात्रि ने दयानन्द के माध्यम से कर दिखाया, जिसे आज हम आर्य जन उसे शिवरात्रि न कह कर ऋषिबोध पर्व कहते है। और श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। इस ऋषिबोध पर्व को मनाते हुए उस शिवरात्रि के द्वारा ज्ञान प्राप्त ज्ञानी के ज्ञान को जितना भी ग्रहण किया जाएगा, उन द्वारा प्रदत्त सुमधुर फलो का जितना भी आस्वादन किया जाएगा उतना ही उसका मिठास बढ़ता जाएगा। अतः हम सभी को चाहिए कि हम भी शिवरात्रि को, ऋषि-बोध पर्व को सही ढंग से मनाएं और कल्याणकारी बनने की कोशिश करें जिसमे कि देश की हर उलझने सुलझा सकें और हम अपना सर ऊंचा उठा कर यह कह सकने को समर्थ हों कि "हम किसी से कम नहीं"।

वेद पथ का पथिक महर्षि दयानन्द

लेखक—श्री राजेन्द्र कुमार जी मन्त्री आर्य समाज भटिण्डा

अनेक ऋषि मुनियों के इस पावन धरती पर जन्म लेने से भारत की इस महान् धरती को ऋषि मुनियों की धरती कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ है । अपनी अमूल्य संस्कृति के कारण "विश्व गुरु" कहलाने का भी गौरव प्राप्त हुआ ।

समय के चक्र के साथ-2 भारत ने अपनी संस्कृति को खो देने तथा इसमें अनेक त्रुटियों के आ जाने का दुर्भाग्य भी प्राप्त हुआ । मुगल तथा ब्रिटिश साम्राज्य के जुल्म से ऐसा होना भी स्वाभिक था ।

वृक्षों से फलों का नीचे गिरना हम पहले भी देखते थे और अब भी देखते हैं । उबलने पानी से बर्तनों का ढकन उठते पहले भी देखते थे अब भी देखने है किन्तु मन में जिज्ञासा जो न्यूटन को हुई किसी को नही हुई इसी जिज्ञासा ने एक क्रान्ति पैदा कर दुनिया को गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त" बना कर दिए और इसी प्रकार जार्ज स्टीफनसन ने उठती भाप को देखकर भाप के इंजन को इजाद किया ।

ऐसे ही शिवरात्रि को एक मूलशंकर (जो बाद मे दयानन्द सरस्वती बने) बालक को मन्दिर म शिव को मूर्ति पर चूहे को अठखेलियां करते हुई । क्या यही सच्चा शिव है ? जो सारे संसार की रक्षा करता है किन्तु स्वयं एक छोटे से चूहे से अपनी रक्षा करने में असमर्थ है । इस बात ने बालक मूलशंकर के मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न कर दी और सच्चे शिव को पाने की मन मे हलचल पैदा कर दी । एक क्रान्ति की रात बन गई और इसी रात ने एक ऋषि को जन्म दिया ।

मूलशंकर नाम के इस बालक को जो आगे चल महर्षि दयानन्द बने सच्चे शिव (परमात्मा) को पाने के लिए जगह जगह की खाक छाननी पड़ी । अनेक साधू सन्यासियो का संग किया । पहाड़ी जंगलों गुफाओं में रहकर, भूख और प्यास से कांटों और पत्थरों से शरीर को अनेक कष्टों से तपाया मगर मन में लगी सच्चे शिव को पाने की प्यास नहीं बुझी ।

अन्त मे ज्ञान का प्यासा दयानन्द मथुरा पहुंचे वहां नेत्रहीन ज्ञान का सागर स्वामी विरजानन्द मिले जो अपने ज्ञान के सागर को संसार को पिलाने के लिए किसी शिष्य की राह देख रहे थे और यह था गुरु और शिष्य का मिलन एक था ज्ञान का प्यासा दूसरा प्यास बुझाने वाला ।

जहा पर हुई दयानन्द प्यासे को तृप्ति । मन के सभी संशय दूर हो कर भीतर अलौकिक ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित होने लगी जो सच्चे शिव को पाकर होती है । व्याकरण के सूर्य रूपी स्वामी विरजानन्द से प्रकाश पाकर स्वामी दयानन्द जी ने अपनी किरणें को संसार में फैलाना शुरू कर दिया । सूर्य के निकलने से जैसे अन्धकार दूर हो जाता है उसी प्रकार महर्षि के ज्ञान से बुराईयां कुरीतियों तथा दुष्ट आत्माओं का मिटना शुरू हो गया । हमारी खोई हुई वैदिक संस्कृति फिर से अपना रूप दिखाने लगी । ऋषि ने स्वयं जागकर भारत की जनता जो चिरकाल से सोई पड़ी थी उसको जगाया । स्वतन्त्रता की एक चिन्गारी उनके मन में भर दी । एक क्रान्ति पैदा कर दी जिन्होंने आखिर स्वतन्त्रता लेकर ही छोड़ी ।

शिवरात्रि (बोध उत्सव) हमें उस दल की प्रेरणा देता है कि सदैव जागते रहो । क्योंकि जो जागते हैं वह सच्चे शिव को पाते हैं । महर्षि ने भी इसी दिन जागकर संसार को जागते रहने का सन्देश दिया ।

—

महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि

लेखक—श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य, सम्पादक-आर्य पुनर्गठन, अजमेर

शिवरात्रि उस युग प्रवर्तक दयानन्द का बोध दिवस है, जिसने मृतप्राय: राष्ट्र को जिलाया, भूले भटके मानव को सत्य-पथ दिखाया, स्वाधीनता, प्रेम, समानता का पाठ पढाया। जो अकेला होते हुए भी कभी घबराया नही, एवं जीवन भर पाखंड, ढोंग, शोषण अन्याय एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लडता रहा। जिसने एक दिन विश्वहित मे ही अपने प्राणो की बलि दे दी।

उन्नीसवी शती मे जब समस्त भारत अज्ञान-अन्धकार से आच्छादित था, विदेशी शासको के अत्याचारो से मुक्ति और त्राण पाने को जब भारत के प्राण अकुला उठे थे, राष्ट्रीय भावना को मिटाने के सभी सम्भव प्रयत्न किए जा रहे थे, मातृ शक्ति को निरस्कृत किया जा रहा था, ऐसी निराशा की घडी मे स्वामी दयानन्द का राष्ट्र के क्षितिज पर प्रादुर्भाव हुआ। उन्होने अपनी ओजस्विनी वाणी एवं निर्भय लेखनी के प्रखर प्रकाश से निशीथ के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करके समस्त ससार को सत्य ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर डाला।

शिवरात्रि की घटना—

बालक मूलशकर को महर्षि दयानन्द मे परिवर्तित करने वाली यह महाक्रान्तिकारी घटना आज से लगभग डेढ सौ वर्ष पूर्व गुजरात राज्य टकारा ग्राम के शिव मन्दिर मे शिवरात्रि को घटी थी। बालक मूलशकर ने शिवभक्त पिता की आज्ञा एव शिव दर्शन की उत्कट अभिलाषा मे शिव का व्रत रखा। सरल स्वभाव बालक प्रभु दर्शन हेतु रात्रि भर जागरण करता रहा। यहा तक कि अन्य सभी शिवभक्त दिन भर के व्रत एव कीर्तन की थकान के कारण निद्रा के आगोश मे चले गए। ऐसे निशीथ काल मे बालक मूलशकर ने शिव प्रतिमा पर श्रद्धापूर्वक चढाए गए पुष्प, चन्दन, अक्षत, नैवेद्यादि को एक क्षुद्र जन्तु मूषक को प्रतिमा पर चढ कर भक्षण एव लघुशका कर तिरस्कृत करते देखा। कथित भगवान की इस पर कोई प्रतिक्रिया न होने पर बाल निर्मल हृदय पर गहरा आघात लगा! इसी आघात ने मूलशकर को जड पूजा से विमुख कर सच्चे शिव दर्शन करने का दिव्य सदेश दिया, और आगे चल कर यही बालक महर्षि दयानन्द के नाम से विख्यात हुआ। विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दो मे, भारत मे जो कुछ नवीन जागृति सामाजिक, सास्कृतिक, बौद्धिक एव राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न हुई, उसका आदि मूल वह मूलशकर ही था।

ज्ञान बोध और साधारण घटना

एक अति साधारण घटना से दयानन्द को ज्ञान-बोध होना कोई अभूतपूर्व घटना नही थी। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि राज कुमार गौतम को महात्मा बुद्ध बनाने वाली ऐसी ही एक घटना थी। वृक्ष के नीचे गिरते फलो को किसने नही देखा? किन्तु विलक्षण नेत्रो वाले सर आइजिक न्यूटन का देखना अद्भुत सिद्ध हुआ। जेम्सवाट ने पतीली पर रखे हुए ढक्कन को अन्दर से आती हुई पानी की भाप के द्वारा उठता हुआ और हिलता हुआ ही तो देखा था और हम सब प्रतिदिन ऐसी घटनाए देखते रहते हैं, परन्तु हमे कोई प्रेरणा प्राप्त नही होती, लेकिन जैम्सवाट ने उससे भाप की शक्ति को पाया जो जार्ज स्टीफेन्सन द्वारा विकसित रेलवे इन्जन के रूप मे हमारे समक्ष आई और जिससे आज औद्योगिक क्षेत्र का अधिकाशत: सचालन होता है।

(शेष पृष्ठ 23 पर)

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद

लेखक—श्री प्रो. ओ. पी. मंगला, प्रधान आर्य समाज भटिंडा

दयानन्द जी का जन्म सौराष्ट्र प्रान्त के मोरवी रियासत के अन्तर्गत टंकारा नामक कस्बे में कर्षन जी के घर हुआ। मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण इनका नाम मूलशंकर रखा गया। मूलशंकर मेधावी अद्भुत स्मरण शक्ति युक्त और पढ़ने मे अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि थे। जिसके फलस्वरूप 14 वर्ष की आयु में मूलशंकर को यजुर्वेद कंठस्थ होने के साथ व्याकरण और शब्द रूपावली का अभ्यास करा दिया गया था।

मूलशंकर जी के पिता का नाम श्री कर्षन जी था। मूलशंकर के पिता जमींदार थे। रुपए का लेन देन करने के इसके अतिरिक्त अपने नगर में सरकारी कामदार थे और सरकार की ओर से जमीनों का लगान वसूल करते थे। इससे भी अच्छी आय थी। इस प्रकार यह साधारण ब्राह्मण की तरह दान पर निर्भर न थे। मूलशंकर श्री कर्षन जी की ज्येष्ट सन्तान थे। उसके दो छोटे भाई और दो छोटी बहनें थी।,

कई समाज सुधारकों ने केवल सामाजिक क्षेत्र मे काम किया। कइयों ने केवल धार्मिक क्षेत्र में और कई राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करते रहे। केवल महर्षि दयानन्द जी ऐसे थे जिन्होंने राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया और विभिन्न समस्याओं पर अपने ठोस विचार दिए।

क राजनैतिक

1. स्वराज्य की घोषणा—सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द जी ने अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में "स्वराज्य" पर जोर दिया। "स्वराज्य की परिभाषा ऋषि ने निम्नलिखित शब्दों में की। राजा प्रजा द्वारा निर्वाचित हो। शासन मन्त्रियों की सभा द्वारा हो। पुरुषों और स्त्रियों को सामान अधिकार हों। सभी को वस्त्र भोजन तथा आवास मिलना चाहिए।

2. हिन्दी राष्ट्र भाषा—1857 के राष्ट्रीय विद्रोह को दयानन्द जी ने अपनी आंखों से देखा था कि किस प्रकार धार्मिक मतभेद, जातीय विषमता और एकता के अभाव में राष्ट्रीय संग्राम विफल हो गया था। उनका विचार था कि देश में राजनैतिक एकता के लिए एक राष्ट्र भाषा होनी चाहिए जिसके लिए वे हिन्दी को उचित मानते थे। वे इसे आर्य भाषा कहते थे।

1. स्वावलम्बन—स्वालम्बन का पाठ स्वामी जी ने लोगों को पढ़ाया। एक बार अमृतसर में कुछ साधु उनका भाषण खड़े हो कर सुनने लगे। दयानन्द जी ने उनसे कहा कि देश की अर्थ व्यवस्था ऐसी है कि हजारों लोग भूखे मरते हैं फिर ऐसी अवस्था में तुम्हें तुम्बेशाही बनने की क्या आवश्यकता है।

2. आर्थिक विषमता—उस समय मठों और मन्दिरों में धनिकों का प्रभाव था। वही धनी लोग प्रतिष्ठित थे। स्वामी जी ने कभी भी आर्थिक विषमता को पसन्द नही किया।

1. स्त्रियों को समाज मेंसमानाधिकार—

उस समय स्त्रियों को नीची दृष्टि से देखा जाता

ग। आचार्य शंकर के शब्दो मे उसे नरक के द्वार तथा तुलसी दास की दृष्टि मे अवगुणो की खान कहा गया। परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने स्त्रियो के समानाधिकारो पर बल दिया और कहा "जहा नारी का सम्मान होता है वहा देवता निवास करते हैं।"

2 छुआछूत—महर्षि ने छुआछूत की बडी भर्त्सना की और कर्मों से ही मानव को अच्छा व बुरा माना जाने का समर्थन किया।

3 मूर्ति पूजा का खण्डन—उस समय लोग तरह-तरह के पाखण्डो मे फसे थे उस समय भूत प्रेत, तबीज का कुचक्र तथा ईश्वर के स्थान पर जड मूर्ति पूजा आदि कुप्रथा प्रचलित थी। स्वामी जी ने इनके विरुद्ध आवाज बुलन्द की।

4 धर्म परिवर्तन पर रोक—उस समय करोडो की सख्या मे हिन्दु मुसलमान बन चुके थे। प्रसिद्ध कवि इकबाल के पूर्वज ब्राह्मण थे। उर्दू को हिन्दुस्तान की भाषा बनाने का अभियान चलाने वाले अब्दुलहक के पूर्वज कायस्थ थे। लोग हिन्दू धर्म को छोड कर इस्लाम की ओर जा रहे थे। महर्षि ने इस धर्म परिवर्तन पर रोक लगाई।

5 विधवा विवाह—महर्षि दयानन्द जी ने विधवा विवाह पर बल दिया। विधवा विवाह को समाज मे उच्च दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

6 बाल विवाह पर प्रतिबन्ध—उन्होने बाल विवाह को एक सामाजिक कुरीति बतलाया। उन्होने कहा विवाह का मुख्य उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति है और ठीक सन्तान के लिए आवश्यक है कि स्त्री और पुरुष की आयु ठीक हो।

स्वामी जी विश्वबन्धुत्व चाहते थे। सब के साथ उनका स्नेह था। वे भारत राष्ट्र की सबल भारतीय सस्कृति को कल्याणमयी मानते थे और पूर्ण विश्वास के साथ विश्वब-धुत्व के पक्षपाती थे।

— -

(21 पृष्ठ का शेष)

जर्मनी के मार्टिन लूथर को प्रोटैस्ट धर्म के प्रवर्तक के रूप मे एक छोटी सी घटना ने ही तो महापुरुषो की कोटि मे लाकर खडा किया था।

शिवरात्रि का सन्देश

शिवरात्रि का जो सन्देश मूलशकर ने सुना, वह समस्त भारत के लिए ही नही अपितु समस्त मानव समाज के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। इसी शिवरात्रि की महिमा के विषय मे कविवर शकर ने कितना सुन्दर लिखा है—

कामना आवे किसी मे तो यही आवे,
भावना चाहे मनुज तो बस यही भावे,
बोध हो तो, मूलशकर मातृ जैसी हो,
प्रात हो, ऋषि-बोध को उस प्रात जैसी हो
रात हो, तोबस उसी शिव रात जैसी हो।

यह दिन युग प्रवर्तक दयानन्द का बोध-दिवस है, जिसने मृत प्रायः राष्ट्र को जिलाया, भूले भटके मानव को सत्य पथ दिखाया, स्वाधीनता, प्रेम समानता का पाठ पढाया। जो अकेला होते हुए भी कभी घबराया नही एव जीवन भर पाखड, शोषण, अन्याय एव भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लडता रहा। जिसने एक दिन विश्व हित मे ही अपने प्राणो की बलि दे दी।

अतएव आओ, हम सभी भारतीय इस पावन दिवस पर राष्ट्र की अखण्डता, गौरव को अक्षुण रखने एव भ्रष्टाचार मिटाने की शपथ लें।

———

महिमा महान् है

लेखक—श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता—वेद प्रचार विभाग नई दिल्ली

शैलों में हिमालय की,
टंकारा महालय की,
शिवजी के शिवालय की,
महिमा महान् है।1।
सत्य के प्रचारक की,
वेदों के उद्धारक की,
पाखण्ड विनाशक की,
महिमा महान् है।2।
भावों में बरसात की,
ऋषि भूमि गुजरात की,
बोध शिवरात की,
महिमा महान् है।3।
अटल व्रत धारी की,
शिव के पुजारी की,
पिता आज्ञाकारी की,
महिमा महान् है।4।
मूलशंकर तात की,
जागरण की रात की,
चूहों के उत्पात की,
महिमा महान् है।5।
ऋतुओं में बसन्त की,
मन्दिर के महन्त की,
वीतराग सन्त की,
महिमा महान् है।6।
सुख सुविधा ठुकराने की,
घर छोड़ जाने की,
वेदों के दीवाने की,
महिमा महान् है।7।
कविता में छन्द की,
पूर्णिमा के चन्द की,
स्वामी दयानन्द की,
महिमा महान् है।8।

राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ प्र)

बात सन् 1961 के जनवरी मास की है जबकि मुझे अधिकतर महर्षि दयानन्द की शिक्षा-स्थली मथुरा नगरी के विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम मे रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। आश्रम से एक मील की दूरी पर मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति बिरला परिवार द्वारा निर्मित "आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ" के संरक्षण मे एक विशाल गीता मन्दिर है। सायंकाल भ्रमणार्थ जब जाना होता तो इसी मन्दिर मे लगभग एक घण्टा बिताया करता। इस मन्दिर का जो मुख्य भाग है और जिसमे योगी-राज श्री कृष्णचन्द्र की मूर्ति की स्थापना की गई है, उसके पीछे की ओर पांच महापुरुषो के चित्र बने है, जिनमे एक चित्र महर्षि दयानन्द का भी है। चित्र पर लिखा है—"जागृति और एकता" जिसका तात्पर्य यह है कि आपने जागृति और एकता के लिए कार्य किया।

चित्र के साथ एक शब्द को पढते ही महर्षि के एकता के लिए किये गये कार्य मस्तिष्क मे क्रमशः एक के बाद एक आने लगे और एक बार महर्षि के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास का वह प्रकरण नेत्रो के सम्मुख आकर स्थिर हो गया, जिसमे राष्ट्रीय गठन के लिये ग्राम सभाओ से लेकर महाराज सभा तक का वर्णन किया गया है। प्रकरण क्या है? किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ तथा चिरस्थाई बनाने का वास्तविक सूत्र है।

महर्षि लिखते हैं कि "एक-एक ग्राम में एक-एक प्रधान पुरुष को रखे, उन्ही दश ग्रामो के ऊपर दूसरा, उन्ही बीस ग्रामो के ऊपर तीसरा, उन्ही सौ ग्रामो के ऊपर चौथा और उन्ही सहस्र ग्रामो के ऊपर पांचवा पुरुष रखे।"

इस प्रकार के संगठनो को जिनके अध्यक्ष यह प्रधान पुरुष होंग, महर्षि ने "राज सभा" की संज्ञा प्रदान की है। अर्थात् यह ग्राम सभा वह हुई, जो ग्राम पर राज्य करे, ग्राम का शासन चलाये। किन्तु इन ग्राम सभाओ की सत्ता को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र नही रखा अपितु दस ग्रामो के ऊपर भी एक प्रधान पुरुष का विधान किया, जो उन दशो ग्रामो के प्रतिनिधियो की बनी "राज-सभा" का अध्यक्ष होगा। उससे आगे इसी प्रकार बीस ग्रामो की, सौ ग्रामो की तथा सहस्र, दश सहस्र, लक्ष ग्रामो आदि की राज-सभाओ का भी वर्णन किया है तथा सबसे अन्त मे वर्णन किया है महाराज सभा का।

राष्ट्र की छोटी से छोटी इकाई अर्थात् प्रत्येक ग्राम से लेकर ऊपर तक सबको एक सूत्र मे बाधने का इतना सुन्दर विधान है कि जिससे प्रत्येक ग्राम को अपनी-अपनी परिस्थिति के अनुसार स्व-शासन चलाते हुए भी ऊपर के संगठनो के अन्तर्गत रहने से राष्ट्रीय हित मे किसी भी प्रकार बाधा पहुंचने की सम्भावना नही रहती।

इन सारी राज सभाओं की जो शिरोमणि अर्थात् सब से ऊपर की सभा होगी, वह वही होगी, जिसे हम वर्तमान में "लोक-सभा" कहते हैं और उसका प्रधान पुरुष होगा। "लोक सभाध्यक्ष" "लोक सभा और "लोक सभाध्यक्ष तक" ही महर्षि ने विचार किया हो सो बात भी नही। वह तो आगे तक गये और इससे आगे उन्होने जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर आए हैं, "महाराज सभा" का भी निर्देश किया है, जिसे आजकल की परिभाषा में "राज्य-सभा" कहा जाता है और जिसका कार्य लोक सभा द्वारा पारित विधेयकों पर विचार करना होता है। इस "महाराज सभा" मे विचार के पश्चात् ही विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिये जाते हैं। इस सभा का अध्यक्ष उप-राष्ट्रपति होता है।

अन्तिम राज सभा अर्थात् लोक सभा तथा महाराज सभा तो वर्तमान काल में भी है, जैसाकि महर्षि मनु महर्षि दयानन्द ने विचार प्रस्तुत किये हैं किन्तु इनसे नीचे की स्थिति सर्वथा विपरीत है। आजकल राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता के पश्चात् जो ईकाईयां है, उन्हे राज्य नाम दिया गया है, जिसका परिणाम हमारे सामने राज्य स्तर पर होने वाले झगडो के रूप में आने लगा है। और यह झगड़े हैं अधिकतर सीमा सम्बन्धी, बिहार, और बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश तथा मैसूर और महाराष्ट्र आदि के। पंजाब को पंजाबी भाषी प्रदेश कह कर खालिस्तान अथवा सिखी-स्तान बनाने के लिए तथा बंगाल में गोरखालैण्ड बनाने के आन्दोलन भी इसी के परिणामस्वरूप प्रारम्भ हुए हैं। कारण पर यदि गम्भीरता पूर्वक निष्पक्ष रूपेण विचार करें तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दिन था, जब भारत के प्रान्तो को राज्य तथा भारत को भारतीय संघ नाम दिया गया।

उपरोक्त नामकरण यह स्पष्ट करने को पर्याप्त है कि भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राज्यों का मिलकर बनाया हुआ संगठन है जिसे "संयुक्त राज्य" भी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से जिन लोगो के हाथो में राष्ट्र की बाग-डोर है, उन्होंने इस विषय में अमेरिका का अन्धानुकरण किया है। अन्धानुकरण हम इसलिये कहते हैं कि यदि थोडा भी बुद्धि का उप-योग किया जाता तो बात बडी स्पष्ट है, कि अमेरिका कोई स्वतन्त्र राष्ट्र नही अपितु अनेक राष्ट्रो का समूह है इसलिए उसका नाम 'अमेरिकन-यूनियन' ठीक ही है। भारत की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। भारत अनेक राष्ट्रों का समूह नही अपितु एक राष्ट्र है। उत्तर प्रदेश, बिहार आदि उसके प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से बनाये गये प्रान्त हैं, राज्य नही, अब राज्य नाम दिये अधिक समय नही व्यतीत हुआ था तभी सीमा सम्बन्धी झगड़े आरम्भ हो गये थे। जिन-जिन प्रान्तो मे यह झगड़े हो रहे हैं उनमे से प्रत्येक प्रान्त की जनता दूसरे प्रान्त को विदेश तथा वहा के निवासियों को विदेशी समझने लगी है। अधिक समय बीतने पर जो परिणाम हो सकते हैं उपर्युक्त झगडो को दृष्टिगत रखते हुए उनका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह असम्भव नहीं कि कुछ समय पश्चात् यह प्रश्न उग्र हो उठे कि प्रत्येक राज्य की स्वतन्त्र सत्ता है, परिस्थितियां वश उस समय एक संघ के रूप मे एकत्र हुए थे किन्तु अब पृथक होना चाहते है। पहले तो सीमायी झगड़े थे और अब विघटन की प्रवृत्ति प्रबल हो चुकी है, जिसका प्रमाण खालिस्तान की मांग उसके लिये विद्रोह है।

इस प्रान्तीयता के नाम पर होने वाले झगड़ों तथा उनसे होने वाली भयंकर हानियों से बचाने व भावी विघटन की विनाशकारी प्रवृत्ति को रोकने का एक मात्र उपाय है। स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण और वह यह कि समस्त प्रांतों को जिन्हें राज्य का नाम दे रखा है समाप्त कर दिया जावे।

इससे प्रथम लाभ तो यह होगा, कि प्रत्येक प्रांतीय सरकार पर होने वाला व्यय बच जायेगा, तथा दूसरा यह कि प्रांतीयता की भावना मिटकर केवल मात्र एक भावना राष्ट्रीयता की रह जायगी।

इस समय कोई बिहारी है तो कोई बंगाली, कोई पंजाबी है तो कोई मद्रासी और कोई महाराष्ट्रीय है तो कोई गुजराती। भारतीय कोई दृष्टिगोचर नहीं होता। इन प्रान्तों के समाप्त होने पर न कोई बिहारी होगा न बंगाली, न पंजाबी होगा, न मद्रासी, न महाराष्ट्रीय होगा न गुजराती अपितु केवल भारतीय होंगे। वही संघीयता का वास्तविक रूप होगा, संघ नाम देने से नहीं। नाम के मूल में तो विघटन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने वाला मन्त्र निहित है।

आवश्यकता इस बात की है कि भारत का पुनर्गठन किया जावे। जिलों और उनसे निचले स्तर के गठन को तो छुआ न जाए अर्थात् उन्हें तो ज्यों का त्यों रखा जाए। जिलों से ऊपर प्रति दस जिलो को मिला कर एक क्षेत्र या कमिश्नरी बनाई जाए, जिसका अधिकारी क्षेत्राधिकारी या कमिश्नर रहे। सारे भारत को पांच भागों में व्यवस्था की दृष्टि से विभक्त किया जावे और इन भागों के नाम भाषा तथा जातीयता नहीं अपितु दिशाओं के नाम पर उत्तरी भारत, दक्षिणी भारत, पूर्वी भारत, पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत रखे जाएं। इनमें से प्रत्येक भाग का अधिकारी प्रधान क्षेत्राधिकारी अथवा चीफ कमिश्नर हो। इन सभी चीफ कमिश्नरों का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय सरकार से हो। इस प्रकार सारा राष्ट्र व्यवस्थित रूपेण एक सूत्र में, एक ही राष्ट्रीय सरकार द्वारा शासित होगा।

दूसरा सूत्र राष्ट्रीय एकता के लिये ऋषि दयानन्द से जो हमें प्राप्त हुआ है, वह है भाषायी। भारत मां के उस सच्चे सपूत ने एक शताब्दी पूर्व ही यह जान लिया था कि किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने के लिये भाषायी एकता परमावश्यक है। यही कारण है कि जन्म के गुजराती तथा संस्कृत के महान् पण्डित होते हुए भी उन्होंने अपने भाषणों का माध्यम हिन्दी भाषा को बनाया तथा अपने समस्त ग्रन्थ भी वेदाङ्ग प्रकाश (संस्कृत व्याकरण) को छोड़ कर देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा में ही लिखे। यदि वह चाहते तो भाषण के माध्यम स्वरूप संस्कृत का प्रयोग कर सकते थे तथा लेखन के लिये संस्कृत या गुजराती भाषा का। परन्तु महर्षि यह भली-भांति जानते थे कि एक तो हिन्दी भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली तथा लिखी जाती है। दूसरे हिन्दी की लिपि तथा वर्णमाला पूर्ण तथा वैज्ञानिक है।

यद्यपि भारत के संविधान में भारत की चौदह भाषाएं स्वीकृत हे तथापि भारत का हित इसी में है कि संविधान द्वारा स्वीकृत इन सभी भाषाओं की एक लिपि देवनागरी हो। इससे भाषायी उन्माद का मूलोच्छेदन होगा, भारत के प्रत्येक क्षेत्र की जनता एक दूसरे को समझेगी तथा पारस्परिक निकटता की स्थापना हो सकेगी।

आर्य समाज का जो सदैव से राष्ट्र हित के कार्यों मे अग्रणी रहा है यह अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है, कि वह एतद्विषयक प्रचार में पूरी शक्ति के साथ जुट जाये, जिससे जनमत जागृत हो। एक समय था जब विदेशी साम्राज्य भारत पर छाया था, तब आर्य समाज ने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय जागरण के कार्यों मे बढ़-चढ़ कर भाग लिया। यदि यह कह दिया जाए तो अतिशयोक्ति न होगी कि आर्य समाज की सारी शक्ति स्वाधीनता के मन्त्र का प्रचार करने में लगी हुई थी। यह एक ऐसा सत्य है कि जिसे भारतीय नेताओ ने ही नहीं अपितु भारत से बाहर के विदेशी विद्वानो तथा स्वय ब्रिटिश साम्राज्य ने भी स्वीकार किया।

अच्छा हो कि स्वामी दयानन्द के इन दोनो सूत्रों के प्रचार में आर्यजन दृढ़तापूर्वक जुट जाए तथा ऋषिवर दयानन्द के बोध दिवस शिवरात्रि के महान् पर्व को अपने लिये जैसा कि इसे नाम दिया गया है। "बोध रात्रि" ही समझे और उस दिन को, जब तक उपर्युक्त कार्यक्रम पूर्ण न हो जाए संकल्प दिवस के रूप में मनाया करें।

दिव्य द्रष्टा ऋषि दयानन्द

लेखक—श्री अरुण कुमार विदर्भीय कार्यकारी आचार्य उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

संसार का प्रत्येक। स्वाभाविक अथवा अस्वाभाविक कार्य किसी विशेष रहस्य अथवा तत्व का प्रकाशक होता है। परन्तु सभी मनुष्य उसे नहीं जान सकते, अथवा यों कहिये कि सभी जानने के योग्य नहीं होते, संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनमें कुछ न कुछ असाधारण गुण हुआ करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे अपने आपको इस योग्य बनाया करते हैं कि वे संसार के साधारण मानव प्रमाण से कुछ उच्च उठ जाएं लेकिन साथ ही उनके अन्दर एक ऐसी दैवी प्रतिभा हुआ करती है जो जनसाधारण में नहीं पाई जाती। उस दैवी प्रतिभा के ही कारण वह इस मानव गण में एक ज्वाज्वल्यमान सितारे के रूप में एक साथ जगमगा जाते हैं और कभी-कभी उस प्रतिभा की एक राशि किसी विशेष अघटित घटना के रूप मे न केवल उनकी जीवन धारा को ही परिवर्तित कर देती है किन्तु इस विश्व के विशाल प्राङ्गण में एक ऐसा दृश्य उपस्थित कर देती है कि जो मानव समाज की विचारधारा को ही परिवर्तित करके विश्व इतिहास की एक अमर वस्तु बन जाती है।

...कौन जानता था कि एक वृद्ध रोगी और मरने वाला मनुष्य अपने मूक उपदेश से गौतम को अमर बुद्ध बना देगा? कौन जानता था कि कलिंग के युद्ध मे अनेक हताहतों को देख कर एक नृशंस अत्याचारी राजा अशोक संसार प्रसिद्ध धर्म प्रिय प्रियदर्शी बन जाएगा? कौन जानता था कि मकड़ी के जाले वृक्ष की दो टहनियों के बीच में देखकर होवार्ट के मस्तिष्क में नदियों और समुद्रों के ऊपर पुल बनाने का विचार उत्पन्न होगा? कौन जानता था कि आग पर चढ़ी हुई बटलोई के ढक्कन को हिलता हुआ देख कर जेम्स वाट वाष्प शक्ति का महान् अविष्कार कर सकेगा जो आज संसार के समस्त रेल, जहाज और मशीनों का संचालन कर रहा है? कौन जानता था कि एक उड़ती हुई पतंग को देख कर विद्युत् शक्ति का अविष्कार फ्रेंकलिन के मस्तिष्क की उपज बनेगा, इंग्लैंड के सभी फलों के बागों में फल पकने के बाद हमेशा से ही पृथ्वी पर टपकते हैं, सभी लोग उन्हें देखते भी रहे हैं परन्तु न्यूटन से पहले किसी ने भी यह नहीं सोचा कि इस प्रकार उनके जमीन पर ही गिरने का क्या कारण है? इसी प्रकार सदा ही पूजन आदि के समय अनेक बार मूर्तियों पर भाग दौड़ मचाने वाले मोटे-मोटे चूहों को देखते हुए भी किसी मूर्ति-पूजक के हृदय में वह उथल-पुथल और विचार नहीं उत्पन्न हुआ, जो बालक मूलशंकर के मन में आज से 150 वर्ष पूर्व शिव पूजन के समय हुआ था। किसने सोचा था कि शिवलिंग पर चढ़ते हुए एक छोटे से चूहे को देखकर मूलशंकर के मस्तिष्क में एक ऐसा विचार विप्लव उठेगा जो उसे संसार का महान् सुधारक ऋषि दयानन्द बना कर रहेगा? ये सब घटनाएं बहुत साधारण थी, जो प्रतिदिन प्रत्येक मनुष्य के सामने घटती रहती हैं लेकिन सभी उनको ग्रहण नहीं कर सकते लेकिन दिव्य द्रष्ट आत्माओं के सम्मुख जब वही घटनाए उपस्थित होती है, तो वे महान् परिवर्तन उपस्थित कर जाती है, ठीक उसी प्रकार जैसे शब्दों की लहरें समस्त आकाश में सब काल में सर्वत्र समान रूप से वर्तमान रहती हैं लेकिन सभी मनुष्य उनको

नहीं सुन सकते, जिनके पास शब्द ग्राहक रेडियो होता है वही उसको सुन सकते हैं।

...महामुनि यास्काचार्य ने 'ऋषि' शब्द की व्याख्या करते हुए निरुक्त में लिखा है कि 'ऋषि दर्शनात्' "ऋषयो मन्त्र दर्शनो भवति" अर्थात् ऋषि वह है जो कि अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थों को भी देखता है। यूं तो छोटे से छोटे जन्तु से लेकर मनुष्य तक सब ही प्राणी देखते हैं क्योंकि देखना चक्षु का धर्म है तो भी देखने में ऋषि की विशेषता यह है कि उसकी दृष्टि सामान्य मनुष्यों की दृष्टि की अपेक्षा बहुत व्यापक होती है। सामान्य मनुष्य तो कार्य को देखकर कारण का अनुमान करते हैं परन्तु ऋषि वह है जो कारण को ही देख कर भविष्य में होने वाले कार्य का अनुमान कर साधारण लोगों को आने वाले महान कष्टों से सचेत कर सच्चे मार्ग का संवर्धन करता है। जो महामानव इस कार्य को जितना ही सूक्ष्म दृष्टि से देखता है वह उतना ही महान् ऋषि कहलाने का अधिकारी होता है।

उन्नीसवीं सदी में स्वामी दयानन्द जी महाराज भी ऐसे ही ऋषि हो गए हैं। उनकी दृष्टि इतनी विशाल थी कि वे अब से 110 वर्ष पूर्व ही आने वाली विपत्तियों की ओर संकेत कर उनके समाधान का अपूर्व साधन अपने लेखों एवं उपदेशों में वर्णन कर चुके हैं। वे आने वाली विपत्तियां अक्षरशः सत्य हुईं पर संसार ने उनकी वाणी की उस समय उपेक्षा की पर समय पड़ने पर इधर-उधर हाथ मारने आरम्भ किये और महाकवि तुलसीदास की यह उक्ति चरितार्थ हुई का वर्षा जब कृषि सुखाने।"

यदि संसार ने ऋषि दयानन्द की बात को स्वीकार किया होता तो आजकल की प्रायः सभी राजनैतिक तथा सामाजिक विपत्तियां जो कि आज भारत के बड़े से बड़े नेता को विक्षुब्ध किये हुए हैं, आने से पहले ही टल जाती।

...ऋषि दयानन्द ने सब से पूर्व यह अनुभव किया था कि भारत की अनेक आपदाओं का मूल कारण पराधीनता है और वे ही सबसे पहले महापुरुष थे! जिन्होंने इन पराधीनता की बेड़ियों को काट डालने का प्रयास किया था। स्वराज्य शब्द की व्याख्या जो ऋषि महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में की है, वह शताब्दी के बीत जाने पर भी अक्षुण रूप से स्थिर है और कोई भी नेता उससे आगे नहीं बढ़ सका। ऋषि दयानन्द जी का स्वराज्य हुल्लड़बाजी, हिंसा तथा घृणा पर आधारित नहीं है। उनके अनुसार स्वराज्य का महल प्रेम, दया, ब्रह्मचर्य तथा सामाजिक सुधारों की सबल सीढ़ियों के ऊपर चुना हुआ है। जब तक भारतीय या अन्य किसी देश के वासी अपने सामाजिक दुर्गुणों का परित्याग कर सदाचारी नहीं होंगे उनके लिये स्वतन्त्रता या उससे उत्पन्न होने वाली सुख समृद्धि केवल स्वप्न समान ही है। आज हमें स्वराज्य तो प्राप्त है परन्तु हम स्वतन्त्र नहीं हैं। जकड़े हैं हम पाश्चात्य संस्कृति के फन्दे में, एवम् सामाजिक दुर्गुणों के जाल में। बाल-विवाह-वृद्ध विवाह मूर्ति पूजा-मनी प्रथा आदि ऐसी बहुत सी कुरीतियों की ओर ऋषि ने संकेत किया था। परन्तु उस समय उनकी उपेक्षा की गई और अब भी की जा रही है। सम्प्रति बुद्धिजीवी अनुभव कर रहे हैं कि इन दुर्गुणों के रहते हुये स्वतन्त्रता के स्वप्न देखना मृग-तृष्णा से कम नहीं है।

...ऋषि दयानन्द ने यह भी अनुभव किया था कि देश की स्वाधीनता के लिए यहां की जातियों में परस्पर मैत्री भाव होना अत्यन्त आवश्यक है और विशेष कर हिन्दू मुस्लिम एकता तो होनी ही चाहिए। ऋषि दयानन्द ने इस बात के लिए सबसे पहले प्रयत्न किया था। लार्ड लिटन के समय जब दिल्ली में महारानी विक्टोरिया का दरबार हुआ था उस समय ऋषि दयानन्द ने दिल्ली में ही एकता सम्मेलन का आयोजन किया था, इस सम्मेलन में बङ्गाल के श्री केशव चन्द्र सेन, बम्बई के गोपालराव हरि देशमुख, मुसलमानों के एक मात्र नेता सर सैय्यद अहमद तथा अन्य बहुत से महानुभाव सम्मिलित हुए थे। यह वह समय था जब कि किसी को यह बात सूझी भी नहीं थी कि देश की उन्नति के लिए हिन्दू मुस्लिम एकता होनी आवश्यक है। ऋषि दयानन्द ने उस समय ही सर सय्यद अहमद के व्यवहार से अनुभव कर लिया कि जिस समय तक मुसलमानों के हृदय में भारत वर्ष के लिए प्रेम और भारतीय सभ्यता के लिए सहानुभूति तथा भारत के दुःख में दुःख तथा सुख में सुख की भावना उत्पन्न नहीं होती उस समय तक हिन्दू-मुस्लिम एकता केवल विडम्बना है। यही कारण था

कि वह सर्वप्रथम एकता सम्मेलन असफल रहा। इसके अनन्तर ऋषि दयानन्द ने शुद्धि के आन्दोलन को उठाया और शुद्धि के द्वारा मुसलमानों में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार करने का उद्योग किया इसी कार्य को स्वामी दयानन्द के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द व पं. लेखराम आदि ने आगे चलाया और सम्प्रति आर्य समाज भी इस ओर अपनी दृष्टि रखे हुए है। अब भी भारत में ऐसे नेता विद्यमान हैं जो एकता सम्मेलनों में विश्वास रखते है और सोचते हैं कि मुसलमान अरब भूमि से प्रेम रखते हुए तथा अरबी सभ्यता के गीत गाते हुए और यह कहते हुए "मेरे मौला मदीने बुला ले मुझे" भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये बलिदान करने मे उद्यत हो सकते हैं। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तथा महात्मा गान्धी ने मुसलमानों को देश भक्ति का पाठ पढ़ाने के लिए हिन्दू हितों को ठुकराते हुए बलैंक चैंक देने का विचार प्रदर्शित किया था,परन्तु हिन्दू-मुस्लिम समस्या सुलझने के स्थान मे दिन प्रतिदिन उलझती ही गई। इन सब दृश्यों को देख कर अधिकांश राष्ट्रीय नेता यह मानने लगे हैं कि इस समस्या का समाधान एकता सम्मेलनों से नहीं हृदय के परिवर्तन हुआ करते हैं।

...तीसरी समस्या अछूत कही जाने वाली जातियों की है। अब से 105 वर्ष पहले ऋषि दयानन्द ने बतलाया था। अछूतपन पाप है,'मनुष्य मात्र जन्म से एक हैं और उनके गुणों से ही छुटाई बड़ाई हो सकती है किसी को अछूत कहना उसके साथ बड़ा अत्याचार है। अछूत कही जाने वाली जातियां हिन्दू जाति का अंग है। ऋषि दयानन्द ने कहा था कि इस अछूतपन को दूर करो नहीं तो हिन्दू जाति का यह प्रधान अंग-भंग हो जाएगा। ऋषि की यह आवाज बहरे कानों के ऊपर पड़ी। हिन्दुओं ने उपेक्षा वृत्ति से काम लिया। उसका परिणाम आज हमारे सामने है। हजारों हरिजनों का सामूहिक धर्मान्तरण हो रहा है। ऋषि दयानन्द की बात पर ध्यान न दिया तो इससे जो हानि होगी उसकी तो कल्पना भी अत्यन्त भयंकर है, ...सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना समाज का खण्डन करते हुए ऋषि लिखते हैं 'इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण बहुत से लिये हैं। खानपान विवाहादि का नियम भी बदल दिया है। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही उसकी पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा करते हैं। तथा एक और ऐसे स्थान में लिखते हैं कि, देखो! अपने देश के बने हुए जूतों को आफिस और कचहरी में जाने देते हैं इस देशी जूते को नहीं, इतने ही मे समझ लो कि अपने देश के बने जूतों का वे कितना मान करते हैं, इत्यादि बहुत से ऐसे वाक्य है जो ऋषि दयानन्द के स्वदेश प्रेम, स्वदेश सभ्यता तथा संस्कृति के उज्ज्वलतम प्रमाण हैं। वस्तुतः देश के इतिहास से, सभ्यता से, संस्कृति से, वेष भूषा से तथा भाषा से प्रेम ही देश प्रेम है। जो कि ऋषि दयानन्द के हृदय में कूट-2 कर भरा हुआ था। आज के नेता केवल स्वदेशी वस्त्र धारण को ही स्वराज्य का मूल समझते हैं, चाहे उनकी भाषा विदेशी हो, भाव विदेशी हों, पहरावा विदेशी हो और यहां तक कि सभ्यता भी विदेशी हो। कपड़ा खद्दर का हो चाहे सिलाई में पतलून ही क्यों न हो और चाहे टोप ही हो पर खद्दर का हो, इनकी देश भक्ति पूरी हो जाती है।

...दूसरों के एक भी मिल के तार को घृणा से देखने वाले अपनी मोटर को प्रेम करते हैं। ऋषि दयानन्द इस भावना के विरुद्ध थे और शुद्ध स्वदेशीय भाव, वेश भूषा,भाषा और सभ्यता के अभिमानी थे। ऋषि दयानन्द भारतीय प्राचीन सभ्यता के पुजारी थे और उसे ही वे भारत के उत्थान का कारण समझते थे! जिस समय तक भारत के माननीय नेताओं में इस भावना का उदय नहीं होता उस समय तक भारत के सुदिन बहुत दूर है। . समय आयेगा जब लोग ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व को समझेंगे और यह जानेंगे कि ऋषि दयानन्द ने नव भारत के निर्माण में किस प्रकार अपने जीवन को स्वाहा किया है। वस्तुत इतिहास ही इस बात का साक्षी होगा। सम्भवतयः नव भारत के अभ्युत्थान मन्दिर में लोग अपने प्रमाद से ऋषि दयानन्द का नाम न लिखें पर ऋषि दयानन्द उस मन्दिर के वह सुदृढ़ नींव है जिसके ऊपर कि वह मन्दिर सुन्दर रूप में स्थित होगा और अपनी परिचर्या से सारे भूमण्डल को सुख और शान्ति का उपदेश देगा। किन्तु यह सब तब होगा जब भारत ऋषि दयानन्द की दिव्य दृष्टि को अनुभव करेगा।

आओ मिलकर प्रभु से प्रार्थना करें।

यह प्रार्थना प्रत्येक सत्संग में, सब उपस्थित स्त्री पुरुषों एवं बच्चे सम्मिलित रूप से एक साथ बोल कर करें। हिन्दु, आर्य स्कूलों मे भी नित्य अनिवार्य रूप से प्रार्थना समय में बुलवाएं।

प्रार्थना

हे परमपिता परमात्मन्! आपने अपनी अपार दया से हमें आर्य कुल में जन्म दिला कर, आपकी अमर सन्तान कहलाने का सुअवसर दिया है। इस नाते ही सृष्टि के आदि में दो अरब वर्ष पूर्व हमारे मार्ग दर्शन के लिए पवित्र वेद ज्ञान महर्षियों द्वारा प्रदान करने की कृपा की। और सनत कुमार, ब्रह्मादि मन्त्र द्रष्टा ब्रह्म ऋषियों की परम्परा पवित्र सत्य सनातन आर्य धर्म के प्रचारार्थ चलाई। इन्ही ऋषियों ने वेद ज्ञान सरल करने अर्थ, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, षड्दर्शनों का निर्माण किया।

प्रभु जी, आपने ही इस सत्य सनातन वेद धर्म के प्रचार प्रसारार्थ महाप्रतापी चक्रवर्ती महाराजों की परम्परा चलाई। इस परम्परा में आदि मनु महाराज, श्री भागीरथ, श्री रघु, श्रीरामचन्द्र, श्री कृष्ण चन्द्र आदि हुए। इन्होंने "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" आपकी आज्ञा के पालनार्थ भूमण्डल पर चक्रवर्ती आर्य राज्य स्थापित किया। जो निरन्तर, सतयुग से द्वापर-त्रेतायुग पर्यन्त निर्बाध चलता आया।

परन्तु शोक, इस कलियुग के प्रारम्भ में ही अपने चक्रवर्ती राज्य और वैभव के मद में चूर हम आलस्य प्रमाद में घिर अपने आर्यत्व को भूल बैठे। आपकी आज्ञा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का विस्मरण हो गया। फलस्वरूप हम आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की इतिश्री हो गई। हमारा वेद ज्ञान लुप्त हो गया। हम नाना प्रकार के अवैदिक मत-मतान्तरों में बुरी तरह उलझ गए। म्लेच्छों-अनार्यों का बोल बाला प्रारम्भ हो गया। यहां तक कि हमारे राष्ट्र पर म्लेच्छों का राज्य हो गया। आर्य संस्कृति और ज्ञान के स्रोत अमूल्य साहित्य को पूर्णतया नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। बलात् धर्म परिवर्तन होने लगा। यहां तक की हमें यह भी ज्ञान न रहा कि हम आर्य आपकी अमर सन्तान हैं।

ऐसे घोर दुष्काल में, प्रभु जी आपने हम आर्यों की यह दुर्दशा देख, फिर से वेद धर्म जगाने हेतु महर्षि दयानन्द को भेजा। इस महामानव ने फिर से लाखों वर्षों के लुप्त "वेदों" को बड़े परिश्रम से फिर से झाड़ पूछ कर हमारे समक्ष रख दिया। आपकी आज्ञा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" की याद दिलाई। शुद्ध वेदोक्त आर्य धर्म के प्रचार हेतु "आर्य समाज" का निर्माण किया।

हे सर्व शक्तिमान परमपिता! हम आपका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए आपके समक्ष यह प्रतिज्ञा करते हैं, कि हम सच्चे अर्थों में आर्य बने, वेद, वेदांगों, ऋषि ग्रन्थों में वर्णित आपके सत्य सनातन वैदिक धर्म पर प्राणपन से चलेंगे। अन्यों को प्रेरित करेंगे। फिर से अपने देश को सच्चे अर्थ में 'आर्यावर्त" बना आर्य राज्य स्थापित करेंगे। सब आर्य सन्तान, हिन्दु मात्र को जाग्रत करेंगे। वेद ज्ञान आर्य संस्कृति को संसार में फैला देंगे।

प्रभु जी, हमें शक्ति दो, इस लक्ष्य की पूर्ति अर्थ प्राणपन से जुट जावें और मार्ग में आई हुए चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान देकर दृढ़ता से मुकाबला कर सकें।

(भोलानाथ दिलावरी)

प्रधान-केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर।

अपने आपको पहचानो !

स्वयं को पहचानो, अपने धर्म को जानो, अपनी गौरवमयी संस्कृति एवं अतीत की ओर ध्यान दो।

निम्न कुछ एक गौरवमय तथ्यों को स्वयं हृदयंगम करो, अपनी सन्तानों को कराओ, ताकि आर्य(हिन्दू)होने एवं कहलाने में गर्व की भावना जाग्रत हो।

1. हम आर्य (हिन्दू) ही वास्तव में भगवान की आदि सन्तान हैं। भगवान ने इसी नाते आदि काल में वेद ज्ञान हमें ही दिया। मनु महाराज, श्रीराम, श्रीकृष्ण के वंशज होने का गर्व भी हमें ही प्राप्त है।

2. हमारी आर्य संस्कृति संसार में प्राचीनतम् है। हमारे ज्योतिष पंचांगों में इसकी आयु (1972949087) करीब 2 अरब है।

3. आदि काल में (करीब दो अरब वर्ष पूर्व) हम आर्यों को ही "वेद" ज्ञान स्वयं भगवान ने चार ऋषियों के द्वारा ऋग्वेद, यजुर्वेद, समावेद, अथर्ववेद के रूप में, हमारे मार्ग दर्शन के लिए प्रदान किया।

4. हम आर्यों ने ही संसार को सभ्यता सिखाई, धर्म मर्यादा सिखाई। स्वच्छन्द जंगली जीवन छुड़ा विवाहादि की प्रथा चलाई।

5. हम आर्यों का सारी सृष्टि पर, महाभारत काल तक अविछिन्न चक्रवर्ती राज्य रहा। महाभारत अनुसार 5000 वर्ष पूर्व अर्जुन ने अमरीका के शासक की पुत्री उलूपी से विवाह किया था। उसी उलूपी के के गर्भ से अर्जुन का प्रतापी ,प्रसिद्ध वीर पुत्र बब्रुवाहन हुआ।

6. गणित विद्या, हम आर्यों ने ही संसार भर को सिखलाई। इसी कारण अरबों (मुसलमानो) ने इसे "हिन्द से" अर्थात् "हिन्दोस्तान से आए" का नाम दिया।

7. चिकित्सा-औषध-आयुर्वेद-सम्बन्धी ज्ञान, भी हम आर्यों की ही देन है। हमारा...आयुर्वेद...वेदों का ही उपांग है। अतः यह ही इस ज्ञान-विज्ञान का आदि-स्रोत है।

8. हम आर्यों ने ही संसार को वनस्पतियों, अनाजों, दालों आदि का बीजना, खाना सिखाया। आग जलानी भी सिखाई।

9. रामायण, संसार भर में गृहस्थ एवं सामाजिक मर्यादाओं की उच्चतम क्रियात्मक रूप में शिक्षा. उपदेश देने वाला केवल मात्र एक ही ग्रन्थ है। किसी अन्य के पास ऐसा महान् ग्रन्थ नहीं है।

10. भगवत गीता, भगवान कृष्ण द्वारा प्रतिपादित, क्रियात्मक परम सुख उपजाने वाला, ज्ञान और कर्म का तत्व, दर्शाने वाला ग्रन्थ...गीता...हम आर्यों ने संसार को दिया है। दार्शनिक दृष्टि से संसार भर मे इसके साथ कोई अन्य ग्रन्थ नही।

11. हम आर्यों की सभ्यता से पूर्व, योरूप, अमरीका, एशिया आदि भू-भागों में लोग जंगली थे। कच्चा मांस खाते, गुफाओ मे रहते थे। फलतः अब भी आज तक, अधिक मांस भक्षण आर्यावर्त (भारत वर्ष) को छोड़ कर अन्य सब भू-खण्डों में व्याप्त है। भारत मे मूलतः लोग इसी कारण निरामिष भोजी हैं कारण कि यहां आर्यत्व का प्रचलन रहा है।

12. संसार की सर्व प्रथम ईश्वर प्रदत भाषा "संस्कृत" है। यही कारण है कि केवल यह भाषा ही हर दृष्टि से सर्वदोष रहित परिपूर्ण है। जबकि अन्य सब भाषाएं दोष युक्त एवं अपूर्ण है। इसे "देव-भाषा" का नाम इसी लिए दिया गया है कि यह मनुष्य कृत नहीं अपितु ईश्वर प्रदत्त है।

13. संसार भर के भाषा वैज्ञानिकों ने अब सिद्ध कर दिया है कि ससार की सब भाषाएं इसी संस्कृत का अपभ्रंश रूप हैं। इस नाते इसी की सन्तान है।

14. संसार के कुछ एक प्रसिद्ध धर्म और उनकी आयु :—

1. आर्य	आयु	करीब दो अरब वर्ष
2. यहूदी	—	तीन हजार वर्ष
3. ईसाई	—	दो हजार वर्ष (1987)
4. मुसलमान	—	केवल 1400 वर्ष

हिन्दुओ, आप भले ही किसी भी राजसी संगठन से सम्बन्धित हो, कोई भी व्यवसाय दुकानदारी अथवा नौकरी करते हो आर्य (हिन्दू)होना न भूलिए। हिन्दु, हितों, मान एवं गौरव को बराबर ध्यान में रख कर ही, कोई कार्य करें। —केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर

जगद्गुरु महर्षि दयानन्द

लेखक—श्री ऋषिराज जी तिवारी 'सरल'

(1)

मृतप्राय राष्ट्र को सौमित्र की यदि सज्ञा दे तब ता महर्षि मानो वैद्य श्री सुषेण है।
स्वर्णिम अतीत के महान दिग्दर्शक ऋषि आर्य गायिको के एकमात्र तानसेन है।
सकल सत्य सार पर विचार ऐसे तरल 'सरल' अमल धवल जैसे सागर के फेन है।
देश भक्त वीरो की प्रेरणा के मूल स्रोत गांधी, गांधीवाद दयानन्द जी को देन है।

(2)

वल्लरी सो भांति विटप विटप लता रहती थी किन्तु आज अपना आधार लिए खडी है।
कल की बेचारी ये अनारी नारी आज देखो कैम्ब्रिज, आक्सफोर्ड और हैरो तक पढी है।
कहते थे महर्षि सृष्टि स्वर्ण मुद्रिका है ता मे रत्न नारि जगमग नगीना सी जडी है।
श्रीमती गांधी हो, सरोजिनी या साराभाई आज की ये नारी ऋषि दयानन्द जी की ऋणी है।

(3)

चलो चले भागि आर्य च री न कुचालि अब कहे, शिवहार और सहार चहे काली से।
छाया उजियारा अधकार भागा भागा फिरे लटकि रहे उल्टे उल्लूक डाली डाली से।
ऋषि की ललकार से सिगार सब सूने हुए कापे कर मदिरा गई छलके स्वर्ण प्याली से।
भस्म हुए अत्याचार, अनाचार, पापाचार ऐसी आग निकली दयानन्द की दुनाली से।

(4)

महर्षि दयानन्द के अवतरण से पूर्व 'सरल' आर्यावर्त विश्व का गुलाम और चेरा था।
सारी आर्य अस्मिता कलकिनी कहलाती थी नगर, घाट, बाट मे बुराइयों का डेरा था।
देश के दुर्भाग्य की नकेल पकड ऋषिवर ने बरबस मुख उसका शुभ गति की ओर फेरा था।
राष्ट्र के विधायक जन नायक सदा याद रखे राष्ट्र शब्द महर्षि ने ही सर्वप्रथम टेरा था।

(5)

पीते स्वय कालकूट औरो को पिलाते अमृत शूल सब सहारि 'सरल' पुष्प बीज बोते थे।
भारत के दामन मे दाग कही दिखता तो ऋषिवर उन्हे पटकि पटकि कर धोते थे।
दिन मे दिनमान से जाज्वल्यमान तप.पूत, पल भर भी शांति की न नींद कभी सोते थे।
दीन हीन दशा देखि स्वजन की स्वदेश की सारी सारी रात देव दयानन्द रोते थे।

(6)

ऋषि थे, राजर्षि थे, महर्षि थे वे भारत के, फखर थे अवाम के इस सरजमी के नाज थे।
जन जन के प्राणो मे पाञ्चजन्य फूंक दें उर का आन्दोलित करने वाले एक साज थे।
राजगुरु, बिस्मिल, आजाद के आदर्श पुरुष बड़े बड़े राजो महाराजो के सरताज थे।
विश्व के विद्वान् एक स्वर से यही कहते है महर्षि सारे मनुज समाज के जहाज थे।

(7)

स्वतन्त्रता संग्राम के थे सर्वप्रथम योद्धा थे काल आंग्ल सत्ता के निमित्त महाकाल थे।
अभिनव इतिहास पुरुष राष्ट्र की धरोहर और भारती की ग्रीवा के मन्जु मुक्तामाल थे।
हाल थे दयानन्द दीनो और दलितो के घोर अंधकार मे वे प्रज्वलित मशाल थे।
उनके प्रगति पथ के ही पथिक थे गांधी भी उनके ही मानस पुत्र लाल, बाल, पाल थे।

(8)

जहां भी विष वल्ली अमृत विटप वहीं फलते है कूट काल गति से वे टूट नहीं पाए गे।
देव दयानन्द के दमामे के वज्र बोल झींगुर झन्कार मे वो डूब नहीं जाए गे।
जब भी आर्यावर्त की तुलनात्मक समीक्षा होगी निश्चय 'विषपायी' के ये ढब र ग लाए गे।
जिस दिन नव्य भारत का इतिहास लिखा जाएगा महर्षि मानवता के मसीहा कहे जाए गे।

(9)

नीरज को सूरज से मिलता सुहास सदा पाए हैं मस्ती मधुप पुष्प के मकरन्द स।
स्वाति बिन्दु पाकर दुख भूल जाता चातक और पाती चकोरी सुख पूनम के चन्द से।
खिलती है चन्द्रिका से काली उजियाली रात कवियो का भाव जगत खिलता मृदुछन्द से।
असमय मे त्राण मिलेमहा महिम प्राण मिले रोगी राष्ट्र काया को योगी दयानन्द से।

10

वज्र सा शरीर ब्रह्मचर्य का अखण्ड व्रत देव वीतराग आग उर मे छिपाए थे।
संस्कृति के त्राता उद्‌गाता आर्य गरिमा के अन्त मे स्वप्नमयी संसृति बसाये थे।
अद्‌भूत अवधूत पूत पावन चरित्र और लोकोद्धार के हित ऋषि जीवन धन पाए थे।
आए थे वरदानी विद्यादानी देव दयानन्द अखिल मनुष्यत्व को देवत्व देने आए थे।

(11)

समय को बदल दें और मल दें कान काठड़ू के दुष्टो को दल दें देव दयानन्द जन्मे थे।
सन्त थे, सुधारक थे, आर्य कुल कमल और साक्षात् सिंह सदृश बसते 'बृहावन' मे थे।
महाप्राण, महामहिम, महाशक्ति धारी ऋषि, सबसे अमूल्य बहुमूल्य जीवन धन मे थे।
समझ मे न आता न बताता कभी कोई 'सरस' कैसी भी यह माता जिससे दयानन्द जन्मे थे।

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार : महर्षि दयानन्द का महान् संकल्प

लेखक—श्री डा. प्रशान्त वेदालंकार 7|2 रूपनगर दिल्ली—7

संस्कृत के विरोध मे सबसे बडा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है और इसका आज कुछ भी महत्व नही है। इसी कारण ही भाषा सूत्र और नई शिक्षा नीति मे संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा की गई है। पर यह धारणा संस्कृत के महत्व को न समझने के कारण है। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्व अनेक दृष्टियो से है, विशेष रूप से इसमे विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुखलाभ लेने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त दयानन्द सर्व प्रथम आगरा पहुचे। वहा सुन्दर लाल उनके शिष्य बने। एक दिन आदित्यवार के दिन सुन्दर लाल जी ने स्वामी जी से निवेदन किया कि—संस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कही व्यवहार मे नही आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यो किया ? स्वामी जी ने उत्तर दिया—इससे अपना परलोक सुधारेंगे। स्पष्टत: दयानन्द का संकेत संस्कृत मे विद्यमान अध्यात्म विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्व केवल उसमे विद्यमान अध्यात्म विद्या के ही कारण नही मानते थे। उनके भौतिक विज्ञानो की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्व किसी भाषा से कम नही है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी अंश का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए दयानन्द ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का यह निश्चय था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत मे है वैसी किसी भाषा मे नही है। वे उपनिषदो के भाषान्तर मे लिखते है कि मैने अरबी आदि बहुत सी भाषाए पढी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूट कर आनन्द न हुआ, जब संस्कृत पढी और सुनी तब नि:संदेह मुझ को बडा आनन्द हुआ है। (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास, पृष्ठ 276)।

इसके अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का महत्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ मे मुसलमान से बातचीत के समय दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वरप्रदत्त भाषा है। इसके स्वरो को लीजिए, इनकी ध्वनि सब देशो मे पाई जाती है। सब प्रचलित भाषाओ मे इसी की अक्षर माला नैसर्गिक है। छोटा सा बच्चा भी अ, इ, उ का उच्चारण बिना सिखाए करने लग जाता है। क, ख आदि व्यंजनो का उच्चारण भी ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक ध्वनि के अक्षरो से बनी है वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा मे होने उचित है।

6 सितम्बर 1872 को आरामर्श हो आरा के तत्कालीन मैजिस्ट्रेट जिला मिस्टर एच. डब्लू. अलेक्जेण्डर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत मे सम्भाषण किया, जिसे रजनी बाबू अनुवाद करके समझाते जाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी जी

के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारत वर्ष में द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं ? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओं की भाषा है, और समस्त भाषाओं का मूल है । अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

संस्कृत का प्रचार

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्त्तव्य निश्चित किया था । दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा—आर्यावर्त देश का राजा अंगरेज बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियो की रीति से प्रवृत्ति कराए। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख लाभ होगा। और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग है, उनसे भी मेरा यह कहना है कि इसमे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। व इससे अत्यन्त आनन्द होगा । और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जाएगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नही।

दयानन्द जहां भी जाते वहीं संस्कृत का प्रचार करते और स्वयं लोगों को संस्कृत सिखाते । आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो सहायता देने के लिए उद्यत हूं । उन्ही की प्रेरणा से पं. सुन्दर लाल जी और बालमुकन्द जी ने उन्हीं अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर मे उन्होने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला तो प्रायः सभी सभासद् संस्कृत पढ़ने लग गए थे । स्वामी जी के पास भी बहुत से लोग अध्ययन करने आया करते थे। उनके सारगर्भित उपदेशों को सुन कर अनेक लोगों के हृदय मे संस्कृत भाषा सीखने के लिये उत्साह उत्पन्न हुआ। दयानन्द को जब भी अवसर मिला उन्होंने स्वयं अनेक लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

महर्षि दयानन्द ने जहां कुछ व्यक्तियों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, वहां पाठशाला आदि खोल कर भी संस्कृत का विकास किया। सन् 1878 में अपने एक विज्ञापन मे उन्होंने लिखा कि जैसा आर्यावर्तवासी आर्य लोग आर्य समाजों के सभासद् करते और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के अभिलाषी, परोपकारक निष्कपट हो के सबको सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त, धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली और वेदादिसत्य शास्त्रों के पढ़ने के लिए पाठशाला किया चाहते हैं।

16 मार्च 1879 को दीनापुरा (दानापुर) के आर्य समाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुन कर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आर्य संस्कृत पाठशाला खोलने का यत्न कर रहे है।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नों से फर्रुखाबाद में पाठशाला आरम्भ हुई थी, उसमें भी दयानन्द संस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे । 23 मई 1881 को सेठ निर्भय राम जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगो की पाठशाला में आर्य भाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी व उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारों मुद्रा व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हमने कभी परीक्षा के कागजात व आज तक की परीक्षा का फल कुछ नही देखा। आप लोग देखते है कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट की ओर से जिनकी यह मातृ भाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि मे हम तुम को इतनी आवश्यकता नही दीखती । और न सम्राट की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है । अब इसकी वृद्धि मे हम तुम को इतनी

आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट के समान कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। यही अवस्था देख कर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्त्तव्य अवश्य है कि सर्वथ पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।

12 मई 1881 को लाला कालीचरण जी राम चरण जी को लिखा—"इस (फर्रुखाबाद की) पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिए।" कुछ दिनों के बाद उन्होंने फर्रुखाबाद पाठशाला के लिए दुर्गा प्रसाद जी को फिर लिखा—"जहां तक बन सके पाठशाला के उद्देश्य पर कि संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए, सो इस पर अच्छी प्रकार ध्यान रहे। 17 जून 1881 को दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—"पाठशाला मे संस्कृत का काम ठीक-ठाक होना चाहिए जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपनी अन्य स्वार्थ सिद्धि के लि(बाइबिल सुन लेते हैं, और कुछ ध्यान नहीं देते। वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा ? इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसकी ही वृद्धि देनी चाहिए। फारसी का होना कुछ आवश्यक नहीं। केवल संस्कृत और अंग्रेजी दो ही का पठन-पाठन होना आवश्यक है।

दिसम्बर 1882 को बाबू दुर्गा प्रसाद जी को पत्र लिख कर पूछा कि पाठशाला में संस्कृत पढ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए, अथवा अंग्रेजी फारसी मे ही व्यर्थ धन जाता है, सो लिखो, जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रखी जाए। 25 अप्रैल 1883 को लिखा—इससे विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अधिक, बे और कैट, रैट का भर्मार है। जो कि आर्य समाजों का विशेष कर्त्तव्य नहीं।

इन सब पत्रों से महर्षि की संस्कृत प्रचार की ललक सूचित होती है। कलकते में प्रसन्न कुमार ठाकुर ने मूला जोड़ में एक संस्कृत कालेज स्थापित किया था। स्वामी जी ने वहां जाकर प्रस्ताव किया कि केवल इसका नाम ही सस्कृत न हो, प्रत्युत इसमें संस्कृत की शिक्षा भी होनी चाहिए।

उन्होंने भारतीय ही नही वरन् विदेशियों को भी संस्कृत सीखने की प्रेरणा की। 26 मार्च 1879 के एक पत्र में उन्होंने लिखा—अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि लाहौर आदि के समाज में आप लोगों के लिए तैयारी कर चुके हैं। वहां कब तक आवेंगे और उन्होंने सस्कृत पढ़ना आरम्भ किया है या नही ? 30 जून 1879 को श्याम जी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड में दयानन्द ने पत्र लिखा और पूछा—सस्कृत विद्या का वहा कैसा प्रचार हे ? और आर्य समाजों के बाबत वे लोग क्या कहते है ? 8 अक्तूबर 1880 को एच. पी. मैडम ब्लैवत्स्की को उन्होंने लिखा प्रथम संस्कृत पढ़ने, शिक्षा लेने, सूसायटी को आर्य समाज की शाखा करार देने आदि के लिए लिखा था, और वे चिट्ठियां छप के सर्वत्र प्रसिद्ध भी है। और जो मैंने वहा पत्र भेजे वे उन की नकल भी मेरे पास उपस्थित है।

दयानन्द की निश्चित मान्यता थी कि भारत विश्व को सस्कृत और संस्कृत में निहित ज्ञान के रूप में बहुत कुछ दे सकता है। सत्यार्थ प्रकाश में वे लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल मे फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिस्र वालो, उनसे यूनानी, उनसे रोम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश में है उतना किसी अन्य देश में नही। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश मे संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितनी सस्कृत मोक्ष मूलर साहब पढ़े हैं उतनी कोई नही पढ़ा। यह बात मात्र कहने की है, क्योंकि यस्मिनदेशे द्रुमोनास्ति तत्रएरण्डोपि द्रुमायते—अर्थात जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश में एरण्ड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे भी यूरोप देश में संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगों

और मोक्ष मूलर साहब ने थोड़ा सा पढ़ा, वही उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनकी न्यून गणना है, क्योंकि मैंने जर्मनी देश निवासी एक प्रिंसीपल के पत्र से जाना कि जर्मनी देश में संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम है। (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ. 275-276)। आदि लिख कर दयानन्द ने वस्तुत: उन लोगों को सावधान करने की कोशिश की जिन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान का ठेकेदार पश्चिम को मान लिया था और यहां तक कि संस्कृत में भी अपने को जर्मनी से पिछड़ा हुआ मानने लगे थे। आज भी यह दुर्भाग्य की बात है कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय से प्राप्त संस्कृत उपाधि को भारतीय विश्वविद्यालय की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। किसी विदेशी विद्वान् द्वारा संस्कृत विषय पर विदेशी भाषा में लिखी पुस्तक को अधिक महत्व दिया जाता है। दयानन्द ने इस कुवृत्ति से बचने के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व ही सावधान किया था। वे लिखते हैं कि मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी सी वेद की व्याख्या देख कर मुझ को विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर-उधर आर्यावर्तीय लोगों द्वारा की हुई टीका देख कर कुछ-कुछ यथा तथा लिखा है। जैसा कि 'युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः'। रोचन्ते रोचना दिवि, इस मन्त्र का अर्थ घोड़ा किया है, इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, सो मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में देख लीजिए। उसमें, इस मन्त्र का अर्थ यथार्थ किया है, इतने से जान लीजिए कि जर्मनी देश और मोक्ष मूलर साहब में संस्कृत विद्या का कितना पाण्डित्य है। (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ. 276) वस्तुत: पश्चिमी ज्ञान की ओर अंध भक्ति यहां तक कि संस्कृत व वैदिक ज्ञान के विषय में भी उन्हीं को प्रमाण मानने की गलत प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए दयानन्द को ये सब स्पष्ट बातें लिखनी पड़ी थीं।

संस्कृत का स्वरूप (सरल संस्कृत का प्रयोग)

दयानन्द का मत था कि प्रयोग में अत्यन्त सरल संस्कृत आनी चाहिए। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी जन-सामान्य तक अपने विचार पहुंचाने के लिए वे स्वयं अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग किया करते थे। यह उल्लेखनीय है कि सन् 1872 से पहले वे संस्कृत में ही भाषण किया करते थे। पर उनकी संस्कृत समझने में किसी को कठिनाई नहीं होती थी।

सन 1872 में कलकत्ता में श्री केशवचन्द्र सेन ने अपने आवास पर स्वामी जी का व्याख्यान कराना निश्चित किया। अंग्रेजी और बंगला में विज्ञापन बांटे गए। नियत समय पर सहस्रो नर-नारी एकत्रित हो गए। उस समय कलकत्ते के गण्यमान्य सज्जन प्राय: सभी वहां उपस्थित थे। यद्यपि व्याख्यान संस्कृत भाषा में था परन्तु दयानन्द की कथन शैली इतनी सरल थी कि उनका कथन सर्व साधारण की समझ में आ जाता था।

सन् 1874 में भरुच में वकील जेठा लाल जी ने दयानन्द से कहा – आपकी संस्कृत अति सुगम होती है। पण्डितों जैसी जटिल भाषा मैंने आपसे नहीं सुनी। दूसरे जब आप पण्डितों से शास्त्रार्थ करते हैं तब भी उनका मुख आप केवल युक्तियों और प्रमाणों से ही बन्द करते हैं। पण्डित लोगों को एक-एक शब्द पर ही सारा-सारा दिन बिता देते हैं। वैसे आप भी क्यों नहीं करते हैं? दयानन्द ने उत्तर दिया—मैं सुगम संस्कृत इसलिए बोलता हूं कि सुनने वालों को समझने में सुगमता हो। मेरा उद्देश्य जनता को समझाना है, न कि अपना पाण्डित्य छांटना परन्तु यह भी निश्चय रखिए कि सुगम भाषा बोलने की रीति किसी भाषा के अल्पज्ञान से नहीं प्राप्त हुआ करती। सच तो यह है कि भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने पर ही व्यक्ति सरल भाषा बोल सकता है।

अहमदाबाद में तो एक शास्त्री ने यहां तक कह दिया—महात्मा जी, केवल भवति, भवति मात्र से काम

न चलेगा। आज आपको दक्षिणी पण्डितों से पाला पड़ा है। कोई शास्त्रीय महत्व दिखाना होगा। प्रतिपक्षियों की प्रबल प्रेरणा पर अपनी प्रकृति के प्रतिकूल होते हुए भी दयानन्द ने अप्रसिद्ध शब्द पूर्ण समास बहुल व अनेकार्थ बोधक ऐसी जटिल संस्कृत बोलनी आरम्भ की कि प्रतिवादी देखते रह गए। वे दयानन्द की धारा प्रवाह संस्कृत के वाक्यों को समझ ही न सके। इस प्रकार स्पष्ट है कि कठिन संस्कृत बोल सकने पर भी दयानन्द सरल संस्कृत का ही व्यवहार जन सामान्य के लिए आवश्यक समझते थे।

15 दिसम्बर 1873 को दयानन्द कलकत्ता गए। उनकी संस्कृत के सम्बन्ध में पताका पत्रिका के सम्पादक ने लिखा था—हमने जब पहले पहल स्वामी जी की वक्तृता सुनी तो हमने एक नवीन बात देखी कि संस्कृत भाषा में ऐसी सरल और मधुर वक्तृता हो सकती है। वह ऐसी सरलतम संस्कृत में व्याख्यान देने लगे कि संस्कृत से जो महामूर्ख है वह भी उनके व्याख्यान को समझने लगा। इसी प्रकार 'धर्मतत्व' ने मार्च के अंक में दयानन्द सरस्वती शीर्षक देकर इस प्रकार लिखा था—यह एक दिग्गज पण्डित हैं। यह हिन्दू शास्त्र विशारद हैं। संस्कृत भाषा इनके आयत्ताधीन है विशेष कर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्राञ्जलता, श्रुतिमधुर और सरल है कि संस्कृत मे अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं।

दयानन्द ने 20 अगस्त 1876 को वेदभाष्य बनाना आरम्भ किया। तब उनके एक विज्ञापन से यह भी प्रकट होता है कि वे सरल भाषा के पक्ष में थे। उस विज्ञापन में उन्होंने लिखा—यह भाष्य संस्कृत और आर्य भाषा जो कि काशी प्रयाग आदि मध्यदेश की है, इन दोनों भाषाओं में बनाया जाता है। इसमें संस्कृत भाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है। और वैसी आर्य भाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसी सरल है कि जिसको साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समझ ले। तथा भाषा को पढने वाला भी सहज मे समझ लेगा इससे दयानन्द का सरल भाषा रखने का उद्देश्य और अधिक प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी ने अपने परमशिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को संस्कृत में एक पत्र लिखा। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने वह चिट्ठी प्रो. मोनियर विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित संस्कृत को देख कर वह इतने मोहित हुए कि उन्होंने उसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नाम के पत्र के 23 अक्तूबर सन् 1880 के अंक में प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि संस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त के पत्र व्यवहार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। आर्यावर्त भर में शिक्षित मनुष्यों के बीच में यही भाषा विचार-विनिमय का माध्यम है। आर्यावर्त में लगभग 200 भाषाएं बोली जाती है। यदि यह माध्यम न होता तो एक प्रान्त के मनुष्य से बातचीत करने में अत्यन्त कठिनता होती है। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते है कि संस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा मे है, वह भूल करते है।

महर्षि दयानन्द के संस्कृत सम्बन्धी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हमें विशेषतः उनके अनुयायियों को राष्ट्र मे संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य कार्य समझना चाहिए। आर्य समाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आंदोलन चलाने होंगे। इस समय देश में जितने भी संस्कृत की उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नवयुवतियां हैं उनके लिए कार्य की एक सशक्त योजना बनानी होगी साथ ही भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति में संस्कृत को स्थान दिलाने के लिए हमें कुछ आंदोलन भी चलाने होंगे।

—

महर्षि दयानन्द का राजनैतिक संदेश

लेखक—श्री पं. कृष्णदत्त जी आयुर्वेदालंकार फैजाबाद

जिसका मन स्वतन्त्र है वह पराधीन होकर भी स्वतन्त्र है और जिसका मन ही पराधीन है वह स्वतन्त्र होकर भी पराधीन है, ऐसा महर्षि का विश्वास था। आपने भारत की मानसिक मुक्ति के लिए सबसे पहले अंग्रेजों और अंग्रेजियत से मुकाबला करने के लिए अंग्रेजी भाषा के मुकाबले में हिन्दी को खड़ा किया तथा मैकोले की पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के मुकाबले में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को। उनकी भारतीय राजनीति को यह एक अपूर्व देन थी स्वयं गुजराती होते हुए भी आपने ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और हिन्दी को आर्य भाषा का नाम देकर गौरवान्वित किया। विदेशी सुराज से अपना राज्य जैसा भी हो अच्छा है, इसका प्रचार किया। स्वदेशी का मन्त्र दिया, ये स्वराज्य स्वदेशी और स्वभाषा महर्षि के द्वारा दिए गए मन्त्र थे, जिनको आगे चल कर वर्तमान भारत में लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गांधी आदि कांग्रेस के नेताओ ने पल्लवित और पुष्पित किया।

महर्षि के जीवन का महत्वपूर्ण भाग रियासतों में घूम-घूम कर राजाओं के हृदय में स्वदेश प्रेम की ज्योति जगाने में व्यतीत हुआ। आज ऐतिहासिकों का विचार है कि प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध जो सन् 1957 ई. में हुआ उसके सूत्रधार भी महर्षि दयानन्द ही थे, उनके वेद भाष्य के अन्दर चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की भावना स्पष्ट रूप से स्थान स्थान पर दृष्टिगोचर होती है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' का तो पूरा छठा समुल्लास ही राजधर्म पर लिखा गया है। जिससे पता लगता है कि वे राजनीति को धर्म के अन्तर्गत समझते थे। और उन्हें इस बात में कोई सन्देह न था कि राजनीति के बिना धर्म लंगड़ा है। एक ओर सामाजिक कुरीतियों का खण्डन करते थे, दूसरी ओर राजनीति स्तर को भी ऊंचा उठाना चाहते थे। वस्तुत: धर्म और राजनीति दोनो का क्षेत्र अलग-अलग नहीं दोनों मिलकर ही देश का कल्याण कर सकते हैं। शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों के सहयोग का नाम ही मनुष्य है। मनुष्य की उन्नति का तात्पर्य है शरीर का बल बढ़े, मन की शक्तियों का विकास हो। बुद्धि की वृद्धि हो और आत्मिक शक्तियो का विकास हो। इसीलिए पुरुषार्थ भी चार ही माने गए है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। शरीर के लिए अर्थ, मन के लिए काम। बुद्धि के लिए धर्म और आत्मा के लिए मोक्ष है। इन चार मे आर्य संस्कृति की जीवन के प्रति सम्पूर्ण विचार धारा प्रतिबिम्बित होती है। मनुष्य की सब प्रकार की इच्छाएं इनके अन्दर आ जाती है। शारीरिक आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र, मकान औषधि आदि की पूर्ति के लिए अर्थ या धन की आवश्यकता होती है। मानसिक आवश्यकताओं के लिए काम (इच्छा) की। ये दोनों मानव जीवन के अंग हैं, पर ये ही सब कुछ नही हैं, क्योंकि हमारे जीवन का लक्ष्य केवल अर्थ और काम का सम्पादन मात्र नहीं। पाश्चात्य सभ्यता अर्थ और काम प्रधान सभ्यता है दूसरे शब्दों मे इसे भौतिकवाद कह सकते हैं। इसी से जितने भी नए नए वाद आजकल निकले हैं सब अर्थ का आधार बना कर ही चलते हैं। पूंजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद

आदि इनको देख कर आज कल का विचारक समझता है कि मनुष्य की असली समस्या आर्थिक है पैसे की समस्या हल हो गई तो सब समस्याएं सुलझ जाएं गी। पर आर्य संस्कृति का दृष्टिकोण यह है कि पैसे का प्रश्न हल होने पर भी मनुष्य का असली समस्या हल नहीं हो सकती। मनुष्य केवल शरीर नहीं है। शारीरिक भूख रोटी से शान्त हो जाने पर भी कोई और भूख है जिसे शान्त करना है यदि आप गम्भीरता से विचार करें तो पता लगेगा कि हम शरीर नहीं आत्मा है। दृश्यमान जगत केवल प्रकृति की रचना नहीं है (जिसके रहस्यों को जानने के लिए आज का पाश्चात्य वैज्ञानिक मतवाला हो रहा है।) वस्तुतः प्रकृति तो जड़ है। उसमें गति नहीं है वह अकेले कुछ नहीं कर सकती, इसलिए प्रकृति सब कुछ अपने आप बना देती है यह भौतिकवादी विचार अशुद्ध है। बहुत से अंग्रेजी प॰ लिखे लोग नास्तिक इसलिए हो जाते है क्योंकि वह समझते हैं कि प्रकृति ही सब कुछ करती है और दूसरे किसी कर्त्ता को मानने की आवश्यकता नहीं। स्वर्गीय मुनिवर श्री पं गुरुदत्त विद्यार्थी भी पहले ऐसा ही समझते थे परन्तु यह विचार सरासर गलत है। यदि आप न्याय सांख्य, वैशेषिक आदि दर्शनों को पढ़ेंगे तो पता लगेगा कि यह प्रकृति ही सब कुछ नहीं वास्तव में परमात्मा है जो इस रंगमंच का वास्तविक सूत्रधार है जिस तरह बिना कुम्हार केवल मिटटी से घड़ा नहीं बन सकता उसी प्रकार बिना ईश्वर के प्रकृति में गति नहीं हो सकती। कोई दृश्यमान जगत का पदार्थ नहीं बन सकता। अतएव ईश्वर की सत्ता स्वीकार करना आवश्यक है। इस बात को प्राचीन भारत के ऋषि मुनियों ने समझा था यही हमारा आध्यात्मवाद है। वर्तमान काल में महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में इस सत्य को स्पष्ट रूप से रखा। (देखो सत्यार्थ प्रकाश सातवां आठवां और नवम समुल्लास) पाश्चात्य संस्कृति के उपासक यहां तक कि हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री पं जवाहर लाल जी नेहरू भी इसे नहीं समझते थे। इसीलिए हमें सही मार्ग दिखाई नहीं देता और विश्व में शान्ति नहीं होती तथा राष्ट्रसंघ की बार बार बैठकें विभिन्न देशों में होते हुए भी निःशस्त्रीकरण का प्रस्ताव स्वीकार नहीं होता। हर एक बड़ा देश छोटे देश को निगल लेना चाहता है। क्या यही मानवता है, यह तो स्पष्ट कहा जाए तो पाशविकता है।

जब हम ईश्वर की सत्ता को मान लेंगे तो संसार में रहने वाले सब देशों के लोग एक पिता की सन्तानों की तरह भाई-भाई हो जाएंगे और एक दूसरे की रक्षा करना अपना धर्म समझेंगे न कि एक दूसरे को मारना। तभी स्वार्थ वृत्ति का नाश होकर परोपकार की भावना जागृत होगी, जब तक यह नहीं होता हर एक देश दूसरे को जानवरों की तरह खाने के लिए दौड़ेगा और दानवता का नाश न होगा और मानवता की रक्षा न हो सकेगी।

प्राचीन भारत में वे व्यक्ति महान बन सके जिन्होंने अर्थ और काम को अपना परम लक्ष्य न मान कर साधन माना, वस्तुतः मनुष्य जीवन का लक्ष्य भोग नहीं त्याग है। इसी बात को गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर एक बार श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने कहा था। शरीर और मन से मुक्ति चाहिए। शरीर और मन के द्वारा ही। यह ऐसी पहेली है जिसे हमारे ऋषि आदि काल से हल करते आए है। एक तराजू के एक पलड़े पर अर्थ और काम को रखिए और दूसरे पर मोक्ष को, तराजू की डण्डी धर्म के हाथ में पकड़ा दीजिए तब आप मोक्ष के भागी बन सकते हैं। मोक्ष का सीधा अर्थ है दुःखों से मुक्ति—दुःखों से छुटकारा। यदि धर्म पूर्वक अर्थ और काम का उपयोग किया जावे तो सांसारिक दुःखों से मोक्ष मिल सकता है। महामुनि वेद व्यास लिखते हैं कि "ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष, न च कश्चित् शृणोति माम। धर्मादर्थश्च कामश्च सधर्मः किं न सेव्यते।" यह थी ऋषियों की जीवन योजना। धर्म पूर्वक अर्थ और काम का सम्पादन कैसे हो। उत्पन्न पदार्थों का सविभाजन कैसे हो यह काम है, राजनीति का पर जब कि उसकी डोरी धर्म के हाथों में न होगी तब तक राजनीति मुक्तिदायिनी कैसे बन सकती है। महर्षि दयानन्द आर्य संस्कृति के भक्त और उसके पुनरुद्धारक थे। वे मानव जाति का कल्याण करने के लिए इसी विचारधारा का प्रचार करना चाहते थे। वे भली भांति जानते थे कि यदि मनुष्य भौतिक वादी लहरों में बह गया, खाओ पिओ और मौज करो उसके जीवन का

लक्ष्य हो गया या अर्थ और काम को ही यह जीवन का परम लक्ष्य समझने लगा तो वास्तविक लक्ष्य तक न पहुंच सकेगा और मार्ग भ्रष्ट हो जाएगा । राजनीति लंगड़ी है, यदि वह धर्म से शून्य है यह बात महात्मा गांधी भी कह चुके हैं। यजुर्वेद में बड़े सुन्दर शब्दों में हमारे राष्ट्रीय लक्ष्य का दिग्दर्शन किया है—

"आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । आराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्योऽभिवर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योग क्षेमो नः कल्पताम् ।। यजुर्वेद ॥ 22-22

अर्थात् हमारे राष्ट्र में तेजस्वी ब्राह्मण हों। शूर वीर क्षत्रिय हों। दूध देने वाली पुष्ट गौये हों, भारी भारी बोझ ढोने वाले बैल हों, शीघ्र गामी घोड़े हो, गांव का पथ प्रदर्शन करने वाली नारी हों, युवा और वीर सन्तान हों, सर्वत्र हमारी विजय हो, बादल समय पर बरसें, फल फूल धन-धान्य से सब समृद्ध हों हम सब का योग क्षेम अर्थात् कल्याण हो तथा हम सब की सब तरह की समृद्धि हो।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग् भवेत्"। यही हमारी सामूहिक प्रार्थना थी। आज तो भारत एक धर्म निरपेक्ष राज्य है। सत्य कहा जाए तो यह नाम भी अशुद्ध है। इसके स्थान पर 'सम्प्रदाय निरपेक्ष' शब्द होता तो किसी तरह यह शब्द ठीक बैठ सकता था। इस धर्म निरपेक्षता का ही परिणाम है कि जो चाहता है मनमानी करता है, न उसे धर्म का भय है और न ईश्वर का। स्वार्थ का बाजार गर्म है। हर एक दूसरे को लूटने की फिकर मे है। अधर्माचरण अन्याय, भ्रष्टाचार और 420 के उदाहरण चारों तरफ दिखाई देते है। कचहरी मे जहा (मा गृधः कस्य स्वद्धनम्। का साइन बोर्ड लगा हुआ है, उसी के नीचे रिश्वत ली जाती है। यह चिराग तले अन्धेरा है। अजब तमाशा है। क्या इसी तरह रामराज्य की स्थापना होगी। सरकार जानती है कि जनता का नैतिक स्तर गिर रहा है। हमारे मन्त्रियो में बाजार में, सरकार में, भ्रष्टाचार को देख कर कष्ट होता है, परन्तु वे अपराधियों को शीघ्र पकड़ कर कड़े दण्ड नहीं दे पाते। इसी मुसीबत का मूल कारण पैसा वृद्धि है । हमारे पतन का मूल कारण है हमारे मस्तिष्क में यह बैठ गया है कि धन ही परमेश्वर है। 'सर्वेगुणाः कांचनमाश्रयन्ति' अर्थ और काम की लगाम धर्म के हाथ में न रहने से ही सर्वत्र हाहाकार मचा है। विश्व शान्ति के जितने प्रयत्न होते हैं और नारे लगते हैं विश्व शान्ति उतनी ही दूर भागती जाती है, हम छाया के पीछे दौड़ते हैं मूर्ति को पकड़ नहीं पाते। धर्म का मूल आधार है 'आस्तिकता' अपने से ऊपर किसी शक्ति पर विश्वास। जो हमारे कर्मों को देखती है और तदनुसार अच्छे या बुरे फल देती है। ऐसा विश्वास सदा मनुष्य को पाप से बचाता है, परन्तु आज तो राजनीति के दलदल में फस कर आस्तिकता और ईश्वर विश्वास की पुरानी मान्यतायें डावांडोल हो रही हैं। अर्थ और काम ही सब कुछ है, ऐसा लोगों ने समझ लिया है, उसके लिये सब कुछ बलिदान किया जा सकता है, फिर दुःखों से छुटकारा कैसे हो महर्षि दयानन्द धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों की प्रतिष्ठा मानव समाज और राजनीतिज्ञों में करना चाहते थे, वे चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की स्थापना इसलिए नहीं चाहते थे कि वे साम्राज्यवादी या साम्राज्य लोभी थे । जिसने अपने पिता की जायदाद पर ठोकर मारी, काम से बचने के लिए जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया ऐसे अर्थ और काम निरपेक्ष महात्मा को अर्थ और काम का आकर्षण नहीं होता वे तो आर्य समाज के विस्तार द्वारा आर्य संस्कृति की त्याग प्रधान विचार धारा का प्रचार कर मानव मात्र को सुखी बनाना चाहते थे। उनका पूर्ण विश्वास था कि जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य उन्नत होता है। जब दुष्टाचारी होते हैं तब राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाता है, इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हमारा स्वराज्य दृढ़ हो तथा स्थिर रहे तो धर्म का प्रभुत्व स्थापित करने का शीघ्र प्रयास होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द की जय

लेखक—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम.ए,एल,टी.

स्वामी दयानन्द का स्मरण आते ही हमारी आंखों के सामने एक ऐसी मूर्ति आ खड़ी होती है जिसे हम मानवता, निर्भीकता, त्याग, दया, सहिष्णुता, स्नेह, सत्य, अहिंसा और धैर्य की मूर्ति कह सकते हैं। स्वामी दयानन्द की मृत्यु के बाद मडम ब्लेवास्की ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था "जन-समूह के उबलते हुए क्रोध के सामने कोई संगमर्मर की मूर्ति भी स्वामी जी से अधिक अडिग नहीं हो सकती। एक बार हमने उन्हें काम करते देखा था। उन्होंने अपने सभी विश्वासी अनुयायियों को यह कर अलग हटा दिया कि तुम्हें हमारी रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। भीड़ के सामने वे अकेले ही खड़े हो गए। लोग उतावले हो गए थे। क्रुद्ध सिंह के समान वे स्वामी जी पर टूट पड़ने को तैयार थे। यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद से भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी जी से बड़ा संस्कृतज्ञ हो, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे अधिक तेजस्वी, वक्ता तथा कुरीतियों पर टूट पड़ने में उन से अधिक निर्भीक रहा हो।"

महर्षि दयानन्द जी ने जब भारत में सुधार की ओर कदम बढ़ाया, उस समय इस देश में बड़ी भारी संकीर्णता विद्यमान थी। प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के तथाकथित उपासकों ने उसे आगे बढ़ने से रोक दिया था। परिणामस्वरूप वर्तमान अतीत की उपेक्षा कर रहा था। आधुनिक लोग अतीत के विषय में कहते थे कि वहां केवल आचार-विचार है, संयम है और कन्ट्रोल तथा अनुशासन है। उस में गति नहीं। गति न होने से जीवन नहीं। प्राचीन लोग आधुनिकता में केवल गति देखते हैं। इस गति ने उन्हें शुद्ध भौतिकवाद का उपासक बना दिया है और साम्यवाद जैसी नास्तिक एवं अनीश्वरवादी धाराओं ने विश्वको, नवयुवकों और नवयुवतियों को आक्रान्त कर लिया। यदि ऐसे समय स्वामी जी का प्रादुर्भाव न होता तो भारत में भी भारत की आत्मा, उसकी संस्कृति का नाश हो जाता। ऐसे समय स्वामी जी ने अपनी प्रबल क्रान्तिकारी विचार-धारा द्वारा बतलाया कि हमारे देश में शास्त्र और आचार में प्राप्त जो संयम है वह हमारे भविष्य के कार्य में सहायक हो और गति के द्वारा हम उस संयम और आचार को सार्थक बना सकें।

स्वामी जी ने अनेक संकीर्णताओं, भेदों, जातियों सम्प्रदायों में विश्वास करने वाली मानव-जाति को सबसे ऊपर उठ कर अपने आपको आर्य समझने का उपदेश दिया। किसी भी मत और सम्प्रदाय से सम्बन्धित व्यक्ति 'आर्य' हो सकता है। 'आर्य' शब्द सुनियमित जीवन, स्पष्टवादिता, शिष्टाचार, उज्ज्वलता, सद्व्यवहार-साहस, विनम्रता, पवित्रता, मनुष्यता, दया, निर्बलों की रक्षा, उदारता, सामाजिक कर्तव्यों के प्रति आदर की भावना, जिज्ञासा, बुद्धिमानों व विद्वानों के लिए आदर बुद्धि और सामाजिक सद्गुणों के एक नैतिक और सामाजिक आदर्श का बोध कराता है। और इसी व्याख्या के आधार पर उन्होंने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाया।

स्वामी जी का 'आर्य' शब्द संकीर्ण अर्थों में नहीं था। वह मनुष्य के ईश्वरत्व को सामने लाकर आर्यत्व

के रूप में देखना चाहते थे। उन का यह विश्वास था कि भारत जगत् का गुरु रहा है और ज्ञान की ज्योति की किरणें भी उसी के तपोवन में पहले पहल प्रस्फुटित हुई थी।

'प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम साम-रव तव तपोवने और उस ज्ञान के आधार पर 'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः, के अनुसार विश्व में एकत्व का अनुभव करते थे। आज यद्यपि युद्ध की विभी-षिका से मानव जाति को बचाने का सतत प्रयत्न हो रहा है। परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता नहीं मिल रही है। आग को भूसे से दबाने के समान कहीं न कहीं से वह प्रकट हो ही जाती है। वास्तव में हम विश्व में एकता चाहने वालों के लिए इस युग में 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' की भावना का जागरण व एवं उद्बोधन स्वामी जी ने किया। यह ऊर्ध्वगामिनी दृष्टि प्राप्त किये बिना विश्व-शान्ति की वार्ता में सफल नहीं हो सकती। स्वामी जी का कहना था कि भारत धन-धान्य से, ज्ञान और विज्ञान में शक्तिशाली हो परन्तु उसकी यह समृद्धि और शक्ति 'परेषां पीडनाय' न होकर 'परेषां रक्षणाय' हो। उन्होंने 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु' का सन्देश अपने व्यक्तिगत जीवन द्वारा मानव को दिया था। उनका यह विचार था कि हमें अपने हृदयों से राग और द्वेष को मिटा कर 'शान्ति' का पाठ अपने जीवन में लाना चाहिए और अपने जीवन को मानव की भलाई के लिए लगा देना चाहिए। इसीलिए अज्ञान ग्रस्त व्यक्तियों द्वारा पत्थरों की वर्षा को उन्होंने फूलों की वर्षा माना, फैंके हुए सांप को पुष्पमाला से बढ़ कर आदर दिया। जीवन के अन्त में जहर देने वाले को "मैं दुनिया को बन्धन में डालने के लिए नहीं, अपितु मुक्त कराने आया हूं।" रुपया दे दूसरे राज्य में भागने को कहा और यह सब कुछ मानव हित की भावना से प्रेरित हो कर किया। यही कारण था कि अपनी मृत्यु के बाद शरीर को जलाने और उसकी राख को किसी खेत में डाल देने की आज्ञा अपने शिष्यों को इस लिए दी कि वह खेत उपजाऊ हो, मानव की समृद्धि का कारण हो। यह स्वामी जी के आदर्श जीवन का रूप। यही शान्ति का पाठ उन्होंने पढ़ा था, यही वेद की शिक्षा उन्होंने ग्रहण की थी और यही परोपकार की शिक्षा वह दूसरों को देना चाहते थे। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्व भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्" यही स्वामी जी के जीवन का उद्देश्य था और इसी की पूर्ति में उन्होंने अपने कर्ममय तन का अन्त कर दिया।

मानवता का इतिहास विकल
हांफता हुआ लोहलुहान।
दौड़ा तुम से मांगता हुआ स्वामी,
दुःखों से त्वरित त्राण॥
श्रद्धा, विश्वास, क्षमा, ममता, सत्यता,
स्नेह, करुणा अघोर।
सब को सहेज कर विश्व सागर में,
दी है नाव छोड़।
भंवरों में मत नचा इसे,
मत इसे तरंगों पर उछाल।
फिर सहज शून्यता को समेट,
शीतल हो जा अम्बुधि विशाल।
है लदी हुई इस नौका पर,
मानवता की पूंजी महान्।
यह सब गई तो डूबेंगे,
मानवता के सारे सिंगार

संसार को मानवता का सन्देश स्वामी जी ने दिया। विश्व के सागर में उन्होंने मानव गुणों से भरी नौका छोड़ दी। स्वामी जी की महानता के प्रति आज हम कैसे अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाएं। हे स्वामी!

तेरा विराट रूप यह कल्पना पट,
पर नहीं समाता है।
जितना कुछ कहूं,
मगर कहने को शेष बहुत रह जाता है।
लज्जित मेरे यह शब्द,
तिलक माला भी नहि ले आऊं मैं।
किस भांति उठूं इतना ऊपर ?
मस्तक कैसे छू पाऊं मैं।
ग्रीवा तक हाथ न जा सकते,
अंगुलियां न छू सकती ललाट।
चरणन की पूजा किस प्रकार पहुंचे,
तुम तक मानव विराट।

तुम क्रान्ति वीर बन जाओ रे

रचयिता—श्री ब्रह्म प्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति शास्त्री सदन
पश्चिम आजाद नगर दिल्ली—5

शिवरात्रि आज फिर आई है नूतन संदेशा लाई है।

पाखण्डी शोर मचाते हैं, माता की जय बुलवाते है।
यह जगदीश्वर ही माता है, वैदिक संदेशा लाई है॥ शिव ....

अब भी शिव पिण्डी पर चूहे य उछल कूद करते रहते।
नही मिटा सके जड़ पूजा हम यह बोध कराने आई है। शिव...

क्यों वेद प्रचार यह बन्द हुआ, लेखन भी क्यो यह मन्द हुआ।
उस लेखराम बलिदानी का फिर स्मरण कराने आई है॥ शिव...

निज धन बल के बल बूते पर, मनवाले फिर आ धमके है।
श्रद्धानन्द के अनुयायी हो यह बिगुल बजाने आई है। शिव

इस दिवराला की घटना से विधवा नारी का दहन हुआ।
ऋषि दयानन्द सन्यासी का सन्देशा लेकर आई है॥ शिव.

कैसे ये सनातन धर्मी हैं, जो इस घटना पर मौन रहे।
आओ मैदान मे आओ तुम, शास्त्रार्थ कराने आई है॥ शिव....

झूठे ये तान्त्रिक आये हैं जो नरबलियां करवाते हैं।
बहिष्कार करो इन लोगो का, यह भाव जगाने आई है॥ शिव.

अंग्रेजी रीति-रिवाजो का घर-घर मे मान बढा जाता।
हिन्दी-संस्कृत अपनाओ तुम, जो देव वाणी कहलाई है॥ शिव...

सूखे से मची त्राहि-त्राहि पर होश तुम्हे क्यो नही आई।
घर-घर में यज्ञ हवन कर लो, गीता संदेश लाई है॥ शिव...

तुम पड़े हुए किस चिन्ता मे, चिन्तन से शीघ्र करो निर्णय।
यह जग विनाश के पथ पर है, सावधान कराने आई है। शिव...

मानवता के पथ में फिर यह दानवता क्यों बिखर गई।
तुम क्रान्ति वीर बन जाओ रे! यह पाठ पढ़ाने आई है॥ शिव.....

॥ ओ३म् ॥

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।

सचस्वा नः स्वस्तये ॥ 9 ॥

हे ज्योतिर्मय अग्नि ! जैसे पिता अपने पुत्र के लिए शुभ उपाय करता है
तथाहि तू हमारे लिए उत्तम उपायवान् हो ।
जैसे प्रेम-पूर्ण पिता अपने प्रिय स्वरूप पुत्र के अर्थ सुख की सर्व सामग्री एकत्र
करता है ऐसे ही हे भक्तवत्सल भगवन् ! अपने जनों के लिए सर्व सुख के
साधन सिद्ध कीजिए ।

ऋषि बोध (शिवरात्रि) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

स्व. लाला हंसराज जी अग्रवाल

की पावन स्मृति में

उनके सपुत्रों की ओर से

प्रयोजक :—**"दीपावली"**

मुफ्तलाल ग्रुप-रिटेल शो रूम

निकट माई हीरां गेट सरकुलर रोड

जालन्धर—144008

दूरभाष : 76662

॥ ओ३म् ॥

त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात् पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।
आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः । ऋ. 8।31।16॥

हे (इन्द्र) प्रभो ! (त्वं) तू (पश्चात्) पीछे से, (अधरात्) नीचे से, (उत्तरात्) ऊपर से और (पुरः) आगे से तात्पर्य (विश्वतः) सब ओर से (नः नि पाहि) हमारी रक्षा कर। (दैव्यं भयं) आधिदैविक भीति को (अस्मत् आरे कृणुहि) हम से दूर कर। और (अदेवीः हेतीः) राक्षसी शत्रु भी हम से (आरे) दूर रहें।

● ● ● ●

॥ ओ३म् ॥

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यं स सुपर्णो गुरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ ऋ. 1।164।46।

(एकम्) एक ही (सत्) प्रभु के इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, यम,
मातरिश्वा आदि नाम हैं। अर्थात् इन नामों से उस एक ही प्रभु
का ज्ञान होता है। विद्वान् लोग ऐसा जानते हैं।
अनेक नामों से एक परमात्मा का बोध वेद में
होता है यह बात सब जान लें।

ऋषि बोध पर्व (शिवरात्रि) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर द्वाबा

व्यवस्थित पढ़ाई, सांस्कृतिक आधार,

सुन्दर पुस्तकालय

आधुनिक सामान से युक्त प्रयोगशालाएं।

अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त कराने के लिए तथा उनके सर्वतोमुखी
विकास के लिए उन्हें आर. के. आर्य कालेज नवांशहर में
प्रवेश करवाएं।

पं.देवेन्द्र कुमार	के.एल. सिक्का	के.के.सैंगर
प्रधान	प्रिंसीपल	मन्त्री


अपने प्यारे बच्चों
के स्वास्थ्य के लिये
अपना आजमाया हुआ
मोगा शहर का मशहूर
पीमार्का
शुद्ध सरसों का
तेल
प्रयोग करें।
तार "TRUTH" फोन 2239
2303
देवी दास गोपाल कृष्ण प्रा. लि. मायल मिल्ज़, मोगा.

टेलीफोन: 74250 रजि. न. p.b/...

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 46 9 फाल्गुन सम्वत् 2044 तदनुसार 21 फरवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये.

खुशी कैसे प्राप्त करें ?

लेखिका—प्रिंसीपल विमला श्रीवास्तव (छाबड़ा) भिलाई

प्रत्येक समस्या का समाधान निम्नलिखित छ प्रश्नो का उत्तर मिलने पर ही सम्भव होता है :—

"क्या", "क्यों", "कब", "कहां", कौन व "कैसे" !

अधिकतर विचारक व वक्ता उपरोक्त छ: प्रश्नो मे से पाच के उत्तर तो दे देते है परन्तु छठे प्रश्न "कैसे" ? का उत्तर वे नही देते। परिणाम स्वरूप समस्या का हल नहीं निकल पाता और वह ज्यो की त्यो बनी रह जाती है। अत मैंने गीता, उपनिषद् वेद, सांख्य दर्शन, महान व्यक्तियो के जीवन चरित्र व अपने कुछ अनुभव के आधार पर "कैसे" प्रश्न का उत्तर देने का विनम्र प्रयास किया है जिसका पहला पुष्प आपकी सेवा मे अर्पित है। प्रश्न है—खुशी कैसे प्राप्त करें ?

आजकल इष्ट मित्रो द्वारा एक दूसरे को नव वर्ष के शुभागमन पर सुन्दर सुन्दर रंगीन चित्रो से चित्रित व शुभ कामनाओ जैसे—

अथवा "नव वर्ष आपके लिए कल्याणकारी व प्रसन्नतादायक हो"।

आदि शब्दो से युक्त कार्ड भेजे जाते है जिन्हें प्राप्त कर निसन्देह प्रसन्नता होती है परन्तु वह क्षणिक होती है।

मैं भी इस शुभ अवसर पर आप सबके लिए आजीवन सुख व खुशी की शुभ कामना करती हू।

खुशी सर्वाधिक अमूल्य उपहार है परन्तु प्रश्न यह है कि खुशी प्राप्त हो तो कैसे ? क्योंकि खुशी न तो किसी दुकान पर बिकती है और न ही धन देकर खरीदी जा सकती है।

सुख तो कोई व्यक्ति धन दौलत द्वारा भौतिक वस्तुए खरीद कर अपने लिए जुटा सकता है जैसे सर्दी से कष्ट हो रहा हो तो इन्सान गर्म कपड़े ओढ़ कर, या कमरे मे तापक्रम बढ़ाकर सुख प्राप्त कर सकता है।

[illegible] व्यक्ति बिजली का पंखा या कूलर चला कर गर्मी से छुटकारा प्राप्त कर सुख अनुभव कर सकता है। यदि भूख या प्यास से कष्ट हो रहा हो तो व्यक्ति बढ़िया 2 वस्तुए खा पीकर सुख प्राप्त कर सकता है। परन्तु जब हृदय, अशान्त, व्याकुल या उदास हो तो उसे दूर कर खुशी प्राप्त करने के लिए न तो भौतिक साधन काम आते हैं और न ही खाने पीने व रहने के साधन।

चू कि खुशी शान्ति व आनन्द मानसिक विषय हैं अत खुशी प्राप्त करने के साधन भी मानसिक ही हैं जो निम्नलिखित है ,—

(1) अपने इष्ट मित्रो को मन, वचन, व कर्म किसी के द्वारा भी कष्ट न पहुचाए।

हम दूसरो को कष्ट तभी पहुचाते हैं जब हमारी मनोकामना पूरी नही होती या हमारे अहम् की तुष्टि नही होती। जब सारी कामना पूरी नहीं होती तो झट क्रोध आ जाता है, श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय मे कहा है —

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते,
संगात् संजायते कामः, कामात् क्रोधोऽभिजायते।

क्रोध के आने पर हमारा अन्त करण जलने लगता है। वही जलन दूसरो को पीड़ित करने के लिए ज्वालामुखी का रूप धारण कर लेती है। तब हम चुन चुन कर शब्दो का प्रयोग कर दूसरो को दुखी कर बदला लेने का प्रयत्न करते हैं। कभी अभद्र वाणी द्वारा और कभी गाली, गलौच, मार-पीट व हिंसा द्वारा, कभी हम छिप कर अपने क्रोध के पात्र को हानि पहुंचा कर आत्मिक शान्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु वेदानुसार क्रोध से दूसरे को तो एक चौथाई कष्ट पहुचता है परन्तु अपने को तीन चौथाई। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि हमारी शान्ति व आनन्द का स्रोत सूख जाता है। अत उस आनन्द की सरसता को प्राप्त करने के लिए हमे क्रोध को अपने से कोसो दूर रखना चाहिए।

क्रोध को दूर करने के निम्नलिखित उपाय है .—

(1) जिस कामना के कारण क्रोध का जन्म हो उस कामना का परित्याग कर दें क्योंकि कबीर जी ने लिखा है—

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कुछ नही चाहिए, सोई शहन्शाह ॥

(2) जब क्रोध आक्रमण करे तब हम मौन हो जाए।

(3) चिन्तन करें।

(क) क्रोध निर्बल व्यक्तियो का हथियार होता है शक्तिशाली का नही। मैं निर्बल नही हू।

(ख) क्रोध मूर्खों का हथियार होता है। मैं मूर्ख नही हू।

(ग) क्रोध से रक्तचाप बढ़ता है व आयु कम होती है पर मैं बीमार नहीं होना चाहता न ही शीघ्र मरना चाहता हू।

(घ) क्रोध मेरे पर हावी होकर मुझ अपना दास बनाना चाहता है परन्तु मैं उसका नौकर नहीं बनना चाहता। मैं तो स्वामी बनना है।

(4) इसके साथ ही हम आत्म निरीक्षण करें कि भूल किसकी है ? मेरी या मेरे क्रोध के पात्र की।

जैसे ही हमे अपनी भूल मालूम होगी क्रोध छूमन्तर हो जाएगा।

(5) हम दूसरों के दोषो का बखान न कर उनके गुण खोज कर उनकी प्रशंसा करें और पीठ पीछे कभी किसी की निन्दा न करें।

(6) "दूसरों को उत्कृष्ट आर्य बनाने से पूर्व मुझे स्वयं उत्कृष्ट बनना है।" यह लक्ष्य बनाए।

(7) भ्रमण करें व प्रकृति सौन्दर्य का निरीक्षण करें जैसे :—

(1) सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रमा व नक्षत्र आदि के सौन्दर्य को देखकर प्रसन्न हो व ईश्वर की सुन्दरता की प्रशंसा करें,

(2) पेड़-पौधो, फलो, फूलो, पशु-पक्षियों को देख कर प्रसन्न हो और उनके बनाने वाले ईश्वर की प्रशंसा करें।

(8) बार-बार मन में लौकिक व अलौकिक प्रेम की अनुभूति को मन ही मन दोहराए और सोचें—"आहा ! आनन्द बरस रहा है।"

(9) अपने सुख की अपेक्षा दूसरे के सुख को अधिक महत्व दें और उन्हें सुख पहुचाने में व्यस्त हो जाए। तब अपना कष्ट छूमन्तर हो जाएगा।

(10) अपने इष्ट मित्रों व पूर्वजों से सर्वदा मीठे व सत्य वचन बोलें तथा तर्क से बचने का अभ्यास करें।

(11) दूसरो को समझाने की अपेक्षा उन्हे समझने का प्रयत्न करें।

(12) इसके साथ ही चलते फिरते हमेशा ईश्वर से आनन्द के लिए निम्नलिखित प्रार्थना करें :—

"शन्नो देवी रभिष्टये, आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु न ।"

अर्थ—शम्(कल्याणकारी) न (हमें) देवी (सबका प्रकाशक) अभिष्टये (मनोवांछित) आप. (आनन्द देने वाला) भवन्तु हो (पीतये) आनन्द के लिए शयो (सुख की। (अभिस्रवन्तु) (सर्वदा वर्षा करें।

भावार्थ—हे कल्याणकारी प्रकाश व आनन्द देने वाले ईश्वर। मनोवांछित आनन्द के लिए कल्याणकारी हो व सर्वदा हम पर सुख की वृष्टि करें।

उपरोक्त प्रयत्न करने पर नि सन्देह आनन्द की प्राप्ति होगी और तभी हमारी नव वर्ष की शुभ कामनाए सत्य होंगी।

अथर्ववेद मे दी गई शुभ कामनाए आपको आनन्द प्रदान करें —

श नो वात. पवता श नस्तपतु सूर्य: ।
अहानि श भवन्तु न ,
श रात्री प्रतिधीयताम्,
शमुषा नो व्युच्छतु ॥

अर्थ—सुख सौरभ मय पवन बहे,
नित सूर्य ज्योति नव करे प्रकाश।
दिवस रहे शुभ, मधुर हो,
उषा स्वर्ण मयि दे उल्लास ॥

[illegible] — ?

जिसका यश है वह नर जीता है

अनुवादक—श्री सुदर्शन [illegible] शास्त्री [illegible]
गुरुकुल [illegible]पुर ([illegible])

(31 [illegible] से आगे)

किं चन्द्रमा प्रत्युपकारलिप्सया करोति गोभिः
कुमुदावबोधनम् ।
स्वभाव एवोन्नतचेतसा सतां परोपकारव्यसनं हि
जीवितम् ॥37॥

क्या चन्द्रमा प्रतिफल की इच्छा से अपनी किरणों द्वारा कुमुदिनियों को खिलाता है ? नहीं, अपितु महान् और उदारचित्त वाले का तो यह स्वभाव ही होता है और परोपकार करना ही उनके जीवन का व्यसन होता है।

जीवित तदपि जीवितमध्ये गण्यते सुकृतिभिः किमु
पुंसाम् ।
ज्ञानविक्रमकलाकुललज्जात्याग भोग रहित
विफलं यत् ॥38॥

मनुष्यों का जो जीवन ज्ञान विक्रम, कला, कुल लज्जा, दान और भोग से हीन है। पुण्यात्मा लोग क्या उस जीवन को भी जीवनों में गिनते हैं ? अर्थात ज्ञानविक्रमादि से रहित जीवन सर्वथा व्यर्थ होता है।

यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे,
दीने दयां न कुरुते न च बन्धुवर्गे ।
किं तस्य जीवितफलं हि मनुष्यलोके
काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते ॥39॥

जो मनुष्य, पुत्र पर, नौकरों पर, निर्धनों पर, तथा बन्धुओं पर, दयाभाव नहीं रखता, उसका मनुष्य लोक में जीने का क्या लाभ है ? वो तो [illegible] भक्षण करता हुआ कौवा भी देर तक जीता ही है। ऐसा जीवन निरर्थक है।

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ।
[illegible] येन हृदि क्षण नो वृथा गतं तस्य
नरस्य जीवितम् ॥40॥

जिसने क्षण भर भी अपने हृदय में अचिन्त्य रूप, निष्कलंक, निर्मल, ज्ञान स्वरूप, समस्त विश्व का भरण पोषण करने हारे सच्चिदानन्द परमेश्वर का ध्यान नहीं किया ऐसे मनुष्य का जीवन सर्वथा व्यर्थ ही चला गया।

[illegible]भवोऽतीतगुण अपरः ।
धृतो न योगेन हृदि स्वकीये वृथागतं तस्य नरस्य
जीवितम् ॥41॥

[illegible] आदि देवताओं के भी देवता, सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक तेज प्रदान करने वाले गुणातीत और शान्त भगवान को जिसने अपने हृदय में योग के द्वारा धारण नहीं किया उस पुरुष का जीवन व्यर्थ है।

आनन्दरूपो [illegible] [illegible] [illegible] ।
तप [illegible] [illegible] न येन वृथागतं तस्य नरस्य
जीवितम् ॥42॥

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] व्यर्थ गया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥43॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शरीर को पाकर भी जिसने [illegible], [illegible] नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] येन [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] नरस्य
जीवितम् ॥44॥

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, एवं सुन्दर कीर्ति को प्रदान करती है, वह विद्या जिसने [illegible] नहीं की उसका जीवन [illegible] है।

तपोभिरुग्रैरपि दुर्लभां नृणां सत्सङ्गति पुण्यवशादुपेत्य यः ।
[illegible] [illegible] [illegible] वृथागतं तस्य नरस्य ।
जीवितम् ॥45॥

कठोर तप द्वारा भी दुर्लभ सत्संगति को पुण्य वश प्राप्त करके भी जिसने अपने जीवन का [illegible] से उद्धार नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ ही है।

जागृति का यह पर्व महान्

लेखक—श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ.प्र.)

ऋषिवर दयानन्द के उर में,
इसने [illegible] ज्योति जगाया।
[illegible] की [illegible] तमिस्रा—
को इसने ही दूर भगाया ॥

'बोध' प्राप्त कर इसी रात्रि को—
[illegible] [illegible] सत्यार्थी।
प्रखर [illegible] के दीप्त [illegible] से—
[illegible] सत्य का [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] को—
[illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] के पद पर [illegible]—
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

स्वतन्त्रता की [illegible] [illegible] फिर—
भारत भूमि के [illegible] में।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—
[illegible], देश के आँगन में।

राष्ट्र [illegible] [illegible] वेदि पर—
[illegible] शीश [illegible] चढ़ने।
वेद-[illegible] पर [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] ।

आओ ! हम भी करें प्रतिज्ञा—
'करें' वेद का अमृत पान।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—
जागृति का यह पर्व महान् ॥

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज

क्या यह परिस्थितियों की ही विडम्बना नहीं कि कुछ समय पहले दूसरे प्रदेशों की आर्य समाजें और प्रतिनिधि सभाएं पंजाब की आर्य समाज की तरफ देखा करती थी पिछले एक सौ वर्ष का इतिहास देखने से पता चलता है कि आर्य समाज ने जितनी प्रगति पंजाब में की है किसी दूसरे प्रान्त में नहीं की पंजाब सभा के उपदेशक दूसरे प्रान्तों की सभाएं मंगवाया करती थी। पंजाब सभा जो साहित्य प्रकाशित किया करती थी उसे दूसरी सभाएं मंगवा कर बांटा करती थी। कई-2 उपदेशक पंजाब में प्रचार के लिए आकर गर्व अनुभव किया करते थे।

आज स्थिति बदल रही है पंजाब सभा के पास न तो उपदेशक हैं न भजनीक हैं, हमने पूरा प्रयास किया कि अच्छे 2 उच्चकोटि के उपदेशकों की सेवाएं प्राप्त करें। इसके लिए हमने देश की सब प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाओं के समाचार पत्र, पत्रिकाओं में विज्ञापन दिए। दस हजार, डेढ हजार रुपया प्रतिमाह देने तक को तैयार थे परन्तु कोई भी योग्य विद्वान पंजाब में आने को तैयार नहीं। मैंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान से भी प्रार्थना की कि हमें दो चार उपदेशक दिलवाईए जो पंजाब में प्रचार कर सकें। उन्होंने मुझे आश्वासन भी दिया जो न पूरा होना था न हुआ परन्तु जब पंजाब सभा के अधिकारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही करनी होती है तो एक आरोप हमारे विरुद्ध यह भी लगाया जाता है कि पंजाब में आर्य समाज का कोई कार्य नहीं हो रहा। देहली में बैठ कर पंजाब के आर्य समाजियों पर यह आरोप लगाना कठिन नहीं है परन्तु जब यह आरोप लगाने वाले महानुभाव स्वयं पंजाब में आते हैं तो पुलिस के पहरे में आते हैं। उनके आगे भी पुलिस होती है, पीछे भी पुलिस होती है। दाएं भी पुलिस होती है, बाएं भी पुलिस होती है।

आर्य समाज ने समय-2 पर अपने कई प्रकार के सन्यासी देखे हैं। एक वह सन्यासी था जिसने देहली के चान्दनी चौक में खड़े होकर अंग्रेज की फौज के सामने अपनी छाती तान दी थी और कहा था कि साहस है तो गोली चलाओ। और आजकल के सन्यासी पुलिस के पहरे में प्रचार के लिए आते हैं और फिर कहते हैं कि पंजाब में आर्य समाज का कोई काम नहीं हो रहा। मुझे अपनी कमजोरी को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है। जिस प्रदेश में प्रतिदिन आठ-2 और दस 2 व्यक्तियों को गोलियों से उड़ाया जा रहा हो वहां प्रचार करना आसान नहीं है। विशेषकर आर्य समाज जैसी संस्था के लिए जिसे आतंकवादी अपनी सबसे बड़ी विरोधी संस्था समझते हैं। यह होते हुए भी मैं यह गर्व से कह सकता हूं कि पंजाब में आज भी आर्य समाज जीवित है। देहली में बैठे हुए लोग कहीं शोर मचाते कि पंजाब में आर्य समाज कहां है परन्तु यदि वह आर्य समाज को देखना चाहते हैं तो उन्हें 14 फरवरी को जालन्धर में वार्षिक कैम्प में आर्य समाजियों का जलूस आकर देखना चाहिए था। उन्हें पता चल जाता कि पंजाब में आर्य समाजें कहां हैं। यह सब युवकों का जलूस था। हमारे समाज के उस वर्ग का जलूस था जिन्हें हम नैव कहते हैं जिनके दिल में ऋषि दयानन्द की भक्ति कूट-2 कर भरी पड़ी है। और यदि किसी ने आर्य समाज का प्रचार देखना हो तो जालन्धर की चार्सी गेट की आर्य समाज के उत्सव पर देखते इस आर्य समाज का भवन केवल एक व्यक्ति के परिश्रम से बना है। श्री रामसुभाया नन्दा स्थान 2 पर जाकर अपनी समाज के लिए दान मांगते हैं और उसे ही फिर अपने क्षेत्र की पीड़ित जनता में बांट देते हैं। लड़कियों को सिलाई की मशीन देते हैं। जो बूढ़े हैं उन्हें कपड़ा देते हैं। जो बीमार हैं उनकी दवाई का प्रबन्ध करते हैं। जालन्धर में मौहल्ला गोविन्दगढ़ में एक स्त्री आर्य समाज है हमारी बहनों में आर्य समाज के लिए कितनी श्रद्धा है इसका कुछ अनुमान उनके वार्षिकोत्सव को देख कर लगाया जा सकता था। जालन्धर में दयानन्द मठ, इन मौहल्लों की आर्य समाज है जिसके वार्षिकोत्सव पर हजारों की उपस्थिति थी। इसी प्रकार जालन्धर में आर्य युवक सभा, स्त्री सभा और सन्यासी की आर्य समाजें भी अपने-2 क्षेत्र में वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज के प्रचार के लिए जो कुछ कर सकती हैं कर रही हैं। [illegible] जालन्धर में रहता हूं। इसलिए केवल जालन्धर वालों की बात करता हूं। परन्तु अभी दो सप्ताह ही हुए हैं जब जिला गुरदासपुर की आर्य समाजों के प्रतिनिधि दयानन्द मठ दीनानगर में इकट्ठे हुए, ताकि अपने जिला की आर्य समाजों की समस्याओं पर विचार कर सकें। गुरदासपुर का जिला इस समय पंजाब में आतंकवादियों का सबसे बड़ा केन्द्र है फिर भी उसके देहात से कुछ आर्य समाजी रहते हैं। जिन्होंने हमें वहां आकर बताया कि किन परिस्थितियों में वह अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। परन्तु फिर भी आर्य समाज का प्रचार कार्य चल रहा है। उस समय मैंने सोचा कि दिल्ली में बैठ कर और पुलिस के पहरे में चलकर क्या कर जो हमारे नेता गण यह कहते हैं कि पंजाब में आर्य समाज समाप्त हो चुका है। वह जरा गुरदासपुर के जिला को आकर देखें, और भी पंजाब में आर्य समाजें कई स्थानों पर बहुत काम कर रही हैं जिनके विषय में मैं अगामी लेख में सारी स्थिति पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

कनेडा से श्री देशराज महता का पत्र

श्री वीरेन्द्र जी के नाम पत्र

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के भू. पू. प्रधान श्री महता देशराज जी आजकल कनेडा गए हुए हैं वहां भी वह आर्य समाज का सक्रिय काम कर रहे हैं। पिछले दिनों उनका एक पत्र श्री वीरेन्द्र जी के नाम आया है जिससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि कनेडा में रहने वाले हमारे आर्य भाई व बहन आर्य समाज के प्रचार के लिए वहां क्या कुछ कर रहे हैं। अपने पत्र में महता जी लिखते हैं :—

"यह आपका सेवक देशराज महता भू. पू. प्रधान आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना बहुत दिनों से आपको पत्र लिखने बारे सोच रहा था। परन्तु लिख न सका। प्रभु की कृपा से यहां समय अच्छा व्यतीत हो रहा है और समाज के काम में सेवा करके मन प्रसन्न रहता है। यहां टोरंटो में चार बड़ी समाजें हैं जो हर सप्ताह रविवार दो बजे दोपहर से पांच बजे सायं तक लगती हैं। हमारे निकट की आर्य समाजें एक विशेष भवन में हाल किराया पर लेकर पहले मास में दो बार लगती थी परन्तु प्रधान जी और अधिकारियों को मैंने प्रेरणा की कि वह प्रति रविवार लगाया करें और वह मान गए। अब चार बार महीने में लगती है। हवन यज्ञ सन्ध्या भजन और प्रवचन दो बजे से कार्यक्रम शुरू बजे से साढे चार बजे तक होता है। बाद में अच्छा जलपान करवाया जाता है। उपस्थिति बड़ी सन्तोषजनक होती है। सबसे खुशी की बात यह है कि यहां बूढ़े कम और नवयुवक व नवयुवतियां अधिक भाग लेती हैं। छोटे बच्चों का भी [illegible] होता है उनको हिन्दी भी पढ़ाई जाती है। 18-20 साल के लड़के और लड़कियां जो यहीं पैदा हुए हैं, हिन्दी नहीं जानते। इसलिए अंग्रेजी ही अधिक समझते हैं। अपनी हिन्दू संस्कृति को जिन्दा रखने के लिए इन युवकों और युवतियों को हिन्दी पढ़ाना और अपना वैदिक इतिहास बताना आवश्यक है। सयोग वश हमारी आर्य समाज के प्रधान डा. रवि कुमार श्रीवास्तव हैं जो कि स्व. श्री विक्रम प्रसाद जी आर्य भू. पू. प्रधान आर्य समाज [illegible] लुधियाना के सुपुत्र हैं। वह सारे काम में बहुत रुचि लेते हैं। आपकी बात जो आप अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि हिन्दू अपने घर हवन कर कुछ हो सकता है। बिल्कुल ठीक है यहां सब हवन हर विचार के रखने वाले हिन्दू अपने घरों में करवाते हैं। जिससे वेद प्रचार अच्छा हो जाता है। मेरी सेवा भी घरों में यज्ञ करवाने में ली जाती है जिसमें आर्य सिद्धान्तों और आर्य समाज का प्रचार मैं अपनी बुद्धि अनुसार करता हूं लोग बहुत प्रसन्नता से सुनते हैं। हम दोनों को यहां आर्य जगत् में काफी मान और प्यार दिया जाता है। जिससे कार्य करने में आनन्द भी आता है और समय भी अच्छा व्यतीत हो जाता है।

(शेष आगामी अंक में)

क्रान्तदर्शी—दयानन्द

लेखक—श्री प. वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य,
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर—7

स्व श्री वीरसेन वेदश्रमी जी के द्वारा अन्तिम समय में लिखा गया यह लेख वेद सदन महारानी पथ इन्दौर से हमें देरी से प्राप्त हुआ जब हमें यह लेख मिला तब हम शिवरात्रि विशेषांक छाप चुके थे। इसलिए विशेषांक मे यह लेख न दिया जा सका इसलिए पाठकों के लाभार्थ इस अक में प्रकाशित किया गया है। —स सम्पादक

1 महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश

महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति, आर्यावर्त तथा मानव जाति के अध पतन के कारण को अपनी दिव्य योग-जन्य दृष्टि से सम्यक् जान कर आर्य जाति को उद्बोधित करने का प्रयत्न किया। आर्य जाति का पूर्व काल मे अखिल भूमण्डल पर चक्रवर्ती साम्राज्य रहा। अत उसको उसी आर्य नाम स पूर्व सस्कारो को जागृत कराने के लिए और पुन: भूमण्डल का चक्रवर्ती साम्राज्य प्राप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति को वेदो का दिव्य सन्देश दिया तथा वेदो को अपनाने का सन्देश दिया। वेदों को पढने-पढाने का परम धर्म रूपी परमावश्यक कर्म घोषित किया और यह बताया कि वेद सब सत्य-विद्याओ का पुस्तक है, वेद ही धर्म,कर्म उपासना, मोक्ष का मूल है।

2 वेदों का भूमण्डल मे प्रचार

वेदो का भूमण्डल मे प्रचार महर्षि दयानन्द का प्रधान लक्ष्य था, इसके लिए प्राथमिक कार्य यह महर्षि ने घोषित किया था कि—वेदों का पढना,पढाना और सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है, इसको ध्यान मे रख कर प्रयत्न करने चाहिये, जब वेदो को पढ़ेंगे, पढावेंगे तभी उनके अर्थों के प्रति प्रीति होगी और वेद की विविध विद्याओ का ज्ञान होगा, वेद की विद्याओं के ज्ञान से उनके उपयोग की विधियो का अनुसधान प्रारम्भ होगा। विधियों के अनुसंधान के आधार पर विद्या और शिल्प, कला यन्त्रों का निर्माण होगा और मानव जाति की आवश्यकताओ की पूर्ति वेद के विज्ञान से होगी। तभी वेदो का पठन-पाठन प्रचलित हो सकेगा।

3 वेदो का भूमण्डल मे प्रचार यज्ञ विज्ञान से सम्भव—

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, अत. इस बात की भी नितान्त आवश्यकता है कि वेद मे से उन सब सत्य विद्याओ को या उनमें से कतिपय सत्य विद्याओं को संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया जावे, उन विद्याओ से ससार को लाभान्वित किया जावे और उन विद्याओ को व्यवहारोपयोगी बनाकर विश्व के जीवन इतने निकट स्थापित कर दिया जावे कि मानव मात्र को वेद एव वैदिक यज्ञ विज्ञान बलात् अपनाना ही पड़े। ऐसी स्थिति में मानव जाति को अपने ज्ञान एव प्रेरणा के स्रोत के लिए वेद को ही स्वीकार करना होगा और अपने समस्त व्यवहारो के लिए वैदिक यज्ञ-विज्ञान पर ही आश्रित होना होगा। "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ,विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है—अत: वेद की विद्या और उसको व्यवहारोपयोगी बना कर मानव मात्र को आदि मूल परमेश्वर के निकट लाने का जो भी प्रयत्न हम करेंगे तो वह नि:सन्देह चतुर्विधफल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने-कराने वाला ही होगा, अन्य सब योजनाओ एव कार्यों को प्राथमिकता न देकर वेद के यज्ञ-विज्ञान के अनुसन्धान को ही पूर्ण महत्व देते हुए इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। ससार का उपकार करने का यही सर्वोत्कृष्ट मार्ग है, इसके लिए उदासीनता या उपेक्षा-भाव आत्मघात के तुल्य है।

4 वैदिक विज्ञान की उपयोगिता का प्रतिपादन हो।

क्या वर्तमान वैज्ञानिक युग में वेद की विद्या और उसका यज्ञ-विज्ञान उपयोगी हो सकेंगे ? क्या यज्ञ के विज्ञान द्वारा कुछ ऐसे भी कार्य किये जा सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव आज के विश्व के मस्तिष्क एव हृदय पटल पर पड़ सके ? क्या वेद के विज्ञान के उपयोग से ऐसे भी कार्य हो सकते हैं जिनको वर्तमान विज्ञान अभी तक नहीं कर सका है ? यदि इसका उत्तर हां में दिया जा सकता है तो उसके लिए हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिए और उसके लिए सर्व प्रकार से सहयोग भी देना चाहिए।

5 अनुसन्धान कार्य के लिए उत्कट साधना—

वेद के विज्ञान के अनुसन्धान कार्य के लिए हमें जीवन को अर्पण करना होगा और अपने धन एव तन को भी वेदो के लिए अर्पण करना होगा, वेद को अन्न-ब्रह्म कहा गया है, यही वेद की मन्त्र राशि, ब्रह्म का परम पवित्र, श्रेष्ठतम, सत्य, पूर्ण निर्भ्रान्त ज्ञान मानव जाति का परम आश्रय तथा सार्वकालिक पथ-प्रदर्शक है, वेद मानुषता परम ज्योति है, वेद का पठन-पाठन, श्रवण-श्रावण तथा उसमें ज्ञान एव कर्म की प्रवृत्ति मानव जाति के लिए परम धर्म है, इस परम धर्म की साधना से हमें अनेक विद्या एव विज्ञानो की प्राप्ति हो सकेगी और उससे विश्व को लाभान्वित किया जा सकता है।

6 यज्ञ विज्ञान के प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में हों।

वेदो के स्वाध्याय के तथा अब तक के अपने प्रयोग एव प्रयत्नों के आधार पर अनेक कार्यों को हम अपने अनुसन्धान का क्षेत्र बनाकर विश्व को आशातीत सफलता के क्षेत्र में प्रवेश करा सकते हैं, वैदिक यज्ञ-विज्ञान की सफलता से विश्व के लाभान्वित होने पर शिक्षा, विज्ञान, समाज, राजनीति आदि क्षेत्रों मे भी वेद को महत्वपूर्ण स्थान विश्व मे स्वत: ही प्राप्त हो सकेगा, 'अग्निहोत्र फला वेदा.' यह निष्कर्ष प्राचीन ऋषियो ने वेद की सफलता एव यज्ञ के विज्ञान को सत्य सिद्ध करने तथा व्यवहारोपयोगी बनाने के लिए घोषित किया था। अत: हमे भी वेदो के यज्ञ-विज्ञान के द्वारा वर्तमान समय की समस्याओ का समाधान करने प्रयत्न करना ही चाहिए।

7. प्रयोगशाला—यज्ञ वेदी ही है

वेद विद्याओ एव विज्ञान से पूर्ण हैं, और उन विद्याओ एव विज्ञान की सबसे उत्कृष्ट प्रयोगशाला यज्ञ वेदी—यह मानव देह ही है, जब इस देहरूपी प्रयोगशाला से विश्व मे प्रयोग किए जाते हैं तो उसका प्रभाव विश्व पर भी पड़ता है, जब तक ये प्रयोग पच तन्मात्राओ से ऊपर की शक्तियो द्वारा किये जाते हैं तब तक सकल्प शक्ति के आधार पर सफलता को प्राप्त करते हैं, यह वैदिक विज्ञान की सूक्ष्म एव उच्च स्थिति है। परन्तु जब वैदिक विज्ञान का स्थूल रूप, स्थूल जगत् के पदार्थ एव उनकी शक्तियों के माध्यम से सम्पन्न किया जाता है तो उसकी प्रयोगशाला बाह्य यज्ञ-वेदी को ही बनाना पड़ता है, उसमे सर्व प्रकार के क्रियाकलापों की सिद्धि के लिए अग्नि स्थापन करके द्रव्यो की आहुतियो द्वारा उनको सूक्ष्म करके सयोग, वियोग, एव विभाग क्रियाओ द्वारा विश्व मे यथा स्थान, यथा शक्ति तत्वो की वृद्धि एव ह्रास द्वारा इच्छित क्रिया की जाती है जो कि इष्ट प्राप्ति कराती है, यदि इसके साथ मानसिक शक्तियो का भी प्रयोग किया जाता है तो और भी शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

8. समस्त कामनाओं की पूर्ति—यज्ञ से—

वैदिक विज्ञान की इस प्रक्रिया को यज्ञ कहते हैं, इसीलिए वेद ने यज्ञ को "कामधुक" कहा गीता में भी यज्ञ को "कामधुक" कहा गया है, अर्थात् सर्व-कामनाओं की प्राप्ति, दोहन आदि यज्ञ से हो सकती है, कामनानुकूल इष्ट प्राप्ति के लिए जो विविध प्रकार के प्रयत्न एव क्रिया कलाप हैं वे ही पृथक्-पृथक् यज्ञों के रूप में विविध नाम व रूप से कहे जाते हैं, इस प्रक्रिया को समझ कर यज्ञ द्वारा अनुसन्धान कार्य बड़ी सफलता से सम्पन्न हो जाता है, इसी यज्ञ-विज्ञान के आधार पर—

(1) यज्ञों द्वारा असमय में अन्तरिक्ष में सोम भरा जा सकता है और उससे मेघो का निर्माण इच्छित समय पर हो सकता है, यज्ञ निर्मित इन मेघों को यथेष्ठ स्थानों पर बरसाया भी जा सकता, आज बड़े-बड़े बांध बने हुए हैं, यदि वर्षा न हो तो वे शीघ्र ही निष्फल हो सकते हैं, अत: इच्छित रूप से वर्षा कराने के सुलभ यज्ञ विज्ञान द्वारा संसार को लाभान्वित किया जा सकता है जिससे कृषि एव उद्योग विकसित बने रह सकते हैं।

(2) अतिवृष्टि को रोकने के प्रयत्न वर्तमान विज्ञान नहीं कर सका—परन्तु अवर्षण की स्थिति निर्माण करने या अतिवृष्टि को रोकने की क्रिया भी यज्ञ द्वारा सम्पन्न होती है और उसमें सफलता भी दृष्टिगोचर हुई है। इस क्रिया द्वारा वर्षा पर अकुश एव नियन्त्रण स्थापित होने से नदियो की बाढ़ समस्या को नियन्त्रित किया जा सकता है और देश को धन, जन,अन्नादि की हानि से मुक्त किया जा सकता है।

(3) यज्ञ द्वारा वर्षा कराने एव वर्षा रोकने की यज्ञ प्रक्रिया तथा विज्ञान के आधार पर ही ऋतु विज्ञान पर भी इच्छित नियन्त्रण स्थापित हो सकता है। अर्थात् यज्ञ द्वारा ऋतुओं के तापमान में न्यूनता एव वृद्धि की जा सकती है। शीत ऋतु में यदि आवश्यकता से अधिक शीत लहरें वातावरण को अति शीतल बना दें अथवा ग्रीष्म ऋतु में ग्रीष्म की प्रचण्डता से जन हानि की सम्भावना हो तो दोनो अवस्थाओं में अपने अनुकूल वातावरण में परिवर्तन यज्ञ के द्वारा सम्भव है अथवा ऋतुओं की स्थिति क्षीण प्रभावहीन एव असमर्थ हो तो उसको समर्थ एव प्रभाव युक्त भी यज्ञ के द्वारा किया जा सकता है।

(4) यज्ञ द्वारा मरुभूमि को उपजाऊ भूमि में परिवर्तित करने की क्रिया भी की जा सकती है, आज मरुभूमि को रोकने के उपायों में बबूल के वनों को लगाने का उपाय व्यवहार में लाया जा रहा है, कांटों को बोने का काम कांटे के रूप में ही भोगना पड़ता है। मरुस्थल पृथिवी का क्षय रोग है, इस क्षय की चिकित्सा यज्ञ द्वारा ही सकती है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा सुमन

संकलनकर्ता—वेदमित्र हनुमान वाले मन्नालाल जलवानी

दयानन्द का आर्य जन करते तुम्हें प्रणाम
अमर अमर है विश्व में दयानन्द का नाम।
दयानन्द का नाम महर्षि पदवी पाई,
भूले भटके जन-जन को राह दिखाई।

(1) महात्मा गांधी ने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द के कार्यों को आदर दिया। —गोविन्द वल्लभ पंत

(2) वेदों की रक्षा का सारा श्रेय आर्य समाज को जाता है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के केवल दो मन्त्रों से गीता जैसा महान् ग्रन्थ बना। —डा सम्पूर्णानन्द

(3) आर्य समाज न होता तो आजादी प्राप्त करना मुश्किल था। —अकबरवली

(4) यह निश्चित है, कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ गम्भीर आध्यात्मिक, आश्चर्यजनक वक्ता और बुराइयों पर निर्भीक प्रहार करने वाला भारत को प्राप्त नहीं हुआ। —मेडम ब्लेवट्स्की

(5) मैं देखता हू, कि कोई भी हिन्दू जब आर्य समाज में आता है, तो उसमें विशेषता आ जाती है, उसके अन्दर उत्साह देशभक्ति, कर्मशीलता और एक प्रकार की अद्भुत भावना काम करने लगती है। असहयोग के युग से पहले लगभग 90 प्रतिशत आर्य समाजी स्वराज्य के कार्यों में भाग लेने वाले लीडर थे। —मौलाना हसरत मोहानी

(6) गान्धी जी से पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिए महान् कार्य किया, उन्होंने भारतीयों को स्वराज्य का मार्ग बताया। महर्षि एक पूर्ण पुरुष थे। भारत के युग निर्माता थे। —डा पट्टाभि सीतारामैया

(7) स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे। स्वामी दयानन्द राजनीतिक और मानसिक गुलामी के विरुद्ध थे। उन्होंने कहा सभी मनुष्य जन्म से और प्रभु की दृष्टि मे समान है। उन्होंने स्त्रियो की समानता और शिक्षा व सामाजिक उत्तरदायित्वो के अधिकार के लिए भी संघर्ष किया। —श्रीमती इन्दिरा गान्धी

(8) आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुगामी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है, और वेद चुनी हुई पुस्तक है। —रैमेजे मेक डानल्ड

सम्पादक के नाम पत्र—

क्या आर्य समाज दयानन्द के बताए मार्ग से हट रहा है ?

महोदय!

दिनांक 29 नवम्बर की आर्य मर्यादा में श्री विजय स्वरूप गोयल का एक लेख छपा है। जिसमें बहुत कुछ बातें तो निर्विवाद ही हैं, किन्तु कुछ बातों को स्वीकार करना कठिन है। उदाहरणार्थ वे कहते हैं कि सनातन धर्म के लोगों को आर्य नाम से एलर्जी है, अतः क्यों नहीं आर्य समाजी ही हिन्दू नाम को अपना लेते। इसके उत्तर में निवेदन है कि आर्य समाज को भी हिन्दू शब्द से एलर्जी है। यदि सनातनी अपनी गौरव पूर्ण परम्परा तथा शास्त्रों में स्वीकृत आर्य नाम को स्वीकार नहीं करते तो हमें ही क्या पड़ा है कि हम विदेशियों द्वारा दिये गये उस नाम को स्वीकार करें जिसके साथ हमारी पराधीनता तथा दासत्व की कहानी जुड़ी है।

[illegible] गोयल का यह भी आग्रह है कि आर्य समाज को चाहिये कि वह रा स्व संघ, सनातन धर्म सभा तथा विश्व हिन्दू परिषद् से बातचीत कर उन्हें एक विशाल संगठन में जुड़ने के लिये कहे। परन्तु हमारा पक्का विश्वास है कि न तो सनातन धर्मी ही आर्य समाज के निकट आयेंगे क्योंकि उनकी कट्टरवादिता तथा रूढ़िवादी विचारों से आर्य समाज का तालमेल होना कठिन है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तो गुरुजन के व्यवहार से मुक्त होकर आर्य समाज के निकट आने में हरगिज तैयार नहीं होगा। आर्य समाज का संगठन प्रजातान्त्रिक है जबकि संघ वाले गिर गुरु एक तन्त्र में विश्वास रखते हैं। वहाँ संघ संचालक का आदेश ही सर्वोपरि और निर्णायक होता है।

—डा. जवाहरलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

योगीराज महर्षि दयानन्द

प्रेषक—श्री दीपक जी लुधियाना

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज (आर्य समाज के प्रवर्तक) का जीवन भी ऐसा ही ज्वलन्त उदाहरण है। उनका जीवन संसार में सूर्य के समान प्रकाशित हुआ, जिससे अनेक-2 व्यक्तियों ने प्रकाश लिया और अपना जीवन चमकाया।

महर्षि दयानन्द को हमने और देश के लोगों ने नहीं समझा यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य ही है। विदेशी ही नहीं अपितु हमारे देश के अनेक विद्वान और राजनीतिक नेताओं को यह भ्रम है कि महर्षि दयानन्द केवल समाज सुधारक थे और उनका लक्ष्य हिन्दुओं में प्रचलित धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों का परिशोधन था। उनकी सीमित दृष्टि मे योग-बल और आध्यात्मिकता का उसमें अभाव था। इसका एक कारण है। हजारों वर्षों से हम जीवन के वैदिक मार्ग से जिसमें अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों का ही समावेश है, भटक गए हैं। जो निःश्रेयस का उपदेश देता है उसे ही हम सन्त साधू, महात्मा समझने लगते हैं। अभ्युदय का उपदेश करने वालों को हम प्रवृत्ति मार्गी कह कर उपेक्षा करते हैं।

परन्तु दयानन्द वेदों के उस प्राचीन धर्म को संसार मे पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे। जिसके अभ्युदय और निःश्रेयस दो आवश्यक पक्ष हैं जिनके बिना मनुष्य जीवन उस पक्षी के तुल्य है जिसके एक ही पंख हो और जो उसी के सहारे उड़ान भरने का यत्न करता हो। हजारों वर्षों से इस देश के निवासी इसी उलझन मे उलझे हुए इधर उधर भटकते रहे हैं।

महर्षि दयानन्द जिसे यदि हम सच्चे अर्थों मे समझें तो वास्तविक अर्थों में आप्त पुरुष थे। योगी तत्त्व द्रष्टा और परोपकारी थे, और प्राचीन ऋषियों की कोटि मे रखे जाने की क्षमता रखता था। महर्षि देव दयानन्द इस युग के साधु-सन्तों और महात्माओं से बहुत ऊपर थे। यही कारण है कि हमारी संकुचित दृष्टि उन्हें देखने और परखने मे असमर्थ है। महर्षि दयानन्द इस देश और जाति ही नहीं अपितु संसार के अभ्युत्थान मे विश्वास रखते थे, उनका लक्ष्य महान् था, वह किसी देश व जाति की परिधि से परे थे। हमने महर्षि को दूर से देखने का प्रयत्न किया निकट से नहीं—आओ हम सभी महर्षि के जीवन मे घटी घटनाओं को नजदीक से देखें और उनके वास्तविक रूप को देखें कि यह घटनाएं उनके योग बल का जीवित उदाहरण हैं। यह घटनाएं तो चमत्कार नहीं थी बल्कि योग सिद्धि के आश्रित थी। एक बार स्वामी जी महाराज माघ महीने में लोगों को उपदेश दे रहे थे। सुनने वाले भारी 2 दुशालें ओढ़े हुए फिर भी कांप रहे थे और महर्षि केवल एक लंगोट पहने हुए थे। लोगों ने इसका कारण पूछा तो कहा कि योग का अभ्यास है। महर्षि योग बल के प्रभाव से वाणी से जो कहें वह सत्य ही होता था। महर्षि के सम्पर्क में जो भी आया उसका जीवन चमक गया। महर्षि जीवन की बहुत सी घटनाएं ऐसी हैं कि यदि उल्लेख करें तो लेख समाप्त ही न हो। इस शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर हमारे नायक सत्य की खोज पर निकले थे उसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली। हमें भी विशेष कर महर्षि अनुयायियों को सत्य जानना-मानना आचरण में लाना परम कर्तव्य समझना चाहिए।

नारी जागरण सम्मान समारोह सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा आयोजित नारी जागरण सप्ताह का मुख्य समारोह माता सुमनावति जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 14-1-88 को आरम्भ किए गए गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति पं सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने करवाई। सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। डा बालकृष्ण जी शास्त्री ने सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि हम महिलाओं को इन अत्याचारों से छुटकारा दिलाना चाहते हैं तो हमें आज यह संकल्प लेना चाहिए कि हम न दहेज देंगे तथा न ही दहेज लेंगे। माता पुष्पवति जी ने देवराला सती काण्ड का वर्णन करते हुए कहा गया कि वहां इस लड़की को इच्छा के विरुद्ध सती किया गया। हमें जनता को जागृत करने के लिए एक अभियान [illegible] ताकि भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो। प निरञ्जन देव जी द[illegible] के सम्मेलन को भी सम्बोधित किया। माता सुमनावति ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हम इस प्रकार के आयोजन भविष्य में करते रहेंगे तथा नारी जाति पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाए थे। उन्होंने श्री नरेन्द्रसिंह जी भल्ला तथा श्री रोशनलाल शर्मा के सहयोग की विशेष रूप से सराहना की।

—वेद रानी-मन्त्री

प्रभु-दर्शन का एक साधन ब्रह्मचर्य

लेखक—स्व श्री प मुनीश्वरदेव जी सिद्धान्तशिरोमणि
भू पू महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

(31 जनवरी से आगे)

भगवन ! उसमें मैं कभी अपने आप को गजारूढ और कभी अश्वारूढ की दशा में देखता हूं बस यह प्रतिष्ठपद ही सब कुछ है। जाओ ! इन्द्र यह सुनकर चला आया, और एकान्त में बैठ कर सोचने लगा कि स्वप्न में तो कभी 2 मैं अपने आप को रोता चिल्लाता, भयभीत होता हुआ भी तो अनुभव करता हूं। यह कैसे कल्याणकारी तत्व हो सकता है। यह सोच इन्द्र पुनः गुरु जी के पास आकर बोला कि अभी आत्मा को सन्तोष नहीं मिला, गुरु बोले कि भाई ! सन्तोष के लिए और (बस अपराणि द्वात्रिंशत वर्षाणि) 32 वर्ष का ब्रह्मचर्य पालो।

जिज्ञासु इन्द्र ने, लक्ष्य तक पहुंच कर ही लौटना ठीक है विचार कर गुरु आज्ञानुसार पुनः 32 वर्ष का ब्रह्मचर्य धारण किया, (6 वर्ष के कठोर ब्रह्मचर्य व्रत को निभा कर वह पुनः गुरु चरणों में उपस्थित हुआ गुरु ने ... कभी इन्द्र तुम सुषुप्ति अ... का अनुभव हुआ है ! इन्द्र ने कहा कि कभी कभी वर्षों के बाद अनुभव में आता है कि जैसे 'मैं हूं ही नहीं' गुरु बोले बस यही सब कुछ है। इसे ही लक्ष्य समझो यह सुन कर इन्द्र कुछ पीछे हटा परन्तु थोड़ी देर बाद पुनः गुरु जी से कहने लगा कि इसमें भी मैं शान्ति अनुभव नहीं करता, क्योंकि सुषुप्ति की दशा भी तो सदा नहीं रहती इस पर गुरु जी ने दया पूर्वक कहा कि बस अब लक्ष्य सन्निकट है, हौसला न तोड़ना (बस अपराणि पञ्च वर्षाणि) और 5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण करो। इन्द्र ने तथास्तु कह कर 5 वर्ष भी पूर्ण किए, इस प्रकार 101 वर्ष का इन्द्र ने ब्रह्मचर्य व्रत निभाया, और गुरु द्वारा प्रदर्शित जीवन-लक्ष्य ब्रह्म का जिसके द्वारा आंख में दर्शन शक्ति नासिका में घ्राण शक्ति, श्रोत्र में श्रवण शक्ति आदि का सञ्चार होता है। जिस की सत्ता के बिना अग्नि में दाहकत्व वायु में चलित्व, जल में शीतलत्व आदि कुछ भी स्थिर नहीं रहता उस आत्मा का सत्य स्वरूप जाना।

इससे पता चला कि आत्मदर्शी के लिए भी ब्रह्मचर्य पालन अत्यावश्यक है, बिना इस कठोर तपश्चरण के मानव आध्यात्मिक क्षेत्र में भी सफल नहीं हो सकता। हमारे पूर्वज ऋषि महात्मा भी इसे अच्छी प्रकार अनुभव करते थे। और इस सञ्जीवन रस का आयु पर्यन्त पान करने में आत्म गौरव मानते थे। आप देखिये वीर हनुमान, भीष्म पितामह, जगद् गुरु शंकराचार्य और आधुनिक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द आदि को। ये वे महा पुरुष थे जिन्होंने जीवन भर का ब्रह्मचर्य व्रत निभाया। आयु भर ब्रह्मचर्य पालक केवल पुरुष ही हुए हों। ऐसी बात नहीं प्राचीन समय की अनेक माताओं में भी सुलभा माता व दुर्गा माता जैसी माताएं हैं जिन्होंने अपनी योग्यता के अनुरूप भर्ता न मिलने के कारण आजन्म कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। और संसार के लिए एक आदर्श उपस्थित किया :—

साहं तस्मिन् कुले जाता
भर्त्रतिरिक्ते ...।
विनीता मोक्ष धर्मेषु चराम्येका
मुनिव्रता ॥ (सुलभा)

यो मा जयति संग्रामे यो मे दर्प
विमोहति।
यो मे समबलो लोके सो मे भर्ता
भविष्यति ॥ (दुर्गा)

इसके अतिरिक्त ऐसे भी महापुरुष हुए जिन्होंने गृहस्थ में रहते हुए भी इस ब्रह्मचर्य व्रत का 14 वर्ष निरन्तर पालन किया, जैसे श्रीराम, श्री लक्ष्मण, श्री भरत, भगवती सीता और उर्मिला आदि ने वनवास के समय इस व्रत को निभाया। महाभारत काल में पांचों पाण्डवों और द्रोपदी ने 13 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का कठोरता से पालन किया। योगिराज भगवान् कृष्ण ने 12 वर्ष ... कठोर ब्रह्मचर्य ... को रुक्मणी सहित, विवाहोपरान्त जिस वीरता से पाला वह आर्य जाति के इतिहास में एक आदर्श और अद्भुत उदाहरण उपस्थित करता है।

पूर्वज आचार्यों का विश्वास था कि ब्रह्मचर्य व्रत धारण के अनेक महान लाभ हैं। जैसा कि महर्षि पतञ्जलि जी ने कहा है कि —

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः

नियमानुसार ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से वीर्य शक्ति का लाभ होता है। इसी प्रकार आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि जी ने कहा कि —

मृत्युर्व्याधिजरानाशं पीयूष
परमौषधम्।
ब्रह्मचर्य महद्रत्नं सत्यमेव
वदाम्यहम् ॥

मृत्यु, रोग और बुढ़ापा आदि के प्रभाव को नाश करने वाला अमृत के तुल्य लाभ पहुंचाने वाला ब्रह्मचर्य ही एक मात्र अव्यय औषध है, जिसका निरन्तर पान करना चाहिए। सचमुच जैसे समुद्र पार करने का साधन नाव है वैसे ही संसार सागर से तराने वाला यह ब्रह्मचर्य व्रतानुष्ठान है।

ब्रह्मचर्य रक्षा के साधन—

1—प्रात ब्रह्ममुहूर्त में जगने का स्वभाव बनाना।

2—शौच, दन्तधावन, स्नान और व्यायाम करना।

3—सन्ध्या, पञ्च चिन्तन व आत्म-निरीक्षण सदा करना।

4—सत्सङ्ग और उत्तमोत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय नित्य करना।

5—कभी भी अपने आपको दीन, हीन व तुच्छ न समझना।

6—सदा सात्विक आहार का सेवन करना।

7—सभी प्रकार के मादक द्रव्यों का बहिष्कार करना।

8—गन्दे गाने, गन्दे चित्र और गन्दे उपन्यासों का भी बहिष्कार करना।

9—आत्म विश्वास और ईश्वर-विश्वास के भाव को सदा जागृत रखना।

10—सदा लंगोट बांध कर रहना।

ब्रह्मचर्य व्रतानुष्ठान का चमत्कार

ब्रह्मचर्य का मर्म, आत्मा और जीवन पर कैसा चमत्कार पूर्ण प्रभाव पड़ता है, यदि यह देखना हो तो ... महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन को देखो, लिखा है कि—

एक बार अनूपशहर में विपक्षियों ने महर्षि जी के ब्रह्मचर्य व्रत को भंग करने के लिए एक वेश्या को आभूषण पहना कर उनके निवास स्थान पर भेजा। महर्षि उस समय समाधिस्थ थे, आपका मुख मण्डल ब्रह्मतेज से देदीप्यमान हो रहा था, जिसे देखते ही वेश्या के हृदय का कलुषित भाव जाता रहा और वह कांप उठी कि—"ऐसे महात्मा को कलंकित करने का विचार भी मन में लाना महापाप है" ऐसा सोच कर इतनी दुःखी हुई कि क्षमा-याचना बिना उसे शान्ति न हुई। जब उसने महर्षि जी के पांव पर क्षमा मांगते समय सिर धरा। उनकी समाधि खुल गई। अपने सम्मुख एक सुन्दरी देवी को देखते ही कहा कि—"हे मात तू इस निर्जन स्थान पर अकेली कैसे ?" अहह ! इस 'माता' शब्द में भी एक अभूतपूर्व आकर्षण था। वेश्या ने आज से पूर्व अपने लिये ऐसा माधुर्य पूर्ण 'माता' शब्द किसी अन्य से न सुना था। अतः उसने सजल नेत्र होकर बार-बार अपने अपराधों को सुनाते हुए क्षमा मांगी, और भविष्य में अपने जीवन को पवित्रता से बिताने का व्रत लिया। वेद कहता है कि—

अग्निना अग्निः समिध्यते।

आग से आग जलती है जीवन से जीवन बनता है। भला बिना ब्रह्मचर्य व्रतानुष्ठान के ऐसी महर्षि जीवन ज्योति क्या जीवन में आ सकती है ? कदापि नहीं। इसी के प्रभाव से महर्षि दयानन्द जी ने इसी ब्रह्मचर्य व्रत के बल पर विपक्षियों का मान मर्दन कर वेद की विशुद्ध विचारधारा को प्रवाहित किया। प्राचीन ऋषि-मुनियों की मर्यादा को सुरक्षित किया। पोप-पाखण्ड और भ्रम को मिटा कर पुनः ईश्वरीय ज्ञान वेद और उसके धर्म का पुनरुद्धार किया। इसी प्रकार आशा है। आप लोग भी इस उत्तम व्रत को धारण कर अपने जीवनों को प्रकाशित करेंगे और जीवन लक्ष्य की ओर प्रवृत्त होकर इसी व्रत द्वारा अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध करेंगे। शेष बातें फिर पुनः किसी अवसर पर प्रकाश डाला जायेगा अब मैं आप का धन्यवाद करता हुआ अपने इस वक्तव्य को समाप्त करता हूं।

[illegible] आर्य समाज [illegible] महानन्द [illegible] की [illegible]

श्री सुरेन्द्र [illegible] आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर तथा कु. [illegible] का विवाह [illegible] में बिना दहेज के वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर [illegible] श्री सुभाष [illegible], [illegible] प्रधान श्री सुभाष [illegible] श्री व डा. राधाराम की शर्मा एव वर व वधू के सम्बन्धी व मित्रगण उपस्थित थे। विवाह संस्कार प. हेम शास्त्री जी ने किया। इसके उपरान्त समाज की तरफ से वर वधू को आशीर्वाद दिया गया।

26 जनवरी 1988 का गणतन्त्र दिवस [illegible] की [illegible] उत्साह से मनाया गया।

इस उत्सव की अध्यक्षता श्री सुभाष [illegible] प्रधान, आर्य समाज बाजार, श्रद्धानन्द अमृतसर व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की है। इस अवसर पर नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

[illegible] आर्य के [illegible] प्रधान [illegible] की [illegible] के राष्ट्रीय [illegible] के [illegible] की [illegible] स्कूल के [illegible] महाविद्यालय की छात्राओं ने [illegible] के गीत [illegible] कविताएं पेश किए। इसके अतिरिक्त [illegible] कुमार त्रिपाठी, छात्र डी ए वी स्कूल अमृतसर ने 26 जनवरी के महत्व व स्वतन्त्रता के पिछले इतिहास बारे भाषण दिया। डा राधाराम जी शर्मा ने छात्रों के व स्कूल, कालेज [illegible] सेवा व [illegible] कार्यक्रम [illegible] की [illegible] भूरि-भूरि प्रशंसा की और [illegible] के लिए प्रेरित किया।

प्रधान जी ने छात्राओं को सबला बनने के [illegible] सबला व पंजाब की वर्तमान परिस्थिति में वीरांगना बनने के लिए प्रेरणा दी।

—वीरेन्द्र देवगण

"नारी जागरण-दिवस"

आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर की अन्तरंग सभा की बैठक 3-1-88 में पारित [illegible] 24-1-88 को आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी के साप्ताहिक रविवार के सत्संग में "नारी जागरण-दिवस" बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया। सभी आर्य समाज के अधिकारी व सदस्य गण तथा इस समाज की युवक सभा एवं स्त्री समाज की सदस्याएं काफी संख्या में उपस्थित थीं। श्री द्वारकानाथ शर्मा प्रधान जी ने सती-प्रथा के विरुद्ध और दहेज प्रथा सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त करते हुए आर्य समाज के दृष्टिकोण को जनता के समक्ष रखा।

प्रतिदिन नारी पर हो रहे अत्याचार, हत्यादि व हत्याएं व दहेज के नाम पर विवाहित लड़कियों को जलाना, वर की इच्छा के अनुसार दहेज न मिलने पर या कोई अन्य बहाना करके विवाह विच्छेद करके नया विवाह रचा लेना इत्यादि समाज के लिए एक कलंक है। ये कुप्रथा अवश्य बन्द होनी चाहिए।

—द्वारकानाथ-प्रधान

एक सौ साठ ईसाई वैदिक धर्म में

उड़ीसा का [illegible] पहाड़ों से घिरा हुआ है। अतः यहां के आदिवासियों का बाहर से सम्पर्क कम होने के कारण आज भी अपनी पुरानी परम्परा में दृढ़ विश्वास है। ये कृषि जाति के आदिवासी अत्यन्त भोले भाले एवं सरल हैं, इनकी इसी सरलता का लाभ उठा कर ईसाई मिशनरियों ने अपना [illegible] है [illegible] क्षेत्र में इस वर्ष वर्ष से शास्त्रार्थ थे, परन्तु स्थानीय लोगों के सहयोग पर [illegible] सफलता मिली। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रेरणा देने पर 160 से अधिक [illegible] ने समारोह के साथ मकर संक्रान्ति के पवित्र पर्व पर यज्ञ कुण्ड की [illegible] अग्नि में आहुति देकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

संस्कार श्री प [illegible] शास्त्री एवं सुभाष शास्त्री ने कराया। इस कार्य में श्री नारायण प्रधान व श्री [illegible] ने सहयोग दिया। समारोह का सारा कार्य क्रम श्री स्वामी [illegible] जी प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की देख-रेख में हुआ।

—[illegible] शास्त्री

अम्बाला छावनी में ऋषि मेला

वैदिक प्रचार मण्डल, 72वी [illegible] अम्बाला की ओर से दिनांक 16-2-88 को दोपहर 2 बजे [illegible] (महर्षि [illegible]) में ऋषि बोध उत्सव मनाया गया। [illegible] एम.ए. ([illegible]) [illegible] [illegible] की [illegible] हुई।

—[illegible]

(4 पृष्ठ का शेष)

यदि विश्व [illegible] में 5 वर्ष परीक्षण का अवसर प्राप्त हो तो इसमें सफलता प्राप्त हो सकती है। पृथिवी के तत्वों में जो विपरीत क्रिया विघटनात्मक प्रारम्भ हो गई है उस क्रिया के प्रति विपरीत रूप में क्रिया करने से मरु भूमि में अनुकूल परिवर्तन होने लगेंगे।

(5) यज्ञ द्वारा राष्ट्र की खनिज सम्पदा की भी वृद्धि हो सकती है। पृथिवी में खनिज पदार्थों का समूह पृथिवी के अतिरिक्त अन्तरिक्ष व द्युलोक में स्थित इनकी सूक्ष्म स्थितियों के कारण भी होता है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक के पदार्थों का सूक्ष्म एवं बीजात्मक अंश विविध प्रकार की वनस्पतियों में भी केन्द्रित होता रहता है, इस प्रकार विशिष्ट तत्वों से प्रधान रूप से युक्त औषधि [illegible] के यज्ञ के द्वारा उनके धूम के अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी में प्रसारित होने से उन उन प्रकार की खानों में उसी प्रकार के खनिज द्रव्यों के सूक्ष्म अंश को स्थूल रूप में अपने केन्द्र के साथ संगृहीत होने में सहायता होती है और खनिज द्रव्यों में उन्हीं उन्हीं पदार्थों की वृद्धि हो सकती है, यदि प्रत्येक धातु अभी द्रव रूप में और [illegible] रूप में भी परिणत की जा सकती है तो कभी वह द्रव्य [illegible] एवं [illegible] रूप में थी [illegible] और अब भी वह इन रूपों में आनुपातिक मात्रा में पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक में विद्यमान है, जहां उसकी अधिकता पृथ्वी में होती है तो कभी उसकी अधिकता अन्तरिक्ष तथा द्युलोक में हो जाती है, यज्ञ प्रक्रिया द्वारा उसका आकर्षण पृथ्वी में सम्भव होने से खानों में खनिज पदार्थों की वृद्धि सम्भव है।

यज्ञ-विज्ञान के उपयोग द्वारा उपरोक्त प्रकार से जहां स्थूल जगत् में परिवर्तन किए जा सकते हैं वहां विश्व के मानसिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में भी परिवर्तन किये जा सकते हैं।

(6) यज्ञ द्वारा विश्व के मानव क्षेत्र में शान्ति, प्रेम, आस्तिकता, बन्धुत्व, अनुशासन आदि की भावनाओं को जागरित किया जा सकता है और सुबुद्धि तथा सत्कर्मों की वृद्धि की जा सकती है।

इसी प्रकार के अनेक कार्य यज्ञ-विज्ञान से सम्पन्न हो सकते हैं तभी भूमण्डल में वेद प्रचार होगा ही सकेगा, हमने यज्ञ द्वारा वृष्टि कराने, वृष्टि रोकने रोग दूर करने, आरोग्यता प्रदान करने, बुद्धि की वृद्धि सम्पादन करने, सन्तान वृद्धि, वायुमण्डल के [illegible] आदि में लाभ होते देखा है, यदि और भी अधिक परीक्षण करने का अवसर और [illegible] सहयोग प्राप्त हुआ तो यज्ञ-विज्ञान के अनेक कार्यों में सफलता से विज्ञान को [illegible] करने में हम समर्थ हो सकेंगे।

महर्षि दयानन्द के प्रति—

[illegible]

[illegible] से मिटाने, [illegible]

[illegible] सोई हुई दुनिया को जगाया तूने।

[illegible] में [illegible] का सन्देश, [illegible]

[illegible] को [illegible] तूने ॥

[illegible] हैं [illegible] हम,

[illegible] के [illegible] हैं [illegible] हैं हम ॥

ऐ स्वामी [illegible] क्या है [illegible],

[illegible] है, [illegible] है, [illegible] है हम ॥

[illegible] न [illegible],

[illegible] को गुलामी के न [illegible] पाता।

[illegible] की [illegible],

[illegible] न होने पाता ॥

[illegible] को [illegible] है [illegible],

[illegible] हो तो गाये दयानन्द।

[illegible] हो तो [illegible] दयानन्द,

[illegible] की [illegible] हो तो गाये दयानन्द।

[illegible] की भारत के लिए है नहीं [illegible],

जो गाये दयानन्द [illegible] नहीं सकता।

([illegible] के [illegible] की [illegible] से) [illegible]

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज फोकल प्वाईन्ट शुद्धि माना जिसकी स्थापना माननीय श्री ... जी मु ... उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा 1978 में की गई थी।

यथा शक्ति दैनिक प्रात ... का साथ ... जाता है इस समाज का वार्षिक चुनाव रविवार 10 जनवरी 1988 को ... सर्व सम्मति से ... जी टुटेजा को प्रधान ... नियुक्त किया गया तथा इस संस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए इन्ही को अधिकार दिया गया।

1 श्री शिवदयाल जी टुटेजा प्रधान
2 श्री प्रेम कुमार कोहली-उपप्रधान
3 श्री पातञ्ज देव गुप्ता उपप्रधान
4 श्री बलदेव राज मन्त्री
5 श्री आनन्द कुमार उपमन्त्री
6 श्री पदमदत्त मठपाल उपमन्त्री
7 श्री सत्य प्रकाश जी प्रचार मन्त्री
8 श्री केदारनाथ भाटिया कोषाध्यक्ष
9 श्री जग नाथ तनवाड पुस्तकालयाध्यक्ष
10 भवन निर्माण अधिष्ठाता
श्री अशोक कुमार ...

प्रथम स्मृति दिवस

महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर) ... मोहल्ला जालन्धर में मठ के संस्थापक स्वामी सत्यानन्द जी का प्रथम स्मृति दिवस रविवार 24 1 88 को बड़े उत्साह से मनाया गया। दोपहर 2 बजे हवन यज्ञ तथा भजनो के पश्चात् 3 बजे श्री शिव मुनि वानप्रस्थी के कर कमलो से 'स्वामी सत्यानन्द पुस्तकालय व वाचनालय' का नवीन भवन मे उद्घाटन किया गया। उसे 4 30 बजे तक श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में भिन्न 2 विद्वानो ने स्वामी सत्यानन्द जी की समाज और राष्ट्र के लिए की गई सेवाओ का स्मरण करते हुए उन को श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। तत्पश्चात् प्रसाद व जलपान से श्रोताओ का सत्कार करते हुए समारोह समाप्त हुआ।

—शालिग्राम पराशर

अन्तरंग सदस्य

11 श्री ... जी शर्मा, श्री हरि मित्र मेहरा श्री श्यामदत्त जी जोशी एम सी ... श्री ईश्वर दास जी गुप्ता।

—बलदेवराज मन्त्री

शोक समाचार

... आर्य वानप्रस्थ आश्रम (...) बठिण्डा के कार्यकर्ता श्री ... जी रामामण्डी वालों के निधन पर आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा में शोक सभा द्वारा शोक प्रकट किया गया—श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी ने उनकी सेवाओं का वर्णन करते हुए बताया कि वह 1939 ई. के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह मे 20 वर्ष की भरी जवानी में अपने विवाह के कुछ दिन बाद ही जेल चले गए फिर 1957 ई. में हिन्दी सत्याग्रह में जेल गए। आप आर्य समाज रामामण्डी एव स्वामी स्वतन्त्रानन्द आर्य हाई स्कूल रामामण्डी के प्रधान भी रहे। जब से यह वानप्रस्थ आश्रम आरम्भ हुआ है तभी से यहां आश्रम में रह कर कार्यकर्ता के रूप में सेवा कर रहे थे। पिछले दिसम्बर मास में अपने पुत्र के पास (विजय कुमार बांसल के पास) चण्डीगढ़ गए और वापिस न आ पाए। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उन के परिवार को धैर्य एव शान्ति प्रदान करें।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

शुद्धि समाचार

26-1-88 को ग्राम बरकट्टा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में ग्राम बरकट्टा थाना पत्थलगांव जिला रायगढ़ मध्य प्रदेश मे शुद्धि का कार्य यज्ञ हवन के पश्चात यज्ञोपवीत धारण कराया गया। श्री उपमन्यु शास्त्री ने शुद्धि संस्कार कराया। पूरी कार्यवाही वेदानन्द सरस्वती महामन्त्री, हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा कार्यालय आर्य समाज मन्दिर समालखा जिला करनाल के प्रयत्नो द्वारा किया गया। उरांव जाति के 125 स्त्री, पुरुषो को जो ईसाई बन गये थे उनको पुन अपनी स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म ( ) ग्रहण किया और वेदानन्द स्वामी ने कपड़ा वितरित किया। इस कार्य में उपदेशक श्री वेदपाल आर्य हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा का देव आर्य, ... देव आर्य, मनीराम आर्य, मन्त्री बरकट्टा, भी वहां उपस्थित थे।

—रामकिशोर आर्य

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगवीन्द्र प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. p.b/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 47, 16 फाल्गुन सम्वत् 2044 तदानुसार 28 फरवरी 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

जीवन में वायु का महत्व

लेखक—श्री धर्मेन्द्र कुमार जी

वेद में विज्ञान का भाव बहुत है। अध्यात्म उपदेश के साथ-साथ वेद-मन्त्रो में विज्ञान की बातों का भी वर्णन हुआ है। वायु के सम्बन्ध मे वेद से क्या शिक्षाएं प्राप्त होती है और उससे मनुष्य को क्या-क्या लाभ हो सकता है, इस लेख में इसी विषय पर वार्ता है। वेद कहता है—

उत वात पितासि न उत भ्रातोत
नः सखा ।
स नो जीवा तवे कृधि ॥
(ऋग्वेद 10।186।2)

हे वायु ! तू हमारा पिता, भ्राता, सखा और मित्र है। इसलिए हमारे दीर्घायु के लिए हमे जीवन प्रदान कर।

वायु के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है। हमे वायु के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इस विषय का बोध कराने के लिए उक्त मन्त्र मे वायु को हमारा पिता, भ्राता और सखा कहा है। अपना पिता, भ्राता और सखा जो होता है उसे प्रसन्न रखने के लिए सब तत्पर रहते हैं, जब वायु प्रसन्न अर्थात् शुद्ध परिचय रहता है तो उससे हमारे प्राणों की रक्षा होती है। यह प्रथम ज्ञान इस मन्त्र द्वारा हमें प्राप्त होता है।

वायु हमारा पिता है। वायु हमारा रक्षक है। जो रक्षक होता है, वही पिता होता है। प्राण के द्वारा वायु हमारी रक्षा करता है। वायु के न मिलने से हमारा एक क्षण भी जीवित रहना सम्भव नही। जिस प्रकार पिता के बिना पुत्र नहीं रह सकता, उसी प्रकार प्राण वायु के बिना हम नहीं रह सकते।

वायु हमारा भ्राता है। पोषण करने वाले को भ्राता कहते हैं। शरीर को पोषण (पुष्ट), स्वस्थ, बलयुक्त और शक्तिशाली बनाने का गुण वायु मे है, इसलिए वायु को भ्राता अर्थात् पोषण करने वाला कहा है। शुद्ध वायु शरीर स्वस्थ रखता है। शरीर के विकार को दूर करके स्वास्थ्य प्रदान करता है, इस लिए वायु को शरीर का सखा व मित्र भी कहा है।

इस विचार (दृष्टिकोण) को ध्यान में रखने से पता लगता है कि वायु मनुष्यो का जैसा पिता है, वैसा ही भ्राता और सखा भी है। इसके बिना हमारा (प्राणियो) का जीना दुर्लभ है, असम्भव है। इस वैदिक आदर्श को सामने रख कर मनुष्य को स्वस्ति पथ का अनुगामी होना चाहिए।

वायु में अमृत—

यददो वात ते गृहे ऽ मृतस्य
निधिर्हितः ।
ततो नो धेहि जीवसे ॥
(ऋग्वेद 10।186।3)

हे वायु ! तुम्हारे गृह मे जो अमृत का भण्डार है, उससे हमारे हित के लिए हमारे आयु को दीर्घायु प्रदान करो।

वायु मे अमृत है, जिससे मनुष्य दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं। सभी मनुष्य चाहते हैं कि वे दीर्घायु हो। कोई यह नही चाहता कि उसका आयु कम हो। आयु के बढाने की इच्छा सब के मन मे रहती है। इसलिए वे नित्य-प्रातः साय आयुदाता परमेश्वर से अपने दीर्घायु के लिये प्रार्थना करते हैं :—

आयुर्देता वर्चसे च बलाय च ।
(अथर्व 19।26।3)

मन्त्र में कहा गया है कि वायु के पास जो अमृत है, उससे आयु बढता है। इसलिए दीर्घायु चाहने वालो को चाहिए कि वे वायु अमृत का सेवन करें। क्योंकि जो वायु हमारे चारो ओर बह रहा है उसमें कई वस्तुएं हैं, जिनमें अमृत भी एक वस्तु है। प्राणवायु अर्थात् आक्सीजन वही वायु मे अमृत है। शुद्ध वायु के अन्दर वह विद्यमान रहता है। दूषित वायु मे अमृत नही होता। पर्वतीय स्थानो नदी और सागर के तटो, वनो तथा बगीचों में वायु शुद्ध रहता है, उसको यह अमृत प्राप्त होता है। अमृतमय वायु से ही आयु बढ़ता है।

वायु के जीवन का उपाय—

आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भो यथा
वशं चरति देव एषः ।
घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपं तस्मै
वाताय हविषा विधेम ॥
(ऋग्वेद 10।168।4)

वायु इन्द्रियो का आत्मा जीवन (आत्मा) है। यही प्राणियो का आधार है। वायु देव अपनी इच्छानुसार फिरता रहता है। उसके चलने का शब्द हम सुनते हैं, परन्तु उसका रूप (आकृति-शक्ल) नही देख सकते। उस वायु (अमृतमय वायु) के प्राप्ति के लिए हम (सुगन्धित द्रव्यो द्वारा) यज्ञ मे आहुति देते हैं।

इस मन्त्र मे अनेक बातो का उपदेश किया गया है। जिस प्रकार शरीर मे जीवात्मा है, उसी प्रकार इन्द्रियो के लिए वायु है। वायु से ही इन्द्रियो मे कार्य करने की क्षमता उत्पन्न होती है। इसलिए सब इन्द्रियो को स्वस्थ रखने के लिए शुद्ध वायु का होना आवश्यक है। मन्त्र मे वायु को आत्मा से उपमा दी गई है। इस उपदेश के साथ जहा वायु को निराकार अर्थात् न रूप बताया है, वहा ईश्वर का भी कोई रूप व आकृति नही है। जैसे वायु के होने का इन्द्रिय (त्वचा) द्वारा ज्ञान होता है, वैसे ही ईश्वर के होने का आत्मा (हृदय) मे ज्ञान (अनुभव) होता है। जैसे प्रतीक मे वायु के दर्शन नही होते, वैसे ही प्रतीक मे परमात्मा के दर्शन भी नही होते, क्योकि प्रतीक परमात्मा नहीं है। मन्त्र मे गर्भो और देव पद से ईश्वर, आत्मा से जीवात्मा और वाताय पद से प्रकृति, इन तीनो अनादि सत्ता के पृथक्-पृथक् होने का ज्ञान और उपदेश भी हुआ है। यही इस मन्त्र का सार है।

वायु के कार्य—

वायु से आयु बढता है। शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ होता है। इस विषय का वर्णन ऊपर हो चुका है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि वायु इन सब कार्यों को किस प्रकार कर सकता है। इसका उत्तर अगले मन्त्र में दिया गया है। वेद कहता है—

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयो
भुर्नो हृदे ।
प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥
(ऋग्वेद 10।186।1)

वायु के द्वारा औषध बहता हुआ आता है, वायु सबका कल्याण कर्ता, सुख देने वाला, और हृदय का साधन करने वाला है। ऐसे वायु से हमारे प्राण (आयु) दीर्घ होवे।

इस मन्त्र मे वायु का हमारे स्वास्थ्य से क्या सम्बन्ध है, अच्छी तरह वर्णन है। मन्त्र का प्रथम भाग यह है कि औषध वायु के द्वारा बहता हुआ आता है। वायु जिस समय बहता, उस समय अपने साथ अच्छी या बुरी गन्ध को लाता है। वायु के चलने के समय वह अपने पृथिवी के कणो को उड़ा ले जाता है। जिस समय दुर्गन्ध वाली वस्तुओ के ऊपर से वायु होकर चलता है, उस समय दुर्गन्धमय हो जाता है। ऐसे ही जिस समय वायु वनो, वृक्षो, जगलो, फूलो और औषध के ऊपर से होकर बहता है, उस समय वह बड़ा सुगन्धित और आनन्ददायक प्रतीत होता है। इससे सिद्ध होता है कि वायु अपने साथ कई पदार्थों को लाता है। जिस समय वह औषधियों के ऊपर से होकर बहता है या यज्ञ के होम पर से होकर बहता है, उस समय वायु बड़ा शुद्धि युक्त होता है। यही उपदेश इस मन्त्र मे है। जो वायु जगलो, वनों, जड़ी-बूटियों आदि के ऊपर से बहता हुआ आता है, उसका सेवन करना चाहिए। प्रातः-साय ऐसे स्थानों का भ्रमण करना चाहिए। मन्त्र के दूसरे भाग मे वायु को शम्भू अर्थात् कल्याण करने और सुखी करने वाला कहा है। यही कल्याणमय वायु हमारे हृदय को आनन्द देने वाला है। मनुष्यो को चाहिए कि हमारे ऋषियो और आचार्यों ने वनो मे जो गुरुकुल स्थापित किए हैं उनमे अपने बच्चो को शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजें, जिससे वनों और होम का शुद्ध वायु मिल सके। वे स्वस्थ और बलिष्ठ हो सकें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य समाज-नई भूमिका और कार्यक्रम की ओर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

लेखक—श्री कैलाश सत्यार्थी 7, जंतर मन्तर रोड, नई दिल्ली—1

सती प्रथा और नारी उत्पीड़न के विरुद्ध स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे की गई दिल्ली—देवराला पदयात्रा ने जहां देश भर में इन मुद्दो पर एक सार्थक बहस को जन्म दिया, वहीं आर्य समाज के अन्दर भी भारी हलचल पैदा हो गई। अपनी स्थापना के लगभग एक सौ बारह साल में भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र मे बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

किन्तु पिछले कुछ वर्षों से ऐसा नजर आने लगा था कि आर्य समाज की वह अग्नि कुछ शिथिल पड़ रही है। दिल्ली, देवराला पद यात्रा की एक बड़ी उपलब्धि आर्य समाज की आन्तरिक ऊर्जा को पुनर्जागरण और एकीकरण की प्रक्रिया की शुरूआत है। पद यात्रा के दौरान देश भर के आर्य समाजियो मे उत्साह का संचार देख कर स्वामी अग्निवेश ने आर्य समाज की वर्तमान स्थितियो के मूल्यांकन, देश की वर्तमान सन्दर्भो मे उसकी भूमिका और भावी कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार करने के उद्देश्य से 24,25,26 जनवरी 1988 को नई दिल्ली मे एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आमंत्रित की। इसमे लगभग 50 महत्वपूर्ण व्यक्तियो ने हिस्सा लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चौधरी छोटू सिंह, मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री जगदीश प्रसाद वैदिक, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यदेव भारद्वाज, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रधान आचार्य जयवीर, आर्य वीर दल जोधपुर के संचालक श्री रामसिंह, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रधान श्री धर्मवीर, आदि पदाधिकारियो के अतिरिक्त देश के सुप्रसिद्ध विचारक पण्डित क्षितीश वेदालंकार, डा धीरेन्द्र शर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय वेद परिषद् के अध्यक्ष श्री सत्यानन्द आर्य, आर्य प्रान्तीय महिला सभा दिल्ली की उप-प्रधाना माता शकुन्तला आर्या, आदि ने संगोष्ठी मे हिस्सा लिया। ये प्रतिनिधि दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रान्तो का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

पदयात्रा मूल्यांकन

संगोष्ठी अलग-अलग विषयो के अनुसार छः सत्रो मे रखी गई। पहले सत्र की बहस मे पद यात्रा का मूल्यांकन और उससे उभरे मुद्दो पर व्यापक चर्चा हुई। प्रतिनिधियो का मानना था कि पिछली कई शताब्दियों के बाद आर्य समाज ने अपनी स्वाभाविक आन्दोलनकारी छवि का परिचय इस पदयात्रा के माध्यम से दिया है। और इसमे आर्य समाज के इतर व्यक्तियो एवं संगठनो का भरपूर सहयोग व समर्थन एक बड़ी उपलब्धि है। इसकी सफलता मे सही समय पर सही मुद्दे की पहचान सबल नेतृत्व जन संचार माध्यमो का समर्थन धर्म रक्षा समिति द्वारा किया गया विरोध, उच्च न्यायालय का हस्तक्षेप और पुरी के शंकराचार्य द्वारा सती प्रथा का समर्थन व नारी जाति के विरुद्ध की गई अपमान जनक टिप्पणियां प्रमुख बिन्दु हैं।

सामान्य तौर पर संगठित (मतमजहबों) की भूमिका नारी की शुरू से दोयम दर्जे का प्राणी साबित करने की रही है। ऐसे मे नारी उत्पीड़न विरोधी अभियान की इस पहल ने आर्य समाज की नई पहचान देश मे बनाई है। दूसरा आर्य समाज के अन्दर आन्तरिक समीकरणों मे भी नये सिरे से बदलाव आया है। स्वामी अग्निवेश द्वारा लगभग 10 वर्ष से आर्य समाज के कार्यक्रमो को प्राथमिकता न देने से देश भर के आर्य युवको और प्रगतिशील आर्य समाजियो मे छाई निराशा इस पद यात्रा से दूर हुई। और इससे भी ज्यादा उत्साहवर्धक बात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध एवं दूसरे वरिष्ठ आर्य समाजी सन्यासियो और नेताओ का खुले दिल से उन्हें दिया गया सहयोग और समर्थन है। कई सालो बाद आर्य समाज के सभी प्रभावशाली नेता और गुट पदयात्रा कार्यक्रम मे एक मंच पर शामिल होते दिख रहे हैं।

कुछ प्रतिनिधियो की राय थी कि राजस्थान सरकार द्वारा पदयात्रा को साबी नदी के तट पर रोक दिये जाने एवं निहत्थे पद यात्रियो यहां तक कि स्त्री और बच्चो पर भी लाठी चार्ज किए जाने के बाद घटना क्रम से हुये आत्म आलोचना भी करनी चाहिए। उसका कहना था कि यदि किसी अन्य मत का, मजहब की पदयात्रा, भी ऐसी कायरतापूर्ण निर्मम और अवैध कार्यवाही से रोकी तो निश्चय ही उसकी प्रतिक्रिया में दूर-दूर से हजारो उसके मतावलम्बी घटना स्थल पर पहुंच जाते। ठीक दिन तक कड़कड़ाती सर्दी में खुले मैदान में नदी के किनारे पड़े पदयात्रियों, बच्चों, स्त्रियों और वृद्ध सन्यासियों के समाचार अखबारो के माध्यम से देश भर में पहुंचते रहे। परन्तु आर्य समाजियों का बड़ी संख्या में वहां न पहुंचना हमारी संगठनात्मक शिथिलता दर्शाता है। सभी प्रतिनिधि इस बात पर सहमत थे कि पदयात्रा से नारी जागरण का एक मुद्दा उभर कर सामने आया है।

आन्दोलनकारी कार्यक्रम बने—

दूसरे सत्र में कुछ चुने हुए राष्ट्रीय मुद्दो पर आर्य समाज को गतिशील बना कर व्यापक आन्दोलन का कार्यक्रम तय करने पर चर्चा हुई। देश के सामने उठ रही ज्वलन्त समस्याओं पर प्रतिनिधियो ने अपने विचार रखे। इन में धार्मिक उन्माद और विदेशी सांठ-गांठ के जरिये तेजी से फैल रहा आतंकवाद और अलगाववाद, धार्मिक प्रतीको की आड़ में फैलाया जा रहा साम्प्रदायिकता का जहर, अंग्रेजी भाषा, रहन-सहन, सोच और संस्कृति का लगातार बढ़ रहा दबदबा, वोटो की राजनीति से मजबूत होता जातिवाद, दहेज, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड आर्थिक विषमता व शोषणवाद एवं सभी स्तरो पर चारित्रिक पतन आदि मुद्दे बहस के दौरान उभरे। प्रतिनिधि इस बात पर एकमत थे कि इन महत्वपूर्ण सवालों और स्थानीय स्तर पर इनसे जुड़ी घटनाओं पर आर्य समाज को मूक दर्शक नहीं बना रहना चाहिए। बल्कि अपनी सक्रिय प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए।

व्यापक अभियान के लिए आर्य समाज कौन सा मुद्दा चुने? इस पर कई घण्टे की बहस के बाद प्रतिनिधियों की आम राय बनी कि बहुत सी बातें एक साथ ले लेने पर अभियान में तेजस्विता एवं निरन्तरता नहीं रह पाती, इसलिए फिलहाल एक ही केन्द्रीय विचार रख कर कार्यक्रम बने। नर,नारी समता की स्थापना का अभियान हाथ में लिया जा सकता है। वेदों और अन्य आर्ष ग्रन्थो में शिक्षा, व्यवस्था, उत्पादन, व्यापार, और समाज सेवा से जुड़े तमाम कामों में स्त्री-पुरुष की सहभागिता का सन्देश मौजूद है। इसे आर्य समाज की शिथिलता ही माना जाए कि नारी उत्पीड़न की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। दूसरी ओर पश्चिम में संगठित ईसाई चर्च द्वारा स्त्री जाति के लगातार अपमान की प्रतिक्रिया में पैदा हुआ नारी मुक्ति आन्दोलन हमारे देश की अंग्रेजीदां-अमीर हो वर्ग तक सीमित है। कुछ विश्वविद्यालयी महिला संगठन महानगरों में ठीक इस तरह से—पश्चिमी पढ़ाई-लिखाई के भारतीय नारी की समस्याओं पर इस थोप रहे हैं। इसके अलावा है, व्यावहारिक विचार, समीक्षा, अनुशासनहीनता और वर्तमान युवा-प्रधान सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में नारी उत्पीड़न ही इसकी वास्तविक परिणति है। ऐसे में हमारी संस्कृति के उज्ज्वलतम समतामूलक मूल्यों को ठीक-ठीक पहचान करके इन्हें आधार बनाकर नारी, समता का अभियान चलाया जाए।

कार्यक्रम पर अमल कैसे हो

कार्यक्रम क्रियान्वयन पर तीसरे सत्र मे चर्चा की गई। इसमें कई कार्यक्रम निकले। जैसे महानगरो और शहरो में चिकित्सकों द्वारा एम्नीयोसेंटेसिस द्वारे लिंग परीक्षण करके करायी जाने वाली बालिका भ्रूण हत्याएं करने वाले चिकित्सको के यहां प्रदर्शन व जुलूस आदि आयोजित किये जाएंगे। दहेज प्रताड़ना और दहेज हत्याओं के विरुद्ध जनमत बनाने एवं दोषियो को अपमानित करने व दण्डित कराने के लिए भी ये आयोजन किए जाएंगे। इन का क्रियान्वयन महिला आर्य समाजो की अगुवाई मे युवक संगठन मिल कर करें। दिल्ली में इस तरह की दहेज विरोधी समिति को विधिवत गठन करने और प्रभावी बनाने की जिम्मेदारी कुछ प्रतिनिधियों ने ली। अश्लील पोस्टर, कैबरे, वेश्यालयों आदि के द्वारा नारी गरिमा के शर्मनाक अपमान के विरुद्ध आर्य समाज के कार्यकर्ता अपने-अपने स्तर पर अपने साधनों और सामर्थ्य से इसका विरोध करेंगे।

जात-पात को तोड़ कर सामूहिक विवाह कराने तथा मुख्य रूप से विधवाओं के विवाह कराने का बीड़ा आर्य समाज स्वयं सिर पर उठायेगा। देश भर में फैली आर्य समाज की शाखाएं और संस्थाएं अपने वार्षिकोत्सवो, सम्मेलनों और सामूहिक उत्सवो के अवसर पर इस कार्यक्रम को चला सकते हैं। नारी जागरण महा अभियान की शुरूआत के लिए आगामी 27 एवं 29 फरवरी 1988 को हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले में सिवराखाली गांव में एक विशाल नारी जागरण मेला एवं महा यज्ञ आयोजित करना तय किया गया। कम से कम पचास हजार ग्रामीण महिलाओं का यह मेला नारी शोषण से जुड़ी तमाम समस्याओं पर विचार करने और कार्यक्रम बनाने का काम भी करेगा। इसमें नर-नारी समता पर आधारित नाटक, फिल्मे प्रदर्शनियां आदि भी दिखाई जाएंगी। संगोष्ठी में उपस्थित अनेक सन्यासियो व प्रतिनिधियों ने मेले के प्रचार तथा आयोजनो के लिए अपना पूरा समय कुर्बान करने की घोषणा की। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

कुछ तो विचारिए

देश के बारे में, समाज के बारे में, धर्म के बारे में, राजनीति के बारे मे, सृष्टि के बारे मे, पृथ्वी के बारे में, आकाश के बारे मे, अन्तरिक्ष के बारे मे, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के बारे मे, जवानी के बारे मे, बुढापे के बारे मे, राजा और रंक के बारे मे, जीवन के बारे मे, शरीर के बारे मे, अपने बारे मे, अपने परिवार के बारे मे, परमात्मा के बारे मे, आतंकवाद के बारे मे, शान्ति के बारे मे, सबके विषय मे न सही कम से कम किसी के विषय मे तो विचारिए।

आज विचारशीलता समाप्त होती जा रही है। इसीलिए अशान्ति का बोलबाला हो रहा है, आतंकवाद सारे देश मे बढ रहा है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अशान्त होता जा रहा है। आज देश की आजादी खतरे मे पड रही है। कुछ स्वार्थी लोग विदेशी ताकतो के हाथो मे खेल रहे हैं। कुछ नौजवानो को गुमराह किया जा रहा है। वह भूल रहे हैं कि हमारा देश क्या है और इस देश के प्रति हमारा कर्त्तव्य क्या है। जिस देश की आजादी के लिए हमने अनेक अमूल्य जीवनों को वारा था। अनेको बलिदान दिए थे और गुलामी की जजीरो को तोड कर अंग्रेज को भारत की सीमा से बाहिर खदेडा था। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी ने मिल कर कार्य किया था। और अपना राज्य, स्वराज्य कायम किया था। देश ने एक अंगडाई ली थी और देश उन्नति की ओर अग्रसर हुआ था। परन्तु विदेशियो को भारत की उन्नति नही भाई और उन्होंने फूट के बीज बो कर हिन्दुओ से मुसलमानो को अलग करके भारत के टुकडे करवा कर पाकिस्तान की नींव रख दी थी परन्तु इसके साथ ही सिखो को भी खालिस्तान की माग के लिए उकसाया था। परन्तु समझदार नेताओ ने उस समय तो स्थिति को सम्भाल लिया था क्योंकि उस समय हमारे पास सरदार पटेल जैसा महान् नीतिज्ञ नेता था। परन्तु आज फिर खालिस्तान की माग जोर पकडने लगी है। विदेशो से हथियार भी आ रहे हैं। ट्रेनिंग भी मिल रही है और धन भी मिल रहा है। उधर जो मुसलमान भारत मे रह गए थे उन्हे फिर उकसाया जा रहा है। कही बगाल के अलग होने की, कहीं आसाम के अलग होने की और कहीं गोरखालैंड की माग हो रही है। और कुछ नौजवान विदेशी तथा राजनैतिक लोगो के चुगल मे फस कर बिना विचारे देश मे विघटनकारी कार्यों मे लग रहे हैं।

आज सामाजिक संगठन समाप्त हो रहा है समाज अन्दर से खोखला होता जा रहा है। देश का सामाजिक ढाचा आज चर-मरा रहा है। समाज मे विघटन पैदा हो रहा है परन्तु आज का नौजवान इस समाज की रक्षा व उन्नति के लिए कुछ भी तो विचार नहीं कर रहा। जबकि बिना सामाजिक उन्नति के देश को बचाया नही जा सकता।

आज धर्म के नाम पर फिर पाखण्ड आरम्भ हो गए हैं। लोग धर्म को व धर्म स्वरूप को जानते ही नहीं उन्हे पता ही नहीं धर्म किस चिडिया का नाम है। लोग धर्म को भूल गए हैं। सम्प्रदाय और मजहब के नाम पर अलग 2 समुदाय खडे हो गए हैं। धर्म को कोई नही जानता कि धर्म क्या है। लोगो ने मजहबो और सम्प्रदायो की दीवारें खडी कर दी हैं। जिससे एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय का वैरी बन गया है और इन्हे ही धर्म के नाम से पुकारने लगे हैं। इसलिए यह तथा कथित धर्म शान्ति का उपदेश देने के स्थान पर अशान्ति पैदा कर रहे हैं। इसी लिए एक मानव दूसरे मानव का शत्रु बनता जा रहा है। इस सब का कारण है धर्म के बारे न विचारना। मानव का स्वरूप बदल गया है। मानव, मानव न रह कर कोई अपने आपको हिन्दू कहलाता है तो कोई मुसलमान कहलाता है, कोई सिख कहलाता है तो कोई इसाई कहलाता है, इसके साथ अब तो इन्होंने अपने बाह्य चिन्ह भी बदल लिए हैं। किसी ने ...ो व बाल बढा लिए हैं, किसी ने कटवा लिए हैं, किसी ने मूछों के बीच से चोटी से बाल कटवा लिए हैं, दाढी बढा तिरछी बना ली है। किसी से पूछो कि तुम कौन हो तो कोई अपने आपको हिन्दू कहता है कोई सिख कहता है। कोई मुसलमान कहता है कोई इसाई कहता है। इन्सान तो कोई रहा ही नही। सबसे बढ कर तो बात यह है कि हिन्दुओ मे भी कई प्रकार के हिन्दू हैं और मुसलमानो म भी कई प्रकार के मुसलमान हैं, इस प्रकार जाति मे से जाति अर्थात् कई उपजातिया पैदा हो गई हैं। अब तो और भी विचित्र बात हो गई है। प्रत्येक व्यक्ति अपन नाम के साथ अपनी उप जाति का नाम लिखने लग गया है कोई मल्होत्रा है तो कोई सलोत्रा है, कोई अरोडा है तो कोई बली है, कोई मलिक है तो कोई सन्धु है। कोई चोपडा है तो कोई भल्ला है। कोई शर्मा है तो कोई वर्मा है, हजारो की सख्या मे ऐसी उप जातिया हैं। यह जाति सूचक शब्द भी आज अपने नाम के साथ प्रत्येक व्यक्ति लगाने लग गया है। इससे कोई सगठन नही विघटन पैदा हो रहा है। औरो को तो छोडिए अब तो अपने आप को आर्य कहलाने वाले व्यक्ति भी इन उप जाति सूचक शब्दो को अपने नाम के साथ लगाने लग गए हैं। जिससे स्पष्ट पता चलता है कि आज हमने धर्म के बारे मे, जाति के बारे मे, चिन्तन करना छोड दिया है। विचार करना छोड दिया है। इसलिए हमे पता ही नही कि धर्म क्या है? जबकि धर्म एक होता है वह अनेक नहीं होते। वैदिक धर्म ही प्रत्येक मानव का धर्म है क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। मानव से मानवता गायब होती जा रही है मानव राक्षस बनता जा रहा है। जिस धर्म ने मानव को देवता बनाना था वह आज के यह तथा कथित धर्म उस मानव को दानवता की ओर ले जा रहे हैं। इसका कारण स्पष्ट है कि हमने विचार करना छोड दिया है। महर्षि दयानन्द ने जो तर्क बुद्धि, विचार शक्ति हमे दी थी आज हम उसे भी भूल रहे हैं। इस लिए धर्म के बारे मे कुछ तो विचारिए। इसके स्वरूप को कुछ तो जानिये।

महर्षि दयानन्द जी ने कहा था—"सृष्टि उसको कहते है जो पृथक् द्रव्यो का ज्ञान युक्ति पूर्वक मेल हो कर नाना रूप बनाता है।" सृष्टि के सभी पदार्थ जड हैं। इन जड पदार्थों को ठीक से जानना आवश्यक ही नही अति आवश्यक है। हमे प्रकृति की भी पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। प्रकृति का ठीक ठीक ज्ञान प्राप्त करके ही मानव सुखी हो सकता है। आज जड पदार्थों को ठीक स न जानने के कारण ही आज लोग कही पत्थरो की पूजा कर रहे है। नदियो की तालाबो की पूजा कर रहे हैं। कही पुस्तको की पूजा कर रहे है। जड पदार्थों की पूजा से मानव मे भी जडता आती जा रही है। सोचने विचारने की इनकी शक्ति समाप्त होती जा रही है। मानव को प्रत्येक पदार्थ का ठीक-2 ज्ञान होना चाहिए। इसके सम्बन्ध मे कुछ तो विचारिए। पृथ्वी, आकाश, अन्तरिक्ष को ठीक-2 जानना भी आवश्यक है। इस ज्ञान को ही महर्षि विद्या कहते हैं।

मानव के जीवन की चार अवस्थाए हमारे ऋषि-मुनियो, महात्माओ तपस्वियो ने बताई है। पहली अवस्था ब्रह्मचर्य है। यह मानव जीवन का यह पहला पडाव है। यह अवस्था जन्म स 25 वर्ष पर्यन्त मानी गई है। इस अवस्था मे मानव विद्या को प्राप्त करके जहा ज्ञानी बनता है वहा जितेन्द्रिय बन कर शारीरिक शक्ति प्राप्त करता है। परन्तु आज हम ब्रह्मचर्य को ही भूल गए हैं, विलासिता बढ़ती जा रही है। आज का नौजवान ब्रह्मचारी शब्द का मजाक उडाता है। सयम नाम की कोई चीज कही नजर नही आती। इसलिए आज का नौजवान खोखला होता जा रहा है। केवल पुस्तकी विद्या प्राप्त करना ही उसका उद्देश्य बन गया है। विद्या के स्वरूप को तो वह भूल चुका है। कहा ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या प्राप्त करना ही हमारा उद्देश्य था। इस सबका कारण है इस सम्बन्ध मे कुछ विचार न करना। विचार शक्ति समाप्त हो गई। इस लिए जीवन के पहले 25 वर्ष जो गृहस्थ की तैयारी के वर्ष थे और जीवन का अमूल्य भाग था जिस पर सारा जीवन निर्भर था। परन्तु आज उसके बारे मे कोई विचार नही किया जाता। जीवन का यह भाग यो ही व्यतीत हो जाता है। इसके बारे में कुछ तो विचारिए। (शेष आगामी अंक मे)

—सह-सम्पादक

मानव मात्र के लिए सार्वभौमिक स्वर्णिम नियम

व्याख्याता—श्री स्वर्गीय पं. चमूपति जी एम.ए.

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने 10 ऐसे नियमों का निर्माण किया है जो मानव जीवन के लिए बड़े उपयोगी नियम हैं। इन नियमों में सार्वभौमिकता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आर्य समाज इन 10 नियमों को मानता है और इनका प्रचार तथा प्रसार भी करता है। समय-2 पर कई विद्वानों ने इन नियमों की कुछ व्याख्या भी की है। स्व. पं. चमूपति जी आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान् थे। इन नियमों की जो व्याख्या उन्होंने की है वह नीचे दी जा रही है।

—सह-सम्पादक

नियम 1

प्रथम नियम मे सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या मे जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर को माना गया है।

आदि मूल निमित्त या चेतन कारण को कहते हैं। 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के सृष्टि विद्या प्रकरण में पृष्ठ 127 पर लिखा है "सर्वादि निमित्त कारणं पुरुष एवास्ति।" अर्थात् इस सबका आदि निमित्त कारण पुरुष (परमेश्वर) ही है। अब यदि 'आदि मूल' का अर्थ 'आदि निमित्त कारण, समझ लिया जाए तो ढैत सिद्धान्त का समावेश प्रथम नियम में अपने आप हो जाता है। साधारण जनों के लिए यहा परमेश्वर को विद्या तथा विद्या के विषय अर्थात् ससार का आदिम कारण बताया गया है परन्तु विशेष विचार करने वालो के लिए ईश्वर निमित्त कारण ही है। उपादान तथा साधारण कारण इससे भिन्न हैं। ईश्वर मुख्य है। अन्य कारण गौण। इसलिए यदि यहां अन्य कारणो का स्पष्ट वर्णन नही किया गया तो उनका निषेध भी नियम के किसी शब्द द्वारा नही होता। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के ऊपर दिए गए उद्धरण से प्रतीत होता है कि 'आदि मूल' का अभिप्राय: 'आदि निमित्त कारण है।

नियम एक में (1) सब सत्य विद्या (2) जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं इन दो वस्तुओ का निमित्त कारण परमेश्वर को कहा गया है। सत्य विद्या का अर्थ है वह ज्ञान जो तीनो काल मे एक जैसा रहता है और यह 'ज्ञान' ईश्वर, जीव और प्रकृति का ज्ञान है। इस नियम में परमेश्वर को आदि मूल कारण कहा गया है जिसका अर्थ है कि वह उसी (ईश्वर, जीव और प्रकृति) ज्ञान का कारण है। यह अर्थ कदापि नही है कि परमेश्वर इन तीन वस्तुओ का भी आदि कारण है क्योकि ये सब नित्य हैं। इसी सत्य विद्या का नाम 'वेद' है। इस प्रकार परमेश्वर वेद का आदि मूल है इसलिए ईश्वर को आदि गुरु भी कहते हैं।

विद्या का अर्थ है परिवर्तनीय ज्ञान। परिवर्तनीय वस्तु क्या है? कार्य रूप प्रकृति इसी को सृष्टि कहते हैं। इसीलिए विद्या जगत् के ज्ञान को कहते हैं। इसी ज्ञान से मनुष्य को सम्पूर्ण जगत् का ज्ञान हुआ करता है। परिणाम यह कि परमेश्वर जगत् का निमित्त कारण है। उपादान कारण प्रकृति है। संक्षेप में परमेश्वर वेद और जगत् का निर्माता (आदि) कारण है।

नियम 2

दूसरे नियम में :—ईश्वर को निराकार सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, इत्यादि कह कर अद्वैतवाद का खण्डन किया गया है। अद्वैतवाद में गुण-गुणी का अभेद माना जाता है परन्तु यहां ईश्वर स्पष्ट गुणी है वह शक्ति नहीं है शक्तिमान है। न्याय नहीं न्यायकारी है। ईश्वर की एक ऐसी सुन्दर गुणावली का वर्णन करने के पश्चात् जिसके पाठ करने मात्र से ही उपासना का भाव पैदा हो जाता है, अन्त मे कहा है "उसी की उपासना करनी योग्य है।" उसी एक शब्द से अनेकेश्वरवाद का निराकरण हो गया है।

धर्म के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता लगता है कि मूर्ति पूजन, अवतारवाद और अनेकेश्वर वाद हर जगह साथ-प्रचलित हुए हैं। ईसाइयों में त्रिमूर्ति के हिन्दुओ मे असंख्यक देवी देवताओ के, ऐसे ही अन्य धर्मों में भी अनेक उपास्यों के पैदा हो जाने पर ही मूर्ति पूजा का विधान चला है। आर्य समाज की पूजा विधि अमूर्त ईश्वर का ध्यान है। ऋषि दयानन्द स्थान-स्थान पर परमेश्वर ही की उपासना पर बल देते हैं। वहां 'ही' का अभिप्राय: परमेश्वर के अतिरिक्त किसी भी पदार्थ को साधन अथवा साध्य रूप मे उपासना का विषय बनाने का स्पष्ट निषेध होता है। ऐसा ही इस नियम मे भी समझना चाहिए। दूसरे शब्दो मे इस नियम की भाषा ऐसी है जिससे अद्वैतवाद, अनेकेश्वरवाद, अवतारवाद तथा मूर्ति पूजा का अपने आप निराकरण हो जाता है। एक स्वाध्याय शील सभासद् इन दार्शनिक तत्वों से धीरे-2 अपने आप परिचित होता जाएगा आरम्भ में उससे उन सिद्धान्तों पर स्पष्ट हस्ताक्षर तो नहीं कराये गए परन्तु इन की स्वीकृति की भूमिका बांध दी गई है।

इस नियम में एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है वह यह कि परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्व शक्तिमान न्यायकारी, दयालु आदि सत्तात्मक गुणो के कारण सगुण और निराकार, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि आदि अभावात्मक गुणो के कारण निर्गुण भी है।

इस नियम में आए 'सर्व शक्तिमान्' शब्द का भाव यह है कि ईश्वर अपने सृष्टि नियमों के अन्तर्गत रहता हुआ अपनी असीम शक्तियो को प्रयोग मे लाया करता है। अपने नियम का स्वयं भी कभी उल्लंघन नही करता अर्थात् ईश्वर यह नहीं कर सकता कि अन्याय करे या अपने जैसा दूसरा ईश्वर उत्पन्न करले अथवा अपने को मार ले इत्यादि।

नियम 3

तीसरा नियम 'वेद' को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताता है। ऋषि के आने से पहले वेद केवल पुरोहितों की पोथी था। वेद के मन्त्रों का प्रयोग संस्कारों तथा यज्ञों अर्थात् कर्म काण्ड में होता था। ज्ञान काण्ड उपनिषदों को ही समझा जाता था। ऋषि दयानन्द ने वेद विद्याओ का पुस्तक कह कर यह भावना बिल्कुल बदल दी। वेद में बुद्धि को प्रवेश का अवसर दे दिया। विद्या बुद्धि का विषय तो है ही विद्या का अध्ययन अवश्य किया किया जाएगा और उससे आचार व्यवहार की शिक्षा भी प्राप्त की जाएगी। उस शिक्षा से इस संसार तथा परलोक से सम्बन्ध रखने वाले सभी विषय न बनाकर ऋषि ने इसका पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म निश्चित कर दिया है। अभिप्राय यह कि आर्य लोग सदैव वेदों के वायुमण्डल में रहें। विद्वान् लोग जानते हैं कि वेदो तथा उपनिषद आदि पीछे के ग्रन्थों के वातावरण में बड़ा भेद है। आर्य 'वेद' के ही वायुमण्डल में रहकर फिर से जीवित जाग्रत हो सकते हैं।

आर्योद्देश्य रत्न माला में 'विद्या पुस्तक' इस शीर्षक के उद्देश्य संख्या 60 के शब्द ये हैं :—

"जो ईश्वरोक्त सनातन सत्य विद्यामान 4 वेद हैं उनको विद्या पुस्तक कहते हैं।"

यही सक्षेप में आर्य समाज की स्थिति है। 'सत्य विद्याओं की पुस्तक' इन शब्दो का भी वास्तविक अर्थ यही है। हस्ताक्षर करने के लिए इतना लम्बा सूत्र न रख कर संक्षिप्त शब्दावली से काम लेने में सम्भवत: ऋषि का अभिप्राय: किसी आर्य सभासद् के हृदय पर अधिक बोझ न डालना हो। 'सत्य विद्याओं का पुस्तक' इन शब्दों पर बिना ननुनच के हस्ताक्षर किए जा सकते हैं।

वेद का आदि मूल (प्रकाश कर्ता) ईश्वर है इसीलिए वेद का श्रवण और अध्ययन करना आर्यों का धर्म नहीं अपितु परम धर्म बताया गया है।

नियम 4

यह नियम आर्य समाज की शोभा है और आर्य समाज को उन सब पन्थों से पृथक् करता है जो अपनी साधारण और किन्हीं दशाओं में सर्वथा निरर्थक बात के लिए भी मरने मारने को तैयार रहते हैं। वेद और उपनिषदों में 'ईश्वर' को मरने मारने को तैयार रहते हैं। वेद और उपनिषदो में 'ईश्वर' को सत्य कहा गया है। ईश्वर 'सत्य' क्यों है है इसका उत्तर बृहदारण्यकोपनिषद् ने दिया है। 'सत्यम' तीन शब्दों का योग है (स+ति+यम) स जीव को कहते हैं' ति ब्रह्माण्ड को यम शासक का नाम है। इस प्रकार 'सत्यम्' परमेश्वर का नाम इसलिए है कि वह जीव और जगत दोनों को शासन (नियम) में रखता है। (बृहद. अ. 5 ब्रा 5 कं. 1) फिर प्रश्न है कि ऐसे (सत्यम्) गुरु को किस प्रकार प्राप्त कर सकत है? उपनिषद् का उत्तर यह है 'तत् सत्ये प्रतिष्ठितम्' वह ब्रह्म सत्य में प्रतिष्ठित है इसलिये सत्य को प्राप्त करने और सत्याचरण करने ही से ब्रह्म को प्राप्त कर सकते हैं। सत्य विमुख होना ईश्वर से विमुख होना है।

(क्रमश:)

नई आर्य समाज की स्थापना

11-1-1988 रविवार को पठान चक्क जिला गुरदासपुर मे श्री स्वर्णसिंह तथा देसराज के पुरुषार्थ से नई आर्य समाज की स्थापना हुई। प्रात: 9-30 बजे से पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में एक बृहद यज्ञ हुआ जिसमें दयानन्द मठ के विद्यार्थियों ने वेद पाठ किया। इसके पश्चात् स्वामी जी महाराज का प्रवचन हुआ। उसके पश्चात् स्वामी जी महाराज ने अपने करकमलों से उस समाज की आधारशिला का न्यास किया। वहां दीनानगर गुरदासपुर तथा आस-पास के गांव के लोग अधिक मात्रा में आए थे। सिख भाई भी उस में बढ-चढ़ कर भाग ले रहे थे। दान मे भी अपना भाग डाला लोगो मे बड़ा उत्साह था। श्री देसराज ने 5000 रुपए आर्य समाज को दान में दिए सौ रुपए देने वाले अधिक थे। अन्त में ऋषि लंगर से लोगों को भोज करवाया गया और स्वामी जी ने सबको आशीर्वाद दिया।

—रघुनाथसिंह
मन्त्री

सभी भाषाओं की लिपि देवनागरी क्यों न हो।

लेखक—श्री विमल स्वरूप जी गोयल 3314 बैंक स्ट्रीट करोल बाग पटवारी जी कार्नर नई दिल्ली—5

(24 जनवरी से आगे)

देवनागरी लिपि के बारे में लिपि विशेषज्ञों के विचार

राव बहादुर पण्डित गौरी शंकर ओझा का विचार है कि वर्तमान नागरी लिपि का मूल अर्थात् प्राचीन रूप सम्राट अशोक के शिला-लेखों की लिपि ब्राह्मी में मिला है। जो विक्रम सम्वत् से 200 वर्ष पूर्व के हैं और काठियावाड़ से उड़ीसा तक और नेपाल की तराई से मैसूर तक अनेक स्थानो पर यह स्वरूप मिलता है। अशोक के समय यह लिपि सम्पूर्ण भारत मे वैसे ही प्रचलित थी जैसे इस समय देश में देवनागरी। देवनागरी लिपि का विकास वैदिक काल से ही आरम्भ हो गया। इसका उल्लेख ईसा पूर्व 453 मे लिखे जैन ग्रन्थ नन्दिसूत्र में है। तान्त्रिक युग में भी नागरी नाम का उल्लेख मिलता है।

प्रसिद्ध अंग्रेज प्राच्य भाषा विद मैकडोनल ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर" में देवनागरी की वैज्ञानिकता की प्रशंसा की है। इसी तरह एक अन्य अंग्रेज मोनियार विलियम ने देवनागरी लिपि को विश्व की सर्वाधिक सुडौल और यथा प्रमाण सुन्दर वर्ण माला कहा है।

महात्मा गान्धी ने भारतीय साहित्य परिषद् मद्रास के अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा कि देवनागरी में जो पूर्णता है और ध्वनियों और स्वरों को क्षमता है वह न तो "रोमन" में है और न उर्दू में है। 1937 में गान्धी जी ने ही अपने पत्र हरिजन में लिखा था कि भारत की अधिकतम लिपियां देवनागरी से ही विकसित हुई हैं। इस कारण इसे भारत की सर्वमान्य लिपि स्वीकृत किया जाए।

सुप्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने हिन्दी देवनागरी के इस गुण की सराहना करते हुए कहा है बंगला के लिखी शब्दों का उच्चारण जटिल है और दूसरे प्रान्तों के लोगों के लिये उसे शुद्ध रूप से ग्रहण करना भी कठिन कार्य है। हिन्दी या देवनागरी में यह बखेड़ा नहीं है। हिन्दी का एक-एक शब्द अपने में पूर्ण है, लिखने और बोलने में उच्चारण का थोड़ा भी अन्तर नहीं पड़ता।

उस्मानियां विश्वविद्यालय

उस्मानियां विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हारून खां ने कहा है कि हम हिन्दी का उर्दू से मुकाबला करने को सदा तैयार रहते हैं। किन्तु हिन्दी भाषा में जो विशेषता है वह किसी अन्य भाषा मे नहीं है। यह जैसी लिखी जाती है वैसी ही बोली जाती है। उर्दू मे यह गुण नहीं है, लिखने वाला ही अपनी लिखावट पढ़ सकता है।

1937 मे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के आठवें अधिवेशन में भी अम्बूजम्मा ने कहा था कि नागरी लिपि सीखने में 15 दिन से अधिक समय नहीं लगता है।

जस्टिस शारदा चरण मित्र ने कलकत्ता में सर्व प्रथम हिन्दुस्तान को सभी भाषाएं एक ही लिपि मे लिखी जाएं। इसके लिए 19 वी शती में बंगाल में प्रयास किया था तथा देवनागर नाम से एक पत्रिका भी निकाली। उन्होने इसके लिए एक लिपि विस्तारक नाम की संस्था भी बनाई। देवनागर पत्रिका में सभी भाषाओं के लेख देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित होते थे। श्री शारदा चरण मित्र की प्रेरणा से ही 1905 में काशी में सर्व प्रथम एक "लिपि विस्तार परिषद्" का अधिवेशन हुआ जिसमें लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने तथा बड़ौदा राज्य के तत्कालीन दीवान, एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार व इतिहासकार श्री रमेशचन्द्र दत्त ने भी भाग लिया।

इन सभी विद्वानों ने हिन्दुस्तान को सभी भाषाओ की एक लिपि केवल देवनागरी को ही स्वीकार करने की बात इसकी वैज्ञानिकता को देखते हुए ही कही है। 1949 में संविधान मे देवनागरी लिपि मे लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा बना तो मान लिया किन्तु सब भाषाओं को एक ही लिपि हो यह बात नहीं हो सकी। जिसकी देश की एकता बनाये रखने के लिए बहुत ही आवश्यकता थी। सभी भाषाओं को एक लिपि देवनागरी हो यह देश की भावनात्मक एकता के लिए बहुत जरूरी है, तभी देश को टूटने से बचाया जा सकता है। किन्तु इस बात को हमारी सरकार गत 40 साल से टालती चली आ रही है और अंग्रेजी के पीछे पड़ी हुई है। इस सन्दर्भ में मैंने 6 फरवरी 1985 को तत्कालीन उपराज्य गृहमन्त्री श्रीमती रामदुलारी जी सिन्हा को एक पत्र लिखा था जिसकी प्रतिलिपि तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र जी पन्त को भी भेजी थी। उस पत्र में मैंने सभी भाषाओ को एक ही लिपि देवनागरी हो इसकी मांग की थी किन्तु गृहमन्त्रालय के राज भाषा विभाग के उपसचिव ने जो उस पत्र का उत्तर दिया था वह बहुत ही निराशाजनक था।

हिन्दी के व्यवहार का क्षेत्र विस्तृत करने में प्रयत्नशील कार्यकर्ताओं को पुरस्कार देने की योजना

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है तथा राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है। हिन्दी की सेवा राष्ट्र की सेवा है। यह सेवा अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से कर रहे हैं, कुछ शिक्षक के रूप मे, कुछ लेखक के रूप में तथा कुछ स्वय अपना काम हिन्दी में करके, ऐसे भी व्यक्ति हैं जो दूसरो को भी अपना काम-काज हिन्दी मे करने की प्रेरणा देते रहे हैं।

इन सभी क्षेत्रो मे की जा रही सेवा का अपना-अपना महत्व है। यह प्रसन्नता की बात है कि समाज अच्छे शिक्षकों, अच्छे लेखकों आदि को सम्मानित कर रहा है तथा विभिन्न सस्थाओ तथा सरकारो द्वारा उन्हे पुरस्कार दिए जा रहे हैं। परन्तु हिन्दी के उन मूक सेवको को सम्मानित करने की अभी व्यवस्था नहीं है जो विभिन्न संस्थाओं, संगठनो तथा व्यक्तियो से सम्पर्क करते रह कर इस बात का प्रयत्न करते रहे हैं कि जीवन के सभी क्षेत्रो में अधिकाधिक काम हिन्दी में हो। इन व्यक्तियो के परिश्रम का अनेक क्षेत्रो में अच्छा प्रभाव हुआ है तथा जहां पहले हिन्दी मे काम होने की कल्पना ही नही की जाती थी, वहा हिन्दी में काम होने लगा है और हिन्दी के प्रयोग की मात्रा बढ़ती जा रही है।

हरि बाबू कसल धर्मार्थ ट्रस्ट ने उपर्युक्त प्रकार के हिन्दी सेवियो का सम्मान करने का विचार किया है। उसकी रूपरेखा इस प्रकार है :—

1. इस सम्मान द्वारा उन व्यक्तियो की सेवाओं को मान्यता दी जाए जिनकी प्रेरणा से अधिकतम सस्थाओं, सगठनो तथा व्यक्तियों ने अपना अधिकतम काम हिन्दी में करना शुरू किया है।

2. सम्मान में प्रति वर्ष 1100 रु. नकद राशि तथा एक शाल प्रदान क्या जाए।

3. देश की विभिन्न संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करके तथा समाचार-पत्रों में विज्ञप्ति आदि प्रकाशित करके ऐसे व्यक्तियों के विवरण एकत्रित किए जाएं जिन्हें उपर्युक्त सम्मान देने के विषय में विचार किया जा सकता है।

4 विवरण द्वारा निम्नलिखित तथ्य भेजे जाएं :—

पिछले वर्ष में तथा उससे पूर्व के दो वर्षों में हिन्दी व्यवहार का क्षेत्र विस्तृत करने तथा उन क्षेत्रो मे हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए किन-किन से सम्पर्क किया, क्या-क्या प्रयत्न किए, उन प्रयत्नों का क्या परिणाम हुआ, क्या उल्लेखनीय प्रगति हुई, कार्य में क्या-क्या बाधाएं आई, उनका निराकरण किस प्रकार किया गया, आगे के लिए इस दृष्टि से आप क्या करना चाहेंगे, आदि।

5. इस सम्मान के लिए किसी व्यक्ति को हिन्दी का लेखक, शिक्षक अथवा स्नातक आदि होना आवश्यक नही होगा। पात्रता के लिए इस बात का भी भेद नहीं किया जाएगा कि उसका व्यवसाय क्या है अथवा वह किसी प्रकार का कोई अन्य पुरस्कार ले चुका है।

6. जिस व्यक्ति को इस योजना के अन्तर्गत सम्मानित किया जाएगा, उसे उस वर्ष से आगे के दो वर्षों में पुनः इसी सम्मान के लिए नही विचारा जाएगा।

7. सम्मान योग्य व्यक्ति का चयन करने के लिए ट्रस्ट एक निर्णायक समिति का गठन करेगा। यह समिति आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करके अपने विवेकानुसार निर्णय करेगी और वह निर्णय सर्वमान्य होगा।

8. कार्य विवरण दीपावली (सन् 1986) से दीपावली (सन् 1987) तक एक वर्ष का विवरण गणतन्त्र दिवस 1988(26-1-1988) तक शीघ्र भेजना है।

जाहिर है कि इस योजना की परिकल्पना के अनुसार सम्मान योग्य व्यक्ति का चयन प्रतिवर्ष करना आसान नही होगा, किन्तु यह काम असम्भव भी नहीं है। उद्देश्य यही है कि हिन्दी की निःस्वार्थ सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं के प्रति हम सांकेतिक रूप में अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा उनका उत्साह बढ़ा सकें, जिससे ऐसे कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हो।

सचिव—हरिबाबू कंसल धर्मार्थ ट्रस्ट, ई—9/23,
वसन्त विहार, नई दिल्ली—7

लुधियाना में ऋषिबोधोत्सव

16 2 88 मगलवार को जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे जिला की सब आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओं की ओर से प्रात 8 30 बजे से 2 बजे बाद दोपहर तक आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल मे बड़े समारोह से मनाया गया। यज्ञ श्री बालकृष्ण जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया उसके पश्चात समारोह की कार्यवाही श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा की प्रधानता मे आरम्भ हुई। आर्य गर्ल्ज स्कूल, आर्य सीनियर सै स्कूल, दयानन्द माडल स्कूल, आर बी स्कूल, आर्य समाज हबीबगज के छात्र छात्राओ तथा आर्य समाज किदवई नगर की भजन मण्डली, बहन स्वदेश गुप्ता जी ने अपने सुरीले भजनो से ऋषि गुणगान किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध आर्य नेता कुवर बृज भूषण दीवान (सुपुत्र स्व दीवान राम शरण दास जी), उप प्रधान मोहन आश्रम हरिद्वार, दयानन्द मैडीकल कालेज तथा अस्पताल लुधियाना के डा के पी सिंह (सरजरी के हैड) डा मोहन जी गुप्ता जिन्होंने पथरी का बगैर आप्रशन इलाज खोज कर इस अस्पताल तथा आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है तथा भारत के प्रसिद्ध विद्वान प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब शाखा के महामन्त्री श्री कृष्णसिंह जी आर्य प्रिंसीपल डी ए वी कालेज चण्डीगढ का हार्दिक स्वागत किया गया। आदरणीया सुमनायति जी ने इन सब को आशीर्वाद दिया नगर की सब आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ, जिला आर्य सभा के अधिकारियो, नगर के उद्योगपतियो तथा सोशल कार्यकर्ताओ ने इन सब को हार पहना कर स्वागत किया। कुवर बृज भूषण जी दीवान का स्वागत करते हुए जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री आशानन्द आर्य ने कहा कि आर्य समाज को ऐसे महानुभावो पर गर्व है जिन्होंने जनता की सेवा करना अपना लक्ष्य बनाया हुआ है। श्री बृज भूषण जी दीवान ने एक हजार रुपया आर्य स्कूल को तथा 500 रुपया जिला आर्य सभा को दान दिया। इस अवसर पर के पी सिंह तथा डा मोहन गुप्ता का भी स्वागत किया गया।

हजारो लोगो ने ऋषिलगर मे प्रसाद प्राप्त किया। इस समारोह को सफल बनाने मे जहा लुधियाना की सभी आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो तथा स्कूलो ने पूरा सहयोग प्रदान किया है। वहा रहने वाले आर्य समाज के भाईयो तथा श्री राजेन्द्र कुमार दीवान, श्री ओम्प्रकाश पासी, श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा डा मूलचन्द भारद्वाज, श्री बुजबक्तराय सूद, श्री विजय कुमार सरीन श्री चानन राम गम्भीर, श्री धर्मपाल भसीन, श्री शान्तिलाल डल, भक्त ज्ञान चन्द, श्री नरेन्द्र सिंह भल्ला, श्री राम रत्न सोन्धी, सावित्री जी गुप्ता, निर्मला जी बेरी-शकुन्तला मण्डल स्वदेश जी गुप्ता, श्री भवन कुमार, श्री सतीश कुमार जी वर्मा श्री हसराज किदवई नगर, श्री मगलसैन बधवा, श्री अरुण कुमार सूद ने पूरा सहयोग प्रदान किया। आदरणीय सुमनायति जी का आशीर्वाद सारे समारोह मे रहा-

ऋषिलगर मे श्री वेद प्रकाश महाजन, श्री रमाकान्त महाजन, श्री सतीश वर्मा, श्री रविन्द्र कुमार आर्य, श्री राजेन्द्र कुमार बत्रा, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री अजय कुमार सूद, श्री राम कुमार, श्री सुरेश कुमार, श्री ओमिन्द्र कुमार, श्री विनोद जैन, श्री ओम्प्रकाश महाजन तथा आर्य समाज फील्ड गज, किदवई नगर-जवाहर नगर, हबीबगज के नवयुवको ने पूरा सहयोग प्रदान किया।

—आशानन्द आर्य
महामन्त्री

रायकोट में ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रायकोट (लुधियाना) मे 16-2-88 को ऋषि बोधो सव आर्य युवक सभा रायकोट की ओर से बडी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमे नगर के प्रमुख आर्य भाई तथा नवयुवको ने बढ चढ कर हिस्सा लिया। जिसमे महाशय धर्मपाल जी प रविन्द्र नाथ सधीर ने ऋषि जीवन पर अपने विचार रखे, इसके अतिरिक्त आर्य युवक अशोक कन्नौजिया श्री जयप्रकाश तथा डा राजेन्द्रकुमार ने ऋषि महिमा भजनो द्वारा गाई साथ ही नन्ने मुन्ने उपेन्द्रनाथ और बेबी पल्लवी ने कविता में ऋषि गुणगान किया।

मुख्य वक्ता प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा श्री कृपाराम जी आर्य सगीतज्ञ लुधियाना से विशेष रूप से पधारें, श्री शास्त्री जी के प्रवचन को सुनने के लिए काफी सख्या मे लोग आए, उन्होंने अपने प्रवचन मे कहा कि जिन कठिनाइयो को ऋषि ने हमारे लिए सहन किया। हसते हुए जहर के प्याले पिये हमे उनके आदर्शों की पूर्ति के लिए कृतसकल्प रहना चाहिए। ऋषि का गुरुतर भार हमारे कन्धो पर है। हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि सकीर्णता से ऊपर उठ कर आर्य समाज तथा वेद प्रचार के कार्यों को आगे बढायें। तभी हमारा ऋषि बोधोत्सव मनाना सफल होगा। अन्त में सब का जलपान के साथ सत्कार किया गया।

—अशोक कुमार भारद्वाज
प्रधान

आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर में ऋषिबोधोत्सव हर्षोल्लास सहित सम्पन्न

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी ऋषिबोधोत्सव पर्व पर 8 फरवरी से 16 फरवरी तक आर्य समाज वेद मन्दिर, भार्गव नगर, जालन्धर मे ऋषि मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई दिन पूर्व प्रभात फेरियों का कार्यक्रम आरम्भ किया गया। जिसमे नगरवासियो ने अपना अभूतपूर्व उत्साह दिखाया। प्रभात फेरियो मे शामिल होने वाले व्यक्तियों की सख्या 60 से ऊपर होती रही। सुबह प्रभात फेरी में शामिल होने वाले लोगो को श्रद्धालु जनो द्वारा अपने घरो पर चाय-पान भी कराया जाता रहा। प्रभातफेरी को चाय पिलाने वाले लोगो की सख्या इतनी होती रही कि एक-2 दिन में तीन-तीन बार चाय भी लोगो द्वारा पिलाई गई। यह कार्यक्रम प्रतिदिन चलता रहा। रात्रि को श्रद्धेय प बलराज जी व प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी द्वारा पवित्र वेद की कथा होती रही।

रविवार 14-2-88 को ऋषिबोधोत्सव एक बहुत बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। सुबह 8 बजे हवन-यज्ञ से कार्यक्रम आरम्भ किया गया। उसके पश्चात् यजमानो का आशीर्वाद व यज्ञ शेष वितरित किया गया। और फिर दूरदर्शन पर लोगो को रामायण भी दिखाई गई। माता वीरा देवी, सत्यादेवी तथा प बलराज जी द्वारा प्रभु भक्ति के भजन भी गाए गए। इस समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान, श्री वीरेन्द्र जी एम.ए, महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या, उप-प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, कोषाध्यक्ष-श्री हरबसलाल जी शर्मा, सन्यासी माता सुमनायति जी, श्री शालिग्राम जी पराशर, डा केवल कृष्ण (भूतपूर्व खजाना मन्त्री पजाब) श्री रार्जिन्द्र सिंह जी स्पैरो एम पी श्री विजय सेठी जी (डायरैक्टर जालन्धर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक) तथा श्री डी पी सहगल व आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ की प्रिंसीपल श्रीमती हर्ष जी अरोड़ा, श्री कर्मचन्द जी गाबी तथा दूसरे कई नेताओ ने भाग लिया। व ऋषि चरणो मे अपनी 2 श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

इस अवसर पर वीरेन्द्र जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) द्वारा डा. केवल कृष्ण जी को शाल के रूप मे एक दरोगा भी भेंट किया गया।

मक्खराम आर्य प्राईमरी स्कूल के बच्चो ने आर्य समाज के नियम व गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया। इस समारोह में जालन्धर की सभी आर्य समाजो ने बढ चढ कर भाग लिया।

प हरबसलाल जी शर्मा द्वारा ओ३म् का ध्वज लहराया गया। उसके बाद एक बहुत बडा जलूस आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर से निकाला गया। जिसमे जालन्धर की सभी आर्य समाजो की भजन मण्डलिया शामिल हुई। आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा का बैण्ड, वेद की पवित्र झाकी, व हवन यज्ञ की झाकी इस जलूस की शोभा बढा रही थी। जलूस के आगे बैण्ड था। उसके बाद श्री यमुनादास जी ने ओ३म् का ध्वज उठाया हुआ था। उनके साथ सभी आर्य समाजो के तथा नगर के गणमान्य व्यक्ति थे। जलूस के मार्ग को भार्गव नगर के लोगो ने दुल्हन की भान्ति सजा रखा था। जगह जगह पर गेट, जाल, झण्डिया तथा लाऊडस्पीकर जलूस की शोभा को और भी बढा रहे थे। और लोगो के उत्साह को दर्शा रहे थे। जलूस के बाद एक बहुत बडा ऋषि लगर भी आयोजित हुआ। जिसमे सभी लोगो ने भोजन किया।

14-2-88 से 16-2 88 तक रात्रि को प बलराज जी व प धर्म देव जी द्वारा पवित्र वेद की कथा होती रही। अन्तिम दिन सुबह यज्ञ भी किया गया व रात्रि को कथा के बाद प्रसाद वितरण भी किया गया। व शान्ति पाठ के साथ समारोह की समाप्ति की गई।

—कमल किशोर
मन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दो प्रकार का वायु—

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः ॥ (ऋ 10।137।2)

इस मन्त्र में दो प्रकार के वायु का वर्णन है। एक वायु समुद्र के ऊपर से होकर आता है और दूसरा पृथिवी के ऊपर से होकर चलता है। एक बल व शक्ति युक्त वायु को लाता है और दूसरा रोगों के कीटाणुओं को अपने साथ बहा ले जाकर जीवन के लिए ले जाता है।

यह मन्त्र बड़ा विचारणीय है। सभी मनुष्य जानते हैं कि वायु के बहाव के साथ चले जाएं तो उसके दो लाभ हो सकते हैं। सागर के ऊपर से आने वाला शुद्ध वायु और पृथिवी के ऊपर से बह कर जाने वाला रोगयुक्त वायु। परमात्मा ने ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि इन दोनों वायु द्वारा हमारे नगरों, ग्रामों का वायु शुद्ध होता रहता है। समुद्र के तटों पर आबादी न होने के कारण से वहां का वायु प्राकृतिक रूप में शुद्ध होता है, जो शक्ति देने वाला होता है। समुद्र का भाग पृथिवी के भाग से दो गुणा अधिक है, समुद्र का वायु दिन में कई घण्टे पृथिवी पर चलता है और अशुद्ध(दूषित) वायु दूर करता रहता है। जिस समय वायु का बहाव बदल जाता है उस समय पृथिवी का दुर्गन्ध युक्त वायु समुद्र की ओर चला जाता है। और वहां जाकर शुद्ध हो जाता है। इस प्रकार दो प्रकार का वायु पृथिवी पर कार्य कर रहा है। एक शक्ति को देने वाला और दूसरा रोगों को दूर करने वाला। यदि शरीर की ओर भी देखा जाए तो यही कार्य यहां भी चल रहा है। नासिका के द्वारा प्राण अन्दर जाता है और वहां रक्त शुद्ध और स्वस्थ हो जाता है तथा वहां का दूषित वायु अपान के द्वारा बाहर आ जाता है [illegible] रूप से प्रश्वास वायु चलता है। यही बात पृथिवी के ऊपर भी होती है। जो वायु समुद्र से पृथिवी पर आता है वह प्राण है और जो पृथिवी से समुद्र की ओर जाता है वह अपान है। यह एक वैदिक सिद्धान्त है जिसकी ओर ध्यान देना चाहिए

देवों का दूत वायु—

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः ।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥
(ऋग्वेद 10।137।3

हे वायु ! औषधियों के परमाणुओं (कणों) को हमारे पास ले आओ और हमारे रोगों को हम से दूर फेंक दो। हे वायु तुम ही सम्पूर्ण विश्व का औषध रूप हो, तुम्हीं देवों का दूत बन कर घूम रहे हो।

वायु के दो कार्यों में शक्ति का बढ़ाना और रोगों का दूर करना है जिनका वर्णन उक्त मन्त्रों में हो चुका है, यहां दो कार्य औषध के भी हैं। एक से जीवन को देना और दूसरे से रोग मुक्त कराना है। किन्तु यह कार्य शुद्ध और पवित्र वायु के सेवन से ही हो सकता है। जो मनुष्य नियमपूर्वक शुद्ध वायु में रहते हैं और दूषित वायु से अलग रहते हैं, उनको औषधियों की कम आवश्यकता पड़ती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वायु में सब औषधियों के परमाणु सम्मिलित रहते हैं, इसीलिए वायु को विश्व भेषज अर्थात् औषधियों का भण्डार (औषधालय) कहा है।

इस मन्त्र में वायु को देवों का दूत भी कहा है। देव अर्थात् विद्वान मनुष्य जो होते हैं, उनका कार्य अपने सेवक की सहायता करना है। इस प्रकार जो विद्वान् वायु विज्ञान को जानते हैं और उसके अनुसार व्यवहार करते हैं उनका सेवक बनकर वायु उनकी सहायता करता है।

अन्तिम बात यही है कि, क्योंकि वायु का मनुष्य(प्राणीमात्र) के जीवन से सदा का सम्बन्ध है इसलिए इस अमृत रूप वायु का सेवन करते हुए अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर, स्वस्थ प्रसन्न रख कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करके इसी लोक और परलोक में सुखी बनें। वायु अमृत (आबजीवन) है। एक बार तो यह मृत प्राय व्यक्ति में भी प्राण फूंक देता है। इसी से वेद ने कहा है—

यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः ।
ततो नो देहि जीवसे ॥

(जन ज्ञान से साभार)

—○—

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कोटा नगर आर्य समाज रामपुरा कोटा का 89 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 13-2-88 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया समारोह में मथुरा से पधारे प्रेम भिक्षु, श्री धर्मवीर जी अजमेर, सत्यपाल जी भजनोपदेशक दिल्ली एवं शिवानन्द जी मस्ताना के अलावा अन्य स्थानीय उपदेशकों ने भजन एवं उपदेश दिये।

—राजमल मेहता-प्रतिनिधि

शिवरात्रि तथा बोध उत्सव

शिवरात्रि महोत्सव दिनांक 16 2 88 को आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विशेष यज्ञ ऋग्वेद शतक द्वारा 12 2 88 से आरम्भ होकर 16 2 88 को पूर्ण आहुति डाली गई। कार्यक्रम 8 बजे से 12 बजे तक चला, इसके दौरान श्री अरुण मलिक रेलवे मण्डल अधिकारी फिरोजपुर, को समाज की तन, मन, धन से सेवा करने पर सम्मानित किया गया और उनके पिता उपप्रधान—श्री रोशन लाल मलिक ने समाज को 000 रुपया दान दिया। स्त्री समाज बस्ती टैंकावाली ने 620 रुपये इस अवसर पर दिये जिस से ब्याह शादियों के लिए बरतन खरीदे गए। बाद व्यय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के बड़ी श्रद्धा से भजन गाए गए। इसके बाद प्रोफैसर धर्मपाल रामपाल जी तथा पण्डित मनमोहन शास्त्री द्वारा दिए गए उपदेश ने जनता पर गहरा प्रभाव डाला। —सत्यपाल शर्मा-मन्त्री

आर्य समाज अजमेर मे ऋषिबोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

स्थानीय आर्य समाज भवन केसर गंज मे प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी "महर्षि दयानन्द बोधोत्सव" दयानन्द शोधपीठ के चेयरमैन तथा सुप्रसिद्ध विद्वान् डा बाबूराम जी शास्त्री की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रो दत्तात्रय आर्य, डा देव शर्मा वेदालंकार तथा आचार्य गोविन्द-सिंह एवं स्वामी धर्मानन्द जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा समाज, राष्ट्र और धर्म के लिए किये गये महान् कार्यों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्हे भाव, भीनें श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

—मन्त्री

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिकोत्सव

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ का वार्षिकोत्सव 1 फरवरी से 7 फरवरी तक मनाया गया। यजुर्वेद शतक 1 फरवरी से 7 फरवरी तक ब्रह्मचारी श्री अखिलेश्वर जी (गुरुकुल कालवा) की देख रेख में सम्पन्न बड़ी धूमधाम से विधि अनुसार हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री अखिलेश्वर जी बने। उत्सव में श्री सुपर्णायति जी सन्यासिनी जम्मू श्री सुमनायति जी (लुधियाना) श्री प. शालिग्राम जी पराशर, श्री नरेश कुमार शास्त्री (करतारपुर) ने अपने विचार जनता के सामने रखे। श्री अखिलेश्वर जी एवं श्री सुपर्णायति जी के 1 फरवरी से 5 फरवरी तक प्रातः सायं दोनों समय प्रवचन होते रहे। जनता की उपस्थिति आशाजनक रही। 6 फरवरी दोपहर महिला सम्मेलन श्री सुपर्णायति जी (जम्मू) की अध्यक्षता में मनाया गया। जिसमें श्री सुमनायति जी, श्रीमती चादरानी जी शर्मा (परवाणू), श्रीमती कमला जी आर्या महामन्त्री (आ. प्र. सभा पंजाब) ब्रह्मचारी अखिलेश्वर जी, श्री नरेश कुमार शास्त्री जी (करतारपुर) ने अपने विचारों से जनता को प्रभावित किया। लुधियाना से श्री बहन श्रीमती संतोष जी रहेजा मन्त्री (प्रा. आ. स. सभा पंजाब हरि हिमाचल)

श्री बहन श्रीमती पुष्पावती जी मुंजाल एवं अन्य लुधियाना की बहनों ने महिला सम्मेलन में पहुंच कर उत्सव की शोभा बढ़ाई। जण्डयाला गुरु की बहनें भी सम्मिलित हुईं। 7 फरवरी प्रातः सामवेद शतक यज्ञ की पूर्णाहुति श्री अखिलेश्वर जी (ब्रह्मा) ने बड़े सुन्दर ढंग से सम्पन्न करवा कर यजमानों को आशीर्वाद दिया। ध्वजारोहण मान्य श्री वीरेन्द्र जी प्रधान (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) के कर कमलों द्वारा किया गया। श्री प. हरवंसलाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष (आ. प्र. नि. सभा पंजाब) सभा महामन्त्री श्रीमती कमला जी आर्या, एवं अन्य विदुषी बहनों तथा आर्य महानुभावों ने भाग लिया। ध्वज गीत करतारपुर के विद्यार्थियों द्वारा गाया गया। करतारपुर के विद्यार्थियों ने भजन व अपने 2 विचार रखे। श्रीमती पार्वती जैन स्कूल की छात्राओं ने महर्षि दयानन्द के विषय में भक्ति गीत गाए। बच्चों को पुरस्कार श्रीमती कमला आर्या सभा महामन्त्री ने वितरित किए। शहर की सभी समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। 23 जनवरी का बसन्तोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री प. शालिग्राम पराशर जी, प. धर्म देवार्य ने अपने-2 विचार दिए। गोबिन्दगढ़ हाई स्कूल की छात्राओं ने वेदी जी की देख-रेख में भजन रखे। महागायत्री यज्ञ 14 जनवरी को प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति 13 फरवरी प्रातः डाली गई। दानी महानुभावों ने दिल खोल कर धन देकर सहयोग दिया। सभा को वेद प्रचार हेतु पांच सौ रुपया भेंट किया।

—वेद सेठी-मन्त्री

श्रीमती रमेश भाटिया के अंतिम शोक दिवस पर शोक संदेश

गत दिनों श्री रणवीर भाटिया लुधियाना की धर्मपत्नी श्रीमती रमेश भाटिया का निधन हो गया था उनके अन्तिम शोक दिवस पर निम्न संस्थाओं की ओर से उन्हें शोक सन्देश प्राप्त हुए।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना, जिला आर्य सभा लुधियाना, आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना, आर्य समाज कोर्ट्स प्लाईव्ड लुधियाना, आ. स. मन्डी दाल बजाखिया लुधियाना, आ. स. लुधियाना पश्चिम, आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना, स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना, दयानन्द माडल स्कूल लुधियाना, आर्य कालेज लुधियाना, सिलाई मशीन डीलर्स एण्ड एसैम्बलर्स एसोसियेशन लुधियाना, आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना।

शोक सभा में श्री निरञ्जन देव जी, श्री प. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री, प. रामकुमार जी, श्री ज्ञान प्रकाश जी शर्मा श्री कृष्णलाल अरोड़ा, श्री डा. एस. डी. बामिया आदि विद्वानों ने यज्ञ हवन के पश्चात् उन्हें श्रद्धाञ्जलि भेंट की।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न. pb/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 48 23 फाल्गुन सम्वत् 2044 तदानुसार 6 मार्च 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

अमर शहीद धर्मवीर श्री पण्डित लेखराम जी आर्य मुसाफिर



अमर शहीद धर्मवीर पण्डित लेखराम जी का बलिदान दिवस प्रतिवर्ष पंजाब मे 6 मार्च को मनाया जाता है। विशेषकर आर्य समाज लेखराम नगर कादियां मे प्रतिवर्ष विशेष उत्सव किया जाता है। वैसे इस बार यह दिन सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पर्व सूचि के अनुसार फाल्गुन सुदी तृतीया ता. 20 2 88को पड़ता था परन्तु पंजाब मे चिरकाल से 6 मार्च को ही अमर शहीद प लेखराम का बलिदान दिवस मनाया जाता है। इस लिए लेखराम स्मारक ट्रस्ट कादियां की ओर से 4 5 6 मार्च को ही यह दिन उत्सव क रूप मे मनाया जा रहा है।

इसलिए 6 मार्च को सभी आर्य समाजों मे पण्डित लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया जाए। पाठकों के लाभार्थ पण्डित जी का संक्षिप्त जीवन परिचय "बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रन्थ" से लेकर दिया जा रहा है। —सह-सम्पादक

ससार भावमय है। ससार केवल भाव का प्रसार है। भाव ही ससार मे शासन करते हैं। मानव मन मे प्रथम भाव का ही अविर्भाव होता है उसके अनुसार ही वह क्रिया मे प्रवत्त होता है। साधारण मनुष्यो के मानसरोवरो मे भावो के आविर्भाव-तिरोभाव की तरगें सदा उठती रहती हैं। उनके बहुत से भाव दरिद्रों के मनोरथों के समान उत्पन्न होते ही विलीन हो जाते हैं, किन्तु महापुरुषों के भाव कार्य परिणत हुए बिना नहीं रहते। महापुरुषो के भाव तो ससार मे हलचल मचा देते हैं जगत की बड़ी-क्रान्तियो के कारण महापुरुषो के भाव ही हुए हैं। ससार के सारे मतमतान्तर महापुरुषो के विविध भावो का ही फल हैं। जब किसी महापुरुष के हृदय पर किसी भाव का बलपूर्वक आघात होता है तभी वह ससार मे प्रचार पाता है और किसी विशेष मत का रूप धारण करता है। नाना मतो की सस्थापना यही प्रक्रिया और इतिहास भी यही है किन्तु भावो के आघात प्रतिघात का प्रभाव भावुक हृदयो पर ही चिरास्थायी होता है और इस लिए ससार मे जितने परिवर्तन विप्लव तथा क्रातिया हुई हैं वे सब भावुक महापुरुषो द्वारा ही हुई हैं जनसाधारण ऐसे भावुक महापुरुषो को उन्मत्त व पागल कह कर हसता है और वे वस्तुत अपनी धुन मे उन्मत्त या मस्त रहते है। ससार के इतिहास को बनाने वाले विविध धर्मों के सस्थापक अपने विचारो के पीछे पागल बने हुए अपनी धुन के पक्के ऐसे ही उन्मत्त महानुभाव थ। यदि धर्म सस्थापको की जीवनियो का मनन किया जाए तो यह विशेषता उन सब म सामान्य रूप स उपलब्ध होगी। बुद्ध ईसा, मुहम्मद कबीर, दयानन्द, गाधी सभी अपने विचारो के प्रचार मे उन्मत्त प्रतीत होगे। उन के सिद्धान्तो का प्रसार भी ससार मे उनके भावुक अनुयायियो के द्वारा हुआ है। बुद्ध के आनन्द आदि प्रमुख भिक्षु ईसा क पितरस आदि हौवारी महम्मद के अत्युत्साही (जोशीले) अली और उमर आदि खलीफ इसके उत्तम उदाहरण हैं। इसी भान्ति श्री प लेखराम भी महर्षि दयानन्द के अ यन्त भावुक अनुयायी थे।

आर्य समाज म तो कोई भी ऐसा व्यक्ति न होगा जो धर्मवीर प लेखराम आर्य-पथिक के नाम और काम को न जानता हो किन्तु आर्य समाज से बाहर भी करोडो मनुष्य प लेखराम के नाम से परिचित हैं। प लेखराम की भावुकता ही सब साधारण मे उनके इस परिचय की मूल कारण बनी थी।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य पथिक पं. लेखराम का बलिदान दिवस

पं. लेखराम जी जब महर्षि दयानन्द के जीवन वृत्तान्त की सामग्री एकत्र करने के लिए देश में घूम रहे थे। तब जीवन वृत्तान्त की सामग्री एकत्र करना तो एक प्रत्यक्ष निमित्त था। पण्डित जी की क्रियाएं केवल उतने कार्य तक परिमित कैसे रह सकती थीं। उनके हृदय में प्रचार की अग्नि जल रही थी। जहां जाते थे व्याख्यानों की झड़ी लगा देते थे। बीच बीच में शास्त्रार्थ भी होते थे। साथ साथ लेखन का कार्य भी चलता जाता था। आर्य पथिक जैसे अनथक वक्ता थे वैसे ही अनथक लेखक भी थे। अपनी थोड़ी सी आयु में उन्होंने जितने व्याख्यान दिये और ग्रन्थ या लेख लिखे, उन्हें देख कर आश्चर्य होता है। ऐसा अनुभव होने लगता है कि शायद जीवन का एक क्षण भी उन्होंने अपना नहीं समझा था। सब कुछ महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के अर्पण कर दिया था।

उनके लेखन व ग्रन्थ कार्यों को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है। पहले हिस्से में खण्डनात्मक ग्रन्थ रखे जा सकते हैं जिनमें सामान्य रूप से इस्लाम और विशेषत अहमदिया सम्प्रदाय के आचार्य मिरजा गुलाम अहमद कादियानी की कड़ी आलोचना की गई थी। पण्डित जी उर्दू, फारसी के विद्वान थे। उनका उर्दू लेखन में बड़ा रौब था। संस्कृत का भी उन्होंने अच्छा अभ्यास कर लिया था। इस कारण पण्डित जी के लेखों में युक्ति प्रमाण और व्यंग्यों का बहुत सुन्दर मिश्रण रहता था। इस श्रेणी के ग्रन्थ में नुसखा खब्त अहमदिया' और तकजीब बुराहीन अहमदिया' ग्रन्थ विख्यात पुस्तक थी। ईसाई धर्म के सम्बन्ध में भी आपने कई लेख लिखे। दूसरी श्रेणी के ग्रन्थ और लेख अपने ढंग के अनूठे थे वे थे अनुसन्धानात्मक। पहले ग्रन्थ का नाम था सृष्टि का इतिहास। इसमें तार्किक और शास्त्रीय अनुसन्धान के आधार पर भारत के प्राचीन इतिहास की कई घटनाओं का विवरण दिया गया था। दूसरे ग्रन्थ में आवागमन के पक्ष में युक्तियों के अतिरिक्त विपक्षियों द्वारा किये गए आक्षेपों के उत्तर भी दिए गए हैं। पुनर्जन्म के पक्ष में 27 युक्तियां दी गई हैं। इन दोनों ही ग्रन्थों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लेखक ने अपने शास्त्रों के अतिरिक्त बीसियों अंग्रेजी के ग्रन्थों से भी लम्बे लम्बे उद्धरण दिये हैं जो अधिक आश्चर्यजनक है क्योंकि पण्डित जी अंग्रेजी बिल्कुल नहीं जानते थे। वह दूसरों से अंग्रेजी की पुस्तक और अखबार सुना करते थे और उनमें से जिन उद्धरणों की आवश्यकता होती थी उसका अनुवाद करा लेते थे। कभी कभी एक उद्धरण के अनुवाद तीन तीन व्यक्तियों से कराते थे, और उनकी तुलना करके जिसे अधिक प्रामाणिक समझते थे, उसे पुस्तक में देते थे। उनके परिश्रम को देख कर आश्चर्य होता है। जो व्यक्ति रात दिन भ्रमण करता रहे, जहां जाये वहां व्याख्यानों या शास्त्रों में व्यस्त रहे वह अनुसन्धान से भरे ग्रन्थ लिख सके और वह भी आयु केवल उनतालीस वर्षों में। इस इच्छा शक्ति का चमत्कार ही समझना चाहिए।

खण्डनात्मक लेखों में पण्डित जी की भाषा बहुत जोरदार रहती थी। ओज उनका स्वाभाविक धर्म था। जब वह पेशावरी साफा, बन्द गले का कोट और पंजाबी ढंग का पाजामा पहन कर निकलते थे, तब देखने वालों को यह बिना कहे ही भान हो जाता था कि वह असाधारण व्यक्ति हैं। स्वस्थ शरीर, शेर जैसा गम्भीर स्वर और तेज से चमकती हुई आंखों को देख कर उनकी कार्य शक्ति का अनुमान लग जाता था। प्रसिद्ध शिष्टाचार या तकल्लुफ जैसी वस्तु उनके पास भी नहीं फटक सकती थी। एक बार वह उत्तर प्रदेश में प्रचार के दौरे पर गए। वह खाना खा चुके और थाली में हाथ खींच लिया, तब भी शिष्टाचार के नियम के अनुसार परोसने वाले सज्जन ने खाना देने का आग्रह जारी रखा। यह बात पण्डित जी को बहुत अखरी और उन्होंने परोसने वाले को डांटते हुए कहा कि क्या मैं झूठ कहता हूं कि मुझे और भूख नहीं है।

एक दूसरे अवसर पर भोजन के बाद बिचारे गृहपति ने सभ्यता के विधि-विधान का पालन करते हुए पान पेश किया। आपने डांट लगाई, "क्या मैं बकरी हूं जो पत्ते खाऊंगा।" यज्ञ में बैठे हुए महाशय हाथ में चन्दन का रस लेकर आपके माथे पर लगाने लगे। आपने अपना हाथ आगे करते हुए कहा, "मेरे हाथ पर चन्दन लगा दो, माथे पर लगाओगे तो मुझे जुकाम हो जायेगा।"

लेखों और पुस्तकों के प्रकरण में पण्डित जी की इन विशेषताओं की चर्चा इसलिए की है कि उनके स्वभाव का यथार्थ रूप प्रकट हो जाए। उनके व्यवहार में एक विशेष खुरदरापन था जो वस्तुत उनके अत्यन्त सरल परन्तु ओजस्वी हृदय का परिणाम था। उन पर कवि का यह कथन पूर्ण रूप में लागू होता था —

> वज्रादपि कठोराणि मृदूनि
> कुसुमादपि।
> लोकोत्तराणां चेतांसि को हि
> विज्ञातुमर्हति॥

असाधारण मनुष्यों के चित्त वज्र से भी कठोर परन्तु फूल से भी अधिक कोमल होते हैं। उनके रहस्य को कौन समझ सकता है। उनके भाषणों के समान लेखों में भी भावों की सरलता के साथ कहीं-कहीं भाषा की कठोरता मिश्रित दिखाई देती है।

पं. लेखराम जी कई मासिक पत्रों के सम्पादक रहे। जब वे पेशावर में नौकर थे तभी आपने 'धर्मोपदेश' नाम का मासिक पत्र निकाला था। वह कुछ दिन चल कर बन्द हो गया। जब नौकरी छोड़ कर आप आर्य समाज के प्रचार कार्य में तल्लीन हो गए, तब आप 'आर्य गजट' के सम्पादक बने। आर्य गजट का मुख्य उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन और विरोधियों के आक्षेपों का खण्डन करना था। थोड़े ही दिनों में सम्पादक के युक्तियुक्त ओजस्वी लेखों ने आर्यों और आर्येतरों के मन पर 'आर्य गजट' की धाक बैठा दी। ऋषि दयानन्द की जीवनी के लिए सामग्री संग्रह करते हुए जब आप अजमेर पहुंचे तब आर्य समाज की सफलता को सूचित करने के लिए 'आर्य विजय' नाम का सामयिक पत्र निकलवाया।

1893 में पण्डित जी की आयु 35 वर्ष की हो चुकी थी। उस वर्ष आप सभा से अवकाश लेकर घर गए और मरी पर्वत के एक गांव की कुमारी लक्ष्मी देवी से विवाह किया। सामान्य मनुष्यों के लिए विवाह जीवन का एक नया पड़ाव समझा जाता है जिसके पश्चात् उसकी दिनचर्या बदल जाती है। परन्तु आर्य पथिक साधारण मनुष्य नहीं थे। जीवन में परिवर्तन करने वाला विवाह तो बहुत पहले धर्म प्रचार की उग्र भावना से हो चुका था। लक्ष्मी देवी जी से उनका विवाह तो वैदिक आश्रम व्यवस्था की पूर्ति के लिए ही हुआ। विवाह के पश्चात् भी उन्हें केवल प्रचार की ही धुन थी। शायद कोई सप्ताह ऐसा हो जब घर पर गृहस्थों की तरह रहे हों। प्रचार के क्षेत्र में यत्र तत्र सर्वत्र गरजते हुए सुनाई देते थे। 1895 में आपके पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम सुखदेव रखा गया। परन्तु वह अधिक समय तक इस आर्य युगल को सुख न दे सका। लगभग एक वर्ष तक जीवित रह कर 28 अगस्त 1896 के दिन शिशु सुखदेव ने अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर दी। अभी बच्चे की माता रो रही थी कि एक समाज से बुलावा आ गया। आप बिस्तर बांध कर चल दिए। लक्ष्मी देवी को आश्वासन देने का काम पण्डित जी के मित्रों को करना पड़ा। लक्ष्मी देवी सचमुच देवी थी। वे अपने पति की ऊंची भावनाओं से अपरिचित नहीं थी। उनके मुंह से कभी किसी ने यह शिकायत नहीं सुनी कि वे परिवार की ओर ध्यान नहीं देते। विवाह के बाद उस देवी ने अपने आपको आर्य पथिक का ही एक आवश्यक अवयव मान लिया था। गृहस्थ हो जाने पर भी आर्य पथिक की यात्राओं में कमी नहीं हुई। जहां भी धर्म चर्चा का डंका बजता था वहां मोर्चे पर पण्डित जी दिखाई देते थे। यह उनके सम्पूर्ण सार्वजनिक जीवन की चर्या थी। मिरजा गुलाम अहमद ने कादियां से धमकी दी तो निर्भय सिपाही शत्रु के दुर्ग में जा धमका। हैदराबाद सिन्ध और बूंदी जैसे एक दूसरे से दूरस्थ स्थानों से जब यह समाचार मिले कि कोई आर्य धर्मावलम्बी विधर्म में जा रहा है तो आप तुरन्त वहां पहुंच गए और रक्षा कर ली। जब पंजाब में आर्य समाज के दोनों दलों में मांस भक्षण पर झगड़ा चला तब पं. जी अपनी प्रकृति के अनुसार पूरे जोर से मांस भक्षण के विरुद्ध आन्दोलन करने लगे। लाहौर में हो या जोधपुर में, जहां से आपको यह बू भी आ जाती मांस-भक्षण पर विवाद चल रहा है, वहां आप दौड़ कर पहुंच जाते और वाद-विवाद की कमान अपने हाथ में ले लेते। 1894 के पश्चात् आप यह भी सोचने लगे थे कि इस्लामी देशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करें।

इसी प्रकार की घटना जोधपुर में हुई। उसमें जहां आर्य पथिक की दृढ़ सिद्धान्त भक्ति का प्रमाण मिला, वहां इसका भी एक दृष्टान्त प्रकट हो गया कि सच्चे और झूठ विश्वास में क्या भेद होता है। जोधपुर के राजा कर्नल प्रताप-सिंह महर्षि दयानन्द के शिष्यों में से थे। उनकी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों में श्रद्धा थी परन्तु एक विषय में अन्य आर्य पुरुषों से मतभेद था। वे मांस भक्षण करते थे। इतना ही नहीं, वे यह भी कहते थे कि महर्षि दयानन्द क्षत्रियों द्वारा मांस-भक्षण को वेद विरुद्ध नहीं मानते थे। उनके पास दोनों पक्षों के विद्वान् जाते और अपनी सम्मति देते थे। धीरे धीरे यह चर्चा फैल गई कि कर्नल प्रतापसिंह को प्रसन्न करने और उनसे भेंट लेने का एक ही उपाय है कि उनके सामने वेद तथा शास्त्रों के प्रमाणों से क्षत्रियों के मांस-भक्षण का समर्थन किया जाए। कुछ सन्यासी और पण्डित जोधपुर जाकर जम गए। उनका यही काम था कि राजा साहब की हां में हां मिला कर पारितोषिक प्राप्त करें। इटावा के पं. भीमसेन शर्मा का नाम तीसरे कांड में आ चुका है। उनकी गिनती महर्षि के शिष्यों में की जाती थी। वे महर्षि के

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय—

धर्मवीर श्री पं. लेखराम जी की स्मृति में

6 मार्च को धर्मवीर श्री प लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया जाता है। आर्य समाज उन पर जितना भी गर्व करे कम है। उनके विषय में कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवन मे यह कहा था कि आर्य समाज में साहित्य निर्माण का कार्य कभी बन्द नही होना चाहिए। वह स्वय भी बहुत उच्चकोटि के लेखक थे और वक्ता भी थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र उर्दू भाषा मे लिखा था और इसी के साथ उनकी प्रसिद्ध पुस्तक कुलियात आर्य मुसाफिर मे भी आर्य समाज की विचारधारा को जनता तक पहुचाने मे एक महत्वपूर्ण योगदान दिया था। वह शुद्धि का कार्य अधिक किया करते थे और वह जानते थे कि कुछ मुसलमान उनके पीछे पड़े हुए हैं फिर भी उन्होने अपने इस कार्य को कभी बन्द किया था और अन्त मे उन्होने अपना बलिदान दे दिया था।

आज जिस बात की आवश्यकता है वह यह कि आर्य समाज के बलिदानियो के विषय मे समय-2 पर हम जनता को बताते रहे हैं, कि उन्होंने अपना बलिदान क्यो दिया था। आर्य समाज इस बात पर गर्व कर सकता है कि धर्म प्रचार के लिए जितने शहीद आर्य समाज ने दिए किसी दूसरी धार्मिक सस्था ने नही दिए महर्षि दयानन्द सरस्वती पहले बलिदानी थे जिनकी जबान बन्द करने के लिए उन्हे जहर दिया गया था। उनके पश्चात् प लेखराम जी दूसरे बलिदानी थे और फिर एक ऐसा क्रम शुरू हुआ जो किसी न किसी रूप मे चलता ही रहा। अब तक आर्य समाज मे तपस्वी, त्यागी और बलिदानी नेता आगे आकर इसका नेतृत्व करते रहे हैं। आर्य समाज प्रगति करता रहा है। अब यदि उसमे कुछ शिथिलता आ गई है तो उसका एक कारण यह भी है कि इसका नेतृत्व धीरे-2 उन स्वार्थी लोगो के हाथो मे आता जा रहा है जो आर्य समाज को कोई नई दिशा तो नहीं दे सकते केवल अपने स्वार्थ के लिए उसका प्रयोग करते हैं। श्री प लेखराम जी के बलिदान दिवस पर हम सब उन्हे अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करेंगे। इस समय हम सब को यह सकल्प करना चाहिए कि जिस उद्देश्य को सामने रख कर प. लेखराम जी ने अपना बलिदान दिया था। हम भी उसे पूरा करने का प्रयास करेंगे और उसके लिए जो भी त्याग करना पड़ेगा वह करेंगे। यदि प्रत्येक आर्य भी इस भावना से आर्य समाज की सेवा करें तो सम्भव है कि हम अब भी आर्य समाज को एक सक्रिय और सशक्त सस्था बना सकते हैं।

मेरी पजाब की सभी आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावो से प्रार्थना है कि वह रविवार 6 मार्च को प लेखराम का बलिदान दिवस मनाए और उस दिन अपने-2 सत्सग मे पण्डित जी के चरणो मे अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करें और यह सकल्प करें कि जिस उद्देश्य के लिए उन्होने अपना बलिदान दिया था। हम उसे पूरा करने के लिए तन, मन, धन से प्रयास करेंगे।

—वीरेन्द्र

आचार्य प्रियवृत जी का सन्मान

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई प्रति वर्ष किसी प्रतिष्ठित आर्य विद्वान् को उनके द्वारा लिखित उच्चकोटि के साहित्य के लिए सम्मानित करती है। पुरस्कार मे 21 हजार रुपये की राशि तथा प्रशस्ती पत्र एक शाल तथा एक चान्दी की ट्राफी दी जाती है। इस बार गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के विख्यात स्नातक आचार्य प्रियव्रत जी को सम्मानित किया गया है। मैं इसे सारे आर्य समाज का सम्मान समझता हू, क्योंकि आचार्य प्रियव्रत जी ने अपने साहित्य द्वारा आर्य समाज की जो सेवा की है वह बहुत कम व्यक्तियो ने की होगी। आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई ने ऐसे विद्वानो को सम्मानित करके एक ऐसी परम्परा डाल रखी है जिसके लिए वह सारी आर्य जनता के लिए धन्यवाद की पात्र है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से श्री प्रियव्रत जी को बधाई देता हू और आशा करता हू कि पहले की तरह भविष्य में भी वह अपने साहित्य और अपने व्याख्यानों द्वारा आर्य समाज की सेवा करते रहेंगे। परमपिता परमात्मा उन्हे लम्बी आयु दे, यह हम सब की प्रार्थना है।

—वीरेन्द्र

पंजाब में आर्य समाज–2

इसी क्रम के पिछले लेख मे मैंने जालन्धर की आर्य समाजो की गतिविधियो के विषय मे कुछ लिखा था। यह लेख इसलिए लिख रहा हू कि देहली मे बैठे हमारे कुछ बड़े-2 नेता यह कहते रहते हैं कि पजाब मे आर्य समाज का कोई काम नही हो रहा। गत दिनो शिवरात्रि पर्व के दिन जब हमने ऋषि-बोधोत्सव मनाया था उस दिन पजाब की प्राय: सभी आर्य समाजो मे यह उत्सव मनाया गया था। मुझे उस दिन अमृतसर की आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार के ऋषि बोधोत्सव को देखने का अवसर मिला था। यह आर्य समाज कुछ नव-युवको के हाथ मे है जिस लग्न और परिश्रम से वह इस समाज को चला रहे हैं। उसे देख कर प्रसन्नता होती है और साथ ही यह आशा भी बन्धती है कि आर्य समाज का भविष्य ऐसा धूमिल नही है जैसा कि कई लोग समझते हैं। इस अवसर पर कई बड़े-2 विद्वानो ने अपने विचार आर्य जनता के सामने रखे। कई दिन तक वहां यज्ञ होता रहा और इस समाज की ओर से इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को 5000 रुपया भी दिया गया। अमृतसर मे हमारी दो आर्य समाजें हैं, आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द और आर्य समाज शक्तिनगर दोनो ही बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही हैं जो वातावरण आजकल अमृतसर मे पैदा हो रहा है उसमे आर्य समाज के काम को चलाना कोई आसान नही फिर भी हमारी यह आर्य समाजे ऐसे वातावरण मे भी अपने कर्त्तव्य को पूरा कर रही हैं। इसके लिए मे उन्हे हार्दिक बधाई देता हू।

भठिण्डा मे भी हमारी आर्य समाज बहुत सक्रिय कार्य कर रही है और उसका कारण भी यही है कि उसका नेतृत्व भी कुछ युवको के हाथ मे है उसके नए प्रधान श्री ओमप्रकाश मगला आर्य समाज मे एक नया जीवन लाने का प्रयास कर रहे हैं क्यो कि वह स्वय शिक्षा के क्षेत्र मे काम करते हैं। इसलिए उनका यह भी प्रयास रहता है कि विद्यार्थियो और शिक्षको का अधिक से अधिक सहयोग आर्य समाज को मिल सके। पठानकोट मे भी हमारी आर्य समाज बहुत सक्रिय है वहा की आर्य शिक्षा सभा ने बच्चो का एक नया स्कूल शुरू किया है। इस समय तक जो लोग अपने बच्चो को ईसाई स्कूलो मे भेजा करते थे अब आर्य समाज के इस स्कूल के खुल जाने पर कई लोगो ने अपने बच्चे वहा भेजना बन्द कर दिये हैं और अब वह इस स्कूल मे भेजने लगे हैं। मुझे 21 फरवरी को इस स्कूल का कार्यक्रम देखने का अवसर मिला। छोटे-2 बच्चो के मुह से गायत्री मन्त्र और आर्य समाज के नियमो को सुन कर हार्दिक प्रसन्नता हुई और एसा प्रतीत हो रहा था कि आर्य समाज की एक नई पीढ़ी तैयार हो रही है। पठानकोट की मेन बाजार आर्य समाज अपने प्रधान श्री लालचन्द जी महाजन के सरक्षण मे एक औषधालय चला रही है। इसका सारे शहर पर बहुत प्रभाव है और वह लोग भी इसके लिए दान देते हैं जो आर्य समाजी नही हैं। इस आर्य समाज मन्दिर से प्रात कैसेट के द्वारा वेद मन्त्रो का पाठ होता है जिसे सारा शहर सुनता है।

मुकेरिया के पास तलवाड़ा एक छोटी सी जगह है। वहा की आर्य समाज भी एक सक्रिय आर्य समाज है वह भी कुछ न कुछ करती ही रहती है पिछले दिनो उन्होने भी ऋषि बोधोत्सव समारोह तथा दूसरी कई और समाजो मे भी यह पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया।

यह सब कुछ मैंने इसलिए लिखा है कि पजाब सभा के विरुद्ध यह जो प्रचार किया जा रहा है वह कितना निराधार है और किस प्रकार एक स्वार्थ की भावना से किया जाता है, इसका कुछ अनुमान लग सके। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि पजाब की स्थिति क्या है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पास आज बहुत थोड़े उपदेशक हैं फिर भी हम किसी न किसी प्रकार अपना काम चला रहे हैं और मुझे इस बात की प्रसन्नता भी है और गर्व भी है कि पजाब की जो स्थिति है उसकी परवाह न करते हुए भी आर्य समाजें अपना काम करती रहती हैं।

—वीरेन्द्र

एक महान् व्यक्तित्व

धर्मवीर पं. लेखराम आर्य पथिक

लेखक—श्री रोशनलाल जी शर्मा-मन्त्री आर्य समाज
स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना

संसार की उन्नति का इतिहास सदा ही महापुरुषो की जीवन गाथाओ से तैयार होता रहा है। जिन महानुभावो ने धर्म जाति व राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया, यहा तक कि अपने धार्मिक सिद्धान्तो की रक्षा के लिए अपने प्राणो की आहुति देने मे भी सकोच नही किया, उनकी धर्म के प्रति लग्न ने उनके विचारो के प्रसार के लिए बिजली से भी बढ कर कार्य किया है। प्रत्येक जीवित समाज व राष्ट्र अपने जीवन का प्रमाण इस प्रकार के बलिदानो के रूप मे ही प्रस्तुत किया करता है। जिस समाज ने जितने अधिक बलिदान दिये, उतना ही स्वर्णिम इतिहास उस समाज का बनता चला गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक ज्योति से भारत वर्ष मे फैले अन्धकार को दूर किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अभूतपूर्व बलिदान के बाद वैदिक प्रकाश को विश्व मे फैलाने के लिए आर्य जाति को विधर्मी होने से बचाने के लिए पण्डित लेखराम जी ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यहा तक कि उन्होने छ. मार्च 1897 ई की सन्ध्या वेला मे अपने प्राणो का बलिदान देकर अपने सिद्धान्तो की सत्यता को प्रकट किया।

जिस प्रकार सूर्य भौतिक प्रकाश से भौतिक जगत् को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार से प श्री लेखराम जी ने अपनी बुद्धि के प्रकाश से परिपाटियो को उज्ज्वल बनाया। "महाजना येन गत: स: पन्था" मार्ग वही है जिस पर बडे आदमी चलते हैं।

महान पुरुषो का जीवन हम को यह स्मरण दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं और मरने के बाद ससार-सागर के काल रूपी रेतीले तट पर ऐसे पद चिन्ह छोड सकते हैं, जिनका दूसरे लोग अनुसरण कर सकें। प लेखराम जी का जीवन इस कसौटी पर पूरा उतरता है।

श्री पण्डित जी का जन्म 8 चैत्र सम्वत् 1915 विक्रमी शुक्रवार के दिन पण्डित तारासिंह जी के घर सैयदपुर ग्राम तहसील चकवाल, जिला जेहलम मे हुआ था। पाचवें वर्ष मे आपको विद्या प्राप्ति के लिए फारसी भाषा के विद्यालय मे बिठाया गया। पन्द्रह वर्षों तक लेखराम एक सामान्य विद्यार्थी थे, तथापि लेखराम पढने लिखने मे अधिक उत्साही थे और उनकी स्मरण-शक्ति दूसरो से बढ चढ कर थी। 17 वर्ष की आयु मे आप पेशावर में पुलिस मे भर्ती हुए। उन दिनो मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी, हिन्दुओ विशेष कर आर्य समाज के विरुद्ध बडे विषैले लेख प्रकाशित किया करते थे और आर्यों के विरुद्ध कई पुस्तकें भी लिख चुके थे। जब पण्डित जी ने उन पुस्तको को पढा तो आपने उन पुस्तको का युक्ति-युक्त एव सन्तोषजनक उत्तर देने के लिए निश्चय कर लिया। इस शुभ कार्य की पूर्ति के लिए 16 मई 1880 को आप अजमेर मे सेठ फतेह मल की वाटिका मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से मिले। वहा आपने उनके उपदेशामृत का पान किया जिससे आपके सब सशय निवृत्त हो गए।

महर्षि के प्रथम एव अन्तिम दर्शन करने के पश्चात् आप पेशावर आ गए। बाद मे नौकरी से त्याग पत्र देकर लाहौर पहुच गए। कुछ समय तक आप फिरोजपुर मे "आर्य गजट' के सम्पादक बन कर आर्य समाज की सेवा करते रहे तथा उसके बाद आप आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक बन गए।

पण्डित जी ने छोटी बडी 33 पुस्तके लिखी। आपको छ: भाषाओ हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी एव गुरमुखी का ज्ञान तो था ही, किन्तु अग्रेजी न जानते हुए भी आपने अनेक अग्रेजी पुस्तको के प्रमाण दिए। आपकी लेखन शैली बहुत रोचक और सर्व-प्रिय है। इसके साथ ही उनकी रचनाओ का प्रत्येक शब्द सच्चे हृदय से निकला हुआ है और वह पाठको के हृदय एव मस्तिष्क पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालता है।

मुसलमान जब आपकी पुस्तका का उत्तर न दे सके तो उन्होंने न्यायालयो के द्वार खटखटाए। दिल्ली के तत्कालीन मुख्यायुक्त श्री कैप्टन डैविस ने अपने निर्णय मे लिखा था—'प लेखराम की कथन शैली ऐसी अनोखी है कि वह कभी भी स्वत दूसरो पर आक्षेप नहीं करते और उत्तर भी इतने उचित होते हैं कि कानून के पंजे मे आना दूर रहा, हर न्याय प्रिय व्यक्ति को इनकी प्रशसा करनी पडती है। मैं विश्वास करता हू कि पण्डित लेखराम के विरुद्ध कोई भी अभियोग सिद्ध नही किया गया। अत: अभियोग को भारतीय दण्ड विधान की धारा 403 के अनुसार खारिज करता हू।" इसी प्रकार पजाब पुलिस के सुपरिटेन्डैंट साहब ने कहा था कि प लेखराम अपने धर्म का उत्साह से भरपूर रक्षक नजर आता है।"

आप एक महान् तपस्वी और त्यागी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक के रूप मे आपको 25 रुपए मासिक मिलते थे। जब आपका विवाह हुआ तो सभा ने स्वय 30 रुपए मासिक कर दिए। 28-6-1895 ई. को आपने अपने जीवन का 2000 रुपये का बीमा कराया। (तब श्री महात्मा मुन्शी राम स्वामी श्री श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने आपको 35 रुपये मासिक कर दिए। जब यह समाचार आपको मिला तो आपने लिखा कि मेरी पत्नी एव माता जी के लिए 30 रुपये मासिक ही पर्याप्त है। मुझे भोजन आर्य समाज से मिल जाता है। अत: मुझे वेतन वृद्धि स्वीकार नही है। जहा आप आर्य समाज के प्रचार के कार्य के लिए जाते थे और वहां यदि आपका कोई निजी कार्य होता था तो आप उस स्थान का मार्ग व्यय सभा से या आर्य समाज से नही लेते थे। आज के उपदेशको के लिए आपका जीवन अनुकरणीय है।

प. लेखराम जी को मुसलमानो या ईसाईयो से शास्त्रार्थ की कोई सूचना मिलते ही वे वहा अवश्य पहुच जाते थे। यदि प्रतिनिधि सभा की ओर से कोई आक्षेप होता तो आपका उत्तर होता था कि मुझे शास्त्रार्थ के दिनो का कोई पैसा मत देना, अर्थात् मासिक नियत राशि से काट लेना। सभा के अधिकारियों को चुप कराने का यह उनका अचूक साधन था।

3 मार्च सन् 1935 ई के 'प्रकाश' लाहौर मे आर्य समाज लुधियाना के तत्कालीन मन्त्री बाबूराम जी गुप्ता ने प जी के सम्बन्ध मे स्वर्ण अक्षरो मे लिखने योग्य एक घटना को प्रकाशित कराया—अपने बलिदान से 4 मास पूर्व लुधियाना समाज के उत्सव पर प जी के पेट मे ऐसी जोर की पीडा हुई कि उनको उत्सव मण्डप छोडना पडा। चिकित्सार्थ आये डाक्टरो ने उस वीर पुरुष को अत्यन्त व्याकुल देखा, व पता चला कि व्याकुलता उन्हे शारीरिक पीडा के कारण नही है, बल्कि उन्हे यह विचार पीडित कर रहा है कि जो मुसलमान व्याख्यान सुनने आए हैं वे सब निराश होकर लौट जाएगे। डाक्टरो ने इजैक्शन द्वारा उन्हे व्याख्यान देने योग्य कर दिया तो वहा दिया गया उनका व्याख्यान अभूतपूर्व था। व्याख्यान क्या था सिंह गर्जना ही थी।

पण्डित लेखराम जी का सबसे महान् कार्य ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र की खोज करना व लिखना रहा है। सभा ने इस कार्य के लिए आपको ही उपयुक्त समझा और इस गुरुतर कार्य को करते करते ही आपने मृत्यु का वरण किया ऋषि जीवन के साथ आपका यशस्वी नाम भी सदैव अमर रहेगा।

आपकी हिन्दुओ को विधर्मी होने से बचाने की लग्न व धुन कितनी पक्की थी, वह उपर्युक्त घटना से पता चलता है। आप कही से प्रचार करके लौटे तो महात्मा जी ने कहा कि मुस्तफाबाद से तार आया है कि वहा पाच हिन्दू मुसलमान बनने लगे हैं। किसी उपदेशक को शीघ्र भेजो। आपको यह भी सूचना दी गई कि आपका पुत्र रोग ग्रस्त है, आप जाकर उसकी देखभाल करें। तब पण्डित जी ने कहा—"मैं हकीम सन्तराम को तार देता हू, वे वहा चले जाएगे। ऐसे अवसर पर मेरा मुस्तफाबाद जाना अति आवश्यक है। मुझे अपने एक पुत्र से हिन्दू जाति के पाच अधिक प्यारे है।

श्री पण्डित जी निर्भयता के अवतार थे। एक बार जब पेशावर आर्य समाज के सदस्य वहां के तहसीलदार को आर्य समाज का प्रधान बनाने लगे तो आपने उनकी उपस्थिति मे कहा था कि 'यह मास खाते हैं और शराब भी पीते हैं, ऐसा व्यक्ति प्रधान नही होना चाहिए।' आप मे एक दो गुण नहीं थे, अपितु बहुत सी विशेषताए थी जिन्होने आपके नाम व काम को चार चान्द लगा दिए। यदि सक्षेप मे आपकी महत्ता का वर्णन करना हो तो यू निवेदन किया जा सकता है। आप साधारण मानव नही, अपितु गुणो के कारण ही जहा आप स्वय उन्नति के शिखर पर पहुच गए वहा आपने वैदिक धर्म की जडें भी पाताल तक पहुचा दी।

6 मार्च 1897 को जब श्री पण्डित जी मुलतान मे आर्य समाज के उत्सव से वापिस आकर लाहौर पहुचे तो एक नीच, अधर्म एव अन्ध विश्वासी व्यक्ति ने छल कपट से आपके निवास स्थान पर आकर आपके पेट मे छुरा घोप दिया। जिसके कारण आपकी आतडिया बाहर निकल आई। श्री पण्डित जी को हस्पताल ले जाया गया। छुरा लगने के पौने दो घण्टे के पश्चात् डाक्टर साहिब आए और निरन्तर दो घण्टो तक पण्डित जी की कटी हुई आतो को सीते रहे। डाक्टर पैरी आश्चर्य चकित थे कि दो घण्टो तक जिनके अन्दर से रक्त बहता रहा हो वह कैसे जीवित रह सकता है। 1.30 बजे रात्रि तक पण्डित जी सचेत रहे और वेद-मन्त्र उच्चारण करते रहे। मृत्यु-शैय्या पर पडे हुए आपने यह नही कहा कि मेरे पीछे मेरी माता जी व धर्मपत्नी को दुख न होवे देना। यदि कोई अन्तिम आदेश दिया तो यही और केवल यही कि 'आर्य समाज द्वारा लेखन कार्य बन्द नही होना चाहिए।

प्यारे वीर। यदि कई बार मानव शरीर धारण करके आपके चरणों में सिर कटावें तो भी हम आपके ऋण से उऋण नहीं हो सकते।

परमपिता से हम प्रार्थना करते हैं कि श्री पण्डित जी के पद चिन्हो पर चलने और उनके अन्तिम आदेश का पालन करने की शक्ति हमें भी प्रदान करें।

(2 पृष्ठ का शेष)

वेद भाष्य आदि ग्रन्थों के निर्माण में लेखक का कार्य करते थे। उस समय के पत्र-व्यवहार के देखने से प्रतीत होता है महर्षि अपने इस शिष्य के व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं थे। वे उसे पूरा विश्वास-पात्र नहीं मानते थे। कर्नल प्रतापसिंह के सलाहकार साधुओं ने अपने पक्ष को पुष्ट करने के लिए पं. भीमसेन को जोधपुर निमन्त्रित किया। भीमसेन जी उससे पूर्व अपने मासिक पत्र 'आर्य सिद्धान्त' में मांस-भक्षण का खण्डन कर चुके थे। जोधपुर पहुंच कर मांस-भक्षण के पक्ष में सम्मति देने में थोड़ा बहुत संकोच किया परन्तु अन्त में इस रूप में सहमति प्रकट कर दी कि यदि क्षत्रिय हानिकारक पशुओं को मार कर उनका मांस खा लें तो [illegible] पाप नहीं। यह समाचार जब [illegible]राम जी को मालूम हुआ तो वे तुरन्त जोधपुर जा पहुंचे और भीमसेन के कन्धे पर जोर से हाथ मारते हुए कहा, 'ईश्वर जानता है, यदि तूने महाराज के पास जाकर साफ-साफ यह न कह दिया कि मांस-भक्षण वेद-विरुद्ध है, तो तुझे आर्य समाज में या किसी और धार्मिक सोसायटी में मुंह दिखलाने लायक न छोडूंगा।" भीमसेन जी पर प. लेखराम जी की सिंहगर्जना का ऐसा प्रभाव हुआ कि मन का लोभ दब गया और भय प्रधान हो गया। दूसरे दिन महाराज के पास विदा के लिए जाने के समय शर्मा जी ने दृढ़ता से कह दिया कि मांस-भक्षण वैदिक धर्म के विरुद्ध है।

[illegible] अमेरिका के शिकागो [illegible] की प्रदर्शिनी की तैयारियां हो रही [illegible] आर्य समाज की ओर से कोई विशेष [illegible] भेजने का विचार हो रहा था। लेखराम ने एक अपील छपवा कर मार्ग-व्यय [illegible] अंग्रेजी के सुयोग्य विद्वान् की सेवा मांगी। यद्यपि कोई तैयार न हुआ परन्तु इससे उनका धर्म के प्रति उत्कट प्रेम सिद्ध होता है। यदि वे अंग्रेजी जानते होते तो अवश्य अमेरिका जा पहुंचते।

6 अप्रैल 1894 को सूर्य ग्रहण के मेले पर कुरुक्षेत्र में आर्य समाज की ओर से प्रचार का प्रबन्ध किया गया। महात्मा मुंशीराम के साथ पण्डित लेखराम जी वहां गये। वहां पर उनका व्याख्यान बड़ा चित्ताकर्षक हुआ जिसका विषय था—धर्म की असलियत और उस का आन्दोलन। शंका समाधान भी वही करते थे। 7, 8, 9 अप्रैल को करनाल आर्य समाज के उत्सव पर दो व्याख्यान दिये और शंका समाधान की। पण्डित लेखराम के पांव में एक फोड़ा हो गया था जो चलने फिरने से खराब हो गया था। पण्डित जी ने कुछ सभासदों से पूछा किसी आर्य डाक्टर के पास मुझे ले चलो तो फोड़ा दिखाऊं। एक अधिकारी ने [illegible] मुसलमान का नाम लिया तो [illegible] पूछा—क्या कोई आर्य डाक्टर नहीं है? इस पर किसी आर्य सज्जन ने कहा—इलाज में आर्य अनार्यपना क्या पूछना है? यह सुनते ही आर्य पथिक की आंखें लाल हो गईं और बोले जाक आर्य समाज है। एक डाक्टर को भी आर्य नहीं बना सकते। 'इस पर महात्मा मुन्शीराम जी ने हंस कर कहा—क्या जिस समाज का कोई डाक्टर सदस्य न हो तो क्या उसे आर्य समाज ही नहीं कहा जाए। लेखराम ने कुछ गम्भीर होकर कहा-जिस आर्य समाज ने डाक्टरी स्कूल के अध्यापकों और विद्यार्थियों को आर्य नहीं बनाया उसने क्या खाक काम किया? जड़ को सींचने से ही वृक्ष हरा होता है।"

पण्डित जी सन्ध्या वन्दन मे बड़े पक्के थे। एक बार इन्हीं महात्मा मुन्शीराम जी के साथ शिकरम में लुधियाना से जगराव जा रहे थे, मार्ग मे पानी लेकर शौच गये। लौटने पर पता लगा कि हाथ पैर धोने और कुल्ला करने के लिए पानी नहीं है। सन्ध्या का समय हो चुका था। पण्डित जी सन्ध्या करने बैठ गये। जब सन्ध्या समाप्त कर चुके तब एक व्यक्ति ने दिल्लगी में पूछा-पण्डित जी! क्या पेशाबरी सन्ध्या कर चुके। पण्डित जी ने गम्भीर स्वर में कहा—तुम पापी हो जो बिना पानी मिले यज्ञ नहीं कर सकते। भोले भाई! स्नान कर्म है, हुआ या न हुआ। परन्तु सन्ध्या धर्म है और उसका न करना पाप है। पण्डित जी व्यायाम भी नित्य किया करते थे।

पण्डित जी ज्वर से निर्बल हो, सफर से थके हुए हों, पूर्ण मृत्यु शय्या पर लेटा हो परन्तु कहीं से समाचार आ जाए कि अमुक व्यक्ति को मुसलमान होने से बचाने के लिए आइये, वे तत्काल चल देते थे। उन्होंने जो अपनी दिनचर्या बनाई थी, उसमे यह भी लिखा था—"कटु वचन तथा झूठ से अलग रहना और "दीन-ए-इसलाम" की विषयुक्त शिक्षा के बुरे प्रभाव को दूर करने का प्रयत्न, और इसी प्रकार दूसरे मतों का भी, और वैदिक धर्म का प्रचार। ईश्वर मेरी इच्छा को आप पूर्ण कर दो।" यह पंक्तियां स्वयं लेखराम के धर्म सेवा की लग्न को बोल कर कह रही हैं। शुद्धि की तो अनेक घटनायें हैं। एक यह है।

एक बार इन्हें कहीं से पता लगा कि पायल (पटियाला रियासत) में अमुक व्यक्ति आर्य धर्म को छोड़ रहा है। आप ट्रेन पर सवार हो चल दिए। जब गाड़ी लुधियाना से आगे चली, एक व्यक्ति ने इन से पूछा कि आप कहां जाएंगे? उन्होंने कहा—चावा पायल। उसने कहा वहां तो गाड़ी ठहरती नहीं। इन्होंने कहा अच्छा देखो मुझे तो बड़ा जरूरी काम है। जब गाड़ी चावा-पायल स्टेशन पर पहुंची और न रुकी तब आपने बिस्तर बाहर फैंका और गाड़ी से कूद गये। कपड़े फटे और कुछ चोट भी आई। वहां से चल कर पायल पहुंचे और समाज के मन्त्री से कहा-अमुक व्यक्ति के पास चलो। दैवयोग से वह व्यक्ति मिल गया। पण्डित जी ने उससे कहा कि मैंने सुना है कि आप हिन्दू धर्म को छोड़ कर अन्य मत में जा रहे हैं। कृपया आप बताइये कि इस मत में क्या दोष है तथा उस मत में क्या विशेषता है जिस से आप इसे छोड़ कर उसे ग्रहण कर रहे हैं। उस व्यक्ति ने कहा पहले आप यह बताएं कि आप की यह दशा क्यों है? कपड़े फटे हैं, शरीर पे चोट के निशान है। पण्डित जी ने कहा—आप के लिये आया था। गाड़ी स्टेशन पर नहीं रुकी, अतः कूद कर उतरा हूं। उसने उत्तर दिया पण्डित जी! जिस मत में आप जैसे जान पर खेलने वाले पुरुष हैं, मैं उस धर्म को नहीं छोड सकता।

लेखराम जी को दुनिया की परवाह नहीं थी। अपनी आत्मा को देखते थे। एक बार कहीं से प्रचार करते हुए जालन्धर आए। वर्षा मे कपड़े भीग चुके थे। धोने और सुखाने का समय नहीं था। दूसरे ही दिन जरूरी प्रोग्राम पर जाना था। उन्होंने महात्मा मुंशीराम जी से कपड़े लिये। साफ कमीज को अन्दर पहना और मैले को ऊपर पहन लिया। उन्होंने पूछा—पण्डित जी यह क्या किया। लेखराम जी ने उत्तर दिया—दुनिया की परवाह मुझे थोड़ी ही है। वह तो यही कहेगी कि कपड़े मैले हैं। शरीर के साथ का कपड़ा स्वच्छ होना चाहिए, मैले कपड़े पहनने से तो मे ही रुग्ण होऊंगा। बाहरी टीपटाप की उन्होंने कभी आवश्यकता अनुभव नहीं की। आन्तरिक स्वच्छता का ध्यान अधिक था। कपड़ों के बनाव चुनाव को जनानापन कहा करते थे।

उन में मितव्ययता भी और ईमानदारी। जहां कुली से असबाब उठा कर ले जाने में बचत होती वहां इक्का गाड़ी नहीं करते थे। जहां कहीं उतरते थे इनका काम भी होता वहां सभा से किराया नहीं लेते। एक बार सभा के कार्यालय मे पण्डित जी का बिल आया जिस में उन्होंने सहाले से लाहौर तक का किराया तो लिखा था। लाहौर से साहला तक का नहीं लिखा था। मन्त्री के पूछने पर आपने उत्तर दिया—लाहौर से सहाले तक का किराया मैंने जानबूझ कर नहीं लिखा क्योंकि वहां आधा कुछ मेरा निज का काम था और ऐसा किराया मैं वसूल नहीं किया करता।

आर्य पथिक में किस प्रकार की निर्भयता थी और वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए उनका हृदय किस प्रकार कार्य कर रहा था—इस सम्बन्ध में एक दो घटनाओं का जिक्र करना अप्रासंगिक न होगा। पण्डित लेखराम मार्च 1896 में अजमेर के उत्सव में सम्मिलित हुवे। नगर कीर्तन में उनके व्याख्यान और बात चीत से कुछ मुसलमान भड़क उठे। ख्वाज चिश्ती की दरगाह पास थी आर्य भाई डर कर भाग गये। लेखराम अकेले रह गये। उन्होंने कहीं से सुना था कि विधर्मी के धर्म मन्दिर से तीन कदम की दूरी पर प्रत्येक धर्म प्रचारक को अपने मत के समर्थन का अधिकार है। आप दरगाह के द्वार पर पहुंचे और उच्च स्वर से कदम गिनना शुरू किया। मुसलमान इनकी हरकतों को अचरज की निगाह से देख रहे थे। तीसरे कदम पर पहुंच कर लेखराम ने धर्म प्रचार शुरू कर दिया। कब्रपरस्ती और मर्दुमपरस्ती का जबरदस्त खण्डन किया। जब पीछे से कुछ आर्य समाजी चुपके से लेखराम की हालत देखने गये तो वे आश्चर्यस्तम्भित हो गये। सहस्रों मुस्लिम जनता की बडी संख्या को उन्होंने वक्ता के आधीन पाया।

जुलाई 1893 मे शिमला मे प. जी ने अपने अन्तिम व्याख्यान में इस विषय पर प्रमाण दिये कि इस्लाम के पैगम्बरों ने खुदाई का दावा करके कुफ फैलाया है। मुस्लिम मण्डली मे से एक युवक से न रहा गया। उसने चीख कर कहा—काफिरो को काटने वाली मुहम्मदी को मत भूल। लेखराम एक क्षण रुक गए और जिधर से आवाज आई थी, उधर मुंह करके गरजते हुए बोले—"मुझे बुजदिल महम्मदी तलवार की धमकी देता है। मैंने अधर्मी निर्बल मनुष्यों से डरना नहीं सीखा। जानते नहीं हो मैं जान हथेली पर लिए फिरता हूं।" सारी सभा मे सन्नाटा छा गया और फिर किसी ने चूं तक नहीं की।

पण्डित जी की ऊहा बुद्धि तो कमाल की थी। उसकी एक घटना और पढ़िए, गुजरात आर्य समाज में आर्य पथिक मुसलमानो के 'हराम हलाल' मसले पर बोल रहे थे। पण्डित जी का कहना था कि जो जानवर कमजोर है वह तो मुसलमानों के लिए हलाल हैं। जो जबरदस्त हैं वे हराम हैं। इस पर एक मौलवी ने एतराज किया कि क्या चुहिया भी हमारे मजहब में जबरदस्त होने से ही हराम है। पण्डित जी ने उनसे पूछा कि मौलवी साहब आप शिया हैं या सुन्नी? उत्तर मिला-शिया। तब पं. जी ने उत्तर दिया- "मौलवी, मुझे आप का कथन सुन कर हंसी आती है। आप शिया होकर चूहे की बुजुर्गी और जबरदस्ती से इन्कार करते हैं। यही नामुराद चूहा था कि जिसने कर्बला के मैदान में पानी की मशकें काट दीं और बेचारे इमाम हुसैन को प्यासा मरवाया। अगर ऐसे दो तीन और जबरदस्त पैदा हो जाए तो अरब और ईरान में कर्बला की सी कई घटनाएं हो जाएं।" श्रोतागण यह जवाब सुन कर हंस पड़े। मौलवी साहब ने तो चुप हो ही जाना था।

इतनी तेजस्विता और इतनी तेजी साधारण संसार में बहुत देर तक नहीं चल सकती। कुछ काल के पीछे दैव ही उसका रास्ता रोकने का उपाय सोचने लगता है। महर्षि के जीवन की सामग्री एकत्र हो जाने पर जब आपने उसे लिखने का काम आरम्भ किया तब आप जालन्धर मे रहने लगे। उस समय जालन्धर आर्य समाज का बहुत बडा केन्द्र बन चुका था। उसके संस्थापकों मे दो महानुभाव मुख्य थे-एक ला. देवराज जी और दूसरे ला. मुन्शीराम जी लाला देवराज जी कन्या महाविद्यालय के सचालन मे एकाग्रता से लग गए और ला. मुन्शीराम जी पहले जालन्धर आर्य समाज के प्रधान और फिर प्रचार का कार्य बढ जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। इसके अतिरिक्त आपने 'सद्धर्म प्रचारक' नाम के साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। प लेखराम जी का उनसे बहुत प्रेम था। जीवन के अन्तिम हिस्से मे तो आर्य-पथिक मानो उनके अभिन्न मित्र बन गए थे। दोनो की प्रकृतियो मे अन्य कई प्रकार के भेद होते हुए भी यह बहुत बडी समानता थी कि दोनो ही पूर्णरूप से निर्भय थे और वैदिक धर्म मे अटल विश्वास रखते थे। प. जी को जालन्धर मे रहने से एक यह भी लाभ था कि सद्धर्म प्रचारक प्रेस से पुस्तको की छपाई मे भी बहुत सहायता मिल सकती थी।

1897 के आरम्भ मे वह जालन्धर छोड कर लाहौर चले गये। यह स्थान परिवर्तन किसी निमित्त से हुआ या दैवयोग से यह कहना कठिन है। कहा जा सकता है कि यदि कोई निमित्त भी था तो उसका कारण ईश्वरेच्छा था। आर्य-पथिक को अमर पदवी मिलनी थी यह भी उसका एक कारण बन गया। मिरजा अहमद कादियानी के साथ इनका विवाद रहता ही था और धीरे-2 जब मिरजा के पास आर्य-पथिक की जबरदस्त युक्तियो का कोई उत्तर न रहा तो वह धमकियों पर उतर आया। मुबाहिसे मे हार कर मुबाहिला (शापो का आक्रमण) जारी कर दिया। गुलाम अहमद ने यह भविष्य वाणी की कि यदि मैं सच्चा हू और लेखराम झूठा है तो एक साल के अन्दर-2 खुदा की मार पडेगी। इसके उत्तर मे प. लेखराम जी ने यह आशीर्वाद दिया कि ईश्वर की ऐसी कृपा होगी कि मिरजा झूठ को छोड कर सच को मानने लगेगा। मिरजा ने जो भविष्यवाणी की, प्रतीत होता है कि उसकी पूर्ति के उद्योग मे भी कोई कसर न छोडी।

पण्डित जी के बलिदान की घटना का सक्षिप्त और हृदयस्पर्शी वर्णन आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के इतिहास के यशस्वी लेखक प. चमूपति जी के शब्दो मे पढिए। वे अपने इतिहास मे लिखते हैं—

"मार्च 1897 के आरम्भ मे एक कुरूप मुसलमान इनके पास शुद्धि के लिए आया इन्होने उसका आगा-पीछा कुछ नही पूछा। पूर्ण विश्वास पूर्वक अपने पास रख लिया। दिन को वह इनके पास रहता और रात को अन्यत्र कही चला जाता। इन्हे यह भी ज्ञान नही था कि वह रात को कहा रहता है ?

"6 मार्च को वह कम्बल ओढ कर आया और कापने लगा। पूछने पर उसने बताया कि उसे बुखार और पेट का दर्द है। पण्डित जी उसे डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने कम्बल उतार कर लेप करना चाहा पर उसने पीने की दवाई मागी। इन्होने वही ले दी। एक बजाज की दुकान पर ले जाकर माता जी को दिखाने के लिए उसे कपडे ले दिए। बजाज ने सावधान किया कि यह भयकर आकृति का मनुष्य मृत्यु की मूर्ति प्रतीत होता है। परन्तु पण्डित जी तो आज स्वय मृत्यु से ही प्यार करने चले थे। यम के दूत को ही कभी का घर पर निमन्त्रण दे रखा था। उसी को मानो यह सद्धर्म का पिपासु समझते रहे थे।

"घर पर आकर ऋषि की जीवनी लिखने बैठे। वह भी पास की एक कुर्सी पर बैठ गया। ज्यो ही थक कर उन्होने कलम रखा और छाती खोल कर अगडाई लेने लगे, उस अभ्यस्त हत्यारे ने वही छुरी निकाल कर इनके पेट मे घोप दी। और घुमा-घुमा कर एक आतडी तो काट ही डाली और आठ बडे और अनेक छोटे घाव कर दिए। पण्डित जी ने एक हाथ से अपनी अतडियो को सम्भाला और दूसरे हाथ से उससे दस्तपजा लिया। इसी कशमकश मे सीढियो तक पहुच गए देवी लक्ष्मी ने पहुच कर इन्हे रसोई मे धकेल दिया और बूढी माता ने घातक को जा पकडा। पर इतने मे हत्यारे के हाथ बेलन आ गया जिसकी दो चोटो से उसने माता जी को अचेत कर नीचे फेंक दिया और अपने आप वह जा वह जा आन की आन मे आख से ओझल हो गया।

"इस घायल अवस्था मे पण्डित जी को हस्पताल ले जाया गया। वहा भी इनका प्रभु पर विश्वास एव अटूट धैर्य नही टूटा, नही टूटा। गायत्री तथा 'विश्वानि देव' का पाठ ही करते रहे। मरते दम तक न माता की चिन्ता थी न प्राणप्रिया लक्ष्मी की। चिन्ता थी तो इस बात की कि 'आर्य समाज से तहरीरी काम बन्द नहीं होना चाहिए।' यह कहा और रात के दो बजे शरीर छोड दिया।

"वीर की अर्थी के साथ सहस्रों मनुष्यों का तांता लग रहा था। लाहौर के नर-नारी इस निर्भीक धर्मवीर के बलिदान पर अत्यन्त क्षुब्ध थे। पृथ्वी पर हर जगह फूल ही फूल दीखते थे। गुलाब के पानी के कंटर के कटर बहा दिये गये। आर्य जाति मे एक नई स्फूर्ति थी, नया आवेश था! प्रतीत यह होता था कि एक धर्मवीर के बलिदान ने सम्पूर्ण जाति को नया जीवन प्रदान कर दिया है। पवित्रता का पारावार था। उत्साह ठाठें मार रहा था। साहस की बाढ आ गई थी। जिधर देखो कर्मण्यतापूर्ण वैराग्य था।

'श्मशान भूमि मे अद्भुत दृश्य था। शहीद की चिताग्नि ने मानो सब नर-नारियो के परस्पर भेदों को जलाकर राख कर दिया था। सबके मन मे जो भाव था उसे लाला मुन्शीराम जी ने अपने भावुकता से भरे हुए भाषण मे इन शब्दो मे प्रकट किया था—"हम सब को चाहिए कि हम वीर की चिता के समीप खडे हो कर यह प्रतिज्ञा करें कि आपस की फूट को हटा कर प्रेम पूर्वक मिल कर काम करेंगे। यदि फूट चलती रही तो मेरे लिए काम करना तो बहुत असम्भव हो जाएगा।"

"श्मशान भूमि के भाषणो मे पण्डित जी का यह वाक्य सुनाया गया कि 'मेरे पीछे तहरीर का काम बन्द न होने पावे।' आर्य नेताओ ने उपस्थित जनता के सामने सकल्प प्रकट किया कि तहरीर का काम बन्द न होने देंगे।" किन्तु क्या इस प्रतिज्ञा का हम पालन कर सके ?

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वे पंजाब के जेहलम जिले के एक अप्रसिद्ध ग्राम सैदपुर में एक अप्रसिद्ध सारस्वत ब्राह्मण कुल में जन्मे थे परन्तु उनमें अपने पितृकुल की सैनिक वृत्ति से आया हुआ। शरीर का गठन तथा क्षात्र तेज का कुछ अब भी अवश्य विद्यमान था। उनके पितामह महता नारायणसिंह पंजाब के सिक्खकालीन विप्लव के वीर योद्धा थे और कई सभाओ में अपना हाथ दिखा चुके थे। उन्हीं महता नारायण सिंह के पुत्र महता तारासिंह हुए जिनके पुत्र प. लेखराम का जन्म 8 चैत्र सम्वत् 1915 विक्रमी को शुक्र के दिन उक्त सैदपुर ग्राम में हुआ था।

वे बाल्यकाल से ही भावुक तथा धार्मिक थे। अपने चचा प. गण्डाराम जी को एकादशी का व्रत करते हुए देख कर प. लेखराम ने 11 वर्ष की अवस्था में बड़ी श्रद्धा से एकादशी का व्रत विधिपूर्वक रखना आरम्भ कर दिया था। उनको बाल्यकाल में केवल उर्दू, फारसी की शिक्षा मिली थी क्यो कि उस समय पंजाब और संयुक्त प्रान्त में उसी के पढ़ाने की परिपाटी प्रचलित थी। वह शिक्षा आगे चल कर उनके मोहम्मदीमत की आलोचना करने में बहुत सहायक हुई। उन के विद्यार्थी जीवन में केवल यही बात उल्लेख योग्य है कि वे तब भी स्वतन्त्रता प्रिय, प्रत्युत्पन्नमति, तथा तात्कालिक उत्तर प्रत्युत्तर प्रवीण थे और कविता की ओर भी उनका कुछ झुकाव था।

सम्वत् 1932 के पौष मास में वे अपने चचा प. गण्डाराम इन्सपैक्टर पुलिस की सहायता से पेशावर पुलिस में सार्जेन्ट के पद पर नियुक्त हो गए। ऊपर बतलाया जा चुका है कि प. लेखराम के अन्तःहृदय में ही भावुकता तथा धार्मिकता का अंकुर विद्यमान था। एक धार्मिक सिख सिपाही के सत्संग से उनकी प्रवृत्ति पूजा पाठ में प्रारम्भावस्था से ही हो चुकी थी। प्रातःकाल स्नान ध्यान में निमग्न रहते और गुरु मुखी में लिपिबद्ध भगवद्गीता का पाठ किया करते थे। श्री कृष्ण की भक्ति में तन्मय रहते थे। जीव ब्रह्म की एकता के विश्वासी और वैराग्य प्रवण थे। 21 वर्ष की अवस्था में उनके माता पिता ने उनको विवाह बन्धन में आबद्ध करना चाहा पर उन्होंने अपने वैराग्यवश उस को स्वीकार न किया। उन की धर्म जिज्ञासा दिन प्रति दिन बढ़ती ही गई। उन्हीं दिनों उनको लुधियाना के प्रसिद्ध स्वतन्त्र विचारक मुन्शी कन्हैया लाल अलखधारी के ग्रन्थ पढ़ने का अवसर मिला। अलखधारी जी के ग्रन्थो से उनको ऋषि दयानन्द के वैदिक धर्म प्रचार और आर्य समाज की स्थापना का वृत्तान्त ज्ञात हुआ। और उन्होंने डाक द्वारा ऋषि दयानन्द प्रणीत ग्रन्थों को मंगा कर पढ़ना प्रारम्भ किया। फलतः उनके विचार सर्वथा बदल गए और वे आर्य समाजी बन गए।

वैदिक धर्मावलम्बी बन कर पंडित लेखराम ने सम्वत् 1937 के अन्तिम भाग में (स. 1936 वि. होना चाहिये) सीमाप्रान्त के प्रधान प्राय: पेशावर नगर में आर्य समाज की स्थापना की। उस समय पेशावर आर्य समाज के सर्वे सर्वा वे ही थे। वे और उनके चार पांच साथियो से ही आर्य समाज संगठित था। प. लेखराम के मन में जीव ब्रह्म की एकता आदि के विषय में शंकायें उस समय तक बनी हुई थी। उनकी निवृत्ति के लिए उन्होंने स्वयं आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द के दर्शन करने का निश्चय किया और साढ़े चार वर्ष की नौकरी के पश्चात् एक मास की छुट्टी लेकर 17 मई सन् 1880 ई. (स. 1936 वि.) को अजमेर पहुंच कर सेठ फतहमल जी की वाटिका में ठहरे हुए ऋषि दयानन्द के प्रथम और अन्तिम बार दर्शन किए। इस समागम का वृत्तान्त उन्होंने स्वयं इस प्रकार लिखा है—

स्वामी दयानन्द के दर्शन से यात्रा के सब कष्ट विस्मृत हो गए और उनके सत्योपदेश से सब संशय निवृत्त हो गए। उन्होंने महर्षि से उनसे जयपुर में एक बंगाली की उपस्थित की हुई यह शंका पूछी कि जब आकाश और ब्रह्म दोनो सर्वव्यापक हैं तो दो व्यापक एक स्थान पर कैसे रह सकते हैं। महर्षि दयानन्द ने एक पत्थर उठा कर कहा कि जिस प्रकार इसमें अग्नि मिट्टी और परमात्मा तीनो व्यापक हैं, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में आकाश और ब्रह्म दोनो व्यापक हैं। सूक्ष्म वस्तु में भी सूक्ष्मतर वस्तु व्यापक रहती है। ब्रह्म सूक्ष्मतम होने के कारण सर्वव्यापक है। प. लेखराम जी लिखते हैं कि— "इससे मेरी शान्ति हो गई।" उन्होंने महर्षि के अन्य संशय उपस्थित करने की आज्ञा देने पर उन से दस प्रश्न पूछे थे। उनमें से तीन उन्होंने उत्तर सहित स्वयं लिखे हैं। शेष उनको विस्मृत हो गए थे।

प्रथम प्रश्न—जीव ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइये।

उत्तर—यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव ब्रह्म का भेद बतलाता है।

द्वितीय प्रश्न—अन्य मतो के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं?

उत्तर—अवश्य शुद्ध करना चाहिये।

तृतीय प्रश्न—विद्युत क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न होती है?

उत्तर—विद्युत सब स्थानो में है और रगड़ से उत्पन्न होती है। बादलो की विद्युत भी बादलो और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

"अन्त में मुझे आदेश दिया कि 25 वर्ष की आयु से पूर्व विवाह न करना।" ऋषि दयानन्द के स्वल्प सत्संग से प. लेखराम के धार्मिक विचार दृढ़ हो गए और वैदिक धर्म पर उनका विश्वास चट्टान के समान अटल हो गया।

अजमेर से लौट कर उन को दिन रात धर्म प्रचार की ही धुन लगी रहती थी। उन्होंने पेशावर आर्य समाज की ओर से अपने सम्पादन में "धर्मोपदेश" नामक उर्दू का मासिक पत्र जारी कराया उसके साथ ही मौखिक व्याख्यान भी प्राय देते रहते थे। कुछ दिनो पश्चात उनकी बदली पेशावर से अन्य पुलिस स्टेशनो को हो गई। उनकी धार्मिक लगन के कारण उनके विधर्मी अफसर उनसे मनोमालिन्य रखने लगे थे उधर प. लेखराम की स्वतन्त्र प्रकृति पराधीन वृत्ति (सेवावृत्ति) से दिनो दिन खिन्न होती जाती थी। अन्त में उन्होंने 24 जुलाई सन 1884 (स 1941 वि.) को सदा स्मरणीय तिथि को, पोलिस की सेवा से त्यागपत्र दे दिया और उसमें यह भी लिख दिया कि दो महीने की कानूनी मियाद के पश्चात मुझ को रोकने का अधिकार किसी को भी न होगा। दो महीने पश्चात 20 सितम्बर सन 1884 (स 1941 वि.) को उन्होंने मनुष्यो के दासत्व से सदा के लिए मोक्ष प्राप्त किया इस दासत्व मुक्ति के कारण ही सार्जेन्ट लेखराम प. लेखराम बन गए।

आर्य समाज सान्ताक्रुज (पश्चिम) बम्बई का ४३ वॉ वार्षिकोत्सव तथा वेद वेदांग पुरस्कार सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 43 वां वार्षिकोत्सव 20 से 26 जनवरी 1988 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ डा सोमदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति 26 जनवरी 1988 को प्रातः हुई। वार्षिकोत्सव में पूजनीय स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, प. शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी श्री पन्नालाल जी पीयूष, श्री सतीश भूटानी, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. सत्यकाम जी विद्यालंकार श्री प्रभुदास जी यादव आदि अनेक वक्ताओ के प्रवचन तथा भजनोपदेशो से आर्य जनता लाभान्वित हुई।

24-1-88 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन श्री विश्वभूषण जी आर्य ने किया, आर्य युवको ने व्यायाम, लाठी, जिमनास्टिक आदि के खेल—गीत भजन नाटक आदि प्रस्तुत कर जनता को आर्य समाज के प्रति आकर्षित किया।

25-1-88 को यज्ञ के साथ महिला सम्मेलन का आयोजन श्रीमती प्रभावती जी मुना ने किया। तथा सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती सत्यारानी जी गोयल एवं मुख्य अतिथि श्रीमती सुशीला देवी जी विद्यालंकृता थी। महिला सम्मेलन में देवियो ने महिलाओ में फंसे अन्ध विश्वास एवं कुरीतियो को दूर करने के लिए घर घर जाकर प्रचार कार्य करने का संकल्प लिया।

26-1-88 को प्रातः श्री मधुदेव लेकर जी एम एल सी ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया।

पश्चात वेद वेदांग पुरस्कार समारोह का संयोजन महामन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद ने किया। यह समारोह पूजनीय स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। माननीय अध्यक्ष जी का परिचय कैप्टिन देवरत्न जी आर्य ने कराया।

स्मरण रहे वेद वेदांग पुरस्कार से वैदिक विद्वानो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए कैप्टिन देवरत्न जी आर्य के सुझाव पर ही प्रारम्भ किया गया है। श्री कैप्टिन साहब ने 1985 में वैदिक विद्वानो को सम्मानित करने की योजना आर्य समाज के समक्ष प्रस्तुत की थी। जिसको फलस्वरूप आर्य समाज सान्ताक्रुज ने 1 लाख रुपए का स्थायी कोष स्थापित किया। इसके ब्याज से वेद, वेदांग पुरस्कार तथा वेदोपदेशक पुरस्कार दिया जाता है।

डा स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती का स्वागत श्री ओंकार नाथ जी आर्य ने किया। आचार्य प्रियव्रत जी विद्यावाचस्पति का जीवन परिचय श्री प. सत्यकाम जी विद्यालंकार ने कराया तथा डा सोमदेव जी शास्त्री ने आचार्य प्रियव्रत जी को भेंट किया जाने वाला अभिनन्दन पत्र पढ़ कर सुनाया। आचार्य प्रियव्रत जी अकस्मात रुग्ण हो जाने के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार की राशि 21000 रुपए का ड्राफ्ट रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र तथा शाल उनके निवास स्थान पर पहुंचा दिया गया।

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी श्री प. शान्ति प्रकाश जी को वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री पण्डित जी का परिचय ओंकारनाथ जी आर्य ने कराया। आपने अपने संस्मरण सुनाते हुए पण्डित जी द्वारा किए गए शास्त्रार्थों की झलकियां प्रस्तुत की और यह भी बताया कि आप द्वारा किए गए शास्त्रार्थों के लिए किन किन परिस्थितियो का सामना करना पड़ा आपने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण आर्य समाज के प्रचार प्रसार में व्यतीत किया है।

मान्यवर पण्डित शान्तिप्रकाश जी को 11000 रुपये का ड्राफ्ट, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र, तथा शाल भेंट कर उन की सेवाओ के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई। पूजनीय स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती ने अपने कर कमलो द्वारा ड्राफ्ट ट्राफी अभिनन्दन पत्र आदि भेंट किए। आदरणीय प. शान्तिप्रकाश जी के 20 से 26 जनवरी 1988 तक नित्य प्रति प्रवचन होते रहे। जिनका स्थानीय आर्य भाई, बहनो ने पूरा पूरा लाभ प्राप्त किया।

—विमल स्वरूप सूद
महामन्त्री

आर्य समाज सरहिन्द मे शिवरात्रि पर्व सम्पन्न

[illegible] 15 [illegible] 16 [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निया। [illegible] रहा। [illegible] प्रतिनिधि सभा [illegible] ये [illegible] प्रचा [illegible] निश्चय [illegible] कि आगे भी प्रचार का काय जारी रखा जाए।

— मन्त्री

ग्राम मिर्जापुर में शुद्धि

दिनाक 29 1 88 को ग्राम मिरजा [illegible] थाना [illegible] गाव पो तमता जिला [illegible] म प्रदेश मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे यज्ञ [illegible] मे 118 ईसाई उराव ने अपनी स्वेच्छा [illegible] वैदिक हिन्दू धर्म को स्वीकार किया

सुखरापारा ग्राम मे शुद्धि

दि 31 1-88 को सुखरापारा [illegible] गाव पो सुखरापारा जिला रायगढ म प्र म 153 ईसाई शुद्ध हुए। यज्ञ हवन किया गया। यज्ञ मे आहुति [illegible] गई। गौ मास, शराब आदि न खाने का सकल्प किया।

ग्राम मुड बहारम मे शुद्धि

दिनाक 15 2 88 ई को ग्राम गुड बहारम थाना लैलूगा जिला रायगढ (म प्र) मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे यज्ञ हवन किया गया और यज्ञ हवन मे 384 ईसाई उराव न अपनी स्वेच्छा स वैदिक धर्म को स्वीकार किया और गौ मास, शराब आदि न खाने पीने का सकल्प किया। यह कार्य आर्य हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा के स्वामी देवानन्द की देख रेख मे हुआ। इस कार्य मे उपमन्यु शास्त्री वानप्रस्थी मगल देव, धनसिंह उपदेशक, कर्म देव, महिपतलाल आर्य समाज गुड बाहारम अध्यक्ष पंडित आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

टंकारा में ऋषि-बोधोत्सव सम्पन्न

इस वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा मे ऋषिबोधोत्सव 15,16,17 फरवरी 1988 को बडी धूमधाम से मनाया गया। दि 10 2 88 स श्री रामप्रसाद वेदालकार, श्री [illegible], गुरुकुल कांगडी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति शिवरात्रि वाले दिन प्रात: 11बजे हुई। भिन्न-2 स्थानों से हजारों ऋषि भक्त इस अवसर पर पधारें। नगर का प्रबन्ध तीनो दिन आर्य समाज सूरत के प्रसिद्ध कार्यकर्ता एव उद्योगपति श्री [illegible] आर्य द्वारा किया गया। दिनाक 17-2 88 को प्रातः 11-30बजे ध्वजारोहण बम्बई के श्री प्राणनाथ सहगल पूर्व म्युनिसिपल काउन्सिलर एव स्पेशल एक्जीक्यूटिव मैजिस्ट्रेट मलाड ईस्ट बम्बई ने किया। महात्मा आर्य भिक्षु ने उद्बोधन किया। बारह बजे भव्य शोभा यात्रा निकली।

टंकारा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने वार्षिक रिपोर्ट पढ कर सुनाई और अगले वर्ष टंकारा ट्रस्ट मे क्या-क्या कार्य किए जाएंगे, इस विषय पर अपने विचार रखें। उन्होंने ऋषि भक्तो से अपील की कि वे टंकारा को दर्शनीय बनाने के लिए अधिक से अधिक धन राशि एकत्रित कर टंकारा भिजवाए।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 49 30 फाल्गुन सम्वत् 2044 तदानुसार 13 मार्च 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

दिव्य जीवन बनाएं

लेखक—स्व श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

1 'मैं शरीर हूं'—यह सोचना अज्ञानता है। मैं परम शुद्ध चैतन्य आत्मा हूं'—यह सोचना बुद्धिमानी है।

2 यह दुर्भाग्य की बात है कि हम आत्मिक स्वतन्त्रता के मूल्य चुका कर सांसारिक सुखों को खरीदते हैं।

3 अपने हृदय क्षेत्र में भक्ति भाव के बीज बोइए— इसे भजन से सींचिए। इसके चारों ओर सत्संग की बाड़ लगा दीजिए, जिससे कामादि विकारों के रूप में पशुओं का प्रवेश न हो सके। यदि आप ऐसा करेंगे, तो कालान्तर में शान्ति और आमोद की फसल आपके हाथ लगेगी।

4 क्या आप ईश्वर से तादात्म्य चाहते हैं? फिर तो आपको तृण की भांति नम्र, शिशु की भांति निर्दोष और भक्तों की भान्ति अनुरक्त बनना पड़ेगा।

5 श्रद्धा के माध्यम से माया का वह आवरण हटा दीजिए जो ईश्वर प्राप्ति में रुकावट है।

6 सहृदयता से आप महान् बनते हैं जबकि दानवता का दामन पकड़ कर आप पशुओं की कोटि में पहुंचते हैं।

7 सभी प्राणियों में ईश्वर का समावेश है। वह सर्वव्यापक है।

8 सभी अच्छे विचार कालान्तर में अच्छे कर्मों को जन्म देते हैं।

9 धर्म का उद्भव श्रद्धा से होता है, लेकिन भक्ति और उपासना के बाद ईश्वर-की अनुभूति में इसकी परिसमाप्ति होती है।

10 मन, वचन और कर्म में साम्य लाने की कोशिश कीजिए। मन में कुछ सोचना, वचन से कुछ अन्य बात ही बोलना और कर्म से कोई तीसरा कर्म कर गुजरना अच्छा नहीं है।

11 अपनी भलाई के लिए किया गया काम 'बन्धन' है जबकि बहुजन-हिताय किया गया काम सब बन्धनों से 'मुक्ति' के लिए है।

12 हम जितना ही अपने पास ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करेंगे, उतना ही हम अपने को निर्भय अनुभव करेंगे।

13 जब ईश्वर के प्रति अनुराग बढ़ता है तब भक्त कुछ और नहीं चाहता वह सिर्फ ईश्वर का सान्निध्य चाहता है।

14 ईश्वर की अभिव्यक्ति संसार है, संसार को देख कर उसकी महानता का अनुभव होता है।

15 व्यष्टि और समष्टि में अनुस्यूत सत्ता एक ही है।

16 आत्मानुशासन का बीज बोइए उसे प्रेम के जल से सींचिए, उसके चारों ओर ईश्वर के नाम की बाड़ लगा दीजिए। जो वृक्ष पनपेगा, वह अमर फल को प्रदान करेगा।

17 जो उदारता के बीज बोता है, उसे दिव्य प्रेम रूपी फल की प्राप्ति होती है।

8 मोमबत्ती अपने आपको जला कर प्रकाश फैलाती है। आपकी निष्काम सेवा द्वारा अपने कुसंस्कारों को जलाकर ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाइए।

19 प्रात काल भगवान् का नाम लेते हुए बिस्तर से उठिए, दिन भर उनका नाम लेते हुए काम कीजिए और रात को उनका नाम लेकर ही विश्राम कीजिए।

20 एक अन्धा व्यक्ति किसी वस्तु को देख भले न सके, लेकिन अनुभव से उसे जान लेता है, किन्तु जो आत्मज्ञान से रहित यानी अन्धे हैं वे तो किसी वस्तु को देख कर भी उसकी पारमार्थिक सत्ता को नहीं पहचान पाते।

21 तमोगुण को रजोगुण से जीतिए निष्काम सेवा द्वारा रजोगुण को सत्व में परिणत कीजिए। आत्मज्ञान से सत्व का भी अतिक्रमण कर जाइए।

2 अग्नि के सम्पर्क से जैसे लोहा गरम और लाल हो जाता है, वैसे ही प्रकाश पुन्ज आत्मा के सम्पर्क से बुद्धि भी प्रकाशमान हो उठती है।

23 आत्म साक्षात्कार की कुञ्जी है सत्संग, द्वार है ज्ञानी गुरु मार्ग है शास्त्रोपदेश तथा निवास है उसका हृदय मन्दिर।

24 अपनी जीवन-नैया को इस तरह खेइए कि उसकी दिशादर्शक सुई हमेशा ईश्वर की तरफ रहे।

25 प्रार्थना के बिना अन्त करण की शुद्धि नहीं होगी, इस शुद्धि के बिना ध्यान नहीं हो सकता, ध्यान के बिना तत्त्व की अनुभूति सम्भव नहीं और उस की अनुभूति के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त होती।

26 आपके जीवन का कर्त्तव्य होना चाहिए भगवान की भक्ति करना, उद्देश्य होना चाहिए उन्हे प्रेम करना, लक्ष्य होना चाहिए उनमे समाहित हो जाना।

27 प्रेम दे कर व्यक्ति अपने गौरव में चार चान्द लगाता है। प्रेम लेकर व्यक्ति कृतार्थ होता है।

28 ज्ञानवान मनुष्य की दृष्टि में संसार की सारी अनेकता सिमट कर एक आ मस्वरूप हो जाती है।

29 संसार की आने जाने वाली पदमर्यादाओं के लिए आप क्यों तरसते हैं? आत्मज्ञान को प्राप्त करके संसार के एक छत्र अधिनायक बनिए।

30 प्रेम में आनन्द है, शक्ति है, ईश्वर है। इसमें अमृत है।

31 विचार या परिपृच्छा उस बीज की भान्ति है जिसमें चिदानन्द रूपी वृक्ष के प्रस्फुटित होने और पनपने की आशा बंधती है।

32 अन्त करण की शुद्धि से पूर्णत्व पद, ध्यान से आनन्द, आत्मानुसन्धान से ज्ञान और भक्ति से दिव्योन्माद सुलभ होता है।

33 ईश्वर की पूजा शान्ति, पवित्रता, दया और अहन्ता के फूलों से की जाती है।

34 ईश्वर अपनी सृष्टि को उत्पन्न करता है, उसमें प्रवेश कर उसे सम्भालता है तथा अन्त में उसे अपने में निहित कर लेता है।

35 प्रार्थना वह चट्टान है जिसके सहारे डूबता हुआ मनुष्य संसार-सागर में त्राण पाता है।

36 ईश्वर के नामोच्चारण से उनके प्रति अनुराग होता है, अनुराग से भक्ति आती है, भक्ति का रूपान्तरण भाव में होता है और भाव की इतिश्री समाधि में होती है।

37 'प्रेम वह शासक है जो दण्ड का भय दिखा कर किसी को वश में नहीं करता। 'प्रेम' वह सूत्र है जो खींचता नहीं, पर बांधता है जकड़ कर।

38 साधना का तात्पर्य ईश्वर को जानना मात्र है, उसे जान कर ही जीवन सफल होता है।

39 सन्तोष से बढ़ कर निधि नहीं, सत्य से बढ़ कर पुण्य नहीं, आत्मानन्द से बढ़ कर आनन्द नहीं, आत्मा से बढ़ कर अपना कोई मित्र नहीं।

40 आपके क्रमिक विकास में ईश्वर भी सृष्टि के अनेक रूप आपके समक्ष प्रस्तुत करता है।

1 इन्द्रियों के बाह्य संकेत पर मन का भूत सांसारिक रङ्गमञ्च पर अपना नृत्य प्रस्तुत करता है।

42 सागर में डूबने-उतराते व्यक्ति की रक्षा के लिए जैसे अचानक कहीं से नौका आ जाए, वैसे ही भवसागर में डूबने वाले के लिए पूर्वकृत पुण्य सहायक होते हैं।

43 प्रभु का नाम-स्मरण करके सभी दुःखों से मुक्ति पाइए तथा अनुभव करके उनको जान लीजिए। विश्वास करके निश्चय कीजिए। आत्मानुभूति प्राप्त करके दूसरों में इसका वितरण कीजिए। आगे बढ़िए ईश्वर की ओर आगे बढ़िए।

(क्रमश,)

आर्य समाज-नई भूमिका और कार्यक्रम की ओर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

लेखक—श्री कैलाश सत्यार्थी 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली—1

(28 फरवरी से आगे)

प्रचार माध्यमो के प्रभावशाली तरीके

चौथे सत्र म कार्यक्रम क्रियान्वयन के तरीके एव प्रचार माध्यमो पर विस्तृत चर्चा हुई। ऐसे सवालो पर पहली बार आर्य समाज मे गम्भीर विचार करते ठोस सुझाव निकलना बडी महत्वपूर्ण घटना है। साधारणत आर्य समाज द्वारा अपने प्रचार-प्रसार और जन जागरण के जो तरीके काम मे लिये जा रहे हैं, वे कम से कम पचास-साठ साल पुराने है। ये भजन मण्डलियो उपदेशको और थोडी-बहुत पुस्तक पुस्तकाओ तक ही सीमित हैं। सभी प्रतिनिधियो की राय थी कि बुद्धिजीवियो तथा युवाजनो की बात छोडिए, जन साधारण तक को आकर्षित करने मे ये बहुत प्रभावी और कारगर नही है। प्रचारको के भजन और उपदेश भी बहुत ही घिसे पिटे तौर तरीका के हैं। इनमे ईश्वर, आर्य समाज और स्वामी दयानन्द आदि के स्तुति गुणगान तथा गुजर हुए इतिहास की पुनरावृत्ति के अलावा प्रासगिक सवालो से जुडी सृजनात्मक बात नही होती।

दूसरी ओर आज दुनिया में जन सचार और सम्प्रेषण के बहुत ही वैज्ञानिक और प्रभावशाली तरीके विकसित हो चुके हैं। इनमे वीडियो फिल्मे, चलचित्र तथा स्लाइड प्रोजेक्ट आदि प्रमुख है। प्रतिनिधियो की राय थी कि आर्य समाज की मान्यताओ पर आधारित छोटी छोटी सदेशात्मक फिल्मे तैयार कराई जाए। गाव, कस्बो और शहरो के आर्य समाज मन्दिरो तथा अन्य सार्वजनिक स्थलो पर इन फिल्मो का प्रदर्शन कर, जिनमे गैर आर्य समाजियो को अधिक से अधिक सख्या मे बुलाया जाए। इसी तरह स्लाइड प्रोजेक्ट का उपयोग किया जा सकता है। प्रतिनिधि सभाए और दूसरी आर्य सस्थाए अपने प्रचारको को दो ढाई हजार रुपये की लागत के प्रोजेक्ट सैट का इन्तजाम आसानी से कर सकती हैं। पाखण्ड, मूर्ति पूजा, जातिवाद, नशाखोरी आदि सामाजिक बुराईयो के खिलाफ और नर-नारी समता, सम्प्रदाय सदभावना, महापुरुषो के प्रेरणादायक इतिहास आदि से सम्बन्धित स्लाइडे और टेप आदि हो। यह काफी प्रभावशाली और उपयोगी माध्यम साबित हो सकता है।

प्रतिनिधियो की राय थी कि भजन मण्डलियो की तरह नाटक मण्डलिया भी बनाई जाए। यदि नुक्कड नाटक मण्डलिया बन सके तो और भी अच्छा रहेगा। इसी तरह दीवारो पर अच्छे नारे लिखना व लिखवाना भी काफी उपयोगी है। विषय वस्तु और साज सज्जा से युक्त ऐसे सरस और आकर्षक ट्रैक्ट छपवा कर वितरित किए जाए जो गैर आर्य समाजी व्यक्तियो के लिए भी पठनीय हो। एक महत्वपूर्ण सुझाव यह आया, वैदिक मान्यताओ पर आर्य समाज कुछ टेलीविजन सीरियल बनवाए। इन सीरियलो को आर्य जगत् के कुछ उद्योगपतियो के द्वारा प्रायोजित करवा कर दूरदर्शन से प्रसारित कराना मुश्किल नही होगा।

देश भर मे आर्य जगत से जुडी सस्थाओ व सगठनो के जितने पत्र-पत्रिकाए हैं उतने शायद ही किसी सगठन के हो। फिर भी, एक भी ऐसा नहीं जिसे देश भर मे जन साधारण जानता या पढता हो। यहा तक कि आर्य समाज के लोग भी उनसे इतर दूसरी साहित्यिक सामाजिक व व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाए खरीदना रुचिकर समझते हैं। इस मामले मे सभी प्रतिनिधियो की राय थी कि एक वार्षिक अथवा मासिक पत्र ऐसा निकाला जाए जो विषय वस्तु, पठनीयता, आकर्षक मुद्रण आदि मे इतना प्रभावशाली हो कि खुले बाजार मे बुक स्टालो पर बिक सके।

सगोष्ठी मे सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि प्रतिनिधियो ने इन सब मुद्दो पर सिर्फ बहस करके या सुझाव देकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नही कर ली, बल्कि अपनी रुचि और योग्यता के अनुरूप काम की जिम्मेवारिया भी ली।

पारम्परिक कार्यक्रमो को प्रभावशाली बनाने की तकनीक पर भी नए सिरे से साप्ताहिक सत्सग कैसे हो पर भी विचार किया गया? उदाहरणार्थ सभी प्रतिनिधि यह अनुभव करते थे कि आर्य समाजियो का काम समाज मन्दिरो मे साप्ताहिक सत्सग (हवन-भजन आदि) और वार्षिकोत्सवों के आयोजनो का निर्वाह करना भर रह गया है। इनमें भी न तो गैर आर्य समाजी जुडते नजर आते, न ही पुराने आर्य समाजी स्थानीय या राष्ट्रीय मुद्दों पर कोई कार्यक्रम लेकर लौटते। कुल मिला कर यह सब परम्परा निर्वाह रह गया है! सगोष्ठी के प्रतिनिधियो ने इस कटु यथार्थ को स्वीकारते हुए नए सार्थक सुझाव रखें।

सभी की राय थी कि साप्ताहिक सत्सगो का स्वरूप बदला जाए। यज्ञादि कार्यों की व्याख्या वर्तमान सन्दर्भों के साथ जोडते हुए की जाए। सन्ध्या हवन के साथ ये स्थानीय एव राष्ट्रीय स्तर के ज्वलन्त मुद्दो पर विचार गोष्ठिया के रूप में बदले जाए। ऐसी गोष्ठियों में बुद्धिजीवियो, छात्रो, किसानो, युवको, श्रमिको आदि को उनकी रुचि के विषयानुसार आमन्त्रित किया जाए। आवश्यकतानुसार वक्ता के रूप में आर्य समाज से इतर विद्वानो व विशेषज्ञों को भी बुलाया जाए। कभी-कभी ये सत्सग समाज मन्दिर से बाहर पिछडी बस्तियो, निकट के गावो झोपड पट्टियो, छात्रावासो, अध्यापक कालोनियो आदि मे आयोजित किए जाए। ऐसे मौके पर स्थान के अनुरूप वक्ताओ का चयन कर आर्य समाज का प्रचार किया जाए।

वार्षिकोत्सवो व शोभा यात्राओ का प्रभावशाली तरीका

वार्षिकोत्सव के बारे मे प्रतिनिधियो का विचार था कि इनमें भी क्रियात्मकता का समावेश किया जाए। इन अवसरो पर सामूहिक अन्तर्जातीय विवाह, बिना दहेज विवाह, विधवा विवाह, हरिजन आदिवासियो के सामूहिक यज्ञोपवीत व सहभोज, अश्लीलता विरोधी अभियान, नशा निषेध अभियान, साम्प्रदायिक सद्-भावना सम्मेलन, किसी ज्वलन्त स्थानीय या राष्ट्रीय मुद्दे पर गाव कस्बे या शहर की पद यात्राए, साइकिल यात्राए आदि आयोजित की जाए। इनमे भी नारी उत्पीडन के विरुद्ध अभियान का केन्द्रीय विचार रखा जाए। जो भी शोभा यात्रा निकाली जाए वह सिर्फ किसी महा पुरुष का जन्म या बलिदानोत्सव मनाने के लिए भर न हो, बल्कि उस आर्य पुरुष के जीवन मूल्यो से प्रेरित किसी प्रासगिक सवाल पर प्रदर्शन, मार्च, जन जागरण जलूस के रूप मे हो। उसी मुद्दे से जुडे पर्चे, इश्तहार, पोस्टर आदि प्रसारित कराए जाए। शोभा यात्रा मे हिस्सा लेने वाले आर्य जनो व अन्य व्यक्तियो के हाथो मे नारे लिखी तख्तिया, झडो, बैनर आदि हो एव रास्ते मे ऐसे ही ओजस्वी व सकारात्मक नारे लगाए जाए।

एक सत्र मे आर्य समाज के युवा सगठन को मजबूत व क्रियाशील बनाने पर विचार किया गया। सभी की राय थी कि उपरोक्त कार्यक्रम पर चलने से अवश्य ही देश की लाख युवा शक्ति आर्य समाज की ओर आकर्षित होगी। नए व्यक्तियों को शामिल करने का अभियान युद्ध स्तर पर चलाया जाएगा। समय-समय पर इनके बौद्धिक व शारीरिक शिविर लगाये जाएंगे। सन् 1990 तक एक लाख आर्य युवकों-युवतियों का देश व्यापी सगठन बनाया जाएगा। जिसमे से एक लाख स्वयसेवक एक जैसे गणवेश में शामिल होंगे। आर्य जगत् के विभिन्न युवा सगठनो मे आपसी तालमेल एव सामूहिक कार्यक्रम निर्धारण करने की आवश्यकता महसूस करते हुए एक युवा सयोजन समिति गठित की गई, जो युवा आर्य युवा सगठनो जैसे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, आर्य वीर दल जोधपुर, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभा, आर्य वीरागना दल, केन्द्रिय आर्य युवक परिषद्, आर्य युवती परिषद्, आदि का साझा मच व कार्यक्रम बनाने मे जुटेगी।

संगठनात्मक पहलू—

गोष्ठी के एक आयोजक स्वामी अग्निवेश पूर्व से ही स्पष्ट घोषणा कर चुके थे कि वे सभाओ सम्पत्तियो के अधिकार की दौड मे कतई शामिल नहीं होंगे। न ही किसी नए सगठन की अगुवाई करेंगे। इस बात के परिप्रेक्ष्य में गहरा विचार मथन किया गया। सगोष्ठी के अन्तिम सत्र मे इन सब कार्यक्रमो को लागू करने मे आर्य समाज के सगठनात्मक पहलुओ पर खुल कर एव विस्तार से चर्चा हुई। क्या आर्य समाज के वर्तमान ढाचे एव सभा सस्थाओ के नेतृत्व के अन्तर्गत ही सब कार्यक्रम सम्पन्न हो। क्या सबसे पहले नीचे से लगा कर सर्वोच्च स्तर तक नेतृत्व परिवर्तन की मुहिम छेडी जाए? और इसमे सफल होने पर सभाओ सस्थाओ के साधनो का ठीक-ठीक इस्तेमाल हो? क्या कोई नया सगठन या मच निर्मित किया जाए।

शुरू मे इन तीनो विकल्पो के समर्थन और विरोध मे प्रतिनिधियो की राय

पर कई युवा कार्यकर्ता करने मे दिक्कतें बता रहे थे। दूसरे मे, इस बात की ज्यादा आशका थी कि नए सिरे से प्रस्फुरित हो रहा आन्दोलन फिर सभा सम्पत्तियो पर अधिकार के भीतरी झगडे में उलझ कर रह जाएगा। और तीसरा रास्ता अपनाना सगठन के अन्दर एक नए बिखराव को जन्म देना समझा गया अन्ततः सगोष्ठी की आम राय बनी कि इन तीनो मे से कोई भी रास्ता पूरी तरह स्वीकार किए बिना भी काम किया जा सकता है। आर्य जगत् मे जो भी

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के इतिहास का एक नया अध्याय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आदरणीय श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया है। जो व्यक्ति एक बहुत समय तक सार्वजनिक जीवन मे काम करता रहे उसकी सेवा चाहे कितनी निष्काम और निस्वार्थ क्यो न हो वह कहीं न कहीं विवादस्पद बन जाता है कुछ ऐसी ही स्थिति श्री स्वामी आनन्दबोध जी की भी हो गई थी। पिछले कुछ समय से वह कह रहे थे कि वह अब इस पद से हट कर समाज की सेवा करना चाहते हैं। इसी बीच वैदिक यतिमण्डल की एक बैठक पिछले दिनो रोहतक मे हुई थी। आर्य समाज को इस बात पर सदा ही गर्व रहा कि उसके सन्यासी निष्काम और निस्वार्थ भावना से अपने धर्म और समाज की सेवा करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। इसलिए यतिमण्डल यह सहन करने को तैयार न था कि उन का कोई सदस्य किसी विवाद का विषय बन जाए। इसलिए उन्होंने भी इस सारी स्थिति पर विचार करने के पश्चात् यही निश्चय किया कि श्री स्वामी आनन्दबोध जी को अब सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से हट जाना चाहिए। यतिमण्डल के अध्यक्ष श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का आर्य जगत् मे एक विशेष स्थान है। श्री स्वामी आनन्दबोध जी उन्हे अपना गुरु मानते हैं। क्योकि उन्होंने श्री स्वामी सर्वानन्द जी से ही सन्यास लिया था। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने जब श्री स्वामी आनन्दबोध जी से कहा कि वह भी यही समझते हैं कि वर्तमान परिस्थितियो मे उन्हें सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से हट जाना चाहिए और कुछ समय के लिए आर्य समाज मे उन्हें कोई भी पद नहीं लेना चाहिए। श्री स्वामी आनन्दबोध जी तुरन्त मान गए और उन्होंने उसी समय अपना त्याग पत्र श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के हाथ मे दे दिया।

इस इतिहासिक घटना के तीन पक्ष हैं जिन पर हमे गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। पहला यह कि आर्य समाज के आदरणीय सन्यासियों ने आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियो पर बैठ कर विचार किया और अपना यह कर्त्तव्य समझा कि वह आर्य जनता का मार्गदर्शन करें। इस समय हमारे सन्यासी प्राय किसी पद पर काम नहीं करते। इसलिए वह किसी प्रकार के बन्धन से निकल कर प्रत्येक समस्या पर विचार कर सकते हैं, मैं इसे आर्य समाज का परम सौभाग्य समझता हू। जो लोग आर्य समाज मे काम करते हैं वह कई बार कई प्रकार की उलझनों में फस जाते हैं। इस लिए किसी ठीक निर्णय पर नहीं पहुच सकते। सन्यासी वर्ग क्योंकि इस प्रकार के बन्धनों से मुक्त होते हैं। इस लिए वह जिस प्रकार सब समस्याओ पर विचार कर सकते हैं। दूसरे वह सब नहीं कर सकते। यह पहली बार है कि सन्यासी वर्ग ने आर्य समाज की इस समस्या का समाधान ढूढने का प्रयास किया।

दूसरा पक्ष यह है कि श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने श्री स्वामी आनन्दबोध जी से कहा कि उन्हें त्याग पत्र दे देना चाहिए और श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने उसी समय अपने गुरु के आदेश को स्वीकार कर लिया। यह एक बहुत बड़ी बात है और श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने एक ऐसी परम्परा डाली है जो आगे चल कर आर्य समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम कर सकती है।

तीसरा पक्ष यह है कि श्री स्वामी आनन्दबोध जी त्याग पत्र देने को तैयार हो गए। आर्य समाज मे उनका एक विशेष स्थान है जो सेवा उन्होंने आर्य समाज की की है बहुत कम व्यक्तियों ने की होगी। अपना सारा जीवन ही उन्होने आर्य समाज के लिए अर्पित कर रखा है। ऐसा व्यक्ति एक क्षण मे सब कुछ छोड कर एक तरफ हो जाए यह एक ऐसा उदाहरण है जो दूसरे आर्य समाजियो के लिए भी प्रेरणादायक हो सकता है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज सभी प्रान्तो मे आर्य समाजियो के आपस में झगडे चल रहे हैं। इन के कारण आर्य समाज मे जो शिथिलता आ गई है वह हम सब के लिए चिन्ता का विषय बनी हुई थी। श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने इस समय अपना यह पग उठा कर एक रास्ता दिखा दिया है और यदि हम अपने सब झगडे व विवाद इसी प्रकार आपस की बात-चीत से समाप्त कर लिया करें तो आर्य समाज का धूमिल भविष्य फिर उज्ज्वल हो सकता है।

मैंने इसे आर्य समाज के इतिहास का एक नया अध्याय कहा है तो इसलिए कि आर्य समाज के एक बहुत बडे नेता ने स्वय जनता का मार्गदर्शन किया है।

प्राय देखा गया है कि हमारे देश मे कई और भी ऐसी सस्थाए हैं जो अपने आपको धार्मिक सस्थाए कहती हैं परन्तु वहा एक ही व्यक्ति का वर्चस्व होता है। उसका उन्हे लाभ भी होता है उनमे आर्य समाज से अधिक अनुशासन होता है इसलिए उनका सगठन भी अधिक शक्तिशाली होता है। आर्य समाज के अतीत को देख कर हम उसके भविष्य का एक ऐसा निर्माण कर सकते हैं जिसके आधार पर यह पहले की तरह ही एक ऐसी सस्था बन जाए जो देश की बदलती हुई स्थितियो को प्रभावित कर सके। जिस प्रकार एक युद्ध मे कौन विजयी रहता है और कौन पराजित होता है यह उसकी सेना पर निर्भर होता है और सेना भी अन्त मे कौन सी सफल होती है या विफल यह उस के सेनापति पर निर्भर होता है। इसी प्रकार किसी सस्था का भविष्य बनाने वाले उसके नेता होते हैं। विशेषकर जो सबसे बडा नेता होता है। सार्वदेशिक सभा आर्य समाज की शिरोमणी सभा है वह आर्य समाज को एक ऐसी दिशा दे सकती है जो उसके भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है। श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने उस दिशा मे एक कदम उठाया है। उसके लिए उनके हम सब आभारी हैं। वैदिक यतिमण्डल ने पहली बार आर्य समाज की एक बहुत बडी समस्या को सुलझाने मे अपना जो योगदान दिया है वह भी सराहनीय है और उसके लिए हमे उन सब का आभारी होना चाहिए। इसी के साथ यह आशा भी रखनी चाहिए कि आर्य समाज के इतिहास ने जो नई करवट ली है वह इस महान् सस्था के लिए मगलकारी होगी और इसके साथ आर्य समाज के इतिहास का एक नया प्रेरणादायक और सार गर्भित अध्याय प्रारम्भ होगा।

—वीरेन्द्र

उड़ीसा से श्री देवशर्मा वानप्रस्थ का पत्र सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के नाम

आदरणीय श्री वीर जी,

सादर नमस्ते।

मेरी बड़ी देर से अभिलाषा थी कि मैं सभी प्रान्तों में घूम-2 कर आर्य समाज के कार्यों को देखूं और सही-2 अन्दाजा लगा सकूं उसी के लिए मैं 22 नवम्बर 1987 से निकला हुआ हूं। सब से पहले मैंने केरल के लिए दिल्ली से 27 नवम्बर को प्रस्थान किया और 29-11-87 को सायं बैंगलूर पहुंचा वहां श्री नरेन्द्र भूषण जी को पत्र लिखा हुआ था और वे अपने सुपुत्र सहित स्टेशन पर पहुंचे हुए थे, वे स्टेशन से सीधे अपने घर मुझे ले गए। मेरे वहां पहुंचने के थोड़ी देर बाद ही उन्होंने कहा कि उनका प्रोग्राम पन्द्रह किमी पर एक मन्दिर में रखा हुआ है, वहां पर मलयालम में उनका भाषण था जिसमें चन्द पढ़े लिखे लोग ही आए हुए थे उनके सामने उन्होंने अपने विचार प्रगट किए। उनके पास मैं एक सप्ताह भर रहा और यह अनुभव किया कि आर्य समाज का कार्य वहां कुछ नहीं केवल मात्र वे अकेले ही अपने परिवार सहित आर्य साहित्य के लेखन व प्रकाशन में लगे रहते हैं। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश सहित आठ-दस पुस्तकें मलयालम में अनुवादित की हैं। अर्थाभाव में जैसे तैसे अपना कार्य चला रहे हैं उस में अन्य उनका कोई सहयोगी नहीं इस लिए धनाभाव के कारण और विशेषकर अन्य किसी सहयोगी के न होने के कारण विशेष कार्य नहीं कर पा रहे हैं। न ही आर्य समाज है और न ही वहां पर शुद्धि का कार्य हो रहा है। केवल मात्र आर्य साहित्य का अनुवाद कर छापते हैं, धन के अभाव में समय पर पुस्तक ही नहीं छप पाती खर्चा ज्यादा पड़ जाता है। सार्वदेशिक की ओर से कोई व्यवस्था नहीं उनके सिर पर सत्तर हजार रुपए का बैंक का कर्ज है जिसमें से कोई पैसा असल रकम में से नहीं लौटा सके हैं। केवल बैंक की प्रिंटिंग करके सूद ही मुश्किल से जुटा पाते हैं। छपा साहित्य भी मुश्किल से बिकता है। किन्हीं व्यक्तियों की ओर से छोड़ कर किसी संस्था की ओर से उन्हें कोई सहायता नहीं मिलती और आर्य समाज का काम वहां पर बिल्कुल न के बराबर है मुझे घूमते वहां कोई व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो हिन्दी जानता हो सभी लोग अपनी प्रान्तीय भाषा में ही अपना कार्य करते हैं और उसी का प्रयोग करते हैं। बैंगलूर से कन्या कुमारी गया, स्टेशन पर जहां एक भी अक्षर हिन्दी का लिखा था उस पर तारकोल पोता हुआ था। विश्व हिन्दू परिषद् वाले अपनी-2 दुकाने चला रहे हैं। वहां से लौट कर मैं बैंगलूर से 6 दिसम्बर बस द्वारा कोटायम-अरनाकुलम-सुल्तान बेरी होता हुआ मैसूर पहुंचा मैसूर में छः-सात लाख की आबादी होगी एक छोटी सी गली में एक पुराना मकान लेकर उसमें आर्य समाज बनाया हुआ है जबकि पौराणिकों के बड़े-2 भव्य मन्दिर बने हुए हैं जिन पर लाखों ही नहीं करोड़ों रुपया व्यय हुआ है। यहां भी सभी लोग कार्य व्यवहार कन्नड़ भाषा में करते हैं। आर्य समाजों में भी सन्ध्या हवन की पुस्तकें कर्नाटक में कन्नड़ में केरल में मलयालम में, उड़ीसा में उड़िया में महाराष्ट्र में मराठी में, गुजरात में गुजराती में सब प्रान्तों में अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषाओं में ही हैं हिन्दी का कहीं नाम निशान नहीं जिन स्थानों पर पंजाबी ज्यादा बसे हैं और आर्य समाजों में उन का प्रभुत्व है, वहां पर अवश्य हिन्दी है। मैसूर से बैंगलौर जाकर ठहरा तो वह आर्य समाज भी कर्नाटक के रहने वालों की थी वे अपना सारा कार्य व्यवहार कन्नड़ में ही करते थे सन्ध्या हवन की पुस्तकें भी कन्नड़ में थी, हिन्दी बहुत कम लोग समझते थे कहीं पर भी भारत के दर्शन नहीं हुए, अलग-2 प्रान्तों में देश इतना बटा हुआ है कहीं पर भी भारत की एकता नजर नहीं आती। बैंगलौर से बीजापुर होता हुआ रामलिंगम येडशी पहुंचा वहां पर श्री सुभाषचन्द्र शास्त्री ने एक गुरुकुल खोला हुआ है जो कि आपकी प्रान्तीय सभा में उपदेशक रह चुके हैं। गुरुकुल की चार एकड़ भूमि है बीस से ऊपर विद्यार्थी हैं। छोटी-छोटी दीवार बना कर ऊपर नालीदार टीन की चादरें डालकर छत डाली हुई है जगह सड़क से व रेलवे स्टेशन से काफी हट कर है, एकान्त जगह है कई वर्षों से वर्षा न होने के कारण पानी की काफी कमी है। श्री सुभाष जी बड़ा तप और त्यागमय जीवन यापन कर रहे हैं और जैसे तैसे संस्था को चला रहे हैं मैं कई दिन वहां ठहरा किसी विद्यार्थी के पास रात्रि को ओढ़ने के लिए कम्बल नहीं था शोलापुरी चद्दरों में ही रात काटते हैं मैं उन्हें कह आया हूं कि आपको बीस कम्बल भिजवाऊंगा। श्री सुभाष जी का प्रयत्न भी सराहनीय है। गुरुकुल से शोलापुर होता हुआ 21 दिसम्बर को बम्बई पहुंचा। वहां थाना में आ वनसोली में मेरी छोटी पुत्री सुष्मा रहती है उसका पति नोसिल कालोनी में इन्जीनियर है मैं उन्हीं के पास ठहरा था उस कालोनी में चालीस के करीब नोसिल फैक्ट्री के बड़े आफिसरों के परिवार रहते हैं उसमें प्रायः सभी प्रान्तों के लोग हैं भारत के सब प्रान्तों के अलावा दो उच्च आफिसर भी रहते हैं। वहां के सैक्रेटरी जो एक बंगाली सज्जन थे ने मेरे दामाद को टेलीफोन किया कि आपके ससुर यहां आये हुये हैं और उन्हें कहें कि लोहड़ी तक अवश्य ठहरें, उन्होंने मुझे कहा कि ऐसा उनका विचार है। मैंने स्वीकृति दे दी और उन्हें कहा कि आपके क्लब में यज्ञ किया जायेगा जोकि कम से कम दो अढ़ाई घण्टे चलेगा। उन्होंने मान लिया और दो दिन पूर्व से ही उसकी तैयारी शुरू हो गई। सारी कालोनी की विशेष रूप से सफाई कराई गई एक बड़ा भारी हवन कुण्ड तैयार करवाया गया जिसके चारों ओर आठ परिवार एक साथ बैठ कर यज्ञ कर सकें। यज्ञ कुण्ड के चारों ओर प्लेट फार्म पर कालीन बिछ गये एक आसन एक तख्तपोश पर पुरोहित के लिए लगा दिया गया। प्लेटफार्म से नीचे पच्चास-साठ के करीब कुर्सियां लगा दी गई यज्ञ कुण्ड बना कर पेन्टर से उसे बाहर से साज सज्जा दी गई एक फ्लड लाईट लगाई गई। एक अड़चन थी कि 6-30 से सायं 8-30बजे तक यज्ञ चलना था उसके बाद जाकर घरों में भोजन आदि की व्यवस्था करनी जरा मुश्किल थी। सैक्रेटरी का फोन आया कि 150 लोगों के रात के खाने का प्रबन्ध क्लब की ओर से किया जायेगा। यज्ञ शुरू किया गया। साढ़े 8 बजे तक चलना रहा जिसमें अधिकतर मन्त्रों के अर्थ पुस्तक द्वारा किये गये और व्याख्या से सभी लोग बड़े प्रभावित हुए। यज्ञ में बड़ा ही आनन्द आया बाद में सबने मिल कर भोजन किया अनेक लोग अपने-2 कैमरों से फोटो खींच रहे थे। कालोनी के सब बड़े-2 आफिसर आए हुए थे और अगले वर्ष भी आने के लिए निमन्त्रण दे रहे थे। वहां से 15 जनवरी को मेरी सीट रायपुर (म.प्र.) के लिए रिजर्व थी और मैं 15 जनवरी को कल्याण स्टेशन से प्रातः 7 बजे के करीब चल कर रात्रि के डेढ़ बजे रायपुर पहुंचा वहां से प्रातः 6 बजे के करीब गाड़ी चलती है। उससे खरियार रोड पहुंचा। श्री स्वामी धर्मानन्द जी को पहले ही सूचना दे दी थी इसलिए उन्होंने आश्रम की जीप भेज दी थी और उसके द्वारा मैं 16 ता. को गुरुकुल आमसेना पहुंचा। श्री स्वामी धर्मानन्द जी का अनुरोध था कि 6-7-8 फरवरी को उत्सव है इसलिए आप जरूर ठहरें उस अवसर पर शुद्धि का प्रोग्राम भी होना है। मैं शुद्धि का कार्य देखने के लिए ही यहां आया हुआ हूं, इसलिए मैं ठहर गया। इसी दौरान भुवनेश्वर पुरी कोणार्क आदि के मन्दिर देखे। पुरी और कोणार्क की मूर्तिकला देखने योग्य है। 26 जनवरी को पहले से शुद्ध किये लोगों को मिलने के लिए चले गए सैकड़ों कि.मी. का सफर तय किया अनेक जगह होते हुए सायंकाल 7 बजे के बाद एक गांव कुमुण्डे पहुंचे जहां के लोगों को दो वर्ष पूर्व हमने शुद्ध किया था सारे का सारा गांव केवल एक परिवार को छोड़ कर शुद्ध किया था और वहां गिर्जाघर की जगह बड़ी सुन्दर यज्ञशाला बनाई गई है वहां मैं श्री स्वामी धर्मानन्द जी व श्री शास्त्री गिरिकिशोर जी पहुंचे सारा गांव स्वागत के लिए उमड़ पड़ा और सब ने रात्रि को यज्ञशाला में बैठ कर सन्ध्या की और दो शब्द उनसे कहे। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था सभी लोग भाव विभोर थे, उन्होंने अपनी एक मांग (स्कूल) पाठशाला की रखी जिसकी मैंने श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज से स्वीकृति लेकर उत्तर देने को कहा जिसकी बाद में 7 फरवरी को स्वीकृति मिल गई और उन्हें कह दिया गया कि एक अध्यापक आप यहीं से रख कर यज्ञशाला में ही पाठशाला चलावें तीन सौ रुपया वेतन आपको गतिमण्डल की ओर से प्रति माह मिल जाया करेगा। 6-7-8 फरवरी को गुरुकुल आमसेना का उत्सव था। उत्सव बड़ा ही सफल रहा। पन्द्रह परिवारों को सैकड़ों कि.मी. दूर से ट्रक द्वारा लाया गया था और 7 फरवरी को (शुद्धि) पुनर्मिलन का प्रोग्राम हुआ जिसमें इकत्तालीस लोगों को वैदिक धर्म में पुनः दीक्षित किया गया सब को यज्ञोपवीत देकर तथा वस्त्र आदि से उनका स्वागत किया गया। इन्हीं दिनों दो बी डी ओ दो जीपों में भर कर सैकड़ों धोतियां व अन्य वस्त्र अपने-2 ब्लाकों में बांटने के लिए ले गए 8 फरवरी को एक एम. पी. साहब भी आए और अन्न वितरण किया गया। सैकड़ों ही लोग दूर से अन्न (चावल) लेने के लिए आये हुये थे। यहां गरीबी इतनी ज्यादा है 90 प्रतिशत से ऊपर स्त्रियों के तन पर सिवाय धोती के कोई कपड़ा नहीं रात्रि तक अन्न वितरण का कार्य चलता रहा। एम.पी. साहब ने भी इच्छा प्रकट की कि उन्हें भी वस्त्र दिये जावें ताकि गावों में जाकर वे उन्हें लोगों में बांट सकें एक जीप में उनको भी कपड़े भर कर दे दिये गये और एक हमारा आदमी उनके साथ गया। उन्हें यह बात कह दी गई कि सबसे अन्न देते वक्त यह कहें कि यह सहायता आर्य समाज की ओर से दी जा रही है, वैसा ही किया गया और सब ओर आर्य समाज की जय-जयकार के नारे लगाए गए, 9 फरवरी को शुद्धि के लिए हमने यहां से लगभग डेढ़ सौ कि. मी. दूर जाना था। किन्तु 9 की बजाये 10 फरवरी को गांव टुमी कन्खली में पुनर्मिलन (शुद्धि) के कार्य के लिए चले जीप में अन्न-वस्त्र के अलावा हम बारह लोग सवार थे। डेढ़ बजे दोपहर गुरुकुल से चल कर हम सायं 6-30 पर पहुंचे। हमारे पहुंचने पर जो स्वागत उन लोगों की ओर से किया गया वह भी भाव विभोर करने वाला था पहले देवियों ने दीपक जलाकर पांव धोये आरती उतारी पुष्प मालाएं दी अपनी भाषा में गीत गाए बाद में सब गांव के लोगों ने मिल कर जलूस निकाला आगे-2 नफीरी की तान पर लोग नाच,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

(4 पृष्ठ का शेष)

रहे थे और गीत गा रहे थे और पीछे हम चल रहे थे वहा पर गाव मे एक स्कूल मे हमारी ठहरने की व्यवस्था थी वहा तक सारा जलूस नाचता गाता चला वे लोग मस्त होकर नाच गा रहे थे। प्रात 11 फरवरी को (शुद्धि) पुनर्मिलन का प्रोग्राम था उसमे एक सौ तीस बड व पचास बच्चे थे इस प्रकार से 180 लोगो को पुन यज्ञोपवीत दिया गया। उसी बीच थोडा विघ्न पड गया जबकि हमारे शास्त्री श्री विशिकेसन जी ने ईसाइयो की पोल खोलनी शुरू की कि किस प्रकार से वे हमारे लोगो को लोभ आदि दे कर पथ भ्रष्ट कर रहे हैं उससे इकटठे होकर आ गए और उन्होने कार्य मे रुकावट डालने की कोशिश की। जहा शुद्धि का पण्डाल बनाया गया था वहा से आठ फुट के फासले पर ईसाइयो का चर्च था और उनकी खिड-किया हमारे पण्डाल की ओर खुलती थी पहले तो ऐसा लगा कि काय मे विघ्न पड जावेगा किन्तु श्री विशिकेसन जी ने उडिया मे उनको वह धमकाया कि उन्हे वहा से भागना पडा और सारा काय बडी अच्छी तरह सम्पन्न हुआ। पुनर्मिलन यज्ञ के ब द उन्हे वस्त्र आदि देकर सम्मा-नित किया गया। सारा ही कायक्रम बडा हर्ष प्रद था। वहा से काफी रात्रि गए हम वापस गुरुकुल लौटे।

यहा एक कैम्प आर्य समाज सिविल लाइन लुधियाना की ओर से श्री महात्मा प्रकाश जी धूरी वाले व श्री राम-कुमार जी उपदेशक की देख रेख मे 15 ... से प्रारम्भ किया जा रहा है श्री स्वा सर्वानन्द जी महाराज ने भी चार हजार रुपये अन्न वितरण के लिए भिजवाये हैं, उसका भी अन्न वितरण किया जावेगा। यहा काम के लिए बडा भारी क्षेत्र है। गुरुकुल में 80 के लगभग छोटे 2 बच्चे तथा इसी तरह एक अलग कन्या गुरुकुल मे 35 के लगभग कन्याए शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। आर्ष पाठ विधि से शिक्षा दी जाती है। उडिया भाषा की भी अलग से शिक्षा है हिन्दी सभी को पढाई जाती है। छोटे-छोटे बच्चे प्रात. 4 बजे से उठ जाते हैं। शौच आदि से निवृत्त होकर आसन व्यायाम, लाठी चलाना आदि नित्य प्रति नियम पूर्वक होता है स्नान के बाद नित्य कर्म सन्ध्या हवन प्रात आठ से बारह बजे तक पढाई 12 बजे दोपहर का भोजन सायकाल 1 बजे से चार बजे तक पुन: विद्यालय की पढाई। सायकाल सभी अपने-2 कार्य में जुट जाते हैं। कोई सफाई कर रहे हैं कुछ खेती कार्य मे कुछ कार्यों के कार्य में लगे रहते हैं। पजाब की तरह बच्चे उद्दण्ड नहीं सभी अपने से बडो का बडा मान सम्मान करते हैं। श्री स्वामी धर्मानन्द जी अपने त्याग और तपस्या से सभी विद्यार्थियो मे अच्छे-2 गुणो को धारण कराने का यत्न करते हैं। रात्रि को भोजन के बाद सभी बच्चे इकट्ठे पक्तियो मे घूमते हुए कभी श्लोको का उच्चारण करते हैं कभी दोहे आदि बोलते हैं और रात्रि 9 बजे के लगभग रात्रि मन्त्रो-च्चारण के बाद शयन के लिए जाते हैं। मेरा कहने का भाव यह है कि हमारे दयानन्द मठ की तरह न यहा पर कोई मकान है नही ऐसी व्यवस्था काफी तपो मय जीवन है। मैं जिस कोठरी मे ठहरा हू वह मुश्किल स 9\7 की होगी। जिसमे हम दो लोग ठहरे हुए हैं जिसमे चूहो ने अनेको बिल बनाए हुए हैं। इन सब हालात के होते हुए भी श्री स्वामी धर्मानन्द जी हमारी सब सुख सुविधा का ध्यान रखते हैं। श्री स्वामी जी अपने पुराने शिष्यो मे भी सारे सस्कार कराने के लिए आग्रह करते रहते हैं।

उडीसा म आमतौर पर किसी विशेष स्थान को छोड कर एक ही फसल होती है वह भी यदि समय पर वर्षा हो जावे इसलिए गरीबी बहुत ज्यादा है सरकार की ओर स कुछ विशेष यत्न नही किया गया। न ही कही नलकूप हैं जिससे खेती बाडी की सुविधा हो। पशु झुण्ड के झुण्ड खुले घूमते हैं। दुर्भिक्ष की हालत बनी रहती है इसलिए जितनी ज्यादा से ज्यादा सहायता हो पजाब की ओर स होनी चाहिए। गुरुकुल मे भी सब गरीब बच्चे पढते हैं उनके लिए भी सारी व्यवस्था किन हालात मे हो रही है यह श्री स्वा धर्मानन्द जी ही जाने कि कैसे कर रहे हैं ?

गावो में बाटने के लिए चावल, वस्त्र नए व पुराने (फटे हुए न हो)।

शुद्धि के काय के लिए
अत्यन्त आवश्यकताए

एक छोटी मर्सडीज खुली गाडी। एक लाऊड स्पीकर, चार छः दरिया 12×15, एक बडी तरपाल, नए वस्त्र शुद्धि के लिए एक परिवार के लिए कम से कम साठ रुपये की परि वार खर्च होता है।

मगल कामनाओ सहित

—देवशर्मा वानप्रस्थ
(दयानन्द मठ दीनानगर)

भठिण्डा में अन्तर कालेज भाषण प्रतियोगिता



आर्य समाज भठिण्डा द्वारा आयोजित अन्तर कालेज भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर श्री जी आर नागपाल प्रिंसीपल डी ए वी कालज भठिण्डा प्रथम पुरस्कार शालिनी गुप्ता को दे रहे हैं। उनके साथ प्रो ओ पी मघना प्रधान आर्य समाज बड हैं।

६२ वर्ष का नाता टूट गया

बाहर से हृष्ट पुष्ट देखने पर भी आय समाज भीतर स खोखला होता जा रहा है। सत्ता की होड मे बहुमत जुटाने के प्रयास मे आर्य समाज क सिद्धान्तो, नैतिक मूल्यो, योग्यता आदि की पूरी तरह अवहेलना हो रही है। इसलिए चरित्रवान तथा स्वतन्त्र चिन्तन मे समर्थ बुद्धिजीवी लोग आर्य समाज स दूर जा पडे है। परिणामत आय समाज का नेतृत्व पवित्र आचार विचार वाले वैदिक विद्वानो और नि स्वार्थ समाज सवियो के हाथ स निकल कर डीगें मार कर वोट बटोरने में सिद्धहस्त तिकडमी और खुशामदी लोगो के हाथ मे चला गया है। एक मछली ने सारे तालाब को गन्दा कर रखा है। किसी भले आदमी क लिए अब आय समाज मे कोई जगह नही रह गई है।

ससार का उपकार करने का दावा करने वाले आय समाज के चुनाव पुलिस के सरक्षण म रजिस्ट्रार और हाई कोट क जज करा रहे हैं। उनके गुरुकुलो तक मे गोलिया चल रही हैं। और इस दुदशा के लिए जिम्मेदार है उसका वतमान नेतृत्व है। वास्तव मे झगडे होते नही, अपने को सत्ता मे बनाये रखने क लिए योजनाबद्ध तरीके स कराए जाते है। परिणामत एक-एक प्रान्त मे दो दो,तीन तीन प्रतिनिधि सभाए बन गई हैं और बनती जा रही हैं।

अग्रजी की एक कहावत के अनुसार सत्ता मनुष्य को भ्रष्ट कर देती है और निरकुश सत्ता पूरी तरह भ्रष्ट कर देती है। इसी कारण आज आय समाज में ऊपर स नीचे तक सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है। तीस-तीस वष तक सत्ता का उप भोग करने पर भी उसका मोह नही छटता। अग्नि को साक्षी मान कर शपथ लेने और सावजनिक रूप मे बार-बार घोषणा करने पर भी कुर्सी स हिलने का नाम नही लेते। पहले कभी अपने का आय समाजी कहने पर गव अनुभव होता था, अब शर्म आती है। वास्तव म —

सभा के मुखिया को देख करके सभा से मुनकिर हुई है दुनिया।
कि ऐसे नेता हैं जिस सभा क वो कोई अच्छी सभा नही है॥

आय समाज मर रहा है। वतमान नेतृत्व के रहते उसे बचाया नही जा सकता उसे मरते हुए देखा नही जाता। मारने वालो के बीच रह कर ह या म भागीदार भी नही कहलाना चाहता। इसीलिए वहा स दूर हो जाने के लिए मैंने 1 जनवरी 1988 को आर्य समाज की सदस्यता स त्याग पत्र दे दिया है। मैंने आय समाज के सगठन को छोडा है, वैदिक धर्म को नही। उसके प्रचार-प्रसार मे मैं पूववत प्रवृत्त रहूगा।

—विद्यानन्द सरस्वती
डी 14/16 माडल टाउन दिल्ली

दानवीर मोहनलाल अरोड़ा



दानवीर श्री मोहन लाल जी अरोडा अमृतसर समय-2 पर आर्य समाज के साहित्य को छपवा कर निःशुल्क बाटते रहते हैं। कई बार अपने घर पर बड़े-2 यज्ञ भी करवाते हैं और ऐसे अवसरो पर आर्य समाज की सस्थाओ को दान भी देते रहते हैं। वह पिछले दिनों अस्वस्थ रहे परन्तु परमात्मा की कृपा से अब पूर्णतया स्वस्थ हो गए हैं। ऋषि बोध उत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जब अमृतसर में उनके स्वास्थ्य के विषय में पूछने के लिए उनके निवास स्थान पर गए तो श्री मोहन लाल जी ने सभा प्रधान जी को दस हजार रुपया सभा भवन के निर्माणार्थ दान दिया। इसके लिए प्रधान जी ने सभा की ओर से उन का धन्यवाद किया।

हम भी श्री अरोडा जी का बहुत-2 धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने दस हजार रुपए की पुष्कल राशि सभा को प्रदान की है। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री अरोडा जी सदा निरोग और स्वस्थ रहे और प्रभु उन्हें अधिक से अधिक धन देता रहे ताकि वह इसी प्रकार अपनी सस्थाओ की खुले दिल से दान देकर सहायता करते रहे।

—कमला आर्या महामन्त्री

हवन या होली

लेखक—कवि श्री कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

होली का अर्थ व अब्द हवन की होली गई,
हवन को छोड होली हुडदङ्ग मनाते हैं।
वेद मन्त्र नही यज्ञ, सुवासित होम नहीं,
कुफार गीतो में प्रेम आनन्द मनाते हैं॥
धर्म नही आती कुल-मर्यादा को छोड चले,
धर्म-कर्म त्याग के निलज्ज बन जाते हैं।
बसन्त बहार आती होते मन-उद्गार,
इसी से हवन कर प्रभु मन भाते हैं।
मित्रवर आते घर, मान दे सादर साथ,
बैठाये सदन निज, हर्ष को बढ़ाए हैं।
माल्यार्पण कर, सुमन चढ़ाए सिर,
वेद-वाणी मन्त्र सुन भाग्य को जगाये है।
आर्य वही आर्य मति-गति रखे सत्य धर्म,
वैदिक विचार कर्म करें जो करावे हैं।
घर-घर होवें ऐसा आर्य सु व्यवहार सब,
'घनसार' होरी नही" हवन करावे हैं॥
होली आज होती दीन-मजदूरो को घर-घर,
लूटा-लूट मची लूट—दुष्टो ने मचाई है।
स्वार्थ की है बोल-बाला, देश को न देख पाते,
भ्रष्टाचार व्यभिचार की बाढ चली आई है॥
आजादी मे बरबादी की होली जल रही आज,
अधर्म अन्याय का है, रक्त छिडकाये है।
होली हुडदङ्गो की है, गरीबों की होली होती,
'घनसार' देख देख अति पछताये हैं।

आर्य समाज भठिण्डा में ऋषिबोधोत्सव व सामवेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज भठिण्डा मे ऋषिबोध उत्सव पर सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने 12-2-88 से आरम्भ कर 16-2-88 को शिवरात्रि के दिन पूर्णाहुति दी। यज्ञ प्रातः तथा साय दोनो समय भजन तथा उपदेश के साथ बडी धूमधाम से हुआ। शिवरात्रि के दिन प्रातः ध्वजारोहण पर ब्रह्मचारियो ने राष्ट्रीय गान प्रस्तुत किया तथा स्कूल के बच्चो ने गीत प्रस्तुत किए। पूर्णाहुति पर भठिण्डा नगर के अनेक नर नारियो ने महायज्ञ मे अपनी आहुति दी तथा ऋषिलगर में भोजन किया। अनेक दृष्टि से यह महायज्ञ सफल हुआ। परमपिता परमात्मा की अपार कृपा से वरुण देवता ने एक दिन वर्षा भी की जो हमारी सफलता का चिन्ह था।

—राजेन्द्र कुमार-मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

व्यक्ति व सस्था नारी उत्पीडन विरोधी आन्दोलन का केन्द्रीय विचार रखते हुए सगोष्ठी के निष्कर्षों पर अमल करना चाहे, वे इसमे जुट पड़े। साथ ही अन्य आर्य सस्थाओ से सहयोग का प्रयास करें, दूसरे मुखापेक्षी बन कर निष्क्रिय बने रहने से बेहतर है कि विचार एव कार्यक्रम पर आस्था रखने वाले आर्य समाजो स्वय काम शुरू करें। इससे अवश्य ही व्यापक जन समर्थन मिलेगा। यह आशा से भी स्पष्ट हुआ है कि एक अच्छे आन्दोलनकारी काम के लिए सम्पूर्ण आर्य जगत् अपना समर्थन, सहयोग एव आशीर्वाद दे सकता है।

सभी प्रतिनिधियो ने यह आवश्यकता महसूस की कि आर्य समाज में इस तरह की राष्ट्रीय सगोष्ठिया हर तीन महीने के अन्तराल मे अवश्य की जाए। वर्ष भर की चारो गोष्ठिया देश मे अलग-अलग स्थानो पर होंग इसमे पिछले तीन महीने के कार्यक्रमो का मूल्याकन एव आगामी कार्यक्रम निर्धारण किया जाए। अगामी गोष्ठी अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में करने का निर्णय किया गया है।

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पेपर सेंट्रल रूल 1965 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण व्यौरा— फाम न 4 (रूल न 8)

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर

1	प्रकाशक का स्थान	———जालन्धर
2	प्रकाशन क्रम	———साप्ताहिक
3	मुद्रक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———साप्ताहिक आर्य मर्यादा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर।
4	प्रकाशक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर।
	सम्पादक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———द्वारा साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर।
6	उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत मे अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुर जालन्धर

मै वीरेन्द्र एम ए एतद द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह—वीरेन्द्र
प्रकाशक
हिन्दी साप्ताहिक आर्य मर्यादा
जालन्धर।

स्वास्थ्य सुधा—

व्यस्त मनुष्य अधिक जीता है

शतं जीव शरदो वर्धमानः

अर्थात् सौ वर्षों तक उन्नतिशील जीवन जियो। जीवन शक्ति को ऐसे संयम से खर्च करो कि सौ वर्षों तक पूर्ण कर्म-शील रह सको।

वर्ष मा ग्रेहि मे तन्वां

... ओजो वयो बलम्।

अर्थात् अपने शरीर को भगवान् का दिव्य मन्दिर समझ कर उसकी पूरी देख-भाल ...। शरीर में तेज, साहस, ओज, और ... बल की वृद्धि करो।

अश्मानं तन्वं कृधि।

अर्थात् शरीर को पत्थर जैसे सुदृढ़ बनाओ। श्रम और शारीरिक कष्ट से शरीर मजबूत बनता है।

मेरे पड़ोस में एक सरकारी कर्मचारी पचपन वर्ष की पकी आयु में सरकारी नौकरी से रिटायर हुए। वे यह कहा करते थे कि 'सरकारी दफ्तर से मुक्त होने पर कोई काम-काज न रहेगा, तो बड़े आनन्द से रहेंगे, बस स्वास्थ्य-ही-स्वास्थ्य बनाएंगे। शेष जिन्दगी मजेदारी से गुजरेगी तथा कठोर कार्य और नियन्त्रण से फुरसत रहेगी।

एक दिन उन्हें पेन्शन मिली। काम ...टी मिल गयी। अब वे सारे समय ... के मालिक थे। फुरसत-ही-फुरसत थी।

... उन्हें फुरसत तो मिली, पर मन भारी रहने लगा। और स्वास्थ्य को तो मानो जंग ही लग गया। दो-चार दिन तो इधर-उधर दुकानों, मिलने वाले मित्रों के घर और मुहल्ले में बैठ कर दिन काटे पर फिर उनका मन न लगा। एक दिन, चार दिन, एक मास, दो मास! आखिर कहां तक बैठे रहे? जिन्दगी बड़ी लम्बी, पता नहीं इसकी जड़ कहां तक चले? निठल्ले जीवन से बैठे-2 ऊब गये! यह बीमारी बढ़ती गयी और उन्होंने खाट ही पकड़ ली। डाक्टरी इलाज चलने लगा। जो व्यक्ति कुछ मास पूर्व मजे में आठ घण्टे श्रम करता था, आज वही खटिया पर पड़ा डाक्टर को नब्ज दिखा रहा था और मौत की घड़ियां गिन रहा था।

खाट पर पड़े-पड़े परमात्मा की कुछ ऐसी प्रेरणा हुई कि बेकाम का निठल्ला जीवन तो मानो जंग लग-लग कर अकाल-मृत्यु को प्राप्त करना है। ... प्रकार की आत्म हत्या है। जब तक ... चले, तब तक कुछ करना चाहिए।

बस, वे अपने पुराने दफ्तर गये। संयोग से उन्हें उसी दफ्तर में दैनिक मजदूरी पर फिर मामूली सा काम मिल गया। उन्होंने उसी को ले लिया।

महान् आश्चर्य! भगवान की लीला, दो-चार दिन तो दफ्तर कठिनाई से गये, पर तीन-चार दिन बाद शरीर की मशीन फिर चल निकली। कार्य करने से जंग लगे पुर्जे फिर पूर्ववत् काम करने लगे। काम में लगे रहने से अब उन्हें इतनी फुरसत ही न थी कि वे बुढ़ापे, कमजोरी या बीमारी की निरर्थक कायरतापूर्ण कल्पनाओं में लगे रहें।

आज वे उसी प्रकार दफ्तर जाते हैं। जवानों की तरह काम करते हैं। पैसा बहुत कम मिलता है, पर उसकी परवाह नहीं करते। प्रतिदिन शिकंजे में कसे हुए जिन्दगी आगे चल रही है। सुबह दस बजे से शाम पांच बजे तक काम में दिन बीत जाता है। उसकी धर्म पत्नी मर चुकी है। घर पर कोई काम नहीं है। पर फिर भी काम में व्यस्त रहते हैं। अपने जीवन का निचोड़ वे इन शब्दों में व्यक्त करते हैं—

"मैं दवा दारू से भी काम को आदमी की सबसे बड़ी दवाई मानता हूं। जो लाभ कीमती दवाईयां नहीं करतीं, वह कर्ममय जीवन से सहज ही हो जाता है। कर्म से जीवन और स्वास्थ्य बढ़ते है। कुछ न कुछ शारीरिक और मानसिक काम करते रहने से आदमी अधिक जी सकता है। प्रकृति के दीर्घजीवी जानवर कर्ममय हैं, अगर स्वास्थ्य और दीर्घ जीवी बनना है, तो जिन्दगी के आखिरी दम तक कर्म में लगे रहिये।"

80 वर्षीया छात्रा

पेरिस का एक समाचार है कि बर्फ जैसे सफेद बालों वाली एक परदादी 60 वर्ष पूर्व विवाह में पति से मतभेद होने के कारण छोड़ी गयी थी। उसने अपने लिए काम ढूंढा, तो उसे अनुभव हुआ कि पढ़ने-लिखने के कार्य में वह सबसे अधिक आनन्द ले सकती थी। उसने व्यस्त रहने के लिये पुनः पेरिस के सारबोन विश्वविद्यालय में पढ़ना शुरू कर दिया। 80 वर्षीय यह उत्साही महिला 1905 में भी सारबोन विश्वविद्यालय की विशिष्ट छात्रा थीं, क्योंकि उस जमाने में वह विज्ञान का अध्ययन कर रही थीं। इस महिला के तीन पुत्र, सात पोतियां तथा एक प्रपौत्री हैं। मानसिक रूप में स्वस्थ और दीर्घजीवी बनने के लिए वह काम को जरूरी मानती है। अब उसने अंग्रेजी एवं जर्मन अध्ययन करने के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया है।

वह कहती है, मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से इस नतीजे पर पहुंची हूं कि आदमी की मशीन को लगातार चलाते रहने से बहुत दिनों तक चलती रहती है। मनुष्य जितना अधिक किसी उपयोगी काम में लगा रहता है उतना ही उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

यहां हमें महात्मा गान्धी जी की वह उक्ति याद आती है, जिसमें उन्होंने कहा है कि 'सच्चा विद्यार्थी वही है, जिसको विद्योपार्जन की सच्ची भूख लगी हो, जो विद्या प्राप्ति की कठिनाइयों को देखकर आनन्दित होता हो और जो विद्या को ही साध्य और केन्द्र बना कर अन्य सब बातों को भूल जाता हो। यदि कोई यह समझ कर विद्या पढ़े कि वह उसे अर्थ-प्राप्त का उद्देश्य सिद्ध करेगी, तो जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने का न उच्च दर्शन मिलेगा और न तब उसका श्रम ही सार्थक होगा।'

एक सौ पन्द्रह वर्ष का डाक का कर्मचारी

धनबाद में एक सौ पन्द्रह वर्ष की दीर्घ आयु भोग कर अभी हाल ही में एक डाक विभाग का कर्मचारी इस असार-संसार से विदा हुआ है। लोग उसकी बड़ी प्रशंसा करते हुए सुने गये हैं।

परिचित व्यक्तियों का कहना है कि उक्त कर्मचारी पोस्टमैन का काम पैदल करता था। जीवन भर खूब घूमता फिरता रहा। निठल्ले और आलसी जीवन से उसे अत्यन्त घृणा थी। उसने साईकिल भी लेना पसन्द नहीं किया था। अपनी इतनी लम्बी आयु में भी स्वभाव से बड़ा शान्त था। उसको कभी कोई नशा करते नहीं देखा गया और न कभी क्रोध!

अपने सेवाकाल के बाद भी उसने पूरे साठ साल तक विश्राम भत्ता पाया था। नाती-पोतों से भरा पूरा परिवार छोड़ कर जाने वाले इस कर्मचारी का स्वास्थ्य टहलने, घूमने-फिरने और किसी-न-किसी काम में अपने को व्यस्त रखने के कारण पूर्णतया सुरक्षित था। जब कभी उससे किसी ने उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा, तो उसने एक ही बात कही, 'मैं कभी निठल्ला नहीं रहता, कुछ न कुछ करता रहता हूं, मेरा विश्वास है कि काम करने से ही आदमी स्वस्थ और दीर्घजीवी बन सकता है।'

159 वर्ष की आयु में भी घुड़सवारी

मास्को सोवियत संघ के अजरबैजान गणराज्य के सबसे बूढ़े शिराली मिसलिमोव ने बाकू में अपना 159 वां जन्म-दिवस मनाया। बाकू में उनके सम्मान में एक समारोह आयोजित किया गया। मिसलिमोव ने घर से बाकू तक 6 मील की दूरी कार से तय करने से इन्कार कर दिया। वे कुछ दूर पैदल और फिर घोड़े पर सवार होकर समारोह स्थल तक गये। 'तास' के अनुसार इतने वृद्ध होने पर भी मिसलिमोव बहुत चुस्त हैं। वे पैदल चलने और भेड़ पालने में व्यस्त रहते हैं। खाली नहीं बैठते। काम में रुचि है। वे कभी शराब नहीं पीते, न सिगरेट ही, पर वे अधिकतर सब्जियां और फल आदि खाते हैं। उनकी पत्नी की आयु 85 वर्ष है और उनका सबसे बड़ा पोता 35 साल का है।

—★—

गोष्ठियों से समाधान नहीं निकलेगा

आर्य मर्यादा के 24 जनवरी के अंक में प्रकाशित श्री वीरेन्द्र जी के द्वारा लिखित इस सम्पादकीय से मैं पूर्णतया सहमत हूं जिसमें कहा गया है कि हम गोष्ठियां करते रहेंगे और दुनिया आगे निकल जाएगी। मैं इस प्रकार की गोष्ठियां गत 25-26 वर्षों से देख रहा हूं। 1967 में जब दिल्ली में अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन का नवम अधिवेशन हुआ था उस समय आर्य समाज के विशिष्ट जनों का एक सम्मेलन स्वामी ध्रुवानन्द जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसमें आर्य समाज के संविधान, प्रचार प्रणाली उपदेशकों की स्थिति, साहित्य प्रकाशन तथा अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर 2 दिनों तक गम्भीर विचार-विमर्श हुआ। इसके बाद भी समय समय पर इस प्रकार की विचार गोष्ठियां होती रहीं। श्री दत्तात्रेय जी को तो स्वयं सार्वदेशिक सभा ने ही नियुक्त किया था कि वे आर्य समाज के विधान कार्य प्रणाली तथा उसके समक्ष उपस्थित चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए उपयोगी सुझाव दें, किन्तु उनके द्वारा सुझाए गए विचारों और कार्य प्रणाली को क्रियान्वित करने के लिए कुछ भी नहीं किया गया। तथ्य यह है कि आज आर्य समाज की बागडोर जिन लोगों के हाथ में है वे सब कुछ जानते हुए भी आर्य समाज से जुड़ी समस्याओं का समाधान न तो खोजना चाहते हैं और न इन पर चिन्तन करने वालों को ही कोई महत्व देते हैं। वास्तव में आर्य समाज में बुद्धिवादियों को कोई आदर प्राप्त नहीं है और उनका सारा परिश्रम अरण्य रोदन ही सिद्ध हो रहा है।

—डा. भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

उड़ीसा में भयंकर अकाल

उड़ीसा में भयंकर अकाल पड़ा हुआ है। साथ ही ग्रामाञ्चलों में लोगों की विवशता का लाभ उठा कर धर्म परिवर्तन का कुचक्र भी चालू है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कलप्रदेश के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के आदेशानुसार तथा महात्मा श्री प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी पूरी वालों के मार्ग दर्शन में आर्य समाज सिविल लाइन लुधियाना ने वहां पर धर्मार्थ अन्न क्षेत्र चालू किया है। प्रति माह 1000रुपए का अन्न वितरण किया जा रहा है। अन्न भण्डार के कार्य को पर्यवेक्षक श्री रामकुमार जी आर्य देख रहे हैं। इस कार्य का श्री गणेश, लाला हुकमराज जी अग्रवाल गुरदासपुर वालों के 2101 रु से हुआ था। श्री वेद प्रकाश जी, श्री हरिचन्द जी, लाला जानकी दास जी जैन बहिन यश भल्ला, श्री रामरत्न जी सोंधी प्रधान आर्य समाज तन मन धन से इस शुभ कार्य को सफल बनाने में जुटे हुए हैं। कम से कम 30000 रुपए व्यय करने की योजना है। यदि हरियाणा का अन्न क्षेत्र चालू न किया गया तो अधिक समय तक भी चालू रखा जाएगा। मास मार्च में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को लुधियाना बुला कर आशीर्वाद प्राप्त किया जाएगा और मार्ग दर्शन प्राप्त किया जाएगा।

—वेणी प्रसाद शास्त्री-मन्त्री
आ स सिविल लाईन लुधियाना

शुद्धि समाचार

56 परिवारों के 221 ईसाई वैदिक धर्म में 8 फरवरी को गदगुन महोत्सव पर [illegible] 81 ईसाई तथा 10 [illegible] (सम्बल-[illegible]) से [illegible] परिवारों के 180 ईसाइयों [illegible] किया। [illegible] जी, [illegible] दयानन्द मठ दीनानगर आदि अनेक साधु सन्यासी इन्हें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। संस्कार समारोह अत्यन्त उत्साहमय वातावरण में श्री [illegible] सिद्धिकेश्वर जी शास्त्री ने कराया। काम दुश्मनी के कुछ ईसाई प्रचारकों ने बहुत कुछ बाधा डालने की चेष्टा की परन्तु ग्रामवासियों के प्रयत्न से उनका षड्यन्त्र असफल हो गया। ध्यान रहे इस समारोह का आयोजन [illegible] वर्ष के सामने उत्साही ग्राम वासियों ने किया था।

ध्यान रहे गत कई वर्ष से शुद्धि का यह आन्दोलन श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयत्न से और पुरुषार्थ से चल रहा है। इस महत कार्य में सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी पुरी आदि का पूर्ण आशीर्वाद एवं सहयोग मिल रहा है।

तलवाड़ा में ऋषिबोधोत्सव

16-2-88 को आर्य समाज तलवाड़ा में ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। छोटे-2 बच्चों ने वेद मन्त्रों का पाठ किया तथा रसीले भजन गाए। श्री पृथ्वीराज जी जिज्ञासु, श्री [illegible] जी आर्य तथा श्री मनोहर लाल जी ने शिवरात्रि पर्व के महत्व पर तथा महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। बाद में प्रीतिभोज किया गया जिसमें सभी आर्य बन्धुओं ने मिल कर भोजन किया।

—मनोहरलाल-मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

ओ३म्

नव सम्वत मंगलमय हो

चैत्र सुदी प्रतिपदा (दिनांक 19-3-88) नव संवत् (नव वर्ष) व आर्य समाज के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर

आर्य मर्यादा के सभी सदस्यो व पाठकों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों व अध्यापकों, आर्य समाजों व स्त्री आर्यसमाजों के सभी अधिकारियों व सदस्यो को

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से बधाई व हार्दिक शुभ कामनाएं

वीरेन्द्र	हरबंस लाल शर्मा	कमला आर्या
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री

आर्य मर्यादा का अंक 50 दिनांक 20 मार्च 1988 का आर्य समाज स्थापना दिवस विशेषांक

वार्षिक शुल्क 30 रुपये, इस अंक का मूल्य -1 रुपया

ामकाय

आर्य समाज स्थापना दिवस

आज से 112 वर्ष पूर्व चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् 1932 विक्रमी तदानुसार 7 अप्रैल सन् 1875 को भारत की प्रसिद्ध नगरी बम्बई में महर्षि दयानन्द ने आर्य-समाज की स्थापना की थी ।

चैत्र सुदी प्रतिपदा को प्रति वर्ष हम नव सम्वत्, नव वर्ष मनाते हैं । यह दिन जहां हमें नव प्रेरणाएं देने वाला है, वहां आर्यसमाज का स्थापना दिवस होने से और भी महत्वपूर्ण बन जाता है । क्योंकि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने जो आन्दोलन, सभी प्रकार के पाखण्ड, अनाचार, अत्याचार और समाज में फैली बुराइयों के विरुद्ध आरम्भ किया था । उस आन्दोलन को आगे चलाए रखने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की गई थी । इसलिए इस दिन को मनाते हुए प्रत्येक आर्य भाई-बहिन को यह विचार करना चाहिए कि वह महर्षि दयानन्द जी के द्वारा चलाए गए इस आन्दोलन को कैसे आगे तक जारी रख सकते हैं और साथ ही यह भी विचार करें कि हमें इस कार्य में कहां तक सफलता मिली है ?

आज फिर हम 19 मार्च को नव सम्वत व आर्यसमाज स्थापना दिवस मना रहे है । 19 मार्च से नवसम्वत 2045 का शुभारम्भ हो रहा है । इस दिन को मनाते हुए जहा हम अपने सभी बन्धुओं को नव वर्ष की बधाई व शुभ कामनाए भेंट करें, वहा यह भी निश्चय करें कि हम आर्यसमाज के कार्य को निरन्तर आगे ही आगे बढाते रहेंगे । हम इस दिन अपने अतीत की तरफ भी देखे, वर्तमान को भी देखें और भविष्य के सम्बन्ध में भी कोई योजना बना कर कार्य आरम्भ कर दें ।

इस बार आर्यसमाज स्थापना दिवस पर हम आर्य मर्यादा के पाठकों को आचार्य भद्रसेन जी साधु आश्रम होशियारपुर द्वारा लिखी एक पुस्तक "वेद की कुंजी सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास" भेंट कर रहे है । लेखक ने इस पुस्तक के माध्यम से सिद्ध किया है कि सत्यार्थ प्रकाशका प्रथम समुल्लास पढ़ कर वेद को समझना आसान हो जाता है ।

हमें विश्वास है कि पाठकों को इस पुस्तक के पढ़ने से सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास पढ़ना आसान हो जाएगा और यह अच्छी प्रकार से समझ मे आ जाएगा कि महर्षि दयानन्द जी ने यह समुल्लास सब से प्रथम क्यों दिया ?

अन्त में हम फिर सभी पाठकों के लिए मंगल कामना करते है कि यह सम्वत 2045 सभी के लिए मंगलमय हो ।

कमला आर्या
सभा महामन्त्री

प्रथम समुल्लास प्रारम्भ में क्यों ?

सुधीर—गुरु जी ! क्या हम कमरे में आ सकते हैं ?

गुरुदेव—हां अवश्य आइये ! अभिवादन के पश्चात् चारों यथा स्थान बैठ जाते हैं ।

सुधीर—गुरु जी ! अजय, विजय और अभय मेरे पुराने सहपाठी हैं और बी. ए. के अन्तिम वर्ष की इन्होंने परीक्षा दी हुई है । इस बार जब मैं अवकाश में घर गया था, तो इन साथियों से जहां और बहुत सारी बातें हुई थी, वहां इन्होंने बताया कि अपने एक प्राध्यापक की प्रेरणा पर हमने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना शुरु किया हुआ है । एक दिन बातचीत में इन्होंने कहा—देखो ! सुधीर तुम संस्कृत पढ़ते हो । अतः सत्यार्थ प्रकाश का यह प्रथम समुल्लास हमें समझा दो, क्योंकि और समुल्लास तो कुछ-कुछ हमें समझ आ गए हैं और बहुत सारी उपयोगी बातें हमें पता चली हैं । पर दो बार पढ़ने पर भी प्रथम समुल्लास समझ नहीं आया । पता नहीं महर्षि दयानन्द जी ने इस को शुरू में क्यों रख दिया है ?

सुधीर—गुरु जी उस दिन मैंने अपनी जान बचाने के लिए इनसे यही कहा, आज सत्यार्थ प्रकाश मुझे दे दो, मैं सारा प्रकरण सोच-विचार कर कल आपको बता दूंगा । मैंने अपने संस्कृत पढ़ेपन की लाज को बचाने के लिए बड़े ध्यान से इसको दो बार पढ़ा । जो लिखा था, वह निरुक्त, व्याकरण शास्त्र पढ़ा होने के कारण समझ में तो आ गया पर यह पता नहीं चला, कि इसको शुरु में क्यों रखा है ? तथा इस सारे समुल्लास का क्या अभिप्राय है ?

अगले दिन अपनी जान छुड़ाने के लिए कहा, कि हर पुस्तक के आरम्भ में मंगलाचरण होता है । इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश में भी यहां ईश्वर के एक सौ आठ नाम दिए हैं और उनके निरुक्त व्याकरण शास्त्र के आधार पर अर्थ बताए गए हैं । अतः इस को पढ़ने की जरुरत नहीं है, पुस्तक तो दूसरे समुल्लास से शुरु होती है ।

मेरे इतना कहने पर इन साथियों ने इस पर कई प्रश्न कर दिये । अन्त में मैंने यही कह कर जान छुड़ाई, कि मैं तो इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता, हां अपनी पढ़ाई का महत्त्व दिखाने के लिए ही मैंने पूर्व उत्तर दिया था । इनके प्रश्नों से बचने के लिए

मेंने इनको आप का परिचय दिया। इसलिए ये आज मेरे साथ यहां आए हैं। अतः आप इनके प्रश्नों का उत्तर देने की कृपा करें। गुरुदेव ठीक है! आप पूछिये, जो आप इस विषय में पूछना चाहते हैं।

अजय—हमने सत्यार्थ प्रकाश को सामान्य रूप से अपनी योग्यता के अनुसार पढ़ा है। अतः पहले सुधीर ने हमारी जो जिज्ञासा बताई है उसी पर प्रकाश डालने की कृपा करें।

गुरुदेव—तुमने सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ते हुए अनुभव किया होगा, कि इसमें स्थान-स्थान पर वेदों का वर्णन है और उनका बहुत अधिक महत्त्व बताया गया है। अतः यह प्रथम समुल्लास 'वेद की कुञ्जी' है। इसीलिए इसको सबसे पहले रखा है।

विजय—हमें तो अभी कुछ समझ नही आया।

गुरुदेव—किसी बात को गहराई से समझने के लिए विशेष ध्यान देने की जरुरत होती है। अतः देखो! यह तो सब मानते हे, कि ससार के पुस्तकालय की वेद ही सब से पुरानी पुस्तक है और वेद ही भारतीयों के साहित्य, धर्म आदि के मूल-भूत आधार हैं, क्योंकि सारा सस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं का साहित्य वेदो का बड़ी श्रद्धा से स्मरण करता है। धर्म के कार्य यज्ञ, व्रत, पूजा आदि में वेद के मन्त्र बर्ते जाते हैं।

अभय—यह तो स्पष्ट है कि वेद भारतीयता के मूल आधार हैं, और सत्यार्थ प्रकाश में वेदो की बहुत प्रशंसा आई है। पर प्रथम समुल्लास वेद की कुञ्जी कैसे है?

गुरुदेव—वेदों में अग्नि, इन्द्र, सूर्य, विष्णु आदि शब्दो को आधार बनाकर वर्णन किया गया है। अतः एव इनको देवता भी कहते है।

अजय—हा, हमने इतिहास में भी पढा है, कि वेद आर्यों के धर्म ग्रन्थ है, और इनमे अग्नि आदि देवों की स्तुति प्रार्थना है।

गुरुदेव—अब यही सोचने वाली बात है, कि अग्नि आदि शब्दों में किसका वर्णन है? क्या ये अग्नि आदि शब्द सभी मन्त्रों में परमात्मा के लिए आए हैं? या ये सारे अलग-अलग देवता है या अग्नि, सूर्य, वायु आदि प्राकृतिक पदार्थों के लिए आए हैं?

अजय—हा, प्रथम समुल्लास में ये सारे परमेश्वर के नामों में आए हैं। अतः ये क्या केवल परमात्मा के लिए ही वेदों में आए है?

गुरुदेव—प्रथम समुल्लास में बड़े सरल शब्दों में बताया गया है, कि वेद मन्त्रों में जहा-जहा संसार के बनाने, चलाने वाले के रूप में अग्नि, इन्द्र आदि शब्द आए हैं और सर्वज्ञ, सर्व-व्यापक, सर्वरक्षक आदि गुणों की बात है तथा भक्ति, उपासना का प्रकरण है, वहां-वहां अग्नि आदि शब्द परमात्मा के लिए आये है।

पर जहां मन्त्रों में किसी के पैदा होने आदि की बात है। वहां अग्नि, विराट् आदि प्राकृतिक तत्त्वों के वाचक हैं।

जिन मन्त्रों में सुख, दुख, इच्छा, द्वेष और प्राप्त करने और कुछ मेहनत करने की बात है, वहां-वहां जीव के लिए ही इन्द्र आदि शब्द आए हैं।

विजय—यह बात तो बहुत कुछ समझ में आ रही है, पर प्रथम समुल्लास में ईश्वर के एक सौ आठ नामों का विवेचन क्यों किया है ?

गुरुदेव—जब यह मूल सिद्धान्त बता दिया, कि अग्नि आदि प्रकरण, गुण, क्रिया के आधार पर ईश्वर या प्रकृति या जीव के लिए आते हैं, तब वहां उदाहरण के रूप में यहां यह भी समझाया है, कि विष्णु, वरुण, आदि जहां-जहां ईश्वर के वाचक हैं, वहां-वहां इन का ईश्वर के किस गुण या कर्म को बताने वाला अर्थ इस प्रकार से होगा।

अभय—क्या इन्द्र आदि परमेश्वर या देवता को छोड़ कर किसी और अर्थ में भी आते हैं ?

गुरुदेव—हां, आते हैं। तुमने षष्ठ समुल्लास में देखा होगा, कि वहां मनुस्मृति का एक श्लोक दिया है। जिस में इन्द्र आदि अनेक शब्द हैं। महर्षि ने प्रकरण के अनुसार इन सब का अर्थ राजा—प्रशासक के रूप में दर्शाया है।

इस सारे का सारांश यह है कि वेदो मे अग्नि आदि को आधार बना कर वर्णन किया गया है। वहां अग्नि प्रकरण, विशेषण और क्रिया के अनुसार कभी ईश्वर की ओर संकेत करते है और कही प्रकृति या जीव की ओर। हां यह बताने के साथ ही प्रथम समुल्लास में यह भी बताया गया है, कि जहा ये ईश्वर के वाचक हैं, वहां उन का अर्थ इस प्रकार से होगा।

अजय—गुरु जी ! बात स्पष्ट होती हुई प्रतीत होती है, पर यह सब कुछ संक्षिप्त सा ही लगता है। अच्छा हो कुछ विस्तार से बताया जाए।

गुरुदेव—कार्यक्रम के अनुसार आज तो इतना ही समय है। हां, तुम यहीं बैठ कर 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास' की हस्तलिखित प्रति पढ़ लीजिए फिर भी कुछ और पूछना हो, तो कभी फिर आइए।

विजय—गुरु जी ! उस दिन आपके कार्यक्रम की व्यस्तता के कारण आप हमें अधिक समय नहीं दे सके थे। पर संक्षेप से समझाने के साथ आपने हमें जो 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास की हस्तलिखित प्रति पढ़ने के लिए दी। उस को पढ़ कर हमें बहुत ही सन्तोष हुआ। पहले तो हम यही सोचते थे, कि अग्नि, इन्द्र आदि अलग-अलग देवों के नाम ही क्यों ना माने जाएं ? ये एक परमेश्वर के स्थान पर अलग-अलग कैसे हो गए ?

अजय—अब आपकी अप्रकाशित पुस्तक मे सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास का दो शिष्य और गुरु की पग सेवा वाला दृष्टान्त पढा, तो सारी स्थिति स्पष्ट हो गई। इस हस्तलिखित प्रति के पढने से हमारे मन की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान स्वत ही हो गया।

अभय—गुरु जी ! इस कृपा के लिए सुधीर के साथ हम आपके बहुत ही धन्यवादी है। हा, यह पुस्तक कब प्रकाशित हो रही है।

गुरुदेव—आज से दो वर्ष पूर्व मैं स्वय भी प्रथम समुल्लास के सम्बन्ध मे इतना स्पष्ट नही था। हा, विचार जारी था, इसी के परिणामस्वरूप यह पुस्तक चार मास पूर्व लिखी जा सकी है। हा, अब प्रकाशित हो रही है।

—भद्रसेन दर्शनाचार्य

वेद की कुन्जी प्रथम समुल्लास

यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि वेद ससार के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तकें है। विशेषतः भारतीयो का साहित्य, धर्म सस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास वेदो से जुडा हुआ है[1] अत भारतीयता के वटवृक्ष का मूलभूत आधार वेद ही है, अर्थात् वेदो से रस लेकर ही भारतीयता का सब कुछ अकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ है। वैसे अन्यो पर भी इस की छाप स्पष्ट है।

भारतीयता का मूलस्रोत—भारतीयता के विविध पहलुओ मे से उदाहरण के लिए जब हम भारतीय साहित्य पर एक दृष्टिपात करते है, तो स्पष्ट होता है कि वेद के महत्त्व को स्वीकार करते हुए ही उसके अन्त , बाह्य स्वरूप को समझने-समझाने के लिए समय-समय पर अनेक मनीषियो ने वैदिक वाङमय के रूप मे एक विशाल साहित्य रचा। जिसका पद जटा प्रभृति पाठ, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदाग, उपाग, उपक्रमणिका, दर्शन तथा भाष्य सदृश उपलब्ध साहित्य आज भी प्रमाण है। न केवल वैदिक वाङमय ही, अपितु लौकिक सस्कृत के महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, चम्पू जैसे साहित्य मे भी बड़े सम्मान के साथ वेदो को स्मरण किया गया है। वह रामायण हो या महाभारत, पुराण—उपपुराण हो या स्मृतिग्रन्थ या कालिदास सदृश

---

1. नि सन्देह जिन का यह विश्वास है कि सृष्टि के स्रष्टा ने मानवमात्र के कल्याण के लिए सर्गारम्भ मे वेदो का ज्ञान दिया। जिससे वह ससार के पदार्थों और व्यवहारो का बोध प्राप्त कर सके। तभी तो कहा है—

सर्वेषा तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् सस्थाश्च निर्ममे ॥मनुस्मृति 1, 21

ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर है। अतः सूर्य, जल, वायुवत उस का ज्ञान-वेद भी सार्वभौमिक, सार्वकालिक एव सार्वजनीन है। उन की दृष्टि से वेदो का भारतीयता तक ही सीमित करना सर्वथा अनुचित है। पुनरपि यह एक तथ्य है, कि भारतीयो ने प्राचीन काल से ही वैदिक क्षेत्र मे जो कार्य किया है, उसकी कोई तुलना नही। दूसरा भारतीयो का धर्म, साहित्य आज भी वेद से जुडा हुआ है। अत. एव वेद भारतीयो के सर्वस्व बन गए हैं। तभी तो भारतीयो की धरोहर के रूप मे स्मरण किए जाते है।

कवियो की विविध विधा की रचनायें। इन सभी मे बड़े अनूठे ढंग से वेद की चर्चा मिलती है।

आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य मे वेदो को केवल आदर ही नहीं दिया गया, अपितु इनमे वैदिक वाङ्मय का विस्तृत विवेचन और अनुवाद भी प्राप्त होता है। दूसरी आधुनिक भारतीय भाषाओ की तो बात ही क्या ? संस्कृत से जानबूझ कर दूर ले जाई जाने वाली या वर्ग विशेष तक सीमित करके दूर की जाने वाली पंजाबी की मान्यास्पद रचना *अर्थात् गुरुग्रन्थ मे एक सौ से अधिक बार वेद का* नाम ही नही आता, अपितु इस के साथ वेद की महिमा भी अनेक स्थानो पर आदर के साथ मिलती है[1]।

भारतीय साहित्य की तरह ही भारतीयता की अन्य विधाओ के भी वेद ही मूल आधार हैं। भारतीय धर्म की सभी शाखाओं का सर्वस्व वेद ही है[2], क्योंकि इन का

1—वेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा जो न विचारे
[राग प्रभाती, कबीर जी, महल्ला—9, शब्द—7]

वेद बखिआन करत साधु जन, भागहीन समझत नही खमु
[टोडी म—5, शब्द—26]

वेद कहन इक बात

असंख ग्रन्थ मुखि वेद पाठ [जप जी]

दीवा जले अंधेरा जाई। वेद पाठ मति पापा खाई।

2—अथातो धर्म जिज्ञासा, चोदना लक्षणो ऽर्थो धर्मः मीमासा 1, 1, 1—2, =वेद वचन ही धर्म है।

यही भाव मनुस्मृति मे अनेकत्र अभिव्यक्त किया गया है—

वेदो ऽखिलो धर्ममूलम् 2, 6 , ताभ्यां धर्मो हि

निर्बभौ 2, 10 , वेद —साक्षाद् धर्म लक्षणम् 2, 12 ,

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाण परम श्रुति 2, 13 ,

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् वैशेषिक 1, 1, 3=धर्म चर्चा के कारण ही वेद प्रमाण है।

वेदो धर्ममूलम्—गौतम धर्मसूत्र—1

धार्मिक साहित्य की तरह ही दर्शन, अध्यात्म, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि शाखाओ के ग्रन्थ भी वेदो को अपने विषय मे प्रमाण मानते हैं। इस से स्वत. सिद्ध हो जाता है, कि भारतीय विधाओ के सभी ग्रन्थ वेद भूमि से रस लेकर ही अपने-अपने रसयुक्त फल के उत्पादन मे सफल हुए हैं।

आचार और सिद्धान्त पक्ष जहां वेद के अनुरूप है, वहां कर्मकाण्ड की पूजा, यज्ञ, संस्कार, व्रत आदि वेदमन्त्रों द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

वेद का वर्ण्यविषय—एक पाठक जब वेद की गरिमा[1] से प्रभावित हो कर उस का अध्ययन प्रारम्भ करता है, तो वह वेदों को पढ़ते हुए अनुभव करता है, कि यहां कहीं अग्नि का गुणगान है तो कहीं इन्द्र के गीत गाए गए हैं, और कहीं सोम की स्तुति प्राप्त होती है तथा उन से अनेक तरह की प्रार्थनायें की जाती हैं। तभी उसके सामने यजुर्वेद का यह बहुत प्रचलित मन्त्र आता है—

'अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवो देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता' 14, 20 इस से सीधा सा यह भाव सम्मुख आता है, कि वेदों में इतने देवताओं की स्तुति, प्रार्थना, पूजा, उपासना है। तब एक दम पाठक को अपने पाठ्यक्रम में उद्धरण याद आ जाते हैं। क्योंकि—

आज भी इतिहास एवं सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है, कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, पृथ्वी, सूर्य आदि देवी देवताओं की स्तुति है। प्रारम्भिक काल के लोग जहां कुछ भी अनोखापन देखते, आश्चर्य चकित होकर उसके गीत गाने लगते और उससे प्रार्थनायें करते थे। ऐसे स्तुति, प्रार्थनाओं वाले मन्त्रों के संग्रह का नाम ही वेद है। अतः वेद मानव जाति के इतिहास में शैशव काल की शैशवमयी रचनायें हैं[2] और यूनान, मिस्र, रोम और यूरोप की सभ्यता की तरह आर्य सभ्यता के लोग भी अनेक देवी देवताओं की पूजा करते थे।

याज्ञिक परम्परा और वेद—याज्ञिक परम्परा वालों का भी यह विश्वास है,

1 पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्। मनु 12, 13
बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनम्।
तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्॥ मनु० 12, 99
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु० 2, 6
सर्वं वेदात्प्रसिध्यति मनु० 13, 96
बुद्धिपूर्वावाक्यकृतिर्वेदे वैशेषिक 6, 1, 1

2. निःसन्देह वेदों के सम्बन्ध में तीन मत हैं, कुछ पाश्चात्यों का विचार है, कि वेदों की प्राचीनता सर्वमान्य है, पर उनमें तात्कालिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य से ही वर्णन है। अतः आधुनिक दृष्टि से इनकी उपयोगिता न होने से वेद अब केवल अजायब घर की शोभामात्र हैं।

कि वेदों की रचना यज्ञों के लिए की गई है[1]। अर्थात् वेदों में अनेक यज्ञों और उन में पढ़े जाने वाले उस-उस यज्ञीय देवता के मन्त्रों का संग्रह है। उनका विचार है, कि अग्नि, इन्द्र आदि इष्ट देवों को प्रसन्नता द्वारा वर [मनौती] प्राप्ति के लिए यज्ञ रचाए जाते हैं। उस-उस देवता के तत्सम्बद्ध मन्त्रों से यज्ञ में उस-उसकी स्तुति, प्रार्थना की जाती है। देवता अपने यज्ञ में स्वहवि [भाग] को लेने के लिए आते हैं या अग्नि दूत बन कर उस-उस देव का आवाहन करता है, उन को लाता है या उसकी हवि को उस-उस देवता के पास पहुंचता है।[2] अतः वेदों में अग्नि, इन्द्र आदि अनेक देवों की स्तुति, प्रार्थना है, जिसकी पुष्टि उन-उन देवताओं वाले सूक्तों, मन्त्रों से भी होती है।

वेद में देवसंख्या—वेदों में जहां अनेक देवी-देवताओं के नाम, उनके विविध विशेषण और कार्यों का चित्रण प्राप्त होता है, स्पष्ट रूप से देवों की तेतीस संख्या का निर्देश भी अनेक बार आता है[3]। ब्राह्मण ग्रन्थों के इन तेतीस की नाम परिगणना

1—दैवाधीन जगत्सर्वम्, मन्त्राधीनाश्च देवताः देवो देवेभिरागमत्

ऋ० 1, 1, 5;

देवान् एह वक्षति ऋ० 1, 1, 2;

सह इद् देवेषु गच्छति ऋ० 1, 1, 4

2—ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन्।

विदन्नह द्वितासनन्॥ ऋ० 8, 28, 1

त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतान्यशाम्यन्प्रजापतिः।

परमेष्ठ्यधिपतिरासीत्॥ यजु० 14, 31

यस्य त्रयस्त्रिंशद देवा निधिं रक्षन्ति सर्वदा।

निधिं तमद्य को वेद यं देवा अभिरक्षथ॥ अथर्व० 10, 6, 23

यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा अङ्गे गात्रा विभेजिरे।

तान्वै त्रयस्त्रिंशद् देवानेके ब्रह्मविदो विदुः॥ अ० 10, 7, 27

3—वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः। वेदांग ज्योतिष अर्थात् वेद यज्ञों की प्रक्रिया के लिए ही हैं।

दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्। मनु० 1, 23=ऋग्, यजुः, साम नामक वेद यज्ञ की सिद्धि के लिए ईश्वर ने अग्नि, वायु, रवि नामक ऋषियों के माध्यम से दिए हैं। चत्वारि शृंगा ऋ० 4, 58, 3 मन्त्र के याज्ञिक अर्थ से भी यही पुष्ट होता है। गीता के कर्मब्रह्मोद्भवं विद्धि 3, 15 से भी यही भाव ध्वनित होता है।

भी मिलती हैं[1]। अनेक मन्त्रो मे इन सबका एक एक महादेव या मुख्य देवता भी बताया गया है तथा इन सबको उसमे प्रतिष्ठित कहा है और वे सब उसके सहायक हैं[2]।

निरुक्त और देवता—वेदो की व्याख्या के क्षत्र मे निरुक्त का एक प्रतिष्ठित स्थान है। निरुक्त निघण्टु, की व्याख्या है। निघण्टु के पहले भाग मे पर्यायवाची वैदिक शब्दो का सग्रह है। जैसे पृथिवी के इक्कीस नाम हैं अर्थात वेदो मे पृथिवी को इन इक्कीस नामो से निर्दिष्ट किया गया है। वेद के शब्द प्रकृति [धातु], प्रत्यय के मेल से बनने के कारण यौगिक हैं। अत तदनुरूप अपने अर्थ का अभिव्यक्त करत है। पूणत कोई भी शब्द पर्याय नहो है, अपनी व्युत्पत्ति के अनुरूप उस-उस वस्तु के भिन्न-भिन्न पक्षो को दर्शात है। जैसे निघण्टु म जल के एक सौ एक वैदिक नाम बताए गए हैं, ये नाम जल के विविध रूपी और स्तर आदि के बाधक है। इसका दूसरा उदाहरण दाशरथी, सीतापति, राघव आदि शब्द है, जो सामान्यत श्रीराम के पर्याय है। निघण्टु क नैगमकाण्ड मे वेद के उन शब्दो का सग्रह है, जो अनेक भिन्न भिन्न अर्थों को दशाते है। तीसरे दैवत काण्ड मे देवता रूपी पदो का सग्रह है। निरुक्तकार यास्क ने सर्वप्रथम भूमिका रूप मे उन मूलभूत नियमो पर विचार किया है, जिससे किसी शब्द की व्युत्पत्ति या स्वारस्य को समझा जा सकता है पुन क्रमश निघण्टु मे पठित कुछ शब्दो पर विचार-विमर्श किया है। इस प्रकार पूर्वार्ध मे निघण्टु, नैगम काण्ड के विशिष्ट शब्दो पर विचार करने के अनन्तर उत्तरार्ध मे देवता काण्ड है। इसमे सर्वप्रथम देवता शब्द की परिभाषा और स्वरूप पर विचार के अनन्तर दवताओ की सख्या का विवेचन किया गया है। तदनन्तर देवतावाचक पदो का व्युत्पत्तिलभ्य अथ दर्शाते हुए उसके बोधक मन्त्र पूर्वोत्तर पक्षपूर्वक दिए है।

1—स होवाच महिमान एवैषामेते त्रयस्त्रिंशत्त्वेव देवा इति। कतमे ते त्रयस्त्रिंश-दित्यष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्त एकत्रिंशदिन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च त्रयस्त्रिंशाविति ॥ कतमे वसव इति ? अग्निश्च, पृथिवी च, वायुरन्तरिक्ष चादित्यश्च द्यौश्च, चन्द्रमाश्च, नक्षत्राणि चैते वसव। एतेषु हीद सर्वं वसु हितमेते हीद सर्वं वासयन्त तद्यदिद सव वासयन्ते तस्माद् वसव इति ॥ कतमे रुद्रा इति ? दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशस्ते यदास्मान्मर्त्याच्छरीरादुत्क्रामन्त्यथ रादयन्ति तस्माद्रुद्रा इति ॥ कतम आदित्या इति ? द्वादशमासा. सवत्सरस्यैत आदित्या। एते हीद सर्वमाददाना यन्ति तद्यदिद सर्वमाददानायन्ति इति ॥ तस्मादादित्या इति। कतम इन्द्र, कतम प्रजापतिरिति ? स्तनयित्नुरेवेन्द्रो, यज्ञ प्रजापति।

शतपथ 14, 5, 3, 9

2—यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदु ऋ॰ 1, 164 39

'क्योकि परमेश्वर महादेव, और देव न होते तो सब देवो का स्वामी होने से महादेव क्यो कहाता' सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास पृ॰ 384

वे नामपद देवता के रूप में परिगणित होते हैं, जिन की मन्त्रों में मुख्यतया स्तुति की जाती है[1]। जिस मन्त्र में जिसकी प्रधानता से स्तुति है, वह ही उस मन्त्र का देवता है[2]। जिन मन्त्रों में किसी देवता का स्पष्ट संकेत नहीं है, उन मन्त्रों का यज्ञीय देव या प्रजापति आदि में से कोई देवता होता है[3]। देवता की अनोखी खूबियों के कारण ही एक देवता बहुता तरह से कहा है[1]। अन्य देवता उसके प्रत्यंग (सहायक) होते हैं[2]। इस प्रकार एक आत्मा का चित्रण करने के बाद भी निरुक्तकार ने 7, 2 मे स्थानभेद से तीन देवता स्वीकार किए है[3] और अन्य इन्ही के ही नाम बताए है[4] तथा इन्ही के ही अन्तर्गत है[5]।

अनेक देवतावाद की व्यापकता—वैदिक वाङ्मय की इसी प्रक्रिया के अनुरूप संस्कृत के अनेक लौकिक काव्यग्रन्थों के मंगलाचरण में विविध देवी-देवताओं का स्मरण मिलता है। जहां भिन्न-भिन्न देवताओं के स्तोत्र ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, वहां पुराणों-उपपुराणों में अनेक देवी-देवताओं का स्वतन्त्र सत्तात्मक चित्रण भी प्राप्त होता है। अग्नि, विष्णु, वायु, ब्रह्म, वाराह, मत्स्यपुराण इसके स्पष्ट प्रमाण हैं।

आज हमारे घरों, दुकानों और सामूहिक स्थलों पर अपने पूज्यों के बहुत सारे चित्र लगे हुए हैं। ऐसे ही प्रत्येक नगर मे अनेक तरह के मन्दिर (धर्मस्थान) हैं, जिन मे प्रतिष्ठित इष्टदेव की आकृति, पूजा सामग्री, पूजापद्धति भिन्न-भिन्न है। महाजन इनके प्रति अपने श्रद्धाभाव को अर्पित करते है। इस पूज्यभावना को देखकर एक स्वाभाविक सा प्रश्न उभरता है, कि इसकी मूलभावना क्या है ?

अपना भला करने वालों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता प्रकट करना एक स्वाभाविक भावना है, क्योंकि संसारी जीवन में समय-समय पर जहा कुछ पूजनीयों ने अनेक क्षेत्रो मे महान् कार्य करने दूसरो का भला किया, वहा हमारे इन पूज्यों को और हमें सूर्य,

---

1—तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीना तद् दैवतमित्याचक्षते 7, 1

2—यत्काम ऋषि र्यस्या देवतायामार्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद् दैवतः स मन्त्रो भवति। 7, 1

3—यद् दैवतः स यज्ञो वा यज्ञागं वा तद्देवता भवन्ति। अथान्यत्र यज्ञात् प्राजापत्या इति याज्ञिकाः। नाराशंसा इति नैरुक्ताः 7, 1

1—महाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते 7, 1

2—एकस्यात्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यगानि भवन्ति 7, 1

3—तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः। अग्निः पृथिवीस्थानः, वायुर्वेन्द्रो वान्तरिक्षस्थानः सूर्यो द्युस्थानः। 7, 2

4—तासां भक्तिसहचर्यं व्याख्यास्यामः 7, 3

5—तासां महाभाग्यादेकैकस्या अपि बहूनि नामधेयानि भवन्ति 7, 2।

अग्नि, जल, वायु, धरती तथा उसके मूल पदार्थ प्राप्त होते हैं और ये सब हमारे जीवन के आधारभूत तत्त्व है। यह सब कुछ इतने अदृश्य रूप में हो रहा है, कि हम हर प्रकार का प्रयत्न करके भी इनके स्वारस्य को पूर्णतः समझ नहीं सकते तथा इन कार्यों को जो करने, चलाने वाला है, उसको देख नहीं सकते। इस अदृश्य, अलौकिक शक्ति के प्रति हम जितना भी विचार करते है। उतना ही हम अपने आप को अक्षम अनुभव करते है। इसका यथाशक्ति अनुभव करके, तब अनुभव के अनुरूप या सुने हुए के अनुसार इस कृपालु, अदृश्य शक्ति के प्रति स्वाभाविक श्रद्धाभाव उभर आता है।

जब कभी भी श्रद्धाभावना से अभिभूत होकर अपने श्रद्धेयों के चित्र, मन्दिर बनाने की कला प्रकाश में आई। तभी से ही अपने इष्ट देवों के धर्मस्थल भी प्रकाश में आने लगे। आज भी अपने साहित्य में चित्रित अनेक देवी-देवताओं के मन्दिर दृष्टिगोचर होते है। इन मन्दिरों के बाह्य आकार एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न है। इनमे प्रतिष्ठित इष्ट देव की मूर्ति भी अलग-अलग है। उस-उस की पूजा सामग्री, पूजा के मन्त्र, पूजा की प्रक्रिया और समय भी परस्पर भिन्न-भिन्न हैं।

वेदों, वैदिक वाङ्मय, अन्य साहित्य और मन्दिरो में इस प्रकार परस्पर भिन्न-भिन्न, सर्वथा स्वतन्त्र सत्तायुक्त अनेक देवी-देवताओं का विविधात्मक प्रसार देखकर एक पाठक उलझन में उलझ कर रह जाता है। वह इस असमञ्जस से निकलने के लिए कोई सरल सी **'कुञ्जी'** प्राप्त करना चाहता है। अनेक धैर्यवान, विचारशील पाठक अपनी अनुशीलन की वृत्ति के कारण इस में जुटे रहते हैं। पर सामान्य पाठक ऊपर-ऊपर से ही इस अनेक देववाद की धारणा को देख कर एक तरफ हो जाते हैं।

महर्षि दयानन्द और अनेक देववाद—महर्षि दयानन्द सरस्वती का इस सम्बन्ध में विचार है कि यह एक सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, विष्णु, वरुण आदि देवता-पदों के आधार पर सारा वर्णन और चित्रण है। ये अग्नि, इन्द्र आदि कहां किस के वाचक हैं? इसका निर्णय वहां के प्रकरण, उस विशेष्य पद के विशेषणों और क्रियाओं के आधार पर ही हो सकता है। अतएव **'वेद की कुञ्जी'** के रूप में सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास को महर्षि ने प्रस्तुत किया है, क्योंकि महर्षि की रचनाओं, विचारों का परिशीलन करने से स्पष्ट होता है, कि महर्षि वेदों

को सर्वोत्तम स्थान देते थे[1] तथा प्रत्येक सिद्धान्त के निर्णय के लिए वेद को ही अन्तिम और स्वतः मानते थे। अतएव लिखा है, कि '(पूर्वपक्ष) तुम्हारा मत क्या है (उत्तर॰) वेद अर्थात् जो जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिये वेद हम को मान्य है, इस लिये हमारा मत वेद है[2]।" समु॰ 3, पृ॰ 67

वेदों की अत्यन्त गौरवपूर्ण गरिमा को ध्यान में रखते हुए ही महर्षि ने वेदों को समझने-समझाने के लिए 'वेद की कुञ्जी' के रूप मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास को इस रूप मे प्रतिपादित किया है। तभी तो वहा लिखा है—

'(ओ३म्॰) यह ओङ्कार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योंकि इसमे जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक ओम् समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे—अकार मे विराट्, अग्नि और विश्वादि:, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि; मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामो का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों मे स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं[3]। (पूर्व॰) परमेश्वर से भिन्न अर्थों के वाचक विराट् आदि नाम क्यो नही। ब्रह्माण्ड, पृथ्वी आदि भूत, इन्द्रादि देवता और वैद्यकशास्त्र मे शुण्ठ्यादि औषधियों के भी ये नाम है

1—महर्षि की दृष्टि से—'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है' तृतीय नियम। 'क्योंकि वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण अर्थात् वेद का प्रमाण वेद से ही होता है। ब्राह्मणादि सब ग्रन्थ परतः प्रमाण अर्थात् उनका प्रमाण वेदाधीन।'
सत्यार्थ समु॰ 3, पृष्ट 66

यहा सर्वत्र सत्यार्थ प्रकाश का स्वा-वेदानन्द सम्पादित संस्करण उद्धृत है, 'वेदादि सत्य शास्त्रो के स्वीकार मे सब सत्य का ग्रहण हो जाता है' समु॰ 3, पृ॰ 67। महर्षि ने सम्प्रदायों की समीक्षा करते हुए सभी को वेद के स्वीकारार्थ आमन्त्रण दिया है। जैसे कि ब्राह्म समाज के प्रसंग मे—'सर्वज्ञ परमात्मा के वचन का सहाय हम अल्पज्ञों को अवश्य होना चाहिए...। जब सर्वसत्य वेदो मे प्राप्त होता है, जिन मे असत्य कुछ भी नही—समु॰ 11, पृ॰ 346
महर्षि की रचनाओं मे ऐसे शतशः प्रमाण हैं।

2—यहा सर्वत्र सत्यार्थ प्रकाश का स्वा॰ वेदानन्द सम्पादित संस्करण उद्धृत है।

3—विष्णुधर्मोत्तर पुराण मे भी आया है—
सर्वाण्येतानि नामानि परस्य ब्रह्मणोऽनघ 3, 123. 13=हे निर्दोष! यह सब नाम परब्रह्म के है।

व नहीं ? (उत्तर०) है, परन्तु परमात्मा के भी हैं। (पूर्व०) केवल देवों का ग्रहण इन नामों से करते हो व नहीं ? (उत्तर०) आप के ग्रहण करने में क्या प्रमाण है ? (पूर्व०) देव सब प्रसिद्ध और वे उत्तम भी है, इससे मैं उनका ग्रहण करता हूं। (उत्तर०) क्या परमेश्वर अप्रसिद्ध और उससे कोई उत्तम भी है ? पुन: ये नाम परमेश्वर के भी क्यों नहीं मानते ? जब परमेश्वर अप्रसिद्ध और उसके तुल्य भी कोई नहीं तो उससे उत्तम कोई क्योंकर हो सकेगा ? इससे आप का यह कहना सत्य नही।........।.........। इससे क्या सिद्ध हुआ कि जहां जिस का ग्रहण करना उचित हो, वहां उसी अर्थ का ग्रहण करना चाहिये। तो ऐसा ही हम और आप सब लोगों को मानना और करना भी चाहिये। अब मन्त्रार्थ:—ओ३म् खम्ब्रह्म यजु 40, 17 देखिये वेदो मे ऐसे-ऐसे प्रकरणों मे 'ओम्' आदि परमेश्वर के नाम हैं।

यहां इन प्रमाणो के लिखने में तात्पर्य यही है कि जो ऐसे प्रमाणों मे ओङ्कारादि नामों से परमात्मा का ग्रहण होता है, यह लिख आये। परमेश्वर के सब नाम सार्थक तथा परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं, जैसे लोक में दरिद्री आदि के धनपति आदि नाम होते है। इस से यह सिद्ध हुआ कि कहीं गौणिक, कही कार्मिक और कही स्वाभाविक अर्थों के वाचक है। 'ओ३म्' आदि नाम सार्थक है।' समु० 1, पृ० 7—9

वेद की कुञ्जी—'इत्यादि प्रमाणों के ठीक-ठीक अर्थों के जानने से इन नामों मे परमेश्वर ही का ग्रहण होता है। क्योंकि ओ३म् और अग्न्यादि नामों के मुख्य अर्थ से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है। जैसा कि व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण, सूत्रादि ऋषि मुनियों के व्याख्यानों से परमेश्वर का ग्रहण देखने में आता है, वैसा ग्रहण करना सब को योग्य है परन्तु "ओ३म्" यह तो केवल परमात्मा ही का नाम है और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक है। इससे क्या सिद्ध हुआ कि—

1. जहां-जहां स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सर्वज्ञ, व्यापक, शुद्ध, सनातन और सृष्टिकर्ता आदि विशेषण लिखे हैं, वहीं-वहीं इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

2. और जहां-जहां ऐसे प्रकरण हैं कि ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुष: यजु० 31, 5;......यजु० 31, 13......यजु० 31, 1......यजु० 31, 5......यह तैत्तिरीयोपनिषद् (ब्रह्म० 1) का वचन है। ऐसे प्रमाणों में विराट्, पुरुष, देव, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि आदि नाम लौकिक पदार्थों के होते हैं। क्योंकि जहां-जहां उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जड़, दृश्य आदि विशेषण भी लिखे हों वहां-वहां परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता। वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक् है। और उपरोक्त मन्त्रों में उत्पत्ति आदि व्यवहार हैं, इसी से यहां विराट् आदि नामों से परमात्मा का ग्रहण न होके संसारी पदार्थों का ग्रहण होता है।......।

3. और जहां-जहां इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हों वहां-वहां जीव का ग्रहण होता है।" समु०, पृ० 10—11

इस प्रकार वेदों को समझने-समझाने के लिए महर्षि ने यहां प्रथम समुल्लास में ये तीन कसौटियां दी हैं। जिनसे स्पष्ट हो जाता है कि अग्नि आदि कहां किस के अर्थ मे हैं। अग्नि, इन्द्र, आदि परमेश्वर के अब जिस आधार पर वाचक होते हैं। इसका युक्ति, प्रमाणपूर्वक महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में विवेचन किया है। और तभी तो लिखा है—"अब जिस प्रकार विराट् आदि नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है, वह प्रकार नीचे लिखे प्रमाणे जानो।" यह प्रथम समुल्लास इसीलिए ही लिखा गया है, कि वेद के अर्थ को हृदयंगम करानेवाली, इन तीन कसौटियों के अनुसार ईश्वर वाचक शब्दों को स्पष्ट किया जा सके।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह दृढ़ धारणा है, कि वेदो मे भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा, भक्ति नही है, अपितु एकमात्र परमेश्वर की ही उपासना बताई गई है। वेदों में जहा कही पूजा, भक्ति, उपासना की बात है, वहा अग्नि, इन्द्र, विष्णु, वरुण आदि एक ईश्वर के ही नाम हैं! हां, अग्नि, सूर्य, वायु आदि भौतिक पदार्थों के भी नाम हैं, पर ऐसे प्रकरणों में उनको उपास्य नही बताया गया। संसार की रचना, पालना, व्यवस्था आदि के कारण परमात्मा के अनन्त गुण, कर्म और स्वभाव है, अतः इनके बोधक ईश्वर के अनेक नाम है। अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि अपने-अपने धातु-प्रत्यय के अर्थ के अनुरूप[1] परमात्मा के उस-उस गुण, कर्म का बोध कराते हैं। ये अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि जिस ढंग से परमात्मा के वाचक है। इसका सप्रमाण महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में विवेचन किया है। सत्यार्थ प्रकाश का स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने सटिप्पण स्थूलाक्षर जो विशेष संस्करण प्रकाशित किया है। उसमें प्रमाणसहित यह दर्शाया है, कि ये अग्नि आदि कहा-कहां ईश्वर के लिए आए हैं। वहां विष्णु सहस्रनाम आदि के वचनों को भी इस दृष्टि से प्रस्तुत किया है। महर्षि ने अपने वेदभाष्य में प्रकरण के अनुरूप अग्नि आदि के अर्थों को दर्शाया है।

वेदों में अनेक देवों की उपासना बताई है या एक देव की? इस उलझन को स्पष्ट करते हुए महर्षि ने लिखा है, कि "(पूर्व) वेद में ईश्वर अनेक हैं इस बात को तुम मानते हो वा नहीं? (उत्तर) नहीं मानते, क्योंकि चारों वेदों मे ऐसा कही नही लिखा, जिस से अनेक ईश्वर सिद्ध हों। किन्तु यह तो लिखा है, कि ईश्वर एक है।

1—संस्कृत भाषा में पच, पठ आदि चार हजार धातुएं हैं, जिन से ण्वुल् अक प्रत्यय लगने पर पाचक, पाठक शब्द बनते हैं। अतः पकाने वाला, पढ़ने वाला अर्थ होता है।

(पूर्व०) वेदों में जो अनेक देवता लिखे हैं, उन का क्या अभिप्राय है ? (उत्तर) देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं, जैसे कि पृथिवी । परन्तु इस को कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है । देखो ! इसी मन्त्र में कि 'जिस में सब देवता स्थित हैं, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है ।' यह उन की भूल है, जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं । परमेश्वर देवों का देव होने से महादेव इस लिये कहाता है कि वही सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयकर्ता न्यायाधीश अधिष्ठाता है । "त्रयस्त्रिंशता—यजु० 14, 31 इत्यादि वेदों के प्रमाण हैं, इस की व्याख्या शतपथ में की है, तेतीस देव अर्थात्————।

ये तेंतीस पूर्वोक्त गुणों के योग से देव कहाते हैं । इन का स्वामी और सब से बड़ा होने से परमात्मा चौंतीसवां उपास्यदेव शतपथ के चौदहवें काण्ड में स्पष्ट लिखा

1.—वेदों में ऐसे अनेक मन्त्र हैं, जिन में यह स्पष्ट संकेत है, कि सृष्टि का स्रष्टा ईश्वर एक ही है और तभी उस के सर्वज्ञ, सर्वेश्वर आदि गुण चरितार्थ होते हैं जैसे कि—

य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थम् एको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ऋ० 1, 154, 3
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥य० 13, 4॥
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥ऋ० 10, 8, 3
एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कुतः इन्द्रो अङ्ग ॥1, 84, 7
य एक श्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति । इन्द्रः पञ्चक्षितीनाम् ॥ऋ०, 1, 7, 9
दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः ।
तं त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव नमस्तेऽस्तु दिवि ते सधस्थम् ॥अथर्व०1, 2, 1
समेत विश्वे वचसा पतिं दिव एको विभूरतिथिर्जनानाम् ॥
स पूर्व्यो नूतनमविवासत् तं वर्तनिरनुवावृत एकमित पुरु ॥अ० 7, 12,1॥
तमिदं निगतं सहः स एष एक एव वृदेक एव । अ० 1?, 4, 1, 12, 16, 18
य एक इत् तमु ष्टुहि, ऋ० 6, 45, 6
*यो देवानां नामधा एक एव—अ० 2, 11, 3
*एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति—ऋ० 1, 164, 46
*एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ऋ०—10, 114, 5
एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी—श्वेताश्वतरोपनिषद्

2. यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः—ऋ० 1164, 39

है। इसी प्रकार अन्यत्र भी लिखा है। जो वे इन वाक्यों को देखते तो वेदों में अनेक ईश्वर मानने रूप भ्रमजाल में गिर कर क्यों बहकते।" समु॰ 7, पृ॰ 152—3

ऐसे ही ब्रह्म वाक्य की समीक्षा में महर्षि ने लिखा है—"10—और एक यह कि ईश्वर के बिना दिव्य गुण वाले पदार्थों और विद्वानों को भी देव न मानना ठीक नहीं, क्योंकि परमेश्वर महादेव और जो देव न होते तो सब देवों का स्वामी होने से महादेव क्यों कहाता?" समु॰ 11, पृ॰ 348

इस से स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि महर्षि की दृष्टि से वेद में देव शब्द बहुवचन में इसी लिए अनेक बार आया है। हां, अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि अनेक नामों से वहां किसी की स्तुति है और उस से अनेक तरह की प्रार्थनाएं की गई हैं। इस सम्बन्ध में महर्षि का दृढ़ विचार है, कि अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि अनेक नाम होने से अनेक ईश्वर सिद्ध नहीं होते। वस्तुतः वास्तविकता को बिना समझ ऐसा समझा गया है, जैसे—

"एक किसी वैरागी के दो चेले थे। वे प्रतिदिन गुरु के पग दाबा करते थे। एक ने दाहिने पैर और दूसरे ने बायें पग की सेवा करनी बांट ली थी। एक दिन ऐसा हुआ कि एक चेला कहीं बाजार हाट को चला गया और दूसरा अपने सेव्य पग की सेवा कर रहा था। इतने में गुरु जी ने करवट फेरा तो उस के पग पर दूसरे गुरु भाई का सेव्य पग पड़ा। उस ने ले डण्डा पग पर धर मारा। गुरु ने कहा कि अरे दुष्ट! तू ने यह क्या किया? चेला बोला कि मेरे सेव्य पग के ऊपर यह पग क्यों आ चढ़ा? इतने में दूसरा चेला, जो कि बाजार हाट को गया था, आ पहुंचा। वह भी अपने सेव्य पग की सेवा करने लगा। देखा तो पग सूजा पड़ा है। बोला कि गुरु जी! यह मेरे सेव्य पग में क्या हुआ? गुरु ने सब वृत्तान्त सुना दिया। वह भी मूर्ख न बोला न चाला। चुपचाप दण्ड उठा के बड़े बल से गुरु के दूसरे पग में मारा। तो गुरु ने उच्च स्वर से पुकार मचाई। तब तो दोनों चेले दण्डा ले के पड़े और गुरु के पगों को पीटने लगे। तब तो बड़ा कोलाहल मचा और लोग सुन कर आये। कहने लगे कि साधु जी! क्या हुआ? उन में से किसी बुद्धिमान् पुरुष ने साधु को छुड़ा के पश्चात् उन मूर्ख चेलों को उपदेश किया कि देखो ये दोनों पग तुम्हारे गुरु के हैं। उन दोनों की सेवा करने से उसी को सुख पहुंचता है और दुःख देने से भी उसी एक को दुःख होता है।

जैसे एक गुरु की सेवा में चेलाओं ने लीला की, इसी प्रकार एक अखण्ड, सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप परमात्मा के विष्णु, रुद्र आदि अनेक नाम हैं, इन नामों का अर्थ जैसा कि प्रथम समुल्लास में प्रकाश कर आये हैं, उस सत्यार्थ को न जान कर शैव, शाक्त, वैष्णव आदि सम्प्रदायी लोग परस्पर एक दूसरे के नाम की निन्दा करते हैं। मन्दमति तनिक भी अपनी बुद्धि को फैला कर नहीं विचारते हैं कि ये सब विष्णु,

रुद्र, शिव आदि नाम एक अद्वितीय, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, जगदीश्वर के अनेक गुण कर्म स्वभावयुक्त होने से उसी के वाचक हैं।" समु० ।। पृ०, 265

जैसे लोकव्यवहार में कोई व्यक्ति जब भोजन बनाने का कार्य करता है, तो उस को पाचक कह कर पुकारते हैं। वह जब हल चलाता है, तो उस को हाली और जब वह घास काटने का कार्य करता है, तो उस को घसियारा कहते हैं। कार्यभेद से जब किसी व्यक्ति को भिन्न-भिन्न नामो से पुकारते हैं, तो वह व्यक्ति भिन्न-भिन्न नही बन जाता है। अनेक नाम होने पर भी वह एक ही रहता है। ऐसे ही वेदो मे अग्नि, विष्णु आदि अनेक नाम आ जाने से अनेक ईश्वर सिद्ध नही होते।

आपस के व्यवहार में एक व्यक्ति को कोई चाचा कहता है, तो कोई पिता कहता है। उसी को कोई भाई और कोई बेटा, पति आदि कहता है। व्यक्ति एक ही है, पर आपस के सम्बन्ध के भेद से भिन्न-भिन्न व्यक्ति अपने-अपने सम्बन्ध के अनुरूप उस को भिन्न-भिन्न सम्बन्ध सूचक नामो से जैसे पुकारते है। ऐसे ही परमेश्वर के जगत रचना, पालन, नियमन कर्मफलदाता, व्यापकता आदि भिन्न-भिन्न कर्मों और गुणों के कारण अनेक नाम हैं। पर इन अनेक नामों का नामी परमेश्वर एक ही है। इस सृष्टि कार्य का कर्ता, नियामक ईश्वर एक ही है, वेदों मे अनेक बार जगत के सर्वस्वभूत परमात्मा को अनेक नामों[1] से पुकारा गया है। जब कार्य एक ही कर्त्ता का है, तो विविध नामों से पुकारने पर उस को अनेक रूपों मे नही मानना चाहिए।

एक के ही अनेक नाम—इस विस्तृत विवेचन से स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह दृढ धारणा है, कि वेदों में अग्नि, इन्द्र आदि शब्दों द्वारा एक परमात्मा को ही इष्ट देव के रूप मे पूजा है। हा, अग्नि, इन्द्र, सूर्य, वायु आदि शब्द भौतिक पदार्थों के भी नाम है, पर उन-उन प्रकरणों में उन को उपास्य नही माना है।

1—हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवी द्यामुतेमा...यजु० 13, 4
विष्णु—यः पार्थिवानि विममे रजासि। ऋ० 1, 154, 1,
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थम् एको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ऋ० 1, 154,3
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्याम् एको दाधार भुवनानि विश्वा—4
ऐसे ही ऋ० 2, 12 सूक्त के 2 और 6 मन्त्रों में इन्द्र को जगत कर्त्ता कहा है।
ऐसे ही स्कम्भ की दृष्टि से यह चर्चा है—
स्कम्भं तं ब्रूहि, कतमस्विदेव सः अथर्व० 10, 7, 10
स्कम्भं त्वा वेद प्रत्यक्षमिन्द्रे सर्वं समाहितम् अ० 10, 7, 29
अनड्वान् दाधार, पृथिवीमुत द्याम्। अनड्वान् दाधारोर्वन्तरिक्षम् अ० 4,11,1
उक्षा स द्यावापृथिवी बिभर्ति ऋ० 10,31,8

संसार का सर्जन, पालन, व्यवस्थापन, नियमन आदि के कारण परमात्मा के अनन्त गुण, कर्म और स्वभाव हैं। अतः अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि अपनी-अपनी धातु तथा प्रत्यय के अर्थ के अनुरूप परमात्मा के उस-उस गुण, कर्म का बोध कराते है। ये अग्नि आदि जिस ढंग मे परमात्मा के भी वाचक है, इस का युक्ति, प्रमाण पूर्वक महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में विश्लेषण किया है। इस तरह के एक सौ से भी अधिक नामों का वहा विवेचन दिया गया है। इनमें से इन्द्र आदि अनेक नाम राजा के भी होते है, जिसे महर्षि ने षष्ठ समुल्लास में विवेचन किया है।

वेदों में अनेकत्र ऐसे मन्त्र मिलते है, जिन में स्पष्ट रूप से निर्देश है कि एक परमतत्त्व के ही ये अग्नि, इन्द्र आदि अनेक नाम है।[1] यह रहस्य किसी एक ही वेद मे[2] या एक, दो मन्त्रों में ही नहीं है, अपितु बहुत सारे शास्त्रों में इस का बार-बार संकेत मिलता है। वेदो की यह भावना उपनिषदों और स्मृति ग्रन्थों में भी प्राप्त होती है।[3]

1. इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यस्स सुपर्णो गरुत्मान्।
   एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ ऋ० 1,64,49 ॥
   सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति। ऋ० 10,114,5
   ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि को अनेक नामोंवाला कहा गया है—जैसे कि,
   त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे।
   शङ्क्षयस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मनो ॥ ऋ० 2, 1, 6
2. तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमाः।
   तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपःस प्रजापतिः ॥ यजु 32, 1 ॥
   स नः पिता जनिता स उत बन्धु र्धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
   यो देवाना नामधा एक एव तं सं प्रश्नं भुवना यन्ति सर्वा ॥
3. स ब्रह्म स शिवः सेन्द्रः सो ऽक्षरः परमः स्वराट्।
   स एव विष्णुः स प्राणः स कालाग्निः स चन्द्रमाः ॥ कैवल्य उप. 8 ॥

एष हि खल्वात्मेशानः शम्भुर्भवो रुद्रः प्रजापतिर्विश्वसृट् हिरण्यगर्भः सत्यं प्राणो हंसः शास्ता विष्णु नारायणो ऽर्कः सविता धाता सम्राडिन्द्र इन्दुरिति ॥ मैत्रायण्युप०

प्रशासितार सर्वेषामणीयासमणोरपि। ॥ मनु० 12,122 ॥
एतमग्निं वदन्त्येके मनुमन्ये प्रजापतिम्।
इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम् ॥ मनु० 12,123 ॥
आत्मैव देवता सर्वाः—मनु० 12,119

विष्णुसहस्रनाम में भी इसी प्रक्रिया का वर्णन है। सायणाचार्य ने भी अपनी ऋग्वेदभाष्योपक्रमणिका में इसी बात को इन शब्दों में स्वीकार किया है। यद्यपि इन्द्रादयस्तत्र तत्र हूयन्ते तथापि परमेश्वरस्यैव इन्द्रादिरूपेणावस्थानादविरोधः। तथा च मन्त्रवर्णः इन्द्र मित्रं...।

वेद मे एक ईश्वर के ही अनेक नाम जहा बताए जाते हैं, वहा उन विविध नामों मे से किसी एक को आधार बनाकर सृष्टि के स्रष्टा, नियन्ता रूप मे उस का वर्णन भी मिलता है।[1] वहीं उस के साथ उस की पूजा, उपासना की चर्चा भी प्राप्त होती है। इन दोनो चर्चाओ को मिलाकर पढने से ही एक-दूसरे प्रकरण की सार्थकता सामने आती है। वेदो की ऐसी अपनी वर्णनशैली है, कि किसी-किसी मन्त्र मे एक साथ अग्नि आदि शब्द आते हैं और कई बार एक ही देवता के पर्यायवाची समानार्थक शब्द एक ही मन्त्र मे होते हैं। जैसे कि—

> नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च
> मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ यजु० 16,41 ॥

वेदो मे अनेक स्थलो पर पर्यायवाची शब्द देकर विशेषण विशेष्य रूप मे चित्रण किया जाता है। जैसे कि 'यज्ञम्-अध्वर ऋ० 1, 1, 4, समुद्रमर्णवम् ऋ० 1, 19, 7 वही दूसरे स्थल पर विशेषणरूपी पर्यायवाची शब्द जहा विशेष्य रूप मे प्रयोग किया जाता है, वहा उन्ही विशेषणो से वस्तु की विशेषता को भी अभिव्यक्त किया जाता है। इससे स्पष्ट सकेत प्राप्त होता है कि इन स्थलो को परस्पर मिला कर पढना चाहिए।

वेदो मे सर्वत्र किसी एक ही नाम से सृष्टि के स्रष्टा का सकेत ना करके विविध नामो से निर्देश करने से जहा वेदभाषा को शाब्दिक समृद्धि का स्पष्ट बोध होता है, वहा काव्यगत सम्पूर्ण लक्षणो की सगति भी चरितार्थ होती है। क्योकि वेद के शब्द यौगिक हैं, वे प्रकृति-प्रत्यय के योग से बनते हैं। इनके आधार पर ये अपने व्याकरणगत तथा व्युत्पत्तिलभ्य शाब्दिक और तात्पर्य अर्थ को भी दर्शाते हैं। इस प्रकार इन अनेक शब्दो द्वारा परमेश्वर के विविध गुणो, कर्मों, स्वभावो का जहा परिचय प्राप्त होता है, वहा इन नामो के लोकप्रसिद्ध स्वरूप के आधार पर परमात्मा के उस-उस सद्गुणस्वरूप को समझने मे सरलता-सरसता भी रहती है। क्योकि दृष्टान्त, उपमा, रूपक अलकार द्वारा प्रसिद्ध स्थिति से अप्रसिद्ध का बोध स्वाभाविक रूप स हो जाता है। इन अनेक नामो के कारण यह भी स्वत. स्पष्ट हो जाता है, कि वेद मे मुख्य रूप से ईश्वर का ही वर्णन है।

वेद का मुख्य विषय—वेद, वैदिक वाङमय और अन्य विद्या के साहित्य मे यत्र-तत्र-सर्वत्र यह स्वीकार किया गया है, कि वेदो मे मुख्य रूप से परमेश्वर का ही वर्णन है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदविषय विचार' प्रकरण

1. ऋग्वेद 1,12 मे इन्द्र का सृष्टि के स्रष्टा के रूप मे चित्रण है और ऋ० 1,154 मे विष्णु को सृष्टि का स्रष्टा है ' ऐसे ही— विष्णुधर्मोत्तर पुराण 3, 123,13 मे भी यही भाव है।

में ऋग्वेद, कठोपनिषद, वेदान्तसूत्र और माण्डूक्योपनिषद के प्रमाण देकर स्पष्ट रूप में बार-बार लिखा है, कि वेदों में मुख्य रूप से परमेश्वर का ही वर्णन है।[1] इस से भी यही प्रमाणित होता है, कि अग्नि, इन्द्र आदि नामों से एक ईश्वर का भी वेदों में वर्णन है।

यह धारणा केवल महर्षि दयानन्द की ही नहीं है, अपितु यह भारतीय शास्त्रों की परम्परा है। वेदान्तदर्शन में मुख्य रूप से इसी प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है।

वेदार्थ और वेदान्तदर्शन—भारत एक प्राचीन और विशाल देश है। भारत का भूभाग जहां विविध प्राकृतिक तत्त्वों से भरपूर है, वहां भारत के उर्वरा मनीषियों ने प्रारम्भ से ही अनेक विध विद्या तथा विज्ञान की शाखा-प्रशाखाओं का विशेष विकास किया है। भारत के प्राचीन शास्त्रों में चौंसठ कलाओं तथा चौदह विद्याओं का वर्णन आता है। इन्हीं चौदह विद्याओं में से एक प्रतिष्ठित विद्या—दर्शन भी है। भारतीयों द्वारा विकसित भारतीय दर्शन ने सारे संसार पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। अतएव विश्व में भारतीय दर्शन का आज भी अपना एक प्रतिष्ठित और गौरवपूर्ण स्थान है।

दर्शन शब्द दृशिर प्रेक्षणे धातु से बना है, अतः दर्शन शब्द देखने और देखने के साधन के अर्थ में सामान्य रूप से प्रचलित है। प्र+ईक्षण=गहराई से किसी को देखना, सोचना के भाव को भी दर्शन शब्द व्यक्त करता है। अतः दर्शन शब्द का एक अर्थ जहां चिन्तन है, वहां अधिकतर दर्शन शब्द आध्यात्मविद्या के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। क्योंकि जब एक विचारशील संसारी चिन्ताओं से निश्चिन्त होकर विचार करता है, तो एकान्त, शान्त स्थिति में उसके मन में अनेक प्रकार के विचार उभरते हैं, कि मैं कौन हूं? मैं यहां कैसे तथा किस लिए आया हूं? मैं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हूं, या

1—"अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधानत्वात्। अत्र प्रमाणानि 'सर्वे वेदा यत्पदमा-मनन्ति—' कठ 2, 15 तदेव परं ब्रह्म सर्वे वेदा आमनन्ति, आ समन्तादभ्यस्यन्ति, मुख्यतया प्रतिपादयन्ति।

'तद्विष्णोः परमं पदम्—ऋ॰ 1, 22, 20=मोक्षस्य च सर्वस्मादधिकोत्कृष्टत्वात् तदेव द्रष्टुं प्राप्तुमिच्छन्ति। अतो वेदा विशेषेण तस्यैव प्रतिपादनं कुर्वन्ति।'

'एतद् विषयकं वेदान्तसूत्रं व्यासोऽप्याह-तत्तु समन्वयात् 1, 1, 4 अस्यायमर्थः। तदेव ब्रह्म सर्वत्र वेदवाक्येषु समन्वितं प्रतिपादितमस्ति। क्वचित्साक्षात्क्वचित्परम्परया च। अतः परमोऽर्थो वेदानां ब्रह्मैवास्ति।'

'ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम्' इदं माण्डूक्योपनिषद् वचनमस्ति। अस्यायमर्थः। ओमित्येतदस्य नामास्ति तदक्षरम्। यन्न क्षीयते कदाचिच्चराचरं जगदश्नुते व्याप्नोति तद् ब्रह्मैवास्तीति विज्ञेयम्। अस्यैव सर्वे-वेदादिभिः शास्त्रैः सकलेन जगता चोपगतं व्याख्यानं मुख्यतया क्रियते अतो ऽयं प्रधानविषयो ऽस्तीत्यवधार्यम्।'

किसी के वश में हूं ? मेरे चारों ओर वर्तमान संसार कब, कैसे बना ? इसका कर्त्ता कौन है ? यह नित्य है या अनित्य है ? यदि इसका कोई कर्त्ता है, तो उसका स्वरूप क्या है ? मेरा, इस संसार का और इसके बनाने वाले का आपस में क्या सम्बन्ध है ? इस प्रकार की जिज्ञासाओं[1] का समाधान खोजना ही दर्शन है ।

भारतीय दर्शनों में वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, पूर्वमीमासा और वेदान्त ये छ: दर्शन अधिक प्रसिद्ध है। अन्य भारतीय दर्शनों की अपेक्षा वेदान्त दर्शन अधिक प्रकृष्ट माना जाता है तथा अन्य दर्शन भी इसके महत्त्व को स्वीकार करते है। मनुष्य के मन मे उभरने वाली जिज्ञासाओ के समाधान की अन्तिम परिणति ही वेदान्त का विचारणीय विषय है। इस दर्शन मे ब्रह्म का मुख्य रूप से वर्णन होने से इसको ब्रह्मसूत्र भी कहते हैं।

भारतीय अध्यात्म साहित्य मे प्रस्थानत्रयी की विशेष महत्ता है। प्रस्थानत्रयी मे वेदान्त, उपनिषद और गीता का ग्रहण होता है। वेदान्त के मध्यकालीन सभी भाष्यकारों ने इस दर्शन के साथ उपनिषदों और गीता का भी भाष्य किया है। वैसे उपनिषदों और वेदान्त का आपस में गहरा सम्बन्ध है। मूल उपनिषदों के वाक्यो मे परस्पर देखने वाले विरोध का समाधान वेदान्त में किया गया है। जैसे पूर्वमीमासा में ब्राह्मण ग्रन्थों के वाक्यों में प्रतीयमान विरोध का परिहार या उन वाक्यों की एकवाक्यता दर्शाई गई है। ऐसे ही उपनिषदों के विरोधात्मक वाक्यों की एकवाक्यता वेदान्त मे दर्शाई गई है। इसी समानता के आधार पर ही वेदान्त के पारस्परिक सम्बन्ध को सामने रख कर ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में पाठ्यक्रम का निर्देश करते हुए लिखा है—'परन्तु वेदान्त सूत्रों के पढ़ने से पूर्व ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन दस उपनिषदो को पढ़ के—.........1 पृ॰ 64-5

वेदान्त—वेद और अन्त इन दो शब्दों के मेल से वेदान्त शब्द बनता है। वेद जहा ऋग्-यजु:-साम-अथर्व के लिए प्रसिद्ध है, वहा अन्त शब्द अन्तिम, मुख्य विषय, सिद्धान्त, व्यवस्था के भाव को व्यक्त करता है अर्थात् वेदों के मुख्य विषय = ब्रह्म ही वेदान्त कहलाता है। महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति 2, 160 में आए वेदान्त शब्द का अर्थ लिखा है, कि 'वेदान्त अर्थात् सब वेदो के सिद्धान्त' समु॰ 3, पृ॰ 50। कठ उपनिषद् के सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति—2, 15 मे जहा वेदों का मुख्य विषय ब्रह्म= ओम् बताया है, वहां महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषय-विचार प्रकरण में लिखा है—'तत्रापीश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति। कुत:। अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्य-

1—अथातो धर्मजिज्ञासा मीमांसा 1,1,1; अथातो ब्रह्मजिज्ञासा वेदान्त 1,1,1 इन दोनों दर्शनों का प्रारम्भ जिज्ञासा से ही है ?

मस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधानत्वात् ।' वेदों में मुख्य-रूप से परमेश्वर का ही वर्णन है।

वेदान्त का प्रारम्भ 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' से होता है अर्थात् वेदान्त के प्रथम सूत्र में ब्रह्म के जानने की इच्छा प्रकट की है। इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए दूसरे सूत्र में ब्रह्म का स्वरूप बताया है, कि इस दृश्य-अदृश्य जगत का बनाने, चलाने और समेटने वाला ब्रह्म ही है[1]। तीसरे सूत्र मे कहा है, कि सारे शास्त्र भी ईश्वर को ही जगत का कर्ता, धर्ता, संहर्ता मानते है तथा वेद रूपी शास्त्र का बनाने वाला भी ब्रह्म ही है[2]। चौथे सूत्र में निर्देश किया है, कि वह ब्रह्म सर्वत्र, वर्णित, समन्वित, व्याप्त है[3]। ये चारों सूत्र ही वेदान्त के मूल आधार है, इस चतुः सूत्री से आगे यह चर्चा है, कि उपनिषदों, शास्त्रों में प्राण, आकाश, आनन्द, अन्न आदि शब्दों द्वारा जहा कही जगत रचना के कर्ता की चर्चा है। वह उन-उन शब्दों द्वारा ब्रह्म की ही है, क्योंकि उस-उस प्रकरण में जो विशेषण आए है, वे सब ब्रह्म मे ही घटते है। अतः प्राण आदि शब्दों से निर्दिष्ट जगत कर्तृत्व आदि क्रियाये केवल ब्रह्म की ही हैं। उन-उन प्रकरणों में जगत, जीव आदि को ब्रह्म से स्पष्ट ही अलग बताया है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन में बड़े विस्तार से समझाया गया है, कि प्राण, आकाश, आनन्द आदि शब्दो द्वारा निर्दिष्ट जगत रचना, धारणा का कर्ता ब्रह्म ही है। प्राण, आकाश आदि अलग-अलग शब्द होने से यह अलग-अलग कर्ता सिद्ध नहीं होते, अपितु भिन्न-भिन्न नामों से एक ही ब्रह्म का निर्देश है।

अतः वेदान्त की प्रक्रिया से भी प्रथम समुल्लास की पद्धति ही पुष्ट होती है। इससे वेद के बहुत सारे मन्त्रों की सुसंगत रूपरेखा सामने आ जाती है। हां, जिनमें द्विवचन और बहुवचन का प्रयोग होता है तथा उपासना प्रार्थना की भी चर्चा है। उन पर पुनः विचार करना आवश्यक हो जाता है।

मंगलाचरण और प्रथम समुल्लास—पाठक अब सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन प्रारम्भ करता है, जो प्रथम समुल्लास को पढ़ते हुए कुछ विचित्र सी स्थिति अनुभव करता है, कि इस प्रकार से यह वर्णन क्यों है? क्योंकि उसके बाद के द्वितीय समुल्लास आदि की क्रमशः शिशुपालन, शिक्षा, विवाह, विरक्त जीवन, राजनीति, वेद, ईश्वर, सृष्टि, मुक्ति, सदाचार आदि जीवन से जुड़ी हुई चर्चा प्राप्त होती है। अतः इनमें पाठक को बहुत कुछ समझ में आ जाता है, पर प्रथम समुल्लास को पुनः पढ़ने पर

1—जन्माद्यस्य यतः 1,1,2; यही बात तैत्तिरीय उपनिषद में इस तरह स्पष्ट की है—यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तद् विजिज्ञास्व तद् ब्रह्म ॥

2—शास्त्रयोनित्वात् 1, 1, 3;

3—तत्तु समन्वयात् 1, 1, 4

भी उसकी संगति स्पष्ट नहीं होती। अतः प्रत्येक नए पाठक को द्वितीय समुल्लास के पढ़ने की प्रेरणा है।

कुछ का विचार है कि जैसे अन्य ग्रन्थों में सबसे पहले मंगलाचरण होता है। ऐसे ही सत्यार्थप्रकाश का प्रथम समुल्लास भी मंगलाचरण के रूप में ही है। इसीलिए उसके शुरू में वेदमन्त्र दिए हैं, बाद में उनका अर्थ है। पर महर्षि की दृष्टि से यह विचार ठीक नहीं है, क्योंकि महर्षि ने स्वयं ही प्रथम समुल्लास में मंगलाचरण के सम्बन्ध में निम्न विचार दिए हैं।

"(पूर्व०) जैसे अन्य ग्रन्थकार लोग आदि, मध्य और अन्त में मंगलाचरण करते हैं, वैसे आपने कुछ भी न लिखा न किया ?

(उत्तर०) ऐसा हमको करना योग्य नहीं, क्योंकि जो आदि, मध्य तथा अन्त के बीच में जो कुछ लेख होगा वह अमंगल ही रहेगा। इसलिए, "मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात् फलदर्शनात् श्रुतितश्च" यह सांख्य शास्त्र (अ० 5, सू० 1) का वचन है। इसका यह अभिप्राय: है कि जो न्याय, पक्षपातरहित, सत्य वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना मंगलाचरण कहलाता है।" समु० 1, पृ० 26 अतः इस समुल्लास को मंगलाचरण के रूप में मानने से ही उलझन नहीं सुलझती है।

उपसंहार—सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास के सम्बन्ध में यह उलझन तब तक सुलझ नहीं सकती, जब तक इसकी यह पृष्टभूमि सामने नहीं आती, कि किस विशेष भावना से यह समुल्लास प्रथम रूप मे प्रतिष्ठित किया गया है प्रथम समुल्लास की रचना के पीछे महर्षि की जो विशेष भावना है, वह है कि महर्षि को वेदों के प्रति असीम श्रद्धा, अविचल विश्वास और वेदों का भारतीयता का मूल आधार होना। अतः वेद की वर्णनपद्धति को स्पष्ट करने के लिए 'वेद की कुञ्जी' के रूप में यह समुल्लास सर्व प्रथम है। तभी तो इस समुल्लास का समारम्भ करते हुए सर्वप्रथम "ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।—" वेदमन्त्र दिया है। जिसके साथ अनेक नाम आए हैं। ये सभी अलग-अलग देवों के नाम हैं या एक ही परमदेव के अनेक नाम है ? यदि एक के ही नाम हैं, तो वे किस प्रकार एक के ही नाम हैं। यह सब स्पष्ट करने के लिए ही प्रथम समुल्लास है। तभी तो वहां लिखा है—"अब जिस प्रकार विराट् आदि नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है, वह प्रकार नीचे लिखे प्रमाणे जानो।" पृ० 11

जैसे ये इन्द्रादि प्रकरणवश राजा वाचक भी हैं, जैसा कि महर्षि ने षष्ठ समुल्लास में दर्शाया है।

सभी समुल्लासों के प्रारम्भ में विषय का निर्देश है, पर प्रथम के प्रारम्भ में यह मन्त्र दिया गया है। इस पृष्टभूमि को समझ लेने पर ही वेदों की वर्णनपद्धति को समझना सरल हो जाता है। अतः यह समुल्लास—'वेद की कुञ्जी' ही है।

ओ३म्

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2 ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्व-शक्तिमान् न्यायकारी दयालु, अजन्मा अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना, सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
5 सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर के करने चाहिएं।
6. संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शरीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9 प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हित-कारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गुरुदत्त भवन, चौक किशन पुरा

जालन्धर शहर।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. p.b/J.L 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 19 अंक 51 13 चैत्र सम्वत् 2045 तदानुसार 27 मार्च 1988 दयानन्दाब्द 163 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मदिन (रामनवमी)



हम अपने बच्चों के जन्मदिन, और अपने जन्म दिन तो मनाते ही हैं परन्तु इसके साथ ही प्रति वर्ष अपने महापुरुषों के जन्म दिन भी बड़े उत्साह से मनाते हैं। अगस्त माह में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर योगीराज श्री कृष्ण का जन्मदिन और इसी प्रकार से रामनवमी पर्व पर चैत्र मास में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मदिन बड़े समारोह से मनाते हैं।

इस वर्ष भी 26 मार्च को हम राम नवमी का पर्व मना रहे हैं। भारत के लगभग सभी नगरों में शोभा यात्राएं जलूस और झांकियां निकाली जा रही हैं। मन्दिरों में पूजा और पाठ किया जा रहा है। भगवान राम का गुणगान किया जा रहा है। परन्तु विचारने वाली बात यह है कि क्या केवल जलसे जलूस पूजा-पाठ करके ही हमने यह पर्व मनाना है या इससे कुछ अधिक भी हमें करना चाहिए। बन्धुओं! यह जलसे, जलूस हम बहुत दिनों से करते आ रहे हैं। मैं इनका विरोध भी नहीं करता। हम यह भी करते रहें परन्तु जब तक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से हम कोई प्रेरणा नहीं लेते तब तक यह सब कुछ मनाना बेकार है। इस दिन हमें कुछ चिन्तन और मनन भी करना चाहिए। भगवान राम कौन थे? क्या थे और उन्होंने जो कुछ किया वह क्यों किया? उनके जीवन का उद्देश्य क्या था? वह किस उद्देश्य को लेकर आगे बढ़े और उसमें वहां कहां तक सफल हुए। उनके प्रेरणा भरे जीवन से हमने क्या प्रेरणाएं ली हैं? उनके जीवन को अपने जीवन में कहां तक उतारा है। हम उनके पद्-चिन्हों पर कहां तक चले हैं। इस पर्व को मनाते हुए हमें इन बातों पर भी विचार करना चाहिए।

राम हमारे पूर्वज थे और जो मर्यादाएं उन्होंने बांधी थी हम उन पर अपने पूर्वजों की भान्ति चल रहे हैं या कहीं कहीं हम उनके रास्ते से भटक तो नहीं गए। आओ उनका जन्म दिन मनाते हुए इन प्रश्नों पर बैठ कर विचार करें।

वैसे तो भगवान राम का जीवन जिधर से भी चखो गुड़ की तरह से मीठा है। महान् प्रेरणाओं और मर्यादाओं से भरा हुआ है। परन्तु आज की वर्तमान परिस्थितियों में हमें उनके जीवन से क्या प्रेरणाएं लेनी चाहिए। आओ आज इसी पर विचार करें।

भगवान राम का हम एक महान् रूप देखते हैं कि वह बुराई के विरुद्ध खम्ब ठोक कर चट्टान की भान्ति हमें खड़े नजर आते हैं। वह बाल्यकाल से ही बुराई के विरुद्ध अनाचार और पापाचार के विरुद्ध छाती तान कर खड़े हो जाते हैं।

महर्षि विश्वामित्र जी उन्हें महाराज दशरथ से अपने यज्ञ की रक्षा के लिए लेकर वन स्थली को चलते हैं और कहते हैं बेटा राम राक्षस हमारे यज्ञों में विघ्न डालते हैं। ऋषियों को मुनियों को त्रास देते हैं यहां तक की निरापराध लोगों को मौत के घाट उतार देते हैं। अब उन्हीं के संहार के लिए और यज्ञों की रक्षा के लिए मैं तुम्हें अपने साथ ले जा रहा हूं। यहां से आश्रम में पहुंचने के दो रास्ते हैं एक है वन में से होकर जल्दी आश्रम में पहुंचने का। जिसमें जंगली जानवरों का भी भय है और राक्षसों का भी खतरा है। कांटे और झाड़ झंखाड़ भी रास्ते में हैं। परन्तु एक दूसरा रास्ता भी है जो साफ है जिस पर चलते हुए कोई खतरा नहीं परन्तु बहुत लम्बा है। जिससे आश्रम में पहुंचने में बहुत समय लग जाएगा। भगवान राम ने कहा मुझे संकटों, कांटों और राक्षसों से भरपूर आश्रम में जल्दी पहुंचने वाला रास्ता ही स्वीकार है। मैं संकटों से जूझना पसन्द करता हूं आराम का जीवन व्यतीत करना नहीं।

कितनी महान् प्रेरणा है, भगवान राम ने संकटों और कष्टों से मुंह नहीं मोड़ा जीवन की कोई परवाह नहीं की और वह चले उसी रास्ते पर, परन्तु आज हम छोटी सी मुसीबत आने पर घबरा जाते हैं उनका मुकाबला करने के लिए

(शेष पृष्ठ 6 पर)

व्याख्यान माला—१४

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा:

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिता प्रजा: ।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥1॥

आचार से आयु बढ़ती है, आचार से मन चाही सन्तान होती है, आचार से कभी न समाप्त होने वाला धन प्राप्त होता है,

सर्वलक्षणहीनोपि य: सदाचारवान्नर: ।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ॥2॥

सब प्रकार के लक्षणों से हीन होता हुआ भी जो मनुष्य आचारवान् है, श्रद्धा रखने वाला तथा किसी से घृणा न करने वाला है वह शतायु होता है।

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते ।
आचारेण तु संयुक्त: सम्पूर्णफलभाग्भवेत् ॥3॥

आचार से हीन ब्राह्मण वेद फल को प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि आचारवान् पुरुष ही सम्पूर्ण फलों का भागी होता है।

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दित: ।
दु:खभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च ॥4॥

दुराचारी मनुष्य इस संसार में दु:ख भोगता हुआ, तथा निरन्तर रोगी रहने से अल्पायु होता हुआ लोगों की निन्दा का पात्र होता है।

वृत्तं यत्नेन रक्ष्य स्याद्वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्तत: क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हत: ॥5॥

धन से क्षीण हो कर भी मनुष्य अक्षीण होता है, परन्तु जो मनुष्य आचार से क्षीण हो गया तो समझिए उसका सभी कुछ नष्ट हो गया।

आचारो भूतिजनन आचार: कीर्तिवर्धन: ।
आचाराद्वर्धते ह्यायुराचारो हन्त्यलक्षणम् ॥6॥

आचार सम्पत्ति दायक होता है, आचार से कीर्ति बढ़ती है, आचार से आयु बढ़ती है और आचार ही कुलक्षणों को नष्ट करता है।

आगमानां हि सर्वेषामाचार: श्रेष्ठ उच्यते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मादायुर्विवर्धते ॥7॥

सभी शास्त्रों में आचार को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि आचार से ही धर्म पैदा होता है और धर्माचरण से आयु बढ़ती है।

न योनिर्नापि संस्कारो न श्रुतं न च सन्तति: ।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम् ॥8॥

ब्राह्मण होने का कारण न तो जन्म है, न संस्कार, न ही वेदाध्ययन और न ही सन्तान, अपितु सद्वृत्त होना ही ब्राह्मणत्व का लक्षण है।

किं कुलेन विशालेन शीलमेवात्र कारणम् ,
कृमय: किं न जायन्ते कुसुमेषु सुगन्धिषु ॥9॥

विशाल कुल से क्या लाभ क्योंकि कुल की उच्चता तो सुशीलता से होती है। चरित्र ही मनुष्य के महत्व का कारण है यों तो क्या सुगन्धित फूलों में कीड़े पैदा नहीं होते ?

कुलानि समुपेतानि गोभि: पुरुषतोऽर्थत: ।
कुलसंख्यां न गच्छन्ति यानि हीनानि वृत्तत: ॥10॥

गोधन तथा पुरुषार्थ से समृद्ध कुल भी यदि आचार से हीन हों तो वे कुल कुलों की गणना में नहीं आते।

वृत्ततस्त्वविहीनानि कुलान्यल्पधनान्यपि ।
कुलसंख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यश: ॥11॥

अल्प धन वाले परन्तु आचार से युक्त कुल गणना को प्राप्त होते हैं और अतुल यश को भी अर्जित करते हैं।

अनिज्यया कुविवाहैर्वेदस्योत्सादनेन च ।
कुलान्यकुलतां यान्ति धर्मस्यातिक्रमेण च ॥12॥

यज्ञ न करने से, अनुचित विवाह करने से, वेद का अध्ययन न करने से, और धर्म का त्याग कर देने से कुल भी अकुल बन जाते हैं।

अकुलीन कुलीनो वा मर्यादां यो न लङ्घयेत् ।
धर्मापेक्षी मृदुर्दान्त: स कुलीनशताधिक: ॥13॥

कुल हीन हो अथवा अच्छे कुल वाला हो, जो मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता धार्मिक है, मृदुभाषी है तथा जितेन्द्रिय भी है ऐसा मनुष्य सैकड़ों कुलीनों से अच्छा है।

चतुर्वेदोऽपि दुर्वृत्त: स शूद्रादतिरिच्यते ।
योऽग्निहोत्रपरो दान्त: स ब्राह्मण इति स्मृत: ॥14॥

चारों वेदों को जानने वाला भी यदि दुराचारी है तो वह शूद्र से भी अधिक निकृष्ट माना जाता है क्योंकि जो निरन्तर अग्निहोत्र करने वाला जितेन्द्रिय पुरुष है वही ब्राह्मण माना जाता है।

ज्यायांसमपि शीलेन विहीनं नैव पूजयेत् ।
अपि शूद्रञ्च धर्मज्ञं सद्वृत्तमभिपूजयेत् ॥15॥

आयु वृद्धि होते हुए भी यदि कोई पुरुष आचार हीन है तो उसकी पूजा नहीं करनी चाहिए और जो पुरुष शूद्र होकर भी सदाचारी तथा धर्मज्ञ है वह पूजनीय है।

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थित: ।
तं ब्राह्मणमहं मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विज: ॥16॥

जो शूद्र होकर भी इन्द्रिय निग्रह, सत्याचरण तथा धर्माचरण में निरन्तर प्रयत्नशील रहता है, मैं मानता हूं कि वह शूद्र, शूद्र न होकर आचरण से ब्राह्मण ही है।

कर्मशीलगुणा: पूज्यास्तथा जातिकुले नहि ।
न जात्या न कुलेनैव श्रेष्ठत्वं प्रतिपद्यते ॥17॥

कर्म, आचार, और गुण ही पूजा के योग्य होते हैं, जाति और कुल नहीं क्योंकि जाति और कुल से कोई श्रेष्ठ नहीं बन जाता।

शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति ।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभि: ॥18॥

मनुष्य में आचार ही प्रधान होता है जिस मनुष्य का आचार नष्ट हो जाता है उसे फिर न तो अपने जीवन से ही कोई प्रयोजन होता है, न ही धन से और न ही बन्धु बान्धवों से।

संस्कृतोऽपि दुराचारो नरकं याति मानव: ।
नि:संस्कार: सदाचारो भवेद्विप्रोत्तम: सदा ॥19॥

अच्छे संस्कारों वाला मनुष्य भी यदि दुराचारी है तो वह नरक को ही जाता है, संस्कार हीन भी यदि सदाचारी है तो वह उत्तम ब्राह्मण समझा जाता है।

न कुलेन न जात्या वा क्रियाभिर्ब्राह्मणो भवेत् ।
चाण्डालोऽपि हि वृत्तस्थो ब्राह्मण: स युधिष्ठिर: ॥20॥

हे युधिष्ठिर ? कोई भी मनुष्य न तो कुल से, न जाति से और न ही यज्ञ आदि कर्म काण्ड करने से ही ब्राह्मण हो सकता है अपितु जो चाण्डाल होकर भी सद्वृत्त है वही ब्राह्मण है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र की जय हो ?

भगवान राम की जय तो हम बुलाते ही रहते हैं कभी हम उन्हें एक आदर्श पुरुष कहते हैं, कभी मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि हमारे इतिहास में जो महत्वपूर्ण स्थान उनका है वह किसी और को प्राप्त नहीं हुआ। हमारे देश ने बड़े उच्चकोटि के ऋषि मुनि भी पैदा किए, सन्त महात्मा भी पैदा किए हैं। वेदों और शास्त्रों के विद्वान् भी पैदा किए हैं। राजनीतिज्ञ भी पैदा किए हैं। परन्तु श्रीराम चन्द्र जी का व्यक्तित्व ऐसा है जहां धर्म और राजनीति दोनों का समन्वय हो जाता है। इसलिए भी यह आवश्यक है कि हम समय-2 पर उन्हें याद करते रहें और अब जबकि उनकी राम नवमी आ रही है यह और भी आवश्यक है कि उनमें जो गुण थे उन्हें याद करके जहां तक सम्भव हो सके अपने जीवन में ढालने का प्रयास करें। आर्य समाज मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखता और न हम यह समझते हैं कि श्रीरामचन्द्र ईश्वर के अवतार थे जो लोग उन्हें ईश्वर का अवतार समझ कर उनकी पूजा करते हैं वह उनके महत्व को कुछ कम ही करते हैं बढ़ाते नहीं। एक व्यक्ति ईश्वर का अवतार होकर आदर्श पुरुष बन सकता है तो उसमें कोई विशेषता नहीं। दूसरे मनुष्यों की तरह जन्म लेकर उनकी तरह रह कर फिर एक उच्चाचरण और उच्चादर्श का प्रतीक बन जाए तो वह बहुत बड़ी बात है। इसी लिए हम श्रीराम को आदर्श पुरुष या मर्यादा पुरुष समझते हैं उनका आदर सम्मान करते हैं, उनकी पूजा करते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में पंजाब में श्रीराम को याद करना और भी आवश्यक हो गया है। कुछ लोगों की ओर से रामायण के विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ किया गया है जो लोग दूरदर्शन पर रामायण देखते हैं उन्हे धमकी दी जाती है कि वह इसे बन्द करें। इसका एक परिणाम यह भी हुआ है कि कई स्थानों पर लोग अपने दरवाजे बन्द करके रामायण देखते हैं। मैं इसे सारी हिन्दू जाति के लिए एक चुनौती समझता हू। कोई और इस चुनौती को स्वीकार करें या न, आर्य समाज को जरूर करना चाहिए। इसका एक ढंग यह भी है कि न केवल हम पूरे उत्साह से राम नवमी मनाएं उसके पश्चात् भी श्रीराम के जीवन को अधिक से अधिक जनता के सामने रखें ताकि हमारे अन्दर किसी प्रकार की हीनता की भावना पैदा न हो। जो जाति अपने महापुरुषों का आदर करना नहीं जानती वह अपना आदर खो बैठती है। भगवान राम का चरित्र इतना ऊंचा था कि सिख गुरुओं ने भी कई स्थानो पर उनकी प्रशंसा की है ग्रन्थ साहब में तो स्थान-2 पर राम का नाम आता है। इस पर भी कुछ लोग जो अपने आपको गुरु साहेबान के अनुयायी कहते हैं उन्होने यह अभियान आरम्भ किया कि रामायण मत देखो, मत सुनो। इसका एक ही उत्तर दिया जा सकता है कि रामायण अधिक से अधिक सुनी जाए आर्य समाजों को चाहिए कि अपने साप्ताहिक सत्संगों में वाल्मीकि की रामायण का वह भाव जनता के सामने प्रस्तुत करें जिसके द्वारा भगवान राम का यशस्वी चरित्र हमारे सामने आता है। वाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण विशेष कर तुलसी रामायण में श्रीराम के विषय में कई ऐसी बातें लिखी गई हैं जिन्हें स्वीकार करना हमारे लिए कठिन हो जाता है। लेकिन बहुत कुछ यह भी किया गया है जिसके द्वारा उनका उज्ज्वल चरित्र हमारे सामने आता है। जब हम उन्हें आदर्श पुरुष कहते हैं तो जनता के सामने उनके जीवन की वही घटनाएं पेश करनी चाहिएं जिनसे लोग प्रभावित हों। वर्तमान परिस्थितियों में जबकि पंजाब में रामायण के विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ किया गया है हमें इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो ऐसी चुनौती को स्वीकार कर सकती है। केवल रामायण का पाठ करने से काम न चलेगा। हमें यह कहना होगा कि राम हमारे हैं और हमें उन पर गर्व है। जो अभियान रामायण के विरुद्ध प्रारम्भ किया गया है उसके विरोध में आर्य समाज को आगे आना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि हम भी बाजार में खड़े होकर उन लोगों को धमकियां दें जो इस निम्न स्तर पर उतर आए हैं। आर्य समाजों के मन्दिर ऐसे स्थान हैं जहां से भगवान राम का नाम जनता तक पहुंच सकता है परन्तु यह भी आवश्यक है कि वह एक आदर्श पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में ही प्रस्तुत किए जाएं। किसी और रूप में नहीं।

—वीरेन्द्र

भगतसिंह और सुखदेव को न भूलो

इसी सप्ताह में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु का बलिदान दिवस था। 23 मार्च 1931 को लाहौर की सैन्ट्रल जेल में उन तीनों को फांसी पर लटका दिया गया था। उनका अपराध केवल यह था कि वह अपने देश को आजाद कराना चाहते थे और उसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार थे। हमारी आजादी की लड़ाई मे और भी कई बलिदानी हुए हैं। आज मैं केवल भगतसिंह और सुखदेव की ओर विशेष ध्यान दिला रहा हूं तो केवल इसलिए कि यह दोनो आर्य परिवारो में पैदा हुए थे, दोनों के माता पिता आर्य समाज के भक्त थे। भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुनसिंह तो महर्षि दयानन्द के विशेष भक्त थे। उनके पिता सरदार किशनसिंह आर्य समाज के प्रचारक भी रहे थे। सुखदेव के चाचा श्री लाला चिन्तराम जी पहले लायलपुर मे और फिर लुधियाना में आर्य समाज की सेवा करते रहे। इस लिए इन दोनों शहीदो पर आर्य समाज का जो प्रभाव था उसे हम भूल नहीं सकते और यदि हम उनके जीवन चरित्र को जानने का प्रयास करें तो पता चलेगा कि यह दोनों युवक यदि अपने देश के लिए अपना बलिदान देने को तैयार हुए तो उसका एक कारण उनका पारिवारिक वातावरण भी था। भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुनसिंह तो हाथ में सत्यार्थ प्रकाश लेकर घूमा करते थे और जगह-जगह बैठ कर यज्ञ किया करते थे। मैं इसे आर्य समाज का दुर्भाग्य समझता हूं कि हम अपने इन शहीदों को वह महत्व नहीं देते जो देना चाहिए। दूसरे लोग तो अपने छोटे-छोटे शहीदों को सिर पर उठा लेते हैं। आर्य समाज ने राम प्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, सुखदेव जैसे शहीद पैदा किए थे। 23 मार्च को भगतसिंह और सुखदेव के बलिदान दिवस पर उन्हें सारे देश में श्रद्धाञ्जलियां भेंट की जाती हैं कोई कारण नहीं कि आर्य समाज अपने इन शहीदों को न अपनाए। हमारी संस्थाओं को विशेष कर स्कूलों और कालेजों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और अपने इन शहीदों के विषय में नई पीढ़ी को अधिक से अधिक जानकारी देनी चाहिए ताकि उनमें भी देश भक्ति की वही भावना पैदा हो सके जो भगतसिंह और सुखदेव में थी।

—वीरेन्द्र

पंजाब में आर्य समाज का प्रचार

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ प्र)

लगभग गत एक वर्ष से श्री वीरेन्द्र जी ने 'आर्य मर्यादा' साप्ताहिक मे कई बार पजाब मे आर्य समाज की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की है। उन्होने लिखा कि हम कई बार उपदेशको की आवश्यकता छापते हैं। पिछले अक मे तो यहा तक लिखा कि हम 1000 से 1500 रुपये मासिक तक देने को तैयार हैं परन्तु कोई उपदेशक पजाब आने का तैयार नही। बात ठीक भी हैं, जलती आग में कोई कूदने को तैयार क्यों हो ? गत पाच वर्षों से पजाब की स्थिति ही ऐसी बनी हुई है। दूसरे प्रदेशों के उपदेशक क्यो अपने को आग मे झोंके और क्यो अपनी पत्नी को वैधव्य तथा बच्चो को पितृ विहीन अनाथावस्था के कगार पर लाकर खड़ा करें।

परन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या पजाब मे प्रचार कार्य को विस्तार देने के लिए पजाब के आर्य बन्धुओ को वेतन भोगियो की ही आवश्यकता है ? और क्या आर्य समाज का प्रचार वेतन भोगियों के द्वारा ही सम्भव है ?

यह तो दुर्भाग्य है कि आर्य समाज के पास इतने वानप्रस्थ और सन्यासी नहीं है, जो प्रचार कार्य को सुचारु रूप दिया जा सके। परिणामस्वरूप गृहस्थो से भी कार्य लेना पड़ता है परन्तु वास्तविकता यह है कि प्रचार कार्य है ही गृह-त्यागी जनो का, जिन्हे केवल और केवल मात्र धर्म प्रचार की ही चिन्ता रहे। गृहस्थ बेचारे को तो गृह परिवार की चिन्ता घेरे रहती है। पजाब की समाजें क्यो नही ऐसे लोगो का उपयोग करती।

उदाहरण इधर-उधर से सुना-सुनाया नही अपितु स्व-अनुभूत देता हू। पहले मेरे पास 10-10 मास तक कार्यक्रमो की क्रमबद्ध सूची होती थी और उस सूची में 2-1 को छोड कर शेष सब पजाब की आर्य समाजो के ही कार्यक्रम रहते थे। उत्तर प्रदेश से मुझे प्रायः यही सुनने को मिलता था कि 'स्वामी जी आप अपना पूरा समय पजाब को ही देते हो, उत्तर प्रदेश का भी ध्यान रखा करो। मैं एक ही उत्तर देता था कि पजाबी बन्धु वेद सुनना चाहते हैं अतः पजाब की आर्य समाजो में बारहो महीने वेद प्रचार सप्ताह होते रहते हैं। उत्तर प्रदेश वाले वर्ष भर में एक बार ढोलक बजवा कर आर्य समाज की कार्यवाही पत्रिका मे बड़े उत्साहपूर्वक वार्षिकोत्सव मनाया गया और श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा। यह लिख कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर देते हैं। वह मरे जैसे को बुलाते ही नही, कारण कि मैं वेद की कहता हू। उत्तर प्रदेश वालो को मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध तथा बाइबिल, कुरान के खण्डनात्मक भाषण चाहिए और पजाबी बन्धुओ को वैज्ञानिक युक्तियुक्त वेद का विधेयात्मक पक्ष चाहिए।

अब मैं देख रहा हू कि मेरी वेद-प्रचार यात्राओ की योजना की विज्ञप्ति जब पजाब को जाती है तो नगल टाउन जैसी किसी ही अपवाद समाज का पत्र मिल पाता है नही तो प्रतिक्रिया भी प्राप्त नही होती।

सन 1959 की जुलाई को सन्यासी होने के पश्चात् से मैं पजाब मे ही रहा हू। पहले 'पजाब हिन्दी रक्षा समिति' और फिर 'पजाब रक्षा समिति' के सदस्य के रूप सक्रिय रहा हू तथा सभी इन विषयो पर होने वाले सम्मेलनो मे सार्वजनिक सभाओ और कार्यकारिणी की बैठको मे निरन्तर प्रमुख वक्ताओ मे रह कर भाग लेता रहा हू अतएव मेरे विषय मे पजाब के आर्य बन्धु यह भी नही कह सकते कि 'हम स्वामी वेदमुनि को जानते ही नही।'

पजाब मे मेरी उपर्युक्त गतिविधियो के अतिरिक्त 'वीर प्रताप' और 'प्रताप' दैनिको में भी मेरे लेख पजाब की हिन्दी समस्या तथा आर्य समाज विषय पर बहुधा निकलते रहे हैं।

यह भी सुझाव है कि पजाब के आर्य बन्धु यह परिणाम निकाल पाये हैं कि वास्तविक प्रचार कार्य तो वेतन भोगियो से ही होता है, कोरे मिशनरियो से नही। इसके लिए भी मेरे पास आधार है और वह यह कि जब मैं किसी पजाब के कार्यक्रम पर जा रहा होता हू और मार्ग मे अथवा निकट मे पड़ने वाली किसी समाज को लिख देता हू कि मैं अमुक तिथियो में वहा आ रहा हू आप चाहे तो उससे आगे या पीछे 5 7 दिन जो उचित समझें और मुझे सूचित करें तो परिस्थिति वश-विवशता दिखाते हुए उत्तर भी प्राप्त नही होता। पहले तुरन्त उत्तर आता था, आप आ रहे है, सौभाग्य है, अवश्य पधारिये, स्वागत है तथा भगवान की असीम कृपा है कि आपका इधर आगमन हो रहा है, आदि-आदि।

न चाहते हुए भी पिछला 'आर्य मर्यादा' का सम्पादकीय पढ़ने के पश्चात् लिखने को बाध्य हो गया हू और आशा करता हूं कि आर्य बन्धु मेरे इस लेख को गम्भीरता से लेंगे तथा परिस्थितियों का सही आकलन करेंगे।

भवानपि अपि विस्तारेण।

दयानन्द के सैनिक हो तुम

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ, प्र)

ज्योति पुञ्ज की पुण्य धरा पर—
छाया घना अन्धेरा है।
दानवता की सैन्य-वाहिनी—
ने धरती को घेरा है।
अनाचार का, दुर्विचार का—
आज लगा यह डेरा है।
सूरज तो उग आया लेकिन,
दिखता नही सवेरा है।
प्रेम-दया-ममता समता के,
तत्व बिलखते रोते हैं।
सत्य-धर्म के लक्षण सारे,
चिर निद्रा मे सोते हैं।
बढ़े हुए पाखण्ड चतुर्दिक,
कालिख लीपे-पोते हैं।
मानवता के तत्व सुनहरे,
गरिमा अपनी खोते हैं।
ऋषि-मुनियो की वसुन्धरा पर,
सोती अब तरुणायी है।
मद-आलस्य-प्रमाद भरी,
सरिता बन हृदय समायी है।
दयानन्द के सैनिक ! सुन लो—
निर्भय आगे आओ।
दानवता से टक्कर लेकर—
शौर्य—शक्ति दिखलाओ।
शपथ तुम्हें है मातृभूमि की.
दानव मार गिराओ।
आर्य बनो ! दृढ़ सकल्पित हो—
जगती आर्य बनाओ।

हीरक जयन्ति समारोह सम्पन्न

दिनाक 7-3-88 को दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, नवाशहर के प्रागण मे स्कूल की हीरक जयन्ति व पुरस्कार वितरण समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता लाला ओम् प्रकाश जी सराफ ने की। बच्चों और अध्यापकों का उत्साह बढ़ाने के लिए बच्चो व अध्यापको को सम्मानित किया। स्मारिका का विमोचन श्री धर्म प्रकाश जी दत्त ने अपने कर कमलो से किया। राष्ट्रीय स्तर के खो-खो के व अन्य खिलाड़ियो को पुरस्कार स्कूल मैनेजर श्री वेद प्रकाश जी शरीन ने दिए। [illegible] व अन्य गण्य मान्य व्यक्तियों को प्रबन्धक समिति के प्रधान पण्डित देवेन्द्र कुमार जी ने सम्मानित किया। रगारग कार्यक्रम [illegible] श्री [illegible], श्री [illegible] सिंह [illegible] स्कूल के [illegible] छात्राओं ने पूर्ण सहयोग दिया। अन्त में माननीय प्रिंसिपल श्री [illegible] ने बाहर से आये हुए [illegible] का धन्यवाद किया। [illegible]

लेखराम बलिदान दिवस

आर्य समाज भठिण्डा द्वारा 20 फरवरी को लेखराम बलिदान दिवस आर्य समाज मन्दिर में मनाया गया। इस अवसर पर प्रात. हवन यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् श्री ओम्प्रकाश वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा द्वारा लेखराम जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया। प्रो. डी. पी मनचन्दा द्वारा स्थानीय तथा बाहर से आए हुए सज्जनो का धन्यवाद किया गया।

—ओम्प्रकाश मनचन्दा-प्रधान
आर्य समाज भठिण्डा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

लेखक—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार शान्ति सदन
1454 सेन्ट्रल टाउन जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 1947 के विभाजन से पहले भारत वर्ष भर मे आर्यों का एक प्रमुख सगठन माना जाता था। भारत के उत्तरीय स्थानो क्वेटा और पेशावर से लेकर हरिद्वार तक इसकी सस्थाओ का जाल फैला हुआ था। इसका प्रचार क्षेत्र था। लाहौर एक जीवन्त केन्द्र था। वहां से लगातार इस विस्तृत प्रदेश मे महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो और विचारो का प्रचार हो रहा था।

लाहौर में 4-5 नवम्बर 1886 ई में, 16 आर्य समाजो के प्रतिनिधियो ने मिल कर आर्य सगठन की नीव डाली। उनमें अमृतसर, गुजरांवाला, होशियारपुर, रावलपिण्डी, पेशावर, लुधियाना, मुलतान, फिरोजपुर, लाहौर के प्रतिनिधि थे। लाहौर का प्रतिनिधि-मण्डल सबसे बड़ा था। एक प्रतिनिधि दिल्ली से भी आया था। यह एक मूल सगठन था, जिसका उद्देश्य महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार था। पिछली एक सदी में इस सगठन का अभूतपूर्व विस्तार हुआ। स्कूलो, कालिजो, गुरुकुलो, अनाथालयों, शुद्धि सभाओ और न जाने किन-2 रूपो मे यह सगठन पल्लवित और पुष्पित हुआ। सैंकड़ो की सख्या में इसके प्रचारको ने देश-विदेश मे प्रचार और परिवर्तन की धूम मचा दी।

1947 के पजाब विभाजन के बाद अवनति का प्रारम्भ हुआ। आरम्भ से ही कांग्रेस के केन्द्रीय नेताओ का पजाब के हिन्दुओ के प्रति अवज्ञा पूर्ण व्यवहार रहा। आर्य समाज भी हिन्दू समाज का ही एक अंग है अत: इस दृष्टिकोण का इस पर भी प्रभाव पड़ा। पजाब के पजाबी सूबा के रूप में परिवर्तन होते-होते जन जीवन पर पजाब की आर्य समाजों का प्रभाव बहुत घट गया। कई कारण थे जिनका उल्लेख करने की यहां आवश्यकता नहीं।

पर इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया। व्यक्तियो का उल्लेख न भी किया जाए तो भी सभा के वार्षिक चुनाव को लेकर जो अव्यवस्था हुई उसने एक बार फिर समाज को अदालतों के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया है। सभा का जो चुनाव जालन्धर मे हुआ उसके विषय में दिल्ली की सार्वदेशिक सभा को आपत्ति थी। उन्होंने सभा के द्वारा चुनें गए प्रधान को अयोग्य घोषित कर दिया। अयोग्य होने की घोषणा भी चुनाव से पहले कर दी गई थी फिर भी पंजाब की समाजों के प्रतिनिधियों ने बहुमत से उन्हें ही चुना था।

इस के बाद, मेरी तुच्छ बुद्धि मे, दिल्ली सभा के अधिकारियो को यह चाहिए था कि वे पजाब मे आते, आर्य समाजो के प्रतिनिधियो से तथा आर्य भाइयो से मिलते और कोई एक समन्वित मार्ग प्रशस्त करते। पर उन्होने दिल्ली बैठ कर ही एक प्रस्ताव पास किया, जिसके कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व जालन्धर के कुछ आर्य भाइयो के कन्धे पर डाल दिया गया। स्वाभाविक रूप से इसका परिणाम अव्यवस्था हुई।

दिल्ली बैठ कर प्रान्तो के मन्त्रियो, प्रधानो को रखना, हटाना कांग्रेस का पुराना ठर्रा है। पर कांग्रेस मे और आर्य समाज में एक मूल भूत भेद है। कांग्रेस के सब विधायको, मन्त्रियो को आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहे होते हैं—जिसका आधार उनका सगठन है। एक तरह से सब के मुख मे लड्डू होते हैं। इसलिए उनके लिए स्वतन्त्र रूप से मत प्रकट करना सम्भव नही होता। पर आर्य समाज मे ऐसा कोई बन्धन, प्रलोभन नहीं यह एक विशुद्ध प्रजातन्त्र है। यहां प्रतिनिधियो के मतो की उपेक्षा नही की जा सकती।

मेरी तुच्छ बुद्धि मे तो अब भी समय है। अधिकारी वर्ग को अदालतो की शरण मे न जाकर जनता-जनार्दन की शरण में जाना चाहिए। सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो को पजाब मे आकर समाजो के प्रतिनिधियो से मन्त्रणा करनी चाहिए—मीटिंग बुलानी चाहिए और सर्व सम्मत या बहुजन सम्मत समाधान निकालना चाहिए और कोई मार्ग नही। अदालतो के अन्दर जाने का मार्ग तो बड़ा प्रशस्त है पर वापिस लौटने का मार्ग बहुत तग है।

कुछ आर्य सज्जनो को यह नहीं समझ आता कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्य समाजो में प्राय: मतभेद या विवाद नहीं होता। आर्य प्रतिनिधि सभा की समाजो में प्राय: मतभेद या विवाद क्यो होते हैं। उन सज्जनों की दोनों प्रतिनिधि सभाओ की नीतियों में जो मौलिक अन्तर है वह समझ नहीं आया। आर्य प्रादेशिक समाजो के सगठन का मुख्य, लगभग 80 प्रतिशत या 90 प्रतिशत भाग स्कूल तथा कालिज के अध्यापको का होता है। जन साधारण का भाग 20 प्रतिशत या 10 प्रतिशत है। परिणाम यह है कि इन समाजो पर स्कूल अथवा कालिजो के प्रिंसीपलो का नियन्त्रण होता है। वे ही प्राय: प्रधान बनते हैं। वहां विवाद का प्रश्न ही नहीं। साथ ही यह आवश्यक नहीं कि वे अध्यापक विचारो से आर्य समाजी हो, स्कूल या कालिज का अंग होने के नाते वे समाजो के सभासद् बनते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभाओ की समाजो मे स्वतन्त्र जन मण्डल ही सभासद् होते है। अत: ऐसा अनुशासन सम्भव नही।

इसलिए सार्वदेशिक सभा के लिए यह आवश्यक है कि एक प्रजातन्त्र के मूर्धन्य होने के नाते उसे सदा जनमत की परवाह करनी चाहिए। ऐसा कोई नही कहता कि अनुशासन को ताक से ओझल कर देना चाहिए।

आर्य जनता मे समन्वय लाने की भावना से कार्य करने पर बहुत से विवाद ठीक ढंग से सुलझ सकते हैं।

महर्षि दयानन्द की पुण्य स्थली अजमेर में उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ

आर्य समाज के केन्द्र एव महर्षि दयानन्द की पुण्य स्थली अजमेर मे प्रथम अप्रैल से उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ हो रहा है। एक विज्ञप्ति मे सचालक स्वामी शक्तिवेश ने कहा है कि ग्यारहवीं पास प्रतिभाशाली युवको को 3 वर्षों मे वैदिक सिद्धान्तो, अन्य सम्प्रदायो, सस्कारो, व्याख्यान, सगीत कलाओ एव व्यवहारिक सगठन सूत्रो से सुसज्जित कर विभिन्न भाषाओ में निष्णात किया जाएगा। भोजन छादन एव पुस्तको आदि उत्तम व्यवस्था का व्यय भार सस्था स्वय वहन करेगी। उपदेशक बनने पर नियुक्तियो का प्रबन्ध भी सस्था द्वारा ही किया जाएगा। स्थान सीमित हैं। इच्छुक महानुभाव 31 मार्च तक अपने आवेदन सादे कागज पर निम्नलिखित पते पर भेजें। 31 मार्च को साक्षात्कार के लिए भी वही उपस्थित होवें। शारीरिक मानसिक एव व्यवहारिक परीक्षा करके ही योग्य छात्रो को प्रवेश दिया जाएगा। अपने प्रमाण-पत्र साथ लाए सम्पर्क करें।

सचालक
प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय
आदर्श नगर (नसीराबाद रोड)
अजमेर (राजस्थान)

गायत्री अनुष्ठान यज्ञ तथा योग साधना शिविर

सर्व सज्जनो को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि चैत्र शुक्ला 9 (रामनवमी) से चैत्र शुक्ला पूर्णिमा स 2044-45 (26 मार्च से 2 अप्रैल 1988) तक निष्काम सेवा ट्रस्ट तथा मानव सेवा आश्रम की ओर से एव दानियो के सहयोग से किसी श्रेष्ठ महात्मा जन के नेतृत्व मे गायत्री अनुष्ठान, महायज्ञ एव योग शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें गायत्री यज्ञ के तथा यम, नियमादि योग के आधार भूत अंगो का सैद्धान्तिक ज्ञान कराने के अतिरिक्त आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सज्जन नाम भेजने की कृपा करें। दिन में तीन बार कार्यक्रम होगा तथा बीच-2 मे विश्राम भी दिया जाएगा।

नियम—

(1) साधको के लिए प्रवेश शुल्क 25 रु है। जो साधक पूर्ण रूप से अन्त तक शिविर मे उपस्थित रहेगा। उसे यह धन राशि वापस लौटा दी जाएगा।

(2) साधको के लिए रहना निःशुल्क होगा। दानी दाता हर प्रकार का सहयोग देकर शिविर को सफल बनाए।

(3) सभी साधक कागज पैंसिल, बिस्तर एव बर्तन (खाने के) तथा योग दर्शन (भाष्य) साथ अवश्य लाए।

(4) बीडी, सिगरेट आदि किसी भी प्रकार का नशा सभी साधको के लिए वर्जित है।

—श्री श्रीराम पथिक
मानव सेवाश्रम छुटमलपुर
(स्वामी मार्ग) सहारनपुर

आचार्य विश्वश्रवा जी से एक भेंट

लेखक—श्री आशुराम जी आर्य महामन्त्री
वि वे परिषद् जालन्धर

आचार्य विश्वश्रवा महा महोपाध्यायाय जी आर्य समाज की एक महान् विभूति है। जिन से मिलने पर अनेक प्रकार की गुत्थियो का समाधान होता है और नये-2 ज्ञान का प्रकाश भी। इस बार वाराणसी मे मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल के रजत जयन्ती महोत्सव पर गए हुए जब स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती स यह पता लगा कि आचार्य जी की दृष्टि अब जाती रही है, मैं अभी 2 वहा से होकर ही आ रहा हू इत्यादि।" तो मुझे दु ख भी हुआ और जाने की इच्छा भी प्रबल हो उठी।

वापसी पर बरली स्टेशन पर उत्तर कर मोती बाजरिया (बाजार) मे उनके गृह निवास वेद सदन मे जा ही पहुचा। पहली बार ही जाना था। अन देखी राहें कुछ कष्टदायक तो होती हैं जो स्वाभाविक है। बडा विशाल घर बहुत कमरो वाला। घर मे ही प्रैस और छापेखाने का सारा फैला हुआ सामान, हजारो के कागजो का ढेर और सहस्रो प्राचीन अर्वाचीन वैदिक ग्रन्थो का सग्रह का हाल सा बडा कमरा जिसमे आचाय जी की खाट भी बिछी हुई है, जहा पढते पढते सो गये और उठ कर फिर पढने लग गये। इस पर ही यह उक्ति मुझ स्मरण हो आई कि विद्या कठ की और रुपैया गठ का।" तब ही तो वैदिक सिद्धान्तो और महर्षि दयानन्द सम्बन्धी मन्तव्यो से सदा ओत-प्रोत रहते हैं। श्रीमती जी भी वेदाचार्य हैं और छोटी पुत्री ज्योति श्रवा अब तीनो ही यहा निवास करते हैं। शेष सभी बेटे बेटिया अमेरिका, कैनेडा और दिल्ली मे वास कर रहे हैं।

1986 मे उन दिनो मैं न्यूयार्क मे था जब मुझ आदरणीय प्रधान आर्य समाज श्री पुरुषोत्तम राम जी कपूर और मान्य श्री धर्मजीत जिज्ञासु जी मन्त्री से पता लगा कि आचाय जी आखें दिखाने के लिए यहा अपने पुत्र श्री वेदश्रवा और पुत्री डाक्टर के पास आए हुए हैं। हम दोनो की उत्कृष्ट इच्छा एक दूसरे को मिलने की थी परन्तु वेदश्रवा जी का घर दूर था और मैंने शीघ्र लौटना भी था केवल प्रधान जी के फोन पर ही बात चीत कुछ हो सकी और मिलना न हुआ।

अब जब कि मैंने उन्हे इस अवस्था मे देखा तो दु ख तो हुआ और आश्चर्य भी कि न्यूयार्क मे आकर भी सफलता नो दूर रही सही दृष्टि भी जाती रही, क्या कारण? तो कहने लगे कि 5 डाक्टरो ने बैठ कर मेरी आखो का निरीक्षण किया। जिन मे मेरी डाक्टर पुत्री और दूसरे एक डाक्टर की सम्मति तो यह थी कि आप्रेशन नही कराना चाहिये किन्तु दूसरे तीन डाक्टरो की राय थी कि करा लेना चाहिये। उस समय तो पुत्री की राय भी विचार कर आप्रेशन नहीं कराया। पर पीछे मन मे यह विचार आने पर कि अब तीन डाक्टरो की बहु-सम्मति है और उधर दो की अल्प है। हो सकता है कि आखो की ज्योति बढ जाए, बस ऐसा सोचते ही आप्रेशन करा लिया और होनी वर्त गई, दृष्टि चली गई। विधि का विधान अटल है क्या हो सकता है।

मेरा विचार था कि सामवेद के कुछ स्थल देख कर अपनी सम्मति देंगे जो मैंने सस्कृत के साथ उर्दू और हिन्दी मे भी अनुवाद और व्याख्यादि एक ही ग्रन्थ मे की है। वह तो न हो सका हा कुछ स्थल मेरे से सुने और कहा कि क्योकि महर्षि दयानन्द का भाष्य इस पर नही है इसलिए परमात्मा अपरमात्मा के सम्बन्ध मे सामवेद पर मैं अपना मत प्रगट नही कर सकता। फिर भी अपनी सम्मति सामान्य वेद भाष्य पर कुछ लिखवा कर हस्ताक्षर कर दिए। यह भी कहा कि वर्तमान सामवेद भाष्यो मे श्री प विश्वनाथ जी का आश्रय ही लेते जाए और आचाय वैद्य नाथ जी को भी देखते रहें।

आचार्य विश्वश्रवा जो निरुक्त के विद्वान् हैं इस पर बात चीत करते हुए उन्होने कहा कि निरुक्त के 25 भाष्य हुए हैं। मैं निरुक्त का विद्यार्थी रहा हू। सभा प्रधान श्री स्वामी जी (स्वामी आनन्दबोध जी) को मैंने कहा था कि कुछ समय के लिए मुझ कोई विद्वान दे दे तो मेरे पास जो विशेष ज्ञान निरुक्त सम्बन्धी है वह सारा मैं उन्हें बतला दू गा।"

महेश योगी जी के सम्बन्ध मे वार्ता के मध्य उन्होंने कहा कि मैंने उनको वेदो के अमूल्य नुस्खे (रहस्य) दिए हैं और उनसे मुझे आर्थिक लाभ भी हुआ है। अब भी वह कहते हैं कि यहा (दिल्ली) आ जाओ परिवार सहित और निश्चिन्त हो कर अपना शेष जीवन सुख आनन्द से व्यतीत करो। उनका गृह निवास तो एक बहुत विशाल भवन योग-स्थल मन्दिर आदि के रूप में किले की तरह है पर आशुराम जी! अब मैं अन्तिम आयु में उनके जाकर रहना नहीं चाहता। इसलिए कि वहा सब कुछ तो है पर "दयानन्द" नहीं है। सुखो से भरपूर जीवन भी दयानन्द के बिना मुझे कैसे अच्छा लगेगा।

आचार्य की दृष्टि मे पुराने विद्वान जा रहे हैं और नये आ नही रहे। कहा कि मेरी दृष्टि मे आधुनिक विद्वानो में तीन ऐसे हैं जो महर्षि दयानन्द सम्बन्धी सिद्धान्तो के शोधक भी हैं। समालोचक भी और समाधान भी करने की क्षमता रखते हैं। (1) डा प्रद्युम्न, (2) डा प्रज्ञा के भाई (3) डा प्रशस्त मित्र (4) डा ज्वलन्त कुमार।

और भी अनेक विषयो पर बातचीत होनी थी, उनके जो टिकट आरक्षण के प्रताप गढ से आए हुए थे वहा आर्य समाज का उत्सव था (वह अब बिना दूसरे के नहीं जा सकते) गाडी का समय हो रहा था और मैं भी पश्चिम की ओर जम्मूतवी की गाडी में जाना चाहता था। वह पूर्व को चल दिए और मैं पश्चिम को। शेष समाधान मन मे रहे। शेष समागम भी देव कृपा से ही होगा है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तैयार नही होते। रास्ते मे ताडका को मारा अनेको राक्षसो का सहार किया। उनका रास्ता कोई रोक नहीं सका और वह अपने गन्तव्य स्थान महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में पहुच गए। प्राण-पण से उन्होने यज्ञ की रक्षा की। परन्तु इसके साथ ही उन्होने यह भी जान लिया कि राक्षस लोग अन्य प्रदेश मे बढते जा रहे हैं और श्रेष्ठ पुरुषो की हत्याए कर रहे हैं। अब इसके लिए कोई योजनाबद्ध कार्य करना चाहिए और यह कार्य उन्होने वनवास के समय मे किया। 14 वर्ष के वनवास काल में राम ने भारत की भूमि से राक्षसो का सहार कर दिया परन्तु जहा से राक्षसो को अस्त्र-शस्त्र और सहायता मिल रही थी और जहा से यह खतरा था कि यहा से जो राक्षस जान बचा कर लका मे भाग गए हैं वह वहा से फिर रावण की सहायता लेकर भारत मे आकर फिर आतक पैदा कर सकते हैं। इसलिए एक दिन उन्होने बुद्धिमत्ता से राक्षस राज रावण पर भी चढाई कर दी। कई लोगो का ऐसा विश्वास है कि भगवान राम, रावण से बहुत बली थे उनकी यह धारणा भी ठीक हो सकती है परन्तु सच्चाई यह है कि भगवान राम, रावण से बहुत अधिक बुद्धिमान और नीति वान् थे। यही उनकी विजय का सबसे बडा कारण था। उन्होंने आज के भारत के अधिकारियो की तरह आतकवाद का सामना करने के लिए सैन्टर से सैनिक सहायता नही मांगी। उन्होंने अयोध्या से एक भी सैनिक नहीं मागा, न अस्त्र-शस्त्र मगाये अपनी बुद्धि के बल पर अन्य प्रान्त मे रहने वाले सुग्रीव और दूसरे साधारण से वानर जाति के लोगो को साथ लेकर रावण पर चढाई कर दी, उन्होने सैन्टर (अयोध्या) को यह भी पता न लगने दिया कि वह क्या कर रहे हैं। पहले भी राक्षस लोग राम को अकेला समझ कर कोई तैयारी न कर सके और एक-एक राक्षस राम के मुकाबले मे आकर मरते रहे। जब रावण ने भी देखा कि राम अकेला है थोडे से वानर जाति के लोग उसके साथ हैं वह यदि लका मे आ भी जाएगा तो उसे वहीं समाप्त कर दिया जाएगा। भगवान राम ने बुद्धिमत्ता से पहले हनुमान को भेज कर फिर अगद को भेज कर और दूसरे गुप्तचरो द्वारा रावण की शक्ति का अनुमान लगा लिया था। वहा जो राम के हितैषी थे उनकी जानकारी पाकर विभीषण आदि को अपने साथ मिला लिया था। परन्तु अपनी शक्ति का अन्त समय तक भी रावण को भेद नहीं होने दिया। यह भगवान राम की राजनीति और बुद्धिमत्ता थी। एक दिन रावण का नाश करके वहा का राज्य रावण के ही धर्मात्मा भाई विभीषण को देकर दानवता पर मानवता की विजय का डका बजाते हुए वह अयोध्या में वापिस लौट आए।

क्या राम नवमी का पर्व मनाते हुए देश के राज्य अधिकारी भगवान राम के जीवन से कोई प्रेरणा लेंगे। —— पहले शोर मचाया जाता है हम यह कर देंगे, हम यह कर देंगे, आतकवाद को जड से उखाड फैंकेंगे, इसे शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाएगा। परन्तु सब बेकार बाद में कुछ भी हो नही पाता। और यह भारत के सभी प्रान्तो में हो रहा है। सारे देश मे आतकवाद बढ रहा है। उसे समाप्त करने के लिए भगवान राम की तरह से कोई नीति व बुद्धिमत्ता से कार्य नही किया क्योकि हम केवल राम राम रटते हैं। परन्तु उनके जीवन से कोई प्रेरणा नहीं लेते। हमारे महापुरुषों न अपना जीवन लगा कर हमारे लिए रास्ता खोला है। हमे मार्ग दिखाया है परन्तु हम उनके मार्ग पर चलने के लिए तैयार नही होते।

इन समारोहो के करने का हमे तभी लाभ होगा जब हम उनके जीवन से कोई प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण करने का यत्न करेंगे। वह एक आज्ञाकारी पुत्र एक पतिव्रत सच्चे पति, एक सच्चे भाई, एक सच्चे मित्र, एक कुशल राजनीतिज्ञ, महान् बुद्धिमान और मर्यादाओं के पालक थे। हमें उनका जीवन-का पूर्ण अनुसरण करते हुए, राम नवमी का पर्व मनाते हुए करना चाहिए। —[illegible]

आर्य समाज के साहित्यकार :

मेरठ निवासी पण्डित घासीराम जी

लेखक—श्री डा. भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ

आर्य समाज के जन्मकाल से ही मेरठ नगर का उससे घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। स्वामी दयानन्द अपने भ्रमण एवं प्रचार काल में अनेक बार मेरठ पधारे थे। इसी नगर में कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा स. 1929 वि को पण्डित घासीराम जी का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम श्री द्वारिकादास था। पिता आर्य समाजी थे और उन्होंने स्वामी जी से उपदेश ग्रहण कर मूर्तिपूजा का परित्याग किया था। घासीराम का यह नाम रखा जाना भी एक रोचक बात की ओर संकेत करता है। जिन व्यक्तियों के बालकों की अल्पकाल में ही मृत्यु हो जाती है, सन्तान जीवित नहीं रहती वे अपने बच्चों का नाम निन्दानन्द अथवा जुगुप्सा जनक रख देते हैं। पण्डित घासीराम के जन्म से पूर्व उनके पिता के 4 पुत्र हुए और वे सभी दिवंगत ही गए थे। अस्तु अब इस बालक का नाम घासीराम रख दिया।

प्रारम्भ में इनकी शिक्षा उर्दू, फारसी की हुई। तदनन्तर वे अंग्रेजी पढने के लिए हाई स्कूल में प्रविष्ट किये गये। आर्य समाज के एक सुप्रसिद्ध विद्वान् पण्डित गंगा प्रसाद जी जज उनके सहपाठी और मित्र थे। दोनो ने मिलकर 1887 ई. में एक आर्य डिबेटिंग क्लब की स्थापना की। इसमें आर्य समाज विषयक भाषण होते। 1890 में पण्डित घासीराम ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आगे पढने के लिए आगरा चले गये। उनके द्वारा चलाया गया डिबेटिंग क्लब चलता रहा। आगरा में वे कालेज छात्रावास में रहे। यहां भी उन्हें पण्डित गंगाप्रसाद तथा श्री ज्वालाप्रसाद आदि आर्य विद्यार्थियों का सहयोग मिला। अब वे एक आर्य मित्र सभा चलाने लगे। 1894 में पण्डित घासीराम जी ने बी ए. की परीक्षा विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान ग्रहण कर उत्तीर्ण की। इसके उपलक्ष्य में उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। छात्रवृत्ति तो मिलती ही थी। 1896 में लॉ कोर्स लेकर एम ए और एल.एल.बी की उपाधियां भी प्राप्त कर ली। शिक्षा समाप्त करके जौनपुर के कालेज में दर्शन और तर्क शास्त्र के प्राध्यापक नियत हुये। इस पद पर पांच वर्ष तक कार्य किया। 1901 में जब जौनपुर में विषूचिका का प्रकोप हुआ तो वे अपने पिता के आदेश से नौकरी छोड़ कर मेरठ लौट आए।

अब श्री घासीराम जी ने वकालत प्रारम्भ किया। उन्हें इस व्यवसाय में अधिक प्रतिष्ठा मिली। परन्तु वे द्रव्यार्जन करने में सफल नहीं हुए एक तो वे मितभाषी थे और वकालत के व्यवसाय में वही व्यक्ति अधिक सफल हो सकता है जो वाचाल हो। द्वितीय वे मुकद्दमा लडने वालो को परस्पर सदभाव से अपना मामला निपटा लेने का परामर्श देते थे। 1929 तक वे वकालत करते रहे। इसी बीच वे मेरठ म्यूनिसीपल बोर्ड के सदस्य बने और 4 वर्ष तक इस पद पर कार्य करते रहे। वे बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे।

आर्य समाज की प्रवृत्तियों में सदा से ही भाग लेते रहे थे। मेरठ आर्य समाज के कई वर्षों तक वे प्रधान रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भी वे वर्षों तक उप-प्रधान तथा प्रधान भी रहे। उत्तर प्रदेश सभा के तत्वावधान में साहित्य प्रकाशन कार्य का 1895 में ही प्रारम्भ हो चुका था। पण्डित घासीराम जी के निर्देशन में साहित्यिक कार्य निरन्तर चलता रहा और उनके निधन के पश्चात् यह साहित्य विभाग पण्डित घासीराम साहित्य विभाग के नाम से अभिहित किया गया। वे अद्भुत साहित्यिक प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी तथा संस्कृत के वे प्रकाण्ड विद्वान् थे। अनुवाद कार्य में उनकी विशेष रुचि थी। वे उर्दू एवं हिन्दी में भी कविता लिखते थे। उनके द्वारा अनुवादित ग्रन्थ निम्न हैं।

1 सम्पूर्ण गीता का उर्दू पद्यानुवाद।

2. महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद यह प्रथम गुरुकुल कांगड़ी की मुख पत्रिका में धारावाही रूप से प्रकाशित हुआ, पुन ... छपा। इसमें भूमिका के संस्कृत भाग का ही अनुवाद किया गया क्योंकि ... सम्पूर्ण भाग ... लिखा गया था। इसका ... में सार्वदेशिक आर्य ... प्रकाशित हुआ।

3 ... अंग्रेजी भाष्य का अनुवाद ... के श्रेष्ठ ... तैयार किया ... शित हुआ। इसका परिवर्धित और संशोधित संस्करण 19.9 ई में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से प्रकाशित हुआ।

4 पण्डित घासीराम जी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य बंगाली लेखक पण्डित देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित महर्षि के वृहद जीवन चरित का अनुवाद और सम्पादन करना है। सर्वप्रथम मुखोपाध्याय महाशय ने 1894 में दो भागों में दयानन्द चरित" नामक बंगला पुस्तक लिखी। इसी बीच पण्डित घासीराम जी की मेरठ में देवेन्द्र बाबू से भेंट भी हुई। 1931 में भास्कर प्रेस के अध्यक्ष श्री विष्णु शरण दुबलिश की प्रेरणा से देवेन्द्र बाबू लिखित यह बंगला दयानन्द चरित घासीराम द्वारा अनुदित होकर उक्त प्रेस से ही प्रकाशित हुआ।

देवेन्द्र बाबू श्री महाराज के वृहद् जीवन लिखने के लिए मूल सामग्री का संचय कर चुके थे। काशी में निश्चिन्त हो कर इस सामग्री के आधार पर वे जीवन चरित लिखने लगे, परन्तु भूमिका और कुछ अध्याय ही लिख पाये थे कि असाध्य रोग से पीड़ित होकर उनका शरीरान्त हो गया। देवेन्द्र बाबू के दिवंगत हो जाने के पश्चात् पण्डित घासीराम जी ने 1917-18 में उनके द्वारा संकलित सामग्री काशी के डिप्टी कलक्टर श्री ज्वालाप्रसाद एम ए की सहायता से प्राप्त की। श्री ज्वालाप्रसाद जो स्वयं आर्य समाजी तथा पण्डित घासीराम जी के सहपाठी रह चुके थे। देवेन्द्र बाबू संग्रहीत यह सामग्री अत्यन्त अस्त-व्यस्त दशा में थी। सैकड़ो कागज के छोटे बड़े टुकड़े, नोट बुक, पत्र, पोस्टकार्ड, समाचार, पत्रों के कतरनों के रूप में उपलब्ध उस सामग्री का पढ़ना, हिन्दी अनुवाद करना तथा उसे व्यवस्थित करना बड़ा परिश्रम साध्य कार्य था। परन्तु पण्डित घासीराम जी ने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से इस सम्पूर्ण सामग्री को व्यवस्थित सम्पादन कर महर्षि के उस जीवन चरित को अन्तिम रूप प्रदान किया जो आज स्वामी जी का सबसे बड़ा तथा सर्वाधिक प्रामाणिक जीवन चरित माना जाता है। श्री मद्दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर सम्वत् 1990 वि (1938ई) यह जीवन चरित आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर से प्रकाशित हुआ। अब तक इसके चार संस्करण छप चुके हैं। पण्डित घासीराम ने ... 30 ... 1933 को तैयार कर दिया था।

देवेन्द्रनाथ ने महर्षि के विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द का भी जीवन चरित लिखा था। यह मूल रूप में बंगला भाषा में लिखा गया था जो कभी प्रकाशित नहीं हुआ। इसका अनुवाद भी पण्डित घासीराम ने किया जिसका प्रथम संस्करण दिसम्बर 919 तथा द्वितीय संस्करण 041 वि में घासीराम प्रकाशन विभाग द्वारा हुआ।

आर्य समाज के इस साहित्य महारथी का दमा रोग के कारण 10 नवम्बर 1938 को देहान्त हो गया।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज बस्ती टैंका वाली फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

दिनांक 7-2-88 को साप्ताहिक सत्संग में श्री राम प्रकाश जी नैयर सर्वसम्मति से समाज के प्रधान पद पर चुने गए और उन्हें समाज के दूसरे सभी अधिकारियों को चुनने का अधिकार दिया गया। जो कि इस प्रकार हैं .—

प्रधान—श्री राम प्रकाश जी नैयर

उप-प्रधान—डा. चोखराम लूथरा, श्री रोशनलाल मलिक।

मन्त्री—श्री सत्यपाल शर्मा।

उपमन्त्री-श्री देशपाल रामपाल तथा सुरिन्द्र कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष तथा वस्तु भण्डारी—श्री अमरनाथ छिब्बड़।

अडीटर—मास्टर रलिया राम शर्मा,

सभासद्—श्री वेद प्रकाश कोछड़, बदरी प्रसाद, दयाराम।

—सत्यपाल शर्मा-मन्त्री

वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

6 मई 1988 दिन रविवार सायं 3 बजे दयानन्द माडल स्कूल (सामने भवीड हाउस) लुधियाना द्वारा पेरेन्टस डे तथा वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना के हाल में किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता लुधियाना के सुप्रसिद्ध न निधि सभा पंजाब (र) क व , प्रधान एवम् आर्य कालेज सचिव मान्य राजेन्द्र कुमार ने की। लुधियाना की सभी अन्य समाजों (पुरुष एवम् स्त्री) शिक्षण संस्थाओं जिला आर्य सभा के अधिकारियों तथा जाने माने आर्य प्रेमियों ने इस समारोह में भाग लेकर जहां समारोह की शोभा को बढ़ाया वहां अपने संगठन का परिचय भी दिया। डा. भारद्वाज ने आदरणीय दीवान जी का परिचय तथा उनकी एवम् उनके परिवार की आर्य समाज के प्रति सेवाओं का वर्णन करते से पूर्व बताया कि संयोगवश आज आर्य मुसाफिर प. लेखराम जी का बलिदान दिवस भी है और जिस स्थान पर आज के समारोह का आयोजन किया जा रहा है उसकी आधारशिला 29-3-1913 को उसी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द (मुन्शीराम) जी ने अपने कर कमलों से रखी थी जिसने अमर शहीद प. लेखराम जी की जीवनी लिखी।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय का पुष्प मालाओं से हार्दिक स्वागत किया गया और गायत्री मन्त्र उच्चारणोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ किया गया। जहां उपस्थिति आशातीत थी वहां नन्हें मुन्ने छात्रों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम इतना मन-मोहक एवम् मनोरंजक था कि अन्तिम क्षण तक हर्ष ध्वनि से सारा हाल गूंजता रहा और उपस्थित आर्य बन्धुओं द्वारा प्रसन्न होकर धन राशि तथा तालियों द्वारा छात्रों का प्रोत्साहन किया जाता रहा। आदरणीया बहन कमला जी ने 70 रुपए, सर्व श्री एफ. सी मण्डल 50 रु. डा. भारद्वाज 50 रु. श्रीमती शकुन्तला मल्ला 50 रु. श्रीमती कैलाश कुमार तथा श्रीमती विद्यावती जी (स्त्री समाज महर्षि दयानन्द बाजार) सर्वश्री आत्मानन्द प्रधान आर्य समाज हबीबगंज, चमनलाल (प्रधान आर्य समाज फील्डगंज) प्रधान तथा मन्त्री आर्य समाज बहादुर नगर, डा एच. बी. वाधिया प्रधान आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार, बलदेव राज सेठी कोषाध्यक्ष आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार, डा राजेश भारद्वाज कोषाध्यक्ष आर्य समाज मन्त्री वाय दयानन्दिया ओम् प्रकाश पाली मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, ओम् प्रकाश टण्डन तथा छात्रों के अभिभावकों, कृष्णलाल सूद, अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा, डा. बालकृष्ण, श्यामलाल तथा छात्रों के अभिभावकों द्वारा दी गई कुल 577 रु. की धन राशि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों का प्रोत्साहन किया। स्कूल के आचार्य श्री के. के. गुप्ता एम. ए. बी टी द्वारा संक्षिप्त विवरणोपरान्त पारितोषिक वितरित किए गए।

अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में छात्रों सिद्धान्तों का पा और 1100रु. देने की घोषणा आर्य स्कूल की प्रब. के सदस्यों, स्टाफ सभी बहनों और किया और शान्ति निर्विघ्न सम्पन्न

तत्पश्चात् समारोह में सम्मि

प्रचारार्थ

मैं दिसम्बर बम्बई तथा महा दिल्ली का भ्रमण तीन माह में पंजा प्रचारार्थ देना भी आर्य समाजें बुलाना चाहें वह करके अपना कार्य ताकि प्रचार क सके। —स्वा

एफ-8 को गई।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।